

श्रीपद्ममहापुराणम्

THE PADMA MAHĀPURĀṆAM

श्लोकानुक्रमणी INDEX OF VERSES



श्रीपद्ममहापुराणम्
THE PADMAMAHĀPURĀNAM



महापुराणम्

- | | |
|----------------------------|--------------------------|
| १. ब्रह्ममहापुराणम् | ११. लिंगमहापुराणम् |
| २. पद्ममहापुराणम् | १२. वाराहमहापुराणम् |
| ३. विष्णुमहापुराणम् | १३. स्कन्दमहापुराणम् |
| ४. शिवमहापुराणम् | १४. वामनमहापुराणम् |
| ५. भागवतमहापुराणम् | १५. कूर्ममहापुराणम् |
| ६. नारदोद्यमहापुराणम् | १६. मत्स्यमहापुराणम् |
| ७. मौक्तिकोद्यमहापुराणम् | १७. गरुडमहापुराणम् |
| ८. अग्निमहापुराणम् | १८. ब्रह्माण्डमहापुराणम् |
| ९. भविष्यमहापुराणम् | १९. धातुमहापुराणम् |
| १०. ब्रह्मवैवर्तमहापुराणम् | |

विष्णुधर्मोत्तर पुराण :: वासुकी पुराण :: हरिवंश पुराण :: बेबीभागवत

क्षेमराज श्रोकृष्णदासेन सम्पादितस्य मुम्बई श्री वेंकटेश्वरस्टीम मुद्रणालयेन प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्

श्रीपद्ममहापुराणम्

THE PADMAHĀPURĀNAM

चतुर्थ भागः श्लोकानुक्रमणी
देहलीस्थेन प्रा० डा० चक्रावैव शास्त्रिणां
भूमिका पाठशोधनाभ्यां परिष्कृतम्
नागेश्वरसिंहसम्पादितश्लोकानुक्रमण्या सहितं



N A G P U B L I S H E R S

11 A/U.A (POST OFFICE BUILDING) JAWAHARNAGAR, DELHI-7.



(This publication has been brought out with the financial assistance from the Government of India, Ministry of Education and Culture)

(If any defect is found in this volume please return the copy per V.P.P. for postage to the Publisher for free change)

© NAG PUBLISHERS

1. 11A/U.A. (Post Office Bldg.) JAWAHARNAGAR, DELHI-7
2. 8A/U.A. 3, JAWAHARNAGAR, DELHI-110007
3. JALALPURMAFI (Chunar, Mirzapur), U.P.

Introduction, Text, Textual Corrections and Verse-Index
1984

PRICE : Rs. 215/00

(PRINTED IN INDIA)

Published by Nag Sharan Singh for Nag Publishers, Jawahar Nagar, Delhi-7
Text printed at Glan Offset Printers, 308/2, Shahzada Bagh, Dayabasti Delhi-35
and Verse Index at Amar Printing Press, 8/25, Vijay Nagar, Delhi-9

श्रीपद्ममहापुराणम् : : ३लोकानुक्रमणी

[सू=सृष्टि खण्ड] [भू=भूमिखण्ड] [स्व=स्वर्गखण्ड] [ब्र=ब्रह्माखण्ड] [पा=पातालखण्ड] [उ=उत्तरखण्ड] [क्रि=क्रियाखण्ड]

| श्लोकारम्भ | अ०श्लो० | श्लोकारम्भ | अ०श्लो० | श्लोकारम्भ | अ०श्लो० | श्लोकारम्भ | अ०श्लो० | श्लोकारम्भ | अ०श्लो० |
|---------------------------|---------|---------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| अ | | अकाराणिकक्षयकृज्ज- (सृ) | १२.४० | अकीर्तिभीतिमापन्न- (उ) | ६६.६४ | अक्रोधगतमात्सर्यं (पा) | ६६.६७ | अक्षराव्ययनाशैश्च (भू) | ६६.१०८ |
| अंशाम्यां शंख (उ) | २४४.८३ | अकाराणं रोयस्तुमुष्म (उ) | १६८.५४ | अकुर्वन्तमहच्चित्रंभक्त- (पा) | ४३.४६ | अक्रोधनश्च राजेन्द्र सत्य (स्व) | ११.१२ | अक्षादिभिन्त्ययोदश्यां (पा) | ३६.३१ |
| अकण्टकं सकृत् (पा) | ११६.३०३ | अकारयन्तुषमर्त्तिमा (सृ) | ३७.२० | अकुर्वानः पतत्याशु (स्व) | ५४.१४ | अक्रोधनश्च राजेन्द्र सत्य (सृ) | १६.१० | अक्षीणामिनामर्थ्यन- (उ) | २५१.२८ |
| अकान्तिकोनिराहारी (स्व) | ११.११ | अकारवाच्योभगवान् (उ) | २२४.१८ | अकृतस्नानदानं (उ) | ६४.११२ | अक्रोधेन जपेद्बीरः (सृ) | १६.३२७ | अक्षेपुनिग्रहोयत्रदवा (सृ) | १३.३६२ |
| अकरोत्स विनाशं (भू) | १२५.२४ | अकारेणोच्यते विष्णु (उ) | २२६.२३ | अकृतेपिहिससर्गव्य (उ) | ११२.११ | अक्षनगंधवृषदीप (उ) | ८४.१३ | अक्षौर्विक्रीडनः (पा) | ८३.७२ |
| अकत्तं व्यमितिप्रश्न (उ) | २३५.१६ | अकार्यप्रमपारुष्यं (सृ) | १६.३०८ | अकृत्यं वैष्णवः पाप- (उ) | २५३.१२८ | अक्षयं जायते नश्य (भू) | ६४.५४ | अक्षौहिणीनाचवधं (उ) | २४६.३५ |
| अकत्तनिरकयाति (उ) | १७४.४७ | अकार्यं क्रियतेमूढैः (सृ) | ४४.१०८ | अकृत्यमपिकार्य- (पा) | ५८.४५ | अक्षयं मुनिशार्दूल- (उ) | १२४.२५ | अक्षौहिणीभिर्दश- (पा) | ११.२४ |
| अकलंकितचंद्राभन (उ) | २२६.१६६ | अकालचर्यासर्वेषां (पा) | १०६.६ | अकृत्वा तृषणामादिते- (पा) | ६६.६५ | अक्षयमोदतेकालं मुरारि (स्व) | १८.६० | अक्षौहिणीसहस्रं तु (उ) | २४६.२४ |
| अकल्मषस्तपोधन्वीत (सृ) | ७.६६ | अकालमरणत्वस्या (पा) | ११२.६७ | अकृत्वा पादयोः शौचम् (स्व) | ५२.१० | अक्षयमोदतेकालं (स्व) | १८.३५ | अक्षौहिणीसहस्रं स्तु (उ) | २४६.७ |
| अकल्मषस्तपोधन्वीत (सृ) | ७.६६ | अकालमरणनास्ति (क्रि) | ११.१४४ | अकृत्वा पादयोः शौचम् (उ) | २३२.२६ | अक्षयं लभते दाता जन्म- (सृ) | ४६.१४८ | अक्षणापिच्छतिर्मदानून (उ) | २१६.१५ |
| अकल्मषजन्ममरणं (भू) | ६६.१६४ | अकालावर्षिणश्चापि (क्रि) | २६.२८ | अकृष्टपञ्चापृथि (उ) | २३६.४ | अक्षयश्चान्ययलोके (स्व) | १५.६५ | अक्षणाः सूर्योन्निलः (सृ) | ४.११६ |
| अकल्मषादतिहासोयं (सृ) | १०.१०६ | अकालावर्षिणश्चापि (क्रि) | ५३.६५ | अकोपोधर्मपाल (उ) | २४३.१५ | अक्षयानिर्जराः सर्वा (भू) | ८०.१८ | अक्षण्डमेदिनीवेग (उ) | ४८६.२० |
| अकल्मषादभन्मार्गतमः (पा) | ३३.२ | अकालिकमनध्यायम् (स्व) | ५३.६५ | अकोमावासकामोवाय (उ) | १२५.६६१ | अक्षयास्तन्यलोकाः (उ) | ३२.६८ | अखण्डातुलनीयुपरसानं (पा) | ७७.५८ |
| अकल्मषादगतायुयं (क्रि) | ७.३८ | अकालिकमनध्यायम् (स्व) | ५३.६५ | अक्रूरप्रमुखान् राज्ये (उ) | २४५.३६२ | अक्षयेनितृतीयां सो (पा) | ६५.१३५ | अखिलभुवनबोधदेव- (स्व) | ३१.२०६ |
| अकल्मषाद्व्रतभवे (उ) | ४०.४१ | अकास्त्राण्युकार (उ) | २२६.२२ | अक्रूरवचनान् चैव (उ) | २४५.२६६ | अक्षयेनापिचानेन (उ) | ६६.५४ | अखिलभुवनसारमाय (उ) | १२५.१७१ |
| अकामः कामदो लोके (भू) | ५३.५३ | अकिंचन त्वं राज्यं (सृ) | १६.२४४ | अक्रूरः सुषुप्तेस्मात्सु- (सृ) | १३.१०० | अक्षयोभगवान् विष्णुः (उ) | ६६.५३ | अखिलानां च लोकानाम् (ब्र) | ११.११ |
| अकामोवासकामोनर्म्दा (स्व) | १५.८२ | अकिंचनाय भक्ता (उ) | १३२.१०१ | अक्रूरोऽपि यशोदायै (उ) | २४५.२८७ | अक्षयं घनमाप्नोति (उ) | १२८.२६१ | अग्रच्छ घनचोर- (सृ) | १३.२५८ |
| अकामोवासकामोवातत्र (स्व) | २०.१७ | अकिंचनोऽपि न्यतु- (उ) | १७४.७६ | अक्रूरोरामकृष्णा (उ) | २४५.२४१ | अक्षय्यमभवत्तो (उ) | २४०.४३ | अग्रच्छमानमत्युग्रं (उ) | ६६.२४ |
| अकामोवासकामोवाय (स्व) | ४४.४ | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| अगमदबाडवारूपमुत्त- (सु) | ८.११० | अगायेतामहाप्राज्ञीमुनय- (सु) | ३४.३४१ | अग्नित्यागकरोविप्रो (भू) | ५०.२८ | अग्निष्टोमं चयजानानि- (सु) | ३.१११ | अग्निहोत्रं यथा नित्यं (उ) | ६६.८१ |
| अगवन्मुनिवर्यनु (पा) | १०६.२१ | अगुरुद्वितयं चैवचूर्णं (पा) | १०८.५३ | अग्निदग्धाः पुरो (उ) | ३२.४३ | अग्निष्टोमं विश्व (उ) | २४४.१६ | अग्निहोत्रं क्रिया युक्तः (उ) | ७७.५ |
| अगम्यागमकाये (उ) | २६.२४ | अगुहाराद्वंशकर्ता- (सु) | ८.१४७ | अग्निदग्धाश्चये जीवा- (सु) | ६.१६५ | अग्निष्टोममवाप्नोति (स्व) | ३८.३४ | अग्निहोत्रफलं त्वद्य- (पा) | ३७.६ |
| अगम्यागमनसूत (ब्र) | १८.१ | अगोत्रधर्माचरणाक्षिप्रं (स्व) | ५५.१६ | अग्निदागरेतमंत्रेण (उ) | २१४.१३ | अग्निष्टोममवाप्नोति (स्व) | २६.१३ | अग्निहोत्ररतानित्यं (सु) | १६.२२१ |
| अगुरुवकस्तूरी (पा) | ११४.१० | अग्नयागारेगवांगोष्ठे (स्व) | ५१.१६ | अग्निदागरेदायेचये- (उ) | १२६.८४ | अग्निष्टोममवाप्नोति (स्व) | २७.५८ | अग्निहोत्ररतायेत्रभक्ति- (सु) | १७.८० |
| अगर्हणीयोनचगर्हते- (सु) | १५.३६० | अग्नयेकत्यवाहनाय (पा) | ११७.११३ | अग्निनादह्यमाना (पा) | १०२.१३ | अग्निष्टोममवाप्नोति- (स्व) | २४.३ | अग्निहोत्ररतो नित्यं (उ) | ८२.५ |
| अगसंवाहनसम्य- (पा) | ६०.१४ | अग्निकर्मप्रसंगेन (भू) | ८६.६७ | अग्निपालेश्वरेतीर्थे (उ) | १३६.३० | अग्निष्टोममवाप्नोति सूर्य (स्व) | २६.४६ | अग्निहोत्रहविर्धूम (पा) | १४.१७ |
| अगस्तयः कुंभसंभूतिस्त (पा) | ३६.८० | अग्निकार्यं च कूर्वीतयथा (सु) | ३४.३१८ | अग्निप्रजालेश्वरेतीर्थे (उ) | ३१.५० | अग्निष्टोममवाप्नोति विघात (स्व) | ३६.३७ | अग्निहोत्राग्निवेदा (उ) | २.६ |
| अगस्तश्चस्तर्षयो (सु) | १५.३४२ | अग्निकार्यतः कुर्यात् (स्व) | ५१.२१ | अग्निप्रजाल्यकाष्ठो (उ) | १२६.११३ | अग्निष्टोममवाप्नोति सूर्य (स्व) | २६.७६ | अग्निहोत्राग्निवेदाश्च- (सु) | १७.८५ |
| अगस्ति कुसुमैर्वेवं (उ) | ६१.५८ | अग्निकार्येण वंतेन (उ) | ८०.१०१ | अग्निप्रवेशं मुक्त्वैकं (पा) | १०६.६६ | अग्निष्टोमातिरात्राभ्या (स्व) | ३२.१६ | अग्निहोत्रात्परान्त्य- (सु) | १४.८३ |
| अगस्त्यं पुजयामासस- (पा) | ६७.२७ | अग्निकुण्डस्य- (उ) | २४०.१४ | अग्निप्रवेशः कुर्याद्विच- (स्व) | १६.१४ | अग्निष्टोमादिकं कम (उ) | ८०.६ | अग्निहोत्रादयोधर्मा- (पा) | ६७.५ |
| अगस्त्यं भवनं चैव (सु) | ४५.१६५ | अग्निर्कोपः प्रसादस्ते (उ) | ७६.१८ | अग्निप्रवेशशुद्धानां (पा) | १०६.६६ | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (स्व) | ११.१६ | अग्निहोत्रोद्भवोद्युमः (पा) | ६७.८२ |
| अगस्त्यवाक्याच्छ्री- (पा) | ३७.४ | अग्निं च पश्यते देवि (भू) | १२०.४७ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै- (सु) | ३०.१११ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगस्त्यश्चमहाभागो (पा) | १०७.१७ | अग्निं च पितरं चैव न (भू) | ५०.२६ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगस्त्यसहिता देवाः (सु) | १६.१६५ | अग्निज्ज्वालातिदुःखेन (उ) | १६७.१६ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगस्त्योपि स्थितस्तत्र (सु) | १६.२०४ | अग्निज्ज्वालातिदुःखेन (उ) | १६७.१६ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगस्त्योमुनिभिः (सु) | ३५.१६ | अग्नितीर्थं ततो गच्छेत् (स्व) | २७.२८ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगात्मजासिगिरिजेना- (सु) | ४४.१२ | अग्नितीर्थं महाराज (स्व) | ३७.७ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगाधेसलिले शुद्धे सत्य (सु) | १८.४०२ | अग्नितीर्थं मितिरूपात् (स्व) | ४५.२७ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |
| अगानुवंशश्लोको (सु) | १३.४ | अग्नितेजः समाभासेः (भू) | १०२.१८ | अग्निप्रवेशे नाश्रीणां (पा) | १०६.७० | अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञै (उ) | १२३.८ | अग्नीनात्मानिसंस्थाप्य (स्व) | ५६.२ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| अग्नेःशिखाकः परि- (भू) | ५५.१३ | अङ्कनचोर्ध्वपुंड्रश्च (पा) | ८२.१६ | अंगलीयैः सकटकैर्मकुटै (सु) | १६.१०१ | अंगारकनवम्यां तु (स्व) | २०.११ | अग्नेनवायमाणस्तु (भू) | ३८.६ |
| अग्नौ च श्मशाने च (स्व) | ५२.३८ | अंकनं शंखचक्राद्यैः (पा) | ८२.२० | अंगवंग कलिगानां (पा) | ४६.४ | अंगारकद्वितिर्याति (सु) | २४.३२ | अग्नौ नाम अयं भद्रे (भू) | ३५.२ |
| अग्न्यगारेऽश्मशानि- (उ) | २३.१४ | अंकमादायतां देवी (उ) | २३८.१३१ | अङ्गश्चात्रिसुतः पुण्यः (भू) | ३२.२१ | अंगारवाहिकातद्वनं (सु) | ११.२६ | अचर्यन्स्वामिदेवे (उ) | १४३.२ |
| अग्न्यभावेतुविप्रस्य (सु) | ६.६० | अंकमानीय सुदृढं (सु) | ३३.१११ | अंगसंधिषु सर्वासुपलत्वं (भू) | ५३.८७ | अंगारसंचये मार्गे (भू) | १६.१ | अचलश्चालयेल्लोकान (भू) | १६.२४ |
| अग्न्याननवीक्ष्यशि- (पा) | १११.३६ | अङ्कयित्वाजपन्मंत्रं (उ) | २२४.३४ | अंगसंवाहनं कृत्वा पादौ (भू) | १८.१० | अंगारसदृशोयोपितु (ब्र) | १८.१६ | अचलां दत्तदेवेंद्राः (भू) | ६२.२३ |
| अग्रतः पंचपुरुषानपश्य- (सु) | ३२.१४ | अंकयेत्तप्तचक्राद्यै (उ) | २२४.७४ | अंगसंवाहनं कृत्वा (भू) | ८६.३४ | अंगारवंगाः कलिगाश्च (स्व) | ६.४१ | अचला ते भवेद विप्र (भू) | ३.३७ |
| अग्रतः स्थापयामास (उ) | २०४.६० | अंकुशं चाक्षसूत्रं च (पा) | १०४.५६ | अंगसंवाहनं चक्रे गुर्वैश्च (भू) | ६१.६ | अगिरसं ततो गच्छेत्स्नानं (स्व) | १८.५२ | अचलेया तदा पूजाचले (पा) | १०५.११५ |
| अग्रतो मध्यतश्चैकं (पा) | १०.२० | अंके निवेशयामास (क्रि) | ८.४७ | अंगसंवाहनं तस्य न कृतं (भू) | ४७.३३ | अगिरागीतमश्वं व (सु) | १६.२०६ | अचित्तयदहोरात्र (उ) | २०१.२१ |
| अग्रजोऽस्य महा राज- (पा) | ११.६३ | अंकोले कुलवृद्धिस्तु- (सु) | २८.२७ | अंगसंवाहनं तस्य न कृतं (भू) | ४४.८ | अंगीकृतं त्वया त (उ) | १६४.८ | अचित्ता कितगंगा (उ) | १२६.२४४ |
| अग्रसीदेकयत्नेन तथा (पा) | १०७.३८ | अंगणं शोभितमहा- (पा) | ११४.१२ | अंगसंवाहयेद्देव्याः पादौ (भू) | २६.१४ | अगुलिम्यां महेशोपित (पा) | १०८.१४ | अचित्याः खलु ये भावाः (स्व) | ३.१२ |
| अग्नेचाग्निप्रतिष्ठाप्यमुखे (स्व) | १५.४ | अंगदश्च सुषेण (उ) | २४२.३६५ | अंगस्तु कंदरे पुण्ये एकांते (भू) | ३६.१३ | अंगुलिम्यामुपादाय (पा) | १०५.२१६ | अचित्या दिव्यमंजा सा (स्व) | ३.७७ |
| अग्नेतनमहाबाहोकिंकर (सु) | ३५.६३ | अंगदस्तु महाबुद्धिर्गृह (उ) | २१६.११ | अगस्त्योऽङ्गतेरुद्र (सु) | १४.१३४ | अंगुलीयानि च तथा (सु) | ३४.४०३ | अचित्या दभूतविस्तारो (उ) | ७१.२०२ |
| अग्नेवशिष्ठो भगवान् (पा) | ११७.१६६ | अंगदोऽयं हनुमांश्च नलो (सु) | ३८.३६ | अंगस्य तनयो वेनः (भू) | ३६.४४ | अंगुलीयैश्च कटकैः (उ) | २२८.३४ | अचित्यवगदापातं (उ) | १७.४८ |
| अग्नेवीरमणिभूषो- (पा) | ३८.५५ | अंगनिनिहन्तुते (सु) | ३५.७६ | अंगस्योऽद्वर्तज्जातं (उ) | ६.२८ | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | ५२.१८ | अचिरंसमहादेवः (सु) | १३.१४६ |
| अग्नेहिरेण्यगर्भस्त्वं (उ) | २४५.१८६ | अंगन्यासं करन्या (उ) | ८३.२५ | अंगहीनः कृष्णवर्णो (ब्र) | १२.१० | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | २७.१५ | अचिरादेवतद्वाय (पा) | ८३.११३ |
| अग्रयस्त्रैलोक्याः (पा) | ६३.६३ | अंगन्यासादिकं कृत्वा (क्रि) | ११.८६ | अंगानि चतुरोर्वेदान् (सु) | १.४८ | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | ८१.४६ | अचिरादेव भायार्पि (सु) | १२.६४ |
| अघमर्षेण जप्येन भवेद्दे (सु) | ३२.६४ | अंगप्रत्यंगलावण्य (पा) | ७४.१४२ | अंगानि रसमांसाभ्यां (भू) | ५३.६६ | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | २२.५२ | अचिराद् द्रक्ष्यसि भर्तारं (भू) | १०६.६२ |
| अघार्थं पार्थिवैः पुत्र (उ) | १२२.६३ | अंगप्रदक्षिणीकृत्य (क्रि) | ११.११६ | अंगारकचक्षुष्यात्तमाम (सु) | ११.४१ | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | २४०.१६ | अचिरेणैव तं विष्णु (क्रि) | ११.१६० |
| अघोरेभ्योऽयघोरे (पा) | ११४.२६२ | अंगभंगेसमाश्लेष्य- (सु) | ३७.४० | अंगारकचक्षुष्यात्तमाम (सु) | ३४.३१६ | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | ३०.१८२ | अचिरेणैव तानि समलभते (क्रि) | ६.१२६ |
| अघीवविष्वंसि कृतार्थं (उ) | १६६.१० | | | अंगारकचक्षुष्यात्तमाम (सु) | ३०.८ | अंगुल्यग्रेण राजेन्द्रस्वां (स्व) | ३०.१७५ | अचिरेणैव विप्रप्रयं ददाति (क्रि) | १०.७५ |



श्रीपद्महापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|------------------------------|--------|---------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| अचिरेणैवविप्रर्षे (क्रि) | १४.४२ | अजगंधचदेवेश (सु) | ३३.१४६ | अजंक पादहिर्बुध्नचः (सु) | १८.२० | अजानात्प्राशयविष्णुत्रयम् (त्र) | १६.१ | अणुर्बहस्स्थूल (उ) | २४५.१०६ |
| अचिरेणै व सकलभद्रं (क्रि) | १२.१०६ | अजगंधस्तदाभूतो (सु) | ३१.१०७ | अजोजन्मलयाती- (पा) | ८४.३६ | अजानाद्भ्रवावत्ता (क्रि) | १२.१०२ | अणोरणीयानितिहि (पा) | १०८.५६ |
| अचेतनप्रधानेनसमत्व (पा) | ८५.२२ | अजन्मनः कथंजन्म- (पा) | २८.६७ | अजलोकभयात् सर्वे (उ) | २४६.१५ | अजानाद्भुजतेयस्तु (उ) | ११८.३६ | अणोर्वीणिगुरोर्वा (उ) | १२६.१६६ |
| अचेतनानिभोग्यानि (सु) | १५.१७८ | अजपर्वैष्यवा (उ) | २४३.७ | अज्ञातं च गृहंत्वा (पा) | ११२.३२ | अजानाद्भुजतेविप्र (त्र) | १६.१३ | अण्डजाड्डिजायत्र (उ) | ७५.३ |
| अचेतनानिभोग्यानि (पा) | ८५.१७ | अजमीशानमव्यक्तममेय (सु) | ४३.३३६ | अज्ञात निज पुण्या (उ) | १७५.४१ | अजानाद्वापिचत्तहि (क्रि) | ११.५३ | अण्डजाः पक्षिणः सर्वे (भू) | ६६.७ |
| अच्छावाकः क्रतुः प्रोक्तो- (सु) | ३४.१६ | अजयदजितमायां (उ) | १६३.८४ | अज्ञात समयो राजाश्लः (सु) | ८.८७ | अजानामपितान्निर्घयं (उ) | २५३.१४ | अण्डमंडगतलोका (उ) | २२७.४६ |
| अच्छावाकमधोरुभ्यां (सु) | ३६.८२ | अजागोमहिषीक्षीरा (उ) | ६४.९ | अज्ञातां सुतीथिनां देवानां (भू) | ३६.६५ | अजानिनासुतेनायं (पा) | २६.२८ | अण्डस्पातस्त्वमेलोका (सु) | २.२३ |
| अच्छिद्रमूदध्वं (उ) | २२५.२७ | अजातश्चविजातश्च (सु) | १३.६६ | अज्ञानं सुफलं तस्य (भू) | ११.१६ | अजानोभूमुरोऽस्तु (त्र) | २४.८ | अण्डावरणभूतानि (उ) | २२७.५० |
| अच्छिनच्छिरएतस्य (पा) | ६०.४७ | अजान तामयासोपित (उ) | १८५.५६ | अज्ञानं सुफलं तस्य- (पा) | ८७.५७ | अज्जनांचापिदातव्यं (सु) | २८.६ | अण्डेहिरण्ययेपूर्वं ब्रह्मणः (सु) | २.६ |
| अच्छिन्नाग्रैस्तृणैर्दीर्घै (सु) | १८.२८५ | अजानतीपतिसाध्वीं (पा) | १५.१८ | अज्ञानं तमसा व्याप्तं (भू) | ८५.११ | अटमानागतादेशात् (भू) | ५१.३७ | अतः कारणनोरामकर्तव्यं (उ) | ४६.६ |
| अच्छिद्रप्रार्थयेच्चा- (पा) | ८६.४४ | अजानतेवाचरिता (उ) | १६८.८२ | अज्ञानतिमिरध्वंसि (उ) | २५.३४ | अटवीशेलराश्चैवमेरु (स्व) | ६.४३ | अतः क्षमात्रिधायागु- (उ) | २१५.५१ |
| अच्छोदंचरस्तत्र- (सु) | ६.१३ | अजानतोप्रतिविधि (उ) | २०१.६८ | अज्ञानतिमिरांधस्य (उ) | १.२ | अटव्यांरवंताग्रैश्च (उ) | १२६.१३१ | अत उध्वंतुचक्राणि (उ) | १२०.८० |
| अच्छोदाधोमुलादीना (सु) | ६.१६ | अजानतप्रतिविधि (उ) | २०१.६८ | अज्ञानतिमिरांधस्य (उ) | ६२.३८ | अटशूलजनपदाः (उ) | १६३.३७ | अत उध्वंविशाचा-ते (स्व) | २२.१०८ |
| अच्छोदेविष्णुकामं (उ) | १३३.२६ | अजानाद्भूः कृतकर्म- (पा) | ४५.६ | अज्ञानज्वातविध्वंसि (उ) | १६३.५ | अटशूलजनपदाः (पा) | १०४.१३६ | अत उध्वंयथेष्टं (उ) | ३७.८२ |
| अच्युतं सबलचंद्रं (भू) | ८७.१५ | अजानिन्वतस्कार्यमात्म- (सु) | ७.५४ | अज्ञानज्वातविध्वंसि (उ) | १६३.५ | अट्टहासं तथा तीर्थं (सु) | ११.५८ | अत एतादृशोदेवोत (उ) | २.८ |
| अच्युतस्यालयेभक्त्य (उ) | १२३.१६ | अजामिलः स्वधर्मच (उ) | १३२.४३ | अज्ञानप्राप्तगोहत्या (पा) | ३१.३७ | अट्टहासेन पुनर्हान्यमेवं (भू) | ४६.५२ | अत एव द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | ११.३६ |
| अच्युतस्यालयेभक्त्या (उ) | ११६.२८ | अजितं सर्वजैतार विष्णुं (भू) | ३२.६८ | अज्ञानसंयुतभूतं (पा) | ११४.८६ | अट्टालिकासंतापिष्ठोना (उ) | २०६.१७ | अत एव विष्णवाणि (क्रि) | ६.१०० |
| अच्युतानंतगोविन्द (उ) | २३२.१६ | अजितो वदतेसर्ववेद (पा) | ८४.६२ | अज्ञानाच्छयथां वतेन (भू) | ६६.४८ | अष्टिमादिनृणै (उ) | १२७.५३ | अत एव हि मेच्छन्ति (भू) | ६५.१५ |
| अच्युतायविकाराय (उ) | २२८.७६ | अजितो वदते सर्व वेद (भू) | ८६.७८ | अज्ञानाच्छानतोवापिय (सु) | १८.३२२ | अष्टिमाद्यामिन्द्रियोटीत (उ) | १६६.५ | अत एवावन्मनांसि (उ) | ५.२१ |
| अच्युतायविकाराय (उ) | २४६.६४ | अजीजनत्पुत्रमेकते (सु) | ८.११६ | अज्ञानात्ज्ञानतोवापि- (स्व) | २७.३३ | अणुनिन्दोदशापिघ्नोत (उ) | २२६.३५ | अत एव निविन्द्यानि (उ) | ७१.१०६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

५

| | | | | |
|--------------------------------------|---------------------------------------|---------------------------------------|----------------------------------|------------------------------------|
| अतथ्यान्यपितथ्यानि- (सृ) १८.३३० | अतश्चकलिदुष्टानां- (पा) ११४.४०१ | अतस्त्वं ब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) १७.५४ | अतिथिभ्यस्सनो दत्वा (भू) ६७.४८ | अतिसंकट कार्यस्मिन्- (क्रि) ५.१८७ |
| अतः परतुकाय्याणां- (पा) ११६.८६ | अतश्चदीर्घकालां- (पा) ११४.४०० | अतस्त्वमपिधर्मज्ञ (उ) ११०.२४ | अतिथिर्गृहमागच्छन् (क्रि) १७.१७१ | अतिसाध्वीमहाभाग (भू) १२.८१ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि तेषां (उ) २२२.१५ | अतश्चवलगुलीयोन् (उ) १०६.२१ | अतस्त्वमेवसाबुद्धिर्यतो (सृ) ४३.३७४ | अतिथिश्चप्रसन्नो (पा) ११७.१७७ | अतिस्नग्धाय नो देयं (भू) ३६.१२२ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामिन् (उ) १८३.१ | अतश्चित्ताभमोत्पन्नात्वं- (उ) १६५.५८ | अतस्त्वयाचित्तोविष्णुः (उ) १०७.२१ | अतिथिः सर्वलोकेश (सृ) १५.३१५ | अतिस्निग्धामिदिकर (उ) १२०.७५ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि (सृ) ६.१२३ | अतः श्राद्धपुराप्रोक्तं (सृ) ३४.२२० | अतस्त्वांप्रष्टमिच्छामि (उ) ८८.३३ | अतिथीनवमन्यतेसूर्य- (पा) १७.३१ | अनीनकल्याणसानं (सृ) ३.२७ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि- (सृ) २१.२७८ | अतः सत्संगतिमुभूः (उ) १२७.१४७ | अतस्त्वासंप्रवक्ष्यामि (उ) ३५.१ | अतिथीनां कृतापूजा- (क्रि) २१.३६ | अनीतमामन्यस्तु (ब्र) ४.३२ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामिमार्गं (उ) ३६.८ | अतः सर्वं सहेदेहि वस्तुं (क्रि) ११.६६ | अतस्त्वाहन्मिवज्ज्वा (उ) ६६.२ | अतिथीन्वैश्वदेवान्ते (उ) ११४.४ | अतीतमिद्रियेभ्यस्तु (उ) २०६.५७ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि- (सृ) ३४.३०४ | अतः सलब्धवान्- (उ) १२६.२६५ | अतः स्पृशामिपादाभ्यां (क्रि) ६.३७ | अतिथीन्वाडमेलोका (क्रि) १७.२६० | अनीतानागनानां वैसमं (सृ) २.२८ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि (उ) १८८.१ | अतः सावर्वरीत्याव्याख्या (उ) १०५.६ | अताऽयद्दृश्यातैः (भू) ४.३२ | अतिथीराप्रसन्नांगी (भू) १२.८२ | अनीतानागनादन्वैवमनवः (सृ) ७.११३ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि (उ) २२६.१५६ | अतः सास्थावरत्वं (उ) २२२.१४ | अतिकायमभाषत- (पा) ११६.२४५ | अतिपापंमहापापं (उ) ११४.२५ | अनीन्द्रियोमिनोपागे (उ) ७१.१२५ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि- (सृ) २१.२६० | अतसी कुसुमाकारं (क्रि) १७.१०० | अतिकृच्छ्रं चपाराकं (उ) ११६.२५ | अतिगपिनिभूतं च गुरु (पा) ६८.६२ | अनीन्द्रिज्ञानविज्ञान (उ) ७१.२१७ |
| अतः परंप्रवक्ष्यामि- (सृ) १७.१०० | अतसी पुष्पसंकाशं (उ) ७३.२ | अतिकृच्छ्रं चपाराकं (उ) १२३.१२ | अतिप्रगल्भललना (पा) ६६.२८ | अतीवगुणवत्संबतत्वं (स्व) ८.१३ |
| अतः परमहोभाः किञ्च- (पा) १०५.१ | अतसी पुष्पसंकाशो- (पा) ६८.५२ | अतिकृष्णमहाराज (भू) ३६.११६ | अतिप्रहर्षात्तुजगत्रय (सृ) ३०.६७ | अतीवजायने वायुः प्रचंडो (भू) ६४.८७ |
| अतः परमुनिगणास्ता- (पा) ७४.११५ | अतस्तीर्थत्पिरंतीर्थघटे (उ) १६५.६ | अतिक्राताः शृणुष्व त्वं (भू) ५३.३६ | अतिभानि विद्यालाक्षी (भू) २०.५७ | अतीवदग्धा ननापि सा (भू) ७७.६६ |
| अतः परंश्रुतिगणास्ता (पा) ७४.११२ | अतस्तु तुलसी देवि (क्रि) २४.४० | अतिचंचलचित्तोऽहं (क्रि) २२.८७ | अतिमुग्धो महादैत्यः (भू) २५.१५ | अतीवदुःखमापन्नो (उ) २१४.३० |
| अतः पर्वतराजोयं (उ) १६.१८ | अतस्तुममशुभ्रूपा (उ) २०६.२ | अतिचंद्रातिमूर्त्यति (ब्र) ४५.४४ | अतिरिक्तो वलेनैव (भू) ६४.८२ | अतीव नर्तनचक्रे सुंदरं (उ) ३.३१ |
| अतः पापिष्ठचानानि (ब्र) २४.४८ | अतस्तेनाश्रदास्यामि- (सृ) ४४.६६ | अतितृणानकत्तंवा (उ) ४२.४६ | अतिरूपेणसंपन्नाघटिता- (सृ) २१.११ | अतीव मुग्धं सुरया ज्ञान (भू) २५.१६ |
| अतः पुनरपिश्रीमत्कृष्ण- (पा) ८४.४ | अतस्त्वं कुरुषे नित्यं (उ) ३५.१५ | अतिदुष्कृति कर्म्म (पा) ११४.४६६ | अतिबाह्यक्षपामिवं (सृ) २७.४२ | अतीव रम्यसिंहदुर्चर्म (सृ) ४३.२२५ |
| अतः पृच्छमहाभाग (पा) १०४.२० | अतस्त्वंजानकीना (उ) २४३.४१ | अतिथितर्पयित्वातु (उ) ६६.३६ | अतिविस्मयदामृष्टि (क्रि) १६.१२ | अतीवसुकुमारांगमुग्धं (पा) ७१.७ |
| अतलसृष्टवान् (क्रि) २.१२ | अतस्त्वंपुंडरीकाक्षं (उ) १६३.८० | अतिथिः प्राहंतं विप्रः (पा) ११७.१६५ | अतिउन्मत्तदशनालाप (सृ) १५.११० | अतीव सुंदरं रूपं (उ) १२५.१४१ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकोक्तमणी

१

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| अतीवह्रस्व गात्रस्य (सु) | ३०.१२६ | अतोमधुवनाद्राजन् (उ) | २१६.१ | अतोहिकाल दुहिता (उ) | १६४.४६ | अत्यन्तमधुरोक्त्यादि (पा) | ११०.१६ | अत्रकिदेवतावासो (पा) | १७.२२ |
| अतुल्यं नृणां सिद्धि (उ) | ७८.८८ | अतोमातुत्वयाहीन- (पा) | २८.१२ | अतोह्य धर्मरूपास्ते- (उ) | १७४.६६ | अत्यन्तं मोहनो जातः (पा) | ६६.१५३ | अत्रक्रोधसमाविष्टो (स्व) | १५.४७ |
| अतैलपक्वं मुनयोहविष्या (पा) | ७६.५७ | अतोमेमानसं दुःखं (उ) | १६३.४४ | अत्युदभुतं जातमहोद- (पा) | १२.८६ | अत्यन्तं समरोधक्ते- (पा) | ६४.६ | अत्रगत्वा तुयोदेविय (उ) | १६.१.१५ |
| अतोमुरुः पुराणज्ञः (पा) | ११५.४४ | अतोयमाद्वितीययंत्रि (उ) | १२२.६६ | अत्यदभुतं रूपमनंततेजो (भू) | ५४.१७ | अत्यन्तं सुखिनं पुत्रं (पा) | ११०.१० | अत्रगत्वा तु देवेशि- (उ) | १४.८.६ |
| अतोमृहाणतानुलं (पा) | ११४.२२६ | अतोयेन प्रकारेण (उ) | ३७.६ | अत्यदभुतं वचोगृध्रत्वत्तः (क्रि) | ३.४० | अत्यन्तं हर्षमापन्नमत्यं (पा) | ५७.७ | अत्रगत्वा तु भूदानं (उ) | १५०.१४ |
| अतोजीवनरक्षार्थं (क्रि) | २०.१८ | अतोरहसिचास्माभि (उ) | १६७.१३ | अत्यदभुतः प्रतापस्ते (उ) | ११.१६ | अत्यन्तं हास्य शोकां (क्रि) | ६.१८ | अत्रगत्वा विशेषेण (उ) | १४८.८ |
| अतोदेवा इतिद्वाम्यां (उ) | ६५.१६ | अतोरामवधित्वेनं (पा) | १०४.१४६ | अत्यदभुतमिदं देवि (उ) | २५२.१०१ | अत्यर्थं तु तपस्तप्तं (भू) | ११३.३५ | अत्रगत्वा विशेषेण रुद्र (उ) | १५६.११ |
| अतो देवामामवतुय (उ) | ६३.६ | अतोविधिनिषेधश्च (भू) | ३६.३६ | अत्यदभुतमिदं ब्रह्मन् (सु) | ३६.५६ | अत्यर्थं भावमाणं तं (भू) | ३८.३२ | अत्रगाथा पुराप्रोक्ता (सु) | १८.३६१ |
| अतो देवेतिगंधादि (उ) | ३०.१२ | अतोवैगुरुपुजा (उ) | ३५.६४ | अत्यदभुतमिदं ब्रह्मन् (सु) | १८.१ | अत्यवाह्यदत्युग्रीरीया- (उ) | १८२.४ | अत्रगोकर्णं तीर्थं तु (उ) | २२२.३३ |
| अतोदेहे धृतंभूमि- (उ) | ६७.६ | अतोवैदर्शनतेषां (उ) | ६८.१६ | अत्यदभुतानिकर्माणि (उ) | २४५.२५५ | अत्याज्यातु वृथासाहि- (उ) | २४२.३३२ | अत्रगोकर्णं तीर्थस्या (उ) | २२२.२५ |
| अतोदेहेनकर्तव्यःशोकः (उ) | २०६.५३ | अतोवैनास्तिलोके (उ) | ३५.१४ | अत्यदभुतास्स्व कृतेन (सु) | ४०.७२ | अत्याश्चर्यं भूतत्रतन्मे- (पा) | ३७.५६ | अत्रजन्मनिनावाभ्यां (उ) | २००.१०८ |
| अतोधन्यतमावे (उ) | ३६.२३ | अतोवैश्रोतुमिच्छामि (उ) | ७१.६६ | अत्यन्तकामिनः क्रूरा (क्रि) | २६.१७ | अत्याश्चर्यवनीरम्याकथेयं (सु) | २०.१ | अत्रनिष्ठामिवांतरपूर्वं (उ) | १८७.५० |
| अतोध्यायंतदधंवा (उ) | १७५.२६ | अतोस्मासुदयां कृत्वा (उ) | १६५.६१ | अत्यन्तं दुःखं लभ्यापि (क्रि) | १५.६३ | अत्युग्रं च कृतं कर्म (उ) | ३८.६० | अत्र तीर्थं महत्त्वान्यत् (उ) | १६४.१ |
| अतोनिर्मंत्रणकार्यं (उ) | १६८.८ | अतोस्मयत्रिविधापुजा (पा) | १०८.७४ | अत्यन्तं वाणपीडा (पा) | ६२.३० | अत्युग्रदानं वावेनीहंतु (क्रि) | २.५२ | अत्र तीर्थमिदं हृष्ट्वा (उ) | २२१.१० |
| अतोऽन्यदात्मनोरूपं (उ) | १७५.१७ | अतोस्यालक्षणं गात्रे (सु) | ४३.१८२ | अत्यन्तं वह्निवयुद्धं (पा) | ६३.४५ | अत्युग्रपिनां संगतं (भू) | ३०.३८ | अत्र तीर्थं निरतीर्थं (उ) | १६७.३ |
| अतोऽन्यस्मिन् भवेभूया- (सु) | ३१.२७ | अतोऽस्योर्जव्रतोद्भूत (उ) | ११३.२६ | अत्यंतं वित्तसंभारं (पा) | ६७.२५ | अत्युच्चसौधभवनं (उ) | १८०.२८ | अत्रतीर्थं निरतीर्थसंग (उ) | १७०.१ |
| अतोऽपिकंडूंसंभूतौ प्रवेश (पा) | ११२.२७ | अतोहं कर्मवेदा (उ) | २०४.२४ | अत्यंतं विस्मयं प्राप्य (पा) | ४३.५७ | अत्युच्चान्विकरालांश्च (भू) | १५.६ | अत्र तीर्थं निरतीर्थं (उ) | १६२.८ |
| अतो ब्रह्मा जगत् (क्रि) | २.४६ | अतोहं वैष्णवो जातो (उ) | ७५.१६ | अत्यंतं विस्मृतो दैत्यः (उ) | ११.४२ | अत्युत्तमेदुःखानेपृ (ब्र) | २१.५ | अत्रतीर्थेनरः स्नात्वा (उ) | १६२.१३ |
| अतोऽभक्तिमतापुंसा (उ) | ७६.४२ | अतोहं सर्वतीर्थेषु (उ) | २१६.१६ | अत्यंतं विह्वलो जातो (पा) | ४४.३० | अत्युत्प्राप्त्यान्भावनेन (भू) | ३३.२३ | अत्रतुःस्यं वरदानमुमगाः (उ) | २१६.३४ |
| अतोऽभक्तिश्च भविष्य (पा) | ११७.२१६ | अतोऽहविष्यं कृत्वा तु (क्रि) | २२.८४ | अत्यन्तं भक्त्या ब्रह्मन् (क्रि) | २.१०१ | अत्युत्प्राप्त्यान्भावनेन (भू) | ३३.२३ | अत्रतुःस्यं वरदानमुमगाः (उ) | १४६.५ |
| | | | | अत्यन्तं भोजनं चैव (क्रि) | २२.११ | अत्युत्प्राप्त्यान्भावनेन (भू) | ३३.२३ | | |

| | | | | |
|-------------------------------------|--|-------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|
| अत्रतुस्वर्गोश्चायरक्षीत (पा) ४४.४३ | अत्र युद्धं महद्वृत्तं चैत्रा (सृ) ३८.६६ | अत्राकृष्टमनास्तास्तु (स्व) १४.३७ | अत्राप्युदाहरंतीमम (उ) १६.१३ | अत्रिरवद्विस्मिता (क्रि) ५.१११ |
| अत्रतेकथयिष्यामिइतिहासं (पा) १०६.२ | अत्रराजविष्णापूर्वं (उ) १४२.३ | अत्रागतः सपापात्मा (उ) २१७.१८ | अत्रायुदाहरंतीममित (उ) २८.१ | अत्रिर्वसिष्ठश्चभृगुः (उ) ८१.४ |
| अत्रतेकथयिष्यामि (उ) १२८.१६६ | अत्रलेभे महाभागः (उ) २२२.६० | अत्रागतस्तुकेनाहं पुण्ये (उ) २१६.७४ | अत्राप्युदाहरंतीममित (उ) ३०.६३ | अत्रिर्वसिष्ठोवह्निश्च (सृ) ३.१८७ |
| अत्रतेकीर्तयिष्यामि (उ) १६६.१७ | अत्रलोके विना चेशौ (भू) ३६.२० | अत्रागतः स्वविहितान् (उ) २००.५७ | अत्राप्युदाहरंतीम (पा) ६६.३ | अत्रिवंश समुत्पन्नः (भू) २८.१६ |
| अत्रते कीर्तयिष्यामि (पा) १०५.१५२ | अत्रवः कीर्तयिष्या (पा) १०५.१८२ | अत्रागतो निपिधोपि (उ) २०४.५३ | अत्राब्रवीज्जयानं (उ) १३.३० | अत्रिवंशसमुद्भूतो द्विज (सृ) ५.२२ |
| अत्रतेकीर्तयिष्यामि (पा) १०६.१ | अत्रवशेपुराणज्ञाबु- (सृ) १३.४१ | अत्रागत्य प्रकुर्वीत (उ) १७४.३८ | अत्राभिपेक्ष्यः कुर्यात् (सृ) १६.१६८ | अत्रिवंशस्य वैधर्ता (भू) ३२.७१ |
| अत्रतेकीर्तयिष्यामिवर्षं (स्व) ६.२ | अत्रविश्रांतिनामेदं (उ) २१३.२ | अत्रागत्यमयादृष्टः (उ) २०४.१२२ | अत्रायान्तिनरास्ते (पा) ३०.४५ | अत्रिवंश महाभाग (भू) १०३.१२० |
| अत्रतेकीर्तयिष्यामिवर्षं (स्व) ६.२ | अत्रविश्रांतिनामेदं (उ) २१३.२ | अत्रागत्यमयादृष्टः (उ) २०४.१२२ | अत्राराधयतो भक्त्या (सृ) १४.१७२ | अत्रिसूनोर्मुनेः यापादनं (उ) २३१.४२ |
| अत्रते वर्णयिष्यामि (उ) १६३.२४ | अत्रशिशुपालनिहतं (पा) ७६.१ | अत्रागत्यमहाभागो (उ) २०४.४० | अत्रार्थेयपुरावृत्तं (उ) १५१.२० | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रते वर्णयिष्यामि (स्व) ३०.१ | अत्रश्राद्धं च दानं च (उ) १४१.४५ | अत्रान्तरेचलसन्धाः (अ) ११.२७ | अत्राश्रमपदं कृत्वा (सृ) ३३.११७ | अत्रेतिहामं वक्ष्यामि (स्व) ३३.२ |
| अत्रते वर्णयिष्यामि (पा) ८२.५३ | अत्रश्राद्धं प्रकुर्वीणो- (उ) १३६.१७ | अत्रान्तरेदुराचारः कोपि (उ) १५.१८ | अत्राश्रमेधिकं पुण्यं (सृ) ३२.७३ | अत्रेतिहासं वक्ष्यामि (उ) १६१.४ |
| अत्रते विस्मयः केनयेन (उ) १६४.७१ | अत्रस्थाने विशेषेण (उ) १५४.६८ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेतिहामं विप्रपे (क्रि) ३.१७ |
| अत्रत्पानां मनुष्याणां (उ) १८४.६४ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रत्यं कृत्वा मखिलमेत (उ) १८२.२२ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रत्वयास्नानकाले (उ) २१४.६८ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रदानं प्रकर्तव्यं (उ) १५६.१४ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रपूर्वहृतासीता (सृ) ३८.२८ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्र प्रहस्तीनीलेनहृतेः (सृ) ३८.६७ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रभागोऽग्रभुक्त्वं (भू) ८३.३१ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रमेकौतुकं जातं (उ) २८.१२ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |
| अत्रयत्नो महान् कार्यो (पा) ३६.४२ | अत्रस्थितानितीर्थानि (उ) २२०.१३ | अत्रान्तरे परित्यज्य (उ) ११.३० | अत्राष्ट शक्तयो (उ) २२६.११३ | अत्रेऽर्थाच्छ्रयासस्त्रो (उ) २१६.१० |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| अत्रैवावस्थिताः स्वर्गं (सु) | १३.३५१ | अथकालेनमहता (पा) | ६६.५ | अथक्षणादभ्यगाच्च (पा) | ११४.७२ | अथजांबवानाह (पा) | ११६.२१५ | अथतंहत्वायमुना (पा) | ७६.३ |
| अत्रैवोदाहरंतीममित (उ) | ८१.१३ | अथकालेनमहता (उ) | २४४.३४ | अथक्षणेनाभ्यगमतर्कं (पा) | १०६.७७ | अथजालंधर प्राहरक्षा (उ) | १८.१ | अथतरुच्छायाधः (पा) | ११६.१५७ |
| अत्रैवोदाहरंतीमं (उ) | ८०.१५ | अथकालेनदिप्रे (उ) | २४१.११ | अथलक्ष्यैर्वेदंजि (पा) | ११६.२४१ | अथजालंधरोदूत (उ) | ११.१ | अथतस्मान्पृथग्श्रेष्ठ (भू) | ६७.७० |
| अत्रैवोदाहरंतीमम (पा) | ३०.३१ | अथकिंकरयुधेन (उ) | १२६.११ | अथगच्छन्पथिप्राज्ञो (क्रि) | ७.२७ | अथजालंधरोपश्य (उ) | १७.१ | अथतस्मिन्दिने (उ) | २४३.१ |
| अत्रैवोदाहरंतीममित (उ) | १५४.५ | अथकिंवहुनोक्तेन (सु) | ३२.१२७ | अथगच्छन्महोदेव (पा) | १०३.६ | अथज्ञात्वातथ्येद्रोपि (सु) | ७.५२ | अथतस्मिन्पुण्ड्रोपेक्षितय (स्व) | १५.३१ |
| अत्रैवोदाहरंतीममित (पा) | २०.४४ | अथकुमारोपिया (पा) | ११६.४७ | अथगच्छेत्त्राजेन्द्र (स्व) | २५.६ | अथज्ञात्वातदागौरी (उ) | १०२.२५ | अथतस्मिन्पुरे रम्ये (उ) | १८७.११ |
| अत्रोत्तरेमयागत्वाकथितं (उ) | १०.१ | अथकुम्भकर्णो (पा) | ११६.२८७ | अथगत्वा वहिस्त (पा) | १०६.१०४ | अथतत्रतदवागात् (उ) | १६६.२८ | अथतस्मिन्वने (उ) | १४.३२ |
| अथ आयुमुतो वीरो (भू) | ११०.२१ | अथकृष्णस्तु रामेण (उ) | २४८.१ | अथगायत्री पंचशीर्षं (सु) | ४६.१८६ | अथतत्रनदी स्नात्वा (पा) | ११४.४८० | अथतस्यगृह्णाम्यासेनि (उ) | २१६.१८ |
| अथउर्वीगसलिलं (पा) | ११४.२१४ | अथकृष्णेननिहृतं (उ) | २४६.६ | अथगाय्यो विपद्यटिका (पा) | ११६.८४ | अथतत्र स्थानंदगोपा. (उ) | २५२.२८ | अथतस्यगृह्णाम्यासेनि (उ) | २१६.१६ |
| अथकदाचित्क्रीडमाने (पा) | ११६.५० | अथकृष्णोप्येवं (उ) | २५०.२१ | अथगोर्णमासाद्य (स्व) | ३६.२२ | अथतत्रैव साधूतरिय (उ) | १८७.१० | अथतस्यमहाराज (उ) | २१४.८२ |
| अथकदाचिद्भोवतुभाग (पा) | ११६.४६ | अथकृष्णो विचित्र्येवं (भू) | ११६.२४ | अथचतुराननः स्वयं (पा) | ११६.४४ | अथतथापिदशरथो (पा) | ११६.१८ | अथतस्यमुक्तदस्य (उ) | २०६.४३ |
| अथकर्मसमायातमात्मा (भू) | ७.६६ | अथकैकयदेशाधि (पा) | ११६.१४१ | अथचदारुच्छेदनसम (पा) | ११६.२५४ | अथतद्दर्शनोत्कण्ठाविह्वली (पा) | २.१ | अथतस्यमुत्तोरानजन् (स्व) | ३०.१७ |
| अथकश्चिच्छीघ्रमागत्य (पा) | ११६.६१ | अथकोटिपरीवारो (पा) | ३०.२ | अथचाकर्ण्य भूपालः (पा) | ६४.१३१ | अथतद्दर्शनोत्कूल (उ) | ६६.३२ | अथतस्यां प्रभृतायां (उ) | १८७.२३ |
| अथ कश्चिद्विजः प्राप्तस्त (भू) | ६१.३१ | अथकोलाहलंश्रुत्वा (उ) | १०२.२ | अथचित्रकलात्वाज्ञां (पा) | ७२.११६ | अथतद्वचनाद्विप्राः (पा) | ११३.२५ | अथतस्यैवस्वयंशक्रो (क्रि) | ८.३१ |
| अथ कामान्महाबाहु (सु) | १३.१४८ | अथकौशल्यायांरामो (पा) | ११६.४३ | अथचित्रकलेत्येतन्नाम (पा) | ७२.११७ | अथतद्वचनात्स्वैवयं (पा) | १०५.१७६ | अथतादृशएवमेह (पा) | ११६.१०१ |
| अथकालकयक्षे (पा) | १०१.१ | अथ कौशल्यावाच (पा) | ११६.४० | अथचित्रलेखावह्नीभि (उ) | २५०.११ | अथतन्निशिरामेण चारा (पा) | ५५.१६ | अथतादेवनाः सर्वाः (भू) | ११०.६ |
| अथकालेनकियता (उ) | २१३.३५ | अथक्रुद्धाजगद्धात्री (भू) | १२१.१६ | अथचितापररक्षासीन्नि (पा) | १०७.६ | अथतनूपति श्रेष्ठं (क्रि) | ६.१४५ | अथताभ्यमिन्द्रप्रस्थं (उ) | २५२.१४ |
| अथकालेनकियता (पा) | ६२.११४ | अथक्रुद्धेन मुनिनाशाप- (सु) | ३७.१२५ | अथचितापरो विप्रौनं (पा) | १०६.३४ | अथतं ब्राह्मणं दग्ध- (पा) | १०६.८५ | अथताभ्यमुभाम्यासं (उ) | २२१.५१ |
| अथकालेनकियता सद्भिः (उ) | २१६.६८ | अथक्रुद्धोमहातेजा (भू) | ३.२३ | अथचितापरो विप्रौनं (पा) | १०६.३४ | अथतं सयतिदृष्ट्वा (उ) | १६६.३१ | अथतापतितावीक्ष्य (उ) | २२०.४३ |
| अथकालेनकौमा (उ) | २४५.१३३ | अथक्रुद्धो महाराजः (भू) | ८०.७ | अथचोत्तमवातिया (स्व) | २२.४ | अथतं सुखमासी (पा) | ४०.१४ | अथताराचांगदश्च (पा) | ११६.१७८ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६

| | | | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------|------------------------------------|
| अथतारारामं बभाषे (पा) ११६.१८० | अथतेमुनयः सर्वे (पा) ११७.१६३ | अथदानवदेवानां (उ) ५.७० | अथ धनुर्वेदमायुर्वेद (पा) ११६.५६ | अथ परस्मिन्महनि (पा) ११६.२६५ |
| अथतास्तत्रतत्रे (उ) २०६.१३ | अथते मुनयः सुवर्णं (पा) ११३.३७ | अथदाशरथिप्रमुखाः (पा) ११६.१३१ | अथ धर्मं विहीनो (पा) १०१.५ | अथ पर्यत्रस्तत्र (सु) १६.२२७ |
| अथतीर्थस्यमाहात्म्यं (उ) २१३.७ | अथते मुनि पुत्रस्य (उ) २१४.८७ | अथ दासी महादुष्टा (भू) १०५.१५ | अथ धर्मं समायातः (भू) १२.६० | अथ पाणिद्वयगतं (पा) ११७.१३६ |
| अथतुभ्यं प्रपन्नानां (पा) ८२.२२ | अथते लुब्धकाः सर्वे (भू) ४३.६ | अथ दिनमात्रेधनु (पा) ११६.१२६ | अथ धर्मं सुतोराजा (स्व) १०.११ | अथ पादसंचारिणं ११६.४६ |
| अथतुभ्यं प्रवक्ष्यामि (पा) ८१.५१ | अथते लुब्धकाः सर्वे (भू) ४५.१ | अथ दिक्षाविधिवक्ष्ये (पा) ८२.१ | अथ धर्माः शिवेनोक्ताः (भू) ६६.१ | अथ पादोगृहीत्वातुः (पा) ११४.१५५ |
| अथते क्रोधं संपन्ना (ब्र) ६.२५ | अथते वर्णयिष्यामि (उ) १८१.१ | अथ दीपेण कालेन (सु) १३.८२ | अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि (पा) ८१.३५ | अथ पापहरं वक्ष्ये (सु) २१.१४४ |
| अथतेगतवंतश्चमिरि (पा) १०७.२७ | अथतेषां पुराणस्यशु (सु) १.१७ | अथ दूताः समायाता (क्रि) २०.४४ | अथ ध्यानं नतं (पा) ११२.४६ | अथ पापैरिमेयानि (भू) ६८.२ |
| अथतेचक्रुरतिथेरशे (पा) ११७.१७५ | अथतेषुप्रयातेषुनर- (पा) ३१.१ | अथ हृष्टवाहुरिः (पा) १०५.१६६ | अथ ध्यानं नतं (पा) ११२.४६ | अथ पुण्येनतेनासीसमाप्ता (उ) १६२.५६ |
| अथते चा सुरान जन्तुः (ब्र) १०.१५ | अथते संप्रवक्ष्यामः (उ) १६८.१ | अथ देव ऋषिस्तत्र (उ) १६५.१ | अथ नत्वा मुनिश्रेष्ठं (उ) ३.२ | अथ पुत्रकामेष्टो (पा) ११६.३६ |
| अथतेजः पुंरप्राप्तस्तुरगः (पा) ३०.१५ | अथते संप्रवक्ष्यामि (सु) ३३.३ | अथ देवः सहस्राक्षः (भू) ११०.४ | अथ नदिपतितत्ते (उ) ४.१० | अथ पुत्र प्रमादेन (क्रि) ६.१३ |
| अथते तुरगाः सर्वेश्रुत्वा (क्रि) ५.७६ | अथतौतत्र संस्थाप्य (उ) १६४.३७ | अथ देवा धनुः (पा) ११६.१२० | अथ नदि प्रदेशात्तुयथा (उ) १३७.१ | अथ पुत्र समालोक्य (पा) २८.१ |
| अथते दानवाः सर्वे (भू) ११४.१ | अथतौतौदंपती (उ) २०३.५७ | अथ देवान्हुतान्दृष्ट्वा (उ) ६७.२७ | अथ नावासमुत्तीर्थं (पा) ५६.१ | अथ पुराननं रामायणं (पा) ११६.१६ |
| अथतेनसहायेनजल (पा) ११६.२१० | अथतौदुःखितौ जातौ (उ) १६६.२३ | अथ देवार्चनं कर्तुं (पा) ११४.३५५ | अथ नानाविधैर्मंडपैः (क्रि) १०.६६ | अथ पौंड्रकवासुदेवः (उ) २५१.१ |
| अथतेपथ्यगच्छत (ब्र) १२.३५ | अथतौ ब्राह्मणपुत्र (ब्र) १२.३४ | अथ देवाः समागत्य (भू) ११७.२५ | अथ नारकिणांपुंसामधर्मा (भू) ६६.३ | अथ प्रसालितं मम्यगु (पा) ११७.१७१ |
| अथतेपार्वतीगेहं गत्वा (पा) ११२.३५ | अथतयं गोहरोभूत्वा (पा) ११७.५८ | अथ देवाः समुनयो (पा) १०७.३१ | अथ नारदोगार्थं (पा) ११६.८२ | अथ प्रजामृजदेव (उ) २०२.१७ |
| अथते प्रेषिताः शूरावल (भू) ४३.२६ | अथत्यक्त्वा दिवं देवाः (उ) ६.२ | अथ देवो महादेवः (सु) १३.१३५ | अथ नारदोमथिलां (पा) ११६.१४ | अथ प्रतस्थे कैलामं (उ) ११.२६ |
| अथते ब्राह्मणाः सर्वे (क्रि) १६.२२ | अथत्वंगोमहातेजा दृष्ट्वा (भू) ३१.१ | अथ दैत्यपतिनिहतान् (उ) २५०.१७ | अथ नारायणं पदं (उ) २२६.५० | अथ प्रत्याश्रमं (उ) २०३.५ |
| अथते मंत्रिणो ज्योन्य (क्रि) ६.६८ | अथत्वंमूर्खलोकानां (क्रि) ६.८४ | अथ द्वादशधाशुद्धि- (पा) ७८.२ | अथ निश्चितमालोक्य (पा) १३.१८ | अथ प्रदक्षिणं कृत्वा (पा) ११४.६५ |
| अथते मुनयः क्रुद्धा वेनं (भू) ३८.३४ | अथत्वयाचविप्रेन्द्र (क्रि) १३.१५१ | अथ द्वारीप्रविश्यासाम् (ब्र) २.१० | अथ नूनं भक्षितव्यौ (क्रि) ६.१०६ | अथ प्रदक्षिणं चक्रं (पा) ११४.४८२ |
| अथते मुनयः क्रुद्धा वेनं (भू) २८.३१ | अथत्वयाद्विजश्रेष्ठ (क्रि) १३.१४८ | अथ द्विजोह्यभिगतः (पा) १०६.४८ | अथ पंचनदंगत्वानियतो (स्व) २४.३३ | अथ प्रबुद्धो भगवांस्तद (उ) ६०.१६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| अथ प्रभातेतान्सर्वान् (उ) | २१६.१८ | अथ ब्रह्मासुरैः सार्द्धं (उ) | ६०.१४ | अथ मध्याह्नकालो (पा) | ११२.४५ | अथ राजाजलमादाय (पा) | ११६.११६ | अथरामः सर्वे विचारया (पा) | ११६.२१८ |
| अथ प्रभाते भूपाले (पा) | २०.१ | अथ ब्रह्मासुरैः सार्द्धं (भू) | २०.४४ | अथमध्ये निसंराजा (पा) | ११६.६६ | अथ राजादशरथानुमतेन (पा) | ११६.६७ | अथरामस्तथैतिवाण (पा) | ११६.२०५ |
| अथ प्रभाते विमले (क्रि) | ५.६३ | अथ ब्राह्मणः समागत (पा) | ११६.१२७ | अथ मंत्रिणमाह्वयराज्य (उ) | २२१.२६ | अथ राजानम स्कृत्या (पा) | ११६.१०२ | अथरामस्तुवैदे (उ) | २४४.१ |
| अथ प्रभाते विमले (क्रि) | ६.१४० | अथ भक्तिं प्रवक्ष्यामि (पा) | ८५.४ | अथ मंदमदुस्मेरस्फुर- (पा) | ८६.१२ | अथ राजापिकापित्य (उ) | २०६.५२ | अथरावस्ते न सख्यम (पा) | ११६.१६५ |
| अथ प्रभाते विमले (पा) | ६०.१७ | अथ भरतादि समयेतो (पा) | ११६.२६० | अथ माद्यावसाने तु (उ) | २१६.४१ | अथ राजाराममादायव (पा) | ११६.५३ | अथरामः स्वयं विप्र (पा) | ११७.८१ |
| अथ प्रभाते संप्राप्ते दिने (भू) | १८.१३ | अथ भस्म समादाय (पा) | ११४.२८६ | अथ मायात्वाभावास्या (सु) | १३.१०१ | अथ राजावीरमणिः (पा) | ४०.२५ | अथरामानुजो गत्वा (पा) | ११.४८ |
| अथ प्रभाते सर्वे ते (उ) | २११.३४ | अथ भागवतं प्रोक्तं (पा) | ११५.६० | अथ मुख्यगणाविष्टो (पा) | १०६.१०६ | अथ राजावीरमणिः (पा) | ४०.४१ | अथरामानुजो वेगात् (पा) | ५०.१ |
| अथ प्रमुदितादेवी (उ) | २४२.६१ | अथ भागवतश्रेष्ठ (पा) | ७१.३४ | अथ मुनिह्यु पवेश्य (पा) | ११६.८ | अथ राजः समादेशात्तत्र (सु) | १६.३३५ | अथरामो द्विजैर्द्राणां (पा) | ११६.२६० |
| अथ प्रविश्य भवनं (पा) | १०५.४५ | अथ भागवता दूतानि (क्रि) | १५.५६ | अथ मुष्टिनिपाते नगं (पा) | ११४.३८५ | अथ त्रौराद्विज श्रेष्ठ (क्रि) | २३.३६ | अथरामो द्विजैर्द्राणां (पा) | ११७.१६८ |
| अथ प्रसूयसावालं (उ) | १६६.६० | अथ भागवता वृत्तानि (क्रि) | १५.५६ | अथ मुष्टि युद्धमन्यो (पा) | ११६.७५ | अथ राज्ञो मुहुर्मुहुनिः (पा) | ११६.६८ | अथरामो निशित (पा) | ११६.२८८ |
| अथ प्रहस्यमधवा (उ) | ५.१७ | अथ भागवतवचो (पा) | ११६.२५६ | अथ मृत्युवर्षं प्राप्तोयम (पा) | १०६.५१ | अथ राज्ञो व्यतीतायां (उ) | २१७.२६ | अथरामां मातरं पितरं (पा) | ११६.१५० |
| अथ प्राकारयुद्धं कर्तं (पा) | ११६.२५८ | अथ भुक्त्वा सुखासीन (पा) | ११४.३६३ | अथ मोहपरीतात्मास (उ) | १८४.४६ | अथरामः करं प्रादान्नो (पा) | ११७.१५२ | अथरामो मुनि प्राह (पा) | १०८.१३३ |
| अथ प्रेतान् ददर्शसौ (उ) | ६६.२२ | अथ भुविष्पाततं (पा) | ११६.२४३ | अथ मोहवृद्ध (पा) | ११६.७६ | अथरामं परमेश्वरोपि (पा) | ११६.२२५ | अथरामो लक्ष्मण (पा) | ११६.१३३ |
| अथ प्रोवाचतन्माता (उ) | २१४.३७ | अथ भूत्वाकुमारी (सु) | १३.३६ | अथयामः पाशपाणि (पा) | १०६.१०३ | अथरामं परमेश्वरोपि (पा) | ११६.२२५ | अथरामो वचः प्राह (पा) | १०५.५४ |
| अथ प्रोवाचराजेन्द्र (उ) | २१४.४८ | अथ भूपोमहातेजा (भू) | ४३.२५ | अथये वैष्णवाः (उ) | ८६.३४ | अथरामं प्राप्ते काले (पा) | ११६.२०८ | अथरावणाः पुरातन- (पा) | ११६.२८५ |
| अथ वंशे कृते परचादं (पा) | ११४.२५७ | अथ भूमिपतेस्त (उ) | २०३.११ | अथ योगवतां श्रेष्ठ (सु) | ४०.१ | अथरामं प्राप्ते काले (पा) | ११६.५८ | अथरावणं महाबलं (पा) | ११६.२८६ |
| अथ बहुघनघान्य (उ) | २५२.३७ | अथ आतास्य भरतः (पा) | ४.४५ | अथ राक्षसेषु तूष्णीं (पा) | ११६.१२६ | अथरामं प्राप्ते काले (पा) | ११६.२६३ | अथरुद्रं गोविन्दमिति (पा) | ११४.३६० |
| अथ विभीषणो (पा) | ११६.२८६ | अथ भक्तिकर्ता प्राप्तो (पा) | १०५.१६० | अथ राघव वनराजः (पा) | ११६.१७६ | अथराममपि पंचभि (पा) | ११६.२५६ | अथरुद्रं नमायां (उ) | १०२.३३ |
| अथ विभीषणो मदिरं (पा) | ११६.२८४ | अथ मगधाधिपः कंस (उ) | २५२.१ | अथ राजकुमाराः शत- (पा) | ११६.१३० | अथरामवचनमाकर्ण्य (पा) | ११६.१६६ | अथर्वगिरिसौमित्रम् (स्व) | ५८.३१ |
| अथ ब्रह्मादि देवानां (उ) | ८६.२१ | अथ मध्य निशाभागे (पा) | ७१.८७ | अथ राजमहिष्य (पा) | ११६.३८ | अथरामः शंकर (पा) | ११६.२२० | अथर्वगिरिसौमित्रम् (स्व) | ५३.४६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| अथपिः स्वाश्रमंगत्वा (पा) | १५.१ | अथवापाथिवमुतस्तस्यै (सु) | ३६.७२ | अथविचार्यंभीममाह (उ) | २५२.३ | अथवेत्र ऋर्भरपाणयः (पा) | ११६.१३२ | अथश्रीकृष्णोप्यर्जुन (उ) | २५२.४१ |
| अथलिङ्ग्य हरिर्वीरं (पा) | १०७.७६ | अथवापिडदानेन (उ) | २१३.६६ | अथविदेहेपुरतः (पा) | ११६.६५ | अथवेपथरो देवो (भू) | ५८.२१ | अथ श्री जैलगननं (पा) | ११४.४०७ |
| अथलुप्थकृतपूजा (पा) | ११०.३८ | अथवापूजयाविप्र (पा) | १०६.४७ | अथविद्यात्रस्तत्र (क्रि) | ६.७३ | अथवैजाननः कश्चित् (उ) | २२०.४२ | अथभुत्वारामचन्द्रो (उ) | ४४.११ |
| अथलैगंचशुश्रातवै (पा) | ११५.६७ | अथवापीर्णमास्यां (पा) | ८०.४७ | अथविप्रोविदित्वै (पा) | ११५.१२ | अथवैदेहोऽपिमिथि (पा) | ११६.६६ | अथमकलचराचर (उ) | २५२.४ |
| अथलोकान्प्रवक्ष्यामि (भू) | ८.४० | अथवाभित्तिमूलेस्य- (पा) | १०५.१२८ | अथ विवाहं कर्तुं (पा) | ११६.६० | अथवैश्वोममपि (उ) | २०४.११७ | अथ सधः समायाताः (भू) | ४१.४६ |
| अथलोकेऽवरीलक्ष्मी (उ) | २४२.१०० | अथवामकरेणासीं (पा) | ११२.१२१ | अथविश्वामित्रो धनुर- (पा) | ११६.१२८ | अथवैष्णवचित्तेषु (उ) | १६६.१ | अथ सज्जीकृतं दृष्ट्वा (पा) | ११६.१३६ |
| अथवक्ष्यामिगिरि (उ) | २२४.१४ | अथवामण्डले कुर्यान् (पा) | ८०.५६ | अथविश्वामित्रोऽस्मीमान (उ) | २२०.८ | अथ व्यस्तं समस्तैर्वा- (भू) | ६६.६ | अथ सत्वरयागत्वा (पा) | १०५.३८ |
| अथवर्ज्यं पुराणते (पा) | ११५.६१ | अथवामनकंगत्वात्रिषु (स्व) | २६.६८ | अथविष्यथिरेदेवाः (सु) | ४१.१=१ | अथगक्रादयोदेवा (उ) | १०६.१७ | अथ सत्त्वेनयतोगात्मान- (मु) | १०.१०४ |
| अथवर्त्यश्रमश्चांत (क्रि) | ७.२१ | अथवामम पुत्रोस्ति (पा) | ६८.७६ | अथविष्णुमुखादेवाः (उ) | १००.१० | अथगह्वान्समादध्मु- (क्रि) | १५.६७ | अथ संघर्षसम्भूतं (मु) | ३६.१४७ |
| अथवर्षसहस्रां (उ) | २४०.१ | अथवामम वाक्यं (क्रि) | ५.३८ | अथविष्णुमहातेजा (पा) | ११४.२४४ | अथगश्रुतलोन्मुखः (पा) | २५.३ | अथ मन्व्याम् समानाय (स्व) | ३६.१ |
| अथवसिष्ठं भावित (पा) | ११६.१४४ | अथवामित्रसदनं (उ) | २७.६ | अथविष्णुर्महेज (पा) | ११४.१५१ | अथगंभुसमाहूयप्राह (पा) | ११७.१३१ | अथ सपुर्णं कायं (उ) | १५.३६ |
| अथवसिष्ठादीन् (पा) | ११६.६३ | अथवायाकुमारीणं (सु) | ३४.१८१ | अथविहितविधानं (सु) | ३०.४८ | अथगान्धुपाल निहन्तं (उ) | २५२.१६ | अथमंभ्रमनस्तेपाम (पा) | ११४.१५८ |
| अथवसिष्ठोभस्मा (पा) | ११६.५४ | अथवालोकपालाः (पा) | ११४.३७ | अथवीक्ष्यमहाग्निजान् (पा) | २५.१ | अथगंभुगणाव्यक्षो (उ) | १०१.६ | अथ मंसृत्यमापूर्वं (उ) | १०६.१० |
| अथवागच्छकाशीशं (पा) | ११४.४३७ | अथवाविप्र मुखे (उ) | २०१.६४ | अथवीरशिरोरत्न (पा) | २३.४३ | अथगंभुभिनयुंभ- (उ) | ६७.१६ | अथ मंहरणाथाय (क्रि) | २.४ |
| अथवागिरिजायैच (पा) | ११२.७१ | अथवा शंकरदेवंरुद्रं (उ) | २३८.२८ | अथवीरोमहाज्वाला (पा) | १०७.२१ | अथगंभादयोदैत्या (उ) | १८.३७ | अथ सप्रपयद्वृतं (उ) | १०.६ |
| अथवातक्षमापेतं (पा) | १०४.८८ | अथवासर्वदापुत्रयो (स्व) | ३१.११६ | अथवीरोमहासर्पमपीप (पा) | १०७.२८ | अथगंभादिभिर्दैत्यैः (उ) | १८.८ | अथ सप्ततत्त्वान्दध्वा (पा) | ११४.३६६ |
| अथवातनयं भक्तं (क्रि) | ११.४६ | अथवासर्व वेदानां (पा) | ११४.४३८ | अथवृक्षैः शिलाभिश्च (क्रि) | ७.८७ | अथगंभायुर्वैरिणः (उ) | १७.३२ | अथ सत्तत्त्वतीतेषु (उ) | २००.४१ |
| अथवात्यजशस्त्राणि (उ) | २४२.१६२ | अथवास्वतंत्रोमृगी (पा) | ११६.१६५ | अथवृंदापिभत्तरिं (उ) | १०३.२५ | अथगंभोगणेशच (उ) | १०१.८ | अथस रामोऽधनुर्जय (पा) | ११६.१३५ |
| अथवानैतदेवंहिसर्वपां (सु) | ३५.८० | अथवाक्लिपुःस्थित्वा (पा) | ११२.३० | अथवृंदाकरादेवी (उ) | १०३.२ | अथशैवाः समायाता (पा) | ११०.४७ | अथसर्वदिननीत्वा हरि (पा) | २२.१ |
| अथवापंचदश्यां (सु) | ३४.३८१ | अथविक्रमपुत्रोऽसौता (क्रि) | ५.१७ | अथवैतसिकांगच्छेत (स्व) | ३२.२१ | अथशोणः शोभितां (पा) | ११२.१४३ | अथसर्वपिसंगम्य (उ) | ६१.६ |

श्रीषष्ठमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अथसर्वेश्वरोविष्णु (उ) | २४०.३६ | अथ सुग्रीव आह (पा) | ११६.१६१ | अथ स्वविभूषणो (पा) | ११६.१२४ | अथाक्षय्यमहादेवो (पा) | ११४.१६४ | अथांतरादयां सूक्ष्म (सु) | ३६.१४२ |
| अथसस्वानतामाप्य (पा) | १०६.१०१ | अथ सुग्रीवः पलायितो (पा) | ११६.१६८ | अथ स्वागतसंतुष्ट- (पा) | १४.१ | अथाजगामहृष्टा- (उ) | २४२.११७ | अथांतरिक्षेवागुच्छेरिति (क्रि) | ३.६० |
| अथ सस्मार वै देवान् (भू) | ६२.१६ | अथ सुग्रीवः पश्चिमा- (रा) | ११६.२३६ | अथ हनूमज्जावन्तौ (पा) | ११६.२४३ | अथाजगामविप्रिषि (उ) | २०७.१८ | अथान्यत्तत्रवैलिंगं (स्व) | ३५.१ |
| अथ सहचरो बाल (पा) | ११६.५२ | अथ सुग्रीवभाहू रामः (पा) | ११६.२१२ | अथ हनूमानखिलं (पा) | ११६.२४० | अथाजगामसिद्धयर्थं (सु) | ८.७६ | अथान्यत्तप्त कृच्छ्र- (उ) | १२६.११७ |
| अथ सागरोत्तरणाय (पा) | ११६.२१६ | अथ सुग्रीवराज्ये (पा) | ११६.२०६ | अथ हनूमानगमल्लंका (पा) | ११६.२१६ | अथातः समुनिः श्रेष्ठो (ब्र) | १२.५१ | अथान्यत्ते प्रवक्ष्यामि (उ) | २३.२८ |
| अथ सागिरिजा देवी (पा) | ११२.११६ | अथ सुग्रीवश्चिह्नं (पा) | ११६.१७१ | अथ हनूमानाह प्रविश्य (पा) | ११६.२११ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (स्व) | ५७.१ | अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि (उ) | २६.१ |
| अथ सा चास्तेवर्गो (भू) | १०२.६६ | अथ सुग्रीवसत्वर- (पा) | ११६.१५८ | अथ हंडोरथस्थापि (भू) | ११६.२३० | अथातः संप्रवक्ष्यामि (उ) | ७८.१ | अथान्यदपि निवर्त्ति- (पा) | ११२.१ |
| अथ सातद्विमानस्था (उ) | ८६.२० | अथ सुन्दरिकांतोर्थं (स्व) | ३२.२२ | अथ हंडोरथस्थापि (भू) | ११५.१३ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (उ) | २१.१५१ | अथान्यदूपासांथाय (मृ) | ४०.५० |
| अथसातद्विमानाग्रयं- (उ) | १०७.११ | अथ सुललित गोप- (पा) | १०३.४३ | अथा कथोपिपत्त- (पा) | ११७.४८ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | ३६.५८ | अथान्य स्मिन्दिनेगत्वा (क्रि) | १७.२३३ |
| अथसाध्वसूनुर्भूषणा (पा) | ११६.२१ | अथ सूर्योधनुरादाय (पा) | ११६.१२१ | अथाकथोभाष्यो (पा) | ११७.३४ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.४४ | अथान्यानिनुतीर्थानि (स्व) | २४.१ |
| अथसानवमेमासिसु- (मृ) | १३.४० | अथ सैन्यं समाहूय (पा) | १०.२१ | अथाकथोवीक्ष्यमुनि (पा) | ११७.३० | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथान्यान्मानमानुषा (मृ) | ३.१६७ |
| अथ सानिगंते पुत्रे (उ) | २१३.३८ | अथ सोमित्रिरागत्य- (पा) | ६७.१ | अथाकर्णशिव (पा) | १११.५० | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथान्यामपि वक्ष्यामि (मृ) | २१.३०५ |
| अथ सापथिगच्छन्ती (क्रि) | ४.७५ | अथ स्तुतोमुनिवरं (पा) | ११२.१३६ | अथागच्छतिकाले (उ) | २०६.५३ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथान्यामोवाहन (पा) | ११६.७१ |
| अथ साप्राहभर्तारं (उ) | १६६.६३ | अथ स्तुत्वास्तवैदिव्यैः (क्रि) | २३.५१ | अथागच्छत्सौधत- (पा) | ११६.७ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथान्विष्ययोगाजानं (मृ) | ८.१०७ |
| अथ साभूषितांसाध्वी (पा) | १०६.८७ | अथ स्थित्वानिराहारो (क्रि) | ६.५६ | अथागतंतुशत्रुघ्नं (पा) | ४३.१८ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथापरेजनपदादत्रिणा (स्व) | ६.५३ |
| अथ सामूच्छिते वामु- (पा) | १०६.३२ | अथ स्नात्वामहानद्यां (पा) | १०५.६० | अथागतमुनिश्रेष्ठं (पा) | ७१.६० | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथापश्यमहान्मानं (स्व) | १०.६ |
| अथ सायाह्नसमये (उ) | २४५.३३० | अथ स्नात्वामहानद्यां (पा) | १०५.५७ | अथागत्यभुजंगोसा (उ) | २११.३२ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथापश्यमहान्मानं (स्व) | १०.६ |
| अथ सालंघनान्यष्टा- (उ) | २२०.३६ | अथ स्नापयितुं देव (पा) | ११४.३५७ | अथागत्यमहाराजः (पा) | १३.५८ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथापश्यमहान्मानं (स्व) | १०.६ |
| अथ सास्वेच्छयानारी (क्रि) | १५.१६ | अथ स्पंदनमारुह्य (उ) | ५.५ | अथागत्यमहाराजः (पा) | १३.५८ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथापश्यमहान्मानं (स्व) | १०.६ |
| अथ सीता तया कृत्वा (पा) | ११७.१७२ | अथ स्वमंदिरे (पा) | ११४.२३४ | अथागत्यमहाराजः (पा) | १३.५८ | अथातः संप्रवक्ष्यामि (भू) | २६.५० | अथापश्यमहान्मानं (स्व) | १०.६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|---------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| अथाब्रवीत्तदाविष्णं (सृ) | १४.६६ | अथासौनारदः स्वर्गाद (भू) | १०७.१ | अथे तरेषुमासेषु (पा) | १००.३५ | अथैप्रनमपरः कामोभूयो(सु) | १६.२५८ | अथोपेनयननामां (उ) | २४६.१ |
| अथाभवदनावृष्टिः (सृ) | १६.२२५ | अथासौप्रणिषिवैश्य (क्रि) | ४.२४ | अथेन्द्रबलयोर्युद्धमं (उ) | ६.१४ | अथैनानामयमित्याह (क्रि) | ४.६८ | अथोभारद्वाज मुनिः (पा) | ११७.६१ |
| अथाभवद्भीषणभोम (सृ) | १२.३६ | अथसौप्राप्त कालश्च (क्रि) | ७.४२ | अथेन्द्रस्तुनभोवाणी (उ) | १५१.४ | अथैवंतुष्टचित्तेय (उ) | १६६.१६ | अथोमाकां स्थमादाय(पा) | ११७.१३३ |
| अथाभिकलनार्थं (पा) | ११६.६७ | अथासौ ब्राह्मणश्रेष्ठो (क्रि) | १७.१३१ | अथेशभोनिनंत्य (उ) | १०.५० | अथैवंविदये वोगे मुनि (पा) | १०७.६३ | अथोर्जत्रितिनः सम्यग (उ) | ६५.१ |
| अथाभिष्टं महदंबुजा (सृ) | २०.१८ | अथासौभगवान् विष्णु (क्रि) | २०.६४ | अथेशवचनास्तोपित (पा) | १०६.१०६ | अथैवमागतं दृष्ट्वा (उ) | ११.५० | अथोलूकस्यभवनं (सृ) | ३७.६७ |
| अथाभिविक्तरामंतुष्टुवः (पा) | ५.१ | अथासौभगवान् विष्णु (क्रि) | २२.१५ | अथेश्वरजटाजूट (उ) | १०.३६ | अथोक्त ऋषिणा रामो (पा) | ११.३७ | अथोवाच प्रमुग्धा (उ) | १५.१० |
| अथाम्यर्च्य परात्मानं (क्रि) | १३.१५४ | अथासौमातरं पुण्यां (भू) | ११७.१७ | अथेश्वरो वानर (पा) | ११७.२४ | अथोगरुडमारुह्य (उ) | २०४.१३५ | अथोवाचागतज्ञानः (उ) | १६७.३६ |
| अथायमित्याहवचः (क्रि) | ४.६३ | अथासौयोवराज्येन (क्रि) | ५.८ | अथैकप्राकारनिर्जित (पा) | ११६.२३८ | अथोग्रनतपोदैत्यो (पा) | ७.१ | अथोपमिनरा (उ) | २४४.१ |
| अथायातः स्वयं मृत्युः (पा) | १११.२६ | अथासौसर्वगोविप्र (क्रि) | ३.६४ | अथैकदातस्यपुरे जैमिने (क्रि) | ६.३ | अथोच्चैः कालपुरुषो (उ) | १८३.३६ | अथोस्थिनमिवप्राज्ञः (क्रि) | ११.३३ |
| अथामुषःक्षयाच्चायं (उ) | २८.३१ | अथासौमुमहाभागो (उ) | १६७.३४ | अथैकदादशरथो (पा) | ११६.१४० | अथोच्चेलोमशस्तत्र (उ) | १२६.२६२ | अदत्तं चैवयत्किञ्चि (उ) | २५३.१०६ |
| अथायोच्यावासिनो (पा) | ११६.२६३ | अथसोहृषितस्तस्य (क्रि) | १६.१४ | अथैकदाधराधारं (पा) | १.३ | अथोज्ज्वलंशतसहस्र (पा) | ११६.११२ | अदत्तान्यपिपुण्यानि (उ) | ११२.६ |
| अथास्यानुजात्युष (उ) | ६८.१२ | अथास्मिन्नंतरेगौतम (पा) | ११४.१०० | अथैकदानिशोथेतु (उ) | २२२.६ | अथोत्कटंवलंदृष्ट्वा (उ) | १८.६१ | अदत्त्वापाणिजानानि (उ) | २४६.१०३ |
| अथारुह्यहृदस्यांगं (उ) | १०.३० | अथास्यास्त्वंगते (पा) | ७२.१११ | अथैकदाभीमकैगनाम्नो (क्रि) | ४.८७ | अथोत्थायसमागत्य (उ) | १८४.५० | अदत्त्वाग्निघेतयो (पा) | ८६.२६ |
| अथारोहत्तदाव्यग्र (सृ) | ३७.१४६ | अथाहृगतसंपत्ति (क्रि) | ६.२४ | अथैकदाश्यामवाला (ब्र) | ११.८ | अथोत्थिततमेवामो (उ) | १०६.१४ | अदत्तपात्रमन्तेन (उ) | २०४.१०७ |
| अथावरुह्यतोवृक्षा (उ) | २०.११ | अथाहृपिनुराकर्ण्य (उ) | २०४.१२१ | अथैकस्तुरगस्तत्र (क्रि) | ५.७७ | अथोत्थिततोहरितोय (पा) | ११४.१५६ | अदर्शनगतदेवंभास्करे (सृ) | १४.५६ |
| अथावस्त्वयनदोपोस्ति (सृ) | १६.१७८ | अथाहृकपिशार्दूलो (पा) | ११४.१७३ | अथैकाकोसभूदेवो (क्रि) | १२.७१ | अथोदतिष्ठद्वदना (उ) | ६.३६ | अदात्तदाक्रतोरात्रो (पा) | ६७.३० |
| अथाश्रमेषु सर्वेषु (सृ) | १६.३०७ | अथाहृजाम्बवान् (पा) | ११६.१२ | अथैतंब्राह्मणशिशुं (उ) | २५२.४८ | अथोपदेष्टारमपि (पा) | २२.१६१ | अदानंनक्षिपेन्माघंमर्वं (उ) | १२५.८३ |
| अथासौकमलाकांतो (क्रि) | २२.२१ | अथाहृशंकरोदेवी (पा) | ११४.२४१ | अथैतस्य प्रयागस्य (उ) | २२०.७७ | अथोपवने दिन मेकं (पा) | ११६.१५१ | अदानंनतपोभानिह्य (उ) | १२५.८८ |
| अथासौकह्योगत्वा (पा) | १०४.१५६ | अथाहृस्तत्सुतावाक्यं (पा) | १०८.२७ | अथैतेषांतुवृक्षाणां (उ) | २७.१३ | अथोपहतं द्रव्यं (पा) | ११७.२१८ | अदाह्योच्छेद्योह्य (उ) | २२६.३६ |
| अथासौतांसमालोक्य (क्रि) | ४.८८ | अथाहृचक्तीराजानरा (पा) | ११७.१८८ | अथैनमनुयास्यति (उ) | २०६.२६ | | | अदितिरजनगर्भासपि- (सृ) | ३०.५० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| अदितिर्दितिर्दनुः काला (सु) | ४०.७३ | अदेयदेयमित्याह अस्याः (भू) | ३६.३४ | अद्यत्वयात्रविभ्रातो (उ) | २१४.४६ | अद्यमेवब्रह्महृत्पोत्य - (पा) | ३७.४५ | अद्याग्नित्रिदशाः सर्वे (क्रि) | १७.२५६ |
| अदिनिर्दितिर्दनुकाला (सु) | ६.३४ | अदेयथवाकार्यम- (उ) | ८८.३० | अद्यत्वानाशयिष्यामि (सु) | ४१.२६६ | अद्यमेसफलजन्म (स्व) | ४५.२० | अद्यापिदेवलोकेषु (सु) | १.५३ |
| अदितिश्चदितिश्चैव (उ) | २३०.६ | अदेयनास्ति वैलोके- (सु) | १४.५७ | अद्यधन्योस्मिन्समुतः (पा) | २६.२७ | अद्यमेसफलजन्म (क्रि) | १७.२४७ | अपिननिवर्तते (सु) | ३.१६१ |
| अदितेः कश्यपाज्जाता (सु) | ४३.३४१ | अदेयवाप्यपेयं वातर्धेव (स्व) | ५६.४३ | अद्यधन्योस्म्य (उ) | २४०.२४ | अद्यमेसफलजन्म (उ) | ७७.३० | अद्यापिपातकेदृष्टि (क्रि) | २०.२८ |
| अदित्याद्यास्तयासर्वा (सु) | १७.१११ | अदेवतं विजानीयाद् (सु) | ६.७७ | अद्यपक्षीद्र मारुह्यभया (उ) | २१६.४४ | अद्यमेसफलजन्म (स्व) | ३१.१६४ | अद्यापिपितृपात्रेषु (सु) | ६.१४५ |
| अदित्यास्त्रं महाप्रज्ञ (भू) | २४.११ | अदध्वर्यवे प्रतीचीतु (सु) | ३४.२२ | अद्यप्रभृति ते सौरे (उ) | ३३.३६ | अद्यमेसफलं जन्मदिनं (सु) | २.७० | अद्यापि वर्तते तीर्थे (उ) | १४५.१६ |
| अदीनवदनाः शूराः (स्व) | ३१.४४ | अदध्वर्याणां तदस्यानां (सु) | ३४.२७ | अद्यप्रभृति पूजाः (उ) | १५१.३२ | अद्यमेसफलं जन्मपूर्णाः (सु) | ३०.१०६ | अद्याभ्यासस्य विद्यानां (पा) | १०४.१३ |
| अदीर्घमेहनं दीनं पुरुषं (पा) | ११०.७७ | अद्विमं दापि शुद्धचर्यम् (त्र) | २१.६ | अद्यप्रभृति पौलस्त्य (पा) | १०४.१६० | अद्यमेसफलं वृत्तमद्यसे (पा) | १०४.१४ | अद्याहं तां वनचरीस्ता (पा) | ५८.५६ |
| अदृश्यतमहाज्वालाव्योमिनि (स्व) | ३५.७ | अद्भुतं गीतमाधुर्यं (पा) | ६६.१६ | अद्यप्रभृतिवानरत्व (स्व) | १५.६४ | अद्यमेसफलं शास्त्रस्य (पा) | ३७.३४ | अद्याहममपुत्रस्य (पा) | २५.१३ |
| अदृश्यतसमागत्य (उ) | १६०.१४ | अद्भुतस्य वनस्यांतं (सु) | १५.८६ | अद्यप्रभृति मे विप्रास्तीर्थ (उ) | २१२.४७ | अद्ययन्मे गुणावामं वर्त (पा) | ५८.७२ | अद्यैव तस्यादैवेन भविष्य (क्रि) | ५.६७ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतांगमपूर्वं (पा) | ७८.८२ | अद्यप्रभृति युष्माकं धर्मं (सु) | १६.१६ | अद्यगुहं महद्भानि मुरा मुर (पा) | ३६.३६ | अद्यैव त्वसमायाता (उ) | ४६.८५ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति ये लोका (उ) | २३३.४ | अद्यराज्यं मया प्राप्तं (पा) | ३७.८ | अद्यैव दिवगे राजन (उ) | ४१.४७ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२३ | अद्यत्रैत्रिपुल्लोकेषु (सु) | ३०.१०५ | अद्यैव पुत्रकलं भ्रातृन्- (पा) | ८८.१८ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्य वैवांसरे विष्णोः (उ) | १६२.१३ | अद्यैव रात्रौ जानक्या (पा) | ५८.८७ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्यध्वोवाहनिष्यामि (त्र) | १४.२७ | अद्यैव गन्धो नष्टा (सु) | ११७.११ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्यप्रभृति पूजां (उ) | १५१.३२ | अद्यैव हि न मंदोवांसः (सु) | ४६.२८ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्यस्थित्वा निराहारः (उ) | ५८.२४ | अद्यैव वाहं त्रिष्यामि (भू) | ४३.८७ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्यापि कमंगानेन (क्रि) | ६.१०० | अद्याक्षमं सन्निभया (उ) | १४५.५३ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्य पित्रविधानं (पा) | १०४.१६५ | अद्याक्षीन्मूपिकां (उ) | ३०.७५ |
| अदृश्यत्वान्ममेत- (पा) | ८२.६६ | अद्भुतानां प्रसूतिस्त्वन्ते (सु) | १४.१२३ | अद्यप्रभृति वेदास्तु (उ) | ६०.२४ | अद्यापि यस्तदेहोस्ति (उ) | १८६.५३ | | |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| अद्रि राजमहाशैलमेहं (सृ) | १६.१४३ | अधर्मेषुरसस्तस्य (पा) | ८७.५८ | अधिष्ठितं सदाचारैः (उ) | १८६.७ | अधुनामांवरत्नेनवृणु (क्रि) | ५.१०३ | अध्यात्मगमंसारं- (उ) | १२८.२२३ |
| अद्वैतेशिवदेहाचर्वत (पा) | ६२.६४ | अधर्मोच्चारणं यत्र (क्रि) | २६.६ | अधित्यचैकमध्यायं (सृ) | २.५२ | अधुनालक्षणं ब्रह्मिभक्ते- (पा) | ८५.२ | अध्यात्मज्ञानं कोशित्यं (उ) | १२६.३६ |
| अद्वैतवासनामत्यामल (उ) | १८४.३१ | अधर्मोर्ध्वरूपश्च (उ) | १३४.६ | अधीत्यद्विजमध्येच (स्व) | ३६.६७ | अधुनाश्रोतुमिच्छामि (उ) | १.४ | अध्यात्मविद्यानिरतैर्यं (उ) | ५४.१६ |
| अधनाअपितेघन्या (पा) | ७३.४८ | अधः शिखरं तद्रक्ष (पा) | १०७.७४ | अधीत्यविधिवद्विद्याम् (स्व) | ५४.३१ | अधुनाश्रोतुमिच्छामि (उ) | २२३.७ | अध्यापनाद्याजना- (उ) | ११२.१३ |
| अधमंतद्विजानीयात्सर्वं (सृ) | ३६.५८ | अधः स्नाच्चतुरशीति (स्व) | ३.२६ | अधीत्यविधिवद्वेदान् (उ) | २०७.८ | अधुनाश्रोतुमिच्छामि (उ) | १७४.२६ | अध्यापनेचाध्ययने (पा) | ११५.२ |
| अधमस्त्वममतोधिगे (सृ) | ४१.२६४ | अधस्तात्प्लक्षवृक्षस्य (सृ) | १८.१८७ | अधीत्यवेदशास्त्राणि (उ) | २४६.४ | अधुनाश्रोतुमिच्छामि (उ) | १७५.२ | अध्यापनेनत्परमादरेण (क्रि) | ३.६८ |
| अधमाधममाख्यातं (पा) | १०५.१३५ | अधिकः कोपरस्त (भू) | ६६.१४० | अधीत्य सर्वं वेदांश्च (उ) | २३८.१८ | अधुनासत्वरंवीर (उ) | १६.३८ | अध्यायंश्रद्धयायुक्तये (त्र) | १.३४ |
| अधमाधमवृत्तीनां- (पा) | १०५.१३६ | अधिकंतुतथादेयं (पा) | ११५.५५ | अधीयीत तथा नित्यं (स्व) | ५३.८६ | अधुनैवैपतरुणः (उ) | ६६.२६ | अध्यायस्वविशाना- (उ) | १८५.४ |
| अधरेदंतभागेषु कक्षायां (भू) | ५३.१६ | अधिकंशु शुभेदेवी (भू) | ५.८१ | अधीयीत शृचो नित्यं (स्व) | ५३.४७ | अधुनैवैपतरुणः (सृ) | ३७.८२ | अध्यायोयं पुराऽन्मातां- (उ) | १७५.५२ |
| अधरोत्तरधारेणज्जैतद्वर्णं (सृ) | १.३४ | अधिकारविशेषेण (पा) | १०५.११६ | अधोयोनिगता (उ) | ३६.१३ | अधुनैवैपतरुणः (उ) | २२४.४४ | अध्यास्ते पुन्यव्याघ्र (स्व) | २७.६० |
| अधर्मचारिणीदुष्टापति (भू) | ५०.४४ | अधित्यकामुसंगीतः (उ) | १२५.१०१ | अधुनाकर वैकिंवात्स्वदा- (पा) | ४.२० | अधोक्षजायद्दये (उ) | २४६.६३ | अध्यास्ववेदिकामेकाम- (उ) | १८४.२५ |
| अधर्मवह्मलाचैवतस्मातां (सृ) | १६.२५३ | अधिदैवंचतददैवमाधि (सृ) | ३६.१७ | अधुनाकर्ममंत्रैः (उ) | १२६.४६ | अधोदन्ते नमस्ते (उ) | ३३.३३ | अध्वराऽऽनृत्यस्नात (उ) | १२५.१० |
| अधर्मवीज भूतंतत्तमो (सृ) | ३.१३६ | अधिमहेमे च सं प्राप्ते (उ) | ६२.३ | अधुनाकर्त्तृकिंवात्स्वदा (पा) | ४.२० | अधोऽधः स्फटिकश्चे (उ) | १२५.६६ | अननिरनिकेनस्त्रामं (सृ) | १५.३६० |
| अधर्मवृद्धिलपनाधर्मं (क्रि) | २६.२४ | अधिभासे तु पतिते (उ) | ६४.११ | अधुनाकर्म मंत्रैः (उ) | १२६.४६ | अधोभारेण गुरुणा (उ) | २०३.६ | अनगिनिकेनोवा (स्व) | ५८.३३ |
| अधर्ममास्थितं पुत्रायु (भू) | १०.१६ | अधिभासे तु संप्राप्ते (उ) | ६२.६ | अधुना जातमात्रोहं (भू) | ६६.४१ | अधोमुखं नु गमंस्थो (भू) | ८.२ | अनङ्गं कुमुदाचैवाद्यं (पा) | ७४.१०६ |
| अधर्मयुक्तं वाक्यम (भू) | १.३६ | अधिवासन सूत्राणि (क्रि) | ५.१६८ | अधुना तेंगमगेन (उ) | १३.४२ | अधोमुखाविपच्यतेयत्र (उ) | ११४.१८ | अनङ्गलोभमाधुयु (पा) | ७७.२७ |
| अधर्मसुरसस्तस्य (भू) | ११.२० | अधिवास विहारविधानु (सृ) | ४३.३३ | अधुना तेंगमुक्तैः (पा) | ५४.२४ | अधोमुखोदीनरवोग- (पा) | ५८.५ | अनङ्ग इतिलोकेषु (सृ) | ४३.२६३ |
| अधर्मस्य फलं सूत श्रुतं (भू) | ६८.१ | अधिष्ठातृजगोपालो (पा) | ६६.४३ | अधुना तेंगवरत्नस्य (उ) | २२३.४८ | अधोयोनिगतानां च (उ) | ५८.३ | अनङ्गवत्यायुतस्तथा (सृ) | २०.२८ |
| अधर्मणवृत्तोलोके (स्व) | ४१.११ | अधिष्ठानंहितद्विष्णोः (स्व) | ३१.११७ | अधुना तेंगमाधमाहात्म्यं (उ) | १२५.२ | अधोरक्षतुविश्वात्मा (क्रि) | ११.८२ | अनङ्गशरतप्लाभिः (सृ) | २३.७६ |
| अधर्मणापिपापेन वतिता (भू) | ६.१४ | अधिष्ठितं जवैश्चारु- (उ) | १८५.७ | अधुना तेंगमाधमाहात्म्यं (उ) | १२६.१ | अध्यतिष्ठद्रणाकांक्षी (सृ) | ४०.१७२ | अनङ्गजितगौरीशोरति (उ) | ७१.२७१ |

श्रीषष्ठमहापुराणम् :: श्लोकोनुक्रमणी

१६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------|--------|---------------------------------|---------|----------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अनघः स्नानमात्रेण (उ) | १२८.१५६ | अनंतरसमाजगमु- (पा) | १०४.३१ | अनन्यमानसोभूत्वा (क्रि.) | ११.६६ | अनयापितुभक्त्या (भू) | ३.२८ | अनर्घ्यमौक्तिकाभासं (उ) | २२६.१०० |
| अनघं त्वघहंतारं (भू) | ८७.१२ | अनन्तरहिकायाणि (पा) | १०५.६६ | अनन्यशरणां चतुर्थ- (उ.) | २२३.२८ | अनयाभवतोभक्त्या (क्रि) | ७.१२० | अनपितं तथा विष्णोः (उ) | २५३.११३ |
| अनघानैव वै ह्याज्याः (भू) | ४१.२८ | अनन्तरमुखास्त्रेण (उ) | २५०.२० | अनन्य शरणो नित्यं (पा) | ८२.३३ | अनयाभवसुप्रीतः (क्रि) | २५.२० | अनर्हमनवेद्यं पत्रं (पा) | ११४.२०५ |
| अनघ्ययनकालो (उ) | २०२.२३ | अनंतरूपिणीलक्ष्मी- (क्रि) | ४.७१ | अनन्यस्पर्शनात् (उ) | २२६.६२ | अनयाभार्यासादं (भू) | ३.६४ | अनर्हमानुषोच्यं (उ) | २४६.८६ |
| अनघ्यायोरुद्यमाने (स्व) | ५३.७० | अनंतवसुदेवस्य (उ) | १३२.१ | अनपत्त्रोभवद्व्योम (सु) | १३.१३३ | अनयाभाव बुद्ध (उ) | १३२.१५३ | अनल्पधनसारतुनावृत्त (पा) | १०५.७ |
| अनन्तकल्याणगुण (उ) | २२६.१३ | अनंतविद्याप्रभवो (उ) | ७१.१७५ | अनभ्यासहताविद्याहृतो (स्व) | २६.३१ | अनयारंभया सादंभावां (भू) | ११६.५ | अनसूयानिवात्रेः किलोपासु- (पा) | २.३७ |
| अनन्तः कंठभारिश्च (क्रि) | १७.१०७ | अनंतशाखाकलिताः (भू) | ६६.३ | अनभ्यासाहताविद्या (उ) | १२६.२३ | अनयालोक्य ते रूपं (भू) | ५८.२० | अनाख्येयमपित्रह्ण (पा) | ६७.२६ |
| अनन्तकोटि ब्रह्मांड- (पा) | ६६.४ | अनंतः श्रीपतिरामो- (उ) | २२४.२० | अनभ्यासहृतचित्तश्च (सु) | १५.३७१ | अनयाविद्ययादैर्ग्या (उ) | २४३.२८ | अनागतमतिक्रान्तवर्तमानं (स्व) | ७.२ |
| अनन्तगुणगंभीरोधीरो (उ) | २५४.४३ | अनंतः सर्वदायातु (उ) | ७३.६ | अनमन्भ्रातरस्तस्य (पा) | ११७.१८१ | अनया विना सज्जोवेच्च (भू) | ४६.२५ | अनागतमनीतं च (उ) | ८०.७१ |
| अनन्तचरितेतुभ्यं (उ) | १८६.३२ | अनंतस्याप्रमेयस्य (सु) | ४३.१८१ | अनमर्षविषं सर्वेत्थस्त (सु) | १३.२२८ | अनयव्यवधानत्र (क्रि) | ६.१३३ | अनागमांचभूतानां (उ) | १२७.१४५ |
| अनन्तदवाप्नोति (भू) | ३६.१२७ | अनंतांशः सप्तमो (उ) | २४४.२६ | अनमातारितोगच्छ (सु) | १७.१६ | अनयाशोषितः कायो (भू) | ६७.८६ | अनातप्रपदेगु- (पा) | ११४.२१३ |
| अनन्तं तत्र संवेष्टय (ब्र) | ६.३ | अनंतायमनस्तुभ्यं (क्रि) | ११.६७ | अनमित्रसुतोनिष्पत्ति- (सु) | १३.७२ | अनयासदृशीनान्या (उ) | २०३.३६ | अनातुरस्य देवस्य (उ) | १६.३ |
| अनंतंचैव विज्ञेयं शूकरे (उ) | ११६.११ | अनंताय ह्यशेषाय चानघाय (भू) | ३२.४३ | अनमित्राच्चसंजज्ञेवर्णि (सु) | १३.६७ | अनयोः पुण्यद्योश्च (उ) | १२६.२७३ | अनाथं दुःखितं विप्रम् (त्र) | २४.३७ |
| अनन्तविहंगेद्रादि देवता (उ) | २५३.७५ | अनंतालोकमाता- (उ) | २२७.२६ | अनमित्राह्वयोयोर्वैविल्या- (सु) | १३.६६ | अनयो रतिदारुणमन्यो (पा) | ११६.२६१ | अनाथं दुर्गमं विप्रं (स्व) | १६.३५ |
| अनन्तफलदः स्वर्गो (सु) | १४.१६८ | अनंतोवासुकिश्चैव तक्षक (सु) | ३१.१३ | अनयः स्यंदनोयत्र (पा) | ५.३६ | अनयोर्विजयीकः स्याद्र (सु) | १२.८१ | अनाथं ब्राह्मणयन्तु (क्रि) | २०.१७७ |
| अनन्तमूर्तिरायातिस्वयमे (पा) | ७२.१३३ | अनन्यकारणयोगी- (पा) | ८४.३५ | अनयाकान्तयासादं (भू) | २.२० | अनचिनोतिथिगंहाद (पा) | ६.५१ | अनाथं विकलं दीनं (सु) | १८.८४ |
| अनंतरं कामबीजादध्या- (पा) | ७२.१५ | अनन्यगतयोनार्यो (क्रि) | ५.१८२ | अनयाकीर्तिनाम (पा) | ११२.७० | अनचिनोतिथिर्यस्य (क्रि) | २५.४३ | अनाथं विकलं दीनं (भू) | ६६.१८ |
| अनन्तरं दैत्यगुरुः (उ) | ४.६ | अनन्यगतयोमर्त्या (उ) | ७१.६८ | अनयाचितबुद्ध्याहि (सु) | ४२.१६ | अनन्यब्रह्मरुद्राद्या- (उ) | २५५.६० | अनाथस्य द्विजार्थं (स्व) | ३१.४५ |
| अनंतरं ब्राह्मस्य ह्युप (उ) | ६६.६६ | अनन्यदेवताभक्तैरनन्य (उ) | २५३.२३ | अनयातु शुभं कर्म (उ) | १०६.२० | अनयोर्ब्राह्मणस्यै (सु) | १६.२४५ | अनाथानांच वंधूनां (क्रि) | १७.१५१ |
| अनन्तरं शीतरश्मि (उ) | २३२.५० | अनन्यमानसं नित्यं (उ) | ८०.११६ | अनयापापसंघातो (उ) | २१३.५० | अनन्यमुक्तिकाभास (उ) | २२६.६७ | अनादिदेवाच्युत शेषर (सु) | ३४.६७ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अनादिनिघनः श्रीमान् (उ) | ७१.३७ | अनाशनंतुयः कुर्यात् (स्व) | २१.३० | अनिरुद्धश्चभगवान् (उ) | २२६.३७ | अनुग्रहाय विप्राणां (सृ) | १५.१५१ | अनुतिष्ठत्वमप्येतत् (पा) | ८२.५१ |
| अनादिनिघनस्यैव (स्व) | २.३१ | अनास्तिक्यप्रभावेन (भू) | ६४.५५ | अनिरुद्धः सर्वजीवो (उ) | ७१.१३७ | अनुग्रहेण भवनाताम् (उ) | १८५.३१ | अनुत्तानोत्तानपाणिः (उ) | २१४.११ |
| अनादिनिघना (उ) | २३६.१५ | अनाहतमतिधीरः (भू) | १०३.१३४ | अनिरुद्धस्तुपीतामो (उ) | १२०.५५ | अनुग्रहेण भूतानां (उ) | ८०.१३६ | अनुत्पन्नऋतुर्वपितां (पा) | १०४.६७ |
| अनादिनिघनोदेवः (उ) | ८२.२७ | अनाहारोर्चयद्विष्णु- (पा) | ७२.६६ | अनिरुद्धोयथात्रे (उ) | २४५.३१३ | अनुग्रहोऽस्ति देवश्च (क्रि) | १७.२४० | अनुदधूतैरुदधूतैर्वज्रैः (सृ) | २०.१४३ |
| अनादिनिघनोदेवः (पा) | ६८.५३ | अनाहारो ह्यहंपापि (उ) | ७७.२३ | अनिरुद्धोऽपियोद्धुमायांत (उ) | २५०.१८ | अनुग्रहोऽस्मिन्नेव- (उ) | १८४.१७ | अनुद्धाहितायाः कम्पाया (भू) | ८५.६४ |
| अनादिनिघनोघाता (भू) | ८१.३७ | अनिच्छन्त्याः समायोगे (पा) | ११६.२७४ | अनिरुद्धोवाण पुत्र्या (उ) | २५०.६१ | अनुग्रहो ह्यहदेवय (पा) | ६७.११ | अनुद्धिग्नमनायस्तु (उ) | ३७.७० |
| अनादिनिघनोविष्णुः (उ) | २५५.१७ | अनिच्छयापिकमलं (क्रि) | १३.१६६ | अनिर्देश्यवपुः सर्वे (उ) | ७१.१५० | अनुच्छ्वाममहास्वासं (उ) | ७८.५० | अनुद्धिग्नस्तपोनिष्ठो- (उ) | १२८.१६३ |
| अनादिमध्यांतवपुर्विश्व- (उ) | २३२.३ | अनिच्छयापिगंगायां (क्रि) | ८.१०६ | अनिर्लोत्तासितो (पा) | ६६.१७ | अनुजग्मुर्महात्मा (उ) | २४४.७५ | अनुध्यातोऽसिर्वनून (सृ) | १४.१३० |
| अनादिपराद्योजरूपधारी (पा) | ५.१० | अनिच्छयापिगंगेयं (क्रि) | ७.१२६ | अनिर्वर्तिकागतिस्तस्य (स्व) | १३.३१ | अनुजग्मुर्विनिष्कांतं (उ) | २४५.२६३ | अनुनीतोला- (सृ) | ८.६ |
| अनामयं च पप्रच्छ (भू) | ११७.१० | अनिच्छयापिप्लुता (क्रि) | २३.१७३ | अनिर्वर्तिकागतिस्तस्य (स्व) | १८.११६ | अनुजग्राहदेवांस्तान् (सृ) | १५.१०२ | अनुपाकृतमांसम् (स्व) | ५६.२३ |
| अनामयवीतशोकानित्यं (स्व) | ३.५१ | अनिच्छयापिदह- (पा) | ८७.८ | अनिर्वेद्यमुखादिभ्यो (पा) | ४७.४२ | अनुजज्जेततोऽनोक्तमीप्सि (उ) | १७६.१६ | अनुपोष्यत्रिग्राणि (स्व) | ११.१८ |
| अनायासेन भगवान् (उ) | ४२.५ | अनिच्छयापियः कुर्यात् (ब्र) | १५.५६ | अनिशंभूतिदायाच- (उ) | १२६.२७१ | अनुजानाभवत्कृष्णा (सृ) | १३.१२२ | अनुप्रविष्टिः सर्वे राजा- (पा) | ६८.२० |
| अनायासेनयैनात्र (स्व) | ३१.१६१ | अनिच्छयापियः कुर्यात् (क्रि) | २३.४७ | अनिशंभूतिदायाच- (उ) | १२६.२७१ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २००.४५ | अनुभूतिरिकांक्षी- (उ) | १७६.७ |
| अनायासेन हस्ते हि (भू) | १२.३१ | अनित्यतात्रभावानां (भू) | ६६.२०७ | अनुगच्छतिशूद्रोहि (ब्र) | १८.५ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |
| अनाराधितगोविंद (स्व) | ६१.६२ | अनित्यं कुटिलं (उ) | २२६.६४ | अनुगच्छतिशूद्रोहि (ब्र) | १८.५ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |
| अनाराधितगोविंद (स्व) | ६१.६३ | अनित्यं जीवितमिदं (पा) | ६२.६६ | अनुगृह्णीष्व देवैः (उ) | ८०.५७ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |
| अनाराधितगोविंदायेन (उ) | ७८.१४ | अनित्यत्वाच्च सर्वं (पा) | ८२.३ | अनुगृह्णीष्व देवैः (उ) | ८०.५७ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |
| अनाराध्यहरिभक्त्या (पा) | ८५.३८ | अनित्यचंददंडैश्च- (उ) | १२६.८ | अनुग्रहं ग्रहायांति करणं (उ) | २५४.५१ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |
| अनाराध्यहृषीकेशं (पा) | ६७.८० | अनिदायाः शिवापस्व- (स्व) | ६.५६ | अनुग्रहायमेहिंश्चि दुःख (सृ) | ४३.१५८ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |
| अनावृष्टिर्भास्कराच्च घोरः (सृ) | २.३० | अनिरुद्धतं स्तोत्रं (उ) | १५६.१२ | अनुग्रहाय विप्राणां (सृ) | १५.१५४ | अनुजानी हिमांतात (उ) | २१४.४१ | अनुभूयतस्तत्त्वं (पा) | ६०.५१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: बलोकानुक्रमणी

१८

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|----------------------------|--------|-------------------------------|--------|----------------------------|--------|
| अनुरक्तोद्दृष्टीकेशगर्भं (उ) | २३८.११ | अनेकजन्माजितपुण्यतोये (पा) | ६६.१२५ | अनेकरथ साहस्रः (पा) | ६५.१० | अनेकेनिहतास्तत्रगजा- (पा) | ४१.३ | अनेनदिव्यरूपान्या (स्व) | १५.३५ |
| अनुरागातस्य वीरस्य (भू) | २८.६१ | अनेकतिलकश्रीभिः (पा) | ६७.६३ | अनेकराज कोटिभिः (पा) | ६८.१० | अनेकेपतितावीरा- (पा) | ६१.१६. | अनेनद्वीपरिप्रेषिता (भू) | ५४.२० |
| अनुरागेणतलोकाः (सु) | ३८.३ | अनेकद्रव्यप्लुपं च पंच (पा) | ११४.३४० | अनेकरूपरूपाय (उ) | ८०.१४३ | अनेकेपतितावीरा (पा) | ६४.६८ | अनेनपरदाराश्चवला- (पा) | ३०.५६ |
| अनुल्लङ्घ्यश्चित्रगति (उ) | ७१.१३५ | अनेकधासमापृष्टो (पा) | १८६.३० | अनेकरूपनाभ्य वनितो (पा) | १०६.२५ | अनेकेपाण्यश्चिन्ता (पा) | ४२.४६ | अनेनवदुनासार्धं (उ) | १५.१४ |
| अनुवर्तनमेतेषामनो- (स्व) | ५१.३३ | अनेक नरगन्धर्वा (पा) | ६८.१४ | अनेकवतुसंभारैः (पा) | ६७.६१ | अनेकेपुष्पितायत्रपाद- (पा) | ६६.१४५ | अनेनमुग्धाराजेन्द्र (भू) | ३८.२१ |
| अनुष्ठायतदुत्पन्नं (उ) | १७७.२७ | अनेकनरनारीभिः (पा) | ६८.१८ | अनेकलोकान्विचरन्स्वरा (सु) | २७.६० | अनेके मोचिताः (पा) | ५३.२१ | अनेनमोहाभावेन क्रीडा- (भू) | ४८.२७ |
| अनुष्ठेयं यथापत्र (उ) | १६४.४८ | अनेक नागग्रहमीन- (सु) | ३१.६७ | अनेक वक्रतनयो (सु) | २४.२८ | अनेके सगराद्याश्च- (पा) | ५६.१२ | अनेन रूप वणद्विधा (स्व) | १५.३८ |
| अनुशिष्यभयाद्यातः पूर्वं (सु) | १३.२६६ | अनेक पक्षिसंघुष्टं भ्रमरै (पा) | ४७.६ | अनेकवर्षपर्यंततेन (उ) | १३५.२ | अनेकैर्भटसाहस्रैर्वने (भू) | ४३.४६ | अनेनवनवासैरानस्तु (सु) | ३३.५१ |
| अनुस्यूताशिवा- (उ) | १८६.२४ | अनेकपाप युक्तोसि पुण्यं (पा) | १०६.१५ | अनेकविधिवार्यैः (पा) | ५७.५७ | अनेकैश्चादुभिर्देवीदेवेन (सु) | ४४.१६ | अनेनविधिनाकृत्वा (क्रि) | ११.२३ |
| अनृतं वश्यतेकांत (पा) | ८८.३२ | अनेक प्राणिरूपाश्च- (सु) | ४३.४६२ | अनेकवीरवस्याभिः (पा) | ५३.२६ | अनेकनर्मणा युक्ताः (स्व) | ४६.२५ | अनेनविधिनाचैव (उ) | ६६.१२ |
| अनृतं वश्यतेकांत संसारस्थ (भू) | १२.३५ | अनेक प्राणिहत्याकृत्- (पा) | २०.४७ | अनेकशास्त्राविततश्चतु (सु) | १८.१८६ | अनेनकर्मणाराजन (क्रि) | ३८.३३ | अनेनविधिनास्थान् (सु) | २१.१७० |
| अनृतं नमयाप्रोक्तं (सु) | १७.७८ | अनेक बाण व्यथितः (पा) | ६४.२५ | अनेकसूयसंकाशं (उ) | २४२.८८ | अनेनकर्मणाविप्र (पा) | ८६.६६ | अनेनविधिनाऽथाद्घ (सु) | २१.३१२ |
| अनृतं शयथेकिवा- (ब्र) | २६.२ | अनेकबाणसंविग्रान् (पा) | ४१.६ | अनेकानीहृशास्त्राणि (उ) | ८०.५६ | अनेनकर्मणाविप्रनिधन- (भू) | १७.५५ | अनेनविधिनाशरीरः (क्रि) | २५.४२ |
| अनेक कंदरदरीगुहासत्त्व (सु) | १८.२८१ | अनेक बाणानि (पा) | ६२.२५ | अनेकाश्चर्यनिलयं (सु) | १५.४ | अनेन कारुणानुद्गंगा (सु) | ३०.१८१ | अनेनविधिनाम (उ) | २२३.३७ |
| अनेककोटिसूर्य- (उ) | २२७.६१ | अनेक बाणसाहस्र- (पा) | ५२.३६ | अनेकेकसूर्यनिलयं (सु) | ४६.४७ | अनेनैकिकृतकर्म (ब्र) | २.२३ | अनेनविधिनायन्तु (स्व) | ३६.१११ |
| अनेककुसुमापीडानाना (सु) | ४३.४६५ | अनेक भूषणोपेतः (उ) | १८५.१४ | अनेकेकसूर्यनिलयं (सु) | ४६.४७ | अनेनकृतमात्रेण (सु) | ३४.३२२ | अनेनविधिनायन्तु (सु) | २१.२८६ |
| अनेकजन्मविप्रेन्द्र (क्रि) | १७.२३६ | अनेकमणि माणिक्य (पा) | ६६.६२ | अनेकेकसूर्यनिलयं (सु) | ४६.४७ | अनेनचाहंसारजा (ब्र) | २२.३६ | अनेनविधिनायन्तु (सु) | २१.२८७ |
| अनेकजन्माजितपातक- (पा) | ८६.३३ | अनेकमंत्र कोटीशः (उ) | ७१.१७६ | अनेकेकसूर्यनिलयं (सु) | ४६.४७ | अनेनचोपदेशेनमुखं (सु) | ३४.७६ | अनेनविधिनायन्तु (उ) | १२४.४६ |
| अनेकजन्माजितपातक- (पा) | ६६.२७ | अनेकमुनिवृंदाणां (पा) | २०.८ | अनेकेकसूर्यनिलयं (सु) | ४६.४७ | अनेनचोपदेशेनमुखं (सु) | ३४.७६ | अनेनविधिनायन्तु (सु) | २२.१६२ |
| अनेकजन्माजितपातक- (पा) | ६०.४७ | अनेकरत्नसंभारैः (पा) | ६७.२६ | अनेकेकसूर्यनिलयं (सु) | ४६.४७ | अनेनचोपदेशेनमुखं (सु) | ३४.७६ | अनेनविधिनायन्तु (सु) | २१.१२३ |

श्रीपद्ममहापुराणम् !! श्लोकानुक्रमणी

१६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|--|--------|-------------------------------|---------|
| अनेनविधिनारयस्तु (सु) | २१.१४२ | अनेनान्नं सदाभुक्त (पा) | ६८.६४ | अन्तकाले तु संप्राप्ते (उ) | १६५.४२ | अन्तरिक्षेपुष्करं (सु) | ३१.४ | अंतर्वन्तीतुर्वंतभार्या (पा) | ५७.५१ |
| अनेनविधिनारयस्तु (सु) | २२.५८ | अनेनापहृतंन्या (पा) | ८७.७६ | अन्तकालेनयंत्येते (उ) | ५१.३३ | अन्तरिक्षेभ्रमंनौतो दान- (क्रि) | २.४८ | अंतर्वन्तीमुकुंदस्यनिबंधं (उ) | २१०.२ |
| अनेनविधिनारयस्तु (सु) | २२.१३२ | अनेनापि न मे कार्यं (भू) | ५१.१५ | अन्तकाले प्रयात्यात्मा (भू) | ३७.२६ | अन्तरेवमहानंद परितृप्तैव(पा)७१.५० | | अंतर्वन्ती स्वकेस्था- (पा) | ५७.४८ |
| अनेनविधिनाराजन् (उ) | ४८.२३ | अनेनापिपथयास्येस्वर्गं (भू) | ४५.४ | अन्तःपरं वक्ष्यामि (उ) | १६०.१ | अन्तर्गतस्यवेदानां (पा) | १०४.२१ | अंतर्वन्दीयज्ञानामृत्वि- (सु) | १७.३२३ |
| अनेनविधिनाराजन् (उ) | ६३.२१ | अनेनापि शरीरेण गंतु (भू) | ३६.७ | अन्तः पुरजनास्सर्वे (उ) | २४४.२ | अन्तर्गतो लोकमयः सदैव (भू) | ६८.५६ | अनिमार्णुर्दशांगानि- (पा) | ८१.३२ |
| अनेनविधिनाराजन् (पा) | ४०.५४ | अनेनापि हि दोषेण (भू) | ३४.१२ | अन्तः पुरं तु देवस्य (उ) | २२८.१७ | अन्तर्ग्राह्यगणकूरंखलानां(उ) १२५.३३ | | अतिकृत्वावुन्दुदानां (पा) | ११४.६६ |
| अनेनविधिनाराम (उ) | ४४.३५ | अनेनाहंस समानीता (सु) | १६.१७० | अन्तःपुराणि सर्वाणि (सु) | ३८.४३ | अन्तर्द्धानिगतागंतु प्रवृत्ता(सु) १८.२४८ | | अन्तेचावमृथंकुर्याद- (उ) | २५३.१०० |
| अनेनविधिनाराम (सु) | २१.२८४ | अनेनाहंस समानीता (क्रि) | ५.१७६ | अन्तः पुरेनिवेद्याधवान (उ) | १२५.५३ | अन्तर्द्धानिगतामांयां (उ) | १०२.३१ | अन्ते विष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १०.२५ |
| अनेनविधिनाराहं (सु) | ६.१२१ | अनेनैवतुमंत्रेण (उ) | ६६.७८ | अन्तः प्रविष्टंत्वत्पुत्रं (उ) | १८५.६० | अन्तर्द्धानिगतालक्ष्मी (उ) | २३१.१२ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १४.२७ |
| अनेनविधिनारसर्वं (सु) | ६.१२ | अनेनैवविधानेनक्रियतां (पा) | ७४.४२ | अन्तः प्रविष्टंत्वत्पुत्रं (उ) | १८५.६० | अन्तर्द्धानिगतालक्ष्मी (उ) | २३१.१२ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १४.२७ |
| अनेनविधिनारसर्वभासि (सु) | २१.२६६ | अनेनैवयथाशुभ्रगच्छ (पा) | ७४.७५ | अन्तः रांगुष्ठदेशिन्यै- (स्व) | ५२.१७ | अन्तर्द्धानिगता विप्र (भू) | ७७.३३ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | २३.१७७ |
| अनेनविधिनारसर्वं (सु) | ७.२१ | अनेनैवयथाशुभ्रगच्छ (पा) | ७४.६६ | अन्तरान्तरक्रमणि (पा) | ८०.४ | अन्तर्द्धानिगते विष्णो (भू) | १२४.१ | अन्ते विष्णुपुरंगत्वा (त्र) | ६.६ |
| अनेनविधिनारसर्वं (सु) | २१.२६६ | अनेनैवाद्यंदानेन (उ) | ३६.१४ | अन्तरात्मा यथा चाने- (भू) | १२०.२६ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (त्र) | १५.७ |
| अनेनशरमुख्ये (उ) | २४२.१६७ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरात्मा यथा चाने- (भू) | १२०.२६ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |
| अनेनशरमुख्ये (पा) | १०६.१३ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरायशतं च क्लेतो (उ) | १७८.२२ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |
| अनेन समरे युद्धेकरिष्ये (भू) | ४३.७६ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरायशतं च क्लेतो (उ) | १७८.२२ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |
| अनेन सर्वं दुःखानि (उ) | ७८.८३ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरायशतं च क्लेतो (उ) | १७८.२२ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |
| अनेनसुमहाल्लाभोम (पा) | ४६.२२ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरायशतं च क्लेतो (उ) | १७८.२२ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |
| अनेनस्वामिनाजन्म (क्रि) | ५.१३१ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरायशतं च क्लेतो (उ) | १७८.२२ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |
| अनेनहारकेणाथ (त्र) | २.१४ | अनेनोत्पादितादेवा दानवा (भू) | ६.७ | अन्तरायशतं च क्लेतो (उ) | १७८.२२ | अन्तर्द्धानिगते ब्रह्मन् (पा) | ८३.१०८ | अन्तेविष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १३.१८ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

| | | | | |
|---|---------------------------------------|---------------------------------------|---|---------------------------------------|
| अन्धकाराधिकाघोरा- (भू) ३६.५० | अन्नसर्वगुणोपेतपानं (पा) १५.४४ | अन्नप्रदातुस्तथापि (भू) ६६.२० | अन्नेनतेनसंप्रीताकोटि (सृ) १६.३३ | अन्यतीर्थं समांगगांयो- (स्व) ३१.७४ |
| अन्धस्ववचनं सर्व (पा) ११२.११४ | अन्नं सुदर्शनोत्सवाग्र्यं (उ) ७१.२८८ | अन्नभूषणमुक्ताश्च (उ) १२६.२२६ | अन्नेनधार्यतेविश्वं (उ) २६.४ | अन्यतीर्थच्छित्तगुण (उ) १६०.२ |
| अंधीकृतासाकामेन (क्रि) १५.१४ | अन्नतोय प्रदानेषु (क्रि) २१.१३३ | अन्नमन्त्रमपिक्वापि- (क्र) २१.११६ | अन्नैकस्थ प्रदानंस्थ (भू) ६४.५३ | अन्यतीर्थेकृतं पापं (क्रि) ८.१२ |
| अधेनाकुलितालांका- (उ) १३२.१० | अन्नदः प्राप्नुते (उ) २६.८ | अन्नमिच्छत्यसौ तीव्रः (भू) ६४.७७ | अन्नोदकपयोमूलफलं- (पा) ६.५० | अन्यतोयः समासाद्य (ब्र) २४.६ |
| अधेवदष्टिरहिता (सृ) १८.४१८ | अन्नदस्यशुभाशुभाः (उ) २६.१५ | अन्नमेवयतोलक्ष्मी- (सृ) २१.१२२ | अन्नोदकेसदात्यक्त्वा(पा) ६.४२ | अन्यत्किंते प्रवक्ष्यामि (भू) ६७.११४ |
| अंधोनमूलेदत्त्वातुपिंडं (स्व) १८.११७ | अन्नदाताश्रियं स्वेष्टाम् (स्व) ५७.४६ | अन्नमेववदत्येत ऋषयो (भू) ६४.५६ | अन्यपश्यस्ववैत्वंच- (भू) १२.७४ | अन्यत्किं प्रच्छेसे ब्रूहि (भू) ६२.१३ |
| अन्नंचतुर्विधंस्वादुरसं (क्रि) २२.१२२ | अन्नदानं पयोदानम- (पा) ११.४५ | अन्नममेजायतांसद्यः (सृ) ३४.३७० | अन्यंरथसमास्थाय (पा) ५२.२३ | अन्यत्कीडाभवं- (पा) ७४.१८७ |
| अन्नंचनोबहुभवेदति- (सृ) ६.११४ | अन्नदानं परं विप्राः (सृ) ३५.६ | अन्नमिजायतांसद्यः (क्रि) २२.४७ | अन्यस्यंवनमारुह्य (पा) ४२.४३ | अन्यत्किंचिन्नवाद्या- (उ) १३२.१४४ |
| अन्नं च सदधिकीरं- (सृ) ६.१५२ | अन्नदानं प्रयच्छति (भू) ६४.५८ | अन्नहिप्राणिनांप्राणाः (पा) ११७.४० | अन्यचित्तंपरित्यज्य (क्रि) १४.७ | अन्यतीर्थं प्रवक्ष्यामि (उ) १५३.१ |
| अन्नं तु बहुशोदेय धनं (पा) ६.६ | अन्नदानं महाराजये (क्रि) २०.५४ | अन्नादिकंततोदत्त्वा (ब्र) ११.८२ | अन्यच्चैव सती पुत्रं- (भू) ६६.८८ | अन्यत्रकान्चानादिपो (स्व) ५४.५ |
| अन्नं तु ब्राह्मणे पूतं (उ) ६६.११ | अन्नदानं विशेषेण कदा (भू) ६७.४४ | अन्नादिकं तत्रभुक्तं- (पा) १८.२६ | अन्यच्चते प्रवक्ष्यामि- (भू) १३.३१ | अन्यत्रचाक्षेत्रेगवतंतां (पा) ११४.११५ |
| अन्नं दत्तं कथंयाति (सृ) ६.७४ | अन्नदानं शितोब्रह्मन् (ब्र) २४.४५ | अन्नादिदानं विप्रैर्मयो (भू) ६७.१८ | अन्यच्चपुष्कलस्याः (पा) ३८.२५ | अन्यत्रदग्धभिर्वै- (उ) ६१.२७ |
| अन्नं दद्याद्विशेषेण (उ) ६५.७ | अन्नदानप्रदः सर्वमिहा- (भू) ६६.१६ | अन्नाद्भुवतिभूतानि (उ) ५७.१८ | अन्यच्चश्रूयतादोषः (उ) १२७.१३८ | अन्यत्रयमुनापुण्यं (स्व) २६.७७ |
| अन्नं पयः फलं पुष्पं (भू) ३६.५४ | अन्नदानप्रभावेण (क्रि) २०.५३ | अन्नाद्यनृत्यगीतानि (पा) ६५.६६ | अन्यच्चश्रूयतां विप्रये(उ) १२५.१२२ | अन्यत्रयोगज्ञानान्यां (स्व) ३३.४१ |
| अन्नं ब्रह्मयतः प्रोक्तमन्नं(सृ) २१.१२१ | अन्नदानात्परं नास्ति (भू) ६४.५० | अन्नानियच्छतात्यक्त्वा (क्र) २०.५६ | अन्यच्चश्रूयतां विप्रये(उ) १२५.१२२ | अन्यत्रविपयानां (भू) ६७.६६ |
| अन्नं ब्रह्मरसो विष्णुः (पा) ७६.४८ | अन्नदानेनयेलोका (उ) २६.१६ | अन्नाभावान्ममाद्या (ब्र) १३.७८ | अन्यच्चैव प्रवक्ष्यामिभूत्व- (भू) ५०.१७ | अन्यत्रनुत्तमांगगाध्यान् (स्व) ३३.३७ |
| अन्नं भुंजीतसत्कृत्य (उ) ५१.७ | अन्नदायोनरोविप्र (ब्र) २४.४२ | अन्नाथिनमनुश्राव्यंभोज्यं (सृ) ३४.२१० | अन्यच्चैव प्रवक्ष्यामि- (भू) ५०.२१ | अन्यत्रापिप्रगर्ज- (उ) २२.३८ |
| अन्नं वस्त्रं तथा गावो (उ) ५१.५३ | अन्यदाः सुखिनोनि (उ) ३२.१३ | अन्नाथीलभतेह्यन्तंस्मरण(सृ) १७.२२ | अन्यच्चैव प्रवक्ष्यामि- (भू) ३६.८४ | अन्यत्रे मुप्रियं वाने (भू) ७६.२६ |
| अन्नं वारिद्विजश्रेष्ठ (ब्र) २४.४१ | अन्नपुण्यंश्वरीदेवी (पा) ११७.१३२ | अन्नाहारणं संपुष्टं (भू) १२०.३१ | अन्यजन्मकृतं कर्म (भू) ८८.२२ | अन्यत्स्थानं प्रयाहिस्व (भू) ४६.३५ |
| अन्नं शाकादिकं शुद्धं (पा) ११७.६६ | अन्नप्रकारान्विविधान् (सृ) १७.२६६ | | अन्यजन्मनिभविता (सृ) १४.७७ | अन्यभावं न जानाति (भू) ११३.१३ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अन्यथा कर्मतच्चिन्त्यं (भू) | ६४.२६ | अन्यभुक्तांविशिष्टयत्तु (क्रि) | ५.७६ | अन्यानिदेवनीयानि (उ) | २२०.६ | अन्यासां युवतीनां (उ) | १२७.७४ | अन्ये पुनर्मंगवतो (पा) | १५.२३ |
| अन्यथा कुस्ते पापी (भू) | ६७.३० | अन्यमेवमुपायं तु द्रव्या- (भू) | १७.४६ | अन्यानि यानि पुण्यानि (भू) | २०.५० | अन्यस्मिन्निवसि (उ) | २०३.२७ | अन्ये ब्रह्मर्षयः शांता- (उ) | ८०.११० |
| अन्यथा चिंत्यते कर्म (भू) | ८१.६० | अन्यमेवमुपायंतुद्रव्या- (पा) | ८६.६० | अन्यानि सुमहातेज (उ) | ८०.२८ | अन्यूनधिकमेवतुव्रतं (उ) | ११६.३७ | अन्येभ्योऽपिसमादाय (क्रि) | २०.१०७ |
| अन्यथा न भवेत्साध्यं (भू) | ७६.३५ | अन्ययोरिति प्रयातिस्म (भू) | १०५.४१ | अन्यान्यपिचक्षुःत्वानि (पा) | ११०.२० | अन्यूनधिकमेवंतुव्रतं (उ) | १२३.२५ | अन्येमदन्वयेयैवैरित्यं (उ) | १७७.३४ |
| अन्यथानिरयंयति- (उ) | १२६.५६ | अन्यस्तुराष्टपालश्च (सु) | १३.५६ | अन्यान्यपि पुराणा (पा) | ११५.८७ | अन्ये च ऋषयः पुण्याः (भू) | ६०.२१ | अन्येरग्युपहारश्च (क्र) | ६.५७ |
| अन्यथा पठते योहिनिर्यंच(भू) | २८.१२ | अन्यस्त्रियो यथालोके (भू) | ८२.४ | अन्यान्यपिपयशाशक्ति (सु) | २६.४६ | अन्ये च कपयः शूरानि(उ) | २४२.३६६ | अन्येशूरांमहेत्वासाः (पा) | २५.२३ |
| अन्यथा मंद बुद्धीनां (उ) | ८०.८७ | अन्यस्त्रीसंप्रवेशस्तुत्व (भू) | ४४.४१ | अन्यांश्चैव दुराचारा (उ) | ३८.३० | अन्ये च दानवादित्यास्तेजो (भू) | ६.१३ | अन्येषांकाकथा (उ) | ३४.८५ |
| अन्यथामामपिबलाद्- (सु) | ३१.१०४ | अन्यस्मैदीयतांभद्रे (स्व) | १४.३५ | अन्यांश्चघातयामास (भू) | २३.११ | अन्ये च दानवाः सर्वे- (सु) | ३०.१३३ | अन्येषां च महाभागाः (स्व) | ६.६ |
| अन्यथामांसमासाद्य- (सु) | १८.४२६ | अन्यां पापसमाचारां प्राप्य (भू) | ११५.७ | अन्यांश्चदानवान्योरा (भू) | ११४.१४ | अन्ये च वांश्वाः सर्वे (भू) | १०.४६ | अन्येषां चैव देवानांदत्तः (सु) | ६.७ |
| अन्यथा लिङ्यते कांता (भू) | ६६.८७ | अन्यागमनशंकायामनः (पा) | ६०.५८ | अन्याभक्ष्यन चाज्ञाति (सु) | ४७.२८ | अन्ये च राक्षसाः-(पा) | ११६.२४६ | अन्येषांचैव लोका (उ) | १.३१ |
| अन्यथा विपुलं दुःख (सु) | ३७.३५ | अन्याज्ञातं तुयदिचेत् (पा) | ११२.६ | अन्यायवर्ती दुष्टात्मा (उ) | ४६.१७ | अन्ये च वीरा बहवः (पा) | ४४.३६ | अन्येषानुनरेन्द्राणां (उ) | ३२.२६ |
| अन्यथा सुहृदं कार्यं (क्रि) | ५.११८ | अन्याथातत्वेमोदस्थ्या- (पा) | ६०.१६ | अन्यायेन हूताभूमि (उ) | ३२.३४ | अन्येचापि न जानति (पा) | ७१.४४ | अन्येषां लुब्धकानामे (भू) | ४२.१५ |
| अन्यथा सेनासमेता (पा) | ११६.१६२ | अन्यादर्शं समावीक्ष्य (भू) | ८६.१८ | अन्यायेषु रता यस्य- (भू) | ३६.११६ | अन्ये चैव तु राजानो (भू) | ६४.४६ | अन्येषांलोकपाला (उ) | ५.४० |
| अन्यथाहनुमन्मुख्या (पा) | ५०.५४ | अन्यातपिद्विजावत्स (उ) | १८१.२६ | अन्यायोऽयं महाभाग- (भू) | ४६.२८ | अन्येदमव्रतलोका- (सु) | १६.३३० | अन्येषांसर्वतीर्थानां (भू) | ८५.२२ |
| अन्यदेवः पूतिवचोव्य (पा) | ११५.६० | अन्यातपिमहिषादेवत्स (उ) | ११८.१६ | अन्यायोऽपार्जितं वित्तं (क्रि) | १०.४१ | अन्येद्दृष्ट्वाः किराता- (पा) | ८१.२० | अन्येषां य वक्ष्याणां (भू) | २७.२६ |
| अन्यदेवं प्रवक्ष्यामि यदि (भू) | १६.२१ | अन्यातपिमहादेवधर्मा (उ) | ११८.१६ | अन्यायोऽपार्जितं वित्तं (क्रि) | २०.५२ | अन्येद्वे तु स्त्रिये तात (भू) | ६३.२६ | अन्येषामपि कावर्त्ता (भू) | ३७.५२ |
| अन्यदेशंगमिष्यावः (त्र) | २०.१६ | अन्यातपिमहाभागा (पा) | ६५.४८ | अन्यायोऽपार्जितं वित्तं (क्रि) | २०.५२ | अन्येन क्रियते क्लेश- (भू) | १२.१११ | अन्येषामपि केषां (पा) | ११४.४०५ |
| अन्यभक्तिं परित्यज्य (उ) | १३२.२८ | अन्यातपिमनुन्सर्वा (पा) | ६७.२६ | अन्याश्चदेव्यः प्रवराहो (सु) | १८.६४ | अन्येन क्रियते क्लेश- (भू) | १२.११२ | अन्येषु तेषु नष्टेषु (भू) | २३.१२ |
| अन्यंमजविशालासि (भू) | ३.१६ | अन्यातपि सुतानपि (पा) | ४६.२४ | अन्याश्चयोपितः (पा) | ७५.३७ | अन्ये न तेजसादेवानु (सु) | ४.४४ | अन्येषु नागलोकेषु (भू) | १०३.१० |
| अन्यभावं न जानाति(भू) | ११३.१३ | अन्यानिचमहाराज (स्व) | ३७.१ | अन्याश्चयोपितः (पा) | ७५.३७ | अन्येपिमदद्विपस्ते (उ) | ६७.१० | अन्येष्वपि कार्येषु (क्रि) | १५.६६ |
| | | अन्यानि च सुकर्माणि (स्व) | ६२.१८ | अन्याश्चयोपितः (पा) | ७५.३७ | | | | |
| | | | | अन्यासां च सुदिव्यानां (भू) | १०१.३५ | | | | |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-----------------------------|---------|----------------------------|--------|----------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| अन्येष्वेव नरकेषु- (भू) | ५२.२४ | अन्योन्य कथया मासु (क्रि) | ६.१३८ | अन्येष्टु देवतातत्त्वं (उ) | २५५.११ | अपत्यनिमदीयानिमा- (सु) | ८.४२ | अपराध विनामात्वं (उ) | १२६.१५५ |
| अन्येसंबंधयुक्ता (पा) | ८६.३६ | अन्योन्यकाल (उ) | १२६.७० | अन्सावतीवशोभते (भू) | १०२.५६ | अपत्यरपिहीनानां (सु) | १७.३०० | अपराधविमुक्तोहि (ब्र) | २५.२० |
| अन्ये संबंध संयुक्ताः (भू) | १७.२५ | अन्योन्यभाषणं (पा) | ११४.१४६ | अपकीर्तिभवेन्मह्यं (सृ) | ३०.१४३ | अपघ्याताचपितुमि (सृ) | १.३८ | अपराधशतैर्युक्तव (उ) | १३२.१४७ |
| अन्ये संवेवताराःस्युः (भू) | २५२.६६ | अन्योन्ययुद्धयंतोर्यु- (पा) | ११६.१८२ | अपक्तिपावनदीदेवी (पा) | १६.१५ | अपघ्यातास्तु कृष्णे (सृ) | ४.८० | अपराध सहस्राणि क्रियते (पा) | ७६.४५ |
| अन्ये स्त्रियो महाभाग (भू) | ६३.३२ | अन्योन्यचुंबना- (पा) | ७७.१८ | अपक्वं भुक्तमाहारं- (भू) | ६६.१७ | अपक्वस्तस्त्वयाऽऽदेशो (भू) | ७८.२० | अपराधसहस्राणि (उ) | ११८.५४ |
| अन्यैः परिजनैर्नित्यै (उ) | २२८.५४ | अन्योन्यतौ समिलितौ (पा) | २४.२१ | अपक्वं भुक्तमाहारं- (भू) | ६६.१७ | अपक्वस्ताविंशतश्च (सृ) | ४१.६४ | अपराधसहस्रंस्तु (उ) | ८३.७ |
| अन्यैः पुण्य सहस्रंस्तु (क्रि) | २२.३७ | अन्योन्य मर्चयंत- (सृ) | १५.३६ | अपक्वमिश्रकालांच (पा) | ११७.६८ | अपमानात्तपो वृद्धिः (सृ) | १६.३२० | अपराधस्तथा विष्णो (पा) | ७६.४४ |
| अन्यैरपि यथाशक्ति- (पा) | १०६.६० | अन्योन्य मसिघातेन (पा) | १०७.५० | अपक्षपविनाशमां (सृ) | २.८५ | अपमानितस्तुनद्यायै (सृ) | १६.३१२ | अपराधयथाजन्म- (उ) | १२७.१०६ |
| अन्येनैदाहयेदुगात्रं (उ) | २२४.५१ | अन्योन्यमिश्रतावेदा- (उ) | २३०.२६ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपनानेन कुप्येतसमाने (सृ) | १६.३१० | अपराधविद्युदंडः (सृ) | ३७.७ |
| अन्येनानाविधैः पुण्यैः (पा) | १०१.२४ | अन्योन्यमुष्टिनि (उ) | १८४.६३ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपनानेन कुप्येतसमाने (सृ) | १६.३१० | अपराधविद्युदंडः (सृ) | ३७.७ |
| अन्यैर्वारिगरूपै- (पा) | ८०.४६ | अन्योन्याधातविम- (पा) | २६.५४ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमार्जनकंदिव्यं (उ) | ७६.१ | अपराधामराजेन्द्र (उ) | ५०.३ |
| अन्यैश्च धूपयामास (पा) | ११४.५७ | अन्योन्याधिष्ठितामेतु (सृ) | १६.३४८ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्यैश्च बहुभिर्देवै (उ) | १७४.१७ | अन्योन्याभिभवंदुःख (भू) | ६६.२०६ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्यैश्च मानुषै राजन् (उ) | ७६.३८ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्यैश्च लक्षणैर्दिव्यै (भू) | ५.८६ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्यैश्च विविधै (पा) | ८०.४४ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्यैश्च वैदिकैर्मन्त्रै (पा) | ११४.२६ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्यैश्चैव महारत्नै (भू) | १११.६ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्योर्द्विगुणलोभेन (उ) | १८१.१४ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |
| अन्योर्नलिप्यतेवैश्य- (स्व) | ३१.६ | अन्योन्यापिभस्त्वस्य (उ) | १२८.१६७ | अपक्षत्परमादेवि (उ) | १५२.१६ | अपमेवचसंसारसागर (सृ) | ४६.४८ | अपराधसेवनात्सोपि (उ) | ५०.६ |

| | | | | |
|--------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|-----------------------------------|--|
| अपरेपांसुमिः सिञ्जन्त्यु- (सु) १७.५७ | अपश्यंत्वाहं सुप्तं (उ) १६७.४४ | अपमार्गमैथिली (उ) २४४.१६ | अपिनाकमभूत्किलयज्ञ (सु) ४३.३१ | अपुत्रस्यजगच्छून्यम्- (सु) १८.३७५ |
| अपरेमुनिवयस्तुसतत (पा) ७२.४७ | अपश्यन् परस्थानं (पा) ६२.८३ | अपानमार्गमाश्रित्य- (भू) १५.२१ | अपिपापसमाचाराः (स्व) ३१.१२१ | अपुत्रामृतपुत्राचया (क्रि) १८.४२ |
| अपरेवेदशिरसिस्थितमे (पा) ७३.१७ | अपसव्यततः कृत्वा (सु) २०.१६३ | अपामार्गदले रुद्र जटा- (पा) १०६.८८ | अपिपापसमाचारो (पा) २०.२८ | अपुत्रासाहिमजाना- (भू) १४.१० |
| अपरोक्षयतस्त्वेवंस्निग्ध (सु) २३.८१ | अपः स्ववरागाः कृत्वा (सु) ४१.२३६ | अपामार्गप्रपुन्नाट- (उ) १२२.११ | अपिपापसहस्राणां कर्त- (पा) २०.२१ | अपुत्रोदानहीन (पा) ११४.७ |
| अपवित्रः पवित्रोवासर्वा- (पा) ८०.१२ | अपहृत पाप्मापुरुषः (उ) २२६.६१ | अपमार्गं स्तथातु (उ) १२२.६ | अपिपापादुराचाराः (उ) ५१.६ | अपुत्रोऽप्यभवद्राजा (मृ) १३.१६ |
| अपवित्र शरीदोयं सदा (भू) ५३.७१ | अपहाय गतासेयं स्वर्गं (भू) १.२३ | अपमार्जितगोविद (उ) ७८.७७ | अपिब्रह्मांडमन्त्रिणं (उ) १८.६६ | अपुत्रोलभतेपुत्रं (क्रि) १७.१२४ |
| अपदिचमंतुतेपुत्र (सु) १८.३४६ | अपहृतातस्यभार्या (पा) ११६.१६२ | अपारे जगतामीश- (क्रि) १३.१३४ | अपिमानरिं लोकेस्मिन् (स्व) ५१.४६ | अपुत्रोलभतेपुत्रं (ब्र) २५.३१ |
| अपदिचममिमपुत्रमातु (सु) १८.१५७ | अपहृत्यतदानीनास्व (उ) २१५.१७ | अपार्यः श्रुतिवाक्यानां (उ) २३६.८ | अपिराजन्यवैश्याभ्याम् (स्व) ५७.७० | अपुत्रोलभतेपुत्रान् (उ) १३८.१२ |
| अपश्यज्जाववंतं (सु) १३.८४ | अपहृत्य नरो याति- (भू) ६७.१०४ | अपास्त्योपरतामायां (सु) १५.३४६ | अपिवर्षशतेनापि (ब्र) १३.६४ | अपुत्रोलभतेपुत्रान् (पा) ६८.२८ |
| अपश्यत्करुणावंतं (उ) १६२.५७ | अपहृत्य नरो याति- (भू) ६७.१०५ | अपिके सरिणोयत्र (उ) १८८.२८ | अपि वावैष्णवोमर्त्यं (पा) १०५.१४६ | अपुत्रोऽहंतु त्रिपर्यं (उ) १४३.१७ |
| अपश्यत्कृत्तिकास्त (सु) ४४.१३२ | अपहृत्यतमस्तीव्रं (उ) ८१.२७ | अपिघोरोमहावीर्यो- (स्व) १४.८ | अपिशंसमहाभागधर्मं (पा) ६.५ | अपुत्राह्ममिजित्पूर्व- (सु) १३.४८ |
| अपश्यत्संगिरिवरं (उ) ११.४७ | अपहृत्यपुरा कांस्य- (उ) १२६.१८६ | अपिचात्माप्रियतरोलोके (स्व) २८.२१ | अपिशान्तोमुनिर्वैभू- (सु) ६.२३ | अपुत्रनर्मरणाग्राहिंसागति- (स्व) ३३.२७ |
| अपशह्तापसीकांचित् (पा) ७२.२५ | अपहृत्य प्रियां तस्य (भू) १०३.१०१ | अपिचेत्सुदुराचारः (स्व) ६२.११ | अपिसर्वेश्वरः (उ) २७.३६ | अपूज्यामपूज्यते (उ) १११.१४ |
| अपश्यत्परमंगुह्यं (पा) ७४.५१ | अपां मध्ये तथा देवं (भू) २७.५ | अपितत्कालयोगात्मा (सु) ४१.१३० | अपिस्वाभाविकवैरं (उ) १७६.१४ | अपूज्यान्तत्रवद्वृत्ता (पा) ६५.२३ |
| अपश्यत्पाप कृत्स्नवेदः (क्रि) ६.१०५ | अपां संस्पर्शनात्पानः- (भू) ३३.१८ | अपितत्रगतप्राणात- (पा) ८३.६४ | अपीडाकारियद्धान्तं (सु) ३०.१६५ | अपूजुजन्नेन्द्रेणं (सु) ३७.१७७ |
| अपश्यत्पापकृत्स्निस्थान् (सु) ३६.१०० | अपांश्चासश्च (उ) २४५.११५ | अपित्वं माननीये (उ) १८.५५ | अपुण्यं लोकविशिष्टं (स्व) ५१.६६ | अपूर्वंत्समात्मानं जरया (भू) ६६.११६ |
| अपश्यद्भूपतीर्थाणि (सु) ४५.४६ | अपाकरोति दुरितश्रेय (पा) ६८.५७ | अपिदुष्खेनहेताग्नित्वा (क्रि) १७.२४ | अपुत्रजन्मनः शेषाः (सु) ४३.१४८ | अपूर्वंः कांश्चिद्वेदाद्यो (सु) ४४.१८० |
| अपश्यद्वीरकमुत्रं (सु) ४४.७५ | अपातयद्वरापुच्छे (उ) २४५.३७६ | अपिदुष्कृतकर्मणि (स्व) २७.६३ | अपुत्रस्त्वभवद्राजा (सु) १३.३५ | अपूर्वं नास्तिमे किंचित् (भू) ५३.१०६ |
| अपश्यदधृदये दीपं (पा) १०५.२२१ | अपात्रेदत्तदत्तक्षिप्तं (स्व) ३०.२६ | अपिदुष्कृतकर्मणिस्ते (स्व) ३१.८० | अपुत्रस्यगतिर्नास्ति (उ) १४३.१८ | अपूर्वंरूपसंस्थाना (सु) ४.२६ |
| अपश्यन्ती वियन्रात्रौ (उ) १८७.२४ | अपामार्गमैथिलीराम (उ) २४४.१८ | अपिदुष्कृतकर्मसौ (सु) ४१.१५ | अपुत्रस्यगृहं शून्यं (उ) ४१.१५ | अपृच्छं सर्ववृत्तांतं (ब्र) ११.२२ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

२४

| | | | | |
|--|--|--------------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|
| अपृच्छत्कात्वमाश्चर्यं (पा) ७२.२६ | अप्राकृतंहरिसम्य- (उ) २५५.१०४ | अव्दानित्रीणि सलिले (पा) १२.६६ | अभक्ष्यसर्वदाप्रोक्तं (उ) २३४.१२ | अभिगम्य च विप्राणां (सु) २१.४१ |
| अपृष्टवातांतुकल्याणीं (उ) १५२.१६ | अप्राकृतमहात्मानो- (उ) २२४.५५ | अब्दोदकंतपावारि कुण्ड- (सु) २२.१५५ | अभंगोयुयुधान् (सु) १३.६५ | अभिगम्यतुतादेवीनंदुर्गति (स्व) २७.६१ |
| अपृष्टोपिमया ब्रह्मन्नेव (सु) ३६.१२० | अप्राप्तकामासंप्राप्ताकिमते (सु) ४४.७० | अब्बिदुयः कुशाग्रेण (स्व) ३१.८२ | अभयंभयलोकेभ्यो (स्व) ६२.१६ | अभिगम्यतुयहंतयच्च (सु) ४६.१०४ |
| अपेयपानं चमयाविहितं (क्रि) १७.१५६ | अप्राप्याहं त्वयावीर (भू) १०८.२४ | अवभक्षावायुमक्षा (सु) ४१.८३ | अभयंयेचच्छन्ति (क्रि) २.६७ | अभिगम्यमहादेवंमुच्यते (स्व) २७.६२ |
| अपैशुन्यमिदराज्वा- (पा) ८४.४५ | अप्रियं दिवभक्तानाम् (भू) ६७.६० | अभूतंचततोदग्धवा (पा) ११४.८८ | अभयंसर्वभूतानां (सु) १८.४३६ | अभिगम्यमहादेवं (स्व) ३८.४५ |
| अप्यकार्यशतं कृत्वा (सु) ३६.३५ | अप्सरसां कदा नास्ति (भू) १०१.३६ | अन्नवीचचपुनर्विक्यं (उ) ३३.३८ | अभयंसर्वभूतेभ्यो (सु) १५.३७२ | अभिगम्यमहादेवं (स्व) ३६.६० |
| अप्यश्नांतद्विजसुहृद्या- (क्रि) १७.२६५ | अप्सरसांसमक्षं हि देवा (सु) २२.२८ | अन्नवीत्जगतः कार्यं (सु) ३०.१८ | अभयवानथपुनः (पा) ११६.२२३ | अभिगम्यमहादेवं (स्व) ३६.६५ |
| अप्याहमेमथातत्वम् (स्व) ४८.८ | अप्सरसामेनिकानाम् (भू) ११६.१५ | अन्नवीत्प्रांक्षलिविक्यं (स्व) २६.२६ | अभयोभयनाशाय (भू) १६.२२ | अभिगम्यमहाभागं (उ) २४२.२६७ |
| अप्येकभोजयेद्विषं (स्व) ११.२८ | अप्सरारूपसंपन्नाना- (उ) १२७.६१ | अन्नवीत्समुपेत्या (उ) २४२.२३५ | अभवंसहसातोद्यो (उ) १६७.४५ | अभिगम्यशुचिर्भूत्वा- (सु) १५.२६६ |
| अप्येकांवाचमुत्प्लुज्य (स्व) २७.६५ | अप्सरोगणसंघर्षं (सु) २१.१२४ | अन्नवीदयसादेवीवरदा (पा) ७४.१४४ | अभवत् कूरसत्वानाचेतः (सु) ४३.६४ | अभिगम्यश्रिष्टराजन् (स्व) ३८.२७ |
| अप्रकाशमपिप्रायः (पा) ६३.३ | अप्सरोगणसंकीर्णोदिव्य- (स्व) १३.२४ | अन्नवीद्भूरंतरामोह्यत्रमे (सु) ३८.५६ | अभधत्पृथिवीदेवी (सु) ४३.६७ | अभिगम्यसुविश्रान्ता (सु) ३७.२५ |
| अप्रकाश्यमिदंमुह्यं (क्रि) १६.७० | अप्सरोगणसंगीतैः (स्व) ४४.५ | अन्नवीद्राघवोवाक्यं (सु) ३८.१६ | अभवत्सहसादृश्यं (क्रि) १२.१११ | अभिगम्यस्थलीतस्थगो (स्व) २६.६३ |
| अप्रकाश्यमिदंवाक्यं (क्रि) २३.२७ | अप्सरोगणसंपुष्टैः- (सु) १५.२३४ | अन्नाह्मणस्यपठतः (सु) ३६.२६ | अभवददत्स्यमध्येसग्रह (सु) ४०.१८५ | अभिगम्यामरश्रेष्ठस्तुवति (स्व) ३.३८ |
| अप्रजानांतुनारीणाम् (स्व) ५६.१२ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभवन्मुखिनः सर्वे सर्वे (सु) ४३.६३ | अभिगम्यायकाम्याय (सु) ३८.१४३ |
| अप्रतीपास्ततोदेवान् (सु) १३.२१३ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नाह्मणो नर्वैकश्चित्तं (सु) ३५.४५ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभितः पुरमाघर्षप्रयाः (उ) २२०.२७ |
| अप्रत्याख्यान (उ) २४०.७ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभिनोमंजुकुंजे- (पा) ८३.५७ |
| अप्रधृष्यंमहाभागं (उ) ८०.४ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभितद्वदन्नाथः (पा) ८१.३७ |
| अप्रमत्तस्यभवतो (पा) ११२.१३ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभिद्रावशुश्रूषिनी (उ) १७६.१२ |
| अप्रमाणमिदंप्रोक्तम् (स्व) ४६.४ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभिद्रावचरणा (उ) २०४.७० |
| अप्रमेयबलैश्चयदिव- (सु) १५.२०७ | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभिनंधमुनं प्राप्तं (भू) ११७.१६ |
| | अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले- (स्व) ३.३६ | अन्नुवन्नानरूपेण कर्तुं (भू) ३६.३८ | अभावेननरस्तस्माद्भावः (भू) ६६.६० | अभिनन्मुखरागेण (पा) ६६.११४ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अभिप्रसाद्यसावित्री (सु) | ३४.२८ | अभिषिच्य मुखं तस्याः (भू) | ४६.२ | अभिषेकततः कृत्वाप्रदान (सु) | १२.५० | अम्यैलेतांचमनसा (उ) | २४५.१६७ | अमात्युदभंगमंकिप्रवृत्ताः (पा) | १.३६ |
| अभिप्रायंतुविज्ञाय (उ) | २४४.५४ | अभिषेकं तत्रकृतवानियतोनि (सु) | ३२.२७ | अम्यंगमर्दनंकृत्वा (पा) | ८३.३६ | अमत्सरदाधायुक्ताः सर्वे (क्रि) | २.८४ | अमात्यान्भ्रातृवेपणे (पा) | २.२२ |
| अभिभूतमिवात्मानं (सु) | १४.६६ | अभिषेकात्ततोस्माकं (उ) | ४१.४८ | अम्यंजनंस्तपनंच (स्व) | ५३.३२ | अमंत्रयंत देवावंसविन्न- (सु) | १३.२०४ | अमात्याः पृथिवी सर्वो- (क्रि) | ३.२२ |
| अभिमानेनदुःखेन (भू) | ७.२ | अभीष्टोपस्करैर्युक्तां (सु) | २४.१३ | अम्यंजनानोन्मर्दं (स्व) | ५६.१७ | अमन्यमानः करिणो (उ) | १६०.१६ | अमात्योराजपत्नी (पा) | २२.१७ |
| अभि वर्धतमाशोभि- (पा) | ११६.३०२ | अभीसारा. कुद्रताश्चसीरि (स्व) | ६.४६ | अम्यधावत वेगेनवाण- (भू) | २८.१०३ | अमम्यागमनंतद्भि (उ) | २५३.१२३ | अमानुषमथोनादमं (उ) | १६८.२६ |
| अभिवादनशीलोयक्षिती (सु) | ३३.२१ | अभुक्तेस्त्वद्वयोनूनं (पा) | ११४.२०६ | अम्यधावच्चकाकु (उ) | २४२.१५६ | अमयंप्राप्यविप्रेम्यो (उ) | १२२.२१ | अमायां मंदवारे च (उ) | २५३.१६२ |
| अभिवाद्येहंभवती (सु) | ३८.१०३ | अभुच्य सिंहलद्वीये (उ) | १८८.८ | अम्यधावच्छिन्नस्तावद् (उ) | १०२.१६ | अमरकंटकंतोगच्छेद (उ) | १८.२५ | अमायामेवतन्मसिआर्द्र (पा) | १०५.७६ |
| अभिवादयितुं चक्रे (सु) | ३७.१४५ | अभूतां विगतप्राणा (ब्र) | १२.२२ | अम्यधावत स वेगेन (भू) | ७७.६ | अमरकटके विप्रोदानं पुण्यं (भू) | २०.१४ | अमावस्याचतुर्दश्योः (स्व) | ५३.७५ |
| अभिवाद्यगुरुं ब्रूयाद (सु) | १५.२६० | अभूत्पूर्वसमंमुग्धो हरि (पा) | ७१.३५ | अम्ययादथवेगेन (उ) | १०१.२६ | अमरत्वयंदुःखेष्ठ (उ) | २५०.८२ | अमावस्यां तथा चैव राहु- (स्व) | २७.८० |
| अभिवाद्यगुरुं ब्रूयाद (सु) | १५.२६ | अभूत्सपावनी भूमिः (उ) | २४२.१३५ | अम्ययाद् वृषमारुढः (उ) | १०२.३ | अमराणां हृदेस्तात्वा (स्व) | २६.१०१ | अमावस्यां तथा भवतैः (स्व) | ५७.३२ |
| अभिवाद्यभरद्वाजमत्रेण (सु) | ३८.२७ | अभूदनावृष्टिरतीव (सु) | २०.१७ | अम्यचर्यगंधाद्युत (सु) | ६.१४० | अमरानिर्जराश्चैव (भू) | ५.५४ | अमावास्यादिनासम्यक् (उ) | ३६.२ |
| अभिवाद्यमहर्षीस्तान्- (सु) | ३५.६४ | अभूदभागद्वयं भुक्त्वा (क्रि) | २५.६३ | अम्यचर्यं भगवद्भवत (पा) | ८०.३६ | अमरानिर्जराः सर्वे अक्षयाः (भू) | ५.५७ | अमावास्यां तथा राजन् (भू) | ६७.२४ |
| अभिषिक्तापिसावृदा (उ) | १४.४३ | अभूदवृन्दावनेतस्मि (उ) | १५.४५ | अम्यस्यनवमाध्या (उ) | १८३.६० | अमरान्वरदोषाहुवामहस्ते (सु) | ४३.२० | अमावास्यादिनेसम्यक् (उ) | १३५.३० |
| अभिषिक्तास्मिन्तैः सर्वैरतं (भू) | २०.३६ | अभूमिपातं गृह्णीयात् (पा) | १०८.३४ | अम्यगतः समयातः (पा) | ११७.७४ | अमरा मानवाजाता (भू) | ७६.७ | अमाष्टभागेसूक्ष्मोऽतो (पा) | १०५.८८ |
| अभिषिक्तेहाभागे त्वंगपुत्रे (भू) | ३६.४६ | अभूमिवहं भूमिश्च (सु) | १३.१०६ | अम्यागतं तुत षट्वा (उ) | २४०.६ | अमरैराचितं षट्वा (उ) | ११.६३ | अमासोमसमायोगे प्रयागः (भू) | ६२.४ |
| अभिषिच्यमनुः पूर्वं मित्रं (सु) | ८.७८ | अभेदश्चस्मदादीनां (उ) | ७१.११६ | अम्यागतः समायातः (पा) | ११७.७४ | अमरोदशनीयश्च वाल- (सु) | ३८.१६६ | अमित्रतस्तथाशीरि- (उ) | २३७.८ |
| अभिषिच्यमानः (पा) | ७२.६८ | अभोजनं द्वादशाहम् (ब्र) | १६.२७ | अम्यागतोऽपिवचन (पा) | ११७.७८ | अमलेनापिपुण्येनब्रह्मचर्येण (भू) | २३.४२ | अमीचक्षुषयः सर्वतव- (सु) | ३३.७७ |
| अभिषिच्यशिवैस्तो (उ) | १२५.१४८ | अभोजयत्सुनरकान् (भू) | ८६.१६ | अम्याशमागतं लोकप्रति (सु) | १५.४० | अमात्यं रसनां विद्धि (भू) | ७.५४ | अमीष्टास्तदाश्लोका- (पा) | १०४.१३४ |
| अभिषिच्यसुती (उ) | २४४.५६ | अभोजयित्वातावन्नं (भू) | ६३.६ | अम्युदयं प्रवक्ष्यामिज्ञा- (भू) | ४०.३१ | अमात्यकथितौश्रुत्वा- (पा) | ६६.३ | अमीषितामहाश्चोरा यै (भू) | ५६.३१ |
| अभिषिच्यायकाकुत्स्थं (उ) | २४४.५२ | अभोज्यं वानरमांसं (पा) | ११६.१८४ | अम्येत्यपितरं प्राह- (उ) | २००.४४ | अमात्यमादिदेशयसर्वं (पा) | ३२.१८ | अमीयुगसहस्रांते (सु) | ७.११५ |

| | | | | |
|---|--------------------------------------|--|--------------------------------------|---|
| अमीषाविप्रमुखाणां पुराणं (सु) १.२१ | अमृतारंभसंयुक्तमंदरा (सु) ४१.३६ | अम्लेनताम्र पात्राणि (क्रि) ११.५१ | अयं पापमतिः क्रूरः (क्रि) ६.१४६ | अयं सरिपुस्माकमसमः (सु) ४१.२४६ |
| अमुखविमुखैरुग्रैर (पा) १०६.३० | अमृतेत्वन्तेशक्यं (पा) १०६.७० | अयंकृतघ्ननामास्ति (पा) ६८.५६ | अयंपाप विनिर्मुक्तो (क्रि) ७.६७ | अयंसविष्णुदेवानां वैकुण्ठ (सु) ४१.२४८ |
| अमुनासोपिराजेन्द्र (पा) ७३.४२ | अमृत्यवेत्वमेतस्मादुरस्थ (पा) १०७.६१ | अयं गीतः प्रवित्रस्ते- (भू) ४६.३४ | अय पापी दुराचारो (क्रि) ७.५७ | अयंसाधारणोविप्रवन्देसो (भू) ४६.३६ |
| अमुगृहापदेवाद्यस्याः (सु) १६.१८७ | अमृतेनत्वमद्यैव परां (भू) ३.४० | अयंचजगदोशवर्षा (उ) २२७.८ | अयं पापी दुरात्मा (उ) १३६.२० | अयं सायं जने प्राप्तिमतिधि (पा) ३०.६१ |
| अमुषंटामुखं पश्या (पा) ११७.२३१ | अमृत्युभूतलं जातं (भू) ७५.३३ | अयं जनोदुराराध्यः (उ) २०४.२७ | अयं ममपतिः पापोमुने (उ) २१४.८४ | अयं सृजति विश्वानि- (भू) ६.६ |
| अमुचतांहयंचापि (पा) ६४.७६ | अमेकलासुनीलाभोग (उ) १२५.६६ | अयं तव मुनेनालः (उ) २१५.५३ | अयं मित्र कलत्र (पा) ३०.५७ | अयं सुग्रीवस्तथा रक्ष- (पा) ११६.२०७ |
| अमुमंत्रसमुच्चार्य (उ) ६२.३४ | अमेघ्यमामिषं कीटान् (क्रि) ८.५४ | अयं तव वाग्रेकथितः (उ) ५४.२७ | अयं मृत्यु महं गत्वानि (उ) २१०.१७ | अयं हि पर्वतश्चेष्टो (भू) ४२.६७ |
| अमुष्यराजपुत्रस्य (उ) १८६.४६ | अमोघदेववीर्यं ते (उ) ७६.२८ | अयं तावत्परस्योच्चैर्नि- (पा) ३०.६३ | अयं मे संशयः स्वामि- (उ) ३६.३२ | अयं हि पुण्यो नरनाथ- (भू) ४२.२३ |
| अमुष्य हि देहे समालिग (पा) ११६.२४ | अमोघास्ते भविष्यति (उ) ७६.२६ | अयं तु गभोदेवकथायावत्क (सु) १३.१४१ | अयं रथं सारुह्य सततं (क्रि) ४.८५ | अयं हि विकृतचेपो (पा) ११७.३५ |
| अमूर्तं भूतं मत्तं भूतं तत्त्वस्यंते (सु) १६.६५ | अम्बरीषमथवीक्ष्य (पा) २१.२१ | अयं तु देवो विख्यातः (उ) ३३.३ | अयं राजा महाराष्ट्रः काल- (भू) ४२.६६ | अपजद्ब्रह्मण्येष्ट (उ) २४२.४७ |
| अमृतं तं प्रपन्नोऽस्मि किं भयं (भू) १६.३१ | अम्बरीषमहत्पुण्य (पा) ८७.३६ | अयं तु परकीर्यस्वमुपित्वा (पा) ३०.६० | अयं लोके प्रवृत्तश्च (उ) १२६.१६३ | अयत्नादेवलभ्येत कर्तु- (गृ) ३४.४१४ |
| अमृतं पितृतायेतुपतिता (सु) २१.२०४ | अम्बरीषेण भोगार्थं च (उ) १२४.३२ | अयं ते पितृहा प्राप्नोमातृ (सु) ३०.१५३ | अयं विश्वेश्वरो देवः (उ) १४७.४ | अयथा धिस्तुतिर्गहि- (पा) १०४.१०१ |
| अमृतं पितृतोषकत्वात्सूर्यं (सु) २१.२७३ | अम्बरीषोमहासत्वो (उ) ८०.१०६ | अयं त्रैविक्रमो नाम (सु) ३०.१६७ | अयं वै हनुमानवीरो (पा) ६४.५६ | अयं नंदः पित्रात्रिदेवा (गृ) ३.७ |
| अमृतं यत्कृते चापि (भू) ४.३५ | अम्बाचकमलामातुर- (सु) १७.३१८ | अयं दश सहस्राणां (पा) ६८.६५ | अयं शिशुस्ते भविता (पा) ७१.१८ | अयं न भगवत्सन् (उ) ५७.१५ |
| अमृतं यज्ञशेषस्याद्भोजनं (सु) १५.३१० | अम्भोजनिचक्रपूर्वं (उ) १६८.४२ | अयं दुर्गतिमापन्नः (उ) १६७.२६ | अयं सकालोदयानां (सु) ४१.२५३ | अयं न वाचतुर्दश्यां क्रान्तो न्व (सु) १६.३३ |
| अमृतं शाश्वतं नित्य (उ) २२७.६० | अम्भोधिर्नैवमुक्तस्तु (उ) ४.१६ | अयं दुष्टो नृत्वं वक्त्रिन- (पा) ५६.२६ | अयं सकल युद्धेषु- (सु) ४१.२५२ | अयं न विपुर्वै चैव ग्रामावस्थान (सु) ६.२०१ |
| अमृतस्यैव त्वय्येत (सु) १६.३१६ | अम्भोधिमध्ये शयनं हि (भू) ६८.६६ | अयं धर्मसमाचारो जैन- (भू) ३७.२१ | अयं सनाथो देवाणाम- (सु) ४१.२४६ | अयं न विपुर्वै पुण्ये (गृ) २१.७४ |
| अमृताज्जिह्वे सर्वा (भू) ६७.४६ | अम्भोधिस्थापद्यदले गतं- (भू) ५४.१६ | अयं न लभते गतुं कस्मा (उ) १८४.१५ | अयं सनिधने हेतुः (सु) ४१.२५१ | अयं नो विपुर्वै पुण्येऽथ नोपति (गृ) २१.८७ |
| अमृतादुत्थितो देवी (भू) ११६.१३ | अम्लानपंकजामालां (उ) २३२.४५ | अयं नित्यो दयानाम- (क्रि) २३.२६ | अयं सनिधृगोलोके (सु) ४१.२४७ | अयमपि निखोनाम (पा) ११०.१ |
| अमृतादुत्थितो देवी (उ) २३२.६७ | अम्लानपुष्पाण्यथ- (सु) २६.१७ | अयं न्यासापहरणं (क्रि) ७.६० | अयं सरिपुस्माकं- (सु) ४१.२४५ | अयमश्वोपनिरीतव (सु) ८.११३ |

| | | | | |
|---------------------------------------|--|-------------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|
| अयमात्मस्वरूपेणैतत् (भू) ६.५ | अयोगकेशधरणम् (सु) ४१.८६ | अरण्यचारिणोऽहृति (उ) ४६.२७ | अरुंधतीवसुर्जा मिलन्वा (सु) ६.१६ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमासीत्पुराकश्चि- (पा) ११०.२ | अयोध्याद्यापुरीः (उ) २०१.११ | अरण्यमेतत्प्रवरं सुपुण्यं (भू) ५८.२ | अरुंधत्येकपत्नीशोऽहृ (उ) ७१.२८६ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमूतुमुलसूर्योभजता- (सु) ४१.३०६ | अयोध्याद्याः शतंताम्यं (उ) २०७.५३ | अरण्येकंटाकाकृति (पा) ६४.६५ | अरुणवह्नुकपाय (उ) ७८.३४ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेकः समायातः पुरुषो (भू) ५३.५० | अयोध्याधिपतिर्वीर (भू) ४३.२० | अरण्येकितपस्यंत्याग- (पा) ६६.११५ | अरुणस्त्वमशेषस्य- (पा) ४६.७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेव जगन्नाथः सर्वगो- (भू) ६२.३० | अयोध्यानगरेरम्ये- (पा) ३५.५७ | अरण्येद्वीपिनंजात्वा (ब्र) १३.७२ | अरुणरूपमशेषस्य- (पा) ४६.७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेवपरोधर्मो (पा) ६६.६ | अयोध्यानामनगरी- (उ) २४२.४० | अरण्येपौषकरेतेपां (सु) १५.१६६ | अरुणरूपसंबद्धः (पा) ८४.६१ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेवयथाराजाद्रविडो (उ) १२६.५६ | अयोध्यां प्रविशेथाय कृत- (पा) ३.२५ | अरण्येप्रांतरेवापि (क्रि) १५.१०१ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेवचित्तनीयो (पा) ८१.६६ | अयोध्यां प्रस्थितो रामः (उ) २४२.३४६ | अरण्योवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेव स सत्यात्मा (भू) ११३.२१ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेव महाप्राज्ञो गंधर्वो- (भू) ४६.१६ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेव महाभागस्तपस्वी (भू) ३५.१३ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयमेवसवीरेन्द्रो- (भू) ११३.१५ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयाचतगुरुदेवतव (क्रि) १७.२४१ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयाचतनृपश्रेष्ठं (उ) २४२.१८५ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयाज्यदानप्राही च (क्रि) १७.१२ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयाज्ययाजनं कृत्वा (उ) ७४.२४ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयाज्ययाजनं कृत्वा (सु) १७.१६२ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयाज्ययाजनाचैव (सु) ३२.४६ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयिसर्वगुणज्ञानां (क्रि) ४.६० | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |
| अयुतायुतंचित्ते (पा) ६८.२४ | अयोध्यां प्राप्यकाकुत्स्थः (सु) ३७.१४८ | अरुणोवधिभोक्ता (सु) १५.२२२ | अरुणरूपसंबद्धः (भू) ८६.७७ | अर्घ्यं दद्यात्ततो भक्त्या (उ) ३०.१८ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------------|---------|--------------------------------------|--------|------------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| अर्चयित्वापितृदेवा (उ) | २५३.६३ | अर्चितोदेवदेवेशस्तावत् (भू) | १२१.४३ | अर्थानामुचितं पात्रे (स्व) | ५७.२ | अर्वाचीनं त्विदं रूपं पराचीनं (भू) | ६२.२८ | अलंकृतो महाविष्णुः (क्रि) | ११.७६ |
| अर्चयित्वा महदेवं (स्व) | ३६.११ | अर्चितो भूपती नृजित्वा (उ) | १८०.८३ | अर्थात्त्वकाम्ययास्तु (सृ) | ३०.१०६ | अर्वाचीनं पराचीनं सर्वं (भू) | ६१.४८ | अलंकृत्यपुरी तां तु निष्कांत (सृ) | ३८.८० |
| अर्चयित्वा यथायोः य (उ) | ८०.१५८ | अर्चितो विधिवत्तेन सोऽप्य (पा) | ७१.२२ | अर्थात्तेन मदीयेन स्वकुले (सृ) | ३०.१२८ | अर्वाचीनं प्रवक्ष्यामि- (भू) | ६२.३८ | अलंकृतं ह्यमिभो देव (उ) | २.१४ |
| अर्चयित्वा शिवसोऽथ (भू) | ११८.६ | अर्चितो वैष्णवलोकः (उ) | ४४.२६ | अर्थो विहीनः पुरुषो (क्रि) | ४.२८ | अर्वाचीनगतिं विद्वान् (भू) | ६२.५८ | अलं ज्ञानं कथालापं (उ) | १६४.२२ |
| अर्चयित्वा हृषीकेशं (उ) | २५३.१५१ | अर्चितो वैष्णवोऽयं (उ) | ६८.१७ | अर्थश्चर्यं विष्णुं दाहि श्रेय- (सृ) | १६.२४६ | अर्वाचीनगतिं सर्वापराचीनं (भू) | ६१.५५ | अलं ज्ञानं चात्मनः पूजां (उ) | ७१.१०२ |
| अर्चयित्वा हृषीकेशं (उ) | २५४.१३ | अर्चित्वा तं हृषीकेशं (उ) | १२४.६० | अर्थो धर्मश्च काम- (पा) | ११५.८४ | अर्वाचीनस्वरूपोऽयं- (भू) | ६२.५६ | अलं भंती भूशं त्राणं (भू) | २८.१०५ |
| अर्चयित्वा हृषीकेशम् (त्र) | २३.११ | अर्चितं कर्मणा पूर्वस्वयमेव- (भू) | ३३.३४ | अर्थं लापं संहरति (उ) | २७.२ | अर्हं तो देवता यत्र निर्ग्रथो (भू) | ३७.१७ | अलं शोकेन महता (पा) | १०६.२७ |
| अर्चयेच्च यतः सिद्धिं हरे (पा) | ६५.११२ | अर्जुनस्तु सफलां (उ) | २५२.५६ | अर्थं शकानां शिरसो मुंडं (उ) | २०.३३ | अर्हं तो देवता यत्र निर्ग्रथो (भू) | ३७.१७ | अलावुचापि वृत्ताकं (उ) | ६४.१२ |
| अर्चयेत् विरूपाक्षं (स्व) | ५७.४२ | अर्जुनो न कुलश्चैव (उ) | ५१.१२ | अर्थं देयमेतस्मै भोजनं (पा) | ११७.३६ | अर्हं ध्वं मामकं धर्मं (सृ) | १३.३५६ | अलावु चैव वार्ताकं (उ) | २२३.१११ |
| अर्चयेत्स्थडिलेऽनीं (पा) | ६५.७३ | अर्जुनो नोपि कालधर्मं (उ) | २५२.४६ | अर्थं भासाश्च मासाश्च ऋतवः (सृ) | १८.६३ | अर्हं युयुत्स्वनं हेंडुवलां (पा) | ११४.३०७ | अलावु वृत्ताकारं- (पा) | ७६.४६ |
| अर्चयेद्गंधपुष्पाद्यै- (उ) | २५३.१७२ | अर्जुनो नोपि दस्युभिर्निजितः (उ) | २५२.६७ | अर्थं यामं प्रतिदिनं (पा) | ११३.११ | अलकं न दायत्राणां (उ) | २.१० | अलावु संयुतां कृत्वा (पा) | ११४.३८६ |
| अर्चयेद्ब्राह्मणं मुखे (स्व) | ५७.३३ | अर्जुनो नोपि दस्युर्गन्धं (उ) | २५२.८७ | अर्थं मर्मैर्गन्धं वीरं सत्त्वं (भू) | २४.२० | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलावु संयुतां कृत्वा (पा) | ११४.३८६ |
| अर्चयेद्ब्रह्मरिः पुष्पगंधं (उ) | १२४.५२ | अर्थं जातं मदीयं च नितरां- (पा) | १४.४ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चयेद् वैष्णवो नित्यं (उ) | १२०.३२ | अर्थं दाता सुतो भूत्वा (पा) | ८८.२ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चयेत्संभारं (उ) | २५५.१०७ | अर्थं दाता सुतो भूत्वा भ्राता (पा) | १२.२ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चयेत्समाध्वपुष्पं (उ) | २५३.१४४ | अर्थं न गमयिष्यामि (पा) | ११४.४११ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चादावर्चयेद्योमां- (उ) | १३०.६ | अर्थं प्रयच्छतेऽत्रात्वा- (सृ) | १८.२४५ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चयामि सति धीविष्णु (उ) | २५३.१५ | अर्थः संप्रति पद्येतात्पर्यं (पा) | १०४.१६८ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चिता निधिराम्नातो (उ) | १७६.३ | अर्थस्य पुरुषव्याघ्रपरि- (भू) | ६४.४६ | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |
| अर्चिता मानवाः (उ) | २४३.५२ | अर्थस्वरूपं पश्यतो (सृ) | ३.५० | अर्थं योजनविस्तारं सत्त्वं (भू) | १६.१८ | अलक्षितस्तोगत्वा (उ) | १३.२२ | अलाभे सर्वं पात्राणां (उ) | ६४.४० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|---------------------------|---------|--------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| अल्पशोकांस्वितालोकाः (क्रि) | २६.७ | अवजायमहीभर्तुस्त्यजंले (क्रि) | २१.६४ | अवधारणवाच्येव- (उ) | २२६.२६ | अवरोहात्परंस्थानं (पा) | ११६.१६८ | अवष्टम्भ्यत्तांशवित (उ) | १८६.१७ |
| अल्पस्फीतिनिराम- (उ) | २२.४२ | अवतरतिविष्णोसिद्ध (सु) | ३०.४६ | अवधोन्निर्दयः (पा) | ६६.१४८ | अलंघ्यकरांभोज- (उ) | १८३.४५ | अवसत्तांशपातत्रपत्नया (सु) | ४३.४२७ |
| अल्पाक्षरोन्मत्रः (सु) | ४४.१६५ | अवतारं करिष्यामि (सु) | १४.७१ | अवधोरितकंदर्प (उ) | २४५.१६३ | अलंघ्यततोर्वर्यं (क्रि) | ७.३४ | अवसेदुश्चकिमिति (सु) | १५.६६ |
| अल्पायासंबहुफलं (उ) | ४५.२६ | अवतारं करिष्येहंसा (सु) | १७.१७ | अवधोर्दिवसं कुर्याद (उ) | ५६.२४ | अलंघ्यततोर्वर्यंभय- (सु) | ३२.१६ | अवाच्यमापितेप्रोक्त (पा) | ५६.३० |
| अल्पायासेन धर्मेण (पा) | ६७.६ | अवतारादशद्वौचथुद्धा (सु) | १३.१७६ | अवधोर्दिवसं प्रदेहि- (उ) | २४२.२४ | अवलोकयतान्पुण्यांम (उ) | १८०.५५ | अवाच्यमंत्रविज्ञानंज्ञान (स्व) | ३३.८ |
| अल्पायासेनराजेन्द्र (सु) | ३४.३२७ | अवताराह्य संख्याताः (उ) | १७४.५ | अवधोः सर्वं भूतानां- (सु) | १६.१२२ | अवलोकयतदुद्धारं (उ) | २२२.१७ | अवातरन्महीभीमोदन्तानां- (सु) | ४६.२३ |
| अल्पायुर्दृश्यतेब्रह्मा- (पा) | १०८.६८ | अवतारेषुयद्रूपतदर्च- (सु) | ३.३७ | अवधोः स्तरारकोदैत्यः (सु) | ४३.४५ | अवशिष्टगुणं चायमी (पा) | १०८.२२ | अवातरस्ततःकश्चित्पक्षी (उ) | १८४.२७ |
| अल्पायुश्चभवान् (पा) | १०६.८४ | अवतारेसदारस्त्वापितृ- (सु) | १७.२१७ | अवध्यानांभवोयस्तु (क्रि) | १७.१५८ | अवशिष्टदिनान्येव- (पा) | ८६.२१ | अवातरस्तदापानमेकं (उ) | २१८.३३ |
| अल्पायुश्चस्तथा- (पा) | ८७.७७ | अमंतीमाश्रमात्पूर्व- (उ) | २०८.२५ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.२२ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | ६.२६ |
| अल्पायुश्चस्त्वस्वमुनि- (सु) | ३३.१६ | अवतीर्णोदेवकार्यं कृतं (सु) | ३८.१४८ | अवध्यायेनराणां (सु) | २०६.३१ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ११६.७३ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १२६.६४ |
| अल्पायुश्चोत्पन्नमतयः (क्रि) | २३.१६६ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २२.३४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ७२.१०७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ११६.७३ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | २४५.१६१ |
| अल्पेनैवहिकाले (उ) | २४५.८४ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | ४०.१०८ |
| अल्पैरहोमिः संत्यक्ता (सु) | १३.३५६ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवगंतुंहिमांतत्रन (सु) | ४३.२१७ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवगंतुंहिमांतत्रन- (सु) | ४३.११७ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवगाढाचपीत्वाच (स्व) | ३६.६० | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवगाढाचपीत्वाच (स्व) | ४५.२६ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवगाढाह्यमयतः ममुद्रो (स्व) | ३.२१ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवगाह्य च पीत्वाच (स्व) | ४१.१६ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |
| अवज्ञानाद्विज श्रेष्ठयो (क्रि) | १२.४५ | अवतीर्णोमहाप्राज्ञो (भू) | २५२.११४ | अवध्यायेनराणां (सु) | ६.५७ | अवशिष्टदिनान्ये (पा) | ६०.६ | अवापचानलः पुत्रानग्नि- (सु) | १८८.२० |

श्रीपद्ममहापुराणम् : : श्लोकानुक्रमणो

३१

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------|--------|-------------------------|---------|-------------------------|--------|
| अश्वपुर्णेशरादीना (उ) | २४५.२६५ | अश्वतथ्यच्छेदनंयच्च (क्रि) | १७.१८२ | अश्वमेधकर्नाम्ना (उ) | १८०.४० | अश्वमेधशतैरिष्ट्वा (उ) | ८०.१६० | अश्वमेधादिकैकृते (उ) | ६४.७८ |
| अश्वविन्दुमतीनामरतिपुत्री (भू) | ७७.७८ | अश्वतथ्यद्रुममालोक्य (क्रि) | १२.४१ | अश्वमेधफलतरिमन् (स्व) | ४३.३४ | अश्वमेधसमं पुण्यं (भू) | १२५.१७ | अश्वमेधादियज्ञानां (उ) | १३२.४५ |
| अश्वविन्दुमतिर्यत्र जगाम- (भू) | ७८.५६ | अश्वतथ्यमलविप्रपैयो (क्रि) | १२.४० | अश्वमेधफलतरस्य (सृ) | ३०.१७८ | अश्वमेधसमं प्राहु- (सृ) | २७.५८ | अश्वमेधादियज्ञानां (उ) | २२२.७७ |
| अश्वभिः पतितैस्ते (उ) | २२.३६ | अश्वतथ्यमृतिरेवाहं (क्रि) | १२.६० | अश्वमेधफलभुक्ते (भू) | ४३.७३ | अश्वमेधसहस्रं च (सृ) | १८.४०३ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | १५.७५ |
| अश्वभ्यो यानि जातानि (भू) | १०१.४५ | अश्वतथ्यरूपीभगवान् (उ) | ११५.२२ | अश्वमेधफलभुक्ते (भू) | ६२.३६ | अश्वमेधसहस्रं च (उ) | २७.२५ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | १६.३२ |
| अश्वलीलाभाषणं चैव (पा) | ७६.४१ | अश्वतथ्यवृक्षमासाद्य (उ) | ११६.२४ | अश्वमेधफलं लब्ध्वा (स्व) | ३२.६ | अश्वमेधसहस्रस्य (उ) | २७.५७ | अश्वमेधेददाद्राजा- (सृ) | १३.१० |
| अश्वकोटिप्रदानेन (क्रि) | ११.१५१ | अश्वतथ्यवृक्षमूलेस्मिन् (उ) | ११६.१८ | अश्वमेधमलः पुण्यः (पा) | ८५.७५ | अश्वमेधसहस्रस्य (स्व) | २७.८७ | अश्वमेधेददाद्राजा- (सृ) | ६.१२८ |
| अश्वक्रांतेतिश्लोके (उ) | २०१.६ | अश्वतथ्यशाखामेकायः (क्रि) | १२.५० | अश्वमेधमले अश्वं (भू) | ३७.३४ | अश्वमेधसहस्रस्य (उ) | २५३.१४३ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | ८.७० |
| अश्वक्रांतेरथक्रांते (पा) | ६५.२२ | अश्वतथ्यस्यतुलस्थाश्च (स्व) | ४०.६ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३२.१२ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ३४.७६ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | २१७.१५ |
| अश्वक्रांतेति मंत्रेण (उ) | ६६.३४ | अश्वतथ्यानांतुयत्रार्चि- (पा) | ४६.७ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | २०.८२ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ५६.१३ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | २३.३४ |
| अश्वग्रीवोश्ववाहु (सृ) | १३.१०५ | अश्वतथ्यामाशरद- (सृ) | ७.१०८ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३२.३६ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ६१.७ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | १५.३०० |
| अश्वचारानुहयान् (उ) | ५.८४ | अश्वतथ्यश्च पकैश्चैव (क्रि) | १७.५८ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | १२.२ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | १२४.४ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | ११.७२ |
| अश्वतथ्योर्नहेयतेन (उ) | १४.५८ | अश्वतथ्यारोगनाशाय (सृ) | २८.२६ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | २८.३१ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | १६५.३३ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | १४.२५ |
| अश्वतथ्यं ततोश्च्छेत्तान (स्व) | २१.३ | अश्वतथ्योवृक्षराजो (क्रि) | १२.४६ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३२.१० | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | २३४.६ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | २११.१४ |
| अश्वतथ्यं च वटं चैवो दुर्बरं (सृ) | २५.३४ | अश्वतथ्यानांहिजश्चैव (क्रि) | २२.११६ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३२.८ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ३.३० | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | १६.१८ |
| अश्वतथ्यं पश्यतो विप्र (क्रि) | १२.४७ | अश्वतथ्यानांहिजश्चैव (क्रि) | १.३६ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३८.३५ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ६४.६ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | ३८.३६ |
| अश्वतथ्यं पुजयेद्यस्तु (क्रि) | १२.४४ | अश्वतथ्यानांहिजश्चैव (क्रि) | ४८.१० | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३८.४३ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ६५.६ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | २६.३ |
| अश्वतथ्यघातिनोये (क्रि) | १६.१०३ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | १०३.२ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ३६.५७ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ६७.१६ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | ५३.७६ |
| अश्वतथ्यच्छेदनंमूढो (क्रि) | १२.४६ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | १६८.७१ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | ७६.२७ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ८५.७६ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | ११४.७७ |
| अश्वतथ्यचलपत्राग्रलो (पा) | ११७.४२ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | २४१.१७ | अश्वमेधमवाप्नोति (स्व) | १२.५२ | अश्वमेधसहस्राणि (उ) | ६.१३५ | अश्वमेधादशगुणं (सृ) | १८५.२७ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|------------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| अष्टपत्रमथोवापि (सु) | ३४.२६३ | अष्टांगप्रणिपातेन- (सु) | ३८.३१ | अष्टोत्तरशतनाम्नां (क्रि) | १७.६६ | असंशयं च गच्छन्तिलोका (सु) | १५.२५३ | असमंजस्तुतनयोह्यु- (सु) | ८.१४६ |
| अष्टपादैकनयनः शंकुकर्ण (उ) | १२४.८० | अष्टांगप्रणिपातेन- (सु) | ३४.४०४ | अष्टोत्तरशतवारमष्टा- (उ) | २५३.७१ | असंशयं पिनाकीस्थ्या- (उ) | १६.१३ | असमर्थाः सुखामोक्षं (उ) | १३२.१२१ |
| अष्टबाहुर्महातेजाद्विशीर्षः (भू) | २६.५६ | अष्टांगप्रणिपातेन- (सु) | ३८.१५६ | अष्टोत्तरशव्याधि (उ) | १६२.७ | असंस्कृतप्रणीताना (उ) | २१४.७२ | असमर्था भवद्वक्तुमुत्तरं (सु) | ४३.३५६ |
| अष्टमंतु पतौभावः (पा) | ६०.३१ | अष्टांगुलप्रमाणायम् (पा) | १०५.२०६ | अष्टोत्तरसहस्रं (उ) | २२३.६० | असंस्कृतप्रमीतानां (सु) | ६.१६७ | असमाप्यपरित्यक्तं (क्रि) | १७.१७४ |
| अष्टमश्चांधकवधो- (सु) | १३.१८२ | अष्टादशकुष्टव्रतो (उ) | ५२.१५ | अष्टोत्तरसहस्रं (उ) | २५३.१६६ | असंस्कृत्यैक्येषु (क्रि) | १७.१७७ | असमो जास्ततस्तस्य (सु) | १३.६७ |
| अष्टमाद्रतपराद्रुद्धमशी- (पा) | ३२.५ | अष्टादशदिनैरामोरावर्ण- (पा) | ३६.६७ | अष्टोत्तरसहस्रं (उ) | २५३.१६६ | असंस्कृत्यैक्येषु (क्रि) | ११६.४ | असम्पन्नमिदमर्थं (सु) | १३.१६८ |
| अष्टमाध्यायमाहात्म्यं (उ) | १८२.१ | अष्टादशधनुर्मन्त्रे- (उ) | २००.६८ | अष्टोत्तरसहस्रं (पा) | ११७.१४ | असतो घातेयन्नित्यं सत्यान् (भू) | ३०.६२ | असम्पूज्य हरेर्जनं (भू) | ६७.४० |
| अष्टमाध्यायश्लोका (उ) | १८२.१६ | अष्टादशनिषेधास्तुकाष्टा (क्रि) | २२.५४ | अष्टोत्तराजापकाः कार्यान्नाह- (सु) | २७.११ | असत्क्षेत्रकूले पूज्यो- (सु) | ४६.१२७ | असंभाष्या इमे दुष्टा- (सु) | ४७.१६ |
| अष्टमीचक्रनुर्यो च द्वादशी (स्व) | १४.२६ | अष्टादशपुराणानां- (उ) | २२२.७३ | अ-टोमहिष्यस्ताः (उ) | २४६.४१ | असत्क्षेत्रकूले पूज्यो- (सु) | २०.३३ | असंभातेन भृगुरापात्नी (सु) | १३.२५३ |
| अष्टमीबुधवारं च सोमे- (ब्र) | १३.३ | अष्टादशशरोपेतं (स्व) | ७७.६ | अष्टोत्तरनिपुत्राणां (उ) | २५२.५८ | असत्यं परहिंसां च त्यज (क्रि) | १७.६८ | असहायेन चैकतत्त्व- (सु) | ३५.२४ |
| अष्टम्यां च चतुर्दश्यां (सु) | ३१.१५८ | अष्टादशसहस्राण्येयोजनानि (स्व) | ८.४ | असंख्य तीर्थं सम्पन्न (उ) | १८०.६२ | असत्यभाषी क्रूरश्च (ब्र) | २७ | असहायेन तु मया तां त्वी- (सु) | ३६.७ |
| अष्टम्येकादशीभूता (ब्र) | १३.६० | अष्टाधिकं शतं चैव (उ) | ४५.५६ | असंख्य मंजरं नित्यं (उ) | २२७.६२ | असत्यभाषी क्रूरश्च (क्रि) | १६.८ | असागरोत्थं यूपम (पा) | १००.२ |
| अष्टम्येकादशीभूता (भू) | ४७.५८ | अष्टापदस्तं भयुतं (पा) | ११७.३ | असंख्य हर्षपूर्णत्मा (पा) | ७४.४८ | असत्यभाषी मित्रघ्नो (ब्र) | २३.१८ | असाधुन गौरनव्य- (पा) | ६५.१५५ |
| अष्टविंशतिके प्राप्ते युगे (भू) | ४७.६४ | अष्टाविंशतिवार- (उ) | २५३.४७ | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |
| अष्टषष्टिसुतीर्थानां (भू) | ६२.२५ | अष्टावेतेयतस्तस्मा- (सु) | ११.८६ | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |
| अष्टषष्टिः सुतीर्थानि (भू) | ६०.३५ | अष्टाशीतिसहस्राणां (सु) | ३.१५७ | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |
| अष्टाक्षरं च मंत्रेशये (स्व) | ३१.११३ | अष्टाशीतिसहस्राणि (उ) | ५२.३३ | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |
| अष्टाक्षरास्थितावाह (सु) | १७.२७६ | अष्टोत्तरं च तीर्थनांशत- (सु) | १७.२१२ | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |
| अष्टांगपातैः पितरौ (पा) | ८३.८७ | अष्टोत्तरतिलाजपैश्च (भू) | १२५.२६ | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |
| अष्टांगप्रणिपातेन- (सु) | २.६६ | अष्टोत्तरशतं चैव (उ) | ४२.१० | असंख्याता महाभागः (भू) | ५.३४ | असत्यवचनं यच्च मया (क्रि) | १७.१६३ | असाध्यं केचन प्रोचुर- (उ) | १६४.३६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् : : श्लोकानुक्रमणी

३३

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| असावपिस्थितः षोढाश्व (उ) | ११४.८ | असुरैरचितः समुद्रमध्ये (सु) | ३१.६५ | असौमहादुष्टपीडां (पा) | २०.६६ | अस्तिपाटलिपुत्राख्यं (उ) | १८१.२ | अस्त्रप्रत्यस्त्र संघाते (पा) | ४५.५५ |
| असावपिह्निषड्भेदां (उ) | ११४.१५ | असुरैस्तैस्तदात्यक्तं (सु) | ३०.१६५ | असौम्माश्चग्रहास्तत्रे- (सु) | ३४.३१६ | अस्तिभागीरथी (उ) | १७८.४ | अस्त्रप्रत्यस्त्रमंहारैः (पा) | ६४.५ |
| असावहंभोनामेति- (स्व) | ५१.२३ | असुरोवज्जनाभोयं बाल- (सु) | १५.१२७ | असोयजेस्वरो यज्ञो (उ) | २२६.७६ | अस्तिमाहिष्मतीना (उ) | १८३.२ | अस्त्रशस्त्राणि च (उ) | ८४४.७१ |
| असावहमितिब्रूयात् (स्व) | ५१.४७ | असूययाकिमर्थभाम- (उ) | २१५.३८ | असौ राजामदीयेनगाने- (पा) | २१.३२ | अस्तिमेभमवन्कश्चित् (स्व) | ११.६ | अस्त्रैः प्राणसख्यः (पा) | ७४.१०२ |
| असितागमुनिमंहगत (पा) | २८.६२ | असूयगगनंयदद- (उ) | १२६.७ | असौरोपपरीतात्मा- (उ) | २३१.२५ | अस्तिमेरुगिरेः पृष्ठे (भू) | ६३.३ | अस्त्रैः प्रज्वलितैः सिंह- (सु) | ४५.११० |
| असिपत्रवनंधोरकालं (सु) | ३.१६२ | असृजत्प्रकृतो ब्रह्मा (उ) | २२८.६६ | असौविप्रोमहापात्री (ब्र) | १७.१८ | अस्तिवाकविचदेवाय- (स्व) | २२.३४ | अस्थश्रवणमात्रेण (उ) | १८४.६६ |
| असिपत्रवनं चैव (उ) | १२६.२१ | असृजद्धोरनंकायां (सु) | ४५.११८ | असौविष्णोर्महापापी (ब्र) | ३.२६ | अस्तिवाराणसी पुण्या (भू) | ८६.२ | अस्थिचर्म नवैः पूर्णमाश्रितं (भू) | १५.६ |
| असिपत्रवनं प्राहुरत (क्रि) | ६.६४ | असृजन्मानसांस्तत्र- (सु) | ४०.१२० | असौसर्वगतोविष्णु (उ) | २३८.८६ | अस्तिवाराणसीरम्या गंगा (भू) | ४१.२ | अस्थिचर्मपितङ्गां (स्व) | ३५.१८ |
| असिपत्र वनाद्यैस्तु (उ) | ११४.७० | असौकाशीसमासाद्यधेनुं (सु) | २०.१२० | अस्तंयातेदिनकरे (उ) | २४५.२७४ | अस्ति सर्वगुणोपेतं (भू) | १०३.६० | अस्थिचर्मविशेषस्तु (भू) | ११८.४ |
| असिपत्रवनेधोरे (क्रि) | ६.६३ | असौगणेश्वरो देवर्कि (सु) | ४३.४७५ | अस्तिकक्षागताचैव (उ) | ६६.५८ | अस्ति सर्वपुरश्चेष्ट (क्रि) | १७.७ | अस्थिताः कुणयाः (पा) | १०१.१८ |
| असिपत्रैश्च सच्छिन्ना (भू) | ५२.२१ | असौजन्मत्रयावसाने (उ) | २५२.१८ | अस्तिकोल्हापुराणम् (उ) | १८६.१ | अस्ति सौराष्ट्रिकं नाम्नां (उ) | १६०.२ | अस्थिमात्रशरीरोभू- (उ) | १७७.६ |
| असिपुत्रिकायापश्चाद् (पा) | १०७.५२ | असौतस्मिन्नेव मुहूर्ते (उ) | २५२.७७ | अस्तिगोदावरीतीरे (उ) | १८०.२ | अस्तुवाकश्चिचंवायं (उ) | १२८.४३ | अस्थिरायांयिकल्पः (पा) | ६५.७८ |
| असौदण्ड्याकृतं ब्रह्मा (पा) | ७६.६ | असौतारयतेस्वानां (सु) | ३४.१८८ | अस्तिगोदावरीतीरे (उ) | १७६.२० | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्थिललाटि कंगूह्य (सु) | १०.१५ |
| असौमलीलापरमस्तुताय (सु) | ४३.२५७ | असौत्रिपाद्विभूतेस्तु (उ) | २२६.७४ | अस्तिचेष्टुकृतं किञ्चित् (क्रि) | ३.४८ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्थिशेषंमहद्वातं (उ) | १२५.४४ |
| असुभूतश्चभूतानामग्नि (सु) | १६.३६ | असौदुःखागताकन्या (क्रि) | ५.१६० | अस्तिचेष्टुदिविचिन्ते (क्रि) | २०.३४ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्थिस्तंभंस्नायु (उ) | १२६.१२ |
| असुरःसुमहेष्वासोजं (सु) | १६.१२३ | असौ दोषस्तवैवाद्य (भू) | १२१.४४ | अस्तालघ्वजानाम (क्रि) | ५.१ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्थिस्तंभंस्नायुवं (स्व) | २६.२० |
| असुरस्यचतस्यभये (सु) | ४३.३४ | असौ पंचवक्त्रं सर्वभूतपति (उ) | २५१.४ | अस्तितेखांडववनं (उ) | १६६.१७ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्थूलमध्यमुपरिपद्य (पा) | ११४.४१ |
| असुराणां तुसाप्रोक्ता (उ) | ३४.४४ | असौ पापीदुराचारः (ब्र) | १६.१६ | अस्तिदक्षिणदिन्नामं (उ) | १८७.३ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्नातएवआगत्य (उ) | ५२.१३ |
| असुराश्चपिशाचाश्च- (सु) | १३.१८६ | असौपुराउज्जयिन्यां (पा) | ४६.१३ | अस्तिनाम्नाकुक्षेत्रं (उ) | १८३.३६ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्नातभोक्तानित्यं (उ) | २२२.११ |
| असुरास्तंबदेवानाम- (सु) | ३१.७३ | असौमदनसंभूतो (उ) | २५०.२ | अस्तिपंचालदेशेषु (भू) | ६१.१८ | अस्तुवैकमलानाथ (उ) | १२८.२१३ | अस्नातोयोनिकं भुक्ते- (स्व) | ३१.५७ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|---------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| अस्माद्योयोरस्तस्य-(स्व) | ३१.५६ | अस्माकमपिमत्यस्ति (उ) | ४३.५१ | अस्माश्चनीयातत्र (उ) | १२८.६६ | अस्मिनयोयत्नमाप-(उ) | २४.१८ | अस्यकिञ्चित्तैमात्य (ब्र) | १६.१८ |
| अस्पृश्यत्वैकथंजातः (उ) | ११६.१ | अस्माच्च सर्वे प्रभवति (भू) | १०२.४२ | अस्माभिस्तुष्णमाकार्या (सु) | १८.८४ | अस्मिन् वीरमणि राजा (पा) | ४०.१० | अस्यच्छायामुपश्रित्य (सु) | ४१.२५० |
| अस्पृष्टग्न्यलोभ-(उ) | १२६.२०६ | अस्मात्तीर्थात्परतीर्थ (उ) | १६०.१ | अस्मिञ्छब्देमम (क्रि) | १७.२४ | अस्मिन् वै चैत्रमासे तु (ड) | ८४.१ | अस्यच्छाया समाश्रित्य (भू) | ११.२१ |
| अस्पृष्टाक्षिकमेतस्याः (पा) | ६६.३२ | अस्मात्तीर्थात्परतीर्थ (उ) | १५१.१ | अस्मिञ्जन्मन्य (उ) | १८४.८८ | अस्मिन्वै भारतेवर्षे (उ) | १२६.६ | अस्यतीरेनव प्राणी-(सु) | ३६.७१ |
| अस्पृष्टभागाप्रसंगेन (भू) | ६७.१ | अस्मात्पापतरान्य-(पा) | ६४.६८ | अस्मिन् कलियुगे (उ) | ६४.५८ | अस्मिन्वै भारतेवर्षे (उ) | १६७.८८ | अस्यतीर्थवरस्यावु-(उ) | २१६.४८ |
| अस्पृष्टद्वारादेवि- (सु) | ३४.६२ | अस्मात्स्थानाद्योजन (उ) | ४४.१४ | अस्मिन् कलियुगे धोरे (उ) | ७१.५६ | अस्मिन्वै भारतेवर्षे (स्व) | २६.१४ | अस्यतीर्थवरस्या-(उ) | २१६.२ |
| अस्पृष्टता निसर्वाणि (क्रि) | ६.१० | अस्मादर्शश्चप्रवर-(सु) | ३४.१०८ | अस्मिन् कलियुगे धोरे(उ) १३५.१०३ | | अस्मिन्वै भारतेवर्षे (उ) | १६८.७ | अस्यतीर्थस्य माहात्म्यम्(स्व) | २०.२ |
| अस्माकंधुत्तुषोः (उ) | २०८.१२ | अस्माद्भयास्तुर-(उ) | २४५.५६ | अस्मिन् कलियुगे धोरे (उ) १३५.१३० | | अस्मिन्निष्ठद्रेतदामर्षि-(सु) | १३ २२५ | अस्पृष्टलोदधेः (उ) | १२७.१४६ |
| अस्माकं चैवयदुत-(स्व) | ४०.३५ | अस्माद्रथतरात्कल्पा- सु | २३.६ | अस्मिन् कलियुगे धोरे (उ) १५४.६५ | | अस्मिन्मुनिर्जनोद्याने (भू) | १२३.३७ | अस्पृष्टदेवाः शरीरस्थाः (सु) | ४५.८० |
| अस्म. कालं गुरुः (उ) | १५३.७ | अस्माद्वाक्यानुविश्वस्तो(भू) | २५.२१ | अस्मिन् कलो विशेषेण (उ) | ७१.६ | अस्मिन्सीधंतपो-(उ) | १५२.२५ | अस्पृष्टश्रीविष्णोर्नाम (उ) | ७१.११६ |
| अस्माकं दर्शनं विप्र न (भू) | ६२.२१ | अस्मानेतादृशान् षट्वा(पा) | १०७.७ | अस्मिन् काले मनो (उ) | २४२.६४ | अस्मिन्सीधंतर्षणेन (सु) | १८.१०५ | अस्मांमनस्त्रयमहमन (उ) | २१२.५२ |
| अस्माकद्धेहिणस्ते (क्रि) | २१.७ | अस्मानेवान् जीवंती-(पा) | ११३.६ | अस्मिन् ग्रामे पुरा (उ) | १८५.७५ | अस्मिन्सीधंतरः (उ) | १४२.१२ | अस्यांसलग्नचित्तानां (उ) | १६८.११७ |
| अस्माकंनोजयोगोभयः (पा) | ६२.६ | अस्मान्प्रेषयगोलोकं (भू) | ३६.० | अस्मिन् धोर तरे देशे (उ) | ६६.२६ | अस्मिन्सीधंतराजो (उ) | १२६.२८० | अस्याउद्धारेहेतुर्वैम (उ) | २१३.७१ |
| अस्माकं ब्रह्महत्यायाः (उ) | १६८.५२ | अस्मान् संदह्मन्लेच्छत्वम्(स्व) | १५.४५ | अस्मिन् दक्षार्थं विष्णु- (उ) | २३८.८८ | अस्मिन्सीधंतरभाग (स्व) | ११.२५ | अस्याः कालोध्यतो (उ) | २१३.६५ |
| अस्माकंभयभीतानां (सु) | १६.१४१ | अस्मांसव विनिघ्नं (उ) | २१३.३१ | अस्मिन् वज्रमेमल्ल (उ) | २४५.३६२ | अस्मिन्स्थाने समागत्य (उ) | १५१.६ | अस्याः कुश्रतं राजन् (उ) | ५६.१५ |
| अस्माकं मन सिंहासीत् (सु) | १३.६२ | अस्माभिरयमारब्धा (सु) | १३.३४६ | अस्मिन्नेकार्णावीभूते (उ) | २२६.३ | अस्मिन्स्थानेस्थिता (सु) | ३३.११५ | अस्याः कोनुकभिन्ता-(उ) | १२५.१२६ |
| अस्माकमनुजादेवाभयं (सु) | १८.६३ | अस्माभिः पृष्ठमेतस्य (पा) | १८.२५ | अस्मिन्नेवक्षणेनून-(पा) | ७१.७६ | अस्मिन्सुखाद्भारतेवर्षे (सु) | १३.३८३ | अस्याक्षयिदिग्भूता (पा) | ११७.१३१ |
| अस्माकं संशयहेतुत्वं (उ) | २५५.२१ | अस्माभिर्नहिन्नं प्रेष्यं (पा) | ११२.२८ | अस्मिन्ने वधुषे विष्णोः-(सु) | ४१.३०३ | अस्मिन्सुखोत्तमानाथोददी-(पा) | ३२.२ | अस्याखरोक्तनपापस्य (क्रि) | २५.८१ |
| अस्माकमपिनाथस्त्वं (सु) | ३७.८६ | अस्माभिर्वारितः (पा) | ६३.८ | अस्मिन्नेवाचलेष्टं (उ) | १२६.२०७ | अस्मिन्सुखासनं (उ) | १६८.८३ | अस्याङ्गस्पर्शसंयोग- (सु) | १६.१७७ |
| अस्माकंकपि पापिष्ठो (पा) | ६४.८३ | अस्माभिः सुतपोन्वत (उ) | २२.३७ | अस्मिन् युगे हपो (उ) | ५७.३० | अस्याकांठाभगवतीलक्ष्मी (पा) | ७१.१६ | अस्याङ्गकल्याणविधौ (सु) | २३.८८ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------|---------|-----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| अस्यादोषोगुणो नैव (भू) | ३६.३६ | अस्यास्तवाष्टमोगमः (उ) | २४५.८ | अहंकृतेनमन्येत (उ) | १३२.१२७ | अहं देवो हृषीकेशः (भू) | ८८.४५ | अहं वृद्धिर्महाभाग (भू) | ७.३४ |
| अस्यानिमित्तं देवेन्द्र (उ) | २४६.१०४ | अस्यास्तुकीदृशकर्म (पा) | ६२.४४ | अहंक्रोधश्च कामश्च (सु) | ४५.१५ | अहं धर्म अहं मोक्षः (भू) | ३७.१४ | अहं ब्रह्मा अहं रुद्रमित्र (भू) | २८.३० |
| अस्यानुमरणात्म्यः (सु) | १६.१७५ | अस्यास्यवर्तितुंदेवी (सु) | ४४.८१ | अहंगच्छामिनोनाथ- (पा) | ३०.५४ | अहं धर्मस्य सर्वस्वमहं (भू) | ३७.१३ | अहं ब्रह्मा च देवाश्च (उ) | २२७.७० |
| अस्यांतरे प्रविश्याथ- (पा) | ७४.५७ | अस्याहंतु पितासाक्षात् (उ) | ७७.७८ | अहंचललितादेवी (पा) | ७५.४४ | अहं धाता अहं गोप्ता (भू) | ३८.१६ | अहं भवितरितख्याना (उ) | १६३.४७ |
| अस्यांदास्यामितं (पा) | ६५.१३६ | अस्याहं वैष्णवीशक्तिः (भू) | ६२.४८ | अहंचापिगतः पश्चाद् (पा) | ६६.२५ | अहं धात्री महाभाग- (भू) | २८.१०७ | अहं भवतनेष्यामि (क्रि) | ५.७८ |
| अस्यापत्पश्यतेविप्र (सु) | ४१.१०२ | अस्येशानाहिजगतो (उ) | २२७.३२ | अहंचाशोकमालाभिर्गो- (पा) | ७१.६५ | अहं न विस्मयं विप्र- (सु) | १८.१४० | अहं भ्रानात्वदीयोऽस्मि (उ) | १६७.३७ |
| अस्यापिनवमाहात्म्यं (उ) | २२२.२६ | अस्यैवदक्षिणेपाशश्च- (पा) | ७४.६४ | अहज्योतिरहं वायुरहं (सु) | ३६.१२८ | अहं नारायणो ब्रह्मन्- (सु) | ३६.१२१ | अहं भूरि सभाश्लाघ्यो (क्रि) | ३.५६ |
| अस्यां बलं कियन्मात्रं (भू) | ५४.११ | अस्यैवदर्शनान्तिम (सु) | ४३.१३४ | अहं ज्ञानवतां श्रेष्ठः सर्वं (भू) | ३८.३१ | अहं नारी अवध्या च (भू) | २८.११८ | अहं महात्माथनवान (क्रि) | १७.८३ |
| अस्यामुत्पत्स्यते पुत्रो (भू) | ३४.८ | अस्यैव हस्ताम्बरणं (भू) | ४२.२६ | अहं ज्ञानेन जानामि (पा) | २१.३८ | अहं गतिव्रताभद्रे पति- (भू) | १०३.५५ | अहं मित्रपद शक्रशत्रूनां (सु) | ३६.१२३ |
| अस्यांभवायेचाशमान् (पा) | २०.१६ | अस्नातः सर्वदाविप्र (उ) | १३६.३५ | अहतवपिताविप्रपूर्वं (उ) | २१४.२६ | अहं पतिव्रता वीर पर (भू) | १०३.२१ | अहं मूढाध्रुवंनातध्रुव (उ) | २०७.१२ |
| अस्यायावदभवेत्पूर्णा (पा) | ७४.१५५ | अहं कन्या मरुपा वै (भू) | ४७.१५ | अहतवर्णिकं प्राप्ता- (भू) | ५३.३६ | अहं पर्यपिर्णानाममूची (सु) | ३२.२१ | अहं मृग्यापुरोगन्धो- (सु) | १८.४४५ |
| अस्यावधनिमित्ताथं (भू) | ४५.२७ | अहंकार निवृत्तश्च (स्व) | ४६.११ | अहं तस्यमुनेरग्रे (उ) | २०३.३५ | अहं पांचालदेशीय (पा) | ६४.२३ | अहं मोहं यथातातात्व (उ) | १५.५४ |
| अस्याविवाह काले तु (भू) | ८५.६१ | अहंकारविहीनश्चतस्य (क्रि) | १६.८८ | अहं नस्याः समीपंतु- (सु) | ३८.१०१ | अहं पापात्मनां श्रेष्ठो (क्रि) | १७.४६ | अहं यत्र समुत्पन्नः (सु) | १५.२० |
| अस्याव्रतं कुरुप (उ) | ५७.३५ | अहंकारसमायुक्तामुखं (पा) | ७७.२६ | अहं तुष्टोऽस्मि ते विप्रवरं (स्व) | २०.४७ | अहं पुत्रो महाराज- (भू) | ७८.३५ | अहं यनिर्जितोयेन (उ) | ३८.६३ |
| अस्याश्चपरितः (पा) | ८२.७४ | अहंकारात्तुर्वैतस्मा- (उ) | २२८.१०० | अहं ते धर्मतः पत्नी (भू) | ४१.६ | अहं पुरानीर्ययात्रा- (पा) | २८.६१ | अहं यामिसमानेनं- (उ) | २१६.६६ |
| अस्याश्च रोदनाद्वैत्य (भू) | ११८.३५ | अहंकारावृत्तलोके (सु) | २६.४ | अहं ते धर्मतः पत्नी (भू) | ११६.२ | अहं पुराभवे राम द्विजः (पा) | ६७.५७ | अहं यास्यामितांद्रष्टुं (उ) | १३.२० |
| अस्याश्चांते प्रवर्तमि (भू) | ७७.८० | अहंकारेणयुक्तस्य- (उ) | २२६.४३ | अहं दयापरोधर्मः (सु) | ३६.१२६ | अहंपूजयतो विप्रस्त (उ) | १२६.१६३ | अहं यस्यामिदेवे (उ) | ११.४६ |
| अस्यश्रवणमात्रेण (उ) | ५४.६ | अहंकिल भवंदेवंपति (सु) | ४३.३१६ | अहं दानव धर्मेण- (भू) | ५०.१२ | अहं पूर्व स्थितः कोवा (क्रि) | १३.१०२ | अहं युः सर्वदा क्रुद्धः (क्रि) | १६.६६ |
| अस्याः सत्येन तुष्टाः (भू) | ६०.१८ | अहंकृताथविन्याचनारी (पा) | १०७.६५ | अहं दास्य शरीरामः (सु) | ३५.७१ | अहं वृद्ध्यां समायातो (उ) | १६३.२८ | अहं रक्षायुता नित्यं (भू) | ५८.३५ |
| अस्याः स्तनपरिष्ववेहोरेः (पा) | ७२.४६ | अहंकृतिमंकारः (उ) | २२६.४७ | अहं दासोऽस्मि ते (उ) | १५१.६६ | अहं बाला कथं जाता (उ) | १६३.५५ | अहं रत्नाचिनाथोऽस्मि (उ) | ६६.१६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमः

३६

| | | | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|--------------------------------------|--------------------------------------|
| अहं रामस्तु विज्ञेयोरामो (उ) १५०.७ | अहन्तु तव पुत्रस्य तव (सु) ४१.११४ | अहमाराधितस्तेन तस्मै (भू) ३६.३० | अहल्या तीर्थं नतोगच्छेत् (स्व) १८.८६ | अहोप्रवे रहं पुत्रां (उ) २०५.२० |
| अहं वर्षमहंसोमः (सु) ३६.१२६ | अहन्तु विस्मयं विप्रन (स्व) २७.१४ | अहमासंपुराराजा चौर- (क्रि) ६.२० | अहल्यापावनश्चैव (उ) २५४.३७ | अहोऽस्य तपसो वीर्य- (भू) ३०.८४ |
| अहं विज्ञा विहीनोवाक्यं (पा) ६७.५३ | अहन्ते कथयिष्यामि (सु) ३२.२ | अहमासं पुराराज (क्रि) ६.१०८ | अहल्या रघुनाथ (उ) २४२.१३६ | अहो कल्पशतेनापिनि (उ) २१३.६८ |
| अहं विश्रवसः पुत्री (उ) २४२.२४१ | अहन्ते जनकोवत्स (सु) ३६.११३ | अहमासं महावीर तस्या (क्रि) ५.६२ | अहश्चमुदिनश्चैव तीर्थं (स्व) २६.६५ | अहो कष्टं महो कष्टं (पा) ११४.१२६ |
| अहं विष्णुरसौ विष्णु (क्रि) ६.१२३ | अहन्ते प्रतिकूलस्तु (सु) ३३.१४१ | अहमासं सर्वभौमः (क्रि) २१.४८ | अहिच्छन्नांगतस्ता- (पा) ६५.५६ | अहो कृतार्थावयमे वासां (सु) ४३.३६३ |
| अहं विष्णुरहं रुद्रो (उ) ८२.३० | अहन्तेवल्लभानाथ (उ) ६८.६ | अहमासां महादेव- (पा) ८२.७२ | अहिच्छन्नापतिः सर्वैः (पा) १३.४६ | अहो चित्र मनुष्याणां (क्रि) १५.६१ |
| अहं वीरकृतेमानानतेस्तु (सु) ४४.१०५ | अहन्तेवाँदंत्य पश्यामि (सु) ४१.२६५ | अहमाहारयिष्यामि- (उ) २३२.१३ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहोचित्रमहोचित्र (क्रि) ७.६ |
| अहं वृत्रः कथं देवि मामेवं (भू) २५.१० | अहन्यहनिहृष्टात्मा (उ) २४८.१६ | अहमिद्रः कथं चैषानो- (सु) १७.१७३ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहोचित्रमहोचित्र (क्रि) ७.७४ |
| अहं शरणमायातः- (भू) २५.११ | अहन्यहनिजायतेक्षयः (सु) ३१.१७ | अहमीक्षिमेसर्वे नाना (क्रि) ५.८२ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहोचित्रमिदं वाक्यं (क्रि) १५.३५ |
| अहं शुद्धेन भावेन (भू) १२२.३५ | अहन्यहनिदेवेन्द्र (सु) १२.६५ | अहमुत्पाद्यस्तुत्रान्- (उ) २१७.४० | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं संख्यामुपासित्वा (सु) ३७.१३२ | अहन्यहनिपत्किंचित (स्व) ५७.५ | अहमेकाकिनी नारी (क्रि) ५.४३ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं सर्वाणि सत्त्वानि (सु) ३६.१२४ | अहन्यहन्नुल्लानं (सु) ३.५५१ | अहमेको महामूर्खः- (भू) १२२.१६ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं साध्वी समाचारा- (भू) ४१.५२ | अहमध्यवतारेपुत्रां (उ) २३५.३५ | अहमेतच्छरीरं वैखङ्ग (उ) १५४.३१ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं सोऽयमहयोगोऽह- (सु) ३६.१२७ | अहमध्यागतस्त (पा) ८२.६३ | अहमेवं न करिष्ये हरे- (भू) १०.३७ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं सुरतशास्त्रज्ञ (क्रि) २३.३४ | अहमध्यवमीशानमाया (उ) १२६.२०१ | अहमेव न्हाप्राप्तमयि- (भू) २२.४२ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं स्वादु सदाभुजेदद्यां- (सु) ३२.२३ | अहमध्यपरराधाना- (पा) ८२.४४ | अहमेव निहम्येनं (ब्र) १३.७३ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं हंसोभविष्यामि- (उ) १२८.१८६ | अहमाकाशकः प्राप्तो (भू) ७.४७ | अहमेवैवरोलोके- (उ) २३८.२७ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं हि भूषिता भद्रे तथैव (भू) ५२.८ | अहमाक्रमिन्सौम्य (सु) ३६.६४ | अहमेवहृत्सितानजो- (सु) १०.१०६ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहं हि सर्वदादेविश्रीराम (उ) १५०.६ | अहमात्मा परेशानिपरा- (उ) १७५.२१ | अहनिशपितृपतिः (ब्र) १५.१० | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |
| अहन्तु तव देशे (उ) २२३.७७ | अहमादिरहंपुत्रं (उ) १०.३४ | अहलादकारिणी पुसां- (सु) ३४.१८६ | अहिच्छन्नेजयानंदीकं (सु) ३४.१३५ | अहो ज्ञातं सर्वदेवभद्रं (पा) ११६.१८६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| अहोनित्यममभ्येतकः (उ) | १०६.५ | अहो लोकेषु पुण्येश्वर (भू) | ३.५४ | आकर्ण्यचिदानंद (उ) | १६२.२ | आकर्ण्यवरपू- (पा) | ११६.१० | आकाशाद् महागज मेवा- (भू) | ३७.५४ |
| अहो पश्यतमूढत्वं (पा) | ३५.३३ | अहो विश्वेश्वर (उ) | ३७.२ | आकर्ण्यंतीकांतस्य (उ) | १८७.३६ | आकर्ण्यतेमे जीवंतु (पा) | ११४.१४१ | आकाशानित्यतेजोवं (उ) | २२६.२ |
| अहो पश्यतयोगस्य (पा) | १७.२ | अहो विष्णु समाराध्य (क्रि) | १७.२२६ | आकर्ण्यमहाभाग (उ) | २०१.१८ | आकर्ण्यसंचितं (उ) | १२७.४४ | आकाशान्माहतां (उ) | १३२.७७ |
| अहो वतमहत्कष्टं (उ) | ७१.३१४ | अहो विष्णोश्चमाहात्म्यं (उ) | ८०.१ | आकर्ण्यमहाभागवर्ण (उ) | २१७.६ | आकर्ण्यं पुनरस्वमंत्रेण (सु) | ३२.६३ | आकाशेभुवि नो विष्णु (सु) | ४०.१५१ |
| अहो वलवनीमाया (क्रि) | १५.४१ | अहो विष्णोश्च माहात्म्यं (उ) | १३२.२१ | आकर्ण्यशिविराजन् (उ) | २२२.१ | आकारयनिदेवस्त्वा (पा) | ६६.७४ | आकाशे देवताः सर्वा (भू) | ११०.३ |
| अहो भगवत श्रेष्ठायनू- (उ) | २३८.३४ | अहो नोर्वैस्तथा काम्यः (सु) | १५.३४३ | आकण्टिकष्टवापेन (पा) | ६१.४४ | आकारः सहिविज्ञेयः (पा) | १०४.४७ | आकाशेभुविमध्यचक्राणां- (पा) | २३.५७ |
| अहो भर्तृधर्मज (स्व) | २७.११ | अहो वृत्तमहोरूपमहोचनम- (सु) | ८.१०५ | आकर्ण्यचास्यपापंपुण्यं (ब्र) | १७.१६ | आकारितान्मदास- (पा) | ६.३१ | आकाशेभुविमध्येनृपर्वतेषु (भू) | २१.१४ |
| अहो भाग्यं भूमिपतेरत्न (पा) | २२.५३ | अहो व्यासस्य दुष्टत्वं (उ) | २१५.४१ | आकर्ण्यचैकदाधर्मं (पा) | ६५.१२६ | आकारैर्वर्जितं नित्यं (भू) | १२३.३ | आः किमेतदिनिप्रोच्य (उ) | ११३.२४ |
| अहो भारतवर्षस्यकः (क्रि) | १७.२६१ | अहो शक्तिः कुपुत्राणां (क्रि) | १६.१३ | आकर्ण्यतस्यवाक्यं (उ) | १२८.६१ | आकाशं पृथिवी चैव (क्रि) | २३.१२० | आकुर्वजजगददृष्ट्वा (उ) | ३३.६ |
| अहो मायान्हाविष्णो (क्रि) | १७.३३ | अहो श्रीकृष्ण माहात्म्यं (पा) | ८४.३ | आकर्ण्यतस्यामूढोऽसौ (क्रि) | ५.१८४ | आकाशं वायुतेजांसि () | ८.४४ | आकुर्वन्माकुलाजाता - (भू) | २८.१०२ |
| अहो मेमनसोमो (पा) | १००.१० | अहो सत्यमहो धैर्यं महो (भू) | ५३.३१ | आकर्ण्यवचनंतस्य (ब्र) | २३.२८ | आकाशएतदेवे (उ) | २४५.११७ | आकुलिक्कनलोकेनुकिमिदं (पा) | ३३.५ |
| अहो रात्रश्चकः प्रोक्तः (क्रि) | १७.७५ | अहो सर्वदुःखापनो- (पा) | ११६.२६ | आकर्ण्य वाक्यं तु मनो- (भू) | ५४.१४ | आकाशगामिनोर्विप्राः (सु) | १३.३२५ | आकुलेपुकरिशेष्य (पा) | ३६.४६ |
| अहो रात्राणितावतिमासः (सु) | ३.६ | अहो सर्वेश्वरो (उ) | ३६.३० | आकर्ण्य वाक्यं नृपतेश्च (भू) | ७३.८ | आकाशमात्रूपोत्पश्चाद्- (भू) | ३७.२७ | आकृत्याचतथाचिह्नैः (पा) | ६६.३७ |
| अहो रात्रे गते पश्चाद (सु) | २१.२६७ | अहो सर्वेश्वरो विष्णुः (उ) | ७१.३१६ | आकर्ण्य वाक्यं परमं (पा) | ६०.५८ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टः यः समाप्त- (भू) | ५३.६५ |
| अहो रात्रे गते पश्चाद (सु) | २१.२८३ | अहो सुवदुष्टतराश्च (उ) | १५५.३० | आकर्ण्य वाक्यं परमं महान्तं (भू) | १८.४२ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टाणामव्ययमाप्रोक्ता- (पा) | ७६.६ |
| अहो रात्रेण विहिता (उ) | ५.६६ | अहो सुवदुष्टतराश्च (उ) | १५५.३० | आकर्ण्य वाक्यं परमार्थं - (भू) | ३१.१८ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टाणामव्ययमाप्रोक्ता- (पा) | ७६.६ |
| अहो रात्रो पवासेन स्वर्गं (स्व) | २७.७२ | अहो सुवदुष्टतराश्च (उ) | १५५.३० | आकर्ण्य विप्रवाक्यानिविप्र (स्व) | २२.८२ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टाणामव्ययमाप्रोक्ता- (पा) | ७६.६ |
| अहो समस्य चरितं कृष्ण (उ) | २५३.२ | अहो सुवदुष्टतराश्च (उ) | १५५.३० | आकर्ण्य विप्रवाक्यानिविप्र (स्व) | २२.८२ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टाणामव्ययमाप्रोक्ता- (पा) | ७६.६ |
| अहो रूपमहोशानिरहो (उ) | २५५.५५ | अहो सुवदुष्टतराश्च (उ) | १५५.३० | आकर्ण्य विप्रवाक्यानिविप्र (स्व) | २२.८२ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टाणामव्ययमाप्रोक्ता- (पा) | ७६.६ |
| अहो लोका अनितरं (स्व) | ५०.३२ | अहो सुवदुष्टतराश्च (उ) | १५५.३० | आकर्ण्य विप्रवाक्यानिविप्र (स्व) | २२.८२ | आकाशवायु ते जांसि (भू) | ८.४४ | आकृष्टाणामव्ययमाप्रोक्ता- (पा) | ७६.६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : : श्लोकानुक्रमशी

३८

| | | | | |
|--------------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|----------------------------------|
| आक्रोशमानान्नाक्रोशेन् (सु) १६.२२३ | आगच्छन्नपियस्तस्याना (सु) १८.४५६ | आगतानथताम्बर्वा (पा) ११४.७४ | आगतोसिद्धर्थ (उ) २४०.१२ | आगतं तु न दास्यति (भू) ८१.२८ |
| आक्षिपाएवद्वयेतेयत्र (पा) ३.३८ | आगच्छभगवन् देव (क्रि) २२.१११ | आगता नतंकाः पूर्व पुरं (भू) ७८.८ | आगतोद्वुर्दारण्ये (उ) १३५.७ | आगमिष्यतिरीर्षेण (उ) १६७.१८ |
| आखंडलविनाभीरुद्रे (उ) १२७.१०१ | आगच्छभगवन् विष्णो (उ) ८६.२६ | आगतान्दानवान् (उ) १६.६६ | आगतौतौसमालोक्य (उ) २२१.३३ | आगमिष्यतियोगात्पा (सु) २३.८७ |
| आखंडलैतितन्नाम मरुत्- (भू) ५.१०१ | आगच्छभूपसर्वानो (पा) ५३.२ | आगतान्भोजनाय तु (भू) ६६.१५ | आगत्यचकरे वृत्वा (पा) ५१.६५ | आगमोक्तेनमन्त्रेण (उ) ८३.२६ |
| आखंडलैतितन्नाम मरुत्- (भू) ५.१०१ | आगच्छविष्णो (उ) २४४.७६ | आगतायां महाराजा (भू) ४८.२१ | आगत्यतंसभा (क्रि) ३.३६ | आगमोक्तेनमन्त्रेण (उ) ८५.२६ |
| आखंडलेन सार्धं ते (भू) ६१.१६ | आगच्छ कीरकमतिवः- (पा) ४१.८ | आगतावसवः सर्वे (सु) ५.८ | आगत्यतंसप्रतीहारं (पा) ५६.३६ | आगमोमुनिभिः प्रोक्तो (उ) ८०.७२ |
| आखुनकुलमाज्जीरि (ब्र) १६.६ | आगच्छशर्ननंदेहिता (उ) २०७.१६ | आगतास्तंसमाने तुं (ब्र) १६.१७ | आगत्यतंसप्रहृष्टो- (पा) ६२.३६ | आगममानोगोप्त्री- (पा) १०५.१८६ |
| आसेटकसमायुक्तः (उ) १३४.६ | आगच्छाच्यु- (उ) २५.१५ | आगतास्तुसमानेतुम् (ब्र) ३.२१ | आगत्यतासामेकाथना (पा) ७४.८८ | आगमराज्यंरघुनंदनो (पा) ११६.१४७ |
| आख्याति च महाराज (भू) ११६.२२ | आगच्छेतीददंस्थानसेवितं (स्व) ३३.६३ | आगतास्त्वंडजाः सर्वे (भू) ८५.४० | आगत्यदैत्यगदया (उ) १२.१२ | आगिरसेनतेतत्रकृत्वा- (सु) १३.३७८ |
| आख्यातंमहदाकर्ण्य (उ) १६८.६८ | आगततमुनिष्वद्वारामो (पा) १६.५१ | आगताः स्मवयंसर्वे (उ) २४४.५८ | आगत्यपतिताः सर्वा (उ) १२८.७० | आग्नेयमद्वैतमृतां च (उ) १६८.७५ |
| आख्यातंश्लोकमेकम् (ब्र) १२.६४ | आगततंमुनिवरं पत्न्या (पा) १६.७ | आगतास्यजलस्पृष्टवा (पा) ७४.६६ | आगत्यपतिताः सर्वा मातृ (स्व) २२.६१ | आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं (उ) २३६.१५ |
| आख्यायिकां पुरावृत्तां (उ) १७५.४६ | आगततंसमालोक्य (उ) २०१.२८ | आगताहं पति त्यक्त्वा - (भू) ५०.५० | आगत्यपित्रोस्वरणेपति (पा) ६.२४ | आग्नेयतंमहाभाग- (उ) २०.२८ |
| आख्याहि कारण सर्वं (भू) ६.७ | आगतधनुस्ततश्च (पा) ११६.२२६ | आगतेतुभयेभूप आचरेन् (क्रि) २१.७६ | आगत्यमानरोभक्ष्यमपूर्वं (सु) ३१.११७ | आग्नेयं बारुणं- (सु) ७७.५ |
| आख्याहिस्वरितो (स्व) ४०.३४ | आगतं नारदं ज्ञात्वा (उ) ७१.७६ | आगतेस्मिन् गृह्णाद्दूताः (ब्र) १२.४३ | आगत्यमातुरेयोसामुद्र- (सु) १८.४२० | आग्नेयवास्त्रं तोल (उ) २०.१७ |
| आख्याहिभगवंस्तथ्यकावेरी (स्व) १६.२ | आगतं वीक्ष्य श्रीराम (पा) ४६.१ | आगतेस्यदनेदिव्ये (ब्र) १७.२७ | आगत्यवेष्टयागामु- (पा) ७१.६६ | आग्नेयं नुयदाश्व- (सु) ३२.६६ |
| आगच्छकुशलं तैस्तु (उ) ८०.१५३ | आगतः पुरुषोदेवो (उ) २८.१० | आगतोस्मिमुदाद्रष्टुं (क्रि) ३.३८ | आगत्यसत्यवा-राजा- (पा) ३२.२२ | आग्नेयं यदापृष्टो (पा) ५६.१३ |
| आगच्छनुभवतोपि राघवः (पा) १०४.८ | आगतस्तवभागेन हृष्टो (सु) ३६.१२१ | आगतोयं कलिघोरो (उ) १६५.५६ | आगत्यसन्निधन- (पा) ४०.४७ | आग्नेयं नुयदाश्व- (सु) ३२.६६ |
| आगच्छतु मया सार्धं (पा) ५४.४ | आगतागरुडा रूढा (ब्र) ३.२२ | आगतोराक्षसस्तां (पा) ३६.२३ | आगत्यमन्त्रिण- (पा) ४४.१ | आग्नेयं नुयदाश्व- (सु) ३२.६६ |
| आगच्छ त्वंस्त्रिया सार्धं (भू) ६६.४२ | आगता दानवा विप्रं (भू) ५.१२ | आगतोवाच मेत्सुप्त्वा (स्व) ५२.६ | आगत्यथोपायमा (उ) २०७.३६ | आग्नेयं नुयदाश्व- (सु) ३२.६६ |
| आगच्छन्तु मया सार्धं (भू) ८३.१५ | आगता नगरं सार्धं (ब्र) ११६.६७ | आगतोसिकिमर्थं (उ) २४२.२३ | आगत्यध्वमतदवाच (उ) १६.६८ | आग्नेयं नुयदाश्व- (सु) ३२.६६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् : : श्लोकानुक्रमणी

३६

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-----------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| आचन्द्रार्कमस्व (उ) | १२७.१६६ | आचार्येवितयेधर्म- (उ) | १२८.२८० | आजगामाश्रमवपदं (उ) | १५२.७ | आजानुनाभिपर्यंतं (पा) | ११२.५२ | आज्ञापयजगन्नाथगंतुं (उ) | २१६.६० |
| आचम्यनर्पयेद्देवान् (उ) | २५३.४८ | आचार्यपुत्रः शुश्रूषुः (स्व) | ५३.४० | आजगामाश्रमपदं- (सु) | ४४.८२ | आजानुपादं प्रज्ञालय (पा) | ११७.४७ | आज्ञापयत्तनोर्गंतुं वत्र (पा) | ६०.१२ |
| आचम्यदेवं ब्रह्माण- (स्व) | ६०.६ | आचार्यभोजयेत्स्वच्छि (स्व) | १६.२८ | आजगमुः परमप्रीताः (सु) | ३१.२४ | आजानुवाहुं काकु- (उ) | २४३.१६ | आज्ञापय महादेव- (स्व) | १४.१५ |
| आचम्यमार्जनं कुयति (उ) | २५३.४६ | आचार्यसंश्रयित्वा (उ) | २२६.५ | आजगमुः परमोद्विग्ना- (सु) | १६.११७ | आजिघ्रन्तीव चान्योन्यं (सु) | १५.३१ | आज्ञापय महाराजत्व (पा) | ६७.७३ |
| आचम्यविधिवत्स (पा) | ६५.३६ | आचार्यविददोरामो (पा) | ११.३८ | आजगमुः पितरस्तुष्टा- (सु) | ६.१४ | आजिघ्रन्तान्तमुदक (उ) | १८३.२० | आज्ञापयति नत (उ) | १७.८५ |
| आचम्याग्निजलदग्नेन (ब्र) | १४.२६ | आचार्येण हिमर्णेण (उ) | २४६.२ | आजगमुर्देवताः सर्वपर्वता- (भू) | ५.६३ | आजुहावविद्वरस्थान्- (सु) | ४३.३८६ | आज्ञापयित्वा स्वकाद्र- (स्व) | ५७.६१ |
| आचारिः प्रक्षिपेद्- (सु) | २७.१४ | आचार्ये संश्रिते चापि (स्व) | ५३.७६ | आजगमुश्चैत्रमुख्या- (उ) | १५५.३२ | आज्यनामः मन्त्रवतुर्- (सु) | १६.५७ | आडिनिमांतर प्रेक्षीसत (सु) | ४४.४८ |
| आचार्ये द्विगुणं दत्वा प्रणि (सु) | २८.१८ | आचार्ये वेदसंपन्नो (उ) | २२३.५० | आजगमुः सुरर्थः शीघ्र (क्रि) | २५.८४ | आज्यंतु नोयं नीचस्य (ब्र) | १६.१५ | आडीवकमहाद्युद्धं सर्व- (सु) | ३७.१६६ |
| आचांडालादिकप्राप्य (उ) | ७१.२६६ | आचार्ये संस्थितं चापि (स्व) | ५३.७६ | आजगमुस्तत्र देवास्ते (उ) | ४५.१४ | आज्यभागेन वतत्र (स्व) | ३६.५० | आडकी महतिष्पावा- (सु) | १७.११३ |
| आचां तः किंचनासाग्र- (उ) | १८४.११ | आच्छाद्यश्च रजालै (उ) | १२.३० | आजगमुस्ते त्रयो देवा (भू) | ५.६० | आज्ये सति निराज्यं (पा) | ६४.७६ | आतनुष्वेति वाक्ये (पा) | ११४.२८३ |
| आचान्तरचस्वयं रामो (पा) | ११७.८२ | आच्छाद्यश्चेत्स्वस्त्रेण (उ) | ८४.६ | आजगमुस्ते महात्मानो (भू) | ५.६२ | आजप्ता चैव सादे- (पा) | ७४.१६४ | आतनुष्वेति वाक्ये (पा) | ११४.२८३ |
| आचार्यायित्वा सोमित्रि- (पा) | ११७.१६४ | आच्छाद्य दशनैरा- (उ) | ४०.३३ | आजगमूराधवंद्रष्टु- (सु) | ३८.८८ | आजप्तावप्यनिच्छंतीनी (पा) | ६६.१०६ | आतपेनाकुलो जीवो (भू) | ८६.३१ |
| आचामेदश्च रातेवा (स्व) | ५२.५ | आजगामजनस्था- (उ) | २४२.२५३ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारनिर्वका ये ते (भू) | ६७.३६ | आजगामततो ब्रह्मा- (सु) | १४.१७४ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारश्च तथा राजंस्ते (भू) | ६७.२७ | आजगाममहादेवो (ब्र) | १३.१६ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारहीनकुलभ्रष्टम् (ब्र) | ४.४७ | आजगाममहादेवो (ब्र) | १३.१६ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारेण नरो देवि (भू) | ७.६ | आजगाममहादेवो (ब्र) | १३.१६ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारेण प्रवर्तत काम- (भू) | १३.७ | आजगाममहादेवो (ब्र) | १३.१६ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारेण विना मर्त्यो- (भू) | ४२.४४ | आजगाममहादेवो (ब्र) | १३.१६ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |
| आचारेण सुसंपन्नो (भू) | १२२.१५ | आजगाममहादेवो (ब्र) | १३.१६ | आजगमुर्हृषितास्तत्र तथा (सु) | ४२.५५ | आजप्ताऽसोजनन्या (पा) | १२.२८ | आतिथेयो गंधिनीमात (क्रि) | ५.६१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

४०

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| आत्मकायश्च द्वावेतौ (भू) | ६४.६० | आत्मनः कुशलं ब्रूते- (भू) | ४८.१४ | आत्मनो जीवनाधार्य- (भू) | १३.१४ | आत्मविद्याप्रबोध- (भू) | १२८.२७४ | आत्मानं सुखमिच्छद्भिः (क्रि) | ४.४२ |
| आत्मघाते दुर्मति (उ) | ४१.२१ | आत्मनः कोटिसंख्याकं (उ) | १८.१० | आत्मनोऽपि यदा विघ्नं (सु) | २३.१३४ | आत्मविद्यायुतत्वज्ञः (उ) | ८१.१५ | आत्मानं स्वर्पति पुत्रान् (ब्र) | ११.३६ |
| आत्मजौ रघुवंश (उ) | २४२.१४४ | आत्मनः पुण्यभावेन (भू) | ६४.६ | आत्मनोऽपि यदा विघ्नं (स्व) | ५०.२६ | आत्मशक्तिं च विज्ञायते (पा) | ६६.६३ | आत्मानं स्वयमेवास्ति (क्रि) | ६.१३१ |
| आत्मज्ञानमुपायेनो (स्व) | ५६.२३ | आत्मनः प्रतिकूलानि- (सु) | १६.३३६ | आत्मनो मरणं व्यर्थं (पा) | ११६.२७६ | आत्मसंवेदनं नित्यं (उ) | ८०.७५ | आत्मानं हनुमुद्युक्तं (पा) | ६४.२६ |
| आत्मतपः प्रभावेन (भू) | ३.३३ | आत्मनश्च प्रवक्ष्यामि- (भू) | ४६.६६ | आत्मनो हृत्प्रभोर्म- (उ) | २१०.६ | आत्मसृष्टिमुत्तान्तं (भू) | १०३.५२ | आत्मानं मधिकं मय्ये (सु) | ३८.८३ |
| आत्मतृप्तिं प्रकुर्वति (क्रि) | ६.१२२ | आत्मनश्च महादेव- (भू) | २२.३० | आत्मनो वाग्वरस्थापि (उ) | ११२.२६ | आत्मसौख्यं प्रतीच्छेद्यः स (भू) | १०.१३ | आत्मानं मपि जानीयात्- (सु) | १६.३१३ |
| आत्मतेजः प्रकाशेन (भू) | ५७.३४ | आत्मनश्च महाभागा- (भू) | ३४.२ | आत्मन्यनिमाधायत्य (सु) | १५.३४६ | आत्मस्वरूपवन्तश्च (भू) | ६६.३० | आत्मानं मभिज्ञश्च (उ) | २०८.१६ |
| आत्मतेजोभवाः पुण्या- (सु) | ३६.१४६ | आत्मनश्च स्वभर्तृश्च सर्व- (भू) | ४६.१४ | आत्मन्येवमतिचक्रे (उ) | १७८.१८ | आत्मस्वरूपेण तत्त्व- (भू) | २१.३२ | आत्मानं मभितो निद- (पा) | ६८.८२ |
| आत्मत्राणपरामीताः (भू) | १६.११३ | आत्मनश्च हि तं कार्यं (पा) | १७०.२२ | आत्मनो बहवः प्रोक्ता (उ) | ८०.६३ | आत्माधारी घग्धारो (उ) | ७१.१८० | आत्मानं नर्गयामास (सु) | १०.८५ |
| आत्मदत्तां हरेद्यस्तु (क्रि) | ६.३० | आत्मनश्चेष्टितं सर्वं (पा) | ६४.३४ | आतिथेयो निगुश्रूषुः (उ) | ८८.३६ | आत्मा न नश्यते देवि (भू) | १२०.५२ | आत्मानं मात्मन चैव- (सु) | १८.४४ |
| आत्मदिक्षु चरन्तश्च तस्य (सु) | ४१.१६ | आत्मनः सद्गन्तुपुत्रान् (सु) | ४०.६६ | आत्मपादयुगस्थापि (भू) | ८८.४८ | आत्मानं च प्रतिष्ठाप्य (उ) | १३५.८४ | आत्मानं मेव कुतवान् (सु) | ३.१७७ |
| आत्मदुःखं सुखं च (भू) | ५७.१४ | आत्मनस्तु प्रभावेणा (भू) | १२०.३८ | आत्मपुण्येन यच्छानं (क्रि) | २०.१५६ | आत्मानं च महेशेन निन्द्य (पा) | ४६.३२ | आत्मानं निन्द्य वयं (पा) | ८५.१८ |
| आत्मदेवदत्तियति (उ) | १६६.१६ | आत्मनस्तेजसश्चैव (भू) | १२०.१८ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मदेवस्वप्रियस्य (उ) | १६६.६६ | आत्मनस्तेजसो भूता (भू) | १२०.२१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मदेहस्य मांसानि (क्रि) | २१.१०४ | आत्मनाऽऽगतानि द्वा (पा) | ११६.२६१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मदोषं च वृत्तान्तं (भू) | १०५.२५ | आत्मनाऽऽगतानि द्वा (पा) | ११६.२६१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मदोषं न जानासि (भू) | ७७.६३ | आत्मनाऽऽगतानि द्वा (पा) | ११६.२६१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मदोषप्रभावेन दानवा (भू) | ६.३१ | आत्मनाऽऽगतानि द्वा (पा) | ११६.२६१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मद्रोहः कृतस्ते (उ) | ५१.५० | आत्मनाऽऽगतानि द्वा (पा) | ११६.२६१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |
| आत्मनः कुस्तेमर्त्यो (क्रि) | १०.१८ | आत्मनाऽऽगतानि द्वा (पा) | ११६.२६१ | आत्ममित्रं कृतं तेन (भू) | ७.१६ | आत्मानं चित्तयेत् प्रतासा (पा) | ८३.७ | आत्मानं निन्द्य वयश्चैव (सु) | १५.१७६ |

| | | | | |
|--------------------------------------|--|-----------------------------------|--------------------------------------|--------------------------------------|
| आत्रेयस्त्वयकौडिन्य (स्व) ३६.११६ | आदित्यं दर्शयित्वान्मम् (स्व) ६०.५ | आदित्याश्चतस्तस्तेषां (सु) ३२.१३२ | आदिष्टं च फलं राज्यां (भू) १०४.१६ | आदौविमोचने (उ) १७८.१४ |
| आथर्वणाश्चोत्तरतः (सु) २७.३८ | आदित्यं तरुणाभासो- (स्व) ३.२८ | आदित्यैर्वसुभिः साध्यै (उ) ४५.६ | आदिष्टः पुरुहूतेन- (सु) २२.४ | आदौस्नानादिकृत्वा (उ) ६५.२० |
| आदरंतिप्रतीतायेतेनराः (पा) ६६.६० | आदित्यतापतप्तास्ते- (स्व) ४.२६ | आदित्यैर्वसुभिः साध्यै (सु) १६.६५ | आदिष्टोदेवदेवेनकृतवान् (सु) १३.२२३ | आदौस्त्वययनं कुयत् (क्रि) २२.१०७ |
| आदरं राजसदसि- (उ) २०.१.३७ | आदित्यतेजः समतेजसां (भू) १०२.३४ | आदित्योवरुणो (उ) ३२.१६ | आदिष्टो ब्रह्मणापूर्वः (सु) १२.२ | आद्यं जगद्भुवोर्बीजं (उ) २३०.१६ |
| आदरेण मयाया- (क्रि) १७.१८१ | आदित्यरूपं तमसां विनाशं (भू) ७३.१६ | आदित्योर्वचसातामना (ब्र) २२.२६ | आदिष्टोसिपु रात्रह्यन्- (सु) २३.६२ | आद्यं पुरुषमीशानं सर्वं (भू) ६६.११ |
| आदातुं फलमूलानि (सु) ४२.३८ | आदित्यवर्णं तमसः (उ) २२७.७३ | आदिदेवस्त्वमेवासि (उ) ४४.१३ | आदिसर्गमहंतावत् (स्व) २.१ | आद्यं सत्ययुगं प्राहुस्त (क्रि) २६.२ |
| आदानं तु निदानं तु (भू) ११५.२७ | आदित्यवर्णः पुरुषो मुखे- (सु) ३६.१२२ | आदिदेवः प्रसन्नो (उ) २१.११ | आदिसर्गमिदं श्रुत्वा (स्व) ६२.१२ | आद्यं सनत्कुमारस्य (पा) ११५.६४ |
| आदाय देवताधीशस्तां (उ) २३१.७ | आदित्यवंशमखिलं (सु) ८.३६ | आदिदेश ततः क्रुद्धो (उ) २३८.६६ | आदिसर्गस्त्वया ब्रह्मन् (सु) ७.६८ | आद्यः कविर्हयग्राव (उ) ७१.१७४ |
| आदाय बलमाश्रित्य- (उ) १८४.४५ | आदित्यलोकं व्रजति कुलं- (स्व) २७.७५ | आदिदेश निजामात्य- (पा) १६.३५ | आदेशं कुरुगच्छामि (क्रि) ८.७८ | आद्यमाजगवं नाम- (भू) २८.५४ |
| आदाय राधवं (उ) २४२.११५ | आदित्यशयनं नाम यथा (सु) २५.३ | आदिदेश भटान्सवन् (भू) १२४.१० | आदेशं प्राप्य विप्रं (भू) ४.११ | आद्या प्रकृतिरेतस्य- (क्रि) २.७ |
| आदाय अपरयाभक्त्या (उ) २२५.२६ | आदित्यश्च द्रमावायु- (पा) ८५.४३ | आदिदेश सकामं तु (पा) १२.६६ | आदेशं कुरुगच्छामि (क्रि) ८.४२ | आद्या सा भ्रमती पुण्या (उ) १३७.४२ |
| आदाय श्वतरियुगमव- (उ) १८०.६३ | आदित्यस्याश्रमो यत्र (स्व) २७.७४ | आदिदेशाशुतं विप्रं (उ) १७६.५२ | आदौ कलंकश्चन्द्रस्य (क्रि) ८.४२ | आद्या दशाब्दादव्याप्य (उ) २००.४२ |
| आदावनं तु यज्ञेषु (भू) ६५.२५ | आदित्यः सप्रभो याति (सु) ४३.३७२ | आदिदेव्यानुभावेदौ (पा) ६६.१३ | आदौ कुयन्मलस्नानं (उ) ६३.१४ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदाय विद्रुहं देवं द्रुतं (भू) २३.३५ | आदित्यादिग्रहाः सर्वे (क्रि) २४.६ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ कृतयुगे तस्मिन्- (सु) १८.१० | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदाहात् तत्कनास्ति (पा) १०६.८० | आदित्यादेवमातुश्च (उ) २४६.४४ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ देवानां कृत्वा (उ) ८६.२३ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदिकर्त्तृसर्वस्यः (उ) ७१.१७३ | आदित्याद्वा दशैवेह रुद्रा- (सु) ३०.१३४ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ परीक्षयेद्विप्रं (भू) ६७.३१ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदिकूर्मो जलाधार (उ) ७१.१७६ | आदित्याद्वा दशैवेह रुद्रा- (सु) ३०.१३४ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ पापसमुद्रे तस्मिन्- (उ) १२६.२८ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदितो यन्नरः स्नात्वायः (सु) ३२.१३८ | आदित्यानां यथासुर्यो (क्रि) २२.६४ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ प्रायस्तस्मात्सिद्धे (उ) १२६.१६ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदितो ब्रूहि तत्सर्वं (क्रि) २.४३ | आदित्यावसवो (उ) २३८.१०७ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ प्रयातस्तस्मात्सिद्धे (उ) १२६.१६ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| आदित्यं चैव सौवर्णकृत्वा (सु) ३४.३०७ | आदित्यावसवो रुद्राः (स्व) ११.२२ | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ ब्रह्मविमंथानं (क्रि) २३.५६ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| | | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ ब्रह्ममुखाद्विप्रः (सु) ४६.११३ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |
| | | आदिदेव्यो महावीर्यो (सु) १६.१२१ | आदौ मध्यकसानेनो (उ) १२६.४५ | आद्यो रणगणान्सर्वान् (उ) १६०.११ |



धोपद्ममहपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

४२

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| आनंदपोषसंपूर्णः (पा) | ११३.४८ | आनीतोवणिजावा- (उ) | १८६.२७ | आपतंतजधानाशुद्ध- (उ) | १८.१०४ | आवद्धमुकुटाः सर्वाः (सृ) | ३१.८१ | आमयोपद्वदामस्तु (पा) | ५८.४० |
| आनंदयतीगोपीनानगना (पा) | ७२.५२ | आनीतोहरिशर्मा च (क्रि) | २०.४६ | आपत्स्वपि स जीवेत (भू) | १०५.१६ | आवाल्याममपापेषु (स्व) | ३१.१० | आममंकपुरं नाम्ना- (उ) | १८२.२ |
| आनंदसिधुमग्ना (उ) | २३८.१४४ | आनीपचक्रसचपञ्ज- (उ) | ४.२ | आपदाचन चाक्रांतः- (सृ) | ३६.३२ | आवात्येनतुविप्रैश्च (पा) | ८८.२७ | आमलकीकदाह्ये पा (उ) | ४५.५ |
| आनंदादेवचाहारिहृदयं (सृ) | ४३.१६३ | आनीयचार्ययद्रामेवाकथं (सृ) | ३८.१२४ | आपदासहितप्राप्तं- (सृ) | १८.२७० | आवृत्ताङ्कटाहंता- (पा) | १०५.२० | आमलकीतंतोगत्वा (उ) | ४५.४५ |
| आनंदामृततन्मिश्रं (पा) | ६६.७५ | आनीयतत्फलपक्वं (क्रि) | १६.२० | आपदाहरणार्थाय (ब) | ४.१६ | आभाषितेपिपित्राद्यै (पा) | ७२.१२३ | आमलकीनगोह्येप (उ) | ४५.१६ |
| आनंदायनमोनिभ्यः- (भू) | १६.६५ | आनीयपद्ममल्लानं (उ) | १८४.२६ | आपदगतोयदाप्यं (उ) | ११५.१४ | आभाष्य नहुषविप्रो (भू) | १०८.३४ | आमलक्यास्तले (उ) | ४५.४ |
| आनदिन्यैकटिदेव्याः (सृ) | २२.१४२ | आनुपूर्णायातसर्व- (सृ) | १७.८ | आपस्तब्रौततश्चक्रं (सृ) | ७.३५ | आभिचारिकृत्वाद्यामि (उ) | ७८.४ | आमश्राद्धतदाकुर्याद् (गृ) | १०.३२ |
| आनम्य तं द्विजश्रेष्ठं (भू) | ८४.२० | आनुपूर्णाविनश्यति (स्व) | ३.१० | आपस्तस्तभिरे सर्वाभया- (भू) | २८.६२ | आभीरकन्यारूपाश्च- (सृ) | १६.१३२ | आमिषलवणं चैव (क्रि) | २२.७८ |
| आनम्यपरमाभक्त्या (उ) | १८०.६५ | आनुशासनिकारण्य (पा) | ११५.७६ | आपादतुलसीमालं (पा) | ७२.१४६ | आभ्युदयप्रवक्ष्यामि (पा) | ६७.४८ | आमिषाहारनिरतो (उ) | ४६.२६ |
| आनयध्वं च त्वरिताः (उ) | ६१.६ | आनुष्टुपसवैराज- (सृ) | ३.११४ | आपाद्वंद्वयमुक्तानि (उ) | १६८.१२ | आभ्युदयिकमेवापि कालं (भू) | ३६.८० | आमुक्त्वतुलसीमालः (उ) | २४५.१५६ |
| आनयतुहयसर्वेसन्मदाः (पा) | २६.११ | आनुयत्तद्भुलताश्लेषस्मि (पा) | ६६.६४ | आपावर्षं शारदगता (पा) | १०३.२६ | आमंत्रणामंत्रितानां (गृ) | ५.३१ | आमुक्तिमन्त्राकुर्याः (पा) | ८२.२७ |
| आनयामासदेवान् (उ) | १०.१६ | आनुशंस्यजयोधैर्यतपः (सृ) | १६.२१२ | आपूर्णशारदगता (पा) | १०३.२६ | आमंत्रितश्च य. श्राद्धे (स्व) | ५६.४२ | आमुक्तिमन्त्रैश्चैव (गृ) | ३३.७७ |
| आनतस्याभक्तपुत्रो- (सृ) | ८.१२८ | आनेतुकामः पणानि- (उ) | १७५.३४ | आपोनारायणो देवः (उ) | १२७.४ | आमंत्रितासदालक्ष्मी (सृ) | १७.१०२ | आमूलपल्लवाकीर्णः (उ) | १८७.१२ |
| आनीतस्य घनस्याद्धं- (उ) | २१८.१६ | आनेतुं तौ समायाताः (क्रि) | १५.३३ | आपोहिनरजमत्वा (पा) | ११४.४२६ | आमंत्र्य ऋत्विजः सर्वान् (उ) | १८६.३८ | आमूलाग्ररंगोऽस्येव (उ) | १६४.४४ |
| आनीतात्मगृहं दिव्यम् (भू) | १०३.५६ | आनेतुं प्रस्थिताद्भूताः (ब्र) | १३.४५ | आपोहिष्ठितमंत्रेण- (सृ) | ३४.२५५ | आमंत्र्य चांगः पितरं- (भू) | ३१.१६ | आमोदमंदारकरं (उ) | २२६.४६ |
| आनीतासिखिशालाक्षि- (सृ) | १६.१६५ | आनेतुमं च्छेद् (उ) | २४२.१०८ | आपोहिष्ठितमंत्रेण- (सृ) | २७.४६ | आमंत्र्य विप्रसजगामगेहं (पा) | ६०.५६ | आमोदयनमालोके- (उ) | १७७.४३ |
| आनीताह्यथराज्ञातु- (पा) | ११०.८६ | आंतरस्मरदोषदि- (उ) | २२४.७८ | आपोहिष्ठितवैवाह्यं (सृ) | ४७.६ | आमंत्र्य विप्रसजगामगेहं (भू) | १८.४० | आमोदैवाग्निमन्त्र- (पा) | ७४.१७२ |
| आनीतास्तेनहिरणा- (पा) | ११४.३७५ | आन्दोलनंततः सर्वैः (उ) | ८३.३२ | आप्यायितोऽस्मि सुतशं (क्रि) | २५.२२ | आमंत्र्य स गुरुं पञ्चादं (भू) | ६८.१० | आम्याग्निमन्त्रमग्निम् (स्व) | ५१.६ |
| आनीतोब्रह्माहाराजन (उ) | २११.१६ | आन्वीक्षिकी तुयावार्ता (सृ) | ३२.११७ | आप्रणखालां वैहिरण्यं (उ) | २४५.२०७ | आमंत्र्य स मुनीन्मवान् (भू) | ११०.१ | आम्रत्रैकुदवैश्वप्रिया (पा) | १२.७७ |
| आनीतोयद्विजः पाप (उ) | २१०.३३ | आन्वीक्षिकीसर्वविद्या (सृ) | ३४.८ | आप्रयागात्प्रनिष्ठानात् (स्व) | ४१.४ | आमयैश्चविहिनास्ते (भू) | ७४.११ | आम्लानकपयिधानि- (स्व) | १४.२८ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|---------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|----------------------------|---------|
| आयमौमंत्रिविश्रान्त- (उ) | १६०.३२ | आयातोसौमहाकाल (उ) | १५१.४७ | आयुर्दशदिनं ब्रह्म (पा) | १०६.६३ | आयुष्यवर्द्धनं भस्मा- (पा) | १०६.१ | आराधयेद्वा देवं जितं (भू) | ३७.५० |
| आययौवृषभा- (उ) | १८.८४ | आयानमतिथिष्टवा (क्रि) | १३.६६ | आयुर्दशसहस्राणि- (स्व) | ३.५० | आयुष्यवर्द्धने हेतु (पा) | १०५.१५१ | आराधयेदिजमुत्तेन (स्व) | ५७.२६ |
| आययौशाश्वतदिव्य (उ) | २४४.६२ | आयुः कर्म च वित्तं च (भू) | ६४.१३ | आयुर्द्वानि सौख्यं च (सृ) | ८.२६ | आयू राजा म शोकं (भू) | १०६.१६ | आराधितः सुतपसा- (सृ) | ३३.१६० |
| आयसैः परिधैः पूर्णं (सृ) | ४०.१७५ | आयुः कीर्तयैशोषमैः (उ) | १२७.६६ | आयुर्वल्लयशोमित्रं (क्रि) | २१.६३ | आयोः पुत्रं खलं युद्धे (भू) | ११४.१८ | आराधितस्त्वया भक्त्या (भू) | ६७.४० |
| आयतंगोकुलकाले- (सृ) | १८.२७४ | आयुः क्षीणं भवेत् पुंसाम्- (सृ) | ४६.१२१ | आयुर्वल्लयशोवर्चं (उ) | ६२.१२ | आयोः पुत्रो महाप्राज्ञो (भू) | १०८.४ | आराधितस्तदाते- (उ) | २१.१६ |
| आयातंतन्महदृष्टवा- (पा) | ४४.१६ | आयुना राजराजेन (भू) | १०८.१८ | आयुर्ललाटे लिखितं (पा) | ११७.३७ | आयोश्च दुःखमुद्धदृष्ट्य (भू) | १०६.५६ | आराधितस्त्वया हंच- (पा) | ६२.६७ |
| आयातंतन्महदृष्टवा (पा) | ६१.६ | आयुपुत्रं समाज्ञातं (भू) | १०५.५४ | आयुश्च ब्रह्मणा स्वरूपं (पा) | ६७.१०२ | आरक्तः पद्माना भस्तु (उ) | १२०.७३ | आराधिता कुतः (उ) | २०१.१०३ |
| आयातंतं हनुर्मंतं वीक्ष्य (पा) | ४२.३ | आयुपुत्रस्य भायर्हि (भू) | ११३.५ | आयुश्च श्रोत्रं वलंतस्य (उ) | ७६.३ | आरक्तमुस्मिन्ध (पा) | ११४.२०६ | आराधितानुगत्ये (उ) | २०२.५६ |
| आयाततस्त्वदगुणैव (क्रि) | १७.१७ | आयुपुत्रस्य वीरस्य (भू) | १०६.३८ | आयुः श्रीश्च वलंतस्य (उ) | ७६.३७ | आरम्भनासिकामूल (उ) | २२५.४३ | आराधितो बृहद्भूत (सृ) | २.५६ |
| आयातागुरुदास्तं (क्रि) | १०.५७ | आयुः पुत्रान्धनं विद्यां (सृ) | १०.४६ | आयुः श्रीश्च वलंतस्य (सृ) | ५.२१ | आरक्षत्रयोयेनं (उ) | ६.३२ | आराधितो महाविष्णुः (क्रि) | १३.१६१ |
| आयाति कठमूल ते- (भू) | १५.१६ | आयुः पुत्राश्च दाराश्च (क्रि) | ६.११५ | आयुषोऽन्ते च गंगायां (क्रि) | ६.७५ | आरादेव तया दिव्य (पा) | ११०.४६ | आराधितो हृषीकेशो (उ) | १४५.८ |
| आयाति बहुधा तत्र (उ) | ८३.२३ | आयुः प्रदो जगत्स्यमिन (सृ) | ५.१८ | आयुषोऽन्ते ययो मोक्षं (क्रि) | १२.११८ | आराधनानां सर्वेषां (उ) | २५३.१७६ | आराधितो हृदं तेन कश्य (उ) | १३५.८ |
| आयाति भक्ष्यमादाय (भू) | ८५.३६ | आयुः प्रमाणं जीवतिऽपि (स्व) | ५.१५ | आयुषोऽन्ते ब्रजे न्मोक्षं (क्रि) | ६.६२ | आराधय तया गोरीं (उ) | २०१.१०१ | आराध्य जगतामोक्षं- (पा) | २०.६१ |
| आयाति यांति ते सर्वे (पा) | ८६.३७ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुषोऽपि चतुर्भागं ब्रह्म- (सृ) | १५.२८४ | आराधय तनाया- (उ) | २०६.३५ | आराध्य तेति भक्तये (पा) | ७१.१०० |
| आयाति यांति ते सर्वे तां (भू) | १७.२६ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुषोऽपि चतुर्भागं ब्रह्म- (सृ) | १६.८२ | आराधय तितामिवं (उ) | २०३.१० | आराध्य पराभक्त्या (पा) | ७४.१६ |
| आयाति सर्वदा देवि (उ) | १३५.३५ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुष्कामो नरो यस्तु (पा) | २०.३६ | आराधय तितामिवं (उ) | २०३.१० | आराध्य जगतामोक्षं- (पा) | २०.६१ |
| आयातीतां महाशक्ति- (पा) | ३४.१३ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुष्मतो नरास्तेन (भू) | १०५.३८ | आराधय तितामिवं (उ) | २०३.१० | आराध्य मानपादाब्ज- (सृ) | ३.३६१ |
| आयाते कांति केमासि (क्रि) | १३.७८ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुष्मतो नरास्तेन (भू) | १०५.३८ | आराधय तितामिवं (उ) | २०३.१० | आराध्य मानो भगवान्- (सृ) | १५.८४ |
| आयाते माधवे मासि (क्रि) | १२.२७ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुष्मतो नरास्तेन (भू) | १०५.३८ | आराधय तितामिवं (उ) | २०३.१० | आराध्य मानो भगवान्- (सृ) | १५.८४ |
| आयातोऽमुं कर्त्तव्यामि (क्रि) | ६.१३६ | आयुः प्रमाणं जीवति शतानि (स्व) | ५.८ | आयुष्मतो नरास्तेन (भू) | १०५.३८ | आराधय तितामिवं (उ) | २०३.१० | आराध्य मानो भगवान्- (सृ) | १५.८४ |

| | | | | |
|------------------------------------|--------------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------------|-------------------------------------|
| आगाधेत्य यथालिगे (पा) ११४.३४६ | आरूढयौवनानित्यं (उ) २२६.१११ | आर्द्रचवसनं कस्मात् (उ) १२८.६५ | आलिगनप्रभावेण (क्रि) ६.१६६ | आवर्धोनिदयादेवि (पा) ६६.६० |
| आरामकर्ताछायासु- (भू) ६८.१० | आरूढयौवनैर्दिव्यैः (उ) २ २६.५१ | आर्द्रः परिकरोमस्तः (उ) १२७.७० | आलिगीलंगिवेपेण (स्व) ५५.१३ | आवयोर्हृदयेविष्णु- (क्रि) ६.११३ |
| आरामकारिणोयेच (क्रि) २.१०० | आरूढास्य दनेदिव्ये (ब्र) ६.३४ | आर्द्रशुष्कलघुस्थूल- (स्व) २६.३८ | आलिग्यतेयथाकांता (उ) १३२.६३ | आवयोश्चैवहेतुत्वाजान (सु) ४०.४२ |
| आराम वाटिकामध्ये- (भू) १४.४३ | आरूढेशंकरेदेवे- (पा) ११४.२७६ | आर्द्रशुष्कलघुस्थूलं (उ) १३१.२० | आलिग्यराशतां (पा) ११४.७६ | आवर्तमानं चावर्तमानं (सु) १५.३८७ |
| आरामे च तडागे च (भू) १४.२४ | आरोग्यं प्रास्करदेशे (उ) १३३.२० | आर्द्रशुष्कलघुस्थूलं (उ) १६७.८७ | आलिग्यवा मेन करेण (पा) १०६.५० | आवर्तयद्भ्योगीतानाम (उ) १७५.५० |
| आरुहः सर्वेवानरा (पा) ११६.२३२ | आरोग्यसर्वतश्चैव- (सु) ३४.६३ | आर्द्रशुष्कलघुस्थूलं (उ) ७८.८४ | आलिग्यसादरं कंठे (सु) ३४.७० | आवाकिरन्मुखेनस्य (पा) १२४.१५२ |
| आरुहो हतदास्यब्राह्मण (उ) २०६.१६ | आरोग्यायुष्प्रमाणाभ्या- (स्व) ६.२८ | आर्द्रशुष्कादिभिः पार्ष्णि (उ) ११४.२३ | आलिग्याघ्रायशिरः (पा) ११४.३८२ | आवांकार्यस्यकरेण- (सु) १४.७५ |
| आरुहो रथं दिव्यं (भू) ११०.२२ | आरोपणं पिप्पलानां (उ) १५७.५ | आर्द्रस्तस्यचपुनो (सु) ८.१३५ | आलेख्यसहितं दिव्यं- (स्व) १३.२७ | आवां देवान्पुनीश्चैव- (भू) २८.७६ |
| आरुहो हविमाना (उ) २४२.३४६ | आरोपितः सर्वैश्वर्यां (उ) १४१.३६ | आर्द्रमिषारोहिणी (सु) ६.१२५ | आलोकिततेन मुरारि (सु) २४.४० | आवां रामजगत्पूज्यो (उ) २४३.२६ |
| आरुह्यपितरौ द्वष्टुं (पा) ६.२३ | आरोप्यलोकमनयदात्मी (सु) १२.१० | आर्द्रेषु चैव शुष्केषु (भू) ३२.२५ | आलोकोत्कंठितेन (उ) २२.१७ | आवाविमानमारुह्य (क्रि) २३.१७० |
| आरुह्यवृषभं (उ) १८.५७ | आरोहणं प्रकुर्वं (उ) २००.६२ | आर्द्रैः शुष्कैर्यथा (उ) ११३.३२ | आलोच्यमातरं (उ) ३१.३६ | आवांभ्यागरमेणाभ्याम (सु) ४०.२६ |
| आरुह्यसत्यमातूर्यं (उ) २४६.६३ | आरोहणाकमद्भ्रातु (पा) ६४.६५ | आर्द्रैः श्लेष्मस्यधर्माण- (स्व) ६.१० | आलोच्यराजनगरी (उ) २४२.३६६ | आवाभ्यां पारतंत्र्येण (उ) १७८.३३ |
| आरुह्यसूत मुखेन (उ) २४७.२५ | आरोह तुर्महात्मानो (उ) २४५.३७८ | आर्द्रैः तु विधानेन (स्व) ४३.८ | आलोच्यसर्वतोभूमि (सु) ५.१० | आवाभ्यांहिन विप्रेन्द्र- (भू) १२.२८ |
| आरुह्यहर्म्यमद्राक्षीया (उ) २०६.४८ | आरोहति दिव्यं धर्मनराः (स्व) ३१.१७३ | आर्द्रैर्विवाहे गोद्वंद्वं (पा) ६.४८ | आलोच्यविप्रगुप्तेन- (स्व) ३०.३८ | आवाभ्यामपि मनव्यं (भू) ५७.१७ |
| आरुह्यैर्दविमानं (पा) ११०.५५ | आरोह्यन्विमानंतम् (उ) ८६.१६ | आर्द्रैस्तसंभेतच्चमुक्ति (सु) १३.३५० | आवयोः कृपयामुक्तां (पा) ६६.१३६ | आवाभ्यामण्यन्वाहादा- (सु) ४०.२८ |
| आरुह्यैरावतनागं (सु) ४.२२ | आर्जवत्वं चतुर्थं च पंचमं (भू) ३४.३१ | आलक्ष्यसहस्रोत्थाय (उ) २१६.७१ | आवयोर्भुविनदानाच्य (उ) २११.५० | आवाभ्यामपि सपत्न्योच (उ) १११.२४ |
| आरुह्यैरावतनागं (उ) ५.५४ | आर्तजनं परोवादं (स्व) ५३.१८ | आलंघ्यकंठे बाहुभ्यां (पा) १०६.३३ | आवयोर्तर्तनासिन् (पा) ७५.४६ | आवाभ्यामर्थस्वकामच्च- (सु) ४०.३४ |
| आरूढः पुष्पकंथानं- (सु) ३८.१७८ | आर्तनाचदरिद्राणां (स्व) ४२.२ | आलंघ्यत्वत्करं वृद्धः (पा) ११२.१०६ | आवयोरुज्ज्वला (पा) ६६.६१ | आवाभ्यामदशे (उ) २००.११० |
| आरूढं महिषं देवं धर्मराज (भू) १६.६ | आर्तनामाशुफलदः (उ) २२३.२६ | आलिगंती वनस्थानं (उ) १८७.२६ | आवयोर्यजोर्ननीप्रोत्थे (पा) ६४.४२ | आवाहनमुद्रयानं (उ) ८६.२७ |
| आरूढयौवनः श्रीमान (उ) २२६.१६८ | आत्तो जिलासुरयथि- (उ) २२३.३० | आलिगनपरेगाढं (पा) ११०.१४ | आवयोर्द्विजसंयोग (उ) ६०.३६ | आवाहनादिकांपुजां (सु) २४.४ |

श्रीपद्ममहापुराणम् : : श्लोकानुक्रमणो

४५

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|----------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| आवाहवदिनै (उ) | २०१.१५ | आवृत्तगोपनारीभिश्च (क्रि) | ११.८६ | आश्चर्य परमोद्ब्रंहा (सु) | २६.३६ | आश्रमेयत्रयोधनेरिक्त- (स्व) | २२.८१ | आषाढस्यासितेपक्षे (उ) | ५२.३ |
| आवाहनादीनुपचारान (पा) | ११४.६५ | आवृत्य च यथाशक्ति (पा) | ११४.५३ | आश्चर्यमितसंक्षिप्त्य (उ) | ३.४५ | आश्रमेयुचयानिस्तु (उ) | ८०.२६ | आषाढादितुमर्षि (सु) | २०.८२ |
| आवाहना सनचाध्य (पा) | ११४.४६ | आवेदयामासश्रुषी- (सु) | ३५.१४ | आश्चर्येनेतत्परमं (उ) | ६६.३७ | आश्रमेयुमहाभागान् (सु) | ४५.२५ | आषाढेकृष्णपक्षे तु (सु) | ५२.२६ |
| आवाहनासनाध्यक्षि- (उ) | २५३.५७ | आवेशिनोयमच्छ (उ) | २४१.४१ | आश्चर्यसुमहाबाहो- (सु) | ३६.६२ | आश्रमेयुयथोक्तेषु (सु) | १६.२१६ | आषाढेमासिदध्यन्तं (क्रि) | १३.२६ |
| आवाहयामिदेवेशं (उ) | ६६.४५ | आशशिताश्चसंतुष्टाः (उ) | १२२.६५ | आश्चर्यस्त्रिगुणसौंदर्यं (पा) | ७४.८४ | आश्रमोऽगमणीयः (उ) | १२८.१७६ | आसंपुराद्रिजातीनाम (उ) | १८३.१० |
| आवहयित्वाते सर्वे (उ) | ७७.५२ | आशाच्छेदंचकुर्वति (पा) | ६६.७३ | आश्चर्यं हि वचोगृध्र (क्रि) | ३.८६ | आश्रमोहिमहादिव्यो (उ) | १४५.१२ | आसनं कल्पितं कुर्यादि (पा) | ११५.२६ |
| आवाहयित्वैतान्देवान् (पा) | ११७.६३ | आशादत्त्वापरेभ्यश्च (क्रि) | १७.१८४ | आश्चर्याणां वहूनां हि (सु) | ३६.६० | आश्रित्य चातकीं (पा) | ८२.३७ | आसनं च प्रवक्ष्यामि (पा) | ११४.३१० |
| आवाहयेज्जगन्नाथं (उ) | २५३.६० | आशापाशशतैर्बद्धो (पा) | ६७.५४ | आश्रमंतं समा लोक्य (उ) | ११६.१० | आश्रित्य स्वगुरोः (पा) | ८२.११ | आसनं तु तद्यादघात् (त्र) | २५.३५ |
| आवाहयार्चादिपुस्थाप्य (पा) | ६५.८८ | आशाश्चमुमुक्षुर्गमं (सु) | १२.८ | आश्रमं प्रविशद्वमः (सु) | ३७.१३३ | आश्विनं चैकौनविशं- (सु) | ४६.१६८ | आसनं तु महच्चित्रं (पा) | ११३.३५ |
| आविकसंधिनीक्षीर (स्व) | ५६.३१ | आशिषप्रदो देवी (उ) | २४५.२८६ | आश्रमः शोभते पुत्र (भू) | ६७.२२ | आश्विनस्य द्विजश्रेष्ठ (त्र) | २१.२ | आसनत्रयमाननीयदिव्यं (सु) | १२.५६ |
| आविरच्यज्जगत्सर्वा (पा) | ८२.२ | आशिषागेहरव्येनं (उ) | २०२.२५ | आश्रमस्तस्य दुष्टस्य (उ) | ४०.२८ | आश्विनस्यामलेपक्षे (उ) | ११६.२६ | आसनं पादुकाद्यं वस्त्रा (उ) | ११६.५० |
| आविरासीततः क्रोधो (उ) | ३.३६ | आशिषो वचनं लब्ध्वा (उ) | २४६.५ | आश्रमः स्थापितस्तेन (सु) | ३३.४६ | आश्विनस्यामलेपक्षे (उ) | १२३.१४ | आसनं पादुकाद्यं वस्त्रा (उ) | १२३.३६ |
| आविर्धं भूवसहसा (क्रि) | ४.६७ | आशीभिर्भिनंदयथा (भू) | ७२.३१ | आश्रमाणि च पुण्यानि देव (सु) | ३६.८७ | आश्विनं कृष्णपक्षे तु (उ) | ५८.२ | आसनं पादधर्मं च (भू) | ६२.६ |
| आविर्भूतं समा लोक्य (क्रि) | १३.११७ | आशीर्भिमनं चैनं (पा) | ४.२१ | आश्रमादाश्रयसंघः- (सु) | १५.३५२ | आश्विने मासि विप्रैः (क्रि) | १३.४७ | आसनस्य महत्त्वानं (भू) | ४६.४८ |
| आविर्भूतं हृदिष्ट्वा (क्रि) | ६.१७४ | आशभिर्भिनंदय (भू) | ११६.११ | आश्रमादाश्रयसंघः- (सु) | १५.३५२ | आश्विनीचापिकर्णा (उ) | ७६.११ | आसनस्योन्नती देव (स्व) | १५.४८ |
| आविर्भूतो जगन्नाथो (उ) | १६८.८५ | आशीरिमुतो द्वाय (सु) | ४३.१३० | आश्रमान् पितेव च्मि (सु) | १६.५७ | आश्वान् पितृतात्मान् (स्व) | १४.१३ | आसनान् पूर्णामृत्याय (भू) | ६२.५ |
| आविर्भूतो महेशोत्र- (उ) | १२६.२६८ | आशुमाधीनरोयाति (उ) | १२८.१४१ | आश्रमान् विद्यान्पश्य (पा) | १४.१३ | आषाढकृष्णपक्षे तु (उ) | ५२.१ | आसनान् पूर्णामृत्याय (भू) | ११२.२ |
| आविर्भूतो ब्रवीद्देवो- (भू) | ३२.३० | आशुमामवजानीतं (उ) | २१६.३५ | आश्रमाय वनं रुद्धा (उ) | १६३.३५ | आषाढमासि संप्राप्ते (उ) | ७०.४ | आसने शयनं यानं ध्याने (भू) | ७५.६ |
| आविषेशसरस्तत्र (पा) | १५.४० | आशुराज्यं परित्यज्य (उ) | ४०.४६ | आश्रमेण विनामूढो (उ) | १३२.१०६ | आषाढशुक्लैकादश्यां (पा) | ८०.३० | आसने शयने याने स्वप्ने (भू) | १६.४ |
| आविष्याद्यसुवेगेन- (भू) | ४५.२६ | आश्चर्यं कथयिष्यामि (उ) | १८५.३५ | आश्रमे यवयोधमेरिक्त (उ) | १२८.६० | आषाढस्यासितेपक्षे (उ) | ५३.१ | आसने पूजयिष्ये (सु) | ६.६५ |

श्रीषष्ठमहापुराणम् : : श्लोकानुक्रमणी

४६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| आसनेसुशुभेमुख्ये (उ) | २४२.२१५ | आसीत्पुत्रैस्त्रिभिः सार्द्धम् (ब) | १२.१६ | आसीनोयोगुरोः पार्श्वे (स्व) | ५३.१३ | आहातिविर्बहिः कार्यं (पा) | ११७.१५१ | आहूतं राजपुत्राभ्यां (सु) | ६६.२८ |
| आसनशुभानीन्द्रियाणि (सु) | १६.७६ | आसीत्पुत्राबलः (उ) | ११७.२३३ | आसीन्ममहिमां (उ) | १८४.४ | आहत्यमेरीं गभीरादैत्यानां (सु) | ४२.७१ | आहोमाहात्यमनस्य (सु) | ३५.५ |
| आसन्धुभानीन्द्रियाणि- (सु) | ४०.१६२ | आसीत्पुराबृहत्कल्पे धर्ममूर्ति (सु) | २१.१ | आसुरीत्रिसृष्टादेवी (उ) | ३४.४३ | आह पुण्यं कृतं वत्स (भू) | १००.५ | आहूयन्तं नृपं षष्ठया (पा) | ४२.२४ |
| आसन्नाश्चतस्तेषां (सु) | १६.१५ | आसीत्पुराभारौद्रश्च (उ) | १५४.८ | आसुरोमास्तु मेभावः (सु) | ४२.३५ | आहरेद्ब्राह्मणो भायाम् (स्व) | ५४.१० | आहूयन्तं महासैन्यं (पा) | ४२.१ |
| आसस्तस्य हि पुत्राश्च (भू) | ८५.३१ | आसीत्प्रतिज्ञाकुरेयं विनाशे (भू) | २८.२८ | आसुरो ह्यपते भावोनच (सु) | ३५.७७ | आहर्ता भूतले चैकः सर्व- (भू) | २८.८४ | आहूयानं नृपं षष्ठया (पा) | ५२.३ |
| आसप्तमकुलं चैव पुनीते (स्व) | २४.३ | आसीत्त्रेतायुगे राजा (ब्र) | ५.२२ | आस्ते वाराणसी (पा) | ६२.६१ | आहारं कृत्स्नं च मेराजर्वे (सु) | ३६.१०६ | आहूयामासन्तूर्णवटुकं (उ) | ५२.१२ |
| आसप्तरात्रादुदये नृपात्य (सु) | २२.५५ | आसीत्सपरशुनामि (क्रि) | १५.६ | आस्ते विस्फूर्जितमुखस्ती (सु) | १८.४१६ | आहारार्थं प्रगच्छामि (भू) | ८६.४ | आहूयामासमुजर्व्वं (पा) | ४६.६८ |
| आसमुद्रां प्रभुंश्च त्वं (भू) | ८२.१५ | आसीत्सर्वजनिनामि (क्रि) | १६.४६ | आस्ते वैकुण्ठनगरे (उ) | २२६.७६ | आहारार्थं पुरावत्सगरुडो (सु) | ४७.४१ | आहूयामासनागरं (पा) | ४०.२६ |
| आसाद्य देवता देहं (उ) | २०८.५८ | आसीत्सह्यादिविषये (उ) | १०६.३ | आस्थापयानियमं (सु) | १०.१११ | आहुकश्चाप्यवन्ती (सु) | १३.५४ | इक्षुभिः संयुतां भूमिं (स्व) | ५७.१३ |
| आसां तु सानुरागाणां (उ) | १२६.२६० | आसीत्सुरतरो (उ) | २०२.४६ | आस्थितः स्वपृष्ठेन (उ) | १५१.४४ | आहुः पूर्वाग्रहणो (पा) | ६६.११६ | इक्षवत्पीडयमानस्य (भू) | ६६.५१ |
| आसाराणां भूमिरेणाः (क्रि) | ६.१५६ | आसीदिलावृत्तेवर्षे (सु) | ३४.३३२ | आस्फालयन्तरेवे (उ) | १८७.३५ | आहुर्वेदविद्ययो विप्रायो (सु) | १६.४८ | इक्षुष्विवादिग्ध्यातं (उ) | १६४.६६ |
| आसितां भोजार्पुजा (पा) | ७०.४१ | आसीदियं समुद्रांता- (भू) | २६.७८ | आस्फोटयति (उ) | ३२.१७ | आहुस्तभारतवर्षे (क्रि) | २.२५ | इक्ष्वाकवो न वध्या (उ) | २४२.१५६ |
| आसिचैदच्युतं मूर्ध्नि (पा) | ८०.२५ | आसीदेकः प्रजानाम- (क्रि) | १३.६६ | आस्फोटयन्तो बहवः (सु) | ४०.१६० | आहूतो भोजनार्थं (पा) | ११४.४६५ | इक्ष्वाकुणां कुले जातु (पा) | ८.६ |
| आसीतगुरुणा सार्द्धम् (स्व) | ५३.१५ | आसीदेको हरिदिव्यो (उ) | २३८.४१ | आस्थनामासने तात (भू) | ८६.३२ | आहूयगोपवालां (उ) | २४५.१४७ | इक्ष्वाकुनां सुमहत्- (भू) | ४३.३५ |
| आसीत्कुरुवशात्पुत्रः (सु) | १३.२८ | आसीद्व्योधनो राजा (स्व) | ४०.१७ | आस्थारविन्दं परिपूरितं (पा) | १०३.३६ | आहूयमानकीराजावाक्यं (सु) | ३८.७६ | इक्ष्वाकुनां मिदुर्गो- (भू) | ४२.७० |
| आसीत्कृतयुगे रागब्रह्मभूते (सु) | ३६.४० | आसीद्भद्रश्च राजा (ब्र) | ११.५ | आस्थेयिस्त्रिषु ग्रीव (पा) | १०७.३६ | आहूयमानं प्रोवाच नारदः (पा) | ७१.८१ | इक्ष्वाकुनां मिदुर्गो- (भू) | ४६.६४ |
| आसीत्कृतयुगस्यांते (उ) | ८८.३५ | आसीद्वैश्यः कुबेराभोनामतो (स्व) | ३०.२ | आस्थादितनचान्येन- (सु) | ३१.१२६ | आहूयमन्त्रान्मूतान्तु (उ) | २४५.३४३ | इक्ष्वाकुनां मिदुर्गो- (पा) | १०६.२ |
| आसीत्कृष्णप्रति (पा) | ७२.१०३ | आसीन्हेमपीडे मणिमय (क्रि) | २२.११० | आहूचैनं कृतार्थोऽस्मिन् (पा) | ११४.७० | आहूय वीरं मकरंदमेव (भू) | ५५.२४ | इक्ष्वाकुनां मिदुर्गो- (भू) | ४२.३ |
| आसीत्त्रेतायुगे (क्रि) | ७.१४ | आसीन्हेमहस्ताग्रै (पा) | ७२.७१ | आहूचैनं पितापुत्र- (सु) | ३३.१० | आहूयसाक्षिणः सर्वानिदं (क्रि) | २३.११६ | इक्ष्वाकुवंशप्रभवाः (सु) | ८.१६३ |
| आसीत्पिण्डर (उ) | ११.६ | आसीनः प्रागुदवत्- (पा) | ६५.८३ | आहितास्तेन कशया (पा) | ५८.६३ | आहूयप्सरसो देवस्त (उ) | १६८.५६ | इक्ष्वाकुवंशराजानः (उ) | २०२.३६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| इक्ष्वाकोरश्वमेधेन (सु) | ८.११६ | इतराम्याधृतदेव्या (उ) | २२६.७५ | इतिकृत्वामति (पा) | ११४.४८५ | इतिचितापरोराजा (उ) | ४१.३६ | इतितद्वचनंश्रुत्वा (उ) | १११.२५ |
| इंगिते कामरूपोह- (भू) | ३६.१६ | इतराम्याश्रियोगात्र (उ) | २२६.१०६ | इतिकृत्वा स नियम- (पा) | २१.१६ | इतिचासमापेदे (भू) | १०३.१०६ | इतितद्वचनंश्रुत्वा- (उ) | ११६.१६ |
| इच्छन्दहेयं पृथिवी- (भू) | २८.३८ | इतराम्यांसमाश्लिष्य (उ) | २२६.१७५ | इतिक्ताससंस्थाप्य (उ) | ११६.१६ | इतिजागरण्यताम्यां (सु) | २०.३१ | इतितद्वचनंश्रुत्वा- (उ) | १०८.१६ |
| इच्छन्नपि न शक्नोति- (भू) | ६६.१०५ | इतरिर्यति ये मर्त्या (स्व) | ६१.४७ | इतिक्रुद्धा द्विजश्रेष्ठा (ब्र) | २३.२२ | इतिजालंधरा श्रुत्वा (उ) | १६.२६ | इतितद्वचनंश्रुत्वा (उ) | ५१.१० |
| इच्छया चितितं भद्रे (भू) | ११.१३ | इतरेणगृहीत्वातु (पा) | ११७.१५३ | इतिक्रुधाभाषित (पा) | ६.३७ | इतिजालंधरस्यो (उ) | १८.१३७ | इतितद्वचनंश्रुत्वाविप्र (सु) | २८.८३ |
| इच्छयानरणं प्राप्तं (उ) | ६.३७ | इतरेतरमाख्याय (उ) | १८१.१३ | इतिक्षमाप्यतर्त्विप्रान (उ) | ६५.२५ | इतिजिज्ञासितं (पा) | ७५.२६ | इतितद्वचनंश्रुत्वासक्का (पा) | ४०.५ |
| इच्छत्पा नै महासीक्ष्य- (भू) | ४१.८२ | इतरेमानवाः सर्वे (भू) | ६४.५५ | इतिक्षिप्वाततोत्राणि (उ) | १५१.६२ | इतिज्ञात्वा च सा प्राप्ता (उ) | १६.१८ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य- (पा) | २१.११ |
| इच्छाचक्रसदेवाग्रे (उ) | १२८.२४८ | इतरेषांतुदेवानामन्नं (उ) | २५५.६३ | इतिगदितवतीस्ताः (पा) | ३.३४ | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छाज्ञानक्रियारूपा (उ) | १८६.२० | इतश्चेतश्चवेगैश्च- (भू) | ६७.८ | इतिगंगा जलस्नान (उ) | १२६.२११ | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छामितत्वतोज्ञातु- (सु) | ३६.११६ | इतस्ततः परिभाम्य (उ) | १२६.७८ | इतिगान्यानिवाक्यानि (पा) | ११२.११० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छामोर्वेदिकीलक्ष्मी (सु) | ३४.२४६ | इतस्ततः पुनर्याति (उ) | १२५.१६ | इतिगान्यानिवाक्यानि (पा) | ११२.११० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छाम्यहंपुनर्द्याचि (क्रि) | ८.८१ | इतस्ततः प्रभर्गनतद् (पा) | ६३.४६ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छायाविनियोक्तव्यं (उ) | २२६.४८ | इतस्ततश्चपश्यंत (उ) | ५५.१२ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छाशक्तिः प्रभवति- (सु) | ३०.१८८ | इतस्ततः स्थितं वै संस- (सु) | १८.३१३ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इच्छेत्पातुं मधून्ययत्र (क्रि) | ५.१७२ | इतस्ततो विलोक्य (उ) | ४०.३५ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इतः परं किं भूयः (पा) | ११३.५६ | इतिकर्तव्यतामूढातस्यो (पा) | ७४.७४ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इतः परं हि किं भूयः (पा) | १०६.११२ | इतिकर्तव्यतामूढातस्यो (पा) | ७४.७४ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इतः पुनर्गतासातु (ब्र) | ३.३४ | इतिकर्तव्यतामूढातस्यो (पा) | ७४.७४ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इतः प्रयासि कं देशं (भू) | ६३.२ | इतिकर्तव्यतामूढातस्यो (पा) | ७४.७४ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |
| इतरदाताकवागृहे- (सु) | ३४.२५४ | इतिकर्तव्यतामूढातस्यो (पा) | ७४.७४ | इतिगितयतस्तस्य (उ) | ५६.१० | इतिज्ञात्वातुभोदेवि (उ) | ७६.६ | इतितद्वाक्यमाकर्ण्य (पा) | २८.३० |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (उ) | ४६.३२ | इतितेकथिताः काश्चि (पा) | ७२.१५३ | इतिदेवाः स्तुतियावत् (उ) | ६८.६ | इतिपठतिशृणोति (सु) | २६.३० | इतिप्रेतवचः श्रुत्वाः (उ) | १२६.६७ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (पा) | ८७.१ | इतितेकथितावीरा (पा) | ६०.५ | इतिदेव्यावचः श्रुत्वा (उ) | १७५.६ | इतिपठतिशृणोति (सु) | २५.३३ | इतिप्रोक्तसमाकर्ण्य (पा) | ५५.५२ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (पा) | ६२.१ | इतितेनस्तुतादेवी (उ) | १८६.३३ | इतिदेव्यपतेवकियं (उ) | २३८.३० | इतिपंचप्रकाशचर्कथितां (पा) | ७८.१५ | इतिप्रोक्तास्तुतेसर्वे (पा) | ४६.६४ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (पा) | ६२.८० | इतितेनस्तुतो देवो (क्रि) | १६.६५ | इतिदैत्योक्तभाकर्ण्यं (उ) | ७.४५ | इतिपाकविधाया (उ) | १०६.६ | इतिप्रबुद्धातथा (पा) | ११४.१३६ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (उ) | १७२.१२२ | इतितेनस्तुतो देवो (क्रि) | १३.२१ | इतिदैवीगिरं श्रुत्वा- (पा) | ७४.७७ | इतिपुत्रवचः श्रुत्वा- (पा) | २६.१० | इतिप्रहृष्टसदाचित्य (उ) | १२५.१२६ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (उ) | १८५.१०० | इतितेरामचंद्रस्यमाहात्म्यं (उ) | २५४.५७ | इतिद्वादश शान्तस्य (भू) | ६६.२७ | इतिपुत्रमंत्रं (पा) | ११२.८६ | इतिप्रहृष्टवल्लीर्यं (उ) | १४४.११ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (उ) | १८७.४० | इतितेरामचंद्रस्यमाहात्म्यं (उ) | २३१.२१ | इतिधीरांसमाकर्ण्यं (पा) | ४२.१२ | इतिपूर्वत्वयाप्रोक्तं (क्रि) | २६.४५ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (उ) | १३.६ |
| इतितस्यवचः श्रुत्वा (उ) | २३८.७६ | इतितेरामचंद्रस्यमाहात्म्यं (उ) | २३८.३३ | इतिध्यात्वाऽऽत्मानं पटु (पा) | १०३.५७ | इतिपृच्छतिराजेंद्र (उ) | २१८.३२ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (उ) | १३.६ |
| इतिताः क्रूरहृदयाः (उ) | १६७.१४ | इतितेरामचंद्रस्यमाहात्म्यं (उ) | २३८.३३ | इतिध्यायन्स्तुवन्तित्यं (भू) | १६.४० | इतिपृष्टममब्रह्म (उ) | ७१.७२ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (क्रि) | ६.१३ |
| इतितांसहसानीतवः (पा) | ७४.१३१ | इतिदेवत्वाऽऽसंनतेषां (पा) | ११७.८८ | इतिनारदोक्तमाकर्ण्यं (पा) | ११६.६१ | इतिपृष्टस्तदाप्राह (उ) | २३८.१६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (क्रि) | ६.८१ |
| इतितीर्थवरस्यास्य (उ) | २१६.६७ | इतिदेवत्वाऽऽसंनतेषां (पा) | ११७.८८ | इतिनिश्चित्यगतवा (पा) | ११४.१२७ | इतिपृष्टस्तदाप्राह (उ) | ८८.१६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५२.११ |
| इतितीर्थविधिः प्रोक्तः (पा) | १६.३१ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ७.१२२ | इतिनिश्चित्यचि (उ) | १६४.६ | इतिपृष्टस्तदाप्राह (उ) | ११८.१७ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितकिंचित् (पा) | ८०.६७ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टस्वविश्वात्माब्रह्म (सु) | २३.५ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितराजन् (उ) | ५६.२८ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टातपासातुविनया (पा) | ७४.६१ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितवत्स (त्र) | ७.४३ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टमयाभातु (उ) | १६३.४६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितविप्रपूर्वं (उ) | १२६.२५४ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टमयाभातु (उ) | १६३.४६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितसर्वं (उ) | १२६.२१४ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टमयाभातु (उ) | १६३.४६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथित सर्वकृतं (उ) | १६८.५२ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टमयाभातु (उ) | १६३.४६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितसर्ववृत्तं (क्रि) | २६.४८ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टमयाभातु (उ) | १६३.४६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |
| इतितेकथितस्तोत्रं (उ) | १२८.२६७ | इतिदेवत्वावरंतस्मै (क्रि) | ६.२०१ | इतिनिश्चित्यमन (पा) | ११७.४६ | इतिपृष्टमयाभातु (उ) | १६३.४६ | इतिप्रवृत्ततंगर्वा (पा) | ५५.४६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------|-------|-------------------------|-------|-------------------------|-------|
| इतिभाष्यततस्तेनसंम (पा) | ६२.१०१ | इतिराक्षसयत्पृष्टत्वं (उ) | १२७.१२६ | इतिवाक्यंयदावक्त्रि (पा) | ४५.२४ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २६.४६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४०.१६ |
| इतिभृगिरिदेवी (उ) | १८४.८४ | इतिराजवचः श्रुत्वा (उ) | २३८.२२ | इतिवाक्यंवदत्येषा (पा) | ६३.१६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३०.६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (उ) | ४०.२८ |
| इतिमंत्रसमुच्चाय (उ) | १२७.२० | इतिराज्ञोवचः श्रुत्वा (पा) | २३.६ | इतिवाक्यंवदन्त्यपादयोः (पा) | ३७.३६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३०.१६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४२.३० |
| इतिमंत्रसमुच्चाय (उ) | ६२.१३ | इतिराज्ञोः वचश्रुत्वा (पा) | २६.१२ | इतिवाक्यंशिञ्जनां (पा) | ६३.६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३०.३८ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४२.७१ |
| इतिमत्वाततोदैत्यो (उ) | ६०.११ | इतिराज्ञोवचः श्रुत्वा- (पा) | ३०.२१ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ६.३० | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३०.५३ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४४.५५ |
| इतिमत्वादायह्ये पाज्वर (उ) | २२०.३५ | इतिराज्ञोवचः श्रुत्वा (पा) | ३८.२३ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | १३.१ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३१.२१ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४५.१६ |
| इतिमत्वाविशोकस्त्वं (उ) | १२६.२०० | इतिरामवचः श्रुत्वापरमां (पा) | ५५.१८ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | १३.१५ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३३.३२ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४६.१८ |
| इतिमत्वास्वसद्भाव (पा) | ८५.२४ | इतिरिक्तेरुद्रवरोजगादम- (सु) | १४.१५४ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | १६.५३ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३४.७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४७.२४ |
| इतिमत्वासदावस्मै (त्र) | २०.१३ | इतिवसिष्ठवचनं (पा) | ११६.१४६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | १७.२३ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३५.१७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ४७.७३ |
| इतिमंत्रसमुच्चार्यप्रणमे (पा) | ७६.४६ | इतिवाक्यंतयोषुत्वा (पा) | ५७.२७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | १६.३४ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३६.५ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५०.७ |
| इतिमहाकर्ममाकर्ण्य (पा) | ३५.४१ | इतिवाक्यं तु संस्मरणं (उ) | १४३.१६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २०.७५ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३६.६३ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५४.३५ |
| इतिमातुर्वचःश्लक्ष्ण (पा) | ६४.५८ | इतिवाक्यं द्विजाः श्रुत्वा (उ) | ५५.११ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २१.१७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३७.६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५५.३३ |
| इतिमाकेशवः प्राह (उ) | ५१.२५ | इतिवाक्यं बुवाण- (पा) | ३७.४६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य- (पा) | २४.११ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३७.२५ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५५.७४ |
| इतिमामनुगृह्णा (उ) | २०५.३३ | इतिवाक्यं प्रब्रुवाण- (पा) | ५५.३६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २४.२५ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३८.६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५६.६ |
| इतिमामहेस (उ) | १४.१ | इतिवाक्यं भृगोः श्रुत्वा (उ) | १२५.१६७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २५.१० | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३८.२७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५६.३१ |
| इतिमामाहेसस्य (उ) | १३.५० | इतिवाक्यं मया श्रुत्य- (पा) | ३०.५६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २५.२८ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३८.२७ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५६.६० |
| इतिमेनिद्रिचतुर्बुद्धिः (उ) | १३२.१३१ | इतिवाक्यं मुदीपशुवाणां (पा) | २७.४२ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य- (पा) | २६.६ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३८.४४ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५६.४४ |
| इतिवितनितियममानाम् (स्व) | ६०.४३ | इतिवाक्यं नोहारि (पा) | १६.४२ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २७.१२ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३६.३० | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५६.५४ |
| इतिवायवत्समुद्रिग्रामं (पा) | ३८.१३ | इतिवाक्यं मुनेः श्रुत्वा (उ) | ४६.३० | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २८.२० | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३६.४४ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ५६.१३ |
| इतिपुंगुणानुक्त्वा- (सु) | १८.२७७ | इतिवाक्यं मूषेः श्रुत्वा- (उ) | ५२.३० | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | २६.४१ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ३६.५१ | इतिवाक्यंसमाकर्ण्य (पा) | ६१.७ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

५१

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| इतिमर्चित्यमनसा (क्रि) | ५.२१ | इतिसर्वमुल्लोभृत्वा (उ) | ६.८ | इतिहासपुराणज्ञं (उ) | २८.२५ | इतो गत्वा प्रपश्य त्वं (भू) | १०८.३२ | इत्यंकल्पतरुमूले रत्न (पा) | ८१.४३ |
| इतिसर्चित्यमनसागता (ब्र) | ११.१२ | इतिसर्वाः समालोक्य (पा) | ७४.८७ | इतिहासपुराणज्ञो (उ) | ६४.१३ | इतो गत्वा व्रतं वत्स (भू) | ८८.३ | इत्यंकृत्वा द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | ११.३१ |
| इतिसर्चित्यमनसाराधन- (सृ) | ३६.५५ | इतिसर्वहितीहृत्वा (पा) | १०८.४० | इतिहासपुराणव्यासः (सु) | १.२० | इतो नीत्वा महाबाहू (उ) | २४५.२५७ | इत्यंकृत्वा भूतशुद्धि (पा) | ११४.६३ |
| इतिसर्चित्यविप्रोत्सो (क्रि) | १३.१०३ | इतिसाविलम्बापोचैरधुनाय (पा) | ४.११ | इतिहासपुराणाम्यवेदं (सु) | २.५१ | इतो नोदं याममात्रेण- (पा) | ११०.३२ | इत्यंकृत्वा हरिः मर्त्यते (क्रि) | १७.१६६ |
| इतिसर्चित्यसुत (पा) | १२.८५ | इतिसर्वोपनिषदा (उ) | २४५.१२१ | इतिहासपुराणेषु हृष्टाये ब्रह्म (सृ) | १.२६ | इत्यमत्याकुलमति (पा) | ७२.१०२ | इत्यंगुणवती सम्यक् (उ) | ८६.१५ |
| इतिसंदेशमादायसीतां (पा) | ६६.१२१ | इतिसावां छितं श्रुत्वा (उ) | ३०.६४ | इतिहासमिमं पुण्यं (उ) | १६७.११४ | इत्यमस्वास्थ्य (क्रि) | २०.२६ | इत्यंगुरोलंघनं त्रयो (पा) | ८२.२३ |
| इतिसंदिश्यमां देवि (उ) | २३५.५० | इति सुविमलवाचं वीर (पा) | १२.१५ | इतिहासपुराणाम्यां (उ) | २७.५५ | इत्यमाकर्ण्य तद्वाक्यं (उ) | १८३.४२ | इत्यंच वृष्टतां (पा) | ११२.२१ |
| इतिसंदेशमार्गान्तेपुर (उ) | १७८.२४ | इति सेनापतिनां त्रयो- (उ) | १२६.६४ | इतिहासमिमपुराभवं (उ) | ११०.३२ | इत्यमाकर्ण्य दमनः (पा) | २३.५० | इत्यंचैतकथ्यमेविप्र (उ) | १०८.१६ |
| इतिसंपूज्य देवेश (क्रि) | ११.१०२ | इति स्कंदवचः श्रुत्वा (उ) | १२२.३ | इतिहासमिमं श्रुत्वा (उ) | १२६.२६७ | इत्यमाकर्ण्य पुष्यगिरं (उ) | १८१.२३ | इत्यंजगामवर्षाणां (उ) | १२८.१६४ |
| इतिसंभाष्य नृपतिबाहू- (पा) | २६.४० | इति स्कंदवचः श्रुत्वा (उ) | १२२.७५ | इतिहासमिमं श्रुत्वा (उ) | १८.१४३ | इत्यवाकर्ण्य वचः (पा) | ५५.१६ | इत्यंजयविजयी (उ) | २५२.२४ |
| इतिसंभाष्यमाणं (पा) | ५०.२४ | इतिस्तुता जगद्धात्री (क्रि) | ७.११३ | इतिहासमिहैवाहं कथं (क्रि) | ४.२० | इत्यमाजतवान् (उ) | १८०.६७ | इत्यंतद्वचनं श्रुत्वा धर्मं (उ) | १०८.१ |
| इतिसंभाष्यमाणं तु (पा) | ५७.१२ | इतिस्तुतिमे भगवन् (सु) | ३४.११२ | इतिहासमिद्विजश्रेष्ठ (उ) | १२६.२५६ | इत्यमाभाष्य तं देवानं- (पा) | १०६.१०७ | इत्यंतन्नगरैरम्ये सकले (उ) | १२७.७६ |
| इयिसंभाष्यमाणां (पा) | ११.५३ | इतिस्तुत्याति संहृष्टो (पा) | ५.१२ | इतिहासमिमं राजन्यः (स्व) | ३१.२१० | इत्यमाभाष्यमाणस्तु- (सृ) | १६.१६४ | इत्यंतयो दुःखिनयो (उ) | ४३.४१ |
| इतिसंमंथ्य ते गेहं गत्वा (पा) | ५५.७६ | इतिस्तुत्या प्रहृष्टात्मा (पा) | २२.३७ | इतिहासमिमं राजन्यः (स्व) | ३१.२१० | इत्यमा श्रुत्य वीरस्य (पा) | ५२.५० | इत्यंतस्य पिशाचस्य (उ) | १२६.२६ |
| इतिसंवाच्य कुपितोलवः (पा) | ५४.१८ | इतिस्तुत्वा शिरसा (पा) | २२.३६ | इतीदृशं रामचन्द्र (उ) | ४६.३८ | इत्यमुक्तं समाकर्ण्य (पा) | ४३.२८ | इत्यंतिलोत्तमावाला (उ) | १२६.५६ |
| इतिसंस्तुत्य गोविदं (उ) | २४५.३२७ | इतिस्तोत्रं तस्य (क्रि) | ६.१६३ | इतींद्रायवद् रूपति (उ) | ३२.७१ | इत्यमुक्तवनिश्रेष्ठे (पा) | ४६.५१ | इत्यंतुनद्धं नताभ्यां- (स्व) | ३०.२५ |
| इतिसंस्तुत्य गोविदं (उ) | २४५.२१२ | इतिस्तोत्रमाकर्ण्य (पा) | ११६.१०४ | इतीरयित्वा विरराम (उ) | ५.२४ | इत्यमुक्त्वा महीपस्य (पा) | २३.१६ | इत्यंतं धर्मं दत्तं- (उ) | ११०.३० |
| इतिसंस्तुत्य गोविदं (उ) | २१४.१०८ | इतिस्तोत्रं तस्ते (उ) | १०४.२०४ | इतीरितं मथ श्रुत्वा- (पा) | १०५.१० | इत्यमुक्त्वा महीपालः (उ) | ४६.२१ | इत्यंतं संहृते विष्णु (उ) | १२६.१७२ |
| इतिसर्वच विज्ञाप्य निवेध- (सृ) | १५.२६२ | इतिस्वगतमांशं सञ्च (पा) | १७.४ | इतीव दैत्यः सुविचिता- (भू) | २५.४ | इत्यंकलितवृत्तांतः (उ) | १८३.५४ | इत्यंतं नाविधैर्बन्ध- (स्व) | ३०.६ |
| इतिसर्वसगाकर्ण्यं (उ) | ११७.१ | इतिस्वर्गोऽपि देवानां (भू) | ६६.१८६ | इतो गच्छ दुराचार (भू) | १०६.१२ | | | | |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------|--------|
| इत्थं निश्चयकलहा (उ) | १०६.३१ | इत्थं वक्तव्यदातावद (पा) | ४५.५६ | इत्थं स्वागतसत्पुष्टं ब्रह्म (पा) | ६.१ | इत्याकर्ण्यपितुर्वक्यं (उ) | २१४.१ | इत्याकर्ण्यवचस्तासां (उ) | २१३.२३ |
| इत्थं निश्चयदिति जेद्रं (पा) | ७.३८ | इत्थं वानरते सर्वे (उ) | १२६.१८८ | इत्थं ह्यदत्तान्यपि पुण्य (उ) | ११२.३० | इत्याकर्ण्यपिर्वक्यं (उ) | २१५.३३ | इत्याकर्ण्यवचस्तेषां (उ) | २११.१३ |
| इत्थं निश्चयभुवन (उ) | ८६.३० | इत्थं विचार्य विप्रो- (पा) | १०६.२६ | इत्थं योत्काममारासी- (पा) | १११.२७ | इत्याकर्ण्यप्रतापायुयः (पा) | २३.२५ | इत्याकर्ण्यवचस्तेषां (उ) | २१८.४६ |
| इत्थं दिनत्रयमपि (उ) | ८६.१४ | इत्थं विभूतयस्तस्य (उ) | २३८.१०८ | इत्थं ते कार्यवादास्तुमाया (सु) | १३.३५५ | इत्याकर्ण्यवचः (उ) | २०१.८६ | इत्याकर्ण्यवचोदेवि (उ) | १७५.१६ |
| इत्थं देवगणाः सर्वे (क्रि) | १७.२६२ | इत्थं विधिविधान- (उ) | १२६.१६७ | इत्थं तद्व्यग्यवस्था (उ) | २२६.४० | इत्याकर्ण्यवचस्त (उ) | २०१.४६ | इत्याकर्ण्यवचोदेवि (उ) | २०४.८ |
| इत्थं देवो व्यक्तिभाजोऽस्य (सु) | ४३.१८ | इत्थं विभूषितः शिवो (पा) | ११४.१६७ | इत्थं तद्भावमालंब्य धर्मा (सु) | १.१६ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २१४.२८ | इत्याकर्ण्यवचोमहा (उ) | २०७.४३ |
| इत्थं प्रभावो मासोऽयं- (उ) | ११२.७ | इत्थं विलम्बताः कन्याः (स्व) | २२.५६ | इत्थं मिश्रमात्रालोक्य- (पा) | २३.१३ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य- (उ) | २१४.१०० | इत्याकर्ण्यवचो राजः (पा) | २५.४ |
| इत्थं प्रयागमाहात्म्यं (उ) | १२६.२५० | इत्थं विलम्बताः कन्याः (उ) | १२८.६८ | इत्थं भिन्नाहृतं तस्य (पा) | ५१.२१ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २१४.३७ | इत्याकर्ण्यसधर्मिता (उ) | २१५.११ |
| इत्थं प्रावर्तत महोरधुनाय (पा) | ११.४७ | इत्थं विलम्बसुभूषिता (पा) | २८.१३ | इत्थं भिन्नदूयदेवेशं (उ) | १६६.३८ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २०३.२६ | इत्याकर्ण्यसधर्मिता (उ) | २११.५ |
| इत्थं भुवते विप्राग्रय (उ) | १०६.१२ | इत्थं विसर्जितो दूत (उ) | ६७.१३ | इत्थं भिन्नदूयदेवेशं लोके (उ) | २२१.४२ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (सु) | १०.११५ | इत्याकर्ण्यसधर्मिता (उ) | २१०.५२ |
| इत्थं भाषितमाकर्ण्य (पा) | ४२.३४ | इत्थं विसृष्टाः खलुते (उ) | २४३.५३ | इत्थं ह्यब्रह्मणोऽवावयात् (उ) | २१०.३८ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (पा) | १०.१६ | इत्याकर्ण्यस्मितं (उ) | १८६.५४ |
| इत्थं भाषितमाकर्ण्य (पा) | ४५.१२ | इत्थं वैश्यानुशासत्यस्मान् (स्व) | ३१.१०४ | इत्थं पश्य मे कोशं (भू) | ७६.७ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | १०.५२ | इत्याकर्ण्यसधर्मिता (उ) | १८८.४५ |
| इत्थं भाषितमाकर्ण्य (पा) | ४६.२३ | इत्थं शंभुद्विजेनाथ- (पा) | १०४.१२८ | इत्थं यितः स्तुतस्ते (उ) | २४५.४२ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २१६.३० | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (क्रि) | १७.२४३ |
| इत्थं भाषितमाकर्ण्य (पा) | ५८.४८ | इत्थं शिशुदेवै (उ) | २४५.१५६ | इत्थं यितस्तु विबु (उ) | २३८.१३६ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २१६.१ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (पा) | ४४.६२ |
| इत्थं भुवतवा तथा (पा) | ८३.४१ | इत्थं संकल्पसतथा (पा) | ११०.४२ | इत्थं यथैश्वर्यते सख्य इति हास (भू) | ४१.८४ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | १६.६ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २०१.६३ |
| इत्थं भूपतिसंदेशात् प्रमोदा (पा) | ३.२१ | इत्थं संकेतः प्रेतो- (उ) | १२६.६३ | इत्थं ब्रजचित्तयती (उ) | १६.६ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (पा) | ७४.६८ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | ७४.६ |
| इत्थं मानिर्जितं (उ) | ३८.८४ | इत्थं सर्वविलोक्याशुरामः (पा) | १.२४ | इत्थं सोऽशमाध्यायं (उ) | १८४.८१ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | १२६.१६० | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | १२४.२५ |
| इत्थं युगसंमारात्रिमनयं (स्व) | २२.७२ | इत्थं तं शृण्वतो धर्मा (पा) | १०.१ | इत्थं काकर्ण्यचतुर्वाक्यं (उ) | १८०.८८ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २०७.३२ | इत्याकर्ण्यवचस्तस्य (उ) | २०७.३२ |
| इत्थं युगसंमारात्रि (उ) | १२८.८१ | इत्थं सावदती विप्र- (उ) | १०७.१० | इत्थं काकर्ण्य ततः क्रुद्धो (भू) | ५४.१० | इत्याकर्ण्यवचस्तासां (उ) | २०७.२२ | इत्याकर्ण्यवचस्तासां (उ) | २०७.२२ |
| इत्थं लब्धवरो राजाकृत (उ) | १२५.१४२ | इत्थं स्तुतवाजगन्नाथं (क्रि) | १२.८६ | इत्याकर्ण्यपितुर्वक्यं (उ) | १८१.३० | इत्याकर्ण्यवचस्तासां (उ) | २०८.२२ | इत्याकर्ण्यवचस्तासां (उ) | १६.४६ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|-------------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| इत्यादि चाटुकैवर्क्ये (भू) | १२३.२७ | इत्यालोच्यबराहोहा (क्रि) | ५.२८ | इत्युक्तवतितस्मिन्वैगणा (पा) | २०.७९ | इत्युक्ताश्चित्र गुप्तेन (क्रि) | २३.४८ | इत्युक्तस्तेन वै राजा (उ) | २११.२३ |
| इत्यादिभाषमाणं (पा) | ५०.३० | इत्यायोच्यसधर्मा (उ) | २१३.७२ | इत्युक्तवतितस्मिन् (पा) | ३७.१४ | इत्युक्तः सतदातेनत्यक्त्वा(उ) | २१६.८२ | इत्युक्तस्तेनमन-(उ) | २०४.६२ |
| इत्यादिभिः स्तुतिपदैः (पा) | ६.२६ | इत्याशया मया भर्ता (भू) | ८१.१३ | इत्युक्तवतिदेवर्णो (मु) | ४३१२६ | इत्युक्तः सतदादेवं (पा) | १०२.२७ | इत्युक्तस्तेनममुनि (उ) | २०१.३५ |
| इत्यादिरामचरणास्मरण (पा) | १६.४२ | इत्याह नारदो भद्रे मा (भू) | १०७.११ | इत्युक्तवतिभूमी (पा) | ६७.४६ | इत्युक्तः सतदाराराजा (उ) | २४१.३३ | इत्युक्तस्त्रिदर्शन-(उ) | २४०.८ |
| इत्यादिवचनं श्रुत्वा (पा) | ६७.६ | इत्याह्वयितान्तित्यं (पा) | ८३.३३ | इत्युक्तवति रामेतु (पा) | ११.४ | इत्युक्तः सतदारामः (उ) | २४२.२३७ | इत्युक्ताग्निज्ज्ञातेनमुक्तं-(मु) | ४४.३ |
| इत्यादिवाक्यंचाराणां (पा) | ५६.१७ | इत्युक्तः कोपमुत् (उ) | २०५.३१ | इत्युक्तवतिवीरे (पा) | ५२.५६ | इत्युक्तः सनुदैर्घ्येडो (उ) | ६७.२६ | इत्युक्तान्चमयानारी (उ) | २१४.६४ |
| इत्यादिवाक्यमुच्चार्य (पा) | ५४.२५ | इत्युक्तः पितृभ्यांपुत्रः (उ) | २१६.३४ | इत्युक्तवतिवीरे तुमुमे (पा) | १४.६ | इत्युक्तः मयपानायुभम्मी(पा) | १४.३६ | इत्युक्तानांनेत्युक्त्वा (मु) | ४४.४३ |
| इत्यादिवाक्यंसंश्रृत्य (पा) | ५५.२७ | इत्युक्तमाकर्ण्यंनो (पा) | ८५.३ | इत्युक्तवतिशीलेन्द्रे (मु) | ४३.१६६ | इत्युक्तः सपरीवारः (पा) | १६.४६ | इत्युक्तानुनादेशेवत्यक्त्वा(मु) | ४३.४६० |
| इत्यादिवाक्यंसंश्रुत्य (पा) | ५५.४० | इत्युक्तमाकर्ण्यमुनेः (पा) | ८.३७ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (उ) | १५२.१२ | इत्युक्तः समयाधीरस्तु (उ) | २०४.१०१ | इत्युक्तानंकुमारस्तु (उ) | १६८.५३ |
| इत्यादि विभवस्तस्य (उ) | १०.४ | इत्युक्तमाकर्ण्यमहामति (पा) | १३.६ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तः सूर्यपुत्रेण कृष्णः(क्रि) | २२.२४ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिश्यततः (उ) | २४५.६२ | इत्युक्तमाकर्ण्यं सभा (पा) | ११.६६ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तः सूर्यपुत्रेण कृष्णः(क्रि) | २२.२४ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिश्यततो राजा (उ) | २४५.३४६ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिश्यपिता पुत्र(उ) | १७७.३० | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिश्यसुराः (उ) | २३२.३३ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिश्यसुरा राज्येष्ठाम् (त्र) | ६.२२ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिसर्वमाज्ञाप्य (पा) | १३.५५ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिसत्तुतिभिः (उ) | २३७.२६ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यादिसत्तुतिभिः (उ) | २३६.२४ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्याद्यमंत्र्यचयोदद्यात्ति (मु) | २१.१५६ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |
| इत्यालोच्यमुक्षुधती (उ) | २००.५५ | इत्युक्तमाकर्ण्यं समीर (पा) | ५३.२२ | इत्युक्तवत्यांतस्यां (पा) | ५७.५६ | इत्युक्तस्त्वन्तोबा चतुष्टः (मु) | ४४.५५ | इत्युक्ता तेन साराजा (भू) | ७६.३० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी।

५४

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| इत्युक्तासमनस्य तदेवानां (सु) | ४२.६३ | इत्युक्तेतेनमुनिना (उ) | २१५.३५ | इत्युक्तोहं तदापि (उ) | २०४.१२६ | इत्युक्त्वागतवति (उ) | ११३.३४ | इत्युक्त्वाताडयामास- (पा) | २६.५१ |
| इत्युक्तासहस्रादेवी (उ) | २३८.१२६ | इत्युक्तेतेनविप्रेण (उ) | २१२.२२ | इत्युक्तोहं तथा (उ) | २०४.१०५ | इत्युक्त्वागरुडाब्दः (उ) | ६८.११ | इत्युक्त्वातानुद्विजान् (उ) | १४१.१० |
| इत्युक्तासाकलाराजन् (उ) | २२१.१ | इत्युक्तेवचनेतस्य (उ) | ५२.१६ | इत्युक्तोहनुमाम्जात्वा (पा) | ६४.१३ | इत्युक्त्वात्रिदशांस्वर्गान् (उ) | १८६.४४ | इत्युक्त्वातानुद्विजान् (उ) | २०१.७४ |
| इत्युक्तासागणै (सु) | ६.३१ | इत्युक्तोगुरुणादैवैः (उ) | ५.४४ | इत्युक्तोतौमुतीराम (पा) | ६६.१२६ | इत्युक्त्वाचमहादेवी (पा) | ७५.३६ | इत्युक्त्वातानुद्विजान् (उ) | २१२.५३ |
| इत्युक्तासाततोवेगादुद्- (सु) | ४३.१३६ | इत्युक्तोगुरुणाविप्रो (क्रि) | १७.२३२ | इत्युक्तौधर्मराजेन (क्रि) | २३.५३ | इत्युक्त्वाचलितः (उ) | २०७.३३ | इत्युक्त्वातानमस्कृत्य (क्रि) | ६.६४ |
| इत्युक्तासाद्रुतत- (उ) | १४.५५ | इत्युक्तोजांबवत- (सु) | १३.८६ | इत्युक्तवतंततरसा- (पा) | ४१.१० | इत्युक्त्वाचाकथस्तू (पा) | ११७.५७ | इत्युक्त्वातांपरि- (पा) | ५६.४१ |
| इत्युक्तासानिवृते (उ) | २१३.३४ | इत्युक्तोधनिषण्णस्तु (पा) | १०५.२०२ | इत्युक्ततंलवगं (पा) | ४४.६ | इत्युक्त्वाचापमात्तज्यं (पा) | ५२.२८ | इत्युक्त्वातांप्रत्युवाच (पा) | ५७.५६ |
| इत्युक्तास्तास्तयास (उ) | २१३.२६ | इत्युक्तोदुःखितःपक्षी (पा) | ५७.५३ | इत्युक्तवतंतांक्रुद्धः (पा) | २८.६८ | इत्युक्त्वाजलमादाय (उ) | २१५.२६ | इत्युक्त्वातान्सविप्राय (ब्र) | २६.३१ |
| इत्युक्तास्तुसुरास्तेन- (सु) | ४४.१५६ | इत्युक्तोदेवराजेन (भू) | ६०.८ | इत्युक्तवतंसमुनिपूजया (पा) | ३७.५८ | इत्युक्त्वाजांबवान (पा) | ११७.१६७ | इत्युक्त्वातान्स्वपत्नी (उ) | १५५.१८ |
| इत्युक्तास्तेततोगत्वा (पा) | ४६.२५ | इत्युक्तोदैवतैः सर्वै (उ) | २३१.४१ | इत्युक्तवतंतीरुष्टवा (पा) | ६६.१३७ | इत्युक्त्वाज्ञानयस्ते (क्रि) | १६.१५ | इत्युक्त्वातान्परित्यज्य (सु) | २३.८४ |
| इत्युक्तास्तेतदाभृत्य (उ) | २१३.५८ | इत्युक्तोदैवतनाथस्तु (सु) | ४२.४६ | इत्युक्तवतिवारोग्रये- (पा) | ३३.२६ | इत्युक्त्वातत्करालंबी (पा) | ११४.१४६ | इत्युक्त्वातापसोयातो (उ) | १८५.६१ |
| इत्युक्तास्तेताश्च- (सु) | ४३.३०६ | इत्युक्तोनारदेनासौ (उ) | ८०.५५ | इत्युक्त्वाअपितेसर्वे (पा) | ४४.६८ | इत्युक्त्वातत्सुतोमूर्ध्ना (ब्र) | १२.३३ | इत्युक्त्वाः समारुढा (उ) | २०८.६१ |
| इत्युक्तास्तेभवंस्तू (पा) | ५४.३० | इत्युक्तोनालको (पा) | ६२.११ | इत्युक्त्वाऽदृश्यतांप्राप्तो (पा) | २१.४२ | इत्युक्त्वातंकंरंधृत्वा (उ) | ६६.१६ | इत्युक्त्वातुप्रणम्या (उ) | १२७.१७१ |
| इत्युक्तास्तेमहा- (उ) | २४१.५८ | इत्युक्तोब्राह्मणः प्राह (स्व) | २२.७६ | इत्युक्त्वाकथयामासपूर्वं (उ) | १२६.३६ | इत्युक्त्वातंपरिक्रम्य (पा) | ६७.७५ | इत्युक्त्वातेगना- (उ) | २०४.११६ |
| इत्युक्तास्त्रिदशास्तेन- (सु) | ४३.५२ | इत्युक्तोब्राह्मणः प्राह (उ) | १२८.८८ | इत्युक्त्वाकथयामास (उ) | १२६.६१ | इत्युक्त्वातंमुनिवरं (पा) | १.१६ | इत्युक्त्वातेजसादेवी (उ) | २४५.५७ |
| इत्युक्तास्यरक्षायै (क्रि) | ६.१३४ | इत्युक्तोभत्रिणां (पा) | ६५.५३ | इत्युक्त्वाकथयामासपूर्वं (उ) | १२८.१२४ | इत्युक्त्वातंशतम (उ) | ७.२ | इत्युक्त्वातेजसुः स्वर्गं (उ) | २१७.२८ |
| इत्युक्तोगुरुणापश्चान् (सु) | १३.३७७ | इत्युक्तोमुनिभिः (सु) | ४३.३८२ | इत्युक्त्वाकथयामासपूर्वं (स्व) | २३.८ | इत्युक्त्वातंदेहेया (उ) | १०३.२४ | इत्युक्त्वातेमुराः सर्वे (पा) | ५.११ |
| इत्युक्तेग्रामपालेन (उ) | १८५.६७ | इत्युक्तोमुनिवर्योसौ (उ) | १५५.१६ | इत्युक्त्वाकमलातस्मै (उ) | ६२.४२ | इत्युक्त्वातममहावीराः (पा) | ३३.६३ | इत्युक्त्वातानीगग (उ) | २००.११८ |
| इत्युक्तेचतयासांभ्या (उ) | २१५.३० | इत्युक्तोवरुणेनाहं (पा) | ६६.४० | इत्युक्त्वाखङ्गमाकृष्य (उ) | १५४.३२ | इत्युक्त्वातस्यविप्र (उ) | २०४.१०६ | इत्युक्त्वातानीमहाभागी (उ) | २१७.३७ |
| इत्युक्तेतेनभूपेन (उ) | २२१.२६ | इत्युक्तोलोकगुरुणा (पा) | ६.७ | इत्युक्त्वाखङ्गरोमांच (उ) | १३.४ | इत्युक्त्वतस्यविप्र (उ) | २१२.१ | इत्युक्त्वातानीसमालोक्य (उ) | २२१.४६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------------|--------|
| इत्युक्त्वात्यंतसंतुष्टो (क्रि) | १६.२६ | इत्युक्त्वानिजवृत्तांतं (उ) | २१४.३६ | इत्युक्त्वावाणमासाद्य (पा) | २३.८१ | इत्युक्त्वांजलि (उ) | २०३.४६ | इत्युक्त्वा राजपत्नी (उ) | १५.१६ |
| इत्युक्त्वास्वरितं (पा) | ६४.३८ | इत्युक्त्वाजित्वित्वाणं (पा) | ३४.२५ | इत्युक्त्वावाणसाहसं (पा) | ५२.५३ | इत्युक्त्वांतर्दधेदेवः (उ) | १०४.१८ | इत्युक्त्वा रामचन्द्रो (उ) | २४३.५१ |
| इत्युक्त्वा त्वांगतोविप्रो (भू) | १२१.६ | इत्युक्त्वापरमप्रीतः (क्रि) | ६.१६८ | इत्युक्त्वाब्राह्मण (पा) | ६७.१४ | इत्युक्त्वांतर्दधेदेवी (पा) | १३.४१ | इत्युक्त्वा रामदूतास्ते (क्रि) | १५.४६ |
| इत्युक्त्वाथस- (उ) | २४४.६१ | इत्युक्त्वापरितोवीक्ष्य (उ) | २३८.२१ | इत्युक्त्वा भगवान्कृष्ण (उ) | ११६.५ | इत्युक्त्वांतर्दधेदेवो (पा) | ७२.१४८ | इत्युक्त्वा रोचनाम्राध (पा) | ३३.१८ |
| इत्युक्त्वाथस्वहस्ताग्र (पा) | १०६.६४ | इत्युक्त्वापादयोः (पा) | ६६.१२३ | इत्युक्त्वा भगवान्विष्णु (क्रि) | १६.५० | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (उ) | २०७.४६ | इत्युक्त्वा रोहयामास (पा) | १३.६२ |
| इत्युक्त्वादक्षिणे (पा) | ८२.८६ | इत्युक्त्वापापं पुरुषः (क्रि) | २२.४३ | इत्युक्त्वा भगवान्विष्णुः (उ) | ६१.१ | इत्युक्त्वांतर्दधेविप्रो (पा) | ४०.२४ | इत्युक्त्वा लुठिनास्तत्र- (स्व) | २२.६४ |
| इत्युक्त्वा दानवं तं तु (भू) | ११५.२६ | इत्युक्त्वापाय- (उ) | २४२.५६ | इत्युक्त्वा भरतराम (सु) | ३८.२२ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णुः (भू) | ३६.२६ | इत्युक्त्वा लुठिनास्तत्र (उ) | १२८.७३ |
| इत्युक्त्वादोक्षितं (क्रि) | २१.१२१ | इत्युक्त्वापाथिव (उ) | २४१.५२ | इत्युक्त्वा भागिनयं (उ) | १०६.२६ | इत्युक्त्वांतर्दधेविप्र (क्रि) | १३.१६३ | इत्युक्त्वा गरमवानं (पा) | ६२.१४ |
| इत्युक्त्वा देवदेवं (भू) | ३२.७३ | इत्युक्त्वा पार्वतीनाथो (त्र) | ६.६ | इत्युक्त्वा भागं बोवासं (सु) | ३७.५८ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (पा) | ६६.१५८ | इत्युक्त्वा वामुदेवो (उ) | ११५.१ |
| इत्युक्त्वा धनमादाय (उ) | २१६.३७ | इत्युक्त्वा पूजितास्सर्वे (सु) | ४३.३७५ | इत्युक्त्वा भागं बोवासं (सु) | ३७.५३ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (उ) | १२८.२१७ | इत्युक्त्वा विररामाशु (पा) | ७.२६ |
| इत्युक्त्वा धनुरादाय (भू) | ११५.८ | इत्युक्त्वा पुनरुत्थाय (भू) | ११५.२४ | इत्युक्त्वा भूपपत्नी (उ) | २२१.४ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (उ) | २४१.४४ | इत्युक्त्वा विष्णु (क्रि) | ७.८३ |
| इत्युक्त्वा धर्मदत्तोसी- (उ) | १०७.६ | इत्युक्त्वा प्रणतो (उ) | २४६.३० | इत्युक्त्वा मंदिरात्तस्मान् (सु) | ४४.२६ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (पा) | ४६.६१ | इत्युक्त्वा विष्णु (क्रि) | ७.८५ |
| इत्युक्त्वा धर्मगो (उ) | २४५.१७ | इत्युक्त्वा प्रददो (उ) | २४१.४२ | इत्युक्त्वा मातलिस्तत्र (भू) | ६७.११५ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (पा) | २८.३२ | इत्युक्त्वा विष्णु (क्रि) | ११.१३२ |
| इत्युक्त्वा धिषणः (उ) | ७.४२ | इत्युक्त्वा प्रददौ तोयं (उ) | १२६.२४० | इत्युक्त्वा मां मुनिवरो (पा) | ३६.८४ | इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णु (उ) | १७६.५३ | इत्युक्त्वा विष्णु दूतास्ते (क्रि) | १५.४२ |
| इत्युक्त्वा धिषणो राजान्- (सु) | १३.३४२ | इत्युक्त्वा प्रययोतत्र (पा) | ४५.२८ | इत्युक्त्वा मुनयः सर्वे (उ) | २२३.७१ | इत्युक्त्वायमदूतास्ते (क्रि) | ७.६७ | इत्युक्त्वा वीरभद्र (पा) | ४३.२१ |
| इत्युक्त्वानिर्गताः (उ) | १२७.११० | इत्युक्त्वा प्रययो देवो (पा) | ४७.७५ | इत्युक्त्वा मुनयो जग्मुः (सु) | ४३.३५२ | इत्युक्त्वा याता देहे (उ) | २१०.२७ | इत्युक्त्वा व्यरमद्वायुः (सु) | ४३.४४ |
| इत्युक्त्वानिर्गतो (उ) | ३.३४ | इत्युक्त्वा प्रययो वीरो (पा) | ११.५५ | इत्युक्त्वा मुनि (उ) | २४२.५८ | इत्युक्त्वा यातयिष्यः (पा) | ४.४४ | इत्युक्त्वा शुक्रमाहूय (उ) | ६६.३१ |
| इत्युक्त्वानिर्गलद्वाणो (पा) | ५६.४६ | इत्युक्त्वा प्रस्थितो (उ) | १२६.२४८ | इत्युक्त्वा मुनिशार्दूल (उ) | ११७.२२ | इत्युक्त्वा रम्यवस्त्रा (पा) | ५८.५७ | इत्युक्त्वा शरमल्युग्रं (पा) | ४१.२० |
| इत्युक्त्वानिजमास्था (उ) | १६.१७ | इत्युक्त्वा वाणसंघातं (पा) | ६१.३८ | इत्युक्त्वा मूर्ध्निता (उ) | २०६.३५ | इत्युक्त्वा राषवः प्रादात् (पा) | ११७.११६ | इत्युक्त्वा श्रु कलां पूर्णं (पा) | ५६.६१ |
| इत्युक्त्वानिर्जगामाथ (पा) | ३२.२० | इत्युक्त्वा वाणसप्त- (उ) | १०२.१४ | इत्युक्त्वा मूर्ध्निता (पा) | ५६.३८ | इत्युक्त्वा राषव (उ) | २४२.२६४ | इत्युक्त्वा श्रु मुलोदीनः (पा) | २.३४ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------------|---------|------------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| इत्युक्त्वासगुणंचापं (पा) | २३.५३ | इत्युक्त्वासहस्रादेत्याः (उ) | २३.८७ | इत्युक्त्वाचमहाभागो (सु) | ४२.८५ | इत्येतद्वज्रं श्रुत्वा मुक्या (पा) | १५.१२ | इत्येवमादिभावतो (पा) | ५६.५० |
| इत्युक्त्वासनवाभूतो (पा) | १०५.१६१ | इत्युक्त्वासहस्रोत्थाय (उ) | २५५.५३ | इत्युमिष्टयदेवेशंकपिलं (उ) | २१६.६३ | इत्येनद्राक्ष्यमाकर्ण्य (पा) | १३.३२ | इत्येवादिभिर्वर्गैः (पा) | ६४.१०२ |
| इत्युक्त्वासतदा (उ) | २४५.२६२ | इत्युक्त्वासातदा- (उ) | १०३.३० | इत्युक्त्वाचचसामह्यं पटं (उ) | २१४.६५ | इत्येतत्त्वमश्रेयः कीर्ति (सु) | १८.४४४ | इत्येमादिरचनाः पुराणाभा- (पा) | ३.१२ |
| इत्युक्त्वासद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १२.६७ | इत्युक्त्वासापितन्माता (उ) | २१४.४२ | इत्युक्त्वा सहस्राक्षस्त्वाम् (भू) | ११०.११ | इत्येताग्रेषधीनांतु (सु) | ३.१४७ | इत्येवमादिवचनानि (पा) | ३७.३५ |
| इत्युक्त्वासद्विज श्रेष्ठो (उ) | २१३.५२ | इत्युक्त्वासापिराजेद्रं (उ) | २१४.८६ | इत्युक्त्वाचफलैरेभिः (उ) | ४०.३६ | इत्येतासस्तीविप्राः (स्व) | ६.३३ | इत्येवमादिविल्लेख (पा) | १०.५४ |
| इत्युक्त्वासद्विजोदेवि (उ) | १५५.२२ | इत्युक्त्वासामतिचक्रे (क्रि) | ५.१३३ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २३६.२६ | इत्येते कथिताराजन्मरा (भू) | ६६.२० | इत्येवमादिश्यमुनि (पा) | ६५.१४६ |
| इत्युक्त्वासनूपोराम (पा) | ६७.४७ | इत्युक्त्वासामयातात (उ) | २१४.७७ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २.५८ | इत्येते कथिताः सर्गाः (सु) | ३.७६ | इत्येवमादिसंपद्य (पा) | २८.५४ |
| इत्युक्त्वासनूपो (उ) | १०८.२३ | इत्युक्त्वासामहामाया (उ) | २४५.२५३ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | ६.१०७ | इत्येते द्वादशादित्या- (सु) | ४०.१०१ | इत्येवमुक्तः पुत्रस्तपुनः (उ) | १७७.२५ |
| इत्युक्त्वासपपातोष (पा) | ५७.६३ | इत्युक्त्वासामहालक्ष्मीः (त्र) | १०.८ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २३.११६ | इत्येते बहूभिर्मन्त्रैः (उ) | ८४.१८ | इत्येवमुक्तं वचनं (क्रि) | २१.१०५ |
| इत्युक्त्वासबभूवाशु- (पा) | ६.११ | इत्युक्त्वासाययोरुपण (पा) | ७४.१५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | ६५.३१ | इत्येनकविर्देवीरूपं (सु) | ४३.७६ | इत्येवमुक्तो गवान् (पा) | १००.१५ |
| इत्युक्त्वासभुजो- (उ) | १८.६८ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | ११६.२६ | इत्येवमुक्तो भुगुनरंतेन (सु) | २४.६० | इत्येवमुक्त्वा धर्मत्मा (भू) | ६५.२२ |
| इत्युक्त्वासमरेवालं (पा) | ६२.४२ | इत्युक्त्वासामतिचक्रे (क्रि) | ५.१३३ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २३४.३६ | इत्येवं कथयन्नेवप्राप्तो (सु) | ३३.१८३ | इत्येवमुक्त्वा भगवान् (पा) | ११६.१११ |
| इत्युक्त्वासमुमोचाय (पा) | २७.१६ | इत्युक्त्वासामतिचक्रे (क्रि) | ५.१३३ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | १८५.११० | इत्येवं क्षमिताः सप्तमहतो (सु) | ४५.१२४ | इत्येवमुक्त्वा भगवान् (पा) | १०५.१७० |
| इत्युक्त्वासमुमोचास्त्र (पा) | ४१.२५ | इत्युक्त्वासामतिचक्रे (क्रि) | ५.१३३ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २८.४२ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | २५.१८ | इत्येवमुक्त्वा माहात्म्यं (उ) | १६५.६६ |
| इत्युक्त्वासायदातात (उ) | २०५.२८ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २२१.५२ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | १.३७ | इत्येवमुक्त्वा देवपि (उ) | ८०.११७ |
| इत्युक्त्वासायस्थित्वा (पा) | ६५.५ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २१८.५४ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | ६५.१२० | इत्येवं कायिकं पुनां (पा) | ८४.४४ |
| इत्युक्त्वासहरोदो- (उ) | १६६.३८ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २१०.५१ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | ६४.१३० | इत्येवं गीता माहात्म्यं (उ) | १६२.६२ |
| इत्युक्त्वासाशरंचापं (पा) | २४.२८ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | २५५.१२५ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | ५६.३७ | इत्येवं चित्तयामाग- (भू) | ६४.३५ |
| इत्युक्त्वासासखी (उ) | १५.६६ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | ६६.३६ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | ६६.३६ | इत्येवं चित्तयामाग- (भू) | १०५.२३ |
| इत्युक्त्वासाहसा (उ) | २३८.८६ | इत्युक्त्वासाययोगेहं (उ) | १६६.५६ | इत्युक्त्वाचतुर्विंशतिमाया (क्रि) | ६७.४६ | इत्येवं नृपतनूतानि कृत्वा (सु) | ६७.४६ | इत्येवं चित्तयामाग- (भू) | ३६.५२ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| इत्येवंजपतानित्य (पा) | ८२.४७ | इत्येवंवचनात्तेषां (उ) | ४१.४६ | इदमाचमनीयंते सु (क्रि) | २२.११६ | इदंतुच्छैस्वर्गसुखं (पा) | १३.१२ | इदंपवित्रयशसोनिधान (मु) | ११.६५ |
| इत्वंतेमहाराजंययुः (पा) | १०.२६ | इत्येवंवदतस्तस्य (उ) | १६२.५० | इदमाचरतो राजन्नखंड (मु) | २०.३६ | इदंतुदशमंजन्मराक्षसं (उ) | १२७.१४३ | इदंपाद्याश्रियः कानं (उ) | ६६.१६ |
| इत्येवंतांहनिष्यामि (पा) | ११२.५३ | इत्येवंवदतस्तस्यभुजो (पा) | २.१५ | इदमानंदकंदाख्यं (पा) | ८२.७६ | इदंतुभारतवंनीतंहेमवतं (स्व) | ३.२५ | इदंपागुपतं ह्यस्य निमित्तं (उ) | १५३.१६ |
| इत्येवंतोदवंतोचपस्पर (पा) | ५५.६५ | इत्येवंवाक्यवादेन (पा) | ६.२५ | इदमायननपश्यपुरो (उ) | १७६.४३ | इदंतुवैष्णवांचापते (उ) | २४२.१६१ | इदंपुष्पनमरम्यं (स्व) | ३६.६६ |
| इत्येवंदशवंस्तस्वैरामो (पा) | १.२८ | इत्येवंश्रुतयसस्वाः (उ) | २२४.७५ | इदमाहसनिद्रयपश्ये (पा) | ११०.८७ | इदतेवदनरम्यंमुनीनां (मु) | ३७.२७ | इदमद्रव्यागोपां (उ) | ७१.३०५ |
| इत्येवंनहस्तंयुचैर्यं (पा) | १२.७ | इत्येवंसमतिक्रुत्वा (उ) | ४०.२४ | इदमूचुर्माहाभागाः (मु) | ६.२१ | इदनेमर्वमाख्यातपावनं (पा) | ६५.११६ | इदंभयच्छेदकरं (पा) | ६७.६५ |
| इत्येवनिधमंगूहणीयाद (उ) | ५८.२५ | इत्येवंसर्वमाख्यातं (पा) | ८२.७६ | इदमूचुस्तदागत्वादान- (मु) | ३०.१०० | इदंनैलाक्यमंदवयं (उ) | २४५.२७६ | इदमाधवगास्य (पा) | १०३.४ |
| इत्येवंप्रविचार्यैव (भू) | १०५.२७ | इत्येवंसविचार्याय (पा) | ६२.७ | इदमूचेवचोदुःखादुपस्थ (पा) | ११२.२५ | इदंदत्त्वावरंतस्यै (उ) | ३८.१०६ | इदमाधवमाहात्म्यं (पा) | ६१.१४ |
| इत्येवंगुह्यापृष्टस्त (पा) | ६६.७० | इत्येवंस्वल्पनित्रिये (पा) | २२.५ | इदमेवकृतंमहेंद्रमुख्यै (मु) | २३.६६ | इदंननुगुहाणाशु (पा) | १२.११ | इदमाहविचार्येति (पा) | ६४.४६ |
| इत्येवंब्रुवतोमार्गं (उ) | ५५.१० | इत्येवमुक्ते रुद्रेणविष्णु (मु) | २२.१७४ | इदमेवपुरापटं (उ) | ४६.२ | इदंघनुरसज्यमे (पा) | ११६.११० | इदमूचुर्वचः स्पष्टकोभवा (पा) | १०८.७ |
| इत्येवंभाषमाणुतं (पा) | ५८.४६ | इत्येषाक्रुतः सर्गः संभूतो (मु) | ३.७८ | इदंगुणत्रयंपुत्राभज (पा) | १०८.८ | इदंघन्यमिदंस्वर्यम् (स्व) | ४७.१४ | इदंममुकृतंसर्वं (पा) | ६५.१२४ |
| इत्येवंभाषमाणुतुवाणेन (पा) | ५२.६३ | इत्येषाकर्मणांयुष्मिः (उ) | २८.३२ | इदंगोपह्विपरमनाख्येयं (पा) | ७६.३४ | इदंनानगुणन्याये (पा) | १११.४८ | इदंयदृक्षिणेभांगेह्यु- (उ) | १११.१६ |
| इत्येवभाषमाणुतो (पा) | ६४.४४ | इदंपवित्रं परमं पुण्या (उ) | १३८.६ | इदंजंडकारण्यं (उ) | २४२.२४२ | इदंगानीदुर्लभासा (उ) | १८.७१ | इदंगः शृणुयानित्य- (मु) | १६.३६६ |
| इत्येवं भाषितं तस्य (भू) | ६८.२० | इदमर्थमहाराजस्वतो- (मु) | ३४.३३१ | इदंचपितृमाहात्म्यकथं (मु) | १०.१२७ | इदंपरविभेदेनयुज्यते (उ) | १७५.२५ | इदंयोजनापर्यंतमाश्रम- (मु) | ३७.५६ |
| इत्येवंमानसेकृत्वा- (पा) | ६१.६१ | इदमतिसायगुह्यनिः सुतं (क्रि) | २६.५५ | इदंचरित्रपरमंपवित्रं (पा) | ८३.११५ | इदंपरविभेदेनयुज्यते (उ) | १७५.२५ | इदंरहस्यं परमं (त्र) | २५.२५ |
| इत्येवंरचितत्वावुप (मु) | २१.६१ | इदमनघं शृणोति (मु) | २१.२७७ | इदंच श्रुणुभूपालयत्पुष्टो (मु) | ४०.४ | इदंपवित्रं परमं पुण्या (उ) | १३८.११ | इदंरहस्यं परमंमयाति (पा) | ८२.८७ |
| इत्येवंरचयामाया- (उ) | २४५.१७३ | इदमनघं शृणोति (मु) | २३.७१ | इदंचसमनुप्राप्तंलोकानां (मु) | १६.१२८ | इदंपवित्रं परमं (उ) | ७६.३६ | इदंरहस्यं परमंलक्ष्मी (उ) | २२३.७७ |
| इत्येवंराज्यसंभोगैः कुतः (भू) | ६६.१८३ | इदमनघं शृणोति (मु) | २१.२७७ | इदंचाभरणसौम्यसुकृतं (मु) | ३६.२६ | इदंपवित्रं परमं पुण्या (उ) | १३८.११ | इदंराज्यंगुहाणाशु- (पा) | १३.५६ |
| इत्येवंरामभद्रस्य यशः (पा) | ५५.४७ | इदमनघं शृणोति (मु) | २१.२७७ | इदंचाभरणसौम्यसुकृतं (मु) | ३६.२६ | इदंपवित्रं परमं पुण्या (उ) | १३८.११ | इदंराज्यंगुहाणाशु- (पा) | १३.५६ |
| इत्येवंवचनं राजा (पा) | २२.४१ | इदमनघं शृणोति (मु) | २१.२७७ | इदंचाभरणसौम्यसुकृतं (मु) | ३६.२६ | इदंपवित्रं परमं पुण्या (उ) | १३८.११ | इदंराज्यंगुहाणाशु- (पा) | १३.५६ |

| | | | | |
|-------------------------------------|---|-------------------------------------|---------------------------------------|--------------------------------------|
| इदंविस्मयेनपुराजुनेनकृतं (सु) २५.३२ | इदानीत्स्वद्वयकोपाद्- (पा) ६१.२६ | इदानीमुचितकर्मब्रूहि (उ) १२६.५१ | इदुमतीं समाहूयस्नापिता(भू) १०४.११ | इंद्रप्रस्थगतानये (उ) २०६.६३ |
| इदंविष्णुरितिसृष्ट (पा) ११७.१२१ | इदानीत्स्वमहावाहोब्रह्मणो(सु) १४.१५६ | इदानीमुचितब्रूहिवाला (उ) १२६.२८६ | इदुमत्यागृहं हृष्टः (भू) १०४.२ | इंद्रप्रस्थगतायाग (उ) २२२.८५ |
| इदंविष्णुमुमन्त्रेण (भू) १२५.२७ | इदानीत्स्वद्वयः प्राप्नोतीले (पा) २२.५६ | इदानीमूनिशार्दूल श्रोतु (क्रि) २२.३ | इदुपत्या महाभाग स्वप्नं (भू) १०४.५ | इंद्रप्रस्थगतेतीर्थेषुकरे (उ) २१६.४३ |
| इदंवैपयमराजन् (उ) २४२.५७ | इदानीत्स्वानुजेष्मामिरामं (पा) ५५.६२ | इदानीयामिसमरे (पा) ६३.३७ | इन्द्रजालप्रभावेण (क्रि) ५.२०० | इंद्रप्रस्थतटस्थायांकाशना (उ) २२२.२ |
| इदंवृंदावनंरम्यममघाम (पा) ७५.८ | इदानीत्स्वानुसंवध्य (पा) ५२.७ | इदानीरजकोनैव (पा) ५८.३६ | इन्द्रजालस्फुटवेत्ति (उ) १२८.५७ | इंद्रप्रस्थमिदंक्षेत्रं (उ) २००.७६ |
| इदंक्षेपतः प्रोक्त्रमया (पा) ६८.१२१ | इदानी दुर्लभा (उ) १८.७१ | इदानीवर्ततेतातकन्या (उ) २१३.८२ | इन्द्रजालस्फुटवेत्तिमायां (स्व) २२.४८ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.७ |
| इदंस्थानं परित्वज्य- (भू) ४६.२३ | इदानीत्स्वामिभटं (पा) ६०.२५ | इदानीशृणुमेराजन् (सु) ३४.२३७ | इन्द्रजिताचगुह्यवानराः(पा) ११६.२३६ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीकथमेवेदंव्रतवेद (सु) १३.४०८ | इदानीनूतनः कोपिजातो(उ) १६२.४८ | इदानीश्रोतुमिच्छामि (ब्र) ११.१ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीं कुहकल्याणि- (भू) ५.६६ | इदानीपवनोद्धृत(पा) ४५.४ | इदानीश्रोतुमिच्छामि (क्रि) १६.८५ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानींकुरुमंशाति (सु) ३४.१२३ | इदानीपश्यमेवीर्यं (पा) ६२.४१ | इदानीश्रोतुमिच्छामि (सु) ४५.१ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीकेनपुण्येन (ब्र) ५.३० | इदानीपातयाम्यद्यभूमौ (पा) ६३.६८ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीक्षत्रियत्वादिदर्श (पा) ५४.२२ | इदानीपापनिर्मुक्तो (पा) ३१.६ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीगच्छत्संध्यां (भू) ८.६ | इदानीपुण्यतीर्थेषु (क्रि) ५.१६२ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीगुरुभक्ति (पा) १००.२५ | इदानीब्रूहिंश्रोतुं (क्रि) २५.८७ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीतत्स्मिन्विष्णुमि (उ) १७.१४ | इदानीभूरिभागेन (उ) १६४.४३ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीतद्वचः श्रुत्वा (ब्र) २२.४१ | इदानीमतिनिविष्णा (पा) ७२.३३ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीतिष्ठकिंयासि (पा) ५१.२० | इदानीमपिकारुण्या- (पा) १२७.१६२ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीतिष्ठमद्वीरान्- (पा) ५२.४६ | इदानीमपियद्वक्ष्येत (सु) २३.१०१ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीतेनमुक्त्वा (पा) २५.६ | इदानीमयिजातेतु (पा) ५८.२७ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |
| इदानीतेपिदैवेनप्रतिक्ल (पा) ५८.२५ | इदानीमितः परमेकवर्ष(पा) ११६.५६ | इदानीपोडशाब्देतु (उ) २१४.३२ | इन्द्रत्वं कस्यमंजातं (भू) ५.३७ | इंद्रप्रस्थमिदंतीर्थं (उ) २१२.१८ |

| | | | | |
|---|---|---|---|--|
| इंद्रमार्गानदीप्राप्यजटा- (उ) ३३.१७२ | इंद्रस्य सारथि दिव्यं (भू) ११५.६ | इन्द्रियाणांजययोग (पा) ६६.२७ | इंद्रोववीजजहिह्वा नां- (सृ) १३.२४१ | इममर्थपुरापृष्ठोनारदेन (सृ) ४६.६६ |
| इंद्रमित्रं परं जानन्भयं चक्रे (भू) २४.४७ | इंद्रं हि दृष्ट्वा मुक्तायथा (भू) ५५.२२ | इन्द्रियाणांनिरोधस्वदानं (स्व) ३१.१६८ | इंद्रोभविष्यतिपरममहर्षी (पा) ६१.३ | इममत्रमहादेविजान्नेव (उ) २५४.५६ |
| इंद्रलोकप्रदंहीदनिर्दिष्टं- (स्व) २३.१६ | इंद्राणीतुर्वर्कदेवी (सृ) ३४.२६५ | इन्द्रियाणां महाराज- (भू) ८८.३४ | इंद्रोमुक्तभुजोऽप्यासीत् (पा) १६.२० | इमंमंत्रमुच्चार्यं वसिष्ठ (पा) ११.७० |
| इंद्रलोकप्रदोच्छ्रोदे- (उ) १२८.१३५ | इंद्राणी वा महाभागा (भू) १०१.३४ | इन्द्रियाणांयथा श्रेष्ठमनः (क्रि) २२.७० | इंद्रोवस्तः समभव (सृ) ८.१८ | इमंरम्यंविचित्रं च वाचनं (उ) १२६.२०४ |
| इंद्रलोकं ब्रह्मलोकं रुद्रलोकं (भू) ८३.२ | इंद्रादयोदिशापालामात- (पा) १०६.६१ | इन्द्रियाणांमुखाश्चैनं (उ) १३२.६६ | इंद्रोविवस्वान्पुत्राश्चत्वरिंश- (सृ) १८.१८ | इमंनारपंमुनेः श्रुत्वा (उ) १८५.८७ |
| इंद्रलोकं ब्रह्मलोकं शिवलोकं (भू) ७६.३१ | इंद्रदयोलोकपालाः सर्वे (पा) २१६.८७ | इन्द्रियाणां हि सर्वेषां (भू) ७.६६ | इन्द्रोविष्णुर्भगस्त्वष्टा- (सृ) ४०.१०० | इमंश्रीभगवद्भुवनमहिमा (पा) ७४.२०४ |
| इंद्रलोकादहं चेंद्रं (भू) ३.२४ | इंद्रदयोलोकपालाश्च (उ) ६५.८ | इन्द्रियाणि यथात्नानं (उ) १२.६४ | इंद्रामिधर्मराजोसि (उ) १६७.६७ | इमं श्रीभगवद्भुवनं (क्रि) ७.५५ |
| इंद्रलोके प्रवृत्ते (भू) ६०.३ | इंद्रादिभिस्तदादेवैः (उ) ६.१ | इन्द्रियाणिवशेषेपांम (पा) १०.७३ | इक्षनं देवदंष्ट्रिप्रवर्पादी (सृ) २०.१०६ | इमंस्त्वममहादिव्यंभुत्वा- (स्व) १५.६२ |
| इंद्रनाम्ना चतर्लिंग (उ) १५१.८ | इंद्रादिवनिताभिः सा (पा) ११२.५६ | इन्द्रियाण्यनिवृत्तायेसमर्था- (स्व) ३१.४३ | इक्षानानां प्रदानेन (स्व) ५७.४६ | इमां चगाथां शृणुयान् (उ) ६१.३० |
| इंद्रः सुरेश्वरः पूर्वं (उ) १५१.३ | इन्द्रादिसर्वदेवा (पा) ११४.१३३ | इन्द्रियाथैपुभूतेपुनरीरे (सृ) ३.१२० | इक्षायैवप्रमत्तावैमुद्धे (पा) ५.४२ | इमानिक्षेत्रवीजानि (उ) १०४.२६ |
| इंद्रसेन इति ख्यातः (उ) ५८.५ | इन्द्रो देशात्समायाताः (भू) ७१.२४ | इन्द्रेण कथितसर्वमीश्वर (उ) ३६.५३ | इमध्यायमप्येक (उ) १८०.१०४ | इमानिपंचमुभयं (उ) १५२.१५ |
| इंद्रसेनोपिराजपि (उ) ५८.३४ | इन्द्राद्धनं जयश्चैव शक्रतुल्यं (सृ) १३.११६ | इन्द्रेण प्रेषिताद्वृत्ती (भू) ५३.३० | इममार्पस्तवं पुण्यं (उ) ७६.३० | इमानिममवाक्यानि (पा) ६६.३६ |
| इन्द्रस्तत्र हविर्मुष्टं रामचंद्रेण (पा) ६८.१ | इन्द्राद्या लोकपालाश्च- (भू) ६२.५२ | इन्द्रेण सहनांद्रं (उ) २१६.६२ | इममेवजपमंत्रं (उ) २५४.६२ | इमानित्यमनघ्यायानं (स्व) ५३.६३ |
| इन्द्रस्तमागतं दृष्ट्वा वृत्रं- (भू) २४.२६ | इन्द्राद्याश्चामरणगणाविद्या (सृ) ४.६४ | इन्द्रोऽग्निः शमनश्चैव (क्रि) २४.८ | इममेवमहाप्रदंनैलाम (उ) २२४.५ | इमामघोषपटलभीषणध्वजान् (सृ) २१३.३३ |
| इंद्रस्य खांडववने (उ) २००.३६ | इन्द्राद्याः सकलाजित्वा (उ) ३८.६१ | इंद्रोनिवारयामासमा- (सृ) ७६.० | इमं कृष्णस्यलीलार्- (पा) ७५.५५ | इमां चगाथां शृणुयान् (उ) ६१.३० |
| इंद्रस्य खांडवराण्ये (उ) २०७.४४ | इन्द्राद्यैर्देवैः (क्रि) २४.३ | इंद्रोऽप्योरोपितस्तेन (उ) ३८.७० | इमंक्रियायोगसारं (क्रि) २६.५० | इमान्नोदशगुणामाहुर्दं (उ) २१२.५० |
| इंद्रस्य चारुदृष्टिस्त्व- (सृ) १७.३२७ | इन्द्रायुधसमं चापं (भू) ११४.२८ | इंद्रोऽपिनिजितस्तेन (उ) ३८.५१ | इमंभगवताप्रोक्तंम (पा) ७३.५६ | इमां दुष्टां महापापां (भू) ५१.३० |
| इंद्रस्य वचनात्सद्यो (भू) १२१.५ | इन्द्राश्चमनवश्चैव (क्रि) २१.१२६ | इन्द्रोऽप्येद्रसमः पुत्रो (भू) १०७.६ | इमंमत्तमवष्टभ्यदुष्टाः (उ) २३५.५५ | इमां पटयः शृणुयान्मुहूर्त्तं (सृ) २१३.३८ |
| इंद्रस्यारजोभूत्वा (उ) २३६.२८ | इंद्रासनमवाप्नोति (उ) ६४.२८ | इन्द्रोऽप्येद्रसमं लोके (भू) १०३.२० | इमंमंत्रं जपन् देविभक्त्या- (उ) २५२.११० | इमां पालयतां भूमिप्रजाः (उ) १२६.१६४ |
| इंद्रस्यैववधारयामि पुत्रं (भू) २४.६ | इन्द्रियग्राममावृत्य रम्यं (सृ) ४३.२१६ | इन्द्रोऽप्येद्रसमो राजा (भू) १०३.१०६ | इमंमंत्रं ठठ्ठया द्वादशैवाणि- (सृ) २१.१६० | इमां योवेति गायत्री (सृ) ४६.१६० |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| इमाविमृष्टविजाय (सु) | १३.३० | इयंतुजनीसाक्षान् (उ) | ७७.२५ | इयत्रैकाग्र्यपीयंगरागो- (उ) | १३५.२४ | इष्टानिनास्तपया क्रोधो (स्व०) | ७.१४ | इष्टवाक्रतुशतैर्देवान् (उ) | ६१.६८ |
| इमावुत्पाद्यतनयो (सु) | ६.२८ | इयंदेवीजनकजामन्नाविद्या (पा) | ८.२० | इयंवृत्रादनुप्राप्तापुरुहूतं (उ) | १६८.६४ | इलः किपुहारेव (सु) | ८.१२२ | इहक्षीणायुपांपुंसांवास. (पा) | ६६.४२ |
| इमांश्चोदाहरत्यत्र (सु) | १३.५१ | इयंघन्याधन्य (उ) | ३६.२६ | इयंवृत्रादनुप्राप्ताब्रह्म (उ) | १६८.५७ | इलस्तुप्रथमस्तेषां (सु) | ८.७६ | इहचाविकवासांतिवर्षा- (सु) | ३४.१६६ |
| इमाः स्मदेवमंप्राप्तास्त्व (सु) | १६८.६३ | इयंयन्याधन्यत (उ) | १७३.४ | इयं वृद्धा महाप्राज्ञभाव (भू) | १२.६६ | इलस्यनाम्नातद्वा- (सु) | ८.१२० | इहचैवस्त्रियोधन्याः (स्व) | ३१.६१ |
| इमास्ताः पुरतोऽरम्या (पा) | ७२.६५ | इयं धात्री महाप्राज्ञा- (भू) | २८.६३ | इयंशुद्धसमाचारा (उ) | २४२.२४१ | इलाप्रेषुसपासीनाः (उ) | २२६.७६ | इहजन्मनिदारिद्र्याधि (सु) | २४.२३८ |
| इमेदाराः सुतागावो (सु) | ३०.१४२ | इयानेवविशेषोस्तितस्या (उ) | २१२.५१ | इयं साक्षान्महालक्ष्मी (क्रि) | २५.३ | इलारूपसमाक्षिप्तमनसा (सु) | ८.६४ | इहजन्मनिभोलोकान (उ) | ५५.७ |
| इमौतुशयितावत्र (उ) | १६३.५४ | इयंपत्नीमहाभीरोः (पा) | १२.६ | इयंसादेवमातानः पादो- (सु) | ३८.१०० | इलानृत्तेतुशिखरे (उ) | ५.३४ | इहजन्मनिधोमर्त्यः (त्र) | ५.८ |
| इमौतेचरणौदेवि (सु) | ३८.१०४ | इयंपापसमाचारा निर्घणा (भू) | ४७.४३ | इयंसादशयतेल्कादर्शणं (सु) | ३८.६५ | इपऊर्जस्तनूजदचशुचिः (सु) | ७.६१ | इहजन्मनिसंयंति (क्रि) | ३.३६ |
| इमौतेत्विषुधीवीर (पा) | १२.१२ | इयंपुष्टाचसुभृशं- (सु) | ३३.१२४ | इयंसानलिनीवीर्यस्यां (सु) | ३८.३२ | इस्यशुक्लैकादश्या (उ) | ६०.१६ | इहजानामहापापात्पुनः (उ) | १८७.५७ |
| इमौमंत्रोपठित्वातु (क्रि) | २२.८८ | इयंरसीमयाक्लृप्ता (सु) | २.७२ | इमंसापरमादेवीवृत्र (उ) | १३७.५ | इपुधीवाणसंपूर्णां (पा) | ५६.८३ | इहदेवोत्तमीतिदेवावध्रमु (सु) | १५.८८ |
| इयं कन्यामहाभाग (भू) | ३६.२७ | इयंभवंतंभजतेरुचीरूप (पा) | ६५.१२८ | इयंसायतनीवेलाविहार (सु) | ८.१०० | इष्टंयज्ञनकेनाश्रतपो- (पा) | ७४.३२ | इहपुंनेसुखंयवै (क्रि) | १२.११ |
| इयं कामकलानाम (पा) | ७४.११० | इयंभारवतीभूमिः शरणं (उ) | १६५.६० | इयंमुचारु सर्वांगीकामिनी (पा) | १०६.३७ | इष्टावयस्वयामृतिः (उ) | १२०.८१ | इहभुक्तेमुत्सर्वं (क्रि) | १४.२१ |
| इयंकाशमहेशस्यपुरी (उ) | २२२.१६ | इयंभार्याह्वयंपुत्रदं (भू) | ८.२५ | इयंसुमतीराममानुषं (सु) | ३७.६८ | इष्टान्भोगानवाप्स्य (पा) | १०६.५७ | इहभुक्त्वात्रिलान् कामान् (क्रि) | १०.१६ |
| इयंकाशीसमापुण्या (उ) | ३७.२८ | इयमंजूकषानाम (क्रि) | ३.५७ | इयंसौदामिनीसुभ्रूरियं (पा) | ७४.११८ | इष्टापूर्तस्तायेचपंचयज्ञ (स्व) | ३१.४२ | इहभुक्त्वात्रिलान् (क्रि) | १०.१३ |
| इयंक्षमं करीनाम्ब्राह्मणी (क्रि) | २०.५६ | इयमेकादशीब्रह्मन् (उ) | ३८.३ | इयंहिकागायतिचारुलोचना (भू) | २५.१ | इष्टापूर्तसमायुक्तोयुक्तो (सु) | ३२.१० | इहभुक्त्वाभोगान्ते (सु) | १७.२५५ |
| इयंघृतात्रीसुभगाचंद्रका (पा) | १३.३ | इयमेवतुक्थ्यतेविबुधैः (उ) | २१२.३ | इयंहि सांप्रतं प्राप्ता वराकी (भू) | ५२.२ | इष्टिचैवैष्णवीकुर्याति (उ) | २५३.१६४ | इहभुमाग उत्त्वा- (उ) | २०४.५८ |
| इयंचदेवदेवेनशक्ते (उ) | २४१.३२ | इयंरूपवतीनामवेश्या (पा) | ६५.१२५ | इयाजवाजिमेषं (उ) | २४४.१४ | इष्टिर्धृतिः सोमपानं (पा) | ८५.१४ | इह्यत्कुरुतेकर्मनरार (उ) | १३२.११४ |
| इयंचब्राह्मणीपूर्वकांस्य (उ) | १२६.१८७ | इयंविष्णु पदीतात (उ) | २०४.२८ | इरमध्वानमुत्तलहय (उ) | १७७.६ | इष्टिर्धृतिः सोमपानं (सु) | १५.१७४ | इह्यतिक्रयतेकर्मनरार (सु) | १६.२१३ |
| इयमजानतोहत्या- (पा) | १०४.१५४ | इयंविहारखेताले (सु) | ८.६६ | इरावतीवितस्तांचपयोष्णीं (स्व) | ६.१३ | इष्टैरन्यैरपिपरान् (उ) | ११४.११ | इहचास्माभिर्भारानां (सु) | १७.११ |
| इयंतकालमीशोसोमिक्षां (सु) | १४.१८ | इयंवेणीसमापुण्या (उ) | ७५.१५ | इरावत्येतिप्रसाल्य- (सु) | ३४.२५६ | इष्टैः सहस्रतः शांतोभुंजीत (सु) | ६.११६ | इहलोकंपरित्यज्य (उ) | ७६.१४ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|----------------------------------|-----------------------|----------------------------|---------------------------|------------------------------|--------|
| इहलोकपरित्यज्य (उ) | ७१.२३ | इहस्थानाहमेस्यातुं (पा) | ११२.४७ | ई | ईशवैष्णवयोनिदां- (पा) | ८२.३६ | ईश्वरी सर्वभूतानामांतर(उ) | २३२.४६ | |
| इहलोकेदरिद्रोभ्रष्ट- (सृ) | ३४.१६६ | इहस्थितासाकैकेयीधनं-(सृ) | ३३.१३० | ईक्षमाणेनगीविदमेवंवरां (पा) | ७१.६३ | ईशः सर्वस्यजगतः (उ) | २२६.५६ | ईश्वरेणाग्रतर्चोणं (उ) | १७४.१६ |
| इहलोकेजयप्राप्तिः (उ) | ४४.३८ | इहागतस्यरामस्य (उ) | ३८.८५ | ईजिरेदीर्घसन्नेराकृपयो (सृ) | १.१० | ईशानकलेजातेतुकामे (उ) | ३.३६ | इश्वरोऽस्ति कथं लोके (उ) | ११.४७ |
| इहलोकेपरेर्वचनदत्तं (स्व) | ३१.१७१ | इहागत्यनजानीमः (पा) | ४४.५६ | ईहूपूपा न दृष्ट मे (भू) | ७७.४२ | ईशानपश्चिमस्थाप्य (सृ) | ३४.२७५ | इश्वरोपिब्रह्मकर्म्यं (उ) | १८.२६ |
| इहलोकेवरेचैव पुत्रास्ते (उ) | २७.१८ | इहानीतस्त्वयाशं (उ) | १५१.७६ | ईदृग्वनंप्रपश्यंती (पा) | ५६.८ | ईशाननवलोका- (उ) | २४२.६६ | ईश्वरोभगवान् विष्णुः (उ) | २२६.६६ |
| इहलोकेवरान्पुत्रान् (सृ) | ७.२८ | इहाम्येहिमहाभागे (उ) | ६६.५८ | ईदृशः कल्पवृक्षोऽयं (उ) | ८८.१५ | ईशानभागमुभगरति (पा) | ११४.१६ | ईश्वरोपिहितस्थायी (उ) | ३.४ |
| इहलोकेमुखंभुक्ता (उ) | ८२.३८ | इहामुत्रफलंतस्य (पा) | ६३.११ | ईदृशत्रिषुलोकेषु (उ) | २४.३ | ईशानवरदानेनसर्वभूते (उ) | २३८.७८ | ईश्वरोऽसिहृदेव्या (उ) | २२३.१६ |
| इहलोकेमुखंभुक्त्वा (उ) | १३३.३६ | इहामुत्रसुखंतद्वि (स्व) | ६१.३४ | ईदृशददृशस्त्वं (उ) | १४.३८ | ईशानः सर्वविद्यानां (पा) | ११४.२६१ | ईपदुष्पजलैः शुद्धैः (क्रि) | १०.७ |
| इहलोकेमुखंभुक्त्वा (उ) | १३५.८६ | इहायातोलभेद्राज्य (उ) | ७४.४ | ईदृशदुष्कृतंक्रुत्वापश्चात् (सृ) | ४७.२३ | ईशानाध्ययितंनामत्रयी (स्व) | २८.६ | ईपत्क्रोधममाविष्टो (सृ) | ४३.२३२ |
| इहलोकेमुखंभुक्त्वा (उ) | १३५.१२७ | हापिपुरावृत्तं (पा) | ६२.३४ | ईदृशदेहिमे पुत्रंदातुकामो (भू) | ३२.७० | इशानायनमस्तुम्यं (क्रि) | १३.११४ | उ | |
| इहलोकेमुखंभुक्त्वा (उ) | १४४.२६ | इहायंयत्पुरावृत्तं (पा) | ८७.४१ | ईदृशस्यसुतस्यास्ति (सृ) | ४३.४७७ | ईशावास्यामहादेवी (उ) | २८६.१४६ | उक्तं च मोहंतत्रे (पा) | ७४.१५३ |
| इहलोकेमुखंभुक्त्वा (उ) | १६२.१७ | इहायंयत्पुरावृत्तं (पा) | ६८.१२८ | ईदृशस्यापितेगर्वं (उ) | १०८.२१ | ईश्वरंप्रतिदेवेशं (उ) | ३.२६ | उक्तं च शृण्वतां (उ) | २१.२६ |
| इहलोकेसचांडालो (उ) | ५१.४४ | इहास्तिवैष्णवीमूर्तिः (सृ) | ३८.१२२ | ईदृशीकल्पयित्वातुस्वर्णं (सृ) | ३४.३६७ | ईश्वरंनारायणं (क्रि) | ११.३५ | उक्तं भगवतासर्वं पुराण- (सृ) | ३५.१ |
| इहलोकेतमोभाग्य (सृ) | २१.७६ | इहैवकोशंलायां (उ) | २११.३६ | ईदृशीरूपसंपत्ति (सृ) | २४.३८ | ईश्वरदत्त जगत्स्वामी (भू) | ५६.१४ | उक्तं ममेक्षुभगवान् (उ) | २३५.२ |
| इहलोकेहतोन्नां (स्व) | २६.३४ | इहैवपालयेन्माता (क्रि) | २२.५६ | ईदृशं हि वदेत्का हि (भू) | ५४.३ | ईश्वरधीपतेकृष्ण (क्रि) | ११.३२ | उक्तं सप्त दशाध्याय (उ) | १६२.१ |
| इहलोकोहतोन्नां (उ) | १२६.२६ | इहैवभगवन्नित्यं- (सृ) | १५.५७ | ईदृशयाप्युष्यत्यया (उ) | ४३.२० | ईश्वरः सर्वभूतानां (उ) | ८०.६४ | उक्तहि ब्रह्माणापूर्वं (उ) | ७८.८६ |
| इहोलोलेमुखंप्राप्यव्रज (उ) | १३५.११३ | इहैव मोदते सो वैपरत्र- (भू) | १३.१५ | ईदृशायसुरभ्रष्ट (उ) | ३२.५१ | ईश्वरः सर्वभूतानाम् (स्व) | ४८.५ | उक्तमात्रेऽशनसाश्रयम- (सृ) | ३७.५४ |
| इहैवमोदते सो वैपरत्र- (भू) | १६.११५ | इहैवेदंभवप्रीत्यप्रेत्य- (सृ) | १६.२३८ | इक्षितं प्रायंयस्यास्मान् (सृ) | ३६.११८ | ईश्वरस्यधनुर्भयं (पा) | ३६.१५ | उक्तमात्रेण तेनेदं (पा) | ४५.३२ |
| इहैवैतत्संपूर्णमशोक- (सृ) | ३८.११० | इहैवैतत्तेनशुकरे (उ) | ११६.१२ | ईक्षितं मनसः कामस्वर्ग- (स्व) | २६.३६ | ईश्वरस्यापि सर्वं (भू) | १२१.३७ | उक्तवत्यंकाध्याय- (सृ) | ४३.४८५ |
| इहैवैतत्प्राप्तादृष्टत्वा (सृ) | ३५.२५ | इहोत्पन्नामनुष्येषुबाधते-(सृ) | १३.१६५ | ईक्षितं लभतेभूमि (उ) | २३७.२६ | ईश्वरीकमलेदेवि (त्र) | ११.३७ | उक्तवान्यद्बुद्धं (पा) | ६६.७८ |

| | | | | |
|-------------------------------------|--|--------------------------------------|---|--|
| उक्तश्चस्नाहिभीविष्णो(पा) १०५.२०५ | उग्रदंष्ट्रोऽथभ्रातालक्ष्मी (पा) ३४.२२ | उच्छेषणंतुतत्तिष्ठे (सु) ६.१७८ | उत्काः प्रज्वलिताश्च(सु) ४५.१३३ | उत्तमे सर्वतीर्थानां (स्व) २७.३६ |
| उक्तश्चागमन- (पा) ११०.२५ | उग्रश्रवास्तनोगत्वा (सु) १.११ | उच्छेषणंभूमिगतम् (सु) ६.१७९ | उत्कृष्टरसरसायन (स्व) २०.४० | उत्तमोदशभिद्रोणैर्मध्यमः(सु) २१.१५२ |
| उक्ताजनपदायेषु (स्व) ६.२६ | उग्रसेनं महाराजं स द्वतो (भू) ४८.१३ | उच्छ्रयेपंचनवति- (उ) १७.७४ | उत्क्षिप्तमंतरिक्षान्तु ब्रह्म-(सु) २६.७ | उत्तरद्वारितुमुनीद्रोहितै-(पा) १०.३६ |
| उक्तातयातथागंगा (सु) ३२.१५६ | उग्रसेनस्यपुत्रो (उ) २४५.६ | उच्छ्रयायाः पननांताश्च (भू) ५३.८१ | उत्तंभित्तिमिवाभाति- (सु) ४१.५६ | उत्तरंतुसमाम्नातं (स्व) ५१.१३ |
| उक्तादेवावतारास्तु- (उ) २३०.५ | उग्रसेनो महामूर्खः प्रेषिता (भू) ४६.२४ | उच्छ्रितेनाग्रहस्तेन (सु) ४१.१७६ | उत्तमं कुरुमीवर्ण(पा) ६५.१३३ | उत्तरसातुसंभूता (उ) ७५.४ |
| उक्तानुवचनं चैवद्वय- (पा) १०४.८३ | उग्राय च त्रिनेत्राय (सु) ३८.१४२ | उच्छ्रवांसोच्छ्रवासनि (उ) १०.२१ | उत्तमं द्वारकाक्षेत्र- (उ) १३५.२१ | उत्तरस्यां दिशि ब्रह्मानल (भू) २७.२३ |
| उक्तामयापिबहुशः (सु) १६.१५५ | उग्राश्वोपिमहाराजा (पा) ११.३३ | उच्यतांकिंकरोम्य (उ) २०८.५६ | उत्तमं सर्वक्षेत्राणांपुण्यमेत (सु) १५.६० | उत्तराः कुरवांविप्राण्या-(स्व) ४.१३ |
| उक्ते तु वाक्ये बहूनीति- (भू) ५५.१४ | उग्रेण तेजसा युक्तोवज्र (भू) ५.१०८ | उच्यतेशिरसः शुद्धिः (पा) ७८.७ | उत्तमं सर्वतीर्थानां (स्व) ३३.११ | उत्तरात्पूवंमभ्येत्य-(सु) ४३.४६३ |
| उक्तोऽथदानवस्तेन (उ) ३०.१६४ | उवः प्रांजलयः सर्वहर्ष-(उ) २३३.१३ | उच्युतः पुरुषः कृष्णः (उ) २२४.१६ | उत्तमं सर्वलोकानां (सु) १.४६ | उत्तरात्सुकुरुगन्त्वा (स्व) ४३.६ |
| उक्तोनाभेविसर्गेश्वर- (सु) २.२० | उचुर्मुनिप्रहृष्टास्ते- (पा) ६६.१५२ | उज्जयिन्यां प्रयागे (उ) ६६.२३ | उत्तमं सर्वमासानां (पा) ६४.१०७ | उत्तराभिमुखान्युज्जान-(सु) २७.४८ |
| उक्तोर्मत्रस्तदंगानि- (पा) ८२.५० | उच्चारैस्तु समायुक्तं (उ) ३७.५५ | उज्जहारक्षितिक्षिप्रं (सु) ३.५४ | उत्तमः पलसाहस्रो- (सु) २१.१४५ | उत्तरामगताश्चाद् दिगं (सु) ३५.६६ |
| उक्तोऽयस्य च संक्षेपो (स्व) ३.१८ | उच्चार्यपादयोक्षिप्त्वा(पा) ११४.२६७ | उज्ज्वालिताश्चतेपल्या (सु) २१.१२ | उत्तम स्त्रीसहस्राणि (उ) १२३.६५ | उत्तराण्यं चक्रमशो (स्व) ५८.१० |
| उक्तोऽहंसे तु बंधेन (सु) ३८.६२ | उच्चावचं विप्रनिशम्य (क्रि) ६.१४३ | उच्छ्रवृत्यासमान(उ) २१८.१२ | उत्तमांगं प्रदत्त मे (स्व) १.५३ | उत्तरागन्तुर्हानायभीष्मा (उ) १२४.४८ |
| उक्त्वाचै व मृषीन् (सु) १.६ | उच्चैः श्रवस संजस्य (क्रि) ५.७० | उड्डीयोऽङ्गीयतेसर्वे-(उ) १२६.१५२ | उत्तमोगमुत्तमांग (स्व) ५०.३० | उत्तरागन्ते तु नम्राप्यो (स्व) १८.११८ |
| उक्त्वानृतभवेद्यत्र- (सु) १८.३६२ | उच्चैः श्रवस्तुलाभे (उ) १८६.२१ | उतिष्ठोतिष्ठचावंगि (उ) १८.४१ | उत्तमांगे नुरेशाय (उ) ३५.५४ | उत्तरानतिभिः कार्या (उ) १५.३५ |
| उक्त्वांस्तोयदाविप्र (सु) १२.५५ | उच्चैस्तरो बहुरोमा- (उ) १३६.१३ | उत्कंडायेतिवैकंडं (सु) २३.११३ | उत्तमाग्यपरादायनानिके(सु) १७.११५ | उत्तराश्चपरंभ्येच्छान्(स्व) ८.६० |
| उग्रं च शक्तिकलाणि- (उ) १५२.१३ | उच्छिष्टकंककचैव (क्रि) ८.१० | उत्कंडितमनाद्रष्टुं (उ) १८६.१४ | उत्तमाग्युत्तमांगानिय- (सु) ४८.१३७ | उत्तराश्चैव कुम्भः कृत्त (स्व) ३.३१ |
| उग्रं समस्ततपसः प्रभावं (भू) ५.१०६ | उच्छिष्टपणपात्रेषु (पा) ११७.१५० | उत्कंडितवैनमःकंडममृतायै(सु)२२.११३ | उत्तमांश्च विरुद्धाश्च (भू) १२०.४५ | उत्तरे ऋषि नवादी-(पा) ३३.१७६ |
| उग्र जन्मन् शृणुष्ववत् (उ) ७७.४४ | उच्छिष्टंवाप्यनुप्य (क्रि) १६.१२ | उत्कंभगततातेनभूयो (सु) ३६.२ | उत्तमाश्च दशाण्यश्च (स्व) ६.३६ | उत्तरे चैव पायश्री देव्यां (सु) ३४.२७१ |
| उग्रदंष्ट्रं वैष्टः (पा) ३४.२८ | उच्छिष्टः श्राद्धभुक्चैव (स्व) ५३.७१ | उत्कलांथग्यस्तद्वद्वरिता- (सु) ८.११३ | उत्तमासत्त्विकी प्रांक्ता (उ) १३०.५ | उत्तरेणप्रतिष्ठानाद् (स्व) ४३.३३ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| उत्तरेणप्रवक्ष्यामि (स्व) | ४५.२६ | उत्तिष्ठोत्तिष्ठते विप्र (क्रि) | १७.१६० | उत्पत्तिरेषातेसर्वा (सु) | ३१.१२ | उत्पाद्य चैवतुलसी (क्रि) | २४.३६ | उत्सवांश्चतुर्विधात् (उ) | ६८.६ |
| उत्तरे नर्मदाकूलेतीर्थं (स्व) | १७.१ | उत्तुंगैर्मनिभिः सर्वैः (क्रि) | १५.७ | उत्पत्तिस्थितिसंहार (उ) | २४३.२७ | उत्पाद्यते गचमणि (क्रि) | २३.१५६ | उत्ससर्जकृतं पुण्यं (उ) | १७७.३२ |
| उत्तरेषुचमोविप्रा द्वीपेषु (स्व) | ६.१ | उत्थानं श्रीहरेः कुर्याद- (पा) | ८०.३२ | उत्पत्त्यति महाभागा (सु) | १४.५१ | उत्पाद्य बाहुसाहस्रं (उ) | २३७.१३ | उत्सादनं चगात्राणाम् (स्व) | ५३.३० |
| उत्तरोत्तमेतेभ्यो वर्ष- (स्व) | ३.५७ | उत्थापयतिभूमौ च (क्रि) | २३.१६२ | उत्पत्त्यते कुलेराजा (सु) | १७.२६७ | उत्पाद्यरात्रावरंगतो (व) | १४.३० | उत्सायदानवान् सर्वान् (सु) | ३८.६८ |
| उत्तस्थौनररूपेण कुर्वन्ति (सु) | ४६.४१ | उत्थापितास्ते कवि- (उ) | ७.३८ | उत्पत्त्यने रघुकुले- (सु) | ३७.१२७ | उत्पाद्य शिरसाकृत्वा (उ) | १३७.१४ | उत्साहाद्बृद्धयेयाचेत्वां (पा) | ७१.३१ |
| उत्तस्थौयत्रदेवेशः (पा) | ७४.१६५ | उत्थापितोपिहि भूष- (पा) | २.३१ | उत्पथग्राहिणश्चैव (सु) | ३.६५ | उत्पादनार्थं लक्ष्म्या (उ) | २३२.६ | उत्सुकस्तु कपालेन (भू) | १०३.१२६ |
| उत्तस्थौस्वर्णपर्यकात् (क्रि) | ८.४४ | उत्थाप्यतां प्रत्नेन- (पा) | १०८.३२ | उत्पद्यतेचसालक्ष्मी (उ) | २३१.४५ | उत्पेतुश्चतनो बाहाहं (भू) | ११५.११ | उत्सृज्यतत्पृथिव्यां (उ) | २३७.४ |
| उत्तानंतुनत कृत्वाजलै (पा) | ११७.६० | उत्थाप्याकेनिघायति- (पा) | ७१.३३ | उत्पद्यमानश्चोवाच- (सु) | ४१.६६ | उत्प्लुनं नृकपालं (भू) | २६.६१ | उदकंतन्मुनिस्पृष्टं (पा) | ६७.४४ |
| उत्तानमास्येनहविर्जुहोति (सु) | १५.३८२ | उत्थायचेलुः सर्वा- (उ) | २०६.४३ | उत्पन्नः प्राच्यते (सु) | ३.३ | उत्फुल्लकोकनदकोश (सु) | ४६.५७ | उदकुं भकुशान पुष्पम् (स्व) | ५३.८ |
| उत्तानशापिनं चारु (पा) | ७२.१७ | उत्थायदंत काष्ठा- (पा) | ८३.२७ | उत्पन्नामात्रो ब्रह्माण (सु) | ४०.५६ | उत्फुल्ल चं पक्च्छायाः (उ) | १८६.८ | उदकुं मंसुमनसोगो (स्व) | ५३.१६ |
| उत्तानहस्तताप्रोक्ताः (सु) | ४३.१६७ | उत्थायप्रपयोपम्पां (पा) | २८.५५ | उत्पन्नाचासितेपक्षे (उ) | ३६.५ | उत्फुल्लमल्लिका (उ) | १८७.१४ | उदकुं मश्चदानव्यो (सु) | १०.२१ |
| उत्तानाभ्यां च पाणिभ्यां (सु) | १५.२६० | उत्थायवाससीशुभ्रं (सु) | २०.१५५ | उत्पन्नांश्रीर्महालक्ष्मीः (उ) | २३२.४० | उत्फुल्लामलपद्याक्षरा (सु) | १६.७० | उदकयावीक्षितं भक्त्वा (पा) | ४७.४१ |
| उत्तानोवरदः पाणिरेष- (सु) | ४३.१८३ | उत्थायस्यंदनराजो (पा) | ५२.१६ | उत्पन्नासाकयदेव (उ) | ३८.४६ | उत्पुत्रतानं न गुरुणा (उ) | २५४.१४ | उदग्रमुखं वधन्ति (क्रि) | २३.१६१ |
| उत्तार्य शयकैरंगात् (उ) | १३.२८ | उत्थितः स्वधनुर्मस्ति (पा) | २५.२७ | उत्पन्नोदक्षिणादस्तात् (सु) | ८.६ | उत्तंगदेशेचनुरानन (उ) | ३.४८ | उदग्रमुखः प्रांमुखोवादंत (सु) | २१.२४ |
| उत्तिष्ठजायेभ्यु (उ) | २०७.२३ | उत्थितः शिरसाकृत्वा (स्व) | १५.५० | उत्पन्नोदपिवद्दीपा- (उ) | २४२.१४१ | उत्तगमेगामकंदेहं (पा) | १०६.१६ | उदग्रमुखीतदाभूत्वात्यज (सु) | १८.१८१ |
| उत्तिष्ठजाल्लवीतीयमाधे (उ) | २१६.३२ | उत्थितस्त्वंयदातत्र (उ) | ३०.१०७ | उत्पलंकरवीरं (सु) | २१.४६ | उत्तवं च क्रिरे सर्वे (भू) | २८.५३ | उदग्रं निर्जलं कृत्वा (सु) | ३६.१०७ |
| उत्तिष्ठतस्त्वजलाद्र- (सु) | ३.४४ | उत्थितामुनिदेवा (पा) | १०७.८३ | उत्पलाशं सहस्रांशं (उ) | १३३.१४ | उत्सवं परमं चक्रुर्गीतं (भू) | १८.१६ | उदग्रं चनात् (उ) | २४२.२६८ |
| उत्तिष्ठतातेनमुखानि- (सु) | ३.४२ | उत्थिताश्चान्नयः सर्व- (सु) | १६.११४ | उत्पलादिगदाशंख (पा) | ११४.३०२ | उत्सवानंद संस्कारे (सु) | ६.१८७ | उदग्रं महार्थे (सु) | ४५.१६० |
| उत्तिष्ठतंदिन संयावस्तीर्य (उ) | १३.४६ | उत्थितेनमयाष्टा (सु) | ४२.४६ | उत्पलाक्षी सहस्रादोहि- (सु) | १७.१६२ | उत्सवानांच गजायं (उ) | ८६.३८ | उदग्रस्थेनपुत्रेण (उ) | २०१.२५ |
| उत्तिष्ठतापपुरुषत्वज्य (क्रि) | २२.५५ | उत्पतिः स्वप्रकाशस्य (उ) | १७४.२ | उत्पाद्यकोशतः (उ) | ५.८६ | उत्सवानांविधि (उ) | ८३.४ | उदयादुदयंवावद (उ) | ५१.२१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६४

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------|--------|
| उदयास्तमनयावदन् (स्व) | ३०.११ | उद्दालकायमुनयेषुदी (उ) | ११६.६ | उद्भ्राजिताः पारिषदा (उ) | ७०.३४ | उद्ग्रहंती पृथु श्रोणीघन (उ) | १७८.२६ | उन्मीलनीनामपुरा (उ) | ३५.३२ |
| उदयेन सहस्रांशोहिमयं (सु) | ३६.१४ | उद्दिश्यकृष्णभर्तारं (उ) | २४७.१६ | उद्यंतं समरे वीरं दुराणं (भू) | ११४.२४ | उद्दिक्कोपिपुण्येनयैः (स्व) | ५१.३५ | उन्मीलनीमनु प्राप्य (उ) | ३५.४० |
| उदरं पदमनाभायउरः (उ) | ४५.५० | उद्दिश्यमुंक्तेयोविपः (उ) | २५३.१०१ | उद्यतायुधमित्रिंशा (सु) | ४.७७ | उद्वर्तनं चदातयं (क्रि) | १३.२ | उन्मीलनी समं (उ) | ३५.३५ |
| उदरं भरिणोलोका (उ) | १६३.३२ | उद्दिश्यवैष्णव यज्ञं (उ) | ११६.२३ | उद्यतैः प्रतिमृष्टानां (सु) | १६.८५ | उद्भासयेच्चे दुद्वास्य (पा) | ६५.१०० | उन्मीलतिनिमीलति (सु) | ४५.१३६ |
| उदरं विश्वनाथाय (उ) | ३६.११ | उद्दिश्यवैष्णवं यज्ञं (उ) | १२३.१० | उद्यत्कोटि रवि (उ) | २४५.३११ | उद्भाहय रामकृष्णोत्तम (उ) | २५०.८८ | उन्मीलद्भ्रूलता (पा) | ७४.६७ |
| उदरस्थस्यमेजातं (सु) | १३.३०० | उद्धतापुष्करेपृथ्वी सागरां (सु) | १६.६४ | उद्यमं चक्रिरेनेतुयम (क्रि) | १०.५६ | उद्भेगं च परं जग्मु- (सु) | ४.७७ | उन्मील्ययोर्वनंकांतं (उ) | १२८.२५ |
| उदस्थादुदभूतत्र ब्रह्मा (उ) | २२६.७ | उद्धरस्व हृषीकेश- (भू) | १०३.१२२ | उद्यमं तस्य वैज्ञात्वा (भू) | ३.२ | उद्भेजयति भूतानि (स्व) | ५७.७४ | उन्मुखतवधमथवावस (पा) | ११०.८६ |
| उदारात्प्रतिहृतं (सु) | ३६.८१ | उद्धरिष्यति यः सत्यैः (भू) | ३२.७२ | उद्यमं विक्रमं तस्य स (भू) | १६.४१ | उन्नत श्रोणिजघनापय- (सु) | ८.८६ | उन्मूलनान्नदीभिश्च (भू) | ६६.१६२ |
| उदासीनं प्रवक्ष्यामि (पा) | ८८.२२ | उद्धरिष्यान्निदंघीरः (उ) | २०६.४६ | उद्यमं साहसं धैर्यं (उ) | १३२.१३० | उन्नतागिरिदुर्गेषु (पा) | ६६.१३६ | उपकृत्तुं प्रियवक्तुं (च) | ३१.१७६ |
| उदासीनं प्रवक्ष्यामि तवा (भू) | १२.२२ | उद्धरोर्वीममेयात्मनि- (सु) | ३.५२ | उद्यमस्तफलस्तेतु (उ) | १६४.३२ | उन्नतागिरिदुर्गेषु धृक्षाः (भू) | १०.१६ | उपकारयुतयश्च करोति (भू) | १०५.४० |
| उदासीन व दासी (उ) | २०५.४१ | उद्धर्तुमखिलांल्लोका (उ) | १८०.५४ | उद्यम्यभुक्षलं तूष्णं (उ) | २४६.३० | उन्नतासभुजैर्वीर्यं (उ) | २२६.१०१ | उपकाररताः पृष्ठा (भू) | ७५.१६ |
| उदासीनाः स्थितायेतु (सु) | १७.८६ | उद्धाटचक्षुःश्रिता (उ) | २२१.३४ | उद्यम्यक्षुलानितदा (उ) | २४६.५५ | उन्नतजयचनिमज्जया (पा) | १०६.५७ | उपकारः सदाकार्यः (उ) | २१७.३६ |
| उदिते च यथासूर्ये (उ) | ८१.३६ | उद्धृत्स्वगुरो सर्वानि (सु) | १३.३७ | उद्यानशतसंवाधं (सु) | ३०.८४ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१५४ | उपकारेषु पुण्येषु (भू) | १३.१८ |
| उदितेभास्करयेश्चाद्- (पा) | १०५.१०० | उद्धृत्स्वमखिलान् लोका (उ) | १८०.३२ | उद्यानैश्चतवारम्यं (उ) | २४६.४२ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१५४ | उपकार्या वहिर्द्वयं (उ) | २०६.१४ |
| उदिश्यदेवताएवजुहो- (उ) | २३५.८ | उद्धृत्स्वसिवाहेण (पा) | ६४.२३ | उद्यापनं चरेद्धृत्या (पा) | ८६.४६ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१५४ | उपक्रमदिनेराम (पा) | ११५.३२ |
| उदीच्यायेमहाभागा- (उ) | १३५.३६ | उद्धृत्स्वदक्षिणम् (स्व) | ५१.१४ | उद्यापनं विष्कितुं न- (उ) | ११५.१५ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१०२ | उपक्रम्यन्तः कृत्वा (उ) | २४६.६६ |
| उदीरतामिति तथा (पा) | ११७.८४ | उद्दिभज्याः स्थावरा ज्ञेया (भू) | ६६.६ | उद्योग विपुलं चक्रुर्गन्धर्व- (सु) | ४०.१६५ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१०१ | उपगम्यान्निबन्धनां (सु) | ५.६६ |
| उदुम्बरमलाबु च (स्व) | ५६.२२ | उद्दिभन्तकुचाद्यन्यः (स्व) | २२.१५ | उद्योगीपुरुषो लोकेलभते (क्रि) | ५.६५ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१०१ | उपगृह्णान्निबन्धनां (सु) | १५.३६ |
| उदुम्बरैः कपित्थैश्च (भू) | १०२.२० | उद्दिभन्तकेतकीकीशर (उ) | १८८.२६ | उद्योतकारिणं सूर्यं (सु) | १६.११२ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१०१ | उपकृत्तुं प्रियवक्तुं (च) | ३७.६४ |
| उद्दामरसूलं च विष (उ) | ७८.६५ | उद्दिभन्तपुलकोविप्रः (उ) | १२८.२०३ | उद्योतकारिणं सूर्यं (सु) | १६.११२ | उन्मज्जयित्वा च (पा) | ११४.१०१ | उपचारैः पवित्रैश्च (भू) | ४०.२५ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| उपचारैः षोडशभिः (उ) | ६०.१७ | उपदेशं ऋषयामि (भू) | ८६.५३ | उपपापानिसर्वाणि (उ) | १२६.३० | उपवासं प्रबोधिन्ध्यायः (उ) | १२४.८ | उपविष्टं यथायोग्यं (स्व) | १.११ |
| उपचारैः षोडशभिः (उ) | १०८.२० | उपदेशं वदमुनराजः (उ) | ५५.२५ | उपप्लवं तु तस्यापि (भू) | १०३.५३ | उपवासदिने विप्र (क्रि) | २२.१४५ | उपविष्टः पवित्रोऽसौ (क्रि) | २५.१२ |
| उपचारैः षोडशभिः (उ) | १७४.५७ | उपदेशेन वदुना कित्वा (सृ) | ४३.२०३ | उपभुज्य सधर्मात्मा (उ) | २०४.१०८ | उपवासदिने विप्र पितृ (क्रि) | ११.२० | उपविष्टः सभामध्ये (उ) | २१६.५६ |
| उपचेष्टमहादैत्या- (सृ) | ४५.६८ | उपदेशो हि मूर्खाणां (उ) | १३२.५३ | उपभोगाहृत्यैव शयनाश (भू) | ६४.२० | उपवासपरो देवि निर्जने (उ) | १७२.३ | उपविष्टः सयोगीन्द्र (पा) | ८६.२१ |
| उपजीव्याहनाकन्या (उ) | ११६.२२ | उपदेष्टा श्रुतवन्ता गुरु (पा) | ६६.३६ | उपमाने तु त्कार्यं (पा) | १०४.११४ | उपवासपरो भूत्वा (स्व) | २१.३४ | उपविष्टस्त्वमेकमिन्द्र- (सृ) | २०.२० |
| उपजीव्याहनाकन्या (स्व) | २६.३० | उपद्रवं समारभे प्रजाः (भू) | ११८.१३ | उपये मे दुराधर्मा- (उ) | १७६.२४ | उपवासपरो भूत्वा रात्रि- (उ) | ५६.१६ | उपविष्टा ततस्तस्य (सृ) | ४४.१३१ |
| उपतस्थुः सुरगणान् (सृ) | ४१.३३ | उपद्रवायातदोषाः (भू) | ८१.४२ | उपये मे नृपसुतां (उ) | २४८.३ | उपवास प्रभावेण (क्रि) | २३.४१ | उपविष्टे नृकाकुस्थे (सृ) | ३८.८४ |
| उपतस्थे ततो विद्वान् (उ) | १७६.१७ | उपधार्म्यमतिराज (पा) | ६६.३६ | उपये मे पुनश्चैव (सृ) | ३.२०५ | उपवास ब्राह्मण श्रेष्ठ (क्रि) | २५.१५ | उपविष्टीकया स्तन (पा) | ३७.१६ |
| उपतस्थैरनियुतः (सृ) | ४३.२०२ | उपनयने नियोगः (सृ) | ४६.१४० | उपये मे विधानेन (उ) | २३८.१० | उपवासस्य नक्तस्य (उ) | ३८.१६ | उपविष्टा ततस्तस्यो (उ) | १६६.३० |
| उपतापत्रयहरं (उ) | १६२.८ | उपनीतस्तुतोये (उ) | २४१.१५ | उपये मे विधानेन (उ) | २४७.१२ | उपवासस्य नियमः (उ) | ६६.३० | उपविष्टी ततो हृष्टवा (पा) | ८३.२३ |
| उपतिष्ठति तिष्ठन्तं (भू) | ६४.२२ | उपनीय मुनिर्वंदसां- (पा) | ५६.८१ | उपये मे विवाहेन (उ) | ४.४७ | उपवासादिना तेन (उ) | ७८.११ | उपवीतं तु दातव्यं (उ) | ३४.६५ |
| उपतिष्ठति ब्रह्माणं (सृ) | १८.६६ | उपनीय विधातेन (उ) | २२४.३५ | उपये मे विवाहेन रम्यां- (पा) | ३६.१६ | उपवासा समर्थतां (उ) | ६६.१ | उपवीतं द्विजं कृत्वा (पा) | ११७.१०० |
| उपतिष्ठति राजेन्द्र (सृ) | १८.१२२ | उपनीयाष्टमेव वर्तस्मै (पा) | ७२.१३१ | उपये मे सुतां पुण्यां (भू) | ७६.१३ | उपवासा सधर्मातां (सृ) | २५.२ | उपवीतादिकं सर्वं (उ) | २०.१६ |
| उपत्यका सुरवे (उ) | १२५.१०८ | उपनृत्यति देवेशं (सृ) | १८.१२ | उपरिस्मितां वैः (उ) | १८.१३२ | उपवासाभिधेनित्यक- (सृ) | २२.१२८ | उपवीता निवासां (उ) | २५.३८ |
| उपदानवीमयस्यासीत्- (सृ) | ६.५४ | उपन्यासं द्विजातीनां (उ) | १८०.७६ | उपर्युपरि तां वै नुं (उ) | २०३.१५ | उपवासं पितृ श्राद्धे (क्रि) | ११.२२ | उपवेश्य नु शय्यायां (सृ) | १०.१४ |
| उपदिष्टोऽस्मि भवता (सृ) | ३०.१६३ | उपपन्नमिति ज्ञात्वा (सृ) | ३४.२४५ | उपर्युपरि विन्यस्तनिलये- (पा) | १५.३१ | उपवासं पितृ श्राद्धे (क्रि) | ११.२२ | उपवेश्यासने दत्ते (उ) | २०१.२६ |
| उपदिश्यहरेर्भक्तिमार्गं (उ) | २०७.६८ | उपपातककोट्यानु- (सृ) | ४६.१४४ | उपलब्धुमशयतरे सुरैः (स्व) | १५.५८ | उपवासं पितृ श्राद्धे (क्रि) | ११.२२ | उपवेश्यासने पुण्ये (भू) | ६७.३२ |
| उपदुदावसद्वीपा पूर्वं (उ) | १७६.३४ | उपपातकरो मार्गं (क्रि) | २२.१२ | उपवासं च नक्तं (उ) | ३८.१०१ | उपवासं पितृ श्राद्धे (क्रि) | ११.२२ | उपशांतं शिवं चैव (स्व) | ३७.१७ |
| उपदेश्ययनं तात्मा (सृ) | २३.८३ | उपपातक सर्वाणि (स्व) | २६.३५ | उपवासं च नक्तं (उ) | ३८.१०१ | उपवासं पितृ श्राद्धे (क्रि) | ११.२२ | उपशोभा विद्वानि (सृ) | ३६.५४ |
| उपदेशं च मे तुष्टः (सृ) | ३४.४ | उपपातकानिसर्वाणि (उ) | १३१.१८ | उपवासं प्रबोधि न्यायं (उ) | ६१.१२ | उपविश्यासने दिव्ये (पा) | ८३.५४ | उपश्रुतिपुयद्वचना- (पा) | १०४.७६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| उपसंगृह्यत्पादौ (स्व) | ५३.४३ | उपाकर्मणिहोमांते (स्व) | ५३.८१ | उपायज्ञाः सुखीराश्च (भू) | १०.६ | उपास्यपश्चिमांसंध्या (उ) | १२४.५६ | उपोष्यऋषयः सर्वजप्तं (उ) | २३२.८ |
| उपसृष्ययत्वात् (सृ) | १८.३४३ | उपाकर्मैष्टिकरुचिरः (सृ) | १६.६१ | उपायचित्तयामास तस्यैव (भू) | २४.३४ | उपास्य पुष्पं लब्ध्वा (स्व) | ३६.६२ | उपोष्य जागृयाद्विष्णोः (त्र) | १५.४ |
| उपसेवेतविप्रेन्द्र (उ) | ६१.३६ | उपाध्यायतदामूर्ध्नि (उ) | २४२.१३२ | उपायतेनदिव्यामिप्रेत (या) | ६८.६५ | उपास्यभेदान्मंत्रां (उ) | २२४.७ | उपोष्यदद्यात्क्रमशः (सृ) | २१.२५३ |
| उपस्करवतीर्ध- (उ) | २०४.६ | उपादानं नामगंध पुष्प (पा) | ७८.१२ | उपायभूतं ब्रह्मैव (उ) | २५३.१३७ | उपासामानीसततं (सृ) | ४.८४ | उपोष्यद्वादशरात्रं (स्व) | ३६.२६ |
| उपस्थवेगसंहते- (पा) | ६६.६५ | उपाध्यायविशालाक्षि (उ) | १८४.१२ | उपायः सृज्यतां ब्रह्मान् (त्र) | १३.१७ | उपायसधन्याविधि (सृ) | २३.३७ | उपोष्यपंचाहम (पा) | ११७.२६ |
| उपस्थानंससंन्यस्या (पा) | ३६.३८ | उपाधिरहिताये च (उ) | १५१.८२ | उपायाश्चेतिचत्वारः (क्रि) | ५.१७८ | उपाहारैररुं कंच (उ) | १५१.५६ | उपोष्य रजनीमेकांतत्र (स्व) | २०.६५ |
| उपस्पृशतियोमाद्ये- (उ) | १२७.३७ | उपाध्यायः पिताज्येष्ठो (च) | ५१.३० | उपायेनापि पुण्येन (भू) | ११८.४० | उपाहृत्यफलाहारं (उ) | १७६.४६ | उपोष्य रजनीमेकांति यतो (स्व) | २१.४२ |
| उपस्पृशततोमित्यम् (स्व) | ५२.४७ | उपानच्छत्रकटकशिबि (भू) | ६७.१०० | उपायैश्च महाभाग (भू) | २८.११५ | उपेक्ष्य सर्वभूतानां (सृ) | १५.३६२ | उपोष्यरजनीमेकामग्नि (स्व) | ३८.५२ |
| उपस्पृशतत्रिषवणं (स्व) | ५८.२८ | उपानद्वृद्धादस्य (सृ) | १६.२५५ | उपायोऽन्यश्चित्तनीयो (उ) | १६७.५१ | उपेक्ष्य श्रेयसेवाक्यं (सृ) | १३.३७० | उपोष्यरजनीमेकामाग्नि (स्व) | २०.२१ |
| उपस्पृशतस्विधानां (स्व) | ३२.१७ | उपानद्वृद्धपादस्तु (उ) | १०५.१२ | उपार्जितं धनं सर्वस्व (क्रि) | २०.४० | उपेक्ष्य शिशोःपुष्पाभ्यां (सृ) | ४१.१६८ | उपोष्ययोगमुत्तमश्च (स्व) | ४३.४४ |
| उपस्पृश्यजलतस्य (पा) | ७४.६१ | उपानद वस्त्रमन्त्रानि (स्व) | ३१.१७० | उपाजितास्त्वयायेये (क्रि) | ६.७ | उपेत्यगणिकादत्तं (उ) | १७५.४४ | उपोष्यनम्यकवचिवद (उ) | ५१.४२ |
| उपस्पृश्ययथान्या- (उ) | २४५.२८४ | उपानहं चातपत्रं गंगा (क्रि) | ६.१५ | उपासतगिरिभूतक्रितवः (सृ) | ४३.४०१ | उपेत्यचित्रयं कानान् (स्व) | ६०.२२ | उपोष्यद्वादशीपुर्णा (त्र) | १५.३७ |
| उपस्पृष्टंभवेत्तेन (सृ) | १६.४१ | उपानहावापत्रं (उ) | ११८.३३ | उपासतेदिते पुत्राः (सृ) | ४५.७२ | उपेत्यनरकानुषोरा (उ) | १७६.११ | उपोष्यैहिकगन्धार्गि (स्व) | ३१.१६५ |
| उपस्पृष्टंभवेत्तेन (सृ) | ३४.२२८ | उपानहोपिच्छत्रं च (उ) | ३४.७५ | उपासते महात्मानं (स्व) | ३४.२१ | उपेत्यत्रिनयेनामुमुक्षु (उ) | १७६.१६ | उपोष्यैहिकगन्धार्गि (उ) | १७.३२ |
| उपस्थितं महाराज (स्व) | १०.२१ | उपानहो च दातव्ये (सृ) | ३४.३०८ | उपासते महात्मानं (सृ) | १८.५७ | उपोषितस्वनः कृत्वा (उ) | ३१.३५ | उभयं पञ्चमासः दिनं (स्व) | ३१.१५४ |
| उपहतांगगण व्याख्या (पा) | ११७.२२० | उपानहो प्रदातव्ये (भू) | ४०.४५ | उपासते महात्मानं (सृ) | ४५.७८ | उपोषितःतृतीयादान (सृ) | १८.१६३ | उभयः पञ्चमासः (उ) | ३८.१०८ |
| उपहारप्रदानाय शब्दवा (पा) | ११०.३३ | उपानहो प्रदातव्यं (उ) | ६५.१५ | उपासते महात्मानं (सृ) | ४५.३० | उपोषितान्गन्धार्गि (उ) | ५१.३१ | उभयोरंशं माग्नि (भू) | ८३.३६ |
| उपहारार्पणं कर्तुं नावत् (उ) | १०६.३ | उपानहो योददातिपात्र (उ) | ५१.५४ | उपासते महात्मानं (सृ) | ५१.१७ | उपोषितान्गन्धार्गि (उ) | ५१.३० | उभयोरंशं माग्नि (त्र) | २१.७ |
| उपहारैरनारयेतु (सृ) | ३१.१३२ | उपानहो वातपत्रयो (त्र) | २४.२४ | उपासते महात्मानं (सृ) | ३५.१७ | उपोषितान्गन्धार्गि (उ) | २५.३१ | उभयोरंशं माग्नि (क्रि) | ३.५१ |
| उपहृतेनागतेन चाहूतेषु (सृ) | १७.१३३ | उपायज्ञाः सदाबुद्ध्या (भू) | १०६.१८ | उपासते महात्मानं (सृ) | ३५.१७ | उपोषितान्गन्धार्गि (उ) | २५.३१ | | |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| उभयोर्वीरयोर्द्वन्द्वं (भू) | ११५.१४ | उमापतेरवेषापिनभेदः (सु) | २५.६ | उर्वपादौतपोधोरं (पा) | ७२.५६ | उवाचकिं करोमीति (पा) | ११.१४ | उवाचदानवश्रेष्ठो (सु) | ४२.६० |
| उभयोर्हिनरः स्नात्वा (स्व) | २७.४६ | उपापतेरुभापाद (उ) | २०१.६६ | उर्वेन प्रस्रियता तस्य (स्व) | १५.७० | उवाचकृपायादेवी तस्य (पा) | ७४.३१ | उवाचदानवश्रेष्ठं तं (भू) | २०३.३१ |
| उभयोः संगमोयत्र (उ) | ८२.१३ | उमापिप्राप्तसंकल्पा (सु) | ४४.६४ | उर्वशीतीर्थं मासाद्य (स्व) | ३८.६६ | उवाचगच्छवत्स- (पा) | ७४.४७ | उवाचदीनदीनं च (पा) | ८.६ |
| उभयोः संगमोयत्र (उ) | १२०.८६ | उमाप्रतारितातेन (उ) | १४.१८ | उर्वशीपुलिनरम्ये (स्व) | ४३.३५ | उवाचचनजानातिबालो- (उ) | २१५.४६ | उवाच दीनया वाचा- (सु) | १०.६२ |
| उभयोः संध्ययानित्यम् (स्व) | ५४.७२ | उमामहेश संवादे (उ) | १.१६ | उर्वशी सद्गुणीनां तु (स्व) | ४३.३८ | उवाच चपितापुत्रं (उ) | २१५.३४ | उवाचदूतं दुष्टात्मा (सु) | ४४.६६ |
| उभयोः संतिथीजायं (भू) | ८७.३१ | उमामहेश्वरं राजन् (उ) | २५४.६६ | उर्वस्तु तपसाविष्टो (सु) | ४१.६६ | उवाच च प्रमन्नोऽस्मि (भू) | ३६.६ | उवाचदेवी ब्रह्माणं (सु) | १७.१३४ |
| उभाभ्यामपि नत्वापं (भू) | ४७.५६ | उमामहेश्वरस्यार्चाम् (सु) | २५.५ | उर्वस्तु तपसाविष्टो (सु) | ४१.६८ | उवाच च प्रिया रूपं (पा) | ७२.७५ | उवाचदेवीसम्पन्नं गिरा- (सु) | ४३.४८४ |
| उभाभ्यांवेदतंत्राभ्यां (पा) | ६५.६० | उमाया. प्रीतयेहैमंत (सु) | २२.१६० | उर्वचनीरमयोगान्- (उ) | १३२.६४ | उवाच च महाभागं (उ) | २१२.२३ | उवाचदेवां भविता (सु) | ६.३६ |
| उभावप्यनुकम्पी (उ) | १५१.८६ | उमायैयत्पुराप्रोक्तं (उ) | ७१.७६ | उर्वीशुश्चाततद्भागो- (क्रि) | १६.३४ | उवाच च महाराजमार्ये (उ) | २२१.२ | उवाच दैत्य राजेन्द्र (उ) | २४०.३२ |
| उभौतौलोकविद्ययातौ (उ) | २३७.१२ | उमारूपं रमयिषु (सु) | ४४.६० | उर्वीशुश्चिन्तयामास (क्रि) | १६.२७ | उवाच च गयम्मात्मा- (उ) | २१६.२१ | उवाच धनुर्बुध- (उ) | २०४.५६ |
| उभौयनुर्बरीवीरा (पा) | ६१.३१ | उमालोकं व सेत्कल्पं नतो (सु) | २१.१३४ | उर्वीशुश्चिन्तयामास (क्रि) | १६.२७ | उवाच च हनुमंतं (पा) | ६४.१२ | उवाच श्रम्यदेशं- (पा) | ५३.२४ |
| उभौ परस्परं मैत्री (उ) | १८८.६ | उमासहायोभगवान् रमते (स्व) | ३.४३ | उलूकं चक्रवाकं च (स्व) | ५६.३३ | उवाच तं देवदूतं मधुरं (स्व) | ३१.२० | उवाचनं दिनं संभु (उ) | ११.५२ |
| उभौप्रेमविभिन्ना (पा) | ३७.१५ | उमेतिचापलपुत्रिव्ययौक्ता (सु) | ४३.२८८ | उलूकः शोभते राजन् (सु) | ३७.१०५ | उवाच तं देवदूतं मधुरं (स्व) | ३१.२० | उवाचनृपतेः श्रुत्वा (त्र) | ५.२४ |
| उभौवाणुविभिन्ना (पा) | २६.३४ | उमैकपरापिपुत्रि- (सु) | ६.६ | उलूकस्त्ववधूद्विद्रामं (सु) | ३७.६६ | उवाच तत्कथं विप्रदृश्ये- (पा) | २१.१२ | उवाच पथगन्धासा- (क्रि) | ८.३६ |
| उभौसमरसंरुद्धा (पा) | ४१.१२ | उमैकपरापिपुत्रि- (सु) | ६.६ | उलूकानां रुचिकरो- (पा) | ५८.१२ | उवाच तनयं ब्रह्म पुलस्त्य (सु) | २.६३ | उवाच परमं गुह्यं (उ) | २३५.१७ |
| उमयातुपुत्रोदेवि (उ) | २३.४० | उमैकपरापिपुत्रि- (सु) | ६.६ | उलूको हस्ते राजस्त्वत् (सु) | ३७.७६ | उवाच तनयं ब्रह्म पुलस्त्य (सु) | २.६३ | उवाच परमप्रीतस्ता- (उ) | २३१.२२ |
| उमवारक्षसासाहंम् (त्र) | १३.२१ | उरसाताज्यामासगरुड (सु) | ४१.२८८ | उल्काचक्रब्रह्मदंड (पा) | ११६.८७ | उवाच तान् द्विजान् (सु) | १७.३५ | उवाच परमप्रीतोवाप- (सु) | ३७.१३६ |
| उमयासंहितो रुद्रस्तेषां (स्व) | १८.११० | उरस्तु विश्वसृक्पातु- (सु) | ३४.१२५ | उल्कादहेतुफलं सर्वं (पा) | ११६.६० | उवाच तान् द्विजान् (सु) | १७.३५ | उवाच परमप्रीतोवाप- (सु) | ३७.१३६ |
| उमादत्तवरांचापिष्टवा (पा) | ११२.६१ | उरोदेशमधारेण गुह्यं (पा) | १०८.५८ | उल्लंघितमहास्त्रोपायु (उ) | १२५.१४ | उवाच तान् द्विजान् (सु) | १७.३५ | उवाच परमप्रीतोवाप- (सु) | ३७.१३६ |
| उमादत्तवरांचापिष्टवा (पा) | ११२.६१ | उद्वेषविस्तीर्ण- (उ) | ३२.३१ | उवाच कथयं विप्रमादेशो (भू) | २४.६ | उवाच तान् द्विजान् (सु) | १७.३५ | उवाच परमप्रीतोवाप- (सु) | ३७.१३६ |
| उमादत्तानुहस्यकस्य (सु) | १७.६३ | उद्वेषविस्तीर्ण- (उ) | ३२.३१ | उवाचकांतश्चावेगि- (पा) | ५५.६१ | उवाच तान् द्विजान् (सु) | १७.३५ | उवाच परमप्रीतोवाप- (सु) | ३७.१३६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६८

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|----------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|--------|
| उवाच पितरं तत्र (उ) | ७१.३० | उवाच मेष्ठमुदिनं (पा) | ६.२५ | उवाच वीरपश्यत्वं मम (पा) | २३.७३ | उवाचान्नं प्रदातव्यं (उ) | ११७.१४० | उषस्युपसिचोत्था-(उ) | १५१.२२ |
| उवाच पुत्रका यूयं (भू) | ४२.६२ | उवाचरविभक्ता (उ) | १५२.६ | उवाचवीरोभद्राहं हृत्वा-(पा) | ५०.५ | उवाचाष्ट भुजादेवी (उ) | २४५.५५ | उपापतिविश्वकेतु-(उ) | ७१.२७२ |
| उवाच पुत्रं वर्मात्मा (भू) | ६८.७ | उवाचराघवं वाक्यं (सू) | ३८.२१ | उवाचश्रेयसेहेतोः (उ) | १२५.४७ | उवाचेति समाधी (उ) | २०५.३२ | उपितस्तत्र वर्षतु-(उ) | २३१.४ |
| उवाच पुष्करं यागि (सू) | १७.३६ | उवाच राघवं शान्तं (पा) | ११७.११७ | उवाचश्वपगाह्वं च (पा) | ११६.६६ | उवाचेदंततो देवी-(उ) | १५१.८६ | उषित्वातत्रतांरात्रि (उ) | १८५.२६ |
| उवाच पुष्कलं वीरं (पा) | ४१.१८ | उवाच राघव सीता (उ) | २४२.३२६ | उवाच ऋषिस्तुष्टः (उ) | ४४.१८ | उवाचेदं पृथु वैश्वं (भू) | २६.१४ | उषित्वा राजनीमेकाग्नि-(स्व) | २६.६७ |
| उवाच पुष्कलस्तं-(पा) | २४.२२ | उवाच राघवो वाक्यं (सू) | ३५.७० | उवाच सतदादेवं पद्माक्षं-(गु) | ८.८० | उवाचैकाग्रपुण्यं ते मया (भू) | ५२.४२ | उषित्वा रात्रिमे- (उ) | २०४.६३ |
| उवाच प्रणतरामं (सू) | ३८.१७५ | उवाचरामंराजा (पा) | ११७.७६ | उवाच संततिस्तं (उ) | २०२.४७ | उवासकतिचिन्मा-(उ) | २०४.४१ | उषित्वा द्वादशवर्षाणि (स्व) | ११.३२ |
| उवाच प्रवहन्त्याणि (क्रि) | ५.१६८ | उवाच रुद्रस्तां देवीं (सू) | ३१.१०१ | उवाच सा तु कुत्रास्ति (भू) | ११८.३७ | उवास चिरमेकाकी (उ) | ८०.३८ | उषणात्परः प्रावरकः (स्व) | ६.२२ |
| उवाच प्रसूतोवाक्यं (उ) | १५१.७५ | उवाच वचनं कोकामुखं (सू) | १६.६७ | उवाच सा तु कुत्रास्ति (भू) | ४.१६ | उवासदण्डकारण्ये (उ) | २४२.२५२ | उषणोदकं परित्यज्य (उ) | ६४.३७ |
| उवाच प्रहसन्वाणीं (क्रि) | ४.३७ | उवाच वचनं तत्र (उ) | १४१.३६ | उवाचसारथितत्राप्रापया-(पा) | २३.४२ | उवास परमप्रीतोदेव (सू) | १६.३० | उषणोदकैश्चसंतापं-(पा) | ६७.४० |
| उवाच प्राञ्जलिवर्क्यं (सू) | ३५.६१ | उवाच वचनं देवि (ब्र) | ७.३६ | उवाचसुप्रसन्नात्मा-(उ) | ४४.२२ | उवास प्रमुदायुक्ता (उ) | १२६.५० | उषणोदकैश्चसंतापं-(भू) | ३६.६८ |
| उवाच भगवांस्तुष्ट-(सू) | १६.१८६ | उवाच वचनं विष्णु- (सू) | १८.६ | उवाच सुमति राजाशत्रुघ्न (पा) | ३०.७ | उवासवत्सरं कृष्णः (स्व) | ३६.३ | उषणोपवघ्ननस्तन्य-(उ) | २१६.३६ |
| उवाच भद्रगच्छामि (पा) | ११.८१ | उवाच वचनं स्निग्धं (भू) | १०२.७० | उवाच सुरथं भूपं (पा) | ५२.७७ | उवाससरस्तीरेगुर (उ) | १२५.३७ | उषणगमे द्विज श्रेष्ठ (क्रि) | १३.६ |
| उवाचभाग्यमतुलंयं (पा) | २१.३६ | उवाच वाक्यं स्निग्धेव (भू) | १०३.४६ | उवाच सूनृतां वाचं (स्व) | २३.५ | उवासमुचिरं कायं (स्व) | २३.३३ | उष्यतां चेद्भगवः (सू) | ३६.२५ |
| उवाचभुक्तं चान्नं च (ब्र) | २२.३१ | उवाच वाचाशैलेन्द्र (सू) | ४३.२८३ | उवाच सूनृतां वाचं-(उ) | १२८.१२१ | उवासास्य प्रसादेन नीर्यं (उ) | २१६.६ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |
| उवाचमतिमात्वीरः (पा) | ११.५६ | उवाच वानरो नास्ति(पा) | ११४.२२६ | उवाच सूनृतां वाचं-(उ) | १२८.१२१ | उशनाथ भरद्वाजो (नृ) | १६.२०८ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |
| उवाचमधुरं वाक्यं (पा) | ११७.१८२ | उवाच विधि वाक्यं (सू) | ३५.३६ | उवाचसेनाधिपतिरोपं (पा) | २५.११ | उशान्तस्त्वेतितंदर्भं (सू) | ६.१५१ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |
| उवाचपत्रि मुख्यं स (पा) | ३८.११ | उवाच विष्णु लोकं (भू) | ८३.३४ | उवाचस्निग्धगंभीर (सू) | ४६.४६ | उशान्तस्त्वेतितंदर्भं (सू) | ६.१५१ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |
| उवाच मधुरालापं (भू) | ७७.५५ | उवाच वीरकं मातात्वं (सू) | ४४.३० | उवाच हनुमास्तं (पा) | ४५.३० | उशान्तस्त्वेतितंदर्भं (सू) | ६.१५१ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |
| उवाच महात्मानं धर्मराज(स्व) | १०.१० | उवाच वीर को देवं (सू) | ४३.३८६ | उवाचादिव सकाशान् (सू) | ४३.३०६ | उशान्तस्त्वेतितंदर्भं (सू) | ६.१५१ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |
| | | | | उवाचानाविज्ञं वाक्य-(सू) | ४३.२ | उशान्तस्त्वेतितंदर्भं (सू) | ६.१५१ | उष्यंकां गजनी तत्र (स्व) | २८.३२ |

ॐ

ॐ ग्रन्थेर्वाहं पुंमि (सू) ४६.१४५ |

ॐ ग्रन्थ श्री वासुदेवा-(भू) ६८.४० |

ॐ कारं पितृनीर्थं च (उ) १३५.६७ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| ॐकारं पितृ तीर्थं तु (सृ) | ११.२० | ॐ स्वः शिखार्यतत्स-(सृ) | ४६.१८१ | ऊचुश्चकृतकृत्याः (उ) | ७१.८१ | उरुषीभाग्यनायाय-(सृ) | २३.२६ | ऊर्ध्वं पुंड्रविहीनस्तु (उ) | २२५.१३ |
| ॐकारः प्रणवं ब्रह्म (उ) | २२६.१६ | ॐ ह्रीं ह्रीं रामायनमः (उ) | ८५.२१ | ऊचुश्चपरम प्रीताः (सृ) | ४३.३६६ | ऊरीशयानं रात्र्यायाः (पा) | ७२.१४२ | ऊर्ध्वं पुंड्रस्य मध्ये तु (उ) | २२५.२ |
| ॐकारस्तत्परं ब्रह्म (स्व) | ५३.५६ | ऊचतुश्चस्वतनयं (उ) | २११.४६ | ऊचुश्च वाहि नो नित्यं (भू) | ११८.१५ | ऊर्जमासितथा देवि (उ) | २५३.१६० | ऊर्ध्वं पुंड्रस्यमाहात्म्यं (उ) | २२५.१ |
| ॐकाराय नमस्तुभ्यं (उ) | २३७.३३ | ऊचतुस्तं महावीरमिन्द्र-(भू) | ५८.१८ | ऊचुश्चभोद्विज श्रेष्ठ (उ) | २०८.५६ | ऊर्जमासितपो-(पा) | ६०.४५ | ऊर्ध्वं गतिशिवयत्स्या-(सृ) | ३६.५६ |
| ॐ चुः पति कमलमध्य (पा) | ३६.२३ | ऊचतुस्तो तदा ते तु (भू) | ६३.३३ | ऊचुश्चरामलोकेशं (उ) | १६८.८१ | ऊर्जमासितपो-(पा) | ८६.३७ | ऊर्ध्वं स्थपंच लोकानां (पा) | ११४.३७७ |
| ॐ नमः कमलनाभाय (उ) | ६३.४ | ऊचिरे तं तदा देवा (उ) | १५५.१४ | ऊचुः सर्वतदा विप्रा (उ) | १५१.५३ | ऊर्जमासिमहाभागी (उ) | ११८.३ | ऊर्ध्वं तु सीमनि विजा-(उ) | २२७.५५ |
| ॐ नमस्त्यादि मंत्रेण (पा) | ११५.३१ | ऊचुः खादामइत्यन्येते-(सृ) | ३.१०० | ऊचुस्तज्जातयः सर्वे (ब्र) | २६.२८ | ऊर्जस्नानपराम्प्रातः (ब्र) | २०.२४ | ऊर्ध्वं पुंड्रमृदाशुभ्रम् (ब्र) | २१.१३ |
| ॐ नमोऽस्यकृष्णाष्टो-(क्रि) | १७.१०३ | ऊचुः पुरंदरं चेद वाक्य (सृ) | १६.३६४ | ऊचुस्ते करुणां वाचं (पा) | ३०.३७ | ऊर्ध्वं केशान्स रचता-(पा) | ६८.४७ | ऊर्ध्वं पुंड्रविहीनस्तु (ब्र) | २१.११ |
| ॐ नमो देवदेवे (उ) | ३८.५६ | ऊचुः प्रांजलयः सर्वे (सृ) | १५.५६ | ऊचुस्ते कल्पिता वृत्ति (सृ) | १०.६४ | ऊर्ध्वं कश्च नमस्ते (सृ) | १४.१२४ | ऊर्ध्वं पुंड्रस्यमध्ये-(उ) | २२५.२५ |
| ॐ नमो देव देवाय-(पा) | ११४.३७१ | ऊचुः प्रांजलयः सर्वे (उ) | १२४.६० | ऊचुस्ते जनकं राजं (पा) | ३०.७५ | ऊर्ध्वं पुंड्रततः कृपादि (पा) | ८२.१४ | ऊर्ध्वं वातुरहं वचि (स्व) | ६१.३७ |
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय(उ) | ८३.२४ | ऊचुः प्रांजलयः सर्वे-(उ) | २३२.६२ | ऊचुस्ते मुनयः सर्वे गुणान् (भू) | २८.७६ | ऊर्ध्वं पुंड्रसर्वोपां-(उ) | २२५.१७ | ऊर्ध्वं मुंजकृष्णां (उ) | १२६.३१ |
| ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय(उ) | ७८.६६ | ऊचुः प्रांजलयो देवीं (उ) | २३८.१२८ | ऊचुस्ते वै व्रतं श्रेष्ठं (ब्र) | २३.३१ | ऊर्ध्वं पुंड्रधरं हृष्टवा-(उ) | २२५.७ | ऊर्ध्वं शिवपुराज्येयं (भू) | ६६.३७ |
| ॐ नमो विष्णवेत्युक्त्वा (पा) | २१.३५ | ऊचुः पियतरं वाक्यं (पा) | १०४.१५ | ऊचुस्तेसौ पुराराजा (ब्र) | २२.३५ | ऊर्ध्वं पुंड्रधरं विप्रय (उ) | २२५.८ | ऊर्ध्वं प्रोद्भूतलांगलो (सृ) | ४४.८० |
| ॐ भुवः पादाम्याम (सृ) | ४६.१८८ | ऊचुर्ब्रह्मयंस्तेतु (सृ) | ४१.७४ | ऊचे च पितरं धीमान् (उ) | २००.५८ | ऊर्ध्वं पुंड्रधरोद्विप्रो-(उ) | २२५.१४ | ऊर्ध्वं प्रोद्भूतलांगलो (सृ) | १२.१२१ |
| ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः (सृ) | ४६.१८३ | ऊचुर्मुनिवराः प्रीताः (सृ) | ४३.३५३ | ऊचे गिशाचः स तदा तां (उ) | ४३.३२ | ऊर्ध्वं पुंड्रधरोयस्तु (उ) | २२५.६ | ऊशीनरशीवेराज-(उ) | २०६.२२ |
| ॐ रामरक्षास्तोत्रस्य (उ) | ७३.१ | ऊचुरस्माकमज्ञानं (पा) | १०४.१६२ | ऊनयोऽश्ववर्षाब्दे (उ) | २२६.८७ | ऊर्ध्वं पुंड्रधरो विप्र (उ) | २२५.५ | ऊपनुस्तावुभौत-(उ) | २०४.१२० |
| ॐ वासुदेवः परंब्रह्म (उ) | ७१.१२१ | ऊचुर्नसिष्ठप्रमुखा (सृ) | ७.७ | ऊनं वर्षं शते चाख्याद-(भू) | २२६.१८ | ऊर्ध्वं पुंड्रमृदाकार्यं (उ) | २२५.१६ | ऊमपाः फनपाश्चैव (सृ) | ४३.४७१ |
| ॐ वासुदेवाय विष्णवे (उ) | ७१.११६ | ऊचुर्वाक्यमिदं तास्तु (क्रि) | ४.४८ | ऊरुभ्यां विमलाम्यां (पा) | ३५.६८ | ऊर्ध्वं पुंड्रमृदाकार्यं (उ) | २२५.१६ | ऊक्षः प्रसेनं च तथा (सृ) | १३.७७ |
| ॐ श्री विष्णवे नमः (उ) | १.१ | ऊचुर्वाक्यमिदं ऋद्धा-(क्रि) | १५.३४ | ऊरुमांगल्यकारिण्यै-(सृ) | २२.७४ | ऊर्ध्वं पुंड्रमृदाकार्यं (उ) | २२५.१६ | ऊक्षः प्रसेनं च तथा (सृ) | १३.७७ |
| ॐ स्वच्छं चंद्रावदातकं (सृ) | १.१ | ऊचुर्वाक्यं तथा ऋद्धाः (क्रि) | ४.४० | ऊरुवेगप्रमथितैः शृंग-(सृ) | ४१.२२३ | ऊर्ध्वं पुंड्रविहीनस्तु-(उ) | २२५.११ | ऊक्षः प्रसेनं च तथा (सृ) | १३.७७ |



| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------|--------|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| ऋक्षत्रं नमिऋष्यनगरं (सृ) | ३३.५६ | ऋते ते आयुषुनेण (भू) | १०३.८८ | ऋषयोमानवाः शार्पणं-(सृ) | ४५.१२ | ऋषिरुग्रश्रवाश्चैव (उ) | १३५.४३ | ऋष्टिभिर्भिविषयालैश्च (क्रि) | ७.८८ |
| ऋक्षवानरक्षोभि (उ) | २४२.३६८ | ऋते ते स्वानिमांसाणि-(सृ) | ३६.९७ | ऋषयोवेदमंत्रैस्तु (भू) | १०५.५७ | ऋषिसमभिचक्राम-(सृ) | ३७.१३६ | ऋष्यमुकोगिरिवरे (सृ) | ३८.३० |
| ऋक्षवानरसंघातै (पा) | २४२.३४७ | ऋतेवनस्याश्रमाच्च-(उ) | २३५.४ | ऋषयोह्यवृत्तं (सृ) | २.५४ | ऋषिस्त्रोगतुरिद्रस्य (उ) | १२७.६४ | ए | |
| ऋग्यजुः सामचाथत्रै (उ) | २२८.२२ | ऋतेवैया मुनंतोयं (स्व) | २६.७ | ऋषिणा परमं गुह्यम् (स्व) | ४६.१५ | ऋषीणां कदनं कृत्वा (सृ) | ४१.२६६ | एकनिपातितं तस्य (स्व) | १५.६८ |
| ऋग्यजुः सामाथर्वा-(उ) | २२८.६१ | ऋते सुतभृणीलोके (उ) | २०१.२२ | ऋषि तीर्थं ततो गच्छेत् (स्व) | १८.२२ | ऋषीणां च वसिष्ठं च (सृ) | ३४.८५ | एकनिपुण्यसर्व- (पा) | ११६.२१४ |
| ऋणं न दृश्यते राजन् (उ) | ८.२४ | ऋत्विग्भिश्चैव होतव्यं (सृ) | २७.२२ | ऋषि तीर्थं ततो गच्छे- (स्व) | १८.२७ | ऋषीणां चैव स्रष्टारं-(सृ) | १८.३८ | एकनिहृदये ग्रामेयः (सृ) | ४३.४४१ |
| ऋण प्रमोचनं नाम तीर्थं (स्व) | ४४.२१ | ऋत्विजो ब्राह्मणः (उ) | २००.२६ | ऋषिदेवा सुरनरैः (सृ) | १८.३३३ | ऋषीणां दर्शनात् (भू) | १२३.६१ | एकपुत्राणां रूपं वै तत्र (स्व) | ६२.२ |
| ऋण संबंधिनः केचित् (भू) | ११.३० | ऋत्विर्ब्रह्मणी भार्या (सृ) | १६.११८ | ऋषिपुत्रस्य रामस्य (भू) | ६६.१६७ | ऋषीणां नामधेयानि-(सृ) | ३.१२२ | एकमणिमयं तत्र तत्रैक (स्व) | ५.६ |
| ऋण संबंधिनः पुत्रं (भू) | १२.१ | ऋषभं तीर्थमासाद्य (स्व) | ३६.१० | ऋषिभिः क्रतवः (स्व) | ११.३३ | ऋषीणां परमं गुह्यमिदं (स्व) | ११.१७ | एकं वनं नरं तत्र गंध (पा) | ११४.३८३ |
| ऋण संबंधिनः पुत्रं (पा) | ८८.१ | ऋषभं पर्वतं गत्वा (स्व) | ३६.१६ | ऋषिभिः क्रतवः प्रोक्ता (स्व) | ४६.१२ | ऋषीणां परमं गुह्यमिदं (सृ) | १६.११ | एकविजया मासा (उ) | ८८.१३ |
| ऋणसंबंधिनः पुत्रान् (भू) | ११.४६ | ऋषभः काशिराजस्य (सृ) | १३.६८ | ऋषिभिर्देवगंधर्वै (सृ) | १२.११ | ऋषीणां पुण्यसंसर्गात्-(भू) | ३६.२ | एकं वै तु पवित्रं (उ) | ८८.१३ |
| ऋतं भरोतरपति-(पा) | ३०.१७ | ऋषभः पर्वतश्चैव (सृ) | ४५.१७० | ऋषिभिर्बहुधा लोके (उ) | १६४.५२ | ऋषीणां भावगांस्तान् (सृ) | १.३ | एकशिवस्य रत्नाञ्जन (पा) | १०६.६८ |
| ऋतः कालयोगाश्च (सृ) | १६.३० | ऋषभो विनतश्चैव-(सृ) | ३८.४२ | ऋषिभिर्मुनिभिः सिद्धैः-(भू) | ३२.११ | ऋषीणां मुग्रनपनां (सृ) | १५.३४५ | एकमुद्रां जयन्तु धर्मा (उ) | १००.७७ |
| ऋतवशिष्यमंकृत्वा (उ) | ६४.११५ | ऋषयः संतुमे नित्यं (उ) | ७७.५६ | ऋषिभिः स्तूयमानश्च (भू) | ८३.४७ | ऋषीणां गजस्राणि (स्व) | २५.३५ | एकपादोद्भू (सृ) | १५.३५६ |
| ऋतवो मूर्तिमत्तश्चाप्य-(सृ) | ४३.४० | ऋषयः सप्त ते दिव्याः (भू) | ५.६१ | ऋषिभिः स्तूयमानस्तु (भू) | ८३.१८ | ऋषीणां पञ्चरात्राणि-(सृ) | १६.२८३ | एकानिमदिरे रस्ये-(पा) | ११७.१६४ |
| ऋतवो विहिता भवत- (सृ) | ४३.३० | ऋषयः सहगंधवस्तुष्टु (सृ) | ४१.२७७ | ऋषिभिस्तु ययुक्तां (भू) | २८.८५ | ऋषीणां पर्यचरन्सर्वे (सृ) | १६.८४ | एकानि गोस्त्रं दृष्ट्वा न- (सृ) | १६.३६८ |
| ऋतुकालाभिगमनं (पा) | ६.४२ | ऋषयः सततश्चैव (स्व) | ३६.४७ | ऋषिभ्यो होतृमुह्येभ्यः (पा) | ६८.६ | ऋषीणां मर्चमाणा- (उ) | २०२.११५ | एकानि गोस्त्रं दृष्ट्वा न- (सृ) | २२५.२१ |
| ऋतु कालाभिगमनं (क्रि) | १७.१७६ | ऋषयोजगमु रस्यत्र सर्वे (सृ) | १६.२७० | ऋषिमंत्रप्रभावेण (उ) | ६०.४२ | ऋषीणां पंचमीर्वात् पुण्यं (उ) | ७७.६१ | एकानि गोस्त्रं दृष्ट्वा न- (सृ) | ३४.२०४ |
| ऋतुकालावधोऽना- (उ) | २०२.१३ | ऋषयो धर्मतत्त्वज्ञाः (भू) | ३६.४७ | ऋषिमामं त्रय ययु- (पा) | १५.१६ | ऋषीणां श्वरप्रभावेण लोका- (उ) | ५७.३८ | एकानि गोस्त्रं दृष्ट्वा न- (सृ) | २४६.१० |
| ऋतुकाले यदा शुक्रं (भू) | ६६.२८ | | | | | | | | |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

७१

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---------------------------|--------|------------------------------|--------|----------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| एकएवमुद्बद्ध (पा) | ६६.१५ | एकतः शोणदेहानां (पा) | ६.१६ | एकदाजनकोराजा-(पा) | ३०.३२ | एकदात्र महानीयं (उ) | २०५.१ | एकदाभगवान् विष्णुः (क्रि) | २२१७ |
| एकएवातिथिर्येन (क्रि) | २५.४४ | एकतः श्यामकर्णश्च (पा) | ६.२० | एकदाजलमय्येसस्तीनं (उ) | २१४.६ | एकदात्रासितोग्वाघं (क्रि) | ६.८६ | एकदामममहिष्यापु (उ) | १८३.११ |
| एकः कचिद्विशंश्रेष्ठो (उ) | २१७.१४ | एकतः सर्वपुण्यानि (पा) | ६६.८५ | एकदाज्ञा तिभिः सर्वे (क्रि) | २३.३१ | एकदाद्वारकामागादपिः (उ) | ८८.१ | एकदामासिर्वेशास्त्रे (उ) | १२८.२०० |
| एककामपरामृति (पा) | ६६.४५ | एकतः सर्वतीर्थानि (पा) | ६८.१२५ | एकदातस्यकाकस्य (उ) | २२२.४ | एकदानारदः (पा) | १०३.२० | एकदामुनयः सर्वेऽवल- (स्व) | १.२ |
| एककालंचरेदभैक्ष्यम् (स्व) | ६०.२ | एकतोगोप्रदानानिसर्वे (उ) | ११७.२० | एकदातु गतो राजा (भू) | ७७.६ | एकदानारदोद्वेष्टु (उ) | ७१.४ | एकदामुनयः सर्वे (क्रि) | १.४ |
| एककालं द्विकालं (पा) | ८७.३८ | एकतोपितपोदान-(पा) | १०२.१२ | एकदातुचर्तीगावार (पा) | ३१.८ | एकदानारदोद्वेष्टु (उ) | ३.१ | एकदामुनयः सर्वेहरि (उ) | २१५.५ |
| एककालं द्विकालं (उ) | १२८.२८६ | एकतोमथुरातीर्थे (उ) | ११७.२१ | एकदातुतदादेविगतो (उ) | १४१.१७ | एकदा नारदलोका (पा) | ८४.८ | एकदामुनिशादुलो (उ) | २१६.६० |
| एककालं निराहारो-(स्व) | ३२.१८ | एकत्र तुलितौघाशानत्र-(पा) | ६६.१०५ | एकदा तु तया प्रोक्तं (उ) | ५७.१५ | एकदानारदोलोका (उ) | १.६ | एकदामुप्यवन्त्ये (उ) | २०३.२२ |
| एककालेचभूपाल (क्रि) | ३.४३ | एकत्रमैथुनाद्यानादेक (उ) | ११२.१२ | एकदातुदिलीनेनपुष्ट (उ) | २२३.४ | एकदानृपतिस्तस्यवन (पा) | ३१.२४ | एकदामृगयाखिलन् (उ) | १८६.३१ |
| एककालेऽसिमुज्यं (सु) | ३.१४ | एकत्वं जायते तत्र-(भू) | १४.३७ | एकदा तु द्विजश्रेष्ठां (भू) | ६४.१६ | एकदापथियानांच (त्र) | ५.२८ | एकदामेकगिखरे (उ) | २०७.३८ |
| एकचक्रोमहाचक्रोद्विचक्रः (सु) | १८.७० | एकदाकीर्तिकेसोपि (त्र) | ३.१७ | एकदातुबनंजित्वा (उ) | २१६.४ | एकदापार्श्वतनयः (उ) | १६६.२ | एकदा मोहितं भूपं (भू) | ७६.१६ |
| एकचित्तः प्रसन्नात्मा (सु) | ७.८२ | एकदाकुलभद्राख्यो- (क्रि) | १६.७४ | एकदातुपुरावैश्य (उ) | २०१.४८ | एकदापार्श्वतीविवी (पा) | ६६.३ | एकदायमुनातीरे (पा) | ८१.४ |
| एकचित्तास्तुयेमर्त्या (उ) | ४१.५३ | एकदाकृतपापोऽसी (क्रि) | १७.१५ | एकदा तु प्रिया तस्य (भू) | ११.८ | एकदापार्श्वतीविप्राः (उ) | १२४.६ | एकदारममाणोती (उ) | ४३.११ |
| एकच्छत्रेण वै राज्यं (भू) | १०३.१०७ | एकदाकेशवस्था (उ) | २१.२१ | एकदा तु महादेजाः (भू) | ६१.३६ | एकदापितरप्राह (उ) | ४.७ | एकदारहसि श्रीमानुद्धवो (पा) | ७८.१ |
| एकछत्रोभवेद्दराजासत्य (सु) | ३४.१६८ | एकदाक्षमामलो (उ) | २०४.१३ | एकदा तु महादेवी पार्वती (भू) | १०२.२ | एकदाप्राप्तहितप्रेम्णा (उ) | १८८.१० | एकदावादनवीणांनारदो (पा) | ७१.४ |
| एकजन्मसुखस्य (पा) | १००.८ | एकदागतवान्निप्रो (पा) | ६६.१४३ | एकदा तु महाभाग गता (भू) | ४६.१ | एकदाप्राप्तस्थापयुद्ध (पा) | ३०.७० | एकदाविष्णु पूजा (उ) | २०५.१७ |
| एकतः कनकाभाश्चत्व (फ) | ६.१७ | एकदागिरिशंस्तोतुं (उ) | ३.१० | एकदातुमुनि श्रेष्ठो (उ) | १६६.४ | एकदाप्रिययांसार्द्ध (पा) | ७१.६४ | एकदाव्यासदवोऽसी (भू) | २१.१ |
| एकतः क्रतवः सर्वे (उ) | ३७.७२ | एकदागालवंराजा (त्र) | १२.४ | एकदातुविमानेनपुण्य (पा) | ६.२२ | एकदाभगवाञ्छक्रो (क्रि) | ८.२८ | एकदाशिविकारुद्ध (उ) | १८२.१२ |
| एकत्रजापंरक्यत् (क्रि) | २२.६२ | एकदाचांगताष्टव (त्र) | १५.५० | एकदातुविशालायामु (उ) | १६३.२५ | एकदाभगवान्देवो (स्व) | ३५.२२ | एकदाश्चर्यवृत्तांतं (पा) | ७५.२ |
| एकदाकर्ण्यधीरो (उ) | २०४.३६ | एकदाचारिवनेयासि (त्र) | १६.२२ | एकदा तु सुदुष्टात्मा-(भू) | ३०.१८ | | | | |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

७२

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| एकदासतुविप्रेन्द्रः पुत्रं (उ) | २१६.१२ | एकपादोभवेद्धर्मः (क्रि) | २६.१६ | एकरात्रजलेस्थित्वा (ब्र) | १८.१४ | एकसंश्लिष्यतेगर्भमरणे (सु) | १८.३६५ | एकस्मिन्नादयोयद्ध (स्व) | ३१.६ |
| एकदासद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १२.७२ | एकः पुत्रोवरः कात (पा) | ८६.५ | एकरात्रद्विरात्रादि (सु) | ३२.३६ | एकसूत्रेमणिराणा (उ) | १३२.५८ | एकस्मिन्भोजितेविप्रे (उ) | १५१.१० |
| एकदासद्विजश्रेष्ठ (ब्र) | २.६ | एकभक्तः कुपयिन्दमेकं (सु) | २०.६८ | एकरात्रोपवासश्च (स्व) | ६०.२५ | एकस्तुवाह्यणः कश्चि (उ) | २१०.६५ | एकस्मिन्भोजितेविप्रेको (स्व) | २६.६६ |
| एकदासद्विजश्रेष्ठो (क्रि) | १३.१०१ | एकभक्तेनकर्तव्यं (उ) | ७७.५३ | एकरामंजगत्स (पा) | ६६.४४ | एकस्तुमगधेराजिन्द्र (उ) | २१६.३ | एकस्मिन्मदिरैरा (पा) | ११७.१६५ |
| एकदासमहीपालः (क्रि) | १०.४५ | एकभक्तं न दत्तं तु (भू) | ६७.४२ | एकलशंपंचविशत्स (उ) | २.१ | एकस्तुहिमवद् (उ) | २०७.४ | एकस्मिन्माघमासे (उ) | २०८.३६ |
| एकदासमुनेः पुत्र (उ) | २१३.६१ | एकभार्यः सदाद्वेषी (पा) | ८६.४० | एकवर्णाभिविष्यति (क्रि) | २६.३६ | एकस्त्वनुचरोविप्रगतो (पा) | ४७.२६ | एकस्मिन्मासरेदेवि (उ) | १६२.११ |
| एकदासमृगान्वेषात् (सु) | २२०.५१ | एकभार्यासिदाद्विषीबहु पुत्रो (भू) | १७.२६ | एकवर्णाभिविष्यति (क्रि) | २६.३८ | एकस्त्वंपुरुषः (पा) | ४६.६ | एकस्मिन्समये (उ) | ३८.१ |
| एकदासातुहेमांगी (उ) | २२०.५१ | एकभुक्तमथोनक्त (पा) | ६५.५२ | एकवस्त्रात्रमुक्तकेशीरक्तां (सु) | ४.४८ | एकस्त्वं पुरुषः साक्षाद् (पा) | २२.२८ | एकस्मिन्समयेदेवि (उ) | १५४.५६ |
| एकदासुंदरोगेहं (ब्र) | २६.१८ | एकमन्यद्विजश्रेष्ठ (उ) | २५५.३ | एकवस्त्रावनैचैकांप्रथमे (सु) | ३७.२४ | एकस्त्वमनपत्यश्च- (सु) | ४१.७५ | एकस्मिन्समयेदेवि (उ) | १४१.१३ |
| एकदासुमहान्वायुः (क्रि) | ३.६६ | एकमन्त्रांरसोपि (उ) | ६४.८३ | एकवस्त्रोमहाबाहु (सु) | ६.५२ | एकस्यानेयदाभक्तं- (सु) | १३.३६६ | एकस्मिन्समयेविप्र (उ) | १४१.३५ |
| एकदासुरतस्यांते (उ) | १५.४७ | एकमप्यव्ययपूर्वं (पा) | ७७.५६ | एकविशकुलोपेताः स्वर्ग- (सु) | १८.१५६ | एकस्मिन्दिवसे (उ) | १३५.४ | एकस्थानस्थितो (भू) | १२३.१६ |
| एकदाहमनुप्राप्तो (उ) | १६३.३८ | एकमन्त्रंतरयावत् (उ) | २१३.५६ | एकविशतिकुलंतस्तु (उ) | १३१.१३ | एकस्मिन् दिवसेपोष्ये (ब्र) | ११.२० | एकस्थार्थनयोहन्वादात्मनो (भू) | २६.६ |
| एकदाहमहाभागं सधितः | २१.५० | एकमेव नुरुचंचक्रवाक (स्व) | ४.१० | एकविशति भतारिः काले (भू) | ८५.७० | एकस्मिन्दिवसेराज (पा) | ११३.४७ | एकस्मिन् दीयतेदानमन्ये (भू) | ६७.१२ |
| एकदाहिवलः सोपि- (भू) | २३.४१ | एकमेवपरं ब्रह्म (स्व) | ६०.३६ | एकविशत्कुलोपेतानेच्य (स्व) | १६.२५ | एकस्मिन्दिवसेविप्र (क्रि) | ५.६ | एकस्य दिवसस्यापि (भू) | ५२.३७ |
| एकद्वित्रिचतुर्गो (ब्र) | १६.६ | एकमेवांबुजहृत्वा (क्रि) | १३.६० | एकव्रतेएकनिष्ठे (पा) | ७२.७७ | एकस्मिन् दिवसेविप्र (ब्र) | १७.२५ | एकस्यमहिमाप्रोक्तोत्वं (उ) | २२२.२२ |
| एकधारंनतोगच्छे (उ) | १४३.१ | एकमध्युक्तमंस्वस्तुदत्त्वा (क्रि) | १६.४५ | एकव्रतैकनिष्ठे (पा) | ७२.७७ | एकस्मिन् दिवसेराजि (उ) | ५.८ | एकस्याद्विपत्तीदेवत (क्रि) | ४.७२ |
| एकनारीनहाभाकृष्णान्जन (भू) | ६२.४३ | एकमिदोर्वपुस्त्वैत (पा) | ६५.३० | एकव्रतैकनिष्ठे (पा) | ७२.७७ | एकस्मिन्दिसेराजि (उ) | ५.८ | एकस्यापिप्रधानस्य (भू) | ६८.५६ |
| एकपत्नीव्रतंजातरामं (पा) | १०५.५१ | एकमेकंदन्येषु (उ) | २६.१३ | एकव्रतैकनिष्ठे (पा) | ७२.७७ | एकस्मिन्दिसेराजि (उ) | ५.८ | एकस्यापिहिनीव (पा) | ११४.४५८ |
| एकपत्नीव्रतधरानपर- (पा) | ४६.३० | एकमेवांराविदयः (क्रि) | १३.१६८ | एकव्रतैकनिष्ठे (पा) | ७२.७७ | एकस्मिन्दिसेराजि (उ) | ५.८ | एकस्यापि हि भर्तृश्च (भू) | ४१.७२ |
| एकपादाः स्थिता (उ) | १६.६ | एकयोजनविस्तारंसुदृढं (पा) | १०७.४४ | एकव्रतैकनिष्ठे (पा) | ७२.७७ | एकस्मिन्दिसेराजि (उ) | ५.८ | एकहस्तप्रणामश्चतस्तपुर (पा) | ७६.३८ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

७३

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------|--------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| एकाकिनाकुमनसाते (पा) | ६४.८२ | एकादशपठत्येष (उ) | १८५.२१ | एकादशीव्रतयेचभक्ति (क्रि) | २.८८ | एकादश्यांनिराहार (उ) | ५१.२६ | एकादश्यास्तु माहात्म्यं (भू) | १८.१८ |
| एकाकिनागतेनापिसंध्या (सृ) | १६.५१ | एकादशमनश्चान्न (सृ) | २.६६ | एकादशीव्रतयेन (क्रि) | २२.१४७ | एकादश्यांप्रकुवति (उ) | ३८.११५ | एकादश्यास्तु (उ) | २३४.१३ |
| एकाकिना हि जीवेन (भू) | ७२.७ | एकादशमनश्चात्र (स्व) | २.१६ | एकादशीव्रतरता (क्रि) | २३.४ | एकादश्याः प्रभावः (उ) | २३४.२ | एकादश्यास्तु (उ) | ६४.११७ |
| एकाकिनीवियुक्तास्मि-१ (सृ) | ३२.१०७ | एकादशयुवासस्य (पा) | ६६.१०३ | एकादशीव्रतविधि (क्रि) | २२.७५ | एकादश्याः फलं किंवा (क्रि) | ३.६ | एकादश्यास्तु (उ) | ३८.३७ |
| एकाकिनीसमालोक्य (क्रि) | ५.२५ | एकादशसमुद्रिष्टा (ब्र) | ५५.२७ | एकदशीव्रततस्याः (उ) | ४६.३४ | एकादश्याः फलं श्रुत्वा (क्रि) | २४.१ | एकादश्यास्तु (उ) | ३८.३६ |
| एकाकिनीसमालोक्य (क्रि) | ६.४४ | एकादशसहस्राणिवर्षाणां (सृ) | १७.२६० | एकादशीव्रतस्या (उ) | ३८.४४ | एकादश्याः फलं सर्वं (क्रि) | २२.६ | एकादश्यास्तु (स्व) | ३१.१५६ |
| एकाकीद्विजमुख्येनवामने (सृ) | ३०.१०१ | एकादशस्यमाहात्म्य (उ) | १८५.२ | एकादशीव्रतानांयो (उ) | ६०.५४ | एकादश्यामहंकुत्र (क्रि) | २२.४२ | एकादश्यास्तु (स्व) | ३१.१५७ |
| एकाकीनिर्ममः शांतो (उ) | १७६.२० | एकादशस्यमाहात्म्य (उ) | १८५.१०३ | एकादशीव्रतचित्तं (क्रि) | २३.१७६ | एकादश्यामुपोष्यैव (भू) | ८७.२८ | एकादश्यास्तु (उ) | ५१.६ |
| एकाकीमिष्टमदनातु- (सृ) | १६.३५३ | एकादशीग्रहोरात्रं (उ) | ३५.३३ | एकादशीसमर्पिचित् (उ) | २३४.८ | एकादश्यामुपोष्याव (उ) | २३३.१८ | एकादश्यास्तु (पा) | ११३.४४ |
| एकाकीविचरेन्नित्यम् (स्व) | ५७.७७ | एकादशीकलौराजन् (उ) | ६३.४ | एकादशीसमर्पिचिद् (उ) | ५६.१४ | एकादश्यां तथैवान्न (ब्र) | १५.१४ | एकानशेतिलोक्त्यां (सृ) | ४३.७२ |
| एकानरेकएवादिभ (सृ) | ६.१०६ | एकादशीदिनेप्राप्ते (उ) | ४४.२६ | एकादशीसमाख्याता (उ) | ६०.३ | एकादश्यां तथैवान्न (उ) | ६०.३० | एकानशेतिलोक्त्यां (पा) | ७२.७८ |
| एकानमनसोरा (उ) | ४०.१३ | एकादशीतिथिाकृत्वा (क्रि) | २२.३० | एकादशीसहस्र (उ) | ३८.१६ | एकादश्यांपद (उ) | ३८.५२ | एकानशेतिलोक्त्यां (भू) | ४६.४८ |
| एकाग्रमानसोभूत्वा (उ) | ४४.२४ | एकादशीपुण्यात्मा (उ) | ४७.५ | एकादशैर्द्रव्यैः पापं (उ) | १८५.६२ | एकादश्यांसकपिलो (उ) | ३०.७२ | एकानशेतिलोक्त्यां (क्रि) | १७.२३५ |
| एकाग्रमानसोभूत्वा (सृ) | १६.२८६ | एकादशीपुण्यात्मा (उ) | ६२.१६ | एकादश्यांजो (उ) | ३७.७ | एकादश्यांसमायां (क्रि) | २२.४६ | एकानशेतिलोक्त्यां (पा) | ११७.१६४ |
| एकाच शूकरी तस्य (भू) | ४२.१० | एकादशीपुण्यात्मा (उ) | ६२.१७ | एकादश्यांनुभुंजीत (उ) | २३४.४ | एकादश्यांसुरश्रेष्ठ (क्रि) | १७.१७० | एकानशेतिलोक्त्यां (सृ) | १६.३६८ |
| एकाजदग्गवानामसखी (उ) | २२०.३७ | एकादशीपरित्यज्य (उ) | २३४.६ | एकादश्यांनुभुंजीत (उ) | ५१.२८ | एकादश्यांसुरश्रेष्ठ (उ) | ८४.७ | एकानशेतिलोक्त्यां (पा) | ११०.७६ |
| एकादशीतिथीनांच (उ) | ६०.२ | एकादशीप्रभावेन पूर्वा (क्रि) | २३.२३ | एकादश्यांनुभुंजीत (उ) | २३४.१५ | एकादश्यास्तु भेदाश्च (भू) | ५३.३५ | एकानशेतिलोक्त्यां (उ) | २२५.२१ |
| एकालिगेयुदेपंच (उ) | ६२.८ | एकादशी व्रतं क्वापिन (उ) | ६३.६ | एकादश्यांनुभुंजीत (उ) | ६२.३३ | एकादश्यास्तु भेदाश्च (भू) | ८७.३ | एकानशेतिलोक्त्यां (पा) | ५६.७ |
| एकादशपुरोगाश्च (उ) | १३६.४१ | एकादशीव्रतमिदं (क्रि) | २३.१६ | एकादश्यांनुभुंजीत (सृ) | २३.३३ | एकादश्यास्तुमाहात्म्यम् (ब्र) | १५.२ | एकानशेतिलोक्त्यां (सृ) | ३४.२०४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

७४

| | | | | |
|--|------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------------|
| एकांतेनैकभावेनवाले (पा) ७१.१४ | एकाहमपियोभवत्या (क्रि) १७.२५५ | एकेनैवप्रदक्षिणे न (उ) १८.१५५ | एकोद्दिष्टं परित्यज्य (सृ) १०.३० | एणस्य मांसं सुविपाच्यं (भू) १०६.२ |
| एकांतेनैकभावेनवाले (भू) ५६.३१ | एकाहमपियोमाघे (क्रि) १०.२६ | एकेनैवोपवासे (उ) ३४.६० | एकोनदोमहाकालो (उ) १५१.६२ | एणास्तत्रत्यनीवार (पा) १४.२० |
| एकांतेनैकभावेनवाले (स्व) ६०.३२ | एकाहमपिसम्पूज्य (क्रि) ४.१५ | एकैकनाममहात्म्यं (पा) १११.३ | एकोनपंचाशत्केन (सृ) ५.१६ | एतएवगणानांचसिद्धानां (सृ) ४०.७ |
| एकां सुपुत्रां स्वगृहस्थिता (भू) ५४.१६ | एकाहारा निराहारा (भू) ४१.४४ | एकैकनामाश्रित्य (उ) १५८.१२ | एकोनष्टोनचाराति (पा) ११०.८ | एतंकथयवृत्तान्तं (उ) १२६.७१ |
| एकापिगुरवेदेयाकपि- (सृ) २१.११७ | एकीभावेनपश्यति (स्व) ५०.२१ | एकैकं वदं योत्पिडं (ब्र) १६.२४ | एकोनावै वभूवुस्तेपंचाश (भू) २६.२५ | एतच्चत्वरुतस्तोत्रं (उ) १२८.२१५ |
| एकापिनावदत्तत्र (उ) ४२.४३ | एकेचशालांशभंजुर्गु (पा) ११६.२३७ | एकैकं सप्रधाच्छित्त्वा- (भू) २६.२३ | एको निवर्तते शुद्धो (भू) ५३.८३ | एतच्च परमक्षेत्रपुष्करं (उ) १७.६४ |
| एकाप्सरास्तत्रनृपस्य (पा) १२.८२ | एकेनकेनचिद्राजन् (उ) २१७.२३ | एकैकशः कृतकर्म (स्व) ३६.१२ | एकोत्तरं मृत्युगतमा (भू) ६६.१२२ | एतच्चसर्वमस्माकंकथातां (पा) ७४.६० |
| एकान्नाहोस्थितिलोचने- (उ) १३२.८१ | एकेन गृह्यतां पुत्रा जरा (भू) ७८.१ | एकैकशोममब्रूहिनिष्ठो (सृ) ४३.४६८ | एकोपायो मया दष्टः (भू) ५६.३१ | एतच्चागुपयितुं पिकुर्गति (सृ) ६.१८५ |
| एकामपिप्रदद्याच्चचित- (सृ) २१.२२८ | एकेन चाधिकं मर्त्यं (भू) ८७.३२ | एकैकश्ववणादेव (पा) ११५.४३ | एकोपिदानवन्त (उ) ३८.७८ | एतच्चाङ्गान्युगलंनिर्गता (उ) १८३.१६ |
| एकामेकांगृहीत्वा (उ) ८४.३० | एकेन छत्रं तस्यापि च (भू) ११५.३१ | एकैकस्मिस्ततः शिडं (पा) ११२.३५ | एकोप्यनेकतामापयस्माद् (सृ) ७.६३ | एतच्चाङ्गान्युगलंनिर्गता (क्रि) २२.२७ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनजन्मानामोक्षः (स्व) ३४.१६ | एकैकश्ववयश्चान्ये (सृ) ३४.७ | एकोभागस्तुदामीनांस्तो (उ) २०.३३ | एतच्चाङ्गान्युगलंनिर्गता (क्रि) ६.७८ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनजन्मानामोक्षः (स्व) ३४.१६ | एकैकेतनुनाम्ना (उ) ७२.१५ | एकोमुनिस्त्वाभ्यक्रायह (सृ) ११.७५ | एतच्चिन्ताभिभूतानां (भू) ८६.१६१ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एको गृह्णातु मे पुत्रा (भू) ७८.४ | एकोभ्युपायोदोषो (सृ) ४२.८८ | एतच्चूर्णकृतमान (उ) २१४.७६ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोजिनः सर्वमयोर्पेद्रं (भू) ३७.६० | एकोवदतिवैतम्य (पा) २०.५४ | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरगुणान् (उ) २२८.१०४ | एकोविष्णुस्त्रिधाभूत्वा (क्रि) २६ | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरं मृत्युगत (भू) ६६.१२२ | एकोसिनाथ बहु (उ) १८.४४ | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरं मृत्युगत (भू) ६६.१२२ | एकोहंपंचधाजातः (उ) ८८.४४ | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरं मृत्युगत (भू) ६६.१२२ | एकोहिंगाहं पत्योनि (सृ) १४.८० | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरं मृत्युगत (भू) ६६.१२२ | एणशावाग्निमच्छत्व (उ) १२६.५४ | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरं मृत्युगत (भू) ६६.१२२ | एणशृंगकरेगृह्यपंकजं (सृ) १७.३०७ | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |
| एकामेकादशसिम्यक् (क्रि) २२.७४ | एकेनहृदिविद्वन्नाथ (पा) ४१.१५ | एकोत्तरं मृत्युगत (भू) ६६.१२२ | | एतच्छान्तिग्रन्थनामशी (सृ) २०.६५ |

श्रीपद्ममहापुराणम् १। श्लोकानुक्रमणी

७५

| | | | | |
|--|--|--------------------------------------|---------------------------------------|---|
| एतच्छ्रुत्वा तुदुः स्वप्नो (पा) २२.५६ | एतच्छ्रुत्वासराजाश्रय (पा) ६७.२५ | एतत्तेतथ्यमाख्यातं (सु) १५.१५७ | एतत्तेसर्वमाख्यातं जंगमं (भू) १२३.५५ | एतत्समानवर्णं (पा) ११३.३६ |
| एतच्छ्रुत्वातुमद्राक्यं (पा) ३५.५५ | एतच्छ्रुत्वोदितयतां (पा) ५८.६६ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (उ) २३५.६४ | एतत्तेसर्वमाख्यातं तथाहं (भू) ३५.६ | एतत्समानवर्णं (पा) ११६.२५ |
| एतच्छ्रुत्वातु रामोवैसा (सु) ३७.१०० | एतच्छ्रुत्वावयदुचितं (सु) ३१.२२ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (उ) २५५.११४ | एतत्तेसर्वमाख्यातं तथानव (पा) ६२.१२३ | एतत्सर्वकरिष्यामि- (स्व) १४.१२ |
| एतच्छ्रुत्वातुवचनं (उ) ८०.१५० | एतत्कथानकंश्रुत्वा (उ) ७७.४० | एतत्तेसर्वमाख्यातं (उ) २५५.११८ | एतत्तेसर्वमाख्यातं दोषीर्षः (भू) ६५.६ | एतत्सर्वं जगद् व्याप्तं (भू) ३६.१६ |
| एतच्छ्रुत्वातुवचनं (उ) १५४.२३ | एतत्किञ्चिन्नजानामि (पा) ७४.६३ | एतत्तेसर्वमाख्या (पा) ६८.७६ | एतत्तेसर्वमाख्यातं भूमि (भू) १२५.७ | एतत्सर्वं द्विजश्रेष्ठ (भू) ६५.२ |
| एतच्छ्रुत्वातुव आंग (सु) ४२.१५ | एतत्कृतयुगं राजन् (उ) ५७.२६ | एतत्तेसर्वमाख्यातं यथा (सु) १६.१५५ | एतत्तेसर्वमाख्यातमात्म (भू) ५३.३७ | एतत्सर्वं प्रवक्ष्यामि (उ) १.५६ |
| एतच्छ्रुत्वातु विप्रेन्द्रो (पा) ३६.१ | एतत्कृष्णस्य चरितं (उ) २५२.१०० | एतत्तेसर्वमाख्यातं समा (सु) ३४.३७७ | एतत्तेसर्वमाख्यातमात्मा (भू) १२३.१६ | एतत्सर्वं मया प्रोक्तं (क्रि) ३.७८ |
| एतच्छ्रुत्वातु सचिव (पा) ३३.२१ | एतत्क्षेत्रस्य मुत्पन्नं योजना (स्व) १६.१५ | एतत्तेसर्वमाख्यातमात्म (सु) ३२.३० | एतत्तेसर्वमाख्यातं यत् (पा) ७.३७ | एतत्सर्वं मुने ब्रूहि (क्रि) ३.१० |
| एतच्छ्रुत्वा तव सौदेवः (उ) ६४.३ | एतत्क्षेत्रस्य वचः श्रुत्वा प्रशुभ्य (क्रि) ३.८८ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (उ) २५४.६३ | एतत्तेसर्वमाख्यात- (भू) ६७.११३ | एतत्सर्वं यथा तत्त्वमाख्यातं (सु) २.४५ |
| एतच्छ्रुत्वा दभुर्न कर्म (क्रि) ३.८५ | एतत्तीर्थफलं ज्ञात्वा सर्वं (स्व) १८.१२२ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (उ) २१५.३२ | एतत्तेसर्वमाख्यातं यत् (भू) ७०.११ | एतत्सर्वं स माचक्ष्व (उ) ३.८ |
| एतच्छ्रुत्वा दभुर्न कर्म (क्रि) ६.५३ | एतत्तीर्थसमासाद्य भवतारं (स्व) २१.१६ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) ६०.२७ | एतत्तेसर्वमाख्यातं सृष्टि (भू) २२.३६ | एतत्सर्वं समा चक्ष्व यथा (पा) २६.५ |
| एतच्छ्रुत्वा न रोवत्स (उ) ७१.६८ | एतत्तीर्थसमासाद्य यस्तु (स्व) २१.२७ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) ६०.१० | एतत्पठंति मनुजाः (क्रि) २१.१३४ | एतत्सर्वं रोवरं रम्यं (उ) १८४.७४ |
| एतच्छ्रुत्वा प्रवागम्य (स्व) ४५.१ | एतत्तीर्थं महापुण्यं (उ) २१६.७२ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) १२१.४१ | एतत्पद्मपुराणं तु व्यासेन (उ) १.६६ | एतत्सर्वं समाख्या (उ) २४५.२५६ |
| एतच्छ्रुत्वा महीपालः (पा) ४७.३७ | एतत्तु सकलं कृत्वा सर्वतो (सु) ३४.३८० | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) ८४.२१ | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.२ | एतत्सर्वं अधिकं पुण्यं (उ) १२४.८४ |
| एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य (पा) ३०.७२ | एतत्तु सर्वमाख्यातं (उ) २३३.१६ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) ८६.४५ | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.४ | एतत्सर्वं स्वं तं नाम रूप- (उ) २०.६३ |
| एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य (उ) २१६.७६ | एतत्तु सर्वमाख्यातं तव ग्रे (भू) २२.४८ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) ८६.६६ | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.४ | एतत्सर्वं यत्र तं प्रोक्तं (पा) ११२.६० |
| एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य चर्म (पा) ६८.१ | एतत्ते कथितं देवि (उ) २४१.७६ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) १०६.६० | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.४ | एतत्सर्वं यत्र तं नाम सूच्यं- (सु) २०.११६ |
| एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य लोम (स्व) २३.२६ | एतत्ते कथितं देवि (उ) २४४.६५ | एतत्तेसर्वमाख्यातं (भू) ११७.३२ | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.४ | एतत्सर्वं यत्र तं नाम सूच्यं- (सु) ७६.६ |
| एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य विष्णु (सु) १६.१३५ | एतत्ते कथितं राजन् (उ) २२२.२० | एतत्तेसर्वमाख्यातं कार (उ) २१२.५४ | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.४ | एतत्सर्वं यत्र तं नाम सूच्यं- (सु) ७६.१५ |
| एतच्छ्रुत्वा शुभं वाक्यं (स्व) २६.३२ | एतत्ते कथितं विप्र (पा) ५७.६७ | एतत्तेसर्वमाख्यातं चरित्रं (भू) ८४.१ | एतत्पद्मपुराणं तं ज्ञानं (स्व) ३४.४ | एतत्सर्वं यत्र तं नाम सूच्यं- (सु) ३०.४४ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

७६

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|---------|------------------------------------|--------|---------------------------------|--------|---------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| एतस्मरणाकदिव्यं (उ) | १३२.१५२ | एतदायुर्गतं तामसर्वकाम (सृ) | २०.६७ | एतदेवानिशंरामचित- (सृ) | ३३.१०४ | एतद्रामस्यचरितं (पा) | ४६.३८ | एतद्वाक्यं समाकर्ण्य (पा) | ४४.६० |
| एतदग्निमता प्रोक्तं (सृ) | ६.११५ | एतदाश्चर्यं भूतस्य (सृ) | ४०.१२१ | एतद्गृहीतं गोविद् (क्रि) | २२.८६ | एतद्रुद्रव्रतनामसदा- (सृ) | २०.६२ | एतद्वाक्यं समाकर्ण्य (पा) | ५१.५७ |
| एतदंतर्गतस्यास्यहरि (उ) | २१७.४ | एतदाश्चर्यं मभवत्संश्रामे (सृ) | ४१.३२० | एतद्गुह्यतमज्ञानं गूढं- (स्व) | ३३.७ | एतद्रूपधरोरामोमया (पा) | ५७.३८ | एतद्विचार्यं मतिमाना (स्व) | ६१.८५ |
| एतदन्यच्च जगति दृश्यते (सृ) | १३.३३३ | एतदाश्चर्यं सजात (भू) | ६३.३६ | एतद्गृहस्य वाङ्मयं (भू) | ५३.६१ | एसद्रोगे पुपीडासु (उ) | ७८.८२ | एतद्विचिन्त्य मनसा (क्रि) | ६.१६० |
| एतदन्यच्च तत्रस्थः (पा) | ५७.२६ | एतदिच्छामहे देवि (उ) | २३२.५६ | एतद्दीप्त्यमाहात्म्यं (उ) | ३०.११४ | एतद् कथितं विप्राः (पा) | ११७.२४० | एतद्विचिन्त्य मनसामाधवो (क्रि) | ५.६६ |
| एतदद्भुतमाहात्म्यं (उ) | २१७.२ | एतदुक्तिमुपालब्ध (पा) | १११.१० | एतदक्षत्रयं मुनिष्वे सर्वे (सृ) | २१.१६८ | एतद् कथितं सर्व- (सृ) | २३.१३८ | एतद्विधानं परमपुराणम् (स्व) | ५३.६० |
| एतदन्यच्च मे दत्तं गतचित्ता (सृ) | ३३.२८ | एतदुक्त्वा तु समुनिस्तत्रतं (सृ) | २०.३८ | एतद्वृत्तं समाचक्ष्व- (सृ) | १७.३ | एतद्रचनमाकर्ण्य (पा) | ३८.५२ | एतद्विधानमायां तं स्वर्गं (उ) | २१४.३३ |
| एतदप्यत्र रवौ गोमदिनं (उ) | १७४.४६ | एतदेकादशधनुर्भूमि (उ) | २००.७० | एतद्वृत्तं मया तात (भू) | १०१.५४ | एतद्रचः परं श्रुत्वा (पा) | ३६.५६ | एतद्विद्वद्भक्तं एतौ येनराः (पा) | ४६.३२ |
| एतदर्थं महादुःखां (भू) | १२२.३६ | एतदेव बवैजह्यापथं (सृ) | १.५६ | एतद्दीर्घाभ्यामतुल्यं (सृ) | ४३.१३१ | एतद्रचः समाकर्ण्य (पा) | ४०.४१ | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १२८.१६६ |
| एतदर्थं विचार्यैव जिष्णु (भू) | ५४.५ | एतदेव च श्रोतव्यं शाकाद्रीये (स्व) | ८.३६ | एतद्वि त्रिगुणं (उ) | ६२.६ | एतद्रचः समाकर्ण्य (पा) | ३८.३३ | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदर्थं समाज्ञानं धर्मशास्त्रं (भू) | ६३.२६ | एतदेव मया ज्ञातं यतो (क्रि) | ६.१०२ | एतद्वि चिन्तितं पार्थ (उ) | ३८.४८ | एतद्रचो निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदर्थं महीकांतं भवानिह (भू) | ८१.१० | एतदेव यादत्तं श्रुत्वा (सृ) | ३०.१२७ | एतद्वि ब्रह्मविज्ञानमधु (पा) | २८.६० | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाकर्ण्य राजासौ (उ) | १८६.६१ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाख्यानकदिव्यं (उ) | १४३.२६ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाख्यानकदिव्यं (उ) | १३६.१८ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाख्यानकं श्रुत्वा- (पा) | ३८.१ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाख्याहिनिखिलयोगं (सृ) | ३६.५ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाचक्ष्व नृपतेकुतः (उ) | ६०.३१ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| एतदाचक्ष्व भगवन् (उ) | २१५.४ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |
| तदायतनविप्राः (उ) | २८.२७ | एतदेव पुरं राजभूयो (पा) | ४०.२० | एतद्वि सर्वमाख्यातं (सृ) | ६.७१ | एतद्रचं निशम्य (सृ) | ४०.६० | एतद्विद्वत्ततः सर्वकीर्ति (उ) | १७४.२७ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| एतन्नीलस्यमाहात्म्यं (पा) | २२.५५ | एतन्मे संशयं जातं (भू) | १०८.१५ | एतस्मात्कारणाद्राजन् (उ) | ४३.७ | एतस्मिन्नन्तरेदेवि (उ) | २४५.१२ | एतस्मिन्नन्तरेविप्रः (क्रि) | २५.५५ |
| एतन्नीलस्यमाहात्म्यं (स्व) | ५०.३ | एतन्मे संशयं जातं (भू) | ८६.२४ | एतस्मात्कारणाद्राजन् (उ) | ४३.५२ | एतस्मिन्नन्तरेदेवि (उ) | २५०.४५ | एतस्मिन्नन्तरेविप्रः स्नातुं (स्व) | २२.७५ |
| एतन्मन्त्राभिरुक्तं (सू) | १०.८४ | एतन्पश्य महाभागतवपाश्वर्यं (भू) | १२.७६ | एतस्मात्कारणाद्राजन् (उ) | ५३.५ | एतस्मिन्नन्तरेदेवो (उ) | २४५.१०१ | एतस्मिन्नन्तरेव्याघ्र (व्र) | ६.१८ |
| एतन्मधुवनं तात शिवे (उ) | २१३.१ | एतं पात्रं विजानीहि दुहितु- (भू) | ३६.११३ | एतस्मादपरां किंचित् (उ) | १६३.१४ | एतस्मिन्नन्तरेदेव्यर्जुन (उ) | २५२.८१ | एतस्मिन्नन्तरे शक्रो नारदं (सू) | ४३.१०७ |
| एतन्मम मन्त्रं राजन्येयो धास्त (पा) | ३३.२८ | एतयो रपि पापस्य (पा) | ६८.१०७ | एतस्माददर्शयिष्ये (उ) | ३८.४५ | एतस्मिन्नन्तरे देव्याः (उ) | ४.३६ | एतस्मिन्नेव काले तु (उ) | २३६.३० |
| एतन्मया ह्युत्तं विप्रश्च (उ) | २१६.६४ | एतयो र्वचसा देवि प्रावयोश्च (सू) | ३४.६१ | एतस्मान्कारणान्मन्त्रिभि (भू) | ७.७४ | एतस्मिन्नन्तरे प्राप्नो (पा) | ११४.६६ | एतस्मिन्नेव काले तु (उ) | २४७.२८ |
| एतन्मया श्रुतं पूर्वकथ्यमा- (सू) | ३१.२ | एतयो र्वचसा देवि प्रावयोश्च (भू) | ६३.२६ | एतस्मान्प्रमाद्येत् (स्व) | ५४.२६ | एतस्मिन्नन्तरे प्राप्नो (भू) | १४.११ | एतस्मिन्नेव काले तु (क्रि) | ८.३२ |
| एतन्माधवमासस्य (पा) | १०३.१ | एतयोः सकलं वृत्तं (क्रि) | ३.४६ | एतस्मिन्नन्तरे काश्चिद् (उ) | १७५.५१ | एतस्मिन्नन्तरे प्राप्नो (उ) | १४.६३ | एतस्मिन्नेव काले तु (क्रि) | ६.५२ |
| एतन्मात्रं विजानामि (पा) | ७४.१०० | एतयोः सगमासाद्य (ख) | ६१.६७ | एतस्मिन्नन्तरे क्रुद्धः (सू) | ४१.२१७ | एतस्मिन्नन्तरे प्राप्नो (उ) | १४.६७ | एतस्मिन्नेव काले तु यज्ञे (भू) | २८.६७ |
| एतन्माहात्म्यमनुलङ्घयः (पा) | २१.१ | एतयोः सद्यो नास्ति (क्रि) | ६१.३६ | एतस्मिन्नन्तरे चैव (स्व) | ४६.४ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा (पा) | ११६.५१ | एतस्मिन्नेव काले तु यज्ञे (भू) | ३०.१०३ |
| एतन्मुखादशतश्चाराहसं (पा) | ३.३३ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा कश्यप (सू) | ४२.११ | एतस्मिन्नेव काले तु यज्ञे (भू) | ३५.३५ |
| एतन्मुखादशतश्चारेण निर्ण (पा) | १०५.६५ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मुखोपि जानाति (पा) | ६७.१ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे कौतुकं बहून् (सू) | ५.२ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे कौतुकं बहून् (सू) | १८.२५२ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे कौतुकं बहून् (सू) | ३७.६७ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे पृच्छतो मातः (व्र) | ११.३३ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे सर्वमाचक्ष्व (भू) | ११४.८ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे संशयं ह्यिदं विबुधा न (पा) | ४.५ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |
| एतन्मे संशयं जातं तद्भवान् (भू) | २२.३६ | एतयोः सर्वकर्माणि (क्रि) | ६.८३ | एतस्मिन्नन्तरे तज्जातः (सू) | ४२.३२ | एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा मुनि (सू) | ४१.१०१ | एतस्मिन्नन्तरे विप्रः (क्रि) | १२६.२३० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

७८

| | | | | |
|-------------------------------------|---|--------------------------------------|------------------------------------|---------------------------------------|
| एतस्मिन्नसमयेसांबः (पा) ४३.१२ | एतानिपितृतीर्थानिशर्वं (सु) ११.३० | एतान्मुंचसिचेद्राजन्सर्वं (पा) ३०.५५ | एतावदुक्त्वासारुह्य (सु) १७.१८० | एतेचान्येजनपदाः प्राच्योदी(स्व) ६.६५ |
| एतस्यजिह्वामहती (पा) २०.५३ | एतानिपितृतीर्थानिशर्वं (सु) ११.१६ | एतान्यन्यानिपापानि (क्रि) ७.६३ | एतावदेवमुक्तंचदैवा (उ) १८२.१८ | एतेचैवगुलास्तुभ्यंवह्नो (स्व) १५.४१ |
| एतस्यबलतुल्यंहिनवी (पा) २६.१२ | एतानिपुण्यनामा (उ) २२७.२८ | एतान्यपिसदाश्चाद्वे (सु) ११.४४ | एतावद्वातुमशक्तः (पा) ११७.१२७ | एतेज्ञानोपदेष्टारस् (उ) २००.२ |
| एतस्यवचनश्रुत्वाभगवान् (क्रि) २०.७८ | एतानिपुण्यनामानि(सु) २०.१५० | एतान्यस्त्राणिदिव्यानि (सु) ४५.१०६ | एतावपिचतीराजन् (क्रि) ३.६७ | एतेतपसिष्ठंतीक्ष्णैर (सु) ४१.८४ |
| एतस्यवीरसूमाताजानकी (पा) ५४.२१ | एतानिपुण्यस्थानानि (स्व) ३३.३५ | एतांरामबलोपेतां (उ) ७३.८ | एतानिशकुनेनित्यं (पा) १०४.८४ | एतेतवसमाख्यातानवसर्गाः (सु) ३.८२ |
| एतस्यसदृशोभक्तो (क्रि) १६.२२ | एतानिबहुधोक्तानिनाम (उ) १५६.११ | एतान्विन्यस्यधर्मात्मा (सु) ४६.१७६ | एतांविमानमारोप्य (पा) ११२.५६ | एतेतीर्थाः समाख्याताः (भू) ३६.१०५ |
| एतस्यार्थं तस्तेपे सेयं (भू) १०५.६ | एतानिब्रह्मतीर्थानि (उ) १३५.६५ | एतान्बैशाढकालास्तु (सु) ३४.२२२ | एतावैतिययः प्रोक्ता (उ) ८६.२० | एतेतीर्थाः समाख्याता (भू) ३६.१०७ |
| एतस्यालक्षणां प्रोक्तं (भू) ८.५७ | एतानिमानसान्याहुर (पा) ८४.४३ | एतांश्रुत्वाकथारम्यां (पा) ५५.१ | एताश्चसहयज्ञेनप्रजा (सु) ३.१५१ | एतेनुपुष्करप्राप्तसधर्गिणा(सु) १६.२११ |
| एतस्याः सदृशीकपिन (क्रि) ५.१८ | एतानिवर्जयेन्नित्यं (उ) ६४.१५ | एतान्सर्वान्सहसा (उ) २३२.३८ | एताश्चान्याश्चविधा (सु) १५.३४० | एतेनोष्याः प्रगतंनवर्जनी (सु) ६.८२ |
| एतस्यैव गुरुत्वे (उ) १६६.३४ | एतानिवसुभिः सार्धं (स्व) ३६.१०२ | एतांस्तुतिमथाकर्णं (पा) ११४.३७४ | एतासां पुण्यकालेषु सति (भू) ३६.६१ | एतेदग्धास्तुतेसर्वकुसुमं (स्व) १८.१०६ |
| एतद्वर्गसमंराजन् (उ) २१३.६ | एतानिसर्वभूतानि (उ) २५०.७१ | एताः पञ्चवरिष्ठावै (सु) ४०.७८ | एतासुतिमृषु प्रायः (पा) ६४.६० | एतेदग्धगणान्नान (सु) ६.३६ |
| एतादृशीकथंत्वमस्मिन् (सु) ३३.१०६ | एतानिमृष्टबाभगवान् (सु) ३.१०४ | एताः परिकृताः सर्वाः (पा) ७४.१२६ | एतास्सहस्रशश्चान्या (सु) ४५.७१ | एतेदेवादिर्गप्राप्ताः (सु) ५.५२ |
| एतादृशीमयाष्टकाशी (पा) १७.८१ | एतानिस्नातकोनित्यम् (स्व) ५४.१३ | एताभिः पाहि चाष्टाभि (सु) २२.१८५ | एतेकर्मसुविद्वांसस्ततः (सु) १५.३४४ | एतेदेवाः समाख्यातादेव (स्व) ६.२४ |
| एतादृशीमभूदवृत्तगंधो (पा) १११.१८ | एतान् गत्वाब्रवीहिस्त्वं (भू) ७.२१ | एताभ्यांसहपापभ्यां(क्रि) ३.६४ | एतेकुशाविष्णु शरीर (उ) ७८.७६ | एतेननेजनाशीघ्रं (उ) ६.२६ |
| एतादृशीशिवंध्यात्वा (पा) ११२.१३५ | एतान्ग्राम्यपत्न्याहुराख्यां (सु) ३.१०६ | एतामेतपसोविघ्नकारि (पा) १२.८४ | एतेगणेशाः क्रीडन्ते(सु) ४३.४५५ | एतेननरदेवेनपूर्वं (उ) १३६.२१ |
| एतान्कालिका (स्व) ५३.६७ | एतान्दीक्षयभोब्रह्मन् (सु) १३.३७५ | एता लूनामदिताश्च (भू) ६६.१३ | एतेचान्ये च वहवः (स्व) १.६ | एतेनप्रत्ययेनापि नन्यं (भू) २४.२७ |
| एतान्न्यान्हिनस्थं (उ) ४६.२८ | एताहृष्टवातथाचान्या (सु) १३.४०७ | एतावताभूमिराज्यंभ्रुवं (पा) ११०.५८ | एतेचान्येचगिरयोदेवा (सु) ४५.१८१ | एतेनयवमुन्मतीसप्त (सु) १२.११० |
| एता नद्यो महापुण्या (भू) ६०.३१ | एतांपंचपदीजप्त्वा (पा) ८१.१७ | एतावतालमघनिर्हं (स्व) ३१.१७७ | एतेचान्ये च वहवः (भू) १०२.११ | एतेपंचगम्याग्रह्य (उ) २०.२१ |
| एतानिगुह्यलितानि (स्व) ३४.११ | एतांमहाभागमुशोभिनि (पा) १३.४ | एतावदुक्त्वादेवेशे (उ) ४५.६२ | एतेचान्येचवहवः पितामह(सु) १८.५८ | एतेचपंचमहाभाग- (भू) ७.२३ |
| एतानि नाशयेत्को वै (भू) ६०.४६ | एतान्महाराजविशेषधर्मा (सु) २७.५६ | एतावदुक्त्वापुष्पा (उ) ३१.१७ | एतेचान्येचवहवस्तत्र (सु) ४५.६३ | एतेपितृव्यकाः सर्वे (भू) ४२.६६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|--------|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| एतेपियादवाः सर्वेभ्यः (उ) | २६.२२ | एतेषामानसीकन्यापत्नी (सु) | ६.७ | एतैरन्यैश्चविष (क्रि) | २.७० | एननिदसिरामत्वंमानु-(पा) | २८.६६ | एभिस्तुपूजितः (पा) | ८४.६४ |
| एतेमहर्षयस्तत्र (उ) | २४३.३ | एतेषामातसीकन्यायशो (सु) | ८.४६ | एतैरेवाष्टभिः पुष्पै (पा) | ८४.५६ | एनंपश्यन्तिनोपापा (पा) | १७.२५ | एभ्यः परः प्रभु (भू) | ६६.२२१ |
| एतेमृतत्वं संप्राप्ताः-(सु) | १३.४३ | एतेषामानसीकन्या (सु) | ६.५१ | एतैर्गुणैः समायुक्तं (उ) | १२४.१५ | एनंपूजयरात्रेदेन (पा) | ११०.२७ | एभ्योपिवर्जयेत्किंचिद (उ) | ६४.१६ |
| एतेरामस्यसचिवा राज्ञाः-(सु) | ३७.६४ | एतेषावपुषोभेदोऽन (पा) | ४४.३८ | एतैर्जिह्वस्तुजयतिसर्व- (सु) | १५.३१४ | एनंमंसशयंछिद्यित्व (उ) | १६३.६७ | एयनामेयतां ब्रह्मन्मुखेन (भू) | १८.७ |
| एतेरुद्रास्समाख्या (सु) | ६.३१ | एतेषां संगतिज्ञानकस्मा (भू) | ७.२७ | एतैर्दोषैर्मयावत्सेलो (सु) | ५.४३ | एनंवारयसतीक्ष्णैर्वर्णै (पा) | २८.६ | एयतामेयतां ब्रह्मन्मुखेन (पा) | ६०.११ |
| एतेलोकाः पुण्य (उ) | २६.३१ | एतेषांसंगमालालुम-(भू) | ७.२८ | एतैर्ब्रह्मैर्महापुण्यैः (भू) | ८७.४ | एनंसंजीविष्यामि (पा) | ११४.१२१ | एवं पुराणं शृणुयाच्च (पा) | ११५.३८ |
| एतेवैपर्वता विप्राः सिद्ध (स्व) | ३.२३ | एतेषांसर्वकार्पाणि (क्रि) | २०.४८ | एतैस्तुजुहुयाद्विद्वानना (पा) | १०८.४१ | एनंसोमच्यते चोर. (पा) | १११.३३ | एवंपुराणंश्रुत्वाभावैश्च-(पा) | १०६.११ |
| एतेवैपुत्रपौत्रा (सु) | ६.३३ | एतेषांसिबन्धस्तुकरोति (उ) | ११२.४ | एतौममाभिन्नतरीनित्यं (भू) | ८८.४४ | एनंहिसमणंदैत्यंवर- (सु) | ४५.३३ | एवंपुरुषाः पुरोरभववंश (सु) | ८.२२१ |
| एतेवैमुनयः सर्वपुण्य (उ) | १३८.११ | एतेषुदीयते दान तस्य (भू) | ३६.७६ | एतैस्तुमंत्रतः सानातीर्था (सु) | ४७.७ | एनानदीयेपुण्योदांस्पूर्व (पा) | २०.१५ | एवंपूजाप्रकर्तव्या (उ) | ७७.५८ |
| एतेसुद्रेषुभोज्यान्ना (स्व) | ५६.१८ | एतेषुब्रह्मणंदानम् (स्व) | ५३.२२ | एतौहरस्वभद्रतेतावकंच (सु) | ४४.१६३ | एनांप्रदक्षिणीकृत्य (पा) | ७१.७५ | एवंपूजाविधिकृत्वा (उ) | ६२.२८ |
| एतेसुद्रेषुभोज्यान्नायश्च (स्व) | ५६.१७ | एतेषु श्राद्धतीर्थेषु (सु) | ११.५५ | एत्कामन्नतनामसदा-(सु) | २०.५५ | एनांवक्ष्यतिधर्मात्मा (उ) | ५१.२ | एवंपूजाविधिकृत्वा-(उ) | १२२.५३ |
| एतेषांकरुणावार्धैरघु-(पा) | ३१.१० | एतेष्वन्येषुतीर्थेषु (उ) | १६३.३० | एत्कारणमुद्विदश्यशीघ्र (पा) | ६४.८१ | एनांसवीक्षितुं पन्तीन-(पा) | १०५.४४ | एवंपूजयविधानेन-(सु) | ३४.२७७ |
| एतेषांखलुतीथानाम् (स्व) | ५०.२ | एतेष्वेवमहत्पापं वर्तते (भू) | ३४.२७ | एतः कृतोपिपियेष्वपि-(सु) | ३३.१५७ | एनांसिंहंतीतिप्रसि (उ) | २२.३० | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | ६३.३१ |
| एतुपांचगिरः श्रुत्वास- (सु) | ४०.१५५ | एतेसर्वमहात्मान (सु) | १३.१२३ | एनं गच्छ महात्मानमु (भू) | ११०.८ | एभिर्गुणैर्युतः श्रीमान्स-(सु) | ४६.६५ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.७ |
| एतेषां वैवाहाहात्म्यं (उ) | १.५१ | एतेस्वगन्निहीयते (उ) | २७.१६ | एनं गच्छ वराहो (भू) | ३५.८ | एभिर्गुणैस्तु संयुक्तो (भू) | १०३.१३७ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.२२ |
| एतेषां तु प्रसूत्या तु इदमापू (सु) | ३१.१५ | एतेहिवाह्याणाः (पा) | ११३.७ | एनंतादृशमाल (उ) | २०३.२३ | एभिर्गुणैस्तु संयुक्तो (भू) | ६४.२४ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.२२ |
| एतेषां तु महाभाग (उ) | ६६.५७ | एतैः पंचमिरेतस्मिन्नी (पा) | २१.४१ | एनंतुभक्षयिष्या (उ) | २०४.७३ | एभिर्गुणैस्तु संयुक्तो (भू) | ६४.२४ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.२२ |
| एतेषां नाममात्रेण (उ) | ७१.२८ | एतैः पंचमिरेतस्मिन्नी (पा) | ३५.२३ | एनंतुयोगिनः साक्षादुपा-(पा) | २८.६४ | एभिर्गुणैस्तु संयुक्तो (भू) | ६४.२४ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.२२ |
| एतेषां पाप कमणि (क्रि) | २३.११४ | एतैः पंचमिरेतस्मिन्नी (पा) | १२.४८ | एनंतुयोगिनः साक्षादुपा-(पा) | २८.६४ | एभिर्गुणैस्तु संयुक्तो (भू) | ६४.२४ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.२२ |
| एतेषां मंत्रेद्विपोजं ब्रुही (सु) | ४०.८ | एतैरन्यैरपिस्तौत्रै (क्रि) | ७.६० | एनंतुयोगिनः साक्षादुपा-(पा) | २८.६४ | एभिर्गुणैस्तु संयुक्तो (भू) | ६४.२४ | एवंपूजयविधिकृत्वा (उ) | १२४.२२ |



| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-----------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| एवं प्रकर्वतः कर्मयज्ञः (पा) | ६.१० | एवमन्योन्यमामन्त्र्य (उ) | २१६.२६ | एवमस्तु सहस्राक्ष (भू) | ५३.१२ | एवमाकर्ण्य तत्सर्वं (भू) | ६०.१ | एवमाकर्ण्यसिंहे (उ) | २०३.३८ |
| एवंप्रक्षुभिनः क्रोधान्मां-(सु) | ३६.११२ | एवमप्यधमारेभेवर्त्तं (उ) | २१६.५६ | एवमस्तुसुरश्रेष्ठ (क्रि) | २.७३ | एवमाकर्ण्य तत्सर्वं (भू) | ८८.१६ | एवमाचरतस्तस्य (उ) | १७६.६ |
| एवं प्रजल्पतां तत्रिवि-(सु) | १७.८६ | एवमब्दसहस्राणि (क्रि) | ६.१७२ | एवमस्तुसुराः सर्वे (भू) | १.४७ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (उ) | २१६.४६ | एवमाचरतां कर्ममुक्ति (उ) | १३२.१२६ |
| एवंप्रजानतृप्तस्यनिर्भय-(सु) | १५.३७६ | एवमभ्यर्चयेद्देवं (उ) | १२४.५४ | एवमास्त्वितिकाकु (उ) | २४४.४३ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (भू) | १०३.४५ | एवमाचरितभ्रष्टं (उ) | १०.५१ |
| एवंप्रतिदिनं तस्थौ (क्रि) | १०.७० | एवमभ्यर्चयेद्विष्णुं-(उ) | २५३.१७५ | एवमस्त्विति चैवो-(उ) | १६८.६५ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (भू) | १२१.२१ | एवमाचारसंपन्नम् (स्वा) | ५३.३८ |
| एवंप्रतिश्रुत्यपुरः (उ) | २०१.५१ | एवमभ्यर्च्य तत्सर्वं दद्या- (सु) | २१.२६८ | एवमास्त्वितिता (उ) | २३२.६० | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (भू) | २.२४ | एवमाज्ञाप्य भगवान्नाम (पा) | ११.१ |
| एवंप्रत्यक्षमालो (उ) | २०१.७ | एवमष्टसंशुश्रावपुरा (पा) | ११५.६८ | एवमस्त्विति ते प्रोचु (भू) | ६१.३५ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (भू) | ७७.१०८ | एवमात्मानमात्मेद्वितीयं (सु) | ४१.६५ |
| एवंप्रत्याहता तेन देवी (सु) | १३.२५१ | एवमष्टादशाध्याय- (उ) | १७५.२८ | एवमस्त्विति तद्रक्ष (उ) | २३८.६ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं भर्तुः (भू) | ५१.५१ | एवमात्मासंप्रतप्तो (भू) | ८.२७ |
| एवंप्रथमवत्साया- (सु) | १८.३१६ | एवमस्तुमहाप्राज्ञ- (भू) | ७.२६ | एवमस्त्विति देवेशीवीर- (सु) | ४४.३५ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (उ) | २१५.४८ | एवमादिगुणः प्रायः (पा) | ८२.६ |
| एवंप्रबोधितस्तेन (क्रि) | २६.४६ | एवमस्तुमहादेवि (भू) | १०२.४ | एवमस्त्विति तद्देवो- (सु) | ४२.३६ | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (भू) | ६४.३१ | एवमादिगुणोपेतं (उ) | २२७.६४ |
| एवंप्रबोधितास्तेन (क्रि) | १५.८६ | एवमस्तुमहाभाग (भू) | ७.३३ | एवमस्त्विति तत्सोमि- (सु) | ४१.११० | एवमाकर्ण्य तद्वाक्यं (उ) | २१६.६६ | एवमादिगुणोपेत (उ) | २२३.५३ |
| एवंप्रवर्तमानस्यक (उ) | ३०.६८ | एवमस्तुमहाभाग (भू) | १२४.२१ | एवमस्त्विति ते- (सु) | २२.४८ | एवमाकर्ण्य मुनय (उ) | १६६.३६ | एवमादि तथाऽन्यच्च (पा) | ११६.२७७ |
| एवंप्रवर्तमानाहिधर्मं (उ) | २२०.२६ | एवमस्तु महाभाग मम (भू) | ८३.८१ | एवमस्त्विति देवेन (सु) | १३.३०३ | एवमाकर्ण्य राजेंद्रो (भू) | ७६.१२ | एवमादिनगाश्चान्येभ्यो (सु) | २८.३२ |
| एरंडोत्रिपुल्लोकेपुल्लोकेषु- (स्व) | १८.४३ | एवमस्तुमहाभागं तत् (भू) | २५.१३ | एवमस्त्विति तद्देवो- (सु) | ४१.१२३ | एवमाकर्ण्य राजेंद्रो (भू) | ७७.१०४ | एवमादियथायोग्य (उ) | १५८.४ |
| एरंडीनं दयाशच- (स्व) | २१.३३ | एवमस्तुमहाभागतव (भू) | ५.६६ | एवमाकर्ण्य तत्स्य (भू) | १०५.३० | एवमाकर्ण्य वचनं (उ) | २०४.२६ | एवमादिशतान्मर्वासिं (सु) | २७.३१ |
| एलामुखः कालियश्च- (सु) | ४५.१४७ | एवमस्तुमहाभागे (भू) | ७६.२१ | एवमाकर्ण्य तत्स्य (भू) | १०६.१३ | एवमाकर्ण्य विप्राणा (उ) | २००.२७ | एवमादिशतमुनिं (उ) | १६८.१११ |
| एवमत्यंतनिः श्रीकैत्रलो (सु) | ४.२४ | एवमस्तुमहाभाग (भू) | १०३.१३६ | एवमाकर्ण्य तद्देवो- (सु) | ११३.१२ | एवमाकर्ण्य वं तस्याः (भू) | २३.२१ | एवमादीनि कर्माणि- (सु) | १६.१२८ |
| एवमत्यद्भुतं दृष्ट्वा (उ) | १८.४४ | एवमस्तुमहाभागे तव (भू) | ५.७२ | एवमाकर्ण्य तद्देवो- (सु) | ६२.६३ | एवमाकर्ण्य वं राजा (भू) | ८४.६१ | एवमादीनि चान्यानि (पा) | ११४.२०० |
| एवमन्यानि सर्वाणि (पा) | १०४.५० | एवमस्तुमहाभागे ते (भू) | २६.१७ | एवमाकर्ण्य तत्स्य (भू) | १२२.२० | एवमाकर्ण्य वं राजा (भू) | ८४.६१ | एवमादीनि चान्यानि (पा) | ११४.२०० |
| एवमन्योन्यमाभाष्य- (उ) | १७५.५३ | एवमस्तुमहाराजगच्छ (भू) | ८३.४३ | एवमाकर्ण्य तत्सर्वं (भू) | ११४.१५ | एवमाकर्ण्य वं राजा (भू) | ८४.६१ | एवमादीनि चान्यानि (पा) | ११४.२०० |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|--------|--------------------------|---------|--------------------------|--------|
| एवमादीनिपुत्राणां-(सु) | १३.१६० | एवमाभाष्यदेवेशजिता (सु) | १३.२६८ | एवमुक्तवतिप्रीत्या (उ) | ८०.१५४ | एवमुक्तस्तदातेन-(उ) | १५४.४८ | एवमुक्तातदाभन्नापया (सु) | ३३.६६ |
| एवमादीन्यनेकानि (कि) | २०.१५४ | एवमाभाष्य देवेशः स (भू) | ५.८५ | एवमुक्तनवचतेनां-(उ) | १५६.५६ | एवमुक्तस्तदातेस्तु-(सु) | ३३.२३ | एवमुक्तातदामीता (उ) | २४४.२३ |
| एवमादिप्रचेनव्यापितो (भू) | ८.२२ | एवमाभाष्यभर्मा- (भू) | ३०.७५ | एवमुक्तः सभगवान् (उ) | ८०.१५२ | एवमुक्तस्तथाप्राह (भू) | १.३१ | एवमुक्तानुमादेवि (उ) | २५४.१ |
| एवमादिष्य नं पुत्रं (भू) | ८२.२७ | एवमाभाष्यसजानं (स्व) | ३६.१२४ | एवमुक्तसमाकर्ण्य (पा) | ४३.२ | एवमुक्तस्तथा राजा (भू) | ८२.६ | एवमुक्तानुमादेशी-(सु) | १८.१६२ |
| एवमाद्यादिनियमा (उ) | २२३.३८ | एवमाभाष्यराजानंमायुं (भू) | १०७.७ | एवमुक्तः समाश्वस्त (सु) | ८.५३ | एवमुक्तस्तथा राजा-(भू) | २८.१२१ | एवमुक्तानुमात्राना-(सु) | १८.१७३ |
| एवमाद्यानिचान्यानि (सु) | १७.११८ | एवमाभाष्यसारं (भू) | ११३.२५ | एवमुक्तसमाश्रित्य (पा) | ५०.१२ | एवमुक्तस्तुकाकु-(उ) | २४२.१६३ | एवमुक्ताद्विजनाशन-(प) | १०६.२६ |
| एवमाद्यास्तथा-(पा) | १०४.१२२ | एवमाभ्युदयं प्रोक्तं (भू) | ४०.३४ | एवमुक्तः सर्वाणिजा (उ) | ६६.४० | एवमुक्तस्तथाविष्णु-(सु) | १३.२३८ | एवमुक्ता महाभाग (भू) | १०३.६५ |
| एवमानन्दनं दृष्टं (भू) | ६३.६ | एवमायुर्धनविद्यां-(सु) | १०.१२६ | एवमुक्तः सविप्रदः (उ) | २१६.३४ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यत्वा त (भू) | १०३.८६ | एवमाराधयेद्विद्वान् (उ) | १३०.१८ | एवमुक्तः सर्वमृत्युः (भू) | ३०.६६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाषितं श्रुत्वा (भू) | ६८.२५ | एवमाश्वस्यतांन (उ) | १५.४ | एवमुक्तः सुरेन्द्रस्तु (सु) | २२.१४ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाषितो व्याख्या (भू) | ८६.२३ | एवमासाद्यतत्सर्वं (सु) | ६६.३ | एवमुक्तः सर्वमृत्युः (भू) | ३०.६६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाषितं श्रुत्वा (भू) | ११३.१० | एवमासाद्यतत्सर्वमादा (सु) | २७.१६ | एवमुक्तस्ततः शान्ति-(सु) | २४.३४ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यतं विप्रं गीत-(भू) | ४६.४१ | एवमासीत्सस्त्वस्य (भू) | ६३.११ | एवमुक्तस्ततस्ताभ्या (उ) | १७६.१६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्य त पुत्र- (भू) | १००.६ | एवमासीत्सस्त्वस्य (भू) | ६३.११ | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यत विप्रम (भू) | ३.३६ | एवमिद्रेणचोक्तो (उ) | ३२.३ | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यत वेनम् (भू) | १२३.६२ | एवमुक्त तथा नां (भू) | ३६.४ | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्य तां देवी (भू) | १०२.५ | एवमुक्तं तृतीयं तुल्यं (उ) | २२६.१५५ | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यतां देवी (भू) | ११६.२१ | एवमुक्तः पुनर्दीपिता (उ) | १७६.४० | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यता देवी (भू) | ६.२२ | एवमुक्तः पुनस्सोय सप्त (सु) | ३.०० | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| एवमाभाष्यतां राजा (भू) | ८२.१२ | एवमुक्तः प्रत्युवाचभग-(सु) | १६.१८१ | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |
| | | एवमुक्तंमयादेवि-(उ) | २५३.१७६ | एवमुक्तस्ततस्तृणां (उ) | २५५.२६ | एवमुक्तस्तथाह्यकिचि-(सु) | १६.१२८ | एवमुक्तामयागनु (उ) | ४२.४० |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

८२

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|
| एवमुक्तेतयावाक्ये (पा) | ८६.१६ | एवमुक्तोमहाराजो-(भू) | ६४.६५ | एवमुक्त्वा जगामाशु (भू) | १७.५ | एवमुक्तवातुराजेंद्र (उ) | २१४.८० | एवमुक्ता महाप्राज्ञः (पा) | ८६.२३ |
| एवमुक्तेतुवचनेश्वरवर्ग-(सु) | ३०.१६२ | एवमुक्तोमहाराजो (भू) | ८३.८२ | एवमुक्त्वा जगामाशौ (पा) | ८६.१७ | एवमुक्त्वा तु सा देवी (भू) | १०७.१६ | एवमुक्त्वामहाप्राज्ञः (भू) | १७.११ |
| एवमुक्तेतुवचनेश्वरं (पा) | ६६.४० | एवमुक्तोमुनिरत्ताभ्यां (उ) | १७८.१२ | एवमुक्त्वा च तं वैश्य (भू) | ६०.७ | एवमुक्त्वानुसादेवी (त्र) | १३.५१ | एवमुक्त्वामहाभगे-(भू) | ५१.३५ |
| एवमुक्तेनसोतनप्रत्युक्ता (सु) | १८.१६४ | एवमुक्तोरक्षुश्रेष्ठो (पा) | १०४.२२ | एवमुक्त्वाततः शीरिः (सु) | ३४.४० | एवमुक्त्वातुदमनोबाणा (पा) | २३.६६ | एवमुक्त्वामहाराज (भू) | ६३.४२ |
| एवमुक्तेपुनस्त्यः समीप-(सु) | १८.२५३ | एवमुक्तोर्णवः प्रीत्या (उ) | ४.१६ | एवमुक्त्वाततो (उ) | ४६.२४ | एवमुक्त्वा द्विजश्रेष्ठ (भू) | ७१.२७ | एवमुक्त्वामहाराज-(स्व) | १०.२४ |
| एवमुक्ते महावाक्ये (भू) | ११०.१४ | एवमुक्तोवसिष्ठे (उ) | २५५.१२६ | एवमुक्त्वाततो गच्छ-(सु) | १६.१६१ | एवमुक्त्वा द्विजश्रेष्ठ (भू) | ५१.२५ | एवमुक्त्वामहासंख्ये (पा) | ५२.६६ |
| एवमुक्तेमृगीतस्यप्रोवाच (सु) | १८.२६४ | एवमुक्तोस्मि वैदेव (सु) | १६.१२७ | एवमुक्त्वा ततो देवी (भू) | १२१.२२ | एवमुक्त्वानगकं (पा) | ५३.३ | एवमुक्त्वामुनिश्रेष्ठो (उ) | २२२.६८ |
| एवमुक्ते शुभे वाक्ये (भू) | ६६.२२ | एवमुक्तोहृषीकेशो (उ) | २२६.१६ | एवमुक्त्वानतोदेवी-(सु) | ३१.६६ | एवमुक्त्वानितिथीनि (स्व) | ४०.१ | एवमुक्त्वा यदुपुत्रं (भू) | ८०.१५ |
| एवमुक्ते महावीरं (पा) | ३३.५५ | एवमुक्तोहृषीकेशो (उ) | २३०.२६ | एवमुक्त्वातदाइन्द्रो (उ) | १६८.१७ | एवमुक्त्वापदानेतुं (पा) | २०.६२ | एवमुक्त्वानववीरं (पा) | ६१.३६ |
| एवमुक्ते शुभे वाक्ये (भू) | ६८.१ | एवमुक्त्वाविधातारं (उ) | २२३.६८ | एवमुक्त्वा तथैकांति (भू) | ५०.६० | एवमुक्त्वापाशकानां (पा) | ५५.६३ | एवमुक्त्वा विसृज्यैव (भू) | १०३.१३६ |
| एवमुक्ते शुभे वाक्ये (भू) | ६०.४८ | एवमुक्त्वाकामदेवो (पा) | १२.७५ | एवमुक्त्वा तमात्मानं (भू) | ७.३६ | एवमुक्त्वाविप्रा (स्व) | ६१.११ | एवमुक्त्वाभगवान्-(सु) | ४५.१७ |
| एवमुक्तेशुभे वाक्ये (भू) | ३.६६ | एवमुक्त्वाकुमारास्ते (उ) | १६५.१३ | एवमुक्त्वातयासाद्रे (उ) | २१४.४७ | एवमुक्त्वाप्रियांराजा (भू) | ८१.३२ | एवमुक्त्वा ग योगीन्द्रः (भू) | १७.६ |
| एवमुक्तेपुनेश्वेवप्रह- (भू) | ३८.१८ | एवमुक्त्वा गता देवाः (भू) | ६२.२६ | एवमुक्त्वातुका (उ) | २४२.१७७ | एवमुक्त्वाप्रणम्यैव (भू) | १२४.६ | एवमुक्त्वा ग योगीन्द्रो (भू) | २६.६ |
| एवमुक्तगतोविष्णु-(सु) | ३.६० | एवमुक्त्वा गता रभा (भू) | ११३.२६ | एवमुक्त्वातुकाकु (उ) | २४२.२८० | एवमुक्त्वाप्रयात्यैवं (भू) | ११.४४ | एवमुक्त्वा स राजान (भू) | १०४.२४ |
| एवमुक्तो गगनोविष्णु- (सु) | १७.२२० | एवमुक्त्वागताः सर्वे (भू) | २०.३८ | एवमुक्त्वातुकाकु (उ) | २४२.२७८ | एवमुक्त्वा प्रियो भार्या (भू) | ४१.२८ | एवमुक्त्वा स वैदर्भः मुनिकं (उ) | ११८.२८ |
| एवमुक्तोत्रघाना (उ) | १८.७६ | एवमुक्त्वा गतासातु (भू) | ३०.६३ | एवमुक्त्वातुगिरि (उ) | २४५.१७८ | एवमुक्त्वावहुविवांक्षि-(सु) | ४१.२६१ | एवमुक्त्वागहस्त्रांशु-(सु) | १४.५८ |
| एवमुक्तोब्रवीदेता (सु) | १३.२०१ | एवमुक्त्वागतोब्रह्मास्त्र (सु) | १४.१३६ | एवमुक्त्वातुतांक्ष्यां-(सु) | ३७.३६ | एवमुक्त्वाभेपजांत (पा) | ४५.२२ | एवमुक्त्वा गुनीया ना (भू) | ३४.१७ |
| एवमुक्तोब्रवीद्देवो-(सु) | १३.२२० | एवमुक्त्वाचत्तेन्योन्धं-(सु) | १३.२३१ | एवमुक्त्वातुभगवान्ब्रह्मा-(सु) | १६.२०३ | एवमुक्त्वाभ्यनुज्ञा (स्व) | ३६.१०८ | एवमुक्त्वा मुपुत्र (भू) | १२१.५२ |
| एवमुक्तोब्रवीद्विष्णुः (सु) | १५.७७ | एवमुक्त्वाचसादेवीस्वयं (सु) | ३४.६८ | एवमुक्त्वातुभगवान् (सु) | ४५.३४ | एवमुक्त्वामहानेजाः (भू) | ५३.१३ | एवमुक्त्वास्थितन्त्र-(सु) | १६.७३ |
| एवमुक्तोभगवताप्रण (सु) | ५.६० | एवमुक्त्वा जगामाश (भू) | ५०.६२ | एवमुक्त्वातुभगमान् (सु) | ४.८५ | एवमुक्त्वामहादेव्या (पा) | ३४.४० | एवमुक्त्वास्वभतरिं (उ) | २५४.६१ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| एवमुक्त्वाहनुमंत-(पा) | ३४.४६ | एवमेवामहाभाग-(स्व) | ५६.११० | एवंकुतीसमाख्याचव (सृ) | १३.११४ | एवमज्ञातिवाह्यावर्गीत (सृ) | २३.५४ | एवं चत्वारः पुत्राश्च (भू) | ६४.१४ |
| एवमुक्तोद्दृष्टीके (उ) | २४२.६० | एवमैश्वर्यसंयुक्तोविष्णु-(सृ) | १५.२०६ | एवंकुलध्वमात-(सृ) | ३८.६५ | एवंक्षमासमाख्याना शौच (भू) | १३.२१ | एवंचितंयतस्य (उ) | २०१.२७ |
| एवमुद्दिश्यपंचार्चि-(सृ) | ३१.६२ | एवमोद्वाहिकसर्व (उ) | २४८.१५ | एवंकृतंत्वयापूर्वं (पा) | ११०.६५ | एवं खलु वरं दत्त्वा (भू) | १०३.१३८ | एवंचिंतयतस्तस्यग्रहाण-(सृ) | १५.२१ |
| एवं मूढो यदात्मासौ (भू) | ८.२४ | एवमृकसंहितायां (उ) | २२७.३१ | एवंकृतं त्वयाविप्र कृपि-(भू) | १७.३१ | एवंगायन्गुणान्त्रात्रौ (पा) | २१.२६ | एवंचिंतयतस्तस्यमध्या (सृ) | ३३.६६ |
| एवमेकांशोभूतेशेते-(सृ) | ३६.७३ | एवंकथयतोरवह्मण्यो (पा) | ६४.५१ | एवंकृतस्त्वया (पा) | ८६.४२ | एवंगार्हस्थ्यमाश्रित्य (पा) | ६.६२ | एवंचिन्तयतेनित्यंगर्भावास (भू) | ८.१२ |
| एवमेकोनपंचाश-(पा) | ५२.२५ | एवंकथयतस्तस्य-(पा) | ३०.७४ | एवंकृतेततोदेवाद्वयमानेन (सृ) | ४३.६ | एवंगिरि समासाद्य (भू) | ८८.११ | एवंचिन्तयतस्तस्य-(पा) | १०६.१४ |
| एवमेतत्कपिश्रेष्ठ-(पा) | ११४.३४८ | एवंकनिष्ठकेष्यत्र (सृ) | १८.२१५ | एवंकृतेतदाविद्वन् (उ) | ७०.३० | एवंगुणसमायुक्तं (उ) | ११.४१ | एवंचितयते नित्यं संसारः (भू) | ५६.२ |
| एवमेतन्महाभागभवि-(पा) | १०८.१६ | एवंकरसहस्रंनु-(पा) | ११७.१४२ | एवकृते तुयत्पुण्यं (उ) | ३०.४२ | एवंगुणाभवेद्भार्या (भू) | ५६.१२ | एवंचितयते यावद्राजा (भू) | ८२.१ |
| एवमेतद्विद्वत्तान्दितिः (भू) | ६.२१ | एवंकरिष्यतिनृपः (पा) | ११.६४ | एवंकृतेतुयत्पुण्यं (पा) | ६६.२५ | एवंगुणैः समायुक्ता (भू) | ४१.५ | एवंचितयसे दुःखं यथा (भू) | ८२.७ |
| एवमेतौ सुखंभाष्य-(भू) | ४३.७६ | एवंकरिष्येभगवतदा-(सृ) | १६.६८ | एवंकृतेतुयत्पुण्यं (उ) | ४५.६० | एवंगुणैः समुपेतं त्रैलो (भू) | ७७.८८ | एवंचितताकृता पूर्वश्रूयता (भू) | ५.२२ |
| एवमेवपुराण्यष्टो (उ) | ६०.४ | एवंकरिष्येहंकद्रयत्व-(सृ) | १४.२१२ | एवंकृतेपितृनात्मा (पा) | ८१.६ | एवंगुणैः समुपेतंविद्धि (भू) | ७७.८६ | एवंचितापराधोनाया-(नृ) | १६.१८४ |
| एवमेवमहासाधोक-(सृ) | १५.३३६ | एवंकर्तुंनशक्नोयः (ब्र) | २३.१५ | एवंकृतसुराः सर्वे भावति(सृ) | १८.१६० | एवंगुहंप्रपश्यतीनाति(पा) | १५.३७ | एवंचेत्प्राणमुक्तः (उ) | २१६.२१ |
| एवमेवं करिष्यामि (भू) | २३.२६ | एवंकर्मफलभुक्त-(भू) | १२.१२८ | एवंकृत्वातृपस्तस्थौ (पा) | ३०.४० | एवंगुहशतं भक्त्या (भू) | ८६.१५ | एवंचगुह्यंछन्नस्त्रै-(सृ) | १३.३४० |
| एवमेवपुराण्यष्टो (स्व) | ५१.४ | एवंकर्माणि कुर्वत-(सृ) | ३२.११ | एवंकृत्वाप्रियोविष्णोः (स्व) | ६१.३ | एवंगुहशतं भग्नचित्रया(भू) | ८६.१३ | एवंजनकपुत्रासौह (पा) | ६८.२५ |
| एवमेवप्रयत्नेनसाधना (पा) | ८२.३६ | एवं कामं च संदिश्य (भू) | ५३.२४ | एवंकृत्वाबाणमुख्या (पा) | ११४.६८ | एवंग्रहाभमेस्थित्वा (स्व) | ५८.१ | एवंजलंधरः (उ) | ६८.२७ |
| एवमेवमहाभाग (उ) | २३८.३१ | एवंकामयमानस्य-(उ) | २१४.६२ | एवंकृत्वासुराः (पा) | ४४.४७ | एवंचक्रमणार्जोवातीयं (उ) | २३२.११८ | एवंजल्पतिविविधा-(सृ) | ३४.३०१ |
| एवमेवहिमाधोपिकुर्याद् (उ) | ६४.२० | एवंकामोदनामासौ (भू) | ११६.१७ | एवंकृत्वामहाभाग (भू) | ८६.८ | एवंचकारधर्मण (उ) | २३६.६ | एवंजागरणं कृत्वा (उ) | ३७.७८ |
| एवमेवंतदित्य-(सृ) | ४३.४६७ | एवंकीडारतानित्यंवाल-(भू) | २१.१६ | एवंकोलाहलेवृत्तेसुरयो (पा) | ५१.५ | एवं चनुष्टयं सा हि यदा (भू) | ८८.२ | एवंजानीहिदेवेशयदि-(भू) | २३.३८ |
| एवमेववरोदेवपोदतो-(सृ) | १७.२१ | एवंकीर्तपस्तस्तस्यत-(पा) | ७१.६७ | एवंक्रमेणसंप्राप्तः (पा) | १२.४० | एवंचतेनमुनिनास्थित्वा-(सृ) | ३६.११० | एवंजित्वायदुश्रेष्ठः (उ) | २५०.३६ |
| एवमेवसासिच्छ्रेष्ठा-(सृ) | १८.१२७ | एवंकुर्वमोराजास (उ) | १३६.१८ | एवंक्रोशतिपापानि-(उ) | १२६.३२ | एवं चत्वारः पापिष्ठाः (भू) | ६१.३७ | एवंज्ञात्वाग्रहं ब्रह्मन् (उ) | ४२.३० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

८४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| एवं ज्ञात्वा जगामाथ (भू) | ३.८ | एवंज्ञात्वासहस्रान (भू) | ७६.१४ | एवंतां प्रतिमां विष्णो (उ) | ६४.१६ | एवंते मुनयो बालं ब्राह्म- (सु) | ३३.२५ | एवंदधीयपत्नीसा (उ) | १५५.३६ |
| एवंज्ञात्वा तुराजेन्द्र (स्व) | ४५.१० | एवंज्ञात्वा स्वर्गभोग्यं (भू) | ७२.१० | एवंतां सामनो हृत्वा सर्वा- (स्व) | १४.३६ | एवंते वर्णितं तातय- (पा) | ६.२६ | एवंदमनसो देवि पुजि- (उ) | ८४.२२ |
| एवंज्ञात्वा त्वया भर्तुर्न- (सु) | ३४.७५ | एवंज्ञात्वा ह्यहविप्र (भू) | ८४.१४ | एवंतु त्रिपुरदधशं करेन- (स्व) | १५.६७ | एवंते विधिरुष्टो- (सु) | ३४.३०२ | एवंदशरया भग्नानुपनेरा- (पा) | २७.२३ |
| एवंज्ञात्वा त्वया भद्रे (भू) | ५२.५ | एवंज्ञात्वा ह्यहं स्वा (उ) | ७१.६० | एवंतुं मुनयस्त्रैवयदुं (भू) | ७८.२७ | एवंते नृकृपाः सर्वं यद्धाय (भू) | ४३.१ | एवंदहित्वा भूतानि (पा) | ११४.८६ |
| एवंज्ञात्वा यश्चक्षेणो (उ) | २४६.२४ | एवंज्ञानपरोयोगी (स्व) | ५६.१४ | एवंतु वदतस्तस्य- (सु) | १४.१५२ | एवंते पुथि विष्टे (उ) | १६५.२६ | एवंदानस्त्वमेवान- (उ) | २२६.३८ |
| एवंज्ञात्वा दयावाधिः (पा) | ३६.७ | एवंतददानवंसैन्यं सर्व- (सु) | ४०.१६४ | एवंतुष्टा जगन्माता- (पा) | १३.३१ | एवंते स्वानि विष्ण- (सु) | १३.२८० | एवंदिनत्रयेणैव मुक्तिः (पा) | ६४.११८ |
| एवंज्ञात्वा नरश्रेष्ठो (उ) | ८१.४१ | एवंतदा कुलीभूते- (पा) | ३४.४७ | एवंताभ्यां भूभाभ्यां तौ (उ) | २२.४६ | एवं नैः किल पृष्ट (स्व) | ३.२० | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ६७.१०६ |
| एवं ज्ञात्वा प्रयाहि (भू) | ७२.३० | एवंतदुवतमाकर्ण्य (पा) | १२.३६ | एवंतीथिनिरोधेन- (उ) | २१६.५० | एवं नै विविर्बहस्तिर (पा) | ८३.७० | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४१ |
| एवं ज्ञात्वा प्रधनात्मा (भू) | ११३.१४ | एवंतपदचरिष्यामि- (पा) | १०७.६६ | एवंतु समयान् श्राव्य (सु) | ३४.०८ | एवं नै सद्यथा योग्य (पा) | ८३.८८ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ६१.३६ |
| एवं ज्ञात्वा महात्मानं (भू) | ४६.५५ | एवंतवेत्ति यो देविस (उ) | १३२.६६ | एवंतूर्यनिनादैस्तु जह (सु) | १७.२४१ | एवंतैः नृयमानः (उ) | २१२.४५ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा महाप्राज्ञ- (भू) | १३.३३ | एवं न हसते प्रज्ञा- (भू) | ६७.११० | एवंतैः कथितं राजान (स्व) | २२.१ | एवंतीथिं धितेन (उ) | १७६.२४ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा महाभागमत्वं (सु) | १७.१३ | एवंतया क्रीडमानः (पा) | १६.१ | एवंतैः कथितं सर्वमया (भू) | ६६.५१ | एवंतमपि कान्य (स्व) | ३६.१०३ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा महाभागमामेवं (भू) | ४१.२६ | एवंतयोस्तु वृतांत (भू) | २०.५६ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा महाभागे- (भू) | ६.३२ | एवंतया कुलटया सो (उ) | २१३.१४ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा शमगच्छ (भू) | ६.४ | एवंतैः कथितस्तस्य (पा) | ६२.४६ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा शमगच्छ (भू) | १०३.४३ | एवंतैः कथितस्तस्य (भू) | ६१.१५ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा शमगच्छमुच (भू) | ७.१३ | एवंतस्य प्रकुर्वणा- (पा) | १५.७ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा शयंतस्य (उ) | १२८.१०५ | एवंतस्य वचः श्रुत्वा (भू) | १२.४४ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा शयंतस्य- (स्व) | २२.६७ | एवंतातक्षो जातः (भू) | ८५.७४ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |
| एवंज्ञात्वा सदापूता जा- (सु) | १७.२७७ | एवंतातक्षो जातः (भू) | ८६.४६ | एवंतैः कथितो राजान् (स्व) | २३.३४ | एवंतमः पित्रे नैन (उ) | ११०.२७ | एवंदुःखमनाचारः स्तूय (भू) | ५१.४५ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------|---------|
| एवंधर्म विजानामि वेद-(भू) | ५०.३४ | एवंनिरंतरंजुष्टमुद-(सु) | ३५.४७ | एवंपालयतोदेशधर्मण (पा) | ५.४५ | एवंप्रवदतस्तस्य (पा) | ३७.६४ | एवंब्राह्मणतिष्ठामि (उ) | १२६.१४१ |
| एवंधर्मं श्रुतं पूर्वं (भू) | ५३.१ | एवंनिराकृतस्तेन (उ) | २५५.३१ | एवंपित्रासुनीयासा-(भू) | ३३.२५ | एवंप्रवदतस्तस्यप्राप्तो (पा) | २२.६१ | एवंब्रुवंतं दृष्ट्वा (पा) | ४४.३३ |
| एवंधर्मः समाधानः (भू) | १२.६८ | एवंनिवसतोस्तत्र (उ) | १६६.२२ | एवंपीडासमायुक्तो-(भू) | १५.२० | एवंप्रवर्तितं तत्रपुण्यं (उ) | २८.३० | एवंब्रुतं तं रमाजधान-(पा) | ३४.३१ |
| एवंधेनुपूजयतो गतास्तु (पा) | ३१.२३ | एवंनिवेदतो वाक्यपिता (उ) | १७७.३६ | एवंप्रोतिकरी जातौ (भू) | ४८.१० | एवंप्रविष्टो वैकुण्ठं (ब) | २.३५ | एवंब्रुवंतं नवीरं (पा) | ३४.१२ |
| एवंसंख्यात्वा चंद्र (पा) | ११४.६४ | एवंनिशम्यतद्वाक्यं (उ) | २१२.२६ | एवंपुण्यप्रभावोयं (भू) | ३.५३ | एवंप्रवृत्तेनुमुलेसं (पा) | ११४.१६० | एवंब्रुवंतं प्रत्युचे (पा) | ५८.६५ |
| एवंध्यायंति ये विप्रा (उ) | १३१.२८ | एवंनिशम्यते वाचं देव्या (सु) | ४३.३६८ | एवंपुण्यसमाकीर्णां (भू) | ६७.२६ | एवंप्रवृत्तसंग्रामे मुर (पा) | ५१.१८ | एवंब्रुवंतं भरनात्मा (पा) | ११.६ |
| एवं न कुरुते यो हि (भू) | १२५.३३ | एवंनिःशेषं त्यक्तं (उ) | २५२.७१ | एवं पुण्याचरम्या च (स्व) | १३.५३ | एवंप्रवृत्तसंग्रामे राज-(पा) | ३६.२१ | एवंब्रुवन्निवाक्यनु-(सु) | ४१.२६७ |
| एवं न चलने ध्याना-(भू) | १६.११ | एवंनैवास्ति संसारे (भू) | ६६.१७४ | एवंपुत्रा महावीर्यान्तेज (भू) | १०६.५१ | एवंप्रवृत्तसंग्रामे पट्-(पा) | ५६.५ | एवंब्रुवन्निवैतन्मिन् (उ) | १६७.६३ |
| एवंनतनमिदं तु जुष्टं (उ) | १६२.२६ | एवंन्यासविधिकृत्वा (उ) | ७८.३० | एवंपुत्रास्तु चत्वारः (भू) | ८५.३४ | एवंप्राप्य च वैशाखी (पा) | ८६.४३ | एवंब्रुवंती क्षी (पा) | ५८.७० |
| एवं न युज्यते कर्तुं (भू) | १०.३५ | एवंन्याससमुद्भूतः (भू) | ११.४५ | एवंपुंड्रविधिः प्रोक्तः (उ) | २०५.५६ | एवंप्रारब्धकर्मा (उ) | २०४.२५ | एवंब्रुवन्निवैतन्मिन् (उ) | १६८.५६ |
| एवं नहुपर्वणो वै तव (भू) | १०६.५६ | एवंपंचमहाचाराः (पा) | ५५.६६ | एवंपुराणमद्वेनेन-(पा) | ११४.४३२ | एवंप्राथ्यंततो देववि (उ) | १७४.७४ | एवंब्रुवन्निश्चोक्तमो (उ) | २६.३५ |
| एवं नाम चकाराथ-(भू) | २३.२८ | एवंपथविचारं तु कुर्व (पा) | ५८.७४ | एवंप्रवृत्तसंग्रामेय (पा) | २७.४ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणामवलाभि-(पा) | १५.२४ |
| एवंनामास्थदत्वा (उ) | २४२.७८ | एवंपरंपरं निरर्हं (उ) | २२८.६७ | एवंप्रवृत्तसंग्रामेय (पा) | २७.४ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनारदनाथिनके व-(सु) | २३.१०० | एवंपरस्परविप्राः (पा) | ६५.३४ | एवंप्रवोदितस्तेन (क्रि) | १७.१२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनारदशंकरेण (उ) | २५.१ | एवंपरस्परविलिष्टौ-(पा) | २६.६८ | एवंप्रवोदितस्तेन (उ) | २०७.२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनिजगृहे तस्य वसतः (उ) | २१६.४० | एवंपश्यन्मुनिः सर्वाङ्गी (पा) | ६.१८ | एवंप्रवोदितस्तेन (उ) | २०७.२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनित्यात्मपादिभ्या (उ) | २२८.४७ | एवंपश्यसि मामेवं (भू) | १२.१०४ | एवंप्रवोदितस्तेन (उ) | २०७.२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनिपातव तं दैत्यं-(भू) | २३.४५ | एवंपात्रं समाख्यातव-(भू) | ३६.११२ | एवंप्रवोदितस्तेन (उ) | २०७.२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनियमकृतसुखाप्राप्त (सु) | २१.२२४ | एवंपात्राणि संकल्प्य (सु) | ६.१४६ | एवंप्रवोदितस्तेन (उ) | २०७.२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |
| एवंनियमवान्भूत्वा (उ) | १५१.३३ | एवंपापविशेषेण (भू) | ७०.१० | एवंप्रवोदितस्तेन (उ) | २०७.२७ | एवंप्रार्थयंततो देववि (उ) | ५३.४६ | एवंब्रुवाणां पितामह-(पा) | १६.११ |

| | | | | |
|-------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|---|
| एवंचित्वसाधमेविषाय (उ) २२०.२६ | एवंविधात्वयाचाहं (सु) ७.५० | एवंविप्रोनजानातिस (सु) ४६.१८६ | एवंवैपरमीधर्मः प्रजा-(सु) १८.३५५ | एवंश्यातुसंकल्प्य (उ) ११६.५१ |
| एवंविज्ञापितस्तेन (उ) १६८.१०० | एवंविधानतोदत्तातिल- (सु) ३४.३७२ | एवंविभवयुक्तस्य राज्ञ (सु) ३४.३४२ | एवंवैशाखसंबंधी (उ) ८५.२५ | एवंश्राद्धक्रियायानं (पा) ६४.१०१ |
| एवंविज्ञाप्यदेवेश (उ) ६२.३६ | एवंविधानट्टाश्चरूप- (सु) १३.२६२ | एवंमृष्यतददास्या (उ) २१४.७२ | एवंव्यतिकरेवृत्ते (पा) ५४.३१ | एवंश्रुतं मया कान्त- (भू) ५१.२८ |
| एवंविज्ञानुसारेण भक्तियु (उ) १२३.३० | एवंविधायनिपापा (उ) २१.२८ | एवंविमृश्यमुचिरं (उ) १५१.३७ | एवंव्यतिकरेवृत्तेयोगिन्य (पा) ४२.५१ | एवंश्रुत्वागता सा च (भू) ८१.४ |
| एवंविदित्वापूजात्वं (पा) १०६.६८ | एवंविधानिवाक्यानि- (सु) १७.२६३ | एवंविलपतीगोरी (उ) १३.३६ | एवंव्यापारसंबंधः कायम (भू) ७.६४ | एवंश्रुत्वागततो वुद्धिस्तेपां (भू) ७.४१ |
| एवंविदित्वाप्तार्थं (उ) २२७.३८ | एवंविधानिवाक्यानि- (सु) ३४.३४ | एवंविलप्यतन्माता (उ) २०७.१७ | एवंव्रजतिराजेन्द्रेव्याध (उ) १२५.२५ | एवं श्रुत्वागततो राजा (भू) ६७.६६ |
| एवंविदोमहाशब्दः (भू) ५.१४ | एवंविधान्यनेकानिसा (उ) १५५.१० | एवंविलप्यसातस्यमु (उ) २०६.४२ | एवंव्रतेकृते राजन् (उ) ५७.३७ | एवंश्रुत्वागततोरानुपरो- (सु) ३४.३८७ |
| एवंविधं ददर्शासौनमर (पा) १२.४५ | एवंविधायदापुत्रायुः (भू) १०.२६ | एवंविलोभ्यमानः स्तेलोभं (सु) १६.३६८ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतदानस्य (भू) १२.१०५ |
| एवंविधं पादपराजमेव (भू) १०२.३५ | एवंविधावनेभ्राम्यं (उ) १३४.११ | एवंविश्रवावसुधीमान् (उ) २२०.२४ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं पुण्यमयं पवित्रं (उ) ११७.३३ | एवंविधिः क्रुतो देवैः (भू) ११३.११ | एवंविषादः संजातस्तेपां- (भू) ४२.७४ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महद्वाक्यं- (भू) ३६.२६ | एवंविधिवत्सं (उ) ३६.१३ | एवंविष्णुप्रभावेन (भू) ६६.३५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महद्वाक्यं समा- (भू) ३६.२५ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महाकाव्यं (भू) १६.११ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महाकान्तं कस्मा- (भू) ४७.२ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महादानपात (उ) १८३.४३ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महास्वप्नं (भू) १०४.१५ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं महारुद्रं (उ) १३.१४ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं चोवक्तुं त्व (सु) ३७.३२ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं वरदेहि (भू) ३.३५ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |
| एवंविधं सकलजन (उ) २५२.६ | एवंविधेन रेण्यात्तेवसतिः (सु) १७.१७१ | एवंविजिता तेन (भू) ११३.४५ | एवंशंकरनिदिष्टा (उ) १८.११५ | एवंश्रुत्वागतानुसुश्रोनियथेष्टं (स्व) १४.३२ |

| | | | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|---------------------------------------|----------------------------------|------------------------------------|
| एवंसंतोषितोविप्रस्त्वया (भू) १८.१२ | एवंसंप्राथितोविप्रास्तया (उ) १६४.१ | एवंसमरकुण्डेसुरथे (पा) ५२.४० | एवंसवेपिनिषदामर्थ (उ) २३८.४३ | एवंसुतोक्तविक्षित (उ) १६६.८६ |
| एवंसदस्वावशापह (उ) १४५.१५ | एवंसंप्रेरितः पत्नी (उ) १४.११ | एवंसमर्थो दातुं मे (भू) १.४२ | एवंसलोकपालत्वमगम (सृ) ८.५६ | एवंसुदर्शनोद्दीपोद्वयते (स्व) ३.१६ |
| एवंसंधीकृतोमर्त्यो (भू) ७२.२३ | एवंसंप्रेरितो वीरो- (पू) ११६.१३ | एवंसमाकुलेब्रह्मन् (पा) ६.३६ | एवंसविलयप्राप्तः (उ) १८.११८ | एवंसुदुःखितो राजा (भू) ६७.७ |
| एवंसनापितः पापो (उ) २११.४५ | एवंसंबन्धक कृत्वा (भू) ३६.३८ | एवंसमाचितयतो च (भू) ११२.८ | एवंसर्वत्सरयावदुपोष्य (सृ) २६.१६ | एवंसुदेवमानाच्च (भू) १०६.१४ |
| एवंसनिदिशञ्जी (पा) ३०.६६ | एवंसंबोधितस्तत्रग्रात्मा (भू) ६.१ | एवंसमाराधयतोः श्रियः (उ) १०८.३० | एवंसर्वत्सरयावदुपोष्य (सृ) २६.४५ | एवंसुनियसं कृत्वा (भू) १०३.६३ |
| एवंसपिप्प्लो विप्रो (भू) ६१.३८ | एवंसंबोधिता विप्रा (भू) २५.२५ | एवंसमालोक्यमहानु- (भू) १०२.३३ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) ३८.१४६ | एवंसुन्यायवित्ति (उ) २०५.४६ |
| एवंसंपुत्रमाणास्तु ग्रात्मा (भू) ८.१८ | एवंसंबोधितोविप्रो (पा) ८६.१ | एवंसमादृश्यमहसर्गन्य (भू) ५५.२५ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.१०२ | एवंसुभिरमुष्ट (उ) ६८.१६ |
| एवंसंपुत्रकृत्वातुपाद- (स्व) ३१.१६७ | एवंसंबोधितोविप्रो (पा) ३८.१ | एवंसमुद्यतोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्रगोविन्द (उ) ६६.८ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्रगोविन्दमुमा (सृ) २३.२६ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्रादेवे (उ) २५.३० | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्रमानः (उ) २३.४.३८ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्राविधिवत्प्रति (उ) १२४.७५ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्राविधिवद (उ) ६६.७६ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्राविधिवदग्रतः (सृ) २२.७८ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्राविधिवद (सृ) २२.११७ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंपुत्राविधिवदग्रतः (सृ) २२.१४६ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसप्तदिनं तस्यापाकं (उ) १०६.४ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसप्रत्ययेजातेमत्ता (भू) ६१.४१ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |
| एवंसंप्रस्थिताराजन्- (स्व) २५.२७ | एवंसंभक्षते मांसं (भू) ६७.१०१ | एवंसमुत्तुष्टोविष्णु इन्द्र (भू) ३.२६ | एवंसस्तूयमानोदीदेवो (सृ) १४.३३५ | एवंसुतुष्टा जगत्मान (उ) ८२.३० |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| एवंस्तुत्वाहृषीकेशतमु- (सु) | १६.७२ | एवंहितेसमाख्यातो (भू) | ७.६२ | एषकुण्डलोमहातेजा (उ) | २४५.२४३ | एषपुष्कलनामात्वां (पा) | ३७.२० | एषवैशंशयोमह्यं (उ) | ४१.४६ |
| एवंस्तुवत्संगविगोविष्णुं (सु) | १७.२१६ | एवंहि दृश्यते दैव्य- (भू) | १०३.३८ | एषगच्छामितेनेतुरोणां (पा) | ४४.४० | एषपुष्कलसंज्ञोनः (पा) | ४४.३५ | एषसंवागस्वेदिलः (पा) | ११७.२२२ |
| एवंस्तुवतो रामस्य (पा) | ११६.२२२ | एवंहि वाक्यं तु निश्चय- (भू) | ३५.१५ | एषगच्छामिशमनैवेत्वा (पा) | ५६.४० | एषपोष्करकोनामप्राक्षु- (सु) | १६.५३ | एषहंतु सहस्र- उद्यतः (भू) | ५६.२६ |
| एवंस्तोत्रं समाकर्ण्य त्व- (भू) | ३२.५५ | एवंहि वैष्णवः सर्वो (भू) | ७६.१२ | एषगच्छामिसंविधेतव (पा) | १२.२३ | एषप्रतापविशदः प्रताप- (पा) | २८.८ | एषाकलमुराख्या (पा) | ७४.११३ |
| एवस्त्रास्त्रासकामेनय (उ) | २१६.११ | एवंहि सर्वजंतूनांपुत्र (उ) | २१८.२३ | एषतृप्तिगतोवह्निर्यः (उ) | १२६.२६७ | एषब्रह्माचरिष्णुश्चएष- (सु) | ३०.७३ | एषाकिमुक्तमंपुण्य (पा) | ६६.७ |
| एवंस्थितेयथाकश्चिद (उ) | ११५.७ | एवंहि सर्वगतबुद्धिभावा- (सु) | १६.१०३ | एषतुद्देवत् प्रोवतस्ती- (सु) | ११.८० | एषमन्वन्तरेभीष्मसर्गः (सु) | ६.७६ | एषागाथाविचरन्तितीर्थे (सु) | ११.६७ |
| एवंस्नात्वानतः पश्चादाच (पा) | ६५.२४ | एवक्रमेणसंप्राप्तोमंगा (पा) | २१.५ | एषसेकथितेधर्मं (पा) | ८२.५४ | एषमात्रास्वयमेकृतः (सु) | ४३.४६१ | एषाचक्रियनांपुजावाड- (सु) | ३२.१११ |
| एवंस्नात्वासमुत्तीर्य (उ) | ६६.३६ | एवमस्त्वितिगोविंद (उ) | २४६.१०८ | एषतेकथितोविप्रजानक्याः (पा) | ५६.८६ | एषमेप्रबलोभातिशुद्ध (उ) | १२६.२३६ | एषाचंद्रप्रभाचन्द्रकले (पा) | ७४.१२८ |
| एवंस्नानंस्वयाचोर्णं (पा) | ६०.२५ | एवमस्त्वितिगोविंदो (उ) | २४६.६६ | एषसेतुमंयावद्धः समुदेव- (सु) | ३८.६३ | एषमेमानसेतातसं (उ) | २१५.१५ | एषाचंद्रावलीचंद्ररेखेयं (पा) | ७४.१२३ |
| एवंस्वभ्रातृभित्तैस्तु (क्रि) | १३.१४६ | एवमाकर्ण्य वां राजा (भू) | ६७.१ | एषत्वंपरमब्रह्म (उ) | २५०.७० | एषमोहंमृजाम्नाथु (उ) | ७१.१०८ | एषाचक्षारिणीधात्री (पा) | ७४.११६ |
| एवंस्थितो न दासाच- (सु) | ३३.११२ | एवमादिबहु श्रीमत्येपा (पा) | ६३.१७ | एषत्वाविष्णुनासाधदहा- (सु) | १३.२३६ | एषराजासमर्थोपिवल (पा) | १३.४२ | एषाचरतिसर्वस्वार (पा) | ७४.१११ |
| एवंस्नात्वातुमंगायां (क्रि) | ६.४४ | एवमुक्त्वा समाकर्ण्य (पा) | ६१.४० | एषत्वांमुभुजो राजा (पा) | ६५.६७ | एषराजासमायातोमहा (पा) | ५१.८ | एषाजरासमायाताशरीरं (उ) | २१६.१४ |
| एवंस्वमांसंभुजानं (भू) | ६७.१०५ | एवमुच्चार्यतत्तीर्थे (पा) | ६५.१२ | एषदिशोवरस्तातमयादन्त (सु) | ४५.१६ | एषरामः परंब्रह्मकार्यं (पा) | २८.५६ | एषाज्ञानान्विताशक्ति (सु) | ३१.१४६ |
| एवंस्वरूपमात्मायस्तं (उ) | २०६.५६ | एवममहोपनिषदिप्रोक्तं (उ) | २२४.५८ | एषदेवोमहादेवः (स्व) | ६०.३५ | एषवः कथितोविद्रा (स्व) | ६०.४१ | एषातेस्वस्वयंशस्य वश- (सु) | ४१.११८ |
| एवंस्वर्गंयुगां श्रुत्वा (भू) | ६५.१६ | एष्वर्गदारपुत्राद्या (क्रि) | १७.८६ | एषधन्वोधनुर्वह्ण (सु) | १२.१२५ | एषवर्गमिशिरिंदैत्य (सु) | ४१.१३४ | एषादुर्विपहामायादेवैर (सु) | ४१.११६ |
| एवंहि कल्पमानस्यपिपा- (भू) | ६१.४२ | एषएवरोमंएतच्चपरमं (स्व) | २६.४२ | एषधीमान्हरिर्पाहिहिरिणा (पा) | १४.१४ | एषविप्रः पुगारामसर्वं (पा) | ११४.६ | एषादेवीकमंकीग्रहंते (सु) | ३४.६७ |
| एवंहिकुल्लैयस्तु (उ) | ३८.३५ | एषएवविधिर्दृष्टः (सु) | १०.१६ | एषनाममनुष्येषुमाहि (सु) | १२.११६ | एषविष्णुः परेशो (उ) | २४०.२१ | एषापिनभण्यत्यस्यभार्या (उ) | १११.१० |
| एवंहिचित्तमानायाः (भू) | ५२.१४ | एषएवसुतस्तेस्तुनपना (सु) | ४३.७७ | एषनारायणसरतो नरस्त (सु) | १४.२६ | एषविष्णुरितिर्यातईन्द्र- (सु) | ४०.११८ | एषाप्रज्ञामहाभागभाग्य (भू) | १२.६५ |
| एवंहितायैयसवैदेवानां (पा) | ७६.८ | एषएवाद्यभगवान्- (सु) | १५.१२४ | एषपुष्पोमहाराजसर्वतो (स्व) | १५.७४ | एषवै देवदेवस्य दत्ता (भू) | १०५.३१ | एषावहुप्रयोगेयंख्या (पा) | ७४.११४ |
| एवंहितायैयसवै (उ) | २५२.६८ | एषकाशोह्यनिद्रायव्रतं- (सु) | १३.२५५ | एषपुत्रस्य वैमोक्षतथा (भू) | ६३.२२ | एषवै देहनुजा (पा) | ६२.५ | एषप्रियव्रतानामसुव्रता (पा) | ७४.११६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|----------------------------|---------|---------------------------|--------|
| कंसस्य दृष्टि विषये (उ) | २४५.३६४ | कंकणागदकेयूर-(पा) | ८३.३८ | कट्यां वैगो नसं-(सु) | ५.३६ | कंडूयतेस्फिचोव-(पा) | ११४.४६२ | कथं गुणनिवृत्तिश्च-(पा) | १०८.६ |
| कंसायवेदयामाः (उ) | २४५.५३ | कंकणागरमंजीरै-(पा) | ७४.१८३ | कटाक्षैः कामिनीं नांते (उ) | १२५.६२ | कंडूयनंचगोश्रांस-(पा) | ६८.१८ | कथं च दक्ष दुहिता (सु) | ४.२ |
| कंसारयेनमस्तुभ्यं (क्रि) | ६.१७६ | कंकालशैवपाशंड-(उ) | २३५.३२ | कटाक्षैर्नू पुरागवैः (पा) | १३.१६ | कंडूयानिनापेन यस्तुखं (भू) | ६६.११३ | कथं च भगवान् विष्णुः (सु) | १६.२३ |
| कंसारिरुद्रसेनादि (उ) | ७१.२५४ | कंकालानां हि सनैषां (भू) | २७.११ | कटाक्षवत्कपिपत्रेषु-(पा) | ७६.५० | कण्वस्याश्रमके वाहं-(पा) | ६४.७३ | कथं च भूमी सवेशः (उ) | ५३.१० |
| कंसामुरवत्रे वृत्ते-(उ) | १४१.५ | कच्चिदक्षयनघन्नां (उ) | १२५.२१ | कटिपृष्ठस्थिते वस्त्रे (उ) | ६४.६७ | कनमः स्यादयंलोक-(सु) | ३६.६४ | कथं च मित्रा वरुणो-(सु) | २२.२२ |
| कंसेनताडितानाथ (ब्र) | १३.१४ | कच्चिच्चित्ते प्रवेष्टुं च (स्व) | २२.५४ | कटु काटि न जायेत (भू) | ६७.५६ | कतिचिद्विषांतन-(क्रि) | १७.२३७ | कथं चित्स्थितिमप्या-(पा) | २७.२० |
| कंसोपि दृष्ट्वा गोविदं(उ) | २४५.३६१ | कच्चिच्चित्तेप्रवेष्टुं (उ) | १२८.६३ | कटु निवृत्तकपायाश्च (भू) | ६७.४५ | कतिचिद्विषांतन-(उ) | २१७.१६ | कथं चिदस्यपापस्य (उ) | १२६.४७ |
| कंसोमहद्भयंतीव्र-(उ) | २४५.३७७ | कच्चितपः समृद्धवः (पा) | ११६.२६७ | कठोर धाम्नेभरणीषु (सु) | २५.१२ | कनिचिद्रासेरमार्गं-(उ) | २०२.१८ | कथं जयति ते नयैवयं (भू) | १०.७ |
| कंसोहंसतोतां दृष्ट्वा (ब्र) | १३.४८ | कच्चित्तेनिर्दयं चेतः (स्व) | २२.५२ | कठोरहृदया यत्र-(पा) | ५.३६ | कनिचिद्रासेरमार्गं-(उ) | २०३.६६ | कथं जहर्गमभुक्काश्य (पा) | ४४ |
| क एष इत्येव्योगिनि (पा) | ११४.७ | कच्चित्तेनिर्दयं चेतः (उ) | १२८.६७ | कण्णमात्रं वहेद्यस्तु (क्रि) | ११.१४२ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | ४३.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कः कस्य कुर्वते कज्जाभे (भू) | ८.५४ | कच्चित्सर्वं सुखोत्तरम् (पा) | ११६.२६८ | कण्ठमागंति ते सर्वं (भू) | १५.१५ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कः कस्य नास्ति संसारे (भू) | ४१.५६ | कच्चिद्विनाशे मुखराः (पा) | १४.२ | कण्ठेगृहीत्वाभितमङ्के-(सु) | ४३.१३२ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कः कस्यापिनसंपर्कं-(पा) | ६४.४० | कच्चिद्विनाशे मुखराः (उ) | १२८.६४ | कठे घटाशतं वद्धवा-(उ) | १८.४७ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कवभोगसिद्धिमहती-(पा) | १७.३ | कच्चिन्मप्रत्ययोस्मासुक (स्व) | २२.५३ | कठे तस्याः स देवेश (भू) | १०४.१४ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कववातः पुष्कलोहृत्वा (पा) | २८.२८ | कच्चिन्मप्रत्ययोस्मासुक-(उ) | २८.६२ | कठे तुलसिजामालां (उ) | ७६.१२ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कक्षत्रुघ्नोवाहुपालः (पा) | २८.२६ | कच्चिन्मप्रत्ययोस्मासुक-(पा) | ६.३ | कठेन कोकिला-(उ) | २०६.७ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कक्षावश्वः रेननीतः (पा) | ४०.२ | कज्जलं वमते पश्चात्तल (भू) | ८६.६८ | कठे मालाचयस्तेन धारये-(पा) | ७६.६७ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कक्षयोर्वैगयोग्य (उ) | ५.८५ | कज्जलं वमते पश्चात् (पा) | ८४.८२ | कठे मालाधरोयस्तु (उ) | ८२.७ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कक्षांतराद्विनिष्क्रम्य-(सु) | ३७.१४६ | कटकं निदिदेशासी-(पा) | ६५.१३ | कठे मालाधृतायेन (उ) | ७६.१३ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |
| कङ्कणस्वरशोभाहृया-(पा) | ५५.३० | कटकी वृक्षापास-(उ) | ६२.१५ | कठेपुत्रद्विपाशा-(पा) | १०१.२३ | कनिचिद्राहता कोला-(भू) | २४.५५ | कथं जानः समाकध्व (भू) | ८६.२६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६२

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| कथंतेभुजतेभोगाश्च (उ) | १२६.४१ | कथं पाप निवृत्ति-(पा) | ११४.४८३ | कथंमेभवितामोक्षः (सृ) | १८.२७३ | कथं वेनोगतः स्वर्ग (भू) | ३६.१ | करमाराधनतस्या-(सृ) | २६.१४ |
| कथंत्रिपुरुषाज्जातोह्यर्जुनः (सृ) | १४.१ | कथं पुरिहरेगतासं (पा) | १०१.४७ | कथं यज्ञः कृतस्ते (सृ) | १५.२ | कथं शापस्तु ऋषिणा-(उ) | १५४.५८ | कथमाराधयेदीक्षं-(सृ) | ४३.३१८ |
| कथंत्रिभुवनेनः सर्वपा (सृ) | ३१.४८ | कथं पूर्वमयोध्याया (सृ) | ३३.१४३ | कथं यज्ञो हि देवेन (सृ) | १६.३ | कथं सतीदक्षसुतादेहं (सृ) | ५.१ | कथमारोग्यमैश्वर्यमनंत-(सृ) | २३.३ |
| कथंत्वं राक्षसोमह्यं (पा) | ११५.१७ | कथं पृथ्वी कथं (सृ) | २.८१ | कथं यिष्यामि राजेन्द्र (उ) | ६२.५ | कथं सवर्गाधिमएष-(पा) | ६२.६ | कथमाहूयतेदेविपाका-(पा) | ८३.३० |
| कथंत्वं समरेयोद्ध मागतो-(पा) | ४२.५ | कथं प्रसादनीयास्या (पा) | ६६.५८ | कथं युद्धं प्रकर्तव्यं (पा) | ४०.५० | कथं साभविनादज्ञेसम-(सृ) | १७.१२५ | कथमिद्रसमः पुत्रोममस्यात्-(भू) | ३१.६ |
| कथंत्वमिहमंप्राप्तो-(सृ) | १७.३४ | कथं ब्रह्मवचनम् (पा) | ११६.६२ | कथं यूयंभयत्रस्ताः (पा) | ४४.५३ | कथं सा लभते (भू) | ८६.४६ | कथमिहृषिपराभवं (उ) | ७६.३१ |
| कथंत्वमेवकुरुषे (क्रि) | १२.६६ | कथं भजामितं (पा) | ७२.१०१ | कथं योगेनतत्प्राप्ति (स्व) | ४६.१६ | कथं सा लभते मोक्षं (भू) | ८६.४८ | कथमुक्तं लःनंदास्यसि (पा) | ११६.८३ |
| कथंत्वयानिदिता-(पा) | ५८.३० | कथं भवान्मनस्वी-(पा) | ७५.२२ | कथं राजन्निद्रंयुषेत्वं-(पा) | २६.४२ | कथं सुरान्परित्यज्य-(उ) | ६.२३ | कथमुपहृतघटा-(पा) | ११७.२३२ |
| कथंत्वयाश्वत्थव-(उ) | ११५.२१ | कथं भागवतालापात्त-(पा) | १६४.६० | कथं रामेण विप्रर्षे-(सृ) | ३८.१ | कथं स्नानं च कि (उ) | ६२.४ | कथमेकादशाध्याय (उ) | १८५.६३ |
| कथंदत्तवनीधर्मकथं (उ) | १२७.५६ | कथंभोक्ष्याम्यहं गत्वा (भू) | ४६.२७ | कथंरेवा जल स्पृशद्-(स्व) | २२.४ | कथं स्यान्मम चैवेयं (भू) | ७७.४४ | कथमेकार्णवे धूयेनवटे-(सृ) | ३६.६ |
| कथंदानं कथं स्नानं (उ) | ४५.३४ | कथंमतिस्तेऽवगतान्य-(पा) | १६.१० | कथं लब्ध्वाऽमातत्र-(सृ) | ४२.४ | कथं विद्मर्हंसेदेवंबध्मो-(सृ) | १७.६५ | कथमेतद्विजानीयात्वा (उ) | २२१.२५ |
| कथंदेव पदप्राप्ति-(उ) | २०५.६ | कथं ममभयाच्चेति-(उ) | ११.४४ | कथं लिगाचनं चाद्य (उ) | १५४.४१ | कथं हि धन मायाति-(भू) | १२.३० | कथमेतद्विमुह्यामः (पा) | ८७.२ |
| कथं न तेत्रपाज्जाता-(सृ) | १७.१३६ | कथं मां त्वं विजा-(भू) | ५०.५५ | कथंलोमशवाक्येन (उ) | १२८.१८ | कथं तो मत्र क्रियते-(सृ) | १७.४१ | कथमेतद्विमुह्यामः (पा) | ६२.२ |
| कथं नायासिक्किवात्र-(उ) | ११६.११ | कथं मांदुःख दुःखार्ती (उ) | १३.४४ | कथं ववर्तुमनं शक्तः (पा) | ११४.४७८ | कथमत्र प्रकर्तव्यं (पा) | ५.१३ | कथमेतादृशत्वं (पा) | ११२.४२ |
| कथं नारायणो स्माकं (सृ) | २३.६६ | कथं मांप्राणतः (पा) | ५६.४३ | कथं वरे द्विजैर्जुष्टे-(पा) | ६३.५३ | कथमधुवमतेद्वि कथं (उ) | ६०.३४ | कथमेतादृशहृमि-(पा) | ११६.२३ |
| कथं निरयनिर्मुक्तिर्जीवा-(पा) | ३०.६७ | कथं मे इन्द्र सदृशः (भू) | ३१.२ | कथं वाजायतेमुक्ति (उ) | १८२.१३ | कथमन्नंज्ञादितुं (व) | २३.२६ | कथमेने भविष्यति मां (भू) | ४०.३६ |
| कथं नृपोदयाहीनो (पा) | ६३.१० | कथं मे जायते सिद्धिः (भू) | ६०.१ | कथं वा भगवान् (व) | १३.१० | कथमप्रदानं चकर्तव्यं (सृ) | २२.४६ | कथमेनेमयापापा- (सृ) | १३.३४१ |
| कथं पयंसमुद्भूत ब्रह्मा-(सृ) | १.२४ | कथं मे जायते स्वर्गः (भू) | १२२.३१ | कथं विगृहीतं रूपं (उ) | २५५.६ | कथमश्रूणि सा (भू) | ११६.४२ | कथमेनेमयापाताः तोयं (पा) | १०५.४२ |
| कथं पातक संघा-(पा) | ११५.१ | कथं मे दृश्यते तस्या (भू) | ५३.२३ | कथं वि प्रायते (व) | २६.२७ | कथमस्यांसुधोराया-(उ) | ६६.३६ | कथमेनं हनिष्यामि- (भू) | २३.४० |
| कथं पाशं महावल्गं (सृ) | ३६.३ | कथमेनभवेदवमेतद-(सृ) | १४.१५६ | कथं वृक्षत्वमापन्ना (उ) | ११५.२४ | कथमापदिव्यधोर (उ) | १८३.५५ | कथमेनं हनिष्यामि-(पा) | १०७.३७ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६३

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------------|--------|
| कथमेवविधं वर्म (क्रि) | ८.३७ | कथयस्व प्रसादेन के (भू) | ८६.४७ | कथयामितवाग्नेहं कथां (उ) | ५७.६ | कथयिष्यामितदह-(स्व) | ११.८ | कथाविशुद्धानरनाय-(पा) | ८५.३६ |
| कथमेवामहापुण्या नदी-(स्व) | १३.३ | कथयस्व प्रसादेन तरय (भू) | ८८.२६ | कथयामितुत्सर्वयत्र-(सु) | ३८.१६४ | कथयिष्यामितेवस्त (स्व) | ४१.३ | कथासर्वीक्षियं प्रोक्ता (स्व) | ४८.१ |
| कथमेवाविमुच्येत्-(पा) | ६३.२ | कथयस्व प्रसादेन भवन (उ) | ५८.१६ | कथयामिनसंदेहो-(उ) | ३४.२८ | कथयिष्यामितेवस्त (स्व) | ४३.३ | कथितं तत्फलं पुण्यम् (त्र) | ७.७ |
| कथमेवासमुत्पन्ना (उ) | ६६.३ | कथयस्वप्रसादेनममाग्ने-(उ) | ५८.१ | कथयामिपुरो वः (पा) | ३३.५७ | कथयिष्यामिमाघस्य-(उ) | १२५.५ | कथितं तेन रुद्रेण (सु) | २०.४४ |
| कथयध्वमहाभागा (स्व) | १४.७ | कथयस्वप्रसादेन- (उ) | १२८.२२१ | कथयामिमहापुण्या (उ) | ५३.२ | कथयिष्यामि राजेन्द्र (उ) | ४३.४ | कथितं ते प्रियतमे-(पा) | ६६.५७ |
| कथयंतमत्रिवृद्धान्-(पा) | २.१२ | कथयस्व प्रसादेन सर्व-(पा) | १७.६५ | कथयामिमहाप्राज्ञ (उ) | १७४.१० | कथयिष्यामिराजेन्द्र (उ) | ४०.२ | कथितं देवदेवेन (उ) | १२४.८६ |
| कथयंतश्चलोकार्त्वा-(सु) | ३७.१४३ | कथयस्वममाग्नेत्वं विस्त-(भू) | १२.७२ | कथयामिमहाभाग (उ) | ४५.७ | कथयिष्याम्यहं राजन् (भू) | ८५.३ | कथितं नैव वृत्तांतं (भू) | ८६.५४ |
| कथयंतु भवतो मे पुत्र-(सु) | ७.६ | कथयस्वमहाप्राज्ञ (त्र) | ५.१ | कथयामिमहीपाल (उ) | ५७.२ | कथां कथयमेविप्रहीन-(उ) | १८८.३६ | कथितं नैव वृत्तांतं (भू) | १७.५४ |
| कथयंतु महात्मानं यदि (भू) | ४१.३८ | कथयस्वमहाप्राज्ञ (त्र) | ७.१ | कथयामिरहस्यते (उ) | १२८.२२२ | कथांतेतुतस्तेपां (उ) | ८१.११ | कथितं माघमाहात्म्यं (उ) | १२८.१ |
| कथयंतौ ब्याचित्राः (क्रि) | २५.१३ | कथयस्वमहाप्राज्ञ (त्र) | १४.१ | कथयामिसमासेन (त्र) | ५.६ | कथांतेपुनतस्तेपां (स्व) | १.६ | कथितं मृगशावाशि-(उ) | ८२.३२ |
| कथयन्निजदुःखानि (क्रि) | ८.६१ | कथयस्वमहाबुद्धेसर्व-(पा) | ३५.५४ | कथयामिसमासेन शृणु-(सु) | १६.६० | कथां शृणुहरेर्मत्रं (क्रि) | १७.७१ | कथितं वामनस्मैव-(सु) | ३६.१ |
| कथयस्व कथामेतां (भू) | ११३.२८ | कथयस्वमहाभाग (त्र) | १५.१ | कथयाम्यत्रयद्गुप्तं-(उ) | २२०.१७ | कथां श्रुत्वाविधानेन (उ) | ७७.५५ | कथितं मिदमया (उ) | २०६.६२ |
| कथयस्व चिरंमह्यम्-(त्र) | ११.४८ | कथयस्व महीपाल (पा) | ४७.३६ | कथयाम्यहमत्रापि (भू) | ७६.५ | कथां श्रुत्वाविधानेन (पा) | ३८.२ | कथितं स्तेनसंदेश (उ) | ५८.१५ |
| कथयस्व प्रसादान्मे (भू) | १००.११ | कथयस्व मुनेसूत (त्र) | २१.१ | कथयाशुकिमर्चय- (पा) | २८.१७ | कथा कथयतान्-(पा) | ४६.४० | कथितं स्तेनपूर्वण-(सु) | ४०.१०७ |
| कथयस्व प्रसादेन (उ) | ५७.३ | कथयस्व मुनेसूत (त्र) | २३.१ | कथयाशुचिचार्यवत-(पा) | ३३.२० | कथाप्रज्ञाप्रभावेन पूर्वमेव (भू) | ११.३ | कथिताऋषिसंवेभ्योह्य (स्व) | १७.१६ |
| कथयस्व प्रसादेन (उ) | ५६.१ | कथयामास जामात्रे-(पा) | ३६.३६ | कथयिस्वा नारदं तु (त्र) | ४.५१ | कथा प्रमं गेयात्रायां (पा) | १०६.१० | कथितानिचिद्यन्नि-(उ) | १५१.३६ |
| कथयस्वप्रसादेन (उ) | ६०.१ | कथयामासवृत्तां (उ) | १४.१७ | कथयिष्यति तदो-(उ) | २०२.१६ | कथाभागवतस्यापि-(उ) | १६५.३२ | कथिताऋषिस्तत्पूर्व-(सु) | १५.१६२ |
| कथयस्वप्रसादेन (पा) | ६२.५६ | कथयामासहृष्टा-(उ) | ३०.१०१ | कथयिष्यति विश्वा-(सु) | २३.१८ | कथायां जगदीशस्य (उ) | १६८.८४ | कथिता नैव व्याकृष्ण (उ) | ४१.१ |
| कथयस्व प्रसादेन (उ) | ७१.६५ | कथयामिगुरोर्तुभ्यं (उ) | २१०.२३ | कथयिष्यामि किदुष्टे-(त्र) | ११.४६ | कथावसाने कत्तव्यं (उ) | १६८.२७ | कथिता संभ्रमणं-(उ) | १२६.६१ |
| कथयस्व प्रसादेन (उ) | ७१.६२ | कथयामितवाग्नेहं (उ) | ५२.५ | कथयिष्यामितकर्म-(उ) | १२६.१७४ | कथावसाने भगवान् (उ) | १६७.१०१ | कथिते तद्यथावृत्ते ब्राह्मणां-(सु) | ४७.३४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| कथितेष्टमुत्कंठात-(पा) | ७४.१४ | कदाचिज्जाह्नवी-(पा) | ५३.३७ | कदाचित्समयेरामः (पा) | ५५.७ | कदाचिद्देवमिवजा-(पा) | १५.८ | कदाचित्लभतेवापित-(क्रि) | १७.२१६ |
| कथितोविघ्नाख्यस्त-(सु) | ४६.६३ | कदाचित् कामिनी (उ) | १८४.५६ | कदाचित्सूरयूतीरे-(पा) | ७५.२० | कदाचिद्देवयोगाच्च-(उ) | १३५.१२२ | कदान्व मयात्याज्यं (भू) | ४१.१० |
| कथितो वै सुमति-(पा) | ६६.१ | कदाचित् कालयोगे (उ) | २०.१३ | कदाचित्सर्वकुमारान् (उ) | २५२.६१ | कदाचिद्देवयोगेन (उ) | ७१.७७ | कदापिचेत्पस्यापिन (क्रि) | ५.४० |
| कथ्यतां पुनर्गार्दूल-(उ) | १६६.६ | कदाचित् कार्तिकेमासि (उ) | १०६.५ | कदाचित्सर्वेयादवा (उ) | २५२.६८ | कदाचिद्देवयोगेन (उ) | ७७.१८ | कदापिचनं दत्तं न मया (भू) | ५२.११ |
| कथ्यतेतुमया वि-(पा) | ६८.११२ | कदाचित् क्रियते पापं (सु) | ४६.१५२ | कदाचित्सभासां (उ) | ४.४६ | कदाचिद्देवयोगेन (उ) | १६१.७ | कदामानुषामस्मभ्य (क्रि) | १८.२६ |
| कथ्यतेयदितस्कर्म्म-(पा) | ७४.१६८ | कदाचित्तिनी (क्रि) | १६.२० | कदाचित्सारिकाभेकां (उ) | १८४.६६ | कदाचिद् द्विजगार्दूल (क्रि) | २३.३६ | कदामेभारतेवर्जन्म-(सु) | ३४.२६६ |
| कथ्यते गतयश्चित्रा (भू) | ७७.११३ | कदाचित्तादृश कृत-(पा) | ११६.५७ | कदाचित्सुकृतं कर्म (पा) | ८७.१२ | कदाचिद्धुनपापायास्ति-(पा) | ६७.५८ | कदावेवप्रहारेणक्षेत्रे (क्रि) | १८.२७ |
| कदम्बकुञ्जकजातीशस्ता (सु) | २१.५० | कदाचित्तुलसी दुःखेः (क्रि) | २४.१७ | कदाचित्सुकृतं कर्म (पा) | ६२.६ | कदाचिद् ब्रह्मलोकस्थं (उ) | ८०.७६ | कदासां दनुयोर्भागं (पा) | १४.३० |
| कदम्ब कुमुदैरककुसुमै-(पा) | ११०.३१ | कदाचित्पुननासोपि-(उ) | १७५.३७ | कदाचित्सुरतस्यांते (उ) | १०३.२६ | कदाचिद् ब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) | १५.२२ | कदासां दानोपेतस्तः (भू) | १०३.२६ |
| कदम्ब खड्गनन्दवनं (पा) | ६६.१६ | कदाचित् पर्यटन्-(उ) | १२६.२५ | कदानित्स्वर्गतः (उ) | २५१.७ | कदाचिद्यमुनाकूले-(पा) | ७४.४ | कदास्याभरणोभूत्वा (सु) | १३.३८६ |
| कदम्ब पुष्पमालाभि-(क्रि) | १३.२३ | कदाचित् पितरोनैव (उ) | १२६.१०३ | कदाचिद्वेदे वेदे (उ) | २४२.१६५ | कदाचिद्यस्मृतांस्मि (क्रि) | १६.८३ | कदाह्येवपि मे मतो (भू) | १०६.६१ |
| कदम्बपुष्पस्यजं (सु) | १५.४७ | कदाचित् प्राप्त-(ब्र) | १६.२४ | कदाचिद्विषाध्येयम् (स्व) | ५३.७८ | कदाचिद्द्वारमुखाया (क्रि) | १५.३० | कद्रूस्वभानुनिस्तस्ता (सु) | ६.३५ |
| कदलीस्तंभसंयुक्तं (उ) | १६८.११ | कदाचित् प्राण (क्रि) | ६.८१ | कदाचिद्विशयार्थितिर्यष्टु-(पा) | १६५ | कदाचिद्विपिनगंतु (क्रि) | १२.७८ | कनखलप्रहार भूषितां (सु) | ४५.८२ |
| कदाचिच्चकथं चिच्च (उ) | १२६.१३३ | कदाचित् प्राण (क्रि) | २०.४३ | कदाचिदात्मवाधोरः (उ) | ८०.२६ | कदाचिद्विष्णुदासंथ (उ) | १०६.१ | कन काल कृता इत्या (सु) | २७.१५ |
| कदाचिच्चन्वरेतेन (उ) | १८३.२७ | कदाचित्प्राण्यपुण्या-(क्रि) | ७.१७ | कदाचिदासनैर्ये (उ) | १७५.४ | कदाचिद्वैद्यकुलजा (ब्र) | ११.२४ | कनिष्ठ मद्र देवस्यं (सु) | १५.१५२ |
| कदाचिच्छिद्ये (क्रि) | २०.६१ | कदाचित्प्रपण्यामास (उ) | ५.४ | कदाचिदासकैलासं (उ) | १८५.१८ | कदाचिद्व्याकलस्यत्वा (उ) | १८७.६ | कनिष्ठाङ्ग निभां (सु) | ५३.६७ |
| कदाचिज्जन्मचासाद्य (ब्र) | ७.३४ | कदाचित्संसदोमध्ये (पा) | ५.४८ | कदाचिदास्थानगतः (सु) | २१.६ | कदाचिन्मभजेदुष्ट (क्रि) | १७.२१८ | कनिष्ठाङ्गलो यज्जं (पा) | ८०.१७ |
| कदाचिज्जन्मभूमौसा (ब्र) | २०.१० | कदाचित्सगजः स्नातुं (उ) | ११०.१६ | कदाचिदगतउद्यानं (सु) | १०.७३ | कदाचिन्मनमानां (पा) | २०.५२ | कनिष्ठाङ्गो प्रदस्तां (सु) | १०३.२४ |
| कदाचिज्जन्मसंप्राप्य (ब्र) | २६.१० | कदाचित्सद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १६.१३ | कदाचिद्वर्णं तत्र (उ) | १४.८ | कदाचिन्मनुरुधत्त (पा) | १४.४६ | कनिष्ठ कांचन देव (सु) | २०.४१ |
| कदाचिज्जरा साध-(उ) | ८६.१६ | कदाचित्सद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १६.५२ | कदाचिद्वर्णं तत्र (क्रि) | १७.२०१ | कदाचिन्मन्यसेगत्वा (सु) | १८.३२६ | कनीयस्वस्वदेव गता (भू) | ४५.१३ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|--------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| कन्ते कामं करोम्यद्य- (सु) | ३४.१२८ | कन्यादानंतुकातिक्रियां (सु) | २०.१३६ | कन्याश्रमं समासाद्य (स्व) | १२.६ | कपालपाणिर्देवेशः (सु) | १४.१६२ | कपिः पाशुपतैस्त्रैर्व- (पा) | ५२.३० |
| कन्ददामिचवैकरमं (सु) | १४.१७८ | कन्यादानं भूमिदानं (पा) | ११.४४ | कन्याः समागत्य महा- (पा) | १३.६४ | कपालपाणिं संप्रेक्ष्य (सु) | १४.१३ | कपिभाषितमाकर्णं (पा) | ४७.२१ |
| कन्दपुष्पश्चवकुलं (क्रि) | १३.३० | कन्यादानं विशेषेण (उ) | १३६.१५ | कन्याः सहस्र शोरम्याः (पा) | ३.६ | कपालमालाविपुलां- (सु) | ४३.४०६ | कपिलं चैव दुवासं (उ) | २३५.२७ |
| कन्दमूलफलवर्षित- (सु) | १६.१६६ | कन्यादानात्परं दानं (सु) | २०.१३७ | कन्याः सहस्रशोरम्या (पा) | १३.५४ | कपालमालिनीचैव (उ) | १६८.३२ | कपिलयोद्धान्दुवाहं (उ) | ६४.५० |
| कन्दरैर्लेपनैः कूट- (भू) | १०१.२१ | कन्यादिव्योपेधमन्नं (उ) | १२६.२२३ | कन्यासार सरस्वती (उ) | १५६.१० | कपालमोचनं तीर्थं (सु) | १४.१८४ | कपिलश्चमहिषुयो | ४५.१८२ |
| कन्दर्पं कोटि संकाशं (भू) | १०५.५२ | कन्यादुहितरं स्वस्य (उ) | २४७.११ | कन्या सैन्ये नमहता- (सु) | ३१.६६ | कपालमोचनं तीर्थं- (स्व) | ३७.१८ | कपिलश्चामुग्निश्चैव (पा) | ६५.३० |
| कन्दर्परूपं प्रपच्चेन (भू) | ७६.१७ | कन्यामभिलपन्ति (सु) | ४.६५ | कन्यास्त्री णसहस्राणि (स्व) | १३.३२ | कपालोचनं तीर्थं (उ) | १३६.५ | कपिलः स्यूलपीनांगो (भू) | ४३.३ |
| कन्दर्पस्य जगन्ते (उ) | ४.४५ | कन्याया वरयोग्याया (भू) | ६७.६४ | कन्यास्वभोक्तुर्युत्- (पा) | ३३.३६ | कपालमोचनं तीर्थं सर्वं (स्व) | २७.२७ | कपिलां पुजयेद् भक्त्या- (सु) | २१.३०७ |
| कन्दर्पयिनमोगुह्यं (सु) | २१.२८ | कन्यायां प्रच्छन्ति (स्व) | ३८.५५ | कन्याहिं कृपणाशोच्या- (सु) | ४३.१५५ | कपालरोगिणः (पा) | ६६.६६ | कपिलां ब्रह्मणोदवा (उ) | ६४.४८ |
| कन्दर्पयिनमोमेढ्रमा (उ) | ६६.४८ | कन्यारत्नं च रत्नं (क्रि) | ५.१६२ | कन्ये मज्जन्मण्डलं (क्रि) | ५.१३८ | कपालरोगिणः सर्व- (भू) | ५३.१०१ | कपिलां सहस्रं च वाजि- (स्व) | २८.१० |
| कन्दामूलान्मुपधत्ति (भू) | ४२.३७ | कन्यारत्नं ददौ तस्मै (उ) | २४६.३३ | कन्ये मां वनामाहं (क्रि) | ५.१०० | कपालशिरोहस्तैश्च (उ) | ६६.१३ | कपिला च विगल्या च (स्व) | १३.४५ |
| कन्यां ददौ दिवोदम्भ (पा) | ६२.४१ | कन्यारूपेण सपत्नीं (पा) | १७.२८ | कन्ये विष्णुपुत्रेण मे (क्रि) | ६.१६ | कपालस्थः सतत्रैव गृह्यते (सु) | १४.३४ | कपिलानां नर वप्रा- (स्व) | २४.७ |
| कन्यां पुण्येन योदयाद (उ) | ४८.१७ | कन्यावरं प्रमाणाया- (उ) | ११८.६ | कपदिनं तत्वापरतः (स्व) | ३५.३५ | कपालिनं सख्ययां (उ) | ७१.४८ | कपिलानां ह्यस्मिन्नात्वा (स्व) | ३२.४३ |
| कन्या ऋद्धिं चय (स्व) | २१.१४ | कन्याव्रतमासाद्य (स्व) | ३८.५४ | कपदिनः कुंडलिनः (पा) | १७.७६ | कपालीभिश्च कोनानां (सु) | ४३.३२१ | कपिला रेखयाः संगे- (भू) | २०.१५ |
| कन्याकण्ठमुनेः (उ) | १५२.३ | कन्याविक्रयिणश्चैव (क्रि) | २६.२६ | कपदिना च ते उक्ता- (नृ) | १७.३७ | कपालेष्टिमावेष्ट्य विभि (सु) | १४.२१ | कपिलाश्रमं केदारप्रभा- (उ) | २२२.६७ |
| कन्या कोटिं सहस्राणां (व) | ४.१२ | कन्याविक्रयिणो नास्ति (व) | २४.२३ | कपाटोत्पादनाधी (उ) | २०६.१५ | कपालेष्टिमावेष्ट्य विभि (सु) | १४.२६ | कपिलाश्चरचविश्यातो (सु) | ८.१३८ |
| कन्यागते यथाऽदित्ये (स्व) | १८.७१ | कन्याविक्रयिणो ब्रह्मन् (व) | २४.२७ | कपाटो सुखोदवा (उ) | २४५.३५७ | कपालेष्टिमावेष्ट्य विभि (सु) | १४.२६ | कपिलासहस्रसर्व- (स्व) | ३८.६ |
| कन्याचिन्तित्वासां (सु) | ३.१६२ | कन्याविक्रयिणो लोभात् (उ) | १६३.३४ | कपालं बुधमूलानि- (सु) | १६.३२४ | कपालेष्टिमावेष्ट्य विभि (सु) | १४.२६ | कपिलोदुर्गश्चैव (सु) | ६.७३ |
| कन्यास्ते देवलोकां (सु) | ६.२५ | कन्याविक्रीस्वसा वि (उ) | १२४.८६ | कपालकुंडमाख्या- (उ) | १३६.६ | कपालेष्टिमावेष्ट्य विभि (सु) | १४.२६ | कपिलो नरसिंहश्च पृथु (उ) | १२०.६० |
| कन्यादानकृतो नास्ति (क्रि) | २०.१३३ | कन्याशूर्पणखा (उ) | २४२.१६ | कपालकेशभस्मा- (उ) | २३२.२७ | कपित्थः सिन्धु- (उ) | ५.१ | कपिः समागत्य महा- (पा) | ४५.२० |



श्रीषष्ठमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|---------|-----------------------------|--------|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------|---------|
| कपींद्राजुहावाथसुरथ-(पा) | ५२.२ | कमलामेवतामिने-(सृ) | १६.१६६ | करकीयाभिमानिन्यस्त (पा) | ८३.६ | करांतरमथोत्पाद्य (पा) | ११२.१२२ | करिष्यामि यथा-(सृ) | २३.३५ |
| कपींद्रस्तद्वलंबेस्य (पा) | ५१.६६ | कमलायाश्चोदरे तु (ब्र) | ५.३१ | करकेणुताम्रेणतोयं (सृ) | १६.५० | करांतोदरहृत्कंठव (पा) | ११०.४४ | करिष्येकुंडलमहं (उ) | २०.८.१६ |
| कः पुंडरीकोधर्मता (उ) | २१८.३ | कमलासहितोयोगी-(पा) | १०५.३६ | करणेचापिलग्ने च (पा) | ११५.२२ | कराभ्यांस्त्रिरावता-(उ) | १४६.३ | करिष्येतव साहाय्य-(भू) | ३६.५ |
| कः पुमान्काच सोयो-(उ) | १८३.५६ | कमलैः कार्तिके (क्रि) | १३.६१ | करञ्जैः कोविदारै-(उ) | १२८.१७२ | कराभ्यां वाद्यमानस्तु (भू) | २१.२५ | करिष्येनात्र संदेहो (भू) | ७.७५ |
| कपेत्वयामहत्कर्मकृतं (पा) | ३४.४८ | कमलैः शतपत्रैश्च-(भू) | २४.४० | करतालद्वयं दत्वाभि-क्रि | २४.४२ | कराम्बुपानमम्योयं (पा) | ११४.१५० | करिष्येनियंतधर्मं (सृ) | ३५.३३ |
| कपेश्चित्तं परि-(पा) | ११४.३८० | कमाश्रिता महाभागे (भू) | ८८.१३ | करतालादिसंघानं (स्व) | ५०.१५ | करावलंबनंतस्य (उ) | १८४.१० | करिष्येहं जगन्नाथ (उ) | ३४.५५ |
| कपोतमोदेहिमामं (उ) | १६२.१२ | कम्पनंशातनं चैव (सृ) | ४५.१०६ | करतोयाममासाद्य (स्व) | ३६.३ | करावलं वनदेहि-(उ) | १७४.७३ | करीराणितथाचाम्या-(सृ) | १७.११४ |
| कपोतरामातस्यापि-(सृ) | १३.४६ | कम्पति गिरय-(उ) | ११.४ | करद्वयेषूत्कुशः (पा) | ११६.४ | करावृत्तलधारिणैरुद्रा-(सृ) | २२.१४४ | करीवचरण ग्राहं (सृ) | १२.३४१ |
| कपोतवृत्तिसचकारयत्-(पा) | ११७.३१ | कम्पतिसर्वपापानि (उ) | १२६.३१ | करं कवाहिनी (पा) | ११३.३ | करिणः पुष्करैः (पा) | ५६.४६ | करीपिगीचित्रवहां-(स्व) | ६.१४ |
| कपोतार्यस्वमासा (पा) | १०२.२० | कम्पयतीमहीभावं-(पा) | ६०.१३ | करंदन्वातुयोगमर्त्यो (ब्र) | २६.१२ | करिष्यतिऋषायहिदग् (पा) | २१.१८ | कहणन्नुनदादागत-(पा) | १०५.१५८ |
| कपोलफलकोत्तीर्णं (उ) | १६०.७ | कम्पयतीहरिमिश्रयानं-(सृ) | ४०.२४ | करपद्मवृता देवी (उ) | २२६.१४५ | करिष्यति च यत्पापं (भू) | १२४.११ | कहणान्मुदयं नाम-(स्व) | २०.४६ |
| कपोलयोः कल्किनाथं (उ) | ७८.२० | कपिताः शीततोयेन-(पा) | २४.४५ | करपाद शिखामूर्त्रे (उ) | २०१.१३ | करिष्यति तदा चाहं (सृ) | १७.१८ | कहणोद्भूत्याच वलि (उ) | ५३.२२ |
| कफभूत्रायमशुचिः (भू) | ६६.७४ | कंबलानि च रत्नानि (उ) | ११८.३२ | करम्बोपिमहाराज-(पा) | २२.४७ | करिष्यति त्रिजाः सर्वै-(सृ) | १७.१४७ | करेणतत्र जग्राह-(सृ) | ४४.१६७ |
| कबंधावस्थितः (सृ) | ४१.२८७ | कंबलाश्वतरिनागी (स्व) | ४३.२८ | करयोः सर्वशुद्धीना-(पा) | ७८.४ | करिष्यति शुभान् (सृ) | ३१.१२६ | करेणादायतांमाला-(उ) | २३.१८ |
| कबंधो निहतः (उ) | ४४.८ | कंबुकातिधर ग्रीवा-(पा) | ३५.६४ | करबालेघृतेस्पृष्टे-(पा) | ६७.५० | करिष्यते सर्वजनैः (उ) | २१४.२२ | करंगौवकर गृह्यं (उ) | २४५.३५३ |
| कमंडलुधरोदेवः (सृ) | ३८.१६७ | कंबुग्रीवं वृत्तमास्यं (भू) | ८६.८८ | करवीरपुरेह्यासीत् (ब्र) | १६.१५ | करिष्यत्यश्वमेधं हि (पा) | १३.३६ | करेणोद्भूत्यवे-(सृ) | १२.१२२ |
| कमनीय च ललीला- (सृ) | ४३.५१३ | कंबु तीर्थनरः (उ) | १४२.१ | करवीरेणरक्तेन (सृ) | २१.२३६ | करिष्यति महाराज (भू) | ६८.३६ | करोति कर्तृभूतो-(पा) | ६४.१३७ |
| कमचं रसिगीर्वाणं (उ) | १६०.२४ | कंबोतिकेशरं-(स्व) | १८.६३ | करवीरैरक्त पुष्पं (उ) | ८७.८ | करिष्यत्यधुना-(उ) | १५.७ | करोति कुर्वतः धर्मं (भू) | ८१.५६ |
| कमलंतस्यहस्तात्तु-(सृ) | १५.८० | करकङ्कणनादैश्च (क्रि) | ६.१४७ | करस्थमच्छिन्नच्छा-(पा) | ६२.२३ | करिष्यामिनसंदेहो (सृ) | ३०.१४१ | करोति च महाभाग (भू) | ६१.३८ |
| कमला कथितं (ब्र) | ११.५४ | करकङ्कणमादाय (क्रि) | ५.१८५ | करस्थांसर्वसिद्धिं (पा) | ७४.४६ | करिष्यामिमनोहारि-(पा) | १७.५८ | करोति पूजनंशर्माः (पा) | १०५.१३८ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| करोति प्रहारं च (भू) | ४३.४६ | कर्णश्रवेऽनिलेरात्रौ (स्व) | ५३.६४ | कर्तव्यं नृपशार्दूल (उ) | ३५.६७ | कर्तुं मुनेमयाशक्यं-(सृ) | ३६.११६ | कर्मक्षये राजराज्य-(सृ) | २१.१२५ |
| करोति यो न रोभक्त्या (ब्र) | ४.२६ | कर्णाक्षि नासिका (भू) | ६६.२१ | कर्तव्यं परमं गुह्यं (उ) | ८०.५८ | कर्तुं सुपुण्यं वचनं (भू) | ५७.७ | कर्मगु. कर्मगनाहात्या-(सृ) | ७.३१ |
| करोति विष्णुसदनं (ब्र) | ७.१३ | कर्णाटकामाहिव-(स्व) | ६.५४ | कर्तव्यमग्रतस्थ (उ) | ८४.८ | कर्तुं व्यवस्थ दिव्यं (उ) | १८६.११ | कर्मगुश्चास्य शौरस्य (भू) | ६७.६० |
| करोति सप्त चाष्टौ (सृ) | २६.५४ | कर्णाश्विमेधवैराट-(पा) | ११५.८० | कर्तव्यं ममतदभक्त्या (उ) | १२०.३५ | कर्तापि देष्टामना-(पा) | ८६.६ | कर्मगुः स्वस्थ न भोगं (भू) | १२१.८ |
| करोति सर्वकार्याणि (पा) | ७६.६५ | कर्णान्नमहृदाम (पा) | ६६.२४ | कर्तव्यं वचनं तस्य (सृ) | ३४.७१ | कर्ता तावत्सुविधि-(पा) | ६.७ | कर्मणा केन मे चैवं (भू) | ६७.१२ |
| करोति हयमेधं स (पा) | ५४.११ | कर्णकायर्ण विस्तारं (पा) | ६६.१५ | कर्तव्यं श्रद्धानेन ह्य-(उ) | १२७.१८ | कर्दमं काष्ठदंडं च-(पा) | ११४.११३ | कर्मणां क्लृप्तयोऽत्र (उ) | १२६.४२ |
| करोति प्लवकपालेन-(सृ) | १४.११३ | कर्णिकायां कोटिगुणो-(पा) | ६६.७८ | कर्तव्यतां च संचित्य (सृ) | ४२.८६ | कर्पूदमेपु च तप्तेपु (क्रि) | २३.१३७ | कर्मणां सिद्धि काम-(स्व) | ५७.४० |
| करोत्येवमुदुः क्षातं स्ते (पा) | ८८.२० | कर्णिकायां क्रमाद्बिधु-(पा) | ६६.२५ | कर्तव्यमज्ञानभावेः (भू) | ५.३० | कर्कषः हि करे गुह्य-(भू) | ५१.३६ | कर्मणा केन भोः (ब्र) | १६.१ |
| करोत्येवं विधां मृष्टि (सृ) | ३.१२४ | कर्णिकायां च पुरुषः (सृ) | २१.२६७ | कर्तव्यमर्षदानं च (उ) | १४६.११ | कर्पूरमाह रश्मिप्रवेन-(पा) | ६७.८५ | कर्मणां चलयो मोक्ष (उ) | २०४.२३ |
| करोत्येवमुदुः क्षातं स्ते (भू) | १२.२० | कर्णिकारत्नं रम्यं (स्व) | ३.४२ | कर्तव्यमृपिभिर्दंष्ट्र-(सृ) | ३४.२११ | कर्पूरवासितं (क्रि) | ११.१०६ | कर्मणां चलेन पापेन (उ) | ५५.३० |
| करोत्येवामनो नृणां-(सृ) | १६.१४८ | कर्णिकारैः सिताभो-(पा) | ११४.५५ | कर्तव्यः सकले राज्ये (क्रि) | २१.८० | कर्पूराणि विवित्राणि-(सृ) | १७.११६ | कर्मणां चलेन पापेन (पा) | ६८.६७ |
| करोमिका य गोनेन तु कार्य-(सृ) | ३०.५८ | कर्णिकारैः सिताभो-(पा) | १०५.१३३ | कर्तव्यः सकले राज्ये (क्रि) | ६४.६६ | कर्पूराणि विवित्राणि-(सृ) | १७.११६ | कर्मणां चलेन पापेन (भू) | ८४.३६ |
| करोरुजं धायुध-(उ) | ७.११ | कर्णोत्सवः रामस्य-(पा) | ३६.५० | कर्तव्याशक्तितो देववि-(सृ) | २०.४० | कर्पूरादीन् च संस्थाप्य (पा) | ११४.२४ | कर्मणां चलेन पापेन (भू) | ५०.४१ |
| करोत्येव कर्णवंधोरं (उ) | ७६.२० | कर्णोत्सवः रामस्य-(पा) | ४३.४१७ | कर्तव्यो नियमः कश्चिद-(उ) | १२७.११ | कर्म एव प्रधानं (भू) | ६४.८ | कर्मणा नास्ति (भू) | ५०.४१ |
| करोपातु दाशरथिः (उ) | ७३.४ | कर्णोत्सवः सुमंदारम-(पा) | ६६.६७ | कर्तव्यो नियमः कश्चिद-(उ) | ४.६ | कर्म कर्तुं न शक्नोमि-(सृ) | ३३.१४२ | कर्मणा निहृतो (भू) | १०५.४२ |
| करोसौभाग्यदायिन्वै-(सृ) | २२.७५ | कर्णोत्सवः सुमंदारम-(पा) | १०५.१४१ | कर्तव्यो नियमः कश्चिद-(उ) | २२६.२४ | कर्म कश्चिद्वलसंशुद्धो (उ) | १६७.६० | कर्मणा प्राप्यते (पा) | ३३.१२७ |
| कर्कराशिगते सुखे (उ) | ८५.१५ | कर्णोत्सवः सुमंदारम-(पा) | ४३.१७ | कर्तव्यो नियमः कश्चिद-(उ) | ६७.१३ | कर्म कश्चिद्वलसंशुद्धो (उ) | १३०.१३ | कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः (पा) | ४६.४५ |
| कर्णद्वीपशिलो विप्राः (स्व) | ३.७५ | कर्णोत्सवः सुमंदारम-(पा) | ५५.३६ | कर्तव्यो नियमः कश्चिद-(उ) | २४७.२१ | कर्म कश्चिद्वलसंशुद्धो (उ) | ११२.२३ | कर्मणां चलेन पापेन (भू) | ७१.१७ |
| कर्णयोः कुंडले दद्यात् (उ) | ३१.४२ | कर्तव्यं कृष्ण चन्द्रस्य (पा) | ८४.४६ | कर्तुं पुरुषशार्दूल (भू) | ६८.१८ | कर्म क्षयात्तथा जन्तुः (भू) | ८१.६४ | कर्मणा मनसा वाचा (क्रि) | ८६.६७ |
| कर्णयोश्च भवेच्छिद्रं (भू) | ६६.३५ | कर्तव्यं च त्वया (भू) | ८२.१७ | कर्तुं भरणशक्यं (पा) | १०८.२३ | कर्म क्षयात्तथा जन्तुः (भू) | ६४.२६ | कर्मणा मनसा वाचा (उ) | १३६.१६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

६८

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| कर्मणा मनसा वाचा (स्व) | ४२.१४ | कर्मयोगः कथं सूत (स्व) | ५१.१ | कलशंश्चामरं श्युक्तैः (भू) | ३२.१७ | कलिमल कुलहंता (उ) | २१२.५५ | कलीयुगे कृतार्थास्ते (सु) | १५.२६४ |
| कर्मणा मनसा वाचा-(सु) | १५.२६५ | कर्मव्यतिमिश्रेण-(भू) | ६६.५ | कलह प्रिययाभिमुख्यं (उ) | १०६.१६ | कलिर्ननाथतेजं च (क्रि) | २६.४४ | कली युगे गताः स्वर्गो (भू) | १२५.२० |
| कर्मणा मनसा वाचा-(क्रि) | २०.६२ | कर्माणि कानि चित्कृतं (क्रि) | ३.२५ | कलहो यत्र सततं-(पा) | ६४.६४ | कलिसंज्ञेतः प्राप्ते (सृ) | ३५.५० | कली युगे तथा घोरे (उ) | १६४.८ |
| कर्मणा मनसा वाचा (सु) | १५.१६२ | कर्माणि चादयन्तीह (भू) | ६४.११ | कलापकगुणांबाराः (पा) | ७६.५४ | कलिसंभावनायास्तु-(पा) | १०४.६२ | कली युगे तु विघ्नाश्च (भू) | १२५.१२ |
| कर्मणामनसा वाचा-(स्व) | ३१.२५ | कर्माणि स्वान्यनुस्मृत्य (उ) | १७५.४० | कलावन्नगताः प्राणा-(क्रि) | १.१२ | कलिस्त्रिदिव्यगारभ्य (उ) | १६३.६६ | कली युगे तु संप्राप्ते (भू) | १२५.४६ |
| कर्मणामानुपूर्व्यं च (सु) | १६.२२ | कर्मातिरेकेण गुरोर्ध्ये (सु) | १५.२८५ | कला संशोभित मुलः (पा) | १०.१८ | कलुगं तस्य नश्येत् (व) | १६.४ | कली युगे पटिष्यति (भू) | १२५.४४ |
| कर्मणा यद्विमेप्रोता द्विज-(सु) | ३५.६२ | कर्माविरेकेण गुरोर्ध्ये (भू) | २२.२१ | कलाहं मत्पतिज्ञत्वा-(पा) | ११२.५४ | कलुपानि चरं त्यस्यां (उ) | १२२.८२ | कली युगे भविष्यति (क्रि) | २६.२७ |
| कर्मणा येन कुर्यावः (भू) | २८.७७ | कर्मतदनु रूपं च (भू) | २८.७५ | कलिकलुष विदारिणी-(सृ) | २३.७० | कलुपा श्रावणे मासित-(उ) | १२२.७३ | कली युगे महाभाग (क्रि) | २६.१ |
| कर्मणा वातवाजतु-(उ) | १३२.११६ | कर्मव कारणं राजन्-(भू) | ६७.६६ | कलिकलुष कोट (उ) | ३४.१५ | कलेकलवमेवाक्यं (उ) | २२०.५४ | कली युगे सुप्तप्राप्ते (भू) | ६६.३७ |
| कर्मणा स्वेन विप्रद (भू) | ३६.३१ | कर्पाणां च सीतात्वं (सु) | १७.३२८ | कलिकलुष कोट (उ) | ३४.२६ | कलेदिव्यसहस्रा-(उ) | २४२.१० | कली येति स्प्रुषां (उ) | ३४.६४ |
| कर्मणा हि गुरोकेन (व) | २.२ | कर्पाध्वान्पशुस्तेयम (भू) | ६७.७४ | कलिकलुष संभूता-(स्व) | ३३.६० | कलेर्मध्येन पश्यति (क्रि) | २६.३७ | कली वल्लभमनुप्याणां (उ) | ११७.२४ |
| कर्मणा ह्यवलितो (उ) | १३२.१३८ | कलकंठकुलालाप-(उ) | १८४.१६ | कलिकालाक्षुनिर्मृताः (स्व) | १४.३१ | कलेर्वरं हितन्ताम (स्व) | ६१.२३ | कली वैतन्मिहंतु (उ) | ८०.१६६ |
| कर्मणोऽस्य फलं (भू) | १०३.८२ | कलकंठीकपोतानां-(पा) | ७४.१७४ | कलिंगदेशे पञ्चाध- (स्व) | १३.८ | कलेश्चैव प्रवेशतु (भू) | ३८.२५ | कली समस्त विप्राणां (पा) | ११५.४० |
| कर्मणोऽस्य फलं (भू) | ६७.६१ | कलधौतमयांस्तद्वत्-(सु) | २१.१८७ | कलिंगारव्ये महादेशे श्रीपुरं (भू) | ४७.६ | कली कस्माद्भवेन मोक्ष-(क्रि) | १.२५ | कली समागते सूत (व) | १.१ |
| कर्मज्ञानमये रूपे (उ) | २५०.६४ | कलंच कोकिला-(उ) | १८.१७७ | कलिंगाधि पतेराज-(उ) | १२७.७३ | कली गुप्तं तु ऋषिणां (उ) | १५६.६ | कली सर्वे भविष्यति पाप (क्रि) | १.११ |
| कर्मदायिदावा लोके (भू) | ८१.४४ | कलं बुक्पलांडुं ये च (व) | ६.१८ | कलिदोषा इमे सर्वे (उ) | १६४.५६ | कली तु संक्षयप्राप्ता (उ) | १६४.११ | कली सहस्रमृदनां (उ) | १६८.७२ |
| कर्मधर्म समुद्दिश्य (सु) | १४.२०१ | कलयंतं प्रियादोभ्यां-(पा) | ७२.१६ | कलिनारधर्म मित्रेण (उ) | १६३.३१ | कली नारायणं देवम् (स्व) | ६१.६ | कली सान् महादेवि विह-(उ) | १७२.४ |
| कर्मबंधमया दुःख-(उ) | २२६.६१ | कलया कलया चन्द्रकला-(क्रि) | २०.५ | कलिनारधर्म मित्रेण (उ) | २२.२६ | कली वृणा भवेत्केन (व) | १.५ | कलिकनः स्मृतया (उ) | ७५.१० |
| कर्मभूमिरियं राजन् (भू) | ६५.१३ | कलशंतत्र संस्थाप्यत (उ) | १७४.५३ | कलिनारधर्म मित्रेण (भू) | ६०.३४ | कली पाखंडिनः दूरा (उ) | ६४.६८ | कली विष्णुयशः (उ) | ७१.२७६ |
| कर्मभूमिरियं विप्र (क्रि) | १७.२५७ | कलशं प्रोक्षणीयं च (पा) | ६५.८४ | कलिनारधर्म मित्रेण (पा) | १०३.३२ | कली भक्तिः कली (उ) | १६४.२० | कल्यप्तं सत्त्वं समासाव-(सु) | २०.३७ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| कल्प उत्थायपर्याकाद (क्रि) | ११.२ | कल्पद्रुममहापुष्पैः (भू) | १०२.२४ | कल्याणरूपस- (उ) | २२.१० | कश्यपाद्यामहात्मानः (पा) | १०४.५ | कस्तूरिकांपुष्परम (पा) | ११४.११ |
| कल्पकालोदगतज्वाला (सु) | ४२.६६ | कल्पपादयसंतानैर्म- (उ) | १४८.२ | कल्याणिनीनांकथितं (सु) | २३.१४० | कश्यपाद्विश्रुतो जातस्- (भू) | ६.१० | कस्तूरीचंदनचंद्र (पा) | ११२.१०० |
| कल्पकोटिभेदेत्तावद् (उ) | ४३.५४ | कल्पयंती प्रतिदिनं (पा) | ११०.७४ | कल्याणिनीनाभपुरा- (उ) | २३.७२ | कश्यपायपुरादत्तधनं (सु) | ३०.६० | कस्तूरीतिलकंभ्राजन्म (पा) | ६६.६३ |
| कल्पकोटिशतं तावत्- (क्रि) | ८.६७ | कल्पयोरंतरं प्रोक्तं (सु) | २.१८ | कवचंतिदमाधेहि- (पा) | १२.१३ | कश्यपेन पुराजातं कुतं (भू) | १.४ | कस्तूरीतिलकोपेता (उ) | २२६.१४३ |
| कल्पकोटिशतं भुक्ता- (उ) | १८०.५८ | कल्पस्थायी भवेद् (उ) | ६४.३२ | कविवर्तनविध्वंसी (क्रि) | १६.६७ | कश्यपेन पुराप्रोक्ता- (सु) | ४२.५ | कस्तूर्या चंदनेनापि- (उ) | २५३.६३ |
| कल्पकोटिशतं साग्रं शिव- (सु) | २०.१०२ | कल्पादावात्मनस्तुल्यं (सु) | ३.१६७ | कविवा राणि जातो- (उ) | १८५.१०१ | कश्यपेन समानीता- (उ) | १३५.१४ | कस्तेन तुल्यतामिति- (उ) | ७१.३२७ |
| कल्पकोटि शतं साग्रम् (स्व) | ५५.३८ | कल्पानां संचरस्त्वेव (सु) | २.१३ | कवीनामुशनाश्रेष्ठो (क्रि) | २२.६६ | कश्यपोपि सुखं लेभेतेन- (उ) | ३०.६५ | कस्त्वं कथमिदं (क्रि) | ४.६२ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (भू) | ३०.८५ | कल्पा-न्तेतस्मग्रं हि (स्व) | ६८.४ | कव्यपितृणामुचिन्तं (सु) | १८.३६ | कश्यपो ब्रह्मणोऽंशस्तु- (सु) | १३.१४७ | कस्त्वं किमर्थमायातः (उ) | १८१.२१ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (उ) | ३५.६८ | कल्पातेपिनलीवे- (उ) | २२६.८३ | कशाघातेस्ताडित (उ) | ४६.२३ | कश्यपो भगवान- (सु) | ५.५ | कस्त्वं कुतः समा- (ब्र) | ११.६२ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (उ) | २५३.१५६ | कल्पाते राजराजस्सया- (सु) | २०.१३० | कशाभिस्ताडितोऽस्माभिः (पा) | ४७.१३ | कश्यपो भगवान- (सु) | ५.२७ | कस्त्वं त्यजस्यत्र (क्रि) | ६.१२२ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (उ) | २५४.५३ | कल्पाते राजराजेन्द्र (सु) | २०.२८ | कश्चिद्विदः परिक्रम्यः (उ) | ८१.१४ | कश्यपो भायं (उ) | २३६.८ | कस्त्वं विषयवपुः (पा) | ६७.५४ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (उ) | २५५.१०० | कल्पितः शिशुमारश्च वयस्य- (सु) | २.६२ | कश्चिदुत्सायंते नैव ऋते- (सु) | १७.३६ | कश्यपो ब्रतमाहात्म्य- (सु) | ७.३० | कस्त्वं बालरण- (पा) | ६२.८ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (क्रि) | ६.६७ | कल्पिताचेत्स्वयं- (सु) | १६.१४० | कश्चिदेकस्तदाते (उ) | २१२.५ | कष्टदृष्ट्या चानान्यत्र (क्रि) | ५.१२६ | कस्त्वं भद्रसमायातः (क्रि) | १७.६३ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (स्व) | ३१.१३४ | कल्पितो भगवांस्तेन- (सु) | २.२५ | कश्मलाविष्टहृदया- (भू) | ११४.३० | कष्टमापवर्तितं पाप- (पा) | ११२.५० | कस्त्वं वीरारेण- (पा) | ६३.५७ |
| कल्पकोटि सहस्राणि (उ) | २५५.६७ | कल्पेकल्पे गतेतस्य (उ) | ५५.१५ | कश्यपं च मुनिर्ऋषिर्ऋषेवम (भू) | ६.२० | कष्टात्सर्वं त्यजे- (उ) | १३२.१३७ | कस्त्वं मुने रोमाद्रो (उ) | १६७.३० |
| कल्पद्रुमं महाभागे (उ) | ८८.८ | कल्पेकल्पे ततो लोकान् (सु) | २१.२८८ | कश्यपजमदग्निं च देवानां (पा) | १०७.१ | कः समर्थो महातीर्थो (भू) | ६०.४० | कस्मिन्नंदिनि मे ज्ञानं (भू) | ६१.५४ |
| कल्पद्रुमं प्रसूनं यत्सर्वं (स्व) | २२.६८ | कश्यपाणं च रतस्तस्य (सु) | १३.३७ | कश्यपस्य कुले जातः (भू) | १२२.११ | कसादेवी त्वया देवया- (सु) | ३८.४६ | कस्माच्छोष्यति तत्पु- (भू) | १२५.१८ |
| कल्पद्रुमं प्रसूनं यद्रसव- (उ) | १२८.७७ | कल्याणं तव सर्वत्र (पा) | ५६.३० | कश्यपस्य च भार्या- (पा) | ६.१ | कः सुतः किं धनं कस्य (उ) | १६६.७८ | कस्माच्चित्तसिभद्रे- (भू) | ३३.२६ |
| कल्पद्रुमा ग्रनेकाश्च (भू) | ८१.१७ | कल्याण गुणपूरायिन- (उ) | २५५.८० | कश्यपस्य महाविद्यो- (उ) | २३७.११ | कस्तपोऽद्यो रमास- (सु) | ३६.१११ | कस्माज्जरासमुत्पन्ना (भू) | ६४.६६ |
| कल्पद्रुमाः सुपुण्यास्ते (भू) | ७४.१४ | कल्याण गुणवान् (उ) | २२७.४० | कश्यपादिभ्युत-देवाः (पा) | १०७.२ | कस्तूरहिरण्योपेतो (उ) | १८४.२१ | कस्मात्कुण्डाभिभूतस्त्वं (उ) | ५२.२२ |

श्रीपद्मपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१००

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| कस्मात्कृतं महाभागे (भू) | ३३.६ | कस्मादुपेतं कांत (भू) | ४५.२५ | कस्य केन समानीतं (भू) | १०५.५१ | कस्य लज्जाप्रकर्तव्या (भू) | ८.३६ | काक्षमाणं महारं-(पा) | १०७.३३ |
| कस्मात्कृतस्त्वया (भू) | ३०.७४ | कस्मादेकादशीश्रेष्ठा-(क्रि) | २२.४ | कस्यचिच्चवचि-(सृ) | ४३.२११ | कस्य श्राद्धं प्रदीयत (भू) | ३७.३२ | काश्चित्पुराणपठतः (उ) | ११३.७ |
| कस्मात्कोपः कृतो (भू) | १२.६६ | कस्मादुदुःखं त्वया-(भू) | ६.५ | कस्यचिच्चर्मपाशस्य (क्रि) | २३.६३ | कस्याज्ञाकारकायुयं-(पा) | २०.७४ | काश्चिद्भुजेषु (क्रि) | २३.६६ |
| कस्मात्तीर्थं फलं नास्ति (भू) | ५६.७ | कस्माद्भवसिंसं-(भू) | १०५.२४ | कस्यचित्त्वथकालस्य (उ) | २५२.४२ | कस्यात्मजस्त्वं कुश्रतयः (पा) | २३.४६ | कास्तुलोकान् गच्छिष्य (सृ) | १८.४३५ |
| कस्मात्तु देवताः (भू) | ११६.२ | कस्माद् भोक्ष्यति (भू) | १०५.३५ | कस्यचित्त्वथकालस्य (स्व) | १०.१६ | कस्यापि कर्मणः प्राप्तौ (उ) | ५६.६ | कास्त्यसवस्त्रं (सृ) | २०.१२६ |
| कस्मात्तु ईदृशं ज्ञानं (भू) | १२२.४ | कस्माद्गोद्विषि भद्रं (भू) | ५१.३ | कस्यचित्त्वथकालस्य (उ) | २४१.२२ | कस्यापि च भर्तुनास्ति (क्रि) | ५.१७० | कास्त्यदोही (उ) | ३५.४६ |
| कस्मात्पद्याम्यहं तात (भू) | ६७.३७ | कस्मात्तु नवधृते (उ) | २१५.२८ | कस्यचित्त्वथकालस्य (उ) | २४४.३६ | कस्यायमैद्वरोभावः (सृ) | ३६.८२ | कास्त्यवाद्याग्रगृह्य (उ) | ३.३० |
| कस्मात्पापप्रभावं च (भू) | ६४.२ | कस्मात्लोभाद्भयाद्वापि (भू) | ४३.६४ | कस्यचित्त्वथकालस्य (सृ) | ३८.८ | कस्यासि वा सुंदरि (भू) | २५.५ | कास्त्यस्तपुणं (सृ) | ३४.३६४ |
| कस्मात्त्वं मां न (भू) | ८६.२४ | कस्मिन्कस्मिन्पु-(पा) | ११४.३६५ | कस्यतीर्थवरस्ये-(उ) | २०४.७८ | कस्याहं दयिताकोवाम-(क्रि) | ४.५५ | कास्त्येनमुत्तमाभुवत्या-(पा) | ११४.३२८ |
| कस्मात्त्वमागतो ब्रह्मन् (उ) | ४२.३१ | कस्मिन्कार्यसमारंभे (उ) | १६८.५ | कस्यदेवस्यकारुण्यं (उ) | १८५.४५ | कस्येदं जगती-(उ) | २०२.४३ | कास्त्यैवितिमितम् (त्र) | २५.३४ |
| कस्मात्त्वं व्यथसे मात (भू) | ५१.१८ | कस्मिन्काले कृतं (पा) | ६६.१४२ | कस्यदेवस्यकृपायाग-(पा) | १७.६६ | कस्येयं कर्मणः पवितः (सृ) | ३६.६५ | काकतुंडरधंमेघ-(उ) | ११.५५ |
| कस्मात्साव लुषा (उ) | १२२.७४ | कस्मिन्काले पुरा-(उ) | २८.१८ | कस्यपुत्राः प्रियाभार्याः (पा) | ८८.३० | कस्यैतद्वचमुद्धर्ष (पा) | २६.४ | काकः परं पदं (पा) | २६.३७ |
| कस्मात्स्मृतास्वत्या (भू०) | ६२.१८ | कस्मिन्काले भगवता-(सृ) | ३४.१ | कस्य पुत्राः प्रियाभार्या (भू) | १२.२६ | कः स्रष्टाकश्चते (सृ) | ४०.३० | का कस्य गोभना (भू) | ४६.२१ |
| कस्मादपि च न (भू) | ५०.२५ | कस्मिन्ब्रह्मन्किन्ना-(उ) | १८०.८७ | कस्य पुत्राः प्रियाभार्या (भू) | १२.३३ | कस्मिन्सहतेचान्योयो-(सृ) | ३६.११६ | काकादिभ्यश्च इवादि-(उ) | १६२.३ |
| कस्मादहं त्वया नाथ (भू) | ५३.६ | कस्मिन्वासरभागेतु-(सृ) | ११.१ | कस्य पुत्राश्च पोत्राश्च (भू) | ४०.४१ | कहोडोवतंततत्रतेन-(उ) | १३६.२७ | काकुत्स्थश्चनम-(उ) | ४२.१६६ |
| कस्मादहमिहानीतः (पा) | ६६.४१ | कस्मिन् विलयमभ्येति (स्व) | १.१७ | कस्य पुत्रा हि (भू) | ६.२५ | कह लारंवा महादेवि (उ) | ८७.१६ | काकवीरामोय (पा) | ३४.५ |
| कस्मादागमनतेष (भू) | ६४.१६ | कस्मिन्स्थानेमयायज्ञः (सृ) | १५.१६ | कस्य पुत्रो महाप्राज्ञः (भू) | ११.२ | कह लारकुमुदां भोज-(पा) | ७४.६२ | काकसीहनुमान्नामस्य-(पा) | २६.३२ |
| कस्मादियं कोणकेश (उ) | २०७.१६ | कस्मिन्चित्सकुले जातो (उ) | १७६.२३ | कस्य प्रादुरभूद्ययानात् (उ) | ४३.३४३ | कह लारपुत्रं देवेशं (क्रि) | १३.४१ | काकसीहयोमहाराजो-(पा) | २३.२२ |
| कस्मादियं पवित्रा च (उ) | ४५.६ | कस्मै च दीयते कन्या (पा) | ६२.३६ | कस्य भूः कस्य वरुणः (सृ) | ४३.३३६ | कह लारमालयावीतं-(पा) | ७२.६४ | का च नारीमहाभाग (भू) | ६३.३६ |
| कस्मादुदवहतेगर्वमेवं (भू) | ६१.४४ | कस्य केन तु कार्येण (भू) | ११४.६ | कस्यभर्तुर्हं दत्ता कि-(सृ) | ८.६३ | कह लारः करवीराद्यैः (पा) | ७४.१३६ | काचित्कालेनपर्येके-(पा) | ५५.४८ |

श्रीषष्महापुराणम् :: इनोकानुक्रमणी

१०१

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| काचित्खड्गैः शरैः (पा) | ६१.१६ | कार्त्तिक्याकुत्तिकायो-(उ) | १३५.३१ | कांतभ्रात्यातस्तले-(उ) | १८७.२८ | कामक्रोधविहीनास्ते (भू) | ७६.८ | कामभोगप्रमत्तानां (उ) | ३४.१२ |
| काचित्पीनस्तनोत-(उ) | ५.८७ | कातेचिताद्विजश्रेष्ठ (उ) | १६६.३२ | कांतरेषु निमग्ना-(सृ) | १७.३१६ | कामक्रोध समाक्रांतं (भू) | ६६.५७ | काममंत्रेण वृत्तितं (पा) | ७२.३ |
| काचिदेकातदानारी-(उ) | २१४.६२ | कातेमातापिताकस्ते-(पा) | ६२.६ | कातिपुर्यापुराचोल-(उ) | १०८.५ | कामक्रोधादयो दोषा (स्व) | ३५.११ | कामयते प्रजानेव (उ) | १२८.२४१ |
| काचिद् दण्डामया (भू) | ७८.१० | कात्यायनं वैष्णवं (उ) | २३६.२५ | कांतेन तु विना तेन (भू) | ५३.२ | कामक्रोधादिकान्दोषान्-(भू) | २२.१४ | कामरूपप्रभासं च (सृ) | १४.१६५ |
| काचिद् बाल विशा-(स्व) | १५.३२ | कात्यायनीकुंवाभोज-(उ) | १८४.३५ | कांतेयत्वंवदसिवांत-(पा) | १२.१६ | काम क्रोधादिनिः (उ) | ७१.२६६ | कामरूपामहोत्साहा-(सृ) | ४३.४५७ |
| काचिन्नर्त्यति क्रीडा (स्व) | २२.६५ | कात्यायन्यामनोज्ञानि-(पा) | ८३.१०० | कां वल कांचनं चैव (पा) | ११४.३११ | काम क्रोधाभिमाने-(उ) | ४२.८ | कामरूपं रकांतं च (सृ) | ५.७३ |
| काचिन्नर्त्यति क्रीडा-(उ) | १२८.७४ | कात्वं कस्य कुले (उ) | २४२.२४० | कापालिकेन क्षुद्रेण-(सृ) | ४४.१० | काम क्रोधो नृणां (उ) | २४५.१६७ | कामलादीरन्तयारोगान् (उ) | ७८.५१ |
| काचिन्मोदकमादायका-(सृ) | १७.११२ | कात्वं कस्य वरा-(भू) | ३६.२२ | का प्रतीच्छातवेदा-(पा) | ११२.१६ | कामक्रोधो विनिर्जित्य-(सृ) | १६.३२५ | कामलायामहारोगा (क्रि) | १३.६६ |
| काञ्चनं पुरुषं तद्व-(सृ) | १०.१३ | कात्वं कस्यासि रंभोरु-(उ) | ६२.१६ | काभिः सादृक्ववादेव-(पा) | ७४.१० | कामगंतुविमानं तद-(पा) | ३४.४४ | कामवामाकृति (उ) | २०६.२६ |
| कांचनं वृषभंतद्वद्वत्र-(सृ) | २१.३०६ | कात्वं कैनेशितैः (उ) | २२०.४४ | काभिः सादृक्ववादेव-(पा) | ७४.१० | कामगाः कामरूपाश्च (सृ) | १५.६१ | कामशास्त्र प्रणेता-(सृ) | १०.११६ |
| कांचनाक्षिपुगोपेता-(सृ) | २१.५६ | का त्वं भवसि (भू) | ५३.३२ | कामं क्रोधं परित्यज्य (भू) | ३३.२६ | कामगेन विमानेन (पा) | ५३.३२ | कामस्यकारणात्कामात् (भू) | ५६.२६ |
| कांचनाख्य पुरे (भू) | १०५.१८ | का त्वमत्र समायाता (भू) | ५१.५० | कामं ब्रह्मानंदं (उ) | २१२.४२ | कामगेन विमानेन (पा) | ११३.३६ | कामस्यगीतलास्येन (भू) | ७७.१ |
| कांचनेन विमानेन (स्व) | २०.५६ | का त्वमेतो च को भद्रे (उ) | १६३.४५ | कामं कन्यां यदा (भू) | ८०.१ | कामगेन विमानेन (पा) | ११३.३६ | कामस्यगीतलास्येन (भू) | ७७.१ |
| कांचनेनापि संयुक्तां (भू) | ४०.१७ | कार्थ्येवाततित्रासी-(पा) | ६.३७ | काम कन्यामितो गत्वा (भू) | ८१.३ | कामगेन सु विमानंतुं (पा) | ३३.७ | कामस्यसंक्षयं ज्ञात्वा-(पा) | ६७.५१ |
| कांचनोत्तुंगावरोहक्षि-(स्व) | ४३.४६६ | कान्तं रमणीयं च (पा) | ८०.४२ | कामकामकृतं पापमेति-(पा) | ६७.१०४ | काम दर्पादि शीलो (पा) | ६६.२६ | कामासायाः परंस्थानं (पा) | १२.५५ |
| कांची नुपुर शब्देन (स्व) | ४३.३६ | कानीनस्य मुनेः (पा) | ८७.६ | कामकारकृतं मन्य (सृ) | १७.१३८ | कामदर्पादिशीला-(पा) | ६६.२६ | कामासायाः प्रसादोमे (पा) | १४.५ |
| कांचीभद्रादेविका च (सृ) | १५.१७ | कांडादितिहि मंत्रेण (पा) | १०४.६५ | काम क्रोध जयार्थं (उ) | १६५.६८ | कामदेवदिनेतस्मिन् (स्व) | १८.६७ | कामात्सध्याभवा-(उ) | २४२.१८ |
| काठिन्यं दैवयोगेन (पा) | ७७.४४ | कांडादेस्तुसमाप्ती (पा) | १०४.६६ | कामक्रोधविमुक्ताय-(पा) | ८१.२८ | कामदेवः स्वयंतत्र-(स्व) | १८.१०७ | कामाद् भया द्वादे-(उ) | २४५.१६८ |
| काठिन्यं मन्मसारम्यो-(सृ) | ४४.२० | कांतकोयं महानर्वा (पा) | ३६.२४ | कामक्रोधविह्वानाये (क्रि) | २.८३ | कामद्रुमं मुललित-(पा) | ६६.२२ | कामार्तः सञ्जगामाशु (उ) | १०२.२१ |
| काणाः रवंजा अभ-उ | १२६.१२८ | कांतं गृहेषु कलगदगद-(सृ) | ४६.५६ | काम क्रोधविहीनं (भू) | ३४.४६ | कामधेनुययाकामं (स्व) | २६.११ | कामयामा सदेवोपि-(सृ) | ८.४३ |
| | | | | कामक्रोधविहीनं तु (भू) | ३३.७ | कामधेनुयया कामं (उ) | १२५.१६४ | कामार्थो संपदः पुत्रा (उ) | ३७.४७ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|------------------------------|--------|---------------------------------|--------|---------------------------|--------|----------------------------|--------|
| कामासक्तोपियो नित्यं (उ) | १२०.७ | कामोदसंभवः पुण्यः (भू) | १२१.३४ | कायिकी सैवानिदिष्टा-(पा) | ८५.११ | कारयित्वा ततो देव्या (पा) | ७४.३६ | कातिक्रतितनः पुंसो (उ) | १४.२५ |
| कामोदिकतातु सा (उ) | २४२.१७ | कामोदसंभवः पुण्यः-(भू) | १२१.३६ | कायुक्तिब्रूहितांकांतेति (क्रि) | ६.१०२ | कारयित्वात्मनोमूर्ति (उ) | ११६.४६ | कातिक्रतितनस्तजनाना (उ) | ११३.५ |
| कामाह्वयतत्ररुद्रस्य-(स्व) | २५.२२ | कामोदाह्वयं पुरं तत्र (भू) | ११८.३८ | कायुयंतनुजाः केवां-(पा) | ७४.१०१ | कारयित्वात्मनोमूर्ति (उ) | १२६.३८ | कातिक्रतितनां पुंसां (उ) | ६४.१ |
| कामाद्यसक्त चित्तत्वा (उ) | ७१.३२६ | कामोदाह्वयं पुरं दिव्यं (भू) | १२०.१ | कायेन कायसंयुक्ति-(भू) | ५३.१०७ | कारयित्वात्मनोमूर्ति (उ) | १३५.८२ | कातिक्रतितिभिर्गस्मात् (उ) | ११३.२८ |
| कामाद्यादिवामोहात् (पा) | ६६.५२ | कामोदायागृहं प्राप्य (भू) | १२०.२ | कायेन कायं संयुक्ति (पा) | ६६.७६ | कारयेत्तरयाभक्त्या (उ) | ८२.२४ | कातिक्रतितिभिर्गस्मात् (उ) | ११४.२६ |
| कामानलेन संदग्धा (भू) | ३.१२ | कामोपिविजयाकांक्षी (उ) | ४६.१२ | कायेन मानसा वाचा (भू) | ६७.११२ | कारयेत्तरयाभक्त्या (उ) | ८४.४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं-(उ) | १२२.६१ |
| कामान्दोमुहर्ष-(सृ) | ३.१६१ | कामोप्याहृतवोन्मादो-(सृ) | १२.६१ | कायेन मनसा वाचा (उ) | २२२.४४ | कारयेत्संहानुचचान्य-(सृ) | २१.१६५ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.१६ |
| कामायपादौ संयुज्य (सृ) | २३.१११ | कामोप्याहृतवोन्मादो-(सृ) | १२.६१ | कायेन मनसा वाचा (उ) | १२८.१३ | कारयेद्देवदेवशं (उ) | ३६.८ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामात्लोमाद्वयाद्वापि (भू) | ४२.५४ | कामोप्याहृतवोन्मादो-(सृ) | १२.६१ | कायेन मनसा वाचा (उ) | १६६.१५ | कारयोपिकदापापनापरं (पा) | ५.२६ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामासक्तश्चक्षुर्मतिमा (भू) | ७८.५८ | काम्यं चान्यं महाराज (भू) | ३६.४६ | काये पाथिवभागोऽयं (भू) | ६५.८ | कारितंममपुत्रेण (उ) | ७७.२२ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामासक्तः समूहस्तु (भू) | ७७.१०५ | काम्या सुपाश्वं तनया-(सृ) | १३.१६२ | काये संस्थः सदानित्यं (भू) | ७.५० | कारिताधनलोपेन (उ) | १६३.७४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामिनस्तापसाः शूद्रा-(सृ) | ३६.३६ | कायं रक्षति जीवात्मा (भू) | १२०.३६ | कारणं चागमे ब्रूहि (सृ) | १.१४ | कारुण्येनदिनैकस्य (पा) | १०२.१४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामिनाप्रतिमावत्स (क्रि) | ६.२०० | कायनाशकारी चिता (भू) | ३३.३१ | कारणं प्रष्टुमारेभेका-(उ) | १८४.५१ | कारुण्येनदिनैकस्य (पा) | ५६.२३ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामिनीसंगि-(स्व) | ६१.२७ | कायमध्ये रसादग्निस्तद् (भू) | ६४.७५ | कारणं सर्वभावानाम् (स्व) | ६०.१२ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १२.११४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामिनीषुविवाहेषु-(सृ) | १८.३२७ | कायमध्ये स्थितं ज्ञानं (भू) | १२३.६ | कारणं तवदुःखस्य (क्रि) | २०.६७ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १४१.५७ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामिनीषुविवाहेषु-(सृ) | १८.३६३ | कायस्था दास वर्गा-(सृ) | १५.३१६ | कारणाद्भावचैतन्यं (सृ) | १६.१४४ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १३३.२४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामेन पीड्यमानस्तु (भू) | ८.२३ | कायस्थानांसमुत्पत्ति-(उ) | १.५० | कारणं तवदुःखस्य (क्रि) | २०.६७ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १३३.२४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामैः क्रोधैः प्रलोभै-(स्व) | ३१.२७ | कायस्थ ग्रामस्य प्रजा (भू) | ५४.२३ | कारणं तवदुःखस्य (क्रि) | २०.६७ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १३३.२४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामोदकं द्रुमं ब्रूहि (भू) | ११८.३१ | कायवारी हर्षनामदेव (सृ) | ११.२३ | कारणं तवदुःखस्य (क्रि) | २०.६७ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १३३.२४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |
| कामोदकाह्वयं पप्रच्छ (भू) | ११८.२६ | कायिकीसैव निदिष्टा-(पा) | ८५.८ | कारणं तवदुःखस्य (क्रि) | २०.६७ | कांतवीर्यस्यराजपं-(सृ) | १३३.२४ | कातिक्रतितनजं पुण्यं (उ) | ११७.२४ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१०३

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| कार्तिके च दिनान्य (उ) | १२१.१५ | कार्तिके मुनिपुण्यैः (ब्र) | ३.६ | कार्तिको वैष्णवो मास (उ) | ११८.२ | कार्यं हि देवाद्यदिसिद्धः (उ) | १२८.६७ | कालतीर्थसुपात्राणां (भू) | ३६.१२४ |
| कार्तिके च द्वितीयः (उ) | १२२.६२ | कार्तिके मुनिशाकम् (ब्र) | ३.७ | कार्तिक्यां तु विशेषेण (सृ) | ३२.७८ | कार्यः प्रत्युपकारस्तेतो- (पा) | ६२.८७ | कालधर्मसमासाद्य- (उ) | १७५.३५ |
| कार्तिके प्रबोधिन्यां (उ) | ३०.१०५ | कार्तिके मुनिशार्दूल (उ) | ५१.५६ | कार्तिक्या तु विशेषेण (सृ) | ३४.४१० | कार्यमेतदकार्यं हि (सृ) | १३.३५४ | कालं जरं समासाद्य (भू) | ६२.१ |
| कार्तिके चैव माघे (उ) | १८.१५४ | कार्तिके मुनिशार्दूल (उ) | ६१.२० | कार्तिक्यां पुष्करं स्ना- (सृ) | ३२.६७ | कार्यं भेदास्तु वर्ण्यते- (पा) | १०४.८६ | कालं जरात्तो जग्मुः (भू) | ६२.७ |
| कार्तिके तुलसीपत्रैः (ब्र) | ३.५ | कार्तिके मुनिशार्दूल (उ) | ६१.४५ | कार्तिक्यामथ वैशाख्यां (उ) | १४६.४ | कार्याकायादिकं शब्दं (भू) | ७.५७ | कालं जरं मृगाभूना- (सृ) | १०-६६ |
| कार्तिकेतु विशेषेण (उ) | ६१.४६ | कार्तिकेयमुखद्वष्ट्या (क्रि) | ४.१०५ | कात्स्न्येन कृष्ण (उ) | ६६.१६ | कार्याणि कुरुते यस्तु- (क्रि) | ६.२६ | कालनेमिनिशुभं (उ) | १०१.१३ |
| कार्तिकेतु विशेषेण (उ) | १२०.८६ | कार्तिकेयश्च भगवां- (स्व) | २७.२६ | कार्पण्यं मत्सरो (भू) | ६६.२०३ | कार्याल्पसिद्धिः स्व- (पा) | १०४.६४ | कालनेमिमुखादेव्याः (सृ) | ४४.१८७ |
| कार्तिकेदीपदप्ताच (ब्र) | ३.३१ | कार्तिकेयसब्रह्मन्कथं (सृ) | ४२.३ | कार्पासं पर्वतश्चैव- (सृ) | २१.१५७ | कार्याविद्धापि सप्तम्याम् (ब्र) | १३.६५ | कालनेमिमुखाः सर्व- (सृ) | ४४.२०५ |
| कार्तिकेदीपदानेन (उ) | १२१.२८ | कार्तिकेयो नरोदघातु (ब्र) | ३.१० | कार्पासमुपवीतार्थम् (स्व) | ५१.१० | कार्ये समुद्यमकृत्वा- (पा) | ६८.८० | कालनेमिः सुरान् (सृ) | ४३.३ |
| कार्तिकेदीपमानं च (उ) | ८६.२५ | कार्तिकेयो नरोदघातु (ब्र) | ३.१२ | कार्पासाग्नेन मस्तस्माद (सृ) | २१.१६० | कार्ये निद्वेष्टमो न स्याद (क्रि) | ५.११४ | कालनेमिस्तु यंक्रुदो (उ) | १०१.६ |
| कार्तिकेनाचितोयस्तु- (उ) | ११८.५१ | कार्तिकेयो बद्धभक्त्या (उ) | १२१.२२ | कार्मुकं गृह्यहस्तेन (सृ) | ३८.१३१ | कार्ये भिक्षामता- (उ) | ३०.३१ | कालनेमीति विख्यातो- (सृ) | ४१.१६८ |
| कार्तिके पश्चिमेयामेस्त- (उ) | १२४.२३ | कार्तिकेयवर्जयेत्तलका- (उ) | ११८.२० | कार्मुकं पंचमं प्रोक्तं- (उ) | १३३.६ | कालं कमलपत्राक्षः (सृ) | ४२.२२ | कालः पाकश्च यज्ञश्च- (सृ) | ३६.२० |
| कार्तिके पुष्यमासे च (पा) | ८०.३४ | कार्तिकेयवर्जयेत्तलका- (उ) | ११८.२० | कार्यं किं मत्र तद्- (सृ) | ४२.८४ | कालकः कलकांतश्च (सृ) | १८.७६ | कालपाशांश्च विध्यहर्षः (सृ) | ४१.१२ |
| कार्तिके मासि देवस्य (सृ) | १७.२२८ | कार्तिके शुक्लपक्षे (उ) | ३४.१३ | कार्यं नु देवाद्यदि- (स्व) | २२.८८ | कालकल्पश्च सुसर्लः (सृ) | ४१.१६१ | कालभैरवनामात्र (पा) | १७.८० |
| कार्तिके मासि युक्त- (पा) | ८५.७० | कार्तिके शुक्लपक्षे तु (उ) | १२४.३१ | कार्यं वेदो निषिद्धं (क्रि) | ७.७८ | कालकल्पोऽपि पापात्मा (क्रि) | ७.१२५ | कालमृत्युभयं चापि- (उ) | २३२.२१ |
| कार्तिके मासि नित्यं (उ) | ८६.११ | कार्तिके शुक्लपक्षे तु (उ) | १२४.२६ | कार्यं संशयमाप्नोति (पा) | १०४.११५ | कालकृतविषं तेतु (ब्र) | ६.४ | कालमेव प्रतीयेत (स्व) | ५६.१३ |
| कार्तिके मासि राजेन्द्र (सृ) | १७.२२६ | कार्तिके शुक्लपक्षे तु (उ) | १२२.६३ | कार्यं हि देवाद्यदिसिद्ध- (उ) | ४२.८४ | कालकर्म महाकार्य- (सृ) | १६.८३ | कालरूपीस एवाद्य (क्रि) | ६.१३३ |
| कार्तिके मासि शुक्ला- (सृ) | ३४.२४१ | कार्तिके स्वस्तिकं- (उ) | १२०.६१ | कार्यं नु देवाद्यदिसिद्धि- (स्व) | २२.८८ | कालग्रस्तः कृष्ण- (क्रि) | २५.७३ | कालव्याप्तं भक्षयध्वं (सृ) | ३१.४३ |
| कार्तिके मासि शुक्ले च (सृ) | १७.२१२ | कार्तिके हंकरिष्यामि (उ) | ६३.७ | कार्यं वेदो निषिद्धं (क्रि) | ७.७८ | कालजिघेन्नाशं वै (पा) | ६१.४ | कालव्यालमुखा लीढ (उ) | १६३.१३ |
| कार्तिके मासि प्राप्ते (उ) | ८७.१६ | कार्तिकोद्यापने- (उ) | १०५.८ | कार्यं संशयमाप्नोति (पा) | १०४.११५ | कालजिघन्नाशं वासा- (पा) | ६०.६० | कालशाकेन चान्त्यं (सृ) | ६.१५८ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| कालश्चकालरूपी च (सृ) | ३८.१६४ | कालिद्याः पुलिनेरम्ये (पा) | ७६.४ | कालेन सारिका देह (उ) | १८४.७२ | कावेरीवेदिका भद्रा (उ) | १३५.१६ | काश्यायत्राप्यते (उ) | ५०.१२ |
| कालस्यसर्वभूतानां (उ) | २२६.३६ | कालिद्याः पुलिनेरम्ये (उ) | २५२.२६ | कालेनग्रहणं षट्त्वा (सृ) | १.५१ | कावेरी संगमंत्र सर्व- (स्व) | १६.११ | काश्याविधातु (उ) | २२.४० |
| कालहीनं न कर्तव्यं (सृ) | १७.१३१ | कालिद्याश्चवमाहात्म्यं (उ) | १६६.१ | कालेनात्पीयसाप्रेत्य- (उ) | १८६.१२ | कावेरी संगमे स्नात्वा (स्व) | १६.६ | काश्यानिबसन्नित्यं (उ) | १४०.१० |
| कालाकृष्टः स दुष्टात्मा (भू) | १२१.२७ | कालमोयेनकार्यं (उ) | १८४.४८ | कालेनैवजगत्सर्ग- (पा) | २२७.४७ | कावेर्यामृष्टिकनचिनं (सृ) | ३४.१३२ | काश्यादयोयद्यपि- (पा) | ७३.४४ |
| बालागुरुलवंगश्च (उ) | १२५.११४ | कालीयमर्दनः सर्व (उ) | ७१.२५२ | कालेनोपनयाद्या- (पा) | ६६.१२ | काव्यं षट्त्वास्थितं (सृ) | १३.१०८ | काष्ठासने रिजोविद्वान् (क्रि) | ११.६८ |
| कालातु कालकेयां- (सृ) | ४०.१०३ | कालेकदाचनक्रीड- (उ) | १७८.६ | कालेनैवद्विष्यतस्तस्मात् (सृ) | ८.६७ | काशपुष्पप्रतीकाशश्रग्नि (सृ) | २२.५६ | काष्ठास्त्रिशतकात्रिंशं (सृ) | ३.५ |
| कालातु कालकालाय (उ) | ६६.१४ | काले काले द्विजश्रेष्ठ (उ) | ६५.१६ | कालेया इति विरुधाता (सृ) | १६.६१ | काशीराजशिरश्च्छेत्ता- (उ) | ७१.२६० | काष्टर्वा शंकुभिर्वापि (भू) | ६६.१३२ |
| कालात्मने नमस्तु (उ) | २४५.३०५ | कालक्षेत्रे तथातीर्थे (सृ) | १८.२११ | बाले यास्तु यथा (सृ) | १६.१५६ | काशी च शिवकांची (उ) | २००.७ | कास्तिकन्यकुलश्चत्व- (सृ) | १६.१५२ |
| कालात्मने नमस्तु (स्व) | ४.१५ | काले चातिथयः (उ) | २०१.३१ | कालेसासुत पुत्रो- (पा) | ५६.७३ | काशीवासे युगान्य-टो (उ) | १२०.३३ | कास्तित्वं किंवन्धोरे (पा) | ५६.५७ |
| कालामुरोथ लवणो (उ) | १८.५ | काले देशे च पात्रे च (सृ) | ४६.११६ | कालेस्मिन्नेवकुर्वति (उ) | ६०.२५ | काश्चिच्छुबलाभ्वरधरः (सृ) | ३१.८२ | कास्मिन्नेचिकीर्पा- (पा) | ७३.११ |
| कालिकरालविक्रांते (सृ) | ३१.१४२ | काले देशे च पात्रे च (सृ) | ४६.१०७ | काले हरि पदं- (उ) | २३८.१५४ | काश्चित्तनृत्यविद्या- (पा) | ३६.१८ | काहिनाभिलेपेत्कन्या- (सृ) | १६.१६१ |
| कालिकासंगमे स्नात्वा (स्व) | ३८.६५ | कालेन काल पाशेन (उ) | १७६.२२ | कालः कियद्भूमत् (क्रि) | ८.५३ | काश्चैगोप्यस्तुकेगोपां- (पा) | ७३.३० | किंकरान् प्रपयामास (द्र) | ११.२५ |
| कालिग वैश्यानुचरा (उ) | २१७.३६ | कालेन कियता विप्र (ब्र) | ११.६१ | कालोऽय कर्मयुक्तस्तु (भू) | ८१.४१ | काश्मीरं मृगनामि (पा) | ११४.२८ | किंकरास्तस्य दौलस्य (सृ) | ४३.४०५ |
| कालिन्दी-कुलसंशो- (उ) | १८०.६६ | कालेन कियता- (पा) | ६५.१४० | कालोप्ययं महापुण्यो (६) | ६१.१५ | काश्मीरे स्वे व रागस्य (स्व) | २५.२ | किंकरिण्यमितातेन (भू) | १.३७ |
| कालिन्दी चाकरोद्यस्य- (पा) | ६६.७४ | कालेन चातिमहता (उ) | ६६.७२ | कालोप्येयमहापुण्य (उ) | ६१.२३ | काश्यपः कंबलश्चापि- (सृ) | १८.२३ | किं करिष्यसि तेनैव (भू) | ५३.४२ |
| कालिन्दीपुण्य पानीये (स्व) | ३१.१५ | कालेन दंपती प्रेती- (उ) | १८२.११ | कालोऽयानुगविद्या (पा) | ८.११ | काश्यपे नयतश्चागन (उ) | १६४.५ | किं करोति समर्थश्च (भू) | ३६.३६ |
| कालिन्दीयं सुषुम्ना- (पा) | ७५.११ | कालेन निधनं प्राप्ता (पा) | ६२.७६ | कानापूज्य नमातत्र (कि) | २२.५ | काश्याचैवतुसभूत (उ) | ६६.३६ | किं करोमि वयं चैव नपात- (सृ) | ४६.७१ |
| कालिद्या एव कूले (उ) | २१३.५ | कालेन प्रेरिता सास्त्रि (क्रि) | ६.३५ | कावास्मिकस्य कन्या- (पा) | ७४.६२ | काश्यादशगुणं प्रोक्तं (उ) | ११६.१० | किं करोमि वयं चैव नपात- (पा) | ६८.८७ |
| कालिद्या कालरूपं (उ) | १३३.१८ | कालेन बहुनाप्रेत्यतत् (उ) | १८६.४२ | कावेरी कपिला चान्या (भू) | ३६.८६ | काश्यां निवसतां (उ) | २६.२६ | किं करोमि वयं चैव नपात- (उ) | २०७.१४ |
| कालिद्या दक्षिणे- (उ) | २००.७७ | कालेन भूयसाक्षामां- (पा) | १५.२० | कावेरीचुलुकांचापिता- (स्व) | ६.१७ | काश्यां भाग्यधीर्ताते (उ) | १८३.२६ | किं करोमि वयं चैव नपात- (उ) | ७७.२० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| किं करोमि वगच्छामि (उ) | १४.२७ | किं किच्छिद्रं न संजातम् (ब्र) | १३.८० | किंचित्पुष्पकियद्गन्धम् (ब्र) | १३.८३ | किंतु पुष्पं कथं (स्व) | ३१.१८० | किं त्वया कथितं नात- (उ) | २१५.१३ |
| किं करोमि वगच्छामि (ब्र) | १३.३७ | किं किन दुर्लभं भरणं- (पा) | ८६.२३ | किंचित्रपंत्युमांसस्तु (पा) | ४.४३ | किं न द्रव्याणि कथं (उ) | १८२.१५ | किं त्वया कथितं पूर्व- (पा) | ७४.८ |
| किं करोमि महाभाग (भू) | ७६.२४ | किं किं न लभ्यते विप्र- (पा) | ६०.६ | किंचित्स्मितां कुरुष्व (पा) | ७१.८ | किंतस्तोत्रं समाख्या- (उ) | १२८.२१६ | किं त्वत्पविस्फुलिंगं- (पा) | ८७.२२ |
| किं करोमि महाराज (उ) | २०६.२१ | किं किमित्येव संशय- (उ) | २११.१६ | किंचित्स्वदशनादृष्टो (पा) | ४.३३ | किंतपोभिर्जयैः किं वा (क्रि) | १२.६६ | किं त्वत्पविस्फुलिंगेन (पा) | ६२.१६ |
| किं करोमि महाराज एषा (भू) | ५२.४० | किं कुर्वाणो नरः कर्म (सृ) | १५.१६३ | किंचिदप्यत्समुद्भूतं (उ) | १०४.१६ | किंतयान्पुष्पाङ्गुल- (उ) | १६.२४ | किं त्वाकर्ण्यलोके (ब्र) | २.२५ |
| किं करोमि मया सत्य- (पा) | ४६.१२ | किं कुर्याद्विषमार्थं तु (भू) | १०.१२ | किंचिदा कुलतां (सृ) | ४३.८६ | किंतस्य वडुभिर्मित्रैः (उ) | ७१.३११ | किं दत्तैर्बहुभिः पिडे- (उ) | ११८.४६ |
| किं करोमि ममार्थं च- (पा) | ६७.४१ | किं कुर्वेज न काजातो (पा) | ४.३६ | किंचिदात्ममुखेनेह (उ) | १६३.६६ | किं तीर्थं प्राप्य मुच्यते (भू) | ६०.११ | किं दानं न प्रकिंस्तान् (पा) | १००.१४ |
| किं करोमीति तेनोक्तः (उ) | ६.२२ | किं कुर्वेज शपन्तस्य- (पा) | ७५.४ | किंचिदादाय तस्यास्तु (पा) | ११०.८३ | किंतु तीर्थेत्यज्जदभी- (उ) | १२७.६० | किं दाने च नरः स्ना- (स्व) | २६.७५ |
| किं करोमीति देवेश- (उ) | २२६.२३ | किं कृतं तत्र युष्मामिः (सृ) | १६.२० | किंचिदन्मया प्रोक्तं (पा) | ८५.४७ | किंतु दुःखानियातानि (क्रि) | ८.७१ | किं दानं न हरेः कर्म (स्व) | ६१.१० |
| किं करोमीति पुरतः (सृ) | ८.४१ | किं कृतं ब्रह्मणा ब्रह्म (सृ) | ८०.३२ | किंचिद्विद्यामि- (पा) | ६४.६ | किंतु पुत्र त्वया दृष्टम्- (भू) | १०१.४ | किं दानैरहमफलदः (उ) | १६२.५१ |
| किं करोमि मया ये (उ) | २१०.३० | किं च तत्र भवेद्देहं (उ) | १२२.२ | किंचिद्व्रतं समाचक्ष्व (सृ) | २१.२१२ | किंतु पूजयितुं शक्य (पा) | १०४.१२६ | किं दृष्टोऽयानमहा- (उ) | ३८.२ |
| किं कर्तव्यं मया काले (उ) | ६०.१२ | किं च तत्र विवर्तनभयः (पा) | ६५.२८ | किं चैकवरये विप्रो (पा) | ११७.१६० | किंतु सर्वेषु भक्ष्येषु (क्रि) | ६.१२६ | किं दानपश्ययोगि- (उ) | २०५.४० |
| किं कर्तव्यं मया ब्रह्म (पा) | ६७.८२ | किं च प्रापितकालस्य (उ) | १८३.४८ | किं जपैः किंतयो भिर्वा- (क्रि) | ६.११६ | किं तेऽभिलषितं विप्र (क्रि) | १७.२२२ | किं धनैः किं जनैः (क्रि) | ६.७७ |
| किं कर्तव्यं मिन्नोम्मा- (पा) | ६१.५८ | किंचित् प्रसंगमात्रासाध्य (क्रि) | ६.१०४ | किं जातीयः किं मात्मा- (उ) | १८३.६ | किं ते करोमि राजेन्द्र (सृ) | ३४.३५० | किं न कुर्वीत तत्तस्मान् (सृ) | १३.३८२ |
| किं कर्तव्यं मिह चैव (भू) | ४.१६ | किंचित्पतिविराकुत्स्य (पा) | १०४.३३ | किं जातीयः किं मा- (उ) | १६१.२५ | किं ते नमः त्रैलोक्ये (उ) | ८०.१०३ | किं नन्दनं किंतु गिरिः (पा) | १३.१४ |
| किं कारणमदृश्यास्ते (उ) | ६६.२२ | किंचित्कालं च तां भु- (पा) | १११.२१ | किं जातीयो किं मा- (उ) | १८२.७ | किं ते नमः त्रैलोक्ये (पा) | १६.३६ | किं नाम बचला- (क्रि) | ५.३१ |
| किं कार्यमिति गोविंद (उ) | १४.४ | किंचित्कालं गते विप्र (ब्र) | १२.६१ | किं ज्ञानं कः प्रभा- (भू) | ३७.११ | किं ते नाम कुलं गोत्र- (भू) | ४७.२७ | किं नाम वृहसेवृद्धकः (ब्र) | ११.१५ |
| किं किं लोकोऽहो हारी- (उ) | ८०.१३२ | किंचित्काले वामां (पा) | ७२.१४३ | किं ज्ञानं कीदृशं कार्यं (भू) | ३७.३१ | किं ते पांशो विस्तेनेहं (पा) | ८४.७५ | किं नाम वीरिणो भूत- (उ) | १५४.६ |
| किं किं लोकोऽहो सन्तर्दः (स्व) | ६२.२० | किंचित्कालं विद्यायै- (उ) | १०६.७ | किं तस्मात्कारणमुद्दिश्य- (पा) | ६४.७८ | किं त्वचिन्तयसे ब्रह्म- (उ) | १६३.२७ | किं नामान्मृत्स्वजस्ते (सृ) | ३४.२ |
| किं किं लोकोऽहो सन्तर्दः (सृ) | ४३.४८६ | | | किं तज्ज्ञानं महादेवत्व- (सृ) | २३.४ | किं त्वत्सन्तोषधनदत्त- (सृ) | ४३.२६ | किं नाम्नीकिसमाचारा- (सृ) | १६.१४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१०६

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------------|---------|
| किंनुज्ञानश्रुतेरसराज (उ) | १००.२७ | किंभित्यादुरिन (सु) | २२.४१ | किंवादेशोऽधर्गः (भू) | १२२.३ | किं सुखं लभते जंतु (स्व) | ६१.७६ | किन्नरो विद्वरो नाम (भू) | १०६.२३ |
| किंनुविश्वपतिः साक्षान् (सु) | ३६.८ | किंमनुष्यैरनस्त्रीभिस्त- (सु) | १५.१६० | किंवादेवोचह्राप्राज्ञो (भू) | ११२.५ | किंस्थित निजिलेरद्य- (पा) | ३८.१५ | किन्नामदेविधितः या (उ) | ४१.२ |
| किं नुस्याच्चिन्नसंमोहः (सु) | ३६.६२ | किं मया तत्कृतं कर्म (भू) | ६५.४८ | किंवा नो मरणत्वद्य उत (पा) | १०५.२३ | किंस्नानं विष्णु पादांबु (स्व) | ६१.६ | किं पुण्यं वर्त्तने (य) | २.२६ |
| किंपरंत्वयनं प्रोक्तं (पा) | ११४.४२६ | किंमया तस्यसाध्यं (पा) | ६६.१०२ | किं वा दृष्ट्या च विष्णु- (भू) | ६१.५६ | किंतुतुल्यं गुणाहते (स्व) | १५.३६ | किंमत्येत्वदांतस्य- (मृ) | १६.२६३ |
| किं पुनः कामिनी देव (भू) | ५३.१४ | किं मे सुतीर्थयात्राभिरन्यै (भू) | ६२.६८ | किं वा महत्फलं प्रेत्य (पा) | ६५.४२ | किं पुना यं त्वयातुल्यं (उ) | १५.४४ | किंमग्निः प्रज्वलत्ये- (पा) | २२.१४ |
| किं पुनः प्राप्तुकामा- (सु) | ४४.४८३ | किंयागैर्विधैरन्यैः (पा) | ३५.३० | किं वामृतस्यवैपृष्ठद्वयं (सु) | ३३.१२५ | किंतु पंचशरस्येपु- (सु) | ४३.२०० | किंमगतां चक- (क्रि) | १७.७४ |
| किं पुनर्दुर्भंगाहीना- (सु) | ४३.१५६ | किंरक्षितेन देहेन सुपुष्टेन (स्व) | २६.१६ | किं विज्वलत्वयाष्टम (भू) | ६३.१ | किंतु पापान् दुराचारा (उ) | १८७.५१ | किंमे नाशयेन (पा) | ११६.१०६ |
| किंपुनर्नवमीयुक्ता (ब्र) | १३.६७ | किंरक्षितेन देहेन (उ) | १२६.११ | किं वा वितर्कितो पुत्रः (भू) | १०६.११ | किंतु ब्रह्मादयो देवा (उ) | ७१.१०१ | किंमकरणीयमेकथ- (उ) | २१४.७१ |
| किं पुनर्ब्रह्मिः पुणरैः (स्व) | ४०.४० | किंरूपकेन मंत्रेण दात- (सु) | २१.५१ | किं वा शिशुविरोधश्च (भू) | १०६.१२ | किंतु यद्दृष्ट्या तस्या- (पा) | ७१.८२ | किंमत्र चित्रं दशगो (क्रि) | ६.१४१ |
| किंपुनश्चेतनायुक्तं- (पा) | ६६.६६ | किंवत्सत्त्वं भ्रमस्येव (उ) | २३८.२६ | किं वा स उद्यमः श्रेष्ठः (भू) | १०६.२१ | किंतु वक्ष्यामि देवैर्षे (उ) | ६८.१३ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन इदं (मृ) | ३४.१७२ |
| किंपुनस्तस्य पापानाम् (स्व) | ५०.१७ | किंवदामिद्विज्येष्ठ (उ) | ६७.६ | किंवासौ कुपितोरामः (पा) | ५६.३८ | किंतु विघ्नाभविष्यति (स्व) | ३३.५५ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (पा) | ६६.३० |
| किं पुरा राजधर्मेण (स्व) | ४०.३७ | किं वदमेजगत् (उ) | २०६.४५ | किंवास्मिन्दुर्लभलोके (पा) | ७४.३३ | किंतु स्तेहेन वैसाधो (मृ) | १८.२६८ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (पा) | ११४.४५३ |
| किं पूर्वविराजं श्रेयो- (उ) | १८५.१०६ | किंवा अहिमयोनस्या (उ) | १८१.१५ | किंविद्यया च तप- (पा) | ६६.१४ | किंते पुत्रेण कर्त्तव्यं- (सु) | १८.३०४ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (पा) | ६२.६८ |
| किं प्रयागिहरं जेतुम्- (उ) | १६.३५ | किंवा केन कृतं कर्म- (पा) | ६४.६६ | किंवृत्तं तत्र ते जातस्य (उ) | २१०.२२ | किंते मिधानं कल्याण (मृ) | १८.४४६ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (उ) | २५२.१०८ |
| किं बह्वक्तेन वैसाधो (उ) | १६३.२० | किंवा चैव कृतं कर्मयेन (सु) | ३२.१७ | किंवैरेण वालिनमात्तुः (पा) | ११६.१८३ | किंतु लोकाजलं विनि (क्रि) | ५.६८ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (मृ) | ५.२६ |
| किं वालयोद्धकामोसि- (सु) | ४४.१६१ | किंवा च्छन्नेन रूपेण (भू) | १२२.५ | किं व्रतैर्बहुभिश्चो- (उ) | ३७.५७ | किन्नरं विष्णु भवतं (भू) | १०६.२६ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन क्षेत्रं (मृ) | १८.२१० |
| किं ब्रवीमि मुने दुःखं (उ) | १६६.३४ | किंवा च्छसिपुराणं (पा) | ११४.४८६ | किं शक्रवृत्तितं पापा (क्रि) | ६.८७ | किन्नरास्तत्र गायति (भू) | ८८.६ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (पा) | ११४.४४० |
| किं ब्रह्मा वा भवा- (भू) | ८८.४१ | किंवा छलं कृतं कस्य (भू) | १०६.६ | किंशुकाश्चैव भग्याश्च- (मृ) | ४५.६० | किन्नरो दानानानीत (पा) | ११७.११ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (उ) | ३५.३६ |
| किं भविष्यति ताते- (उ) | ४०.३८ | किंवा जपसि देवेश- (उ) | ७१.८८ | किं श्रुतैर्बहुभिः शास्त्रैः (उ) | १६५.३१ | किन्नरो दानमीतं दत्तं (मृ) | ४४.२०६ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन यात्य (उ) | ५६.२७ |
| किं भाषितेन बहुना (सु) | १३.२६६ | किंवा तपोभिरखिलेश्वर (क्रि) | ७.१०३ | किं संज्ञाश्चैव भगवान्- (सु) | ३६.१२० | किन्नरो रोगघर्षं दत्तं (भू) | ६३.१२ | किंमत्र यद्दुर्भोगेन (उ) | १२८.१६५ |

| | | | | |
|------------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------|
| किमनेन महाद्गदः ख (उ) १८३.३४ | किमर्थं विधूतोकुत्र-(पा) ६४.५७ | किमात्मानं जहाम्य-(पा) ५६.४८ | कियत्कालं यमामाद्य (क्रि) २.७६ | किरीटहारकेयूरमुपूर-(उ) २३१.३६ |
| किमन्यच्छ्रोतुका-(उ) २२६.१८० | किमर्थं मङ्गं संभूताः (सु) १३.१६६ | किनाश्चर्यं जले त-(उ) २४५.३२० | कियत्कालात्पूर्वमिदं (पा) ११६.१८६ | किरीटिनं कुंडलिनं (पा) ७०.४६ |
| किमन्यद् बहुनोक्तेन (उ) ७२.६ | किमर्थं सहसा विंध्यः (सु) १६.१४२ | किमित्येवाशंभाव (पा) ११२.१३७ | कियत्कालेन संप्राप्तो (उ) १६६.७१ | किरीटिनः कुंडलिनो (उ) १६७.१०७ |
| किमन्यद् बहुनोक्तेन (उ) ८३.२१ | किमर्थं सानु कृत्यानि (उ) १५.७.६ | किमिदं कर्मणो मूलं (उ) १७६.४७ | कियत्प्रमाणाविपेन्द्र (उ) ४६.३१ | किर्यासातुदेवशी-(सु) १६.१५ |
| किमन्यद् बहुनोक्तेन (उ) १३८.१३ | किमर्थं सुभ्रु नष्टासि-(सु) ३३.६४ | किमिदं द्वात्रिंशदन् (पा) ७५.७ | कियत्पविगतेकाले (उ) १६१.१६ | कीरुटेपुगयापुण्या-(सु) ११.६४ |
| किमन्यैरामिनि-(पा) ४१.६ | किमर्थं भवतीर्णो (पा) ३६.४ | किमिदं वेष्टितं दानं (सु) ३८.१५४ | कियत्येवगते काले (उ) १३५.१२० | कीटकं कपापाण-(सु) १५.२२१ |
| किमभीष्टविशेषशोक (सु) २१.२१ | किमर्थं मयमारंभः (पा) ४५.१० | किमुक्तं तत्स्फुटं (सु) ११४.७ | कियदग्रे च भोक्त-(उ) २१३.६६ | कीटकोपिमृतोयाति-(स्व) ३१.१४३ |
| किमर्थं कथिता भूति-(सु) १५.१२५ | किमर्थं मत्प्राप्तेन स्व (उ) ४६.५ | किमुचितयसे राजस्त्वमि (भू) ८२.२ | कियद्वरतयोगत्वा (पा) ८३.७८ | कीटाः पिरीतिकाश्चैव (स्व) ३३.१६ |
| किमर्थं क्रान्ते वाले (भू) १०३.५० | किमर्थं मानसः सोम्य (पा) ६६.६२ | किमु चैव त्वया (भू) ५३.७६ | कियदिभदिवमैः (क्रि) ६.२४ | कीर्यदवामि माहाय्य (भू) ३६.३ |
| किमर्थं च कृता संज्ञा-(सु) ८.२ | किमर्थं मागत्युयं (पा) ११३.१२ | किमुजानं परं प्रोक्तं (उ) ८०.८० | कियदिभदिवमैः श्राध्या (उ) १६५.४ | कीर्यतत्तुगुरुश्रेष्ठ (उ) ३४.२४ |
| किमर्थं तप्यसेवात्वं (सु) ३५.७२ | किमर्थं नागतोसो-(पा) ११५.१५ | किमुतान्ये गृहाः (पा) ५८.३७ | कियदिभदिवमैः सातु-(उ) २२०.३८ | कीर्यं तप्यनस्य (भू) ३१.५ |
| किमर्थं देव देवेन (सु) ३८.११२ | किमर्थं मिहृमीता (उ) २०४.१२३ | किमेतच्चैष्टितया-(उ) १२८.१०६ | किरातायवराः सिद्धा-(स्व) ६.५२ | कीर्यं ब्रह्मचर्यं च (उ) ६४.११३ |
| किमर्थं देव देवेन-(सु) ४.३ | किमर्थं मिह संप्राप्ताः (उ) ५५.१८ | किमेतच्चैष्टितं पापं-(स्व) २२.१०१ | किरातेन कृतं तत्रयथा-(उ) १५१.४६ | कीर्योविस्मृतादेव (उ) ३४.४१ |
| किमर्थं निदसेदेविदेव (पा) ११४.२७२ | किमर्थं हि समायाता (भू) ७७.२७ | किमेतदित्तिचाचित्यनः (पा) १०५.२२ | किरीटं शृङ्गारो (उ) १६७.१०२ | कीर्योदानवः शक्न- (उ) ३८.६६ |
| किमर्थं पुत्र भूयस्त्वं (सु) ४२.४५ | किमर्थं चकारिंता (क्रि) १०.७४ | किमेतदित्यमुचित्रं (सु) ८.१११ | किरीटकुण्डलाद्यं (पा) ७०.६३ | कीर्योस्यान्महादेव (उ) ३६.१ |
| किमर्थं भवनात्पुत्रः (सु) १३.२६७ | किमर्थं शूलिनो (उ) १०.२ | किमेतदुच्यते स्वा (पा) ५८.६ | किरीटकुण्डलाद्यं शुद्ध-(पा) ७०.५१ | कीर्योश्वस्तत्रमाभ्यः (पा) ६.१ |
| किमर्थं सामानुब्रूयुषा-(सु) ४०.४४ | किमर्थं वदविश्वे (उ) १५३.१८ | किमेतदभगवन्बुद्धि-(सु) १५.७२ | किरीटकुण्डलोदीप्तं (पा) ७०.६२ | कीर्यो कर्मभिः प्रत्य (भू) ६६.१ |
| किमर्थं हृद्यतेतात (पा) ११०.६ | किमर्थं कृते (सु) ११.६८ | किमेतदभगवन्बुद्धि-(सु) १५.८६ | किरीटकुण्डलोदीप्ता-(भू) १२.६७ | कीर्योनि कथं प्राप्नो (भू) १२३.२० |
| किमर्थं हृद्यते भवित-(पा) ११४.३६२ | किमर्थं कृत्यं (सु) ३०.११६ | किमेतदभगवन्बुद्धि-(पा) ४.८ | किरीटमानीयजिजाल-(क्रि) १७.२०७ | कीर्यं नाममात्रं च (उ) २२६.१५४ |
| किमर्थं वदकल्याणि (सु) १०.७८ | किमर्थं कृत्यते (पा) १०४.६ | कियताकालयोगेन-(उ) १४१.४१ | किरीटमुकुटोदप्रोकेयूर (सु) ४०.१२ | कीर्यं श्रवणं चैव-(उ) २२४.२५ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकामुक्रमणी

१०८

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| कीर्त्यतिगिरश्चित्राः (सृ) | १५.४६ | कुचयुग्मेनतदग्रं (पा) | १०६.१५ | कुटुम्बंभुक्तिवसन्तात् (स्व) | ५७.१० | कुन्श्चाग्निः समुद्रभूतो-(सृ) | ४७.३३ | कुत्सितं भवतावत्तं (सृ) | ३१.११४ |
| कीर्त्यतिगुरांश्चैव-(पा) | ६६.८८ | कुचयुग्मोपरिन्त्यस्त (पा) | ६८.१७ | कुटुम्बमिवविप्राणा-(सृ) | १५.२६ | कुत्सितारणा-(उ) | २१५.५० | कुत्सितानिमलेनापि-(पा) | ६४.६२ |
| कीर्त्यपुराणमेगु-(पा) | ११६.१४ | कुचयोनिविहीनाये (भू) | ८.५२ | कुट्टापरान्तामाहेयाः कक्षाः (स्व) | ६.४४ | कुत्तद्वनलुब्धानामिन्-(सृ) | १६.३५६ | कुडालहस्तोनि रगा (उ) | १८१.१७ |
| कीर्त्येयश्चदंष्ट्रोत्रं (उ) | १२८.२७३ | कुचयोर्मणिशोभाये-(सृ) | १६.१७६ | कुठारच्छेदन तीव्रं (भू) | ६६.१६१ | कुत्तस्या सुतं रूपं (भू) | ४१.७४ | कुधमादार सहितैर्हिमा-(सृ) | १३.३१७ |
| कीर्तितस्तुमहाराज-(सृ) | ४०.११३ | कुचाभ्यां च नितम्बा-(भू) | ८.४६ | कुठारभिन्नदैर्घ्येद्र-(उ) | १८४.३४ | कुत्तयोत्रं तयश्चैव (स्व) | ६.३८ | कुत्तहस्तोभीम-(उ) | २००.८६ |
| कीर्तितस्तुसमासैनमुनि-(स्व) | २.१८ | कुचावृतेपेपुरुषो (स्व) | ६१.४५ | कुडं तु विधिवत्कृत्वा-(पा) | ६.२८ | कुत्तस्वागम्यते ग्रहान् (उ) | ६६.२ | कुदैः कुमुदपुष्पैश्च (सृ) | २२.८७ |
| कीर्तितासामधुमती प्रेम-(पा) | ७७.३४ | कुचोक्तुवापटकुटी (उ) | ४६.१४ | कुण्डलंनम नगर-(पा) | ४६.५ | कुत्तहलवशाच्चैव-(सृ) | ३६.५७ | कुपितः प्राहकामोद्रधन्यो-(पा) | ५२.२६ |
| कीर्त्यतेजगतोयत्र सर्ग-(सृ) | २.३७ | कुचोतुमालूरफलो-(पा) | ११.७६ | कुण्डलस्य सुतो धीरः (भू) | ६१.४७ | कुतोयमागतोभ-(उ) | २०५.३७ | कुपितश्चनयोर्भ्यो (उ) | ४३.२५ |
| कीर्त्यतेजुवसामध्यस्ति (सृ) | २.२४ | कुञ्चिकातालिके-(सृ) | ४.६४ | कुण्डलस्यापिपुत्रेण (भू) | ६२.४ | कुत्रकुत्रहृयः प्रायः (पा) | ६५.४२ | कुपिताः पाननत्ये (उ) | २२६.६३ |
| कीर्त्येपाशदिमिर्धा (क्रि) | २३.१५७ | कुजरेवचमदोमत्तैर्हृयै-(पा) | २५.१७ | कुण्डलस्याश्रम गत्वा (भू) | ६२.१ | कुत्रगच्छसिदुर्बुद्धेनयि-(पा) | ३८.३६ | कुपिनेष्वेव त्रिप्रपु (भू) | ३८.३३ |
| कुक्रमणः प्रभावेन (उ) | ६२.१२ | कुजलश्चापि धर्मात्मा (भू) | १०१.३ | कुण्डलान् जनयोस्तनावका-(सृ) | १६.१४५ | कुत्रचास्यनिवासः (सृ) | ४१.१०५ | कुपिनोहन्मनो-(उ) | २०४.१०० |
| कुक्रमस्याप्यभावेन-(सृ) | २४.४७ | कुजलस्तु सुतं (भू) | ८६.१ | कुडलानि चहैभानिके-(सृ) | २७.१६ | कुत्रचिद्वृत्तिनोपटाः (पा) | २४.३६ | कुपेर भवनगच्छेत् (स्व) | १८.८४ |
| कुक्रमादिकेधाद्वये-(पा) | १०.४३ | कुजलस्य पितृवियं (भू) | ८५.४८ | कुडलान् विराज्यौ-(पा) | ६८.३४ | कुत्रचिद्वृत्तिवृष्टिः (क्रि) | २३.८५ | कुपेरस्यवचः श्रुत्वा-(स्व) | १६.६ |
| कुक्रुमैः सितरक्तौः-(वा) | ७०.६० | कुजलं पि च वृत्तांतं (भू) | १००.४ | कुडलीकृतसच्चापी-(पा) | २६.३६ | कुत्रचिन्नालभच्छर्म-(उ) | १०२.६ | कुपेगोभून्महामागोयः (उ) | २२२.६४ |
| कुक्रुमोशिरकपूरै-(उ) | १२३.१७ | कुजलोधर्मपक्षी स (भू) | १२२.१ | कुडवाप्याङ्गुभाङ्गस्तु-(सृ) | ३४.१५५ | कुत्रतैः संगमोजातो (उ) | १६३.२३ | कुप्यकंकरवोत्रं च (सृ) | २६.४३ |
| कुक्रुमैः भ्रजमानं च (सृ) | १३.४५ | कुटिलभ्रूयुगं श्रेष्ठं-(पा) | २८.४ | कुडानां कूप राज्येहि (भू) | २७.१३ | कुत्रस्थितः कस्यपुत्रो (उ) | १२८.१६८ | कुप्यत्रिभ्यं महा (उ) | २४५.३३८ |
| कुक्षिचरणगोत्राणां (सृ) | ४६.१३८ | कुटिलालकवक्त्रा-(उ) | २००.१०० | कुडेतुमध्यमेस्त्रात्वा-(सृ) | १८.२१४ | कुत्राश्वोहयमेधम्य-(पा) | ३३.१० | कुप्यस्मिन्महामागोयः (पा) | ६६.६ |
| कुक्षिद्वयं च कोटयै-(सृ) | २६.२२ | कुटीरं कंतुनवंविधाय-(पा) | ६२.११३ | कुड्यं पापं च बौरा-(पा) | ८७.५६ | कुत्रास्तिमुनिवंधुः (पा) | १४.३३ | कुक्षेत्रं गमिष्यामि (स्व) | २६.२ |
| कुक्षिभरिंहमार्गै-(उ) | १८३.२१ | कुटुम्बं चाकुलितस्य (भू) | ६६.१६२ | कुतएवहिदुर्भिक्षमा-(स्व) | ८.१० | कुत्सते भापकतयोगुहं (भू) | ८८.३३ | कुक्षेत्रं गयान्व (स्व) | ४७.२ |
| कुचसङ्गं कुम्भकैः रिकि | ५.१७१ | कुटुम्बं पुत्रदारादि-(पा) | ६६.२१ | कुतर्कं हेतुवृत्तांतैर-(सृ) | १८.३२६ | कुत्सितं न करिष्यामि (सृ) | १८.२६६ | कुक्षेत्रं तु पुण्यं (स्व) | १६.१२ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१०६

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|--------|
| कुरुक्षेत्रं प्रयागं (उ) | २३.४४ | कुरुते च महादेवि (उ) | ८३.१५ | कुर्वन् पुण्य कर्माणि (उ) | ११२.१८ | कुर्वन्मन्युव्यायनं (मृ) | २४.२० | कुलहीनादुरात्मनः (उ) | १५१.६३ |
| कुरुक्षेत्रं मया दृष्टं (पा) | १७.७५ | कुरुतेभूसुरं मूढो (त्र) | १४.७ | कुर्वतासर्वपापानि (क्रि) | २२.५१ | कुर्वन्निजक्रियां (उ) | २०४.४२ | कुलहीनोमहाध्या (पा) | ११५.५६ |
| कुरुक्षेत्रं महापुण्यं (मृ) | ११.१४ | कुरुतेमानवीयस्तु (उ) | १२०.१३ | कुर्वतादासणाञ्छन्दा- (उ) | १२६.१६७ | कुर्वाणंकोटि कोटिश्च (पा) | १०५.२६ | कुलांगना दैवयोगात् (स्व) | ६१.३६ |
| कुरुक्षेत्रं विजानीयात्- (पा) | ७६.५६ | कुरुते मैथुनंमूढो- (क्रि) | १७.२८ | कुर्वन्तो बुद्धिपूर्वमेव- (पा) | ८.२६ | कुर्वाणं नैगमजाप्यं (उ) | १२५.४५ | कुलाचारं परित्यज्य (भू) | ६७.६ |
| कुरुक्षेत्रं समागंगा (स्व) | ३६.८४ | कुरुते यत्र गोविंदो (पा) | ७४.५६ | कुर्वन्नि कथनंरामरामे (पा) | १७.४४ | कुर्वाणाजगतोजन्म (उ) | १८६.१६ | कुलाचारं परित्यज्य (भू) | ८६.४ |
| कुरुक्षेत्रं समागंगाय (उ) | १२७.४७ | कुरुते योनराजानी (क्रि) | ६.६१ | कुर्वति जागरं विष्णो (क्रि) | २२.१३६ | कुर्वाणोदेवयोगेन (उ) | १८६.३५ | कुलाचारं परित्यज्य (पा) | ६२.६३ |
| कुरुक्षेत्रस्य तद्वरिविश्रुतं (स्व) | २६.२२ | कुरुत्वं ममदेहस्य (उ) | २१६.७ | कुर्वति जागरं (उ) | ३७.२८ | कुर्वीतभगवत्प्रीत्यै- (उ) | २५३.१३८ | कुलानांशनमेकं च यदि- (मृ) | ५१.५१ |
| कुरुक्षेत्राच्छीद्विगुणं (मृ) | ११.२१ | कुर्याद्विहरहः स्नात्वा (भू) | ५६.२६ | कुर्वतिदारग्रहण (क्रि) | ६.६० | कुर्वीतात्मयितं नित्यम् (स्व) | ५४.१७ | कुलानांशनमेकं च यदि- (मृ) | १३.१६६ |
| कुरुक्षेत्राच्छतगुणं- (उ) | १३५.६८ | कुर्याद्वाराधनं विष्णोर्वध (उ) | २५३.५८ | कुर्वति प्रांगणेनृत्यं (उ) | ८३.१० | कुलं च सकल तस्य (मृ) | ३४.१६० | कुलानिनाशयेत्तस्य (उ) | ३२.५७ |
| कुरुक्षेत्रादृशगुणा (स्व) | ४३.५० | कुर्याद्विवाच चाधिकः (पा) | ११४.२३७ | कुर्वतिमनुजानित्यं (उ) | ६०.२० | कुलं नाम स्वकंग्रामं (भू) | ८६.२७ | कुलानिनाशयेद्राजन् (स्व) | ४५.४ |
| कुरुक्षेत्रेगयायां च (स्व) | ३१.३६८ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वतिये सकृद्भक्त्या (त्र) | ७.८ | कुलंमहदलंकार्यं (पा) | १२.१० | कुलानिहेत्या (पा) | १०२.६ |
| कुरुक्षेत्रे पुष्करे च (क्रि) | ४.८ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वति रघुनाथस्य- (पा) | १७.४३ | कुलकोटि शतंनावत्त- (क्रि) | ८.६४ | कुलानुद्धरणं चैवा (उ) | ३७.३३ |
| कुरुक्षेत्रे प्रयागे च (मृ) | १७.२१६ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वतिरमणीयं वरं (मृ) | १५.५१ | कुलकोटिसमुद्रव्यं (उ) | २५३.१६६ | कुलान्यकुलनांति (स्व) | ५५.१७ |
| कुरुक्षेत्रे महाक्षेत्रे (भू) | ६१.२ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वतिशानि विद्रुधा (उ) | १३०.१५ | कुलक्रियामयानात (उ) | २१०.६१ | कुलान्यकुलतांति (स्व) | ५५.१८ |
| कुरुक्षेत्रेषुद्वत्तं (उ) | ३७.६२ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वतुकोकास्त्वतितं (पा) | ३.३ | कुलजोवा तपस्वी (उ) | २२३.२५ | कुलान्यैव कुलोना (पा) | ५.३३ |
| कुरुक्षेत्रं समायाता (उ) | २१७.१२ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वतोदूतकार्याणि (उ) | ८.८ | कुलशीलवती कन्या (उ) | ११८.२८ | कुलालचित्रकारान्म (स्व) | ५६.६ |
| कुरुजांगलदेशीयो (उ) | २२२.१० | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वतोविधाञ्छ (पा) | ६४.६४ | कुलशीलसमायुक्ता (मृ) | २७.१२ | कुलिदाः कालदादचैव (स्व) | ६.५८ |
| कुरुतंतत्तपोविघ्न (उ) | १७८.२३ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वन्त्यतिथिपुजार्यं (मृ) | १५.३३५ | कुलस्य जायतेकोतिः (भू) | ४७.६१ | कुलीनैरिखनिदिष्टैः (मृ) | १५.३० |
| कुरुताद्वाजिमेधं (पा) | ३६.२६ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वन्त्येवं दिवसं (भू) | ६६.४२ | कुलस्यतारको (पा) | ८६.३५ | कुलीनोपिद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | २०.१४८ |
| कुरुतुन्तिथ्याकाम- (मृ) | १८.४२२ | कुर्याद्विगुहाणिकार्याणि (स्व) | ५४.१५ | कुर्वन्मदोषमानोति- (मृ) | ३६.३४ | कुलस्य तारकोविद्वान् (भू) | १७.२४ | कुलेचकचिल्लोके (उ) | २०२.२७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

११०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|----------------------------|---------|
| कुलेतस्य च संजाताः (उ) | १२४.२२ | कुगलाकुट्टिनीकर्म (पा) | ६२.७२ | कुसुमोशीरकर्पूरै (उ) | ११६.२६ | कूष्मांडाभैरवाश्चापि (उ) | १०१.१५ | कृतंमयामोहवना (क्रि) | २१.१०३ |
| कुलेतस्यनराजेंद्र (मृ) | ११.५४ | कुशवत्यां कुशतं (उ) | २४४.५३ | कूजत्कांचीकला पातं-(पा) | ७४.७० | कूष्मांडाश्चैवडाकिन्य (क्रि) | १३.६७ | कृतंमयायथानर्थ्यद्विज (सु) | ३७.१५३ |
| कुलेनकिचशीलेन (पा) | ६०.२४ | कुशः सर्वाङ्गरास्था-(पा) | ६३.४६ | कूजन्तिस्वस्तत्र (उ) | १२८.१८० | कूष्मांडैर्निरिकेरै-(उ) | ४२.१५ | कृतंमहाधर्मनात्रा(भू) | १७.३७ |
| कुलेमहतिविस्तारं (मृ) | १५.२६० | कुशः सर्वाङ्गविच्छे (पा) | ६४.२४ | कूजयतीमुदाविष्णु (पा) | ७२.१०५ | कूकलः सर्वतीर्थानि (भू) | ५६.१ | कृतंयनैव पश्यति (उ) | ३१.३० |
| कुलेमहतिवैजयन्त-(सु) | ५.४६ | कुशस्त्वनगमायातं (पा) | ६४.२६ | कूटवेदपठद्यस्तु (उ) | ५०.६ | कूकवाकुस्तवपदेन-(सु) | ८.५२ | कृतंयुगमग्रं च यजेत (सु) | २२.१७१ |
| कुलेरधूरां विष्णु (सु) | ३८.६४ | कुशाग्रयाद्विद्यादेविय-(उ) | १७५.८ | कूट साक्षिस्वभ्येतु-(सु) | १६.३४५ | कूच्छवतपरोयस्तु-(सु) | १५.२२० | कृतं राज्ञं तु नैनं (उ) | ४०.४५ |
| कुलेश्वरैश्चवाल्मीकि-(पा) | ५६.७५ | कुशाद्यर्थवनं गतो-(पा) | ६८.४६ | कूटसाध्यनिर्भक्तं (क्रि) | १७.१७५ | कूच्छात्कथंचिदुत्थाय-(पा) | ७४.१६६ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | २४६.३१ |
| कुलोचितं कर्मकुर्वन्-(पा) | ११.६० | कुशानुयुत्थासनाय (पा) | ११४.३३१ | कूटसाध्यसमायुक्तो (उ) | ५०.७ | कूच्छानिक्छयाग-(उ) | २२२.७६ | कृतं वितरन्नेन (स्था) | ६२.१४ |
| कुलोचितानिशास्त्रा-(उ) | १७६.३ | कुशासनधरोनित्य (स्व) | ४३.४० | कूटस्थबीजरूपिणै (उ) | २४३.३१ | कूच्छादिनपसाक्षागो-(पा) | ६१.४ | कृतंमिमाद्विनामिहे (स्व) | ५३.४१ |
| कुशकोरभवत्पुत्रो (सु) | १३.३ | कुशासनानिदत्त्वादेव-(उ) | २१४.१६ | कूटस्थः सर्वं संसिद्धो (उ) | ७१.१३४ | कूच्छेणमहानागाना-(स्व) | २८.४ | कृतंमिमाद्विनामिहे (क्रि) | १२.११२ |
| कुशंष्टवा बलाक्रांतं (पा) | ६३.५१ | कुशिकस्यैवराज्यं (स्व) | ६.५ | कूपवापीषु सर्वाभुताः (सु) | २७.५४ | कूच्छेणलक्षकोपाति-(भू) | ३३.२८ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | २४२.३२५ |
| कुशजदेशसंयुक्तः (सु) | ३७.४६ | कुशेनचलेवनाथ (पा) | ६३.४८ | कूपिकां सजलांष्टवा (उ) | ५५.२८ | कूच्छेणान्द्राद्यगैर्दनि-(पा) | ३१.३२ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | १२४.७८ |
| कुशध्वजोनीलरत्नो (पा) | ५०.४७ | कुशैः काशैश्च कापिर्षि (उ) | ५५.३७ | कूपरयमदूतानां (उ) | ३७.६३ | कृतं किमुद पूर्वैर्यगसि (पा) | १५४.२२ | कृतंमिमाद्विनामिहे (पा) | ११३.१७ |
| कुशपुष्पस्यरजत (पा) | १०६.६२ | कुशोत्तरेषुचासीनाः (सु) | ३५.२० | कूपरयमदूतानां (उ) | ३७.६३ | कृतंजुगुप्सितं कर्मशुभु-(सु) | १४.७ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | १२८.२७२ |
| कुशवाणव्याघ्रा-(पा) | ६३.४७ | कुशो दुःख नितः (पा) | ६३.२५ | कूर्ममाहात्म्यं प्रोक्तं (उ) | १.६१ | कृतं तदभवत्सर्वदेव (मृ) | ३८.१७६ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | १२८.२१२ |
| कुशलं परिपृष्टास्ते (उ) | १७७.३४ | कुशोद्यमभविष्य (पा) | ६३.१५ | कूर्म रूपेण राजेन्द्र (स्व) | ३८.३८ | कृतं त्वया चित्रमिदं (उ) | १८६.५० | कृतंमिमाद्विनामिहे (स्व) | २६.२४ |
| कुशलं भूत्यवर्गस्य (सु) | ३६.२० | कूष्ठाभिभूतः संजातो (उ) | ५२.२६ | कूर्मश्च नागराजश्च (उ) | २२८.२४ | कृतं त्वया वीर्यं ददश-(मृ) | २४.३० | कृतंमिमाद्विनामिहे (भू) | ११७.१२ |
| कुशलं वत्संते राजन् (उ) | ६०.२६ | कुसुमामोहिनी नामतस्य (सु) | ४४.३७ | कूर्मस्तथोन्नतः पृष्ठे (उ) | १०२.६३ | कृतं दत्तं पीथीतं-(उ) | ३२.३८ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | २५४.६ |
| कुशलं ते महाबाहो (सु) | ३५.२२ | कुसुमायुधरूपेणरुद्र-(स्व) | १८.११३ | कूष्मांडघातीयानारी (ब्र) | १६.३० | कृतं नाम महापुण्यं (सु) | ११.१२ | कृतंमिमाद्विनामिहे (मृ) | २६.७ |
| कुशलप्रश्नपूर्वं हित-(पा) | ६६.७२ | कुसुमैरक्षताद्भिर्वा नितम्-(सु) | २२.८२ | कूष्मांडमयजंभोरु-(उ) | १२२.४७ | कृतं पापं तथाप्ये-(पा) | ११५.५ | कृतंमिमाद्विनामिहे (उ) | २०१.१६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

१११

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| कृादोषान् द्विजान् (क्रि) | २१.१८ | कृतद्रोमैर्द्विजैर्द्रैस्तु (उ) | १२२.४२ | कृताभिवादनं विप्रं (क्रि) | २१.१६ | कृते द्वादशभिर्वर्षेभ्यः (सृ) | १५.२७८ | कृत्तिवासेश्वरं लिगम् (स्व) | ३४.१० |
| कृतपानक्रिस्त्वैव (पा) | १०१.१० | कृताकृतं च कनकं (सृ) | ३८.१८५ | कृताभिषेकस्फुरराज- (सृ) | ४३.१८५ | कृतेनपुण्याप्राप्त्याये- (सृ) | ३२.६५ | कृत्तिवागेध्व-यैव (स्व) | ३४.१२ |
| कृत्पापोऽपि विप्रैश्च (क्रि) | १७.४८ | कृताकृतोपकरणमित्रा (सृ) | ४३.४२ | कृतार्थमिस्तारणायन (सृ) | ३६.१२८ | कृतेनयेनसर्वस्य फल (सृ) | ३४.३८८ | कृत्पाकृत्यं वेदेचैव (भू) | ८४.१५ |
| कृतपुण्यमिदं वैश्य (उ) | २०४.१०६ | कृतानिः कृतवीर्यं (सृ) | १२.१०५ | कृतार्थमन्यतात्मानं (सृ) | ३०.१०४ | कृतेनयेनराज्ञा (उ) | ४४.२३ | कृत्पाविवसाचात्सु- (उ) | १७.८४ |
| कृतं प्रणामं तनयं (क्रि) | २१.१७ | कृताञ्जलिपुत्रा दीमा (उ) | २४२.२७५ | कृतार्थमागतंजात्वा- (सृ) | १३.२७८ | कृते युगे नु निःपापाः (भू) | १२५.४० | कृत्पा सपाश्च भूमा- (उ) | १२६.१३८ |
| कृतबुद्धिषु कर्तारः (स्व) | ३.२०३ | कृताञ्जलिपुटानां च (पा) | ७२.१४० | कृतार्थमिष्टचात्मानं (पा) | ३२.२५ | कृतेनयुगेपुष्कराणि- (सृ) | ३४.२२५ | कृत्पासपञ्चभयं (उ) | ७८.६ |
| कृतभोजनभासी- (उ) | २०२.३३ | कृताञ्जलिपुटान् देवा (उ) | १८६.४५ | कृतार्थैः सर्वकृत्येषु (स्व) | ३२.२० | कृते युगे महाराज- (भू) | ६६.२३ | कृत्पाकृतं श्रेष्ठं स्वर्गं (त्र) | २१.३१ |
| कृतमथपवनेनदिना- (सृ) | २६.५८ | कृताञ्जलिपुटाः प्रोक्तु- (उ) | १८.११२ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १३.१२२ | कृते युगेस्वरूपेण (उ) | १२७.५६ | कृत्पाकृतं श्रेष्ठं दानं च (उ) | २१.४६ |
| कृतमित्येवतत्सर्वं (सृ) | १५.२८७ | कृताञ्जलिपुटाभूत्वा (भू) | २८.१०८ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १७.१८८ | कृतेनयुगेकौतयेपुष्प- (उ) | १५४.६६ | कृत्पाप्रापचयामांते- (उ) | २१४.२० |
| कृतमनस्तु विप्रो- (उ) | १८५.६८ | कृताञ्जलिपुरोभूत्वा (उ) | ५६.११ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | २.३२ | कृते वनेतु कौतयेपुष्प- (उ) | ५८.३३ | कृत्पाचक्राचनं पद्म- (सृ) | २५.२१ |
| कृतवंतः परेऽस्य- (उ) | १८१.११ | कृताञ्जलिपुटोभूत्वा (उ) | ४.११ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १०५.४६ | कृतेपुतवसंषु- (पा) | ६६.४७ | कृत्पा च तुलसीं पात्रे (क्रि) | ११.७५ |
| कृतवमग्रजस्तेषां- (सृ) | १३.६५ | कृताञ्जलिपुटोभूत्वा (उ) | ३८.५८ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १२.११६ | कृतेनयुगेस्वरोताम- (उ) | १३५.१०६ | कृत्पा चैकैकहस्तेन (उ) | १५१.२८ |
| कृतवानसिपद्मगुणं त- (सृ) | ४३.३२ | कृताताभ्यामशाठ्येन- (सृ) | २१.१३ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ३०.२ | कृतोदकानर व्याघ्र- (सृ) | ३७.६२ | कृत्पा चैकैकदंशे (पा) | ७६.३२ |
| कृतवानिद्यमान (उ) | १२७.१०८ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ६६.३० | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १२.१३३ | कृतोपनयनः कुंडः मन (उ) | २१३.३६ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | ७४.४५ |
| कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | २६.१६ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ४.३३२ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ३५.३ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | ५१.८ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | ३४.३६८ |
| कृतस्त्राग्नेनवैद्यः (सृ) | १६.१० | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १०.४४ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | २१.२३४ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | २०.१५६ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | २२६.६ |
| कृतश्रमस्ततस्त (उ) | १७६.४ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ६३.४४ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १३६.४४ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | ३३.६ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | ६१.१७ |
| कृत संघ्यास्त- (पा) | ११४.२४३ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ३६.१२५ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | २६.१२ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | ३३.६ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | ४६.३८ |
| कृत संघ्यास्त- (पा) | ११४.२४३ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ३६.१२५ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | १२४.१६५ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | ३४.१८ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | ८६.८ |
| कृतसंस्कारकर्मणि (उ) | २४६.३ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ३०.१३ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ४३.१३७ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | ३४.१७ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | १२२.१८ |
| कृतस्नानानिराहाराः (उ) | १३५.४४ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ४३.२६६ | कृतार्थोऽस्मि कृतार्थो (क्रि) | ४.३४ | कृतोपनयनोवेदान- (स्व) | ३४.१७ | कृत्पा चैकैकहोमं- (पा) | १२२.१८ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

११२

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| कृत्वा नुयज्ञ पात्राणि (मृ) | २७.५१ | कृत्वा मायामवरूप- (भू) | ४६.२६ | कृत्वा मृष्टव्यादिकं (सृ) | ६.५५ | कृमिदुष्टभावदुष्टम् (स्व) | ५६.२६ | कृष्णं शरणं (भू) | ७४.२६ |
| कृत्वा नुवाच ऋषेः (पा) | ६८.३५ | कृत्वा मासोपवामं तुय- (उ) | ११६.३६ | कृत्वा स्वगृहमानीय- (उ) | १५१.५५ | कृमिभिर्मक्षमाणा- (पा) | १०१.१७ | कृष्णं हेतुं मुमाराब्ध- (उ) | २४५.८६ |
| कृत्वा नुवैष्णवं (सृ) | २३.४७ | कृत्वा मासोपवासं- (उ) | १२३.२४ | कृत्वा हि युद्धं समरे (भू) | ४४.८ | कृमिभेदयोदेहो (उ) | १३२.७३ | कृष्णं हंतुं समाराब्धो (उ) | २४६.५४ |
| कृत्वाथ गुरवे दशान्म- (सृ) | २१.२०२ | कृत्वा मूत्र पुरीं (भू) | ७७.२ | कृत्वं तत्सर्वमेवेहरा- (उ) | १२२.४५ | कृमिर्नृत्वाय विष्ठायां (उ) | २५३.१६६ | कृष्णः कर्बवश्चनदा- (सृ) | ५.१२७ |
| कृत्वा द्वादशवर्षाणि (उ) | ३२.६६ | कृत्वा मूत्रं पुरीषं (स्व) | ५२.३५ | कृत्वा दध्वर्दैहिकं (उ) | ६०.२१ | कृमियोनिशतं गत्वा- (स्व) | ३१.३३ | कृष्णः कान्तामनुज्ञा- (पा) | ८३.५७ |
| कृत्वा नर्मव्यवस्थानं (सृ) | ७.१०७ | कृत्वा भूवोधनुष्कोटिं (उ) | ४६.१३ | कृत्स्नप्राचिनिकं तत्र (पा) | ११७.८ | कृमियोनिशतं च (पा) | १०६.८ | कृष्णं कृष्णं कृष्णं (उ) | ४२.१६ |
| कृत्वा न्यवेपमात्मा (पा) | ११२.३१ | कृत्वा यथाविधि (उ) | २०१.१२ | कृत्स्नस्य योऽप्यजगतः (सृ) | ३३.१५२ | कृमिवर्चसतुभस्मादि (स्व) | २६.२५ | कृष्णं कृष्णं जगन्नाथ (उ) | २५०.४६ |
| कृत्वा पंचनमस्कार- (पा) | ११२.१४२ | कृत्वा रामेस्वरनाम्ना- (सृ) | ३८.१३३ | कृपया देवदेवस्य (उ) | २३८.२३ | कृमीणां शतपचाशता- (भू) | ५३.१०० | कृष्णं कृष्णं जगन्नाथ (उ) | २५०.५२ |
| कृत्वा पिपातकंधोरं (स्व) | ५०.२५ | कृत्वा वाणिज्यमायातः (क्रि) | ४.५३ | कृपया परयायुक्तं (सृ) | ३६.११६ | कृमीणां शतपचाश- (पा) | ६६.३८ | कृष्णं कृष्णं ननुः (उ) | ११३.३ |
| कृत्वा पिसुमहत्या- (उ) | २६.१२ | कृत्वा विधानमेत- (उ) | ३४.७४ | कृपया ब्रह्मपुत्रस्तु (भू) | १०५.५५ | कृगहं दुर्गता चैवं (सृ) | ७.४६ | कृष्णं क्रीडाचक्रिजत्की- (पा) | ६६.५५ |
| कृत्वा पूजोपहारं च (सृ) | ३४.१६७ | कृत्वा वृकोदरहेतुं (क्रि) | १६.३८ | कृपया वदविप्रवै (पा) | ६५.३ | कृषिकर्मरतो नित्यं (उ) | १७५.३३ | कृष्णजन्माष्टमी पूर्वा (ब्र) | ४.८ |
| कृत्वा प्रोक्षणं दिव्यं (उ) | ६४.३६ | कृत्वा वै पदविन्यासं (सृ) | ३०.३ | कृपां कुरु महादेव शरणा- (पा) | ७.१७ | कृषिकर्मसमुद्भिन्नो (उ) | १२८.१५७ | कृष्णजन्माष्टमी वृहस्पति (ब्र) | १३.२ |
| कृत्वा प्रजागरदेवं (सृ) | १७.२३४ | कृत्वा शिरसिराजेन्द्र (उ) | २११.३५ | कृपां कुरु महाभाग (सृ) | ३७.१२६ | कृषिकारो यदादं विद्मिन् (भू) | ७.१० | कृष्णजन्माष्टमी वृषा (ब्र) | १३.५ |
| कृत्वा प्रतिज्ञां विपुलां (पा) | ३३.३७ | कृत्वा शुभक्षणमह्यम् (ब्र) | २६.२४ | कृपां कृत्वा पुनस्तेन- (पा) | ६५.७६ | कृषिर्नैव न वाणिज्यं न (भू) | २६.२७ | कृष्णजन्माष्टमी मूल (ब्र) | १३.१ |
| कृत्वा प्रदक्षिणं तस्य (उ) | २८.४० | कृत्वा समं ते सोवर्गं (सृ) | २०.१११ | कृपां कृत्वा ह्य- (पा) | ६५.४ | कृषिवाणिज्यं कर्ता (स्व) | ३०.३ | कृष्णं नैव न वाणिज्यं (भू) | ६२.१४ |
| कृत्वा भिषेकं तु कनरः (स्व) | ४३.३० | कृत्वा सम्यग्विधाने (उ) | ३६.१८ | कृपालुर्नरसिंहोः (उ) | १८६.२ | कृषिवाणिज्यं सेवाद्य (भू) | ६६.१५० | कृष्णं नैव न वाणिज्यं (भू) | ६३.१३ |
| कृत्वा भ्रमति चानेन- (सृ) | ५.४० | कृत्वा सगजमयनं (सृ) | २४.२६ | कृपालुर्भवं सत्रं- (पा) | १०४.१६१ | कृष्णं वेश्यापहं देवं (भू) | ८१.७३ | कृष्णं नैव न वाणिज्यं (भू) | ६३.१३ |
| कृत्वा मरुदक्षणां देवैः (सृ) | ७.६६ | कृत्वा सर्वाणि पापानि- (सृ) | ४७.२४ | कृपालुर्भिलोकं हितो (उ) | १६६.११ | कृष्णं दधुर्माहात्मानो- (उ) | २३८.४७ | कृष्णं नैव न वाणिज्यं (भू) | ६३.१३ |
| कृत्वा मार्घमेवैत- (पा) | ८६.४८ | कृत्वा सा तिष्ठते- (भू) | ४१.७८ | कृपालो ब्रह्मशापेन (ब्र) | ८.१८ | कृष्णं निक्षिप्यतां (उ) | २४५.२४६ | कृष्णं नैव न वाणिज्यं (भू) | ६३.१३ |
| कृत्वा माया मयरूपं (भू) | १२१.२३ | कृत्वा साहस कर्माणि (सृ) | ४६.१०६ | कृमिकंटादयोऽप्येते- (उ) | ११५.२७ | कृष्णं मंडयति प्रीत्ये (क्रि) | १३.१५ | कृष्णं नैव न वाणिज्यं (भू) | ६३.१३ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां (सु) | १८.२४६ | कृष्णस्तुदीभप्रायं (उ) | २४६.८ | कृष्णाजिनिसोत्तरीयः (स्व) | ५८.३२ | कृष्णेनान्यत्रदेवी (पा) | ७७.४० | केऽपि शंखान्मभा-(क्रि) | ५.१४६ |
| कृष्णपक्षेत्वमायांतु (पा) | १०५.७२ | कृष्णस्तुतत्सर्वं (उ): | २५२.४६ | कृष्णांजनचयोपेतः (भू) | २४.७ | कृष्णकतानमतयो (उ) | १६७.१०० | केचिच्चपायसं (क्रि) | २३.७१ |
| कृष्णप्रसून भूषाढ्यं (उ) | १०३.३ | कृष्णस्तुतमाह्वार्या (उ) | २५२.८२ | कृष्णांजनचयोपेत मति-(भू) | २८.४१ | कृष्णोऽथवाङ्गमादाय (उ) | २५१.११ | केचिच्चच्छिन्नं (क्रि) | ७.२६ |
| कृष्णप्राणप्रियाष्टम्याः (ब्र) | ७.१२ | कृष्णस्तुतंदगोप (उ) | २५२.२६ | कृष्णात्मासोत्तमाश्यामा-(पा) | ७७.३६ | कृष्णोऽपिदुःस्वागाः (पा) | ८३.३५ | केचिच्चैवासिनाछिन्ना (उ) | २४६.२१ |
| कृष्णप्राप्तिः पुराकन्य (ब्र) | २६.१४ | कृष्णस्तुयुद्धश्रांतः (उ) | २५२.७० | कृष्णाधेनुः प्रदातव्या (उ) | ४२.१६ | कृष्णोत्तार्गस्तुनिर्मा-(उ) | ११८.५८ | केचिच्छूर्नैः परशुभिः (पा) | ४४.६६ |
| कृष्णप्रिया सखी (पा) | ८२.४६ | कृष्णस्तुवत्स-(उ) | २४५.१२६ | कृष्णायकृष्णरूपाय (भू) | ३२.५० | कृष्णोद्भव गापहरं (उ) | १११.३१ | केचित्कालं तु नैष्यमि (सु) | ३.६५ |
| कृष्णप्रीतिकरंयच्च (उ) | १६३.६ | कृष्णस्ययः कथारंभे (ब्र) | १.१० | कृष्णायनवनीतपो (क्रि) | १३.२७ | कृष्णोपि चितयित्वाय (उ) | २४६.३६ | केचित्कीशभयावस्ना-(पा) | ४४.५१ |
| कृष्णभक्तोसिराजेन्द्र (भू) | ८३.३६ | कृष्णस्यजन्माग्युदयं (सु) | १३.१३४ | कृष्णायप्रददोप्रीत्या (उ) | २४७.८ | कृष्णोपि भूतपति (उ) | २५०.२५ | केचित्किचिद्गुर्गहीनाः (क्रि) | २६.१२ |
| कृष्णमंत्रामपालब्धा (पा) | ८१.६ | कृष्णस्यजन्मनावत्स (उ) | १२२.८५ | कृष्णायवासुदेवाय (उ) | २५२.१०६ | कृष्णोपि महादेवं (उ) | २४५.१८५ | केचित्क्षुरैर्मृगैः (पा) | ६२.३५ |
| कृष्णवर्जुलपुष्पेण (क्रि) | १२.२० | कृष्णस्यनाममन-(उ) | ३७.१३ | कृष्णाष्टम्यां (उ) | २४५.३२ | कृष्णोपि हत्वायमुना (उ) | २५२.२५ | केचित्त्रैवमुच्यते (भू) | ६६.१३ |
| कृष्णवर्णं चतुर्वर्हं (पा) | ७०.६४ | कृष्णस्य बलवृद्धि (उ) | २४६.२२ | कृष्णास्त्रेणविनिर्मुक्तः (उ) | २५०.५१ | कृष्णोपि रायसं (उ) | २५२.६५ | केचित्पुनःपुनरास्त्रव-(सु) | ४३.३१३ |
| कृष्णवर्णस्तथाविष्णु (उ) | १२०.५६ | कृष्णस्य भक्त (पा) | १०३.१८ | कृष्णा हंसास्तु संस्नाता (भू) | ८६.११ | कृष्णोपि दुपश्रुत्य (उ) | २४६.४६ | केचित्पुनःपुनरास्त्रव-(क्रि) | २३.६६ |
| कृष्णवैष्णवानराद्यस्मात् (उ) | १११.११ | कृष्णस्यपोडस सहस्र (उ) | २५२.५७ | कृष्णेननिहितं श्रुत्वा (उ) | २५०.४० | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचित्पुनःपुनरास्त्रव-(भू) | १.२ |
| कृष्णश्चभगवान् (उ) | २५२.५२ | कृष्णस्य संभवत्य (पा) | ७१.४६ | कृष्णेननिहितः कंसो (उ) | २४५.२६१ | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचित्पुनःपुनरास्त्रव-(पा) | ४४.७६ |
| कृष्णसर्पैस्तु सर्वत्र (भू) | ६१.२१ | कृष्णस्यानयनार्थ-(उ) | २४५.२५८ | कृष्णेननिहतं संस्य (उ) | २४७.३ | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचित्पुनःपुनरास्त्रव-(सु) | ५.७५ |
| कृष्णसर्पैर्भवत्पापी (भू) | ६३.१० | कृष्णगवर्दिद्वैवैश्च (पा) | २६.१७ | कृष्णेननिहतं कसे (उ) | २४५.३८० | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचित्पुनःपुनरास्त्रव-(पा) | ४४.७१ |
| कृष्णः सर्वतुलावर्त्त-(पा) | ७८.३३ | कृष्णाग्नेदीपकोयस्यं (उ) | ५४.२५ | कृष्णेनयुष्मकेभक्षिते (उ) | २५२.३५ | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचिदार्नदहृदयं (पा) | ७३.३५ |
| कृष्णस्तमाक्रोशं (उ) | २५२.४३ | कृष्णांनानां कृष्णवस्त्रां (उ) | ७०.२६ | कृष्णेन ब्रह्मणेनाभिकं (उ) | १६४.६८ | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचिदाहुः परं धर्मं (उ) | ८०.७ |
| कृष्णस्तुतच्छ्रुत्वा (पा) | ७६.२ | कृष्णाजिन सहस्राणि (पा) | ११४.२३ | कृष्णेनराघयातत्र (ब्र) | ७.३१ | कृष्णोपि तान् सर्वान् (उ) | २५१.२० | केचिद्वर्धभुजास्त (उ) | १६.७ |
| कृष्णस्तुतच्छ्रुत्वा (उ) | २५२.२० | कृष्णाजिनसहस्राणि (ब्र) | ४.११ | कृष्णेनसहितैः सर्वैः (स्व) | ४६.३ | कृष्णयाभिरतावैश्याः (सु) | ३६.२८ | | |

[illegible]

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

११५

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|---------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| केश्यानीर्थेनरः स्नात्वा (स्व) | २६.४८ | केशिप्रभृतयोदैवरासि (सू) | १२.५४ | कैलासशिखरेरम्ये (उ) | २५४.१६ | कोकामुखंपरनीर्यं (सू) | ११.१० | कोटिपोटि गुणविप्र (उ) | ६४.१०७ |
| केशकज्जलशालिन्यो (पा) | १००.३८ | केशेष्वाकृष्यधुन्वा (उ) | १७.८८ | कैलास शिखरे राजन् (उ) | २२२.३५ | कोकिलाकुल मंके (उ) | २०१.६४ | कोटिकोटि नन्दागि (क्रि) | ७५.६ |
| केशकेशिगुणामिः- (उ) | १२८.२३२ | केशेष्वाकृष्य सेनाय्यं (क्रि) | ६०.३७ | कैलासार्थलशिखरं (सू) | ३३.१५४ | कोकिलाख्यं महातीर्थम् (स्व) | ३७.१६ | कोटिकोटि महान्नागि (पा) | ८०.२४ |
| केशपागच्युतैः पुष्पै (उ) | ५.३७ | केपांकर्णशिचनासा (पा) | ६०.५६ | कैलासस्य शिरःप्राप्य (भू) | १०१.०८ | कोकिलानां रतैः पुष्पै (भू) | १०२.२५ | कोटिचन्द्रप्रतीकांशं (पा) | ७७.६ |
| केशप्रसाधन कृत्वा- (पा) | ११४.२५६ | केपांश्चित्जन्मको (उ) | २२.३३ | कैलासस्योत्तरे (उ) | १८.११० | कोकिलानां रतैः पुष्पै- भू) | २४.३८ | कोटिजन्मकुलं पुष्पं (उ) | २५३.६७ |
| केशरश्मिनामतीर्थं (उ) | १३५.१३ | केपांश्चित्कर्णरंघ्रेषु (क्रि) | २३.१३४ | कैलासाद्यं फलदेवि (उ) | १३१.८ | कोकिलानां हतैः पुष्पैः- (भू) | ४६.८ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | २.३७ |
| केशरस्याथोदाकी- (स्व) | ८.२५ | केपांश्चित्कृष्णधारा (क्रि) | २३.१३५ | कैलासादृक्प्रभार (उ) | २२२.५० | कोकिलानां समारावाय- (पा) | ३६.१५ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | ३.२८ |
| केशरीकेशरयुतोयनः- (स्व) | ८.२२ | केपांश्चित्दृक्शालायां (क्रि) | २३.१३५ | कैलासाधिपते मह्यं (उ) | ७१.६६ | कोकिलामिस्सपालेय- (सू) | १८.१६२ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | ४.२३ |
| केशवं ताडयामासुः (उ) | २४६.५६ | केपांश्चित्तमेतस्या (पा) | ११४.३३ | कैवर्तेन विनातांविषसपूर्णा (भू) | ४२.४५ | कोकिलारावहचिरं (सू) | ३५.८४ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | ४.२५ |
| केशवं पञ्चनामं (भू) | ७५.२ | केस्थिताः साक्षिणस्तत्र (क्रि) | २३.११७ | कैवर्त्तनिभूतकंदपर्व (पा) | १०६.३५ | को गुणास्तस्य पुष्पस्य (भू) | ११६.३ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | २०.२३ |
| केशवंपूजयित्वा (उ) | ३८.३१ | कैकेयिपुत्रयोर्नन्नां (पा) | ६७.१३ | कोऽतिथिः प्राच्यतेलोकं (क्रि) | २५.२६ | को गुरुः कश्चनत्र (पा) | ११४.२७८ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | ४.२३ |
| केशवः तत्रमध्ये च (क्रि) | २४.६ | कैकेय्यां भरतो (उ) | २४२.६४ | कोऽपिविवितमयादत्त (क्रि) | १६.२६ | को व्रतपुष्पमधोक्षयां (पा) | ५५.४१ | कोटिजन्माजितं पापं (त्र) | ४.२३ |
| केशवदीनानाथयि (उ) | ५१.५८ | कैटभारिरयं विष्णु (उ) | ७१.४० | कोऽपिजल्पतिसा लक्ष्मीः (क्रि) | ६.६० | को व्रतपुष्पमधोक्षयां (पा) | ५५.४१ | कोटितीर्थं तु विख्यात- (स्व) | १८.८ |
| केशवाय ततोदत्त्वा (भू) | १२५.३७ | कैरहंतु समाख्याता (सू) | १७.२५ | कोऽयं गायति धर्मात्मा (भू) | ४६.३७ | कोटरस्या रक्षातिस्तु (सू) | ६.३२ | कोटितीर्थं मुपसृष्यह- (स्व) | १२.१० |
| केशवायद्विज श्रेष्ठ (क्रि) | १४.१८ | कैलासं सकलविध्यं (सू) | १४.१६३ | कोऽयं प्रयाति दिव्यांगः (भू) | २०.२२ | कोटरस्या रक्षातिस्तु (पा) | ५६.५२ | कोटि तीर्थं मुपसृष्यह- (स्व) | २६.१५ |
| केशवायानमस्तु (उ) | २४५.३१५ | कैलासलोकमापन्नो (उ) | १५१.८४ | कोऽयं महागिरिलरो- (पा) | १७.२१ | कोटरस्या रक्षातिस्तु (उ) | १५६.६ | कोटितीर्थं सहस्रं स्तु- (स्व) | २६.५१ |
| केशवोद्वब्रूषेण (स्व) | ६१.६८ | कैलासलोकमापन्नो (उ) | १५१.८४ | कोऽयं वैरजकः (पा) | ५६.५२ | कोटिकं दंपलावर्णं (पा) | ७४.१५४ | कोटितीर्थेनरः स्नात्वा (स्व) | ३६.५६ |
| केशानावप्यवैतस्मिन् (स्व) | २६.५७ | कैलासशिखरा कारं (सू) | ४५.१५६ | कोऽयं वैरजकः (पा) | ५६.५२ | कोटिकं दंपलावर्णं (पा) | ११२.१३२ | कोटिद्वयसमास्तत्रनरके (पा) | १०६.६७ |
| केशानां चात्मनः स्पर्श (स्व) | ५२.८ | कैलासशिखराकारैः (भू) | १११.६ | कोऽयं वैरजकः (पा) | ५६.५२ | कोटिकं दंपलावर्णं (पा) | ११२.१३२ | कोटिद्वयसमास्तत्रनरके (पा) | १०६.६७ |
| केशिनं निहतं बद्ध्वा (उ) | २४५.१५५ | कैलासशिखरासीनं (उ) | ७१.४७ | कोऽयं वैरजकः (पा) | ५६.५२ | कोटिकं दंपलावर्णं (पा) | ११२.१३२ | कोटिद्वयसमास्तत्रनरके (पा) | १०६.६७ |
| | | कैलास शिखरासीनं (उ) | ७१.८४ | कोऽयं वैरजकः (पा) | ५६.५२ | कोटिकं दंपलावर्णं (पा) | ११२.१३२ | कोटिद्वयसमास्तत्रनरके (पा) | १०६.६७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

११६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------------|---------|-----------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| कोटिब्रह्माण्डमध्येषु (क्रि) | ४.४ | कोद्रवोदरवरटकपितृषु (सृ) | ६.६६ | कोमलस्तुलसीपत्रैः (उ) | २३४.३२ | कोव्ययः परमंधाम (उ) | ३५५.१३ | कोह्यन्तः पृंढरीकाज्ञान् (सु) | : १.४४ |
| कोटिब्रह्माण्डमध्येषु (क्रि) | २१.२३ | कोन पूजयते विद्वान् (भू) | ६३.१८ | कोयंततसमायातः (उ) | २१५.१० | कोशदेगंवलं सर्वचामरं (भू) | ७८.५७ | कोऽसीकोटः सधनदः (पा) | ६.३६ |
| कोटिभिः सप्तसंख्यातैः (भू) | १२१.३५ | कोनाम्ना कीर्तयतिमां- (सृ) | ३६.१०६ | कोयंदेवसमाख्या (उ) | २०.६ | कोशलस्वतृपस्या (उ) | २४२.३६ | कोकमिण्डिः कुतुडश्च (सृ) | ७.६३ |
| कोटिविनिहतातगतेन (स्व) | १८.१० | कोनुमामास्थिताग्रेहे (उ) | ८६.३ | कोयंदेवोनुगंधर्वः (भू) | ६८.२४ | कोशलाधिपतिवीरं तमि- (भू) | ४३.८० | कोकुकुटास्तथा बोला, (स्व) | ६.५५ |
| कोटिवर्षसहस्राणि (स्व) | ४३.४५ | कोपकंपित मूढासा- (सृ) | ४४.२२ | कोयंपुण्यः समाचारैरिन्द्रतृप्तं (भू) | ३१.४ | कोशलाधिपतिवीरस्तं (भू) | ४३.४१ | कोजंरूपमास्थाय (भू) | २८.६७ |
| कोटिवर्षाणिनरके- (पा) | १०६.१६ | कोपमुत्तमृजवीरत्वमान् (पा) | १०७.२० | कोयंपुण्यः कथतेनशव्यं (सृ) | ४.१०८ | कोशलापदिचमे भागे (उ) | २००.६६ | कोतुकं मुमहृद्दृष्टुं (उ) | १६७.७६ |
| कोटिवैश्वानर प्रख्य (उ) | २२८.१६ | कोपमेवं महाभागः - भू) | ४६.४४ | कोयंराजा वीरमणिः (पा) | ४२.७ | कोशलायां समासाद्य (स्व) | ३६.१ | कोतुकाकृष्टलोकेस्मि (उ) | १७५.३६ |
| कोटिश ऋषिमुख्यास्ते (स्व) | १५.८१ | कोपमेवं महाराजत्यज- (भू) | २८.१२० | कोयं वैराभसोदुष्टः (पा) | ३३.६२ | कोसा वायुः सा धर्मि- (भू) | १०८.१४ | कोतुकादेकदापचं (स्व) | २२.२० |
| कोटिशस्तत्रतीर्था- (उ) | १८६.३ | कोपाच्छोणतरेनेत्रे (पा) | ३३.१६ | कोयं मत्स्यदभुताकार (उ) | ८०.४८ | कोसित्वंभीषणाकारः (उ) | १२६.३३ | कोतुकार्यत वैवैतो (पा) | ६४.६६ |
| कोटिशोजघ्नुरन्यो- (उ) | ५.८० | कोपाविष्टेनरामेण- (पा) | ३६.६४ | कोरकैः करवीराणां (वा) | ७४.४१ | कोसित्वंसन्निभोभ्राता- (पा) | ६३.५२ | कोपीनेन समागुक्तः (भू) | ८६.२७ |
| कोटिशोयत्रनिः (उ) | ८.११ | कोपितत्र समायात (पा) | ६२.८२ | कोलं प्रतिगताः सर्वे (भू) | ४३.३० | कोसोरागमोमहाभाग (पा) | ३६.३ | कोवैरेगन्तथाशेनत्वर्था (सृ) | ३६.४७ |
| कोटिसूर्यप्रतीकाशः (पा) | ११७.१७६ | कोपेनश्वसमानोद्दिश्यथा- (पा) | १६.१७ | कोलं हंतुधनुः पाणि (उ) | १५४.१३ | कोसी जालंधरोवीरः (उ) | ३.७ | कोमारं च पुराणानि (पा) | ११५.६७ |
| कोटिहोमांश्चकाराय (भू) | ६४.२८ | कोप्यश्वः सितवर्णैः - (ग) | ३२.११ | कोलाहलः प्रहृतवान् (उ) | १२.२५ | कोसीयोवानरोद्रोणं (पा) | ४४.७३ | कोमुदी क्रियते तस्माद् (उ) | १२८.६६ |
| कोटीदुजगदानंदी (उ) | ७१.१५२ | कोभवानिहसंप्राप्तः (उ) | ८०.५० | कोलाहलोरणे (उ) | १७.४० | कोर्मोगमः कः शत्रुघ्नः (पा) | ५४.२० | कोमोदलीगदा नख्य (भू) | ८८.८६ |
| कोणद्वादशकांदोलां (पा) | ११४.३०४ | कोभवान्कुतआयातो- (उ) | २१६.४१ | कोलाहलो मुरेन्द्रेण (उ) | १७.३६ | कोस्तुभेनांकिते (पा) | ८४.१०४ | कोयुवां हिमयमाग (पा) | ११६.१५६ |
| कोत्रराजानिवसति कथं (पा) | ४०.८ | कोभवान्निहिजानीमः (उ) | ४५.२२ | कोवाश्रुतंमरोराजकिम- (पा) | ३०.१४ | कोहत्स्थोपुरादेव (क्रि) | १३.१२६ | कोर्मं पुराणं प्रथमं (पा) | ११५.६८ |
| कोदाकागामोदादितिर्व- (सृ) | २३.१३० | कोभवान् वदसंदेह- (सृ) | ३६.८१ | कोवारावणदैत्ये (पा) | ६५.५८ | कोहंराजन्मुनीनां (पा) | ३१.४४ | कोर्मसंस्तपानानां (पा) | १०६.४२ |
| कोदेवः कोविधिस्तस्याः (उ) | ५४.४ | कोमंत्रः सर्वमंत्राणां (उ) | २२३.८ | कोविदाफल तैलप- (पा) | ११४.४४५ | कोहिच्छत्रापतीराजा- (पा) | १२.६० | कोशनेयः रत्नध्वनी (उ) | २५४.३३ |
| को देवः पूजनकस्य (उ) | ८३.२ | कोमलस्तु तुलसी पत्र (क्रि) | २४.४५ | कोविशेषोहि धर्मज्ञ (भू) | ६४.५७ | कोहिदेवत्वमासाद्य- (स्व) | ४६.१७ | कोदत्यानामथायानां (पा) | ६७.१२ |
| कोदेवोर्भनाशाय- (पा) | १७.६३ | कोमलस्तुलसीपत्रं (क्रि) | २२.५ | को वेपः कितुतेनाम (भू) | ३७.१० | कोह्यन्नग्नोदश्येतन (भू) | ८.३३ | कोशत्यागस्यशून्या (पा) | ६६.६७ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-------------------------------------|--------|
| कौशल्या समभूत (उ) | २४२.११ | कौस्तुभेनविराजतंवन (उ) | १३१.२६ | क्रमात्कूष्माण्ड वृताकं (उ) | ६४.१६ | क्रिया खंडनः दयातमु- (स्व) | १.२४ | क्रीडत्येवं सदाडिभैः नादं (उ) | २१.७ |
| कौशाख्यां तु महा- (स) | ३४.१३८ | कौस्तुभोद्भासितो (उ) | २३६.१२ | क्रमात्सज्जं पुत्रांश्च (क्रि) | २.२३ | क्रिया च पौरुषी वीरा (उ) | ८६.२५ | क्रीडने पठने हास्ये जयने (भू) | २१.११ |
| कौशिकः कृतदोक्षस्तु (उ) | २४२.१२५ | कौस्तुभोद्भासितो (उ) | २४५.१५८ | क्रमान्मायादिमासेषु (मृ) | २२.१२७ | क्रियाचातोयहोनुगां- (पा) | १०५.१२० | क्रीडत्यः किन्तु गीमिन्नु (उ) | १२८.७१ |
| कौशिकस्य कुलेजातः (भू) | ११.६ | कौस्तुभोदासिसदृक्षा (उ) | २१४.६४ | क्रनुकस्यापिपक्वस्य (पा) | ११४.४५० | क्रियानां चाविलवेनपिता- (मृ) | ३०.२० | क्रीडत्यः किन्तु गीमिन्नु (स्व) | ३३.६२ |
| कौशिकस्य कुलेजातः (भू) | ४७.२४ | क्रतुचनरमेधाख्यम् (त्र) | १२.७ | क्रमेणनगरीप्राप्ता- (पा) | ६७.६ | क्रियान्वविहिताल्पपि- (उ) | १२५.१३२ | क्रीडमानं प्राहनाना गुवतं (भू) | २१.२७ |
| कौशिकस्यान्वये जातो (भू) | ४७.२८ | क्रतुप्रवरमारेभेय (उ) | २४२.१०६ | क्रमेणनगरी प्राप्ता- (पा) | ६५.११ | क्रिया पराङ्मुखाजान (उ) | १८३.१८ | क्रीडमान्य नन्याग्रे वराहश्च (भू) | ४२.६ |
| कौशिकान्वय सभूती (भू) | १४.५ | क्रतुभिर्विविधैरिष्टै (पा) | ६७.२ | क्रमेणप्लावितंभूत (पा) | ११४.६२ | क्रिया मंत्रैश्च संयुक्तो- (स्व) | २७.४५ | क्रीडमानानन दयामा (त्र) | ११.५२ |
| कौशिकीन्द्रिदिवाच्छायां (स्व) | ६.१५ | क्रतु विध्वंसितो (उ) | २४२.१०७ | क्रमेणब्रह्मजापश्चात् (मृ) | ३२.११२ | क्रिया योगव्यानयोग- (क्रि) | ३.३ | क्रीडते योगिभिः नादं- (स्व) | २०.६६ |
| कौशिकीतिगणोनाम (मृ) | १७.६० | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणरूपसोभाग्य (मृ) | ४३.१०६ | क्रियायोगस्य नतमे (क्रि) | ३.१ | क्रीडनेस्वमुखायेविप्र- (मृ) | १२.१२० |
| कौशिकोनाम धर्मात्मा (मृ) | १०.४६ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४.१ | क्रिया योगाभूतानि (क्रि) | ३.७ | क्रीडादभिर्वाधितो- (उ) | १८३.१७ |
| कौशिकमसारूप्य (पा) | ६६.२ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रिया योगावते विप्र (क्रि) | ३.६ | क्रीडनेतत्र दुषाद्वि (उ) | ७.५४ |
| कौशिकस्य पुत्रो वैमं (उ) | १४३.११ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडनं नदेवैयं (उ) | ७१.५० | क्रीडनीपद्यगधा (क्रि) | ८.७७ |
| कौशिकस्य पुत्रो वैमं (उ) | १६१.५ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडतश्चतस्तत्र- (पा) | ८३.५६ | क्रीडतिविष्णुनासादं (उ) | ८३.१७ |
| कौशल्या च सुमित्रा (पा) | ६६.७१ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडतस्तस्यतुष्टिः कथं (मृ) | ४३.५०२ | क्रीडन्नास्ते महायोगी (पा) | ११४.५ |
| कौशल्या तनयस्तं (पा) | ३७.४१ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडनाहिमयानि- (उ) | २०४.८८ | क्रीडमानंतदाहृत्वा (मृ) | ४६.४ |
| कौशल्या पुत्रसंयोग (पा) | ३.११ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडनेदेवलोकैरुदवतैः (स्व) | १३.२५ | क्रीडमानाः येहस्यते (मृ) | ३०.८८ |
| कौशल्यामासिक (पा) | ११७.६३ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडते नागलोकस्थो- (स्व) | २१.१७ | क्रीडायां देवदेवस्य (उ) | २२७.४४ |
| कौशल्यामेयथामाता (मृ) | ३८.१०५ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडते चापि वैकुण्ठे (मृ) | ६६.७३ | क्रीडां समाभाष्य ततो (भू) | ५५.२१ |
| कौशल्यामुतभद्रतेसु (मृ) | ३५.१५ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडते मृगाणां कान्तेमृगान् (भू) | ४२.१४ | क्रीडानिधानं सुखसिद्धि- (भू) | १०२.४५ |
| कौस्तुभेनविराजतंवन (उ) | १२५.१३७ | क्रतुविध्वंसितो (उ) | १३.२२ | क्रमेणवर्द्धमानोसो- (उ) | ४३.१४६ | क्रीडते ह्यर्माकान् (उ) | १६६.७३ | क्रीडाप्रयुक्तानुवनं प्रविष्टा (भू) | ५८.१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

११८

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| क्रोडावभावे शृणु सत्यं (भू) | ५७.६ | क्रोधात्कामाद्भयाद्वैपा- (पा) | १६.१३ | क्रौंचदीपः स्मृतोयेन (धृ) | ६.८ | क्वचित्पापाः प्रपच्छन्ते (भू) | ७०.२ | क्वप्रयाताः सहायास्ते (उ) | १८५.४३ |
| क्रोडाशैलाः प्रत्यगारं (पा) | ३६.६ | क्रोधात्प्रवृद्धः समहा- (सृ) | १६.१३६ | क्रौंचद्वीपे महाक्रौंचो गिरी (स्व) | ६.७ | क्वचित्प्रपाशीतोयः (क्रि) | २३.६३ | क्वभविष्यन्ति सतः (उ) | १६४.३६ |
| क्रोडासतीरूपधरा प्रभूत्वा (भू) | ५७.१ | क्रोधात्संरक्तनयनो (उ) | २४६.५६ | क्रौंच द्वीपे महाभागो (स्व) | ६.१७ | क्वचित्प्रवरगैरिका- (उ) | ११.३६ | क्वमातर्गच्छमीत्युक्त्वा (मृ) | ४४.२७ |
| क्रोडितुं दितेवांछा जगत्- (क्रि) | २२.३६ | क्रोधादिद्रेण वज्रेण (उ) | १२२.७७ | क्रौंच द्वीपे शतत्रैव (उ) | ७.७४ | क्वचिद्गणकृतैर्गो (पा) | ११४.४ | क्व यामि त्वं च देवैर्द्र (भू) | ११६.२७ |
| क्रोडित्वा तत्र निः शंक- (उ) | २१६.५५ | क्रोधादिभिः क्लेशमर्जं (भू) | ८६.७१ | क्रौंच युग्मं मिथो यद्वच- (सृ) | ३८.४६ | क्वचिद्गीतकवचिन्मृत्युं (क्रि) | ५.१४६ | क्वलब्धानि मुपुष्पाणि (भू) | १२१.३८ |
| क्रुद्धत्वाहुः क्लितत्वा- (पा) | ५७.६४ | क्रोधाद्द्वैत्यपतिः (उ) | २३८.११६ | क्रौंच वंशसमुत्पन्नदुःखं (क्रि) | ८.४६ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्ववयं वरगन्धर्वः (उ) | १२८.६६ |
| क्रुद्धश्च क्रमादाय- (सृ) | १३.२४४ | क्रोधाद्द्वैपाद- (भू) | ६७.५१ | क्रौंचस्य कुशलो देशो- (स्व) | ६.२१ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्ववयं सुगन्धर्वः (स्व) | २२.६१ |
| क्रुद्धश्चैव महापुण्यः (भू) | २८.७ | क्रोधान्निश्चयसंस्तप्य (सृ) | ४१.२१६ | क्रौंचोक्तथ महं ब्रूहि (क्रि) | ८.५२ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्ववरातीरुणात्तच्छा- (उ) | १२६.६७ |
| क्रूरबुद्ध्या हि दृष्टोऽसौ (भू) | ४७.३४ | क्रोधासाः सर्वभूतानि (सृ) | ४०.१०५ | क्विलश्यते चापरस्तत्र (स्व) | ४६.१० | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वचित्कृतिर्गतिर्ब्रूहि (उ) | १६७.२ |
| क्रूरयोनिं प्रयात्येवं (भू) | ७.७ | क्रोधेन च जयादिनीं (भू) | ६९.२१७ | क्वलीकाय देवाय नमो (उ) | ८४.१० | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वचिद्विश्वमेतच्च- (उ) | २०७.२५ |
| क्रूरस्वर्गः सुपुण्ड्रि- (सृ) | २०.१५७ | क्रोधेन तनसा विष्टारेण- (सृ) | ४६.२४ | क्वशाक्रान्मृत्युतस्याय (उ) | १६३.८ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वथयते न नवचितं (पा) | १०१.१५ |
| क्रोधं च वितथं वाक्य (उ) | ६३.१६ | क्रोधेन महता विष्ट (उ) | ४२.३६ | क्वशिशं सर्वभावंश्च ते पु (भू) | ८.३७ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधं चैवावृत्तं वाक्य (उ) | ४८.२१ | क्रोधेन महता विष्टः (भू) | २४.५ | क्वगच्छामि न त्रिष्टाणि (ब्र) | २१.३४ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधः क्रूरणिसंतोष (सृ) | ४३.११५ | क्रोधेन महता विष्टो (भू) | ११५.४१ | क्वगतोऽप्यमहामोहो (भू) | ३६.८ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधः क्रूरतरास्त्वगाद्- (सृ) | ४३.२१५ | क्रोधेन महता विष्टो (उ) | २३८.५२ | क्वगतोऽप्ययं पुत्रत्वं (भू) | ८५.४७ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधनो मे पितारो द्रोभस्म- (सृ) | ३७.३३ | क्रोधेन महता विष्टो (उ) | २४५.१६६ | क्वचित्छुद्रसमा- (पा) | ११४.१०२ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधलोभादिभिः (पा) | ८४.८५ | क्रोधेन महता विष्टो (उ) | २४५.१६६ | क्वचित्कंदकवृष्टि (क्रि) | २३.८८ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधश्च तत्समस्तं (क्रि) | १६.८७ | क्रोधेन महता विष्टो (उ) | २४५.१६६ | क्वचित्कंदकवृष्टि (क्रि) | २३.८८ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधसंरक्तनयनो (सृ) | ४१.२७४ | क्रोधेन महता विष्टो (उ) | २४५.१६६ | क्वचित्कंदकवृष्टि (क्रि) | २३.८८ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |
| क्रोधाग्निदग्धाः कुटिला (उ) | १६६.१२ | क्रोधेन महता विष्टो (उ) | २४५.१६६ | क्वचित्कंदकवृष्टि (क्रि) | २३.८८ | क्वचिद्गुह्यं तरेमूत्रं (पा) | ११४.१०६ | क्वपिपेणुं कर्मन्तं (पा) | ८३.४६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

११६

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|-------------------------------------|---------|-------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| क्षणंशुचोचतस्त्वज्रो-(पा) | २६.४८ | क्षणेनतद्रत्नसर्व (उ) | २४६.२२ | क्षत्रियाद्यैश्वर्यमदायनुवाङ्ग-(पा) | ३.१७ | क्षमापराक्रमपरं मदपं-(मृ) | ४१.२०३ | क्षितिगमस्माद्योदयान् (ब्र) | २४.३ |
| क्षणं सीता न जीवेन-(दा) | ५६.५६ | क्षणेनभाविनाविप्रास्ततो (मृ) | ४३.३८३ | क्षत्रियाद्यैश्वर्योद्गीर्णा-(पा) | ५४.२६ | क्षमागान्तिस्त्रिपालज्जा (भू) | १८.६३ | क्षितिगान्तिगमन- (दा) | ११८.१०३ |
| क्षणं सिद्धत्वातृणान्य-(पा) | २३.१ | क्षणैः कनिषथैरिवगता (उ) | १८१.७ | क्षत्रियास्तत्रवज्रो- (पा) | ६५.२० | क्षमासिद्धिमुनीनां च (मृ) | १७.३२५ | क्षिपत्तत्रवज्रं मन्त्रां (उ) | २३३.८ |
| क्षणस्यादात्मनस्तुष्टि (क्रि) | ६.१२१ | क्षणः किलकरे राजन्-(स्व) | २७.६ | क्षत्रियेणकर्मविप्र (मृ) | ३६.३६ | क्षमाः मुनायचमुवायि ब्र | १६.८ | क्षिपन्क्षिपन्मन्त्रेणा (क्रि) | २३.६७ |
| क्षणमप्यात्मसदने (उ) | १८७.७ | क्षतजात्पद्मरागाः (उ) | ६.२६ | क्षत्रियैश्चतथाऽर्थैः (उ) | १२४.३३ | क्षम्यतां मुनिव्यास्मिन् (भू) | ४६.६२ | क्षिपन्मात्रं पुनेनास्थि-(उ) | २१०.१४ |
| क्षणमात्रं प्रशस्येन (भू) | ३७.२८ | क्षन्तव्यं विप्रियम-(उ) | १५.४० | क्षत्रियोपनिष्ठाश्च-(स्व) | ६.६२ | क्षयं गच्छतु च दोषान्ते (उ) | ७८.५३ | क्षिपन्मन्त्राद्विनाङ्गायां (उ) | १२६.२१० |
| क्षणमात्रमपिब्रह्मन्विहाय (क्रि) | २.८२ | क्षतोमंकणकोविप्रः (मृ) | १८१.३२ | क्षत्रियोलभनेराज्य (उ) | १५८.१३ | क्षयमेयंतिपापानि (मृ) | ४७.४० | क्षिप्तेभ्यस्मां प्रवीजेभ्यो (उ) | १०५.१ |
| क्षणमात्रमपिस्वामि (क्रि) | २.७८ | क्षत्रवंधुरिनिष्ठानो (उ) | ८०.१०८ | क्षत्रियोवाथयैश्वर्यो (उ) | १३०.१६ | क्षयमेयंति पापानि-(मृ) | ४७.३६ | क्षिप्त्वाघनं पूज्यन्वा (पा) | ११२.३६ |
| क्षणमेकप्रतीक्षस्व-(पा) | ५२.२७ | क्षत्रव्रतधरोनित्य-(मृ) | १८.२५४ | क्षत्रियोवापि चांडालो (ब्र) | १८.४ | क्षयतवायुः (पा) | ६६.४६ | क्षिप्त्वा मुदगं चक्रं (उ) | ७८.६८ |
| क्षणमेकं प्रपश्येत् चिंता (भू) | ११.२६ | क्षत्रियराणामयधर्मः (पा) | ५०.३४ | क्षन्तुमर्हसिदेवे-(पा) | ११४.२३५ | क्षरज्जनानां संशयान्-(मृ) | ४१.२१६ | क्षिप्यनेवायुनामेषो (भू) | ६६.१७१ |
| क्षणमेकं प्रपश्येत्-(पा) | ८७.६४ | क्षत्रियः क्षात्रधर्म (उ) | ५०.८ | क्षपारितनयाद्धीतोतरः (उ) | ४८.२५ | क्षरत्पदाभिर्गोविदैः (पा) | ७०.२५ | क्षिप्यमाणैश्चमुत्तरीः (मृ) | ४१.५३ |
| क्षणमेवहरेर्नक्षितवर्तने (क्रि) | १६.४४ | क्षत्रियाणांचैवैश्यानां (क्रि) | २१.६ | क्षमस्वदोषसंकलमत् (क्रि) | ५.८४ | क्षराजरेपरैवाग्नि-(उ) | २५०.५६ | क्षिप्यमाणोऽमुनेऽप्येण (मृ) | ४१.२६२ |
| क्षणाच्चतद्वचसां (पा) | ४४.१६ | क्षत्रियाणां वरोधर्मोऽर्द्धं (भू) | ४२.५५ | क्षमाक्षान्तिसमायुक्तः (भू) | ८.७५ | क्षत्रधर्मैरातमूषं (पा) | ६४.७१ | क्षिप्रमेवहृनिष्ठ्यामि-(मृ) | ४१.२५६ |
| क्षणात्सत्रायांपश्यामि (उ) | ६६.६ | क्षत्रियाणांमंत्रं चैव (पा) | ४२.३१ | क्षमाक्षान्त्या समायुक्ता (भू) | ५६.७ | क्षत्रं वलं सुनेजश्च (भू) | ७६.४० | क्षिप्रानदीतथा पुण्यान (मृ) | ११.१७ |
| क्षणादेवततो वदत्रं (पा) | ८३.६६ | क्षत्रियाणांमयधर्मः (पा) | ५३.३० | क्षमाबोद्धासमंत्रं चैव (पा) | ११४.३४५ | क्षाम्यतां भूपतेभ्यो (पा) | ६४.७० | क्षीराकां भरणेदुःख-भू) | ६६.१३६ |
| क्षणाद्विनिहृतायेन (पा) | ४३.४६ | क्षत्रियाणांमयधर्मो (पा) | ३६.४५ | क्षमादयाचविज्ञानं (स्व) | ५४.२५ | क्षारमल्लादिकंसर्वानोर (भू) | ७.६५ | क्षीरायुः क्षत्रियः (उ) | ६६.२० |
| क्षणानिमेवाः काष्ठाश्च-(मृ) | १६.२६ | क्षत्रियाणांमयधर्म- (पा) | ३६.४८ | क्षमादयाचमंत्राणां (भू) | ५६.२८ | क्षारावुपानं कुर्वति (क्रि) | २३.१५८ | क्षीरायुर्लभते चायु (मृ) | ४०.११० |
| क्षणान्मुच्छाजिह्वीवीरः (पा) | ६५.१ | क्षत्रियाणांमयधर्म- (पा) | २६.४३ | क्षमादयातपः सत्यं (उ) | ६८.५ | क्षालयिष्याम्यहं घोरं (भू) | ४२.२६ | क्षीरोपिस्तेतताराशो (उ) | १७७.३ |
| क्षणे क्षणे तुगोदानं (उ) | ३७.१४ | क्षत्रियाणांमयधर्मो (पा) | १६.४६ | क्षमाद्याव्याधयः सर्वाः (क्रि) | २१.२६ | क्षितिदानं मुनिश्रेष्ठ (ब्र) | २४.२ | क्षीयतेवदंते चैव शुक्ले (मृ) | १२.१४ |
| क्षणैश्चतदाप्राप्तोलो-(पा) | १०५.१६ | क्षत्रियाणांमयधर्मो (क्रि) | १६.४० | क्षमापयेद्देवदेवयथा (उ) | ६५.५ | क्षितिवरुणमणिं च (मृ) | १८.४०६ | क्षीरं दद्याद्विरण्यं च (मृ) | २२.१८८ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|
| क्षीरं चारवपुजेमासि- (सु) | २६.३७ | क्षीरोदोमुनिशार्दूलायेन- (स्व) | ८.६ | क्षुधया पीड्यमानो तौ (भू) | ६३.२७ | क्षुधार्थमातरं प्राह (सु) | ४७.४२ | क्षोभेनैव प्रकृतं व्यः | ८६.६ |
| क्षीरधारादेवदेवे- (सु) | २३.४८ | क्षुत्तृ प्रपीडितेभ्यश्च (क्रि) | २.६६ | क्षुधया पीड्यमानोहं (भू) | ८६.२० | क्षुभ्यतेतस्यतद्द्वार- (स्व) | १३.२८ | ख | |
| क्षीरपायो च मेवत्स- (सु) | १८.३०० | क्षुत्तृभ्यामुल्लूकानस्य (उ) | १२६.२७ | क्षुधया बाध्यमाना- (पा) | १०१.१४ | क्षुरप्रेर्निशितैर्वाणि- (भू) | ११५.३५ | खगच्छती महाकालो (पा) | १०७.१२ |
| क्षीरवृक्षोत्थमाचार्यो- (सु) | ३४.२५३ | क्षुत्पातप्रदेहानामग्न (भू) | ६७.५५ | क्षुधानक्षमते सोढुं (उ) | ६०.१० | क्षुवतीजुभमाणाम् (स्व) | ५५.४६ | खगान्नानाविधांश्चैव (उ) | १५४.६ |
| क्षीर शाकं च (सु) | २२.१२५ | क्षुत्पापीडितश्चाय (उ) | ४६.२५ | क्षुधाकुलान्मुतान् (क्रि) | २५.५२ | क्षेत्रं निवेशयामास- (सु) | १५.१४६ | खगान्नानाविधांश्चैव (उ) | १५४.१० |
| क्षीरसागरतो देवं (उ) | ८.१७ | क्षुते पुस्तकपातेचत्वा (पा) | १०४.६७ | क्षुधाग्निनाचमुग्धा- (क्रि) | २०.६० | क्षेत्रं पर्याप्तामथवा- (पा) | ११५.८३ | खंडतीर्थात्परांतीर्थं (उ) | १४४.२३ |
| क्षीरसागर वासाय नमः (भू) | १६.६७ | क्षुत्क्षामंदीनवदनमस्थि (उ) | १०६.१० | क्षुधाजातामहातीव्रा (भू) | ६७.५ | क्षेत्रजं सर्वभूतेषु- (पा) | ८४.६७ | खंडतीर्थं गुरुश्रेष्ठे तदनं (उ) | १४४.२७ |
| क्षीराणि च समस्तानि (पा) | ११४.४५२ | क्षुत्क्षामोदीनवदन (उ) | ६२.१३ | क्षुधातृषाद्विजग्याघ्र (ब्र) | २४.४४ | क्षेत्रतद्दुर्लभं विप्र (क्रि) | १८.५ | खंडरूपेण धर्मण (उ) | १४४.१२ |
| क्षीरादि स्नपनं कृत्वा (उ) | ३१.४३ | क्षुत्पिपासाकुलबलेशः (ब्र) | १३.७५ | क्षुधातृषाविहीनास्ते (भू) | ६५.३० | क्षेत्रपालं न पश्येच्च दंड (स्व) | १८.१२१ | खंडितं शिवाकावाहं (उ) | ५.३३ |
| क्षीरादिस्नपनं विष्णो (उ) | ११६.५० | क्षुत्पिपासान्वितानित्यं (सु) | ३२.१८ | क्षुधातृषा महाप्राज्ञ (भू) | ६७.११२ | क्षेत्रवृत्तिगृहच्छेदं (भू) | ६६.१६ | खड्गचक्रं धरोदित्यो (भू) | ११५.३४ |
| क्षीरान्नं गुडसंमिश्रं (उ) | २५३.१५७ | क्षुत्पिपासादितादेवा (उ) | २३१.१६ | क्षुधानलेन संतप्त (क्रि) | २१.१११ | क्षेत्रस्य उत्पत्तिं ज्ञेयं (भू) | ६७.५६ | खड्गतीर्थेन रत्नात्वा (उ) | १७७.२ |
| क्षीराब्धौ तु तथा लक्ष्मीः (सु) | ४.१ | क्षुत्पिपासादिताः (उ) | २३१.१८ | क्षुधानलेन संतप्तः (क्रि) | २१.११८ | क्षेत्राणि पुण्यतीर्थानि (सु) | १५.१८ | खड्गधारिणि रत्नाम्ना (उ) | १५४.४ |
| क्षीराब्धौ तु शयान- (उ) | १४.२ | क्षुत्पिपासादिताः (उ) | २३१.२० | क्षुधानिदानं विमलं (भू) | ६८.५५ | क्षेत्राण्युपुराणानि- (पा) | ६५.११४ | खड्गधारमितितयात (उ) | १५४.१ |
| क्षीराभ्यां शक्रं रोपेत- (उ) | २५३.१६१ | क्षुत्पिपासादिताः (ब्र) | ८.११ | क्षुधा निवारणं नैव (सु) | ३६.१०२ | क्षेत्रे रत्नामहेतुतेषु (सु) | १८.२०८ | खड्गधारिणि रत्नाम्ना (उ) | १५५.१ |
| क्षीराण्यः पणोदते- (उ) | १२७.१५० | क्षुत्पिपासादिता नित्यं (पा) | ६४.७० | क्षुधामांशवधते स्वा- (उ) | ६६.२७ | क्षेत्रेष्वेतत्पुतीर्थानि- (सु) | १८.२१३ | खड्गधारिण्यरक्षकं (उ) | १५७.३ |
| क्षीरेण स्नापयेन्मार्गः- (सु) | ३१.५६ | क्षुद्रपर्वस्वयान्ये (पा) | ११५.८१ | क्षुधा मे वाद्यते राज- (भू) | ६७.१६ | क्षेमकरी जाह्नवी च (पा) | ६५.१६ | खड्गधारिण्यरक्षकं (उ) | २२२.३१ |
| क्षीरोदजलतुल्या- (पा) | १००.१ | क्षुधयाः कारणं (सु) | ३४.३६१ | क्षुधायां न विराजते- (सु) | १६.२७७ | क्षेममस्ति महाभाग- (भू) | १७.१० | खड्गवाहो मुतस्यै (उ) | १६१.२ |
| क्षीरोदमध्ये भगवान् (सु) | ४.४१ | क्षुधाया तृषयावापि- (क्रि) | १६.७२ | क्षुधार्त्तं शृणु मे कश्चिद् (ब्र) | १४.२१ | क्षेममस्ति महाभाग- (पा) | ८६.२० | खड्गयूयैः कचित् लक्ष्मी (उ) | १२५.१२ |
| क्षीरोदस्योत्तरं कूलं (सु) | ४५.१६५ | क्षुधया दग्ध सर्वांगः (क्रि) | २१.१२३ | क्षुधातोर्हृद्विज श्रेष्ठाः (ब्र) | २३.२७ | क्षेयपूर्वतुक्तं व्या- (पा) | १०५.८६ | खड्गयामाप्रचंडश्च (उ) | १०२.७ |
| क्षीरोदेयत्र वंकुष्ठः (ब्र) | १३.१८ | क्षुधया पीडिततनुः (उ) | ६०.१७ | क्षुधातोर्हं देहि चान्मन् (ब्र) | १४.२० | क्षेमपूर्वपरावृद्धो (पा) | १०५.८७ | खड्गयामाप्रचंडश्च- (सु) | ४०.१६३ |

खड्गेननीक्षणाद्वरिणा (भू) ११५.३६
 खड्गनपतितं दृष्ट्वा (क्रि) ६.१५
 खड्गनामामिषं चैव (सु) ६-६२
 खड्गैः पार्श्वमहाधूलैः (भू) ११४.२६
 खड्गैश्च वक्रवित्तभिश्चैव (क्रि) ७.८६
 खड्गैर्वज्रीविकाः प्रेष्यागो (सु) ४७.१७
 खट्वांगामिहताः (पा) ४३.२७
 खट्वाकाष्ठमया लिख्य (पा) ११२.२६
 खण्डस्फुटितसंस्कारं तत्र (सु) २२.१२४
 खद्योतः वक्त्रमोरत्नं (पा) ५५.३६
 खनतेतीक्ष्णदंती (क्रि) २५.७५
 खनिगामुद्रिणाद्यश्च (क्रि) ११.७
 खनित्रमंजनं वादया (पा) ८६.६१
 खनित्रमंजनं वादं वातुवाद (भू) १७.५०
 खरत्रिशिरसं चैव (उ) २४२.२५०
 खर्वीनिखर्वः संजातस्तृण्णा (भू) १७.४७
 खरारिरस्त्रिशिरोहता (उ) ७१.२२१
 खर्वूननमाद्यकलपू- (सु) १८.२४६
 खर्वूनरनसैदिवैः (भू) १०२.१७
 खर्वूनरानि केराश्च (सु) ४५.६१

खर्वीनिखर्वः संजात (पा) ८६.५८
 खसातुयसरक्षासिजन (सु) ६.७८
 खाडीकाश्चतुषाराश्चपथ (स्व) ६.६३
 खातेष्वेवं च सर्वेषु वर्ज- (भू) ३६.१००
 खादन्नरकमाप्नोति (उ) २५३.११२
 खादन्वमासपिवन्मद्यं (उ) १८२.३
 खादिताः प्राणिनो ये राज्यो (क्रि) ६.८
 खादितुं प्राप्यते (क्रि) ४.२७
 खादिभूतानि देहश्च- (उ) १२८.२५५
 खाद्यपानादिकं मिष्टलेप (भू) ३६.५६
 खिन्नोर्हकर्मणाश्च (पा) ११०.२६
 खिलीभूते तदामध्ये हिम (उ) १२५.६२
 खेदयंत्यर्जने काले क- (भू) ६६.१५५
 खेदुश्च ते विमानस्था (पा) ११३.१
 खेलतीस्वामिनासा (पा) ५५.५६
 ख्यातआदिवराहेतिना- (सु) १६.३८
 ख्याताराते विदग्धं (क्रि) २०.२१
 ख्यातिः सत्यवसंभूतिः (सु) ३.१८५
 ख्यात्यातया ह्यनिर्मुक्ताः (सु) ३.८५
 ख्याप्योर्हंदनुमुख्यानां (सु) ३०.११०

ख्यायते तस्य नामान्य- (सु) १३.४७
 गगनस्था तु तिष्ठति- (स्व) १६.१६
 गगनस्यश्च भगवान् (सु) ४५.१२८
 गगनाद्भ्रष्ट सर्वांगानि- (सु) ४१.२६३
 गगने तु वसद्दिव्यं भ्रमते- (स्व) १४.६
 गंतुमिच्छाम्यहं देवा यदि (भू) ६०.२३
 गंगाकल्लोलनिनद (क्रि) ६.३
 गंगाकुले तदामुनतो (सु) ५.६५
 गंगान्गैतिगंगे (पा) ८५.५८
 गंगागंगैति जल्पतीहृदं (क्रि) ८.८७
 गंगागंगैति जल्पती (क्रि) ६.१३४
 गंगागंगैतियो (उ) २०.८
 गंगागंगैतियो (उ) २४०.५०
 गंगागंगैतियो ब्रूया (उ) २२.२
 गंगागंगैतियो ब्रूयाद् (उ) ८१.३६
 गंगागंगैतियो ब्रूयादयो (स्व) ३१.१७
 गंगागयानं निव (उ) १३०.१७
 गंगाद्या सरितः श्रेष्ठा (त्र) २२.६
 गंगाचक्षुःश्रोत्रे (पा) ७६.३१

गंगा च नर्मदा पृष्ठा (भू) ६०.२४
 गंगाचयमुना चैव (स्व) ५२.२५
 गंगाचयमुनां चैव (उ) ७०.२५
 गंगाचयमुनारेवातापी (उ) १३५.१८
 गंगानलसमानेन वल्गो- (पा) ६.२
 गंगानले प्रयागे च कोदारे (पा) ६६.१२०
 गंगानले वगातेषु (क्रि) ८.५
 गंगानलेः प्लावितानि (क्रि) ८.५६
 गंगानले वसत्येको एके (उ) १३२.५०
 गंगानलं सस्यं शील (पा) १७.१६
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ८.७
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ८.५५
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ७.१०
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ४३.८
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ७.६
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ३४.४३
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) १२१.५१
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ८.१८
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ८.१८
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) १७.६

गंगानलं रजिगमिषं (स्व) ३७.६
 गंगानलं रजिगमिषं (उ) २०.७
 गंगानलं रजिगमिषं (भू) १२१.३६
 गंगानलं रजिगमिषं (भू) १०१.५२
 गंगानलं रजिगमिषं (भू) ३४.६
 गंगानलं रजिगमिषं (भू) १२१.१३
 गंगानलं रजिगमिषं (भू) ११६.३६
 गंगानलं रजिगमिषं (पा) ८.३१
 गंगानलं रजिगमिषं (पा) ६२.३२
 गंगानलं रजिगमिषं (पा) ६४.१०४
 गंगानलं रजिगमिषं (पा) ६८.७८
 गंगानलं रजिगमिषं (पा) १२८.२८८
 गंगानलं रजिगमिषं (स्वा) २३.६
 गंगानलं रजिगमिषं (पा) ६४.५४
 गंगानलं रजिगमिषं (उ) १२८.१२२
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) २४.४६
 गंगानलं रजिगमिषं (क्रि) ६.३०
 गंगानलं रजिगमिषं (उ) १६३.४८
 गंगानलं रजिगमिषं (उ) ६३.१८
 गंगानलं रजिगमिषं (उ) १६५.१६





श्रीपद्महापुराणम् ॥ श्लोका मुक्रमणी

१२२

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|----------------------------------|--------|------------------------------------|--------|----------------------------|--------|------------------------------------|--------|
| गंगाद्या सरितस्तौतैः (सृ) | ४.६१ | गंगांबुजेकमलम् (स्व) | ६१.६६ | गंगायांकुरुतेयस्तु (क्रि) | ६.५० | गंगावरनेकतदिनेपुण्यो (स्व) | १८.३७ | गंगेत्यक्षरयुगम् च (क्रि) | ३.१३ |
| गंगाद्वारस्मीपे तु (उ) | १६५.६ | गंगाविधतोऽप्येनात्वा (क्रि) | ६.११७ | गंगायाः केगुणा ब्रह्मन् (क्रि) | ३.८ | गंगावासीचित्तमत्वा (उ) | १६.५ | गंगेदेविजगन्मातः (क्रि) | ७.१११ |
| गंगाद्वारस्वमाहात्म्यं (क्रि) | ३.६७ | गंगाविधसंगमतीर्थं (क्रि) | ६.३६ | गंगायात्यजतोदेहं (क्रि) | ८.६६ | गंगाशीकरसेकस्य (क्रि) | ७.६४ | गंगेदेविजगन्मातस्त्व (क्रि) | ६.८० |
| गंगाद्वारस्वमाहात्म्यं (क्रि) | ४.१ | गंगाविधसंगमस्यापि (क्रि) | ४.२ | गंगावात्रासुकर्तव्यं (क्रि) | ६.२८ | गंगाश्रीविष्णुपूजा (क्रि) | ३.४ | गंगेसमस्तजगदंब (क्रि) | ७.६६ |
| गंगाद्वारेकुशावर्ते (उ) | ८१.४० | गंगाविधसंगमेऽस्नात्वा (क्रि) | ६.४२ | गंगायांधर्मकर्मणि (क्रि) | ८.३ | गंगासमनास्तितीर्थं (क्रि) | ७.१२७ | गंगेसमस्तमुख (क्रि) | ७.११० |
| गंगाद्वारेपरमेष्ठीहिमवत्स (सृ) | ३४.१३६ | गंगाविधसंगमेऽस्नात्वा (क्रि) | ६.४८ | गंगायांतरश्रेष्ठसरस्वत्याश्च (स्व) | ३२.३ | गंगासरस्वती (उ) | ३७.७५ | गंगेतिमुक्तिर्वनाम् (क्रि) | ८.२३ |
| गंगाद्वारेपुराभीष्म (सृ) | ५.३ | गंगाभः प्रलावितास्तानः (सृ) | ४३.३७६ | गंगायांनर्मदाया (पा) | ८७.३७ | गंगासरस्वतीचैवनाद्या- (सृ) | १६.१२० | गंगोद्भूतंनर्मदा (उ) | १३५.६४ |
| गंगाद्वारेप्रयागेच (स्व) | ४३.५५ | गंगाभरणमासाद्ययोगिनाय (क्रि) | ३.७७ | गंगायांनर्मदायाम् (ब्र) | ४.१७ | गंगासर्वाणिपापानि (क्रि) | ६.१५६ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासंप्रपन्ना (सृ) | ३२.१०४ |
| गंगाद्वारमथागत्यभीष्मं (सृ) | २.६६ | गंगामध्ये निमज्जति (भू) | ११८.२ | गंगायांपुष्करे तीर्थे (भू) | ६६.४५ | गंगासागरमित्याहुः (उ) | १३५.५४ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाद्वारेमहातीर्थभीष्मः (सृ) | २.६० | गंगामरणमासाद्य (क्रि) | ३.७६ | गंगायाः प्रतिमादेव्याः (क्रि) | ६.५३ | गंगासागरमित्याहुः (सृ) | ११.५ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाधरप्रतिष्ठाप्य उ (उ) | १३५.१०५ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायांयस्यहृष्यते (क्रि) | ८.१०४ | गंगासागरमित्याहुः (सृ) | ११.५ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाधरायवैतुभ्यं (क्रि) | १३.११३ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायांयेवगाहंतिमा (उ) | १२७.२७ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाधरोभद्रपीठेजलशाय (सृ) | ३४.१४८ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायांमुनायाश्च (क्रि) | ४.५ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगानामानिसंस्मृत्य (क्रि) | ६.१६ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शुभमाहात्म्य (क्रि) | २२.१ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगानामानिसंस्मृत्य (क्रि) | ७.७० | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शिवमाहात्म्य (क्रि) | ४.१११ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगानिन्दाकराद्ययं (क्रि) | ७.८२ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शिवमाहात्म्य (क्रि) | ४.१११ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाप्रभावरस्माकमेतद् (क्रि) | ७.८६ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शिवमाहात्म्य (क्रि) | ४.१११ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाप्राप्याद्यसौमि (पा) | ५८.७७ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शिवमाहात्म्य (क्रि) | ४.१११ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाप्राप्यापिद्योतां (पा) | ४२.६६ | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शिवमाहात्म्य (क्रि) | ४.१११ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |
| गंगाबु धीतार्तिधियुगाय (क्रि) | ४.६० | गंगाभसिप्रयत्नेनस्नातव्यं- (स्व) | ३१.७८ | गंगायाः शिवमाहात्म्य (क्रि) | ४.१११ | गंगासागरमित्याहुः (पा) | १६.२ | गंगोद्भूतंयत्रगंगासाद्यत्रि- (स्व) | ३२.३० |

१२३

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|--------|
| गच्छतीसावने राजन् (उ) | २२०.४० | गच्छतिनरकधोरम् (स्व) | ४६.२३ | गच्छमित्रपुनस्तत्र (पा) | ६६.११४ | गजवस्त्रसुवर्णा (उ) | ८.४ | गजोवपायसमयी (पा) | ५३.८ |
| गच्छन्तुयवमूवाव्यान् (पा) | २०.७० | गच्छतिपापिनस्तत्र (क्रि) | २३.८६ | गच्छविद्यवाचल तत्र-(सु) | ४४.६२ | गजवाजिरथोधेनक्रौड-(स्व) | ३०.२३ | गटिकम्पास्तुपादः (पा) | १०४.७५ |
| गच्छतोधमचक्रस्ययत्रने (सु) | १.८ | गच्छतिबाहुभिः केचिद् (क्रि) | २३.६८ | गच्छविप्रत्वमर्चयन्निल-(पा) | ६६.५५ | गजवाजीमयीभूमि (उ) | ११.१० | गणगणितवान् (उ) | १२.३६ |
| गच्छतोवाहवयस्य (पा) | ४७.१२ | गच्छतीतुततः सूर्यलो (सु) | २२.३० | गच्छसोमसहायन्त्व (सु) | ४१.१२४ | गजानिजकृताटोपपत (सु) | ४६.२२ | गणकोटिसमाकीर्णा (सु) | १०१.१८ |
| गच्छत्वंतस्यदत्तासिकेयत्न (सु) | १३.२५७ | गच्छनीमनुतां (उ) | २०३.२ | गच्छसुश्रेणिभद्रते (क्रि) | ६.३७ | गजानन्दानयोसम्प (उ) | २४२.३६७ | गणकोटिः समादिष्टा (सु) | ५.६७ |
| गच्छत्वंनृपशत्रुघ्नं (पा) | ५०.५४ | गच्छन्तु तत्र वै यूयं (भू) | ६२.५ | गच्छस्तत्राश्रमजीर्ण (पा) | ३५.१४ | गजानांकटभिर्योधेन (पा) | २४.३० | गणकोटिसहस्रं स्तुस्य (पा) | ७.१५ |
| गच्छत्वंपुरतो रुद्रं (उ) | १८.१५ | गच्छन्तुवर्तितालोकाराजा (पा) | १६.४४ | गच्छामः शरणं भुनि-(सु) | १४.१०० | गजान्प्रतिगजाः क्रुद्धाः (उ) | ५.८३ | गणकोदितमाकर्ष्य (उ) | २००.३७ |
| गच्छत्वंमदगृहातस्य (पा) | ५५.६६ | गच्छन्तु दूताः प्रवराः (भू) | ७३.३ | गच्छामितस्यात्कोप्यन्त्व-(सु) | १८.१६४ | गजामिन्नाद्रिबाजाता (पा) | २३.४० | गणनीयतोगच्छे (उ) | १३८.१ |
| गच्छत्वनमवासपाङ्क्षावत्या(सु) | ३४.५१ | गच्छन्तुमोक्षदं लोक (भू) | ३.६७ | गच्छामियत्रशत्रुघ्नो-(पा) | ३२.१७ | गजारुहोक्तुमारोचपुर (पा) | ६६.६८ | गणतीर्थनः स्नात्वा (उ) | १३८.४ |
| गच्छत्वंमाविलं (उ) | २०४.५ | गच्छन्त्यपि मनस्ताप-(भू) | ११३.६ | गच्छेत्ततउद्यतं (स्व) | ३८.१३ | गजारथरथमु (पा) | १११.१२ | गणदानवयोधानां (उ) | १२.६२ |
| गच्छत्वंमुनिशादूलय (उ) | १४३.२० | गच्छन्पांचालदेशां (पा) | १२.३० | गच्छेत्तपरमांसिद्धि-(स्व) | २६.६४ | गजाश्चकोटिसकीर्ण (क्रि) | १२.११५ | गणशून्यः पृथग्युग्यं (त्र) | १३.४७ |
| गच्छत्वंवराभसविधे (पा) | ५६.३७ | गच्छन्वाजीपुरप्राप्तो (पा) | १७.८ | गच्छेतिभत्रासाप्रोक्ता (पा) | ११२.३८ | गजाश्चरथपत्तीनां (उ) | १४१.१६ | गणस्तथापरोरोग्रामेय (सु) | ४५.१८३ |
| गच्छत्सुप्राणामागैषुय (पा) | २०.३८ | गच्छन्समीपमार्गेषां (सु) | २३.७८ | गच्छेत्प्रतिददंशोपि (त्र) | १५.६० | गजाश्चरथशर्वदश्च (उ) | १००.१७ | गणानामागुर्वैसीकृषीः (उ) | ११.६१ |
| गच्छत्वंसुकगभन्तु गेहं (सु) | ३८.११६ | गच्छस्तिष्ठन्स्व (उ) | २०५.८ | गच्छेत्प्रतिददंशोपि (त्र) | १५.६० | गजास्य ज्ञानसंगमं-(भू) | १६.२८ | गणानां देवतानां च सर्वे (उ) | १५४.४६ |
| गच्छत्सुप्रधिवयंपुत्रवध्ना (पा) | ३३.१ | गच्छन्तीथीतरंध्रातः (उ) | १२६.७५ | गच्छन्तीचमहावीर्यां (उ) | २४५.३३१ | गजास्यश्चगजस्कंधः (पा) | ७८.४५ | गणान्विजित्य (सु) | १८.६ |
| गच्छत्वंशरणदेवा (उ) | १०४.१७ | गच्छन्तुत्रुहंस्नात्वा (पा) | ६८.६६ | गच्छन्निमित्तमा (उ) | २०५.५ | गजेवैमशकेचैवदेव (उ) | १२.६५५ | गणान्विद्रावयामास (उ) | २५०.३१ |
| गच्छन्ना रदतत्रैवयत्रत्रि-(स्व) | १४.१६ | गच्छन्ब्राह्मणभद्रते (क्रि) | २१.६६ | गच्छन्ना तथा प्रोक्ता-(भू) | ३६.७५ | गजेरजैर्हृदयैः पतिव्रजैः (पा) | १३.६६ | गणामिश्रयतांवाययं (उ) | ३.३५ |
| गच्छन्तस्यतहितायत्र-(स्व) | २५.१८ | गच्छन्ब्राह्मणभद्रते (क्रि) | १३.१६२ | गजदानसहस्राणां-(उ) | ११८.१२ | गजेरदवैचकलभं-(उ) | ६०.१३ | गणाश्चगमनह्यत(उ) | १००.१४ |
| गच्छन्तं दीपकं शांति (उ) | ३०.५६ | गच्छन्ब्राह्मणभद्रं (क्रि) | १७.१२६ | गजराजसमारुह्यस्थि (उ) | २१६.८३ | गजोपरिगजं हत्वा (उ) | १३.११ | गणाह्यप्सरसांसर्वे (उ) | १२७.५५ |
| गच्छन्तिजाप्लवीतीरं (क्रि) | ६.६६ | गच्छमानं दुरादानं (भू) | ११६.२६ | गजरूपाः शिलास्तत्र-(स्व) | १५.१०३ | गजोपस्थेसमारुह्यमय (पा) | ६०.३५ | गणिकादत्तपुण्येनपुण्य (उ) | १७५.४२ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१२४

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|-----------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| गणिकाब्रह्मणी सा च (क्रि) | २०.७३ | गतवैरागिभूतानिसम (उ) | १२८.१६६ | गता सा स्वहृद् पश्चा- (भू) | १०५.४६ | गते तस्मिन्महाभागे (भू) | ४६.४५ | गतोज्ञोशाश्वतस्थानं (पा) | ६७.७६ |
| गणिकैकदाधर्मराज (त्र) | ६.३० | गतव्यनान्यथादेवतद् (क्रि) | २३.५४ | गता सुतृष्णा ध्रुवया (भू) | ६६.२ | गतेतस्मिन्महाभागे सा (भू) | ३०.७२ | गतोग्रामेतुतां (उ) | ३६.३६ |
| गणेशकोटिददन्तो (उ) | ७१.१६३ | गतः शिवालयेनंदीस (उ) | १५१.५५ | गतासुः सपपातीर्ध्या- (सु) | ४४.२१२ | गतेतस्मिन्सुरेस्वर्यं (पा) | ६७.८१ | गतोन्नतरमत्युग्राम- (उ) | १२६.१७ |
| गणेशकतदितंश्रु त्वा (उ) | १२.४३ | गतश्चमारवेयनि (उ) | १८०.१० | गतासोरपिरोषेण (उ) | १६१.६ | गतेदेवेतदाविष्णोब्रह्मा (सु) | ४.११३ | गतोरसातलंराजन् (उ) | ५३.२३ |
| गणेशतांददौतस्मैनाम (सु) | ४६.६२ | गतयोग्यकद्वेष्टा (क्रि) | २१.६७ | गतास्तेत्रिगमिष्यं (उ) | १५१.८४ | गतेबहुतियेकाले (उ) | ४०.३० | गतोराधापतिस्थानं (पा) | ७४.४६ |
| गणेशपंचमिविधवा (उ) | १०१.२३ | गतस्तस्याग्रतः शुक्रो (उ) | १००.२ | गताहं क्रोष्टुकीं योनि (भू) | ५२.२६ | गतेबहुतियेकाले दत्ता (भू) | १०३.१२४ | गतोवंशसदस्मृतांनि (उ) | १७७.७ |
| गणेश्वरीस्वयंभूत्वा (स्व) | ३५.६ | गतस्तेतिष्णोभर्ता (भू) | ५३.४० | गताहं पापभावेन (भू) | ५२.३२ | गतेभर्तारि मे तातः (भू) | ४७.४० | गतोव्याघ्रः समुत्पत्ता (उ) | १८७.३६ |
| गणेश्वरः सुदुर्द्धवं (सु) | ५.७८ | गतः स्नात्वा जलं (भू) | ८६.३२ | गतिपरामवाप्नोतिकुलं- (स्व) | २७.६८ | गतेभर्तारि या ग्रामं (भू) | ५०.३३ | गतोश्वस्तपुत्रांतस्तु- (पा) | ३२.१० |
| गणैनानाविधैर्घोरैर्ना (सु) | ५.७१ | गतातैर्वैष्टितासाध (त्र) | १५.५८ | गतिप्रदंतथाधर्मगच्छ (पा) | १०६.६६ | गतेभर्तारि या नारी (भू) | ४१.८० | गतोसिघृतंपूर्वेषु मे (उ) | १२८.८७ |
| गण्यतेरेणवःचैव (त्र) | ६.८ | गतानिचविशेषेण (उ) | १४५.६ | गतिमिच्छतिवि (उ) | ३४.६१ | गतेमहत्काले (उ) | २०२.५ | गतोसिप्रिगपूर्वेषु गंतु (स्व) | २२.७८ |
| गणद्वयमात्रतोयेन (क्रि) | १२.३६ | गतानिचांधमावर्चै (त्र) | १२.५४ | गतिं कर्तुं न शक्नोति (भू) | ५३.७४ | गतेवर्षसहस्रेतुदेवा- (सु) | ४४.१२२ | गतोतीतत्रव्राग्त्येयोगी (उ) | १८०.६४ |
| गतं तु राजराजेंद्रमुने- (भू) | ६१.२७ | गतानिबहुवर्षाणिसर्वं (पा) | १७.४८ | गतिकामिहगच्छामि- (सु) | १८.४३४ | गतेपुतेषुकाङ्क्षुस्तथः (सु) | ३६.१७ | गतोहं धर्मराजांनंद (उ) | २८.३ |
| गतकर्मपमेवं तं जातं (भू) | २८.४६ | गतायनगरंतत्र (त्र) | ७.१६ | गतिगलंवन्तेवांत- (उ) | २२६.५३ | गतेपुतेषु गोलोक (भू) | ४.१ | गतोतेन विमानेन (सु) | ३८.२६ |
| गतः कालो महाराज- (भू) | ६१.२८ | गतापुष्करमार्गेण (उ) | १२६.५५ | गतिः सा परमापुसां (उ) | २२२.३७ | गतेपुतेषुदेवेषु (भू) | ६१.३६ | गत्यधर्ममत्मानंराजन्वान- (सु) | ३६.३७ |
| गतः कैलासशिखरं (उ) | ६६.३ | गतायदानपश्यतिमा- (सु) | १३.२७६ | गतिहीनो ब्रजेत्सोपि (भू) | ६२.३३ | गतेपुतेषु विप्रेषुस्व- (भू) | २४.३२ | गत्वाकृतिदवाग्येव (उ) | १६१.६ |
| गतपापः सलिलो (उ) | ४७.३५ | गतायांबाढमित्युक्त्वा- (सु) | २२.३२ | गतेतैर्चाक्षुषनाम (सु) | ७.८० | गतेपुतेषु सर्वेषु गगना- (सु) | १७.२६ | गत्वाकंसोहतः क्रूरः (त्र) | १३.५७ |
| गतपापोयदेकेनद्वितीये (उ) | १२७.२ | गताः ये वैष्णवाः सर्वे (भू) | ८३.७७ | गतेतस्मिन्दुराचार- (भू) | ५१.१ | गतेपुतेषु सर्वेषु देवो (भू) | ३६.५० | गत्वाकुमारवाह- (सु) | ३७.१५१ |
| गतप्राणसमालोक्य (क्रि)- | ७.२६ | गता सा नंदनवनं (भू) | १०५.१ | गते तस्मिन्महाभागे (भू) | ७३.१ | गतेपुतेषु सर्वेषु सुकला (भू) | ५८.४२ | गत्वात्स्वाध्यामोन् (पा) | ८८.११८ |
| गतः प्रातः क्रियांकर्तुं (पा) | ५४.१ | गतासारूप्यताविष्णो (क्रि) | ४.१०६ | गते तस्मिन्महाभागे (भू) | १०७.८ | गतेषु मुनिमुख्येषु (सु) | ३५.३० | गत्वागृहान्गालत्र (त्र) | ११.७६ |
| गतंविद्याधरश्रेष्ठ (भू) | ८४.१६ | गता सा वैष्णवं (भू) | ८८.५३ | गतेतस्मिन्महाभागे (भू) | १०४.१ | गतेषुसुरसंगेषुविष्णु- (उ) | १३.२३७ | गत्वाचतुर्पथं सर्वम् (त्र) | १६.३ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| गत्वाचमाधवं (क्रि) | ६.६८ | गत्वाथमोहयामासर (सृ) | १२.८६ | गत्वासनंदिग्रामं तु (पा) | १२.१ | गदैर्हीना नराः सर्वे (भू) | ७५.१८ | गंधपुष्पंतयाद्वयम् (त्र) | १३.१७ |
| गत्वाचांतः पुरेभ्रातराम (पा) | ५८.५२ | गत्वाथसर्वेतेभृत्याः (त्र) | ११.६७ | गत्वासभायांनुमहा (पा) | ५३.१० | गद्गदस्वरसंयुक्तोमहा- (पा) | १.१७ | गन्धपुष्पं तथा दूष (उ) | ८४.११ |
| गत्वाजगदादभगवान् (सृ) | ४.२७ | गत्वाथमेवकस्तत्रजात्वा (पा) | १३.५१ | गत्वात्तनीपेदह (उ) | १४.१५ | गवर्वात्मनरात्त्याज्या (पा) | ११४.३८४ | गंधपुष्पंतयाधूपंहरि (पा) | १०६.७१ |
| गत्वाततोनातिदूरपुन- (सृ) | १८.४६६ | गत्वादिष्टोदंपतीतांप्रोच (सृ) | ३४.५३ | गत्वाहिंश्रद्धयायुक्तः (स्व) | २६.६ | गंडकीयंनदीराजन्मुरा- (पा) | २०.१२ | गंधपुष्पंप्रतिदिनं (उ) | ११५.५३ |
| गत्वाततोनातिदूरात्पु- (सृ) | ३२.८६ | गत्वाविनिर्वर्ततेस्वर्ग- (स्व) | ३१.६१ | गत्वाहंश्रीतमोविप्रो (पा) | ११४.२३६ | गंडक्यामिकदेशेनुशा (पा) | ७६.२ | गन्धपुष्पाक्षनाद्यै (पा) | ११७.२२७ |
| गत्वातत्रनपस्तेपेवर्षाणा (पा) | १४.४७ | गत्वापरतटेयेर्वेह्य (उ) | १५६.१० | गत्वोत्तरसरस्वती (पा) | ७४.१४६ | गंडिकायास्तुमाहात्म्यं (उ) | ७५.१ | गन्धपुष्पाक्षर्तः पुज्य (पा) | ११५.२६ |
| गत्वातत्रमहायोगमये (पा) | ७१.५ | गत्वापश्यामहेविष्णो (पा) | ११४.१२६ | गदताखिलकर्मतस्य (पा) | २५.२ | गंडिकायास्तु माहात्म्यं (उ) | ७५.२६ | गंधपुष्पादिनैवेद्यैः (त्र) | ४.२४ |
| गत्वातत्रैवताः कन्या- (स्व) | २२.७७ | गत्वापुनरयोध्यांतुराम (उ) | २४४.१२ | गदयानाडितोवीरोनाकं (पा) | २६.४६ | गंडूपकारिणातेनस्न (उ) | १५४.१६ | गंधपुष्पादिनैवेद्यैः (उ) | १२२.५० |
| गत्वातत्रगन्ताकाभिर (पा) | १४.५३ | गत्वामधुवनीचापि- (स्व) | २६.८६ | गदयानिहताः केचिद् (उ) | २४६.५६ | गंडूपाचमनंवारि (उ) | ५१.२० | गंधपुष्पैर्धूपपीपैः (त्र) | २३.४ |
| गत्वातदैवताः कन्याः (उ) | १२८.८६ | गत्वाममपदंदिव्यं (उ) | २४२.३२७ | गदाधरमया श्राद्धं (उ) | २२.४७ | गंतुकृतनिस्तानवडयं (पा) | ४४.५७ | गंधपुष्पैर्धूपपीपैः (त्र) | ७.१७ |
| गत्वातमाह्वयामासरा (पा) | २३.४५ | गत्वामुनिसुतैः (पा) | ५४.६ | गदातेनविनिक्षिप्तस्व (पा) | २६.५८ | गंतुत्तस्यसभाराज्य (क्रि) | ५.१६७ | गन्धपुष्पैश्चधूपैश्च (त्र) | ४.३६ |
| गत्वातंतस्यगेहायु (त्र) | १४.१८ | गत्वायथागतंशक्रजग (पा) | १३.१७ | गदांमुमोचमहतीमंहा (पा) | ६०.३२ | गंतुमहिम्नांसीमानं (क्रि) | १७.१४६ | गन्धपुष्पोपहारै (उ) | २८.३३ |
| गत्वातंतापसश्रेष्ठमन- (पा) | ३५.२४ | गत्वायोध्यांमहातेजाः (पा) | ११७.६२ | गदापरिघसंपूर्णभूतिमंत (सृ) | ४०.१६६ | गन्तुमिच्छन्सो (भू) | ७.८३ | गंधमादनपाश्वर्तुपरै- (स्व) | ३.५३ |
| गत्वातुपुंडरीकाक्षो- (सृ) | १४.७४ | गत्वायामान्तिकं (पा) | ११६.२७८ | गदाभिः परिघैः शूत्रैः (उ) | २५०.४२ | गंधदः (त्र) | २४.३१ | गंधमादनशृंगेतुधनदः (सृ) | २१.२०० |
| गत्वातुमर्कटाकारस्तदा- (सृ) | ४२.२६ | गत्वावर्तनिखिल (पा) | ११६.१४६ | गदामादायगहृतीसर्वा (पा) | २६.५७ | गन्ध द्वारांडुराधर्पा (उ) | २२७.२० | गंधमादनशृंगेतुकुवेर (स्व) | ३.५२ |
| गत्वातेप्राहरस्सर्वे (पा) | ४४.६३ | गत्वाविलोकयामी- (पा) | १८.१५ | गदायाताड्यामासचंडं (क्रि) | १५.६४ | गन्धद्वारेतिगन्धैरात (पा) | ११७.६६ | गंधमाल्यादिकंसर्वै- (सृ) | २४.४६ |
| गत्वातेषां समीपं तु (उ) | २५५.२२ | गत्वावीरप्रमोक्षंस्व- (स्व) | ३२.१५ | गदावातांश्चविविधान्- (सृ) | ३०.५७ | गन्धघूपतयादंघाद्री (सृ) | ७.१४ | गंधमाल्यैस्तथाधूपैर्नै (सृ) | २३.११८ |
| गत्वात्वेकाकिनायकै- (सृ) | ३१.१० | गत्वावैसमुखंतस्यप्रणि- (सृ) | ३३.६२ | गदितमितिनिग (उ) | २०१.१०४ | गन्धघूपोपहार्याणि (पा) | ६५.६७ | गंधयापापिनैवेद्यं (त्र) | २०.७ |
| गत्वावतत्रशालायां- (पा) | ६.१४ | गत्वाशिलातलेपश्यम (उ) | १७६.५७ | गदितस्वसुतंकिनुत्वां- (पा) | ७३.८ | गंधोघूपः सुमनसो (पा) | ६५.८२ | गंधवैकन्याः पृथिवि (उ) | १२८.१५ |
| गत्वाथनगरैतां वैमंभो (पा) | ३.१४ | गत्वासजीवितवीरं (पा) | ६१.६ | गदीशुलीकरालरच- (सृ) | ४५.१८४ | गंधपादाभ्यर्चनैवेद्यद्वि (उ) | १२०.१२ | गंधवैकन्यावादि (उ) | ४६.७ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१२६

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| गंधर्वकन्यावादि (उ) | ४६.७ | गंधर्वाप्सरसांमध्ये (स्व) | ४२.४ | गंधोदकपुष्पवारिचंदनं (सु) | २२.१५४ | गयातीर्थपरतीर्थं (स्व) | ३७.५ | गर्जता तेन शार्ङ्गं प्रा (पा) | ४३.३६ |
| गंधर्वकिन्नरोवाय (उ) | १२८.४२ | गंधर्वाश्चाराण्यक्षाः (उ) | ५.६२ | गंधोदकेन वपुनः पूजनं (सु) | २२.१०८ | गयापिंडप्रदानस्य (उ) | १३७.८ | गर्जति समरं विचरति (भू) | ४३.४२ |
| गंधर्वः किन्नरोवाय-(स्व) | २२.३३ | गंधर्वाश्चित्रसेनायाः (उ) | ८.१६ | गमनागमनेनित्यं (पा) | ८३.५ | गयायांमर्मपृष्ठेवासर (सु) | ११.७२ | गर्जनतुतोगच्छेद्यत्रमेघ (स्व) | १७.३ |
| गंधर्वगणशोभावां-(सु) | २१.११२ | गंधर्वास्तगार्थंति (उ) | ४३.१२ | गमनात्स्वपापस्य (उ) | २११.२७ | गयायांपिंडदानस्यनान्य (सु) | ११.७६ | गतिमात्रंतुयेच्छुर्यत्रगौर-(स्व) | ३१.४६ |
| गंधर्वगणशोभावांस्ततः-(सु) | २१.११२ | गंधर्वास्तेन जीवांति (भू) | २६.६७ | गमनादेवराजेंद्रपुष्कर-(सु) | १६.१६ | गयायांपिंडदानेन (उ) | २१३.८१ | गतंशापीत्रह्यचारीजटा-(पा) | १.३० |
| गंधर्वचारणी, सिद्धदेव (भू) | १०१.१३ | गंधर्वीकिन्नरीवाय (उ) | ६२.२० | गमिकांमंत्रपूतांचनोका-(सु) | १८.२४४ | गयायास्वतियः पुत्रः (उ) | ३२.२१ | गर्दभाचरिता भूमि (भू) | १५.५ |
| गंधर्वत्वप्सरस्त्वं (उ) | ४३.२६ | गंधर्वैः किन्नरैः सिद्धेश्व (भू) | ८३.४८ | गमिष्यतिक्षणाद्भुक्तिः (उ) | १६४.३४ | गयापीपं ततो गत्वा (उ) | ६६.५६ | गर्भधानाः सार्धं ज (उ) | २४५.१६६ |
| गंधर्वयक्षसिद्धा (उ) | ३.१३ | गंधर्वैरप्सररोमिश्च (भू) | १०२.३१ | गमिष्यत्यचिरं वैत (उ) | १७७.२८ | गयाश्राद्धादिभिः पिंडैः (उ) | ७१.६५ | गर्भपातनजाराणाः (पा) | ४७.७ |
| गंधर्वलोकतोवृद्धां (उ) | १५.६३ | गंधर्वैरप्सररोमिश्चनित्य (सु) | १२.११३ | गमिष्येब्रह्मसंतंत्वं-(सु) | २२.१७० | गयाश्राद्धममपुण्यं (उ) | १४४.४ | गर्भभोगसमाहृतः (भू) | १२३.४२ |
| गंधर्वः युक्तसंगीतिस्तस्य (स्व) | २२.१० | गंधर्वैरप्सररोमिश्चपुनः-(भू) | २६.६४ | गमिष्ये राक्षसदेवद्वष्टं-(सु) | ३८.५४ | गरस्पर्शमहारोग (उ) | ७८.३६ | गर्भवापनविषयंति (भू) | ७.३८ |
| गंधर्वस्वरसंधुवश्च (भू) | ६८.१४ | गंधर्वैरावृतोदेवस्त (उ) | ३.११ | गंभीरनाभि कमलं रोम (पा) | ६६.१०१ | गरुडश्च जगोविद (क्रि) | ११.२८ | गर्भव सविगामाशमंगो (पा) | १७.५३ |
| गंधर्वः सुखसंगीति (उ) | १२८.२० | गंधर्वैश्चपुनर्दृग्वा (सु) | ८.२४ | गंभीरनाभिपंचास्य (पा) | ७४.१८२ | गरुडः पागश्रेष्ठोऽरुणा (सु) | ६.६६ | गर्भवाससमनुजं (क्रि) | १३.१३१ |
| गंधर्वा गीततत्त्वज्ञा (भू) | ६०.२५ | गंधर्वैः स्तूयमानस्तु (उ) | १२६.२५३ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गरुडंतिष्ठत्वादि (उ) | ७.२८ | गर्भवासातार वागं ष्ट (भू) | ६६.४८ |
| गंधर्वाणां च वायव्यं (भू) | ७१.७ | गंधर्वैः स्तूयमानस्तु (उ) | १२७.१२० | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गरुडांतिनाययित्वा (उ) | २५३.६८ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |
| गंधर्वाणां तथा नार्यो (भू) | १११.३ | गंधर्वतियपुष्पाणि रसवति (सु) | ४५.४८ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गरुडानां संहृणुयच्छक्राष्ट (सु) | ४२.७३ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |
| गंधर्वाणां तु सर्वेषां (भू) | २७.१४ | गंधर्वीप्सरसोपक्षाः पन्न-(स्व) | २६.४ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गुरुदेवतपन्नं पन्नं (स्व) | २०.६८ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |
| गंधर्वान्भरतोहृत्वा (उ) | २४४.१० | गंधः सर्वत्रसतमा-(सु) | १८.३६७ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गगदिशान्नदेवोऽर्थारं (सु) | १०.५२ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |
| गंधर्वाप्सरसश्चैवेनित्यं (सु) | १६.२७ | गंधैर्धूर्वैश्चदीपैश्चने (उ) | २३२.६६ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गगोमहात्मा हरिभक्ति (भू) | ६६.५ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |
| गंधर्वाप्सरसश्चैवत्रैलोक्यं (सु) | ३४.६५ | गंधैर्धूर्वैश्चनेवैद्यै (क्रि) | ६६.६६ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गगोमहात्मा हरिभक्ति (भू) | ६६.५ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |
| गंधर्वाप्सरसश्चैवमुनयो (सु) | १६.८३ | गंधैर्धूर्वैस्तथापुण्ये (उ) | ५१.५६ | गंभीराक्षमहापापी (उ) | १३६.२८ | गगोमहात्मा हरिभक्ति (भू) | ६६.५ | गर्भवासे महद्दुःखं (भू) | ६८.१६६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् : : श्लाकानुक्रमणी

१२७

| | | | | |
|--------------------------------------|--------------------------------------|--------------------------------------|--------------------------------------|---|
| गर्भच्छ्रुतस्यपुत्रस्य (पा) १४.४४ | गर्वायोमनसादु खंवांच्छ (पा) ३१.३४ | गाविंसंभवपाराशर्वा-(स्व) २२.३८ | गामुद्धरतियेषकादये-(स्व) ३१.७६ | गायन्तिरेकावल्लोका (भू) ७४.२७ |
| गर्भकोटिगुणा पीडा (भू) ६६.५० | गवाल्यपुनर्यतिदो (पा) ८३.६० | गानागदमहालो (पा) ६६.२३ | गायकाश्चमंगलानि (पा) ११६.६६ | गार्वातिदिव्यगेषानि (मृ) ३६.७६ |
| गर्भोदकसमुद्राश्चतस्यासं (सू) २.१०८ | गर्वात्रतविकीर्णचरक्षोन्व (सू) २७.३७ | गांगवक्ष्यामिमा (उ) २२.१ | गायते नृत्यते तस्य (भू) १०१.५३ | गर्वातिदेवाः सनतदि-(स्व) २३.२६ |
| गर्भोममभवेत्तहि (उ) १६६.५२ | गर्वांशतसहस्राणि (उ) ३२.२८ | गांगेयंजनमासाद्य (क्रि) ८.६ | गायते नृत्यते विप्रः (भू) १०३.११२ | गार्वातिनिस्वयं गंधर्वा नृत्य (मृ) ३४.६ |
| गर्वमाकुरुदुदुद्धेतवायुः (क्रि) ६.११ | गर्वांशतसहस्रेण राज-(स्व) २५.६ | गांगेयइतिदेवंस्तु- (सू) ४३.४३६ | गायते सुस्वरं गीतं सर्वं (भू) २४.५० | गायनिमधुरांगिनि (पा) ११४.३ |
| गर्वादलंमालिस्तु (उ) ८७.६ | गर्वांशतसहस्रेभ्यो (स्व) ४२.२३ | गांगेयैरुदकैर्यस्तु (क्रि) ६.४६ | गायत्रीचापि रुद्रेणस्तुता (मृ) १८.३ | गायतिसनतदेवी (उ) २२६.१७७ |
| गर्हितस्सर्वलोकेषु (उ) २२४.४२ | गर्वांशुगोदकं चैव विप्र (सू) ४७.८ | गांघगच्छतियोमुद (ग्र) १८.११ | गायत्रीचैत्रवेदांश्च (स्व) ५३.५२ | गायति सिद्धाः किल (स्व) ३४.२२ |
| गलितायाः सुधायास्तु (उ) १००.७८ | गर्वांशुकारशब्देन- (सू) १८.३११ | गांधवमाश्रित्य परंस्व- (स्व) २२.२४ | गायत्रीवर्गंनरणोवाणी-(सू) १८.६१ | गायति हरिनामानि (ग्र) १.२४ |
| गलेसूचसिभुत्कीर्णो (क्रि) २३.६४ | गर्वांशुस्तुसंभोज्यगोम (पा) ३१.१८ | गांधर्वंशस्त्रमेत (उ) १५.६४ | गायत्रीपठयस्तुयोनि (स्व) ३६.२८ | गायंतीत्वयनृत्यं (पा) ११२.१०५ |
| गर्वांकोटिप्रदानेनयत्फलं (उ) १४४.२१ | गर्वाण्यमहाभागसंग्रामे-(सू) १३.१२५ | गांधारमाश्रित्यवरं (उ) १२८.३३ | गायत्रीपूजयेदभन्दकस्या-(सू) २२.१८२ | गायंतीमधुरंसाधु (उ) ४६.११ |
| गर्वांकोटिसहस्राणि (क्रि) ४.७ | गर्वाण्यपयसासिक्तां (सू) २३.३० | गांधारीचैवमाद्रीयत्रनां-(सू) १३.७० | गायत्रीयोजपेन्नित्यं- (सू) ४६.१५५ | गायन्तीसुस्वरंगीतं (भू) ७७.३१ |
| गर्वांशत्रयवैश्यानां (भू) ६७.७२ | गर्वाण्येनपिपातद्वत्पा (सू) ७.२६ | गांधीर्यचेतिभूपानां (क्रि) २१.८३ | गायत्री वेदजननी (स्व) ५३.५८ | गायंतीसुस्वरंसापि (उ) १२६.५८ |
| गर्वांशैर्जालमालैश्च (भू) ८३.५७ | गर्वायस्तुट्टस्तान्दोषा (पा) ११६.८६ | गांधीर्यहीनंभूपालं (क्रि) २१.७८ | गायत्रीवेददत्तेपांति (सू) १७.२०६ | गायंतीस्वरमाकर्ष्य (उ) १८४.६१ |
| गर्वांशोष्ठे वने चान्तेः (भू) ६७.६१ | गाडीयंमंदरं कृत्वागुणं- (स्व) १५.३ | गांधीर्यतिगागरभिभवभा-(सू) ३६.६६ | गायत्रीसामगायंतगीतं (भू) ६८.४४ | गायन्तं दत्तपानाक- (पा) ११२.१३३ |
| गर्वांशोष्ठेसहस्रं ध्वं (उ) ६२.६ | गाढालिगनजानं (पा) ८३.२१ | गायतिदेवाः सनतां-(उ) १२८.१४७ | गायत्रीसामगात्रोपरिरं (सू) १७.२८१ | गायन्तं हरिगुणं पिष्टं हस्य (पा) २१.४८ |
| गर्वांशोसनदत्तोवैनरो (उ) १२६.१०६ | गाणपत्यं चलभतेदेहेत्य-(स्व) २८.१३ | गांधीर्यप्रजननकर्तार्या (पा) १०.६२ | गायन्तं क्रिक्तनयपत्नी (सू) १७.१२ | गायन्तं हरिगुणं प्रशस्य (पा) २२.६ |
| गर्वांशोब्रह्माण्डां च (क्रि) १७.१५० | गाणपत्यं ततश्चैवपर्वते (उ) १२३.२५ | गांधीर्यद्वयापकनिर्मगनां-(स्व) ३१.४७ | गायन्तं युक्तमाथितुद्व (पा) १०४.७० | गायमानाभरा राजन्नायां(भू) ७६.२८ |
| गर्वांशोयमवाप्नोति (स्व) ३६.३२ | गाणपत्यं ततोवक्ष्ये (उ) १२४ | गांधीर्यद्वयदोतेभ्य (पा) ६.३५ | गायन्तं यं सुभगं नृत्य (उ) १८२.११ | गायमानावरंगीतं सुस्वरं-(भू) ३६.१२ |
| गर्वांशोयुतसाहस्रफलमा-(सू) २१.१६२ | गावस्तं भोभवत्स्य (पा) ४७.६ | गामगिन्ब्राह्मणम् (स्व) ४६.२१ | गायन्तं च्छन्मृगं स्तिष्ठ (पा) २१.३० | गायमानोतुतोतत्र (उ) ४३.२१ |
| गर्वांशोयसमंजस्यमन्तं (उ) ६४.६१ | गात्राभ्यंगं गिरोभ्यंगं (उ) ११६.३४ | गामर्घयंततोदत्वा (सू) १८.६६ | गायंतं हरिभीतानि (क्रि) २२.१३२ | गायाम्यहं सुरसगीतकता-(भू) २१.२२ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१२८

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| गारुडलैंगमाख्या (पा) | १०४.५२ | गिरिजावल्लभोग (उ) | १८०.४१ | गीतवादित्रनृत्यजैर्ग- (सु) | १५.२२६ | गीतायानवमाध्याय (उ) | १८३.५८ | गीर्वाणेषु प्रातिकुल्यविनाश (सु) | ३८.१० |
| गार्हस्थ्यं च परित्यज्य (भू) | ५०.४० | गिरिजेश्वर्यायातु (उ) | २०१.८७ | गीतवादित्रनिरतौवीणा- (स्व) | ३०.२० | गीतायाः पितृभिर्गंधा (उ) | १३५.४६ | गीर्वाणं गुणासां प्राज्य (उ) | १६२.२५ |
| गार्हस्थ्यं च समाश्रित्य (भू) | ५६.१८ | गिरिः पुष्पितकश्चैव- (सु) | ४५.१६७ | गीतवादित्रस्तोत्रार्चः (स्व) | ३१.१३३ | गीतायाः षोडशाध्याया (उ) | १६०.३४ | गुटिकांसर्वसिद्धां (उ) | १४.१० |
| गार्हस्थ्यं च समास्थाय (भू) | ३०.७० | गिरिगृहीत्वातेना (उ) | १२.२६ | गीतवाद्यं तथा नृत्यं (उ) | ८५.२ | गीतायाः षोडशाध्याय (उ) | १६०.२५ | गुडघेनृततोदद्या (उ) | १५२.३० |
| गार्हस्थ्यस्य च धर्मस्य (भू) | ५६.३० | गिरिराजसमागम्यदेव (उ) | १२५.१३५ | गीतवादित्रनिर्घोषे- (उ) | १२५.७३ | गीतायाश्चैवमाहा (उ) | १.४३ | गुडघेनुप्रसंगेन सर्वास्तिवम (सु) | २१.७२ |
| गार्हस्थ्यं माप्रणाशमे (सु) | २४.६ | गिरिराजोविभात्येकः (भू) | ४३.१८ | गीतवादित्रनिर्घोषैः (स्व) | ४२.६ | गीतार्थश्रुणुयाच्चापि (उ) | १६८.४० | गुडफलानि हृद्यानि (सु) | ३४.१६६ |
| गावः कुंभसमो घस्का (पा) | १४.२१ | गिरिस्तत्त्वतो निष्ठो (उ) | १०.२४ | गीतवादित्रनिर्घोषो (उ) | १६६.६२ | गीतासप्तदशाध्यायं (उ) | १६१.२७ | गुडाकेशाः सन्ति यस्य (भू) | ८६.८६ |
| गावः कृष्णांतनुप्राप्यपूर्वं (उ) | १६३.३ | गिरीशतेततोऽटवा (सु) | ४३.३६२ | गीतश्रुत्वामुनिस्तस्य- (भू) | ४६.२० | गीतासप्तदशाध्याय (उ) | १६१.२१ | गुडेक्षुक्षीरसाकादिदधि (भू) | ६७.६६ |
| गावः क्षप्ताभगवतासं (उ) | १४४.१६ | गिरिरूपत्यकाप्राप्ते (क्रि) | २५.५३ | गीतसनत्कुमारेण व्यासे- (स्व) | २७.३७ | गीतेन देवताः सर्वास्तिव (भू) | ४६.२७ | गुणत्रयमिदं धेनुविद्या (पा) | १०८.२८ |
| गावश्च ब्राह्मणश्चैव (क्रि) | ६.३४ | गिल्लितोर्ध्वद्वयं (उ) | १.२४ | गीतानां दशाध्यायं (उ) | १८७.६० | गीतेकादशमध्यायः (उ) | १८५.६२ | गुणत्रयं च दध्नेन विद्या (पा) | १०८.२६ |
| गावो गावो गाव इति- (पा) | १०८.३० | गीतनर्तनशीलाश्च धूर्तार्ता (पा) | १११.८ | गीताध्याय प्रभावेण (उ) | १८५.६४ | गीतेवाद्यैश्च नृत्यैश्च (क्रि) | २१.११४ | गुणदोषसमाक्रान्तो (भू) | ८.१७ |
| गावो देयाच्चतुर्विंशद- (सु) | २१.११६ | गीतमंगलनिर्घोषैः (उ) | ५५.३६ | गीतानां नवमाध्यायं (भू) | १८३.५० | गीतैश्च गायते कृष्णां (भू) | २१.१६ | गुणनामाश्च यं गातं (उ) | ८०.६ |
| गावो नष्टा कृषिर्भग्ना (भू) | ६६.१५६ | गीतगानं प्रकुरुते (उ) | ४७.११ | गीतानां दशाध्याय (उ) | १८४.७१ | गीयते पापहादेव (पा) | २१.१५ | गुणानैव प्रपश्येत् (पा) | ८८.३ |
| गावो ममाग्रतः संतु (उ) | ६६.७४ | गीतं गायति गंधर्वाः (भू) | १४.११ | गीतानां दशाध्यायं (उ) | १८६.६० | गीयमानं गीतं गंधर्वसुखरैः (भू) | ३०.७८ | गुणानैव प्रपश्येत् स क्रूरो (भू) | १२.३ |
| गावप्रदद्याच्छक्त्यातु (सु) | २१.२८६ | गीतं गायति दुष्टात्मा- (भू) | ४६.३५ | गीतानां षष्ठमध्यायं (उ) | १८०.१०० | गीयमानस्तु धर्मात्मा (भू) | ५७.१६ | गुणयुक्ता सुनायानामने (भू) | ३४.५ |
| गिरः सक्रयं च (उ) | १८१.२० | गीतं गायन् हरेर्भक्त्या (उ) | ८५.३ | गीतानां षष्ठमध्यायं (उ) | १७५.२३ | गीयमानस्तु धर्मात्मा (भू) | १४.४० | गुणरूपसमायुक्ता (भू) | ८५.५४ |
| गिरावस्मिंश्च भगवान् (सु) | ४३.२७६ | गीतं नृत्यं च वाद्यं (उ) | ३१.४५ | गीतानां षष्ठमध्यायं (उ) | १८०.१०१ | गीयमानो मुदं याति (पा) | १०२.८ | गुणरूपसमायुक्ता (पा) | ६२.३७ |
| गिरिकूटनिभास्तत्र- (स्व) | १५.२८ | गीतवाद्यं च नृत्यं च (उ) | १२४.११ | गीतानां षष्ठमध्यायं (उ) | १८०.१०१ | गीर्भिः परममं ग्राभिस्तु (सु) | ४१.४५ | गुणरूपाय गुह्याय गुणाती (भू) | ३२.३३ |
| गिरिकुंजं सनासाद्य विष्णु (स्व) | २४.३६ | गीतवाद्यं तथा नृत्यं (उ) | ३७.८ | गीतानां षष्ठमध्यायं (उ) | १८१.२७ | गीर्भिश्चैवानुक्ताभिः (सु) | १३.२६१ | गुणवत्यात्वाय सर्वं (क्रि) | ४.३६ |
| गिरिजाप्यसितापांगी- (सु) | ४३.५१५ | गीतवाद्यं पुराणं च (पा) | ११४.३४४ | गीतानां षष्ठमध्यायं (उ) | १८६.३४ | गीर्वाणाग्रवमेवास्य (उ) | १८६.४७ | गुणवान् रूपावांश्चैव सर्वं (भू) | ११.३५ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| गुणार्थजनसंभूतः (सु) | २.८६ | गुरुवेद्यप्रयच्छति (उ) | ६४.६५ | गुरुघातीसतुवह्य (पा) | ६४.२८ | गुरूणां संगमो विप्र (उ) | ११८.१२३ | गुर्वज्रायप्रकलंघ्य (उ) | ८४.५ |
| गुणत्रात्रः सुपुण्यश्च (भू) | ४.१० | गुरुनौनैवपूज्यतेस्त्रीजिता (सु) | ३१.३६ | गुरुजायाभिगमना (ग) | ४७.५५ | गुरूणां सुरवद्भानां (पा) | ११४.४४३ | गुर्विणीतिकुलेस्मा (उ) | २०१.६२ |
| गुणशिष्याय निर्मोहः (भू) | ४७.५० | गुरुं च दीक्षितं चैव पात्र (भू) | ३६.११४ | गुरुणाप्येवमुक्तस्तुभूयो (सु) | ३०.१५७ | गुरूणां संगमो विप्र दण्डवा (स्व) | २३.७ | गुरुप्रदेशोपादान्ते (पा) | १७७.६६ |
| गुराकराह्वयस्तत्रराजा (क्रि) | ५.५८ | गुरुपूजामकुरुत्वैव यः (भू) | ६७.४४ | गुरुणामपमानेनप्रह (पा) | ६८.६० | गुरुप्रति नमस्कारो (उ) | २१८.१२२ | गुरुमास्तत्रप्रजायते (भू) | ६५.३ |
| गुरातीतंमहद्दामपूरुषं (पा) | ६६.६८ | गुरुसंपूज्यदेवे (उ) | ३४.७६ | गुरुणाशिष्यएवा (पा) | ६४.७४ | गुरोर्कलक्षणतेपांतात् (क्रि) | २.४२ | गुरुदेशार्थितैववयः शिव (उ) | ७१.२१८ |
| गुरात्मात्मात्मनियथा (पा) | ७७.४६ | गुरुडंताडयामास (उ) | ८८.१२ | गुरुदेवातिथीनाच (ब्र) | ६.१६ | गुरोर्दमेन साकं मे युद्ध (पा) | १०७.६२ | गुरासिहांवती (उ) | ३८.८१ |
| गुराधिकेभ्योवि (उ) | २६.१ | गुरुणानोदितः शक्रो (उ) | १६६.२२ | गुरुद्रोहांसदारुणो (उ) | १३५.११८ | गुरोरपिनभोक्तृत्वम् (स्व) | ५६.१५ | गुरास्थितंमहेशानलि (पा) | ११४.३१६ |
| गुराणानांचयथातो (ग) | ८५.६७ | गुरुणाकुरुदेवैश्च (उ) | १६६.२१ | गुरुपत्नीतुयुवतीन् (स्व) | ५३.३३ | गुरोरप्यवधिपतस्य (स्व) | ५३.२५ | गुह्यकेपुमहाभाग (रव) | ३८.३२ |
| गुराणां हिमहाराज (भू) | ८३.६ | गुरुणासहिताः सर्वे (उ) | १५५.८ | गुरुभाषितमाकथं (पा) | ४५.१ | गुरोवज्ञाश्रुतिग्राह्य (ब्र) | २५.१६ | गुह्यातिगुह्यस्यगतिस्तेपां (स्व) | २०.५२ |
| गुराणाचार्यतुङ्गवता (पा) | १०८.६५ | गुरुतस्य महावृद्धो वसन्ती (भू) | ६१.३ | गुरुभिर्गुरुपत्नीभिः (ग) | ६६.७३ | गुरोर्गुरोर्भा जायाः (पा) | ८३.११४ | गुह्याद्गुह्यतमजानाम् (स्व) | ६०.१६ |
| गुराण्मुशुभां मम (भू) | १०२.४० | गुरुनिदासाकथभागं (क्रि) | २२.११ | गुरुलोपकृतंपापकथं (उ) | २१०.५५ | गुरोर्गुरोर्गतिनिहिते (स्थ) | ५३.२६ | गुह्याद्गुह्यतरं (उ) | २५४.४८ |
| गुरौर्द्राक्षिभिर्दु (उ) | ३७.५६ | गुरुन्सिंहरूपेण (उ) | १६६.१५ | गुरुवरप्रतिपूज्याश्च (स्व) | ५३.३१ | गुरोर्घतिः कृतः पूर्वः (भू) | ६१.२६ | गुह्याद्गुह्यतरम्यं (पा) | ६६.७१ |
| गुरौर्गन्त्राविधार्यतेक्रोध (सु) | १६.३२६ | गुरुपत्नीमातुलानीम् (ब्र) | १८.६ | गुरुवैष्णवयोः पूजाया (पा) | ८२.२१ | गुरोर्गतिवदितेभूष (उ) | ३५.६६ | गुह्याद्गुह्यतरंगुह्य (पा) | ६६.६ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुपूजाततः कार्या (उ) | ६१.५४ | गुरुधुश्रूपाणः सेव्ये (उ) | ७१.६६ | गुरोर्गतिवदितेभूष (उ) | ३५.६६ | गुह्ये तु गुह्यपतये (उ) | ३५.५२ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुं पुण्यमयं ज्ञात्वा (भू) | ८५.१५ | गुरुश्च ताडयेच्छिष्यं (भू) | ४७.५४ | गुरोर्वचननाकथ्यं (उ) | १८८.२० | गुह्यादिगुह्यद्वानम्य (पा) | ७७.३४ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुभाषितसमायुक्तैः (उ) | २५.३३ | गुरुस्तासांचयोगेन (उ) | ४७.५४ | गुरोः शिष्यस्वयंभक्त्य (पा) | ८१.३ | गुह्योर्धर्मोहिकतंघ्य (उ) | १२७.१५४ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुभाषितसमायुक्तैः (भू) | २४.२५ | गुरुधुश्रूपाणम्य (उ) | १८४.८६ | गुरोस्तस्य प्रसादाच्च (भू) | १२३.४३ | गुह्यतंघ्यज्यवैशीघ्र (सु) | ३७.१२६ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुभार्तमशक्तं च (भू) | ६७.४६ | गुरुस्त्वंसंसंपन्नोविष्णु (सु) | ३७.७४ | गुरोर्गतिवदितेभूष (उ) | ११४.५ | गुह्यमांसवर्णाकाकम् (ब्र) | १३.७६ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुमित्रहिरण्यं (उ) | ३२.४६ | गुरुच्छिद्रं भेपजानम (स्व) | ५३.२२ | गुरोर्गतिवदितेभूष (उ) | ११४.५ | गुह्यावताः द्येनककावचो (ब्र) | १६८.२४ |
| गुरौर्गन्त्राविधानास्वं (उ) | १६६.३० | गुरुहिममदेवेन्द्र तव (क्रि) | १७.२३४ | गुरूणां चापि शुश्रूषा (भू) | ५६.१० | गुरोर्गतिवदितेभूष (उ) | ११४.५ | गुह्योत्पत्तीप्रपद्येतांजात (सु) | ३७.६६ |



श्रीपद्ममहापुराणमूलोकातुक्रमणी

१३०

| | | | | |
|--------------------------------------|---------------------------------------|--------------------------------------|--|--|
| गृध्रांलकौविन्दनौपृच्छ (सु) ३७.६६ | गृहसोपस्करंराम (पा) ११५.५१ | गृहादिकप्रयच्छमी (उ) ४२.२६ | गृहीतायांतुतस्यां (सु) १०.१७ | गृहीत्वादेवराजेनमाला (सु) ४.१३ |
| गृहजगामचतनोभोजनं (पा) १०६.४६ | गृहस्थवृत्तयःपूर्वचतस्रो-(सु) १५.२६६ | गृहादिष्यतिरिक्तस्थपु (पा) १०५.८४ | गृहीतातिस्तथाश्वेली(पा) १०७.४६ | गृहीत्वाध्वं समुत्तस्थौ (पा) ५.४६ |
| गृहदानाग्र्यवेशमानिरूप्य (स्व) ५७.४५ | गृहस्थवृत्तयस्तिल (५५.३२१) | गृहाद्गृहातरेनैवगंतुं धू(स्व) १५.२० | गृहीतुमथतवैश्वं (पा) ११७.२३५ | गृहीत्वानभउड्डीनो (पा) ४३.३४ |
| गृहद्रव्यबलादपुंक्तेवार्यमा(भू) १२.५ | गृहस्थवृत्तिमप्येतावर्तये-(सु) १५.३२४ | गृहादानार्थमानीतम् (उ) २१८.१० | गृहीतुं पावतीपाहि (उ) १८.३२ | गृहीत्वानियमानेतात् (उ) ६५.४ |
| गृहद्वारमुपागम्यशंकर (उ) २५५.२७ | गृहस्थस्तुधनं (उ) २०१.३८ | गृहाद्द्रव्यचोरयति (पा) ८८.५ | गृहीतेस्मिन्नवते (उ) २५.३२ | गृहीत्वापतितवक्रचंद्र (पा) २८.३ |
| गृहधर्मरतोविद्वान्धर्म (सु) १५.३२० | गृहस्थस्य गृहः पुण्यः (भू) ५६.१७ | गृहांतरे विशन्तं च पुरुषं (भू) १०४.६ | गृहीत्वाऽथसमुत्तस्थौ (सु) ३३.१४८ | गृहीत्वापथिकः कश्चिद् (क्रि) १६.३२ |
| गृहपुत्रमुहूर्त्नात्पति (उ) २१६.१८ | गृहस्थानांतुसुखदं (उ) ३५.१८ | गृहाश्रमज्येष्ठमिहाश्रम (उ) ७४.११ | गृहीत्वाकंठदेशेनुता (पा) ४३.३६ | गृहीत्वापरद्रव्यं (उ) ७४.१७ |
| गृहप्रकाशयेद्दीपो (भू) १२३.४ | गृहस्थानांभवेत् (उ) ६२.३२ | गृहाश्रमः पुण्यतमः (उ) ७४.१२ | गृहीत्वाकरयोश्चांपव (पा) ५२.१३ | गृहीत्वापुष्कलपादे (पा) ४३.३७ |
| गृहभंगं चकाराय (भू) ८६.११ | गृहस्थायान्नदानेन (स्व) ५७.१८ | गृहिणांपरमोधर्मः (क्रि) २५.२६ | गृहीत्वाकालेकेदारं (उ) १७.७ | गृहीत्वामृत्तिकांभ (उ) २२५.३८ |
| गृहमन्यं प्रवेशाय (भू) ५३.६२ | गृहस्थोब्रह्मचारीय (सु) १५.२८१ | गृहिण्यासहगोपेन (क्रि) २५.५८ | गृहीत्वाचर्मलङ्गं (उ) १२.१७ | गृहीत्वावृत्तयान्नये (उ) ११७.५ |
| गृहमागत्यपूजायाः (उ) ४५.४४ | गृहस्थपुरतोभक्त्या (सु) २३.३८ | गृहीतकूर्चस्यशिशोः (उ) ३.४६ | गृहीत्वाचहृद्यं पुत्रे राज्ञो (पा) ३६.३१ | गृहीत्वावृत्तमूलं चर्तार्थं (उ) १४४.२२ |
| गृहमागत्यविप्रयंभोजनं (सु) ३७.१२२ | गृहाणात्त्रिपितश्चेमपयः (भू) ४.५८ | गृहीतचापेन दवाविष्णुना (सु) १८.४३ | गृहीत्वाचामरान् (उ) २२८.५० | गृहीत्वाग्रास्यसघातं (पा) ६४.४० |
| गृहमायांनमतिथि (क्रि) ७.६२ | गृहाणदेवतां ब्रह्मभि (पा) ११४.२२५ | गृहीतव्यान्निपुण्याणि (स्व) ५५.८ | गृहीत्वाजानकीपुण्यादुः (पा) ३६.७२ | गृहीत्वासूत्रमानिष्ठ-(सु) ४६.२७ |
| गृहमेतद्वैक्षस्वसमु (उ) ३१३.२० | गृहाणान्नाणकाकुत्स्थ (पा) ११६.२०४ | गृहीतनिर्मलोदस्रशक्ति(सु) ४४.१४१ | गृहीत्वाननयांतस्य (उ) २४८.३५ | गृहीत्यास्नानवस्तूनि (क्रि) ११.५६ |
| गृहमेधित्रतादन्यन्मह-(सु) १५.३०२ | गृहाणमातरं विष्णो (ब्र) १०.११ | गृहीतं न ऋण तेन आवा-(भू) १२.२६ | गृहीत्वातंकरेशो (उ) २३.१२ | गृहीत्वाहस्तपादेपु (क्रि) २३.१४० |
| गृहमेधिषुचान्ये (स्व) ५८.३४ | गृहाणशकटीमेतामुत्था (उ) १८०.६६ | गृहीतमाययैकेन (पा) ८८.२५ | गृहीत्वातंकेशसंधेररत्न (पा) २३.७ | गृहीत्वोवाचतटिष्णुगवं (नृ) ३४.४२ |
| गृहयावर्गिनरीक्षेत (उ) ४२.३५ | गृहाणार्धमयादत्तं (उ) ७०.१४ | गृहीतशिशिनश्चोत्थाय (उ) ६२.७ | गृहीत्वातंयदष्टा (पा) २८.३६ | गृहीत्पत्तिमागच्छ (पा) ५४.२३ |
| गृहव्यापारनिष्णातो (क्रि) ४.३३ | गृहाणिचतथान्यायं (सु) ३.१४३ | गृहीताचमयासुभ्रक्षुम(भृ) १७.१४३ | गृहीत्वातान् हरिः सर्वान् (ब्र) २६.३७ | गृहीत्यामिधंभूमिमा (उ) २१८.२३ |
| गृहसलभतेचैवानारत्न (स्व) १३.२६ | गृहाणित्यक्तशोचा (पा) ६४.६१ | गृहीतांतेनसिंहेन (उ) २०२.१६ | गृहीत्वातंस्नजचंद्रो (ब्र) ८.५ | गृहेवचनविप्रगांजनां (उ) १७८.६ |
| गृहं सौख्यं महाराज (भू) ३६.७८ | गृहाणेममहावेदंजग्रा (पा) १०५.२१२ | गृहीताधर्मंभुमिश्रेष्ठम् (सु) ४३.११६ | गृहीत्वातु समूलान्नान (उ) ७८.३१ | गृहेगतः प्रदायामि-(सु) ३४.२०१ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१३१

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| गृहेतस्मिन्नदा (उ) | २३.३० | गृह्णेत्यान्नियमानेताम् (उ) | ६४.१८ | गोकर्णोजनकञ्जानी (उ) | १६६.७७ | गोदावरीतीर्थयात्रा (उ) | १८५.२४ | गोपवेधघरः कृष्णो (पा) | ८३.४२ |
| गृहेततृतीतठसर्वंगि (ब्र) | ४.२८ | गृह्यतांदह्यात्रामेषचौरो (उ) | २१८.४८ | गोकारंजठरेत्यस्य-(सु) | ४६.१७५ | गोदावरीनकावेरी (उ) | ३५.३७ | गोपवेधेनृत्तावा (उ) | २४५.१३६ |
| गृह्येद्युल्लंतत्र (क्रि) | ६.१६ | गृह्यतां शुद्धाराहो-(भू) | ४३.५ | गोक्षीरसदृशाकारत्रि-(पा) | १०४.५७ | गोदावरीभीमरथी (पा) | ६७.६७ | गोपागावोगोपिका (पा) | ८२.७५ |
| गृहेपिबायतेमुक्ति (उ) | ३४.२२ | गृह्यप्रतिग्रहंतस्यदान (सु) | ३०.४३ | गोक्षीरसमदेहस्यगो-(पा) | १०५.१०६ | गोदावरीनर्मदांचवहुदांच (स्व) | ६.११ | गोपायतिद्विजश्रेष्ठाः (स्व) | ६.३१ |
| गृहेपिपंचेद्विजनिग्रह (उ) | ७४.८ | गृह्यप्रतिग्रहंततोयदिदे (सु) | ३०.१५६ | गोगोष्ठ वासिभिः (क्रि) | १७.१०२ | गोदावरीसमाख्या (पा) | ६७.६५ | गोपालनाम्नीमूर्ति (उ) | ८२.१० |
| गृहेपिसजलंकुंभवायु (उ) | १२७.२१ | गृह्यमुग्रीवभरतावारु-(सु) | ३८.१२७ | गोग्रासंयेप्रयच्छति-(स्व) | ३१.४८ | गोदावरीगुरोसिंहे (उ) | ५४.६ | गोपायविद्यानामायमं (पा) | ७२.१३२ |
| गृहेप्रकाशयेद्दीपः समूहं (भू) | ८५.१० | गृह्णन्भक्त्याप्रसीदे (उ) | १८०.६८ | गोधातजनिवपापम् (ब्र) | ७.२३ | गोदावरीश्वमाहात्म्यं (उ) | १.२२ | गोपालानांगृहेवालां (पा) | ७१.२० |
| गृहेममनः पुत्रे (उ) | २००.५१ | गृह्णतावकमाजगमुर्मध्या-(स्व) | ३१.१६१ | गोघ्नश्चापिमुतघ्न (पा) | ६८.३८ | गोदावरीयस्तिटेरम्ये (उ) | २४२.२२८ | गोपालामुनयः सर्वे-(पा) | ७३.३३ |
| गृहेयस्यागतोविद्वान्-(सु) | ४६.१०६ | गृहेतेहेचरध्यायां (पा) | ४०.२६ | गोघ्नोवापिचचाडालो(उ) | २४.१२ | गोदोहांतरितेकालेपूर्वं (उ) | ५५.३८ | गोपिकाचन्दनं चैव (उ) | ६७.१० |
| गृहेवने तडागेषु प्रासादे (भू) | ४८.२४ | गृहेतेषातवस्यानम् (ब्र) | ६.१७ | गोचर्ममात्रभूमि (क्रि) | २०.१०१ | गोद्वयंतुततोदद्यात् (ब्र) | १८.२३ | गोपिकाचंदन च (उ) | ६७.२ |
| गृहेवादेवखातेवात (उ) | १७४.५० | गोकर्णकेवलशैवंक्षेत्र (उ) | २२२.२३ | गोचर्ममात्रमपिवायो (स्व) | ५७.१४ | गोद्वयंतुततोदद्यात् (ब्र) | १६.८ | गोपिकाचंदनयावन (उ) | ६७.७ |
| गृहेपुसर्वगोष्ठेषुसर्वे (उ) | १२१.३६ | गोकर्ण तु समालिख्य (उ) | १६७.१०६ | गोचर्ममात्राभूमियः (ब्र) | २४.५ | गोद्वयंतुततोदद्यात् (ब्र) | १६.१६ | गोपितंदेवदेवेनमहा-(स्व) | ३६.६० |
| गृहेस्थितस्मजामा (उ) | १६.३२ | गोकर्णहाटकस्थं चहृत्वा (पा) | १७.६६ | गोतीर्थग्रामरथ्यां (उ) | ३२.३६ | गोधाकुर्मः शशः खड्गः (स्व) | ५६.३६ | गोपीगोपपशुनांवाहिः (पा) | १०३.५२ |
| गृहेकमध्येसाहस्रं कुलीना (भू) | ८१.१६ | गोकर्णसहितः कृष्णो (उ) | १६७.१०६ | गोतीर्थयुनरोगत्वास्ता (उ) | १६३.५ | गोधूतक्षीरदधिभिः (सु) | १५.१७० | गोपिचंदनदानेनवस्त्र (उ) | २१७.४७ |
| गृहोपरिसदास्वादुभुक्तो (सु) | ३२.२६ | गोकर्णहाटकस्थं (पा) | १७.६६ | गोत्रं तथा र्द्धं तांतुतये (सु) | ६.१७७ | गोधनादिकाः प्रमुच्यं (उ) | ८३.६ | गोपीचंदनलिप्तां (उ) | २६.४ |
| गृहणंतिपितृलोकेवा-(सु) | १०.३६ | गोकर्णस्तांतुनिहृत्वा (उ) | १६७.१०६ | गोदानंचप्रशंसतिरथ (उ) | १६४.७ | गोपकन्यात्वहवीरवित्र-(सु) | १६.१५६ | गोपिजनमुपागम्य-(सु) | १८.३७ |
| गृहणंतिप्रह्लाः (उ) | ३३.४० | गोकर्णस्तांतुनिहृत्वा (उ) | १६७.४ | गोदानंचभूमिदानंचग्रन (उ) | १४४.५ | गोपकन्यावृत्तगोपं (पा) | ७३.१६ | गोपीपुष्करजामृत्स्ता (उ) | ६७.५ |
| गृह्णन्दीवमवाप्नोति (सु) | ३४.४११ | गोकर्णस्तीर्थयात्रायां (उ) | १६७.२४ | गोदानंचभूमिदानं तु (भू) | ६७.८६ | गोपवृद्धास्ततः (उ) | २४५.६५ | गोपीपुष्करजालपाशेन (क्रि) | १७.१०१ |
| गृह्णन्दीवस्वाभक्त्या (सु) | ३४.३७१ | गोकर्णगजकणश्चिवहु (सु) | ४३.४६४ | गोदानेभ्रातृदानेवाग्रह-(सु) | १७.२१५ | गोपवृद्धास्ततो (उ) | २४५.६२ | गोपुत्रस्य तथा दा- (पा) | ११६.२७१ |
| गृह्णन्तनियमानुक्ता (पा) | १०५.६६ | गोकर्णगजकणश्चतथा (सु) | ११.३३ | गोदावरीगतेभ्रातृस्त्व (उ) | २१८.४० | गोपवेधघरंकांतकिशोर (पा) | ८२.६३ | गोपैः समानगुणशील (पा) | १०३.४१ |



श्रीपद्मपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१३२

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| गोप्रदानसंमतेषांमुलै- (सु) | १८.२२८ | गोभूहिरण्यवानांसि (धु) | ६.१७४ | गोरक्षणेनहान्त्र (उ) | २०५.२ | गोविददर्शनं प्राप्यमुभु (उ) | २२२.५६ | गोसहस्रकृततेन (उ) | ८४.२६ |
| गोप्रदानसहस्रंभ्यो (उ) | ११८.१४ | गोभूहिरण्यवानांसि (उ) | १६६.२४ | गोरोचनादिसमि (पा) | ६६.१०० | गोविदस्यकिमाश्चर्यं (पा) | ६६.७६ | गोसहस्रचददतां (उ) | ६५.१३ |
| गोप्रदानानिदास्यति (उ) | ११८.४ | गोभ्यः श्वभ्यः खरेभ्यः (क्रि) | २४.२१ | गोरोचनाभिनिमयि (पा) | ७४.१५८ | गोविदस्यतथाचास्मै (पा) | ७४.२०० | गोसहस्रप्रदानस्य (उ) | १४४.१६ |
| गोप्रियं गोहितं यज्ञं (भू) | ८७.१७ | गोमंतः पर्वतोविप्राः (स्व) | ६.८ | गोलोकैश्वर्ययत्किं (पा) | ६६.१० | गोविदस्यपरस्थानं (पा) | ६६.८३ | गौतमं चापितेवी (पा) | ११४.७५ |
| गोप्यश्चतास्तथासर्वा- (सु) | १७.७ | गोमनीगंगयोश्चैवसंगं (स्व) | ३२.४४ | गोवत्समध्यगं (उ) | २४५.६८ | गोविदस्यप्रसादेन (पा) | ६०.२६ | गौतमं समुवाचाय- (पा) | ११४.१४७ |
| गोप्यस्तुशरणं (उ) | २४५.१५१ | गोमनीवरुणातदीर्यं (सु) | ११.२६ | गोवत्सागोपबाला (उ) | २४५.१०३ | गोवृषं नुवांमग्ने अभि- (भू) | २७.१८ | गौतमः सर्वदेवता (पा) | ११४.११८ |
| गोप्यस्तु श्रुतयोज्ञोया (पा) | ७३.३२ | गोमंयमंडलंकुयत् (उ) | ७७.५० | गोवद्धेनगिरिप्रस्थं (उ) | १८०.६७ | गोविदात्परवश्चैवपुंडरीको (स्व) | ६.१६ | गौतमस्यमहाशोक (पा) | ११४.११७ |
| गोप्यं कयावृतस्तत्र (पा) | ७७.४७ | गोमंयद्विह्विदंसर्वं (पा) | ८६.४६ | गोवद्धेनहरिश्चंद्रपुर (सु) | ११.४२ | गोविदायनमस्त (उ) | २४५.३०६ | गौतमोत्तमुत्परा (पा) | ११६.३ |
| गोब्राह्मणहितेपीयस्त- (क्रि) | १६.६२ | गोमयेनानुलिप्तायादं (सु) | २१.५३ | गोवद्धेनाद्रिराजस्य (उ) | २४५.१८२ | गोविदाराधसेनम्यग्य (उ) | २०८.६४ | गौतमेयातुमुद्यक्ते (पा) | ११४.६७ |
| गोब्राह्मणांश्च तीर्थानि (सु) | ३२.८४ | गोमयेनानुलिप्तायांभूमा (सु) | २१.६१ | गोवधोमद्यानंचमत्र (उ) | ११६.१५ | गोविन्ददेहतांभिन्नं (पा) | ६६.७२ | गौतमेनतथाग्यायं (उ) | २३६.५ |
| गोभिर्मृगाम्बुजविलो (पा) | १०३.३७ | गोमयैस्तुलसीमूल्यं (क्रि) | २४.१८ | गोवस्त्रकांचनैत्रिप्रा- (सु) | २०.११७ | गोविदेतिजपन्मंत्रं कुत्र- (स्व) | ३१.१११ | गौतमेनमहेश्वर (पा) | ११४.१२५ |
| गोभिर्विभवतः सर्वानृत्वि (सु) | २८.१४ | गोमद्विष्यादिकं सर्वं (भू) | १७.३५ | गोविदकेयवमुकुं (पा) | ६५.४४६ | गोविदेरितविज्ञासौ (पा) | ७४.१५२ | गौतमेनसभानी (उ) | २४०.५३ |
| गोभिन्स्तादृशो भूत्वा (भू) | ४६.३० | गोमद्विष्यादियत्किंचित (सु) | १७.२५० | गोविन्दकेशवहरे (क्रि) | १६.३० | गोविन्दोवनमाली च (क्रि) | १७.१०८ | गौतम्युभयतीरस्थ (उ) | १८०.६३ |
| गोमिलो नाम वै दैत्यो (भू) | ४६.१४ | गोमद्विष्यादियत्किंचित (पा) | १११.१७ | गोविन्दकेशवहरे (क्रि) | १५.७६ | गोविध्वनाश्चयेकुर्व- (गु) | १८.३२० | गौतमन्दुभायवर्ह (पा) | १०५.१७५ |
| गोभूतिलाः कांचनवस्त्र (उ) | १५२.४१ | गोमायुस्सूर्यवर्चश्चसो- (सु) | १८.१४ | गोविदनामजिह्वये (उ) | १२६.१४० | गोष्वदेन चचिह्नैर्नज (पा) | ७६.५ | गौतमस्यप्रियांभा- (भू) | ३४.२१ |
| गोभूतवर्णान्मु धान्यानां (भू) | ११२.५८ | गोमूत्रं गोमयंक्षीरम् (ब्र) | १६.२४ | गोविदपञ्चानाभाय (उ) | ७८.३६ | गोष्वहस्रफलं (उ) | ३८.११७ | गौतमस्यमुनेः पत्नी- (गु) | १३.३३१ |
| गोभूहिरण्यदाना (उ) | ३०.४५ | गोमूत्रमंत्रं वदभूमोद्वा (उ) | १२४.६१ | गोविन्दपरमानन्द (क्रि) | ६.१६२ | गोसहस्रफलं चैवप्राप्नु- (स्व) | २५.२३ | गौतमिकन्यायांतुमान (सु) | ६.४३ |
| गोभूहिरण्यदानेन (स्व) | ४४.३ | गोमूत्रमंत्रं वदभूमोद्वायाम् (ब्र) | २३.१२ | गोविदशरणंजमुस्तान (उ) | २४६.७६ | गोसहस्रफलं विधात (स्व) | ३६.३४ | गोः पदेपिजलेस्तानं (उ) | २४.१७ |
| गोभूहिरण्यमाणिक्व (उ) | १२५.६४ | गोमेघंयताप्रोतिकुलं (सु) | १६.२२ | गोविदं वृं दारकवंधपाद (उ) | २२१.३७ | गोसहस्रफलं विधात- (स्व) | ३२.७ | गोः प्रसन्नाददोपुत्रमनेक- (पा) | ३०.१३ |
| गोभूहिरण्यवस्त्रैश्च (उ) | १२४.६२ | गोम्यचिचामहस्तेतुल- (सु) | ३४.५८ | गोविदश्चनतंलेश्वतोपि (सु) | १३.७५ | गोसहस्रफलं विधात- (स्व) | ३२.४२ | गोभूत्वाचमशदीना (ब्र) | ७.३५ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------------|---------|------------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|
| गौरीहिरण्यवासो (उ) | २०२.६ | गौरीसमाराधयितुंस्व- (स्व) | २२.२१ | ग्रामाणां च पुराणां च- (भू) | २६.२६ | ग्राहयित्वाचसचिव (उ) | २११.७८ | घातः कमलपातेनमया- (सु) | १५.१२६ |
| गौर्येनमस्तधानासा (सु) | २२.७६ | गौरीसौभाग्यदोमायाणि (उ) | ७१.१६८ | ग्रामाणांशतसाह (उ) | २४२.८१ | ग्राहवक्त्रपतिनां (पा) | २१.२३ | घृणितोऽस्म्यधुनाराजा (पा) | ४६.१७ |
| गौरवर्णसमायातामाल्य (भू) | १२.६२ | गौर्यजित्वापुराशभू (उ) | १२२.२६ | ग्रामांतरंययुः शीघ्रं (उ) | १६७.२१ | ग्राहोपि जायते दुष्टो (भू) | ६३.११ | घृतचौरस्तुपुरुषोजाय (पा) | ४७.५१ |
| गौरवेणविनावीरनसनां (क्रि) | ५.८१ | गौर्यसहसमायाता- (सु) | १७.१०६ | ग्रामांतवृक्षमूलेषा (स्व) | ५६.१६ | ग्रीष्मकालेद्विजेश्वेष्ठ (क्रि) | २४.१३ | घृतनीयः समुप्रोद्यदीधनं- (स्व) | ६.२ |
| गौरवतुमध्यमद्वीप- (स्व) | ६.४ | ग्रयोष्टादशसाहस्रो (उ) | १६५.२६ | ग्रामावारं गृहाणां च (भू) | २६.८१ | ग्रीष्मेपंचतपाश्चस्यात् (स्व) | ५८.२७ | घृतत्वायाच्चलावर्ण्य (उ) | ६४.२५ |
| गौरान्वायदिवाकृष्णां (पा) | ६८.२२ | ग्रसंतिबडिशभक्त्यास्ते (क्रि) | ५.५० | ग्रामाधिकारदुष्टस्य (पा) | ११४.४१६ | ग्रीष्मेपंचाग्निनतपसः (सु) | १५.३३६ | घृतपुण्यंतायाकुंभंताम्र (उ) | ३०.३० |
| गौरीकन्यांतथाकुर्यात् (ब्र) | ५.१५ | गोब्राह्मणांश्च तीर्थानि (सु) | ३२.४५ | ग्रामांतरादेकदातो (उ) | २२२.१६ | ग्रीष्मेपंचाग्निनततंचद्र (सु) | ४४.४५ | घृतपुण्यं (उ) | २१.५ |
| गौरीकन्यांतथादेहि (ब्र) | ५.३२ | ग्रसंतोद्यापिमांसा (उ) | १८.१२६ | ग्रामीणाग्रथसर्वेऽपि (क्रि) | १०.५३ | ग्रीष्मेमहीतदीप्तानामं (उ) | १७८.१६ | घृतमाश्वयुजेतद्वृक्षं (सु) | २२.१२२ |
| गौरी गंगामहालक्ष्मी (पा) | १०.७० | ग्रहणैकतुष्टीनादिदेश (उ) | १६८.५८ | ग्रामेग्रामेद्विजेश्वेष्ठ (ब्र) | १२.१३ | ग्रीष्मेहविष्यं प्रायच्छेत्स- (सु) | १५.३३३ | घृतंचलवश्रंसर्वम् (स्व) | ५३.२० |
| गौरीतथाविधादृष्ट्वा (उ) | १०४.३ | ग्रहंतुग्राहयामासातपोवल (पा) | १६.१४ | ग्रामेवायदिवारण्ये (पा) | ६७.६७ | ग्रीवामृष्टं कर्तृपायुं (भू) | ६४.८० | घृतंचलवश्रंसर्वम् (उ) | १२२.३२ |
| गौरीतुपृच्छतेदेवं को- (स्व) | २०.२५ | ग्रहरोगादेकं चैव व पाप (उ) | ७८.१३ | ग्राम्यावन्त्याः स्मृतास्तंता (सु) | ३.१५० | घ | | घृतंस्नापयेत्स्निगं पूजयेद् (स्व) | २०.१० |
| गौरीतुतथाःवेत्सातु (स्व) | १८.५८ | ग्रहाणामुदयोरोग- (पा) | १०४.१२३ | ग्रामवस्तुचचचुर्धो (सु) | ३४.१० | घटेजरठामाताब्राल (उ) | १६३.५६ | घृतस्यवर्जनाद्विप्र (उ) | ६४.२१ |
| गौरीत्वंवांछसिक (उ) | ११.२४ | ग्रहानशेषान्सर्वे (उ) | ७८.६१ | ग्रावाणोजलमव्यरथाः (उ) | १३२.४८ | घटामुल्लैर्बलुजैः (पा) | १०६.३४ | घृतहीनं च तत्क्षीरं (क्रि) | २६.२६ |
| गौरीदध्योतथास्थाणुः (उ) | १८.२६ | ग्रहीतारस्तुजायन्ते (सु) | १०.१८ | ग्रसंश्रुहंतुचैकैकम् (ब्र) | १६.२५ | घटोदरोमहापाश्वः ऋथनः (सु) | ४५.७४ | घृतामस्तसुरपत्रयः (क्रि) | १३.८७ |
| गौरान्वायदिवा (पा) | ६८.१०० | ग्रहीतारस्तुजायन्ते (सु) | १०.१८ | ग्रसमात्रं तथा देयं (भू) | १३.११ | घनच्छायासुखीनीन (उ) | १८७.१६ | घृतादिनाशुभार्था (उ) | १२१.३७ |
| गौरीभक्त्याधिकायातु (सु) | ३४.२०६ | ग्रामनाशकायेचतमां (क्रि) | १६.१०० | ग्रसमित्रादन्ननि पृथ्वी (भू) | २८.६५ | घनगमे घनश्यामः (उ) | ८७.१० | घृतेनदीपप्रज्वाल्य (उ) | ५४.६२ |
| गौरीभक्त्याधिकायातु (सु) | ३४.२०६ | ग्राममेकं सुपुंननाता (पा) | ११.४१ | ग्रसयित्वाऽदन्ननि पृथ्वी (भू) | २८.६५ | घंटाकणांश्च कालिदेः (भू) | १०२.१० | घृतेनदीपप्रज्वाल्य (क्रि) | ११.१०८ |
| गौरीभक्त्याधिकायातु (सु) | ३४.२०६ | ग्रामं यत्क्षत्रियोविप्र (क्रि) | २०.१०८ | ग्रसयित्वाऽदन्ननि पृथ्वी (भू) | २८.६५ | घंटाभवेदशक्तस्यसर्वं (सु) | २४.१० | घृतेनदीपप्रज्वाल्य (स्व) | २०.६ |
| गौरीलक्ष्मीस्वरार्चति (उ) | १०४.२५ | ग्रामयाचकवृत्तिश्चया (क्रि) | १७.१७८ | ग्राह्यगृहीतोनागोदोग- (उ) | १०७.२० | घंटाभवेदशक्तस्यसर्वं (सु) | २४.१० | घृतेनदीपप्रज्वाल्य (स्व) | २०.६ |
| गौरीलोकेवसेत्कल्प- (सु) | २०.६१ | ग्रामयंभंचदानंश्च (उ) | १२२.३५ | ग्राह्यगृहीतोनीनागः (उ) | ११०.२० | घंटाभवेदशक्तस्यसर्वं (स्व) | २०.७ | घृतेनदीपप्रज्वाल्य (स्व) | २०.६ |
| गौरीसमाराधयितुं (उ) | १२८.३० | ग्रामश्चगुहभक्त्यामिप्रे (सु) | २०.३२ | ग्राहयामाससंक्षेपा (पा) | ७४.१३२ | घंटाभवेदशक्तस्यसर्वं (क्रि) | १७.१५६ | घृतंयमाण इवागारो (भू) | ६६.७३ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| घोटाकुटजपालाशैर (उ) | १२८.१७४ | चकारश्रद्धया श्राद्धं (भू) | ६०.१२ | चक्राते च कथां (भू) | ८५.४६ | चक्रतस्याभिषेकं (उ) | २४५.३६१ | चतुरंगसमेतयुद्धायस (पा) | २६.१३ |
| घोरदुःखप्रशमनंती (उ) | ७१.२६८ | चकारवसुधंस्नेहे (क्रि) | २०.२४ | चक्रादिशस्त्रसर्वस्व (त्र) | ६.२६ | चक्रयागसर्वस्यस्य-(सु) | ४६.७ | चतुरंगसंन्येनमहता-(सु) | ३१.७८ |
| घोरादेवतुसंसारत्वा (उ) | १७८.३७ | चकारसमहाघोरं-(उ) | २३८.६३ | चक्राकभुजग्राप्ति (उ) | १२०.५० | चक्रसमाहितः श्राद्धमुप-(सु) | १०.५५ | चतुरश्चतर्तोडिभा-(भू) | ४५.२ |
| घोरतपस्य तेवाला-(सु) | ४३.३६२ | चकारसर्वशास्त्रज्ञः (क्रि) | २१.३८ | चक्राकानगरीराज-(पा) | २६.७ | चक्रोपजोविरजक (स्व) | ५६.५ | चतुरश्रं तुपरितोवृत्तं मध्ये (सु) | २७.२३ |
| घोरः शत्रुः शरीरस्थ (पा) | १००.३६ | चकारसहिमेधावी-(भू) | २१.८ | चक्रांकायत्रपावाणा-(पा) | १७.७३ | चतुर्मयश्रोत्रमयधं (उ) | २४५.१२० | चतुरश्रोऽपि प्राज्ञः (स्व) | ६.३३ |
| घोरांज्वलतीमुमुचेसं-(सु) | ४१.२७२ | चकारसंस्पृष्य (भू) | १.२० | चक्राकितहिरण्यांगर (उ) | १२०.७४ | चतुर्ग्याश्रीहरेरवे (स्व) | ६१.६८ | चतुरात्मानम (उ) | २३६.१८ |
| घोरांधकारग्रहण (पा) | १०१.२२ | चकाराधरपानं (भू) | १५.३४ | चक्राजशखगदिने-(पा) | ७८.२१ | चतुर्पिण्डिः केपा (क्रि) | २३.१४४ | चतुराश्रममध्ये तु (क्रि) | २५.२८ |
| घोरांधकारदटले-(भू) | २२.२५ | चकारोद्वाहिककृत्यं-(सु) | ४३.४२६ | चक्रिकचिन्तयामास (क्रि) | १६.१७ | चतुर्विनायकादीप (उ) | १३२.५५ | चतुरोनिगमापश्य-(पा) | १०५.२७ |
| घोराहिमोगेनविभू (उ) | १७.३ | चकोराः शतपत्राश्च-(सु) | ४६.६४ | चक्रिकस्तंमालोवय (क्रि) | १६.२६ | चतुः श्रोत्रं तथा जिह्वा-(पा) | ११०.६६ | चतुरोवागिकाशमा (उ) | १३८.३ |
| घोरेकलियुगेप्राप्तो (पा) | ८०.१ | चक्रमुक्तचक्रहणे (उ) | ३८.७७ | चक्रियानादुगुह-(उ) | ३४.३४ | चतुर्पावसंमृष्टो (उ) | २४५.११४ | चतुर्णादेवतानां (उ) | २२.४८ |
| च | | चक्रगोचारिवनोदेवाव-(स्व) | १५.५ | चक्रिरे नामकर्माणि-(भू) | ५.१०० | चतुर्षीविवयं प्राप्य (उ) | २५३.१३ | चतुर्णामपि वर्णानां-(उ) | १२५.५६ |
| चक्रतंस्यचिद्वक्त्रक्रमध्ये (सु) | ४१.२६२ | चक्रच्छिन्नास्यकमलाः (उ) | २४६.२० | चक्रबुद्धवचसुख्यैश्च-(सु) | २१८.४६ | चतुष्मत्परागार्थ्यैर्व-(पा) | १५.३४ | चतुर्णामपि वेदानां (उ) | १२८.२६० |
| चक्रतंसवर्णस्त्राणि (पा) | २३.७७ | चक्रध्वजेसमावृत्तेमुत्ते (स्व) | २०.७५ | चक्ररस्मिन्पुत्रेशाश्चनम-(सु) | १८.१६ | चत्वादव्याधितं व्याधम (उ) | १७६.२६ | चतुर्णामपि वेदानां (सु) | ४८.१६६ |
| चकारकुशलप्रधानं (उ) | ६०.२८ | चक्रमुद्यम्यसमरेकोप-(सु) | ४१.२८४ | चक्रश्चनिश्चयसर्वेषां-(सु) | १६.३४४ | चचारपतिनासाढं (उ) | ४७.२१ | चतुर्थं तन्मगपाप्य-(सु) | ३५.५४ |
| चकारानामतस्यैव-(भू) | ३६.४२ | चक्रालंछनहीनास्तु (उ) | २५५.१०५ | चक्रमुखं प्रतिमाम (पा) | ६५.१३७ | चचारमध्ये देवानां द्वाद-(सु) | ४१.२२ | चतुर्थं तमेशान्यासिद्ध (पा) | ६६.२६ |
| चकारानामेधावीतस्य (भू) | २३.२२ | चक्रवदभमतेसर्वं (उ) | १२८.२२७ | चक्रश्चदेवताः सर्वाः (भू) | ५.१०३ | चचालजलमादाय (उ) | २०७.६१ | चतुर्थं पुः चवानान्नपचम (स्व) | ६.११ |
| चकारयज्ञानबहु (उ) | २४४.१५ | चक्रवतिपदं भुक्त्वा-(भू) | ३८.४१ | चक्रे आतिष्ठ्यपूजां च (भू) | ८३.३५ | चचालवमुषा (उ) | १८.२३ | चतुर्थं मुपवासेच्च (पा) | ११४.४८१ |
| चकारविधिवद्ध (उ) | २४१.२१ | चक्रवाकरवान् श्रुत्वा (उ) | १८७.३७ | चक्रे चावभूषणानं-(पा) | १६.२२ | चतुर्गुणानां संख्यातं-(सु) | ३६.१४६ | चतुर्थं स्यात्पिमाहात्म्य (उ) | १७८.१ |
| चकारविष्णुविपुल-(पा) | ८६.३४ | चक्रवाकादिविहगं (पा) | ६६.७६ | चक्रेणैव प्रचिच्छेद (उ) | २४६.५८ | चतुरंगवर्णं मेऽद्य (भू) | ११४.२१ | चतुर्थं स्वरसंयुक्तनाद (पा) | ७४.१३३ |
| चकारविष्णुविलं (पा) | ६०.४८ | चक्राचक्रं समुत्पाप्य (भू) | ११०.१५ | चक्रेणैव हरिस्तूर्णं (उ) | २४६.८१ | चतुरंगवर्णः साढं (उ) | २४२.३०६ | चतुर्षोऽशिनवत्सः स्यादद्य (सु) | २१.५६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| चतुर्थांशनिविष्कम्भपर्वता- (सु) | २१.१२८ | चतुर्वह्निमहाकाय- (ऋ) | ५.८७ | चतुर्भुजं शंखपाणिगंदा (भू) | १०४.८ | चतुर्विंशतिस्थानेचपादा (सु) | ४६.१४१ | चत्वारः कृष्णाहसाश्च (भू) | ६२.२६ |
| चतुर्थांशनिविष्कम्भपूर्व- (सु) | २१.१७४ | चतुर्वह्निंशचक्र (क्रि) | १६.५४ | चतुर्भुजं देवममयंचताम्रपा (सु) | २४.५१ | चतुर्विंशतिस्थानेपु- (नृ) | ४६.१७२ | चत्वारः पुरुषा (उ) | २४५.११२ |
| चतुर्थीश्रमकालोप- (उ) | २००.५० | चतुर्वह्निं हंसयामः (क्रि) | २०.८७ | चतुर्भुजादिकंप्राप्तं (पा) | १७.३६ | चतुर्वेदात्तरागुक्तीगायत्री (सु) | ४६.१६४ | चत्वारः वास्मनांवा (स्व) | ५८.३ |
| चतुर्थीश्रमपन्नसर्व- (स्व) | ३१.१८५ | चतुर्वह्निं हंसयाम् श्रीमान् (उ) | २.६ | चतुर्भुजादिव्यरूपा (उ) | ५६.१६ | चतुर्वेदेकविष्वात्मा (उ) | ७१.२७२ | चत्वारिंशत्सहस्राभिवर्षाणि (स्व) | ७.५ |
| चतुर्थीपंचमीवष्टी (पा) | १०५.१०३ | चतुर्वह्निः श्यामवर्णः (क्रि) | २३.७५ | चतुर्भुजानुदाशंख (उ) | १८४.५२ | चतुर्हस्तसमाणं (सु) | २३.३६ | चत्वारिंशत्तेजोयुगानि- (स्व) | ७.३ |
| चतुर्थीहनिमंप्राप्ते- (सु) | ३८.६१ | चतुर्भिः कोमलैर्दि (उ) | २३.१३६ | चतुर्भुजं द्वादशमिस्तद्वि (सु) | ३.८ | चतुर्हस्तसमायुक्तं- (सु) | २०.१४५ | चत्वारिंशत्भृश्रुतामाहुः (उ) | २२५.५२ |
| चतुर्थीदत्तेनधांयपंच (उ) | ६.२३ | चतुर्भिर्वह्निर्वह्निर्मः (नृ) | २३.५१ | चतुर्भुजांतसमयेलोका- (सु) | ४०.१२६ | चतुर्हस्तं तानमांवेदीचतुर (सु) | २७.६ | चत्वारिंशत्तिपात्राणि (स्व) | ६०.७ |
| चतुर्थीनक्तपुद्गलां (सु) | २०.११४ | चतुर्भिर्वाहुभिर्दीर्घै (क्रि) | १२.१०८ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दशभुवनानिमु- (स्व) | १५.७२ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दशवर्षाणि रामो (पा) | ११६.१४२ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दशानां वर्षाणां (सु) | ३३.७६ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दशानां विद्यानां (स्व) | ५४.३० | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दशानां वयसां (पा) | ७१.६८ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दशैतुसंप्राप्ते- (सु) | २५.२० | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दश्यामर्द्धरात्रे (पा) | ७२.१३० | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दश्यामर्द्धरात्रो- (सु) | २०.११८ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दश्यामर्द्धरात्रो- (पा) | ३६.६१ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दश्यामर्द्धरात्रो- (पा) | ३६.४१ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दश्यामर्द्धरात्रो- (पा) | ७०.२६ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |
| चतुर्दश्यामर्द्धरात्रो- (पा) | ४०.१८ | चतुर्भिर्मध्यनः प्रोक्तो- (सु) | २१.१६५ | चतुर्भुजांतसमयेषुना (उ) | १३५.३७ | चतुर्हस्तैर्विराजंतीस (उ) | २२६.१७४ | चत्वारिंशत्तथाष्टान्ये (सु) | ८.१३३ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|------------------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| चंडाकर्शिमसंतप्लेवृक्ष (उ) | १२६.१२ | चंदनेनानुलिप्तांगं (उ) | ११६.४० | चंद्रवद्वदंतसोपि कुले (उ) | २४.१६ | चंद्रोयंविप्ररूपेणस (सु) | २६.२४ | चरणौसेवतेतन्वी-(पा) | १५.४ |
| चंडादिद्वारपालाद्यैः (उ) | २२६.४६ | चंदनेनानुलिप्तांगंरूप (उ) | १२३.२८ | चंद्रवश्विचतुर्वर्णाः पूर्णः-(स्व) | ४.१७ | चंपकैर्हृरिमभ्रच्च्यं (क्रि) | १०.७४ | चरतंब्रजवीथीपुविचि (पा) | ७२.३८ |
| चंडादिद्वारपालाद्यैः (उ) | २२८.१३ | चंदनैः कुंकुमैः पुष्पैः (भू) | २०.२६ | चंद्रशर्मा ततो विप्रो (भू) | ६१.२३ | चपलः निप्लवश्चैव (भू) | ५३.६६ | चरतापृथिवीसर्वातः-(सु) | ३६.१०२ |
| चंडाद्याः किकराः सर्वे (क्रि) | २३.१०४ | चंदनैर्विविक्तैः (उ) | १६१.१३ | चंद्रसापत्न्यभूतेन-(सु) | १७.३०६ | चपलाश्चगलास्तस्थु-(सु) | ४३.४२५ | चरंतीव्याघ्रपुरतः (सु) | १८.२८६ |
| चंडालम्लेच्छसंभाषे (स्व) | ५५.४ | चंद्रकांतमणिच्छन्ने-(स्व) | २२.७० | चंद्रसूर्यनिभेनेत्रे (उ) | ४७.१७ | चंपकंपतितंष्टव (पा) | ५२.१ | चरत्येतादृशीभिस्तु (पा) | ११३.५१ |
| चंडालोपिसमुद्धा (पा) | ७६.२३ | चंद्रकांतमणिच्छन्ने (उ) | १२८.७६ | चंद्रसूर्यप्रतीकाशमीधरु-(सु) | २१.२०७ | चंपकस्तहनुमंतंयुधेन (पा) | ५१.६६ | चरमाणस्यकर्तव्यंसा-(सु) | १८.४१६ |
| चंडीशशस्त्राभिहतो (उ) | १७.४६ | चंद्रजेत्स्नागमसूयर्षा (पा) | ११७.५ | चंद्रसूयोपरागेतुम-(स्व) | १५.७६ | चंपकस्ताड्युरान्मुक्ता (पा) | ५१.४६ | चरवादिपशिते (उ) | २०४.७२ |
| चंडीशोगुप्तनेत्र (उ) | १३.३२ | चंद्रविम्बावुकाराभ्यां (उ) | १०४.१० | चंद्रसूयोपरागेचर्चका (ब्र) | १५.२१ | चंपकस्नाः शिलाः (पा) | ५१.६३ | चराचरगुरुश्रेष्ठसुर (उ) | २२०.१० |
| चंडेनताडितास्तेन (क्रि) | १५.५८ | चंद्रविम्बानुकारेणा-(भू) | ५.८८ | चंद्रसूर्योपरागेचर्चका (ब्र) | १५.२१ | चंपकस्वपुरेस्थाप्य (पा) | ५३.३३ | चराचरगुरुः श्रीमान्-(सु) | ४५.६ |
| चंदनचंद्रकंचनैर्वाजिनः (पा) | २६.५ | चंद्रभागा चंद्रमुता (उ) | ६६.४४ | चंद्रसूर्योपरागेचर्चका (ब्र) | १५.२१ | चंपकाय बहुशः (पा) | ३६.१३ | चराचरविनाशाय-(सु) | ४५.१३२ |
| चंदनचक्षुर्धन (पा) | १७४.५८ | चंद्रभागानदीतरेपुरी (उ) | २०६.८ | चंद्रसूर्योपरागेचर्चका (ब्र) | १५.२१ | चंपकेनगरेचर्चराजा (उ) | १३४.५ | चराचराणां लोकाणां (उ) | १७५.१५ |
| चंदनविषसंकाशं (पा) | २०.२६ | चंद्रभागांततोगच्छे-(स्व) | १८.६४ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चंपकेनगरेचर्चराजा (उ) | १३४.५ | चराचराणिभूतानि-(उ) | १२८.२६७ |
| चंदनागुरुकपूर्कस्तूरी (भू) | ६७.६३ | चंद्रमंडलशुभ्राणी (भू) | ६५.५ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चंपकेनगरेचर्चराजा (उ) | १३४.५ | चरामस्तत्रभाषोस्ति-(सु) | ३५.८१ |
| चंदनागुरुकपूर् (उ) | ४२.१४ | चंद्रमापिमहाविष्टोन (उ) | २१५.१६ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चंपकैः पातलैः पुष्पैः (भू) | ४६.३ | चरितं तस्यैव विप्रैः (क्रि) | ४.११४ |
| चंदनादिकवस्तूनिवि (पा) | ५८.५८ | चंद्रमाश्चसनसगोवायु (स्व) | ३.३४ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चंपकोमुक्तामस्त्रं (पा) | ५१.४६ | चरितं तस्यैव राज्य (उ) | ३५.२६ |
| चंदनादिकवृक्षश्चसीरभै (भू) | ५७.२० | चंद्रमाश्चसनः शत्रो-(स्व) | ५.१२ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चंपावतीतिविद्याना (उ) | ४०.१६ | चरितं पावनं दिव्यं (भू) | ११.४ |
| चंदनेनमृदावापि (पा) | ८२.१३ | चंद्रमास्सहनक्षत्रैर्गादि-(सु) | ४५.८६ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चरणपवित्रविततं (उ) | २२४.६० | चरितं रघुनाथस्य-(पा) | १.१४ |
| चंदनेनविलिप्याथगा (पा) | ३७.४३ | चंद्रमुत्थाप्यतंकटे (उ) | ६.६ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चरणाब्जसमुद्रभू (उ) | २२.३ | चरितं वामनस्यापि (भू) | ७६.२७ |
| चंदनेनसुगन्धेनकुंक (उ) | १२४.५१ | चंद्रलोकेश्चरीभार्या-(सु) | १५.३१८ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चरणोपचयसंसारशौरव-(सु) | ४३.१८५ | चरितान्यस्यशतशो-(पा) | ५०.१० |
| चंदनेनसुगन्धेनगोपिका (उ) | ६६.८२ | चन्द्रवंशोद्भवोनाम (उ) | १४६.१२ | चंद्रार्ककिरणोत्पत्तिरि-(सु) | ४०.१३६ | चरणोपचयसंसारशौरव-(सु) | ४३.१८५ | चरित्रं तस्य वेनस्य (भू) | ३०.३ |

श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

१३७

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|
| चरित्रं तस्यैवस्य- (भू) | ३०.२ | चलितैर्गजयूथैश्च- (पा) | १०.२५ | चातुर्मास्यव्रतानीह (उ) | ६४.५ | चापमहदधानः सइवुधी (पा) | ४१.३३ | चिकीर्षितं हि मे ब्रह्मास्त्वं (सु) | १३.२७३ |
| चरित्रं ते प्रवक्ष्यामि (भू) | ४७.६५ | चलिते व्ययतिक्तां तो (उ) | २१८.४१ | चातुर्मास्यमिदं कर्म (उ) | ६४.७१ | चामुंडेज्वलमानास्तेतो (सु) | ३१.१४० | चिक्रीडरश्मिभिरशु- (सु) | ४१.३१ |
| चरित्रं देवदेवस्य (भू) | ३.१३ | चलितो मार्गं वष्ये तु (उ) | २०८.४६ | चातुर्मास्यव्रतानां (उ) | ६४.१ | चामुण्ड्यजनं मातृगंधं (पा) | ७४.१८६ | चिक्षेप च शिलापृष्ठे (उ) | २४५.५४ |
| चरित्रं युवयोरेत (क्रि) | २३.२१ | चाक्षुषस्यांतरे देवालेखा (सु) | ७.१०२ | चातुर्मास्यां नु नियम (उ) | ६४.१ | चामरग्रहणाकीर्ति (सु) | १२.५६ | चिक्षेद ते जसादीपना (उ) | २४६.५४ |
| चरित्वानमयानानि- (उ) | १२६.११८ | चाक्षुषस्यांतरे प्राप्ते- (भू) | ३६.४६ | चातुर्मास्ये निवृत्ते तु घटं- (सु) | २०.५६ | चामरां दोललीला (उ) | ७.५३ | चिक्षेद च हस्तेनैव (सु) | ४१.२८५ |
| चरुमेकं तु यो दद्यात्तो- (स्व) | २१.२४ | चाक्षुषस्यांतरे प्राप्रदेवा (सु) | ७.१०३ | चातुर्मास्ये विशेषेण (उ) | ६४.१०२ | चामरैः णटसूत्रैश्च (भू) | १०२.७ | चिक्षेद भुजमध्यं (पा) | ६०.४२ |
| चरुं सप्ताचि पराजान्- (स्व) | २५.५ | चाटुकारजनैर्युक्ता- (स्व) | ३०.२१ | चातुर्मास्ये हरीमुप्ते (उ) | ५३.३३ | चामरैः विबुधवर्तैर्वो (उ) | १८६.२२ | चिक्षेद भुजहस्तो (सु) | ७.५६ |
| चर्मकारो यथा चर्मकुंड (पा) | ६७.३८ | चाटुकारं सुरुपं तं (भू) | १२३.२३ | चातुर्मास्ये हरीमुप्ते (उ) | ६४.२ | चामरैर्वीज्यमानो हि- (उ) | १५४.४१ | चिक्षेद बाहुसा (उ) | २४१.६८ |
| चर्मकारो यथा चर्म- (भू) | ३६.६६ | चाणूरेण चिरं काल (उ) | २४५.३७३ | चातुर्वर्णं कर्गंश्च (पा) | ११४.३०१ | चामरैर्लोजिनः श्वेते- (क्रि) | १३.५ | चित्तगीयो महादेवः यस्य (उ) | १२४.८१ |
| चर्मण्वती च सर (उ) | ३५.३८ | चाणूरेण तु गोविदो (उ) | २४५.३७१ | चातुर्वर्ण्यस्य प्रभवश्चातु- (सु) | १६.३३ | चारणानां सुमिद्वानां (भू) | १०५.२ | चित्तस्थानुत्तांशश्च द्रु (उ) | ११२.२७ |
| चर्मण्वती च सिधुश्च- (सु) | ४५.१५३ | चाण्डालप्रमुखाये- (क्रि) | २५.३३ | चातुर्वर्ण्यस्य वैकृत्यसां (सु) | ३६.३३ | चारणैः सुतदाख्यात (सु) | १७.२८६ | चित्तनयस्य नुनरस्य (उ) | १६५.४७ |
| चर्मण्वती च वती हस्ति- (स्व) | ६.१६ | चांडाली भल्लयोनि च (भू) | १६.१६ | चांद्रायणव्यंकृत्या (न) | १८.७ | चरित्रं माकं नूनमनो (क्रि) | ५.१६६ | चित्तलज्जा विहीनानि- (सु) | ३२.३५ |
| चर्महारी च पुष्पा- (पा) | ४७.५२ | चांडालमूर्तिमासाद्य- (उ) | १८३.५७ | चांद्रायणव्ययह्मा (न) | १८.१० | चारुपंचकतुष्पं (क्रि) | १०.७२ | चित्तस्वमी शमव्य (पा) | ६४.१३५ |
| चलते नैव षोडशानासधीर- (भू) | ४६.३७ | चांडालस्यापिनत्य (उ) | १२७.१३७ | चांद्रायणव्ययह्मा (न) | १८.१० | चारुवृक्षमगाकीर्णां (भू) | ७७.१२ | चित्ते ब्रह्ममयं तीर्थं (उ) | १३३.३१ |
| चलत्किमिमुसंपूर्णं (उ) | १२६.१७८ | चांडालादधिकं मन्ये- (उ) | २६.१५ | चांद्रायणविधानेन (उ) | १२८.१६२ | चारुविवावरं मदं मि (पा) | ७४.१७६ | चित्रकंदरं सुहृद्- (सु) | ४२.२६४ |
| चलत्पताकविस्तीर्णं (उ) | १८६.६ | चांडालेनापि संपृष्टं (क्रि) | १८.७ | चांद्रायणविधानैर्वा (स्व) | ५८.२४ | चारुज्जातुमनुवृत्त (पा) | १०३.३४ | चित्रकदं पंचेष्टांभि (पा) | ७२.१६ |
| चलस्य पूजनं वक्ष्ये- (पा) | १०५.११८ | चांडालैः पतितः (न) | १३.७१ | चांद्रायणसमंशेयं (पा) | ११४.२०७ | चारुह्रांसवनिष्ठश्चक्र- (सु) | १३.१५५ | चित्रकूटतया सीता विधये (सु) | १७.१६७ |
| चलाचलेति द्विविधा- (पा) | ६५.७७ | चांडालोऽपि भवेच्छु (उ) | ६६.८३ | चांद्रायणसमं प्रोक्तं (उ) | ६४.४२ | चारुवृक्षमनिष्ठश्चक्र- (सु) | १३.१५५ | चित्रकूटतया सीता विधये (सु) | १७.१६७ |
| चलितः सतदा तेन दो- | २०६.२१ | चातुर्थिकं तथात्युग्रं (उ) | ७८.४८ | चांद्रायणसमं प्रोक्तं (उ) | ६४.४२ | चारुवृक्षमनिष्ठश्चक्र- (सु) | १३.१५५ | चित्रकूटतया सीता विधये (सु) | १७.१६७ |
| चलितुं नैव शक्नोति (भू) | ८.२१ | चातुर्मास्यकृत्यं च (उ) | ६४.११८ | चांद्रायणसमं प्रोक्तं (उ) | ६४.४२ | चारुवृक्षमनिष्ठश्चक्र- (सु) | १३.१५५ | चित्रकूटतया सीता विधये (सु) | १७.१६७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१३८

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| चित्रगुप्तेनलिखिता- (पा) | १०५.१३७ | चिदानंदपदगच्छे (उ) | १३२.१४० | चितवेच्छुतिकन्यानां (पा) | ७२.१४१ | चिरंतिष्ठसिदेवस्य (क्रि) | १२.१०८ | छत्रयन्सकलालोकान् (उ) | १८७.४५ |
| चित्रगुप्तोमहाप्राज्ञ (क्रि) | २३.७७ | चितयंती प्रियं कांतं (भू) | १०६.१७ | चिताकुलस्तु धमतिमा (भू) | ७७.२४ | चिरंश्रोण्यागतकांतं (पा) | ८२.३२ | छत्राकंविश्वराहच- (उ) | २३२.३२ |
| चित्रगुप्तोमहामायः (क्रि) | २३.१०३ | चितयन्तिगोविद (उ) | १६४.३१ | चितामणिर्गुरुप्रेष्ठो (उ) | ७१.२६२ | चिरंविचारयन्नेवतत्पः (उ) | १८२.२८ | छत्राणितु प्रदग्धनि (पा) | २४.३६ |
| चित्रधूलीप्रशस्तैः (ब्र) | ११.४० | चिन्मयन्तिवोचंतम- (सु) | ३६.११७ | चितामणिप्रभृतयोक्ता (सु) | ४३.४०३ | चिरंविहृत्पाथजगाम (सु) | १२.२६ | छत्रांधकारंयसीत (उ) | ११.४६ |
| चित्रंकिमत्रमधु (पा) | ६४.३ | चितयन्नेव जैन्तिमात्मकं (भू) | ८.११ | चिनामणिसमाह्वे (उ) | ३६.४७ | चिरभुक्तादुःखमतेप्रेतः (पा) | ६८.६४ | छत्रेनैव महाभागकाले (उ) | १५४.४६ |
| चित्रंकिमत्रयानु (पा) | ६४.१२७ | चितयन्नेव जैन्तिमात्मकं (भू) | ८.११ | चिनागवापदुःखेनमहो (भू) | २३.३६ | चिराज्जानधरस्त्य (उ) | १७.६८ | छत्रेणा ध्रियमाणेन (भू) | १४.३६ |
| चित्रंपश्यतमोविप्राराभो (पा) | १६.३२ | चितयस्वशरीरेण (पा) | ७२.१०६ | चितामेसमनुप्राप्ता (उ) | १६६.५४ | चिरात्समागतोविप्रस्वी- (स्व) | १४.२४ | छत्रेश्वरामर जालेश्व (सु) | ४४.१४६ |
| चित्रेन महात्मानं (भू) | ८५.५८ | चितयामासबुद्धयार्ण- (सु) | ४४.१६६ | चितामोहोपरित्य (पा) | ८७.६५ | चिरायमाणानावित्रीजा- (सु) | ३४.५० | छद्मनपाखण्ड चौयैर्ष्या (भू) | ११.१८ |
| चित्रेनोमहाराज (ब्र) | १३.६६ | चितयामासमेधावी (भू) | १.१७ | चितामोहोपरित्यज्य (भू) | ११.२७ | चिराश्वस्थानाभूमौ (उ) | ८६.६ | छागमध्येतुवैदेवछाग (सु) | ३१.१०२ |
| चित्रांगः क्रौंचकंठस्थार (पा) | २७.१ | चिन्तयामास मेधावी (भू) | ७६.२० | चितायाः कारणां विप्र- (भू) | ११.१२ | चिरायुर्वह्णाणावालः (सु) | ३३.१६ | छागस्पैर्वमचोतीवतु (उ) | १८३.७ |
| चित्रांगस्ताञ्छरान्सर्वा (पा) | २७.१० | चिन्तयामास मेधावी कि (भू) | ४६.४२ | चिताव्याधिप्रकाशाय (भू) | ३३.३३ | चिरायुर्वह्णाणावालः (सु) | ३३.२२ | छादयित्वात्मनोदेहं पा (सु) | ३६.१३६ |
| चित्रांगस्तुमुतोराजः (पा) | २४.२१ | चितयामास सरामक्त्या (उ) | १२८.२१२ | चितितं सुचिरं कालं न (भू) | ४६.४६ | चिरैगुलब्धवामंजातु (उ) | २४७.४ | छादययाचातिथी (उ) | २७.१६ |
| चित्रांगोपिरुगाक्रांतः (पा) | २७.७ | चितयास्यसुतस्यैवं (उ) | ५५.५ | चित्यमानस्यैवैपुं (पा) | ६६.४६ | चौरवासाजटीविप्र (उ) | ८०.१०४ | छायामपिपृशत्पयस्याः (पा) | ७१.४२ |
| चित्राद्वारं समाश्रित्य (भू) | ८६.३० | चितयेद्वासुदेवं तं तस्मै- (भ) | २१.३४ | चिदचित्सलक्षणं सर्वं (पा) | ८१.५७ | चौरवासाभवेनित्यम् (स्व) | ५८.८ | छायामशोकं मंप्राप्य (भू) | ३२.२ |
| चित्रादिषुविनोदेषु (उ) | १२८.२८ | चितयामिमहादेवि (उ) | १३३.३५ | चिदाभासश्चिदानंदश्चि- (भू) | ३६.२५ | छंदस्तु देवी गायत्री (उ) | २२३.४२ | छायामाप्नोति दाता (भू) | ६७.८० |
| चित्रायाश्चेष्टित पुण्यं (भू) | ८६.२५ | चितयानः स्ववित्तानि (भू) | ६६.१३६ | चिरकालतपस्तेतपः (उ) | १२५.११६ | छंदस्तु देवी गायत्री (उ) | २२६.२० | छायायोजनयामास (सु) | ८.४५ |
| चित्रापितृश्चित्ररूपः (पा) | ७०.२४ | चितयित्वा क्षणां विप्र (भू) | ४६.२२ | चिरकालमहौगतुनसम (उ) | २३७.६ | छत्रचामरयानानिवग (उ) | १२६.२२५ | छायेवकर्मगचिवाः (पा) | ८८.२८ |
| चित्राविचित्रमुस्तेर (पा) | ६२.८१ | चिन्तयित्वा क्षणां राजा (भू) | ७७.३२ | चिरकालं चरुदितं- (पा) | १०६.२४ | छत्रचामरयानानिवग (उ) | १२६.२२५ | छायेवंशकरस्यासौ (पा) | ११२.६१ |
| चित्रेब्रह्मकलानाम (सु) | १७.२११ | चितयित्वाजगत्सर्वं (उ) | २२६.१८ | चिरजातमयासत्यो (पा) | ५५.१२ | छत्रचामरयानानिवग (उ) | १२६.२२५ | छित्त्वाजा रकृतेसापि (ब्र) | २०.१७ |
| चित्रोत्पलाचित्रस्थाम- (स्व) | ६.२६ | चितयित्वेतिमन (उ) | १३.१८ | चिरजीवचिरजीवह्याशी (पा) | ४.२४ | छत्रदानेन गच्छति यया (भू) | ६८.८ | छित्त्वातुयोजनं चैकमेकं (सु) | ३८.१३२ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१३६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|----------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| छित्वात्रिशूलतरसारा-(पा) | ३४.१७ | छिन्नेनगेपुनः (पा) | ६१.५० | जगत्सर्गस्थितिल (उ) | २४२.७० | जगद्वद्येजगन्मातरिति-(सु) | ३४.४१ | जगामतत्रवेगेनमाया-(भू) | ३६.१६ |
| छित्वापाशततोदिव्ये (ब्र) | १५.५७ | छिन्नेभारतीनासंख्ये (पा) | ६१.४३ | जगत्संहस्तेरुदः पालेन (उ) | ८०.६५ | जगन्नाथेत्युच्चर (उ) | १.३३ | जगामनङ्गनोद्देशंयत्रास्ते (सृ) | १५.८५ |
| छित्वाबाणाम्भुती (पा) | ५१.३८ | छिन्नेवक्रेततोदेवाहृष्टा (सु) | १४.११४ | जगत्सेतुर्धर्मसेतु (उ) | ७१.१६१ | जगन्नेत्रसुरस्वामिहृर (पा) | १.३२ | जगामत्वविरितानुर्ण (सृ) | ४३.८१ |
| छित्वाबाहुसहस्रतेप्रम-(सु) | १२.१३१ | छिन्नेवक्रपुराब्रह्माक्रोधेन (सु) | १४.३ | जगत्स्रष्ट्रेनमस्तुभ्यं (क्रि) | १३.१०७ | जगन्मातापितृभ्यां (उ) | २४३.२६ | जगामत्वविरितोभोष्म-(सु) | ३०.१७ |
| छिद्यतेमेकरोव्य (पा) | ११७.१५४ | छिन्नेशिरसिदैत्य (उ) | ७.१६ | जगत्स्वजठरेकृत्वा (उ) | २२६.८८ | जगन्मुग्धीकृताशेष (पा) | ७०.४२ | जगाम धनुरादय (सु) | १३.१४ |
| छिद्यमानोसिपत्रैश्च (स्व) | ३१.१८ | छिन्नैकचरणः केचित् (क्रि) | १५.५३ | जगत्रयमोहयन्तमग्रं (पा) | ६६.१०७ | जगज्जालमापूर्यंश्च (पा) | २३.७१ | जगामविषणोराजन्-(सु) | १३.४०२ |
| छिद्रं प्राप्य वयं देवि (भू) | ५०.७ | छिन्नैकपादाः केचित् (क्रि) | ७.२८ | जगत्रयसमाक्रांतं (उ) | २३८.१३५ | जगादतंहनूमन-पुष्कलः (पा) | ४२.४ | जगामनहुषं वीरं चाप (भू) | ११४.२३ |
| छिद्रेणजलसंपूर्णमघः (सृ) | २३.४० | छेतुमहंसि यच्चैव (भू) | ८६.५० | जगदग्नेः समुत्पन्नो (उ) | २४१.१४ | जगादपुल्वणाधीश (पा) | ४४.२१ | जगामनोपवृक्षस्य तलम् (ब्र) | ११.६ |
| छिद्यिभिर्वीतिभावं (पा) | २६.२६ | छेदनीनित्वमाचङ् (उ) | १५४.४४ | जगदग्नेनमस्तुभ्यं (उ) | २०१.७० | जगादपुत्रोतीवीरो (पा) | ६४.६७ | जगामपद्मयांशुतुध्नंराज (पा) | २६.१६ |
| छिन्द्यतितृण जालानि (क्रि) | २४.१२ | ज | | जगदध्वनमस्तुभ्यं (उ) | २२६.३३ | जगादप्रहसन्वा (उ) | १८.२८ | जगामपरमंस्थानं (क्रि) | २५.८५ |
| छिन्नतद्वचानी (उ) | १५.३६ | जगज्जाह्यप्रशमनं (उ) | ७१.३०० | जगदाध्वरभूताधीशुका (उ) | २२६.३३ | जगादमम तन्नास्ति (पा) | २.१८ | जगामपुष्पकेणवृक्ष- (पा) | १०५.१४ |
| छिन्नब्रह्मशिरोयस्मा-(सु) | १४.११८ | जगतः पावनांश्चैव (उ) | २४०.४४ | जगदाध्वरभूताधीशुका (सु) | ४३.४६६ | जगोदवचनंतं वैवाणं (पा) | ४१.२३ | जगामब्रह्मणासांढ्र ब्रह्म-(सु) | ४१.३१६ |
| छिन्नाभिन्नाहृतं दैत्ये (उ) | १०१.१६ | जगतः सकलान्धर्मा (उ) | २४५.१५ | जगदाग्निनिस्तसाह-(सु) | १६.११२ | जगामकौतुकाविष्टा-(सु) | ४४.१३० | जगामब्रह्मणी पाश्वर्यम् (त्र) | ११.८७ |
| छिन्नमूर्धायिदेवार्कः (उ) | ७१.२३६ | जगतामोश्चरनित्या (उ) | २२६.३२ | जगदध्वनिनिस्तसाह-(सु) | १४.४३ | जगामचाप्यविजन् (स्व) | ३५.६ | जगाममंदरगिरिवायु (सु) | ४३.४२६ |
| छिन्नमूलनरुणंदवद्भि-(पा) | ६६.१८७ | जगतिप्रणताभिमत-(सु) | ४४.११२ | जगदुदधिमिसयेत (क्रि) | १४.४३ | जगामजगतांनयस्तुयमा-(सु) | ४३.१८६ | जगामयतयोः पाश्वर्यंहेम(उ) | २०६.१८ |
| छिन्नस्तेनथावत्सा (उ) | १२०.६ | जगतोऽस्यहिनावाय साधु (भू) | २६.६ | जगदुदधिरणायैपविधात (सु) | ४३.२५५ | जगामजगतीसारंरसर (सु) | ४३.२२० | जगामरक्षांसद्रष्टुः प्रगि-(सु) | ४४.३६ |
| छिन्नस्वीयं त्रिशूल (पा) | ४३.२६ | जगतोनुग्रहाथयिन्मार्त-(सु) | १५.८२ | जगदेकस्वकपायवृत्तिहा (उ) | १७४.८५ | जगामजाह्नवीतीरं (क्रि) | ८.८६ | जगामराघवोद्रष्टुं (उ) | ४४.१६ |
| छिन्नहस्तोपियुयुध (उ) | १८.६५ | जगत्सर्ववित्रसत्कीर्ति (पा) | ५७.१ | जगदेतत्तथाप्यहृदोपा (उ) | ७१.३२८ | जगामतत्रयत्रास्ते (पा) | ४५.६ | जगामविष्णुभवनं (क्रि) | २१.६४ |
| छिन्नाभिन्नाशकाः (पा) | ६०.४६ | जगत्सर्वस्मिन्नि रालं (पा) | ६४.१३६ | जगद्वधुर्जगत्स्रष्टा (उ) | ७१.१४३ | जगामतत्रयत्रास्ते (पा) | ४५.६ | जगामविष्णुरित्युक्त्वा (उ) | १०२.३० |
| छिन्नेतस्मिञ्छरेराजा (पा) | ५२.४४ | जगत्सर्वक्षणाधीय (उ) | २३२.६३ | जगद्वधुर्जगत्स्रष्टा (सु) | १४.१७१ | जगामतत्रयत्रास्ते (पा) | ४५.६ | जगामपशुक्रसंहितो-(सु) | ३०.७८ |
| | | जगत्सर्वगोप्यतां (उ) | २२७.५४ | जगद्वधुर्जगत्स्रष्टा (सु) | २४२.३११ | जगामतत्रयत्रास्ते (पा) | ६३.४२ | | |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------|---------|-----------------------------|--------|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| जगामशरणांवेपी (सु) | ४६.११ | जगमुविष्णुगृहसर्वे- (क्रि) | ४.१०८ | जघानैकेनशरणेन (उ) | २४७.३८ | जटायोः कणिकाश्च- (सु) | ५.६८ | जनन्यथदिलीपस्य- (सु) | ६.४७ |
| जगामसंसारबाहुं (क्रि) | २१.३७ | जग्मुः शरणंशरणं (सु) | ३१.१८ | जघानैवाप्रदानेनशत्रु (सु) | १३.८१ | जटावत्कलकौपीनधा (पा) | १७.५६ | जनन्याकर्णयवचोमम (पा) | ६.३८ |
| जगामसहस्रादिप्रोभग (उ) | २२५.४४ | जग्मुः स्वमदिराप्येव- (सु) | ४३.४४४ | जघनुः सततमूर्धन- (स्व) | ३०.३२ | जटाश्चविभूयान्नित्यम् (स्व) | ५८.५ | जनन्यायविमुक्तास्य (सु) | १८.३५१ |
| जगामस्वगृहं चित्ते (उ) | २०५.३५ | जग्मुः स्वस्थानमेवं हि (भू) | २५.२६ | जघनुः चक्रेः गदाभि- (क्रि) | १०.५८ | जटिलोज्ज्वलश्च- (पा) | ७२.६० | जन्मजन्मनितरंमाता (भू) | ३.५८ |
| जगामस्वाश्रममेकं (उ) | १२६.२६४ | जग्राहकृष्णस्तं वज्रं (उ) | २४६.६६ | जघनुः सुरकराघात- (पा) | २२.१० | जटिलोभस्मलिप्तांगो (उ) | २.१८ | जनमिष्यतितं प्राप्यतारकोन (सु) | ४३.५० |
| जगामहैहयपते (उ) | २४१.४७ | जग्राह मुद्गरं तूष्णीं (भू) | ११५.३६ | जङ्घास्तपीवरकटीरत (पा) | १०३.४२ | जडानामविवेका (पा) | ६६.३३ | जनमिष्यतितं शब्दं (सु) | ४३.६७ |
| जगामेलावृतंमोक्तुं (सु) | ८.१२५ | जग्राहमुदितः श्रीमान्- (सु) | ४३.४२३ | जंघां युगेऽतिथेरस्य (पा) | १११.१७० | जडभावेस्वदेह (उ) | २०३.२६ | जनयिष्येकथंपुत्रानिति (सु) | ३७.१२ |
| जगामोपवनंचान्यद्रति (सु) | ४३.२६४ | जग्राहवानरेन्द्रश्च- (सु) | ३८.६० | जंघे शोकविनाशिनि (सु) | २२.१४ | जडीभूतः समास्तांग (उ) | २०३.१८ | जनस्तपस्तथास्य (पा) | ८७.१७ |
| जगामोपवनंशंभोरथा- (सु) | ८.८४ | जग्राहशक्तिविमलारणे- (सु) | ४४.२०८ | जजापस्वमनिशं (स्व) | ३५.१६ | जनकदितंष्टुवा (ग्र) | १३.४२ | जनस्थानंजडोना (उ) | १७७.१ |
| जगामोमित्युवाहृत्य (सु) | ४२.६८ | जघेननातिशुभ्रेणत्रिव- (सु) | १७.३११ | जजापशतरुद्वयं (पा) | १६.१०१ | जनकस्यगृहेरम्ये (उ) | २४२.१०४ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगुर्गंधर्वपतयो (उ) | २४२.७३ | जघन्यशाण्डिपूर्वस्या- (सु) | १५.२८६ | जज्वल भगवांश्चोच्चै (सु) | ४.८१ | जनकस्यगृहेरम्ये (उ) | २४२.१०४ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगुर्गंधर्वपतयो (उ) | २४२.३२३ | जघानकोटिशोदेवात्कर (सु) | ४२.१०७ | जज्वल भगवांश्चोच्चै (सु) | ४.८१ | जनकेनसमशक्रतीर्थे (उ) | २००.२६ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगुर्गंधर्वमुखवाचन (सु) | ४३.१०१ | जघानतरसावाणं (उ) | ७.३२ | जजेचैकादशमुतान्वि- (सु) | ४०.८१ | जनकोपितीतांरामा (पा) | ११६.१३६ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगुस्तान्निवास्थी (उ) | १५५.२६ | जघानतर्भागावः क्रुद्धो (उ) | २४१.७३ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जनजातइतिश्रुत्वा ममे (सु) | ४३.१६५ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगुहेहं तयादाम्ना (उ) | १८३.२६ | जघानपाथिवान्य (उ) | २४१.७३ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीजठरेभूयस्व (क्रि) | २०.१२७ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगीमुमध्वंरंगीतंतयो (पा) | ७२.१२० | जघानमुद्गररेणासौ (उ) | १७.५२ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीवीक्ष्यविनयीता (पा) | ७३.३२ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगमुत्थापनाशाय- (सु) | २२.३७ | जघानरुषितोनागं हत्वा- (सु) | ४६.३६ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीवीक्ष्यविनयीता (पा) | ७३.३२ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगमुत्तौचकामार्था (सु) | ११.६० | जघान शक्री वज्रेणसर्वा (सु) | १२.६१ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीवीक्ष्यविनयीता (पा) | ७३.३२ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| जगमुभयंस्ततश्चैव- (सु) | १२.३५ | जघानसमरेक्रुद्धो (उ) | २४६.४८ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीवीक्ष्यविनयीता (पा) | ७३.३२ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| | | जघानहमगं राजा (क्रि) | ६.८८ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीवीक्ष्यविनयीता (पा) | ७३.३२ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |
| | | जघानास्यशुंडं गज- (भू) | ५३.०५ | जजेनसूययातातवि (उ) | २१५.१४ | जननीवीक्ष्यविनयीता (पा) | ७३.३२ | जनानांनुसृते जांसिस्वर्ग- (सु) | १२.४६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१४१

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|---------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|
| जनेश्वराणां परमेशकेशव (सु) | ३.४५ | जन्मनः प्रभृतिताव (उ) | २०.१.४ | जन्मान्तरसहस्रेषु यत्पापं (स्व) | ३३.१७ | जपंतीतांसमादायसा (क्रि) | ६.४१ | जमदग्निकुलादित्यो (उ) | ७१.२०७ |
| जनेश्वरेनः स्नात्वापिडं (स्व) | १३.११ | जन्मपुण्यं क्षयं (उ) | २४.५३ | जन्मांतरसहस्रे (उ) | ३०.१६ | जपंतीरामरामेतिमनसा (पा) | ४६.७२ | जमदग्निस्तयारामो (सु) | १६.२१० |
| जनेश्वेवाव्यवस्थेतिश्रू (सु) | ४३.५०८ | जन्मपौरुषमाप्रोति (सु) | २२.१०४ | जन्मांतराजितैः पाप (क्रि) | ६.६६ | जपंत्याश्चैवमाहात्म्यम् (ब्र) | ४.३ | जन्त्री राणिचमुख्यानि (सु) | ३३.८४ |
| जनैराराधितोमात्रा (पा) | ८३.१०१ | जन्मप्रभृतिपापिष्ठा (सु) | २०.३० | जन्मांतराजितैः पापै (क्रि) | ७.८१ | जपन्नेवचतन्मंत्रतार (उ) | २३५.६२ | जन्त्री रैर्दण्डिर्मन्त्रैव (उ) | ४०.१० |
| जावः सुखिनो जाता (पा) | १०१.३४ | जन्मप्रभृति मेकायः (भू) | ७२.१२ | जन्मान्तराजितैः पापै (क्रि) | ७.८१ | जपमानं मुशता तं दह्यो (भू) | २३.४३ | जम्बुकीं वलवागिसहो (क्रि) | ५.६४ |
| जंतवस्त्यवतमपदिः (पा) | १०१.६ | जन्मप्रभृति यत्पापम् (स्व) | ५७.२६ | जन्मान्तराजितैः पापैः (क्रि) | १३.७५ | जपस्तपस्तपः होमो (क्रि) | १७.३६ | जम्बुखंडस्त्वया प्रोक्तोदला (स्व) | ८.१ |
| जंतुमत्स्वयणाकीर्णं (सु) | ४०.१४४ | जन्मप्रभृति यत्पापं (सु) | १६.२०२ | जन्मांतरैर्वेदविवेक (सु) | ३४.१०६ | जपहोमपरान्मुख्यान् (सु) | १८.५० | जम्बुद्वीपप्रमाणेन द्विगुणः (स्व) | ८.८ |
| जंतुनक्षिप्रेवोद (उ) | १८.५४ | जन्मप्रभृति यत्पापं (स्व) | ११.३० | जन्माभावत्तल्लुब्धकुले (सु) | १०.१५ | जपहोमपराः शांतास्तपो (सु) | ३६.८८ | जम्बुद्वीपद्विगुणश्चेष्ट (क्रि) | २.१७ |
| जन्मकालं प्रतीक्षस्व (भू) | १०३.१०३ | जन्ममृत्युजरातीतः (उ) | ७१.१३० | जन्माभावात्कथं पानस्त (पा) | ५५.२५ | जपहोम व्रतात्पापं (भू) | ८६.५५ | जम्बुतीर्थतो गच्छे (उ) | १५०.१ |
| जन्मकाले महाज्ञानं (पा) | ११४.४५७ | जन्ममृत्युहरणैक (क्रि) | २२.१४८ | जन्माभ्यासवशाद (उ) | १८४.६० | जपहोमाधिकायाच (उ) | ३४.३६ | जम्बुद्वीपं महापुण्यं (उ) | १३५.६० |
| जन्मकोटिकृतं (उ) | ३४.५१ | जन्ममेहस्त्रियोनीच (क्रि) | ८.७० | जन्माभ्यासवशादेव (उ) | १८०.७६ | जपाकुसुमकुसुममालनी (सु) | २६.४४ | जम्बुद्वीपेन सांख्यततरतस्य (स्व) | ८.२६ |
| जन्मकोटिद्विरितक्षय (क्रि) | १५.१०७ | जन्मवीर्यं तथा क्षेत्रं (भू) | २८.६ | जन्मावुदसुरूपः स्थावृच्छ (सु) | २०.७४ | जपापुष्पां गमध्वे (पा) | ११४.६७ | जम्बुद्वीपे महापीठं (उ) | ४.१४ |
| जन्मजन्मनिलोकेश (भू) | १६.७५ | जन्मादिभावविकृतं (उ) | १२८.२६५ | जन्माष्टमीचनवर्मा (ब्र) | ४.६ | जपापुष्पाभयामाध्या (पा) | ३५.६३ | जम्बुनिवमहावृक्षोमातु (सु) | १०३.१६ |
| जन्मजन्मनिविप्रेन्द्र (क्रि) | १३.७७ | जन्मादिरहितः पूर्वयः (उ) | १२८.२५४ | जन्माष्टमीदिने यो वै (ब्र) | १३.७ | जपेच्छजुहुयान्निर्व्ययद (स्व) | ३३.३८ | जय उद्यमशक्तय उद्यम (भू) | १६.५७ |
| जन्मजन्मनिसानारी (ब्र) | ११.८५ | जन्मादिरोगरहितं (सु) | ४६.६३ | जन्मासाधचिरं दुःखम् (ब्र) | २२.४० | जपेच्छपीरुपसुक्तपूर्वं (सु) | २७.३४ | जयकुं कुमलिपतां गज (पा) | ७१.६५ |
| जन्मजन्ममहादेवत्व (स्व) | ११.५५ | जन्माद्यस्य यतश्चेति (उ) | १६७.७६ | जन्मोपश्रितकन्यानां (उ) | २१०.५६ | जपेस्तोत्रं विशेपेण (उ) | ७६.१० | जयगोविंदगोपालजयन (भू) | १६.५४ |
| जन्मजन्महृषीकेश (स्व) | ६१.२० | जन्मांतरकृतान्पापान् (भू) | १२३.५३ | जपकाले तु संचित्यंतासु (सु) | ४६.१७० | जपेस्तिन्यं प्रयत्नेन मंत्र (पा) | ८३.१०८ | जयचलितललितचूडा (सु) | ४४.१८३ |
| जन्मजन्मनिचमया (क्रि) | १६.२५ | जन्मांतरशतोद् (उ) | ६५.१२ | जपस्वष्टादशाध्याये (उ) | १६२.५३ | जपेस्तोत्रं नैमस्कारैः (उ) | २३४.३० | जयजन्मजरादिदुः खकैः (पा) | ५.४ |
| जन्मजन्मांतरं प्राप्य (भू) | २०.४ | जन्मांतरशतोद्भूतं पापं (उ) | १०७.१६ | जपन्गोविंदनामानि (उ) | ५८.७ | जपस्वामं भवितः सिद्धि (सु) | १७.२८० | जयज्ञानस्वरूपेन ज्ञान (भू) | १६.५३ |
| जन्मदुःखजरा रोगे (उ) | १३१.११ | जन्मान्तरसहस्रेषु (उ) | ८०.११४ | जपन्गीताष्टमाध्याय (उ) | १८२.२७ | जप्यो यज्ञभुजामस्तित (सु) | ४३.३२६ | जयदाशरथे सुरातिहृजय (पा) | ५.२ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकामुक्रमणी

१४२

| | | | | |
|-----------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|----------------------------------|----------------------------------|
| जयदितिकुलमहोदधि-(सु) ४४.१८२ | जयसर्वेश्वरानंतयज्ञरूप (भू) १६.५० | जयाचविजयाचैवम-(सु) १७.१०५ | जरादोषो नमे भद्रे (भू) ७७.६५ | जलधयोललितोद्भूतवीथ (सु) ४४.११७ |
| जयदीनदयाकरप्रभो(पा) ३१.२० | जयस्तत्रामवद्ब्रह्माभाज (उ) ११०.७ | जयातुलशक्तिदीधितिपं-(सु) ४४.१८१ | जरापलितहीनास्तु (भू) ८१.१६ | जलधारा रोमहाप्राज्ञः (स्व) ८२.४४ |
| जयदेवचिदानंदमुधा (उ) १८४.३० | जयस्तेभविता राज (पा) ४०.२३ | जयार्थमेतेविज्ञेयाप्रभु-(सु) १३.१६७ | जरापश्चात्समुत्पन्ना (भू) ७७.६८ | जलघोनामहाखिलात्वंच (सु) ४३.७८ |
| जयदेविमहादेविभक्त (पा) १३.२३ | जयस्त्वदेविचामुडेजय-(सु) ३१.१३६ | जयार्थराघवस्यैव (पा) ४०.५७ | जराभिभूतोपि जंतुः (भू) ६६.११७ | जलधेनुं च धेनुं चर-(सु) ३४.३६२ |
| जयदेवेनलज्जबाहोः (उ) १६१.१२ | जयंतकातिकेयोवा (पा) ६१.३३ | जयाद्येतस्त्वयावाप्यथ (पा) ८०.६ | जरा मे दीयतां तात-(भू) ८२.१४ | जलधेनुं चयोदद्या (पा) ६८.४१ |
| जयदेवेसदुः खघ्नपुरुषो (फ) १६.६० | जयंतस्यजयंत्यावैपुत्र (सु) १३.६६ | जयिव्येन्द्रिदशान्सर्वान् (सु) ४६.८ | जरां तात प्रदत्वा (भू) ७८.१७ | जलधेनुं तदादत्त्वा (उ) ५१.३४ |
| जयप्रज्ञादप्रज्ञागंजय-(भू) १६.५२ | जयंतं विजयंकृष्णमनंतं (भू) ८१.११ | जयेत्त्वमेहिवृषभं (उ) १८.१८ | जरायुजाण्डजातानि (उ) २५०.७२ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयभ्रू मंगललितजयवेणु (पा) ७१.६४ | जयंतिमरुशिलरे (उ) १६२.१८ | जयोदैवविष्टोऽयं यस्य (पा) २४.२७ | जरा रोगभयं नास्ति (भू) ७५.१४ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जययोगीशयोगीन्द्रजयना- (सु) १६.४६ | जयंतीकरणेचित्तम् (त्र) ४५.० | जयोब्रवीत्समोभागः (उ) ११०.१० | जरा व्याधिरिगतिदः (उ) ७१.२७० | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयराघवराभेतिजयसूर्य (पा) ३.२७ | जयंतीनामभाप्रो (उ) ३८.६ | जयत्कारुहिरिख्यातो (सु) ३१.३६ | जराशोकविपट्याप्तं-(स्व) २६.२१ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयविक्रमशोभांगजयउद्यम (भू) १६.५६ | जयतीवधवोरच (त्र) ४.३३ | जयंती ब्राह्मणीचैव (त्र) ११.५१ | जराशोकविपट्याप्तं (उ) १२६.१३ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयविक्रमशोभांगजयविक्रम (भू) १६.५५ | जयतीसजगामाधत (पा) १०६.८२ | जरायुपरिधूनाभ्या-(सु) १५.३४७ | जरासंधश्चक्रे (उ) २४५.२१ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयविशालविभोजयवाल(सु) ४४.१८४ | जयत्यामुपवासेन (त्र) ४.३८ | जरायुपीडितस्यापि (भू) १८.३४ | जरासंधेन रामस्य (भू) ६६.१६८ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयशब्देनदेवे (उ) २३८.१०० | जयत्याविजयश्चास्मिन्ज- (सु) ३४.१३४ | जरायुप्रापितः कायो (भू) ७८.६ | जराहीनो यदास्थास्त्वं (भू) ७८.१२ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयशब्दोदमः शब्दः (उ) १६५.२४ | जयंत्याः सूतमाहात्म्यम् (त्र) ४.१ | जरासोनंतरंमृत्युः (उ) २०२.४२ | जराहीनो यदास्थास्त्वं (भू) ७७.६७ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयशब्दोदमः शब्दस्त (उ) १६७.१०४ | जयंप्राप्नुहिदेवेशहृत्वा (सु) ४६.७२ | जराकुष्ठादिभिर्व्यपित (उ) ६.३४ | जर्मगखिलदेहश्च (क्रि) २३.१५३ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयश्चक्षुर्यते तातदेवे-(भू) १०.६ | जयंप्राप्यरणेवीरो (पा) ६४.३५ | जरागमश्लथदगात्रा (उ) २१६.२७ | जलक्रीडाविहारपुपुरा-(सु) २३.६४ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयश्चविजयश्चैवविष्णु (उ) ११०.४ | जयंभोग्यंथारोग्यमायु (सु) ४६.६४ | जरात्यागाः कृतो भद्रे (भू) ७८.६१ | जलक्रीडैवमभवदथ (पा) ११४.५७ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयश्चविजयश्चैवविष्णो-(उ) ११०.१ | जयाचविजयाचैव (उ) ३८.४ | जरादुःखं न क्वनोमि-(भू) ७८.३० | जलजोत्फुल्लपत्राक्ष (सु) १४.१२५ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |
| जयसर्वदसर्वजय-(भू) १६.५१ | जयाचविजयाचैवपुष्टि-(सु) १७.३१६ | जरादोषः प्रभग्नोऽसौ (भू) ६४.६३ | जलदानस्य माहात्म्यंयू (पा) १११.२ | जलधेनुं प्रयच्छति (पा) ६८.४२ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|
| जलयुक्तं नमस्कृत्यंग (सु) | ६.१०५ | जलेन सिकतः संस्पृष्टो-(पा) | २५.२६ | जहि तं पापकर्तारं हुंडः (भू) | १०८.३१ | जातकर्मादि संस्कार (उ) | ६६.२६ | जातसुतवघात (उ) | २०४.७५ |
| जलशैवालभक्षारच-(उ) | १२६.१५७ | जले निमग्नं बालम् (त्र) | ५.१३ | जहि पूर्वे हितः सुभ्रू प (उ) | २१३.३० | जातकर्मादि संस्कारा-(पा) | ११४.४८६ | जातस्य जीवितं जंतो-(सु) | १३.३२६ |
| जलस्य देवदेवस्य स्थं (क्रि) | २१.१३ | जलेश्वरं च यत्तीर्थं त्रिपु-(स्व) | १४.३ | जहो हि रूढभर्तारं सर्वदा (क्रि) | ४.६४ | जातकल्पावसानं तु भिन्न-(सु) | १५.७३ | जातस्य भूतिरेवास्ति जन्म (भू) | १२.५२ |
| जलस्थले चांतरिक्षे (क्रि) | ४.१०२ | जलस्थले च विचक्षप्रमा-(सु) | १८.३५८ | जहो कांतिश्च चंद्रसूर्यो (सु) | ४२.५४ | जातकौतूहलास्तगवि-(सु) | १३.३३५ | जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुः (सु) | १८.२६६ |
| जलस्थले चांतरिक्षे (क्रि) | ४.१०७ | जलस्येव भविष्यति (क्रि) | २६.३३ | जहो प्रियवायुः शंकां श्रु (उ) | १८७.३८ | जातमात्रं च यदेव उपपत्तस्थे-(सु) | १.४१ | जाता च हस्तिनी यो नो (क्रि) | ८.८५ |
| जलाग्न्यादि प्रवेशस्य (पा) | ६२.१७ | जल्पति मुनयः सर्वे-(क्रि) | ५.२६ | जागरं कांतिके मासियः (उ) | ११८.४२ | जातमात्रः प्रियंकुयां (पा) | ८८.१७ | जाता ह्येन पुण्येन गंध (उ) | १२७.७२ |
| जलाग्न्यादि प्रवेशस्य (पा) | ८७.२० | जल्पन्तश्च कलापुर्णो (पा) | १६.४३ | जागरं काटपत्तं त्रनृत्य-(स्व) | १६.२७ | जातमात्रः प्रियंकुयां (भू) | १२.१७ | जातिकाभिर्भूमिका (पा) | ४७.५ |
| जलाज्जलं समानीय (क्रि) | ११.८ | जवेन जगन्हवीतीर्त्वा (पा) | ६५.७ | जागरे च प्रबोधि न्यां (उ) | २१७.४८ | जातमात्रः सर्वसुखं (भू) | १.७ | जातिभ्रं शंकरं धोरम-(पा) | ६७.१०५ |
| जलांतरं प्रविष्टस्य तस्य (सु) | ४२.२४ | जहमुस्ताः स्त्रियस्तात (भू) | ८६.१२ | जागरे निमिषाद्धं (उ) | ३७.१५ | जातमात्रस्तु दैत्येन्द्र-(सु) | ४२.५८ | जातिमात्रहृदे स्नात्वा (स्व) | ३६.३८ |
| जलांते पतिता राज-(भू) | ७७.७७ | जहमुस्ताः स्त्रियो (भू) | ६२.२२ | जागरे पद्मनाभस्य (व) | ४.३५ | जातमात्रस्य बालस्य (भू) | १०६.१० | जातिस्मर उपस्पृश्य (स्व) | ३८.४६ |
| जलांते पुष्करं चैव (भू) | ७७.३५ | जहमुस्ताः स्त्रियो (भू) | ६२.२२ | जागरे महिमा चैव दीप (उ) | १.६३ | जातमात्राभिर्भ्रयं ज्ये-(भू) | ५१.२० | जातिस्मरत्त्वमप्यस्ति (उ) | १८३.१५ |
| जलांधकारसंज्ञतो मार्क-(भू) | ६२.४० | जहार गुडकंडोलम (क्रि) | १६.३३ | जाज्वल्यमानं त्रिशिखं-(पा) | ३४.३६ | जातमात्रे ततस्तस्मिन् देव-(सु) | ३०.६४ | जातिस्मरा तथा जाता (उ) | १२७.१२८ |
| जलान्नशर्कराधेनुति (पा) | ६५.५० | जहार राक्षसस्नां रुद्र (पा) | १४.३५ | जाज्वल्यमानं वपुषाम (सु) | १६.७६ | जातं तत्र न स देहः (उ) | १४३.२४ | जातिस्मर्यां ककुडे (उ) | ८०.२४ |
| जलान्नशर्कराधेनुति (पा) | ६५.५० | जहार स कलपांग (क्रि) | १६.३८ | जाज्वल्यमानं दंष्ट्रेण (उ) | १८५.४६ | जातं तत्र न स देहः (उ) | १४३.२४ | जातिस्मर्यां ककुडे (क्रि) | २३.२४ |
| जलान्नशर्कराधेनुति (उ) | २२६.४५ | जहार सीतां रामस्य (उ) | २४२.२५५ | जाज्वल्यमानः सहर (पा) | ६१.४२ | जातं तत्र न स देहः (उ) | १४३.२४ | जातिस्मृत्यतिप्रभावेण (क्रि) | २३.२४ |
| जलाशयामहाराज (भू) | ३७.५६ | जहाराश्वं रावणस्य (पा) | ३३.६ | जाज्वल्यमाना (उ) | २४२.१२२ | जातः पुरा द्विजः (उ) | १२७.१३५ | जाती चंपकवल्गुपुं (सु) | १८.१६१ |
| जले किं विनिमग्नो (पा) | ३८.१६ | जहास किंचिदाकोपा (पा) | ६०.१७ | जातकर्मादिकं वर्म (भू) | २०.४६ | जातरूपमयः कार्यः (उ) | ३५.४२ | जाती चंपकवल्गुपुं (पा) | ६३.१ |
| जले च भक्ष्यते मत्स्यै-(भू) | ६६.१५४ | जहास पाशबद्धो तो (पा) | ६४.५४ | जातकर्मादिभिर्वाल्ये (पा) | ८८.७ | जातवेदसमेनेत्वां (पा) | १०८.४५ | जाते तत्र महाविष्णो (उ) | २४३.४६ |
| जले चैव निमज्जति (भू) | १२१.१२ | जह्यं न बालकं दुष्टं (भू) | १०५.२८ | जातकर्मादिभिर्वाल्ये-(भू) | १२.७ | जातवेदस्स चद्रस्वारेत (सु) | १७.१५६ | जाते तस्मिन् महाभागे (भू) | ५.१०५ |
| जले जले समाख्याप्य (उ) | ७०.१६ | जहि जह्यांशुपाविष्ठां (क्रि) | २३.१०५ | जातकर्मादियोग (उ) | २०.२६ | जातवेदस्स चद्रस्वारेत (सु) | १७.१५६ | जातेना मापरापेतु (त्र) | २५.२२ |
| जले तत्प्रोक्षितं मूलफल (पा) | १०६.६४ | | | | | जातव्ययो विधाया (उ) | २००.६४ | जाते पुत्रे महाभागस्तस्मि-(भू) | ३०.४ |



श्रीपद्मपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१४४

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------|--------|
| जाते पुत्रोत्तमेवंशः (क्रि) | १६.१४ | जानतापरमंधर्नं (पा) | ८४.३० | जानुम्यामवर्णिगत्वा (सु) | ४३.२५२ | जाम्बवानुवाच (सु) | १३.८७ | जाराकाक्षी सदानाम्ना (ब्र) | २०.१२ |
| जातेलोकविधानेतु- (सु) | ४३.३४६ | जानतितज्जनकश्चिन् (क्रि) | ६.८८ | जानुलंबितमनोहरी (पा) | ५७.३६ | जांबूनदकृतेतीवभोष्ये (पा) | ११२.११५ | जारेणकेचिन्साढं (ब्र) | ६.१४ |
| जातेविषादेतुव्रत (पा) | ११२.१३६ | जानति देवताः सर्वा (भू) | ११८.११ | जानेसमीहितंचितं (उ) | २०७.३७ | जायतेऽनुग्रहो यत्र (भू) | १३.३० | जारेणजनयेद्वर्गम् (ब्र) | १८.२० |
| जातेसतिमहाभागेपृथो- (भू) | २८.५५ | जानातिदेवभवतो (क्रि) | १६.३२ | जानेहृदनुमुष्यानां- (सु) | ३०.११७ | जायतेतद्वपुस्पर्शं (पा) | १०१.३० | जारेसदास्थितचिन्त (ब्र) | १५.४६ |
| जातोबाहुसहस्रेणसप्त (सु) | १२.१०६ | जानातिरामस्चरित्रं (पा) | ५०.४५ | जानेहंस्वापराधेन (उ) | १२७.१०६ | जायतेतनभोविप्र (उ) | ७८.३३ | जालंधरः कथं विष्णो- (उ) | १००.७ |
| जातोयदाध्रुवोमृत्यु (क्रि) | १७.३८ | जानात्ययमहारुद्रस्त (उ) | ७१.५५ | जानेहंतावकं जन्म- (उ) | १२६.१६२ | जायतेगृह्यसदृशो राजा- (सु) | ३४.२८४ | जालंधरः कथं धनं न (उ) | १८.१०७ |
| जातोसिकाशयपेक्षत्वं (सु) | ३०.१२४ | जानामित्रमहावीरं (पा) | ६३.६७ | जाप्यैश्चारण्यकै (पा) | ८५.७ | जायते मांसं वृद्धिस्तु (भू) | ५३.६६ | जालंधरः कोटिभुजो (उ) | १८.५० |
| जातोसिमेजगन्ताथ (उ) | २४५.३६ | जानामिबाष्कलितंतु- (सु) | ३०.३१ | जावालिः कथयामासचे (पा) | ३१.१७ | जायतेरुणानुल्यंशाल (उ) | १२०.४६ | जालंधरः नथास्थान (उ) | १.११ |
| जातोहमुत्तमेवंशउत्तमोहं (सु) | ३६.१० | जानामिद्यपिहरे (क्रि) | १६.५८ | जामदग्न्यं मुनिचैव (उ) | ४५.४३ | जायतेयोनि कीटेषु (भू) | ६६.१२६ | जालंधरः शरवार्तनीं (उ) | १०१.२२ |
| जार्ता वंराज वंशे- (क्रि) | २३.१७१ | जानाम्यहं जगन्ताथं (भू) | १०३.१२३ | जामदग्न्यस्यततीर्थं (सु) | ११.४८ | जायतेविजयान्तिथं (उ) | १८.१५० | जालंधरः शिरः शुक्रं (उ) | १४.३६ |
| जास्यादिभिरमंसमुष्टः (उ) | ८०.१४५ | जानाम्यहं महाभागनं (उ) | १५१.८१ | जामदग्न्यस्वरूपेण (उ) | ४५.५८ | जायतेनृपांराम (सु) | ३७.७६ | जालंधरः स्तनः (उ) | ११.३१ |
| जानकी देवर्ष्या (पा) | ५६.४२ | जानाम्येनां वल्लिमुद्धां (पा) | ५६.६२ | जामातरं गृहेनैवस्था (उ) | १६.३३ | जायते सुमहददुःखं (भू) | ६६.५२ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानकोपुत्रकौतव- (पा) | ५६.७६ | जानासिकिमहामन्त्रि (पा) | ६१.१ | जामेयस्तस्यराज्ञो (पा) | ४०.३६ | जायतेतत्रवैयूकाः (पा) | ६६.५६ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानकीलक्ष्मणसखंरामं (पा) | ३६.२० | जानाहिपाद्वर्तस्य (पा) | ४२.१५ | जांबवंतविज्ञाप्यराम (पा) | ११६.१३ | जायते बहवः पुत्रा (भू) | ४०.१२ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानकीवत्त्वभोजेगो- (उ) | २५४.३१ | जानीहितस्वर्किशंभु (उ) | १६.११ | जांबवंतसजग्राह (सु) | १३.८५ | जायते बहवः पुत्रा (भू) | ४०.१२ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानकीविल्लांरुष्टवा (पा) | ६३.२१ | जानीहिमानृपश्रेष्ठ- (पा) | ५०.२५ | जांबवंततनदापुष्पां (उ) | १५०.११ | जायते मरणायैव (उ) | ५०.१६ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानकीवीक्ष्यपुत्रौ (पा) | ५६.८५ | जानीहिमुकुटं (पा) | ६४.६४ | जांबवंतेश्वंस्नात्वा (उ) | १५०.६ | जायमानं नृदैव्यं नृत्त- (सु) | ४२.५२ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानक्यपिमहाभागेदेवरं (पा) | २.३६ | जानीहो नंबहुगुणं (पा) | ३७.२१ | जांबवत्पाः सुतो जज्ञे- (सु) | १३.१५७ | जाययाचजलरथाहं ता (उ) | १८३.३४ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानक्यावक्त्रसुतो जातो (पा) | ५५.३ | जानुजयेनमोगीर्य- (सु) | २२.११५ | जांबवानथतं प्राहो (पा) | ११७.१६६ | जाययाचतलरथाहं ता (उ) | १८३.३४ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |
| जानताचहृषीकेश (पा) | ६४.१४५ | जानुम्यामथहस्ता (उ) | २४५.८५ | जांबवानथयभाषेहि (पा) | ११६.१५ | जाययाचतलरथाहं ता (उ) | १८३.३४ | जालंधरः स्तुतचक्रुः ता (उ) | १००.१ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|----------------------------|--------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| जालंधरोशयोद्धं (उ) | १४.७ | जिज्ञासुस्तामुनिवरस्त (पा) | ७२.२८ | जित्वामहेंदेंदोवांचस (उ) | २३.८ | जीवन्नर पश्यतिभद्र (उ) | २२.३६ | जुहुयाच्चघृताभ्यङ्कते (उ) | १.२४.५५ |
| जालंधरोयसंकु (उ) | १७.१८ | जितक्रोधविमर्शोयस्तु- (सु) | ३२.४४ | जित्वावैदानवान्स (उ) | १६६.६ | जीवन्नपंपतिः स्वीयः (उ) | २१३.३२ | जुहोतिविधिनासम्पद्- (मृ) | १५.१६६ |
| जालंधरोमहाबाहु (उ) | १७.२७ | जितमरुदभ्रमतवितरण (सु) | ४६.८८ | जिनरूपं विजानीहि (भू) | ३७.१५ | जीवन्मुक्ताः कथं कण (उ) | ६३.६ | जुहन्श्चाग्निहोत्राणिच- (सु) | १८.१०२ |
| जालंधरोमहाबाहु (उ) | १८.८५ | जितमस्मामिरत्यर्थ (उ) | १८८.२२ | जिष्णुजिष्णुसमोवीर्य (भू) | १०३.१७ | जीवन्मुक्तो ब्रवीति- (पा) | ३०.११ | जुह्वन्देवं द्विकाल यो न (भू) | ५०.१६ |
| जालंधरोमहाबाहुः (उ) | ७.८ | जितंतेनजितंतेन (स्व) | ५०.५ | जिह्वायाहरिपादांनु (स्व) | ६१.६६ | जीवमानामुहृष्टासा (उ) | ३.४६ | जुंभस्यनिशितं (उ) | १२.४० |
| जालंधरोमहाबाहु (उ) | १०.२५ | जितंमयाकांतजवेनसर्वं (पा) | ५५.६० | जिह्वापामार्जनं चैव (क्रि) | ११.१२ | जीवयामासकाकु (उ) | २४४.१३ | जुंभासुरोजयाना (उ) | १२.४१ |
| जालंधरोहतः संख्ये (उ) | १५.५१ | जितंवरामचंद्रेण (उ) | १५०.४ | जिह्यामुक्तं पुरातेन (भू) | ३४.१६ | जीवर्यनाम्नाता (उ) | १७.७२ | जेतारं सर्वलोकानाममानं- (भू) | २३.२० |
| जाह्नवीतीरधमने (क्रि) | ६.१५४ | जितः ऋगुहोतसंख्यं (उ) | १६.२५ | जिह्वासरवस्तेहृश्च- (सु) | ३६.५६ | जीवशेरोमुमुषुंश्च (उ) | १२६.६८ | जेतुगच्छतुनद्रक्षः समरे (पा) | ३३.२२ |
| जाह्नवीतीरयात्रायां (क्रि) | ६.१५३ | जितंतेनमहाराजासुर (पा) | ५३.६ | जिह्वालब्धवापिलोके (स्व) | ५०.३५ | जीवस्यतंडुलस्ये (पा) | ६६.६३ | जेलानानेनपुष्येन तृप्ति- (भू) | २३.३१ |
| जाह्नवी प्रतिभाभावान् (क्रि) | ८.५४ | जितार्कज्वलनज्वाला- (सु) | ४३.३६४ | जीवतएवतमापयावि (उ) | २१४.१०७ | जीवस्वरूपेण विभक्तिं (भू) | ६८.६२ | जेष्वातिशस्त्रसंधेनानि (पा) | २६.१४ |
| जाह्नवीमंडलधुध- (सु) | ४३.५८६ | जिताहारः सधमर्त्ता (भू) | ३.१० | जीवधातरतोनि (उ) | ४०.२५ | जीवानां पालनं यत्र तत्र- (भू) | ३७.४१ | जेष्वाभि भूषं यदि स्वेन- (भू) | ४२.२४ |
| जाह्नवीसर्वथोतीर्णां (पा) | ५६.४४ | जितेंद्रियः शांतमनाः (उ) | ११६.३ | जीवतेनात्र सदेहो यश्च (भू) | १०५.३७ | जीवितंयस्यधर्मार्थं (पा) | ६४.८ | जैमिनेतुलसीपत्रं (क्रि) | ११.१३५ |
| जाह्नवीसापुरावि (उ) | ३४.२५ | जितेंद्रियस्तुयत (उ) | २४१.२० | जीवतेमवमयास्वर्गः (क्रि) | १७.२३ | जीवितंयस्यधर्मार्थधर्मो- (सु) | १५.३७८ | जैमिनेविधिनायेन (क्रि) | ११.१ |
| जिगीषयेयं पुरुषार्थमेव (भू) | ५५.३ | जितेंद्रियाणामथ- (सु) | १५.३२५ | जीवनंमुक्तः सविज्ञो (उ) | ८०.१६७ | जीवितंयस्यफलं चैत (पा) | ६६.८० | ज्यामेश्वरहनुमंतं (क्रि) | १८.३१ |
| जिगीषतांतुसुरश्रेष्ठ- (सु) | ४२.८६ | जितेंद्रियोजितक्रोधः (उ) | ८०.१७ | जीवनंसर्वभूतानाम् (स्व) | ६०.१४ | जीवितव्यं परित्यज्य- (भू) | ४२.५१ | ज्येष्ठकुंडेनरः स्ना- (क्रि) | १८.२०७ |
| जिगीषोः सैन्यसंवीतोदे (सु) | १३.६६ | जितेंद्रियोजितक्रोध- (सु) | ४६.१३२ | जीवनोपायदातारः (क्रि) | ११८.६६ | जीवितयामथोपतन्या (पा) | ११०.१३ | ज्येष्ठमासेतुसंप्राप्तेचतु- (स्व) | २०.५ |
| जिघ्रन्तपिस्वदुर्गं (पा) | ६६.५५ | जितेंद्रियोजितक्रोधो (स्व) | ५८.१६ | जीवकुलं धनं धान्यं (भू) | १०३.७७ | जीवितेनधनेना (सु) | १५.१.८० | ज्येष्ठपुष्कमासाध- (सु) | १५.१५१ |
| जिघ्रन्तपश्यन्सकादो- (भू) | ६६.८० | जिवातत्रमहाप्राज्ञ (स्व) | २४.२५ | जीवति च श्रियते च (भू) | ३०.४१ | जीवत्राणापरा साता- (भू) | २०.२१ | ज्येष्ठपुष्कमासाध- (सु) | १७.१६५ |
| जिघ्रन्ताराजधुन्यासो (उ) | १८८.२४ | जिवादेवान्निराकृत्य (उ) | ६०.६ | जीवतीनामतत्पत्नी (क्रि) | १५.११ | जीवेशदूताह्वयता (क्रि) | ७.८४ | ज्येष्ठमासेसितेपक्षे (उ) | ५१.४५ |
| जिज्ञासवस्तच्चरितं (सु) | १२.५८ | जिवाबाणामुरंस्ये (उ) | १५६.४ | जीवत्यक्त्वा हताः कोल- (भू) | ४३.५३ | जीवोपदेशाच्छ्रुत (उ) | ३४.१८ | ज्येष्ठराज्येनसंधो (उ) | २४२.१८४ |

बोधधनहापुत्राख्यम् :: श्लोकानुक्रमणो

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|----------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| ज्येष्ठस्तु उज्ज्वलो नाम (भू) | ८५.३२ | ज्योत्स्नासमभवच्चापि (सु) | ३.६५ | ज्ञातव्यं तु सुबुद्धेन (भू) | १२५.२५ | ज्ञात्वाभक्तिहरिस्तस्य (क्रि) | १७.१२६ | ज्ञानध्यानोमहात्मानो (भू) | ७.४० |
| ज्येष्ठस्यकृष्णपक्षे (उ) | ५०.१ | ज्वरश्च सुमहान्सीद- (भू) | ६६.२१५ | ज्ञातिधर्मइतिष्यातो (क्रि) | २५.४७ | ज्ञात्वामुनिस्ततोरांमं (उ) | ४४.१७ | ज्ञानदंमोक्षदंविप्र (उ) | १२६.२५५ |
| ज्येष्ठात्ककुत्स्थनामा (सु) | ८.१३४ | ज्वरार्तेनमयापद्भ्या (उ) | २०४.११८ | ज्ञातिपूजारतो नित्यं (क्रि) | १२.५८ | ज्ञात्वायंरामचंद्रस्यवा (पा) | ३२.८ | ज्ञानप्रबुद्धयत् शीघ्रं (उ) | १६४.२१ |
| ज्येष्ठादेवीसमुत्पन्ना (उ) | २३२.२३ | ज्वलतास्योमवद्धोरो (उ) | १६८.२२ | ज्ञातीनांघाचकानांच (क्रि) | २१.११७ | ज्ञात्वायंरामेणसमुवत् (पा) | ४६.१५ | ज्ञानभद्रोमहायोगी (क्रि) | २५.५१ |
| ज्येष्ठानुरक्ताः श्रेष्ठा- (सु) | १०.६४ | ज्वलतेयस्यसेना (उ) | १२१.२६ | ज्ञातुमस्यावचः प्रोचुः (सु) | ४३.३१६ | ज्ञात्वावंजुडुयाद् (उ) | २५५.१०६ | ज्ञानमज्ञाययोदद्याद्वेद- (स्व) | ३१.६७ |
| स्येष्ठेनुस्नापनं कुर्याच्छी (पा) | ८०.२२ | ज्वलत्फणिफणारत्न- (सु) | ४३.५११ | ज्ञात्वाकृष्णेपितत् (उ) | २४५.३४८ | ज्ञात्वाश्राद्धानिकुर्वति (सु) | ६.५७ | ज्ञानमासाद्यतत्रैव (क्रि) | १४.३८ |
| ज्येष्ठेपंचनपायोहेमधे (सु) | २०.१२३ | ज्वलदग्निशिखाश्रेणी (क्रि) | ६.१२ | ज्ञात्वा चायोः सुनं भद्रे (भू) | ११३.१६ | ज्ञात्वासमागतं (उ) | २४२.२६३ | ज्ञानमासाद्यतत्रैव (क्रि) | २५.८६ |
| ज्येष्ठेमंदारकुसुम- (सु) | २६.३६ | ज्वलद्गुणाशचिनिष्ठः (सु) | ३४.६६ | ज्ञात्वा तत्कर्मतन्मात (उ) | २०७.६ | ज्ञात्वासातिशयसर्व- (भू) | ६६.१७५ | ज्ञानमुद्रांचविभ्राणा (पा) | ७२.२७ |
| ज्येष्ठेमासितुवैभीमया (उ) | ५१.६१ | ज्वलनश्चापि दिव्या- (सु) | ४३.४२१ | ज्ञात्वा तद्विगतं शैलो (सु) | ४३.१३६ | ज्ञात्वासाधर्म्यवैद्य (पा) | ८५.२० | ज्ञानतर्थवल्लोने स्मि- (उ) | २५.३.३० |
| ज्येष्ठेमासिद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १३.१ | ज्वलंतमिवचादित्यं (उ) | ६६.६ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञात्वासाधर्म्यवैद्य (पा) | ८५.२० | ज्ञानतर्थवल्लोने स्मि- (उ) | २५.३.३० |
| ज्येष्ठेमासिसविज्ञेयो (क्रि) | १३.११ | ज्वलन्तमिवचादित्यं (उ) | ६६.६ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानविनाचयामुक्तिः (उ) | ७१.११५ |
| ज्येष्ठेमासिसितेपक्षे (सु) | ७.१० | ज्वलात्कर्मप्रसंगे (पा) | ८४.८१ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं संप्राप्य संनारयः (क्रि) | १.१८ |
| ज्येष्ठेमासिसितेपक्षे (उ) | ५५.२७ | ज्वालामुख्यास्त (उ) | १.४६ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्येष्ठः जयः कनिष्ठो- (उ) | ११०.३ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्येष्ठोप्राताचभर्ता च (स्व) | ५१.३७ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्योतिर्गणेशश्चादयतो- (सु) | १५.६७ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्योतिर्मातृहृदेचैव (स्व) | ३६.३६ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्योतिरुपमहृदामपुराणं (पा) | ७०.३१ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्योतिषांमुमुक्षुश्च- (सु) | ३७.१६३ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |
| ज्योतिष्मान्धुतिमा (सु) | ७.८४ | ज्वालांगमदंशोर्षाभि (उ) | ६६.११ | ज्ञात्वा तंवाजिनदत्त्वा (पा) | ३८.५८ | ज्ञानकर्मगुणोपेता (स्व) | ५१.५० | ज्ञानं सर्वार्थेष्व मोक्षश्च (भू) | १२२.२६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

१४७

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------|-------------------------------|------------------------------|-------------------------|-----------------------------|-------------------------------|------------------------------|--------|
| ज्ञानवैराग्यरहिताः (पा) | ८१.२२ | अ | तंगुह्यपरमनित्यम् (सु) | २.८७ | तंत्रयुद्धमहज्जानं-(भू) | ६.१५ | तं दृष्ट्वाघोरतपसंवि-(सु) | ३६.११५ | |
| ज्ञानवैराग्यसंयुक्ता (उ) | १६४.५७ | अभावातेन शीतेन-(भू) | ४१.२२ | तंगुहोत्वाकरेसउवाच (उ) | १५१.६६ | तंतुः शासनमद्राशीत् (उ) | १६१.२४ | तं दृष्ट्वाचित्तानं तु (उ) | १६३.२६ |
| ज्ञानश्रुतेर्महीभर्तुः (उ) | १८०.२५ | अभाकुलरत्नसमा-(सु) | १६.६६ | तंगुहोत्वाचरण (उ) | १२.१३ | तदुल्लेखीहिमात्रोत्थः (पा) | ११४.३० | तं दृष्ट्वाजगतां (उ) | २४५.३८ |
| ज्ञानसंयासिनः केचिद् (स्व) | ५६.५ | उ | तचदृष्ट्वापुंडरीकाकार्यं (सु) | ३८.१६ | तदृष्ट्वाघोरसकानं (उ) | २४२.१८ | तं दृष्ट्वाजगतामीयं (क्रि) | १७.१३० | |
| ज्ञानात्मकप्रपश्यति-(सु) | ३.५१ | उंकारयामामतदावीरा-(पा) | ६०.२६ | तंचदेशंजगामाशु-(सु) | ४१.२६५ | तदुष्टकागोभगवान् (उ) | ८०.४५ | तं दृष्ट्वाजगतामीयं (क्रि) | २२.१८ |
| ज्ञानाज्ञानानिनिष्ठानां-(स्व) | ३३.४५ | उवर्गेणतवर्गेणज्ञानं (उ) | २२६.२६ | तंचमोक्षयनिशब्धनः (पा) | २३.१२ | तदुष्टिप्राप्य देवाश्च (भू) | ६७.६१ | तं दृष्ट्वाजगतामीयं (उ) | २३६.१३ |
| ज्ञानाश्रयोज्ञानगुण (उ) | २२६.३४ | उ | तंचरिवतंततो दृष्ट्वा (भू) | ४.५१ | तं तं संधो मोहयवा (भू) | ३४.४२ | तदुष्ट्वातत्पुनराज्ञा (उ) | २४१.४८ | |
| ज्ञानाभिः सपरित्यक्तो (क्रि) | १६.१६ | डाकिम्यः सहस्रतालै-(सु) | ३१.१२० | तंचशुद्धेनभावेनपरि (उ) | १७६.६ | तंतयाविधमालोक्य (उ) | १७६.३६ | तं दृष्ट्वाभारतः प्राह-(सु) | ४.११४ |
| ज्ञानेन तत्परं ज्ञानं (भू) | ६६.२६३ | डिभान्गुहोत्वा याहि (भू) | ४३.७७ | तंचिन्नशिरसंदृष्ट्वा (पा) | ३४.७८ | तंतयैष्युःवाशंकरो (उ) | २५०.२४ | तंदृष्ट्वातुनदाविधमः (सु) | १६.१४४ |
| ज्ञानेन प्रेषितो ह्यात्मा (भू) | ८.६८ | डिभैः सार्द्धं सुखेनाभिः (भू) | १२२.२४ | तंजघ्नुः परितोवीराः (उ) | २३८.५७ | तंतथोत्वाभुजिनः-(सु) | ३७.५५ | तंदृष्ट्वाभिग्रहाः सर्वे (उ) | ७८.६० |
| ज्ञानेनष्टजनस्तात (उ) | २१४.६१ | त | तंजलाशयमागत्य (उ) | १८५.६६ | ततपतमित्रादित्यंतप (सु) | ४१.७२ | तंदृष्ट्वातेजिज्ञाः सर्वे (उ) | १६७.१०३ | |
| ज्ञानेनाहंप्रपश्यामि (उ) | १६३.५६ | तं कथंवालको जीया (पा) | ६०.६३ | तंजीवयतभद्रंवीना-(सु) | ३५.६४ | तं तु दोषपरित्यज्ये (भू) | ७८.६४ | तंदृष्ट्वादेवताः सर्वे (उ) | २४०.४ |
| ज्ञापयामः कृच्छ्रमिदं पा-(सु) | १३.२३० | तं कर्मयोगं वदनः (स्व) | ५१.३ | तंडुलप्रस्थदानचयाव (सु) | २३.४२३ | तंतुतीर्थानिसर्वाणि (स्व) | २१.४८ | तंदृष्ट्वादेवदेवैर्ध्यां (उ) | १८५.३० |
| ज्ञापतेकरुणोस्मा (पा) | ६४.४४ | तं कर्मप्रत्युत्तुययो (उ) | २४२.१६६ | तंडुलस्वयथाचर्म (पा) | ६६.६२ | तंतुतृणघोरसंकाश (उ) | २४२.१६८ | तंदृष्ट्वा देवसंकाशं (भू) | ११२.३ |
| ज्ञाप्येतेपितरौ नैव वि (पा) | ११४.२७१ | तं कालनेमिसमरेद्विपतां-(सु) | ४१.१७७ | तंडुलचूर्णपकेन (क्रि) | २२.६५ | तंतुतृणज्यंतरगतं-(सु) | ४१.१८३ | तंदृष्ट्वा दैत्यराजा (उ) | २४०.२० |
| ज्ञाप्येतिविरचितं विनिते (पा) | १०६.५२ | तंगत्वापुंडरीकाक्षोदेव (सु) | ४.६३ | तंडुलैरक्तगालैः (सु) | २४.४८ | तंतुतृणलोच्यंतरगतं-(सु) | ४१.१८३ | तंदृष्ट्वा दैत्यराजा (उ) | २४०.२० |
| ज्ञेयं तदन्नमुच्छिष्टं (भू) | ३७.३८ | तं गर्जमानंददशमेहात्मा (भू) | ४३.८२ | तंडुलैरुक्तगालैः (सु) | ६६.४३ | तंतुतृणलोच्यंतरगतं-(सु) | ४१.१८३ | तंदृष्ट्वा दैत्यराजा (उ) | २४०.२० |
| ज्ञेयः समूर्तः सुतराम (क्रि) | ४.२६ | तंगर्भसमारोप्यबहिः (उ) | २२४.४५ | तंतुदृष्ट्वाप्रनृत्तोहं-(सु) | १८.१३६ | तंतुतृणलोच्यंतरगतं-(सु) | ४१.१८३ | तंदृष्ट्वा दैत्यराजा (उ) | २४०.२० |
| ज्ञेयास्त्वष्टदेवोवाः (क्रि) | १.३४ | तं गिरि सर्वतो भद्रं (भू) | ८८.७ | तंतुमायाविनंददृष्ट्वादे-(सु) | ४६.७७ | तंतुतृणलोच्यंतरगतं-(सु) | ४१.१८३ | तंदृष्ट्वा दैत्यराजा (उ) | २४०.२० |
| | | तंगुणंतुतिरस्कृत्य (पा) | १०८.१२ | तंतुसंपादयाम्यद्यमद्य-(सु) | १३.२७२ | तंतुतृणलोच्यंतरगतं-(सु) | ४१.१८३ | तंदृष्ट्वा दैत्यराजा (उ) | २४०.२० |



भोपयमहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणो

१४८

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| तं दृष्ट्वापुंडरीकाक्षः (उ) | २१६.४२ | तं दृष्ट्वावीडिनोराजः-(स्व) | २७.१६ | तंतत्वाहंप्रवक्ष्यामियथा (सु) | २.८८ | तंप्रयातंपतिश्रेष्ठनयनै (पा) | १२.२४ | तंरुधतदायां (उ) | १३.५ |
| तंदृष्ट्वाप्यथवास्पृ- (पा) | ७६.२५ | तं दृष्ट्वा समनुप्राप्तं (भू) | ४७.२६ | तंनित्यमादरेणेशो-(पा) | १०६.८३ | तं प्राप्तंकातिकंष्ट्वा (उ) | ११८.१६ | तंलोकं विपुलं पुण्यं (उ) | २२६.८२ |
| तंदृष्ट्वाप्रस्थितानल्प- (सु) | ४३.४८३ | तं दृष्ट्वासर्वतोर्था (स्व) | २१.४४ | तंनिवारयितुं शक्तो-(सु) | १६.१५१ | तं प्राप्तंगरणपुत्र (उ) | ७.५५ | तंवंदतेद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १३.६१ |
| तं दृष्ट्वाप्राहसाकंठा (उ) | १५.४८ | तं दृष्ट्वासर्वलोके (उ) | २४२.५२ | तंनिहस्यमहावी (उ) | २४२.२७२ | तंप्राहदेवोभूयोपिल (सु) | ४.६६ | तंवदंरक्षतेनित्यं (स्व) | ४१.१० |
| तं दृष्ट्वाब्राह्मणं (स्व) | २२.२८ | तं दृष्ट्वासहसा (उ) | २४५.२७७ | तंनीलपर्वतवरदेवानां-(सु) | ३१.८५ | तंवघ्नमिपुनस्त्वेपुनि (पा) | ३०.४६ | तंविनिजित्यसमरेवि- (सु) | १२.६७ |
| तं दृष्ट्वाब्राह्मणं-(उ) | १२८.३७ | तं दृष्ट्वासहस्राप्रेतो-(उ) | १२६.६५ | तंनेच्छतीपतिसालु (उ) | २४७.१८ | तं बाणंप्रज्वलतंसद्यो (पा) | ६२.४४ | तंविस्मितमुवाचे (उ) | २०३.४१ |
| तं दृष्ट्वाब्राह्मणंसर्व- (स्व) | २३.२ | तं दृष्ट्वासात्विकै-(उ) | १०६.१६ | तंनेतुमुद्यतेविप्रचकं (पा) | ४४.४५ | तं बाणंमुक्नमालोक्य-(पा) | २७.४३ | तंविस्मितसमादा (उ) | २४५.६३ |
| तं दृष्ट्वाभयसंश्रयो (उ) | १५१.४८ | तं दृष्ट्वासाधकंसगर्भं (सु) | ३.६३ | तंयतिप्रतिवाक्यं (उ) | ७७.३३ | तं बालंपोषपिष्यामि (उ) | १६६.५८ | तंवीर्यैस्मभूतानि (गु) | ४१.१७८ |
| तंदृष्ट्वाभरतः शीघ्रं (पा) | २.१४ | तं दृष्ट्वासुमतिप्राह-(पा) | ३५.१५ | तंप्रचक्षुमर्हभागाः (स्व) | १.१२ | तं भवित कामंपतितंशर-(पा) | ७२.७४ | तंवीर्य पतिंववीरः (पा) | २७.४८ |
| तंदृष्ट्वामहदाश्चर्यं (उ) | ६६.५ | तं दृष्ट्वासैनिकाः (पा) | ३८.६२ | तंपापनिहनिष्यामि (उ) | २११.१० | तं ब्रह्मालोकपालाना संशृ- (सु) | ३६.४५ | तंवीर्य राजा (पा) | ५२.६२ |
| तंदृष्ट्वामहदाश्चर्यं (उ) | १५१.५१ | तं दृष्ट्वा हर्षमायानः (भू) | ६०.५ | तंपापिच्छिगार्ता (पा) | १०१.३३ | तंमां त्वमतिगर्वेणदेव-(सु) | ४.१६ | तंवीर्य मयददृशुः मयानं (भू) | ३६.४८ |
| तंदृष्ट्वामुनिशार्दूलो (उ) | २४५.५५ | तं दृष्ट्वा हर्षं संयुक्ता (भू) | ४.५७ | तंपालयानाः सर्ववैतदा (पा) | ३७.५ | तंमुक्तगात्रसंवीर्य (पा) | ५२.३२ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | २४.५६ |
| तंदृष्ट्वायमुनाभ्राता (त्र) | १७.१७ | तंदृष्ट्वाहृषिताः सर्वे (उ) | ५५.१६ | तंपीडयमानमालोक्य (उ) | १०१.१४ | तंमुनिकृच्छं सन्तप्त (सु) | ३६.११३ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | ४२.३५ |
| तंदृष्ट्वाहृषिताः सर्वे (उ) | ५५.१७ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तं पुत्रं निहतं श्रुत्वा-(भू) | २६.१ | तंमुनिच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वाहृषिताः सर्वे (उ) | ५५.१७ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्रपूर्वजंराज्यो-(सु) | ३७.६ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वावायससराजः (उ) | २४२.१६७ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्ररहितं दृष्ट्वा-(उ) | ५५.२३ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वावायससर्वे (उ) | २४२.२०२ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्ररहितं दृष्ट्वा-(उ) | ५५.२३ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वा रावणो (पा) | ६.२७ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्ररहितं दृष्ट्वा-(उ) | ५५.२३ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वावायससर्वे (उ) | २४५.६६ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्ररहितं दृष्ट्वा-(उ) | ५५.२३ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वाविद्रुताः (उ) | २४५.१४४ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्ररहितं दृष्ट्वा-(उ) | ५५.२३ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |
| तंदृष्ट्वाविमिता (उ) | ३१.२५ | तंदृष्ट्वाहृषितोराजा (उ) | ५७.२३ | तंपुत्ररहितं दृष्ट्वा-(उ) | ५५.२३ | तंमुच्छिन्नतंतः कृत्वातय (पा) | २५.७ | तंवेकस्मिन्नितंदृष्ट- (पा) | १४.५६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| तंश्रीनिकेतनं सौम्यं (सृ) | १८.३१४ | तएवसायबोलोकेगोविद (उ) | २१६.३० | तच्छीघ्रं तावथात्मान- (सृ) | ४३.२५४ | तच्छ्रुत्वायवनः क्रुद्धो (उ) | २४६.३६ | तच्छ्रुत्वाविस्मिनो (उ) | ४.५१ |
| तंसत्सरतममन्थेनास्मि (सृ) | १६.३२८ | तएवसांप्रतंजातेति (उ) | २०६.३२ | तच्छ्रुद्गद्वयनिर्भिन्न (क्रि) | ७.२४ | तच्छ्रुत्वारधुनायस्य (पा) | ३८.५६ | तच्छ्रुत्वाशंकरेणावनं (उ) | २५४.५८ |
| तसंशितशरंदष्टवा (पा) | ६३.७२ | तक्रंघृतंतथाक्षीरं विक्र- (भू) | १७.३६ | तच्छ्रुणुष्वनरव्याघ्र (सृ) | ३४.३५४ | तच्छ्रुत्वाशयः प्रीतः (पा) | ६६.१८२ | तच्छ्रुत्वाशक्तिमनाः (ब्र) | १२.४७ |
| तं संबोध्य महास्तोत्रै- (भू) | २३.८ | तक्रंघृतंतथाक्षीरं (पा) | ८६.४७ | तच्छ्रेयर्वैष्णवानांतु (घ) | ८३.३१ | तच्छ्रुत्वाशयः शंभुं (पा) | १०४.४१ | तच्छ्रुत्वासनुमांप्राह (उ) | २८.१६ |
| तं समम्प्यर्च्य विद्वांसं (भू) | ६७.१६ | ताक्ष्यंश्चार्चिष्टनमिश्च (सृ) | १८.२४ | तच्छ्रीशस्यपद (उ) | २४५.२८१ | तच्छ्रुत्वारामकृष्णोत् (उ) | २४७.२४ | तच्छ्रुत्वासभृगुवाक्यं (उ) | १११.११ |
| तंसमागतमालोक्य (उ) | २१५.८ | तच्चदुर्गतिदंभूनामि (पा) | ६७.८८ | तच्छ्रुत्वाकुपितः शक्रः (पा) | ४४.६५ | तच्छ्रुत्वारोपताम्राक्षः (पा) | २३.३१ | तच्छ्रुत्वासंमतं कृत्वा (सृ) | ४२.६३ |
| तंसमाधायगुणिनं (सृ) | ४०.३६ | तच्चष्ट्वा वासहृष्टा (उ) | २३१.६ | तच्छ्रुत्वा च वचः प्राह (भू) | ७७.६० | तच्छ्रुत्वारोपताम्राक्ष (पा) | ६५.२६ | तच्छ्रुत्वासवैपौरजनाः (उ) | २५२.८७ |
| तंसमारिण्यबाहुभ्यां (पा) | ७१.२७ | तच्चपद्मपुराभूतं पृथिवी (सृ) | ४०.३ | तच्छ्रुत्वाजाबवान् (उ) | २४६.२७ | तच्छ्रुत्वावचनंतस्य (ब्र) | ११.६४ | तच्छ्रुत्वासहितोदेवै (ब्र) | ७.३८ |
| तंसं प्लविवायांतं (क्रि) | ५.२०१ | तच्चयुतंकुसुमंष्ट्वा (क्रि) | १०.५१ | तच्छ्रुत्वातांतुकाभेन (पा) | ५७.३० | तच्छ्रुत्वावचनंतस्य (उ) | १६६.३३ | तच्छ्रुत्वासेवकंश्चेष्टं- (पा) | १३.५० |
| तंसर्वरश्मकदेवं (उ) | २३८.४४ | तच्चापिचाभवत्कुत्र (सृ) | १०.८७ | तच्छ्रुत्वाताः प्रजाः (पा) | १६.४७ | तच्छ्रुत्वावचनंतस्य (उ) | १५१.७७ | तच्छ्रुत्वाहपितोऽयं (पा) | २४५.६ |
| तंसिहजंयवान् हवा (उ) | २४६.११ | तच्चापिजगृहेरोपात्क (पा) | ५२.१५ | तच्छ्रुत्वातुमुनिहृष्टो (पा) | ५६.७४ | तच्छ्रुत्वावचनंतस्य- (भू) | ४२.३३ | तच्छ्रुत्वाहपितोऽयं (पा) | ४७.३१ |
| तं स्तूयमानं सुरसिद्ध- (भू) | ६६.४५ | तच्चित्रंबीक्ष्यमुनयः (पा) | ६७.८० | तच्छ्रुत्वातुवचस्तस्य- (पा) | १८.२८ | तच्छ्रुत्वावचनंतस्या (पा) | ७२.३४ | तच्छ्रुत्वाचगिरि- (सृ) | ४४.८४ |
| तंसमृत्वाचैवजप्त्वा (पा) | ३५.४७ | तच्चित्रंबीक्ष्यलोकास्ते (पा) | २२.५२ | तच्छ्रुत्वाद्दुःखिनो राजा (पा) | १४.६३ | तच्छ्रुत्वावचनंतेपा- (पा) | ३५.२६ | तच्छ्रुत्वायोनैवपश्यामि (भू) | १२.११० |
| तंसर्वणपत्ररचितैकल- (पा) | ३६.२२ | तच्चित्रं रंकितः श्रीशप (उ) | २२४.२६ | तच्छ्रुत्वादेवदेवस्य (उ) | ४५.२४ | तच्छ्रुत्वावचनंतेपा (पा) | ५०.४ | तज्जयायमहास्त्रमे (पा) | ३८.५६ |
| तंहृत्वा निष्कृतिस्तस्य (पा) | ३४.६ | तच्चैतसाप्रभजना (पा) | ८०.६६ | तच्छ्रुत्वाधेनुपूजासं (पा) | ३१.१६ | तच्छ्रुत्वावचनं रम्यं- (पा) | ३२.१२ | तज्जलं चंगुहीत्वा चपात्र (पा) | १०४.६२ |
| तंहृत्वासमरैसीतां (उ) | २४४.२० | तच्चैवशिक्षरं (उ) | १६.१२ | तच्छ्रुत्वातृपतिश्रेष्ठः (पा) | २१.१६ | तच्छ्रुत्वावाक्यमीश- (पा) | ४४.४२ | तज्जलं शोष्यतेसुर्यं (भू) | ६६.१७२ |
| तंहृत्वासर्वं वेदांश्चसा (उ) | २३०.२८ | तच्छ्रुत्वातृपतिश्रेष्ठः (सृ) | ३१.६४ | तच्छ्रुत्वाभक्तिभावेन (क्रि) | २१.६५ | तच्छ्रुत्वावाक्यमेतस्य (पा) | ३५.२७ | तज्जलैस्त्वमगर्भं (उ) | १३२.७८ |
| तंहृत्वा सुमयदैत्योती (क्रि) | २.४६ | तच्छ्रुत्वाजलनिर्धूमस (उ) | २३.७८ | तच्छ्रुत्वाभरतः प्राह- (पा) | ५६.५४ | तच्छ्रुत्वावाडवोधी- (पा) | २२.६ | तज्जाराजकोवसा (पा) | ५७.६६ |
| तएवचायनंतस्यतरमा (उ) | २२६.५१ | तच्छ्रुत्वापाज्जगतांघात्री (उ) | २३१.२६ | तच्छ्रुत्वाभापितंतस्य (पा) | ५१.१ | तच्छ्रुत्वावासुदेवोय (उ) | २४६.२० | तज्जाराजकोवसा (पा) | ३०.२० |
| तएवपूजनेमत्रास्तए-वो- (सृ) | २१.११८ | तच्छ्रुत्वाप्राप्तमवालो (उ) | १२.२१ | तच्छ्रुत्वाभुनिवयं (उ) | २४२.११४ | तच्छ्रुत्वाविबुधावाक्यं- (सृ) | ४५.२३ | तज्जाराजकोवसा (पा) | १४.८ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१५०

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|--------|----------------------------|--------|------------------------------|---------|
| तटस्वभाप्रयातव्यप्रती (सु) | १८.१५८ | नतउत्थायतोविप्रोतत् (क्रि) | २५.२४ | ततः कलशमादाय (उ) | २२३.६४ | ततः कियद्विदिवसैः (क्रि) | १३.१५६ | ततः क्रमेणदिवसे- (सु) | ४३.८६ |
| तटस्वभाप्रयातव्यं (सु) | १८.१५९ | ततउत्तिवतगर्वोयं (उ) | १७८.६ | ततः कलांशवित्तस्य- (स्व) | ३.४१ | ततः किलकिलाशब्दैः (उ) | १०१.१६ | ततः क्रुद्धः सहस्रांशो (उ) | २४६.६८ |
| तटाकत्रिधिवत्सर्व- (सु) | २८.३ | ततउद्धृत्यसर्वांगमा- (पा) | १०८.५६ | ततः कलिप्रियाब्रह्मा (ब्र) | २०.२० | ततः कुंजररूपांताम- (भू) | २८.६६ | ततः क्रुद्धः सहस्रा (उ) | २४५.१८१ |
| तटाकारामकूपेषुत्रिदशा (सु) | ६.२६ | ततउद्धृत्यइष्टबंधु (उ) | ८६.३५ | ततः कल्पयतांतुसप्त- (सु) | २१.२०८ | ततः कुंडलकान्मुक्तो (पा) | ६५.७१ | ततः क्रुद्धेनवैसष्टा- (सु) | ३.१०२ |
| तटाकारामकूपेषुवापी (सु) | २७.१ | ततउर्ध्वपिशाचास्यो (उ) | १२८.११६ | ततः कामयामांन- (सु) | २२.२६ | ततः कुंजाम्रकगच्छे- (स्व) | ३२.५ | ततः क्रुद्धोजगन्नाथो (ब्र) | १०.२० |
| तटिर्नपुंलनेचैत्र (क्रि) | ११.५ | ततएवस्वभावोयं (पा) | ७७.४८ | ततः कानीलभेत्काम- (उ) | १७४.२१ | ततः कुमारजगदुः (उ) | १६५.७३ | ततः क्रुद्धोमहांजा (उ) | २३१.६ |
| तटैर्मन्त्रैर्विशेष- (उ) | १५६.१५ | ततः कतिपयाहस्तु (उ) | २४५.१०० | ततः कार्याणि तसिद्ध (पा) | ६४.१५४ | ततः कुंभनवंशुभ्रं (उ) | ३०.२० | ततः क्रुद्धोमहातेजा (उ) | २४२.३०८ |
| तडागंरवानयामास- (स्व) | ३०.६ | ततः कतिपयकाले- (उ) | १३५.१०७ | ततः कालात्मकोयोसौ (सु) | ३.१३८ | ततः कुतच्छ्रुदिव्यं (क्रि) | ११.३४ | ततः क्रुद्धोमहावीर्यो- (उ) | २४१.५६ |
| तडागं सर्वतो भद्र (भू) | ४६.१० | ततः कथंचिदुप्लुत्य- (उ) | १७८.२१ | ततः कालेनमहता (क्रि) | ७.१२४ | ततः कुण्ठेनैवस- (उ) | २५२.११ | ततः क्रुद्धोवज्रपाणि (उ) | ६६.८ |
| तडागं सर्वतोभद्रं पुण्यतो (भू) | ४६.५ | ततः कदम्बवताप्राप्तः (उ) | १८३.२६ | ततः कालेनमहता (उ) | ४.२८ | ततः केशवर्नमार्थं (क्रि) | ११.१२६ | ततः क्रुद्धोमहादेवः (उ) | १७.७६ |
| तडागग्रामकर्तारः (क्रि) | २.१०२ | ततः कदाचित्तदंश (उ) | ८०.४४ | ततः कालेनमहता (उ) | ४२.३३ | ततः कैलासमगम (उ) | २१.१५ | ततः क्रोपरीताशः (उ) | १०१.२५ |
| तडागवापीसत्संकूपेना (पा) | १०६.६६ | ततः कदाचिदायाते (उ) | १७७.११ | ततः कालेनमहता- (सु) | २२.४१ | ततः कोटिभुजोर्दंत्यो (उ) | १८.६२ | ततः क्षितिममाकृत्वा | ३.५५ |
| तडागानांचवक्ष्य (उ) | २७.५ | ततः कदाचिद्वहते- (उ) | ३१.१६ | ततः कालेनमहता- (सु) | १०.६६ | ततः कोपप्रयास्येत (सु); | ४.५३ | ततः क्षुधामयाहृष्टो (उ) | १०६.२६ |
| तडागानि सहस्राणि (सु) | १०१.१० | ततः कदाचिद् भगवान् (उ) | ८०.१३० | ततः कालेनमहता- (उ) | १७६.५४ | ततः कोपपरीतामाह- (सु) | ४६.१० | ततः क्षुर्गिडिनामित्यं (उ) | १०६.२७ |
| तडागेचोत्तमंस्ना (उ) | ३८.२५ | ततः कन्याश्रमंगत्वा- (स्व) | २७.७६ | ततः कालेन संस्थेय (उ) | १६१.१० | ततः कोपपरीताम्ना (उ) | १०२.१२ | ततः क्षुद्रहृष्टो जाना- (सु) | ६.६८ |
| ततश्चाभाष्यतंगोप- (पा) | ७१.२६ | ततः करणसंदोहे- (सु) | ४३.२३८ | ततः कालेप्रणष्टास्ते (सु) | १०.५६ | ततः कोपसमाविष्टो (सु) | ४.६७ | ततः क्षुद्रप्रभावेन (उ) | ८०.३५ |
| ततश्चात्राहन्मुखा (पा) | १०८.५० | ततः कर्णस्तिमादाय (क्रि) | ७.२५ | ततः काव्यससस्मार (उ) | १७.६६ | ततः कोपसमाविष्टो (उ) | २४६.६४ | ततः पंचजनस्यासौ (उ) | २१.७ |
| ततश्चाश्वास्यपितरो (उ) | २४५.३८४ | ततः कर्दमसंस्पर्शमात्र (उ) | १८८.३१ | ततः काव्यस्तुतान्- (सु) | १३.२०७ | ततः कोपः समुद्भूत- (सु) | ३८.५६ | ततः पंचवतेनवाद्राधु (भू) | ७.३० |
| ततउर्ध्वचैविभोर्हा (उ) | ६.१३ | ततः कर्मवशाज्जेतु (स्व) | ६१.८७ | ततः काश्मीरनगर- (उ) | १८०.६८ | ततः कोपानलोद्भूत- (सु) | ४३.२४० | ततः पत्राणिसगृह्ण- (पा) | ११४.२३० |
| ततउत्तरीयतुरगाज् (उ) | १८६.३३ | ततः कर्मावसान्तु (क्रि) | १३.१५६ | ततः किमहोद्राजा (उ) | १८.५४ | ततः कोल्हापुरेनाम (उ) | १८०.४२ | ततः पंपासरोमत्वा (उ) | २४२.२७१ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|---------------------------------|---------|----------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| ततः पयः सेचनेचगा-(पा) | १०८.५४ | ततः पुण्याजनपदाश्चत्वारो-(स्व) | ८.३४ | ततः प्रभन्नंस्वबलं (उ) | १००.३२ | ततः प्रभृतिलोकेस्मि-(भू) | २८.८७ | ततः प्रसन्नोऽभगवान् (उ) | २३३.१२ |
| ततः परकिमधिकं (उ) | ७१.३१७ | ततः पुत्रोवर्षमध्ये (ब्र) | ५.३४ | ततः प्रभात उत्थाय-(सृ) | २१.२३५ | ततः प्रभृतिविषेन्द्रवि (पा) | ६८.३४ | ततः प्रसन्नोऽभगवान् (ब्र) | ८.१४ |
| ततः परदेवनदीवार्गधी (उ) | १६८.१ | ततः पुनरथोवह्निमास्ता (सृ) | २२.६ | ततः प्रभातसमये (ब्र) | १०.२ | ततः प्रभृतिवैदेवान्मा-(सृ) | २२.७ | ततः प्रसन्नो लधर्मा (उ) | २३८.१४७ |
| ततः परमातयवतः-(स्व) | ३.२७ | ततः पुनरुवाचेदं (उ) | ३६.३८ | ततः प्रभातसमये (उ) | ३०.२७ | ततः प्रभृतिशुक्लोत्ती (पा) | १०५.२२५ | ततः प्रसादमासाद्य-(उ) | १८२.३० |
| ततः परसोपिपुनद्रि (पा) | ६२.१०२ | ततः पुरस्कृत्यतदा-(सृ) | ४१.१६६ | ततः प्रभातसमये (उ) | ५८.२७ | ततः प्रभृतिस्क्रान्ता-(सृ) | १०.२६ | ततः प्रहसिनेष्टेऽक्रवि-(स्ता) | २०.३४ |
| ततः परमसंक्रुद्धो (उ) | १०४.११ | ततः पुराणश्रवणं कर्त्तव्यं (सृ) | २१.२४० | ततः प्रभातसमये-(उ) | ३१.२८ | ततः प्रविशन्मरीं (उ) | २४८.२ | ततः प्रहस्यभगवान् (क्रि) | २२.४४ |
| ततः पराजितः शक्तः-(उ) | १६८.१० | ततः पूर्वाह्णसमये (ब्र) | ११.३४ | ततः प्रभातेरजनी (ब्र) | १५.५३ | ततः प्रविष्टेलुगर्भ-(सृ) | ३०.५१ | ततः प्रहस्यभगवान् (उ) | ६.२६ |
| ततः परेणमुनयोजल-(स्व) | ८.१५ | ततः पूर्वभूशं वस्ता-(सृ) | ३५.४८ | ततः प्रभातेविमलेकृत (क्रि) | २२.१४१ | ततः प्रवृत्ताः पुण्योदा (स्व) | ८.३२ | ततः प्रहस्यराजा (उ) | २४०.२३ |
| ततः पादोदकं प्राप्नो (क्रि) | ११.१४१ | ततः पृच्छाम्यहं देवि (भू) | ८८.१८ | ततः प्रभातेविमले (क्रि) | २३.४२ | ततः प्रवृत्तावेताला-(पा) | ३४.७० | ततः प्रहस्यमर्वज-(सृ) | ४३.३६४ |
| ततः पारिलवंगच्छे-(स्व) | २६.१० | ततः पुथुं द्विजश्रेष्ठः (भू) | २८.६४ | ततः प्रभातेविमले (उ) | ५१.२२ | ततः प्रविश्यस्वगृहे (ब्र) | ११.७० | ततः प्रहृष्टमनसात-(उ) | २३८.३ |
| ततः पावकसंकाशं (उ) | २४१.६१ | ततः पौरुषं क्रोधयुवतः (भू) | ४३.४८ | ततः प्रभातेविमलेन (क्रि) | २२.६० | ततः प्रसन्नः प्रोह (उ) | २४१.३ | ततः प्रहृष्टमन (उ) | २४०.१३ |
| ततः पितामहः सम्यक्-(सृ) | ३६.६६ | ततः प्रक्षालयतस्या (उ) | २१४.३ | ततः प्रभातेविमले (उ) | २४५.२८३ | ततः प्रसन्नवदनोदेव (सृ) | १४.१०६ | ततः प्राहृष्टवदन (उ) | २४०.१६ |
| ततः पितामहस्तस्य-(उ) | २१४.४३ | ततः प्रजापतिर्देव (उ) | २३०.१४ | ततः प्रभातेविमले-(सृ) | २३.५५ | ततः प्रसाद्यदेवेशः (सृ) | ७.६५ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पितामहः ब्रह्मा (उ) | २४०.४१ | ततः प्रजाविनश्येयुर्म-(भू) | २८.११२ | ततः प्रभुत्वाद्भावाना-(सृ) | ४३.२३६ | ततः प्रसन्नासादेवी (ब्र) | १०.६ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पितृव्यमाग्नस्स-(सृ) | १०.२७ | ततः प्रणम्यभूपालंयथा (उ) | १८०.६१ | ततः प्रभुत्वात्कुलस्थ-(सृ) | ३७.६० | ततः प्रसन्नोऽसातोहंज (पा) | ४६.१४ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पिताकमाकृष्य (उ) | १८.१० | ततः प्रतिदिनं तत्र-(क्रि) | १७.२०० | ततः प्रभृतिचर्ता-(पा) | ७१.६६ | ततः प्रसन्नोदेवे (उ) | २४१.५ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पितादिकं कुयदावा-(सृ) | ६.१०७ | ततः प्रदक्षिणीकृत्य (सृ) | २५.२८ | ततः प्रभृतिचैवाहं-(सृ) | ३३.१०२ | ततः प्रसन्नोऽभगवा (उ) | २३१.३३ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पीत्वाण्वान्सर्वा-(सृ) | ३६.५० | ततः प्रदोषसमयेगो (उ) | २४५.१४२ | ततः प्रभृतिहवेती-(उ) | १५१.६१ | ततः प्रसन्नोऽभगवान् (उ) | २४०.५ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पुण्यस्येजातेयदा (उ) | १०७.२२ | ततः प्रबुद्धासुरराज (उ) | १४.३६ | ततः प्रभृतिवचोर्ण (उ) | ६०.४६ | ततः प्रसन्नोऽभगवान् (उ) | २४२.५४ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |
| ततः पुण्यतमनास्ति (स्व) | ३६.७५ | ततः प्रबोधयेद्वा (उ) | ३०.२२ | ततः प्रभृतिरार्जवतं (उ) | २०३.२५ | ततः प्रसन्नोऽभगवान्सर्वं (उ) | २३२.६६ | ततः प्राहृष्टमनसात-(उ) | २४०.१३ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१५२

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|---------|-----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------------|--------|
| ततः प्राहृषी (उ) | २३६.२६ | ततः शापंददीदेवस्तयोः (उ) | १०४.७ | ततश्चपापान्मुक्तकुस्त्वं-(स्व) | २६.३४ | ततश्चावाहनं कुयाद् (क्रि) | ११.६० | ततः संवत्सरस्यांते (सु) | १२.४३ |
| ततः प्रियंवदादेवी (पा) | ७४.१४६ | नतः शापं प्रदास्यामि (भू) | १०८.२६ | ततश्चपापान्मुच्येय-(स्व) | २६.३१ | ततश्चाश्वः समुत्पन्नो (सु) | ४.५८ | ततः संवत्सरेपूर्णे सपित्री (सु) | १०.२२ |
| ततः प्रियंवदादेव्या (पा) | ७४.१४८ | ततः शाङ्गं समादाय (उ) | २४६.१६ | ततश्चपारणचक्रं (उ) | ३०.७६ | ततश्चिन्तापरोजातो (उ) | ४६.२० | ततः संवर्जयेद्द्वैश्वचक्रः-(स्व) | ३१.१४६ |
| ततः प्रोवाचघर्मात्मा (उ) | २४२.२७७ | ततः शापविमोक्षार्तां (उ) | १७८.३४ | ततश्चपांसमासाद्य (स्व) | ३८.७२ | ततश्चिन्तापरोराजा (उ) | ५६.६ | ततः संशयमासपा-(सु) | ३६.१४५ |
| ततः प्रोवाचभगवान्क (उ) | २३१.३७ | ततः शिवस्य शनकं-(सु) | ४३.२३० | ततश्चप्रमदाङ्गं दमाश्वर्यं (पा) | ७४.८१ | ततश्चक्रोद्यभगवान् (सु) | ४.१५ | ततः सखीजनैस्तस्या (पा) | ८३.२६ |
| ततः प्रोवाचभगवान् (उ) | २४६.१०० | ततः शीतमये मार्गे-(भू) | १६.५ | ततश्चप्रेताः संप्राप्ताः (उ) | ६६.३४ | ततश्चैगितविद्रामोभरतं (सु) | ३८.११४ | ततः सगजमास्थाय इन्द्र (उ) | १६८.२५ |
| ततः प्रोवाचभगवान् (उ) | २३३.१ | ततः शीतां शुरभव (सु) | ४.५२ | ततश्चप्रेषया मासशक्रो-(सु) | ४४.१६५ | ततश्चोन्नतमया तस्यै (उ) | ४२.३८ | ततः सचक्रं भगवान् (स्व) | ३६.४६ |
| ततः प्रोवाचविप्रभिः (उ) | २४१.४ | ततः शुक्लांबरधरो (उ) | २४४.६८ | ततश्चबाहुदांगच्छे-(स्व) | ३२.३२ | ततः श्राद्धं प्रकुर्वीत (उ) | ७६.४१ | ततः सभाजिते (सु) | १३.६० |
| ततः प्रोवाचहर्षे (उ) | २४२.३ | ततः शुन्यविलिप्तांग (उ) | १८८.३२ | ततश्चब्राह्मणान् (उ) | ६३.२५ | ततः श्रीशैलमासाद्य (उ) | १८०.५३ | ततः सत्वरयामुन्नत-(सु) | १३.२४३ |
| ततः प्रोवाचहृष्टा (उ) | २४२.११२ | ततः शुभानिकर्माणि (स्व) | ४२.१३ | ततश्चब्राह्मणोलोकं (स्व) | ६२.२२ | ततः श्रुत्वा वचोदे (उ) | १३.४१ | ततः स नाडो मध्यस्थः (भू) | २६.२४ |
| ततः फलगुणजेद्राजन् (स्व) | ३८.१८ | ततः शुभेक्षणैस्तस्य पृष्टा (क्रि) | ५.८७ | ततश्चचानुषजन्म (उ) | १२६.१६१ | ततश्चशब्दयथापूर्वसचक्रं (सु) | १३.८३ | ततः सनातनः श्रीमान् (ब्र) | ६.२ |
| ततः शकाः सयवनाः (उ) | २०.३० | ततः शुभेन ते पृष्टा (उ) | १६.२१ | ततश्चराहुः पुनरेव (उ) | ६६.३४ | ततः षष्ठिसंस्मरणसु (सु) | ८.१४८ | ततः सपक्षाविप्रपेक्षसा (क्रि) | ३.६१ |
| ततः शकाः सहस्रा (उ) | २४५.१८४ | ततः शुभोत्क्रिद्योपि (उ) | १०१.१० | ततश्चरेतनियमात् (स्व) | ६०.२३ | ततः संकोचयामास (उ) | १५.१६ | ततः सगरिजग्राह्णं (उ) | १६८.४६ |
| ततः शक्तिधरः शक्ति (उ) | १०१.४ | ततः शुभो महादैत्यो (उ) | १२.२ | ततश्चसर्वेष्वसुर (उ) | ६७.३३ | ततः संचितप्रदेत्येन्द्रः (सु) | ४२.६७ | ततः सपुत्रकामत्वा (उ) | २४१.६ |
| ततः शक्रः स्वयं (क्रि) | ६.१४६ | ततः शून्यमिदं सर्वं (उ) | २२७.५७ | ततश्चलोककृच्छ्रेः पुनः-(उ) | १६८.६१ | ततः सदर्शयामासकन्या (उ) | १५२.२३ | ततः स वल्लवंहंवा (उ) | १६८.६१ |
| ततः शक्रोजगामाशु (ब्र) | ८.८ | ततः शून्याणि भगवति-(उ) | २५१.३ | ततः श्चवाहणीदेवीस (उ) | २३२.३४ | ततः संन्यासमादाय (उ) | २१८.२० | ततः सभगवान् गत्वा (सु) | ८.६६ |
| ततः शनगुणं भूयाद्वि (उ) | २०७.४२ | ततश्चकुशावधनाभि (पा) | ११४.१८३ | ततश्चसागरिकास्रैः (पा) | ८३.२२ | ततः संपूजयेददेवं सर्वं (उ) | १२४.४६ | ततः समभवत्तस्यां-(सु) | ३०.६३ |
| ततः शनैः समुत्थाय-(उ) | १८८.२० | ततश्चतौ भद्रवचन (उ) | ८८.४५ | ततश्चार्थगुणपार्थ (स्व) | ३६.११२ | ततः संपूजितां देवीं (क्रि) | ६.५८ | ततः समभवद्युद्धं (उ) | ६७.१८ |
| ततः शरं मुमोचार्स्मै (पा) | ४२.७३ | ततश्चनैमिषगच्छे-(स्व) | ३२.२४ | ततश्चालकनन्दा (उ) | २४०.४५ | ततः संपूरयामासमुखं (उ) | १२.८ | ततः समभवद्युद्ध (उ) | ६८.१४ |
| ततः शापंददौ कोपाज्ज (उ) | १७८.३२ | ततश्चंद्रावलोकस्तुतारा (सु) | ८.१६० | ततश्चावसरप्राप्ते शुद्धे (सु) | २०.४४ | ततः संभावितः प्रीत्या-(उ) | १२८.२०५ | ततः समयमासाद्य (क्रि) | ६.१०८ |

श्रीपद्ममहपुराणम् ॥ श्लोकानुक्रमणी

१५३

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-----------------------------|--------|------------------------------|--------|---------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| ततः समाधश्चापि (क्रि) | ५.२६ | ततः सांदउवद्भू मोषण (उ) | १०७.८ | ततः सुवर्णतिलकेनात्वा (स्व) | १८.४८ | ततस्तत्सलिलं (क्रि) | ६.१२० | ततस्तान्वापिनः सर्वाः (क्रि) | २२.२८ |
| ततः समानवयसाकेन (उ) | १८८.१५ | ततः सातपसाक्षीणा (उ) | १२६.४६ | ततः सुहृष्टाः सुरमानुषा (उ) | २३२.७० | ततस्तद्ब्रह्माणोहस्ते (उ) | ६.३६ | ततस्तांप्रतिमां (क्रि) | ६.२०२ |
| ततः समीक्ष्यविष्णुः (सु) | १३.२४२ | ततः सापचयत्राक्षी- (पा) | ७२.११० | ततः सूर्यस्यभवनं (स्व) | ६२.२१ | ततस्तद्भ्रूलतासंज्ञा (उ) | १०३.१६ | ततस्तांप्रोक्ष्यः शीताद् (सु) | १३.२५० |
| ततः सनुकिटमुद्यम्य (उ) | २४७.४० | ततः सापावंतीक्रुद्धा- (उ) | ११५.२६ | ततः सूर्यारकंगच्छेत् (स्व) | ३६.४१ | ततस्तद्भ्रूलतासंज्ञा (उ) | २५.४४ | ततस्तान्वाच्यमानांस्तु (सु) | १३.२३४ |
| ततः संपूजयेद्देवं लक्ष्म्या (उ) | ३०.११ | ततः साप्रयताबाला (उ) | १५२.१८ | ततः सोतर्हितेदेवेज्यती (सु) | १३.२६४ | ततस्तद्वाक्यमाकर्ण्य (उ) | १६६.८१ | ततस्तान्वाच्यमानांस्तु (सु) | १३.२१७ |
| ततः संप्राप्तेबहुना- (उ) | १८३.३३ | ततः सारीशुकानां च (पा) | ८३.७६ | ततः सोपितमुत्तस्थौ- (क्रि) | ६.१० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान् ब्राह्मणा (उ) | २१४.४ |
| ततः सरभमेरुंडोत्पमा (उ) | १८६.३७ | ततः सासंस्तुतादेवी (सु) | ७४.१३६ | ततः सोप्यब्रवीद्वाक्यं- (सु) | ४०.६२ | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सराजाविप्रर्वे (क्रि) | ६.५८ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततः सोप्यब्रवीद्वाक्यं- (सु) | ४०.६२ | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वजगच्छ्रुय (उ) | २३०.१३ | ततः सालज्जितातेषां (सु) | १२.४८ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वाः षोडश सहस्र (उ) | २५२.६५ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वोपितेदेवागत्वा (उ) | १०४.२७ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वे पुरजनाः (उ) | २४६.१३ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वेश्वरोज्ञात्वा (उ) | ६.१४ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वे सुरास्तत्र- (उ) | १५५.२३ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सर्वज्जेषुतोदैवतैः (सु) | १६.८२ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सशिष्यो गिरिश (सु) | १२.३१ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः समूहमवसनं- (पा) | १०६.८३ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सस्मारभगवान् (सु) | ४३.३०० | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः साक्षाज्जगन्नाथ (उ) | ७१.१०३ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |
| ततः सागणिकाप्रीत्या (क्रि) | १०.४६ | ततः सासन्नतिर्दृष्ट्वा (पा) | १०.१०५ | ततस्तत्प्रणिप्रत्याह (उ) | ७१.११० | ततस्तन्मयतांयातः (सु) | ४३.२३१ | ततस्तान्सकलान्- (उ) | १४.४० |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१५४

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|----------------------------|--------|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| ततस्तुतीर्थास्पदपाद (पा) | ८५.४५ | ततस्तुशमनादेशा (क्रि) | २१.१५ | ततस्तेदानवाभीष्मा (सु) | १४.३६७ | ततस्त्रयोदशीयावाहिनः (पा) | ३६.६० | ततस्सप्रणतोभूमौष्टो (सु) | १४.११ |
| ततस्तुदशमेमासि (उ) | २४५.३५ | ततस्तुष्टातुसातुभ्यं (उ) | ३१.२६ | ततस्तेदानवाः सर्वे (सु) | १३.३०६ | ततस्त्रयोदशोमासि- (सु) | २१.२२७ | ततस्समुद्रंकाकुत्स्थ (उ) | २४२.२६५ |
| ततस्तुदेवकीर्णं (उ) | २४५.३३ | ततस्तुष्टेनदेवेन (उ) | १२६.७४ | ततस्तेनानवाः सर्वे (भू) | १०.१ | ततस्त्रिभुवनश्रेष्ठ- (सु) | ३६.६४ | ततामयोधिप्लवशरोग- (सु) | ३८.६१ |
| ततस्तुदेवराजेन- (सु) | ४.८७ | ततस्तुसाधर्मफलप्रदाभे (सु) | १८.४७३ | ततस्तेनकृतं धर्मं (भू) | १४.१५ | ततः स्त्रीवधपापेन (उ) | १८८.४३ | ततोऽज्ञानतमोधस्य- (सु) | १.४३ |
| ततस्तुधरणीदेवी (उ) | २४४.२८ | ततस्तुसाधर्मफलारणी (सु) | ३२.६४ | ततस्ते पंचकाः सर्वे (भू) | ७.४२ | ततस्त्वं कारणां बृहि (भू) | ४१.५० | ततोऽनुभूयसुरन (क्रि) | २३.३३ |
| ततस्तु नरकगच्छेत् (स्व) | २०.१ | ततस्तुमिहहोण (सु) | ४२.२७ | ततस्तेप्रदुः सर्वे (पा) | ११७.१६६ | ततस्त्वग्न्याभिर्माभीम (सु) | २३.२१ | ततोऽशुभंमहाघोरंश्रुत्वा (सु) | ३७.३६ |
| ततस्तुपालनाथीय (क्रि) | २.३ | ततस्तु सुखसम्पन्ना (क्रि) | २३.६५ | ततस्तेभगवद्भूता (क्रि) | ४.७६ | ततस्त्वष्टाततो (उ) | ५.५६ | ततोऽनाद्यं वरारोहं (भू) | ७६.३७ |
| ततस्तुपुष्पकं नाम (उ) | २४२.३४४ | ततस्तु सुखसम्पन्ना (क्रि) | २३.६५ | ततस्तेभगवद्भूता (क्रि) | ४.७६ | ततस्त्वसौ संयति (भू) | ११५.१ | ततोऽनीलाधवोविप्रः (क्रि) | ५.७ |
| ततस्तुपुजयेद्विप्र (उ) | ४२.१८ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तेभगवद्भूता (क्रि) | ४.७६ | ततस्त्वामिमोदेवकांक्षा (सु) | ४६.४३ | ततोऽनीलवपभावश्च (क्रि) | १५.२७ |
| ततस्तुपूर्ववद्ब्रह्मा (क्रि) | २११.० | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तेयोगमास्थाय (सु) | १०.१२५ | ततस्त्वकादशारेपि- (सु) | १०.८ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुभगवांस्तुष्ट (पा) | ८२.५६ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तेवणिजां भूत्वा (उ) | २१८.५० | ततस्त्वोपघयोनानाः (सु) | २६.६ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुभ्रष्टराज्यो (क्रि) | २१.५२ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तेशूकराः सर्वे (भू) | ४३.५१ | ततः स्थिराभविर्भीमे- (सु) | ४६.५ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुमंडलकृत्वा- (सु) | २१.३३ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तेसनकाद्याश्च (उ) | १६८.६६ | ततः स्थिराभविर्भीमे- (सु) | ४६.५ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुमेरुसावणिग्रहा- (सु) | ७.११२ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तेसममुखाः (उ) | ३८.७६ | ततः स्नात्वा महीपालः (उ) | १८३.४४ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुपुनराध्यायः (क्रि) | ६.१६ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्ते सुप्रिया भार्या (भू) | ११६.३२ | ततः स्वर्गधर्मं राज्ञः (क्रि) | २३.८८ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुपुनराध्यायः (सु) | ३८.४८ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्ते सर्वमुनिभि (उ) | ६१.७ | ततः स्मृतिनिभेज्जीवः (सु) | ६३.३६ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुवैश्वदेवेन (सु) | ६.१८४ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तीव्रमातंग (उ) | ११०.१८ | ततः स्वर्गधर्मं राज्ञः (क्रि) | २३.८८ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुवतिभिः सर्वे (क्रि) | २२.१२६ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तीव्रमातंगी (उ) | ११०.२१ | ततः स्वर्गधर्मं राज्ञः (क्रि) | २३.८८ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुशकटक्षिप्त्वा (क्रि) | १३.५६ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तीव्रमातंगी (उ) | ११०.२१ | ततः स्वर्गधर्मं राज्ञः (क्रि) | २३.८८ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |
| ततस्तुशमनप्रेष्याः (क्रि) | १५.४३ | ततस्तुहर्षसंपूर्णाः (सु) | ४४.१३८ | ततस्तीव्रमातंगी (उ) | ११०.२१ | ततः स्वर्गधर्मं राज्ञः (क्रि) | २३.८८ | ततोऽस्माकमित्तादे (क्रि) | ७.८६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणः

१५५

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------------|-------|--|-------|-------------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| ततो गच्छेत्तथर्मजकन्या- (स्व) | २७.१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र (स्व) | १८.४२ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र (स्व) | २६.१६ | ततो गच्छेत्तमादेवि- (उ) | १६.१ | ततो ग्रथिम उचिष्ट- (उ) | १८.३६ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज ऊर्ध्व- (स्व) | ३२.४१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र (स्व) | २०.६३ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १८.२६ | ततो गच्छेत्तमहतीर्थ मंगम- (उ) | १४.१ | ततो जगाम तिर्यग्गुथिर्वा- (मु) | १६.६३ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज दीर्घ- (स्व) | २५.१५ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र कलिला- (स्व) | २०.४ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १८.६ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | ३८.२२ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १०.४५ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज धर्म- (स्व) | २८.१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र कालिदी- (स्व) | २६.१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २१.१ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २३.२३ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ५.८६ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज ब्रह्मावर्त- (स्व) | २६.५० | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र कुरुक्षेत्रं- (स्व) | २६.१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २०.५६ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.२६६ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ३८.१३२ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज भीमाया- (स्व) | २४.३४ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र कैशिकी- (स्व) | २१.४१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २५.३२ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.१० | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ११०.११ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज मित्र- (स्व) | २६.८६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र क्रतु- (स्व) | २१.६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २०.६६ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.१७ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | २२०.२१ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज रुद्रकोटि- (स्व) | २५.२५ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र गौतम- (स्व) | २०.५८ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २०.७१ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.१० | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ७.१ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज वसुधा- (स्व) | २४.२६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | १८.१५ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | ३२.१ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | ३८.२ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ४.३७ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज मित्र- (स्व) | २४.३७ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | १८.६५ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २०.७३ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | १०.६७ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १८.६३ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज विष्णोः- (स्व) | २६.८ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २६.४१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २२.८ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.६७ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १३.१ |
| ततो गच्छेत्तथर्मज सुतीर्थ- (स्व) | २६.५१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २७.४८ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १६.११ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २२.२१ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १६.१५ |
| ततो गच्छेत्त ब्रह्मर्ष- (स्व) | ३८.२६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २१.११ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १८.१०१ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | १७.३० | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ७.२३ |
| ततो गच्छेत्त मलदधिपु- (स्व) | २५.४ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | ३८.१६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १७.१२ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | १७.३० | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १८.१०५ |
| ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | ३८.७ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २१.२ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २८.१६ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | १८.३८ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १०४.१ |
| ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | ३८.६० | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २१.३५ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २७.२ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | १८.५२ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ११.११ |
| ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | ३६.६६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | १७.५ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २८.४१ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | ३८.११ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | १०४.४ |
| ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २१.३१ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २०.७७ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | ३८.४० | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.३४ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ६३.२२ |
| ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २०.७० | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | २७.५० | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १६.५६ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.३४ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ३८.११ |
| ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | २०.१३ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र तीर्थ- (स्व) | १८.६६ | ततो गच्छेत्त राजेन्द्र- (स्व) | १६.५६ | ततो गच्छेत्त गच्छेत्त (स्व) | २४.३४ | ततो जनेमतां मायां- (उ) | ३८.११ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

१५६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| ततो जहास मेधावी शिष्ये (उ) | १८८.३४ | ततो दमनकमुष्टि (उ) | ८४.१६ | ततो देवगणस्सर्वे (उ) | २४२.३३० | ततो देवी महाशक्त्या तं (सृ) | ३१.६२ | ततो नंदीश्वरो बाणः (उ) | १०१.५ |
| ततो जागरणं कुर्याद् (उ) | ४५.५४ | ततो दगरथो ज्ञातस्तस्य (सृ) | ८.१५५ | ततो देवगणाः सर्वे (उ) | २४६.४८ | ततो देवेन तेषां त्राय्यं (सृ) | १७.७० | ततो नरकशेषे च (क्रि) | २१.५७ |
| ततो जागरणं कुर्याद् (उ) | ३६.२१ | ततो दशाक्षरं पश्चान्न (पा) | ७२.१६ | ततो देवगृहद्वारे (क्रि) | ११.२४ | ततो देवैः गमुनिभिः (सृ) | ४३.४३६ | ततो नादः समभवत्पुनरे (उ) | १६८.२८ |
| ततो जागरणचक्रं (उ) | ३०.७३ | ततो दशाक्षरं तनयः (उ) | २४२.३०० | ततो देवपथं गच्छेत् (स्व) | ३३.४३ | ततो देवोपविप्रं (क्रि) | २२.४८ | ततो नारायणाद्वा (क्रि) | ६.६८ |
| ततो जागरणरात्रौ (उ) | २५.३५ | ततो दानानि देवानि च (उ) | १७४.६६ | ततो देवपुरे प्रागा (पा) | ६५.६६ | ततो देवं मुनिं दृष्ट्वा (स्व) | २७.१० | ततो नारायणायेति (उ) | २२६.१८ |
| ततो जातश्चतुर्बाहुः (सृ) | २२.३६ | ततो दिव्य रथारूढाः (क्रि) | २०.७२ | ततो देवः प्रीतमनास्तमृषि (सृ) | १८.१४८ | ततो दैत्यः समुत्पत्य (उ) | ६८.१६ | ततो नारायणस्थानं (उ) | २०८.४५ |
| ततो जानीहि कुटुंबं (ग) | ६५.३१ | ततो दिव्यांगनारम्यं (उ) | १८८.३३ | ततो देवः सहस्राक्षो (भू) | २६.८ | ततो देवात्समुत्पन्नो (स्व) | २३.३० | ततो नारायणो देवो (उ) | ७.४० |
| ततो जितेंद्रियो भूत्वा (उ) | ३०.२५ | ततो दिशः प्रणष्टास्ता (उ) | १८.१०३ | ततो देवाधिदेवाय (उ) | ४५.५३ | ततो द्विचिंतया विष्टः (सृ) | ४३.८७ | ततो नारायणः प्राह संभु- (सृ) | १४.१६ |
| ततो ज्ञात्वा यत्तद्विप्र (पा) | १६.२ | ततो दुद्रावमधवार (उ) | ७.६ | ततो देवाः प्रयातास्ते (सृ) | ३६.१ | ततो द्वादशवर्षाणि (पा) | ३६.१७ | ततो नारायणः श्रीमान् (ब्र) | १०.६ |
| ततो ज्ञानं समासाद्य (क्रि) | २०.१४६ | ततो दुंदुभिनादो भूत् (उ) | ११.३ | ततो देवा ब्रुवन्विप्रं दैत्या (उ) | १५५.१७ | ततो द्वादशवर्षाणि (पा) | ४२.४४ | ततो नारायणः श्रीमान् (ब्र) | १०.१४ |
| ततो तिष्ठन्नादौ त्येन्द्रः (उ) | १०१.२८ | ततो दुंदुभिनिर्घोषोजय (पा) | २४.५६ | ततो देवाभयं जग्मुर्दान (उ) | १७.१२ | ततो द्वादशवर्षाणि (पा) | ४२.४४ | ततो नारायणः श्रीमान् (उ) | २३२.२ |
| ततो तिष्ठन् चरं क्रेतपो (पा) | ७२.३६ | ततो दुर्गाणिना (सृ) | ३.१४२ | ततो देवा महेंद्रा (उ) | ६.३० | ततो द्विपसमुद्रांश्च (पा) | १०५.५६ | ततो नारायणो देवो (क्रि) | १७.१६६ |
| ततो तिष्ठन् कत्यासस्तेहं (पा) | ८२.१६ | ततो दुर्गाहिरं विष्णुं (उ) | १६८.१६ | ततो देवा लयेतस्मिन् (क्रि) | ११.४१ | ततो धनेश्वरनीत्वा (उ) | ११४.१ | ततो निजेन न विष्णोः (ब्र) | १६.२७ |
| ततो त्रजन्मचासाद्य (ब्र) | २६.६ | ततो हुं च स्वर्कस्थानं (उ) | १४६.७ | ततो देवास्सगंधर्वा (सृ) | ४५.१८ | ततो धिकोऽस्ति देवः को (उ) | ७१.३१६ | ततो निजस्यो (उ) | २०१.६० |
| ततो दंडं तु निग्रथिकं मंडल (पा) | १६.२२ | ततो दृष्टं निधितत्र (उ) | ६६.६७ | ततो देवाः सगन्धर्वा (भू) | ५.४० | ततो धिपं दक्षिणश्चकार- (सृ) | ७.७७ | ततो निजेच्छया विप्र (क्रि) | ६.४३ |
| ततो दत्तवाचं रतस्य (उ) | १२८.२७१ | ततो दृष्ट्वा महापुण्य- (भू) | ६७.२० | ततो देवाः सगन्धर्वा (भू) | ८३.२६ | ततो धूमसमं तस्माद (उ) | ११.६२ | ततो निद्रा महाभागा (भू) | १८०.३६ |
| ततो दुर्लोकपाला- (सृ) | ३६.४४ | ततो दृष्ट्वा महाभागं (सृ) | ४५.८३ | ततो देवाः सगन्धर्वा (भू) | २३.६ | ततो नक्तं समाश्रिया- (उ) | १२४.६५ | ततो निधनपनयेत्रथो- (पा) | १८८.३६ |
| ततो दधीचिः परम-प्रतीत (सृ) | १६.७७ | ततो देवगणस्सर्वे (उ) | २४२.३२२ | ततो देवाः समुद्रिना- (सृ) | १६.६२ | ततो न दृश्यते चक्रशिब (उ) | ६.३८ | ततो निहृयमानस्य (उ) | १८३.१२ |
| ततो दंष्ट्राण श्रेणी (उ) | १८८.२३ | ततो देवगणानां सर्वेषां- (सृ) | ३६.५४ | ततो देवास्तु रत्नग- (सृ) | १३.२०६ | ततो न दादयः सर्वे (पा) | ८३.८३ | ततो निपतितं किंचिद (उ) | १६१.८ |
| ततो दमनकमंजरी (उ) | ८४.२० | ततो देवगणाः सर्वे (उ) | २३८.१३३ | ततो देवि प्रवक्ष्यामि (उ) | १४१.१ | ततो न दिनमालक्ष्य पुरो (उ) | १५१.३८ | ततो निमीलितो निद्र (सृ) | ४३.२२४ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|----------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| ततो निरगमद्वाहः (पा) | ३८.८ | ततो तैरिषमा गैणुधुवा (उ) | १८०.२१ | ततो ब्रह्मसुरा विप्रसंमयं (उ) | १५५.२० | ततो भिज्जाना गृहितां (ब्र) | ११.७ | ततो महीत तं प्राप्य-(स्व) | १५.७३ |
| ततो निरग्ने लोके स्मि-(सु) | १६.२२६ | ततो न्धकस्त्रिभुजेना (सु) | ४६.७३ | ततो ब्रवीत्पुनर्ब्रह्मा तव-(सु) | ३६.१०३ | ततो भिसेकमंत्रेण-(सु) | २८.१२ | ततो महेंद्रः परमाभितप्त (सु) | १६.६४ |
| ततो निरीक्ष्य गोविंदं (उ) | ७.७६ | ततो न्यसं तदा दधौ-(सु) | ३६.६ | ततो ब्रवीन्महासे नस्तारकं-(सु) | ४८.२०६ | ततो भीमजरा संधयो (उ) | २५२.१० | ततो महेंद्रमासाद्य (स्व) | ३६.१४ |
| ततो निवृत्तो राजेन्द्र (स्व) | २५.७ | ततो न्यतीर्थं धर्मज्ञ-(स्व) | २६.५३ | ततो ब्रह्मा स रोगच्छेदं (स्व) | ३८.५ | ततो भूतानि धावांति (उ) | १०१.१७ | ततो महो ह्यसं ज्ञाते दानं (सु) | ४२.५६ |
| ततो निवृत्य प्रायातः (उ) | १८०.५६ | ततो न्यवर्तयं सर्वे (सु) | १३.२१६ | ततो ब्रह्मा जगत्स्रष्टा (क्रि) | २.५० | ततो भूता इव तालाः (पा) | ५२.२६ | ततो मही पश्चिन्तां (उ) | १६८.५५ |
| ततो निवेदयां चक्रं ब्रह्मा (पा) | ७.६ | ततो न्योऽन्यपुरा प्रापतं मते (भू) | ६६.११५ | ततो ब्रह्मा भवन्मूढो (सु) | १४.६१ | ततो भूवा ल पुत्रोऽसौ (क्र) | ५.७२ | ततो माता महाराजन्-(सु) | ६.१८८ |
| ततो निवेदयां चक्रः (उ) | ६.५ | ततो परा ल्लस मये (उ) | १२२.१६ | ततो ब्रह्मा भुवनमिदं तीर्थ (सु) | ४०.६१ | ततो भो क्षाभ्यहं (उ) | २५४.१८ | ततो मां प्रार्थयामा (उ) | २३५.५१ |
| ततो निशम्य तद्वाक्यं (उ) | १८०.६२ | ततो पिपूणि मा पुण्या (पा) | ६८.३१ | ततो ब्रह्मा एष माहूय (उ) | १७८.५५ | ततो भोगवती नाम (स्व) | ३६.८२ | ततो मा मा ह भगवान (पा) | ८२.६० |
| ततो निश्चित्य मा तत्र-(उ) | १६१.७ | ततो पि भक्तिभूपा ल (पा) | ८६.१५ | ततो ब्राह्मणि का गत्वा-(स्व) | ३२.२३ | ततो म्भपश्यसहितः (सु) | १६.१६३ | ततो मा मा ह भगवान-(पा) | ८२.८१ |
| ततो निश्चित्य मा तत्र-(उ) | १८३.३२ | ततो पृच्छ दिदं वृत्तं (उ) | १७७.१६ | ततो ब्रह्मा सुर श्रेष्ठो-(सु) | ३६.५३ | ततो भ्रमंती सा बाला (उ) | १०३.८ | ततो मुक्ता मनुष्य (उ) | २०६.३६ |
| ततो नीनो निजगृहं (उ) | २१६.१ | ततो प्यरोपणा दिव्यांग (उ) | २३२.३६ | ततो भक्त्या सुसंतुष्टो (क्रि) | २५.२१ | ततो भ्रम रं भंकार (सु) | ४३.२२८ | ततो मुक्ता भवच्छांती (ब्र) | १७.२३ |
| ततो नयीतो विनष्टयां (क्रि) | २१.६५ | ततो बदरिका तीर्थे (स्व) | ३६.१३ | ततो भगवतस्तस्य-(सु) | ३६.५६ | ततो मत्त र्णं करान्-(स्व) | २६.७ | ततो मुक्ता ह्ययः सर्वे (पा) | ४६.३४ |
| ततो नुकुण्य चंद्रस्य (पा) | ७५.३८ | ततो बद्राज लिपुटो द्विजाति (उ) | १८३.८ | ततो भगवती रात्रिरूप (सु) | ४३.५४ | ततो मधुरया वाचते (क्रि) | २५.५८ | ततो मुक्ता ह्यो रेवा (पा) | ६५.६८ |
| ततो नुपुजयेच्छतम्यास (उ) | ११६.४८ | ततो बद्राजलि भंक्त्या (क्रि) | २२.३१ | ततो भगीरथो राजा (उ) | २४०.५१ | ततो मधुव्रता जाता (उ) | १८४.६६ | ततो मुंजा वटं नाम-(स्व) | २६.२० |
| ततो नुपुजयेच्छीर्षमाल (उ) | १२४.५६ | ततो बहुतिथे काले-(सु) | १३.३११ | ततो भयाता हरवल्बला (उ) | १६.१६ | ततो मध्याह्नसमये (क्रि) | २०.६३ | ततो मुनिगणाः सर्वे (उ) | १६८.८० |
| ततो नुपुजयेदभक्त्या (उ) | १२३.३७ | ततो बहुतिथे काले (उ) | १२७.१३६ | ततो भवानिह प्राप्तः (उ) | २१८.५३ | ततो मन्वंतरे तीते-(सु) | १७.५३ | ततो मुनिर्पंप्राह (पा) | ४६.५३ |
| ततो नुभोजयेद्विप्रा (उ) | ११६.४५ | ततो बहुतिथे काले-(उ) | १२६.१० | ततो भवो जगदुद्वैत्यं (सु) | ४३.२४४ | ततो मरुत्तराजकन्या (ब्र) | ६.१ | ततो मृच्छतिहायं (पा) | ६३.७ |
| ततो नुभोजयेद्विप्रांन् (उ) | १२३.३४ | ततो बुद्धिः समुत्पन्ना (भू) | ११६.५३ | ततो भ्रमक्षता द्राग-(सु) | १८.१४२ | ततो मर्त्ये राजकन्या (ब्र) | ३.३३ | ततो मिहृष्यः प्राप्तं (उ) | ७३.११ |
| ततो नुरुपमायचयं त-(सु) | ४०.६१ | ततो बुद्धिः समुत्पन्ना (भू) | ११६.५३ | ततो भगवती निद्रा-(क्रि) | २.५३ | ततो महाबलावीरावलं (उ) | ४.४० | ततो मोचयिता भ्राता (पा) | ५४.१६ |
| ततो नेतुं मिमोहृता (क्रि) | ३.७१ | ततो बुद्ध्या माह्वानं (उ) | ८०.१३६ | ततो भागवतैरेतयां (फ) | १५.५१ | ततो महाभयव्रतो-(पा) | १४.३७ | ततो यमः समालोचय-(उ) | १७६.१५ |
| ततो नैमिषि कंचसभा (स्व) | २६.१०४ | ततो बुद्धस्पतिः शक्रमकरो (सु) | १२.८८ | | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------|--------|---------------------------|--------|
| ततोयमाज्याहूताः (ब्र) | ७.२७ | ततोराजामहादुःखीसंजातः (पा) | ६२.५३ | ततोवर्षप्रभवतिवर्षाकाले (स्व) | ८.१६ | ततोविनिर्गतस्तात (उ) | २१४.५० | ततोविष्णोः शिवस्यापि (उ) | ६२.१६ |
| ततोयातेपुदेवेषुब्रह्मा (मृ) | ४३.५३ | ततोराजासमागत्य (उ) | १६०.१३ | ततोवर्षप्रवक्ष्यामियथाशु (स्व) | ९.७ | ततोविनीयसङ्गुत् (उ) | २२२.७६ | ततोविसृज्यतान्देवान् (मृ) | १८.१८६ |
| ततोयानविधिसर्वे (क्रि) | १३.१४४ | ततोराज्ञोहयः कुत्रगतः (पा) | ३८.४ | ततोवर्षशतांते तु (भू) | ६७.१०२ | ततोविप्रवतीभक्त्या (ब्र) | २१.१६ | ततोविस्मृतदुःखो (उ) | १०५.७ |
| ततोयुगतिभूतानामप- (मृ) | ४१.१०८ | ततोरासनमस्कृत्य (पा) | १३.३६ | ततोवर्षशतेपूर्णे- (पा) | १०५.१६६ | ततोविप्रप्राप्तकालः (ब्र) | १७.२४ | ततोविस्मयमापन्नी (उ) | १७६.१७ |
| ततोयुद्धमभूद्धारे (उ) | १८.७ | ततोरासः प्रजग्राहमुने- (मृ) | ३६.४६ | ततोवलोकितादेवाविष्णु (मृ) | ४.७० | ततोविप्रमुखादमिनः (मृ) | ४७.३१ | ततोविहृत्ससाध्वी (क्रि) | ४.६५ |
| ततोयुद्धमहदभूच्छ- (पा) | ६३.५ | ततोरासस्तुर्वदे (उ) | २४२.२१२ | ततोवलोक्यदक्राणि (उ) | १८६.१८ | ततोविप्रोहिनिवृत्तो (क्रि) | १२.६६ | ततोविहायद्विरंदे (उ) | १६०.२६ |
| ततोयुद्धमभवद्देवानां (मृ) | २५.८ | ततोरासोनुः सर्वर्षे (पा) | ४६.३० | ततोवर्त्तिसमाह्वयब्रह्मा (उ) | १६८.४५ | ततोविमानंसंप्राप्त (पा) | २२.४२ | ततोवीग्यानिनादाश्च- (पा) | ३४.८१ |
| ततोयुद्धसमभवद्देवानां (मृ) | १६.८४ | ततोहृद्रेणुरीद्रेभ्य (उ) | १७.६ | ततोवाच कपिश्रेष्ठो (पा) | ४७.१८ | ततोविमानानिवृत्ति (उ) | १५१.८३ | ततोवीग्यः प्राहय (क्रि) | ६.८२ |
| ततोयुधिष्ठिरोराजा (स्व) | ४०.३८ | ततोर्चयेदेवपुण्यं (उ) | ११६.३८ | ततोवाच यतः श्रुत्वा (उ) | १८६.४३ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | १६८.६६ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ६.२ |
| ततोयुवनयः सर्वाः (क्रि) | ५.१५० | ततोर्चयेदेवपुण्यं (उ) | १२३.२६ | ततोवाच यतः श्रुत्वा (उ) | १८६.४३ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | १७७.१२ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (उ) | २५२.७६ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (पा) | २४.५७ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (मृ) | ८.८२ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (मृ) | ४७.२६ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (उ) | २४५.३४६ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (उ) | २४४.२७ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (क्रि) | ६.३६ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (क्रि) | ४.६६ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (मृ) | १८६.५७ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |
| ततोयुधिष्ठिरात्मनः (स्व) | ३८.२२ | ततोर्चयेद्विप्रवरं (मृ) | २४.५४ | ततोवाच दत्तनिर्घोषः (उ) | ५.६६ | ततोविमृश्यमधानी (उ) | ११.६८ | ततोवीग्यरस्तस्य (क्रि) | ७७.३३ |

श्रीषयमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१५६

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| ततोशरीरिणीवाणी (मृ) | ३७.१२० | ततोहयोः प्रजवितैर्वारिर्ज (मृ) | ४१.५२ | तत्कथं देवदेवेश अन्यो (भू) | २२.३८ | तत्कुलं तुमहज्जेयं (उ) | ८४.२४ | तत्तत्कर्मविपाकोऽयं (भू) | ८६.१८ |
| ततोऽज्वपालमाह्वयत्न (उ) | १८६.२६ | ततोहिरस्तामनसंमरम् (उ) | १०३.३१ | तत्कन्याविचरंती (पा) | १४.५१ | तत्कुतकोटिगुणितं (उ) | १५१.१२ | तत्तत्कालोद्भवानां च-(पा) | ७६.४२ |
| ततोऽष्टमेममांशस्तु (उ) | २४५.२७ | ततोहरिपदप्राप्तिरेतन् (उ) | २००.६२ | तत्करिष्यामि वच्छेदः (क्रि) | ८८.२२ | तत्कृते सति देवेधि (उ) | १४४.२८ | तत्तच्छरीरसंलग्नं-(मृ) | १६.१३५ |
| ततोऽंगतयोरूपदृश्यते (पा) | २७.५ | ततोहरिसमालोक्य (क्रि) | १७.२४५ | तत्करिष्यामि मयहकर्म (मृ) | १८.४३३ | तत्कृत्वा भोजन (पा) | ११६.३०१ | तत्तत्कालोचितैर्नाना (पा) | ८३.५३ |
| ततोऽनुपारिख्यञ्ज (मृ) | १३.१६६ | ततोहर्षान्माधवो (क्रि) | ६.१६१ | तत्करैरेव भूषिष्ट (पा) | ४१.२७ | तत्कृपां कुरु विप्रेन्द्र (उ) | १०६.३० | तत्तत्कृपां चित्तोराज (पा) | ६६.४३ |
| ततोऽसौवननायित्य (क्रि) | १६.१६ | ततोहाहाकृतमयं (पा) | ४२.७८ | तत्कर्मकेशवार्धनं (उ) | १३२.१२५ | तत्कदनध्वनिविप्र (क्रि) | ६.७१ | तत्तत्कृपां चित्तानामस्य (पा) | ७४.३ |
| ततोऽन्वैदरियामास-(मृ) | ४४.२०४ | ततोहिदेवाः सहितास्तु-(मृ) | १६.१४८ | तत्कर्मचाद्भुतं दृष्ट्वा (पा) | ५१.४८ | तत्कमेण विवृत्तं तुजल (मृ) | २.१०६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (पा) | ४८.३८ |
| ततोऽस्य जायते ब्रह्म (उ) | ४५.१० | ततोहाहाकृताः सर्वेशिव (उ) | १११.१६ | तत्कर्मतेभिधास्यति (उ) | १६४.३३ | तत्क्रोडाचारुपिलस्वाद(उ) | १५.४८ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (उ) | २२५.५१ |
| ततोऽयं यदस्वयं धर्मभूतः (मृ) | २२.४२ | ततो हि दोषाः कलिजा (उ) | १६५.७७ | तत्कर्मवदानीये वै संप्राप्त (उ) | १८२.३१ | तत्क्षणाक्षयसाधनानि (क्रि) | २.३२ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | १८.१७० |
| ततोऽयं सत्यमंधस्य-(मृ) | ४०.१५८ | ततो ह्यविलिनो रात्रावसुरा (मृ) | ३.६१ | तत्कलाकोटिकोट्यं (पा) | ६६.१११ | तत्क्षणात्तरसरः (पा) | ७५.३१ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.२४ |
| ततोऽयं सत्यमंधस्य-(पा) | २४.३५ | ततो ह्यसतो भृगुणा-(मृ) | १२.२४५ | तत्कलाकोटिकोट्यं (पा) | ६६.११८ | तत्क्षणात्परमलिय (स्व) | ३५.४६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (पा) | १०४.७८ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | १६.८१ | ततो हि मास रिच्छेष्टा (स्व) | २८.७ | तत्काल कोटिकोट्यं (पा) | ८१.५४ | तत्क्षणादर्थकालेन-(भू) | ६६.१४७ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | ३१.६६ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | १८.७४ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (उ) | १५.३५ | तत्क्षणाद्विषयदेहस्थः-(मृ) | १८.३१ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (स्व) | ६१.४३ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | ४२.६१ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | १०५.१०४ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | ४७.५३ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | १८.१४ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | ११०.१७ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.५६ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | २०८.२६ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | ११०.१७ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.५६ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | २०८.४४ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | ११०.१७ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.५६ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | १८७.४८ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | ११०.१७ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.५६ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | २५.६ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | ११०.१७ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.५६ |
| ततोऽहो नारिः सा राः सुतः-(मृ) | १०२.१५ | ततो ह्यहो नारिः सा राः सुतः-(पा) | ३३.११६ | तत्कालोत्तराकारस्त (पा) | ११०.१७ | तत्क्षणादेव तत्काल्य (पा) | ७५.३६ | तत्तत्पापम्यां चित्तानि (मृ) | २४.५६ |

१६०

[illegible]

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१६१

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------|--------|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| तत्फलं समवाप्नोति (उ) | ३४.८८ | तत्रकुशेश्वरोनामदेवोयत्र (उ) | १६४.२ | तत्रगत्वाकुरुस्नानं (उ) | १२७.८८ | तत्रगत्वाविशेषेण (उ) | १७३.३ | तत्तुमुसलावशिष्टं (उ) | २५२.६७ |
| तत्फलं समवाप्नोति (उ) | ६१.१६ | तत्रकृष्णानराविप्रास्तेजो (स्व) | ३.५३ | तत्रगत्वागयायांस (उ) | ६६.६२ | तत्रगत्वाविशेषेण (उ) | १५६.८ | तत्रतच्छिष्यपादान्न (उ) | १८८.३० |
| तत्फलं समवाप्नोतिगुप्ता (स्व) | २६.३ | तत्रकृष्णामृगाराजन्- (स्व) | २६.६२ | तत्रगत्वागिरिसुतां (उ) | २०१.६६ | तत्रगत्वासपत्न्यां (उ) | २१७.४३ | तत्रतत्रकृतव्यर्थ- (उ) | १८७.३० |
| तत्फलं समवाप्नोतिशाल (उ) | १२०.४८ | तत्रकौशोरवयसं (पा) | ६६.६२ | तत्रगत्वाचतर्थाता (त्र) | १३.१६ | तत्रगत्वासमीपनञ्जु (पा) | ४५.२६ | तत्रतत्रभूपानि- (पा) | २६.५२ |
| तत्फलोद्भवसंपत्तिं (सु) | ४३.११२ | तत्रकोटिगुणं (उ) | १२०.८४ | तत्रगत्वाततः प्रातः (पा) | ६४.१२० | तत्रगत्वासर्वदेह्या रामः (पा) | ६८.१६ | तत्रतत्रनरः स्नात्वा- (स्व) | १३.४८ |
| तस्याजग्राह्याचारं (क्रि) | १७.१३ | तत्रकेचिदिद्रजाः पात्रे (पा) | ६५.२७ | तत्रगत्वातपः कोशान् (पा) | ५५.१४ | तत्रगत्वासहस्रुमान् (पा) | ४८.७१ | तत्रतत्रप्रकृतं स्नातः- (भू) | ३६.६२ |
| तस्याजभूपतेप्राणान् (उ) | २०६.२७ | तत्रकोटिशतंसाग्रतीर्थानां (स्व) | १३.३८ | तत्रगत्वातपः स्नानं- (उ) | १३५.३ | तत्र गत्वा सुरश्रेष्ठे (उ) | १४४.२४ | तत्रतत्रविनिश्चयना (पा) | १५.३२ |
| तस्याजमानुषं (उ) | २४४.४८ | तत्रकोपिमहादुष्टाः (उ) | १५४.६१ | तत्रगत्वातुतत्स्वानम् (स्व) | ४३.२६ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६०.१० | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तस्याजसतदाप्राणा (उ) | २११.४० | तत्रकोलामुरोनाम (उ) | १५७.६ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकर्णहृदेस्नात्वादेवम (स्व) | ३२.४ | तत्रक्रतुशतं पुण्यं स्नान (सु) | १८.८२ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकल्पतर्हनामापुण्यैः (पा) | ७४.२२ | तत्रक्रतुशतं पुण्यं (त्र) | १५.३६ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकश्चित्तस्यायातः (भू) | ६२.२ | तत्रक्रतीजराताः सर्वे (भू) | ८५.३८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकाचनवामाक्षीवालकं (पा) | ५५.२२ | तत्रक्षेत्रे महापुण्या (सु) | १८.२०१ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकाचिन्निजंकांतं (पा) | ५५.२६ | तत्रगंगाम्भसिस्नात्वा (क्रि) | ६.७६ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकालजं रगत्वा (स्व) | ३६.५४ | तत्रगंगाम्भसिस्नात्वा (क्रि) | ७.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकालजित्वायुद्धं (पा) | ६५.७४ | तत्रगच्छतिभद्रवः (स्व) | ३.३६ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकाशीपुष्करं (उ) | ३७.७३ | तत्रगच्छसुरश्रेष्ठ (उ) | ३८.५६ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकश्चित्सुवृत्तान्तं (भू) | १०८.३ | तत्रगच्छावहेशीघ्रं (पा) | ११२.४१ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्र किं दृश्यते धर्मः किं (भू) | ३७.३६ | तत्रगच्छेत्स्त्रियंमोहाद्- (पा) | ६.४४ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |
| तत्रकुक्ष्यान्वहन्द्दृष्ट्वा (सु) | १८.११० | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (उ) | १४१.३१ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | १४.१८ | तत्रगत्वातुविश्रेष्ठ- (पा) | ६८.२६ | तत्रतत्रसमाप्त्य- (उ) | २५३.१२ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|---------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| तत्रतीर्थसहस्राणि (उ) | १३६.८ | तत्रदानंजपः स्नानं-(उ) | १२०.८३ | तत्रदेवादिदेवेशः (उ) | ४५.६ | तत्रनेत्रावमात्यामेद्रव्य (भू) | ७.५२ | तत्रवद्वाञ्जलिर्भूत्वा (क्रि) | ५.७४ |
| तत्रतीर्थानि सवाणि (क्रि) | १२.४३ | तत्रदानं प्रदातव्यं (भू) | ४३.१० | तत्रदेवादिदेवतस्मिन् (त्र) | ६.३१ | तत्रपाद्यं महाशास्त्रम् (स्व) | ६२.२४ | तत्रवद्वाञ्जलिर्विप्रो (क्रि) | १३.१०४ |
| तत्रतीर्थं तनुं त्यक्त्वा (उ) | १६६.७ | तत्रदानं प्रदातव्यं-(भू) | ३६.८५ | तत्रदेशाश्च यज्ञाश्च (स्व) | ४७.६ | तत्रपिडंप्रदानेन-(उ) | १४४.३ | तत्रवाले तु संतुष्ट-(पा) | ६६.१६४ |
| तत्रतीर्थं नरः स्नात्वा (उ) | १५६.५ | तत्रदानानि दत्त्वा च (पा) | २१.४ | तत्रदेवाः सर्गधर्माः (स्व) | २१.३८ | तत्रगीतजलो राजा कृत (उ) | १२५.३६ | तत्रविले स्थितः शंभु (उ) | १५८.३ |
| तत्रतीर्थं नरः स्नात्वा-(उ) | १६२.४ | तत्रदिग्गमणिमंडपो (उ) | २५२.५० | तत्रदेवाः सर्गधर्माः-(स्व) | ३३.५२ | तत्रपुण्याजनपदाः (स्व) | ८.२७ | तत्रब्रह्मादयो देवा (स्व) | ४१.६ |
| तत्रतीर्थं नरः स्नात्वा दत्त्वा (उ) | १६३.४ | तत्रदिग्वात्रिपथना प्रथमं (स्व) | ३.६५ | तत्रदेवाः सदारान् (स्व) | २६.८२ | तत्रपुण्याजनपदास्तानि (स्व) | ३.२४ | तत्रब्रह्मादयो देवास्तत्र (पा) | २८.५० |
| तत्रतीर्थं समुद्रस्य (स्व) | ३६.२१ | तत्रदीपप्रदानेन ज्ञानचक्षुः (सु) | ३२.१२६ | तत्रदेवाः सुरायक्षा (स्व) | ३१.१३७ | तत्रपुत्रो ह्यभूतस्य (उ) | २०.१५ | तत्रब्रह्मादयो देवा (स्व) | ४३.१६ |
| तत्रते पुरुषाः श्वेतास्तेजो-(स्व) | ४.१६ | तत्रदुःखं महत्कष्टं (भू) | ६६.१६० | तत्रदेवाः सुरायक्षा (उ) | १२०.३६ | तत्रपुरंदारिस्वर्ययाने (उ) | २५१.६ | तत्रभक्तानामहादेवि-(स्व) | ३३.१० |
| तत्रते ब्रह्मणा सर्वे पूजिता-(उ) | २२१.५० | तत्रदुर्गं हर्षं चाराद (क्रि) | २५.४६ | तत्रदेवैः सहासीनं-(उ) | २५५.३८ | तत्रपूजां प्रकुर्वन्ति मान (उ) | २४.६ | तत्रभद्रतनुनिमपूवं (क्रि) | १७.६ |
| तत्रते विधिवत् स्नात्वा (उ) | २१५.६ | तत्रदूताः समायाता-(भू) | ५२.१५ | तत्रदैत्य न गंतव्यं (भू) | ११६.३७ | तत्रपूर्वकर्म बलात्पिशाच (स्व) | २३.४ | तत्रभिल्लामया हृष्टाः (पा) | १८.३ |
| तत्रतीरामकृष्णी (उ) | २४५.६७ | तत्रदृष्टं मया तात अपूर्वं (भू) | ८६.७ | तत्रदोषो न भवति ताने-(सु) | १७.१६ | तत्रपूर्वं हृषीकेशो विद्व (स्व) | ३६.२ | तत्रभित्तवना हृष्यं (पा) | ६५.७३ |
| तत्रतीर्विधिवत् स्ना (उ) | २०४.२ | तत्रदृष्टो मया तात-(भू) | १०१.४८ | तत्रधर्मस्तु संप्राप्तो (पा) | ३०.४१ | तत्रपृष्टं मया पूर्व (उ) | ७१.५४ | तत्रभीमाद्रुमगंगाः (उ) | ६६.१७ |
| तत्रत्याः सर्वे जनास्तां (उ) | २५१.१६ | तत्रदृष्ट्वा जातरूपे (पा) | २२.२२ | तत्रधर्मं च दीपपुष्पं (उ) | १३७.२२ | तत्रप्रविष्टास्ते सर्वे-(त्र) | २३.२५ | तत्रभूमौ च तीर्थानि-(स्व) | १०.२ |
| तत्रत्रयीमय रत्नसिंहासन (पा) | ७७.८ | तत्रदृष्ट्वा जवात्मीकं (पा) | १४.५२ | तत्रनम्रजनस्यापि-(पा) | ८०.१५ | तत्रप्रदेशे रम्ये पु देशे (उ) | २२६.८८ | तत्रमंजजति च्वायां (दा) | ६२.१०७ |
| तत्रत्रेतायुगस्यादौ (पा) | ६५.१३२ | तत्रदृष्ट्वा देवराजं-(भू) | ३०.७७ | तत्रनारायणपुंरं सूर्य-(पा) | १०५.२१ | तत्रप्रवाहाभिमुखो (उ) | २०१.१० | तत्रमाणिक्यरचिते-(पा) | ३८.२६ |
| तत्रत्वं वीरजलधौ मशरवी (पा) | ५०.४६ | तत्रदेवं समासीनं (उ) | ७१.५ | तत्रनिर्गमं प्रसरति-(स्व) | ६.२५ | तत्रप्रविश्या गोविदं (उ) | १६२.१६ | तत्रमन्त्रं न भुक्त्वा (क्रि) | ६.१५२ |
| तत्रत्वं मुचिरं कालं सुखी (सु) | ३०.१७० | तत्रदेवैः पर्व (स्व) | ३४.८ | तत्रनिर्मज्ज्यानि धूत (उ) | १८५.२८ | तत्रप्रहसिता देवी ईश्वरं (स्व) | २०.२७ | तत्रमन्त्रं यविप्रं गति (उ) | ६०.३८ |
| तत्रद्वंद्वं तु तज्जलम (सु) | ११.३ | तत्रदेवगणैः सर्वैः सकिभर (स्व) | १३.४१ | तत्रनिष्पापिनो भूत्वा या-(पा) | २२.६० | तत्रप्राणान् विरयज्य-(स्व) | १७.१३ | तत्रमार्गं पतितां हृष्ट्वा (उ) | २२१.१६ |
| तत्रदानं रोगाणां (उ) | ५.७६ | तत्रदेवस्य पाद्याद्यु (उ) | ६२.७७ | तत्रनीलजनाच्छ्रुत्वा-(पा) | ५.४६ | तत्रप्रिया तमं कंचित् (उ) | १८७.२५ | तत्रमार्गं मुविस्तीर्णं (भू) | ४५.७ |
| तत्रदानं च होमं च सर्वं-(स्व) | ३१.१४१ | तत्रदेवद्वन्द्वे स्नात्वा (स्व) | ३६.१८ | तत्रनीलं विनिर्मात्रं (क्रि) | ८.५५ | तत्रप्रेतशरीराख्या (उ) | १०६.२५ | तत्रमासवसेद्धोरः (स्व) | २६.३ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१६३

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| तत्रमासंवसेद्वीरः (स्व) | ३८.६१ | तत्रयुद्धेहतान् (उ) | ६७.२१ | तत्रविज्ञायवैराग्यप्राणा (सु) | १०.६० | तत्रव्रतेनदातव्यंसाग्नं (उ) | १२७.२२ | तत्रसर्वाणि तीर्थानि (भू) | ५६.१५ |
| तत्रमासंवसेद्वीरो- (स्व) | ३२.३६ | तत्र ये राक्षसवराहस्तो (स्) | ३८.७८ | तत्रविद्वानमरुदेशः (उ) | ६६.१५ | तत्रशक्यमयाकर्तुं (उ) | १२३५.३६ | तत्रसर्वैः सुरश्रेष्ठ (उ) | २२०.३ |
| तत्रमासंवसेद्वीरो (स्व) | ३६.५२ | तत्रयेधुभकर्मणिः (सु) | १८.२०३ | तत्रविप्रानरव्याघ्र- (स्व) | २६.५८ | तत्रशातिर्महाराज (भू) | ६६.३३ | तत्रसाक्षात्महादेवः- (स्व) | ३४.३ |
| तत्रमेकुरुपांचालाः (स्व) | ६.३४ | तत्रयेधुभकर्मणिस्थ- (सु) | १८.४६० | तत्रविश्रांततीर्थतुत्रिकालं (उ) | २१४.६० | तत्रशिशुपालः कृष्ण (उ) | २५२.१६ | तत्रसाधुग्नमस्क्रुयान् (पा) | १६.३० |
| तत्रय कुरुतेश्चांढपिडान् (उ) | १६८.३ | तत्रयेसलिलं पूनं पिवति- (सु) | ३२.६५ | तत्रविश्वेश्वरोदेवो (उ) | २१.१२ | तत्रशुद्धिमवाप्नोति (क्रि) | ४.१०४ | तत्रमापतितापापालोकान् (उ) | २१३.४५ |
| तत्रमासंवसेद्वीरो नैमिषे- (स्व) | ३२.२६ | तत्रयेहुरिपादावज (स्व) | ६१.१६ | तत्रविष्णुभूष्कृष्णा (उ) | १११.२६ | तत्रश्चाद्धं चदानं च (उ) | १७१.३ | तत्रमामयमुत्सृज्य (उ) | १७६.३५ |
| तत्रमासंवसेद्वीरो (स्व) | ३६.५२ | तत्रयोजायेतगर्भो (स्व) | ५८.१८ | तत्रवीक्ष्यजगन्नाथं (उ) | १८५.१७ | तत्रश्चाद्धं प्रकतं च (उ) | १७०.३ | तत्रसिन्धवा जले भूमि- (भू) | ६६.८ |
| तत्रमेकुरुपांचालाः (स्व) | ६.३४ | तत्ररत्नानि दिव्यानि- (स्व) | ६.५ | तत्रवीक्ष्यमुनिश्रेष्ठं- (पा) | ४७.३२ | तत्रश्रीरमणं देवसंपूज्य (उ) | १०८.६ | तत्रसिद्धाश्च दृश्यंते (उ) | १४.५६ |
| तत्रयः कुरुतेश्चांढपिडान् (उ) | १६८.३ | तत्रराघवगच्छस्वभूयो- (सु) | ३३.५८ | तत्रवीरमणो राजा- (पा) | ३६.६ | तत्रसर्वेष्टवस्त्रेण- (पा) | १०५.१२४ | तत्रसूत्यांममुत्पन्नः (सु) | १.३२ |
| तत्रयच्छादभुतं दृष्टं (उ) | १६३.३६ | तत्रराज्यं प्रयच्छास्मि (उ) | ४.१५ | तत्रवृक्षामधुकलानित्य (स्व) | ४.३ | तत्रसंहिंस्यस्ते (पा) | ७४.७६ | तत्रस्थं नज्जलये- (सु) | १८.२२० |
| तत्रयजोमुगोभूत्वा (सु) | ३१.१०६ | तत्रराज्यं विधायेदो (उ) | २००.३० | तत्रवैश्वामधुकलानित्य (स्व) | ४.३ | तत्रसंहिंस्यस्ते- (पा) | ७४.६७ | तत्रस्थं नज्जलये- (सु) | १८.२२० |
| तत्रयत्किम्यतेश्चांढयज (पा) | ८५.६८ | तत्रराधासखीवर्गस्त (पा) | ८१.६० | तत्रवेदनिधिप्रसृत (उ) | १२८.१२० | तत्रसंन्यासमुपासीत (स्व) | ३८.१४ | तत्रस्थः पालयन्नास्ते (सु) | ३०.८६ |
| तत्रयद्वृत्तमेतरूप- (पा) | ३५.११ | तत्ररामं महाबाहुं शिव- (पा) | १०५.५८ | तत्रवेदादिकं सर्वं (उ) | २०.२७ | तत्रसंनिहितो नित्यं (स्व) | ४१.२१ | तत्रस्थलेनं दगोपादायः (पा) | ७६.५ |
| तत्रयन्मन्माकाये (पा) | ६६.८७ | तत्ररामः सुतो दृष्ट्वा (पा) | ६६.१३२ | तत्रवेदान्प्रगुष्टास्तु (स्व) | ३६.४५ | तत्रसंनिहितो रुद्र- (स्व) | १७.१० | तत्रस्थाः ऋषयः सर्वे (उ) | ७१.७८ |
| तत्रयावक्तं लेनस्तापिता (उ) | २२०.५२ | तत्रवेदयजुर्वेदसाम (उ) | ३६.२७ | तत्रवेदीसमां कृत्वा च (सु) | ५.६ | तत्रसंस्थापयेद (उ) | २२३.५६ | तत्रस्थाः श्रीपृथिवी- (पा) | ४४.३६ |
| तत्रयावत्तिपश्यति (ब) | २.५ | तत्रलिङ्गपुराणीयं रथा (स्व) | ३७.१० | तत्रवेदकृतवान्मानं (उ) | १४१.४३ | तत्रसंस्थो महाप्राज्ञः (भू) | १२०.४४ | तत्रस्थादानवा दृष्ट्वा (उ) | २४५.३५५ |
| तत्रयावत्तिबीजानि- (क्रि) | १२.१४ | तत्रवसुदेवो ग्रसेत् (उ) | २५२.३० | तत्रवेतरणीपुष्पानदी- (स्व) | २६.८० | तत्रसमाप्तेः कृतो (उ) | २५२.१५ | तत्रस्थादानवा दृष्ट्वा (उ) | २४५.३५६ |
| तत्रयुद्धं महत्तैद्यभवि- (पा) | ४०.२१ | तत्रवसुदेवो ग्रसेत् संपर्षण (पा) | ७६.७ | तत्रवैवायवो वांति- (स्व) | ६.३६ | तत्रसंपूजयामासु (उ) | २४६.८५ | तत्रस्थानं प्रयच्छामो (ब) | ६.१२ |
| तत्रयुद्धं महद्दत्तं देव- (सु) | ३७.१६४ | तत्रवायुग्रं तास्मिन्- (सु) | ३०.२७ | तत्रवैविद्युधाः सर्वमया- (सु) | १४.१६१ | तत्रसंपूजयविश्वेश- (उ) | २०८.४६ | तत्रस्थानि हताः सर्वे (उ) | २४५.३५६ |
| तत्रयुद्धं नैकेषां- (उ) | २२२.४६ | तत्रवायुग्रं तास्मिन्- (पा) | १०५.७६ | तत्रवैविद्युधाः सर्वमया- (पा) | १०५.७१ | तत्रसंपूजयविश्वेश- (उ) | २०८.४६ | तत्रस्थानि हताः सर्वे (उ) | २४५.३५६ |





श्रीपद्महापुराणः :: श्लोकानुक्रमणी

१६४

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--|--------|--|--------|------------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| तत्रस्थानेप्रविशता श्रुतो (उ) | ३१.१६ | तत्रस्नात्वातुदेवेशो(उ) | १५३.१२ | तत्रस्नात्वातुदेवेशो(उ) | १५३.१२ | तत्रस्नात्वापितृन् (उ) | २०८.४७ | तत्रस्नानं च दानं च (उ) | ७५.१७ |
| तत्रस्थाने स्थितादेवैः (सु) | ३२.१४८ | तत्रस्नात्वातुभोदेविन (उ) | १६४.३ | तत्रस्नात्वातुभोदेविन (उ) | १६४.३ | तत्रस्नात्वापितृन् स्तृप्त्वा (पा) | ६७.५६ | तत्रस्नानं च दानं च (उ) | १३५.५६ |
| तत्रस्थानमानवास्तां (पा) | ६४.१२४ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र (स्व) | १६६.१३ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र (स्व) | १६६.१३ | तत्रस्नात्वामहानद्यां (पा) | १४.५० | तत्रस्नानं च दानं च (उ) | १५५.४ |
| तत्रस्थानोहिताः (उ) | २४५.१५० | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रदानं (स्व) | १८.७६ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रदानं (स्व) | १८.७६ | तत्रस्नात्वामहाराज- (स्व) | १३.१० | तत्रस्नानं प्रकुर्वन्ति नरा (उ) | १६८.२ |
| तत्रस्थावद्धंते नित्यं (भू) | ४७.६२ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रब्रह्मा (स्व) | १७.६ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रब्रह्मा (स्व) | १७.६ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | २६.४४ | तत्रस्नानं समाचर्यं (क्रि) | १३.१४७ |
| तत्रस्थाश्चजनाः (क्रि) | ५.१४५ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रविष्णु (स्व) | १८.१०६ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रविष्णु (स्व) | १८.१०६ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | २६.७४ | तत्रस्नानां जनानां (उ) | १६६.७ |
| तत्रस्थितं नडमविज्ञाया (पा) | ११०.६० | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रशुचि- (स्व) | १८.८३ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रशुचि- (स्व) | १८.८३ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | २४.२३ | तत्रस्नानादिकनमं (उ) | २०८.३६ |
| तत्रस्थितापिस्वपुंरं (उ) | १४.४४ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रशुचि- (स्व) | १८.८६ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रशुचि- (स्व) | १८.८६ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | २१.१८ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (उ) | ३८.२६ |
| तत्रस्थितैर्महाभागैः (उ) | २५५.४५ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रसर्वपात्रैः (स्व) | १६.२ | तत्रस्नात्वातुराजेन्द्रसर्वपात्रैः (स्व) | १६.२ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | २१.१५ | तत्रस्नात्वा कृते पार्षपापं (भू) | ६६.१० |
| तत्रस्थितानिराहारो (उ) | १४४.२० | तत्रस्नात्वातुविधिवत्त (उ) | २१३.७६ | तत्रस्नात्वातुविधिवत्त (उ) | २१३.७६ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १३.१६ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (उ) | ६६.५५ |
| तत्रस्थेन भगवता विष्णु (सु) | १६.२ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | ४५.२८ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | ४५.२८ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १३.६८ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (भू) | ८५.२६ |
| तत्रस्थेन मया देव (उ) | १३६.३३ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २७.३६ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २७.३६ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १३.१४ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (स्व) | ५.१० |
| तत्रस्नातमहाराज (भू) | ६२.१८ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | १५.७८ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | १५.७८ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १३.१४ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (स्व) | ४२.७ |
| तत्रस्नातितनरोयस्तु- (उ) | १६६.११ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २०.५३ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २०.५३ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १३.१५ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (स्व) | ३६.८३ |
| तत्रस्नात्वा च षट्पदा- (स्व) | २६.६ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | १६.२७ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | १६.२७ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | ३७.११ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (उ) | २४५.२६६ |
| तत्रस्नात्वाचपीत्वाच (स्व) | ४५.२५ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २६.१७ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २६.१७ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १०५.२१५ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (क्रि) | ५.१० |
| तत्रस्नात्वा च पीत्वाच (उ) | २४.२३ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २६.६१ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २६.६१ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | २७.६७ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (उ) | २४५.१३५ |
| तत्रस्नात्वाच भुक्त्वा (उ) | १५०.१२ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २७.४७ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २७.४७ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १८.७० | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (स्व) | १३.८१ |
| तत्रस्नात्वाततोरान् (स्व) | १७.८ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २५.३१ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २५.३१ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | १३५.१२३ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (क्रि) | १८.२६ |
| तत्रस्नात्वा ततोरान् (स्व) | १६.२६ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २५.३४ | तत्रस्नात्वादिर्व्याति (स्व) | २५.३४ | तत्रस्नात्वाचंयित्वाच- (स्व) | ७०.२ | तत्रस्नानं कृते पार्षपापं (क्रि) | २०.१५२ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| तत्रार्थः प्रिययादेवो-(सू) | ४३.४५१ | तत्रांतरे द्विजः काश्चि (क्रि) | २३.६ | तत्रापिभारतवर्षं (पा) | ८१.५६ | तत्राभिपेककृत्वा (स्व) | ३८.२६ | तत्रावस्थापापवतांयाया (क्रि) | २३.५६ |
| तत्रागच्छतिभक्ष्यार्थं (उ) | ३०.६६ | तत्रांतरे प्रचेष्ट (क्रि) | ६१.४५ | तत्रापिमिथिवितस्ते (क्रि) | १६.८१ | तत्राभिपेकयः कृत्यत् (स्व) | ११.२७ | तत्राव्यक्तस्वरूपोसी- (स्व) | २.२८ |
| तत्रागच्छत्पुमान् कश्चिद (उ) | १८६.१२ | तत्रांतरेमहातेजाव्यास (क्रि) | १.५ | तत्रापिसावर्षतं (उ) | २१३.६० | तत्राभिपेकयः कृत्यत् (स्व) | ३६.७७ | तत्राश्चर्यमतीवासीत् (पा) | १०५.२२४ |
| तत्रागतास्तुयेवणाः (सू) | ३२.६८ | तत्रांवाकार संयुक्ता (उ) | २२१.६ | तत्रापिबस्त्रदानेन (उ) | १३६.६ | तत्राभिपेकयः कृत्यति (स्व) | ४३.२२ | तत्राश्चर्यंयवोदेवोभुवितदः (स्व) | ३५.३ |
| तत्रागतोसीर्वश्य (उ) | ३१.२२ | तत्रान्नपाचिकालक्ष्मी (क्रि) | १८.८ | तत्रापिसागताबाला (उ) | १०३.७ | तत्राम्येत्यसविप्रापिद्वे (उ) | १०८.१२ | तत्राश्चर्यमहद्दृष्ट्वा (उ) | २८.२२ |
| तत्रागत्सविप्री (उ) | २१२.३१ | तत्रापरेष्टुः श्राद्धस्या-(पा) | १०५.६१ | तत्रापीडितविधायार्था (पा) | ६०.४ | तत्रायमास्तेनियतंपिबन् (सु) | ४१.१०७ | तत्राश्रमेकयतांकयां (उ) | ६२.१५ |
| तत्राघमर्षणं सम्पन्न (उ) | २४५.२६८ | तत्रापश्यन्निनेत्रस्य (सु) | ४३.२२२ | तत्राप्यतीवायंपराः (सु) | ३६.३५ | तत्रारब्धंचमुनिनात (उ) | १४५.७ | तत्राश्रमोवसिष्ठस्य (स्व) | ३८.५८ |
| तत्रानिभीषणंघोरं (उ) | २४२.२२१ | तत्रापश्यत्सशत्रुघ्नो(पा) | २४.५ | तत्राप्यहंक्रियाः सर्वाः (उ) | २०८.४८ | तत्रारभतगानसाकिन्नर (पा) | १२.७६ | तत्राष्टगुणामैश्वर्यम् (भू) | ७१.५ |
| तत्रातियातानांभुवत्वा (स्व) | ६१.६१ | तत्रापश्यन्नित्राभार्था (पा) | ११.७७ | तत्राप्येषानियमतोह्य (सु) | ४३.४१८ | तत्रारकेष्वात्कांची (पा) | ७४.८० | तत्राष्टमोमुहूर्तोयः सकाल (सु) | ११.८६ |
| तत्रातिष्ठत्सर्दत्येन्द्र (सु) | ३१.६४ | तत्रापश्यन्महात्मानं (सु) | १६.१३६ | तत्राप्येषानियमतोह्य (सु) | ४३.४१८ | तत्राराष्ट्रहृषीकेशं-(पा) | ३१.५७ | तत्राष्टमोमुहूर्तोयः (उ) | १३५.७५ |
| तत्रात्मजयदां भूमि (उ) | ५.६७ | तत्रापश्यन्महाभागं- (भू) | ३०.५३ | तत्राभस्थातदादेवं-(सु) | १८.१६३ | तत्रारूढोयथोविष्णोः (व) | १४.३३ | तत्रासने समासीनं (उ) | ६.१० |
| तत्रात्मविदमासाद्य-(उ) | १७६.६० | तत्रापश्यंमहाराजदेवं (पा) | १६.३ | तत्राभिम्यग्राह्याणाम् (स्व) | ३८.२१ | तत्रार्चयन्तियेहं (भू) | ६६.१६ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (उ) | १८.७ |
| तत्रादावादिखंडस्याद् (स्व) | १.२३ | तत्रापश्यन्महाशालं-(सु) | ४३.२६५ | तत्राभिम्यग्राह्येन्द्र-(स्व) | २८.२२ | तत्रालिखद्दाशरथीः (पा) | १०.४४ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्रादिखण्डंबक्ष्यामि-(स्व) | १.३१ | तत्रापि च कुतः सीधयं (भू) | ६६.१४६ | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्रादौच सितेप- (उ) | ८३.५ | तत्रापिचिरकालेन-(उ) | २१४.५१ | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्रादीपुष्कलोबीरः (पा) | ३३.३३ | तत्रापितस्याः परिचारकेयं(सु) | २३.६७ | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्रादौमृष्टि खण्डस्यादिभ-(सु) | १.५५ | तत्रापितवसान्निध्यं (उ) | १०७.२४ | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्राद्यस्तुस्वर्णपीठे-(पा) | ७०.३५ | तत्रापिदुर्लभंमन्ये (पा) | ८४.२४ | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्राद्यस्तुस्वर्णपीठे-(पा) | ७०.४३ | तत्रापिनममोतावत् (उ) | ६१.३ | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |
| तत्राध्यायंसीता (उ) | १७७.१४ | तत्रापिपुनतः कुरादिभि (सु) | ६.१५० | तत्राभिभूतदौत्येन्द्र-(सु) | ४१.६५ | तत्रालोच्य सुवर्णस्थ (उ) | १६६.८ | तत्रासीत्तेजसाराधिः (क्रि) | ५.२ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| तत्रास्तेचमहात्मा (उ) | ३१.८ | तत्रैकाक्षत्रियसुता- (पा) | १०६.६ | तत्रैवाविरभूतस्य (उ) | २३६.१० | तत्रोपोष्यरजनीमेकास्वर्ग- (स्व) | ३२.३५ | तत्समीपे स्थिता चंका (भू) | ६३.१७ |
| तत्रास्तेपार्वतीनाथः (उ) | १२७.७१ | तत्रैकामुपुवेतुस्यां (उ) | २१.४ | तत्रैवासूतयमलोनाम्ना (उ) | २४४.६ | तत्रोपोष्यरजनीमेकाम् (स्व) | ३८.५१ | तत्संयोगसमुत्पन्नः शत्रुः (सृ) | १४.३२ |
| तत्रास्तेभगवान्साक्षात् (उ) | १८७.४२ | तत्रैकोद्वाह्याः कश्चित् (उ) | २११.२६ | तत्रैवोद्वाह्याकर्म्यां (उ) | २४६.३४ | तर्पयेदुदपात्रैस्तु (पा) | ६८.२७ | तत्सर्वकथयन्तवत्रयां (पा) | ३६.६२ |
| तत्रास्मिन्पिच्छिलेधारे (भू) | ७.८० | तत्रैकोवायसोद्वासीकृत (उ) | २२२.३ | तत्रोचः केचिदुत्पाजयः (सृ) | ३१.७१ | तत्त्वतेनविनादेविन (उ) | १३३.३ | तत्सर्वं कथयामास (भू) | ८८.५४ |
| तत्रास्वाद्यहविः स्निग्धं (पा) | ६८.३ | तत्रैद्रेणतुभागेनसर्वाना- (सृ) | ३४.४६ | तत्रोदीच्यादिशिमोनी (क्रि) | ११.३ | तत्त्वनारायणोविष्णु (उ) | २२४.१५ | तत्सर्वं कथयामास (त्र) | ११.४६ |
| तत्राह्नांध्यथांगुर्वी (उ) | २१०.४३ | तत्रैवखलुर्वंकठः सर्व- (उ) | २१६.२४ | तत्रोद्यानंमहच्छेष्ठं (पा) | ४७.३ | तत्त्वडंशमवाप्नोति (उ) | ११३.२७ | तत्सर्वं कथयिष्यामि (उ) | १२६.५ |
| तत्राह्देवदेवेशमुपासिष्ये (सृ) | ३३.३० | तत्रैवगंगावमुना च (उ) | ७२.१० | तत्रोद्यानानिरम्याणि (उ) | २२६.१२६ | तत्त्वसर्गोभावसर्गोभूत (सृ) | १५.१८० | तत्सर्वकथयिष्यामि (उ) | १२०.५१ |
| तत्राह्मनसो नित्यं कथं- (पा) | ७३.७ | तत्रैवचमहाराजजयां- (स्व) | २६.२१ | तत्रोपरीपरानंदंवापुदेवं (पा) | ७०.२८ | तत्त्वसर्गोभावसर्गो (पा) | ८५.१६ | तत्सर्वंकोटिगुणित (उ) | ६१.३६ |
| तत्राह्मभवंदुःखी (उ) | २०४.८० | तत्रैवजन्मनिमया कृतं (उ) | २०४.६८ | तत्रोपवासंस्कृत्वाये (स्व) | २१.४० | तत्त्वविनाशस्त्राभ्यास (पा) | ७८.१४ | तत्सर्वंभामेदेवकृपां (उ) | ६६.३२ |
| तत्राह्मसचसंस्नातौ (उ) | २०८.५२ | तत्रैवतमुपादायदेव (उ) | ८०.१५६ | तत्रोपवासंस्नानपंच- (सृ) | ३२.१०० | तत्त्वविनाशनामदेवता (पा) | ७८.११ | तत्सर्वंभामेदेवकृपां (सृ) | १३.२०३ |
| तत्राह्मयन्मृषीन (उ) | ६१.५ | तत्रैवनिममज्जासावेत्य (उ) | १७६.१४ | तत्रोपवासीयजस्यपुंडरी (सृ) | ३२.६८ | तत्त्वविनाशनामदेवता (सृ) | ८०.३१ | तत्सर्वंभामेदेवकृपां (उ) | १६८.११६ |
| तत्रैतत्कृत्यमुपशिष्य (पा) | १५.२६ | तत्रैवमाधवस्तस्योद्भूतो (क्रि) | ५.१४४ | तत्रोपविष्टंतसूतं (क्रि) | १.६ | तत्त्वविनाशनामदेवता (क्रि) | ६.१३२ | तत्सर्वंभामेदेवकृपां (उ) | ७१.३६ |
| तत्रैतरेपांकिवाच्यं (उ) | १८.१४१ | तत्रैव रथ चक्रांके (उ) | १२०.५३ | तत्रोपविश्यमेषावीकाम- (भू) | ३२.२२ | तत्त्वविनाशनामदेवता (स्व) | ३१.२०४ | तत्सर्वं च विशेषण (उ) | ७१.३६ |
| तत्रैदविमर्ल्लिगमोद्धारं (स्व) | ३४.१ | तत्रैवरमतेलीकः (स्व) | ६१.३० | तत्रोपविष्टोभगवान् (क्रि) | २२.२० | तत्त्वविनाशनामदेवता (सृ) | ४३.६६ | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (भू) | १०८.१८ |
| तत्रैव रथचक्रांके यानि (उ) | १२०.५३ | तत्रैवल्लिखीतमातरे (पा) | ६४.६० | तत्रोपविष्टाचयुवतीं (क्रि) | ५.८६ | तत्त्वविनाशनामदेवता (उ) | २५०.४६ | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (पा) | ४४.४ |
| तत्रैवानंसमभ्यर्च्यं (स्व) | ३६.२५ | तत्रैववसतस्तस्य (उ) | ४४.६ | तत्रोपस्थानं कृत्वा- (स्व) | ३२.४० | तत्त्वविनाशनामदेवता (उ) | ११५.१७ | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (स्व) | २७.४४ |
| तत्रैष्टवातुगतः सिद्धि- (स्व) | ३.६३ | तत्रैवव्रतिभिः साष्टं (त्र) | ७.२६ | तत्रोपोष्यद्वादशीस्यात् (त्र) | १५.३० | तत्त्वविनाशनामदेवता (क्रि) | ६.१२१ | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (सृ) | २१.१८३ |
| तत्रैहकारणां सर्व- (भू) | ५०.३५ | तत्रैवसहरेवतपामंकर्यं (पा) | ७०.३६ | तत्रोपोष्यरजनीः पंच- (स्व) | ३२.११ | तत्त्वविनाशनामदेवता (त्र) | ४.३० | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (सृ) | ३४.१६१ |
| तत्रैकः कर्कटोनाम- (उ) | २२२.२८ | तत्रैवसिद्धिमाकांक्षन् (उ) | ८०.३७ | तत्रोपोष्यरजनीमेकांगी- (स्व) | २४.६ | तत्त्वविनाशनामदेवता (उ) | २२३.६ | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (सृ) | २१.२६० |
| तत्रैकमादिपुरुषं (उ) | २०.३८ | तत्रैवस्नापयामासत- (उ) | २१६.१०० | तत्रोपोष्यरजनीमेकांगोस- (स्व) | २६.१४ | तत्त्वविनाशनामदेवता (क्रि) | ५.६३ | तत्सर्वं नान मे ब्रूहि (उ) | १२०.८५ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| तत्सर्वनिष्फलं (पा) | ६८.८ | ततस्तुदुत्यगीतानिकार (सृ) | २१.४० | तथाकुरुष्वभद्रं (भू) | ३.४ | तथातथाविधातव्यं (उ) | ३५.६३ | तथादारसुनादीनां (उ) | २०८.६ |
| तत्सर्वपूर्णतांयति (उ) | ३७.६० | तत्स्थानं कीदृशं कुत्र (पा) | ७४.११ | तथाकुसुमहाबुद्धेय- (उ) | २१४.६६ | तथातपच्यपमासं- (पा) | १०७.७१ | तथादुःखं प्रदत्त्वाहं (भू) | ११.४२ |
| तत्सर्वप्रवक्ष्यामि (उ) | २०.१० | तत्स्थानंतीचर्वकूपी- (सृ) | ३३.६४ | तथाकुरुष्वकल्याणि (भू) | ७७.८३ | तथातपस्थानामृत्यु- (सृ) | १३.३८७ | तथादेशेनसंपन्नः शूरो- (सृ) | ३७.१८ |
| तत्सर्वभोजनं दत्तस्त्रे- (सृ) | ३१.१२१ | तथाज्ञानधियोमूढान (उ) | १३२.७५ | तथाकुरुष्व देवेश (भू) | १२४.२० | तथातमागतं विप्रो (भू) | ४६.५३ | तथादैत्यगणामर्वा- (भू) | ६.१६ |
| तत्सर्वमत्रसंजातं (उ) | १५३.२२ | तथाहिंसाक्षमास्त्यं (भू) | ६६.५ | तथाकृत्वाचविधि (पा) | १०८.६६ | तथातव च पुत्रैश्च (भू) | ७.११ | तथादैत्यगणामसर्वाग्निदह (भू) | ६.१६ |
| तत्सर्वविफलं याति (उ) | २२४.३३ | तथा आवेदितं सर्वं यज्जात- (भू) | ५१.५ | तथाकोकामुखेस्तात्वा (सृ) | १३.३६८ | तथातानपिदेवेशः (क्रि) | २१.७१ | तथादैत्याश्चसाध्याश्च (सृ) | ४५.२८ |
| तत्सर्वशंसतक्षिप्रं (पा) | ५७.१८ | तथाऋषिगणाश्चैव (भू) | २७.१७ | तथागंगाप्रभावेन (उ) | २२.६ | तथा ताज्जारयाम्ये- (भू) | ३६.७१ | तथादोपाप्रज्वलित्वा (भू) | ८.१०३ |
| तत्सर्वसंचजानाति (उ) | ८१.२० | तथाकर्णमयातत्र (क्रि) | ६.१२७ | तथागंगाप्रभावेन (उ) | २२.६ | तथातुष्टोव्रतीतं (सृ) | १४.४६ | तथाद्रुह्यमणंपूषं- (सृ) | १२.६६ |
| तत्सर्वसमवाप्नोति (उ) | २७.३८ | तथाकपटवृत्तीनांनकुर्वाद् (क्रि) | १४.६ | तथाचष्टं केनात्र (क्रि) | २३.११८ | तथा ते नास्ति वै ज्ञानं (भू) | ६१.५८ | तथाद्वादशका गावो (सृ) | ४०.२७ |
| तत्सर्वहिंसमाचक्ष्व (पा) | ८६.२८ | तथाकर्मकृतं चैव (भू) | ६४.१४ | तथा च निहताः शूरास्तु (भू) | ४५.२२ | तथा ते मानवाः सर्वे (भू) | ७५.२६ | तथाधर्मागदश्चायंसंजातः (भू) | २२.४५ |
| तत्सर्वहिं समाचक्ष्वसर्वं (भू) | १७.१७ | तथाकलत्रसंबंधोदेव (सृ) | २४.८ | तथाचक्षुदेवेन (उ) | २४५.२१८ | तथा ते मामकाः पुत्रा- (भू) | ६.१७ | तथानतवदैर्वेद्रं (उ) | ६६.१३ |
| तत्सर्वं हि सुखंप्रोक्तं (भू) | १२.११४ | तथाकामफलस्येयहेतु- (सृ) | ३२.१५५ | तथा चारामा गुलग्नः (भू) | १२०.४२ | तथा ते विस्तरं (भू) | ७६.११ | तथानतफलावाप्तिरस्तु (सृ) | २१.२५७ |
| तत्सर्वेयक्षगंधर्वसिद्ध (पा) | ७०.५३ | तथाकामवशंप्राप्तो (पा) | ३६.२६ | तथा चाभरणमिति (भू) | ११८.३६ | तथा ते गृहं प्राप्ता (भू) | १०३.७६ | तथानागाः सुपणश्चि (स्व) | ३६.६८ |
| तत्सहस्रगुणंप्रोक्तं (उ) | ६१.३५ | तथाकायश्चरेन्नित्यं (भू) | ६४.७३ | तथाचैकादशी (उ) | ३८.३६ | तथा त्रेणिसहस्राणि- (स्व) | ७.६ | तथानिश्च्यते जंतुः (भू) | ६४.१२ |
| तत्सितासिपानीयं (उ) | १२६.२३२ | तथाकालेनसंभावितं (पा) | ५८.४१ | तथाज्ञातं तु तत्सर्वं (भू) | १०५.२६ | तथात्वंलक्ष्यसेज्जानी (पा) | ६.५३ | तथानिर्वचनं कल्प- (सृ) | २.१६ |
| तत्सुखं कीदृशं तस्माद् (भू) | ८६.४७ | तथाकिन्नरगंधर्वा (सृ) | ६.७७ | तथाज्ञानीसदापूज्यो- (सृ) | १५.१४२ | तथा त्वं वेष्टितसर्वः (भू) | ७६.४ | तथानिर्वेदित सर्वं यथा (भू) | ८८.१६ |
| तत्सुरासुरसंयुक्तं युद्ध (सृ) | ४१.५१ | तथाकिसलवैदिव्यं (क्रि) | १२.२२ | तथातंपूजयेन्नित्यं (उ) | १२४.६३ | तथात्वमपिराजेन्द्र (उ) | ४५.६३ | तथानृपवरः श्रीमान् (उ) | २४३.१८ |
| तत्सेवयाभवेत् (उ) | २०४.१६ | तथाकुरुजगद्धात्रि (उ) | १८६.४० | तथातरूपमाला (उ) | २४३.४३ | तथात्वमाविधातव्यं (सृ) | १६.७१ | तथातदपिमाहात्म्यं (उ) | १५२.३३ |
| तत्सेवैव भवेत् (उ) | २२३.८० | तथाकुरुतहस्ररुपः शरणं (क्रि) | ४.४७ | तथातथाऽक्षयः स्वर्गो- (स्व) | ३१.५३ | तथा त्वां मम भर्ता (भू) | १०३.७६ | तथान्यः सोमवंशीयो- (सृ) | ३१.२८ |
| तत्सोपानमथारुह्य- (पा) | १०५.२१४ | तथान्कुरुष्वदेवैर्द्रं (भू) | ६१.३४ | तथातथावद्वर्तत- (सृ) | १३.३६४ | तथातद्वर्तितोविदनाम (पा) | ६२.२२ | | |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१६८

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------|---------|
| तथानवावते भद्रे (भू) | ११३.२४ | तथापिभक्ततरक्षार्थं (पा) | २२.३२ | तथाप्यागमधर्मण (पा) | ६७.४४ | तथायातामप्रवक्ष्येतानु (पा) | ६७.४३ | तथासर्वं समाकर्ण्य (भू) | ५७.११ |
| तथापहृतपाप्मत्व (उ) | २४५.१७७ | तथापिवहुभिः पुण्यै (पा) | ८७.१६ | तथाप्येकं वरयाचेत् (क्रि) | ७.११८ | तथारस्यासमायातोयत्र (भू) | ५८.२३ | तथासहमहाभाग सुखं (भू) | ४८.७ |
| तथापापफलदुष्टा- (क्रि) | २३.११३ | तथापि बहुभिः पुण्यै (पा) | ६२.१३ | तथाप्येकं वरयाचेत् (क्रि) | १७.१६२ | तथारसानांप्रवरः (सु) | २१.१४० | तथासहस्रलिङ्गं च- (तु) | ११.५० |
| तथापि कथयिष्यामि (उ) | ४६.६ | तथापिभोमयातुभ्यं- (पा) | १.१३ | तथाप्येतद्वृत्त्यर्थं- (उ) | २२.१४० | तथाराजारथाह्व (क्रि) | १८.५६ | तथासद्धि यजेद्यज्ञं (भू) | ४२.४ |
| तथापिकपलाकांत (क्रि) | १६.४७ | तथापिममभक्तिस्ते (क्रि) | १२.१०४ | तथाप्येवंविधदुःख (क्रि) | ६.१०१ | तथालक्ष्मीनिधियति- (पा) | ३३.२३ | तथासुगंधिमानादयो- (स्व) | ३०.२२ |
| तथापि चित्तां मुच्यते (उ) | १६४.१३ | तथापियाचेवरमेक- (पा) | ३८.५१ | तथाप्रतिहृतांशक्ति- (सु) | ४५.१०५ | तथालक्ष्मीनिधिस्त्वे (पा) | ११.२७ | तथासृजन्महामायां भग- (सु) | ४१.६६ |
| तथापि जीवाजीवति (उ) | ६६.१८ | तथापिवक्ष्ये जगतो (पा) | ८४.३६ | तथाप्रसन्नं सलिलं (उ) | ८०.१२७ | तथाविधौ च तौ दृष्ट्वा (उ) | १२५.११८ | तथासृष्टो महातमं (उ) | २२८.१०६ |
| तथापितत्फलं तस्य न (क्रि) | १६.१६ | तथापिविंशमिच्छति (भू) | १२.३७ | तथाप्रसादयेच्छः स्नेहं (उ) | १०.४३ | तथाविधौ विलोकया (पा) | ६६.१७ | तथास्माकं कुमारीणां (उ) | १२८.४४ |
| तथापितत्समुत्पत्ति (उ) | १११.४ | तथापिवरये किंचिद्- (पा) | ११७.१८६ | तथा प्रोक्तोऽस्मि विप्रेन्द्र (भू) | ११६.३१ | तथाविना न बुभुजे तया (भू) | ४८.६ | तथास्थंडिलशागीचये- (सु) | १८.१५३ |
| तथापितवनिर्देशं (पा) | ६५.५५ | तथापिवसुधां भोक्तुं- (क्रि) | ३.७६ | तथा ब्रह्माप्यनेन (सु) | १८.४१ | तथाविनायदि तीर्थं (भू) | ५६.२६ | तथास्माकं कुमारीणां (स्व) | २२.३५ |
| तथापि तत्प्रवक्ष्यामि (पा) | ७३.२ | तथापिशुचिभाङ्गं न (भू) | ६६.७६ | तथा भवामिरामस्य (पा) | ५७.६२ | तथाविशोकतामेस्यात्वा (सु) | २१.२७ | तथास्यातिथयः पूज्या- (सु) | १५.३०५ |
| तथापि त्वं महादेव (क्रि) | १३.१२५ | तथापि श्रोतुमिच्छामि (उ) | ३७.३ | तथाममसमस्तानं (पा) | ११७.५४ | तथा वै जनितः पुत्रो- (भू) | २३.२६ | तथास्यान्ये महाप्रीतिः (उ) | २८.३६ |
| तथापि देहे भूपाल (पा) | ६६.५८ | तथापिसद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १२.६१ | तथामहादेवि प्रभुं (उ) | ८५.२० | तथाव्रतानि विचित्राणि (पा) | ११६.३३ | तथा हं वक्त्रामो (पा) | ५५.३८ |
| तथापि न भजेदर्थ- (क्रि) | ५.१०६ | तथापिसद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १२.६६ | तथामिध्यायतस्तस्य- (सु) | ३.७० | तथा शत्रौ च मित्रे च तम (क्रि) | १७.६० | तथा हं यापकतर्जं (पा) | ६७.३८ |
| तथापि निर्विकारो- (स्व) | २२.६६ | तथापि सेवमानस्य- (सु) | १६.१४२ | तथा मे शोभते देहो (भू) | ७२.१४ | तथा शरीरं यो निश्चयं (भू) | ६६.५३ | तथा हं यापकतर्जं- (भू) | ३६.६७ |
| तथापि निर्विकारोऽसौ (उ) | १२८.१०७ | तथा पुण्यात्मकानां (भू) | ३०.८ | तथायं सृजते प्रातानाना- (भू) | ८.४२ | तथा शीतक्षयं कुण्डि (क्रि) | १०.१६ | तथा हिमकरोत्पृष्ठा- (सु) | ४१.१३५ |
| तथापि पादपद्मं ते (क्रि) | १६.४६ | तथा पुण्यात्मकानां (सु) | ६.१७३ | तथायं ज्वराहस्तु देव- (सु) | ११.७ | तथा शुभाशुभं कर्मकतर्जं (भू) | ८१.५३ | तथा हिमचुराच्चैषाया- (सु) | ३८.२ |
| तथापि पापलेशस्ते- (पा) | ३१.७ | तथाप्यस्ति ममाधीनः (क्रि) | ८.६६ | तथायन्तामग्रहणात् (पा) | ६२.२१ | तथा शमकुट्टमुह्यैश्च (सु) | १८.११६ | तथा ह्यहमहावीर (क्रि) | ५.४१ |
| तथापि प्रयतिष्यामि (उ) | ५७.२० | तथाप्यस्ति महानस्य (क्रि) | २६.४० | तथा ययातिधर्मिन्मा (भू) | ६४.३६ | तथा सपुत्रमित्रश्च (क्रि) | २२.६३ | तथा चित्रावनीन्द्रमि (सु) | ८.१५ |
| तथापि ब्राह्मणश्चैव- (सु) | ४७.२० | तथाप्यहमपश्यंत्वां (क्रि) | १६.४५ | तथायवः सर्वहंता- (उ) | १३२.१४६ | तथा स मागतं मृत्युं (उ) | २२०.३४ | तथा चित्रप्रतिश्रुत्य (उ) | २४४.३६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| तथैतिवचमत्वात् (उ) | १५५.२५ | तथैत्युक्त्वावतः शैलं-(सु) | ४३.३०४ | तथैवास्मैकांतीहेव (उ) | २५३.१२६ | तथैवात्मनि कर्माणि (भू) | ८१.६३ | तदण्डमद्येवास्या (उ) | २२६.२० |
| तथैतिचक्षिवः प्राहण्य (पा) | १०६.१११ | तथैत्युक्त्वामहामाया (उ) | २४५.२६ | तथैवपर्वताविप्राः सप्तात्र (स्व) | ८.१२ | तथैवात्मनि कर्माणि (भू) | ६४.२८ | तदतिरुचिरचक्षुःश्रेणु (पा) | १०३.४४ |
| तथैतिचोक्त्वामधवा-(सु) | १३.४११ | तथै युक्त्वायदुष्टेण्डो(उ) | २४५.२२६ | तथैवपुकरतीर्थं-(सु) | १६.४३ | तथैवान्यत्प्रवक्ष्यामि-(सु) | २६.१ | तदतिरुचिरमन्दहा-(पा) | १०३.४५ |
| तथैतिचोवाचहिमांशु-(सु) | १२.४२ | तथैत्युक्त्वासभगवान् (उ) | ६८.२२ | तथैवपोद्गाः शुभ्राश्च-(सु) | ४५.१६४ | तथैवान्येव्यराजतभायां (सु) | ४५.५५ | तदतिललितमन्द (पा) | १०३.४६ |
| तथैतितमवास्या (उ) | २०४.११६ | तथैत्युक्त्वासहस्रा (उ) | ६.२० | तथैवप्रद्युम्नेन (उ) | २५२.६० | तथैवापचमानेभ्यः (सु) | १५.३०६ | तदतिललितमन्द (पा) | १०३.४७ |
| तथैतितांप्रतिज्ञाय (उ) | १६८.४४ | तथैत्युचुद्रिजाश्शम्भुं-(सु) | १७.४६ | तथैवब्रह्मचर्यगुरु (सु) | १५.२०४ | तथैवाप्सरसोदिग्या- (सु) | १८.१७ | तदशकौत्रकौकुंमहा (सु) | १६.६ |
| तथैतिराघवः कृत्वा-(सु) | ३८.१२६ | तथैकमतिथिकृत्वा-(उ) | १०.५६ | तथैवब्राह्मणोदेवि (उ) | २२४.४६ | तथैवाविस्मृदब्रह्मा (उ) | २३२.६१ | तदथावहितानावदस्मा-(सु) | ४३.३६३ |
| तथैतिलक्षमणेनोक्तेव्रतं (सु) | ३३.११८ | तथैकैनाभुजेनैवईश्वरः (उ) | २३२.४ | तथैवभस्मतांजां (उ) | २३८.१३३ | तथैवाष्टादशाध्याय (उ) | १६२.१४ | तदद्दष्टवानगररंभ्यं (पा) | ३०.३ |
| तथैतिलघुवादिने (उ) | २०२.५८ | तथैनांचसमानीताम् (ब्र) | ११.७२ | तथैवभापमाणसा (उ) | १५५.३५ | तथैवाष्टादशाध्याय (उ) | २८.१३ | तदद्दष्ट्वाविस्मयंप्राप्ताः (पा) | २६.६६ |
| तथैतिसंपूज्यमुधर्ममूर्ति (सु) | २१.१८ | तथैवगदयासोपितं (उ) | १७.२० | तथैवमाधवोमासो (पा) | ८६.५५ | तथैवाहं करिष्यामि (सु) | ४.३४ | तदद्भुततमंवाक्यं श्रुत्वा-(सु) | ३७.१ |
| तथैतिसावचोमहा प्रति (उ) | २१४.६८ | तथैवचपुनर्भूयोविज्ञानम् (सु) | ३६.६८ | तथैवमाधवोमासां (पा) | १०.५२ | तथैवोमादयत्येष (पा) | ६६.५० | तदधस्तुस्वर्णपीठे (पा) | ७०.२७ |
| तथैतिहृष्टमनसः प्रत्युक्ता(उ) | १६८.६० | तथैवमुनिः कुक्षिपुनरेव-(सु) | ३६.६७ | तथैवमुचुकुंरस्यकुन्नेरो (स्व) | ६.४ | तथोक्तान्निपमांश्चैव (उ) | ६४.११० | तदध्यायस्यजप्याच्च (उ) | २७.४५ |
| तथैत्याहुतदातन्वी (उ) | २४५.६५ | तथैववाह्वरेष्ठेव (उ) | २४५.११६ | तथैवयत्नः कसंब्य-(सु) | ८.११४ | तथोक्तोर्वारभद्रेण-(उ) | १५४.३६ | तदध्वनिमहावीर्यो (उ) | २४२.१५५ |
| तथैत्यातदाकंसो (उ) | २४५.११ | तथैवजप्रसामायं (सु) | २२.१७७ | तथैवविद्यल्लिकाः पुलिदा (स्व) | ६.५७ | तथैतिचप्रतिज्ञातपितुः (सु) | ३७.७ | तदंगणंनोणमहोनशीत (पा) | ११७.२० |
| तथैत्युक्त्वाचभगवान् (उ) | २५०.८३ | तथैवजन्मधामानोमुनयः(सु) | ७.६५ | तथैवविष्णुमभ्यर्चन् (सु) | २३.२३ | तथोतियोक्त्वाप्रोवाच- (सु) | १४.५५ | तदंगमजनं कामार्थच्छिद्धि (पा) | ७०.५४ |
| तथैत्युक्त्वाचसं स्मृत्य (उ) | ७.८५ | तथैवतवपुत्रास्तेदेव-(भू) | ६.१६ | तथैवसं प्रतिगता (क्रि) | ६.११४ | तथोपरिमहागुर्ध्रंभक्ष्य (उ) | १२६.१७६ | तदंगेपतिनीदृष्ट्वा (उ) | १७.२४ |
| तथैत्युक्त्वावतुतेसर्वं (सु) | ८.११७ | तथैवतामसादेविनिरय (उ) | २३६.२२ | तथैवसर्वकामाप्ति-(सु) | २३.११६ | तथोपलेपनं कृयटिर्णं (क्रि) | ११.४४ | तदद्यसर्वयूयं वैराक्षसाः (उ) | २४५.६१ |
| तथैत्युक्त्वायमुनयः (पा) | ११३.१५ | तथैवमदिमंवेगाद (उ) | १०१.२६ | तथैव सर्वेसंपूज्यो (उ) | २२४.४३ | तदलं यंभवेत्सर्वं (क्रि) | ११.६८ | तदनंतगुणं प्रोक्तं (उ) | १४०.११ |
| तथैत्युक्त्वायुनर्वीर-(पा) | ५.१६ | तथैवपंचतीर्थचयत्रा (सु) | ११.४७ | तथैवसमुं बाला- (उ) | २४५.१०४ | तदलं यंभवेत्सर्वं (क्रि) | ११.६८ | तदनंतफलतस्यभवेत् (उ) | १३७.२१ |
| तथैत्युक्त्वायुनिरवाः (पा) | ११२.६५ | तथैवपरमेकान्तति (उ) | २५३.१२६ | तथैवजनिष्येवर्द्ध-(सु) | १४.३७ | तदशक्यविजानीयाद्या (उ) | ७१.१६ | तदनंततृणीकृष्ण-(उ) | २५२.७४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

१७०

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| तदंतदितानेकसूर्यं (सु) | १७७.४० | तदयत्नात्त्वयातात-(सु) | ३३.४२ | तदस्त्रं वारयामासकृष्ण (उ) | २५०.३३ | तदाक्रिगते विप्रा-(भू) | २४.२३ | तदाचक्ष्वमहाभाग (भू) | १०१.५ |
| तदंत राच्छादितकंवलं (पा) | ११.१७७ | तदयश्चूर्णोभूतबीज (उ) | २५२.६६ | तदस्यकुशार्द्रं ल (उ) | ५१.४३ | तदाकिस्वयमिन्द्रोवा (क्रि) | ५.१२४ | तदाचरनिजकर्म (उ) | १७७.५६ |
| तदंत राः प्रजासर्वमानुषां (सु) | ३७.११४ | तदरर्षप्रविष्टस्मयुं (स्व) | ३६.५१ | तदस्यपृच्छां करोमि (पा) | ११६.३० | तदाकिमपिनोक्तमे (उ) | २२१.२० | तदाचान्योन्यसंरं (उ) | १२८.११२ |
| तदंतरेतुश्चिरमंडलं (पा) | ७२.१३६ | तदर्चनं कोटिगुणं (उ) | ८२.१४ | तदहंकथपिष्यामि (उ) | ३०.५ | तदाकियाहिनंतिष्ठ (क्रि) | ८.७३ | तदाचित्रांगकः क्रुद्धो-(पा) | २७.२८ |
| तदंतरेभ्याजगामवसिष्ठो (सु) | २२.३५ | तदर्थनरभेधारण्ये (त्र) | १२.१६ | तहंकथपिष्यामि (उ) | ४२.७ | तदाकुशोमातृपादो (पा) | ६३.७७ | तदाचित्रांगकः संख्येय (पा) | २७.२४ |
| तदंतरेपुष्पमन्त्रानिधूत-(सु) | २०.८४ | तदर्थपट्टिणाभेनसर्वं (उ) | १८४.६१ | तदहंकथपिष्यामि (उ) | १३५.२५ | तदाकुशालुस्तं प्रेक्ष्य (पा) | २०.६५ | तदाचितावरोभूवकिं (उ) | १६४.३० |
| तदन्तर्कोमलदिव्यं (क्रि) | १८.१३ | तदर्थं प्रत्यय कतुं मुखत(भू) | ६१.४० | तदहं देवतादेनात्तत्कार्या (सु) | ३६.३ | तदाक्रुदितमाकर्ण्य (उ) | २०३.१४ | तदाचिरतेविच्छेदो (क्रि) | ८.८० |
| तदन्तर्पिडकवलं प्रसिं (भू) | ६६.१६ | तदर्थं मपि मार्गस्य (उ) | ६२.१० | तदहं नाशयाम्येवयदा-(भू) | ४३.६३ | तदाक्रुदोः कपिवरस्ता-(पा) | २८.४२ | तदाचिरेण कालेनपंचत्व (स्व) | ३५.२३ |
| तदन्तर्भवद् दुग्धं (सु) | ८.१६ | तददुः संख्यकेनापि (उ) | ८६.११ | तदहं श्रोतुमिच्छामि-(सु) | ३५.३ | तदाक्रुदोनिशाचारी (पा) | ३४.७४ | तदाचैवयुरेशेनसर्वं (उ) | १६१.१२ |
| तदन्तमेवभुंजति पितरो (भू) | ५६.३२ | तदर्धेनचत्रेतायां (क्रि) | २६.४१ | तदहं श्रोतुमिच्छामि (उ) | ७१.६४ | तदाखिलः सहृदये (पा) | ४२.७६ | तदाजनाः समायाता (पा) | ६७.६० |
| तदन्त्यत्रनियुक्तस्य (पा) | ११४.४१२ | तदर्पयेन्महाविष्णो (क्रि) | २६.७७ | तदहंसंप्रवक्ष्यामि (उ) | ७१.७५ | तदागच्छपुनः शीघ्र (क्रि) | ८.८३ | तदाजयज्येत्युचनः (उ) | १६६.६ |
| तदन्त्यमेवहातेजा (उ) | २४२.३४ | तदहं तिभवान्धर्म (पा) | ८६.१० | तदहोयंतुमारभे (त्र) | १३.३२ | तदागच्छेत्परं स्थानं (क्रि) | २१.८६ | तदाजात्रालिनामानं-(पा) | ३०.१८ |
| तदशकोटिकोट्यं-(पा) | ६६.११५ | तदलंपशुधातादिदुष्ट- (सु) | १३.२६१ | तदाइंद्रयज्ञद्रुत्वाद्भज- (स्व) | १८.११ | तदागगारांसप्तत्या (पा) | १७.१० | तदाजालं नरः संख्ये (उ) | १८.६२ |
| तदपिस्थापयाम्यत्र (उ) | २००.१४ | तदवन्नान्ध्रययस्मा (सु) | १.५७ | तदाकथमहोमृष्टो (क्रि) | ६.१२८ | तदागतं त्रिशूलं नमुल्लेजग्रा-(पा) | ३४.५० | तदाजयामहः राजो-(पा) | १६.५६ |
| तदप्यहं ब्रवीमि त्वांगं (क्रि) | ६.२ | तदवेक्ष्यजगन्नाथ (सु) | २३.८० | तदाकथं पतितः कोपात्-(पा) | ६४.२३ | तदागणवलंदृष्टवा-(पा) | ४०.४८ | तदाजयत्रिभुवनैस्त्राहृ (पा) | २२.४४ |
| तदभावेतुकांसंस्याद(पा) | ११७.१०७ | तदशक्तोहविष्यान्न (उ) | १६८.२८ | तदाकर्ण्यं ततो राजा-(भू) | ४६.६ | तदागत्यकुतः क्वापिस्व (पा) | ८७.१५ | तदाज्ञाप्यायुक्ते (पा) | ४४.६६ |
| तदभावेतुदुर्वाः स्युस्त (पा) | ११४.२६६ | तदस्त्रं रघुनाथस्यभ्राता (पा) | ३४.६६ | तदाकर्ण्यं महं वाक्यम-(भू) | ४६.५ | तदागत्यकुतः क्वापिसु. (पा) | ६२.१२ | तदाज्ञाकारिणीनित्यं-(सु) | १८.१६३ |
| तदमृष्यन् राजपुत्रोऽस्युस्त (पा) | ४१.११ | तदस्त्रं व्याघ्रवदृष्टवा- (पा) | ३४.७२ | तदाकर्ण्यं महदवाक्यं (भू) | १८.२० | तदागत्याहं नृणां वैगं चा-(पा) | ३१.२५ | तदाडमरुनादेनानादितं (उ) | १५१.७२ |
| तदयं जगतामोशं (सु) | ५.५६ | तदस्त्रं मुक्तमालोक्य (पा) | ५२.५५ | तदाकर्ण्यं सर्वजं (उ) | १८४.४३ | तदागत्वाविशं कास्तेगुरो (सु) | १०.५७ | तदातं निर्गतं दृष्ट्वा-(पा) | ३०.३६ |
| तदयं मयः प्राप्तः (उ) | २४४.४२ | तदस्त्रं रात्रवोत् (उ) | २४२.३२० | तदाकाममधुस्त्रीणां-(सु) | २२.२६ | तदाग्निहोत्रमात्राणि-(सु) | १५.३३२ | तदातद्वयवोमावाकाशे (पा) | २८.३५ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१७१

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|---------------------------------------|--------|
| तदातंप्राब्रवीद्विप्रोदत्त (पा) | ६५.३६ | तदानेवचनंप्रोचुः (पा) | ५०.२ | तदादिश महाभागप्रमाणं (भू) | ६७.६४ | तदापंचशरात्प्राप्तु- (सु) | २३.११० | तदाप्रभृतितीर्थ- (उ) | १५४.५४ |
| तदात्सलोहपाशेन (पा) | २०.५७ | तदानेववापदानुजघ्नु (उ) | १८४.६४ | तदादिशस्वसंज्ञेनान- (सु) | १८.४३७ | तदापिचकुशोवीरो (पा) | ६४.३१ | तदाप्रभृतिनस्त्वानं (उ) | ११०.२२ |
| तदातंवेदयामासुः (पा) | ३३.१३ | तदातैर्बहुहास्यं कुत्वा (पा) | १८.८ | तदादुंभुभयोनेदुः (उ) | १५१.७३ | तदापिसनतां वक्ति किमपि (पा) | ५६.१५ | तदाप्रभृतिनीर्थिहिनन्ना- (उ) | १५५.३६ |
| नदातत्रदशहिंदेवायत (पा) | १८.१३ | तदातैस्तु द्वित्रैः सम्पक् (उ) | १३५.५ | तदादुंभुभयोनेदुर्वाणा (पा) | २१.४७ | तदापुत्रकृतं वापि- (सु) | ३४.२२३ | तदाप्रभृति नै शैला (भू) | २६.२० |
| तदातद्योगिनोदत्त- (पा) | ५२.५६ | तदात्मकत्वेन च मां पाह्या- (सु) | २१.१३१ | तदादुंभुभयोभेयं ग्रानकाः (पा) | १६.५६ | तदापुत्रस्य वै भूच्छां (पा) | ४१.३१ | तदाप्रभृति दुःखेन (भू) | १२०.६ |
| तदातद्रक्षकाः सर्वे- (पा) | ४७.१० | तदात्वं तं प्रकुपितः (पा) | ५२.१८ | तदादुंभुभयोवध्वा वै (उ) | ७७.३६ | तदापुत्रस्य दमनो मृगया (पा) | २३.४ | तदाप्रभृतिदेवस्य (उ) | ६६.३२ |
| तदातत्सुमहत्कर्मदृष्ट्वा (पा) | ५१.४० | तदात्वं तं प्रकुपितः (पा) | ६३.७५ | तदादेशश्च नुपितः (सु) | ७७.८८ | तदापोरांगनाः काश्चिद्ग- (पा) | ३.३० | तदाप्रभृति नृन्यं पु (उ) | ६.३१ |
| तदातमोभवत्तीर्थ यत्र- (पा) | ३४.५३ | तदात्वं तं मुदं प्राप्तः (पा) | ५७.५५ | वदादैत्यकुलाचार्यः (उ) | ४.१२ | तदाप्रकुपिताराजाना (पा) | ५२.४३ | तदाप्रभृति ग्रहाद्याः (स्व) | १८.१ |
| तदातस्यांसवामिभ्यांस (उ) | २०२.१४ | तदात्वं तं मुदं प्राप्तो- (पा) | ६६.१६१ | तदाध्यानपरो ज्ञातो- (पा) | ६६.१५६ | तदाप्रकुपितो दीप्तो- (पा) | ६०.४४ | तदाप्रभृति नाराजं- (भू) | ६१.३७ |
| तदातापोनकर्त्तव्यस्त (उ) | १३२.११५ | नदात्र सर्वे विप्राश्च (उ) | ७७.३५ | तदानरककोटीपुपीड्य- (पा) | ३०.३४ | तदाप्रकुपितो राजा- (पा) | २३.४१ | तदाप्रभृति भोदेविगुत्तोहं (उ) | १५४.६६ |
| तदाताः सर्वयोगिन्यः (उ) | १८.११६ | तदात्रैव ज्ञास्यसे राजन्- (पा) | २८.७२ | तदानारायणो देवो (उ) | २.१२ | तदाप्रकुपितो राजा (पा) | ६२.१५ | तदाप्रभृति विप्रेन्द्रः पुण्यां- (भू) | ३५.७ |
| तदातिक्रोपताम्राक्षः (पा) | २४.४७ | तदात्वयापि संहिता भवानी (सु) | ४३.७१ | तदानीं मंगलनुचैषोपा (पा) | ११६.६८ | तदाप्रकुपितो राजा (पा) | ४५.३६ | तदाप्रभृति वैलोकाः (भू) | २८.८६ |
| तदातिदुःखिता देवाः (पा) | ७.७ | तदात्रैलोक्यहरणैश्चक्रु (सु) | १३.४१३ | तदानीं शिरग्राच्छिद्य (पा) | ५६.२८ | तदाप्रकुपितो तं (पा) | ४५.४७ | तदाप्रभृति संप्रवृत्ता (उ) | १२२.५६ |
| तदातीर्थमिदं जातं- (उ) | १३५.१२६ | तदादत्ता इयं गंगा विष्णो (उ) | १३५.२३ | तदानुग्रहमाधा च्चस्यै (पा) | १४.४३ | तदाप्रकुपितो तं (पा) | ४४.२५ | तदाप्रसन्नो भगवादेव देवः (पा) | ७.३ |
| तदातुषर्वताः पेतुर्मस्तको (पा) | २४.५२ | तदाददर्श राजानं जनकं (पा) | ३०.४२ | तदातुषः समागत्य- (पा) | ३१.२६ | तदाप्रकुपितो तं (पा) | ६३.६६ | तदाप्रोवाच भूमीशोय (पा) | ४६.५८ |
| तदातुमुच्छित्तो राजा (पा) | २८.४८ | तदादध्यमहादेवं रुद्रं- (सु) | ३१.१०० | तदानुषः समागत्य- (पा) | ३१.२६ | तदाप्रकुपितो तं (पा) | २८.४४ | तदाप्रोवाच वै राजा पुत्रं (पा) | ३१.५२ |
| तदातुष्टोमहेशः (पा) | ११४.४६४ | तदादानपरं दृष्ट्वा (पा) | ६६.१३३ | तदानेन निपंगतास्त्वादु (पा) | २७.३६ | तदाप्रकुपितो तं (पा) | २६.६८ | तदाबलेन नेष्यामो (भू) | १२.२१ |
| तदातुसामहापुण्या (उ) | ३८.११ | तदादानसमये सर्वं (पा) | ११६.१३४ | तदातं वाजिं तां त्यक्त्वा (पा) | ६७.५२ | तदाप्रभृति जेतुं लक्ष्मीनां- (भू) | ४३.७४ | तदाब्रह्मचो राजा (उ) | १२५.५७ |
| तदातेन सुपर्णस्य- (सु) | ४१.२७३ | तदादायमहात्मा (भू) | २.१ | तदानुषमुदकं चापि (कि) | २१.११२ | तदाप्रभृति कुष्ण (उ) | ७.८६ | तदाब्रह्माणमाह्वय (पा) | ७५.५ |
| तदातेन वितामृत्सु (सु) | ४४.५६ | तदादिशः प्रसेदुस्तारा (पा) | ३४.६१ | तदान्यं तं प्रकुपितो (पा) | ६१.५४ | | | | |

श्रीपद्ममहापुराणम्-ऋजोकोनुरक्रमणी

१७२

| | | | | |
|------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|---------------------------------|
| तदाभग्नविमानंहिंस्य (पा) ३४.६४ | तदायमोनिजंरूपंयुत्वा (पा) ४६.५६ | तदालक्ष्मीनिधिभ्राता (पा) ११.५८ | तदावैवामनस्स्वेव- (सृ) ३८.१२५ | तदासमाख्यतनय (उ) १८.१११ |
| तदामिमुखमायां (उ) २०४.१०२ | तदाराजानुजः क्रुद्धो- (पा) २६.६० | तदालक्ष्मीनिधिस्तस्य (पा) २६.६१ | तदावोचत्सरजकोनाहं (पा) ५६.२५ | तदासामद्वगृह्णाता (उ) २१४.७४ |
| तदामिवेवस्नानार्थं (पा) ६७.३५ | तदाराजापितृषुष्ठचारो- (पा) २२.६२ | तदालवश्चमृनाथं (पा) ६०.४६ | तदाव्याकुलितालोकाः (पा) ४४.५८ | तदामुकेतस्तदभ्राता- (पा) २८.४५ |
| तदाभूमिश्चालेयं (पा) ४१.३२ | तदाराजाप्रत्युवाचयो (पा) २४.६ | तदालवेनतीक्ष्णेन (पा) ६२.३१ | तदाव्याकुलितोत्थं (पा) ४४.५६ | तदामुमनयागुवतः (भू) २०.१३ |
| तदाभूमौपतंतुदृत्वात (पा) २७.४६ | तदाराजामहद्दुःखं- (पा) ६५.७६ | नदालवोजगादाशुमया (पा) ५४.३३ | तदाव्यासोविष्णुरूपी (क्रि) २६.१५ | तदामुयुद्धंजगतां- (सृ) १२.३६ |
| तदाभूश्चलिता राजान्- (पा) १४.५५ | तदाराजोभयात्सर्वे (उ) १४१.२१ | तदालोकत्रयहोतद- (उ) १११.२१ | तदाव्याघ्रघ्नग्रायातोरथे (पा) ३४.५६ | तदामुहद्गुरुयतः (उ) ६५.२६ |
| तदामखनिनाशायदमनो (पा) १४.३२ | तदाराजोदयानष्टाहृतं (पा) १४.५६ | तदालोक्यवृषोभीतः (पा) १४.५७ | तदाव्याघ्रोमिदुःखार्तो- (पा) १४.४१ | तदासौकुपितो राजा (पा) ११०.६३ |
| तदामहाक्यमाकर्ण्य- (पा) १८.१० | तदाराजः प्रजायेत (भू) १२०.३३ | तदावढोमुनिसन्निधाने (स्व) ३५.३० | तदागिलाः समुत्पाट्य (पा) ६१.५२ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामयाकार्यमचित (पा) ११७.२८ | तदाराजौतुक्तंयं (उ) ३७.८३ | तदावरणसंस्थानदेव- (उ) २५३.१०६ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामयाविचारोवैकृतः (पा) ६४.६१ | तदाराजः प्रत्यवोचचारं (पा) ५६.२० | तदावर्षसहस्रं तुवर्षाणां (सृ) ३६.३८ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामान्तिव्यावासी (उ) २१०.३५ | तदाराजः प्रत्युवाचचारो- (पा) ५६.२१ | तदावर्षसमाकर्ण्य (पा) २१.१३ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामाशंसमास्थाय (उ) १६.१२ | तदाराजः स्वयंजान (पा) ६७.५३ | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामुक्तकुशेनाशु (पा) ६४.२० | तदाराजानुजः (पा) ६२.२८ | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामुनिवृषोदृष्ट्वा (पा) ४६.३८ | तदाराजोत्यजप्रोक्तं (पा) ५८.४ | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामुनिः प्रहृष्टात्मा- (पा) ६७.८७ | तदाराजोनिजामात्यं (पा) ६५.५० | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामुनिमुताः प्रोबुल्वं (पा) ५४.२६ | तदाराजोनिजामात्यं (पा) ६५.५० | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामेकृतवान्नामद्विजो (पा) ६७.६६ | तदाराजोनिजामात्यं (पा) ६५.५० | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामेमेनसिखिप्रसंशयः (पा) १८.४ | तदाराजोनिजामात्यं (पा) ६५.५० | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदामोक्ष्यामिवाहृतं- (पा) ४६.२० | तदाराजोनिजामात्यं (पा) ६५.५० | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |
| तदायंपश्यतांतेषां (उ) २१५.२७ | तदालक्ष्मीनिधिः क्रुद्धो (पा) २६.५६ | तदावाभ्यां श्रुतं सर्वं (पा) ५७.२१ | तदाशुभमिवायाति- (पा) १०४.१२७ | तदासौपुष्कलः क्रुद्धः (पा) २७.६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकांशुक्रमणौ

१७३

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| तदाहृतस्यचरणव-(पा) | २८.७० | तदिदंसांप्रतंसर्वभवती (सु) | २३.१३६ | तदेकपावनलोके-(पा) | ७८.६ | तदेवममृतसर्वकोऽपि (क्रि) | ५.१२१ | तदैवहृदयेशोकः (पा) | ५८.६७ |
| तदाहृतप्रतिष्ठासि (उ) | २१२.२१ | तदिदानींप्रवक्ष्यामि-(सु) | २२.६३ | तदेकमेवद्विबोधयामिन् (सु) | ३४.१२६ | तदेववातिकं विद्धि (भू) | १२०.४६ | तदोकारसहायेन-(सु) | ४५.१८६ |
| तदाहृतैर्नवसांढं (उ) | १३५.६६ | तदिदानींप्रवक्ष्यामि-(सु) | २१.५२ | तदेकमनसः सर्वे (सु) | ३१.३८ | तदेव विदुषाकार्यमात्मनो(सु) | १६.२६६ | तदोक्तं रम्योऽनेनतां (पा) | ७५.४२ |
| तदाहृपादकामुक्तो (भू) | ६८.३८ | तदिद्वचनं श्रुत्वाऽभयं (उ) | ५.५१ | तदेकाग्रमनाभूत्वाशृणु-(पा) | ७२.१ | तदेवविपिनधोरं-(पा) | ५६.१४ | तदोक्तः शंकरेणाहो (उ) | १०.३६ |
| तदाहृसाः स्वपक्षाभ्यां (पा) | ५६.४५ | तदिद्वचनंश्रुत्वा (उ) | ६.१६ | तदेतदन्यजनुपिसुकृतं (उ) | ३१.२६ | तदेवसीमिकतीर्थम् (स्व) | ५२.१६ | तदोद्यत्तमाज्ञा (पा) | २३.३६ |
| तदाहृमुप्रिया भार्या (भू) | ११८.२७ | तदिहाभ्यासवर्त्यको (उ) | २१३.४६ | तदेतकर्मणः प्राप्तं (उ) | ३०.११० | तदेवस्मरतेतीर्थं (स्व) | ६२.८ | तदोद्यत्ताश्चादितेयाहं (उ) | २३.५५ |
| तदाहृतोभूतपतिः (पा) | ४४.१५ | तदीययातुमंजयापूजनं (उ) | २३.२६ | तदेतत्तेममाख्यातं (उ) | १२४.८२ | तदेवाग्रयणेमासिभवत्या (क्रि) | १४.१६ | तदोद्योगेमुनेन्द्र (उ) | ६७.१५ |
| तदाहृन्नाह्मणोदेवी (पा) | ११२.१२६ | तदीयानचंचयेद्भक्त्या(उ) | २५३.६२ | तदेतन्निर्मलं रूपं श्रुति (भू) | ६२.३७ | तदेवान्योन्यसंभ्रात (स्व) | २२.१०४ | तदोवाचकापि श्रेष्ठो (पा) | ४७.१८ |
| तदाहृभागवान्ब्रह्मा (उ) | ६.२८ | तदीयान सेवाच (उ) | २२४.२६ | तदेतस्याः कुचस्पर्शा (पा) | १०६.३८ | तदेवाष्टगुणं पापं-(पा) | ७६.३४ | तदोवाचमहीनाथ (पा) | ५१.५४ |
| तदाहृमहसंविप्रकोयं (पा) | २८.६६ | तदीययानि च वर्षाणि (सु) | २.२२ | तदेतस्याः कुचस्पर्शा (पा) | १०६.३८ | तदेवोपरिस्थतंसर्वं (सु) | ४३.३५८ | तदो वाचयमोभूष (पा) | ४६.६० |
| तदाहृमिष्टकाचूर्णं-(उ) | २१४.७५ | तदीयाराधनं चस्यान् (उ) | २५३.२५ | तदेनंशृङ्खलैर्बद्धाक्षिपेत्(सु) | १३.२६५ | तदेकहिमहृद्भाग्यात्(पा) | ३५.३६ | तदगच्छकथयस्वाम्य (उ) | ६७.१२ |
| तदाहृमुक्तवांस्तां (उ) | २१४.६३ | तदुक्तवचम्राकर्ण्य-(पा) | ३६.२५ | तदेनामुद्रहृत्वाद्यमया-(सु) | १६.१८६ | तदेकाकीचक्रप्रथि (उ) | १६७.८२ | तदगच्छकुशलतेस्तु (सु) | १६.२३४ |
| तदाहृद्रकुपिताय-(सु) | १७.१५५ | तदुक्तमेवमाकर्ण्य (पा) | ११.२० | तदेभ्योदेहि विधि (पा) | १०२.१६ | तदेकाकीचक्रप्रथि (उ) | १६७.८२ | तदगच्छतुयुवांलोका (उ) | १७६.२३ |
| तदाहृत्मानमाराध्य (भू) | ७.२२ | तदुक्तमेवमाकर्ण्य (पा) | ११.२० | तदेवंसंप्रत्यच्छेत्-(सु) | १६.२८४ | तदेकाकीचक्रप्रथि (उ) | १६७.८२ | तदगन्तमाकर्ण्यन्तराधिपां (पा) | १२.८० |
| तदाहृत्स्वकरोत्येव (भू) | ११.४० | तदुत्सवंतुगोविंद (उ) | २४५.१८० | तदेवं हि त्वया वीर (भू) | ८१.८ | तदेवाप्यतत्पुण्यं (उ) | १२७.१५८ | तदग्न्यं चपवित्रं (उ) | ८६.३० |
| तदाहृत्स्वकरोत्येव (भू) | ११.४० | तदुत्सवंसमाज्ञाय (पा) | ६८.१२ | तदेवं हि त्वया वीर (भू) | ८१.८ | तदेवतत्रगत्वास्सनात्वा (पा) | ७४.३८ | तदग्न्यं शिवतंस्थानं (उ) | २२८.७१ |
| तदाहृतवहोज्ञात्वा-(पा) | १४.३४ | तदुक्तमद्यतुल्यं (उ) | ६४.५५ | तदेव गानं च सुरांगनाभि(भू) | ११२.१ | तदेवत्यक्षतित्वांच (उ) | १६८.४८ | तदग्नानेनजगद्वाप्तं (पा) | ६६.१२६ |
| तदाहृत्तित्वैलौकाश्चक्रु (पा) | ५१.७१ | तदुपहतद्रव्यं(पा) | ११७.२२१ | तदेवतीर्थमुमहत्स (पा) | ६७.७४ | तदेवपृथिवीतानं (पा) | ५६.१८ | तदगृहं तुसमाश्रित्य (उ) | ७४.१४ |
| तदाहृत् कस्यविप्रस्य (उ) | २१३.४१ | तदुपायं महादेव-(पा) | ८०.२ | तदेवपुण्यं परमपवित्रं (पा) | ६४.४ | तदेव वं स्वकं देहं (भू) | ४६.६५ | तदगृहं सर्वतीर्थानां-(उ) | १३१.४ |
| तदिदं चत्वर्याकार्यं (उ) | ७६.२७ | तदुद्वेगा पर्वत रम्यतं (उ) | १२५.११५ | तदेवमसरज्योति-(उ) | १७५.६ | तदेवसातुहेमांगी (उ) | २२१.१२ | | |
| तदिदं संमृतेः सारं (भू) | ५६.१५ | तदेकं कथ्यतां घर्मसर्वं (पा) | ६७.७ | तदेवमतरामांशं (क्रि) | ३.३२ | | | | |



श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

१७४

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--|---------|------------------------|---------|------------------------|---------|
| तद्गृहं सर्वतो भद्रं (भू) | ५१.४४ | तद्धनंकूलनाशाय (उ) | ३२.४८ | तद्वह्निं वनसंवेहो निर्गुणं (स्व) | ३१.७६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १०३.२६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.६१ |
| तद्गृहं सुकलाख्यं मे (भू) | ५६.२५ | तद्धनं वर्तते भूरि (उ) | २०१.४१ | तद्ब्रह्मज्ञानाय चः श्रुत्वा (उ) | १०८.१८ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १३२.१२२ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १२०.१५ |
| तद्गृहं सर्वदा तिष्ठदुःखं (त्र) | ६.१५ | तद्धस्तकमलस्पर्शा (क्रि) | १६.२७ | तद्ब्रह्मज्ञानं महाभाग (उ) | १६७.३१ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ५३.७५ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १०४.१३२ |
| तद्गृहं तु प्रविश्याय (पा) | ११४.७६ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ११.५० | तद्ब्रह्मज्ञानं देवदेवेश (पा) | ६६.१०६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.११२ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | २५.४ |
| तद्गृहं दशदलावृत्तम (पा) | ११४.३१८ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | १८.८६ | तद्ब्रह्मज्ञानं कुर्वतां पुंसां (क्रि) | १२.११६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | २४२.३४५ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | २१.१७७ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ७.२३ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ७४.१६ | तद्ब्रह्मज्ञानं च त्वया (उ) | ३१.२४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ७१.८५ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | २२.१३१ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ७६.२४ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | १७८.२१ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | १८.२३ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.१४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १०३.५३ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | २३.६२ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ७७.३ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | २८.४७ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १६६.१३ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ८४.७८ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | १.३१ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | २६.५४ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ६०.७ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ७८.१६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ८६.६४ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ११५.३७ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ४२.३७ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ७०.१८ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ३१.४१ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.४ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ५६.७७ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | १०२.८ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | १२७.६५ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ३४.३११ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | २१.१२६ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ३८.३२ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | २७.३ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ८.७६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ३४.३१४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | २०.१३३ |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | १२.७ | तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | २६.३३ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ११७.२११ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १६.२७८ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६५.१२ |
| तद्गुः खशमनाथयि- (भू) | ६६.१०३ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ३४.१६ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ४३.१८२ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १३२.७४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६.४ |
| तद्गुः खशमनाथयि- (भू) | १०४.१६३ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ४२.६१ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ४३.२०४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ८१.५७ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १०५.१६२ |
| तद्गुः खशमनाथयि- (भू) | १५७.१० | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ६२.२० | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ४१.५४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६५.६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | १५.५२ |
| तद्गुः खशमनाथयि- (भू) | १२५.११५ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | २६.३२ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | १५.२४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६५.६ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.१६३ |
| तद्गुः खशमनाथयि- (भू) | २५१.१४ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ५८.६ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ६३.३० | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ८६.६४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६१.८ |
| तद्गुः खशमनाथयि- (भू) | ६६.११३ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | १६७.११० | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ५४.१३ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.२१० | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ६६.६० |
| तद्वत्सुकमलस्पर्शा (क्रि) | ३०.८ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ६६.३७ | तद्ब्रह्मज्ञानं च कृत्वा यो (पा) | ४४.८ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ४.३४ | तद्वत्सुखं भवत्ये (पा) | ४२.७६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|---------------------------------|--------|---------------------------|---------|
| तदस्त्रविदुस्पर्शेन (उ) | ४६.३१ | तद्विनायोहितं ब्रूयात्-(पा) | ११४.४७६ | तन्मयाविनयोपेता (पा) | ६१.६ | तन्मया दत्तं त्वयारान्स्तो (मृ) | ३४.३५२ | तन्मये कर्णिकांयां तु (उ) | २२८.२६ |
| तदाक्यंचसमाकर्ण्य (ब्र) | ७.३६ | तद्विप्रयोगविधुराकृश (पा) | ४.३ | तनुजैर्बुधमिः सार्धं (उ) | १८१.५ | तन्मयुक्तं तत्र ब्रह्मन्-(मृ) | १३.२८६ | तन्मये कर्णिकायां (उ) | २२६.१३३ |
| तदाक्यंताः स्त्रियः (पा) | ६८.८ | तद्विमानं तदापश्यद्-(उ) | १०७.१२ | तनुत्यक्षतियेनै (उ) | २००.११७ | तन्मया कर्मणिगादितुमपि (मृ) | ३४.२६४ | तन्मयेतः पुरंरम्यं (उ) | २२६.६३ |
| तदाक्यंतुतदादेवि (उ) | ७७.२४ | तद्विमानं समाहृत्य (उ) | ५.३२ | तनुमध्याजगृह्यात्री (उ) | २३२.४३ | तन्मस्त्वं सत्यतां ब्रूहि (भू) | २४.२४ | तन्मयेतः पुरंरम्यं (उ) | २२६.१२६ |
| तदाक्यंतुसमाकर्ण्य (उ) | १४३.२१ | तद्विमानावलीदृष्ट्वा (पा) | २२.५० | तनैव कर्मणादृता (ब्र) | ३.२७ | तन्मनाशे तत्पृथक्स्व (उ) | २०६.५२ | तन्मयेतिहितं ब्रह्म (स्व) | ६०.१५ |
| तदाक्यंतुसमाकर्ण्य (उ) | १६८.५४ | तद्विद्वत्पदेव (उ) | २४०.३६ | तंडुलं ज्वलं पकेन (क्रि) | २२.६५ | तन्मिनादेन शूराणां-(पा) | १०.२३ | तन्मये भवनं हरे (उ) | १६७.११२ |
| तदाक्यं पविनातुल्यं (पा) | ५६.१७ | तद्विष्णोः परमं धाम (उ) | २५५.१०३ | तंडुलं प्रस्थदानं च (मृ) | २३.१२३ | तन्मिमितं त्वया दृष्टो (भू) | १२०.५० | तन्मये मंजु भवने योग (पा) | ६६.८१ |
| तदाक्यं प्रोक्तमाकर्ण्य (पा) | ५८.२ | तद्विष्णोः परमं धाम-(पा) | ७७.२ | तंडुलैरक्तशालेयैः (मृ) | २४.४८ | तन्मिमितं महं भद्रं (भू) | ३६.३१ | तन्मये मंडपं दिव्य (उ) | २२६.१३० |
| तदाक्यं राघवेणोक्तं (मृ) | ३३.५२ | तद्विष्णोः परमं धाम-(उ) | २२७.२ | तंडुलैः शुक्लघोतैश्च (उ) | ६६.४३ | तन्मिदिष्टं गृहं वीरो ययो-(पा) | ५६.३७ | तन्मानानां श्रुताः (उ) | २०२.५२ |
| तदाक्यं हृदये तस्या (क्रि) | ८६.४ | तद्विष्णोः परमं धाम (उ) | २२७.६८ | तन्तुशब्दं प्रवृत्तौहं (मृ) | १८.१३६ | तन्मिना हि भवेत्प्राज्ञः (स्व) | ६१.१०७ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २२३.१६ |
| तदाक्यं माकर्ण्य विधे (उ) | १६५.७५ | तद्विष्णोः परमं धाम (उ) | २२८.१० | तन्तुमायाविनं शब्दं (मृ) | ५६.७७ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | १०३.५१ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २२३.१६ |
| तदाक्यं सुबाहु (पा) | २५.३२ | तद्वीर्यं रूपेण (पा) | ६६.७२ | तन्ते संपादयाम्यद्य (मृ) | १३.२७२ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तदाक्यं मे तदाकर्ण्य (क्रि) | ६.८३ | तद्वीर्यं रूपेण पतते-(भू) | ५३.१०३ | तत्र युद्धं महज्जातं (भू) | ६.१५ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तदवाक्यैः शुभैः पुण्यैः (भू) | ६७.५४ | तद्विज्ञातां श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तदासना निबद्धात् (उ) | १६१.३ | तद्विज्ञातं श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तदासना निबद्धात्मा (उ) | १८१.६ | तद्विज्ञातं श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तद्विज्ञातं श्रयंस्मात् (पा) | २४.३२ | तद्विज्ञातं श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तद्विज्ञायमायविप्रः (उ) | १८४.६३ | तद्विज्ञातं श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तद्विज्ञेयमहोरात्रं (क्रि) | १७.६२ | तद्विज्ञातं श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |
| तद्विचित्रकथालोके (स्व) | ६१.७७ | तद्विज्ञातं श्रयंस्मात्-(स्व) | १.२५ | तत्रातरेद्विजः कश्चि (क्रि) | २३.६ | तन्मिनाश्च श्रुतं वाक्यं (भू) | ५३.४ | तन्मया च श्वत्वेन (उ) | २०६.१७ |



श्रीपद्महृदयपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१७६

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| प्रमाताप्रत्युवाचिमाकथं-(पा) | ५६.२४ | तन्मेकथयवीरायययकथं (पा) | ५६.१२ | तपनमंडलमंडितकंधरे-(सु) | ४४.१११ | तपस्तपः साहाय्यं-(भू) | २६.१२ | तपसाब्रह्मचर्येण (उ) | ८१.२५ |
| तन्मात्राणां द्वितीयस्तु (सु) | ३.७७ | तन्मेकथयसुप्रीत (भू) | ८६.२ | तपनस्यसुतादेवी (स्व) | ४१.२० | तपसाचास्यभीतेन-(सु) | २२.२४ | तपसामहताब्रह्मन्भवता (सु) | ३०.५ |
| तन्मात्रार्थविशेषाणि-(स्व) | २.१७ | तन्मेत्वं कारणं ब्रूहि-(भू) | १२.१०२ | तपनस्यसुतादेवी (स्व) | ४५.२३ | तपसाचैवदानेन (उ) | ७४.३ | तपसामहतायुक्तो ह्य-(सु) | ४६.३ |
| तन्मात्रेभ्योभ्यजायं (उ) | २२८.१०१ | तन्मेत्वं कारणं ब्रूहि (भू) | ६७.३६ | तपनस्यसुतादेवी (स्व) | ४७.५ | तपसाचैवभावेन (भू) | ७२.२६ | तपसामुत्तमं मांसं (पा) | ६४.१०६ |
| तन्माधुर्वततोज्ञात्वा क्रि) | १६.११ | तन्मेत्वं कारणं भद्रे (भू) | २०.२६ | तपंत्ययतपस्तीव्रं दुष्करं | ५.७८ | तपसातस्यतुष्टेन (सु) | २०.५ | तपसामेफलं ब्रूहि (उ) | २७.३२ |
| तन्मानयामिभूपाल (पा) | ५२.३७ | तन्मेत्वं सांप्रतं ब्रूहि (भू) | २२.३ | तपः प्रभावतस्तस्व जंतवो(भू) | ६१.११ | तपसा तस्य वै तुष्टौ (भू) | १२४.१५ | तपसा यशसा क्षात्रैर्दानं (भू) | ७६.३६ |
| तन्माहात्म्यं कियद्देवि (पा) | ६६.११० | तन्मेब्रूहि महाभाग (भू) | ६७.७३ | तपश्चक्रतः कामोदश (उ) | २५०.६६ | तपसादग्धदेहा (उ) | ३३.३४ | तपसाराजसेनेह (उ) | ७४.५ |
| तन्मुक्तामस्त्रमालोक्तं (पा) | ५१.५० | तन्मेविस्तराद्ब्रूहि (भू) | १०१.५६ | तपश्चचार तन्वंगो (भू) | १०३.६६ | तसादतशौचाभ्यां (भू) | ५.१ | तपसालभ्यते सर्वं (उ) | १५२.१४ |
| तन्मुक्तो जायते पापो (उ) | ११८.२२ | तन्मेशीघ्रं प्रयच्छस्व (भू) | ४.४६ | तपश्चचार तेजस्वी-(भू) | ४६.१८ | तपसादानयज्ञैश्च (भू) | १०६.३ | तपसासत्यभावेन विष्णो (भू) | ८०.१६ |
| तन्मुलं चन्द्रवर्मम् (क्रि) | ६.६३ | तन्मेसर्वयथातत्त्वं-(सु) | ३१.६० | तपश्चचार घमतिमा (भू) | ४६.४३ | तपसादुष्करेणाप्तः (सु) | ४४.८५ | तपसांसंचयोयस्य-(सु) | १६.२४१ |
| तन्मुखादथ निष्क्रांतो (उ) | १७.५३ | तन्मेसुविस्तरं तात तस्या (भू) | ८५.७६ | तपश्चचार राजेंद्र (भू) | ७७.८१ | तपसानिर्जित्य देवान्(भू) | १०.४८ | तपसिष्ठस्तदं देहाततः(सु) | ४३.२८२ |
| तन्मुले ह्यर्द्धरात्रे च द्रव्य (पा) | ७१.७६ | तन्मोहनं महास्त्रं (पा) | ५२.५७ | तपश्चतद्वर्गं त्राश्च (भू) | ४६.३१ | तपसानेन तुष्टोऽस्मि (भू) | २.७ | तपसिमेमनोलीनं-(भू) | ११३.२ |
| तन्मुष्टिघातव्ययितो (पा) | ६१.५६ | तन्मोहनं महास्त्रं (पा) | ५२.६० | तपश्चरत भद्रं वो ब्रह्मा-(सु) | १५.६६ | तपसानेन तुष्टोऽस्मि वरं-(भू) | ३२.६१ | तपसेमेरतिर्देवं निविधनं-(सु) | ४२.१७ |
| तन्मूलमनुजानंति (उ) | ८०.७० | तपएतत्परित्यज्य किं (भू) | ११३.१ | तपश्चराभिचात्रैव (उ) | १६४.४२ | तपसानेन पुण्येन(भू) | २०.१ | तपसोनैव पश्यामि (भू) | ६२.५६ |
| तन्मूलादं कुरोत्पति (भू) | ६६.१० | तपएवं समाख्यातं (भू) | ११.८ | तपश्चाकार शोतांशु-(सु) | १२.१६ | तपसानेन संजातः (उ) | १४२.५ | तपसोऽपि परं दानं (क्रि) | २०.१५६ |
| तन्मूल्यलाभाय पुरं-(सु) | २०.१६ | तपः कृतयुगे श्रेष्ठं (क्रि) | २०.३ | तपः श्रेष्ठोगुण श्रेष्ठो (सु) | ४०.१०२ | तपसाप्राप्यते राज्ञ्यं (उ) | २७.४० | तपसोऽपि वरं दानं (त्र) | २४.५५ |
| तन्मेकथयकार्यं त्वं (भू) | २.४ | तपः क्लिष्टशरीरोति (भू) | ६१.१८ | तपश्चर फलं नास्ति (भू) | १०६.१७ | तपसाप्राप्यते राज्ञ्यं (उ) | २७.४१ | तपस्तपसा सा देवी न पोव न (भू) | २६.७ |
| तन्मेकथयगोविद (उ) | ७१.११२ | तपः क्लिष्टशरीरोत्सो (स्व) | ३०.१६ | तपश्चर फलं प्राप्यं-(सु) | २.७१ | तपसाप्राप्यते स्वर्गं (उ) | २७.३५ | तपस्तपसा सा देवी न पोव न (भू) | २६.७ |
| तन्मेकथयदेवेश (उ) | ७१.११७ | तपः प्रभावतस्तस्य-(भू) | ६१.११ | तपसाः सनिवर्त्तं स्कारणं (सु) | २.६४ | तपसाप्राप्यते स्वर्गं (उ) | २७.३५ | तपस्तपसा सा देवी न पोव न (भू) | २६.७ |
| तन्मेकथयसर्वयत्र (पा) | ६३.२८ | तपः श्रेष्ठोगुणश्रे-(सु) | ४०.१०२ | तपस्तस्वतस्त्वत्पुत्र (सु) | ४.१२६ | तपसाब्रह्मचर्येण यज्ञै-(स्व) | १६.२३ | तपस्तपसाः सुमहदीव्यं (पा) | १०५.१८६ |
| | | | | | | तपसाब्रह्मचर्येण (उ) | ८०.१२२ | तपस्तपसाः सुमहदीव्यं (पा) | १०५.१८६ |
| | | | | | | | | तपस्तपसाः सुमहदीव्यं (पा) | १०५.१८६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१७७

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| तपस्तपत्वातुराजेंद्र-(स्व) | १८.११४ | तपस्वीविनलेसोम्ये (उ) | ८०.१२० | तपोवीर्यमदं दिव्यं-(भू) | २३.३१ | तमर्जविवर्कमाणं (सु) | २.३ | तमसाच्छादितलोकमृत्यु (सु) | १६.१४० |
| तपस्तपत्तुहुतजपं (उ) | १८४.१४ | तपांसियानितप्यतेत्रतानि (स्व) | ३१.८१ | तपोवतरानित्यं (क्रि) | २६.१० | तमतक्रम्यवेगेनमध्यमे (सु) | ३३.६० | तमसामिवसंधातः पक्ष (उ) | १८.२८ |
| तपस्तपन्सदैकतेकाम-(भू) | ३०.६४ | तपासंमोहितोदेव्योदेवा (सु) | ३१.६१ | तपोश्चापि द्वित्र श्रेष्ठ (भू) | ६३.१ | तमदृष्ट्वाप्यसोपाक-(उ) | १०६.२ | तमसाव्याकुलान्कृत्वा (पा) | ३३.१६ |
| तपस्तपन्तुयथारैम्यं (उ) | २४२.१८० | तपोजिष्णुर्महातेजाः(भू) | २६.२८ | तपोःसमभवद्युद्धं धोरं (पां) | ४५.५४ | तमध्यायततोविप्राद् (उ) | १८५.१०६ | तमस्त्रशस्त्रशोभाह्वं (पा) | १२.१६ |
| तपस्तेजः समायुक्तं-(भू) | २३.१६ | तपोदानादिकं सर्वं-(भू) | ३७.५६ | तपोहिपरमप्रोक्तं (उ) | २७.३४ | तमनर्थमहाधोरदंडः (सु) | ३७.४१ | तमहंप्रणिपत्वायपयं (पा) | ३५.३७ |
| तपस्तेपे निरालम्बः (भू) | २३.२४ | तपोऽध्ययनसंपन्न-(स्व) | ३१.१८२ | तप्तचक्रधरोविप्रः (उ) | २६.१८ | तमनुप्रस्थितात्क्षेत्रा (उ) | २०६.२५ | तमहंशानुशोचामिकथं (सु) | १८.३०१ |
| तपस्तेपेनिरालस्यावनवास (भू) | ५.७७ | तपोऽध्यानसमायुक्तं (भू) | १०.१४ | तप्तवैतरणी (पा) | १०१.२१ | तमपिच्छेत्तुमुद्युक्तो (पा) | ४४.२७ | तमहंशरणं प्राप्तोऽयमरूप (भू) | १६.३४ |
| तपस्तेपे निराहारो-(भू) | ६१.६ | तपोऽध्यानसमायुक्तं-(पा) | ६६.१३७ | तप्तकांचनगौरांगी-(पा) | ७४.१३५ | तमपिदेवकरं (ज) | २५.११ | तमहं साययिष्यामि (भू) | २४.१० |
| तपस्तेपेसुखमि (उ) | २४१.२ | तपोनुभावादद्यतस्वरानी (सु) | २०.६ | तप्तकांचनवर्णी (उ) | २२८.४४ | तमप्यथाधकंमत्वाध्यायतो (सु) | ३.६६ | तमागतंनिजंदायं वीक्ष्य (पा) | ५३.२० |
| तपस्तेपेवर्द्धतांभूयः (स्व) | २६.३३ | तपोते देवताः सर्वा (भू) | ६१.३ | तप्तकांचनसंकाशा (उ) | २२६.१०८ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्तेवर्द्धतांविप्रमतु (स्व) | २७.२२ | तपोबलवशात्सालुनव-(सु) | ४२.२८ | तप्तकांचनसंकाशा (उ) | २२६.१०८ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्यतांब्रभवतां (सु) | १५.१३६ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्यंतीमहाभागाः(सु) | ४३.३०६ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्यभिरतांसोथमाया (सु) | १३.३४५ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्थितस्तुष्टुद्रोसोम-(सु) | ३६.१२ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपः स्वाध्यायनिरतः (उ) | ८०.१६ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्त्विधरितंतोर्थ (उ) | १५२.२ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्त्विनिततोयाते (उ) | १७८.८ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्त्विनोद्यमपस्थित-(स्व) | २७.१२ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |
| तपस्त्विनोमहात्मानो (भू) | ६५.२७ | तपोभिः प्राप्यतेभीष्टं-(सु) | ४३.२८१ | तप्तबालुकनामायनिरयो (उ) | ११४.३ | तमप्यनुध्वंशस्त्राद्राम (पा) | ५३.७ | तमागतंनृपंज्ञात्वा (पा) | ४७.३३ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१७८

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|--------------------------------------|--------|------------------------------------|---------|
| तमाज्ञायमहाभागं (भू) | १.२८ | तमाश्रमगतं विप्रं (भू) | ११६.७ | तमुवाचततोराज्ञी (भू) | ४५.२४ | तमूच्छित्समाज्ञाय (पा) | ६१.६२ | तमोघनानां स्वकरै (भू) | ६८.५६ |
| तमात्तधनुषं दृष्ट्वा (पा) | ६१.२८ | तमाश्रमं मुनेर्ज्ञा त्वां (पा) | ४७.३० | तमुवाच ततो वं प्र (उ) | १८६.४३ | तमृतेपुत्रलाभो (उ) | २०३.५३ | तमोद्रेकचकत्पातेरूपं (सृ) | २.११४ |
| तमात्तधनुषं दृष्ट्वा (पा) | ६३.६० | तमाश्रित्यगिरिश्रेष्ठं (भू) | ४६.१६ | तमुवाच ततो व्याधी (भू) | ८६.२२ | तमेकदाभूषणभूषिताङ्ग (क्रि) | १७.२०६ | तमोमोहोमहामोहस्तामि (सृ) | ३.६१ |
| तमानीतं हृदि दृष्ट्वा रत्नं (पा) | २६.१८ | तमाहवायसं रामो मा मे (उ) | २४२.२१० | तमुवाच तदाकांतं शूकरं (भू) | ४३.५६ | तमेते मुनयः वपुष्या (सृ) | ४३.३७६ | तया कोपेन महता मृतं (उ) | ४२.३२ |
| तमानेतुं ततो द्रुतं (भू) | ६४.३६ | तमाह विष्णुस्त्वत्तो (स्व) | ३७.१२ | तमुवाच तदात्मा वै काम (भू) | ८.३१ | तमेन माधवं भासं (पा) | ६५.१४४ | तया ग्रहीतो भो देवि (उ) | १६८.३६ |
| तमान्नेष्ट्य पुनस्तास्तु (उ) | २०६.१५ | तमिदं सा न जानाति (भू) | २६.१३ | तमुवाच पुनः सोऽपि मीनहा (भू) | ३०.३० | तमेवं हि प्रवक्ष्यामि (भू) | १.५ | तया जगत्सर्गलया (उ) | २२७.५१ |
| तमापृच्छद्विजं (उ) | १६०.२२ | तमीश्वरं बाणो मम पुर (उ) | २५०.२३ | तमुवाच प्रतपतिर्जनकं (पा) | ३०.४३ | तमेव घातयेद्योर्वै तस्य (भू) | ३३.८ | तया तत्पुत्रितं तीर्थपुष्करं (सृ) | ३२.७६ |
| तमायांत ततो दृष्ट्वा (क्रि) | १०.४६ | तमीश्वरं महाभाया (उ) | २२८.७५ | तमुवाच महातेजा (पा) | ८६.२० | तमेव नाशयेद्गत्वा काम (भू) | ५६.४ | तया तुरंग्भया देव्या प्रीत्या (भू) | २५.१८ |
| तमायांत मया लोका (पा) | २६.५७ | तमुयं दारुणं भीम (भू) | १६.८ | तमुवाच महातेजा ब्रह्मसुनु (भू) | १७.८ | तमेव परमानंदमुक्त (पा) | ७२.१२२ | तया त्वं सर्पतां त्यक्त्वा (सृ) | १७.२६८ |
| तमायांतं लभूपालो (क्रि) | २३.७ | तमुयं डीनं समालोक्य (पा) | ५२.२० | तमुवाच महात्मानं (भू) | १२४.३ | तमेव प्रजयन्ति त्वं दना (पा) | ३५.७० | तया दीशरी रस्यं (पा) | ११४.३१७ |
| तमायांतं समालोक्य (पा) | २६.६४ | तमुत्थाप्य तती रामा (सृ) | ३६.१२२ | तमुवाच महात्मानं बलं (भू) | २३.३२ | तमेव पुत्रवन्मेने सत्तनं (उ) | ८८.३८ | तया देव्या च गायत्र्या दत्तं (सृ) | १७.३१ |
| तमायांतं गमालोक्य (क्रि) | १.६ | तमुद्दिश्य कृतंकर्म तत्सर्वं (पा) | ८५.१५ | तमुवाच बिभोषा हि पाहि (उ) | १५.२८ | तमेव मुक्त्वा काकुस्थः (उ) | २४४.६६ | तयानि तेन चान्नेन (पा) | ११७.२२६ |
| तमायांतं समालोक्य (क्रि) | ५.२४ | तमुद्दिश्य महाध्याय (उ) | १८४.५ | तमुवाच चेश्वरः प्रीतः (उ) | १०.४२ | तमेव शरण्या तत्सर्वं (उ) | ८०.६७ | तया पान्थजिनानि (ब्र) | ६.२६ |
| तमायांतं समालोक्य (क्रि) | ६.८७ | तमुपायं प्रपश्यामस्तु वार्थं (भू) | ३४.३५ | तमुवाच सुदुःखार्ता त्वां (भू) | ४५.१२ | तमेवा मोचयद्वाजा (उ) | १६०.३० | तया फलाभिरामिन्या- (उ) | १७७.५४ |
| तमारुह्या द्विजश्रेष्ठं (उ) | २४६.११ | तमुपायं वदस्वैव सुखं (भू) | ८.८६ | तमुचिरे जनाः सर्वे तीर्थं (उ) | १८५.६७ | तमेवा वाहयेन्नियं वाचा (भू) | ४१.६४ | तया बहूनि पापानि (उ) | २२०.१६ |
| तमारोप्य तस्मै वसुधं (उ) | १८१.८ | तमुपायं कृषिर्दुःखं (उ) | ३.३ | तमुचुः सहितास्ते तु (सृ) | १६.२७४ | तमेवं ब्रह्मं स्पष्टे तत्र सुतो (सृ) | १.३३ | तया बहूनि पापानि (उ) | २२०.१६ |
| तमा लक्ष्य समीपस्थं सज्जनः (उ) | २१७.२० | तमुवाच ततस्त्वष्टासां (सृ) | ८.५८ | | | | | तयाभिभूतोऽस्मि यत्ते- (भू) | ६६.१४६ |
| तमालिङ्ग्य ततो दात्रं (क्रि) | १७.२५२ | तमुवाच ततो घर्षो (भू) | २.१० | | | | | | |
| तमालिङ्ग्या मसाक्ष्यं (उ) | १०६.३२ | तमुवाच ततो ब्रह्मा देहिनां (सृ) | ४२.६६ | | | | | | |
| तमालंस्तु विशालं च (भू) | १०२.२२ | | | | | | | | |

श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

१७६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| तयाभिभूतोस्मिजहीमां-(सु) | १३.२४० | तयासार्धं ययुः सर्वे (भू) | ८६.३७ | तयोरभूमिथोराज (उ) | १२.५६ | तयोः समीपमानी (उ) | २००.१०३ | तर्पयन्तप्रवर्ततामेते-(सु) | ४१.३१४ |
| तयाभिरक्षितांस्तान्श्च-(सु) | १३.२३३ | तयाहस्तस्तनोर्देत्यश्च-(सु) | ४४.१६८ | तयोरर्ध्वतित्दुःखी (भू) | ६६.१५६ | तयोस्तद्वचनंश्रुत्वा-(सु) | ४०.५४ | तर्पयित्वाचनचिलैः (सु) | ३३.१८४ |
| तयाभिसारितासाथय-(पा) | ८३.६८ | तयाहिमाययादैत्याः (भू) | २६.५३ | तयोरविदितनास्ति (सु) | १४.६० | तयोस्तुतिष्ठतोर्गेहेनास्ति (स्व) | ३०.२६ | तर्पयित्वाचितूनदेवानृषीं (स्व) | २४.१६६ |
| तयायः स्नापयेन्मासं (पा) | ११४.३२५ | तथा हि स्नापितो भर्ता (भू) | ८६.३८ | तयोरास्कण्यं सादेवी (भू) | २३.३६ | तयोस्तुवाञ्छितनिर्गं (भू) | ४.२८ | तर्पयित्वायथाकामं (सु) | २३.१३३ |
| तयालक्ष्म्याजगन्मात्राति (उ) | २३१.१५ | तयाह्येवंकटाक्षश्च (उ) | ४३.१५ | तयोरागमनंतस्य (उ) | २४५.३२६ | तयोस्तुसंगमः पुण्यः (उ) | १६६.४ | तर्पयेदुदपात्रैर्यो (पा) | ६५.६० |
| तयाविनाक्वदेवत्वं (उ) | ७१.३२३ | तयेनिगमितः कालो (उ) | २१३.४२ | तयोरेववचः श्रुत्वा (न) | १२.५६ | नरगतंरत्नैरर्थैर्भोगै (पा) | ६६.१३ | तर्पयेदुदपात्रैस्तु (स्व) | ५७.२४ |
| तयाविरहितः शुभ्र-(सु) | ३८.११७ | तयैवक्षितासख्यः (उ) | २१३.१६ | तयोज्ज्वलायान्मुनः कन्या (उ) | २१६.६ | तरणैरक्षसांभर्तुर्मरिणो (पा) | ६६.८२ | तर्पयेद्वस्त्रगोदानं (पा) | ६५.६२ |
| तयावैनिहतोर्देत्यः (उ) | १५७.११ | तयोक्तंभक्षितंचान्नं (उ) | १५४.२७ | तयोर्वाणायजान्वाहान्न (पा) | २६.३७ | तरहंत्वांगुनः पृच्छेप्र-(सु) | १८.४४७ | तपिताः पितरस्तेनतेन (पा) | ६६.५० |
| तयावैरमयामास (उ) | २४८.१८ | तयोक्तंवचनंश्रुत्वा-(क्रि) | ५.५२ | तयोर्मूर्ध्निगृह्यत्यक्त्वा (स्व) | ३०.१५ | तरीतुनांप्रदास्यामि (उ) | ६६.६३ | तपितोनाशयिष्यामि (उ) | २३५.४८ |
| तयासंनिहितायश्च (उ) | ७१.३२२ | तयोक्तोसौमुनिश्रेष्ठो-(भू) | ६२.४४ | तयोर्युद्धममूढोरं (उ) | १८.८६ | तच्छ्रयायामुपासी (उ) | २०३.३ | तलेतस्यायविमले-(पा) | ७२.१३८ |
| तयासंप्रोदितोर्देत्यन (उ) | १६.१६ | तयोः पंचत्वमापन्नं (उ) | २००.६५ | तयोर्युद्धममूढोरं (उ) | २०६.५४ | तरुणादित्यमंकाशो-(सु) | ४५.१७५ | तल्लीनचित्तः सपुमान् (उ) | १३०.३ |
| तयासमागतं दृष्ट्वा (भू) | ६०.६ | तयोः पादं नमस्कृत्य (भू) | ४.६ | तयोर्युद्धममूढोरं (उ) | २४६.२१ | तरुणादित्यसंकाय (पा) | ८१.३८ | तत्कन्यागुणाद्वैयंशीलानां(भू) | ३४.७ |
| तयासमर्चितदिग्वा (उ) | २४६.८६ | तयोः पुत्रस्तुतत्रैव (उ) | २१२.२ | तयोर्विरोधंत्यक्त्वाथ (उ) | २४७.६ | तर्कणैरुपलावण्याका (उ) | २२६.१७० | तरकः फलदोद्यः (पा) | ११४.२४७ |
| तयासंपूजितो विप्रः (भू) | १२०.३ | तयोः प्रत्युपकारोपि (स्व) | ५१.४१ | तयोः शिष्याः प्रशिष्या (उ) | १४.३१ | तर्कणैरुपलावण्याका (उ) | ८०.६६ | तवगेह वयंसर्वैस्सिध्यामः(भू) | २०.३७ |
| तयासंप्रावितः पुत्रो (उ) | १२.३३ | तयोः प्रबोधनंकु (उ) | १६४.२६ | तयोः शुभ्रवर्णं चक्रे (भू) | ६१.४ | तर्जन्यगुणैर्योगेन (स्व) | ५२.२२ | तवगेहेषारिजातं (उ) | २४६.१०५ |
| तयासमोहितसर्व (उ) | २४५.२४८ | तयोः प्रमुबुद्धततोर्दपत् (पा) | २६.३६ | तयोश्चापि द्विजश्रेष्ठ (भू) | ६३.१ | तर्जन्यतंसुरगणांश्चावयं (सु) | ४१.१७४ | तवचाभिमुखंगानं (पा) | ११४.१७५ |
| तयासहस्रधर्मात्मा (उ) | २४१.८ | तयोर्करवन्नामकृशो (पा) | ६६.११ | तयोश्चक्षेडां प्रवक्ष्यामि (भू) | ६४.३३ | ततुयदीच्छतिजना. (क्रि) | ४.१८ | तदचित्तदयानाय (क्रि) | १७.१३८ |
| तयासहजगन्नाथो (भू) | ११६.१५ | तयोर्ग्रेजगौराजन् (उ) | २२०.७ | तयोः पण्डितसहस्राणि-(सु) | ६.५६ | तर्पणां तेजपं कुयंदि(भू) | ६६.३० | तवचित्तमविज्ञाय-(पा) | ११६.१६६ |
| तयासहस्रहृदया-(सु) | १३.२७७ | तयोस्त्यसमायोगो (पा) | १०६.४० | तयोः समभवद्दुष्टं (पा) | ४५.४५ | तर्पणात्पिण्डादनाच्चनर(सु) | १८.२२६ | तव चैवं महाराज्ञी-(भू) | ६७.७२ |
| तयासहस्रविविधैश्च-(सु) | २६.१७ | तयोर्बन्धुस्तस्यामव(पा) | ११०.४५ | तयोः संयुक्तयोस्तस्मा-(सु) | ४३.६४ | उपलुब्धचित्तिर्मुक्तः (सु) | ४७.१० | | |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१८०

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|----------------------------|---------|------------------------------------|---------|-----------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| तद्वज्रालंघरास्पीठा (उ) | १६.२७ | तवप्रातर्ह्रितकार्यं (पा) | ११७.२०६ | तवशक्त्यानुपान् (उ) | २४२.१७६ | तवानुजः सुशमयिं (उ) | २००.५२ | तवैवतेजः पुण्येन जातं (भू) | ५२.३० |
| तवजिज्ञासितंसर्वं (पा) | ७१.६८ | तवप्रोद्यत्करांभोजकर (पा) | १२.६ | तवश्वाससमुत्पन्नौ (उ) | २५०.५८ | तवानुभावात्समुत्ता- (सू) | १८.४५४ | तवैव दुर्नयैर्विप्रः (भू) | ५१.३३ |
| तवतारस्तपस्तेषु- (सू) | ४७.४४ | तवभक्तिः सदैवास्तु (उ) | २.१५ | तवसंगमने चेतोभावमेवं (भू) | ७७.४६ | तवांतयामिणोत्तराणां (पा) | ६६.६ | तवैवस्ववलेनापि (भू) | ४२.३६ |
| तवदृष्टिपथेविप्र- (उ) | २१२.१० | तवभक्तौ तथा देवमया (उ) | १३२.३२ | तवसंबन्धिनोयेडत्रकथंते (सू) | १६.१४६ | तवांशभूनामहानिद्रा (उ) | २४५.२८ | तवैवहिमहाभागे- (भू) | ६.३ |
| तवदेववरस्यनामभि (पा) | ५.५ | तवभक्त्यातिगुष्टो (क्रि) | १७.४५ | तवसर्वगतस्ये (उ) | २४५.३२१ | तवांशसंभवत्वाच्च (उ) | १००.८ | तवैवाज्ञानाकायात्वि (सू) | ३४.८० |
| तवदेहेनदित्येनहारकं (उ) | ६.३५ | तवभक्त्यातिगुष्टो (क्रि) | १२.१०० | तवसेवाकरिष्यामि (क्रि) | ५.१८१ | तवापिदुष्टसंपर्कात् (सू) | ४४.२३ | तदैवारिपरा मूर्तिर्मा (पा) | १३.३५ |
| तवनामानिकमणि (उ) | २५०.६३ | तवभक्त्यायिष्यान्महा (उ) | १११.१८ | तवस्तुत्याप्रहर्षोभून्मम (पा) | २२.३८ | तवार्यं तु महाभागे (भू) | ८८.२८ | तवैवमहिमायेन- (सू) | ३.४६ |
| तवपश्चात्प्रदास्यामि (भू) | ८६.३५ | तवभक्त्यिहरेत्तुंगोरी (उ) | १५.५० | तवाग्नेर्ह्यं प्रवक्ष्यामि (भू) | ३७.४६ | तवार्यं नित्यसंयुक्तः (भू) | ५३.५१ | तवोदरेमयान्वस्तंस्त्ववीर्यं (भू) | ५०.६१ |
| तवपुण्यप्रभावेण (उ) | ५६.१७ | त्वभागत्यदशान्माघो (उ) | १२५.१४५ | तवाग्ने कथितं देवियतो (उ) | ७८.६१ | तवार्ये प्रेषितं विप्र (भू) | १.५२ | तवांद्दीक्षणांरात्राचारा (क्रि) | ५.५३ |
| तवपुत्रामहाभागेतपः (भू) | ७.१२ | तवनध्यस्तिवैच्छुद्धा (पा) | ३१.४५ | तवाग्ने कथितं सर्वं पुत्राणां (भू) | १२.२४ | तवावतारंकिमहं ब्रवी (क्रि) | १२.७६ | तवोपपातकं यतनाशो- (पा) | १०६.६८ |
| तवपुत्रामहाभागेमत्य (भू) | ६.२८ | तवमुच्यं सहस्रस्य (उ) | २५०.४८ | तवाग्रेयेगुणाः संति- (भू) | ३४.२६ | तवांशमात्रमित्येवं (पा) | ७१.५५ | तस्करत्नंमगारत्नं (उ) | ४६.३१ |
| तवपुत्रात्पौत्राश्च (भू) | ७८.२६ | तवयत्परमेशस्यहृदमेध (पा) | ४६.६ | तवाग्रे सुन्दरं सर्वमत्र (भू) | ३६.२३ | तवाश्रमेनः सौम्यम (उ) | १५.१२ | तस्करैर्नृपदारिद्र्यं (उ) | ६६.१६ |
| तवपुत्रोऽविष्यामि (पा) | ११६.४२ | तवयद्गुणैर्जदनाशन- (पा) | ५.३ | तवाग्रे सुन्दरं सर्वमत्र (भू) | ८८.३२ | तवास्मिजनकः (क्रि) | २१.११० | तत्पुनः पातान्नित्यं- (सू) | ३१.४६ |
| तवपुत्रोमहापा इन्द्रः (भू) | २४.३ | तवरूपं समाश्रित्य तां (भू) | ५७.३६ | तवाजम्बवतादस्माद् (उ) | १०७.२५ | तवास्मिगणिकाकांत (पा) | ८२.४५ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | ३१.४५ |
| तवपुत्रामहागज चक्षु (पा) | १४.६१ | तववक्त्रात्तुदेवेश (उ) | १५३.१६ | तवाजम्बवतात्तस्माद् (उ) | ११०.२८ | तवाहं वनधान्यादि- (पा) | ७१.२३ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | ४३.१६ |
| तवप्रसादतोज्ञातोविप्रः (सू) | ४७.१ | तववाक्यात्तुदेवेश (उ) | १५३.१६ | तवाज्ञातंसर्वत्र (पा) | ६७.५६ | तवाहमभयदासो (उ) | ७.५८ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | ४३.५१५ |
| तवप्रसादाद्देवेशमुक्ति (उ) | २.१६ | तववाचांनमुदभूतो (उ) | २४५.११३ | तवाटनंभुविमुदे (उ) | २०१.३३ | तवेदमत्रकथितं सर्वं (उ) | १८.६८ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | ७४.१५७ |
| तवप्रसादाद्देवेशमूलिगं (उ) | १६.१८ | तववाहनगारुड (पा) | ११४.१७४ | तवातिदेशाद्दहमागतो वै (भू) | ५५.५५ | तवैवजापःजातोम- (उ) | १५.४५ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | २१.१२६ |
| तवप्रसादाद्भोस्वामि (उ) | ३६.३० | तववैरिपराभूतिर्माभूया (पा) | १३.३५ | तवादेवंमेकिचित् (पा) | ११७.१८३ | तवैव कीदृशं कर्म किं (भू) | ३७.१६ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | ५.१०६ |
| तवप्रसादान्मुच्यते (पा) | १०८.५५ | तववक्त्यानायावत्स (क्रि) | ६.१६७ | तवानुग्रहकामस्य (पा) | ७६.१७ | तवैवतपसापुटस्तेजसा (भू) | ५.८४ | तत्पुनर्भोगंभुजमाना (सू) | ८१.६८ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| तस्मात्कलियुगेनृणां (क्रि) | २६.४२ | तस्माच्छिष्टदेवसमयुक्तं (उ) | २२५.२४ | तस्मात्तुत्यास्मेवैपा (उ) | २२६.१० | तस्मात् वमपिराज्ञान (पा) | ३७.२४ | तस्मात्पापसमूहोन्व (पा) | २०.८३ |
| तस्मात्कस्य न च श्रद्धा (भू) | १००.६ | तस्माच्छुद्धसमाचारां (उ) | २४२.३३६ | तस्मात्तुपांडवश्रेष्ठ (उ) | ३८.२७ | तस्मात्त्वमपिराज्ञेद्र (उ) | ८०.१५७ | तस्मात्पापिनामन्नामिन (क्रि) | २०.५७ |
| तस्मात्कुलवराभस्य (पा) | ६६.१५७ | तस्माच्छ्लोकंपरित्यज्य (उ) | २४५.२६७ | तस्मात्तुबुद्धुदात्तो (उ) | २२६.२२ | तस्मात्त्वमपिराज्ञेद्र (पा) | २२३.७२ | तस्मात्पुनाःश्रोतां (पा) | ११३.३३ |
| तस्मात्कृपान्वितो (भू) | १०५.४३ | तस्माच्छ्रुतं महासिद्धान् (भू) | १४.१७ | तस्मात्तुविधिना चक्रं (उ) | २२४.५४ | तस्मात्त्वमपिराज्ञेद्र (पा) | ६६.६१ | तस्मात्प्रशास्य चरणां (क्रि) | ११६.६३ |
| तस्मात्कुशस्वमंगानां (उ) | २०१.४४ | तस्माज्जने महातेजा (भू) | ६२.५१ | तस्मात्तद्दुःखबहुलाभूयो (सु) | ३.७२ | तस्मात्स्वमपिप्रिप्रने (उ) | ८०.६६ | तस्मात्प्रगृह्यलक्ष्मी (गु) | ४.१८ |
| तस्मात्कोटिगुणं (उ) | २४३.३८ | तस्माज्जनेमहावह्नि-भू | ६४.७४ | तस्मात्स्वक्त्वानिसिद्धान् (उ) | १२६.६० | तस्मात्स्वमपिप्रिप्रने (पा) | ११६.२५५ | तस्मात्प्रजापते कायो (भू) | ६४.६२ |
| तस्माच्चक्रादिहेतो (उ) | २२४.८० | तस्माज्जिष्टेमहादेवि (उ) | ८५.१० | तस्मात्स्वजमहादुःख (पा) | ५६.५७ | तस्मात्स्वमेवविप्राणां (उ) | २५५.६६ | तस्मात्प्रजायते गंधां (भू) | ६४.७१ |
| तस्माच्चरक्षितो वीरो (भू) | १०६.३६ | तस्माज्जालाहुरिनिद (पा) | ३१.३६ | तस्मात्स्वकंयंहृत्वा (पा) | ३७.५४ | तस्मात्स्वमात्मने (उ) | १२.५४ | तस्मात्प्रधानमुद्भूतं-स्व | २.६ |
| तस्माच्चस्वर्णदानं (उ) | ४८.११ | तस्मात्करभस्तस्मा (सु) | १३.२६ | तस्मात्स्वं कुराज्ञेद्र (पा) | ८.३६ | तस्मात्स्वयाहमेवाद्य-सु | १०.११० | तस्मात्प्रयत्नतोषीमान् (स्व) | ६१.३३ |
| तस्माच्चिन्तांपरित्यज्य (भू) | ११.२३ | तस्मात्करिगतंयुत्वा (पा) | ५६.६३ | तस्मात्स्वंकुर्व्वपूजां-पा | ३०.२३ | तस्मात्स्वादेवदेवेश-सु | १६.१२५ | तस्मात्प्रयास्यामि त्वयैव (भू) | ५५.१८ |
| तस्माच्चिन्तांपरित्यज्य (भू) | ८७.६१ | तस्मात्कलियुगेदानं (क्रि) | २०.४ | तस्मात्स्वंगोपज्ञं (उ) | २४५.२२८ | तस्मात्स्वांवातायाम्य (पा) | ४४.५ | तस्मात्प्रसादंकुस्मेय (सु) | ८.६२ |
| तस्माच्चिन्तांपरित्यज्य (भू) | ३३.३५ | तस्मात्कार्यत्यक्त्वा (उ) | ८३.१४ | तस्मात्स्वनृपति श्रेष्ठ (पा) | ३१.१५ | तस्मात्स्वामेव भद्रतेनैव (भू) | ४१.३२ | तस्मात्प्राप्यमि सर्वं त्व (भू) | ३१.१६ |
| तस्माच्चित्तानकर्तव्या (उ) | १५१.४२ | तस्मात्करुष्वयज्ञादीन् (पा) | ४६.४८ | तस्मात्स्वपांडव (उ) | ३८.४७ | तस्मात्स्वालोहसंकी (पा) | २०.६१ | तस्मात्प्रेनपिशाचे (उ) | १०६.२४ |
| तस्माच्छंसमुनेसर्वं (पा) | ६६.४ | तस्मात्कृतेपुगाणेहि (स्व) | ६१.६६ | तस्मात्स्वयंरत्नतस्तिष्ठठा (पा) | ४२.३३ | तस्मात्स्वदातपरिभ्रष्टो (भू) | २२.१२ | तस्मात्त्रयीविधानेन (उ) | १३७.१० |
| तस्माच्छानुगुणं (उ) | ३८.४० | तस्मात्सः प्रभावात् (भू) | ४६.५६ | तस्मात्स्वसंयत्नकृत्वोहि (सु) | १३.२४६ | तस्मात्स्वरमुनेनैव (पा) | १०१.३८ | तस्मात्त्रैलोक्यमध्ये (पा) | ६६.१२ |
| तस्माच्छानुगुणं (उ) | ३८.४२ | तस्मात्सययथास्वाति (पा) | ५८.३१ | तस्मात्स्वं सर्वलोकानाम (उ) | २५५.४३ | तस्मात्स्वरिद्वेन्नित्यम् (स्व) | ५६.४६ | तस्मात् त्राहि सुदीनं (भू) | ७७.५१ |
| तस्माच्छानुगुणां (उ) | १२७.४८ | तस्वात्तीर्थारं रंतीर्थं (उ) | १७२.१ | तस्मात्स्वंसुकृतं कृत्वा (सु) | ६.२३ | तस्मात्स्ववंतरूपेण्राहि-सु | २१.१३३ | तस्मात्सत्यंनुवक्तव्य-सु | ३७.१०४ |
| तस्माच्छरीरादुत्क्रम्य (उ) | २५०.६६ | तस्मात्तीर्थेषुगंतव्यंनरैः (पा) | १६.१७ | तस्मात्स्वमपिदुष्टं (सु) | १८.२६० | तस्मात्स्वात्रायदातव्यं (उ) | २१८.१४ | तस्मात्सत्यस्य सिंहाः (भू) | ३३.२४ |
| तस्माच्छांतिं कुरुष्व (भू) | १२३.१३ | तस्मात्तुभूमिणाभावं (पा) | ११०.६७ | तस्मात्स्वमपिनः शापात् (स्व) | २२.१०३ | तस्मात्स्वापनकर्तव्यं (क्रि) | ८.१३ | तस्मात्सदैवद्रष्टव्यं-स्व | ३५.१२ |
| तस्माच्छिद्रान्वितं (उ) | २२५.२८ | तस्मात्तुनगरीपुण्या (उ) | २४२.४४ | तस्मात्स्वमपिनःशापात् (उ) | १२८.१११ | | | तस्मात्संसदिभूपालो (क्रि) | २१.८१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१८२

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| तस्मात्समस्तदानानाम् (क्रि) | २०.१५ | तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | ४१.१६ | तस्मात्कामपुण्योहिय (उ) | ११३.३३ | तस्मादग्न्यं पितृयज्य (उ) | २५५.१०२ | तस्मादहं पठन्सांसां ह्यं- (उ) | २१६.४३ |
| तस्मात्संप्राप्तमंत्रो (उ) | २५५.१२७ | तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | ४३.३४ | तस्मादक्षुण्णमवताय (पा) | ८१.२६ | तस्मादपहरेत्कुण्ठं (उ) | १४८.३ | तस्मादहमनेनैव (पा) | ४२.१६ |
| तस्मात्सम्यग्भुविभूयां (सृ) | १.३७ | तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | ५४.१३ | तस्मादत्र महद्युद्धं गृहीत (पा) | ४०.१२ | तस्मादपिच्युतः (सृ) | १५.२२८ | तस्मादहं महापुण्यं (उ) | २०८.२७ |
| तस्मात्सर्वत्र नाशो धो- (पा) | १०४.१७० | तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | ५४.१६ | तस्मादत्र महायत्नात् (पा) | ४०.२२ | तस्मादपिच्युतः (सृ) | १५.२२६ | तस्मादहमुपाश्रीष्युराणं (सृ) | २.७ |
| तस्मात्सर्वनिष्फल (पा) | ६६.८३ | तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | ६४.१११ | तस्मादत्र महाराज (भू) | ८३.४० | तस्मादपि महाराज (उ) | २२०.१६ | तस्मादहं विद्यास्यामि (भू) | ७८.५२ |
| तस्मात्सर्वप्रकारेण (उ) | ३७.२७ | तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | १२६.२४६ | तस्माददुष्प्रसिद्धं सर्वं (सृ) | ४०.१३० | तस्मादप्यधिकपुण्य (क्रि) | ११.१५४ | तस्मादहो सह न्यामुक्तं (पा) | ६४.६१ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन- (सृ) | १८.२१७ | तस्मात्सर्वमयो विष्णु (उ) | २२६.८५ | तस्मादधापितहेमोस (उ) | १०६.२७ | तस्मादग्न्यं पातनीय- (पा) | ३०.६२ | तस्मादाकल्पमयादि- (उ) | ११३.१६ |
| तस्मात्सर्वपरित्यज्य (सृ) | ३२.१३५ | तस्मात्सर्वविमनादेवि (पा) | ६६.७३ | तस्मादध्यायमाद्यं (उ) | १७५.५४ | तस्मादग्न्यं पापकर्मा (क्रि) | ६.२६ | तस्मात्त्वाकाशमुत्पत्य (उ) | ४.३ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (सृ) | १५.१०७ | तस्मात्सर्वविमनात्याज्यः (पा) | २०.२७ | तस्मादन्नं तफलदः (उ) | १३५.७६ | तस्मादग्न्यं पुण्यकर्मा (क्रि) | ७.७२ | तस्मादाजन्मजनितं (उ) | १०७.४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन- (सृ) | ३२.५५ | तस्मात्सर्वविमनारामो (पा) | ३६.६० | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | ११.८७ | तस्मादग्न्यं महापापी (क्रि) | ७.६४ | तस्मादानयं लिगत्वं (उ) | १५१.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (सृ) | ३४.२०५ | तस्मात्सर्वविमनारामचंद्रं (पा) | ३५.५२ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | ७८.३८ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | १६.२४७ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | १८.३६ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (पा) | ८२.८६ | तस्मात्सर्वविमनासाधु (स्व) | ६१.२६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २०.८२ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | १८.३५१ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | ३१.१५ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (भू) | ६४.४१ | तस्मात्सर्ववैयंगत्वा (उ) | २३१.२८ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | १८.४२७ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २८.७४ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन तत्र- (स्व) | १६.१२ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु (स्व) | ४२.२४ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | १६.३६ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २२६.६७ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २१३.७७ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | ३०.१११ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु- (सृ) | १८.२०६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २५५.३४ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | १२८.१०० | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन- (स्व) | ३३.६४ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु- (सृ) | १८.२०६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २२.४६ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २२.६२ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (स्व) | ५५.२८ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु- (सृ) | १८.२०६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २२.४६ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २२.६२ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (स्व) | ५६.४४ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु- (सृ) | १८.२०६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २२.४६ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २२.६२ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | १६.१६ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु- (सृ) | १८.२०६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २२.४६ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २२.६२ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |
| तस्मात्सर्वप्रयत्नेन (उ) | २७.५८ | तस्मात्सर्वपुत्रीर्थेषु- (सृ) | १८.२०६ | तस्मादन्नं तफलदस्तत्र (सृ) | २२.४६ | तस्मादग्न्यं मनयस्थि- (सृ) | २२.६२ | तस्मादाग्न्यं गोविन्दं (भू) | २००.५४ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| तस्मादुत्पत्त्यतेलभ्योः (ब्र) | ८.२२ | तस्माद्गृहीत्वाक्रत्वस्वं (पा) | ४६.२४ | तस्माद्भक्तवशोदेवो (क्रि) | १६.५५ | तस्माद्यूर्यसुराः सर्वे-(पा) | १०५.२३८ | तस्माद्वेपथिदेवेषु (उ) | १२६.६० |
| तस्मादुदरसंस्थानां (पा) | १०७.६४ | तस्माद्दृश्यविषयो (सृ) | ३७.५६ | तस्माद्भुजध्वंमुनयः (स्व) | ५०.३६ | तस्माद्यूर्यसुराः सर्वे-(उ) | २३१.४३ | तस्माद्वैतपसावुद्धया-(सृ) | १३.२६४ |
| तस्मादुपरिब्रह्माण (सृ) | ७.१३ | तस्माद्दण्डमहाबाहो-(सृ) | ३७.१० | तस्माद्भवतशरणयाताः (उ) | २३१.४० | तस्माद्रक्ष्यः स्वप्रतापो(पा) | ३६.४६ | तस्माद्ब्रह्माणानित्यं (उ) | २५५.६४ |
| तस्मादेकं प्रहर्तव्यं (भू) | २६.२ | तस्माद्दत्त्वाचतोर्यं च (क्रि) | २०.१७ | तस्माद्भवन्तीसंचित्य-(सृ) | ३७.१५८ | तस्माद्रक्षस्वविबुधाने-(सृ) | १८.१६१ | तस्माद्वैविधिवद्भाषीः (उ) | २२४.६८ |
| तस्मादक्षानप्रदातव्यं (क्रि) | २२.२६ | तस्माद्दानप्रदातव्यं (पा) | ६७.५६ | तस्माद्भवान्यथायोग्यं (पा) | ३६.५० | तस्माद्रक्षसभूतानाम(उ) | २५३.११६ | तस्माद्वैविधिवद्भाषीः (उ) | २२४.६८ |
| तस्मादेवादशीशुद्धा-(उ) | २३४.१६ | तस्माद्दानैश्चयजैश्च-(उ) | १०६.२५ | तस्माद्भवान्समर्थोस्ति (पा) | ६.११ | तस्माद्रामायणंरम्यं (पा) | ६६.१५५ | तस्माद्वैश्यपरश्रेहकर्मणा (स्व) | ३१.३५ |
| तस्मादेतादृशेदोषे-(पा) | १०४.६८ | तस्माद्दुष्कृतकर्माणि (स्व) | ४०.१० | तस्माद्भारं कूटं बन्ध (उ) | २१६.३२ | तस्माद्रक्ष्यामितेगुह्यं (उ) | २२३.२१ | तस्मादव्याधिमयं जेयं (भू) | ६६.१२० |
| तस्मादेतापामभोगान्-(पा) | ३०.६५ | तस्माद्दुष्टो भविष्यामि (भू) | ७८.३६ | तस्माद्भार्या विना धर्मः (भू) | ५६.३३ | तस्माद्वदतुमेय्यं (पा) | ४५.१५ | तस्मादक्षजमहावीर (पा) | ४२.११ |
| तस्मादेनंक्षिपाम्याशु (उ) | १७.८३ | तस्माद्दुष्टरतठेदेविसिद्ध (उ) | १५६.१ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वयमधीत्यै (उ) | २२६.१३ | तस्माद्वदतुमेय्यं (उ) | ११२.२ |
| तस्मादेनात्यजाम्येव (पा) | ५८.४४ | तस्मादेयं प्रयत्नेन (उ) | ११८.१५ | तस्माद्भूमिमहाराज (उ) | २४०.१८ | तस्माद्वर्णानुरूपं (उ) | २५३.३७ | तस्माद्वदतुमेय्यं (उ) | ४३.४३ |
| तस्मादेवापिभूवाल (पा) | ६३.७ | तस्मादेवान्महाभागादः (भू) | २३.५ | तस्माद्भूमिमाहाराज (उ) | २२६.८० | तस्माद्वर्णानुरूपेणपुण्ये (उ) | २५३.४० | तस्मान्नत्वातमापृच्छ-(पा) | ३५.१६ |
| तस्मादेवाजरायावन्न (उ) | २१६.१७ | तस्मादेवैद्यगृहेजातो (भू) | ५.१७ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नधर्मकामार्थी (सृ) | ८.६८ |
| तस्मादंगमहापुण्या- (भू) | ३२.१६ | तस्माद्द्विजपदसाक्षात् (उ) | २८.१६ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्न धारयेत्कांतगृहे (भू) | ४७.६३ |
| तस्मादगच्छमहाराज (पा) | ३०.५२ | तस्माद्द्विजपदसाक्षात् (स्व) | ४०.८ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्ननिदाहाय्यं च (सृ) | ३१.३३१ |
| तस्मादगच्छस्वयं (ब्र) | १३.२५ | तस्माद्दोषाद्विडालो (उ) | १०६.२३ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नमनसात्राच (उ) | २२६.४४ |
| तस्मादगवोऽनिशं (पा) | ३१.१४ | तस्मादन्योहमधुना (पा) | ३७.५७ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नमन्यते कांतं (भू) | ७६.६ |
| तस्मादगुप्तमाकुच्य-(सृ) | ४६.१५६ | तस्माद्भर्मांस्वित्स्वार्ज्यं (स्व) | ३१.८६ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नमन्यते ते नाम (भू) | १०५.५६ |
| तस्माद् गुरुः परं तीर्थं (भू) | ८५.१४ | तस्माद्भर्मः प्रकर्तव्यः (भू) | ७२.२२ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नारायणाद्देवि (उ) | २२६.२५ |
| तस्मादगुप्तस्वत्वोर्वे (सृ) | ३७.११६ | तस्माद्भास्यात्पत्तिष्यति (भू) | ११६.३५ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नारायणाप्रीति (क्रि) | २०.१५८ |
| तस्मादगुह्यात्प्रगतव्यं (उ) | ३७.५१ | तस्माद्भविष्यः समुत्पन्नः (उ) | ४५.११ | तस्माद्भुजं सुवेनापि (भू) | ५३.४६ | तस्माद्वाक्यं महाराज (भू) | ७८.१८ | तस्मान्नारायणोदेवः (क्रि) | १६.५७ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| तस्मान्नारी समुद्भूता (भू) | ७७.३१ | तस्मात्लोकस्वप्तुष्टये (उ) | २४४.२२ | तस्मिन् क्षेत्रवरेण्ये (ऋ) | १७.२५३ | तस्मिन्दीपाः प्रबोध्यते- (उ) | ३०.६० | तस्मिन्नेवतनः बाले- (उ) | २१४.५२ |
| तस्मान्निधेय माकायः (भू) | १०.७ | तस्मिन्मार्गेद्विजयेष्ठ (क्रि) | २३.६० | तस्मिन्क्षेत्रेनुविहगातो (उ) | १७४.३१ | तस्मिन्देव्याग्रमासीनं (उ) | २५३.८६ | तस्मिन्नेवतनः शब्दवा (उ) | ४६.२२ |
| तस्मान्निद्रा समुत्पन्ना (भू) | १२०.७ | तस्मिन्करतलेदेवी (पा) | ११७.१३८ | तस्मिन्क्षेत्रेपुराविप्रः (स्व) | ३५.१५ | तस्मिन्दैत्ये गते भूमा (भू) | ११५.४३ | तस्मिन्नेवतुकाले (उ) | २४५.३४७ |
| तस्मान्नुल्लोकेष्वपराजि- (सु) | २१.१७ | तस्मिन्काले धर्तुनः (उ) | २५.४५ | तस्मिन्क्षेत्रेमहापुण्या (उ) | ८०.३३ | तस्मिन्हापरसंज्ञेतुतर्प- (सु) | ३५.४६ | तस्मिन्नेवदिनेकाकः (व) | १७.२६ |
| तस्मान्नेतुर्वयंप्राप्ताः (पा) | २०.७८ | तस्मिन्कालेनतो (क्रि) | ७.१६ | तस्मिन्गुणानिसाफल्यं (सु) | ४३.६८ | तस्मिन्नेवभवन्वीररस (सु) | २.१०६ | तस्मिन्नेवदिनेमेष (क्रि) | २०.६२ |
| तस्मान्मठसरस्वत्या (उ) | २०८.२८ | तस्मिन्कालेत्वमस्मृत्यत (सु) | ४४.५७ | तस्मिन्गतेततः शुक्रे- (सु) | १३.३१० | तस्मिन्नेवतर्पयैशे (उ) | २२६.१५८ | तस्मिन्नेवदिनेभवतः (पा) | ११६.१६३ |
| तस्मान्मनोहरीकृत्य (क्रि) | १४.१२ | तस्मिन्काले ददेद्दानं (भू) | ३६.८३ | तस्मिन्गते देववरस्य (भू) | ७३.२ | तस्मिन्नेवपिगतेसोय- (सु) | ४०.६४ | तस्मिन्नेवदिनेराजान् (क्रि) | ३.५४ |
| तस्मान्मयापिभवतो- (पा) | ११२.३३ | तस्मिन्कालेदाहको (उ) | २५२.७८ | तस्मिन्गतेपुण्य (उ) | २०५.७ | तस्मिन्नेवसवित्रेति- (सु) | २१.२६३ | तस्मिन्नेवद्विजयेष्ठ (क्रि) | २३.३७ |
| तस्मान्महीयतेदेवे (स्व) | ६०.३६ | तस्मिन्कालेदिव्य याजि (उ) | २५२.६२ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवलुप्तमहिमा (पा) | १५.५२ | तस्मिन्नेवपुरेजाता (सु) | १०.८८ |
| तस्मान्माधेप्रयत्ये (उ) | १२५.८२ | तस्मिन्कालेदेवदेवो (उ) | १०.२७ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवतुतर्प- (सु) | २२६.७० | तस्मिन्नेवपुरेवासं (उ) | ८६.८ |
| तस्मान्माधेबहिः (उ) | १२७.१० | तस्मिन्कालेबलि (उ) | २३६.३१ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवसरेकुण्यो (उ) | २४५.३६३ | तस्मिन्नेव महायज्ञं जज्ञे (भू) | २८.६८ |
| तस्मान्मानं परित्यज्य (उ) | १५४.३० | तस्मिन्काले महाधारे (क्रि) | २.४७ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवसतं गते सूर्य (उ) | २४६.१२ | तस्मिन्नेवशुभे काले (उ) | २४२.१५० |
| तस्मान्मापिजीवेश (उ) | २१६.२३ | तस्मिन्काले महापर्व- (भू) | ३०.३२ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवहृन्निदेवी (सु) | २६.२६ | तस्मिन्नेवबाभ्यदग्धो (उ) | २०४.११ |
| तस्मान्मायाकृतं (उ) | २५०.७५ | तस्मिन्काले हरन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेवबाभ्यदग्धो (उ) | २०४.१५२ |
| तस्मान्मया कृतोभर्ता (भू) | ८१.२३ | तस्मिन्काले हारन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेववालयेविप्र (क्रि) | ६.१६६ |
| तस्मान्महदहकारो (उ) | २२६.४० | तस्मिन्काले हारन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेववायमरे (पा) | ११६.११८ |
| तस्मान्महीनदा (उ) | २४०.२२ | तस्मिन्काले हारन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेववायमरे (पा) | ११६.११८ |
| तस्मान्मुमुक्षुनियतो- (स्व) | ३३.५४ | तस्मिन्काले हारन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेववायमरे (पा) | ११६.११८ |
| तस्मान्मेसुकृतं नास्ति- (सु) | १८.२७२ | तस्मिन्काले हारन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेववायमरे (पा) | ११६.११८ |
| तस्मान्मोहं परित्यज्य (भू) | ६.१६ | तस्मिन्काले हारन्निभि (उ) | २२६.६ | तस्मिन्गृहे उषिष्यातु- (स्व) | १३.२६ | तस्मिन्नेवपतितं शब्दवा- (स्व) | १८.२ | तस्मिन्नेववायमरे (पा) | ११६.११८ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|---------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------------|--------|---------------------------------|---------|
| तस्मिन्पुरेद्विजन्म (उ) | १८७.५ | तस्मिन्प्राज्येतु (क्रि) | २५.६७ | तस्मिन्संपूज्य (उ) | २४२.२१३ | तस्मिन्स्तुष्टणीस्थितेदैत्ये (स्व) | ४२.१८ | तस्मैदेवायभवते (उ) | २४५.२०२ |
| तस्मिन्पुरेपुंडरीको (क्रि) | ४७.७ | तस्मिन्बनेप्रमदसंयुत (पा) | ३६.१७ | तस्मिन्संपूजयेद्देवंप्राप्ते (उ) | २४३.२३ | तस्मिन्स्तोयेततोविष्णोः (उ) | ८५.७ | तस्मैदेवायभवते (उ) | २४५.२०४ |
| तस्मिन्प्रसन्नेदेवेश (उ) | २३१.२६ | तस्मिन्बनेमहापुण्ये (भू) | २५.१४ | तस्मिन्सुनादेरसवर्षं (उ) | १२८.३४ | तस्मिन्स्वाख्यापयिष्यामि (उ) | १६४.१४ | तस्मैद्विजायवैतस्य- (उ) | २२२.५४ |
| तस्मिन्प्रहृष्टाः (उ) | २४६.४६ | तस्मिन्बने समायाता (भू) | ७७.२६ | तस्मिन्सुभावेरसवर्षं (स्व) | २२.२५ | तस्मिन्स्यानेनिवासं च (स्व) | २०.७६ | तस्मैब्राह्मणायपंचवर्षं (उ) | २५२.५५ |
| तस्मिन्बन्धविनिर्मुक्ताः (सु) | २२७.७८ | तस्मिन्बनेसरित्तोरे (उ) | १७६.१३ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरेभयातः (सु) | १६.६६ | तस्मैभगवतेनत्वन्वेद व्यास (सु) | २.६ |
| तस्मिन्बालाकंसाहस्र (उ) | २२६.७७ | तस्मिन्बसतिघमाः समा- (पा) | ४६.११ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्मैयदुदितं वत्स तत्ते (भू) | ३६.१२ |
| तस्मिन्भवैर्नरैः (पा) | ८५.७१ | तस्मिन्बसतिघममत्मा (उ) | १२८.१८६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्मैयमः समुत्थाय (पा) | ६६.३६ |
| तस्मिन्मणिमयेतल्पे (उ) | २२६.६८ | तस्मिन्बसतिसमये (उ) | १८७.१७ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्मैवरंददावग्यसंलक्ष्म्या (भू) | २२.१७ |
| तस्मिन्मनोरमेदिव्ये (उ) | २२६.६६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्मैविप्राय वंदयान्- (सु) | २३.१२० |
| तस्मिन्महतिदुर्भिक्षे (क्रि) | २५.५० | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्मैसकययामासहयं (पा) | ३६.३३ |
| तस्मिन्महर्षिभिः (उ) | २४५.६४ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्मैसमेत्यपूजांचमथावत्- (सु) | १.१३ |
| तस्मिन्महोत्सवेप्राप्ते (सु) | ४३.१०२ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकंठवर्नसर्वं (पा) | १०७.५४ |
| तस्मिन्मासेद्विज श्रेष्ठ- (क्रि) | २२.५७ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकंठात्समुद्भू (उ) | १८.१०६ |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकस्य (भू) | ६७.१०६ |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकोयं (भू) | ८६.४० |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकोयं (पा) | ६२.११६ |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकोयं (सु) | ८.१५२ |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकोयं (भू) | ६१.२३ |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकोयं (भू) | ३६.५२ |
| तस्मिन्मेषैश्चक्रेक (उ) | १८५.१६ | तस्मिन्बसतिघमराजन्- (स्व) | २७.६६ | तस्मिन्सूयंकराकीर्णं (उ) | २४४.८२ | तस्मिन्हेतुदैत्यवरे (भू) | ११५.४५ | तस्यकर्मविपाकोयं (भू) | ७२.६६ |



श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१८६

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|-------------------------------------|---------|
| तस्य कृष्णोजगन्नाथो (क्रि) | १३.६४ | तस्य तद्वचनं श्रुत्वा (उ) | २५५.२६ | तस्य त्वं लक्षणं ब्रूहि (भू) | ८.६८ | तस्य धर्मः प्रमत्तात्मा (पा) | ८६.११ | तस्य पापेन लिप्येह- (सु) | १८.३२४ |
| तस्य कौतुकवाक्यैर्वि (भू) | १२३.२५ | तस्य तस्य फलं भुङ्क्ते- (स्व) | ३१.७ | तस्य दक्षिणैकपाश्वरं (उ) | २२६.७२ | तस्य ध्यानपराधीन- (उ) | १८४.६ | तस्य पाश्वरं द्वयं प्राप्य- (पा) | १०५.१८४ |
| तस्य गात्रं कररुहै- (पा) | १०७.५५ | तस्य तस्य भवज् (क्रि) | १.२८ | तस्य दण्डप्रदास्यामि (भू) | ३.२५ | तस्य नारायणश्चाह (उ) | २२३.३६ | तस्य पाश्वरं मया यति- (भू) | १४.२२ |
| तस्य गात्रस्य मृत्युम्नः (सु) | ३७.११५ | तस्य तावच्छ्रुतीसंख्या- (सु) | ३६.२६ | तस्य दर्शनमात्रेण (पा) | ६०.८ | तस्य निर्गोचनार्थाय (उ) | ६६.४ | तस्य पाश्वरं प्रगृह्य जय (भू) | १०.४१ |
| तस्य गीतिध्वनिं श्रुत्वा (उ) | २०६.८ | तस्य तावच्छ्रुतीसंख्या- (सु) | ३६.३१ | तस्य दानप्रभावेन (पा) | ६७.४७ | तस्य पत्नीततो विप्रः (क्रि) | १२.७० | तस्य पाश्वरं महद्विषयं शुभ्रं (स्व) | ३.६१ |
| तस्य गेहे महालक्ष्मीर्धनं (भू) | २०.४७ | तस्य तीरे शिलायां वै (भू) | १०१.३१ | तस्य दानस्य भावेन (भू) | ४०.३० | तस्य पत्नीदुराचारा (उ) | २१३.६ | तस्य पाश्वरं महाभागां (भू) | ३०.८१ |
| तस्य गीकण्ठार्थं (उ) | २२२.३४ | तस्य तीर्थप्रभावेन पाप- (स्व) | २०.१४ | तस्य दानस्य भावेन (भू) | १८.३० | तस्य पत्नीदयं नानं (पा) | ६.१८ | तस्य पाश्वरं गेहगोद्वीपा- (स्व) | ३.३० |
| तस्य चतुः समुत्पन्नं (उ) | २०.३६ | तस्य तीर्थप्रभावेन सर्व- (स्व) | १८.५७ | तस्य दानस्य साभुङ्क्ते (भू) | ८६.४२ | तस्य पद्मावतीनाम (क्रि) | ४.२२ | तस्य पित्रा प्रजाः सर्वाः (भू) | २८.६० |
| तस्य चारयतः सोऽहः (उ) | २०.३६ | तस्य तीर्थफलसंभ्यम् (पा) | ६७.७० | तस्य दानस्य साभुङ्क्ते (पा) | ६२.११६ | तस्य दाहाहोज्ञानं (पा) | ६५.६६ | तस्य गीडानं वैवाहं (उ) | ३३.४६ |
| तस्य चित्तं परिज्जातुं (पा) | ११४.१०८ | तस्य तीर्थार्थिपश्येदं- (उ) | २०८.५४ | तस्य दाहादिकर्मणि (उ) | २१०.६८ | तस्य पाश्वरं दोकपुष्पं तुलसी (पा) | २०.६८ | तस्य पुष्पं क्रियाः सर्वा (उ) | ११३.१४ |
| तस्य चित्तानुगोभावेन तया (भू) | ४१.२७ | तस्य तीर्थार्थं नियज्ञाश्च (उ) | २२४.४० | तस्य दीक्षाविधानाय (उ) | १११.७ | तस्य पाश्वरं दोकं नव्यं (उ) | २५५.६५ | तस्य पुष्पं फलं राजन् (स्व) | १३.०३ |
| तस्य चित्तसमुत्पन्ना (भू) | ८५.१७ | तस्य तीर्थार्थं भूताराजन् (उ) | २२१.२२ | तस्य दुःखं च सनापो (भू) | ११६.२२ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४१.१४ | तस्य पुष्पाग्रभादेन (उ) | ४७.३४ |
| तस्य चित्तार्थगिरेः (उ) | २४५.१८३ | तस्य तीर्थार्थं भूताराजन् (स्व) | १८.१११ | तस्य दुःखं प्रकुर्वति (भू) | ११६.२३ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ५०.२६ | तस्य पुष्पाग्रं प्रवक्ष्यामि- (पा) | ४०.१५ |
| तस्य चित्तार्थसमाश्रित्य (पा) | ८७.५६ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २६.४६ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |
| तस्य चित्तार्थसमाश्रित्य (उ) | १८२.६ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २५०.६२ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |
| तस्य जातिविशुद्धं (उ) | ६.२४ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २५०.६२ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |
| तस्य तद्वचनं श्रुत्वा (सु) | ३५.७८ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २५०.६२ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |
| तस्य तद्वचनं श्रुत्वा (भू) | ८.७ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २५०.६२ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |
| तस्य तद्वचनं श्रुत्वा (भू) | १०.४५ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २५०.६२ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |
| तस्य तद्वचनं श्रुत्वा (उ) | ३८.७२ | तस्य तीर्थार्थं सस्वत्यां (स्व) | २५०.६२ | तस्य दुःखेन युग्धोऽस्मि (भू) | १२३.३१ | तस्य पाश्वरं दोकं स्नानान्तं (भू) | ४६.१६७ | तस्य पुष्पं पश्यन्नामि (भू) | १२५.१० |

धीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१८७

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| तस्यपुत्रः कुशोनाम(सु) | ८.१५७ | तस्यप्रसन्नोभगवान् (क्रि) | १४.४१ | तस्यभाग्येनष्टो (उ) | ५५.२४ | तस्यमृत्युर्न वै दृष्टो (भू) | १०६.८ | तस्यवाक् (समाकथ्यं (पा) | ६०.२१ |
| तस्यपुत्रद्वयं ब्रह्मन्-(सु) | ३६.८६ | तस्यप्रसन्नोभगवान् (उ) | १६६.२३ | तस्यभाजस्यभार्ये (सु) | १३.३३ | तस्यमोहो न च भ्रातिर्न (भू) | १४.३५ | तस्यवामशिरोरेखा (पा) | १०४.४८ |
| तस्यपुत्रः संपाति (पा) | ११७.२१२ | तस्यप्राक्मुमुहूर्तीर्थे (उ) | १४०.४ | तस्यमार्यात्रयं भाविशक्र (पा) | ५७.३२ | तस्ययज्जायतेपापं (पा) | ३३.५४ | तस्यवासंगतिर्येन (उ) | २२६.५६ |
| तस्यपुत्रः सुबाहु (उ) | २०.१२ | तस्यप्राणां नगच्छन्ति (भू) | १५.१६ | तस्यभार्या प्रचंडाय (उ) | १५४.१८ | तस्ययावन्तिरोमाणि (क्रि) | २०.११३ | तस्यबाह्वनंगृह्याति- (पा) | ५४.२७ |
| तस्यपुत्राश्चतान्येवता-(सु) | १२.१३५ | तस्यप्रावरणलिङ्ग-(पा) | ११४.३० | तस्यभार्या महासाध्वी (भू) | ४१.३ | तस्ययोगवलाद्भूपगत (स्व) | २२.४६ | तस्यविद्युल्लतापीडाः (मृ) | ४१.२१८ |
| तस्यपुत्रास्तु चत्वारो (भू) | १०६.४६ | तस्यप्रियतमाभार्या (उ) | ३०.८७ | तस्यभार्याशितं चासीद् (पा) | १०५.१५३ | तस्ययोगवलाद्भूयगत (उ) | १२८.५५ | तस्यविष्णुः प्रकुप्येत (भू) | ६.१२ |
| तस्यपुत्रोभवद्दीरोदे (सु) | ८.१५६ | तस्यप्रियामहारूपा (ब्र) | १५.४६ | तस्यभार्याशितं तामनाम (उ) | २१६.७ | तस्यशससमुखस्य (उ) | २४६.६४ | तस्यविष्णुः स धर्मात्मा (भू) | ६.६ |
| तस्यपुत्रोमहाशूरोनाम्ना (पा) | ३६.१० | तस्यप्राणां नगच्छन्ति (भू) | १५.१६ | तस्यभार्याशितं तामनाम (उ) | २१६.७ | तस्यराज्ञोभवद्भार्या (उ) | १०.७१ | तस्यवीरस्य रामस्य-(पा) | १.८ |
| तस्यपुत्रोमित्रसहः (उ) | १३६.१२ | तस्यप्रियतमाभार्या (उ) | ३०.८७ | तस्यभुवतवतः स्वन्नं (उ) | ६६.३६ | तस्यरामोयहंतासीन्(सु) | १२.१३२ | तस्यवेणुध्वनि (उ) | २४५.१६६ |
| तस्यपुत्रोहिर्विरातो (उ) | ३८.६८ | तस्यप्रियामहारूपा (ब्र) | १५.४६ | तस्यभुवतवतः स्वन्नं (उ) | ६६.३६ | तस्यरामोयहंतासीन्(सु) | १२.१३२ | तस्यवैद्यमंजयकृपितं (पा) | २३.२७ |
| तस्यपुष्टिः पशुश्चास्तां(पा) | ११४.४०६ | तस्यवाणायुतं (पा) | ६४.२२ | तस्यमध्यमहापुण्यं (पा) | १०६.४१ | तस्यरूपमिदं ब्रह्मन् (सु) | २४.२३ | तस्यवैरिपरभूतिर्न-(पा) | ५.१८ |
| तस्यपूजाविधिः प्रोक्तो (पा) | ११५.७७ | तस्यबुद्धिरियंजाता-(सु) | ३२.१२ | तस्यमध्येवसत्येकः (पा) | ७२.१३७ | तस्यरूपः समभवत् (सु) | ३७.४५ | तस्यव्रतस्यभावेन-(भू) | १८.२८ |
| तस्यपौत्रकस्य सुतो (उ) | २५१.१५ | तस्यबुद्धिस्तमुस्पर्त्तायुतं (सु) | ३८.३ | तस्यमध्येवसत्येकः (सु) | १३.४६ | तस्यलांलपातेन (उ) | २४७.३३ | तस्यशापभयावस्तां (उ) | १२८.१८४ |
| तस्यपौत्राणामपश्य (भू) | ११५.२८ | तस्यब्रह्माचधर्मात्र (पा) | ६८.१०३ | तस्यमध्येवसत्येकः (सु) | २३.४५ | तस्यलीलां समालोक्य (भू) | ३०.८३ | तस्यशापेनसादया (उ) | ४६.३७ |
| तस्यप्रतिक्रियां (उ) | २०२.४६ | तस्यब्राह्मणमुखस्य (उ) | ७७.६ | तस्यमाधवमासा (पा) | ६२.३५ | तस्यलोकप्रधानस्य (उ) | २२४.२१ | तस्यशीलं विदित्वा ते (भू) | ४७.३८ |
| तस्यप्रतीक्षमाणस्य (उ) | २०३.३६ | तस्यभक्तिततोज्ञात्वा (क्रि) | १२.६० | तस्यमाधवमासा (पा) | १०२.१३ | तस्यलोकस्वरूपं च (उ) | २२४.८ | तस्यशुद्धैस्ततोभूरिभि (सु) | ४३.४८७ |
| तस्यप्रलापमेवं सा (भू) | ७७.५७ | तस्यभक्तितच्छां ज्ञात्वा (क्रि) | १२.६८ | तस्यभुवितं स्थित (उ) | १६७.५५ | तस्यलोकमहाभोगाः (स्व) | ६१.५८ | तस्यशोकाभिभूतस्य (सु) | ५.६२ |
| तस्यप्रसन्नोभगवान् (क्रि) | १२.१२० | तस्यभक्षणमात्रेण (पा) | १८.२७ | तस्यभुवितं स्थित (उ) | १६७.५५ | तस्यवरप्रदानस्य (भू) | १०६.१६ | तस्यश्रीविमलाकीर्ति-(सु) | २१.३१५ |
| तस्यप्रसन्नोभगवान् (क्रि) | १४.३३ | तस्यभागीरथीस्तान (भू) | ५०.२० | तस्यभुवितं स्थित (उ) | १६७.५५ | तस्यवश्यं भवेत्सर्वं (उ) | १२०.८२ | तस्यसंकर्षतोभूमि (पा) | ५७.४ |
| तस्यप्रसन्नोभगवान् (क्रि) | १४.३४ | तस्यभागीरथीस्तान (भू) | ६२.७८ | तस्यभुवितं स्थित (उ) | १६७.५५ | तस्यवाक्यं मिदं श्रुत्वा (क्रि) | १२.६१ | तस्यसत्यव्रतोनान्तस्मात् (सु) | ८.१४३ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|----------------------------|---------|
| तस्यसद्योभवेत्तुष्टिः (सृ) | ३४.२४३ | तस्य हारावती नाम वल्लभा (क्रि) | ५.३ | तस्यांराजासधर्मा (उ) | २४२.४२ | तस्यायेकपञ्चदशान् (=) | ५८.१६ | तस्यांतुजनयामा (उ) | २२६.५ |
| तस्यसद्योभवेत्तुष्टिः (सृ) | ३४.२३६ | तस्य हेम प्रभा नाम (क्रि) | ३.१६ | तस्यांरात्रीतदाराराजा (उ) | १४१.१६ | तस्यांगयाजगत्सर्वं () | २४२.८५ | तस्यांतुलंबरेखान्या (पा) | १०४.४६ |
| तस्यसंदर्शनेष्य (उ) | २४१.५४ | तस्य हैमानि रत्नानि (स्व) | ३.४० | तस्यांविधायतत्पद्मलम् (सृ) | २५.२४ | तस्यांतीवमहारीद (ः) | १०४.६ | तस्यांतितुमहाजिजा (सृ) | २३.८ |
| तस्यसंपूजनाद्विप्रसर्वं (पा) | १०६.४७ | तस्यांगतायांभो तात (उ) | २१४.६ | तस्यांविष्टः प्रसुप्तश्च (उ) | ३८.८२ | तस्यात्मजानामयुतः भूव (सृ) | २०.१० | तस्यान्तिभूम्भट्टाः (सृ) | ३.२४ |
| तस्यसर्वत्रगतिरस्ति (भू) | १२३.७ | तस्यांगस्याभिलाषेण (उ) | ६.१७ | तस्यांसभायांदैत्यैर्गोहि (सृ) | ४५.६६ | तस्यात्मनास्तुपञ्चम (उ) | ६२.११ | तस्यांनोपासिताः (सृ) | ४३.१५३ |
| तस्यसर्वमिदं पुण्यं जगत् (भू) | २६.२६ | तस्यां च पूजयेद्देवं (उ) | ५३.२६ | तस्यांसमर्चयेद्देवं (पा) | ८५.५० | तस्यात्मजोमहाप्राज्ञो (भू) | २२.५ | तस्यान्मनुजलब्रह्मन् (ब्र) | २६.३६ |
| तस्यसर्वस्मिन्भूतस्य (उ) | ८०.२१ | तस्यांजातः सुवेलाया- (उ) | २००.३२ | तस्यांसंपूज्यगोविदं (सृ) | २३.३ | तस्यात्मजोरामभद्रः (पा) | २३.६ | तस्यापक विविधैरुपायै (सृ) | १२.२८ |
| तस्यसर्वव्यसिद्धिः (भू) | ६५.३२ | तस्यांतटिन्यांभगवत् (क्रि) | १६.२१ | तस्यांसंपूज्येद्विष्णु (सृ) | २४.५ | तस्यातिव्यसन (उ) | ८८.३७ | तस्याः परांकुटीरम्या (पा) | ६६.१० |
| तस्यसानुग्रहाः सर्वेशां (सृ) | ३४.३२३ | तस्यांदत्तहुतंजपं (उ) | ६५. ८ | तस्यांसुलोचनायांतु (क्रि) | ६.१५२ | तस्यात्मजोवीरवन (पा) | ५४.६ | तस्याः पारिगृहीत्वै (पा) | ७४.१६१ |
| तस्यसांवत्सरीपूजा (उ) | ५५.४४ | तस्यांदशरथोराराजा (पा) | ७.२४ | तस्यांघ्रातातमात्रेण (भू) | ४१.३३ | तस्यादर्शनमात्रेण (उ) | १३१.६ | तस्याः पादो ननागाय (भू) | ७६.२३ |
| तस्यसान्नीक्यतायांतु- (सृ) | १६.३४६ | तस्यांदेशाधितिष्ठति (उ) | ६६.६१ | तस्यांघ्रातमात्रेण (भू) | ६४.८१ | तस्यादु खंतुपसृत्यं | ७७.३७ | तस्यापिदेवदेवस्य (सृ) | ४६.२ |
| तस्यसेवानुरूपेणद्रव्यं (उ) | ११२.१६ | तस्यांनारायणदेवं (उ) | ४०.५ | तस्याः कुक्षिभवंरत्नं- (पा) | १०.४७ | तस्योदेसात्ततोत्रि (क्रि) | ६.१६२ | तस्यापिदेवदेवमणि- (उ) | २१०.३५ |
| तस्यसर्वप्रियाराजः (क्रि) | ५.४ | तस्यांपुत्रसमुत्पाद्य स (भू) | २२.६ | तस्याः कुलेगर्भवती (उ) | २०१.७३ | तस्याधारेण भुंजति () | १०३.२७ | तस्यापिपुष्पाहास्यं (पा) | ६४.१५८ |
| तस्यसीधंमुसपतिर्वनं (भू) | ७८.६ | तस्यांप्रतिपदायांतु- (सृ) | १७.२४५ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | २१३.४३ | तस्याध्यानं प्रकुर्वन्निपति (भू) | ५३.५ | तस्यापिहृतमाजाय (पा) | ११४.१२३ |
| तस्यस्तवंसमाकर्णं (क्रि) | २.५१ | तस्यांभूवपुतात्मा महवि- (सृ) | १.३६ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | २०७.२० | तस्याध्यायस्यमाहृत्या (उ) | १८६.६२ | तस्यापिहृतमंतीति () | ६४.६६ |
| तस्यस्तवंसमाकर्णं (क्रि) | १३.११६ | तस्यांभवेत् प्रकर्तव्यं (उ) | ८२.१५ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | ३३.४ | तस्यानीतस्यच स्पर्शान्ति (उ) | २४२.३०४ | तस्याः पुण्यफलक्रिया (त्र) | ७.४ |
| तस्यस्तवंसमाकर्णं (क्रि) | २२.३२ | तस्यांभद्रांसनंमध्ये (पा) | १०६.४४ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | १२५.१०४ | तस्यानुग्रह कर्तव्य (ः) | ८.२२ | तस्याः पुनः पतिरयं () | २६.८ |
| तस्यस्त्रीतुमहापुण्या- (उ) | १७४.३२ | तस्यांमूर्तविकीर्णं (उ) | ८२.२१ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | ३६.८१ | तस्यानुग्रहोविचित्राद्यो (पा) | २५.२२ | तस्याः पुनः पतिरयं () | १०७.५ |
| तस्यस्नानस्यमाहात्म्यं (उ) | १२७.१२६ | तस्यांमृतायांतुः सार्ता (पा) | ५७.६१ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | १४.५४ | तस्यांननुवाक्ये (क्रि) | १०.६७ | तस्याः पुनः पतिरयं () | १०७.५ |
| तस्यस्त्वदेहकिरणैः (पा) | ६६.११४ | तस्यांमृतायांतुः सार्ता (पा) | ५७.६१ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | २१५.१८ | तस्यान्तनुवाक्ये (क्रि) | १०.६७ | तस्याः पुनः पतिरयं () | १०७.५ |
| | | तस्यांमृतायांतुः सार्ता (पा) | ५७.६१ | तस्याः कुष्ठे समुत्पन्ने (उ) | २१५.१८ | तस्यान्तनुवाक्ये (क्रि) | १०.६७ | तस्याः पुनः पतिरयं () | १०७.५ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| तस्याभक्त्याततस्तुष्टः (क्रि) | ६.१७३ | तथायमावबोमासः (पा) | ६७.६१ | तस्यात्रतप्रभावेन (उ) | ५७.३४ | तस्यासीदबलानाम (उ) | १७६.७ | तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा (भू) | ५०.१ |
| तस्याः कलंसमग्रं (सु) | १६.३६६ | तस्यायःश्चपचंस्पष्टवा (सु) | १७.२४८ | तस्यात्रतप्रभावेन (उ) | ६२.७ | तस्यासुरसुराः सर्वे-(सु) | १४.६६ | तस्यास्तु वचनंश्रुत्वा-(भू) | ५३.३३ |
| तस्याभर्तभिवान्मुष्टो (भू) | १०८.२० | तस्याखोर्बेदनेशोर्षे (क्रि) | २५.८० | तस्याव्रते कृते शुभ्रे (उ) | ४६.४१ | तस्यास्तटेपु पुण्येषु (सु) | १८.४६७ | तस्यास्तुवचनंश्रुत्वा (त्र) | ७.२१ |
| तस्या भर्ता समाख्यातो (भू) | १०३.३६ | तस्यारिमर्दनोनाम (उ) | १६०.६ | तस्याव्रतेनहेराम (उ) | ४४.२५ | तस्यास्तथोक्तमाकर्ण्य (उ) | १५.६० | तस्यास्तुवाक्यं स निशम्य (भू) | ४२.२० |
| तस्याभिमतयोगेन (सु) | ४३.३०३ | तस्यारूपगुणोद्यं च (क्रि) | ५.६१ | तस्याः शिरस्सिन्यस्य (भू) | ५.७३ | तस्यास्तद्रचनं श्रुत्वा (क्रि) | ५.६६ | तस्यास्तुवामजघने (क्रि) | ५.६६ |
| तस्यामन्त्रवमासस्य (पा) | ६४.११० | तस्यार्णवस्यक्षुब्धस्य (सु) | ३६.१४४ | तस्याश्च अश्रुबिदुम्यो (भू) | ७७.७१ | तस्यास्तद्रचनंश्रुत्वा(उ) | १४.६२ | तस्यास्तेमुकुटेसाक्षात् (उ) | १८५.१५ |
| तस्यामन्तर्दानवत्यां (उ) | २३१.१३ | तस्यार्थं तु मया प्रोक्तं (भू) | ६४.३२ | तस्याश्चरितमाहत्म्यं (भू) | ६०.१६ | तस्यास्तद्भाषितं-(उ) | ४४.८७ | तस्यास्थानिसमादायतेन (उ) | २१०.३ |
| तस्याभातादरिद्राणि (त्र) | ११.७४ | तस्यार्थं तु सुतो शप्तो (भू) | ८०.४ | तस्याश्रमंततोविप्रः (क्रि) | १७.६१ | तस्याः स्तन्यं पी देवो (उ) | ३४२.६२ | तस्यास्थिमिमंहाघोरं (सु) | १६.६७ |
| तस्या तानो मया दृष्टो (भू) | ५२.१० | तस्यालावण्यभावेन (भू) | ३६.१८ | तस्याश्रमंत पौगत्वा (भू) | १०३.११४ | तस्याः स्तन्यं समाकर्ण्य (क्रि) | ४.६६ | तस्यांस्नातः शुचिर्दात (उ) | १३७.३७ |
| तस्यां माराधितः (उ) | ३८.१४ | तस्यावचः परंश्रुत्वा (पा) | ३८.५० | तस्याः श्रुत्वावचः कोपि (उ) | १८७.३४ | तस्यास्तात सुनेत्राम्भ्यां (भू) | ११८.३ | तस्याः स्नेहेन प्रीत्या (भू) | ४८.८ |
| तस्यामाराध्ययेद्देवम् (स्व) | ५७.३४ | तस्यावचः समारुण्य (त्र) | १३.३४ | तस्यावर्चशिवभक्तस्तु (पा) | ४४.७८ | तस्यास्तितदुहिता (उ) | ३१.२१ | तस्याः स्मरणमात्रेण (भू) | १२१.२६ |
| तस्यामुज्ज्वलितंवाक्यं (पा) | ६७.४ | तस्यावद्वारुणाशुद्ध (उ) | २०६.५८ | तस्याः सखीसमूहस्य (पा) | ८१.६२ | तस्यास्तोरमहंघ्राणो (उ) | १२६.१४६ | तस्याहं तनया भद्रे (भू) | ४७.१२ |
| तस्यामुत्पाद्य मुतं शुभं (भू) | ३२.७४ | तस्यावरणपूजायां (उ) | २५५.१०८ | तस्याः सख्यः समाजम् (भू) | ३३.२७ | तस्यास्तोरपुत्रेवृक्षाः (स्व) | १३.३६ | तस्याहंपरिमाणंनसंख्यातु-(स्व) | ६.३५ |
| तस्यामुत्पादयामास वेनं (भू) | २८.२२ | तस्यावाक्यंममाकर्ण्य (भू) | १२१.४५ | तस्याः सत्यविनाशाय (भू) | ५६.१ | तस्यास्तोत्रं प्रयत्ने (उ) | १३५.७१ | तस्याहंप्रियकन्या वै (भू) | १४.३ |
| तस्यामुत्पादितस्तेन-(सु) | ४७.२७ | तस्याविनाशतः कीर्तिः (सु) | ३८.११ | तस्याः समीपेनगरं (उ) | १७४.८७ | तस्यास्तु चेष्टितं वत्स (उ) | ८६.१ | तस्याहंवाहितमिप्र (उ) | २०७.५२ |
| तस्यामुद्धराणायि (उ) | ६६.५६ | तस्याविवाहकाले तु (भू) | ८५.५६ | तस्याः समीपेनगरं (उ) | १७४.८७ | तस्यास्तु चेष्टितं वीरा (पा) | ६२.६० | तस्याहंविज्जलोनोनाम (भू) | ६८.३४ |
| तस्यामेकाचमूर्तिर्मे (उ) | ५३.२५ | तस्यावैदुषधपानेन (उ) | ६४.५२ | तस्याः सर्वं समाज्ञाय (भू) | १०५.१६ | तस्यास्तु नैवजनेन (उ) | १५.२६ | तस्याहं सकलं दक्षिण-(भू) | ३६.४६ |
| तस्यामेवमुत्पन्नां (सु) | ४०.८५ | तस्यावैवर्तितोद्ये (त्र) | ११.१८ | तस्याः स विरहेणापि (भू) | ७७.४३ | तस्यास्तु रुदितं श्रुत्वा (भू) | ५१.२ | तस्याहंसादकस्तेषु (सु) | ४४.१६८ |
| तस्यामाह न कामे न (भू) | ७६.१८ | तस्यावैसंगमेपुण्ये (उ) | १३७.२० | तस्यासीत्पुत्रमिदुनं (सु) | १३.५० | तस्यास्तुरूपसंमुखा (भू) | ८५.७३ | तस्याहं प्रिया भार्या (भू) | ५३.३४ |
| तस्यामोहेनसंघः (भू) | १२१.३३ | तस्यावैजन्त्याः कोपेन-(सु)! | ४४.१८ | तस्यासीत्पुत्रमिदुनं (सु) | ५२.६ | तस्यास्तु वक्रं परिभाति (भू)! | १०२.५१ | तस्याह्यमुत्तारामि (उ) | १०.३२ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१६०

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|----------------------------|---------|------------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------------|--------|
| तस्यैवंशपयैः सस्यै (उ) | ३०.१४ | तस्यैवंशपयैः सस्यै (उ) | १२८.२७० | तस्यैवंशपयैः सस्यै (भू) | ४४.६ | तां दृष्ट्वा सतु कामात्मा (भू) | ४६.२६ | तां वृन्दामतिचार्वंगी (उ) | ४.४४ |
| तस्यैवंशपयैः सस्यै (क्रि) | २३.२२ | तस्यैवापि नृपैश्च (भू) | ८३.३० | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (सु) | ४२.८ | तां दृष्ट्वा स मुनि प्राह (उ) | ४७.२५ | तां वेश्यां द्राह्मणीं चापि (क्रि) | २०.६८ |
| तस्यैकश्च सुतोरात्र (उ) | २१६.८ | तस्यैवापि नृपैश्च (भू) | ३६.५ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | १०.३१ | तां दृष्ट्वा सिधुराज (उ) | ३.४० | तां वै कामयमानानां (पा) | १०५.७६ |
| तस्यैवाचततोहृष्टादिति (पा) | ५१.५५ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | १००.४ | तां कन्यां स नृपः (क्रि) | ६.१४२ | तां दृष्ट्वास्त्रिवं (पा) | ५६.५४ | तां वै हरि प्रियां देवि (उ) | ६३.२८ |
| तस्यैकः किकरोविप्रः (क्रि) | ७.२० | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (सु) | १८.४७२ | तां कन्यां समुपादाय (उ) | २४५.५१ | तां धारयामासतदादुर्द्धमं (स्व) | ३.४८ | तां शशापायमेधावी (उ) | ४६.३६ |
| तस्यैकाततरंरूपं (उ) | २४५.३४० | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (सु) | ३२.६३ | तां करोमि पुरादेव (पा) | ११४.३५० | तां नत्वा राघव श्रेष्ठः (पा) | ३८.६१ | तां शशापानिभुक्तीं दृष्ट्वा (सु) | ४२.३० |
| तस्यैतं द्वचनं श्रुत्वा (क्रि) | ५.२०२ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (सु) | ३०.२४ | तां घनीषांसतिमिरां (सु) | ४०.१३२ | तां नमस्कुर्वन्नुद्युत (पा) | १२.५८ | तां शिचिच्छेदमहावीरः (पा) | ५१.३२ |
| तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा (क्रि) | ६.३८ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (सु) | ३०.५५ | तां च दृष्ट्वा तथा काम (भू) | ७७.४१ | तां निनामय गजेन्द्र (सु) | ३०.५४ | तां सत्यप्रवर्तत (पा) | ८७.४८ |
| तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा (ब्र) | २६.२३ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (पा) | ६६.८२ | तां छिन्नांशवितकां (पा) | ३४.१५ | तां पप्रच्छ स भर्मात्मा (भू) | ७७.४७ | तां गन्धर्वमहाभाग्यं (उ) | १५.२६ |
| तस्यैवत्वेनदातव्य (स्व) | ५७.६६ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (पा) | २२.१६ | तां त्यक्त्वाद्वादशी (उ) | २३४.१८ | तां पुरी प्राप्यमथुरां (पा) | ७३.५४ | तां साधुत्वीमाशय (क्रि) | ४.५० |
| तस्यैवकुर्वतोराज्यं (उ) | ५७.११ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | २५.२२ | तां दृष्ट्वा जननोराजा (उ) | २४२.१०३ | तां पूजयित्वा विना (उ) | २०.३ | तां स्ततो देवोभक्ति (सु) | १७.४७ |
| तस्यैवपरमेशोभे (उ) | १३.५१ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | ४५.४८ | तां दृष्ट्वा तत्र कौशलया (उ) | २४२.६१ | तां प्राप्य च ततो (भू) | १८.१५ | तां स्वया ब्रूवतः नवार्जु (भू) | २८.३५ |
| तस्यैवपश्चिमेस्थाने (स्व) | २०.२० | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | ३०.२१ | तां दृष्ट्वा पुरतो गंगा (क्रि) | ७.११५ | तां भजे परमां शक्ति (उ) | १८६.१८ | तां शान्तिमुनिवरासर्वा (पा) | ३५.१३ |
| तस्यैवसूनु तवाक्षयं (उ) | १७६.५१ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | ३१.३७ | तां दृष्ट्वा प्रणतामये (उ) | १०६.१२ | तां मायांसविधूयान- (पा) | ३४.६० | तां स्तांस्त्वयाधिधान (ब्र) | ७.१६ |
| तस्यैव च वधायायि (भू) | २६.५ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | ६५.६ | तां दृष्ट्वा ब्रह्मणः पावर्जं (सु) | १६.१८ | तां मिथ्यामिवयोजयित (क्रि) | १.३० | तां स्तांस्त्वमथयत्येव (उ) | ३०.७१ |
| तस्यैव तेजसा दग्धा (भू) | ३६.५१ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (पा) | ३५.५६ | तां दृष्ट्वा मय विव्रस्तः (उ) | १०६.८ | तां मुनेराश्रमाभ्यां (उ) | २०३.७ | तां स्तांस्त्वमथयत्येव (उ) | ३०.७१ |
| तस्यैवतुष्टुवाणस्य (सु) | ३७.२६ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (उ) | २२४.२३ | तां दृष्ट्वा मय विव्रस्तः (उ) | १०६.८ | तां राजपुत्री मादाय- (क्रि) | ५.१६७ | तां स्तांस्त्वमथयत्येव (उ) | ३०.७१ |
| तस्यैव माययाध्याप्तं (उ) | ८०.६३ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (पा) | ६६.७७ | तां दृष्ट्वा मेरुमध्ये (उ) | २४०.४७ | तां विलोच्य ततो दैत्याः (सु) | ४२.३६ | तां स्तांस्त्वमथयत्येव (उ) | ३०.७१ |
| तस्यैवस्तुवतोवोच- (सु) | ३३.१६७ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (सु) | ४१.६७ | तां दृष्ट्वा रूपसंपन्ना (उ) | १२७.६४ | तां विलोक्य महालक्ष्मी (उ) | २३२.४७ | तां स्तांस्त्वमथयत्येव (उ) | ३०.७१ |
| तस्यै वरं दातुकामश्च (भू) | ८८.३५ | तस्यैवाचततोहृष्टादिति (पा) | ७०.४८ | तां दृष्ट्वा विस्मितं (उ) | १२६.६० | तां वीक्ष्य मातरंधीमान् (पा) | १३.२० | तां स्तांस्त्वमथयत्येव (उ) | ३०.७१ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------------|--------|
| साञ्जघानतदाकंसो (उ) | २४५.३० | ताते मेऽवस्थिते पृथ्व्यां (पा) | २३.१४ | तादृशीयस्यसाभार्या (उ) | ११.४३ | तानि चैव महाभाग (भू) | ११६.२१ | तानेव मुक्त्वा द्विपदां (सु) | १६.७८ |
| ताडतं ताडयेद्योवैक्रोशं (भू) | ३३.६ | ताडग्रूपं प्रकतं व्यं (उ) | ८२.१६ | तादृशेनापि भावेन (भू) | १२३.४० | तानि तस्य गृहे सम्यग्यः (उ) | ६१.२२ | तानेव विप्रान् प्रथम- (सु) | ६.१०८ |
| ताडनं भत्सं (पा) | ८२.२५ | ताड्यं जायते वत्स रूपं (भू) | ६४.७ | तादृशोऽस्मि पुनर्जातः (भू) | १२३.४६ | तानितीर्थानि वक्ष्यामि (उ) | १३३.४ | ताने वाग्नीपरिचरेद्य- (सु) | १५.३३१ |
| ताडनात्ताडनं दुष्टेन (भू) | ३०.५८ | ता द्यतं समालोक्य (क्रि) | १६.६ | तादृशोऽनिलोऽस्मिन् (स्व) | ३५.२६ | तानितीर्थानि विधिना- (पा) | १६.१८ | तान् गृहीत्वा सुतां (सु) | ४०.६६ |
| ताडयामास जवनोलवरं (पा) | ६०.२८ | ता द्यतस्य बालस्य (उ) | ३.५० | तादृषं सहस्राणि विष्णु (उ) | ६४.७७ | तानित्वं तु प्रतिगृह्णाण (भू) | ११६.४० | तान् दृष्ट्वा कामयेयाने (पा) | ३४.२ |
| ताडयामासतं कृष्ण (उ) | २४५.३३४ | ता द्यं तस्य सौहृद्यात् (भू) | ११.३८ | तानकागौतमाद्यास्तु (पा) | ११४.१६६ | तानिदेहं महिरुह्य- (पा) | ६८.११८ | तान् दृष्ट्वा ताः स्त्रियः (पा) | ३८.३१ |
| ताडयामासविप्रप्रेषु (क्रि) | १५.६३ | ता दृशं देहि मे पुत्रं (भू) | ३२.६५ | तानधर्मैर्युद्धोत् (पा) | ६२.३६ | तानि पुत्रान्ऽशून् धनंति (स्व) | ५५.४२ | तान् दृष्ट्वा तु मुलं नादं (उ) | १२५.४१ |
| ताडयामाससंकुद्धो (क्रि) | १५.६० | ता दृशं द्विगुणीभूतं (पा) | १०७.३४ | तानपश्यन्महाराजः शाल- (भू) | ४३.४ | तानि लोमानि चोच्यम् (स्व) | ५०.३१ | तान् दृष्ट्वा निशितान् (पा) | ४३.४ |
| ताडयामासहृदये बाणा (पा) | २३.५५ | ता दृशं नास्ति ते ज्ञानं (भू) | ६१.५३ | तानप्याशु प्रचिच्छेद (पा) | ५१.४१ | तानि वक्ष्यामि तेषां च (स्व) | २.२० | तान् दृष्ट्वा पापिनो- (क्रि) | २२.२५ |
| ताडयित्वा पदैर्नैव (उ) | २४५.३५८ | ता दृशं वृषमालक्य (उ) | २०३.१६ | तानप्याशु प्रचिच्छेद (पा) | ५१.४२ | तानि वस्त्राणि रम्या (उ) | २४५.३३५ | ताद् दृष्ट्वा भाग्यसम्पन्नो (पा) | ६८.४८ |
| ताडयेन्नैव ताडतं- (भू) | ३०.६५ | ता दृशं पश्य धर्मात्मान् (भू) | ११.७५ | तानचर्यंति सततं ब्रह्माद्य (उ) | ६२.३० | तानि सर्वाणि चिच्छेद (उ) | २५०.४३ | तान् दृष्ट्वा च सर्वाणां (पा) | ४४.५२ |
| ताडितस्तेन बहुशोकं (उ) | २४१.३४ | तादृशं फलमाप्नोति (उ) | ५०.१६ | तानागतान् मुनीन् (सु) | ३३.८६ | तानि सर्वाणि नष्टानि (क्रि) | २५.१८ | तान् दृष्ट्वा महिलास्तत्र (पा) | ३८.३५ |
| ताडितस्तेन बहुशोकं (उ) | २४१.३७ | तादृशं फलमेवं सा (भू) | ४१.६८ | तानागतान् वसिष्ठ (पा) | १०४.६ | तानि सर्वाणि सर्वात्मा (उ) | ७८.६७ | तान् दृष्ट्वा विकृता- (सु) | ३२.१५ |
| ताडितास्तेन वीरेण (पा) | ४४.२० | तादृशं भुजते तात फल- (भू) | ६४.६ | तानादाय भटैर्भूयोनिः (उ) | १२५.४२ | तानि सर्वाणि वाप्नोति (स्व) | ३१.१५० | तान् दृष्ट्वा सन्तापसर्वा (पा) | ३५.२५ |
| ताडितो सौकपीन्द्रेण (पा) | ५१.६८ | तादृशं मुनिशार्ङ्गं (उ) | ६८.३ | तातारोप्यततो दिव्ये (क्रि) | २०.७१ | तानि सर्वाणि वाप्नोति (उ) | ५६.७ | तान् दृष्ट्वा सायुधान् (उ) | २४१.५५ |
| ताड्य मानो मुहुः पुत्रैः (उ) | १८३.३१ | तादृशं स्त्रीषु गतव्यं- (भू) | ६६.१४४ | तानालोक्य ततो दूतान् (क्रि) | १५.५४ | तानि स्थाप्य समीपे (पा) | ११४.३२२ | तान् दृष्ट्वा सूर्यं (पा) | ३०.७६ |
| तातद्वात्समानीतममृतं (भू) | ३.३६ | तादृशस्य द्विजस्याथ (पा) | १०६.५ | तानास्वास्थ हरि (उ) | २४५.२६४ | तानुवाच ततः काव्यः (सु) | १३.२०६ | तानि वार्यगणान् (उ) | १०.१३ |
| तातभोपततिवेधसः (उ) | २०१.६ | तादृशास्ते च नीला वं (भू) | ८६.६ | तानाहृततः सर्वान् (क्रि) | २३.१०६ | तानुवाच महाराज पुत्रान् (भू) | ४५.८ | तान् दृष्ट्वा सप्रथितान्- (सु) | ४१.१४३ |
| ताताहंतुत्वासादं (पा) | ६३.१३ | तादृशास्तस्य सुसत्त्वास्ते (भू) | १२३.४७ | तानि कर्माणि पृच्छामि (स्व) | ४६.२० | तानुवाच समेतास्तु (सु) | १६.१८६ | तान् दृष्ट्वा सुतान् पौत्रान् (भू) | ४२.१३ |
| तातुनेति निरुवता (क्रि) | १५.१८ | तादृशीतां समालोक्य (क्रि) | ५.१६ | | | | | | |



| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------|---------|----------------------------|--------|
| तान्प्रणम्य यथान्वायं (उ) | ८१.६ | ताप ज्वरं महादीप्तम् (उ) | २५०.३२ | ताभ्यां पुत्रविहीनाभ्यां (उ) | १४३.१३ | तामसानरकार्यवचनं (उ) | २३६.२७ | तामुपोष्याथ विधिवदने (सु) | २१.२५१ |
| तान्बाह्यान्वधमत्सर्वा (पा) | ५३.५ | तापत्रयमहाज्वाला (उ) | २२४.२ | ताभ्यां पृच्छयुहीती (पा) | ६४.५३ | तामसानि च शास्त्राणि (उ) | २३६.१ | तामुपोष्यमयाप्राप्तं (उ) | ६०.३३ |
| तान्भ्रष्टराज्यान् कृत्वा (उ) | २४१.७५ | तापस ब्राह्मणस्तत्र सर्वे (पा) | २२.४६ | ताभ्यां प्रभवितं मांसं (भू) | ६३.३० | तामसानिपुराणानि (उ) | २३५.५३ | तामुपोष्य विधानेन (पा) | ६६.१०१ |
| तान्मार्गमाणः शंखोपि (उ) | ६०.१३ | तापस ब्राह्मणो दृष्ट्वा (पा) | २२.१५ | ताभ्यां प्रवाजितो (सु) | १३.१३ | तामसाराक्षसा सर्वे (पा) | ११६.२७६ | तामुपोष्य हरेर्भक्त्या (उ) | ६१.३४ |
| तान्मुक्तानगण्ड्या (पा) | ५२.१२ | तापसीः सकलानत्वामुनि (पा) | ६७.७ | ताभ्यां बलाभ्यां संजज्ञे (सु) | ४१.४६ | तामसास्ते भविष्यति (उ) | २३५.२६ | तामुल्लंघ्यनरोस्तु (उ) | २०७.४६ |
| तान्याहुरस्ववैश्राद्धे (सु) | ३३.८५ | तापादि पंचसंस्कारिण (उ) | २५३.२७ | ताभ्यां भक्ष्यं समासाद्य (भू) | ८५.४१ | तामसेन तु भावेन (उ) | १३०.११ | तामुवाच जगन्नाथः (भू) | ८८.४२ |
| तान्ये व चायनंतस्य (उ) | २२६.५४ | तापी गोदावरी (स्व) | २३.२४ | ताभ्यां मन्यो जनो (उ) | २०६.११ | तामस्मै प्रददौ देवः (सु) | ४२.२० | तामुवाच ततः क्रुद्धः (भू) | ३०.५७ |
| तान्नामः कानने घोरे (उ) | २४२.२४६ | तापी गोदावरी (उ) | १२८.१४० | ताभ्यामापूरितं सर्वं (सु) | ४१.१३८ | तामस्य विनियोक्ष्यामि (सु) | ४३.२१६ | तामुवाच ततस्तृणं (भू) | १०६.५ |
| तान्वक्तुकामान्सवीक्ष्य (पा) | ५६.६ | तापीययोष्णीयुर्गति (उ) | ७०.१२ | ताभ्यामुभाभ्यामाग- (उ) | १७६.४१ | तामहं कामयिष्यामि (भू) | ११६.३३ | तामुवाच ततो गंगा- (सु) | १८.१८४ |
| तान्वयं शासयामो वै (भू) | ५०.३६ | ताः प्रजादेवदेवेश (सु) | ३६.४१ | ताभ्यामुभाभ्यां शिर (उ) | २१६.४० | तामागतं भागवतार्थं (उ) | १६५.७२ | तामुवाच ततो देवः (सु) | ४३.५१६ |
| तान् विमुच्य च वित्तेन (उ) | २००.३८ | ताभिः कृतस्वस्थयनं (पा) | १५.५५ | ताभ्यामेव तदा क्रूरः (उ) | २४५.२७५ | तामात्मा शिरसो मालां (सु) | ४.१२ | तामुवाच ततो रक्षः (उ) | १४.७० |
| तान्वीक्ष्य योधाः सुबलाः (पा) | ५१.१२ | ताभिः पुष्पोच्चयं कृत्वा (पा) | ३६.२० | ताभ्यां शान्तिं न गच्छाव (भू) | ६७.३८ | तामाभाष्यदिति वियं (भू) | ६.१४ | तामुवाच ततो रम्भा (भू) | ११३.२६ |
| तान्वै मोक्षयित्वा प्राप्ता (पा) | ५४.३६ | ताभिराश्वसिता देवी (उ) | २४५.३६८ | ताभ्यां स्त्रीभ्यां तदा (क्रि) | ६.१५१ | तामायां तं सदृष्ट्वा (उ) | १६.१४ | तामुवाच ततो राजा (भू) | ४६.१० |
| तान्समालोक्य जीवेशः (क्रि) | २०.४७ | ताभिः शापाभितप्ता- (सु) | २३.८२ | तामथोत्थापयामास (पा) | १०६.३० | तामालिग्यतः प्रोचुः (उ) | १२७.१७३ | तामुवाच ततो दाशोचं (सु) | ४७.२६ |
| तान्समाश्वस्य- (उ) | २३५.२३ | ताभिश्च कथितं तत्र (उ) | ४२.४१ | तामदृष्ट्वा तदा ईश्वरः (उ) | १०२.२६ | तामालोक्य विशालाक्षीं (भू) | ३६.२१ | तामुवाच निरानंदां (भू) | १०६.२५ |
| तान्समेतान्मुनीन् दृष्ट्वा (पा) | ६.३८ | ताभिः सर्वाभिरात्मेशः (उ) | २४५.१७२ | तामन्याप्रप्यहं (उ) | १७६.३२ | तामिः परिवृत्तो राजा (उ) | २२८.५३ | तामुवाच पुनः प्राज्ञ (भू) | २१.२८ |
| तान्सर्वान्निघ्नतो दृष्ट्वा (पा) | ४४.४८ | ताभिः स्मराजाभार्या (उ) | २४२.३६ | तामवाप्य तदा ब्रह्मा (सु) | १६.१८२ | तामिमां त्रिदिव (उ) | २०४.३१ | तामुवाच महाकायः (भू) | १०३.५ |
| तान्सर्वान्मुजयामास (पा) | ६३४ | ताभ्यां च तदपित्यक्तं (सु) | २०.२६ | तामवेक्ष्य सुधाभानु (उ) | १८५.३४ | तामुत्थाप्य मुनिः (पा) | १०६.६० | तामुवाच महावक्षी (भू) | ८८.२० |
| तान्सर्वान् विमनस्कान् (पा) | ३८.१४ | ताभ्यां तपोमहं तप्तं (उ) | १७४.३३ | तामन्नं वंस्तुते देवी (उ) | २३२.२४ | तामुद्रथयवेषव्य (उ) | ६.३६ | तामुवाच महाभाग (भू) | २३.२२ |
| तान्सर्वान् स्वयं यामास- (पा) | ५१.६० | ताभ्यां दिव्ये च धनुषी (उ) | २४२.११८ | तामसस्य सुताः सर्वे दश- (सु) | ७.६७ | तामुपोष्य नराः पापाः (उ) | ३८.६ | तामुवाच महाभाग (भू) | ११६.१६ |

| | | | | |
|-------------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------------|---|----------------------------------|
| तामुवाच महाभागमदिति (भू) ५.८३ | ताम्बूलयोनरो दद्यात् (ब्र) २४.३४ | तारणेतुभवान्मह्यं (सृ) ३६.१२७ | तारोदरविनिष्क्रान्तः (सृ) १२.४४ | तावत्कालं ब्रह्मलोके (क्रि) ६.६६ |
| तामुवाचमहाभागब्रह्मा (उ) १६.४१ | ताम्बूलान्यपिचाक्ष्णाति (पा) ८३.६६ | तारयन्नाह्यंराम (सृ) ३६.३८ | तार्क्ष्यः श्वेन्द्र ऋत्वग्र (उ) ७१.२६१ | तावत्कालंशिवपुरं (क्रि) ६.७१ |
| तामुवाच वरारोहां (भू) ७७.४६ | ताम्बूलैश्चविनोदं (उ) १५.४१ | तारयित्वाकुलशतं (स्व) १३.१६ | ताल क्रियामानलोपात (उ) ४३.२४ | तावत्कालं स्थितोरान् (क्रि) ३.७३ |
| तामुवाच वराहस्तु (भू) ४३.२३ | ताम्बूलैश्चद्विनैश्चैव (भू) ६२.८० | तारयेत् सर्वभूतानि (स्व) १७.१५ | तालजंघोदरी वक्रास्त (उ) १००.२३ | तावत्कालं हि मे लाभो (भू) ६२.६६ |
| तामुवाच विशालाक्षीं (भू) १०६.६ | ताम्रगंडकपृष्ठो (सृ) २१.५८ | तारयेद् वृक्षरोपी च (उ) २७.१४ | तालदानी विनोदेषु (उ) १२८.२७ | तावत्कालमिहस्थस्यैव (पा) १३.४० |
| तामुवाच सयोगीन्द्रः (भू) ६२.४६ | ताम्रतालु मुखः स्विन्नः (उ) १२५.२६ | तारागर्णयथाकाशं तेजः (भू) ८३.५३ | तालमानलयेलीनाः (भू) ३२.४ | तावत्कालेन तस्मै (उ) १७.७६ |
| तामुवाच सहस्राक्षः (भू) २६.११ | ताम्रपात्र स्थितं गव्यं (उ) ६४.८ | तारात्मजोबुधस्तत्र (उ) २१५.७ | तालवाद्यधरायै च (पा) १६.५१ | तावत्तत्रस्थएवाशु- (सृ) ४६.१४ |
| तामुवाच सुनीथां तु (भू) ३३.५ | ताम्र पात्रासनगतं (सृ) २३.२७ | तारां बृहस्पतेभार्यां (सृ) १३.३३१ | तालवृक्ष समुत्पाद्य (उ) २४५.१४५ | तावत्तयोक्तश्चंडात्मा (उ) १५४.२१ |
| तामु चस्तावरानार्यो (भू) ३४.३७ | ताम्र पात्रेषु भुजानो (उ) ६४.३६ | तारां सताराधिपतिः (सृ) १२.२५ | तालवृत्तं कवातेन पवित्रां (क्रि) १३.७ | तावत्तवापिदैत्येन्द्र (उ) ६६.६ |
| तामृतेनैव धर्मयोः (उ) ७१.३२४ | ताम्र पात्रो परिस्थाप्य (उ) ३०.३६ | तारापतिरिस्वामिभार्या (पा) ६८.११ | तालवेणुमुदंगादि (उ) ६२.१८ | तावत्पिण्डतिदेहुषु (क्रि) ७.६८ |
| तामेनां पश्यकल्याणीं (पा) ७२.४५ | ताम्रमय्यास्त्रियाससाद्धं (ब्र) २२.३७ | तारावभावेवालिन (पा) ११६.१७२ | तालवेणुमुदंगादि (उ) १०२.१६ | तावत्पिण्डतिपापानि (क्रि) १५.६४ |
| तामेवभार्यां गृह्णी (सृ) ४१.११७ | तारकं सर्वभूतानां नां (भू) ६८.४६ | तारारूपाश्च ते सर्वे (उ) १२६.२८२ | तालुमध्य प्रदेशे च (भू) ५३.१०४ | तावत्पिण्डतिष्ठकटे (उ) ७.६२ |
| तामेवभार्यां प्रतिमे- (पा) ११२.७८ | तारकः कमलाक्षश्च (सृ) २२.५ | तारिताः पितरस्तेन (स्व) ४५.१६ | तालुस्थानं प्रभेद्यै (पा) ६६.७३ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| तामेव हेतुं कुमुमायुधोपि (भू) ५७.८८ | तारकस्वनिहंता (सृ) ४३.४८ | तारुण्यं तस्य गेहस्थ (भू) ५३.५६ | ताले शरीरनाशः स्यात् (ब्र) २१.२६ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| तामेवपि परित्यज्य (भू) ५६.१० | तारकस्यवचः श्रुत्वा (सृ) ४२.७० | तारुण्यं तस्य वै गृह्य (भू) ७७.६६ | तावकीभक्तिरप्यस्मिन् (उ) २००.२२ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| ताम्बूलं च तथादद्यात् (पा) ११५.५४ | तारकाचित्रकुमुमग्रह (सृ) ४०.१५२ | तारुण्यं दत्तवानस्मै (भू) ७८.५४ | तावच्छिन्नवैवाशीर्धः (उ) १०२.१७ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| ताम्बूलचर्वणंभ्यासो (उ) २०६.३१ | तारकामुरतच्छक्त्या (सृ) ४४.१६७ | तारुण्यं योवनं चापि (भू) १०३.२५ | तावच्छिन्नाभसुरः क्षीघ्रं (उ) १८.३३ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| ताम्बूलदक्षिणां चैव (उ) ७७.१३ | तारकोनामदैत्यैः (सृ) ४३.५६ | तारुण्यवयसास्पृष्टं (पा) ७१.५८ | तावज्जपस्तपस्तावत् (स्व) ६१.१६ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| ताम्बूलदक्षिणाभिश्च (भू) ६७.२१ | तारणाय हितार्थैव (भू) ६३.१४ | तारुण्येनकृता क्रीडा (भू) ८.८३ | तावत्कालगतं तस्य (भू) ६४.११ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |
| ताम्बूलदानरीराजन् (क्रि) २०.१४४ | तारणाय हितार्थैव (भू) ६४.५२ | तारुण्येनकृता क्रीडा (भू) ८.८३ | तावत्कालं ततोविप्र (ब्र) १६.२१ | तावत्स्वस्वामि सुभगा (क्रि) ८.६० |



| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|
| तास्तुतेषां ततोदत्वा (सु) | २३.५७ | तिर्यक्त्वं स्थावरत्वं (भू) | ६४.१५ | तिलपात्र सहस्रेण (उ) | १२८.२७८ | तिष्ठतिष्ठेति जल्पतो (सु) | ३१.८६ | तिष्ठेतां तावपि स्वर्गं (क्रि) | २१.६० |
| तास्तु सख्यो वरा दायो (भू) | ५३.३ | तिर्यक्त्वेन च मे ज्ञानं (भू) | ८६.५१ | तिलपात्राणि सदासौ (सु) | ६.६२ | तिष्ठतीदृद्धिज श्रेष्ठ (उ) | २८.२८ | तिष्ठेति यदिव विवर्त्ति- (क्रि) | ५.१४२ |
| तास्तु स्त्रियो महाभीमाः (भू) | ८६.१४ | तिर्यगायत रक्ताक्षं (सु) | ४१.१७३ | तिलप्रमाणमपि च (क्रि) | २०.११६ | तिष्ठत्यसौ तदा तत्र (उ) | १३२.८२ | तिष्ठेत्प्रसन्नवदना (सु) | ७.४८ |
| तास्त्रियः कालकूटं (उ) | २०६.५५ | तिर्यगूर्ध्वगगनं (सु) | ४१.२२० | तिलप्रमाणं स्वर्णमयो (ब्र) | २४.१५ | तिष्ठत्येकः सुवीर्येण (भू) | ४२.१२ | तिष्ठेद्विष्णुपुरे तावत् (क्रि) | १३.१४ |
| ताः स्त्रियश्चित्तयामासु (उ) | १६७.११ | तिर्यग्ग्रीवजितान्त- (पा) | ६६.१०५ | तिलप्रमाणं दत्वा (उ) | २३.२३ | तिष्ठत्वं वै पाप कर्म (क्रि) | ५.१६१ | तिष्ठेत्तुष्टुहृतिभि- (सु) | ३४.२६१ |
| ताः स्मरन्वशासो (उ) | २०६.१२ | तिर्यग्योनिगताञ्जतून्- (क्रि) | २.२२ | तिलप्रस्थोपरिस्थाप्या- | १२४.७२ | तिष्ठत्वं सप्तमं यावत्- (सु) | ३१.४० | तिस्रकोटयोऽंकोटी (सु) | २०.१४७ |
| निधयः कार्तिकेमुखा- (उ) | १२६.१०६ | तिर्यचोपिविनाज्ञाना (उ) | २०४.३३ | तिलभागामशाराश्चमधु (स्व) | ६.४८ | तिष्ठन्तं परपालक्ष्म्या- (सु) | ३६.७० | तिस्रः कोटयोऽंकोटी (स्व) | ४७.७ |
| तिथिपक्षस्य नव्यात् (स्व) | ५५.३४ | ति कं कुरुते पस्तु (उ) | २६.३ | तिलमुदयवादीनाम् (स्व) | ५५.१० | तिष्ठन्ति देवताः सर्वे (उ) | १३४.३० | तिस्रः कोटयः प्रवीराणां (सु) | १३.१६३ |
| तिथिरैकामवेत्- (उ) | ३८.११० | तिलकं सर्वधर्मस्य (सु) | ३२.५६ | तिलादेयाश्च भक्त्या (पा) | ६८.२८ | तिष्ठन्ति मृत्युतः सर्वा (उ) | ७५.११ | तिस्रोष्टकाः समाख्या- (ध्व) | ५३.७७ |
| तिथौ लगेन शुभे प्राप्ते (भू) | ११६.१० | तिलकेन विना विप्र (क्रि) | १३.५६ | तिलानि तिलपुष्पाणि (उ) | ८७.२० | तिष्ठन्ति सर्वतोऽर्थेषु (उ) | १६३.७५ | तीक्ष्णं कुशमूर्खैर्विष्वक् (सु) | १६०.१२ |
| तिथ्यन्वास्ते महापुण्या (उ) | ६५.२६ | तिलनैर्दुलकैर्होमं दशां (भू) | ६६.३५ | तिलामलक चूर्णेन (उ) | ६३.१२ | तिष्ठन्तीषु परस्त्री (पा) | ११४.४६१ | तीक्ष्णं धुरप्रमादाय (उ) | २४७.४१ |
| तिथिडीके दासवर्गा- (सु) | २८.२६ | तिलतैलमैथुनं (ब्र) | ३.३ | तिलैश्च तंदुलैराज्यं (भू) | १२५.३१ | तिष्ठन्त्यस्थीनि गंगायां (क्रि) | ८.२५ | तीक्ष्णं तापं च तरति (स्व) | ५७.५२ |
| तिप्रियं च कृतं ते- (उ) | ३७.६१ | तिलदर्भविमिश्र तुडवकं (स्व) | २१.५ | तिलैः सप्ताष्टभिर्वापि- (सु) | ११.७० | तिष्ठन्त्यो मरुमागं- (उ) | २०७.२ | तीक्ष्णाग्रं ज्वलनप्रस्थं (पा) | ३४.१६ |
| तिमिरतत्र न रश्मिंश्च सर्व- (स्व) | २४.२४ | तिलदाता च भोक्ता च (उ) | ४२.२२ | तिलोच्चकं च संप्राश्य- (सु) | २२.१५६ | तिष्ठत्सारससारस्या- (उ) | १२६.२०३ | तीक्ष्णाग्रं बुद्धिभोहन- (सु) | ४८.६२ |
| तिमिरोद्गाराकिरणं (सु) | ४०.१७४ | तिलदानं नदी स्नानं (उ) | ११८.४० | तिलोन्नमा यो वनरूप- (पा) | १३.७ | तिष्ठत्तत्रैव महाबाहो (क्रि) | ६.१ | तीक्ष्णाग्रं चैव मातं षष्ठं (उ) | १५८.१० |
| तिमोतिनाम्नाविख्यातं (स्व) | २४.२२ | तिलद्रोणस्य दानेन (उ) | २१७.४६ | तिलोत्तमेति नाम्ना (उ) | १२६.५१ | तिष्ठतामः क्षणमात्रं (पा) | ११४.१४२ | तीरे तस्थतुरे कस्मिन् (क्रि) | ६.६८ |
| तिरस्कृतस्वुशोकोयं (सु) | १६.१७४ | तिलधेनुं च यो दद्याद्- (स्व) | १४.२६ | तिलोदकेन तत्रैव (स्व) | १३.१५ | तिष्ठतामिभवतां क्तेन- (सु) | १४.२०६ | तीरे निष्पिप्य सरसश्चक्रः (सु) | १६.३४१ |
| तिरस्त्वापापयोनी- (सु) | १८.३६३ | तिल धेनुस्तृतीया च (सु) | २१.६७ | तिष्ठतां सुदृढा भक्ति (क्रि) | १२.२०६ | तिष्ठतामिभुजेय- (पा) | ११७.२७ | तीर्णस्तापयते जलनदश- (स्व) | ३२.१६ |
| तिरोधानं न किञ्चित्- (पा) | १११.१० | तिलधेनु स्थिति ब्रूहि- (सु) | ३४.३६४ | तिष्ठतिष्ठ क्षणं दैत्य (भू) | ११५.१६ | तिष्ठताम्येको गृहेऽकर्मा (ब्र) | १४.२३ | तीर्त्वातीत्यतिधि रामो (पा) | ३६.४२ |
| तिर्यक्चैदागतो गर्भो (उ) | १६६.५३ | तिलपात्र हिरण्यं च (सु) | २०.७६ | तिष्ठतिष्ठेति (पा) | ६१.२१ | तिष्ठेच्च शिलायत्र सर्वं (उ) | १३१.६ | तीर्त्वा हि सागरपि- (पा) | ३६.३६ |



| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|
| तीर्थं कुरुवरंश्रेष्ठ सर्वं-(स्व) | २८.३३ | तीर्थं तत्रमहाराज (स्व) | २६.५६ | तीर्थं राज जलस्यास्य (उ) | २०४.११३ | तीर्थस्यास्य प्रादेन (उ) | २१०.४६ | तीर्थानां प्रवरं तीर्थं (उ) | १६३.१ |
| तीर्थं चापि परंनत्र (भू) | २४.२८ | तीर्थं तत्सन्निधौपुण्य (उ) | २०८.४१ | तीर्थं राजः सन्तोऽसी (क्रि) | १८.१६ | तीर्थस्यास्य प्रसादेन (उ) | १२११.४४ | तीर्थानामिव राजेन्द्र-(भू) | ३६.६६ |
| तीर्थं च लभते प्राज्ञः (भू) | १४.२३ | तीर्थं प्रभावात्सं प्राप्तं (उ) | १४३.३२ | तीर्थं राजोऽपिपृष्ठस्थ (उ) | २२०.११ | तीर्थस्यास्य प्रसादेन (उ) | २२१.४४ | तीर्थानांसेवनादेव (स्व) | ४०.५ |
| तीर्थं जिगमिषोर्गोत्रं (पा) | २७.३७ | तीर्थं प्रसादवांस्तोके (उ) | २५५.२४ | तीर्थरूपा महापुण्याः (भू) | ३६.६८ | तीर्थस्यास्य प्रसादेन (उ) | २२२.६५ | तीर्थतामुत्तमतीर्थं (उ) | २४.४ |
| तीर्थतद्व्यकथ्यानाम (सु) | ११.४६ | तीर्थं माना महादेवी (भू) | ६२.३५ | तीर्थं श्राद्ध प्रदायांति (सु) | ६.४५ | तीर्थान्तीर्थानि चर्याकृषि(स्व) | २१.४६ | तीर्थानिदक्षिणोपादेवे (उ) | ६३.२६ |
| तीर्थं नुनैमिपं नाम सर्वं-(सु) | ११.६ | तीर्थं मिश्रमतीनामपितृ-(सु) | ११.१३ | तीर्थं श्रेष्ठमितिप्रोक्तं (क्रि) | १८.१ | तीर्थानिदक्षिणोपादेवे (स्व) | ५०.३७ | तीर्थानिपर्यटन्धीरस्त (उ) | २१६.३१ |
| तीर्थं तु पुष्करं नाम (सु) | ११.२ | तीर्थं मेतद्विकौलं च (उ) | १३७.१३ | तीर्थं यन्नयनादेव (स्व) | २७.८५ | तीर्थानिदक्षिणोपादेवे (सु) | ३४.२०३ | तीर्थानिमुनयो देवायजाः(उ) | १०५.२४ |
| तीर्थं तु नैमिषं नाम-(उ) | १३५.५५ | तीर्थं यात्रां गताविप्रा-(सु) | ३३.२६ | तीर्थं सप्तकनाम्नस्तु-(उ) | २२२.५७ | तीर्थानिदक्षिणोपादेवे (उ) | १४६.१ | तीर्थानिसरितोवाध सूर्या-(सु) | २.८३ |
| तीर्थं त्रैलोक्यं नाम-(सु) | ११.३७ | तीर्थं यात्रांगते रामे (उ) | १६८.६२ | तीर्थं सप्तकमेतत्तुत्रय (उ) | २०७.५१ | तीर्थानिदिवेवान् संस्पृश्य (उ) | ६३.२३ | तीर्थानिश्रवणंघन्यं (स्व) | ४०.२ |
| तीर्थं नयतिधर्मिणा (भू) | ४.२२ | तीर्थं यात्रां पुरस्कृत्य (स्व) | २६.१०५ | तीर्थं स्नानतपोदानं-(पा) | ६७.६२ | तीर्थानां च प्रभावेन सता (भू) | ३०.३५ | तीर्थानिचैतानि दुःखेन (भू) | ६२.२८ |
| तीर्थं पालिस्वरं नाम (उ) | १३६.२ | तीर्थं यात्रां प्रयास्यामि (भू) | ४.३ | तीर्थं स्नानं तु यद्दानम (स्व) | २०.५५ | तीर्थानांतुयथा गंगा (उ) | ११६.१६ | तीर्थानिगतगोष्ठेषु द्वीपो (सु) | ६.१३३ |
| तीर्थं पाद्युपतं चैव नदी (सु) | ११.४६ | तीर्थं यात्रां प्रयास्यामि (भू) | ८५.१६ | तीर्थं स्नानं तपो यज्ञ (पा) | ८६.८ | तीर्थानांतुयथागंगा (उ) | १२३.६ | तीर्थानिबुवंति जगतीम् (स्व) | ५०.१८ |
| तीर्थं पुण्य तमं राजन् (स्व) | २७.७७ | तीर्थं यात्रा कृता सिद्धि (भू) | ६०.४ | तीर्थं स्नान प्रसंगेन (भू) | ३०.३४ | तीर्थानां परम तीर्थं-(सु) | १७.६६ | तीर्थक्षेत्रे गृहे वापि-(सु) | ३४.२२१ |
| तीर्थं प्रत्यक्षदद्रीना (पा) | ६५.१३ | तीर्थं यात्रा प्रसंगेन (भू) | ४१.५१ | तीर्थं स्नानादिनपरा (पा) | ६०.३६ | तीर्थानां परम तीर्थं (उ) | १५६.१३ | तीर्थं गन्तव्यं प्रदास्यामः (सु) | १६.५५ |
| तीर्थं भोगवती चैव (स्व) | ३६.७३ | तीर्थं यात्रा प्रसंगेन (भू) | ८५.२० | तीर्थं स्नानादिमिमेक्षाः (सु) | ४६.१३१ | तीर्थानां पुण्यदातृणां (स्व) | १.१६ | तीर्थं च सर्वं देशानां-(स्व) | ८६.८४ |
| तीर्थं रोगहरं स्नानात् | १५.७ | तीर्थं यात्रा प्रसंगेन (उ) | ६०.२६ | तीर्थस्य च मयाप्राप्तो (उ) | २१६.७६ | तीर्थानां पुष्करं तीर्थं (उ) | १६२.११ | तीर्थं चानुदिन स्नानं (पा) | ६५.५६ |
| तीर्थं वैनायकं नाम (सु) | ११.२७ | तीर्थं यात्रा प्रसंगेन (उ) | २१६.३३ | तीर्थस्य देवता विष्णु (पा) | ६७.६६ | तीर्थानां प्रवर तीर्थं (सु) | १४.१८६ | तीर्थं अपात्यमानोपभृता (उ) | २१७.३० |
| तीर्थं सारस्वतं चैव (सु) | ११.५३ | तीर्थं यात्रा अभिषेकं वगतः (उ) | १४१.४२ | तीर्थस्य लक्षणं राजन् (भू) | ३६.८७ | तीर्थानां प्रवर तीर्थं (उ) | २१.२४ | तीर्थं पिचयथा राम (पा) | ११५.५७ |
| तीर्थं कोटिषु यत्पुण्यं (उ) | ३४.८१ | तीर्थं यात्रा विधिश्चुत्वा (पा) | १६.३३ | तीर्थस्यापि च यद्रूपं (भू) | ३६.४७ | तीर्थानां प्रवर तीर्थं (सु) | ३२.७७ | तीर्थं तूलाय स्नात्वा (उ) | १६५.५ |
| तीर्थं कोटि सहस्रा (उ) | ३४.३२ | तीर्थं यात्रोपवासानां (भू) | ६७.७५ | तीर्थस्यास्य प्रसादेन (उ) | २१०.४६ | तीर्थानां प्रवर तीर्थं (उ) | १५२.१ | तीर्थं वापि वने वापि (उ) | १६८.१० |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|----------------------------|--------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|
| तीर्थेश्वरकाख्येहि (उ) | २०७.५४ | तुतोषोद्भिन्नरामांशो (उ) | १२५.१२७ | तुलसी काष्ठजामालां (उ) | ६८.७ | तुलसीत्रकंभूत्वा (उ) | ६६.३८ | तुलसीमारुदलः (पा) | ११४.५४ |
| तीर्थेषु कालिकं कुदत्ति (उ) | १२४.७० | तुं दिले कलहसादिना-(पा) | ७४.६३ | तुलसी काष्ठमिश्राणि (उ) | २३.७ | तुलसीपत्र गंधस्तु (क्रि) | ११.१३६ | तुलसी माहात्म्य | १८.१५२ |
| तीर्थेषु पिंड दानादीन् (सृ) | २८.२३ | तुभ्यं च ब्रह्मणा प्रोक्तं (उ) | १६४.६६ | तुलसीकाष्ठमालांतु (ब्र) | २२.१० | तुलसीपत्र गलितम् (ब्र) | २२.२७ | तुलसीमिश्रितस्तोत्रस्तु (उ) | ११३.१५ |
| तीर्थेषुलम्प्यतेसाधुराम (पा) | १६.१६ | तुभ्यं तुष्टोमहाराज-(पा) | १६.३२ | तुलसीकाष्ठमालांतु (ब्र) | २२.१८ | तुलसी पत्र गलितम् (क्रि) | २४.२८ | तुलसी मूलदेशे च (उ) | ६५.५ |
| तीर्थेष्वेतेषुवैदेयं ग्रहणं (सृ) | ३४.३६६ | तुभ्यं दुःखानिरादाय-(उ) | १८.१३६ | तुलसीकाष्ठ संभूता (क्रि) | २४.२७ | तुलसीपत्र गलितम् (उ) | २३.३८ | तुलसी मूलदेशेपिस्थितम् (ब्र) | २२.२६ |
| तीर्थेस्नातनयेवैश्य (स्व) | ३१.१६६ | तुभ्यं नमोऽस्तु जगतः (क्रि) | १६.५६ | तुलसी कृष्ण तुलसी (उ) | ८७.१२ | तुलसीपत्रनिकरैर्नितं (उ) | ३५.२० | तुलसी मूलमृत्सर्प-(उ) | २३.२५ |
| तीर्थेस्मिन् भोजयेद्यो (उ) | १६०.५ | तुभ्यं यत्तुमयाप्रोक्तं (पा) | ७४.२०३ | तुलसी कोमलदल वन-(उ) | २५३.८६ | तुलसी पत्र मालां (उ) | २६.१६ | तुलसी मूलमृदुश्च (उ) | २.६२ |
| तीर्थे तैर्दानतपो (उ) | १२८.१४६ | तुभ्यं वामन रूपाय (उ) | ७८.४४ | तुलसीगंध माध्याय (उ) | २३.३३ | तुलसी पत्र लक्षणे (उ) | ११८.५५ | तुलसी मृत्तिका लिप्तो (ब्र) | २२.८ |
| तीर्थोपवासमेवयः (क्रि) | ६.६५ | तुभ्यं वः कम्बकां ब्रह्मन् (ब्र) | २६.२५ | तुलसीगंधमिश्रं तु (उ) | ११८.५६ | तुलसीपत्र संयुक्तं (उ) | ३५.५१ | तुलसी मृत्तिका लिप्तो (उ) | १०५.१६ |
| तीर्थवीर्यं मनुष्येषु (उ) | २५०.५३ | तुर्गोनिरगास्त्वर्गं (उ) | १८६.४१ | तुलसी चन्दनं वारि-(पा) | २०.२६ | तुलसीपर्णसंयुक्तं (ब्र) | १७.५ | तुलसी वनजाद्याया (उ) | २३.३५ |
| तीर्थे तैर्दानतपो (स्व) | २३.२८ | तुर्गो वाहनैर्हीनः (क्रि) | २१.८२ | तुलसी च वसंततुः (उ) | १६५.३६ | तुलसी पावके नाथ (उ) | २३.१७ | तुलसी वन मध्ये च(ब्र) | २२.२५ |
| तुंगकाश्रममासाद्य (स्व) | ३६.४४ | तुरीय भागेन चतुर्विंश (सृ) | २१.१०० | तुलसीछन्ननद्याण (क्रि) | ११.१३७ | तुलसी पूजयानस्यरत्न (उ) | १०८.१३ | तुलसी वनमालाद्य (उ) | २४५.२३३ |
| तुंगप्रकारं सवेष्टं (श्रु) | ५१.४२ | तुरीयोहं निविकारी (श्रु) | ३६.२४ | तुलसीदलजां मालाम् (ब्र) | २२.१२ | तुलसी पूज्येन (उ) | २३.४२ | तुलसीवल्लभायस्य (पा) | ३२.६ |
| तुंगभद्रातटे पूर्व (उ) | १६६.१८ | तुं पुरं कुं राजायदुं (श्रु) | ७७.१०६ | तुलसीदललक्ष्म्यः (क्रि) | १३.८४ | तुलसी प्रणम्येष्टम् (क्रि) | २४.२४ | तुलसी वल्लभाय (क्रि) | १७.११२ |
| तुंगभद्रानदीतीरे (उ) | १८०.४३ | तुरोर्विषं तु नच्छुत्वा (श्रु) | ७८.१६ | तुलसी दल संयुक्ततर्पणं (उ) | १.५६ | तुलसी भूतिका पृष्ठयो (क्रि) | २५.७ | तुलसी विनच्छाया (उ) | १०५.१८ |
| तुंगभद्रानदीतीरे (उ) | १८०.४६ | तुयंयामे विभावयी (उ) | १४.१५ | तुलसी दलानि पुष्पाणि (उ) | ६१.६१ | तुलसी मजरी युक्तो (उ) | १०५.१५ | तुलसी वृक्षमालाया (क्रि) | २४.४८ |
| तुंगचलमहावप्रणो-(उ) | १८६.४ | तुर्गेषु समतीतेषु (ब्र) | ११.६६ | तुलसी दलेन संप्रीतः (उ) | १२१.२५ | तुलसी मंजरीभिर्यः (उ) | १०५.१३ | तुलसी वृक्ष सदनः (क्रि) | २४.४६ |
| तु तोपदोपाकरमंड-(सृ) | ४३.२६२ | तुलया तुलितं सर्वं (पा) | ११२.१०६ | तुलसीदारु जातेन (उ) | २३.२० | तुलसीमस्तके तस्य-(पा) | २०.६६ | तुलसी सहितो देव (उ) | २५.२६ |
| तुतोषभगवान् विष्णुः (उ) | ८०.४३ | तुलसी काननं राजन् (उ) | १०५.६ | तुलसीदारुणादाहो (उ) | २३.५ | तुलसीमस्तके यस्य (पा) | २०.८१ | तुलसी सेवते यस्तु (क्रि) | २४.११ |
| तुतोषराधवः श्रीमान् (सृ) | ३८.१७६ | तुलसी काष्ठजयस्तु (उ) | १०५.१७ | तुलसीपंकलिप्रांगः (उ) | २३.२१ | तुलसीमस्तकेयस्य (पा) | ६४.३७ | तुलसी स्मरणेनैव (क्रि) | २४.२५ |



| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| तुलसीहृतेक्षिप्रं (पा) | ६८.६ | तुष्टः प्रोवाचवज्रांगं-(सु) | ४२.३३ | तुष्टुबुज्यशब्देन (ब) | ८.१७ | तुष्ट्यतेतुनंदीशः (स्व) | १८.३८ | तुष्टीघेन प्रतिच्छन्नोदगव (सु) | ४३.२२ |
| तुलापुरुषदानंयः (ब्र) | २४.२१ | तुष्टः शान्तः क्रियादक्षः (पा) | ११५.६ | तुष्टुबुज्यशब्देन (उ) | २४३.२१ | तृणमारोह्यामासुः (ब्र) | २२.३४ | तृतीयनैमिषक्षेत्र (उ) | १३३.५ |
| तुलापुरुषदानं यः (क्रि) | २०.१२६ | तुष्टस्तेतपसावीरसा-(सु) | २.६७ | तुष्टुबुज्यशब्देन (उ) | २४५.३६६ | तृणं संघोषणाकीर्णं (उ) | १८५.६ | तृतीयं रक्षितं तस्य (स्व) | १५.६६ |
| तुलापुरुषदानाद्यैर (उ) | ७१.६४ | तुष्टस्तेहंसदावत्सप्रणि-(सु) | २.७८ | तुष्टुबुज्यशब्देन (उ) | १२७.१११ | तृणं सूक्ष्माणि वस्त्राणि (भू) | ६७.१०२ | तृतीयं रुद्र दैवत्यप्रयो (सु) | २०.४२ |
| तुलापुरुष दानेन (क्रि) | २०.१२४ | तुष्टात्मनस्तृतीयस्तु (सु) | ३.६८ | तुष्टुबुज्यशब्देन (सु) | ४५.१८८ | तृष्णीवभूतुर्ग्रा- (पा) | १०५.११४ | तृतीयं स्वर्गं खंडं च (भू) | १२५.४६ |
| तुलापुरुषदानेन (ब्र) | २४.१८ | तुष्टादस्त्वावरसापित-(पा) | ३१.५३ | तुष्टुवेमुनयः सर्वसुरो (पा) | ७.१६ | तृष्णीवभूव विश्वात्मा (पा) | १११.३८ | तृतीयः ऋकचोहोप (उ) | ११४.६ |
| तुलामकरमेपेपुप्रातः (उ) | ११०.२५ | तुष्टावऋक्षराजोपि-(सु) | १३.८६ | तुष्टुवेमुनयः सिद्धा (उ) | २४२.३२४ | तृष्णीं बभूवा स-सा (उ) | १६८.८६ | तृतीय घटिकायां तु (पा) | १०५.१०२ |
| तुल्यं प्रिया प्रिया प्रियं (सु) | १३.४०० | तुष्टावप्रणताभूत्वाभक्ति-(सु) | ३.३२ | तुष्टुवुः स्तुतिभि (उ) | २४०.५८ | तृष्णीभूत्वाय सासाध्वी (पा) | ११२.४४ | तृतीय दिक्से राज्यां (पा) | १०६.६ |
| तुल्यमानापमाश्च (सु) | १६.२१८ | तुष्टाव प्रणतो भूत्वा (भू) | ३२.३१ | तुष्टुवुस्तो महात्मानो (भू) | ६०.१३ | तृष्णीमथोपचारं (पा) | ११४.३३६ | तृतीयतु परं व्यूहं (उ) | २२६.१२० |
| तुल्यमानेऽपमाने च (सु) | ३२.४१ | तुष्टावप्रणतो भूत्वा (नृ) | १४.१३८ | तुष्टे चराचरं तुष्टं (पा) | ८४.३१ | तृष्णी मासीतनिदायां (सु) | १५.३६५ | तृतीय पर्वं प्रहृणा- (सु) | १.६२ |
| तुलस्याउपरिष्टात् (उ) | ६५.३ | तुष्टाव प्रयतः स्थित्वा (सु) | ३३.१५० | तुष्टेनविष्णु नात-(उ) | २००.११६ | तृष्णीमेवहि शूद्रस्य (उ) | ११७.३१ | तृतीय सुर्यं नाम-(स्व) | ६.३३ |
| तुलस्याः काननं विप्र (ब्र) | २२.३ | तुष्टावभक्त्युत्कलित-(पा) | १३.२२ | तुष्टेनाथतयोर्दंतोवरौ (सु) | १.३१ | तृष्णीं सर्वसमभव (पा) | ११४.१६८ | तृतीय सूर्यं दैवत्यं (सु) | ४६.१६४ |
| तुलस्या च द्विज श्रेष्ठ (भू) | ७४.२३ | तुष्टावमाधवंदेवं (क्रि) | ४.५६ | तुष्टे पितरि संप्राप्तं (भू) | ६३.२७ | तृणं काष्ठं फलं (स्व) | ५५.६ | तृतीयाकेकयस्या (उ) | २४२.३८ |
| तुलस्याः परिसरेयस्य (ब्र) | २२.२ | तुष्टाव रघुशार्दूल-(उ) | २४४.७८ | तुष्टे भर्तः तृप्यति (भू) | ४१.७६ | तृणं वायुदिव्याशक्तम् (स्व) | ५५.२ | तृतीयाचाष्टमी (उ) | २८.१०५ |
| तुलस्या मंजरी (उ) | ३६.१० | तुष्टावल्लोमशंप्रीत्या-(उ) | १२६.२८८ | तुष्टे भर्तं संसारे (भू) | ४१.७३ | तृणं विन्दो ऋषेश्वरं (भू) | ३६.४ | तृतीयादि दशम्यं (पा) | ३६.४३ |
| तुलस्या मूलतस्तोयम् (ब्र) | २२.३० | तुष्टदानिकलो नित्यं (उ) | ६२.२० | तुष्टोऽस्मि भवतो भक्त्या (क्रि) | १६.५१ | तृणाविन्दोस्तुक्त्यायां (उ) | ११०.२ | तृतीयादि सप्तम्यं (पा) | ३६.५६ |
| तुलस्यारोपस्यंस्तु (क्रि) | २४.२२ | तुष्टुवः सहिता सर्वः (सु) | १७.४६ | तुष्टोऽष्टाद्यतवभाभिनि (पा) | १५.२१ | तृणमपि विना कायं (भू) | १३.२३ | तृतीयापिबध्यामि (सु) | १५.३२७ |
| तुलस्याविपिनेधात्र्या (ब्र) | २२.१६ | तुष्टुवः सुष्टि कर्तारं (नृ) | १५.११५ | तुष्टो विष्णुस्तमस्याहं (भू) | ३६.२८ | तृणवज्जिवितं राजा (उ) | १६०.३१ | तृतीयं खंडं सयुक्तं (ब्र) | ११.४१ |
| तुलावमकाञ्चनोयश्च (सु) | १६.२६१ | तुष्टुविविधैः स्तोत्रै (सु) | ८.११५ | तुष्टोतीवीक्ष्यभिपजो (पा) | १५.१० | तृणानि रिवशांतो (पा) | १०७.११ | तृतीयेत्रिगुणं प्रोक्तं (पा) | ११४.४७७ |
| तुपांगारकपालाश्म-(उ) | २३२.३० | तुष्टुवश्चद्विजाः सर्वे (उ) | २१२.३५ | तुष्ट्यते केवलं भक्ति (पा) | ८४.५१ | तृणं काष्ठं च पापाणि (भू) | २१.१३ | तृतीयेदिवसे राम (पा) | ११५.३३ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| तृतीये रजकौ प्रोक्ता (उ) | ७७.४६ | तृष्णाहरस्वशीघ्रं (श्रु) | २०.४५ | ते चतश्चनमस्कृष्यस्तु (उ) | २५२.१३ | तेजसा सूर्यं सदशाः (पा) | ११०.५० | ते तं दण्डं समायातं (उ) | २१२.३४ |
| तृतीयेऽथ सर्गस्तु (सु) | १.६५ | तृष्णाधुवासमाक्रांतो (पा) | ६७.५८ | ते चापिमाययात (उ) | २४५.४४ | तेजसो ब्रह्मणोऽदीप्ताद-(सु) | १४.३१ | ते तथा नुगता रामं (उ) | २४४.७६ |
| तृतीये वाचतुर्थया (पा) | १०८.४८ | तृष्णाचैवधनाद्यं (सु) | १६.२६६ | ते चास्त्रं शूलमपि ताः (सु) | ४४.५७ | तेजस्त्वं क्रोधजं मुचे-(उ) | ६.२५ | तेतद्भाषितमाकर्ण्यं (पा) | ५५.७८ |
| तृतीयेऽपि कालोऽयं (पा) | ११६.२६६ | तृष्णा तीव्रा न हि (भू) | ६७.७६ | ते छिन्न बाहवः (पा) | ५४.३७ | तेजस्विनं महाप्राज्ञं (भू) | ७७.८५ | तेतस्य प्राणवातेन-(सु) | ४.३६ |
| तृप्ताः काम्येन बाध्यते (भू) | ६६.१५१ | तृष्णातुरागनिदाघाता (उ) | ५५.२६ | तेजः पुंजवती साक्षाद् (उ) | १६२.१७ | तेजस्विनः कुलेजातः (सु) | ८.१०३ | तेतां गतिं प्रपद्यते (उ) | ७१.६२ |
| तृप्तान् ज्ञात्वोदकं (सु) | ६.१६८ | तृष्णानलेन दग्धेन सुखं (भू) | १७.५२ | तेजः प्रभावी ह्यतुलः (भू) | ५५.६ | तेजस्विनां सूर्यवरः (भू) | १०२.३६ | तेतां श्रुत्वा हितां रम्यां (सु) | ४३.३४८ |
| तृप्तायां त्यजन् दाता (उ) | ३२.२० | तृष्णानलेन दग्धो (पा) | ८६.६३ | तेजः प्लक्ष्मादयो द्वीपाः (क्रि) | २.१८ | तेजस्विनी सुहेमा-(उ) | १२७.६३ | तेतुष्टुह्यनतः पूजां (सु) | ३६.१६ |
| तृप्ताः समभिनच्छति (उ) | १४६.३ | तृष्णामुष्णाति-ति-(सु) | ४३.१५६ | तेजः शेषेण च तदा (उ) | १००.१२ | तेजस्विषु यथा सूर्यः (उ) | २१२.२५ | तेतुष्टुचनं श्रुत्वा प्रयाताः (सु) | ६.७ |
| तृप्तिर्नैवेति भूतेश (उ) | २५३.३ | तेऽनुज्ञारघुनाथस्य (पा) | ११.३५ | तेजसा तव दिव्येन (भू) | ८८.३६ | तेजो ज्वालासमाकोणं (भू) | ११४.२५ | तेतुसातवचः श्रुत्वा हृषिताः (पा) | २६.१ |
| तृप्तिर्नैवेति मुनिवच्यं (पा) | ११७.२१ | तेऽपि प्रदानसमये (पा) | ११४.२१६ | तेजसा तस्य देवस्य (भू) | ३२.२७ | तेजो देवि सुविप्रस्य (भू) | ५०.१० | तेतुष्टुहिरामेण धर्मा-(पा) | ६.३६ |
| तृप्तिर्नैवेति मुनिवच्यं (पा) | ११७.१४४ | तेऽपि यतिं परं धाम (क्रि) | १०.७६ | तेजसा तस्य पुण्येन (भू) | ८३.२८ | तेजो देवि सुविप्रस्य (भू) | ३३.१५ | तेतुष्टुवि-ठरभीमार्जुन (उ) | २५२.३६ |
| तृप्यन्ति पितरस्तस्य (सु) | १८.२२४ | ते कालनेमिप्रमुखास्ततो (उ) | ६६.३३ | तेजसा तस्य मंत्रं (उ) | २०८.२० | तेजो भगो न कर्तव्यो (भू) | ३.३१ | तेतुष्टुसुराः सर्वे-(पा) | ७.८ |
| तृप्यति पितरस्ताव- (स्व) | १८.१०४ | ते कृताञ्जलयः सर्वे देवा (सु) | ४०.१५४ | तेजसाधेन संयुक्ताः (स्व) | ७.१३ | तेजो मयं घृतं पुण्यं (सु) | २१.१६२ | तेतुष्टुसुराः सर्वे (उ) | ६.४ |
| तृप्यति पितरो येषां (पा) | ६६.११३ | ते गणाधिपतीरुदवा (उ) | १०१.१ | तेजसाप्यायितास्तस्य (सु) | १५.११३ | तेजो मयेषु लोकेषु (उ) | १२७.३६ | तेतुष्टुजितारस्तेन (उ) | २४२.२२७ |
| तृषाधुवासमाक्रांतो (भू) | ४०.४० | ते गत्वा धिपुत्रीं सुरा (पा) | २६.१३ | तेजसावाह्यार श्रेष्ठ (भू) | ५.४४ | तेजो मयो नित्यमतः (सु) | १५.३८६ | ते तु सर्वेपि विज्ञेयाः (उ) | ६८.१२ |
| तृषितामौ गृहेऽहो गेहे (पा) | ३०.२७ | ते गत्वा सन्निधौ तस्य (पा) | ४५.७ | तेजसाभास्काराकारः (सु) | ४५.३५ | तेजो मयं गिदं स्थानं (पा) | ७५.१३ | ते तु सर्वे भयं त्यक्त्वा (सु) | ४१.१८७ |
| तृष्णया धुधयाय (सु) | ३४.३७८ | ते गत्वा परिचर्योरेः (सु) | ४०.१६१ | तेजसा भूयसा व्याप्त-(उ) | १७७.१६ | तेजो रूपं वलं स्त्रियं (उ) | १२८.१६१ | ते तृप्तिमखिलायां तु (सु) | २०.१६७ |
| तृष्णया दह्यमानस्तु (भू) | १७.४४ | ते गृह्णन्तु बलाद्वाहं (पा) | ५४.१५ | तेजसा र्वनतेयस्य (पा) | ८७.३६ | तेजो वितानादभवद्भुवि-(सु) | १२.१२ | ते ते सुमनसा प्रोक्ताः (भू) | १७.१६ |
| तृष्णया दह्यमानस्तु (पा) | ८६.५५ | ते च क्रुद्धिं या दग्धेव (पा) | ७.३० | तेजसा र्वनतेयस्य (पा) | ६३.६ | तेजोहीमो भवेत्कायो (भू) | ६४.८५ | ते ते सुमनसा प्रोक्ता (पा) | ८६.३० |
| तृष्णां मोहं तथा लोभं (भू) | ३३.३२ | ते च चण्डादयो दूता (क्रि) | २०.४५ | तेजसा सुखेनैव गजं तौ (भू) | ४५.१४ | तेजोऽपि पुण्यकर्माणो-(उ) | १७४.६४ | ते त्रयस्तेन पुण्येन मरणां (उ) | २२२.१८ |

| | | | | |
|---|-------------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|
| ते श्रयोवयानानिगणानी (उ) २१७.२५ | तेन गभण सा देवी (भू) २०.४१ | तेनदानप्रभावेतत्तीयं (उ) १६२.१५ | तेन पातक योगेन (उ) १८४.५५ | तेन पुण्येन तत्त्वं (उ) १००.२३ |
| तेदक्षमाना श्रौर्वेणवृत्ति- (सु) ४१.६६ | तेनचिच्छेदकश्चाणि- (उ) १७.५५ | तेनदानेनदत्तेन (स्व) ४६.१२ | तेन पाप परीहारी (पा) १०६.६७ | तेन पूजा प्रदानेन (भू) ११६.३६ |
| तेदाक्षिणात्य बट- (उ) २१२.४ | ते चेष्टंभवेत् सर्वं (सु) ३१.१५३ | तेनदुःखेनरामोपि (उ) ४४.७ | तेन पापप्रभावेन (उ) ३६.३७ | तेनपूतांतरात्माहं (उ) १७५.५५ |
| तेदाक्षिणात्यायतयो- (उ) २११.५६ | तेन जप्तंहुतं दत्तं (उ) ११६.२२ | तेन दृष्टाप्रचंडा (उ) १५४.२० | तेन पापप्रभावेण (क्रि) २१.५१ | तेन पृष्टास्तदाविप्रा (उ) १५१.५२ |
| तेदानवगणास्सर्वेमुनेन्द्रं (सु) ४५.६८ | तेनजप्तंहुतं दत्तं (उ) १२३.६ | तेन दृष्टोमहाधर्मो (भू) १२.५३ | तेन पापेनतिर्यक्त्व (उ) १८४.८७ | तेन प्रहारेण महाबलो (पा) ५३.४ |
| तेदानवाः पाशशुहीन- (सु) ४५.११४ | तेनजीवंतिलोकेस्मिन् (स्व) ४३.२६ | तेन दृष्टोवि पापस्त्वं (सु) ३७.१२८ | तेन पापेन दग्धो (पा) ६४.३२ | तेन प्रीतितथायमिन (उ) ६२.२४ |
| तेदुःखिताश्चरारतूणं (पा) ५६.३४ | तेनतपोमहत्तत्त्वं बहु- (उ) १८.६ | तेन दृष्ट्वापुनः सापि (ब्र) १३.३६ | तेन पापेन संजार्तं (पा) ७३.४१ | तेन प्रीतोभवस्वामिन् (उ) १७४.६३ |
| तेदृष्ट्वापुनयः सर्वेवेग- (सु) १८.१२६ | तेनतप्तातनुर्येषांते (उ) २२४.६२ | तेन देवाः प्रसन्नास्ते (भू) ७१.२३ | तेन पापेन संलिप्तो (पां) ६४.३५ | तेनबाणप्रहारेण- (पा) ५२.६१ |
| ते दृष्ट्वाविस्मयं प्राप्ता- (पा) ४६.१४ | तेन तीर्थं कृतं पुण्यं (स्व) २८.२ | तेनदेवाभि योगेन (उ) १३६.२५ | तेनपाशुपतास्त्रेण (उ) १५३.२१ | तेन बाणैर्दुःखार्तो- (पा) ५२.६४ |
| ते देवास्तेजप्रदास्ते (उ) ८१.२४ | तेनतीर्थं कृतं सर्वं (उ) ६७.११ | तेन देवेनगोपाभिर्महा- (पा) ७१.३ | तेन पीडां सहंत्येव (भू) १२.११८ | तेनबाणेनविभ्रान्तो (पा) ३४.२७ |
| ते द्विजाः साध्विति (उ) १६७.७५ | तेनतीर्थमिदं दिव्यं (उ) १८५.६६ | तेनदेवे शमार्णक (उ) ३४.७२ | तेन पीडितसर्वांगो (उ) २१०.६७ | तेन बाणैर्न संक्षिप्तो (पा) २७.४४ |
| ते द्वे त्व मे समाचक्षन् (भू) ६३.४१ | तेनतपूजिताश्चैव (उ) २४५.२१४ | तेनदोषेण समुतोद्भव (उ) २२२.१३ | तेन पुण्यप्रभावेन (ब्र) ६.३२ | तेन बाणैर्न संमुख्यं (पा) ५२.६८ |
| ते धन्याः कर्मभूमौ (उ) १२६.२२१ | तेनतत्त्वनिरयस्थान (पा) १०१.५६ | तेन दोषेण यज्ञस्य (भू) ६६.२१३ | तेन पुण्य प्रभावेन (पा) ६१.८ | तेन बाणैर्न सविद्धः (पा) २७.१७ |
| ते धन्याः पृथिवीमध्ये (उ) ६४.७२ | तेन त्वं मुक्तिभागी च (भू) ६६.१८ | तेन दोषे संपृष्टा (भू) ८८.२३ | तेनपुण्यप्रभावेन (उ) ३६.४० | तेन बाणैर्न सविद्धः (पा) २७.१७ |
| ते धन्यामानवालोकेये- (पा) ६८.३१ | तेनतत्त्वरूपवान् जातो- (सु) २४.३६ | तेन द्रव्येणयद्दानं (उ) १३२.११२ | तेनपुण्यप्रभावेन (उ) ३६.४० | तेन बालत्वमारभ्य (स्व) ३१.१७४ |
| ते धन्यास्ते महात्मा (उ) ३०.५६ | तेनतत्त्ववरयोगोसिवराणां (सु) ३०.१६० | तेन द्वादशवर्षाणि (सु) ३४.१७७ | तेन पुण्यात्मना सार्द्धं (क्रि) ६.७२ | तेनभग्नधनुर्दृष्ट्वा (पा) ५२.१४ |
| ते धन्यास्ते सुकृति (पा) ८५.७२ | तेनतत्त्वमपिकल्पाण (उ) १७६.५८ | तेन धारयितव्यावै (स्व) ६०.३१ | तेन पुण्येन चानेन (भू) २६.३५ | तेनभूमिभंजातस्य पितृ (क्रि) १६.१८ |
| तेन धन्यास्ते सर्वं पातकं (भू) ६१.३६ | तेनतत्त्वाकारविण्या (पा) १००.२८ | तेन धारयितव्यावै (स्व) ६०.३१ | तेन पुण्येन दूतस्मा दुष्ट (उ) १७६.२१ | तेनमाधव मासस्य (पा) ६२.११५ |
| तेन कर्म विपाके न (उ) १२६.७६ | तेनत्वामेव पृच्छामि (पा) ८४.२२ | तेन धन्यानेन ज्ञानेन (१) ७२.२० | तेन पुण्येन भूपाल (पा) ६५.१४१ | तेन मिथ्या प्रवादेन (सु) १३.६१ |
| तेन कर्मभियोगेन- (उ) १३६.३७ | तेनत्वा रक्षन्तं तं कृता (पा) ४६.२७ | तेन नानेन महता (उ) २४१.६० | तेन पुण्येन महता (उ) ३१.३० | तेन मुक्तमहाशस्त्रं (पा) ५१.४५ |
| | | तेननारायणः प्रोक्तः (उ) २४.१५ | तेन पुण्येन न स्थीनि (उ) २१०.६६ | तेनमे कोकुक्षं प्राप्तं (सु) १८.५५२ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|
| तेनमेतुग्रहं कर्तुं कृपण (उ) | १८५.८६ | तेन शापोपि सदिष्टो (पा) | ६७.७१ | तनस्त्वानरोविप्रा (उ) | १६७.७३ | तेना सो मुनिभिन्नित्यं (उ) | २२६.५७ | तेनैवदमितः पंथा (उ) | १०२.२६ |
| तेन मे परमं ज्ञानं (भू) | ८४.१६ | तेन शास्ता च भूतानां (पा) | ६७.२२ | तेनां च वारितः प्राह- (सु) | १८.१३८ | तेनासोमोचितोवाजो- (पा) | २३.१० | तेनैवदीपितं सर्वज्वलते (स्व) | १५.१७ |
| तेन मे प्रेतरूपस्य- (उ) | १२६.२१३ | तेन शूलवरेणासो (भू) | ११०.१७ | तेनाकरोन्महादेव (उ) | १००.११ | तेनास्त्रेणविमानान्- (पा) | ३४.६८ | तेनैवदुःश्रयो (उ) | २१.६ |
| तेनमे वैदिककर्म सर्वं (पा) | ६८.७५ | तेनसख्यं वने तस्मिस्तव (स्व) | ३१.१४ | तेनाज्ञप्तावयंसर्वं (क्रि) | ७.४१ | तेनास्य कंठे नीलत्व (उ) | ६६.१० | तेनैवनरकं यातिन (स्व) | ३१.५८ |
| तेन मे वराधयो दोषाः (भू) | ७२.१८ | तेनसंगप्रसेगेन ममैष (भू) | १४.१६ | तेनाज्ञप्तास्नतः सर्वे (क्रि) | ६.५६ | तेनाहं दुःखिता सख्यो (भू) | ४१.५३ | तेनैवपाप्मनापापिन (उ) | २१०.३१ |
| तेनयायात्सतामार्गम् (स्व) | ५४.२० | तेन सत्येनते गर्वः (सु) | ५.६३ | तेनाज्ञप्तास्ततोद्वता (क्रि) | १०.५५ | तेनाहं दुःखिता सख्यो (भू) | ४१.५६ | तेनैव पुण्यराजन् (उ) | २१६.६६ |
| तेनयोग निधेसाधो (उ) | १६५.४६ | तेन सत्येन मे धर्मवेद (भू) | २.५ | तेनापि कथितं सर्वं (पा) | ११३.३८ | तेनाहं प्रष्टुमिच्छामि (उ) | ६६.२ | तेनैवप्राप्नुयात्प्राज्ञो (सु) | १६.३५ |
| तेनराजा भवेत्लोके (पा) | ६७.८७ | तेन समंत्रयामास- (पा) | ३६.३७ | तेनापिद्वादशाब्दानि (सु) | १६.५२ | तेनाहं भोजितस्तत्र- (सु) | ३४.१७६ | तेनैव मांसिन मुयंस्कृतेन (भू) | १०६.३ |
| तेन राज्यं प्रभुत्वं त्वं (भू) | ७८.५३ | तेन सम्पर्कदोषेण (उ) | ७७.२० | तेनापिनुपचारेण (उ) | २०६.२२ | तेनाहंसहसंगम्यया- (सु) | ४१.१२२ | तेनैव मुक्तानिःश्वासवायु- (सु) | ४.४० |
| तेन राज्ञाकृतं विप्रपुण्यं (भू) | ७५.१० | तेन सम्पूजितस्तत्र (उ) | २४२.२१८ | तेनाप्येकेन पुण्येण (भू) | ११८.३४ | तेनेत्रजाल्लवी चारु तरंग (क्रि) | ६.४ | तेनैव रथवर्षेण वशिष्ठ (भू) | ११६.६ |
| तेनराः पुण्य कर्माणि (उ) | १५८.६ | तेन सम्पूजितस्तत्र (उ) | २४५.६३ | तेनाप्लुतास्ततोदेवा- (सु) | ४४.१२७ | तेनेयं मेदिनीनाम (भू) | २६.७६ | तेनैव राजा धर्मेण (उ) | ४१.६ |
| तेनराः पुण्य भाजोहि- (उ) | १३७.१४ | तेन सम्पूजितस्तत्र (उ) | २४५.६३ | तेनामिमित्रितवारिय- (उ) | १८५.६० | तेनैवकर्मणातुष्टो (क्रि) | १३.१५७ | तेनैव वर्तयत्युग्रामहाकाया (भू) | २६.४६ |
| तेनराभुंजते सौख्यं (उ) | १४४.२६ | तेन सर्वं विप्रस्यामि (भू) | १२३.४६ | तेनाम्बुज प्रदानेन (क्रि) | १३.१५५ | तेनैव कर्मणातुष्टो (क्रि) | ३.२१ | तेनैव शुद्धि रमला (पा) | १००.२६ |
| तेनरामानुजस्तूर्ण- (उ) | २४२.३१२ | तेन सर्वाणि कर्माणि (क्रि) | २५.४८ | तेनाचितं जगत्सर्वं (उ) | ५३.८ | तेनैव कर्मणातुष्टो (क्रि) | २.११ | तेनैव सर्वं पापानि (क्रि) | २०.६४ |
| तेन वज्रं एवैवृत्रं वधि- (सु) | १६.६८ | तेन सर्वाणि दानानि (क्रि) | २०.१६ | तेनाचितोविष्णुबुद्ध- (पा) | ७१.१५ | तेनैव कर्मणातुष्टो (क्रि) | २५.७० | तेनैव सृष्टो ब्रह्मशो- (उ) | २३८.३६ |
| तेन वयं सहस्रेण (उ) | २४२.२ | तेन सर्वोक्तिता देवा (उ) | ३८.७४ | तेनाचितोहंसनानी- (उ) | १२०.२२ | तेनैव कर्मणाराजन्निभो- (क्रि) | ३.४६ | तेनैवाहं कृता भूमो- (भू) | ५२.२८ |
| तेन वेदाः पुराणानि (सु) | ३४.२६५ | तेनसर्वैर्वयुर्दुर्निजिता- (पा) | ४४.५८ | तेनावगाहिताष्ट्वा- (पा) | ६७.१०० | तेनैव च शरीरेण (ब्र) | ३४.१६ | तेनैवाप्रेतसंचाराकीर्ति (उ) | १२२.८६ |
| तेन शक्रः सहसासो (सु) | ४१.२२७ | तेनसर्वैरिहताद्रोणार्थं (पा) | ४४.७७ | तेनाविनाशिताः पेतु (सु) | ४१.२२६ | तेनैवचसहोद्भूतोह्य- (सु) | ४०.१६ | तेनैवोदकपापानेनगतं (उ) | १३४.१२ |
| तेन शब्दे न महता (उ) | २३८.६१ | तेन सांक्रमहर्षं (पा) | ६५.६४ | तेनाविप्रेणाभिमान्य (उ) | १६१.२३ | तेनैवचासुयोगेन (उ) | १५३.१७ | तेनैवा याम्यकाप्रोक्ता (उ) | १२२.६० |
| तेनशब्देन महता (उ) | २४५.१४६ | तनसाध्वगतस्त्वेदं (भू) | ४६.६१ | तेनाष्टलोकपविहार- (पा) | १५.५३ | तेनैवतत्कर्मफलमुज्य (सु) | ६.२२ | तेनोक्तं गच्छभोब्रह्मन् (ब्र) | ७.३७ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| तेनोक्तं नारदाया-(पा) | ८३.११० | तेपियाति पदं विष्णो (उ) | १८५.८३ | ते प्राप्नुवन्ति सततं (उ) | २२६.११७ | तेभ्यो बलात्समादातुं (उ) | २२२.४८ | तेलभते सुरभ्रंशोर्वे (उ) | १६१.१७ |
| तेनोक्तं ममदेशे (उ) | १३५.६७ | तेपियास्येवनिरयं-(उ) | २५३.११५ | ते प्रेतावुष्टरूपाश्च-(उ) | १३६.१७ | तेभ्योमीतुर्वैतितव्यं (सु) | ३१.४४ | ते वचक्तेणचिच्छे-(उ) | १८.१०० |
| तेनोक्तंमात्रजासुतं (पा) | १४.३८ | तेपियास्यतिभो देवि (उ) | ८७.७ | ते बाणवर्षं विहृतारण-(पा) | ६२.३७ | तेभ्यो यद् द्रवनेतोय (सु) | ४०.६ | तेवध्यमानावलिभिर्दानवै-(सु) | ४१.५६ |
| तेनोक्तं वचनश्रुत्वा (क्रि) | ५.३६ | तेपियुगसहस्राणि (उ) | ६४.८१ | तेबाणाः पपुरेतस्यरुधिर (पा) | २७.२७ | तेमाद्रुवन्तिवैनित्य (उ) | ५१.१३ | तेवध्यमानाविमुखा-(सु) | ४०.१२४ |
| तेनोक्तोहि सविप्रेन्द्र (भू) | १६.४३ | तेपिवृद्धामहाभागा (स्व) | ५०.११ | तेबाणाः पुष्कलस्या-(पा) | ५१.३५ | तेमूर्खान्पुष्कलात्मानः (स्व) | ५०.३४ | तेवध्यमानास्त्रिदशस्त-(सु) | १६.६८ |
| तेनोदकेन सिकतास्मि (भू) | ५२.२६ | तेपिश्रुत्वा महाभागा (उ) | २१२.३२ | तेबाणाः राजपुत्रस्यललाटे (पा) | २३.६० | तेमूर्च्छीतत्यकुण्डाट-(पा) | ५३.२६ | तेवध्यमानास्त्रिदशस्त-(सु) | १६.१७४ |
| तेनोपःप्लोऽसौ विप्रो (क्रि) | १७.५७ | तेपि सर्वे व संजीह-(उ) | २४.२२ | ते बाणाव्योमस-(पा) | ६२.१८ | तेमृतायानमाकूढाः (सु) | ३२.१०३ | तेवध्यमानास्त्रिदशस्त-(सु) | १६.१७३ |
| तेनापवासेन च जागरेण (उ) | १४४.४७ | तेपि स्वर्गं गमिष्यति (सु) | ३२.१५४ | ते बाणाः शतचाच्छिन्नाः-(पा) | ५१.३६ | तेमृताः स्वर्गमयाति (स्व) | १८.३६ | ते विज्ञेयादानवांशा (क्रि) | १.३५ |
| तेनौपधीशः सोमोभूद्विजे (सु) | १२.१३ | तेपि स्वर्गं हि गच्छं (उ) | १४६.१० | ते बाणाः शतशस्तस्य-(पा) | ३४.६६ | ते मृताः स्वर्गमासाद्य-सु | १८.४६२ | तेविकीर्णं प्रमुच्यं (उ) | १३७.६ |
| तेनौपधेनतस्यास्त-(उ) | २१४.७३ | ते पूजयति भूतेषां (स्व) | ५७.४३ | ते बाणाः शतशोमुक्ताः (पा) | ४५.५१ | ते मृत्युसमनुप्राप्य (उ) | ७५.६ | तेविनस्त्व्यात्ताः कार्या-(सु) | ६.६० |
| तेन्योऽयनाम्बुधृतं (सु) | ४१.६२ | ते पूजितामहात्मानः (उ) | ८१.१० | ते बाणास्तस्य बाणा-(पा) | ५१.३७ | ते यांते तत्परं स्थानम् (स्व) | ३६.१० | तेविनष्टानसंदेशो (उ) | ३७.२६ |
| तेन्योऽयंसमादितां (उ) | ६७.१६ | ते पूताः पुण्य कर्माणाः-(सु) | १७.२६३ | ते बाणास्तुप्रतापाय्य (पा) | २३.६३ | ते यातिनरकं घोरतेन-(पा) | ६६.६४ | ते विमानाः यारूढ-(उ) | १८५.६६ |
| ते पंचापिचभूपाल (पा) | ८७.१० | ते पूर्वतपसादाधामुनिभि (सु) | १६.१७५ | ते बाणास्त्वोपतापाय्य (पा) | २४.२६ | ते याति नरकान्घोरात् (स्व) | ५०.२३ | ते वीरभयसंश्रान्तमय-(सु) | ४१.१८४ |
| ते परिग्रहिणः सर्वे-(सु) | ३.७५ | ते पृष्टामुनिवयैरेण गम-(पा) | ३७.१ | ते बाणाहृदि तस्याशुलना (पा) | ३४.१८ | ते याति परमं लोकं (भू) | ५०.२६ | ते वृत्रं निहतं दृष्ट्वा (सु) | १६.१३२ |
| तेपापिनः पंचयदेव (पा) | ६४.१२२ | ते प्रणम्य महात्मा (उ) | २४४.५७ | तेभाजकाः स्मृतायस्मा (सु) | १३.३४ | ते याति परमं विष्णोः (व्र) | १५.२५ | तेवैपः स्मृतं व-(पा) | ५५.७७ |
| तेपि गच्छति वैकुण्ठे (भू) | ६६.२२ | ते प्रहृष्टरामकथा (पा) | ५५.२० | तेभिन्नम्यमहात्मानं (सु) | १६.१३७ | ते याति परमं स्थानं (भू) | ७१.१६ | तेवैपः कृतलोके (उ) | २२८.६६ |
| तेपितदारोदमानाः (उ) | १३६.१५ | ते प्रवृत्ताश्चमुनिना-(पा) | ५६.५३ | तेभ्यस्तुदक्षिणां (उ) | ३०.४० | ते रात्रीममभिरूढा (सु) | १६.१०५ | ते वैलंकास्तदाज्ञेया (उ) | ७८.७ |
| तेपितृणं वृषप्रसाद (उ) | २४०.१५ | ते प्रविश्यादधिधोर-(सु) | १६.१३३ | तेभ्यस्तुपटोददीहारा-(पा) | १२.३३ | ते रुद्रतोद्वंशतश्मगन्व-(सु) | ४०.८२ | ते वैलोम्यभ्यन्तमा जाना (उ) | ६८.१० |
| तेपितृनैव मार्गेण (सु) | ६.११ | ते प्रसादास्तस्य तेषु (भू) | ८३.६४ | तेभ्यो जज्ञं महानंद भू | ७७.७५ | ते रुद्रलोकमासाद्य (सु) | १४.१६७ | ते वै विष्णुममाश्चैव (उ) | ६८.१४ |
| तेपिप्रयागजंतीर्थं (उ) | २४.२१ | ते प्रहृष्टाभयंयश्चत्वा (पा) | ४५.१७ | तेभ्योपरिमर्तमुण्यं (उ) | २०७.५५ | तेरूपमिष्टममजमिद्र-(सु) | ५८.१४ | ते वै शत्रुघ्न वीराणां-(पा) | ३४.७१ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|--------|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|
| ते वै समासते युवतास्तं (उ) | २५०.६१ | तेषां तदैश्वरं ज्ञानम् (स्व) | ३६.७ | तेषां नामापि भद्रेत्वं (भू) | ५३.६८ | तेषां मध्ये महाकाश (पा) | ११४.८५ | तेषां विज्ञापयामास (उ) | २५५.८६ |
| ते शराहृदयमिच्छा (पा) | ४२.७२ | तेषां तद्वचनं श्रुत्वा (भू) | ७६.२५ | तेषां नाम्नाच्चाहात्म्यं (उ) | ७१.३२ | तेषां मध्ये सुतो ज्येष्ठः (भू) | ४५.६ | तेषां विदार्माणाकां- (सु) | ४६.७६ |
| ते शरैः पीडयमानास्तु (पा) | ६१.११ | तेषां तु केतवः युक्ला (भू) | ८३.२१ | तेषां निदाप्रकृर्वति (उ) | ८२.६ | तेषां मध्ये सूपविष्ठः (क्रि) | २३.८ | तेषां विववदनां तत्र (उ) | २५५.१८ |
| तेषां कर्त्ताविकर्त्ता (उ) | ४३.२ | तेषां तु दिविदैत्यानां (सु) | ४१.१४२ | तेषां निरय युवतानां (उ) | २२.७ | तेषां मन्वु प्रशांत्यर्थं (स्व) | २५.२८ | तेषां विष्णु पदं (उ) | २३.३२ |
| तेषां कायेष्व संतुष्टो (भू) | ३६.६२ | तेषां तु ममचित्तानां (पा) | ११३.८ | तेषां निरीक्ष्यतत्कर्मचक्रे (सु) | १७.३८ | तेषां महिमानुभोगे- (उ) | १५१.१६ | तेषां त्रिष्णु पूरय (त्र) | १५.२४ |
| तेषां किंवाभविष्यति (ब्र) | २.३६ | तेषां तु वचनं श्रुत्वा (उ) | २४५.६० | तेषां नैव प्रजानानि (भू) | ६०.१३ | तेषां माता समायाता (भू) | ३.४७ | तेषां वेगवतां वेग सहिता (सु) | १६.८८ |
| तेषां केशवदूतानां (क्रि) | ७.७३ | तेषां तु संभवेत्सौख्यं (भू) | ६६.२७ | तेषां न्यासंनधांगेषु (सु) | ४६.१५८ | तेषां मंतरविष्कर्मोद्विगुणः (स्व) | ६.१२ | तेषां व्रतानि वक्ष्यामि (पा) | ८४.४२ |
| तेषां गेहेसदातिष्ठ (ब्र) | ६.१६ | तेषां तेषां स्नेहभूमि (क्रि) | ८.६५ | तेषां पाणी च यद्वृत्तम् (स्व) | ६१.५३ | तेषां यथाभवेत्कर्म (क्रि) | २६.४६ | तेषां व्याधि प्रशमनं (उ) | १३५.६० |
| तेषां क्रीडाविहारोऽर्थं (भू) | १२०.२३ | तेषां तेषां वरदादेविभव- (सु) | ३१.१४५ | तेषां पापशतैर्दोषे (उ) | ३४.२७ | तेषां यथाभवेत्कर्म (क्रि) | २६.४६ | तेषां शासनहेत्वर्थं कृता (भू) | ५०.३८ |
| तेषां ग्रामान्मुदेशश्च (भू) | ७८.४० | तेषां दत्त्वायतामूलं (पा) | ११७.२०० | तेषां पापात्मनामूचुः (क्रि) | २३.१२१ | तेषां यावन्ति पापानि (क्रि) | २३.११५ | तेषां शिरसिमुह्यन्ते (स्व) | १८.६ |
| तेषां च दर्शनं राजन् (भू) | ८२.६ | तेषां ददाम्यहं सर्वं (पा) | ६६.१७ | तेषां पितृगुणास्सर्व- (सु) | २२.४७ | तेषां येयानिकर्माणि- (सु) | ३.११८ | तेषां श्रुत्वा ततो वाक्यं (उ) | ३६.२५ |
| तेषां च पश्यतांकिचित् (सु) | ३०.२१ | तेषां ददाम्येक्षणदेव (उ) | २३६.२२ | तेषां पुण्यं न जानन्ति (उ) | १३१.१२ | तेषां रणोद्यमंवीक्ष्य- (पा) | ५२.४१ | तेषां सग प्रसंगेन जरा (भू) | ८१.६७ |
| तेषां च माता पितरा (उ) | १.२० | तेषां दर्शनमात्रेण (उ) | ६८.१८ | तेषां पुण्यकृतां मालां (भू) | ११८.२६ | तेषां रोगं तथा दोषं (उ) | १५१.१५ | तेषां संहरणोद्भूतः (सु) | ३६.६० |
| तेषां च वर्तनादीनि (क्रि) | २.२४ | तेषां दर्शनमात्रेण ब्रह्म (उ) | १३१.११ | तेषां पूजायमः श्रुत्वा (क्रि) | २०.६६ | तेषां ललाटे सततं (ब्र) | २१.१४ | तेषां सत्येन पुण्येन सर्वं (भू) | २६.४३ |
| तेषां चिह्नं प्रवक्ष्यामि- (भू) | ४०.६ | तेषां दर्शनमात्रेण भवत्या (उ) | १३१.२६ | तेषां प्रसन्नो धर्मात्मा (भू) | ६.१३ | तेषां वचनं श्रुत्वा सर्वं (ब्र) | ७.२५ | तेषां समक्षं सर्वेषां (सु) | ३८.७२ |
| तेषां चैवतु माहात्म्यं (उ) | १.४० | तेषां दर्शनमात्रेण (पा) | ८६.१७ | तेषां वलं च बुद्धिश्च (स्व) | १५.१४ | तेषां वचनमाकर्ण्य (पा) | ४०.७ | तेषां समुपविष्टानां (उ) | २५५.१४ |
| तेषां चैवतुर्धैरवितः (उ) | ६४.५६ | तेषां धनं च पुत्राश्च (सु) | १७.७४ | तेषां मतमधिष्ठाय (उ) | २३५.३४ | तेषां वदन्ति विप्र- (सु) | १५.२५५ | तेषां सर्वेषामर्जुन (उ) | २५२.६१ |
| तेषां जन्म दृष्टालोके (पा) | ८६.२५ | तेषां धार्तराष्ट्र पांडु (उ) | २५२.४० | तेषां मध्ये तुज्ये (उ) | ४०.१७ | तेषां वंशे तुयेजाताये (उ) | ६१.६५ | तेषां सविचरन्मध्ये (उ) | ४१.३० |
| तेषां तत्परमंज्ञानं ददाभ्यते (स्व) | ३३.३२ | तेषां नामानि वक्ष्यामि (भू) | ६४.१२ | तेषां मध्येतुष्टः (उ) | ३७.३६ | तेषां वारक्षणां कुयदि- (उ) | ११५.१८ | तेषां सहायः संभूतो (भू) | १०.२२ |
| तेषां तत्परमं स्थानं (सु) | ३.१६० | तेषां नामानि विप्रेन्द्र (क्रि) | १३.१६६ | तेषां मध्येतं यत्तु- (सु) | ४०.१३ | तेषां वासुदेवः प्रहसन् (उ) | २५२.८ | तेषां सावाह्मलात्पूता- (उ) | १२२.८३ |



| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| तेषामग्नेराम कथाः (पा) | ३६.८२ | तेषामेताह सर्वेषां (भू) | २८.५ | ते सर्वेवरनिमुक्ता (उ) | २५०.३५ | ते हि सर्वे प्रपद्यन्ति (सु) | १६.२२४ | तेरेवसुगान् हत्वा (उ) | २४६.४७ |
| तेषां स्वर्गोहिवासाथ (त्र) | १५.३६ | तेषां राक्षसपीडानां (पा) | १०७.८६ | ते सर्वे तु समालोच्य (भू) | ३.४३ | ते हृष्टास्तत्रवसन्ति (पा) | ३७.२६ | तेर्गत्वाविश्वामसर्वे- (सु) | ५.६८ |
| तेषां हिदुरितयच्च (उ) | १५४.६७ | तेष्विच्छकृस्तदागतयेभ्यो (सु) | १६.१०६ | ते सर्वेपात्रकौशरे (क्रि) | २६.५१ | तेहेमकचामूत्वा (सु) | १६.८७ | तेर्वाणि कचचामुक्तं (पा) | ५२.६२ |
| तेषां हि हस्तामगरादां (भू) | ४२.२२ | तेषु कश्चिद्विजश्रेष्ठो (उ) | २१८.५१ | ते सर्वे पापनिमुक्ता (उ) | २३८.१५५ | तेहे मःष्काभगणाः (सु) | १६.१७६ | तेर्वणिः क्षत्रमात्रस्तु (पा) | ४३.२५ |
| तेषां मग्नेराम कथाः (पा) | ३६.८२ | तेषु कार्येषु संतुष्टं (पा) | ६७.३५ | ते मग्नेरामयुक्तो (पा) | ३०.७७ | तैत्र संवैगमादाय (स्व) | ५२.३२ | तेर्वणिर्व्यधितोवीरः (पा) | ५१.३६ |
| तेषामन्तेसरोजभः (सु) | ४२.७२ | तेषुक्षीणेषु भूतानां (उ) | २०६.५१ | ते सर्वेबाहूभिर्व्यपितान (सु) | ४१.२६१ | तैत्र सप्त्युपूर्वेण क्रूर (स्व) | २७.५६ | तेर्वणिर्व्यधितो (पा) | ४२.३६ |
| तेषामपचितिकृतुः (सु) | ४२.६ | तेषुगत्वा दशरथं (सु) | ३३.५५ | ते सर्वेमुक्तिमायां (उ) | ३४.८३ | तैत्रसं हं जगच्चेष्टा (भू) | ३६.२२ | तेर्वणि शग्जालं (पा) | ४२.६५ |
| तेषामप्यध्ययो भीम (सु) | १५.२३७ | तेषुदत्तं वृत्तं हन्ते (सु) | ६.१०४ | ते सर्वे मुक्तिमायां (उ) | ३५.२३ | तैः पंचरश्मिपक्षो- क्रि | २२.५६ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामभिमुखोराम (पा) | ११७.१६७ | तेषुविड प्रदानेन (सु) | ३३.५७ | ते सर्वे वसुदेवोपसेना (उ) | २५२.८८ | तैः परस्परमेवोक्तं (पा) | ३८.१२ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामभ्युपसर्गसो- (भू) | २६.५२ | तेषु यागमितं येन (उ) | ६१.१ | ते सर्वे विलयं यातु (उ) | ७८.५२ | तैः प्रोक्तं तु महातीर्थं (भू) | ६०.३८ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामन्तकारमयं रजतं (उ) | २१७.१० | तेषु सर्वेदृश्यते (उ) | १३२.६७ | ते सर्वे समवर्तयते (सु) | ३.६६५ | तैरप्यप्येतेनैश्च- (सु) | १३.३५८ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषां बलं राजकन्या (उ) | २७७.१४ | तेषु सर्वे भवति (सु) | १८.६८८ | ते सर्वे स्त्रीत्वगत्वा (पा) | ४७.२५ | तैरग्नौ यमानस्तु मार्गं (उ) | २१०.२८ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामह धर्मसार्ग (भू) | १२२.१४ | तेषु स्नात्वा दिवं याति (स्व) | ५५.३२ | ते सर्वे स्त्रीत्वगत्वा (पा) | २४५.१६५ | तैरान दः समस्ता (उ) | २०१.५६ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषां मां कर्णवचन (पा) | १०५.३ | तेषु पृथगुच्य राजेन्द्र (स्व) | ३८.१० | ते सर्वे स्त्रीत्वगत्वा (पा) | २४५.१६५ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सदा वृष्णवाराजन् (उ) | ५३.६ | ते सर्वे हिमचोलस्य (सु) | ४३.४०६ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सप्त सन्ति मुखाहरणे (सु) | ४६.६१ | ते साधवः शांतरागाः (पा) | १६.१५ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः सारथे- (सु) | १८.५३१ | तेर्वणिश्चिन्तनहस्तः (पा) | ३४.७६ |
| तेषामाद्याः श्रेष्ठा (स्व) | ५१.३६ | ते सर्वे कामानाप्स्यन्ति (सु) | ४३.८० | ते सुख प्रीति बहुला (सु) | ३.६७ | तैराप्य जन्मनः स | | | |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| तैश्वरैः शुशुभेन्द्रो (उ) | १८.७८ | तोरणैः सुपताकामिनानां (भू) | ८३.५८ | तोप्राप्तावूचतुस्तत्र- (सृ) | ४०.५२ | त्यक्त्वानिजाश्रमाचारं (क्रि) | २०.६० | त्यजन्तियेव वै प्राणा- (उ) | २११.२१ |
| तैश्चदत्तं सुसंपुष्टम- (भू) | ८५.४४ | तोपणीयाः प्रयत्नेन (उ) | ५१.४६ | तो मुनीविधिवत्स्नात्वा (उ) | १६६.७ | त्यक्त्वापतीन्सुता (उ) | २४५.१७० | त्यजति सुकलत्रयेने- (पा) | ६६.६६ |
| तौश्चित्यमानासादेवो (उ) | २३८.१२६ | तोपमेध्यति लोकाश्च (उ) | १६८.११० | तोमृतीसैनिकै- (उ) | १२६.७१ | त्यक्त्वाप्रणान् (उ) | २४६.७१ | त्यजति स्वामिमंयुद्धैः- (उ) | १२६.८६ |
| तैः सहितं शरीरहि (स्व) | ६१.२४ | तोषयामासपुत्रैस्सपितृन् (सृ) | ३७.१३ | तोरामलक्ष्मणो- (उ) | २४२.११६ | त्यक्त्वाबन्धुजनं सर्वं (उ) | १२७.१२३ | त्यजपाखंडं मसर्गं (क्रि) | १७.६७ |
| तैः सार्धं सुमहाराज (भू) | ६२.१७ | तोषयामासमेधावी (सृ) | १.१२ | तौर्ध्वत्रिककुत्तोनार्यं (पा) | ११४.२१ | त्यक्त्वाभवंतमखिलेस्वर (क्रि) | १६.३१ | त्यजशोकमिमं तस्मादा- (पा) | ११०.२१ |
| तैस्तु वद्धा महाभागे (भू) | ५२.१६ | तोषयामोश्चरीमित्ययं (सृ) | ४३.४६२ | तोहस्तोजाह्नवीतीरे (क्रि) | ६.५ | त्यक्त्वामिपादिकं ब्रह्मन् (ब्र) | २०.३ | त्यजशोकं मुदुःखार्तः (पा) | २८.१६ |
| तैस्तु यज्ञा कृताः सर्वे (क्रि) | २२.६१ | तो गृहीत्वा धनकिंचिद् (उ) | २१६.३८ | त्यक्तपुरंगतं राज्यं (उ) | १५.५७ | त्यक्त्वायमपुरंधोरं (उ) | २२४.३२ | त्यजामि वंकृत रूपं (भू) | ५.२ |
| तैस्तरूपायैर्भूयिष्ठानि- (सृ) | १३.२११ | तो गृहीत्वा जनानान्यान् (उ) | २१७.२१ | त्यक्तक्रियैः प्रियारण्यैः (उ) | १२६.४३ | त्यक्त्वावैकुण्ठनाथं (उ) | १३२.६८ | त्यजामीदवपुः श्रमल्लोकं (पा) | ५८.२४ |
| तैस्तेभ्योर्मयावस्था- (उ) | २५२.११५ | तो चतथाभूतौ शिव (पा) | ११७.२१७ | त्यक्तदानफलाये च- (पा) | ६६.८६ | त्यक्त्वाशिवगणः (उ) | १२.२३ | त्यजामिदवपुः श्रमल्लोकं (पा) | ५८.२४ |
| तैस्तेभ्योर्मनोः कूलैश्च (सृ) | १३.२५६ | तो ततथा चक्षुतु विष्णुं (उ) | ११०.१३ | त्यक्तपक्षितिरात्रचक्रं (पा) | २१.२४ | त्यक्त्वासंग्रामभूमिं (उ) | १००.३१ | त्यजा विवेकतां सर्पं (क्रि) | ६.११२ |
| तैस्तेभ्योर्ददात्येव (भू) | २६.७३ | तो तुक्षेय प्रभावेण (उ) | ८८.४१ | त्यक्तभग्न जरासंधो (उ) | ७१.२५५ | त्यक्त्वासंतुल्यं तूर्ण- (उ) | २४१.१३१ | त्यज्यसौतवैभक्तान्- (पा) | २१.१६ |
| तैस्त्वंसंभूषिता बाले (भू) | ३४.३४ | तो दयतीकृतार्थो तु (सृ) | ४२.५० | त्यक्तयपिमयातेन- (पा) | ६६.६६ | त्यक्त्वा सुखं बलपीरुवं (भू) | ४२.१६ | त्यागः सउत्तमो ज्यो- (उ) | १३२.१३६ |
| तो चोत्पायात्रवीतत्र- (उ) | २३७.६ | तो दंपतीतनोयातो (पा) | ६१.७ | त्यक्त्वाध्ययनसंयोगं (सृ) | ३०.२६ | त्यक्त्वा त्रैलोक्यं (उ) | १२८.५६ | त्यागेमतिचकागसो (भू) | ५१.३२ |
| तोययेपि वंतिनरा (स्व) | ३१.१४० | तो दंपतीमहात्मानो (क्रि) | २३.१६ | त्यक्तोपपतिभिर्दृष्टा- (उ) | २१३.४० | त्यक्त्वामीतिदृष्टं (क्रि) | ६.११५ | त्यागोऽसौमव्यमो- (उ) | १३२.१३५ |
| तोयदाबद्धवसनाग्रहं (सृ) | ४१.१६६ | तो दंपतीसुतसमग्रं (पा) | ६१.१२ | त्यक्तोयथांश्चुष्मा- (सृ) | १३.३०८ | त्यजचितां महाराज न (भू) | ८२.८ | त्याज्यः सदेशः सहस्रानाति (क्रि) | २.३१ |
| तोयधारा तुसाभीष्टम (सृ) | ३०.१८० | तो दृष्ट्वा विह्वलातीव (उ) | १०३.६ | त्यक्तोहं बंधवैः (उ) | ४०.२२ | त्यजतः संचयान्सर्वान् (सृ) | १६.२४२ | त्याज्यानि तेन वैतानि- (सृ) | १३.३६० |
| तोय पूर्वतदादत्तं (सृ) | ३०.१७१ | तो दृष्ट्वा सस्मरद्वृती (उ) | १५.२ | त्यक्त्वाकांतं ब्रजेनारी (भू) | ५०.३२ | त्यजदुःखं महावीरं (क्रि) | ५.५६ | त्यजेद्भजांलिकाविद्यांकां- (स्व) | २२.५० |
| तोयादिरसरूपेण (उ) | २२७.२० | तोपस्वरविद्वेयोऽस्तुष- (सृ) | ३७.७० | त्यक्त्वागृहमगावत्र (उ) | २०४.३६ | त्यजदेहं मिमं विप्रं (उ) | २१४.६६ | त्रपाकरं भवेन मल्लं- (सृ) | २०.१६७ |
| तोयान्तरस्समहीजात्वा (सृ) | ३.२८ | तोपाशशीतांशुधरो- (सृ) | ४१.१३६ | त्यक्त्वाधनं च चौरपि (ब्र) | २.२० | त्यजन्ति तृणवत्प्राणांस्तं (ब्र) | १२.४० | त्रपाकरं यद्भवति (सृ) | ३१.११५ |





श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२०६

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| अपाकराश्रुधीणां (सु) | १४.१८१ | त्रयोदशीलोकामस्य (उ) | ८६.१६ | त्राहि त्राहि प्रिये (क्रि) | ५.१७३ | त्रिणाचिकेतस्त्रिमघुः (सु) | ६.८० | त्रिशत्पूर्वाङ्गपरं-(पा) | ६८.१२४ |
| अपाकरोमवेन्मह्यं-(सु) | ५.४२ | त्रयोदश्या अमावास्यां (पा) | ३६.४५ | त्राहि त्राहीतिजल्पं (क्रि) | २३.१६३ | त्रितत्वाय नमस्तुभ्यं (भू) | ३२.४६ | त्रिशत्प्रभेदभक्ष्यं (पा) | ११४.१६८ |
| अपान्वितः कपालं- (सु) | १४.१६६ | त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां (पा) | ६८.१६ | त्राहि त्राहीतिदेवेशं (उ) | ६.३४ | त्रितनुर्नंदवद्यस्तुसृष्टि-(उ) | १२८.२४५ | त्रिशंहितानितम्नीतं-(उ) | २१०.४४ |
| अपान्वितोविष्णु रुद्रो (सु) | १७.१२० | त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां (पा) | ६८.३३ | त्राहि त्राहीतिमांविष्णो-(सु) | १४.८ | त्रिदशानां वचः श्रुत्वा-(सु) | १६.१५७ | त्रिशद्गुर्माहीदेशे-(उ) | २००.७७ |
| अपामे त्रायते तातकथ्य-(सु) | ३२.३७ | त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां (पा) | ६८.३६ | त्राहिनस्तीक्ष्णं दंष्ट्राणां (सु) | ३१.२० | त्रिदशानां वचः श्रुत्वा (सु) | १६.१६० | त्रिशद्योजनविस्तीर्णां (उ) | २४६.४० |
| अपुहारीचपुरुषोजाय-(पा) | ४७.५० | त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां (पा) | ६८.१०५ | त्राहिनस्त्वेनसस्त-(पा) | ६५.१६ | त्रिदशानां हरिरिव-(उ) | २४५.३६५ | त्रिशङ्गाब्जसाहस्रं-(उ) | १२.५५ |
| अयः कालकृताः पाशाः (भू) | ८१.३६ | त्रयोदश्यां तथा देवि-(उ) | २३४.१६ | त्राहिनो देवश्चेश्वरः (उ) | ३८.६१ | त्रिदशैः सहितो देवो (उ) | ३८.७३ | त्रिश न्मताननेकान्-(उ) | ६५.१७ |
| अयाणां पतयः स्याम-(उ) | २४५.२०६ | त्रयोदश्यां त्रिपूर्वास्ति-(सु) | २.१७ | त्राहि मां शरणं प्राप्न-(भू) | १२७.११३ | त्रिदशैः सहितो यत्र-(उ) | ३८.५७ | त्रिषत्रमथवाक्युयाद्-(पा) | ११४.४२ |
| अयाणामपि चैतेषाम् (स्व) | ५६.६ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | १६.३१ | त्राहि मां शरणं प्राप्न-(भू) | ८१.७४ | त्रिदशोदारफलदं स्वर्ग-(सु) | ४०.१३८ | त्रिषाद्विग्रहे धर्मोऽर्धः-(सु) | ४१.१६४ |
| अयाणां मंतरं नास्ति (भू) | ७१.२२ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | ६२.७७ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं ज्वलनस्थि-(पा) | १०८.४६ | त्रिषाद्रि भूतिरूपं (उ) | २२७.५८ |
| अयाणामपि देवानां (पा) | ६८.४० | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | ४१.३१२ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयाणामपिलोकानां (उ) | ७६.१० | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | २४१.६५ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयाणामपिलोकानां (स्व) | २७.६२ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | २४५.७६ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयाणामपिलोकानां (उ) | ८०.८४ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | २४५.११७ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयोधर्मविरोधः पूर्व-(उ) | २१६.८२ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | २३१.२१ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयोधर्मसमुत्पन्नः-(सु) | १३.३५७ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | १४.१० | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयोधर्मसिद्धिर्लाले (उ) | १६७.६८ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | २३८.८८ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयोधर्मसंश्लेषं तत्र (पा) | ६६.४६ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | ४३.४० | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयोधर्म शालिशिराः (सु) | १८.१५ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | ८२.११ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |
| अयोधर्म शालिशिराः (उ) | २००.३४ | त्रयोदश्यां त्रयोदश्यां (सु) | ३०.४६ | त्रिकालं च जपेन्नर्थो (भू) | ८७.२७ | त्रिदिनं प्रहस्तस्य नीले (पा) | ३६.५२ | त्रिषाद्रि भूते लोकास्तु-(उ) | २२८.१ |

| | | | | |
|---|--|--|---|---|
| त्रिप्रदक्षिणामगत्य (पा) १०६.६० | त्रिरात्र मुषितस्तत्र (स्व) ३६.२७ | त्रिविधोदर्शनोपायो- (सु) १५.६२ | त्रिः सप्ताहवर्गैः कृच्छ्रैः (उ) १२५.६५ | त्रेताद्वापरमधीच (क्रि) ६.७६ |
| त्रिः प्राश्रीयाद्यदंभः (स्व) ५२.२४ | त्रिगत्रमुषितो भूत्वा (उ) १३६.४ | त्रिविधोयमहंकारामहत् (स्व) २.८ | त्रिः स्नातापाटलाद्वारा (सु) ४३.२६८ | त्रेतायामासमात्रेण (भू) ६६.२४ |
| त्रिभंगललितपद्मरु- (उ) १६६.३ | त्रिरात्रमुषितस्तत्र (उ) २०८.३८ | त्रिविधोयमहंकारो- (सु) २.६१ | त्रिस्पृश्याख्यं द्रव्यं (उ) ३४.१ | त्रेतायुगे पुनः प्राप्ते ब्रह्म- (सु) ३५.४६ |
| त्रिभंगो मंजुसुस्निग्धं (पा) ७०.३ | त्रिरात्रेण समप्रोक्तं (उ) ६४.४३ | त्रिविधसोभोग्यमणी- (सु) २६.१३ | त्रिस्पृश्यायैकरिष्यति (उ) ३४.११ | त्रेतायुगे भिरामो भो- (पा) १०४.१६३ |
| त्रिभिर्ध्वजप्रचिच्छेद स (भू) ११५.३० | त्रिरात्रोपोषितश्चैव भवे- (स्व) २७.७१ | त्रिविष्टपसमप्रख्यं दशोक्त्या (सु) १६.७५ | त्रिस्पृशावजुली चान्या (भू) ८७.२ | त्रेतायुगे भक्तितीर्थकृतं (उ) १४३.७ |
| त्रिभिर्नैत्रैः कृतोद्घोत- (स्व) ३.४४ | त्रिरात्रोपोषितः स्नात्वा (स्व) २७.४२ | त्रिविष्टपेनरः स्नात्वा- (उ) १३.२ | त्रिस्पृशावजुलीचैः पक्ष (पा) ६६.१०६ | त्रेतायुगे भक्तिविरुपातो (उ) १५१.१६ |
| त्रिभिर्भरिः कनिष्ठः (सु) २१.१३६ | त्रिरात्रो पोषितः स्ना- (स्व) ३६.३५ | त्रिशीघोनवहस्त- (उ) १२.२७ | त्रिस्पृशासालुविजये (उ) ३४.४८ | त्रैलोक्यं दक्षिणातेन (सु) १२.२२ |
| त्रिभिर्मार्गैः प्रजायते (भू) ६६.३३ | त्रिरात्रोपोषितोदद्यात्- (सु) २०.१२६ | त्रिशूलं डमरू खड्ग (पा) १०.७३ | त्रिहन्मन्त्रपुगीष्वै- (उ) २५३.१०३ | त्रैलोक्यं पश्यते सर्वं (पा) ८४.८६ |
| त्रिभिः सपिंडीकरण- (सु) १०.३३ | त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा- (सु) १६.३६५ | त्रिशूलपाणयः सर्वे (पा) ११०.४८ | त्रीणि चाप्यभिनकुंडानि (स्व) ४७.४ | त्रैलोक्यं पश्यते सर्वं (भू) ८६.७२ |
| त्रिभिः सारस्वतं तोय (स्व) १३.७ | त्रिरात्रोपोषितो राजन्- (स्व) १२.५ | त्रिशूलपाणेः स्थानं (स्व) २५.१० | त्रीणि वर्षसहस्राणि (भू) ६१.२६ | त्रैलोक्यं पालयन्- (सु) ४.१११ |
| त्रिभुवनाभिराम तया- (पा) ११६.४५ | त्रिजं पितृतातुगायत्री- (पा) ११७.१२३ | त्रिशूलपात्रतत्रैव तीर्थ- (स्व) २८.१२ | त्रीणि वर्षपवित्रं स रुध्य (पा) १२.६७ | त्रैलोक्यं पालयदेवी (उ) २३२.५७ |
| त्रिभुवनेषु च देवेषु (उ) ३८.६८ | त्रिलोकीयं समस्तं तु (भू) ६३.१६ | त्रिशूलां कानि पद्यानि- (स्व) २४.१७ | त्रीणि शृगाणि शुभ्राणि (स्व) ११.३५ | त्रैलोक्यं पालयामास (स्व) ३६.१२२ |
| त्रिमासे निगते चाय (उ) १६६.६७ | त्रिलोकी राज्यतः (उ) २०५.२१ | त्रिशूलेन चकतं शुशिरा (पा) ४३.३८ | त्रीणि द्रुस्तसहस्राणि (उ) ११६.७ | त्रैलोक्यमहर्दश्वयं (उ) २४०.६० |
| त्रियायुषा विहीनं (पा) १०५.१६८ | त्रिवर्गसेवी सततं (स्व) ५४.२३ | त्रिश्रृंगः पर्वतश्चैष्ठः (सु) ४५.१७८ | त्रीण्याहुरनिदान (उ) ३२.१८ | त्रैलोक्यमवशामनीय (सु) ३०.१२ |
| त्रियुगं तु सहस्रेण गायत्री (सु) ६४.१६५ | त्रिविक्रमवपुर्मे- (उ) १८५.१३ | त्रिपुकां लेपुर्गंगा (उ) २०४.३५ | त्रीण्याहुरनिदान (उ) ३२.४० | त्रैलोक्यमोदितदेवि (पा) ६६.५८ |
| त्रियुगे वत्संते लिग (उ) १५४.५७ | त्रिविक्रमवपुषो- (उ) २४०.३० | त्रिपुकां लेपुर्गंगा (पा) ६७.२६ | त्रीन्लोकान् पञ्चचैकवायो (सु) ३२.४० | त्रैलोक्यमोदितदेवि (उ) ६४.८६ |
| त्रिरात्रं कार्येद्यस्तु (स्व) १८.४ | त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा (उ) २५४.३६ | त्रिपुल्लोकेषु विख्यातः (सु) ४४.१३५ | त्रीन्लोकान् पञ्चचैकवायो (उ) ३४.२६ | त्रैलोक्यमोदितदेवि (क्र) ४.१०३ |
| त्रिरात्रं तत्र स्थित्य (पा) १४.७ | त्रिविक्रमाय रामाय (उ) ७८.३७ | त्रिषट्पञ्चयुगदापत्य (सु) २०.१२७ | त्रीणि हस्तसहस्राणि (उ) ११६.७ | त्रैलोक्यमोदितदेवि (सु) १७.३३३ |
| त्रिरात्रमपि विप्र (पा) ६६.१२२ | त्रिविक्रमो वसेद्यस्यां सर्व- (पा) १७.७४ | त्रिषट्पञ्चयुगदापत्य (पा) ६८.११ | त्रुटते भोजनं कठो (भू) ६६.१४४ | त्रैलोक्यमोदितदेवि (सु) ३०.६६ |
| त्रिरात्रमुषितः तत्र तर्पयेत् (स्व) २४.१२ | त्रिविधामभक्तिरुद्दिष्टा- (सु) १५.१६४ | त्रिषट्पञ्चयुगदापत्य (क्रि) १७.१२१ | त्रेताग्निना तु यजता देवेन (सु) १८.४० | त्रैलोक्यपूजिते देवि (ब्र) ११.३६ |



| | | | | | | | | | |
|---------------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| त्रैलोक्यमातरः सर्वाः (सृ) | ४१.३१५ | त्र्यंकायतदाकिंचिद (उ) | ६६.१५ | त्वंचापिभायादुःखातो (उ) | १०३.२६ | त्वंपुनः कृपयाविष्टा- (सृ) | १८.३०५ | त्वंरामचरणस्मारी (पा) | ५२.६ |
| त्रैलोक्यविश्रुतं राजन्- (स्व) | १८.६५ | त्र्यंकायत्रिनेत्राय (पा) | ११४.२८४ | त्वंचायातु प्रयागं- (उ) | १२६.२५७ | त्वंपुनः सर्वधर्मज्ञः (भू) | ६४.४७ | त्वंरामचरणस्यासि (पा) | ५२.६ |
| त्रैलोक्यश्रीरामोद (सृ) | ४.१७ | त्र्यंकायैतिरुद्रस्य- (सृ) | २६.२० | त्वंचेदससिदेवेशवने- (सृ) | १५.५८ | त्वंपुराणः पुमान्साक्षादी- (पा) | ८.१८ | त्वंरामवचनंतथ्यं (पा) | ५६.३६ |
| त्रैलोक्यसंभवपापम् (ब्र) | ४.२७ | त्र्यहन्कारयेद्वह्म (स्व) | ५३.७२ | त्वचेन्ममाश्रमोस्थित्वा (उ) | १५.१५ | त्वं प्रज्ञान परब्रह्मस्- (उ) | २५०.६५ | त्वंरामस्वमखेविघ्नं- (पा) | २८.७१ |
| त्रैलोक्यसाधकं ज्ञात्वा (भू) | ८१.१२ | त्र्यहपयोव्रतः स्थित्वा- (सृ) | २०.१०० | त्वंज्योतिः श्रीरविश्चं (उ) | १२२.२३ | त्वं प्रसूतिः जगत्स (उ) | २३६.२१ | त्वं वा पुत्रास्तु पीत्रास्तु (भू) | ४२.५० |
| त्रैलोक्यस्य प्रजादेव (भू) | ५.४३ | त्वकथं स्वशरीरं तुहातु (पा) | ५६.५८ | त्वंतत्पुण्यप्रभावेन- (स्व) | ३१.१७ | त्वं बालस्तेदुराक्रांता (पा) | ६३.१२ | त्वं विद्यात्वं महाभाया (पा) | १३.२८ |
| त्रैलोक्यस्याधिकां पुजां (सृ) | ५.४५ | त्वं कासिकितुनामासि- (पा) | ५७.४२ | त्वंतिष्ठसिस्वरूपाणि (उ) | १२.५३ | त्वं बालः स्थविरो भूपो (पा) | ४२.१४ | त्वं विष्णुस्त्वं परं (उ) | २४२.३३६ |
| त्रैलोक्याधिपति (सृ) | २६.२८ | त्वं कीर्तिमुखसंज्ञो (उ) | ६६.३१ | त्वंतु भक्तिः प्रियातस्य (उ) | १६४.४ | त्वं भूरिति विशां माता (सृ) | ४३.७४ | त्वं विष्णोरशंसं ज्ञातो (उ) | ६२.२ |
| त्रैलोक्याधिपतेस्त्वाहं (उ) | ८८.२३ | त्वं कीर्तिः सत्यभूतानां (सृ) | ४३.७७ | त्वंतु मत्कुक्षिजः कीटः (पा) | ६.३३ | त्वंमतः प्रतिवीर्यश्च (सृ) | ४१.१२५ | त्वं वेदगुरुपो ब्रह्म (उ) | २४५.१११ |
| त्रैलोक्यांतर्गतं (सृ) | १६.१५१ | त्वंगच्छपश्यदेवेशं (सृ) | ३३.३५ | त्वंतु लोभेन कामेन (भू) | १०३.३६ | त्वंमहोपायसदेहो निति (सृ) | ४३.७५ | त्वं शोकमोहगितुमात्तु (उ) | १८.४३ |
| त्रैलोक्येन समं पृथ्वीं (भू) | १२५.६ | त्वंगच्छममसैन्यस्य (पा) | ११.१२ | त्वंत्राता सर्वलोकानां (सृ) | ४.१०६ | त्वंमाता च पिता त्वं (उ) | १५१.७० | त्वं श्रद्धात्वं परा निष्ठा- (सृ) | ३२.११५ |
| त्रैलोक्ये पुण्य कर्मा (उ) | १४३.४ | त्वंगतिः सर्वभूतानां (भू) | ३२.३२ | त्वंदेवः सर्वदेवानां त्वां (उ) | ७१.६१ | त्वं मुक्तिस्त्वं भूतानां (सृ) | ४३.७६ | त्वं सती सर्वदा भद्रे सत्वं- (भू) | ५२.३५ |
| त्रैलोक्येयानितीर्थानि (उ) | ३५.३४ | त्वंगतिः सर्वलोकानां (उ) | १६७.५६ | त्वंदेवः सर्वदेवानां त्वं (उ) | ७१.७१ | त्वं भेगुर्द्रिजयेष्ठ (क्रि) | २१.५६ | त्वं सर्वदेवगणधामानिधे (सृ) | २१.१०६ |
| त्रैलोक्ये वत्संतं यद्यदेक (भू) | १२३.१८ | त्वं च तत्सेवकत्वेन (उ) | २०३.३१ | त्वं धाता सर्वभूतानां (उ) | १२८.२५६ | त्वं मयजस्त्वं वपट्कारः (सृ) | १४.१२७ | त्वं सिद्धिः श्रीधर्मनिः (सृ) | १७.३१७ |
| त्रैलोक्ये विश्रुतं दिव्यं तत्र (स्व) | १८.५० | त्वं च तत्सेवकत्वेन (ब्र) | १०.१७ | त्वं धारयसि भूतानि (उ) | ७६.१४ | त्वं यज्ञस्त्वं वपट्कारस्त्वम (उ) | ७६.६ | त्वं सुधीर्त्संगवार्थं (उ) | २०७.१३ |
| त्रैलोक्ये शजनिस्थानं (उ) | १८०.६५ | त्वं च धर्मं गणधर्मज्ञ (स्व) | ३६.१०७ | त्वं नः स्रष्टा च गोप्ता च भर्ता (सृ) | १६.११६ | त्वं यज्ञस्त्वं वपट्कारस्त्वम (उ) | २४५.१८८ | त्वं गुरा गुरानार्थाय (सृ) | ४२.१६ |
| त्रैलोक्यैकश्रिया युक्तो (ब्र) | ८.७ | त्वं च भलति धारायं (उ) | ३०.११० | त्वं नाथः सर्वलोकानां (उ) | १४३.१६ | त्वं यदा चरसे द्रधर्मस्य (पा) | ४४.२ | त्वं स्वाभिमुभगानित्यं (क्रि) | ८.४८ |
| त्रैलोक्यैकश्रिया युक्तो (उ) | २३१.१० | त्वं च रत्नमयो नित्यमतः (सृ) | २१.१७६ | त्वं नाथः सर्वलोकानां (उ) | १५३.१४ | त्वं यदा ब्रह्मपूजादिभुवं (पा) | ३७.४८ | त्वं हतो वीरभद्रेण (पा) | ४५.२७ |
| त्रैलोक्यैकश्रिया युक्तो (पा) | ११४.२६४ | त्वं च वीरं भंडे सत्वं (पा) | ६१.५ | त्वं पतिस्त्वं मतिर्देव (उ) | ३८.६३ | त्वं यागकर्म निरतो (पा) | ५३.१६ | त्वं हि देवन्दसर्वस्वजगतः (उ) | १६८.६६ |
| त्र्यंकायस्य गिरिपुण्ये (पा) | ११४.६ | त्वं चादिक तमि वसोकरेः (सृ) | २३.६५ | त्वं पिता सर्वलोकानां (पा) | ६६.२६ | त्वं युवा दृष्ट पुत्रा स्थोन (उ) | २०२.३७ | | |

| | | | | |
|---------------------------------------|---|--|--------------------------------------|------------------------------------|
| त्वहिः परमोदासात्वं (सु) ४५.३१ | त्वत्कृतेरपुशार्त्तुहृणा (सु) ३६.२२ | त्वत्पादपायोजयुगं (क्रि) २.६२ | त्वत्प्रसादान्मुनि (उ) २०१.४३ | त्वदुत्पन्नप्रजाप्यश (उ) २४५.२०५ |
| त्वंहिनारायणः श्रीमान् (उ) २४२.३३७ | त्वत्कृता गोम गार्त्तुमुक्तं (पा) ५५.६ | त्वत्पादयुगलेशभो- (पा) १०५.२३६ | त्वत्पमादेन भविता तन्मे (सु) १४.१५७ | त्वद्गुणग्राममंगलन (क्रि) ५.१०२ |
| त्वंहिनारायणः श्रीमान् (उ) २५५.७० | त्वत्कृता तोरिपुकुलं (पा) ११.४६ | त्वत्पादसलिलसेव्यं (उ) २५५.६१ | त्वत्प्रोयजगन्नाथ (क्रि) १७.२०३ | त्वद्गुणनिरागन्वक्तुः (स्व) २०.३६ |
| त्वंहित्येवहुमतोगुणं (सु) ३६.२३ | त्वत्तपोभिर्गंकांनप्राप्ताः (पा) १३.२ | त्वत्पादसलिलसवामिन् (क्रि) १६.४४ | त्वत्प्रमतीर्थोयेन- (क्रि) १७.२२ | त्वद्गुणाध्यानविश्राम (क्रि) १७.२० |
| त्वंहिमुष्णासिदनान्नेत्र (सु) ४४.७ | त्वत्तपोयोगतः सर्वं (पा) ६.६ | त्वत्पादांभोजरजसा- (पा) ८६.४ | त्वत्प्रमकेनस्त्वं रामोनि (सु) ४३.१५ | त्वद्गुणानिदर्शनाद (उ) १०७.२ |
| त्वंहिपरमोदेवस्त्वं हिमे (सु) १६.६६ | त्वत्तः प्रवृत्तिः सांख्यस्य (उ) २१६.८५ | त्वत्पादसेवनं नामतीर्थं (उ) २२१.३६ | त्वत्संयतलोभे (उ) २०४.११२ | त्वद्दर्शनविनानुष्टा- (स्व) २२.५६ |
| त्वंहिशाकाः परितातु- (सु) ३६.२८ | त्वत्तः श्रुतामहापुण्याः (स्व) १.१३ | त्वत्प्रसादाच्चदेवेश (उ) ७१.८२ | त्वत्सदृश्यः पतिपराः (पा) ४.४१ | त्वद्दर्शनविनानुन- (उ) १२८.६५ |
| त्वंहिसर्वस्यलोकस्य (उ) १७७.५१ | त्वत्तः सर्वेसुराः प्राप्य (पा) १३.२६ | त्वत्प्रसादात्सुराः सर्वे- (स्व) २७.२० | त्वत्समीपगताः (उ) ३८.६२ | त्वद्दर्शनमुधासिक्तं (उ) १२७.१४६ |
| त्वंहैतुः सर्वभूतानां (उ) १२८.२५८ | त्वत्तुल्यः कोपिसंसारे (क्रि) १७.२ | त्वत्प्रसादादहोस्वामिन् (पा) ६५.५६ | त्वत्समृद्धिर्मांषयन् (उ) ६६.७ | त्वद्दर्शननास्तदादेव- (उ) १२८.२०६ |
| त्वग्मासास्थिमज्जा (भू) ६६.२५ | त्वत्तानान्यद्राम देव (उ) २४५.३२३ | त्वत्प्रसादाद्भूतस्या (उ) २०१.७२ | त्वत्समोनास्तिमेकोपि (पा) ७८.१६७ | त्वद्दर्शनान्मनोःस्माकं (उ) २०८.२१ |
| त्वच्चा जंरनां यासा (भू) ८.५५ | त्वत्तोपिदृश्यतेयेन- (सु) १६.१७६ | त्वत्प्रसादाद्भूतमुक्तः (उ) २१४.७६ | त्वत्सर्गोपदेशाभ्यां- (सु) १८.४४६ | त्वद्दर्शननद्यालानां (स्व) २३.१० |
| त्वच्चाः पुत्राहरे र्काम (स्व) ६१.१०० | त्वत्तोविभेमिनोशूर- (पा) ६०.१८ | त्वत्प्रसादादहविप्र (उ) ४४.१६ | त्वत्सादृश्यान्मयादत्तम (सु) १०.८० | त्वद्दर्शननद्यालानां (उ) १२८.१२६ |
| त्वच्चेटी त्रतायस्ति (क्रि) ५.१०१ | त्वत्तोयजः सर्वहुनः (सु) ४.११६ | त्वत्प्रसादादहवि (उ) १२८.२२० | त्वत्सुष्टं मोदते विश्व (उ) १२८.२५१ | त्वद्वाणंमद्रथोद्युक्तं (पा) २७.३६ |
| त्वच्छायां स राशित्व (भू) ४१.१६ | त्वत्तोयजास्त्वजायं (सु) ४.११७ | त्वत्प्रसादाद्विदं सर्वं (सु) १०.१२४ | त्वत्सुनिचाप्यधीयानो (सु) ४३.२७६ | त्वद्वाहुलमाश्रित्य (सु) ३०.१३५ |
| त्वज्जटोत्पाटनेकः (पा) १०७.७७ | त्वत्तोवेदिनुमिच्छामि (पा) ८३.१७ | त्वत्प्रसादादेवमुने (उ) १७८.११ | त्वदधीनावंयं गम (पा) ११६.२८० | त्वद्भक्तोसोतदादेव- (उ) १५१.७६ |
| त्वद्मांसावायवारीद् (पा) २०.५६ | त्वत्तपयिदिदेवानांभागं (पा) १५.१३ | त्वत्प्रसादाद्विजश्रेष्ठ (क्रि) १७.२२१ | त्वदर्थदेवदेवेश (पा) ११४.२३३ | त्वद्भाग्यगौरवादेव- (पा) १०४.१६ |
| त्वत्कीर्तिस्वर्धुनीसर्वा (पा) ३१.६ | त्वत्पादकमलोद्भूता (उ) २४२.२७६ | त्वत्प्रसादाद्विजश्रेष्ठ (उ) १०७.६ | त्वदर्थयद्गो नष्टा (पा) ११६.२७२ | त्वद्भाय्यावचनं (पा) ११२.१२८ |
| त्वत्कृतस्तुतिस्तेन- (पा) २२.४० | त्वत्पादजलसंसर्गान् (क्रि) २१.५८ | त्वत्प्रसादाद्विजश्रेष्ठ (उ) १०७.६ | त्वदादेनं करिष्यामि (भू) ७८.४८ | त्वद्भुक्तोच्छिष्टशेषं (उ) २४५.६२ |
| त्वत्कृतसदाचाहं (सु) ३३.१२७ | त्वत्पादप्रयुगलं (क्रि) १६.६० | त्वत्प्रसादान्महादेव- (स्व) १५.५३ | त्वदिच्छया त्वमेवेतो (पा) ६६.११६ | त्वद्भुक्तविदुपातेन (पा) १२७.६७ |
| त्वत्कृतेनहिद्विद्रोयं (सु) ३८.६० | त्वत्पादपयसलिलस्य (क्रि) १७.१३५ | त्वत्प्रसादान्महाभाग- (सु) १६.१७६ | त्वदीयमाययानाना- (उ) २१४.१०२ | त्वद्भुक्तविजानानि- (पा) ११४.१८८ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| त्वद्गोत्रमित्रपथमे (क्रि) | ७.१०६ | त्वममात्यश्चमहिलात- (पा) | २१.४० | त्वमेववसेचिद्रूपं (उ) | २३०.१७ | त्वत्कृतपशोरागां (पा) | ११७.१२६ | त्वयानायेनवैदेवाः (सु) | ३३.१६६ |
| त्वद्वागीप्रियतो (उ) | २२.१३ | त्वमस्मिन्नास्तिवैकुण्ठ (उ) | १२८.२५७ | त्वमेववृत्रान्नोक्तान् (उ) | २३५.३१ | त्वयाकृन्निदंस्तोत्रं (क्रि) | ७.१२१ | त्वयानायेनसकनाः (पा) | ५६.१३ |
| त्वन्नाभिकमलाञ्जरी (पा) | २२.२६ | त्वमस्पृश्यासि चांडालै (क्रि) | ८.६२ | त्वमेवनाथोभुवनस्या (सु) | ४३.२६१ | त्वया चक्रीडतेकुराणो (पा) | ७१.५७ | त्वयानीनां पुरीरामनतां- (सु) | ३८.४७ |
| त्वन्नामगर्जनं श्रुत्वामहा (पा) | ३७.५३ | त्वमस्माञ्जगतो (उ) | ८०.१४० | त्वमेवयोगतिस्तत्रयथा- (सु) | ४३.३८१ | त्वया चधानितोऽत्रोन (सु) | ३०.१३६ | त्वयानुक्तं पतित्वाहभूयो (पा) | ७१.२ |
| त्वन्नामस्मरणा (क्रि) | १३.१२१ | त्वमस्यजगतोधीशः (सु) | ५.७० | त्वमेवपरमोधर्मः (उ) | २५५.११२ | त्वयाजलनिदगस्य (उ) | २०.४.८३ | त्वयापिकृष्णचद्रस्य (पा) | ७५.५२ |
| त्वन्नामस्मरणान्मूढः (पा) | ३७.५० | त्वमाग्रहात्पृच्छसि (पा) | ५५.११ | त्वमेवभगवानोशोब्रह्मा (सु) | २१.१०७ | त्वयात्रपनः कगेत्यस्य (पा) | २२.३० | त्वयापिदानवादेवि (सु) | ४३.६८ |
| त्वन्निदिष्टगुणमहं (पा) | १०८.२१ | त्वमात्तच्छ्रु मे वाक्यं (भू) | ७.२५ | त्वमेवमुनिशार्दूल (क्रि) | १.२० | त्वयातनमिदंस्त्वया- (सु) | १८.२६ | त्वयापिसुमहत्कर्मकृतं (पा) | ११.६२ |
| त्वन्निश्चयस्त्रह्मत्वेतुं (सु) | ४३.३७१ | त्वमादिपुरुष साक्षात् (उ) | २४२.१०० | त्वमेवसर्वत्यजानां (उ) | १२६.६६ | त्वयातत्रकृतेयाद्वे (उ) | २१३.८० | त्वयापुत्रेणतानस्तु (क्रि) | १७.२६ |
| त्वपिता सर्वलोकाणां (पा) | ६६.३६ | त्वमादिभूतवचांतस्त्वं (उ) | २३०.२० | त्वमेवशरणं कृष्णं (भू) | १६.१७ | त्वयानुसम्यक्पृष्टेन (स्व) | ४७.१८ | त्वयापुत्रेणनित्यंचयथा (भू) | ५.५६ |
| त्वपिराजि जगत्सर्वं (पा) | ७.३६ | त्वमादिमव्यांतवपु (उ) | २३०.१८ | त्वमेवसर्वदेवानाम- (उ) | २४५.३२४ | त्वयानुसम्यग्दत्तन (स्व) | ३६.१०६ | त्वयापृष्टमहाराज (पा) | ३५.७१ |
| त्व प्रज्ञानं परं ब्रह्मत्वय (उ) | २५०.६५ | त्वादित्स्वमानवि (उ) | २५०.५६ | त्वमेवसर्वलोकानामा (उ) | २२८.६१ | त्वयात्यक्ता ग्रमी सर्वे- (भू) | ४२.३६ | त्वचापृष्टमिदसम्यग (सु) | २६.२ |
| त्व प्रसूति जगत् (उ) | २३६.२१ | त्वमापस्त्वं नभो (उ) | २४५.३२२ | त्वमेवसेवोविप्राणां (उ) | २५५.७१ | त्वयात्रजीवितास्तातवि (पा) | १०७.८४ | त्वयापृष्टस्यधर्मस्यवक्ष्य (सु) | २३.१४ |
| त्वन्मुखाद्बाह्याजाता (सु) | ४.११८ | त्वमापः सर्वजगतां (उ) | २३०.२१ | त्वमेवादशतोमह्यं (पा) | ७५.२६ | त्वयात्रैलोकनानाये (पा) | ६६.४८ | त्वयापृष्टारामकथा (पा) | ६८.३६ |
| त्वमग्निरूपोऽद्रोसि (उ) | १६७.६१ | त्वमीशः सर्वभूतानां (उ) | ८०.१३८ | त्वमेवात्म्यपुनः (उ) | १०३.२२ | त्वयादत्तवर्ममह्यतदा (उ) | २५०.४७ | त्वयाप्येतद्गोपनीयं (पा) | ८३.१११ |
| त्वमचित्यमहद्भूतां (उ) | २४५.४० | त्वमीशः सर्वलोका नात्वां (उ) | ३६.१५ | त्वमेवैतान्महादेवा (उ) | २३५.२२ | त्वयादत्तेनार्धेन (क्रि) | १३.१५२ | त्वयाप्रसादितासाध्वी (सु) | ३४.३१ |
| त्वमत्रकृतवान्यज्ञान् (उ) | २००.८० | त्वमीश्वरी च पर्यकेशकः (क्रि) | ८.३८ | त्वयाऽऽत्मराज्ये (पा) | ११६.२६२ | त्वयादत्तेत्येस्थित्वा (पा) | ६१.२४ | त्वयाप्रोक्तं महाराज (पा) | ११.६१ |
| त्वमद्यविहितोभक्षः (सु) | १८.६८७ | त्वमुक्तिः सर्वभूतानां (सु) | ४३.७६ | त्वयाकलत्रपुत्राद्याद्रो- (पा) | २०.६० | त्वयादत्ताममप्राणामां (सु) | ३७.२८ | त्वयाप्रोक्तमिदंस्तोत्रयः (उ) | ३३.४१ |
| त्वमनिदः पुरामांच- (पा) | १०६.१०७ | त्वमेवजगताम्रह्मा (उ) | २५०.५५ | त्वयाकृतं परंतीर्थं (सु) | ३८.१४६ | त्वयाद्यतोरावमाहो (पा) | ५०.१८ | त्वयाप्रोक्तं हरेः (पा) | ४६.४४ |
| त्वमप्येनांसमाश्रित्य (पा) | ८२.८८ | त्वमेव जानासि चरित्र- (भू) | ५५.८ | त्वयाकृतं महत्कर्म (पा) | ४२.६६ | त्वयाधर्मं न प्रदत्तम (भू) | ७८.३७ | त्वयावीजानिसर्वाणि (भू) | २६.३ |
| त्वमंबुसर्वभूतानां (उ) | ४५.४१ | त्वमेवत्रजगत्वेनंवाह (पा) | ३८.१६ | त्वयाकृतं विसर्तयं (सु) | १६.१६१ | त्वया न परित्यक्तस्तपसः (भू) | ६१.५७ | त्वयाभूमिः पुरा- (सु) | १६.१२० |

| | | | | |
|--|---|-------------------------------------|-------------------------------------|---|
| त्वयामयाजगच्चेदंधार्यं-(सु) ३.५८ | त्वयावैभोजिताविप्राः (सु) ३३.१०० | त्वयिवक्ष्यं जगत्समीपेति (भू) ६२.१४ | त्वरमाणायवीर्यवेदमपितु (सु) ४३.३६८ | त्वांब्रह्मासारंहृदि (स्व) ३५.३६ |
| त्वयामात्स्थवपुर्धृत्वा (पा) २२.३३ | त्वयासत्यमिहप्रोक्तं (उ) ५२.२८ | त्वयिसर्वजगत्पुण्ये (उ) १८.७५ | त्वरथागच्छतांतेपा (उ) १८०.२२ | त्वांमुक्त्वानान्यतः (सु) ३४.१२२ |
| त्वयामेनुग्रहः सृष्टोयद्रामः (पा) १.११ | त्वयासमोनलोकस्मिन् (सु) ४१.१२६ | त्वयिसर्वेश्वरंतेसुराः (स्व) २७.१६ | त्वत्पातदाज्ञयाब्रह्मान्-(सु) २३.११ | त्वांयोगिनश्चिन्तयति-(पा) ११६.२०२ |
| त्वयामेमातरः पूज्याः (पा) ११.८२ | त्वयामाधुक्रुतकर्ममुमटे (पा) २७.१४ | त्वयिसुप्तेजस्तुप्तं (उ) ८५.४ | त्वांगुलंतीर्थभूतंतु (उ) २१०.२८ | त्वांवक्ष्यामियतः (क्रि) २३.१८ |
| त्वयामोदकचूर्णं (सु) १०.७६ | त्वयामृष्टामिदसर्ववदंती-(सु) १८.११४ | त्वयैद्रश्चक्रुतोराराजा (उ) ७६.१६ | त्वां च दृष्ट्वा हि ते (भू) ११६.१२ | त्वांचिमनाथभवतः (क्रि) १७.१३४ |
| त्वयायज्ञाः करिष्यते (पा) ११६.२६५ | त्वयामृष्टाः स्पभगवंस्त्रै (सु) १८.७७ | त्वयेयं नाशिना नाथ-(भू) ४७.५६ | त्वांचपक्ष्यामिदुः (पा) ५६.११ | त्वांविना कश्च मां वत्स (भू) १२३.३६ |
| त्वयायत्यच्यतेदेवि (पा) ८३.३२ | त्वयाहं धातितः पापे (भू) ३०.५६ | त्वयैकदिवसेपूजाशंकर-(पा) १०६.५२ | त्वांचशक्तिमहं (उ) ३८.१०४ | त्वां विना मुमहाराज (भू) ८३.१३ |
| त्वयायदावनेत्यक्ता (पा) ६६.८ | त्वमोचयबलात्तस्मात् (पा) ६३.३२ | त्वयैवं कथ्यमानस्य (भू) १००.१० | त्वांचात्मानंलब्धयोगा (सु) ४३.१३ | त्वांवैवाणोवहुवाद्येन (सु) ४३.८६ |
| त्वयायद्वर्णबालस्त्वं (पा) २३.५२ | त्वयाहं मोचितीवंधो (उ) १६७.८५ | त्वयैवप्रेरितालोका (उ) २३०.२३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांसमाखलोकस्य (सु) १८.२६५ |
| त्वयायद्वर्णितंराजं (पा) ३२.६ | त्वयिचित्रं न देव्यं (उ) १६४.५१ | त्वयैव प्रेषिता राजन् (भू) ८१.१८ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांसमुद्रतुं कामेन सुपुत्रस्तं (भू) ३६.३४ |
| त्वयायद्यपिबध्योहं-(स्व) १५.५४ | त्वयिजीवति मेधाविन् (भू) २३.३३ | त्वयैवमेसमस्तानां-(पा) १०६.८४ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयायन्तोविधाताद्यो ह्य (सु) ७.३६ | त्वयितत्रगनायां (पा) ६६.६६ | त्वयैववीररागेणविवेकेन (भू) ८.१०१ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयाराक्षसपायोधिस्तीर्णो (पा) ४२.६ | त्वयितृष्टेतिमंत्रज्ञे (उ) ७.३५ | त्वयैवसहितास्वर्गभूमि-(भू) ४२.४६ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयावतीर्यलोकस्मिन् (उ) १६८.१०२ | त्वयितृष्टेमहाभाग (स्व) १०.१२ | त्वयैवालंकृत्युथोभवता-(भू) ४२.३५ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयाविनादानवस्तुजिताः (सु) ४.२८ | त्वयि दृष्टेप्रसन्नामेहदृष्टि (सु) १७.२६२ | त्वयोक्तंतुपुरारामः (पा) ५५.२ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयाविनानैतितृप्ति (क्रि) २४.३६ | त्वयिप्रसन्नेगच्छावः (क्रि) ६.१२७ | त्वयोक्तंतुपुराराम (पा) ३७.४६ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयाविनापिषाण्वी-(सु) ३८.४८ | त्वयिप्रीतेसुराः सर्वप्रीता-(सु) १७.२६६ | त्वयोक्तंतुपुराराम (पा) ३७.४६ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयाविलोकिताः सर्वे (उ) २३२.५८ | त्वयिभारं समावेश्य (सु) ३०.१३१ | त्वयोक्तंतुपुराराम (पा) ३७.४६ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयाविष्णोः परस्त्वं (उ) २३८.७४ | त्वयिराजनिनाकुत्स्थ (पा) ११६.२६६ | त्वयोक्तंतुपुराराम (पा) ३७.४६ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |
| त्वयावैनिहृतोदैव्यो-(पा) ३३.६१ | त्वयिराजि जगत्सर्वं (पा) ७.३६ | त्वयोक्तंतुपुराराम (पा) ३७.४६ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ | त्वांलब्ध्वा मुनि (उ) २४२.२४३ |



त्वामचित्यमहात्मा (उ) २४४.८१
 त्वामहद्भुमिच्छामि (पा) ७३.१३
 त्वामहविष्णुं धर्मज्ञं (भू) ६७.३४
 त्वामह शरणांप्राप्तो- (भू) ८.८
 त्वामहं शुभकल्याणि (सु) २१.३०८
 त्वामानेतुं यवाहूनाः (क्रि) १६.७८
 त्वामाराध्यतयाशंभो (उ) ७१.१०६
 त्वामिदुनीलिशरणं (सु) ४३.२५६
 त्वामनेनास्त्रिलोके (उ) १६७.६०
 त्वामुने मा वशरोहो (भू) ११३.३६
 त्वामेकपुत्रयदहं श्यामे (सु) ३५.३७
 त्वामेवामेवससारे (क्रि) १७.२५
 त्वामेतस्य कृते ह्यमिन् (सु) ४१.२६८
 त्वामेवभगवन् सर्वप्रविशति (स्व) २७.१८
 त्वामेव ये नियतमानस- (भू) २२.२६
 त्वामेव हि न सदेह अन्ये (भू) २६.१३
 त्विसंसविभ्रतीमयैः (सु) १६.१३८
 व
 दंशनं दशभिर्द्विह्रवा (भू) ११५.३२
 दंशशस्त्रेण केषां (क्रि) २३.१५४
 दंशश्चमशकैश्चापि (क्रि) १३.३६

दंष्ट्यातुव राहेणसमुद- (सु) १३.१८५
 दंष्ट्राकरालसंक्रुगा (भू) ८६.१०
 दंष्ट्रागतकरालास्यं (उ) १८.१०१
 दंष्ट्रासुमिहनादलाः (उ) २३८.१०४
 दंष्ट्रिणां निमुतनेषां (सु) ६.७५
 दशमरीचिमित्रिचपुलस्त्य (सु) ४०.७१
 दश गोपाञ्चतत्याजा (सु) ३.२०४
 दशः प्रजापतिश्चैव (सु) १८.११
 दशश्चैव महाबाहुः (सु) ४०.६३
 दशस्यापत्यमेतद्वैकन्या (सु) ४०.७४
 दशस्वापिमुतायुवं (भू) ६.२६
 दशाष्टवैकुण्ठसंकाः (पा) १०७.८६
 दशाष्टवरेचनयनेचतथा (सु) ३३.१५६
 दशाष्टव्यौचविहगा- (पा) ६५.१८
 दक्षिणवरयश्चैरुत्तरं (उ) ५.३८
 दक्षिणजानुचालभ्य (सु) ६.८५
 दक्षिणदूर्जटेः पार्श्वे (उ) १२.५७
 दक्षिणभागमाश्रित्य (उ) १५४.७०
 दक्षिणद्वारिभूमानीकस्य (पा) १०.३८
 दक्षिणेतुष्वेतस्य निषध (स्व) ५.२

दक्षिणस्यादिशि श्रीमाना- (उ) १७६.२
 दक्षिणस्यामहात्मानं (भू) २७.२१
 दक्षिणांचपुनस्तद्वेद्यात- (सु) २८.१७
 दक्षिणांचयथाशक्ति (उ) ३०.३८
 दक्षिणांचयथाशक्ति (उ) ३६.१६
 दक्षिणांचयथाशक्ति (उ) ६५.२०
 दक्षिणांदिशमाश्रित्य (उ) १६.१३
 दक्षिणांदिशमास्थाय (सु) १६.५३
 दक्षिणाः नौप्रणीतेन (सु) ६.६६
 दक्षिणादुदयेश्चैव- (सु) ३८.१३४
 दक्षिणाभिमुखोभूत्वा (क्रि) ११.६
 दक्षिणाभिमुखो (पा) ११७.१०१
 दक्षिणाभिमुखोरात्रो (क्रि) ११.६०
 दक्षिणाभिः चसंगोष्ठा (उ) १७४.७५
 दक्षिणमभिर्गतस्मिदिशं (सु) १६.१५३
 दक्षिणायाः प्रदानेन (उ) ३२.५८
 दक्षिणावर्तनं गलेन (पा) ११४.४६
 दक्षिणाश्चोपपद्यतां- (सु) ४१.३१३
 दक्षिणचरणेभिरवा (पा) ११७.६५
 दक्षिणे वाघंचंद्रतु (सु) २३.४२

दक्षिणे चोत्तरे चैव घनराले- (सु) १५.६१
 दक्षिणेन भुजैर्विप्रो (उ) २२४.५७
 दक्षिणेन तु नीलस्य- (स्व) ३.२६
 दक्षिणेन तु नीलस्य (स्व) ४.२
 दक्षिणेन तु नीलस्य (स्व) ४.१६
 दक्षिणेन तु नीलस्य (व) ५.५
 दक्षिणेन भवे- मृत्युर्गुणेस्व (सु) ३४.२५६
 दक्षिणे गोमनशखः (भू) ८४.६६
 दक्षिणे गोभनेशखो (भू) ८६.८५
 दक्षो वसिष्ठः पुलहेः मरीचि (सु) १८.५२
 दधंचराचरयेन वल्लि (उ) ५.१६
 दधंचदेवगृहेन ए (पा) ११०.६४
 दधंचद्वंद्वं दंगरजमांवि (उ) १५.७०
 दधंचपूर्वां निरस्कृत्य (पा) ११७.५३
 दधमनंतुजवीर (पा) ७६.५२
 दधमसंगोपिभगवान् (उ) १०.५
 दधाक्षिपक्षोदैव्यैः (उ) २३८.६६
 दधाधनं पञ्चिलाल्लोकान् (पा) ११४.३८१
 दधासाधारवंनीमाया- (सु) ४१.१५४
 दधुका मोलिलाल्लोका- (पा) ११४.३६५

दग्धेतुत्रिपुरे राजन् रुद्रकोटि- (स्व) १५.८६
 दग्धेमति गडाभागे (भू) ७७.६५
 दगोस्ति पूर्व त्वमिदं (भू) ५५.४
 दग्धवा दग्धवा पुन (उ) १५२.२२
 दग्धवासंगोचा- (सु) ३६.६८
 दण्डकाश्वमाहाभ्यं (उ) १.४२
 दण्डजालपताका मिश्र- (भू) ८३.६१
 दंडपाणैर्वयं दूताः (क्रि) ७.५०
 दंडपानधरा रोद्रानां (उ) ५१.३२
 दंडपुर्वविहगात्रो (सु) ३४.१५०
 दंडप्रणयनं सागोदेना (पा) १०४.११६
 दंडप्रणामैः सततनाम (भू) ६६.१२
 दंडवप्रणामाय मुनि (पा) ११०.२४
 दंडवत्प्रणिप्रयामी (य) १.४
 दंडस्य विमोयावत्तावत्स (सु) ३७.५२
 दंडहस्तः मुप्रसनः (भू) १२.७३
 दंडाकारं तु पादे वि (उ) २२५.५८
 दंडो दंडायुधश्चैव (क्रि) १३.१४०
 दंडयमाने मया भूये (क्रि) १७.१७६

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| बडौसमल्लोपुत्री (स्व) | ५१.६ | दत्तहन्तभवेत्स्य (भू) | ६७.१७ | दत्तामाशिमामृष्ट (पा) | ४.२८ | दत्तासिच्छिद्यतेनान (उ) | २१०.६० | दत्ताशीः प्रतिगुह्यीया (सु) | ६.१७६ |
| दंडेनालवनेनेवकुटो (म) | ४३.२३ | दत्तएवतेयदानी (पा) | ६६.५० | दत्तायदानपेण्येयकन्या (पा) | १४.६४ | दत्तासर्वाणिचास्त्राणि (पा) | ६६.१६ | दत्तास्वीयांकस्यचिदीश (क्रि) | १२.८० |
| दंडैश्चापियकोलेश्च (सु) | १७.६६ | दत्तमक्षयमित्याहुः पितरः (सु) | ६.१५६ | दत्ताजिवायतुष्टेनत (उ) | २२२.४२ | दत्तामिनद्वितीयायाः (सु) | २०.१२८ | दत्तोद्धवायभगवान् (उ) | १६५.६५ |
| दंडोरधनिभूतानिदंडः (सु) | १६.३०६ | दत्तमन्तदातेन (उ) | ७७.१५ | दत्तासनोगृहीता (उ) | १२५.५६ | दत्तास्वकीयास्त्राण्य (उ) | २०४.१३८ | दत्तमनसोभोष्ट- (पा) | २२.४ |
| दण्डग्रमानेभयाभूये (क्रि) | १७.१७६ | दत्तमन्प्रथनाशाय (क्रि) | १४.१६ | दत्ताहिमवतावालाः सर्व- (सु) | ६.१० | दत्ताहपतितानाभूमि (उ) | ५६.२२ | दत्तुस्तोवरं तस्मै (उ) | २४५.३३७ |
| दध्रैसरभसस्विद्य- (सु) | ४३.४१२ | दत्तमर्थमयातुभ्यं (उ) | ३५.६१ | दत्तपुण्ड्रालेनेव (उ) | ३६.४३ | दत्ताक्षिप्रमुश्रंष्ट (क्रि) | २१.११६ | दत्तांजुह्वनधर्चवजामुस्ता (सु) | ३५.३४ |
| दत्तं वचिप्रकारं वोगृहं (सु) | ३१.३६ | दत्तमारुधयामास (सु) | १२.१७७ | दत्तपुण्ड्रक्षणात् (उ) | ४७.३१ | दत्तावकायतेपा- (सु) | १३.३७६ | दत्तयन्त्रहरेः सद्यतेपां (ब्र) | १५.२७ |
| दत्तंचलभतेपुण्यंयत् (उ) | ११२.८ | दत्तवानसिर्गोविद (उ) | २४६.२६ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तावकाशमाप्नोति (स्व) | ५७.५५ | दत्तदिदर्शनं वप्रभसित- (सु) | ३३.७५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तवाक्कृपयाम (उ) | २३५.४२ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तमानांतुपुत्रस्य (उ) | ३१.३८ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तवाक्कृपयाम (उ) | २३५.४२ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंकस्यपत्र (उ) | २४१.१६ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तवाक्कृपयाम (सु) | ४४.६३ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तस्त्वयायममभक्ति (क्रि) | १२.८४ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तस्यापिमुदानस्य श्रद्धा- (भू) | ३६.४४ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तातस्मादिपंगंगा (उ) | १३५.८३ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्ता त्रेयप्रसादेन तव (भू) | १०४.२१ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्ता त्रेयप्रसादेन वरं (भू) | १०६.१८ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्ता त्रेयहंसिस्मात् (उ) | १२६.२ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्ता त्रेयेण पुण्येन (भू) | १०६.४ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्ता त्रेयेण यो दत्तः (भू) | १०७.६ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्त त्रेयो मुनिश्रेष्ठः (भू) | ११६.२६ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |
| दत्तं जगद्गुह्यं च तपस्तप्त (स्व) | ३३.१६ | दत्तान्येकरूपाणिदानानि (भू) | ६४.२७ | दत्तोप्यतेवरः कोऽपि (क्रि) | १७.१६४ | दत्तातंतंगोपाय- (सु) | १३.१४० | दत्तशंघोरमाकाशापतंतं (उ) | १७७.१५ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| ददर्शतत्पुत्रकुण्डलो (उ) | २४६.५३ | ददर्शोदितमादित्यं (उ) | १०३.५ | ददासिप्राणिनांमर्वाः (उ) | १८६.२५ | ददशेसुभटैः सर्वैरथस्वैः (पा) | ३३.११ | दद्यात्कृपेयवासः सादि-(सृ) | २०.१३२ |
| ददर्शतास्तदामोहात् (उ) | १०५.४ | ददर्शितैवगृह्णाति (पा) | ८८.२३ | ददाहगोपवृन्दै (उ) | २४५.८० | ददौकृष्णस्यभगवान् (स्व) | ३६.६ | दद्यात्तद्वत्प्रभातेतुगुरवे-(सृ) | २१.१८६ |
| ददर्शपर्वनाकारमुत्ततं (क्रि) | ६.५ | ददाति नैवगृह्णाति न (भू) | १२.२३ | ददाहदानवाभीक (उ) | ७.३३ | ददौक्रीडनकत्वाष्टा-(सृ) | ४४.१५२ | दद्यात्प्रत्युपचारं तुमूल (उ) | २५३.६२ |
| ददर्शपुरतो गंगा (क्रि) | ७.११४ | ददाति यस्तु विप्राय (स्व) | ५७.२२ | ददाहनगरीलंकां (उ) | २४२.२८६ | ददौजालंधरायासी (उ) | ६.१३ | दद्यात्सिद्धिदशवती (उ) | १२७.७ |
| ददर्शप्रथमं तत्रस्थलं (पा) | ७४.१६७ | ददाति वांछितांस्वामान् (उ) | १५३.११ | ददुर्भुदित चेतस्काः (सृ) | ४४.१५३ | ददौतस्मैचनिगमानात्म- (पा) | ८४.१४ | दद्यात्सदेवतं कुंभं (उ) | ४४.३४ |
| ददर्शभुजगान् राजा (उ) | ४१.२८ | ददाति वारणं यस्तु-(क्रि) | २०.१२० | ददर्शोवसतेनोरेषट्पदो (उ) | १३२.४६ | ददौतस्मैमुद्रायुक्ता (सृ) | ४.७ | दद्यात्समानि सर्वेषामा (सृ) | २७.१७ |
| ददर्श भूपवेयेण गोभिलं (भू) | ४६.३६ | ददाति विष्णुं भवनं (उ) | ६४.१०८ | ददुस्चापिवरं सर्वं देवा-(सृ) | ४४.२१५ | ददौतस्मैवरानिष्टान् (उ) | २३८.१४६ | दद्यात्समाप्तेदध्यन्न (सृ) | २५.३६ |
| ददर्शमादंभकरं मोन (पा) | ६७.६५ | ददानि वृषभयस्तु (ब्र) | २४.१४ | ददुशुदनवाः सोमहिम-(सृ) | ४१.२६ | ददौतस्मै स धमतिमा (भू) | २४.३० | दद्यात्सौभाग्यकृद्यस्मात् (सृ) | २६.३१ |
| ददर्शमेनामापाण्डुच्छवि (सृ) | ४३.८२ | ददाति वृषभयस्तु (क्रि) | २०.११२ | ददुशुद्विभुवनं ब्रह्मा (उ) | ६.३ | ददौतस्मै सुखं सर्वं (क्रि) | २०.७६ | दद्यादक्षयदीपयः कातिके (क्रि) | १३.८३ |
| ददर्शराघवं भीम- (सृ) | ३५.६६ | ददातु कन्यां शुल्केन (सृ) | १६.३४७ | ददुशुः सहस्राग्रं (सृ) | १६.२७१ | ददौताभ्योमुद्रायुवतः (उ) | १६७.१० | दद्यादन्नं इदीपचनित्ता (उ) | २५३.१४० |
| ददर्शराजालक्ष्मीवान् (उ) | ४१.३६ | ददात्येवं स धमतिमा (भू) | २६.१५ | ददुशुः सुदरतर (उ) | ३.२३ | ददौदानानि विप्रैः (क्रि) | २१.१२५ | दद्यादनेकदानानि (पा) | ६५.४६ |
| ददर्शराहुर्भवनं शंकरस्याति (उ) | १०.११ | ददानो रोगरहितः (स्व) | ५७.५१ | ददुशुस्तं महाभीमं (उ) | १६०.१५ | ददौवृहस्पतेस्तारां (उ) | २१५.२४ | दद्यादनेनमं प्रेगतथैव (सृ) | २३.२८ |
| ददर्शलिखितं तत्र (उ) | ३०.६६ | ददामि देहमात्मीयम् (उ) | २०३.३७ | ददुशुस्तं महादेवीम् (ब्र) | १०.३ | ददौभागवतं तस्मै (उ) | १६५.६४ | दद्यादहरहः स्वर्णम् (स्व) | ५७.१७ |
| ददर्शविष्णुपुरतः (क्रि) | १२.७६ | ददामि वांछितान् (उ) | १३५.८६ | ददुशुस्तेमहात्मानो (भू) | २८.४३ | ददौयदातानं कथं (सृ) | १२.३० | दद्यादुरकवात्रैस्तुसलिलं (सृ) | ६.१०१ |
| ददर्शमुरखं भूर्पुलसी (पा) | ५०.२१ | ददामि वांछितांस्वामान् (उ) | १३५.१०० | ददुशुस्तेमूर्तिवरं (उ) | १५५.११ | ददौराज्यं च मुमद्भुवनं (पा) | ७.४ | दद्यादं कपतादं ध्वं यथा-(सृ) | २१.१४६ |
| ददर्शसीह्यद पुण्य (भू) | ५७.२२ | ददामि वांछितान् (उ) | १३५.१०४ | ददुशुस्तेततो देवाः (उ) | ३.१६ | ददौविभूषणान्ये (सृ) | ४.६३ | दद्यादद्रव्यमनोभूयः (पा) | ११५.५२ |
| ददर्शस्वप्रमद्येत् (पा) | २२.२ | ददाम्यहंपवित्रार्थं (क्रि) | २२.११८ | ददुशुस्तेसुराः सर्वे (उ) | ५.४६ | ददौसापनिर्तभागं (क्रि) | २५.६२ | दद्याद्योपुनकं भक्त्या (ब्र) | २५.३७ |
| ददर्शप्रितुकासारं स्पर्धयं (उ) | १२४.३० | ददावभयमेवासी (सृ) | ४६.१६ | तदुशेपितरं वीरोमातरं (भू) | ११७.७ | ददौसामाघजं पुण्यं (उ) | १२७.१५७ | दद्याद्वेदविदेव्यं (सृ) | २१.३१४ |
| ददर्शपद्मसुतमृषि (उ) | ५७.२२ | ददावेकफलं तस्मै (उ) | १६६.४७ | ददुशे नैष्णवं लोकम् (भू) | ८३.५० | ददौसुलोचनायै सालिखनं (क्रि) | ५.१२२ | दद्याद्वैश्वदेवः प्रीत्यै (ब्र) | २१.३५ |
| ददर्शदशवदहृष्ट्या (सृ) | १५.५३ | ददासि च द्विजोभ्यस्ये (स्व) | ५३.६२ | ददुशे सा पुरं रम्यम्-(भू) | १०३.६३ | दद्याच्छ्राद्धं प्रवसतो न (सृ) | १३.३६८ | दद्यान्मं भोगपूर्वाङ्गे (सृ) | २६.२२ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-----------------------------|--------|-----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|
| दद्यान्मुमुक्षुर्मनुजो (क्रि) | १४.२५ | दध्नाचैवावतक्रेण (सु) | १६.१५७ | दत्तिहोतिप्रदानेन (ब्र) | १७.१० | दम्पत्योर्भोजनदेय (उ) | ६५.१३ | दर्शनंचपुनर्नान्याः (पा) | ७१.७७ |
| दद्याच्चदक्षिणातेभ्यः (उ) | ११६.४१ | दध्नाविमिश्रितं (पा) | ८०.६४ | दत्तेरोरपित इत्वा (उ) | १७.५१ | दम्भकरोपिचेत्तीरेमी (पा) | ६७.६७ | दर्शनंदास्यतेमेऽसीजानि-(पु) | ३८.५८ |
| दद्याच्चदक्षिणातेभ्यः (उ) | १२३.२६ | दद्याच्चदक्षिणातेभ्यः (उ) | २४५.२६० | दत्तैर्विन कृत्वा नागा- (उ) | २३८.६८ | दाकीटिलरात्राणि (भू) | ११.१७ | दर्शनं दुर्लभं जातं (उ) | २०५.१६ |
| दद्यान्मुमुक्षुर्मनुजो (क्रि) | १०५.१६० | दध्युर्मुनिवराः कृष्णमूर्ति (पा) | ७२.४६ | दत्तोद्भवन्नखोद्भूत (उ) | ७८.५५ | दम्भोन्मत्तमिति (उ) | १३.३१ | दर्शनं नमदायास्तु (उ) | १०५.११ |
| दद्यान्मुमुक्षुर्मनुजो (क्रि) | ७२.१२७ | दध्योदनयुतं तस्यां (उ) | ५७.३६ | दमएवतथायतेयः (भू) | १२.७७ | दम्भोद्भवन्नखोद्भूत (भू) | ६७.१७ | दर्शनं पूजनेनैवातेपा (उ) | ११५.२३ |
| दद्यान्मुमुक्षुर्मनुजो (क्रि) | ७२.८१ | दध्योदनयुतांसां (उ) | ६६.४६ | दमः परोरोपतिः (स्व) | ५४.३३ | दम्भोद्भवन्नखोद्भूत (पा) | ८१.२१ | दर्शनं माधवस्याय (उ) | ८१.३८ |
| दद्यान्मुमुक्षुर्मनुजो (क्रि) | २४३.१२ | दध्योदनसमायुक्तां (उ) | ६६.३२ | दमनं ननु तथा (उ) | ८४.२६ | दयां कुर्वन्ति स्मैच्छाप्ति-(स्व) | १५.४० | दर्शनं श्रवणाभ्यां च (उ) | ११२.१६ |
| दद्यान्मुमुक्षुर्मनुजो (क्रि) | ४१.२८२ | दध्योचक्ष्यामलं कृष्णं (पा) | ७२.४ | दमनकर्मरुक्मैश्चैव (उ) | ८७.२ | दयाक्षातिविहीनाप्रिये (पा) | ६४.६३ | दर्शनं स्पर्शनैवाचारिमत (पा) | ८३.८६ |
| दक्षिचंदनसंमिश्रलनाटे (सु) | २२.६७ | दध्योपरमभावेन (पा) | ७२.७० | दमनोपितमात्राय ह्यागतं (पा) | २४.२० | दयादानपरो नित्यं (भू) | ३७.४३ | दर्शनं स्पर्शनं स्नान (पा) | ८५.५७ |
| दक्षिदुग्धघृतानां (क्रि) | १७.१८३ | दध्योरविग्रहपति (पा) | ११६.६२ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | २५.२६ | दयाधर्मोऽस्युक्त (उ) | ८२.६ | दर्शनात्स्वनीर्यस्य सद्यः (स्व) | २०.५१ |
| दक्षिदुग्धपरिस्वयां (उ) | ६४.२७ | दनुपुत्रैस्ततोऽष्टः (सु) | १३.२८४ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | १३.२७ | दयालोऽस्मलकांत (क्रि) | १७.२४६ | दर्शनात्स्वभोविप्रनर (उ) | १२१.२० |
| दक्षिभिः स्नापयित्वा (क्रि) | १३.२१ | दनुपुत्रोऽयचित्तोसिखर-(सु) | ३०.१६६ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | ४.५५ | दयाहीनं चापवस्रान् (भू) | ३७.४२ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | १७.१४ |
| दक्षिभिः स्नापयित्वा (क्रि) | १३.२२ | दन्तश्रावणमय्यं (पा) | १०५.६५ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | १२.१०३ | दयाहीनं च वेदेन विप्रेषु (भू) | ३७.४६ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | ३२.६७ |
| दक्षीचं नाम निप्रेक्ष- (पा) | १०५.१६७ | दंतयोश्चरणीयुत्वा (पा) | ६०.३६ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | १६.३१४ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | २२२.५८ |
| दक्षीचमपि सासाध्वी (पा) | १०५.१७२ | दंतवक्रवामासुदेव (उ) | २५२.२१ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | १३.१५ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | १६.१३ |
| दक्षीचिनातपस्तप्तं (उ) | १५५.३ | दंतस्थधावनं कुर्याद (क्रि) | ११.१७ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | १६.३१८ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | ११.३५ |
| दक्षीचिनापुराणीतः (उ) | १२६.२३८ | दंतस्थधावनं कुर्याद (क्रि) | ११.१७ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | ४७.३७ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | ११.३५ |
| दक्षीचिरपिराजपि (पा) | १०२.२१ | दंतस्थधावनं कुर्याद (क्रि) | ११.१७ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | २५.६५ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | ११.३५ |
| दक्षीचिरितिविख्यातो (सु) | १६.६४ | दंतस्थधावनं कुर्याद (क्रि) | ११.१७ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | ४७.३७ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | ११.३५ |
| दक्षेणमंसोतस्मात् (उ) | १७६.२७ | दंतस्थधावनं कुर्याद (क्रि) | ११.१७ | दमनोवीर्यजनकं वृषं (पा) | ४७.३७ | दयिता उग्रसेनस्य पतिव्रत (भू) | ४६.२३ | दर्शनात्पुण्यवर्तीत्यर्थ (उ) | ११.३५ |



4.8

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------|---------|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| दर्शनामानसंपापं-(पा) | २०.१३ | दलंतु नीयमारव्यातं-(पा) | ६६.४१ | दशदोडंडचास्य (उ) | १०२.२२ | दशम्यामवहोराभूदात्रो (पा) | ३६.६५ | दशवर्षसहस्राणि (स्व) | ५.४ |
| दशनाय प्रेषय स्वमुतां (भू) | ४८.१५ | दलपंचदशश्रेष्ठतत्र (पा) | ६६.५१ | दशप्राजन्मसंचारोभूगु-(सृ) | २.१४ | दशम्यामेकभक्तस्तु (उ) | २३४.२४ | दशवर्षपैतृकपक्षमातृके (स्व) | ३१.१६२ |
| दर्शनोनीयशिरस्तस्या (पा) | ११०.६४ | दलमेकादशंप्रोक्तं (पा) | ६६.४७ | दशघेहावतीर्णां (उ) | १२८.२४६ | दशम्येकादशीभद्रा- (उ) | ३४.४२ | दशसूनासमश्चक्रीश- (सृ) | १६.२३१ |
| दर्शनोयहरेतेस्तुरम्य (पा) | ११४.२४६ | दलितांजनपूजाभ (पा) | ६६.८६ | दशध्रुवकमंडितोलघु-(पा) | १०.१७ | दशग्रोजनविस्तीर्णं (उ) | १८.८८ | दशसूनासहस्राणिगो-(सृ) | १६ ३३२ |
| दर्शनैकभवेत्पुण्यं (उ) | १३५.१६ | दलेनैकेनभने (ब) | १५.५ | दशनज्योत्स्नया (पा) | ८१.४० | दशरथनयावावां (पा) | ११६.१६० | दशाहस्तेनदंडो (उ) | ३२.८ |
| दर्शनेनापिर्वैतस्य (सृ) | ३२.१२१ | दलोत्तमोत्तमंचैव (पा) | ६६.३२ | दशनारीअहस्राणांमध्ये (सृ) | २१.५ | दशरथोपितयमानं (पा) | ११६.२८ | दशाख्यगतो धीमा-(सृ) | ६१.१० |
| दर्शनंनेत्रे त्वे विप्रनाम (पा) | ६८.५६ | दशकल्पांतरेजातो (पा) | ७२.१२ | दशनारोधास्त्वदशनानिः (पा) | ६०.४१ | दशरथोपिषाध्यसुदं (पा) | ११६.२२ | दशानुत्समयानंददा (उ) | ११८.११ |
| दर्शनंभवन्नस्तत्र (सृ) | १४.१८५ | दशकूपसमावापी (सृ) | ४३.४४२ | दशपुत्रप्रसूर्वारा (पा) | ११२.६८ | दशवत्सरेदेशीया (उ) | २१६.६५ | दशानिन्वारयेन्नित्यं (पा) | ३१.२० |
| दर्शनेस्मिन्नमदेहप्राचारा-(भू) | ३७.१८ | दशकोटिसहस्राणि (स्व) | ११.२१ | दशपुत्रसमाकम्याया-(सृ) | ४३.१५४ | दशवर्षसहस्रं तु यावत् (भू) | १२.५६ | दशादाश्च गता यावत्-(भू) | ५१.२६ |
| दर्शयन्नात्मनोरूप (उ) | ११३.२० | दशकोटिसहस्राणि (स्व) | ४६.१६ | दशभिर्जन्मनिर्जितं-(सृ) | १७.२७६ | दशवर्षसहस्रं तो यावत्तु(भू) | १२.५५ | दशारण्यगोत्रीयोपगान (सृ) | १६.१० |
| दर्शयस्वममाद्यैव (भू) | ५०.४८ | दशग्रामसहस्राणां (स्व) | ४३.४२ | दशभिर्मध्यमः प्रोक्तः (सृ) | २१.१६३ | दशवर्षसहस्राणि (सृ) | ३६.६२ | दशावतारो दशभिर- (पा) | ७८.४२ |
| दर्शयस्वमहंभागयदहं (भू) | ७६.३२ | दशग्रीवविनाशाय-(सृ) | ३८.१०७ | दशमाध्यायमहिमा (उ) | १८४.६७ | दशवर्षसहस्राणि (सृ) | ४५.३ | दशावधमेधकनत्र (स्व) | ४३.४७ |
| दर्शयस्तस्थूलोक्तस्य (उ) | २४४.२४ | दशग्रीवश्चवालीच-(सृ) | ४५.७५ | दशमीमपियातस्य (पा) | ६६.८० | दशवर्षसहस्राणि (उ) | ४८.७ | दशावधमेधकनपुण्यं (उ) | १३५.५२ |
| दशवानासदेवेशो (भू) | १०२.१३ | दशग्रीवस्यचिच्छेद (उ) | २४२.३१८ | दशमीमश्रितंयेन (उ) | ३४.५० | दशवर्षसहस्राणि (उ) | ४४.४६ | दशावधमेधात्तद्विचमतो (स्व) | २०.२३ |
| दर्शयित्वास्वकदेहं सर्वं-(भू) | ३२.५६ | दशजन्ममनुष्येषु-(सृ) | ४.१०७ | दशमीमश्रितातांतु (उ) | २३४.१७ | दशवर्षसहस्राणि (उ) | ६४.६१ | दशावधमेधोन्नात्वात्न-(स्व) | ८६.१२ |
| दर्शयित्वेतिनिरयान् (उ) | ११४.२७ | दशतिस्मसमागत्य (उ) | १८१.६ | दशमीविधजदोषं (उ) | ३४.४६ | दशवर्षसहस्राणि (उ) | ६४.८८ | दशाहंशवमाश्रीच (सृ) | १०.२ |
| दर्शयेतिताथैवेतिविप्र- (पा) | १०४.१४४ | दशतीर्थसहस्राणि (स्व) | ३६.८० | दशमीविधजदोषं (उ) | ३४.४६ | दशवर्षसहस्राणि (उ) | १६.८६ | दशाहभ्यन्तरेतात (उ) | २०४.१३४ |
| दर्शचोपांममास्यां (पा) | ८५.१३ | दशतीर्थसहस्राणि (स्व) | ४३.२४ | दशम्यांप्रातरुत्थाय (क्रि) | २२.७६ | दशवर्षसहस्राणि (उ) | २४४.३५ | दर्शकाधिकमासांस्तु-(पा) | ३६.७६ |
| दर्शनेनपौर्ममासेन (स्व) | ५८.६ | दशतीर्थसहस्राणि (स्व) | ४७.३ | दशम्यांवीजपूरतु- (उ) | २५.२६ | दशवर्षसहस्राणि (स्व) | ४.१८ | दर्शवमातृकेपराजेट (उ) | ५६.१८ |
| दर्शवोपांममास्यांवा-(सृ) | १५.१७३ | दशादिध्रुववृत्तोयं (स्व) | १५.१८ | दशम्यांयानिवस्तूनि (क्रि) | २२.८२ | दशवर्षसहस्राणि (स्व) | ४.११ | दशोक्तं रगुणोपेतं (उ) | २२७.४६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|------------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| दष्टवामंदांश्चमनुजा (सु) | ३१.१६ | दाक्षिण्येन च विप्रैर्द्र (भू) | ४८.१८ | दातुमिच्छामि विप्रैर्म्यो (क्रि) | २०.३२ | दानं वेदपराणानामा- (उ) | १.६६ | दानवाः कुनिनोजमुः (सु) | ४१.१६० |
| दष्टस्याशीविषेणस्य स्व | ३८.२५ | दाडिनानांसमूहाश्च (पा) | ३६.१६ | दातुसंभवमर्थोसि (भू) | १.४३ | दानं वततपोवापि (उ) | ८८.३१ | दानवादैवतैः साद- (सु) | ४१.५० |
| दष्टामनुष्टा. वनिष्टा- (उ) | ११८.५२ | दातव्यं भक्ष्यमवान्नं | २६.५ | दाधीचो कृषिवर्यो (उ) | १५७.८ | दानं स्वर्गसोपानम् (स्व) | ६१.६५ | दानवानश्रुतीन्सर्वां (सु) | ३०.१०२ |
| दस्युमिर्भगवन्सर्वाः (सु) | २३.६१ | दातव्यं यद्ददस्वैभ्यो (उ) | २०६.३४ | दानतपोद्वयोर्मध्ये (क्रि) | २०.२ | दानहिभूताभयदक्षिणायाः (सु) | १५.३८१ | दानवाननुपिप्रोपुः (सु) | ४१.१८२ |
| दस्युवृत्तिगतं दृष्ट्वा (क्रि) | १३.१३८ | दातव्यमेतत्सकलं- (सु) | २४.५२ | दानतपोद्वेयप्रियः (क्रि) | २०.१६० | दानकालेपि सप्राप्ते (उ) | ६७.११ | दानयानां महावीर्य- (भू) | ५१.२३ |
| दक्षीश्रुतिवात्समंजाती (सु) | ८.७२ | दातव्यानिमहीदेव (पा) | ६७.६२ | दानतपोव्रतहोमो (उ) | ६१.१६ | दानधर्मनिषेधेन (स्व) | ५७.६ | दानवानां विनायाय- (सु) | ३०.५६ |
| दहते निर्दयो वक्त्रिः (स्व) | १५.४४ | दानव्यात्रेदविदुषेन (सु) | २४.१४ | दानतेन प्रदातव्यमाशा- (भू) | ४०.३५ | दानधर्मस्तथापुण्य- (भू) | १०.३६ | दानवानां वारीरेपु (सु) | ४३.४७० |
| दहनादेरनिर्माण- (पा) | १०४.१२० | दातव्याः शांतमिच्छद्भिः (सु) | ३४.३५६ | दानं दत्ततेन सर्वतेन (क्रि) | ८.२ | दानवृत्तिविनोदाचरा (पा) | ७७.३५ | दानवाग्रप्रेयामास (उ) | २४५.२५४ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातव्याश्चोत्रियायैव (उ) | ११८.८ | दानं दत्तवतीदक्षावेद्या (पा) | ६५.१३० | दानवृत्तिविनोदाचरा- (पा) | ७७.३५ | दानवालयेतुभगवान्- (सु) | १३.२८१ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दानव्यो दीपकोऽखंडो- (उ) | १२७.१३ | दानं दत्तसर्वेषां (पा) | ६७.३४ | दानपुण्यं प्रसंगेतीर्यादि (पा) | ४८.६५ | दानवा विक्रमोपेताः (सु) | ४१.३०६ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातव्यो दीवदेवाय (क्रि) | १०.२३ | दानं दद्याद्यथाशक्त्या- (स्व) | १६.३४ | दानभोगादिभिश्चैव- (भू) | ३०.४८ | दानवाश्चापिसमरेमय- (सु) | ४१.२६६ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातादानं न दद्याद् (ब्र) | २४.५६ | दानं दद्यादपइति (उ) | ६४.६४ | दानं भोगैः प्रवर्तते (भू) | १२४.२६ | दानवासुरदैवैः पुराक्षसैः (सु) | २३.१०२ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दाताभोक्तागुणग्राही (भू) | २०.११ | दानं दद्यादमः सत्यतश्च (पा) | १७.४५ | दानमागं परित्यज्य (भू) | ६७.१०६ | दानवैः श्रोत्रलोराजा- (उ) | २१८.१३ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दाता भोक्ता महात्मा (भू) | १०३.१३३ | दानं ददति द्रस्यविभोक्षमि (पा) | ६६.१३५ | दानमेकं महाभाग (भू) | ६५.२१ | दानवेभ्यस्तदा- (सु) | ४.७६ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातारं च महात्मानं भर्तारं (भू) | २३.१५ | दानं दाताप्रतिग्राही (ब्र) | २४.५७ | दानमेतत्पुसर्वमेव (सु) | ११.४५ | दानवैर्निजिता देवास्ते (भू) | ६६.१७८ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातारं ज्ञानसंपन्नं धर्मतेजः (भू) | ३२.६६ | दानं दास्यामि विविधत (उ) | ५१.१४ | दानमेव परं श्रेष्ठं (पा) | ६७.३० | दानवैर्निजिता रोगाः (उ) | ५.७७ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातारमिव सर्वस्वैरा (उ) | १२५.३४ | दानं नैव त्वया दत्तं (भू) | १७.३० | दानमेव परं श्रेष्ठं दानं (भू) | ३६.४० | दानवैर्निजिताः सर्वेश (उ) | ५.७६ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दानारः सतिसर्वत्र (उ) | ८.२१ | दानं नैव त्वया दत्तं शास्त्रे (पा) | ८६.४१ | दानमेव प्रदातव्यं (भू) | १२४.१२ | दानवैर्निजिताः सर्वेश (उ) | ५.७६ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातारो नो भिषद्वंता (सु) | ६.११३ | दानं बहुतरं दद्याच्छुद्धं (ब्र) | १६.१६ | दानवः पृष्ठतो लानो (उ) | ३८.८३ | दानशक्तिः सविभवा रूप (सु) | १०.४५ |
| दहन्ती वनेत्रोभिः (सु) | ४६.१६ | दातुमिच्छामि तु ग्राम्यां (क्रि) | ३.३१ | दानं यथा नियमपालन (पा) | १००.३४ | दानवंसूतदिव्यामि (भू) | ११०.१३ | दानस्यापि फल तेन (भू) | ६३.२४ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|-----------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|
| दानस्यैवफलं सर्वं (उ) | १२६.२२७ | दामोदरप्रदुष्टेष्ठ (क्रि) | ११.२७ | दारुणाद्विरकीतिनांगना (स्व) | २२.४४ | दास्यो देवाः सम्स्ता (पा) | १०६.५६ | दितेशिच्छद्रांतर (सृ) | ७.५३ |
| दानाज्जानं ततः प्राप्य (भू) | ६५.३१ | दामोदरस्तथास्थूलो (उ) | १२०.६६ | दारुणो ह्यिषिकीरि (उ) | १२८.५३ | दाह्याने भवेन्मुषिनः (उ) | २३.६ | दिनंपयोव्रतं तिष्ठेत्सयाति (सृ) | २०.६६ |
| दानादेवगतः स्वर्गत्वतः (सृ) | ३५.८ | दामोदरस्य प्रीत्यर्थम् (त्र) | २१.६ | दारुणं पुत्रलोभेन (भू) | १८.३२ | दाहप्रलयसर्वजं विष्णु- (भू) | ६५.२३ | दिनंपयोव्रतं स्तिष्ठेद्भुव- (सृ) | २०.१०३ |
| दानानां च फलं ब्रूहि (उ) | ११७.१४ | दामोदराय कवयेयजे (उ) | ४५.२६ | दावाहं पुत्रोभीम (सृ) | १३.२४ | दाह्यानां सांजातं (उ) | ६०.२० | दिनं प्राप्य महामोहं (भू) | १७.४५ |
| दानानिये प्रयच्छति- (सृ) | ३०.१६१ | दामोदराय वैपादोजानु (उ) | ३४.६६ | दासत्वं देहि वैकुण्ठ (भू) | ८८.४६ | दिक्षु ब्रूक्षु गोभतेवाल- (सृ) | १५.३५ | दिनं प्राप्य महामोहं (पा) | ८६.५६ |
| दानान्यदा ददाद्वाह्येभ्यो- (भू) | १२५.३ | दामोदरेस्वरमुलामर (क्रि) | १५.७८ | दासत्वं पापसंघातं- (भू) | ३०.१३ | दिक्षु सर्वा सुमुद्रासु (सृ) | ७६.१३ | दिनद्वयांतरं विप्रो निराहारः (क्रि) | २०.८० |
| दानेन नश्यते पापं (भू) | ३६.४१ | दांभिकाः कुहकाश्चो- (उ) | १२६.८३ | दासपत्नी भवेद्दासी (क्रि) | ८.४६ | दिक्षु सर्वा सुमुद्रासु (सृ) | ४१.१६० | दिनश्चौरिव सूर्येण (उ) | २०६.२६ |
| दानेन नियमैश्चापि (भू) | १२.४७ | दायादः सर्वदेवानां (सृ) | ३१.४१ | दासभूतमिदं तस्य (उ) | २२६.६२ | दिगुदीचीतया कृत्स्ना (पा) | ११७.६ | दिनसप्तकमध्ये स (भू) | ५६.३६ |
| दानेन प्राप्यते स्वर्गो- (उ) | १२५.८७ | दायादं हतवितस्तु (उ) | १२६.७३ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | २४४.३१ | दिग्गजा हि मुनिश्रेष्ठा- (स्व) | ६३४ | दिनस्यैकस्य वै पापं (भू) | १२५.६ |
| दानेन संयुता विप्राः (सृ) | १६.२८ | दारयंतुकपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिनानि पंचतस्या गुज्रतिवा (सृ) | ३३.१४ |
| दानेन मुखमाप्नोति (भू) | ६४.३६ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिनानि पंचोत्तिवा- (सृ) | ३८.१८४ |
| दानैश्च यजं बंधुभि (भू) | ७४.२ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तया पूजा (पा) | ११२.८७ |
| दानैश्च तपोभिर्यजे (उ) | १८०.२० | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दानोनाम द्विजः कश्चिद (क्रि) | १७.५६ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दापयामास दानानि- (पा) | २२.८ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दापयेत्कृत्यविदुषे- (सृ) | ३४.३०६ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दापयेदपरेद्युगम- (सृ) | ३४.२६३ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दामोदरदेवदेव (क्रि) | १३७३ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दामोदरनमस्ते (उ) | २५.१६ | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |
| दामोदरपुरं गत्वा तिष्ठेन् (क्रि) | १३.८० | दारयंतु कपोलांच (पा) | २३.१६ | दासीगर्भः पूर्वभागे (उ) | ११२.५८ | दिग्गजैर्न लिनीभ्रात्या (क्रि) | ६.६५ | दिने दिने तस्या पुण्यं (भू) | १३.१२ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| दिलीपः कुरुवार्द्धल (स्व) | ३६.१०६ | दिवा रात्रौ न निद्रास्ति (भू) | १२२.२२ | दिव्यदेहंसमासाद्य (उ) | १८७.६१ | दिव्यतोयेनहृषितपया (सु) | ३६.६४ | दिव्यरूपधरोरेजे (उ) | १२७.१६० |
| दिलीपत्वामह (उ) | २०३.२० | दिवा रात्रौ प्रचितेत्स (भू) | ८५.१८ | दिव्यमायामयं रूपं (भू) | १०३.४७ | दिव्यदेहस्ततोभूत्वा (उ) | ४६.३७ | दिव्यरूपमनुप्राप्य (उ) | १३५.२२५ |
| दिलीपायवसिष्ठो (पा) | ११३.५३ | दिवारात्रौमहाप्राज्ञ (भू) | ८.८५ | दिव्यवर्षशतसाग्रेसयजो (सु) | १७.३२ | दिव्यदेहस्ततोभूत्वा (उ) | १२६.२५२ | दिव्यरूपवपुर्भूत्वा (उ) | २८.२३ |
| दिलीपेनपुरापृष्टो (पा) | ११३.२४ | दिवारात्रौ सुमधुरं (भू) | ७५.७ | दिव्यवर्षसहस्रं (उ) | २४०.५८ | दिव्यपीतांबरधरः (उ) | २४४.८५ | दिव्यरूपयुसंयन्ना (भू) | १०१.३२ |
| दिलीपेनपुरापृष्टो (त्र) | १३.८ | दिवावापि कुतः सोऽयं (भू) | ६६.१११ | दिव्यविमानमारूढ (उ) | २११.४१ | दिव्यपुष्पलताकीर्ण- (सु) | ४३.२६२ | दिव्यरूपमहाकायः (भू) | ५६.४ |
| दिलीपोऽह तुभद्रतेदासो- (स्व) | १०.२३ | दिवाविप्रनरः कुर्यात् (त्र) | २१.३ | दिव्यं विमानमारूढा (भू) | ५२.४५ | दिव्यभोगसमुत्पन्नः (स्व) | १३.३३ | दिव्यलक्षणसम्पन्ना (सु) | ७७.३६ |
| दिलीपोभूभृतांश्रेष्ठो (उ) | १२५.११ | दिवासंघ्यामुकणस्थ (उ) | ६२.५ | दिव्यं विमानमारूढा (त्र) | १३.८४ | दिव्यभोगदिव्य (उ) | ६०.४८ | दिव्यवर्णमयैर्दृष्टैः (सु) | ४५.४० |
| दिवं गच्छ महाराज (भू) | ६४.५० | दिवासपादितस्तोयं (पा) | ११४.२८७ | दिव्यसर्वत्रगंगायास्त (सु) | ११.५६ | दिव्यमण्डादणाध्याय (उ) | १६२.६१ | दिव्यवर्षसहस्रं च (सु) | १४.२३ |
| दिवस्पतेः सुवितत- (उ) | २२४.७१ | दिविद्रोयथाभाति (भू) | २८.५२ | दिव्यंकुम्भलिप्तांगी (उ) | २२६.१४४ | दिव्यमाल्यांवरधरं (भू) | ६२.४२ | दिव्यवर्षसहस्राणि वायु (उ) | २३८.२ |
| दिवाकरइवध्वातं (पा) | ६६.८८ | दिविचंद्रोयथाभाति- (भू) | ३६.४५ | दिव्यकैसरमंदार रजः (उ) | ११.३२ | दिव्यमाल्यांवर धरो- (भू) | २०.१६ | दिव्यवस्त्रवृत्तराज (उ) | २४५.३३२ |
| दिवाकरकरात्यंत (क्रि) | ५.३४ | दिवितारयतेदेवांस (स्व) | ४३.५२ | दिव्यांगधानुलिप्तश्च- (स्व) | १३.१७ | दिव्यमाल्यांवर धरो- (भू) | ४६.३१ | दिव्यवस्त्रैश्च गर्वैश्च (भू) | ६३.१८ |
| दिताकरनमस्तेस्तु- (सु) | २०.१७० | दिवितृयनिनादोभूद् (पा) | ३७.६६ | दिव्यगंधानुलिप्तांगो (भू) | २०.३१ | दिव्यमाल्यांवरधरो (उ) | २४२.३६३ | दिव्यव्यूहप्रतीकाशा- (सु) | ४०.१८३ |
| दिवाकरनमस्तेस्तु (सु) | २१.२८१ | दिविदिव्यांगनावक्र (उ) | १८२.१६ | दिव्यगंधैः सुशोभाढ्य (भू) | १०१.१४ | दिव्यभूतिरतोर्भुध्व (भू) | ७१.२६ | दिव्यव्यूह समायुक्तः | १५.२५७ |
| दिवाकरनमस्तेस्तु (पा) | ६५.४४ | दिविदुंदुभयानेदुर्ज (क्रि) | ३.६२ | दिव्यचक्षुर्दंदीतस्मै (उ) | २४०.३५ | दिव्ययानसमारूढस्तूय- (स्व) | १६.३० | तिव्यवजवयोरूपं (पा) | ६६.८४ |
| दिवाकरनिभेदिव्ये- (सु) | ४५.६७ | दिविदुंदुभयानेदुः पुष्प- (उ) | ५६.२१ | दिव्यचंदनदिग्धांगा (उ) | २४५.३०१ | दिव्ययोगामहाराज (सु) | १६.२८ | दिव्यव्रतोपचारेण- (सु) | १४.१७५ |
| दिवाकरैस्तप्तकुल (क्रि) | ८.१०० | दिविभुज्यतरिक्षेच (पा) | ६५.१७ | दिव्यचंदनदिग्धांगा (भू) | ८३.२३ | दिव्यरत्नकृताशोभा- (भू) | १२.८४ | दिव्यशस्त्राणिचिच्छिद (उ) | २४६.५७ |
| दिवानिशिसंध्यायां (पा) | ८०.७ | दिवोदासस्तु धर्मिमा (भू) | ८५.६० | दिव्यचंदनदिग्धाणि (भू) | ६०.२३ | दिव्यरत्नैः फलैश्चैव (क्रि) | २३.७६ | दिव्यस्यन्दनमारूढा (उ) | २४२.३१४ |
| दिवाप्रकाशकः सूर्यः (भू) | ८५.१२ | दिवोदासेतिविख्यातः (पा) | ६२.३६ | दिव्यचंदनलिप्तांगी (उ) | २३२.४२ | दिव्यरंभावनकोर्णा (भू) | १०२.१४ | दिव्यस्यंदनमारूढा (उ) | २४६.६२ |
| दिवाभिगमनंपुसांमना- (पा) | ६.४३ | दिव्यं दिव्यगुणं (भू) | १०१.२२ | दिव्यचंदनलिप्तांगो (उ) | २२८.३८ | दिव्यरूपं समास्थाय (उ) | २०५.४ | दिव्यस्रग्वसनोपेतानी (उ) | २२६.१४१ |
| दिवारात्रौचयेभक्ता (उ) | १३२.४४ | दिव्यदेहमिदं दैत्य (उ) | १८.६८ | दिव्यजायुः शातायुश्च- (सु) | १२.७६ | दिव्यरूपधराभूत्वा- (भू) | १४.२१ | दिव्याङ्गनाभिः सहितो (क्रि) | ८.१०१ |

२२०

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------------|---------|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| दिव्यांगोत्पत्त्योभूत्वा (उ) | २२२.८ | दिव्यायुधैरुपेतं (उ) | २४६.११ | दिव्यामावरणश्रुतं (पा) | ११४.३२ | दीनसर्वस्वरूपं परस्त्री (भू) | ६७.६२ | दीपकं तु दिवा रात्रौ (उ) | १२४.५३ |
| दिव्यांगोभित्तवचास (उ) | २००.१०२ | दिव्यास्त्रशस्त्रचरित्रं-सु) | ४०.१६८ | दिविश्वेयमयाश्रयां (सु) | ३४.२६६ | दीनस्य देवकृपाण्यस्य (सु) | ४६.६६ | दीपकानां शतकृत्वा घृतं (स्व) | २१.२२ |
| दिव्यांगवितानं घंटाच (सु) | २२.१६० | दिव्येन तेजसा युक्तां (भू) | १०५.६ | दिशोऽजरेजटाकेशा (पा) | ११४.२७० | दीनानो विरूपस्तु (उ) | १२७.११२ | दीपज्योतिः स्वर्णेशः (उ) | ३०.८२ |
| दिव्यामूर्तिपरितरज्य (क्रि) | २३.१०० | दिव्येन यानेन दिवंगतो- (भू) | ४४.११ | दिशोभीनानिर्वस्वज्य (सु) | ४२.१०८ | दीनानां वैकशरणं (उ) | ७१.१५८ | दीपदः कांतिमान्ति (उ) | ३०.४६ |
| दिव्यादेवी च तन्नाम (भू) | ८६.४१ | दिव्यैराभरणैर्युक्ता (भू) | १२.८३ | दिव्यं हि प्राक्तनं कर्म (भू) | ६७.६६ | दीनां धकृपाणां ज्ञान- (पा) | १०५.१६८ | दीपदः पीठदस्त्रं च (क्रि) | २०.१४३ |
| दिव्यादेवी चतुर्धाता (पा) | ६२.५७ | दिव्यैराभरणैर्वस्त्रैः (भू) | ११२.४ | दिव्यैष्ट्ये दानोऽसमक्षमे- (सु) | ४१.२५४ | दीनां कृपाणां दीनां (पा) | ११७.२०१ | दीपदः सुभगां भार्या (उ) | ३०.४८ |
| दिव्यादेवी वरंताम (पा) | ६२.११७ | दिव्यैर्गर्वैश्च दीयैश्च (क्रि) | ६.५५ | दिव्युपाचाहं भविष्यामि (सु) | ३७.१३८ | दीनां धकृपाणां च (पा) | १०.५ | दीपदानं कृतयेन (उ) | १२१.३० |
| दिव्यादेव्यामारुघानं (भू) | ८६.२१ | दिव्यैर्निवेदितं (उ) | २३८.१४६ | दिव्युपायैस्तेफलजम्ब (स्व) | ४५.२१ | दीनां धकृपाणां च (पा) | २०.५ | दीपदानं महासेन (उ) | १२१.१४ |
| दिव्यादेव्यास्त्वयाख्यातं (भू) | ८६.२२ | दिव्यैर्महृषिभिस्त (उ) | २५५.८७ | दिव्युपायाप्तो महाबाजी (पा) | ३५.७ | दत्तो ना धकृपाण्यस्य (पा) | ६७.३१ | दीपदानं स्माहात्म्यं (उ) | ११७.६ |
| दिव्यानां पाथिवाणां (सु) | ३७.१६७ | दिव्यैर्मूर्तैः समाकीर्णं (उ) | २२८.२० | दिव्युपालब्धम् (उ) | २४५.२८२ | दीनास्त्वनयाः क्रोशतः (उ) | १६२.३६ | दीपदानाच्च सो भाग्य (उ) | ३०.४७ |
| दिव्यानुलेपनराजचित्रित (पा) | ७०.३२ | दिव्यैः सुगन्धैः कनकः (क्रि) | १०.७८ | दिव्युपायवैशिकानुकुस्थ (सु) | ३५.२७ | दीनेन्द्रियगणसार्यैर्बुधु- (स्व) | २०.४४ | दीपदानं न पासासपत्रे (उ) | ५३.३२ |
| दिव्यान्मोघान्प्रभुजाना (भू) | ६०.४३ | दिव्यैस्तुभ्यं च दनवर्गं कृंक्षः (भू) | २४.३६ | दिव्युपाहतस्त्वयार्थदयो (पा) | ३५.६ | दीनेम्यो हि न दत्तं (भू) | ६७.१०४ | दीपदानं सुवर्णन (उ) | ३०.८२ |
| दिव्यान्मोघान्प्रभुजाना (पा) | ६२.१२२ | द्वित्रिचः कर्मसंघः (पा) | ६६.१३६ | दीक्षानां नारादेनाय (उ) | १६५.२१ | दीनेषु च विशेषेण- (भू) | ७६.२८ | दीपप्रज्वालनं तद्व- (सु) | ६१.७२ |
| दिव्यान्मोघानुपाय- (भू) | २२.११ | दिव्योपयासम् श्रीमद (पा) | ७०.४४ | दीक्षाविधानमन्त्रजो (स्व) | ३१.१३१ | दीनो भविष्यति तथा (उ) | ४२.४७ | दीपप्रज्वालने बुद्धि (उ) | ३०.६२ |
| दिव्यान्मोघरोगाः (उ) | २२८.५१ | दिव्योपयस्य गणापेतसर्वं (पा) | १५.२६ | दीक्षावैश्वस्यं यत्कृत्वा (सु) | १५.१०३ | दीपगंधादिदानस्य (पा) | १०४.२५ | दीपप्रज्वालनात्वेन (उ) | ३०.८१ |
| दिव्यान्मोघांसहस्राणि (सु) | ३६ | दिव्योयदपितामातागुरुः (सु) | १०.४१ | दीक्षितेन मया सम्यक् (उ) | १०६.२३ | दीपकंचानंददा (सु) | २०.१३५ | दीपप्रज्वालनं दिव्यं (उ) | ३०.११६ |
| दिव्याभरणशोभांगो- (भू) | २८.४६ | दिव्योपयं ब्रह्म रसायनं (उ) | १२८.६६ | दीक्षितो ब्राह्मणः सोमदत्ते (सु) | ३२.२०३ | दीपदं दानं यो मर्त्यो (उ) | ५४.२४ | दीपः सर्वतरं (उ) | ३०.२४ |
| दिव्याभरणशोभांगो- (क्रि) | ७.५३ | दिव्योपयधौः समानीग (उ) | ६७.२५ | दीननाथसुरमोहिनीरका (पा) | २१.२६ | दीपदं दीपायायांति (भू) | ३.७१ | दीपस्तमोनाशयति (उ) | ३०.१६ |
| दिव्याभरणशोभांगो- (उ) | २३२.६५ | दिव्यः प्रसेदुः परितः (पा) | ११.७४ | दीनः पादांबुजद्वंद्वे (पा) | ७४.१६ | दीपनं ज्वाल्यमा ने बुद्धियो (उ) | ३०.६१ | दीपहं न यया मेहं नैव- (भू) | ४२.४३ |
| दिव्याभरणशोभांगो- (उ) | २३२.६ | दिव्यः प्रसेदुः सुर (उ) | १८.१३१ | दीनरूपो ह्यहं जातो (भू) | १२२.३६ | दीपवैश्वप्रज्वलं (पा) | ५५.२१ | दीपादुग्धाद्यनेदीपो (उ) | २३०.४ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|
| दीपाद्दीपविलोक्य (पा) | ७२.११४ | दीयमानतुयददानं (सु) | २४.४२ | दुःखजातानि सोष्णानि (भू) | १०६.५८ | दुःखेन दारुणं तीव्रं (भू) | १२.११७ | दुग्धेसपिः स्थितयद्र (उ) | १३२.५७ |
| दीपान्नभोजनैर्युक्तां (सु) | २४.१२ | दीयतेगुरुपाषाणाः (क्रि) | २३.१६० | दुःखजानि न जानानि (भू) | १२१.१४ | दुःखेन पीडिताः किञ्चिन् (पा) | ६७.५५ | दुग्धुः पश्यान्ने तुपांश्चैव (भू) | २६.६५ |
| दीपार्थदानवैविष्णोः (उ) | ३५.१२ | दीयमानचंपश्यति (सु) | ३४.४१२ | दुःखजालैरसंख्ये (पा) | ८७.४६ | दुःखेनमहताचैव (पा) | ८७.८० | दुग्धविकलशुभ्रं (उ) | १५.२२ |
| दीपाध्यचिन्मनस्नानं (उ) | २५३.६१ | दीर्घघोषाविभक्तानी (सु) | १८.२७८ | दुःखत्रयमितप्तस्य- (सु) | १८.४४३ | दुःखेनमहताविष्टचित्त- (भू) | १४.६ | दुग्धभीनचिन्तितोदित्य- (सु) | ४१.२०७ |
| दीपावलिफलनाथ (उ) | १२२.१ | दीर्घफालाविकालाश्च- (सु) | १८.१०० | दुःखप्रदमहार्गेण (क्रि) | ६.८२ | दुःखेनमहताविष्टा- (भू) | ५०.६३ | दुग्धेऽपि सर्वमत्यानी (पा) | ११४.२ |
| दीपावल्याश्चमाहात्म्यं (उ) | ११७.१५ | दीर्घसत्रमुपासंतेदीक्षिता- (स्व) | २५.१६ | दुःखमूलमहं तात (भू) | १२.१०६ | दुःखेन महताविष्टो (भू) | ८.३ | दुग्धस्थोपियथागेह (उ) | १३२.६ |
| दीपीकोपानहच्छत्र- (सु) | २३.१२५ | दीर्घाकांचनवर्णायाविद् (उ) | १२०.६२ | दुःखमेवमहाभाग (पा) | ८७.७६ | दुःखेनमहतास्तोकान् (उ) | १६१.१३ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीर्घनीराजनकृत्वा- (उ) | २५३.६७ | दीर्घाभिधुष्कृतं (उ) | १२६.३२ | दुःखमेवमहाभागेत्यज (भू) | ३४.१८ | दुःखेनोपाजितं पुण्यम (भू) | ७७.१०१ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीपोत्सवं जनिता सर्वजन (उ) | १२२.७० | दीर्घायुरारोग्यकुलाति- (सु) | २६.१ | दुःखशोकसमाविष्टः (उ) | ४६.२६ | दुःखेनोपाजितं वित्त (क्रि) | १२.६२ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीप्ततोयाः सनिधतिः (सु) | ४०.१२७ | दीर्घायुपाधनाद्या (उ) | ५६.२६ | दुःखशोकविधूयेह (भू) | ६७.१६ | दुःखेनोपाजितं ज्ञात्वा (भू) | ६६.२२२ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीप्तपीतांबरधरतप्त (सु) | ४०.१३४ | दीर्घायुपोधनाद्याश्च- (स्व) | ३१.१७२ | दुःखसंतापको चोभो (भू) | ७७.६६ | दुःखेनोपाजितं दराजन् (पा) | ११०.१२ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीप्तानि सङ्घोर्दशने (सु) | ४१.२७६ | दीर्घायुप्रेमहाप्राज्ञा (स्व) | ८.२६ | दुःखादुपाजितकर्म (क्रि) | २०.६६ | दुःखोद्यतपित्तमसह्य (उ) | १२८.१० | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीप्तानलेकाष्टययो (उ) | १२८.१२ | दीर्घायुस्तस्यवाक्येन (सु) | ४६.१२० | दुःखानलं विविधमोहमयं (भू) | २२.२४ | दुःखं दत्त्वा प्रयात्येवं (भू) | ११.३ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीप्यमान विराजत (भू) | ३२.६२ | दुःकूलवस्त्र सहिता (उ) | २३८.१२७ | दुःखानां सागर मग्न्ये (भू) | ४.४६ | दुग्धमितः शिलांचैव ब्रह्मा (स्व) | ६.२५ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीप्यमानो गनिवन्नित्यं (स्व) | २४.११ | दुःकूलवासाः साकिरीट (पा) | ६८.२३ | दुःखानि च समस्तानि (भू) | ६६.२१८ | दुग्धमिदोदधिदश्चैव (क्रि) | २०.१४० | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीयतां पायसं स्वादुसु (पा) | ११७.१३६ | दुःकूले निर्मले नूत्ने (पा) | १५.४३ | दुःखाजितं क्षयनीतं (उ) | ४६.३५ | दुग्धमाश्वयुजित्याज्यं (उ) | ५३.३४ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीयतां भठावच्छन्नित्यं (पा) | १०८.२४ | दुःखं दत्त्वा प्रयात्येव (भू) | ११.३६ | दुःखाजितं पुण्यवृक्षं (क्रि) | ३.८३ | दुग्धमा चैवं सर्वधात्री- (भू) | २६.७२ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीयतामादिदेशावकलौ (सु) | २०.२७ | दुःखं ददे न कस्यापि (भू) | ४६.२४ | दुःखितानां हि मुक्तां (पा) | १०२.१७ | दुग्धेऽवरसमो वेतुतीर्थ (उ) | १५७.१ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीयते जगन्नाथ (क्रि) | ११.७८ | दुःखनयक्यते सोढुं (क्रि) | ६.१०३ | दुःखितेन मया प्रोक्ताः (उ) | १८५.५८ | दुग्धेऽवरसमुत्पत्ति (उ) | १५५.५ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |
| दीयते विष्णुमेवापि (स्व) | ५७.३५ | दुःखं प्राप्नोत्येतत् (पा) | ४३.४२ | दुःखितोऽन्नाममद्भूमि (पा) | ६४.३७ | दुग्धेऽवरसमुत्पत्ति (उ) | १५६.१ | दुग्धमुखाविकारालास्या (पा) | ३३.१२ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------------|--------|---------------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| दुर्गायासगतः यत्र देवि (उ) | १७३.१ | दुर्भिक्षं दुर्भगत्वं च (भू) | ६६.२०५ | दुर्लभं वक्त्रकपालोके (उ) | १६५.४८ | दुष्कृतं भुंजते चात्र (भू) | ६४.३ | दुस्तरान्नरकाद्धोरादुदं (सु) | ४३.१६१ |
| दुर्गामाभूद्भ्राष्ट्राग्र्याणां (पा) | ६०.५१ | दुर्मतेर्मथुनयस्तु (क्रि) | १७.२७ | दुर्वारणोयदेवेशं (उ) | ५.११ | दुष्कृतं यत्र पश्येथास्तत्र- (सु) | ३५.५५ | दुस्तरावैष्णवीमाया (उ) | १२७.३५ |
| दुर्गाण्यस्थितोयश्च (उ) | ११५.१० | दुर्मृत्पुरुषितुल्योभूतूल्यो- (स्व) | ३१.३ | दुर्वारणोदेवसभां (उ) | ५.६ | दुष्टदैत्यविनाशाय- (सु) | ४१.२४४ | दुस्तरासर्वभूतानां (उ) | ६६.३ |
| दुर्गाष्टम्पाश्विनेचुक्ता (त्र) | ४.७ | दुर्मृशोलास्त्रितमां (पा) | ५८.२६ | दुर्वारशरघातेन (पा) | ६१.५७ | दुष्टनिष्कृणितल्लज- (स्व) | १५.४२ | दुस्तरैवेधुहीने च (क्रि) | १३.१३३ |
| दुर्जनानहितृप्यति (क्रि) | १७.२१७ | दुर्योधनचराजानंभ्रातृ (स्व) | ४०.१६ | दुर्वासाजमदगि (उ) | ८१.६ | दुष्टप्रध्वंसरायालं (सु) | ३४.२८१ | दुःस्वप्नदुष्कृतं (उ) | ६४.२४ |
| दुर्जयात्तरकान्मुक्त्वा (उ) | १७६.१० | दुर्लभंगाण्डिकातीर्थं (उ) | ७५.२१ | दुर्वासादुःखमापन्नः (उ) | १६४.२१ | दुष्कृतं शक्यतेवक्तुं (उ) | ११३.१८ | दुःस्वप्ननाशनं चैव (क्रि) | १७.११६ |
| दुर्जयेयं महाप्राज्ञस्यज (भू) | ५८.१६ | दुर्लभंगोमतीप्तानं (उ) | ११८.३० | दुर्वासाश्चमुनिश्रेष्ठो (स्व) | ३६.११८ | दुष्टभावंतयोश्चापि (भू) | ८०.६ | दुःस्वप्ननाशनपुण्यं (उ) | ६२.२६ |
| दुर्जर्पातकंतीर्थेदुर्जर- (स्व) | ३१.७१ | दुर्लभंचैवदुष्प्राप्यत्रैलोक्ये (उ) | १२४.५ | दुर्वासाः सुमहात्मातुयदः (उ) | २३१.२४ | दुष्टवादीखण्डितः (पा) | ४७.४८ | दुःस्वप्नप्रशममुपैति- (सु) | २१.२० |
| दुर्दमस्यमुतोभीमोधन (सु) | १२.१०४ | दुर्लभं चैवदुष्प्राप्यत्रैलोक्ये (सु) | २.५५ | दुर्वासास्तवस्वच्छं (पा) | ६७.६४ | दुष्टस्याशयभयात् (उ) | १२७.१७४ | दुःस्वनंदुर्विचित्तं च (सु) | ३०.१६६ |
| दुर्द्धवंगोबाराणजालः (उ) | ७.६६ | दुर्लभं नास्ति राजेन्द्र (भू) | ८१.१४ | दुर्वासावदायातो (उ) | १८४.७५ | दुष्टात्मानो महापापाः (भू) | १०६.३१ | दुःस्वभावमनुचिन्तित- (उ) | २१५.४० |
| दुर्द्धवंश्वरसंशंसर्व (उ) | १५३.५ | दुर्लभविष्णुनैवेद्यं (क्रि) | ११.१३४ | दुर्वृत्तोहिमहोपालो (क्रि) | २१.७४ | दुष्टात्मानो महापाप (भू) | १०६.३२ | दुहितागामनेकेन (त्र) | ५.५ |
| दुर्धरो दुःसहोव्यापीयो (भू) | ५६.१६ | दुर्लभं साधुसन्मानं (उ) | ११८.२६ | दुःशासनस्यसंधिर् (उ) | १४६.२ | दुष्टानां संगति प्राप्ता (भू) | ८६.१० | दुहितुः सदनयातुम् (त्र) | ११.७१ |
| दुर्बलं स्यात्समालोच्य (क्रि) | १७.२०५ | दुर्लभानां चपरमं दुर्लभं- (पा) | ६६.७ | दुःशासनो गजत्वं च (उ) | १६१.४ | दुष्टांश्चप्राणिप्राणिनो (सु) | ४४.१७४ | दुहितृत्वात्मानोश्चैव- (सु) | ४३.३४७ |
| दुर्बलस्यत्वनाथस्वरजा (सु) | ३७.८८ | दुर्लभांसाकुलक्षेत्रेभ्रासे (सु) | १८.२३४ | दुःशीलां चैवतां दृष्ट्वा (क्रि) | १५.१५ | दुष्टेपापिनिमदशे (क्रि) | १५.१६ | दुहितृत्वंनायस्मात् (सु) | ८.३५ |
| दुर्बलाश्च न पुष्पति (भू) | ६७.८६ | दुर्लभाहिमहानद्यो (पा) | ६४.५६ | दुःशीलोव्यसनासक्तो- (स्व) | ३०.१८ | दुष्टेषु पातितोदंडो (उ) | ५५.६ | दुहितृत्वमनुप्राप्तादेवा- (भू) | २६.८० |
| दुर्बलाहचिरंजाता (उ) | १६३.५२ | दुर्लभं भास्तेवर्षे (पा) | ६०.३ | दुष्करं पुष्करेण तु (स्व) | ११.३४ | दुष्टेनष्टा न भूयत (भू) | ५६.३३ | दुहितृत्वात्मानोश्चैव- (सु) | १५.३३३ |
| दुर्भगस्यममप्रस्वाः (पा) | १.४० | दुर्लभं मुमि देवानां (पा) | ६०.२७ | दुष्करं भागमिदं हनं (उ) | १२४.३४ | दुष्टीयुत्सूक्तं क्रुद्धो (सु) | ४०.२७ | दुहितृत्वात्मानोश्चैव- (सु) | १५.३३३ |
| दुर्भगाकाकवंध्यावा (क्रि) | १८.४३ | दुर्लभं चैवमोक्षस्य वैराग्या (सु) | २.३५ | दुष्करः पुष्करे वासो (सु) | ३४.२२६ | दुष्टीयुत्सूक्तं क्रुद्धो (उ) | १२६.१५ | दुहितृत्वात्मानोश्चैव- (सु) | १५.३३३ |
| दुर्भगायाकरोत्येनांसास्त्री (उ) | ४८.४ | दुर्लभं भास्तेवर्षे (पा) | ६०.१४ | दुष्कृतं च महत्पुत्रि- (भू) | ३३.१५ | दुष्टीयुत्सूक्तं क्रुद्धो (उ) | ४३.२०६ | दुहितृत्वात्मानोश्चैव- (सु) | १५.३३३ |
| दुर्भगेनशरीरेण किम (सु) | ४३.२८० | दुर्लभं भातपसाचापि (स्व) | ३३.२३ | दुष्कृतं नश्यते सर्व- (सु) | ३४.२२४ | दुष्टीयुत्सूक्तं क्रुद्धो (उ) | ६१.७५ | दुहितृत्वात्मानोश्चैव- (सु) | १६.४० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|------------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| दूतास्तु ग्रामेषु वसति (भू) | ७४.१ | दृष्टिशिशुगतचित्त (पा) | ११०.१५ | दृष्टमेमहतीचिन्ता (उ) | ७८.३४ | दृष्ट्वाजालधगेदिव्य (उ) | ४.३८ | दृष्ट्वातुपुष्करतीर्थ- (सु) | १८.१०१ |
| दूताः स्मरन्तीनोराम (क्रि) | १५.७३ | दृष्टसपरिरम्यतां (पा) | १२.२२ | दृष्टवैशोयनवृद्धैः (स्व) | ५५.४३ | दृष्ट्वानत्पराम्बुध (पा) | ७४.८५ | दृष्ट्वातुराघवः प्राप्नो- (सु) | ३७.१५२ |
| दूतेनामस्तेनाशुबोधिता (सु) | ४४.७४ | दृढं पूज्यराजाज्ञातब्रधुधनं (पा) | २६.२६ | दृष्टतस्तेनदेवशिःमरं (उ) | १३२.२ | दृष्ट्वानत्रयद्रुमेनो (उ) | २४५.३०२ | दृष्ट्वातुवित्यंयाति त्र | २१.३२ |
| दूतोर्जालधरस्याहं (उ) | ५.१३ | दृढप्रहारिणो जघ्नु (उ) | १२.७ | दृष्टमत्रनिदानं ह्योरे (पा) | ४७.२० | दृष्ट्वानथाविधंयक्रं (क्रि) | ८.३३ | दृष्ट्वातुदृष्ट्वावहृष्टा (उ) | २४३.२ |
| दूतोर्जालधरस्याहं (उ) | १०.१४ | दृश्यतेतस्यनेत्रेषु (उ) | २३८.१०२ | दृष्टः सत्यदानवैर (सु) | १३.३०४ | दृष्ट्वानथाविधांस्नांश्च (त्र) | ११.२८ | दृष्ट्वा ते चैष्टिनं (भू) | ६२.१० |
| दूतोहमेषितस्तेन (उ) | ६७.७ | दृश्यतेदेहिनस्तस्य (क्रि) | ८.६८ | दृष्टः स्वचक्षुषावध्या (उ) | २११.१२ | दृष्ट्वातदपिमासं (उ) | १५४.६२ | दृष्ट्वा तेनमुनिद्रेणो (उ) | १८४.७७ |
| दूरंगच्छंतुसेत्सर्वहरि (क्रि) | ११.८३ | दृश्यन्तीधोरचितस्तु (उ) | १६३.६२ | दृष्ट्वा कपीश्वरादित्यं (उ) | १४२.१० | दृष्ट्वातद्वक्तमपिते (उ) | २००.१६ | दृष्ट्वा तोराश्रसो (उ) | २४२.१२७ |
| दूरं गच्छ पलायत्वमत्रमा (भू) | ५८.३८ | दृश्यतेनोमभिः पूर्णा (पा) | ४२.५८ | दृष्ट्वाकाम वसंप्राप्त (उ) | १२७.६३ | दृष्ट्वातद्दानवबुक्नुं (सु) | ४२.८१ | दृष्ट्वात्मानं प्रवश्यं (उ) | ५५.६ |
| दूरं स्वस्ति यथा नेहं (उ) | १३२.६ | दृश्यतेनिखलेलिंगं (पा) | १२०.७५ | दृष्ट्वा कामाग्नि (क्रि) | ४.४३ | दृष्ट्वातद्रघुनायस्य (पा) | १२.५२ | दृष्ट्वा त्रक्ष्णक्षेत्रं (उ) | १२६.२०६ |
| दूरस्थितंकायनाथं (पा) | १०६.६४ | दृश्यतेनिख सुविनः (पा) | ११३.५२ | दृष्ट्वाकृतनिः सतिनं (उ) | १६.१७२ | दृष्ट्वात्मानमहदुत्पात (उ) | १४.३ | दृष्ट्वात्वद्यमहाराज- (पा) | २६.३४ |
| दूरस्थानाचंयदेनं (स्व) | ५३.७ | दृश्यतेनिविधोदगता- (सु) | ४५.१४३ | दृष्ट्वागुरुंनुजोसुनो (उ) | २१०.१५ | दृष्ट्वातत्पसराग्नि- (पा) | ५६.५५ | दृष्ट्वायतत्रविमलदेवा (पा) | २२.२१ |
| दूरात्स दानवो दृष्टस्त (भू) | १०५.१० | दृश्यतेव्याग्निस्तत्र (पा) | २६.३१ | दृष्ट्वागोरीअनंसर्व- (सु) | १८.४०८ | दृष्ट्वातंब्राह्मणंसर्वं (उ) | १२८.११८ | दृष्ट्वादूरात्समायांतराम (पा) | २.२० |
| दूरादेवागच्छमानं (सु) | ३४.३६ | दृश्यमाणंतुतुष्ट (सु) | ३४.२०८ | दृष्ट्वाचक्षुतामसर (सु) | २३.६६ | दृष्ट्वातमुनिशालू (उ) | ३६.२८ | दृष्ट्वादूरादगतश्चाहं (उ) | १६३.५२ |
| दूराददूरतरंगव्यादेश (उ) | ११५.२८ | दृश्यमानमिदंसर्वं (उ) | २२७.४२ | दृष्ट्वाचक्षुर्भुजदेवं (उ) | १८०.४२ | दृष्ट्वातसमयंयमानुं (पा) | १०.२ | दृष्ट्वाद्यनमस्कृत्य (उ) | २४०.३७ |
| दूराद्वानपरिप्रांत (भू) | ८६.२६ | दृश्याद्वराचमभवतितत्र (स्व) | ३६.८८ | दृष्ट्वा चक्षुर्भुज देवं (उ) | १८०.४५ | दृष्ट्वातत्रविधंयमं (पा) | १०२.२५ | दृष्ट्वादोरास्तथा (उ) | ६७.२३ |
| दूराद्वि तुलसी पत्र (उ) | २४३.६ | दृष्टानेनरः स्नात्वा- (स्व) | २६.८३ | दृष्ट्वा चक्षुर्भुज देवं (उ) | १८०.४५ | दृष्ट्वातत्रविधंयमं (पा) | १०२.२५ | दृष्ट्वादेहोदभवते (पा) | १०४.१३४ |
| दूराद्विभरक्षतेः पुण्यं (क्रि) | २८.२६ | दृष्ट्वादिपिस्तांश्चविपाणां (स्व) | ६.१२ | दृष्ट्वाचक्षुदेवान्संप्राप्ता (सु) | ३६.१५ | दृष्ट्वातिथितुसीतांतं (क्रि) | २५.५१ | दृष्ट्वातयतंविष्णुः (पा) | १०५.२४२ |
| दूर्वाधरसकृदुक्रुज्जा (सु) | ३८.६६ | दृष्टं तु विप्लेनापि (भू) | ६२.२७ | दृष्ट्वाचाक्षुतामसरं (क्रि) | ६.३१ | दृष्ट्वातिथिहृष्टाभवं- (पा) | ७३.२१ | दृष्ट्वातानसिधवं (पा) | ११०.५६ |
| दूर्वाधुमत्रयदद्यात्तस्या (पा) | १०४.७१ | दृष्टं रेषापापाताम (उ) | ७१.१० | दृष्ट्वा च राजराजेंद्र- (भू) | ४२.११ | दृष्ट्वातीवक्रुषाक्रांतं (पा) | ६७.६६ | दृष्ट्वातानायांस्तथा (सु) | ३१.५२ |
| दूर्वाधत्संततितस्तस्य (क्रि) | १३.७१ | दृष्टं प्रणमितयनेस्नापितं (उ) | १२०.५ | दृष्ट्वाजगर्जुस्ते (उ) | १२.५८ | दृष्ट्वातुतावुवाचदं- | ४२.२१ | दृष्ट्वातानारायणदेवं (सु) | १४.१२ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२२४

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|------------------------------------|-------|---------------------------------|--------|----------------------------|---------|-----------------------------|--------|
| दृष्टवानारायणदेवं (उ) | ३०.१०६ | दृष्टवामांशरान्धेषी (सृ) | ३८.६० | दृष्टवासारोदनं क्त्वा (ब्र) | २०.१८ | देवकश्चिद्यमपुराद्-(पा) | १०६.१०८ | देवगंधर्वक्षीयैरनुयातः (सृ) | ४१.४ |
| दृष्टवानिमित्तानि (ः) | ५.४२ | दृष्टवाविभ्राजमानं (सृ) | १०.६५ | दृष्टवा सुरगणादेवान् (सृ) | १३.२२६ | देवकस्यैव दुहितं (उ) | २४५.५ | देवगंधर्वसिद्धेः (उ) | ६८.२४ |
| दृष्टवानिः सत्वकतीय (उ) | ४.५ | दृष्टवामुमोदतांगं (उ) | १६.६ | दृष्टवामुरूपं तपसां (भू) | ३४.४७ | देवकार्यकरश्चैव सर्व- (सृ) | १३.११७ | देवगंधर्वसिद्धाधान् (उ) | ६८.२६ |
| दृष्टवान्भगवान्हृष्टः (सृ) | ४५.३ | दृष्टवामुह्यं पुष्पांश्च (ब्र) | १२.१५ | दृष्टवामुलीनं पुष्पां (भू) | ५४.१८ | देवकार्यकृतेन रावणो (सृ) | ३८.६ | देवगंधर्वसिद्धाधान् (उ) | ३४.१४ |
| दृष्टवापप्रच्छविप्रायं (पा) | २०.६ | दृष्टवामूर्ध्नि लसूक्ष्मांश्च (सृ) | ४३.१४ | दृष्टवाहृण्यैः कृष्णोपि (उ) | २४६.१३ | देवकार्यकृतेन लंकायां-(सृ) | ३५.१२ | देवगंधर्वसिद्धाधान् (उ) | १३.२७ |
| दृष्टवापराधनिचये (पा) | ८०.५१ | दृष्टवा रामनपोध्यायां (पा) | ३६.८३ | दृष्टवाहितसमायांश्च (उ) | २१६.६७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | ३३.१७१ | देवजालं धरेणाहं (उ) | १०.२३ |
| दृष्टवापरस्त्रियं चापि-(सृ) | ४४.३४ | दृष्टवा रामो राजधानीं (पा) | ३१ | दृष्टवा हितस्य दैत्यस्य (भू) | २४.१४ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | ३२.११० | देवजालं धरेणाहं (उ) | १८.४२ |
| दृष्टवापुरुषमत्युग्मभी-(सृ) | १४.७ | दृष्टवाराहु खमुपतः (उ) | १२.३१ | दृष्टवाहिराजसूयेन (सृ) | ३७.१५६ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | ६८.८ | देवतानिधिपूजा (सृ) | ३२.४२ |
| दृष्टवाप्रजापतिं तत्र (सृ) | ३७.११६ | दृष्टवाविभुवत्तसपिशाच (स्व) | ३५.३४ | दृष्टवाहिराजसूयेन (सृ) | ३७.१५७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | ३८.१५ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवाप्रदुदु सव्यं-(उ) | २३२.११ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं तत्र (उ) | १५.६८ | दृष्टवाहृण्यैः प्रसीदेच्च (स्व) | ५१.६५ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | ४.१०४ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवाप्रसन्नस्तं (उ) | १६६.६८ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं सिद्ध (उ) | ३१.४६ | देवः प्रभाते स हिरेण्य (सृ) | २६.१५ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | ८.३४ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवाप्रीतिममामुक्तो (सृ) | ३६.५३ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवावृहस्पतिस्तूर्णं (उ) | ६६.११ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवा भक्तिं गतां (भू) | १०३.१२८ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवाभागीरथीगंगा-(स्व) | ३.६२ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवाभूतानि भगवान् (सृ) | ३६.१४८ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवामतिनयस्यथात्स (भू) | १३.६ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवामति स भ्रातरो (पा) | ७१.८८ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवामहाविलंकणः (उ) | २४६.१७ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |
| दृष्टवापातामहाभाग (सृ) | ४७.४३ | दृष्टवावृत्तं कर्तुं चरणौ (पा) | २६.२४ | देवाच दक्षिणातेभ्य (उ) | १२७.१७ | देवकार्यकृतेन कर्तुं-(सृ) | १६.१८ | देवतानिधिपूजा (पा) | ६४.१०० |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------|---------|
| देवतानामृषीणां च (स्व) | ३३.५७ | देवत्वंलम्पचैवासावेन्द्र (भू) | ५.३३ | देवदेव जगन्नाथ (उ) | ८३.३० | देवदेवोहरिर्यद्वैब्रह्मणे-(सृ) | १.५८ | देवभानुसुसवसुतदा-(सृ) | १७.१७५ |
| देवतानिजिताः सर्वा (उ) | ३८.६५ | देवत्वमथ भानुष्यं (भू) | ८१.४८ | देवदेवजगन्नाथ (उ) | ८४.१७ | देवदेवोहृषीकेशस्त्वं (भू) | १०१.१ | देवभावेनजागर्तिननि-(उ) | १२८.२३० |
| देवताबलवीकांतो (पा) | ८१.२६ | देवत्वेदेवदेहावैमानुष (सृ) | ३४.४५ | देवदेवजगन्नाथ (उ) | ६१.१२ | देवदैत्यवियोगैश्च (भू) | ६८.४६ | देवमारोपयित्वाचरणे-(सृ) | १७.२३३ |
| देवताभ्यर्चनं कुप्राप्ति (स्व) | ५१.२२ | देवत्वयैवनिहृतो (उ) | २३७.१० | देवदेवजगन्नाथ (उ) | २४४.२० | देवद्युतिप्रणीतयैविष्णु (उ) | १२८.२६५ | देवमित्रं पुण्यभावं (भू) | २०.७ |
| देवतायतनप्राज्ञा (स्व) | ५५.६२ | देवदर्शनमदृष्टोविस्मयं (सृ) | ३६.६१ | देवदेवद्विजानांच (उ) | ६४.५ | देवद्रोचीवीरवाहालक्ष-(भू) | ६०.३० | देवमुक्तिपदलभ्य (उ) | १८.७२ |
| देवतायतने दुःखो (भू) | १२२.३२ | देवदानवगंधर्व (उ) | ४५.१३ | देवदेव नमस्तेस्तु (उ) | ८४.१४ | देवद्रोहनकुर्वीत (स्व) | ५५.१५ | देवमेवं विजानामि (भू) | ८८.४० |
| देवतायतनेमार्गे (क्रि) | ११.४ | देवदानवगंधर्वा (स्व) | ४१.२२ | देवदेवमहादेव (उ) | १६३.१ | देवद्वादशलोकाना (पा) | ११४.३७६ | देवयज्ञवराहस्य (उ) | १६६.७ |
| देवतायतनैरम्यै (उ) | १८.५१ | देवदानवगंधर्वै (उ) | २५०.३० | देवदेवमहादेवइन्द्रकामादि (स्व) | १६.७ | देवद्विजगवां भूमि पूर्व-(भू) | ६७.५७ | देवयानसमारूढः (उ) | १२७.१५६ |
| देवतावदनोभूत्वा-(उ) | १२५.१४६ | देवदानवमर्त्येषु-(सृ) | १५.२०८ | देवदेवमहादेवत्रिपुरघ्न (उ) | २२४.६ | देवनद्यातयाव्याप्तं (सृ) | ३०.१८३ | देवयानीमहाभागा (भू) | ८०.२ |
| देवतावदनोभूत्वा (उ) | १२५.१६६ | देवदानवयक्षाणा (उ) | २४२.२५ | देवदेवमहादेवभक्तता (उ) | १२५.७ | देवनयत्ररामस्यवार्ताभिः (पा) | ४६.१० | देवयोग्यमिदं कृष्ण (उ) | २४६.१०१ |
| देवताश्चनजानं (उ) | २२३.७६ | देवदानवयत्नेन (सृ) | ३४.४४ | देवदेवमहादेवभक्ता (स्व) | ३३.४ | देवनांदानवानां (सृ) | ६.१ | देवराजकृतं सर्वं (भू) | ६४.२० |
| देवताश्चप्रसीदेयु (उ) | १८.१४६ | देवदारुवर्ययस्तेवर्त्तते (उ) | २०३.२१ | देवदेवमहादेवसर्वं (पा) | ८१.५ | देवनिदापराः सर्वे (उ) | १६३.७६ | देवराजमहाभाग (भू) | ७६.१६ |
| देवतिष्ठैर्द्धममाप्तिवता (उ) | २३८.१०५ | देवदारुवर्गैर्जुष्टं (भू) | १०२.१६ | देवदेवंसमभ्यर्च्यं (उ) | ४२.१२ | देवपत्न्योहिद्रष्टुं (उ) | ४२.३६ | देवराजसुरश्रेष्ठ (उ) | ३८.५५ |
| देवतीर्थं ततो गच्छद् (स्व) | १८.२४ | देवदासइतिहयातो (पा) | ६५.१२७ | देवदेवं हरिदेवः (सृ) | ४१.२६६ | देवपन्नगसेव्यस्य (उ) | ६६.१७ | देवराजस्ततोहृष्टोन्-(सृ) | १३.४०४ |
| देवतीर्थतोगच्छे-(स्व) | २०.७८ | देवदुर्भिनिर्योपा-(पा) | १.२५ | देवदेवं पर्यश्चापि (क्रि) | २०.८६ | देवपातकिनोभर्त्या (क्रि) | २२.२२ | देवराजविरोधेनन (क्रि) | ११.४८ |
| देवत्रयीसितांबी (उ) | १६६.२४ | देवदूतततोत्र हि-(स्व) | ३१.१७७ | देवदेवस्तदाब्रह्मापुष्करे (सृ) | ३४.८१ | देवपादीततोभत्वा (पा) | ११४.२३२ | देवराजोविप्रेन्द्र-(भू) | २४.४६ |
| देवत्रय्यांचयोह्य (उ) | २००.७८ | देवदूतनजानामिमुकृतं (स्व) | ३१.११ | देवदेवस्यतत्रापि (सृ) | ११.६ | देववाहः सुवाहुश्च-(सृ) | ७.६८ | देवरातशमीकंड्वेते (सृ) | ३३.७८ |
| देवत्रिजगतीरत्न (उ) | १८६.१७ | देवदेवजगन्नाथ (क्रि) | १२.८७ | देवदेवहृषीकेश (उ) | ५१.६० | देवब्रह्माश्रुपान्सर्वा (पा) | ६५.३२ | देवरातसुतावाला (पा) | ११२.२ |
| देवत्वंतस्यवृक्ष (उ) | ४०.२६ | देवदेवजगन्नाथ (उ) | ३१.१ | देवदेवाहरिर्यद्वैब्रह्मणे (स्व) | १.२६ | देवब्रह्मण संभवतः (भू) | १०३.१३२ | देवरूपोपमस्तात (भू) | ६३.२४ |
| देवत्वंप्रार्थं येरामस्त्व-(सृ) | ३५.८४ | देवदेवजगन्नाथ (उ) | ७०.१ | देवदेवोमहादेवोयोग (उ) | १५४.४२ | देवभागस्तथजज्ञे (सृ) | १३.१०६ | देवरूपोपमः पुण्यैः (भू) | ११७.४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

२२६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| देवर्षयश्च देवाश्च (क्रि) | १.३६ | देववृक्षैः समाकीर्णं (भू) | ३६.८ | देवाग्निगुहविप्राणां (भू) | ६८.१२ | देवानां ब्राह्मणां च (भू) | १३.१७ | देवान्मुनिगणान्सर्वान् (भू) | ७७.३८ |
| देवर्षयोऽथैवान्ये (सु) | १३.३२० | देववृक्षैर्दैरनेर्कश्चगंधर्वै (भू) | ३२.१८ | देवाग्नेर्वज्रवाः स्थाप्या (उ) | ८३.२७ | देवानां ब्राह्मणानां च (भू) | १०३.४१ | देवाग्न्यास्तथानागान् (पा) | ६५.२६ |
| देवर्षि पितृ भूतानां (उ) | २१८.७ | देववृक्षैः समाकीर्णं (भू) | ८३.७५ | देवाङ्गनाकारुहस्त (क्रि) | ६.१४८ | देवानां ब्राह्मणानां च (क्रि) | १३.६७ | देवान् विदारितान् (उ) | ७६.३१ |
| वर्षिश्च वृत्तान्तं तेन (सु) | ३३.२ | देववृक्षैः समाकीर्णं (भू) | ६३.४ | देवादास्तापसाहारा- (सु) | ४३.४७२ | देवानां मनमाजाय (भू) | ११०.७ | देवाग्निद्रात्यसमरे (उ) | ८.१ |
| देवर्षकेनपुण्येन (उ) | २२२.६ | देववेदिमथोवापि (पा) | ११४.३०० | देवादीनां वृत्तिदाता (भू) | २८.६२ | देवासां लोकसंस्थानां (भू) | ७१.२ | देवाद्गक्रमुखान्सर्वा (सु) | ४१.३०४ |
| देवर्षेत्वंतुधन्योसि (उ) | १६३.८२ | देववेद्यामथोचक्रपद्या (पा) | ११४.३५३ | देवाङ्गुतमिदं कर्मन (क्रि) | ६.५६ | देवानां वचनं श्रुत्वा (त्र) | ८.१२ | देवाशाः सर्वएवेहउत्पन्ना (सु) | १३.१६४ |
| देवलोकांगतेशक्रे स्वं (सु) | ४.८६ | देवव्रतमहाप्राज्ञं (उ) | ८०.३ | देवाधिपस्यवचनं (पा) | ४५.५ | देवानासंनिधीतत्रकृपि- (सु) | १६.६६ | देवांशैः पूर्वैवाहिन्यो (उ) | १११.२८ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवव्रतमहाप्राज्ञं (उ) | १३५.४२ | देवानपितृवाभूतान (पा) | १०५.१६६ | देवानां सुप्रियं नित्यं (भू) | ७७.८७ | देवान्संतर्पयामासहृदयं (उ) | १७६.४ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवशर्मपहाप्राज्ञः (पा) | ६१.१ | देवानमर्तितं देवमृषयो- (भू) | ३४.२३ | देवानां हितकामेन (सु) | ३.५६ | देवान्समुत्थितान्दृष्ट्वा (उ) | ७.४४ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवशर्मपहाप्राज्ञः (उ) | १७६.५६ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानागाश्चगन्गामि- (भू) | ५.५५ | देवांश्चिन्तयन्तुवन्तश्च (सु) | ४५.२६ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवसश्रयज्यस्यफलं- (स्व) | ३२.३३ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामथयक्षाणां (सु) | १६.१५० | देवाः प्रहर्षमाजमु (भू) | ११५.४४ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवः सुदेवैः परिवारितो (भू) | ६६.३ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामप्यध्वज्योमी (उ) | ७८.१० | देवाभः पर्वतश्चैवतथा (सु) | ४५.१८० |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवस्त्वमर्थज्ञात्वाच (उ) | २३७.५ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामयमेनास्ति (पा) | ४६.१६ | देवाभुजांनिहृदयानि- (सु) | ४६.११६ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवस्यलीला सुष्टयर्थे (भू) | २२.४० | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामश्वारोहाश्च (उ) | ५.७४ | देवामनुप्यागधर्माः (उ) | २७.६ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवस्यवामचरणेनिविष्टो (सु) | ३०.१७३ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामसुराणां च (सु) | १३.१७६ | देवामुद्रमापुस्तैःपटा (सु) | ४६.४२ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवस्थानुमते देव्या (भू) | १०३.१६ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामिति वैश्रुत्वा- (सु) | ३१.७६ | देवाश्चतनर्का च यतीनाम (भू) | ६८.११ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवस्थाने च नित्यं (भू) | ६७.३६ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामिदमुत्थाना (उ) | ८०.८६ | देवायतनकर्तारस्तुलसी (क्रि) | २.८६ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवस्वर्गब्राह्मण तस्माच (क्रि) | २.१०६ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामिदमुत्थाना (उ) | ८०.८६ | देवायतनमाहूतः (पा) | ३०.४ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवहृदकुक्षेत्रे (सु) | ३४.२६६ | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामिदमुत्थाना (उ) | ८०.८६ | देवारिदिनजोह्ना (सु) | ४५.१८५ |
| देवलोकांगिरित्यज्यकथं (सु) | १६.२४ | देवाङ्गणयवक्ष्यामि (क्रि) | २०.५० | देवानांचतथाप्रोक्तं (उ) | ८६.१४ | देवानामिदमुत्थाना (उ) | ८०.८६ | देवारोमाणिमात्रेषु (उ) | ७६.१६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------------|---------|----------------------------------|--------|------------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| देवार्चनरः कुर्याद् (उ) | १०५.२३ | देवासुरमनुष्याणां (उ) | २३८.४ | देवीदं सर्वगुह्यानां स्थानं- (स्व) | ३३.१५ | देवेभ्यो विष्णुरूपेभ्य (भू) | ६७.४७ | देवोत्सवेऽप्यसेवाच- (पा) | ७६.३७ |
| देवार्चनविधौ विद्वान् (उ) | १३३.४० | देवासुरविमर्दचन्द्रगु- (सु) | ४१.१५२ | देवीब्राह्मणरूपेण (भू) | १२१.३० | देवेशधूर्जविदिमं (उ) | १८४.४२ | देवोद्यवीरमाहूयक (पा) | ११४.३७६ |
| देवार्चनायमायांतुल- (उ) | १०८.११ | देवासुराणां भवेषां- (स्व) | ३.७० | देवभिक्षुरमैदिष्यैः (क्रि) | १४.२० | देवेषु च समस्तेषु (पा) | १०४.४३ | देवो नारायणः साक्षात् (क्रि) | ७.७८ |
| देवालये गानपराय (उ) | ६२.१६ | देवासुरास्तुयांस्तुत्वा (पा) | १२.५६ | देवीभिः सहितारुद्रा- (सु) | ३१.६४ | देवेषु चैव ग्रेषु तस्मिन्- (सु) | १८.१२० | देवो ब्रह्मानिको भूत्वा (उ) | ६४.७५ |
| देवार्चकर्ममिबंढा (उ) | १३२.१२० | देवासुरेक्यं प्राप्ते हरिणा (भू) | १.३ | देवीभ्यां सहितः (उ) | २४४.८७ | देवेषु नैव पश्यामि (भू) | ११२.६ | देवो सौकराणामयः (उ) | १८.१३५ |
| देवाश्च इंद्रप्रमुखाः परं (भू) | ६१.१३ | देवाः सेंद्राश्च नागाश्च (उ) | ५३.२१ | देवीमिव परांगे हेरक्षय (पा) | ७१.८४ | देवेष्वेताविलासिन्यः कौ (स्व) | २२.१४ | देवो द्रोतत्रयतं ते मम (उ) | १३५.१०८ |
| देवाश्च ऋषयः सर्वे (भू) | ६६.४४ | देवास्तत्र तथा युद्धे (उ) | ६७.२२ | देवीसुलोचनापश्च (क्रि) | ५.६४ | देवरपिनशक्यस्त्वं (सु) | १८.१५४ | देव्या कृतां हि पूजां (भू) | १२१.२८ |
| देवाश्च ऋषयो गुह्याः (भू) | ६६.४० | देवास्तत्र सुखेनैव (उ) | ४३.६ | देवीसुलोचनापश्च (क्रि) | ५.६४ | देवरपियथा सर्वैर्भवं व्य- (सु) | १८.२६७ | देव्या देवेन मे दत्तः (भू) | १०३.१६ |
| देवाश्च दानवाश्चैव (सु) | ४.६६ | देवास्तथा द्रुवंस्तांच (ब्र) | ६.११ | देवीसूर्यगणेशानां तथा (उ) | ४६.१४६ | देवैर्ब्रह्मभिः सांख्यैः (सु) | ४५.८ | देव्याः पुत्रो भवेद्राजन्- (स्व) | २४.३५ |
| देवाश्च मुमुचः सर्वे (उ) | ६.२१ | देवास्तत्र योपि यज्ञे (उ) | ६७.८६ | देवाः पितृनुद्विजान् (उ) | ७१.१०४ | देवैर्गंधर्वापितृभ्यो (पा) | १३.६ | देव्यामनुगतायां तु (भू) | ६२.५० |
| देवाश्च मुमुहुर्दंष्ट्या विमुखा (सु) | ७.३६ | देवाः स्वरज्यमासाद्य (उ) | १८.१३६ | देवेतुकृततां वृत्ते (पा) | ११४.२३१ | देवैर्विप्रं तथा सर्वे (भू) | २८.५६ | देव्या मुखविलासिन्यै- (सु) | २२.१४५ |
| देवाश्च भूतजस्तथा (सु) | ७.६६ | देवास्वानपितानं शान् (उ) | १११.२७ | देवेन विप्राविप्राण (सु) | २.४२ | देवैश्च चारणीः सिद्धैः (भू) | ११५.२१ | देव्या ललाटमिद्राण्यै- (सु) | २२.१४७ |
| देवाश्च सत्यसंपन्नाः (भू) | १०.२० | देविइंदीवरस्यामेव राहो- (सु) | १३.२७५ | देवेन्द्रदण्डाकल्पद्रुम (उ) | ७१.२५८ | देवैश्चापि सर्गवैर्वै (भू) | ३४.१३ | देव्याः गंगोर्गणे (उ) | २७.५४ |
| देवाश्च सर्वहृत् भुङ्क्षुः (भू) | ६६.७ | देविकाकृष्ण गंगा (पा) | ६७.६६ | देवेन्द्रस्याग्रतो गत्वा (उ) | ४३.४६ | देवैश्चारणकिल्लरैः परि- (भू) | ४४.११ | देव्या श्रिया समसीनं (उ) | २५३.७३ |
| देवाः सर्वैरणीहृत्वा (उ) | ७.६७ | देविदुःस्वप्नमत्युग्र (उ) | १४.४१ | देवेन्द्रस्वागतं तंस्तु (सु) | ३०.१३० | देवैः संस्तुयमानस्तु धर्म- (भू) | १४.४३ | देव्याः समीपभागच्छ- (सु) | ४३.४८२ |
| देवासुरक्षयकराः (सु) | १३.१६३ | देवीभूतपरं ब्रह्मा (उ) | २२.१८ | देवेन्द्रैरातदाज्ञप्ता मेधाः (उ) | ५.७३ | देवैः सादृत्युयुधे (पा) | १०७.५६ | देव्या सह विशालाक्ष्य (उ) | २३३.१० |
| देवासुरमनुष्याणां (सु) | १२.७६ | देविभूतपरांतीर्थ (उ) | १४७.१ | देवेन्द्रोपि मुनिश्रेष्ठ (उ) | १२१.२३ | देवैः सुसिद्धैर्मुनिभिः (भू) | ६८.६६ | देव्या सह समसीन (उ) | २४३.२० |
| देवासुरमनुष्याणां (उ) | ३३.३६ | देवि सर्वव्यंशप्लान्ना (उ) | १११.२० | देवेभ्यश्च पितृभ्य (सु) | ४६.११७ | देवैस्तु वास्तमेकार्यं (भू) | १.४८ | देव्यास्तु दक्षिणाधनर- (स्व) | २८.२४ |
| देवासुरमनुष्याणां (उ) | ३३.४२ | देवीचपंचगव्येन ततः (सु) | २२.७० | देवेभ्यो दातुकामोसौ (भू) | ३४.४ | देवैस्तु पुण्यवर्षेण पूजितौ (स्व) | ३१.२०८ | देव्यो यस्वर्गमेत्या (उ) | १५.७२ |
| देवासुरमनुष्याणां (उ) | १६७.६६ | देवीचैवामहाभागा (सु) | १६.१८५ | देवेभ्यो नृपसार्द्धौ (भू) | ११०.५ | देवैस्त्वं निमित्तापूर्वं (उ) | ६३.२६ | देगनष्टद्विजस्थानं (पा) | १०६.६६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|
| देशपुण्यमभीप्सतोविभुना (सु) | १६ | देहसुद्धिकरदानं न (उ) | ७४.२० | देहस्थिमांसहृदिरे (उ) | १२७.१६६ | देव्याविपानामयदानवानां (सु) | ७.७२ | देवतंचप्रपन्नानांप्रकाशय (सु) | १३.३३८ |
| देशपुण्यमुपेत्यं वसर्वा- (सु) | ३६.६८ | देहस्थदुर्दमंशत्रुमसं (उ) | १२७.१०० | दैत्यकायेपुयः स्वस्थः (भू) | ६.१६ | देव्यानां दानवानां (सु) | ३६.४५ | देवतंपरमनार्याः पति- (सु) | ४३.१६३ |
| देशमालवकं नीत्वा (भू) | ६१.४ | देहस्यात्मन्यहवुद्धं (उ) | २०६.५४ | दैत्यचापच्युतानुघोरां (सु) | ४१.६० | देव्यानां दानवानां च (भू) | २७.६ | देवतः सार्थमाविश्य (उ) | १२८.१५८ |
| देशकालादिनियमान (उ) | २२३.३४ | देहानुगोमलः पुतिस्तवा- (भू) | ६६.७२ | दैत्यतेजोविनाशाय (भू) | १६.५६ | देव्यानां दानानाथयि (उ) | २३६.६ | देवतानिचविश्वानि- (सु) | ४०.२६ |
| देशकालादिनिर्भे (उ) | २४५.३०८ | देहास्थतानिपापानि (उ) | ६५.३० | दैत्यदेवभोगरूपेण (सु) | १८.४२ | देव्यानां रतकलोलैः (उ) | १६२.२० | देवतान्यभिगच्छेत (स्व) | ५४.१६ |
| देशकालाद्यवरथा (उ) | २२७.३७ | देहि कन्यां महाभाग (भू) | ४७.२० | दैत्यदानवसंधास्ते सर्वे (सु) | ४५.७६ | देव्यानामप्यहं श्रेष्ठो (भू) | १०३.६ | देवतेभ्यः प्रियं कार्यं नाप- (सु) | ३८.११६ |
| देशकालोचितं श्रुत्वा (उ) | १६.३६ | देहित्वं स्वशिरोविप्रस्व (भू) | १.४६ | दैत्यैः प्राहयद्विस्वामी (सु) | १२.८२ | देव्यानुरागनटना- (पा) | ७७.२६ | देवपूर्वनिवेद्याय (सु) | ६.६७ |
| देशग्रामकुलानि (उ) | ११२.१० | देहिदीक्षां महाभाग सर्वं (सु) | १३.३७६ | दैत्यदानवसंहृतं सहस्रं (सु) | ८.६५ | देव्यातंकं दुःखविनाश- (भू) | ६८.६३ | देवप्रेरितपापाच्च (क्रि) | १७.३५ |
| देशवाग्वुद्धिसारूप्य (स्व) | ५४.१८ | देहिदेहिधनं देहिमाने (पा) | ११.४६ | दैत्यदेहाद्रिनिष्क्रान्तं (उ) | १८.८२ | देव्यायस्य मनोहारिरूपं (पा) | १६.३६ | देवयोगात्पत्नोः प्राप्ता (उ) | ४३.३५ |
| देशभेदेन व्यवस्थो (पा) | ११६.६४ | देहिनोचेदन्नजिष्णाम- (उ) | १६७.८ | दैत्यमायापरिष्वक्तो (उ) | १८.२१ | देव्यारिजालंधरयो (उ) | ७.७८ | देवयोगान्मुनेतत्रये (क्रि) | ३.१६ |
| देशाद्देशपरिभ्राम्य (उ) | १२६.७४ | देहि पुत्रं महाभाग (भू) | १०३.१३५ | दैत्यमायाभिपन्मानां दर्शना | ४६.४७ | देव्यायं मुशनस्तीर्णो (उ) | १५३.४ | देवात्कथमपि प्राप्त- (उ) | १२६.१८५ |
| देशाद्देशांतरंगच्छन्- (उ) | ११३.३ | देहि पुत्रं महाभाग (भू) | १०३.१३५ | दैत्ययक्षणाग्रामं रक्षो- (सु) | ४०.१४७ | देव्याश्च दानवानागा (उ) | २३१.१४ | देवात्तत्र दिने विष्णोः (त्र) | १५.५२ |
| देशाधिपाये बहवो- (पा) | १२.३६ | देहिमेकवचं दिव्यं (पा) | ६३.३६ | दैत्यराजपितृकारितव्य (पा) | २१.२२ | देव्याश्च दानवश्चैव- (सु) | १३.१६२ | देवास्तुलोऽपन्नासि (सु) | १८.६६१ |
| देशांतरं तदापश्चाद (सु) | ४३.५०६ | देहि मेत्वचलां भक्तिं (भू) | २.६ | दैत्यवर्षयसमाहूय (उ) | ४.१८ | देव्यास्ते तत्रवागी (उ) | ७.१३ | देवास्तुर्यथावृत्तं न मे (सु) | १३.१७८ |
| देशाः सनगराग्रामाभय (उ) | ३३.१० | देहि मे त्वंहिसन्देशं (उ) | ३.३७ | दैत्यव्यूहगतो भातिस (सु) | ४०.१८६ | दैत्यैर्द्रस्तारकां नाम- (सु) | ४४.१६० | देवींच पूजय मुगधि (सु) | २६.१४ |
| देशे चकारूपे वैस्थो- (उ) | १२६.१६० | देहि मे योगधनं संख्ये युद्धा (भू) | ४२.५३ | दैत्यसेनां ददहनुयुयाते (सु) | ४१.१५५ | दैत्यैर्द्रस्य विनाशान्- (सु) | ४५.१४४ | देवेन नाशितं यत्तु (भू) | ८१.६२ |
| देशे तस्मिन्नुद्युते (उ) | २४२.६३ | देही भुक्तेव गोरारजन् (उ) | १८.१४० | दैत्यसैन्यहृतं (उ) | १२.१ | दैत्यैर्दवाहृतं सर्वं वरदा (सु) | ३०.१६ | देवेन विहितं यद्विन (उ) | ६०.१६ |
| देहतेयानराभक्त्या (उ) | ७६.६७ | देहिं दियमनः प्राणादि (उ) | २२६.२८ | दैत्यसैन्यावृत्तस्तत्र (सु) | १००.३ | दैत्यैर्भुत्वा त्रिजन्मानि (उ) | १६४.४७ | देवेनापि ममाद्यैव स्वर्ग- (भू) | ४२.३२ |
| देहतेयजतिपापानि (क्रि) | ११.१५८ | देहेपि ज्ञानविप्रश्रुतः (भू) | ८.८२ | दैत्याचारैरावर्तमि (भू) | ५०.३ | दैत्ययुवतंच चः प्राह (त्र) | १४.१६ | दोग्धापुण्डनमश्चैव तस्या- (भू) | २६.६ |
| देहत्यागतया धीराः (उ) | ६१.२१ | देहेष्वहं मतिमूलं (उ) | २२६.४६ | दैत्यादेवास्तथानागाय (पा) | ४.५१ | दैवजं शास्त्रं कुशलं (उ) | १६८.८ | दोग्धारजतनाभस्तु (भू) | २६.५८ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| दोग्धा रजतनामस्तु (भू) | २६.५८ | दीर्घासिक्कव्योमतीर्थ (स्व) | ३७.१४ | द्रव्या पहरणेनापि न मे (भू) | ११.४१ | द्रुमपुष्पभरामोदना-(सु) | १४.१७० | द्वादशमलयचैव (उ) | १३३.६ |
| दोग्धावसुर्चिर्नामा (सु) | ८.२५ | दीवारिकोमहेंद्रेण (उ) | ५.८ | द्रव्याभावेपरित्यक्तो-(स्व) | ३०.३० | द्रोणमिरीराजन् (उ) | ७.५७ | द्वादशचक्रराहचवामनं (उ) | २३६.१६ |
| दोग्धावाचस्पतिरभूत्वात्र (सु) | ८.१७ | द्यावापृथिव्योरतुल-(सु) | ३.४७ | द्रव्यायलभपरमैर्न (उ) | ७८.८६ | द्रोणाचार्यगुरुविश्व (उ) | ७१.२१० | द्वादशाक्षरमंत्रस्य (उ) | १६८.२३ |
| दोरिकाव्यस्तमुमुच्य (पा) | ११४.२२० | द्यावापृथिव्योस्सयोगो-(सु) | ४१.२०२ | द्रव्येषुविद्यमानेषुकृपणो (पा) | ६०.३८ | द्रोणैः शिरोरैः शक्तैः (पा) | १०६.८६ | द्वादशाक्षरमंत्रेणाध्यान-(भू) | १६.३ |
| दोर्म्यार्माभिभ्यतांशक्रो (क्रि) | ८.८४ | द्युतंकीडांच निद्रां च (उ) | ४८.२० | द्रव्यैः प्रसिद्धैर्वेज्या-(पा) | ६५.७६ | द्रोणोनामगिरियेन (पा) | ५०.४४ | द्वादशात्माग्रहाव्यसः (सु) | ५.२० |
| दोर्म्यमुत्थाप्यमांसो (उ) | २०४.१२७ | द्युतंकीडांतथानिद्रां (उ) | ६३.१८ | द्रष्टव्योनिर्विकारोसो-(सु) | १५.६५ | द्रोपकाश्चकलिंगाश्च-(स्व) | ६.६४ | द्वादशात्माप्रयामश्च (उ) | १६५.३८ |
| दोलयात्रानिमित्तु (उ) | ८३.१२ | द्युतमद्युतोन्तिर्यपरस्त्री (उ) | २०६.१० | द्रष्टुंकांतमुखांभोजं (पा) | ८३.६५ | द्रोपदो च परित्राता (उ) | १६४.३ | द्वादशादित्यविवाहिः (उ) | १७४.८६ |
| दोलायमानंगोविन्द (क्रि) | १८.३२ | द्युतादिव्यसनासक्तः (उ) | ४६.१६ | द्रष्टुकामोययोर्शलंमंदरं (पा) | १०४.२३ | द्रुहभावं परित्यज्य (क्रि) | ८.५१ | द्वादशादित्यमत्रैवदलं (पा) | ६६.३१ |
| दोलायां सा समारूढा (भू) | ३६.१० | द्युतेनहारित्यन्चचोर्ग (उ) | २१८.३८ | द्रष्टुं राघवंगच्छेमम (पा) | १०४.७ | द्रुहमेवहिकार्यस्याद (उ) | २४४.३८ | द्वादशाध्यायमाहात्म्यं (उ) | १८७.१ |
| दोलाह्वां समालोक्य (भू) | २४.५१ | द्युतेनपात्रिजतद्रव्य (उ) | २१६.६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषेणैकेन लिप्तोसि (भू) | ७८.६३ | द्युतमानादिशः सर्वाः (पा) | ७७.१४ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषेणैकेन लिप्तोसि (भू) | ७८.६३ | द्युतमानादिशः सर्वाः (पा) | ७७.१४ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषसंश्रुतोमाप्नोति (क्रि) | ६.१०५ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषसंश्रुतोमाप्नोति (क्रि) | ६.१०५ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषाणां तु सहस्रेण (भू) | ८०.११ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषा नश्यन्ति कायस्य (भू) | ७२.२७ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषाष्टादशानिर्मुक्तो (उ) | १६८.४६ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषास्तत्रैवये सति (भू) | ६५.१० | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषेणैकेन लिप्तोसि (भू) | ७८.६३ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषेणैकेन लिप्तोसि (भू) | ७८.६३ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषेणैकेन लिप्तोसि (भू) | ७८.६३ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोषोपिगुणवद्भाति-(सु) | १६.१४३ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |
| दोर्मनस्यपरित्यज्य (क्रि) | ६.६७ | द्युतंयतोसदस्तत्रसूर्यस्ये-(सु) | १७.२६ | द्रष्टुं नशक्योरोषाच्च (उ) | २३८.८४ | द्रुहसंगपरित्यक्तानागरि-(स्व) | ३१.१६३ | द्वादशाब्दंतुदुभिर्न (उ) | ३३.२५ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| द्वादशैश्वर्यासमांशुनागे (उ) | २००.७२ | द्वापरस्ययुगस्यादौ (उ) | ५५.३ | द्वापरदेशोद्विजश्वेष्ठ (क्रि) | २१.४१ | द्वावन्तुनाथोसमरेती- (सु) | ४१.१३७ | द्विजस्यवचनंश्रुत्वा (त्र) | १२.२८ |
| द्वादशैश्वर्यासमांशुनागे (वा) | ६६.१७ | द्वापरे कथिता विप्र (भू) | १२५.४३ | द्वापरस्नातव्याकार्या- (सु) | ४४.३३ | द्वावेतौकर्णमूले (पा) | ६६.६५ | द्विजा- कृतयुगेविप्रा- (स्व) | ७.६ |
| द्वादशैश्वर्यामहारखोनि (पा) | ६७.६८ | द्वापरेचदनामक (उ) | १३५.२६ | द्वापरवत्यांकुक्षेत्रे (पा) | ६६.२२१ | द्वावेतौतुगतौ तत्र (भू) | २.१५ | द्विजाग्रयः कार्तिकेमासि (क्रि) | १३.८६ |
| द्वादशैश्वर्याचान्या- (सु) | ३४.२५ | द्वापरेचार्चनतिष्ये- (पा) | ११४.३६६ | द्वापरवत्यांतुश्रुत्वेदी- (सु) | ३४.१३३ | द्वावेतौ तौ मया दृष्टौ (भू) | ६३.२० | द्विजातिसामशब्देन (सु) | १५.१४ |
| द्वादशोत्तमपक्षे (उ) | ३०.३२ | द्वापरेतुकुक्षेत्रं (स्व) | ३६.८७ | द्वापरवत्यांनैमिषेच (उ) | २५३.१८ | द्वाः सुविद्रुमदेहत्या (पा) | १५.३३ | द्विजातिहत्यामृद्धानं (क्रि) | २२.८ |
| द्वादश्यांचदशम्यं च (क्रि) | १७.१७२ | द्वापरेयज्ञांमत्वाहुर्दान- (सु) | १८.४३८ | द्वापरवत्यांपुराविप्र (उ) | ६६.५ | द्वास्थोपिवीरकोदेवान्- (सु) | ४४.१२० | द्विजानांशत्रवन्धूनां- (सु) | १६.११० |
| द्वादश्यांतुलसीपत्रं (उ) | १०५.२५ | द्वाभ्यांधर्मः स्थितः पद्म- (सु) | ३६.३६ | द्वापरवत्यांभवंचक्रं (पा) | २०.२० | द्विचत्वारिंशकेवर्षे (पा) | ३६.७७ | द्विजातांपरिवेष्टारो (सु) | १८.८६ |
| द्वादश्यांपारणंक्रुत्वा (उ) | ४१.५२ | द्वाभ्यांविजिता (क्रि) | २१.७२ | द्वापरवत्यांशुभ्रेरभ्ये (उ) | २२५.३१ | द्विजक्रीतारसाः सर्वे (त्र) | २१.२० | द्विजानांदुर्विदंशक्यं (उ) | ३४.८ |
| द्वादश्यांपूज्यगोविदं (उ) | ६६.३१ | द्वाभ्यामन्तर्गतं पृष्ठ- (भू) | १४.१३ | द्वापरवत्यांसमासीनं (उ) | २५२.१०४ | द्विजगांकांचनंचैवष्टवा- (सु) | २०.१७१ | द्विजानांनृताप्रीति (उ) | १२६.११० |
| द्वादश्यांप्राग्भवेदेहेते (उ) | १३५.१३३ | द्वाभ्यामपि च सिद्धोसी (भू) | १४.१२ | द्वापरवत्याः शिलायुक्ताः (पा) | ७६.८ | द्विजगांकांचनंचैवष्टवा (पा) | ६५.४५ | द्विजानां पादश्रुसूपा- (सु) | १६.१०८ |
| द्वादश्यांमाघमास (उ) | १६०.३ | द्वाभ्यामपि सधर्ममा (भू) | ४.२४ | द्वापराध्यक्षंतथाशक्रवर्णं (सु) | १६.१११ | द्विजजुडंमहाक्षेत्रम् (स्व) | ६१.५६ | द्विजांध्रितेचनस्पर्श (क्रि) | २१.४५ |
| द्वादश्यां वासुदेवाय (उ) | ५५.३६ | द्वाभ्यामपि सुसंपृष्टः (भू) | ६१.३२ | द्वापरवतीप्रभासश्च (भू) | ६०.३३ | द्विजद्रव्यपहरणं (भू) | ६७.६८ | द्विजांध्रिसेचनस्याहंस (क्रि) | २१.३४ |
| द्वादश्यांशिशवापक्षे (पा) | ३६.३० | द्वाभ्यामेव सुतश्चायो (भू) | १०५.४४ | द्वापरवतीभवंचक्रंतथा (पा) | २०.३४ | द्विजग्ननामसौजम्ने (उ) | १७६.४३ | द्विजायजलमादाय (पा) | ११७.१५८ |
| द्वादश्यां श्रवणांके (उ) | २५५.१२३ | द्वापरकाव्यंमाथुराख्यं (पा) | ७५.२३ | द्वापरिद्वारिद्वयविप्रब्राह्म- (पा) | १०.३७ | द्विजग्नमकुशलंबूहि (क्रि) | २०.७६ | द्विजायाव्यं प्रतिज्ञाय न (भू) | ६७.६७ |
| द्वादश्यां श्रवणंवापि (उ) | २२३.५६ | द्वापरकायां न चावन्त्यां (भू) | ४१.६७ | द्वापरैस्तंभमाणेण (स्व) | ५५.३० | द्विजप्रक्षालनेरामो (पा) | ११७.१६० | द्विजाश्चयाचकाश्चैव- (क्रि) | १७.१८५ |
| द्वादश्यांप्रदातव्यं (उ) | २३४.१४ | द्वापरकायाः समागम्य (उ) | २२२.८० | द्वापरैस्त्वन्वधानंतेयस्मात् (सु) | ४४.६८ | द्विजप्रियंतुमज्जायां (उ) | ७८.२६ | द्विजेनपठ्यमाननुपद्यं (पा) | ११४.४२३ |
| द्वादश्यां तुविशेषेण (उ) | ८५.१६ | द्वापरकायास्तथाख्यानं (उ) | १.१३ | द्वापरैर्निषिद्धलोहार्द्धं (पा) | ११४.३३२ | द्विजरूपः शिखीब्रह्म (सु) | ८.६६ | द्विजेपुदेवनानित्यम् (स्व) | ५७.३८ |
| द्वादश्यामथसंस्तवा (उ) | २०४.६६ | द्वापरकावासिनः सर्वान् (सु) | २३.६० | द्वापरैरुद्धारपालोश्च (उ) | ६५.४ | द्विजवितापहरणं (भू) | ६७.५८ | द्विजेतन्निस्पृहान् (उ) | ३४.७८ |
| द्वादश्यामन्नदानंयो (त्र) | १६.५ | द्वापरकोद्धवचक्रा (पा) | ७६.१५ | द्वापरैरुत्सर्वमार्गेषुगजान् (उ) | २४५.३४७ | द्विजसेवानुरक्तये (त्र) | १६.१२ | द्विजोपीत्यप्लुनाद (उ) | १६८.१२१ |
| द्वापरद्विहस्तंनुवर्णाय (सु) | ३६.३४ | द्वापरतोन्नकटाहश्च (पा) | ११४.४८ | द्वापरैरुत्सर्वमार्गेषुगजान् (उ) | २४५.३४७ | द्विजसेवानुरक्तये (त्र) | ८२.३४ | द्वितीयंचध्रुवदेवस्तृतीयं (सु) | ३०.१७४ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| द्वितीयं तु प्रवक्ष्यामि (भू) | ८६.८२ | द्विनिष्कमात्रकतन्व (उ) | ३१.४० | द्वीपानां तु समस्तानि (भू) | ६०.३६ | द्वौद्वौपतितोपाश्वे (उ) | १६३.४० | वनदानं घनाध्यक्षो (सु) | १६.८६ |
| द्वितीयं दलमाश्रेय्यात् (पा) | ६६.२७ | द्विपंचाशत्तथान्यानि (सु) | ३.१६ | द्वीपानेनान्मुनिवाररक्षन्ति (स्व) | ६.३० | घ | | वनतो ह्यथिनां रामः (पा) | ४.५४ |
| द्वितीयं वदनं स्य युवदं (सु) | १४.६४ | द्विपंचाशदनुमात्रे (उ) | २००.६४ | द्वीपाश्च द्वीपिनश्चैव (क्रि) | १३.६८ | घत्तेपादयुगंचांगेयो (पा) | ११४.१८६ | घनधान्यप्रदंचाशु (उ) | १४७.७ |
| द्वितीयं वंशं बलोकं (उ) | २२६.८१ | द्विपदानोपतत्रस्थान् (सु) | १८.२६७ | द्वीपीदृष्टवातुधातेनुक्तं (सु) | १८.२६० | घत्तेमितश्चारमचार (उ) | २२.३१ | घनधान्यसमाकीर्णं (भू) | ५१.४३ |
| द्वितीयं तु प्रवक्ष्यामि (पा) | ८४.६६ | द्विपाचितं सूतिकाग्नम् (त्र) | २१.२३ | द्वीपीशोणितदिग्धांसो (सु) | १८.२८४ | घत्तेललाटफल्के (क्रि) | ७.१०५ | घनधान्यसमायुक्ता (उ) | ७२.२ |
| द्वितीयघटिकायां तु यदि (पा) | १०५.१०१ | द्विपादहो नो यमः (क्रि) | २६.११ | द्वीपेतु वदरी प्रायेवादरा- (सु) | ६.२६ | घनं ग्रामसहस्राणि प्रभाते (सु) | १०.६५ | घनधान्यं समायुक्तो (उ) | ६४.७६ |
| द्वितीयस्थानिनांचैव (सु) | ३४.२४ | द्विपालवद्वचिकुरे (पा) | ८३.३७ | द्वीपेषु ते वसवेषु प्रजानां- (स्व) | ६.२७ | घनं जयमहानीलपद्मा (सु) | ६.७१ | घनधान्यसमृद्धं (उ) | ८०.२३ |
| द्वितीयस्येदमाख्यानं (उ) | १७६.६२ | द्विबाहुतीक्ष्णस्य पदाभि (पा) | ११४.१८० | द्वीपेस्मिन्यातितीक्ष्णानि (उ) | १३३.१ | घनं जीवितपर्यंतं पत्न्यो- (सु) | ४३.१६२ | घनधान्यादिकं (पा) | ११४.४१० |
| द्वितीयातुमहाभाग (स्व) | १३.४० | द्विभुजो वंशहस्तस्तु (भू) | १०६.२४ | द्वे अप्युक्तं समाकर्ण्य (भू) | ५८.१७ | घनं धान्यं कलत्रं तु (भू) | १७.५७ | घनधान्यादिसम्पन्ना (क्रि) | २५.६८ |
| द्वितीयायां महोत्सव (उ) | १२२.६४ | द्विभुजं दैत्य राजानं (उ) | १२२.४८ | द्वे चैवांगिरसे प्रादात्तासां (सु) | ६.१५ | घनं धान्यं कलत्रं (पा) | ८६.६८ | घनपाल इति रुपातः (उ) | ४६.१३ |
| द्वितीयावरणं प्रोक्तं (उ) | २२८.५६ | द्विरष्टवषाकृतिरं बुजासो (उ) | १६८.५७ | द्वेषतनूयोसगरस्या (उ) | २१.२ | घनं धान्यं च वस्त्रा (उ) | ४२.४८ | घनप्राप्तैस्तस्याः (उ) | २२०.४१ |
| द्वितीयासायं काचिता- (भू) | ३३.३० | द्विर्जातिगुप्रयोनी (उ) | १२७.१४२ | द्वेषाभ्युसगरस्यापि (सु) | ८.१४५ | घनं धान्यं यशः पुत्रा- (उ) | १२४.६६ | घनलोभेन नारीणां (उ) | २१४.५६ |
| द्वितीयेन करणं वमृग (उ) | १५१.३१ | द्विर्भोजनं च कलहं गंगा (क्रि) | ६.१७ | द्वेषाचयातिनरकं (उ) | १२०.२७ | घनं धान्यं यशोधर्मं (पा) | ६७.८ | घनलोभेन भवता (क्रि) | १३.१४२ |
| द्वितीयेन भुवर्लोकं (सु) | २२.५६ | द्विर्भोजनं परान्नं च (क्रि) | २२.७६ | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनं धान्यं लभेदत्राज्य (सु) | ४६.२०८ | घनलोभे प्रसक्तस्तु (स्व) | ५७.७१ |
| द्वितीये ह्यिपुनस्त (सु) | १०.६ | द्विविधः कर्म सबन्धः (पा) | ६६.१३६ | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनं रक्षितकार्पण्यद्योते (क्रि) | २०.१० | घनवंतो निरयगादभिका (पा) | ६६.५६ |
| द्वित्राभिः सेवितो गच्छे (पा) | ८३.६२ | द्विविधवैष्णवं प्रोक्तं (उ) | २२४.७६ | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनं लोभयता तेन हृत (उ) | ३१६.६४ | घनवान्दानशीलश्च- (स्व) | १३.१८ |
| द्विदलतिलतैलं (उ) | ६४.३ | द्विशताक्षिसमायुक्तः (उ) | १२.२० | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनदं चोत्तरैरन्यस्मिन्- (सु) | ३४.२६७ | घनवान्पुत्रवान् सम्भो (त्र) | २६.१६ |
| द्विवाचक्रे समस्तांगं (पा) | १०७.३० | द्विषतामपि ये दोषान् (भू) | ६६.३४ | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनदस्य तु कोशेन घनदस्ते (सु) | ३७.८४ | घनवान्बित्तशाह्ये नयः (उ) | ३७.२१ |
| द्विवाभवात्तत्त्ववत् (भू) | ६६.२० | द्विसप्ततितथान्यानि- (सु) | १३.१६४ | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनदस्त्वपि नीधन (उ) | १२६.२७६ | घनवृद्धिर्नानाध्याय (उ) | ६०.२८ |
| द्विवाभूतं वपुः कृत्वा (सु) | ४१.२५८ | द्वीपमेदसमुद्राणामन्तर्भाव (सु) | २.२१ | द्वेषाचयमुहयुद्धमकुन् (पा) | ५१.१७ | घनदस्यानुगः सोयं धन (उ) | ११४.२८ | घनसारकजूर्णं (पा) | ११४.६४ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| धनहीनंजनंष्ट्रवा (क्रि) | ४.२६ | धनुःकृष्णबाणी (उ) | २४७.३७ | धन्यंयशस्यमायुष्य (पा) | ८३.११६ | धन्यामुमिश्रासुतरावीरसूः (पा) | १.४१ | धन्योयं धन्यतां प्राप्तः (भू) | १.५६ |
| धनाद्वयस्यसुपुण्ड्रस्य (भू) | १४.४७ | धनुर्द्वयप्रमाणेतु (उ) | २००.६६ | धन्यंयशस्य मायुष्य (पा) | १०३.३ | धन्यासिं वमुलेवाणी-(पा) | ६६.१५६ | धन्योयमाश्रमोजातो (पा) | ६६.७७ |
| धनाद्वयोरूपवानदक्षो (स्व) | ४३.४८ | धनुर्धरोधनुर्वेद (पा) | ५६.८४ | धन्यंयशस्यमायुष्यं (उ) | १२२.१०२ | धन्यःस्तएवकृतिनश्च (पा) | ६८.११३ | धन्योराजावीरमणि (पा) | ४६.२६ |
| धनाद्वयोलोहपात्रस्यैयं (क्रि) | ११.५२ | धनुर्भक्तस्वाजनकजां (पा) | ५७.२५ | धन्यं वृन्दावनं चेदं (उ) | १६३.६५ | धन्यास्तुतेमाधव (पा) | ६४.५ | धन्योसिकपिवर्यत्वं (पा) | ५२.५ |
| धनाद्धर्मः प्रभवति (क्रि) | ४.२५ | धनुर्भंगेमतिभ्रंशे (पा) | ६६.८१ | धन्यः स्रारण्यकोनाम (पा) | ३८.३ | धन्यास्तेमानवालोके (उ) | ३८.११६ | धन्योसि द्विजवर्यत्वंयस्य (पा) | १.६ |
| धनानामोश्वरोदेवो (सु) | १३.३८० | धनुर्विस्कारयतंतं (पा) | ४५.३६ | धन्यः खलुभवान् (उ) | २५४.६८ | धन्यास्तेमानवालोके (उ) | ४०.४८ | धन्योसिधोरधरणीधर (पा) | ८५.३७ |
| धनाभावेनगृहीणां (उ) | २०१.४० | धनुर्विस्कारंमुदुदमेघ (पा) | २७.२ | धन्यः सलोकेपुरुषः (उ) | २२१.३८ | धन्यास्तेमानवालोके (उ) | ११८.४८ | धन्योसिनुपवर्यस्त्व (पा) | २२.११ |
| धनायुर्वर्धतेतस्य (उ) | ७२.५ | धनुर्वेदस्य चाभ्यासं स (भू) | २४.१३ | धन्याश्रमभूवन्वतभिल्लकन्या (पा) | ३३.३१ | धन्यास्मि कृतकृत्या (उ) | २५४.३ | धन्योसि विप्रप्रयतस्त्वयैत (उ) | १०७.२६ |
| धनार्थक्रियतेसेवासर्व (क्रि) | ५.१६३ | धनुर्वासंस्ततिर्यत्र (उ) | २००.६७ | धन्यात्ममप्यस्य (उ) | २०७.२४ | धन्यास्मि कृत्यास्मि (उ) | ८८.१६ | धन्योसि विप्राग्रयतस्तत्र (उ) | ११०.२६ |
| धनाशाजीविताशाच (सु) | १६.२५० | धनुर्वीरेण तांछेलान्त-(भू) | २६.१६ | धन्यात्वमसिहेमां पियते (उ) | २२१.४७ | धन्यास्मि देवदेवेश (उ) | २४२.८६ | धन्योस्मि कृत कृत्यास्मि (उ) | २४०.११ |
| धनिकस्यगृहाद्रात्री (उ) | १६७.४० | धनुष्टकारयामास (पा) | २३.३३ | धन्यायोध्याभवालोका (पा) | २६.३६ | धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि (उ) | ७१.३१३ | धन्योस्मि कृतकृत्या (उ) | २४०.३८ |
| धनिनांविमुचंति (उ) | २०१.३६ | धनुष्यवसिदेवेशमास (उ) | २५३.१४१ | धन्यालोकाद्विमुच्यं (पा) | १४.३ | धन्याहंकृत्यास्मि (उ) | २५४.६० | धन्योस्मि कृतकृत्या (उ) | २४६.६१ |
| धनीतत्पुण्यमाधत्तेस्व (उ) | ११२.२४ | धनुस्तटंवागराश्च (पा) | ११६.२३३ | धन्यावयंयेरामस्य (पा) | ५५.५६ | धन्याहर्मंयिलीराज्ञी (पा) | ५८.५५ | धन्योस्मि कृतकृत्या (उ) | २४६.२८ |
| धनीविप्रकुलेभोगी (सु) | १५.२४३ | धनुस्त्रिजशतविस्तीर्णो (उ) | १२८.१६३ | धन्यावयंराममुखा-(पा) | ४६.१६ | धन्योऽयमनिधन्यो (क्रि) | १६.२४ | धन्योस्मि तिवदन्ब्रह्मा (उ) | २४०.४२ |
| धनुः कोट्याचशंलेंद्रानु (सु) | ८.३१ | धनेस्थितोपियोमर्त्यो (क्रि) | २०.७ | धन्यासाजानकी देवी (पा) | ५७.११ | धन्योऽसित्वं कृतार्थो (क्रि) | १७.२३० | धन्योऽस्म्यद्यगृहधन्यं-(स्व) | ३१.१६५ |
| धनुर्लंघः महाभागद्विवर्षे (स्व) | ३.५६ | धन्यं कर्मचतेजस्य (ब्र) | २६.३४ | धन्यासाजानकीदेवी (पा) | ५७.४१ | धन्योऽसित्वं महीपाल (क्रि) | २३.१७ | धन्योऽस्म्यद्यगृहधन्यं (उ) | २५५.५० |
| धनुः पिनाकंयुधाय (उ) | १८.४८ | धन्यतेचकुलंधर्मो (ब्र) | २६.३३ | धन्यासामुद्यजन (उ) | २०६.४६ | धन्योऽसित्वं मुनिश्रेष्ठ (क्रि) | १.२१ | धन्योऽस्म्यनुगृहीतो (सु) | ४१.१०३ |
| धनुः पुत्रविहीनस्तु-(पा) | ८७.४३ | धन्यपुण्यं महाह्यानं-(स्व) | १०.३ | धन्यासि कृतकृत्या (उ) | २५४.१६ | धन्योऽस्मि मुनिवर्यस्य (पा) | १६.५२ | धन्योऽस्म्यनुगृहीतो (सु) | ४१.११६ |
| धनुरादाय वेगेन बाणं (भू) | ४४.२ | धन्यं मुखं पश्यतवीरधाम्नः (पा) | ३.३२ | धन्यासि कृतपुण्या (उ) | २२४.१३ | धन्योदशरथो राजा (उ) | २०७.१५ | धन्योऽस्म्यनुगृहीतोस्मि (पा) | ६४.२ |
| धनुरानम्य वेगेन (भू) | ३०.२४ | धन्यं पशस्यमायुष्यं (सु) | २.४७ | धन्यासि जानकीप्रातः (पा) | ५५.१७ | धन्योदशरथो राजा (उ) | २०.१६ | धन्योऽस्म्यनुगृहीतोस्मि (उ) | १६८.५५ |

श्रीपद्मपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२३३

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| धन्योहंकृतकृत्यो (पा) | ३६.८६ | धर्मभजस्वसततं (उ) | १२७.१६५ | धर्मद्विषादानवानाम् (उ) | ५.२० | धर्ममेकेधनचैके (पा) | ७३.१६ | धर्मराटकालदंडेन (क्रि) | २३.१२४ |
| धन्योहंकृतकृत्यो (उ) | ८६.४१ | धर्मभजस्वसततं (उ) | १६६.८५ | धर्मनिष्ठातपोनिष्ठा (उ) | १२७.१७० | धर्ममार्गं न दृष्टंते श्रुतं (भू) | १७.४१ | धर्मवर्तसदाचारंभवं (सु) | १७.१५ |
| धन्योहंदिहेतां (उ) | ८०.५६ | धर्मरक्षन्ति ये कोपाच्छ्रयं (पा) | ६६.६८ | धर्मनेत्रत्राणमस्मादधिकं (सु) | १५.१२१ | धर्ममेवप्रवक्ष्यामिभवती (भू) | ५०.१५ | धर्मवाक्यप्रशस्त्याय (भू) | ६०.११ |
| धन्योहमद्य रामस्यचरणा (पा) | ३७.३६ | धर्मशान्तः सच्चिनुयाद (पा) | ६६.१६ | धर्मनेत्रविहीना त्वं (भू) | ५०.५३ | धर्मयात्राप्रसंगेननाथस्ते (भू) | ४१.३६ | धर्मवृद्धिकरं कर्मचरामः (सु) | १३.४१० |
| धन्योहमद्य रामस्यमुखं (पा) | १६.३८ | धर्मसूजति धर्मात्मा (भू) | १२.४६ | धर्मनैपुण्यकामानां (स्व) | ५३.६६ | धर्मयुवतां सतीभार्या (भू) | ५६.२५ | धर्मव्रतत्यागहुतादि (न) | २५.१७ |
| धर्मनियत्रमुत्सामा (उ) | १६२.२१ | धर्मएवपुनः श्रेयान् (पा) | ६६.७८ | धर्मपत्नीपरित्यागी (पा) | ६२.२० | धर्मराजं पुनः प्राहुः (उ) | ६६.२१ | धर्मशर्माणामाहाय (भू) | १.५८ |
| धर्मयोगांसमुद्भूता- (सु) | ३.१०३ | धर्मकर्माणि कुर्वन्ति (क्रि) | २.२६ | धर्मपत्न्यः समाख्याता (सु) | ६.१७ | धर्मराजं समायातं (भू) | ७६.२ | धर्मशर्मातदोवाच (भू) | २.१६ |
| धर्मिमल्लतेकरिण्यामि (पा) | ११२.१२६ | धर्मकार्यचयत्किंचित् (उ) | १२८.२१६ | धर्मपाठकृतांलोकैयज्ञ (सु) | ४६.२०१ | धर्मराजं त्वयाप्रोक्तं (पा) | ३१.२ | धर्मशर्माणमायात (भू) | २.३ |
| धर्मवैप्रथमदैर्घद्वितीयं (सु) | ४०.६० | धर्मक्षयाच्च देवानां (भू) | ६६.२११ | धर्मपुण्यविहीना तु (भू) | ८६.५ | धर्मराजनमस्तेस्तु (उ) | ६६.५३ | धर्मशर्मोति पुत्रस्य (भू) | १२२.१८ |
| धर्मव्यापातयामा (उ) | २४५.३८१ | धर्मक्षेत्रेकुरुक्षेत्रेकालिग (उ) | २१७.८ | धर्मपुत्रमहाभाग शृणु (उ) | ४५.२ | धर्मराजनरावेतावानो- (स्व) | ३०.३७ | धर्मशालांगृहाम्भाशे (उ) | २२०.२८ |
| धर्मानाममहाप्राज्ञसर्व- (स्व) | २८.२६ | धर्मक्षेत्रसचिवश्रेष्ठ (उ) | २११.२० | धर्मप्रसादतस्तस्मात्कुर्व (भू) | १३.३४ | धर्मराजप्रसादेन (पा) | १०३.१० | धर्मशास्त्रविदोविद्वान् (उ) | १६७.५६ |
| धर्मान्तरूपवृत्तेपूर्वं- (सु) | ६.१७ | धर्मज्ञस्त्वंकृतज्ञस्त्वं (सु) | २.७७ | धर्मवृद्धिर्यंराजाकृत (क्रि) | ६.२६ | धर्मराजमहाप्राज्ञभवान् (भू) | ५६.३० | धर्मशास्त्राणिचात्या (सु) | ३४.२७३ |
| धर्मायांतीर्थभूतानांसर्वं (सु) | ४६.१२६ | धर्मज्ञो ज्ञायते राजन् (भू) | ६०.३१ | धर्ममंगं चकाराथ (भू) | ८६.१२ | धर्मराजमहाभाग (पा) | ६८.२ | धर्मशीलं च्छाद्यदयो- (सु) | ४०.३३ |
| धर्मिण्यासि प्रजां चेमां (भू) | २८.११७ | धर्मज्ञो धर्ममार्गाणां (पा) | ८६.५ | धर्मभावप्रवक्ष्यामि (भू) | ७१.४ | धर्मराजशिविः (उ) | २०६.१ | धर्मशास्त्रस्वरूपाय धर्मं (पा) | ६७.१६ |
| धर्मोद्योरोवराहोसिलोक (उ) | १६७.६४ | धर्मतः पालयामासप्रजाः (उ) | ५७.८ | धर्मभावाः प्रवर्तते तस्मिन्- (भू) | ३६.५७ | धर्मराजशिवी राजा (उ) | २०६.३ | धर्मश्चार्यदक्षकामदक्ष (स्व) | २२.६४ |
| धर्मोर्मुहसिदेवेश (उ) | २३३.१४ | धर्मत्यागो भवेद्रामन- (पा) | १०५.६१ | धर्ममार्गचकारमंचम (उ) | १५१.१४ | धर्मराजस्तदा तत्र (भू) | ७५.३५ | धर्मश्चार्यदक्षकामदक्ष (उ) | १२८.१०२ |
| धर्मचरयथाशक्ति (पा) | ११४.४३४ | धर्मत्राणायदेवे (उ) | २४५.३२५ | धर्ममाकृष्टवांस्वैव (भू) | २.२ | धर्मराजस्मृतं शास्ता (भू) | ६७.१०८ | धर्मसंरक्षणार्था (उ) | २४५.१७४ |
| धर्मचक्राव्येतलोके (सु) | ४६.१४६ | धर्मदत्तोप्यसौ ज्ञात (उ) | १००.३१ | धर्ममार्गपरित्यज्य (क्रि) | १६.११ | धर्मराजेन तेनाह नरकेषु (भू) | ५२.२५ | धर्मसत्यरतिः स्वान्मे (भू) | ६०.२२ |
| धर्मचक्रोत्तुक्रामेनजानी (सु) | १६.३६२ | धर्मदानेनतिकृत्वा (उ) | १२७.१५१ | धर्ममार्गो न दृष्टो (पा) | ८६.५२ | धर्मराजोऽज्ज्वीत्स्वं (भू) | ७६.४ | धर्मसारः समुद्दिष्टः (स्व) | ५१.५३ |
| धर्मप्रतिष्ठ धर्मात्मा (भू) | १२.५६ | धर्मद्वंद्वं ह्यं वीजं- (स्व) | ३१.७५ | धर्ममूर्तिधराः (सु) | ६.५४ | धर्मराजो महाप्राज्ञो (भू) | १४.३४ | धर्ममूर्तिः सदाभावा (उ) | १२५.७६ |



श्रीषष्ठमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२३४

| | | | | |
|------------------------------------|-----------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|---------------------------------------|
| धर्मस्तुकीदृशोजातस्तेन (भू) १२.१२५ | धर्मार्थं च काम च उ) ७४.२ | धर्मार्थकाममोक्षाणां (उ) १२८.२७६ | धर्मधर्म्मौलुब्धुः (उ) २२८.६६ | धात्रीछायांसमाश्रित्य (उ) १०५.२६ |
| धर्मस्तु बद्धतेनैव (क्रि) ४.३१ | धर्मद्विर्धर्मतः काम (उ) १२८.६२ | धर्मार्थकामान्धर्मेण (सृ) १२.५७ | धर्म्यस्यार्थस्य (उ) २७.७ | धात्रीछायासुयोविप्र (न) २२.२४ |
| धर्मस्थानेषुयैदं (उ) ७४.१६ | धर्मद्विर्धर्मतः कामः (स्व) २२.८३ | धर्मार्थशास्त्ररहितां (सृ) २२.१७ | धर्म्येन्नियतं विप्रं (भू) ४६.४६ | धात्रीतरुचयेध्वनति (क्रि) १६.१०६ |
| धर्मस्य कारणं सर्वं (भू) १४.१४ | धर्मादिदेवतानां च (उ) २२८.२३ | धर्मार्थहिमयावित्तं (उ) २२०.३० | धर्मितस्तुतदाविप्रो ह्यत (स्व) २०.३३ | धात्री तरुचयो हति (क्रि) २४.६५ |
| धर्मस्य गतयः सूक्ष्मा (पा) ८७.४ | धर्मादिभिश्चनवभिः (पा) ६५.८६ | धर्मिष्ठेन तु पथेन गा- (उ) १२६.२२८ | धर्मितुं तामथारेभेन (पा) ११२.५१ | धात्रीतुलस्युद्भव (उ) १०५.२६ |
| धर्मस्य च इदं कर्म (उ) १४१.३० | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धर्मलेश्वरनामततः (उ) १५१.१०० | धात्रीतुलस्योर्भवितश्चं (क्रि) ३.५ |
| धर्मस्य नियमो यो (सु) १६.३२६ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धर्मलेश्वरविख्यातं (उ) १५१.२६ | धात्रीतुलस्योर्माहात्म्य (उ) १०५.२८ |
| धर्मस्य रक्षकः कायो (भू) ६५.१ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धाता गोप्ता प्रजानां (भू) २८.८३ | धात्रीपत्रकातिकेच (न) २२.२३ |
| धर्मस्त्वायतनं यस्मात् (स्व) ५४.३६ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धातापालयिता राजा- (भू) ३८.३८ | धात्री पत्रैः फलैर्विप्र (न) २२.२१ |
| धर्मस्त्वायतनं यस्मात् (सृ) ५०.६२ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धातार्यमाचक्षिपन्नश्च (उ) ५.५५ | धात्रीपत्रैर्नैवैर्यस्तु (क्रि) १२.२३ |
| धर्मस्त्वेषां स्वकरे (भू) ५५.२ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धाताविधाताजगतो (उ) २३८.३७ | धात्रीफलकृतमाला (न) २२.११ |
| धर्मस्त्वेषां प्रसंगेन (पा) ६६.६ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धानावैनारदं प्राहं (उ) ७६.२ | धात्रीफलकृतमाला (उ) १२१.३ |
| धर्माग्नौ महाप्राज्ञ (भू) २२.१० | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धातोफलं तुलसी- (उ) १२१.६ | धात्रीफलं तुलसी- (न) २२.२४ |
| धर्माग्नौ महाप्राज्ञो (भू) २२.३७ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धातुत्वेनिगमैश्चैवते (उ) १२२.६१ | धात्रीफलं च तुलसी (उ) १०५.२१ |
| धर्मावारपत्नी पुण्यां (सु) ५६.६ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धात्र विभवस्युक्तं (उ) ४४.३ | धात्रीफलं च तुलसी (उ) १०५.२० |
| धर्मावारपत्नी पुण्यां (भू) ८६.६ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धात्रीकाष्ठस्यमालां (क्रि) ८८.४८ | धात्रीफलं च तुलसी (क्रि) २४.५६ |
| धर्मावारपत्नी पुण्यां (पा) ६२.६६ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धात्री च तुलसीदेवी (क्रि) २४.५२ | धात्रीफलं च तुलसी (क्रि) २४.५७ |
| धर्मावारपत्नी पुण्यां (उ) २०७.१ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धात्री च तुलसीदेव (क्रि) २४.५६ | धात्रीफलं च तुलसी (क्रि) २४.६१ |
| धर्माणां स्थापनायां (क्रि) १७.१४७ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धात्रीच्छायांसमाश्रित्य (उ) १२१.१ | धात्रीफलं च तुलसी (क्रि) २४.६५ |
| धर्माश्लेषाशश्वदं (उ) १६८.१०५ | धर्मार्थं तु जानाति यः (उ) ६८.८ | धर्मं चैव महाभाग (भू) ३८.१७ | धात्रीछायांसमाश्रित्य (उ) १०५.६६ | धात्रीफलं च तुलसी (क्रि) २४.६७ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|-------|-----------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| धात्रेविधात्रेविश्वाय (उ) | २३६.२३ | धारणहृदयेकृत्वाय (सु) | १५.१८८ | धारामिर्भूरिभूरि (सु) | २३.४१ | धोकारवदनम्यस्य-(सु) | ४६.१७६ | धूपदीपकनैवेद्यः (उ) | २०१.८८ |
| धात्रोफलमयीमाला (क्र) | २४.६१ | धारणहृदयेकृत्वा (पा) | ८५.२७ | धारिततर्वलोकानां (उ) | ३५.२१ | धोमतांचारूपाणां (सु) | १३.५ | धूपदीपकमाला (उ) | २०१.५० |
| धात्र्यानुनस्याहीनं (क्रि) | २४.५४ | धारणाधीश्वरपुत्रो (भू) | ८.७२ | धामिकस्याप्यशक्त (सु) | २३.१७ | धोरतैश्चर्यकार्याणि-(सु) | ४३.३६६ | धूपदीपचनैवेद्यः-(उ) | २५३.१४२ |
| धात्र्यास्तुलस्या (क्रि) | २४.६७ | धारणाभिस्तथाध्वानैः (उ) | ८०.४० | धामिकाश्चप्रजाः सर्वाः (स्व) | ८.२८ | धोरिति विख्यातो (उ) | १८४.८ | धूपमारानिककृत्वासर्वं (पा) | २२.२६ |
| धात्र्युद्धवाप्तमृतः (उ) | १०५.२ | धाररतिन्यालिगं-(पा) | १०५.१३४ | धावंतमनुधावेत (स्व) | ५३.१४ | धीरोभवप्रतीक्षस्वयु (उ) | १८.१४२ | धूपशेषं तु वै विष्णोः (उ) | ३५.८ |
| धान्यं त्रिरशतं त्राय (उ) | १२६.१७५ | धारयन्ति न ये मात्याम् (ब्र) | २२.१४ | धावमाना मुसंधांता (स्व) | ३५.५ | धुंधुकारीगृहेतिष्ठन् (उ) | १६७.५ | धूपैरगहजैरंगवासिनां (उ) | २१६.३६ |
| धान्यदः शाश्वतं (स्व) | ५७.४७ | धारयन्ति परार्थेतिज्ञां (उ) | २१५.४५ | धाव्यर्चनीश्वरभूतस्व (पा) | ८४.६२ | धुंधुकारीनिनामास्व (उ) | १६६.६६ | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यद्रोणानहस्रोऽण- (सु) | २१.६२ | धारयन्ति विव द्यमाद (भू) | ६६.४ | धिरुक्तः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यद्रोणानहस्रोऽण- (सु) | २१.१३८ | धारयन्तीषु पत्याति (उ) | २२७.६ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यद्रोणानहस्रोऽण- (सु) | २१.१६६ | धारयामास वरणीं (उ) | २३३.१५ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यप्रदानं प्रवदति (सु) | १८.४७० | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यप्रदानं प्रवदति (सु) | ११.७७ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यप्रदानं प्रवदति (सु) | ३२.६१ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यशैलादगोदेवाः (सु) | २१.८६ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्यानि शाकतैलानि-(स्व) | ३०.५ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धान्ये मसूरिकाप्रोक्ता (ब्र) | २१.१६ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धारणगिरिवर्यस्य (उ) | २४५.२१६ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धारणचोदध्वं पुद्गलाणां तु (उ) | २२४.२४ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धारणतावदेव कथादेकै (पा) | १०८.१० | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |
| धारणसर्वदेहानां पूजायै (पा) | १०५.१४६ | धारयाम्यहमेवाद्रि (ब्र) | ८.२३ | धिरुक्ताः सर्वलोकेऽपि (भू) | ६१.३४ | धुंधुकारीदुः क्षितात्मा (उ) | १६७.५० | धूमपानं प्रकुर्वन्ति ते (क्रि) | २३.१४६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| धृतपूर्यः सुतवशाच (सृ) | ३४.१८५ | धेनुंप्रसाद्यबहुमित्रं तैर्य- (पा) | ३०.१२ | ध्यातृचित्तद्विरेफाणां (पा) | ८०.१६ | ध्यानावस्थितचित्तेन (क्रि) | १३.३२० | ध्यान्तीगोकुलेकृष्णं (पा) | ७२.५७ |
| धृतराष्ट्रकथंपृच्छे (स्व) | ४०.२४ | धेनुंवहुगुणाहमीम् (ब्र) | ५.६ | ध्यातोहरतियत्पापं (पा) | ६४.१३८ | ध्यानमिष्ठस्यसततम् (स्व) | ६०.३३ | ध्यायन्नारायणदेवं (क्रि) | २२.१०६ |
| धृतांचतुर्भिर्विश्वं (सृ) | २७.४७ | धेनुकेपश्यगच्छत्वं (सृ) | १८.३३७ | ध्यात्वाकृत्वानमो (उ) | ७८.३५ | ध्यानेनचस्वियरेणागु- (सृ) | ३४.१६३ | ध्यायमानः सधर्मता (भू) | ३२.२३ |
| धृतिर्वरीयान्यवसुः (सृ) | ७.१०६ | धेनुकोटिसहस्राणि (ब्र) | १७.७ | ध्यात्वा नत्वा हृषीकेयं (भू) | ६८.२ | ध्यानेनहृष्ट्वांश्चापि (पा) | १०७.२५ | ध्यायमानस्तदाकीर्य- (सृ) | १८.१११ |
| धृतीद्वर्षपुंड्रः कृतचक्र (उ) | २२४.६६ | धेनुदानंचततुल्य (उ) | ४८.१३ | ध्यात्वानारायणं देवं (उ) | २३२.१५ | ध्यानेन च महात्मासौ (भू) | ७.७६ | ध्यायमानस्य तस्यापि (भू) | १६.६ |
| धृत्वाकराभ्यां तत्तां (पा) | ४२.५४ | धेनुरूपेणसादवीमम- (सृ) | २१.६२ | ध्यात्वासमर्चयामा (उ) | २३२.६ | ध्यानेन च समागुक्तो (उ) | १४१.२३ | ध्यायेच्चैव हृषीकेशं (भू) | ८७.३४ |
| धृत्वांजलीपुस्तकस्य (उ) | १६८.१८ | धेनुसतंतथादत्तं त्रिणिमा (सृ) | ३४.३७४ | ध्यात्वासरस्वती (उ) | ३३.२७ | ध्यानेनवार्धमाणां पितृ (भू) | ८.४ | ध्यायेच्छैव हृषीकेशं (भू) | ८७.३४ |
| धृत्वाद्रुवार्णो रूप (उ) | १३.२३ | धेनुवत्सितुदातव्या (उ) | ३५.४८ | ध्यात्वाहंत्वां च (उ) | ६३.८ | ध्यानैकयोगनिरता (सृ) | ४६.६२ | ध्रुवः शीतोऽपुधस्तारो- (स्व) | ३१.१८३ |
| धृत्वा मत्सदृशं (उ) | १३.१६ | धेनुः श्वेतायथाकृष्णा (उ) | ६०.५३ | ध्यात्वंवंपूजकः सम्यगा (पा) | १०४.६१ | ध्यायंतश्चपरंब्रह्मण- (स्व) | ३१.२०० | ध्रुवस्थानसुर्वलोकं (सृ) | ३०.१०६ |
| धृत्वा ममायादोर्नल्लो (पा) | ७२.६ | धेनुस्स्यादोडशाढ्य- (सृ) | ३४.३६५ | ध्यान्तं च द्विषाऽप्यक्षः (पा) | १०६.५४ | ध्यायतांचाचानियतं (स्व) | ३५.१३ | ध्रुवजनां न चकृते (भू) | २८.६३ |
| धृत्वा दक्षसिचार्वगी (उ) | २४२.१०२ | धेनूनांचशतंप्राज्ञ- (सृ) | ३४.२३ | ध्यान्तं चैव प्रवक्ष्यामि (पा) | ८४.८७ | ध्यायतिस्मपरं देवं (सृ) | १५.१५ | ध्रुवजज्जांकुशांभोज- (पा) | ६६.१०२ |
| धृत्वा त्रैपृथिवीं देवीं (उ) | १६६.१० | धेनूनां जनतदत्वा (ब्र) | २६.४ | ध्यान्तं तस्य प्रवक्ष्यामि (भू) | ८६.७३ | ध्यायति परमतेजस्तदि (पा) | १०५.२८ | ध्रुवजवाजेन राजेन्द्र (भू) | ८३.५५ |
| धृष्टकेतुः स्वर्गमर्मा- (सृ) | ८.१२७ | धेनूवर्षांसिरत्नानि (उ) | १४.४२ | ध्यान्तं तस्य प्रवक्ष्यामि (पा) | ८४.७६ | ध्यायंतो न्यमनसो (उ) | २३१.३२ | ध्रुवजगुस्त्वममं नानामि (स्व) | ६.५६ |
| धृष्टचतुर्लसिकाष्टं (पा) | ८०.५६ | धैर्यं पश्येह नित्यततेन- (पा) | १०५.५३ | ध्यानधारणयवुद्ध्या (सृ) | १५.१६५ | ध्यायसेहृदये किं त्वं (पा) | १०५.२१६ | ध्रुवसितं वानरेन्द्र (उ) | २४२.३३३ |
| धेनवोपानहं च्छत्रतया- (स्व) | १८.१८ | धैर्यं सुमनसा स्याद्यद्वं (सृ) | ३३.३३ | ध्यानमुष्णादकं कर्म (भू) | २०.४६ | ध्यायेश्विलस्य भुवनं- (भू) | २१.२१ | ध्रुवस्तेन रश्चगन्मात्र (उ) | १२८.२३५ |
| धेनवो यत्र वेदाश्च- (पा) | १०६.३६ | धैर्यं ऐतत्सालोके (सृ) | ६.१८ | ध्यानयोगपरो भूत्वा- (पा) | १०५.१८७ | ध्यायते नितयेत् मोहि- (भू) | २१.६ | न | |
| धेनुकस्य वनं प्राप्य (उ) | २४५.१३६ | धीतकापायवसनो (भू) | ५६.२५ | ध्यानयोगरताश्चैव (भू) | ६५.१८ | ध्यायते नित्यमनसो (उ) | १६८.६८ | न कदाचिद्दृष्टो (उ) | १६२.३१ |
| धेनुजिलमयी दद्यात्सत् (सृ) | २०.४७ | धीतकीशेयवासीभिः (सृ) | १५.३६ | ध्यानाच्चाल तेजस्वी (भू) | ३६.१५ | ध्यायन्मसलपत्रा (उ) | २४१.१६ | न कदाचिन्मया भर्तु (उ) | १०६.१५ |
| धेनुपयास्विनीपस्तु (क्रि) | २०.११० | धीतवस्त्रधरः स्नात्वा (पा) | १०४.५५ | ध्यानांतैतस्य भालात् (उ) | २२६.२१ | ध्यायति त्रैदविदुः (भू) | २१.१७ | न कदाचिन्मया भर्तु (उ) | १६४.२४ |
| धेनुपुरातनीयच्छेत् (ब्र) | २४.२६ | धीतिनमृदुवस्त्रेण सर्वतो (पा) | १०५.१२६ | ध्यानापोपवने तस्यो- (पा) | १०४.१४७ | ध्यायंतींचितयानां तामु- (भू) | ३३.२८ | न कथं मयि भविनसंलभते (पा) | ७३.५१ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| न कथं विष्णु रूपास्ते (उ) | ६३.११ | न किंचिद्ब्रूचेसं मील्पनेत्रे (उ) | २०६.२० | न कोपितत्रहीयेतन (पा) | ४३.३३ | न भृत्तिपासेग्लानि वा (सु) | ४५.४३ | न गतिविद्यतेऽन्यस्य (स्व) | ३६.११४ |
| न कन्याजननीववापिन (सु) | ३४.१८२ | न किंचिद्विद्यते राजन् (उ) | ६३.१२ | न कर्तृक्षीराशनं कुयदिव (सु) | २४.५७ | न लदंष्ट्रायुषोपेतो ग्याघ्र (सु) | १८.२६६ | न गरस्वकमागच्छस्व (क्रि) | ५.११ |
| न करोति चयानारी (ब्र) | १३.६ | न किंचननदन्तं तवीक्ष्य (पा) | ५८.२३ | न कर्तृचतद्विजानीयान्न (उ) | ३८.२२ | न लनिभिन्नहृदयः (उ) | २३८.१२१ | न गरीदेवताहास्यस्तव (उ) | १८०.१२ |
| न करोति शुभ पुण्यं (भू) | ३८.८ | न कुडलस्य पुत्रेण सदृश- (भू) | ६१.४६ | न कर्तृचरेददनेकमन्दान्ते (सु) | २०.६१ | न लभेदनामास्फोटं (स्व) | ५५.६२ | न गरेपुचपुण्येषु (सु) | १७.३२१ |
| न करोति हरेः पूजां (पा) | १७.५५ | न कुयत्सिधितं वस्त्रं (उ) | ६४.६६ | न कर्तृचैव तथा ज्ञात्वा (उ) | ३८.२१ | न लाम्रेण शिरदिच्छत्वा त्रयं (सु) | ३१.६५ | न गायत्र्या समं जाप्य (पा) | ६४.५१ |
| न कर्तव्यं त्वया (भू) | ७.३६ | न कुर्यान्निमानसं विप्रो (स्व) | ५३.२३ | न कर्ततः स्वेच्छया स्वर्गं (उ) | २०५.१४ | न लार्थं व्यमाणा साकंडू (भू) | ५३.६१ | न गुप्तं देहिनां (उ) | २०३.४४ |
| न कर्तव्यस्तदाहर्षः (उ) | १३२.११६ | न कुर्याद्वहुभिः सार्द्धम् (स्व) | ५५.३३ | न कर्तभोजीनरोयस्तु (उ) | ६४.६२ | न लोदितव्यं तां वृत्तं (क्रि) | १६.२४ | न गृहीतं भोजनं च (उ) | ३१.२७ |
| न कलिः प्रणयादप्योन (उ) | ८.१६ | न कुर्वति क्रियां काचिदर्थं (स्व) | ३१.१८६ | न कर्तव्यक्षारलवणं याव (सु) | २४.११ | न लितानां च नदीनां च (सु) | १८.३६४ | न गृहे वसतिर्दत्ताति- (उ) | १२६.१०५ |
| न कश्चित्प्रतिद्विष्या (पा) | ११४.१४० | न कुर्वति भयं तीव्रं (भू) | ४२.३८ | न कर्ता शीतवष्टमीपुस्याद् (सु) | २०.१०८ | न लोभ्यः कनकत्पत्ती (उ) | ६.२६ | न गेद्राजोद्दि यथा (भू) | १०२.३८ |
| न कश्चित् व्याधितो (उ) | ६८.२८ | न कुर्वति महात्मानो (भू) | २७.१५ | न कर्तुन स्वधाकारे (पा) | ११४.३६८ | न लोविदारयामास (उ) | २३८.१२० | न गेद्रोयानि सर्वत्र नाक (भू) | ३२.६ |
| न कश्चित् निजग्राह (पा) | ६५.५७ | न कुर्वत्यात्मनः श्रेयस्त (भू) | ६६.१०४ | न क्षत्रग्रहपीडामुरा (उ) | १२८.२८४ | न गंगान गया काशी (उ) | १६५.३५ | न गतो ताम्यां कृतस्मनं (उ) | १६२.४१ |
| न कस्यचिज्जयस्तात (उ) | २१५.२३ | न कुलः सहदेव (सु) | १३.११६ | न क्षत्रताराद्विजवृक्षगुल्म (सु) | ७.७० | न गंगा न गया राजन् (उ) | ५६.१६ | न गतो ताम्यां कृतस्मनं (उ) | ३४.५७ |
| न कायवलेषा वैधुर्यं (प) | ६६.४१ | न कृच्छ्रान्समश्रीयात् (स्व) | ५८.२३ | न क्षत्रवधर्मं जानीये (पा) | ११६.१८१ | न तंगंगायानकाश्यां च (उ) | ५४.८ | न गतैर्विस्मृः कुटिलै (उ) | ६.११ |
| न कारितं च भ्रूति (उ) | २०१.६५ | न कृतमर्त्यलोकेयैः (उ) | १२०.२१ | न क्षत्राणि च सोवायतथैव (सु) | ४०.७६ | न गंगासदृशी सिद्धि (उ) | १२६.२४५ | न गता वजाताम्यां तेषु (स्व) | ५८.१४ |
| न कायं विद्यते लोके (उ) | १६८.४८ | न कृतं शोभनं मष्ट (भू) | ४.३१ | न क्षत्राणि विद्योमीनि (सु) | ४६.३५ | न गच्छंस्तु तद्वैदापि (स्व) | ५५.६६ | न गते तद्वैद्यं चास्या (उ) | २१३.७० |
| न किंचित्प्रणमेट्रिं (पा) | ११५.७३ | न कुतो जीवघातश्च (उ) | ४३.३७ | न क्षत्राधिपतिश्चाभूयं (उ) | २३२.५१ | न गणयन्मूलं विद्रासं (भू) | ६७.१५ | न चकारानिधः पूजां (क्रि) | १०.४३ |
| न किंचिद्वरं यादद्दुःकरं (उ) | १८६.५१ | न कुतो न वैश्वदेवस्तु (सु) | १२६.१०२ | न क्षत्रानुक्रमेणैव क्षिपेन् (सु) | ३४.३१७ | न गण्डकासमं नीयं (उ) | ७५.२५ | न चक्रो मानसं युनांते चतां (उ) | २२०.२२ |
| न किंचिदवशीतं तु (भू) | २१.८ | न कुतोऽप्यलोपो (क्रि) | १६.८ | न क्षत्रे न विद्येवापि (स्व) | ५२.४१ | न गता हं यतस्तत्र (उ) | २०१.७८ | न चक्रो वधं गच्छेत् (स्व) | ५५.५२ |
| न किंचिद्वेव नो किंचिद (पा) | ११०.६१ | न कृष्णपक्षे ग्रहणं (पा) | ११५.२३ | न क्षत्रेशो रविस्तेजः (ब्र) | ७१.२८४ | न गतिः पापकृत्यां (उ) | १६८.१०६ | न च चालयितुं शक्तो (पा) | १०८.१३ |
| न किंचिद्विदितं मां सोपि (भू) | ४७.३७ | न केचन तथाभावाश्चेतः (पा) | ८६.११ | न क्षत्रेषु यथा चंद्रः (भू) | ४६.१६ | न गतिः भविता ह्यं कुंभयो (सु) | ३६.११५ | न च जजानाति चेद्राजा (पा) | ११२.१२ |
| | | | | | | | | न च तस्य फलेत्कार्यं (क्रि) | १४.१३ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| नचतेजः प्रकाशोस्ति (उ) | १४.५७ | नचाग्नं नक्षत्रांश्चै (स्व) | ५५.६० | नचास्याभवितादोषः (सु) | १७.२० | न जातुचित्स्त्रियाकार्यं (पा) | २०.२३ | न जायते च देवेषु (भू) | १२०.११ |
| नचनेतमपश्यतकुत्रब्रह्मा (सु) | १५.७० | नचाग्निं नक्षत्रेणोमान् (स्व) | ५५.७८ | न चास्वादयते सा तु (भू) | ५८.७ | न जातुचिद्भयाक्रांता (उ) | १६२.४४ | न जायते व्याधितश्च-(स्व) | १८.७६ |
| नचतेनसमः कोपित्रिषु (क्रि) | २.२८ | न चात्मानं विजानाति (भू) | ६६.१०० | न चिन्तयन्तिमेविष्णुं (पा) | ६६.७२ | न जातोऽस्याः पतिभंद्रे (सु) | ४३.१४१ | नजिघ्रतिपयः शीतं (उ) | १६१.१७ |
| नचतेविप्रियंदाव- (सु) | ३४.३३ | न चात्रकिचित्स्थायि- (सु) | १४.१५१ | नचिंतामहनीकार्य- (सु) | १८.३८६ | न जानंतिनरामूढा-(स्व) | २०.५६ | नजिह्वालेदितक्चक्षु (उ) | २०६.५६ |
| नचतेसुहृन्सुतबंधुजनो न (सु) | २०.१६ | न चात्र क्रियते भूयः (भू) | ६४.१११ | नचेदंशनरैरन्यै (उ) | ३१.६ | न जानंतिमहात्मानं (उ) | २५५.८३ | नजीर्णमलवद्वासा (स्व) | ५४.६ |
| ननदाग्निद्रयतामेतिनातु (सु) | ४६.१०८ | न चाधोर्नैवकोदध्वं चक्षुषा- (सु) | १६.२८० | नचैद्रस्यमुखं विचिन्त (उ) | १६६.७६ | न जानंतिमुराः सर्वे (उ) | २२३.१५ | नजीविष्यामूढभद्रे (क्रि) | ६.७६ |
| नचत्वंनास्यसेनीतांशो (सु) | १७.१५३ | नचाध्यापनतीर्थादि (पा) | १०६.६५ | नचैतानवबुध्यतमनुजा- (सु) | १६.१११ | न जानातिमूढामूढोराम (पा) | ६०.३ | न ज्ञातं च कृतनेन (उ) | ७७.४५ |
| नचपश्यत्यसौघोरं (स्व) | ४२.२२ | नचान्यत्कारणं (सु) | १०.१०८ | नचैवकश्चिदव्यक्तं व्यं (सु) | ३६.७० | न जानातिरघूत्तसंसर्बदेवा (पा) | २६.२६ | न ज्ञातं तच्छ्रितं (उ) | १६७.१७ |
| नचप्रतिग्रहेदोषोऽग्रहीते (सु) | ३६.३७ | नचान्यन्मोक्षदंयस्मात् (उ) | १२६.८० | नचैव मे पिता पुत्रः (भू) | ११.४३ | न जानासिक्तं स्वामिन् (उ) | १००.५ | न ज्ञातं तद्रहस्यं तु (उ) | १६६.७० |
| नचमन्मदिरैप्राप्तांत्यक्ष्ये- (पा) | ११२.८० | नचान्यमानयेथास्त्वं (पा) | ६६.३६ | नचैव वर्षधाराभिर्न (स्व) | ५२.११ | न जानामीदृतिप्राहुराम- (पा) | १०४.३६ | न ज्ञातं यन्मोहोऽप्या (उ) | १६४.३५ |
| नचमूर्खमनृतस्यम् (स्व) | ५७.६४ | नचापत्यकृतां प्रीति (सु) | ४.१०० | न चैव स्तोतुं सर्वज्ञ- (भू) | १६.७३ | न जानामीदृमवृक्ष (उ) | ४५.१५ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचमभवनाकोपः कार्यो (सु) | ३६.३६ | न चापिनरकंपश्येद (उ) | ११८.३५ | न चैवांगुलिभिः शब्दं (स्व) | ५२.१४ | न जानामीः स्वरूपते (उ) | १६६.३३ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचलेभेसुखं ववापि (उ) | १६७.२३ | न चापिर्वर्ण्यक्षेत्रं (स्व) | ३१.१६० | नचैवाश्वाण्यसज्जत- (सु) | ४२.१०६ | न जानामीदिशः क्वापि- (पा) | ६४.७१ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचजोभेतचतं व्यविषम (सु) | १८.३५६ | नचाबुध्यततद्वृत्तवीरको (सु) | ४४.७३ | नचैवधर्मज्ञानाति (सु) | ३०.१५४ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचव्याधिभयंतस्य (पा) | ६५.६५ | नचाभलनचवैधारं- (सु) | ३४.१८४ | नजनन्यं तथापित्रेश (पा) | १४.५४ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचयतस्ततोऽग्रह्याप्रभु (सु) | ४०.६८ | नचारुद्रोदमगर्गद्वेवो- (सु) | ४१.१४६ | न जन्माजितपुण्यस्य (उ) | ६१.३८ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचशक्ययाधर्तुमिति (पा) | १०५.२१३ | नचालनं पदावापि (स्व) | ५५.७३ | न जहाति स्वभावं हि (भू) | ६६.७७ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचश्चेत्योलभेकिचित् (उ) | १६३.४६ | नचाशुश्रूषवेवाच्यं (उ) | २२३.३२ | न जह्यात्तुलसीमात्मानम् (ब्र) | २२.१५ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचसंतिपातिप्रानकृतं (उ) | १२७.८१ | नचाशुश्रूषवेवाच्यं (पा) | ८१.२७ | न जातः कोऽपि संसारे (क्रि) | १६.१८ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |
| नचस्त्रीणां पृथग्यज्ञो (सु) | ३४.७२ | नचास्तितादृशोऽन्याया (सु) | १६.१३३ | न जातुकामः कामानाम् (पा) | ६६.८१ | न जानामीदिशः क्वापि- (सु) | ३२.१६ | न ज्ञातिपोषणं चक्रेन (क्रि) | १०.४२ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|---------------------------|--------|
| नतत्रनास्त्रिकायांनि-(सु) | १६.२१४ | नतस्य फनदानस्य (वा) | ६२.११ | न तुष्णनितगाविष्णु (उ) | ५४.२२ | नतेपुदस्यवः संतिम्नेच्छ (स्व) | ६.१५ | नदत्तेनस्वयंभुवनेन (उ) | २२०.२३ |
| नतत्रमूढाविशितपुरुषा- (सु) | १६.२१७ | नतस्य फनसंख्या (उ) | २४.१४ | न तुष्णोऽंकेवम (उ) | ७७.३६ | न ते नुवाय मनस्याः (भू) | ६६.११२ | नदानीह गोधिप्रः (उ) | २५५.६६ |
| नतत्रानिभयधोरं (सु) | ३१.१५२ | नतस्य वित्तनाशः (सु) | १२.१४० | न तेन त्वंविस्वसुजोषियो (सु) | ३४.१०६ | न तेननुपमोलोकपिता (उ) | २०७.६६ | नददानिदहितु (उ) | १८४.६५ |
| नतत्रास्मिन्ने (पा) | ६७.५६ | नतस्याग्निस्कारः (उ) | २१३.५४ | न तेन प्राणिनः सन्ति (भू) | ६८.५ | न तेनस्वयंमहीराज्य (उ) | २०२.४० | नदवाहचंभीरंमुनिनः (उ) | २३८.७० |
| नतत्रवैकादशीकार्या (त्र) | १५.३३ | नतांगतिमवाप्नोति (स्व) | ५७.७२ | न तेनैशानतेशैवानच (क्रि) | ८.१४ | न तोस्मिदेवं हरिणीधि (सु) | १४.१४० | न ददेच्छाद्वान्नो यो (भू) | ६७.२२ |
| न नस्मुखाय मन्त्रयं (भू) | ६६.१४८ | ननांसानामधेयानि- (स्व) | ८.३३ | न तेनमुष्मांसंभाव्यदध्यो (उ) | १७७.३८ | न तोस्वांमातरं (पा) | ६६.४६ | नदद्याद्गुडमुत्तं (क्रि) | १२.१२ |
| नतधामेप्रियोभ्राता (पा) | ५८.३८ | ननानिश्चलमूढानो (सु) | १२.१२४ | न तेनमदृशोलोके (उ) | २३.१८ | न त्रमोक्षयतिपैशाचं (उ) | १२६.२५८ | नदंनधावनंकुयति (क्रि) | ६.४५ |
| नतथारम्यतेलक्ष्म्यांन- (स्व) | ३१.१२२ | नताभ्यामननुज्ञातो (स्व) | ५१.४२ | न तेपश्यतिकीनाशं (उ) | १६४.१७ | न त्वया दशो यो ह (सु) | १०.७५ | नदंनधावनंकुयति (क्रि) | ११.१३ |
| नतथारोचतेसाधया (उ) | २८.३७ | नतारयतिय पुत्रोमानरं (उ) | २१३.७५ | न तेपश्यतिपंध्यानंनरक- (पा) | ६६.११७ | न त्वाकपार्शनदेवशरणं- (सु) | १७.४५ | नदंनधावनंकुयति (क्रि) | ११.१५ |
| नतद्वासयतेसूर्यो न (उ) | २२८.६८ | नतियतिश्रीनिमुगास्ति (पा) | १११.४४ | न तेपश्याम्यहृश्वार्य्यं- (सु) | १८.३४४ | न त्वातुभार्गवंसर्वं (पा) | ११४.८४ | नदयासदृशोभार्गो (पा) | १०२.१५ |
| नतद्योजनदानानां (पा) | ८४.१६ | नतिष्ठत्याश्रमेयतः (क्रि) | २४.५३ | न तेपुत्रवानुयुक्तं (पा) | १०१.४५ | न त्वायदेतत्संकाद्वारे (पा) | ११६.२५२ | नदगानगुनामह्यं (उ) | ३६.२१ |
| नतद्वक्त्रमस्त्रेणवक्तु- (स्व) | ३१.२०१ | नतिष्ठन्मन्त्रनिर्वासा (स्व) | ५२.३६ | न तेनपुत्रोऽप्यामिदीक्षितो (पा) | १७.५१ | न त्वाविश्वेश्वरदेवं (उ) | २०८.३७ | नदायनगिनानेभीनीर्थे (उ) | १३५.५३ |
| ननसुरासुरमोलि- (सु) | ४४.११० | नतोऽङ्गुलमप्यत्रयचित् (सु) | ३४.२२७ | न तेनकशददिद्रेण यज्ञाः (स्व) | ११.१४ | न त्वास्तुत्वा तु संपूज्य (भू) | ८५.२६ | न दानतपपवाग्नि (भू) | ३७.२३ |
| नतस्मादधिकदुःखम् (स्व) | ६१.६० | नतोऽग्निनिदानानि (उ) | १८१.२६ | न तेनकांध्यनेपुण्यसत्यं (उ) | १२४.८८ | न दत्तंनहुतंकिविदुर्ग (पा) | ६८.७१ | नदानदेवाचंनयामनीर्थे (पा) | ८५.३५ |
| नतस्यार्चिचिन्तीयादनि (उ) | २२४.४१ | नतोऽङ्गकंकुशमन्त्र- (स्व) | ३१.७० | न तेनानुक्तेनसर्गाः पीडा- (सु) | ३१.५५ | न दत्तंनहुतंन-गीर्थे (पा) | ८६.२४ | नदानंनयामनीर्थे (पा) | १०६.६४ |
| नतस्यदुर्लभंकिचिदि- (सु) | १८.१५० | नतोऽङ्गनिर्वाच- (स्व) | ३१.६८ | न तेनानुक्तेनसर्गाः पीडा- (सु) | ३१.५५ | न दत्तंनहुतंन-गीर्थे (पा) | ८६.२४ | न दानाध्ययन विप्रा (भू) | ३८.५ |
| नतस्यनिष्कृताः काचिद् (स्व) | ५६.१८ | नतुकुयद्विदिः स्पृष्टः (सु) | १६.३०१ | न तेनानुक्तेनसर्गाः पीडा- (सु) | ३१.५५ | न दत्तंनहुतंन-गीर्थे (पा) | ८६.२४ | न दानाननयजनं (पा) | ४४.३२ |
| नतस्यनिष्कृताः काचिद् (स्व) | ५६.१८ | नतुतेब्राह्मणाः पूजा- (सु) | १७.२५४ | न तेनानुक्तेनसर्गाः पीडा- (सु) | ३१.५५ | न दत्तंनहुतंन-गीर्थे (पा) | ८६.२४ | न दानाननयजनं (पा) | ४४.३२ |
| नतस्यपुनरावृत्तिना (उ) | ६१.६६ | नतुत्वयाविरहितः (सु) | ३३.१४४ | न तेनानुक्तेनसर्गाः पीडा- (सु) | ३१.५५ | न दत्तंनहुतंन-गीर्थे (पा) | ८६.२४ | न दानाननयजनं (पा) | ४४.३२ |
| नतस्य प्राकृतीमूर्ति (पा) | ७७.४३ | नतुतकयाः क्षयनेतुं (सु) | १६.१३४ | न तेनानुक्तेनसर्गाः पीडा- (सु) | ३१.५५ | न दत्तंनहुतंन-गीर्थे (पा) | ८६.२४ | न दानाननयजनं (पा) | ४४.३२ |



श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२४०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| नदायाश्चवचः श्रुत्वा-(सृ) | १८.३४८ | नदुर्गतिमवाप्नोति (स्व) | १२.४ | नद्याः सैकतवेदिकां (पा) | ११४.२१० | ननर्तमध्येन्निमकमेव (उ) | १६८.६१ | ननुशत्राप्सरः संघा (भू) | ५.६५ |
| नदारिद्र्यनशोकं (उ) | ३०.११८ | नदुर्गतिमवाप्नोति (स्व) | ३८.३६ | नद्योनदाः समुद्राश्च-(सृ) | ५.२६ | ननयिष्ये वनतीर्थमेकश्चै-(भू) | ४१.२६ | न नृशंसा न पिशुना न (भू) | ६५.७ |
| नदी वैतरणीताम्रां (उ) | ६६.४४ | न दृष्टवन्तोदेवादि (पा) | ११४.३७० | नद्रुह्येस्त्वर्भूतानि (स्व) | ५८.१५ | नतर्किलविप्रणि विरुग्य (स्व) | २७.७ | नंदकं वैवहृन्मायेशं (पा) | ७६.६३ |
| नदीतत्र तु संपूर्णकाल-(उ) | १४५.१० | न दृष्टायेनसरितां (क्रि) | ७.४ | नद्यनान्युपकुर्वति (पा) | ६६.४० | ननादैर्द्रस्ततोभीमं (उ) | ६.१६ | नंदगोपमुखाः सर्वे (उ) | २४५.२६३ |
| नदीनां चयथांगं-(उ) | ६२.२८ | न देवगुरुविप्राणाम् (स्व) | ५५.३५ | नधनेनसमृद्धेनविपुला (उ) | १३२.२२ | ननामचरणतस्थ (ब्र) | २०.२३ | नंदगोपश्चकश्चैवयशोदा (सृ) | १३.१४५ |
| नदीनां तु सहस्राणि (भू) | १०१.६ | न देवद्वालयथोः (स्व) | ५२.४३ | न धर्मनियमराजकार्ये (पा) | १००.३६ | ननाम देवताः सर्वा (भू) | ६०.२० | नंदगोपस्तुतंष्ट्वा (उ) | २४५.२३६ |
| नदीनां पर्वतनां च नामधेया (स्व) | ३.१ | न देवद्वयहारो स्यात् (स्व) | ५५.५ | न धर्ममर्थं कामं च (भू) | ६६.११८ | ननाम पादो सद्भक्त्या (भू) | ५.४ | नंदगोपादयोगोपा (उ) | २४८.११ |
| नदीपुष्पेगिरि वरे (सृ) | ३७.६५ | न देववचनात्तातन (स्व) | ३६.७६ | न धर्मयुक्तमनूतं हिनस्ति (स्व) | ६०.२४ | ननामशिरसांतं वै (ब्र) | २.३१ | नंदगोपोथगोपालं (उ) | २४८.६ |
| नदीप्रवाहसंयुष्टः (भू) | ४३.१७ | न देव वाटिकावासी (उ) | १६२.३३ | न धर्मशास्त्रेष्वन्येषु (स्व) | ५३.८३ | न नाम्नानकुलेनेदं (पा) | ५१.२२ | नंदनं भाति सर्वत्र (भू) | १०२.२६ |
| नदीमपश्यंकालिदी (पा) | ७३.२१ | न देवीनचगंधर्वीनामुरी (सृ) | १६.१५४ | न धर्मस्यापदेशेन (स्व) | ५५.११ | ननारीमतमांस्वयं (पा) | ११२.६ | नंदनं तु वनंतत्र (उ) | ४३.१० |
| नदीमालवनीनामतथा (सृ) | ११.३२ | नदीपोस्तिसुनेनूनं (उ) | २०५.३८ | न धर्मधर्मसंयोगंप्राप्तु (सृ) | २२.१५ | ननिद्रानरजंजननो (उ) | ४३.४० | नंदनं वनमेवापि सेवितं (भू) | १०२.१२ |
| नदीपुष्पं समुद्रेषु (क्रि) | २२.३६ | नदीभगिनैर्वैष्वयम् (ब्र) | ४.४१ | नद्यारयेदन्यभुक्तंवास (पा) | ६.५६ | ननिदेहेवतामन्यां (उ) | १६६.५३ | नंदनस्य वनोद्देशे (भू) | ११६.३० |
| नदीरुमुष्पामुर-(भू) | १०२.३७ | नद्यः कुटिलगामिन्यां (पा) | ५.३४ | नध्यानं जपोहोमो न (उ) | १७५.३२ | ननिवर्तितियन्ममपापगति (स्व) | १५.६० | नंदनो वनराजस्तु (भू) | १०२.३० |
| नदीसंगमतीर्थेषु (उ) | ३०.७ | नद्यः पुण्यजलास्तत्र (स्व) | ८.३० | नक्षत्राण्युक्तलोकाश्च (उ) | २२६.१० | ननिवर्तितितुंश्रवयः शपः (सृ) | ४४.१०८ | नंदनानि ततो मायाः (भू) | ११८.२० |
| नदीस्नानं कथाविष्णो (उ) | ११८.४५ | नद्यः प्रावृण्मलासर्वा (उ) | १२२.८१ | न नक्षत्रास्त्रिभुक्तोऽस्व (स्व) | ५५.४५ | ननिवेदयतेयस्तु (उ) | ३६.६० | नंदयानहसंवादमासा-(सृ) | १८.२६५ |
| नदीस्नयणसंघातविमर्श-(भू) | ३२.१४ | नद्यश्चकाः पराः पुण्या (स्व) | १.१८ | न नक्षत्रास्त्रिभुक्तोऽस्व (भू) | ८.३४ | ननिशां नदिनसोपि (उ) | ४६.२३ | नदस्वगोब्रजेमध्ये (उ) | २४५.२१५ |
| नदुनोमिनयातावद्या (उ) | १२६.१४२ | नद्यश्चक्षोलाश्चमहार्णवा (सृ) | ५५.१८७ | न नदीपुनदीब्रूयात् (स्व) | ५५.५६ | ननिशायांसुखं गतिं (उ) | ४३.३० | नंदाथल्लिलाः द्वितीयं (सृ) | ११.४ |
| नदुर्गतिमवाप्नोति (उ) | ७०.३१ | नद्यस्तु विमलाजातारवि-(पा) | ३५.४ | न नदीपुनदीब्रूयात् (स्व) | ५५.५६ | ननिषेधोस्तितदेवयं (उ) | १६८.७ | नंदायेनगहाः वर्गनंदां-(सृ) | १८.४५७ |
| नदुर्गतिमवाप्नोति (उ) | ११८.३४ | नद्याश्च पराभूतिः (उ) | १७.१३ | न नदीपुनदीब्रूयात् (स्व) | ५५.५६ | ननिष्कृतिर्भवेन्मृण्णाम् (ब्र) | १५.१८ | नंदाहिमवतः गृष्टेगोकर्णे (सृ) | १७.१८२ |
| न दुर्गतिमवाप्नोति (स्व) | १२.३ | नद्यादिपुचनस्तितय (पा) | ६६.६६ | न नदीपुनदीब्रूयात् (स्व) | ५५.५६ | ननुतुर्जहसुः प्रोच्यैव-(पा) | ४२.५३ | नंदिकुंडाप्रथमतः (उ) | १३६.३ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| नंदिकेतनुवेपेण (उ) | ११४.१३० | नपतोभिन्निराहारे (उ) | २२८.७० | नपीड्येद्वावस्त्राणि (स्व) | ५५.८६ | न प्राकाशतत्रविशोरक्त (सु) | ४५.१३६ | नभस्यस्थसितेपक्षिः (उ) | ५७.१ |
| नंदिग्रामेनुषण्ड्यांसभरः (पा) | ३६.७५ | नपरद्रव्यनिरतो नच (पा) | ४६.२८ | नपुत्रपशुरनानिक्षयं (सु) | २४.१६ | न प्राप्तः शूकरस्तेन (उ) | १५४.१६ | नभस्यादिपुमासेषु (सु) | २२.६६ |
| नंदिनीयवसंत्वेताः (उ) | १३६.१४ | न परं प्रार्थयेद्भूय- (भू) | ६६.१४१ | नपुनः क्षणमातनामाति (पा) | १०१.३६ | न प्राप्यतेविनापुण्यः (सु) | ४३.१६१ | नभ्राद्रक्तेकोपुण्यः (क्रि) | १३.४२ |
| नंदिनकालनेमिश्च (उ) | १०१.२ | नशक्तिकुयोनिच (उ) | ५४.१८ | नपुनस्त्वद्विज्ञानं (उ) | ७१.१११ | न प्राप्यवैष्णव (उ) | २२६.११८ | न भिदति च दंष्ट्राग्रा (भू) | ६१.२६ |
| नंदिनप्रेषयामास (पा) | ४३.२२ | नपश्यतितदासर्वा (उ) | १८४.१६ | नपुरग्रामदुर्ननिन (सु) | ८.३२ | नबंधूपुत्रैर्नंधनैर्वियुक्त (सु) | २५.३१ | नभिद्यात्पुर्वसमयम (स्व) | ५५.८२ |
| नंदिनीत्येवतेनानदेवेषु (सु) | २०.१४८ | न पश्यति महाप्राज्ञः (भू) | २८.६८ | नपुरश्चरणप्रेक्षानास्य- (पा) | ८१.१८ | नबंधुवर्गो नोपुत्र (पा) | ६०.३६ | न भुजति नराः पापाः (भू) | १२५.१६ |
| नंदिनोवनमथाकर्ण्य (उ) | १०.१७ | नपश्यतिमहाराज (पा) | १७.३२ | नपुरश्चरणेचोर्ण (उ) | ३४.५ | नबांधवानमित्राणि (उ) | ४१.१३ | नभुजितांतराकालेना- (सु) | १५.३०४ |
| नंदिनोहृदयभित्वा (उ) | १२.१० | नपश्येत्प्रतसंस्पर्शम् (स्व) | ५५.४७ | नपुरागंतिहासानांश्रुती (पा) | १०६.४ | न ब्रह्मानन्तरुद्रश्च (उ) | २२६.८६ | न भेतव्यं त्वया वरस सी (स्व) | १५.६३ |
| नंदिन्यांवसमासाद्य (स्व) | ३८.६४ | न पाखंडजनालापः (क्रि) | २२.१२६ | न पुरा देव विप्रैर्भ्यः (भू) | ६७.६३ | न ब्राह्मणान्नवेदांश्चैव (उ) | १२६.७ | न भेतव्यं त्वयामुग्मा- (उ) | २०४.१२५ |
| नंदिशापाद्भवतो (उ) | २४२.३० | नपाखंडेपुनर्वेषु (स्व) | ५७.६८ | नपुष्पफलतांशुल (पा) | ६८.७३ | न भवत्यात्रिपुटेष्ट (उ) | १६२.३५ | नभेनर्ष्येनभेतव्यं त्यजत- (सु) | १३.२३२ |
| नंदी च कातिकेयश्च (उ) | १०१.१८ | नपाणिभुजिताभिर्वा (स्व) | ५२.१५ | नपूजितामहादेवागावो (स्व) | ३५.२१ | नभक्षयेत्सर्वमृगान् (स्व) | ५६.३५ | नभेत्तव्यं हिशकटं (उ) | ३३.२४ |
| नंदीददर्शतसर्वं (उ) | १५१.३४ | नपाणिपादवाङ्मनेत्र (स्व) | ५५.५६ | नपूजितोऽधर्नैवेद्यैः (भू) | ६७.४१ | नभः क्षिन्तिपवनमपः (सु) | ३६.७२ | नभोक्षतव्यं न भोक्षतव्यं (ब्र) | १५.२० |
| नंदीदुतोक्तमाकर्ण्य (उ) | १०.१५ | नपात्रमयद्विप्रैर्भ्यो (पा) | ६४.५० | नपूज्यतेगुरुर्ष्यत्रसर्वास्त (सु) | २२.८५ | नभजेत्सर्वतोमुष्टु (पा) | ८४.३३ | नभोक्षतव्यं न भोक्षतव्यं (उ) | ६०.११ |
| नंदीर्यसमारुह्यनि (उ) | ११.५६ | नपादुकासनस्थोवा (स्व) | ५२.१२ | नपूज्येद्गोत्रचरणं (ब्र) | २६.१४ | नभयं जायतेनस्य (उ) | १३६.७ | नभोगोवस्ततेभुजता (उ) | १३.३७ |
| नंदीश्वरवर्नरम्यतत्र (पा) | ६६.४२ | नपादोसारयेदस्य (स्व) | ५३.११ | नपूज्येन्नैवमभितो नैव- (सु) | ३६.७१ | नभयं विद्यतेतस्य ममापि (भू) | ५०.५७ | नभोनिदद्ववानयथागम- (सु) | ४१.२१३ |
| नंदेनचैवगतं व्ययधर्मः (सु) | १८.३६० | नपादक्येलोभधनं (पा) | १७.४६ | नप्रकाश्यं कदाकुत्र (पा) | ७५.४८ | नभयं विद्यतेतपांशुल (उ) | १४३.५ | नमः कपालिनैर्नित्यं (सु) | १४.११५ |
| नंदेवृणीष्वभद्रतेर्वर- (सु) | १८.४५३ | नपालयन्ति यत्नेन (भू) | ६७.८८ | नप्रजानधनधर्मं (पा) | ६६.४ | नभसिभ्रामयन्सप्तिसच (क्रि) | ६.६ | नमः कपिलविप्रायहृय- (भू) | १६.७१ |
| नंदेसात्वनमस्कार्या- (सु) | १८.४०५ | नपिता पुजितो येन जीव- (भू) | ६३.२१ | न प्रयागेनकाश्यां (उ) | ३४.२० | नभसिभीहरेः प्रीत्यै (ब्र) | २३.८ | नमः कमलनेत्राय (ब्र) | १३.२० |
| नंददवाधानैवशुद्ध (उ) | १७६.५५ | नपीडयितुमर्हति त्वा (उ) | १२६.१५६ | न प्रयाति सुतो भूत्वा (भू) | ६३.७ | नभस्तलं तु संप्राप्य (भू) | ११५.१२ | नमः कमलपत्राक्षनमस्ते (सु) | ३४.११७ |
| नपद्मद्वमरणंभोराम (पा) | १०४.१५२ | नपीडयितुमर्हति त्व (उ) | १२६.१५८ | न प्रविश्य वनं कश्चन (भू) | ६६.१६५ | नभः स्यादेवताः सर्वाः (पा) | ४४.१२ | नमः कमलपत्राक्षनमस्ते (उ) | २५.३३ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२४२

| | | | | |
|-------------------------------------|-------------------------------------|---------------------------------------|-------------------------------------|---------------------------------|
| नमः कृपाकरायैव नमो (भू) १६.६४ | नमः शिवाग्रशांताय- (सु) २३.११५ | नमस्कार्यो महाराजो- (भू) २६.८७ | नमस्तेतसीपुष्पसंकाश (उ) २१२.३६ | नमस्तेभगवन् ब्रह्म (सु) ३४.१२७ |
| नमः कृष्णः वेशध्वज (क्रि) १७.१०४ | नमः शिवायाविदेवाय (पा) ११४.३७२ | नमस्कर्मः मुनियताः क्रतु (सु) १५.११६ | नगस्तेत्यादिमंत्रेण (पा) ११४.५२ | नमस्तेभगवन् विष्णो (उ) १७४.८ |
| नमः कृष्णायनीलाय (उ) ३३.२८ | नमः शिवायास्तुमुरा- (सु) ३४.२५३ | नमस्कृतोभवातेत तीर्थं (उ) २१०.१६ | नमस्तेत्यादिमंत्रेणशत (पा) ११४.३२४ | नमस्तेभस्मभूषाय (क्रि) १३.१०६ |
| नमनुष्यस्तुतिकुर्यान्ना- (पा) ६.६१ | नमश्चकारभरतधर्म- (पा) २.१३ | नमस्कृत्यगुरुस्त्वस्य (उ) २५३.४१ | नमस्तेत्रिजगद्धाम्ने (उ) २२८.७६ | नमस्तेराधयासाड्डम् (त्र) २१.१० |
| नमंत्रनीषधराज (उ) २०६.१६ | नमश्चक्रमहात्मानः (पा) ३८.३६ | नमस्कृत्य ततः पादौतस्यैव (भू) ३८.२ | नमस्तेदेवदेवाय (क्रि) ६.१७५ | नमस्तेवह्नित्राय (क्रि) १३.१०८ |
| न मंत्रा न तपोदानं न (भू) ८१.३८ | नमश्चैतन्यनाथाय (उ) १८४.३६ | नमस्कृत्यदधीचतुप्रच्छुः (पा) १०५.१७४ | नमस्तेदेवदेवाय (क्रि) १३.११० | नमस्तेवासुदेवाय (उ) २२८.८८ |
| नमन्यतेचत्सकर्म (पा) ६४.८५ | नमः समस्तनिर्मण (उ) १७७.४८ | नमस्कृत्य द्विजैर्द्र तं (भू) ११६.१४ | नमस्तेदेवदेवेशनमस्ते (पा) १०५.१६२ | नमस्तेवासुदेवाय (उ) २४५.२१० |
| नमः परमकल्याण (उ) २४६.६६ | नमः समस्त वेदांत (उ) ८०.१४१ | नमस्कृत्यययोगेहंमुमित्रायाः (पा) ४.२३ | नमस्तेदेवदेवेशभक्त्या- (सु) ३८.१३७ | नमस्तेवासुदेवाय (उ) २४६.६२ |
| नमः पातवसंधात (उ) १७७.५० | नमः समस्ताध्वपूजिताय (सु) २६.१२ | नमस्कृत्यवराहायवारुणं (उ) १६६.५ | नमस्तेदेवदेवेशिग्रहा- (सु) ३४.३७ | नमस्तेविश्वरूपाय (सु) २०.१६६ |
| न म. पुण्याय पुत्राय (भू) ३२.३८ | नमः सवर्तिनेतद्रच्छिर (सु) २१.३२ | नमस्कृत्यविषातांर (उ) ५७.२१ | नमस्तेदेवदेवसुगानुर- (सु) ३८.१६१ | नमस्तेवैश्विदुगो (उ) २३७.२५ |
| नमः पुष्करनेत्राय (उ) ७८.४० | नमः सवर्तिनेमौलिमच्छये (सु) ७.१८ | नमस्कृत्यसुरेशायब्रह्मणे (सु) १८.२८ | नमस्तेपरमानन्द (क्रि) ६.१७६ | नमस्तेवैश्वदेवाङ्ग (उ) २३७.२४ |
| नमः पुष्कलपात्राय (उ) ३३.३० | नमस्करोमियुष्मभ्यं (पा) १६.३० | नमस्तस्यैमहादेव (उ) २०१.८१ | नमस्तेपरमेशानकेवल (उ) २१६.८४ | नमस्तेवाङ्मनानन (पा) १०७.८१ |
| नमः पुष्ट्यै नमस्तुष्ट- (सु) २३.११७ | नमस्करोम्यहं देव ब्रह्म (भू) ८३.३२ | नमस्तुभ्यंविजश्रेष्ठ (क्रि) १७.४२ | नमस्तेपापनिर्मोकेन मां- (सु) ३३.११८ | नमस्तेसर्व देवेशनम (सु) ३४.११८ |
| नमः प्रजापतैतस्मै (उ) २२८.८३ | नमस्करोम्यहं पुण्यमस्तु (भू) ६८.३० | नमस्तुभ्यंनमस्तुभ्यं (क्रि) २.६६ | नमस्तेपुंडरीकाक्ष (उ) ४२.१७ | नमस्तेसर्वभक्षाय (उ) ३३.३२ |
| नममौतेनहर्षेण (उ) १२८.२०४ | नमस्कारतुमनुजः (उ) १२०.१० | नमस्तुभ्यंमहादेव (क्रि) १३.१०५ | नमस्तेपुंडरीकाक्ष (उ) २५५.१८७ | नमस्तेसर्वभक्तानां (सु) २०.१५४ |
| नमयाविहितामार्गेत (उ) १६२.३० | नमस्कारः प्रकटव्यस्तस्य (भू) ३७.५१ | नमस्तुष्ट्यै नमः पुष्ट्यै- (सु) २२.३७ | नमस्तेपुंडरीकाक्ष (उ) २५५.२०६ | नमस्तेमन्त्रमननमस्त (पा) ६७.१५ |
| नमयासर्वधात्याज्यं (उ) २०४.१४१ | नमस्कारस्यमाहात्म्यं (पा) १०४.२४ | नमस्तेकमलकांत (क्रि) ४.८८ | नमस्तेपुण्डरीकाक्ष (उ) २५०.७६ | नमस्तेतुजगन्नाथ (उ) ८४.१५ |
| नमः शंखायचक्राय (क्रि) ११.१०१ | नमस्कारेणतद्रच्चसूर्या- (सु) २१.२६५ | नमस्तेकोटराक्षायाय (उ) ३३.३१ | नमस्तेप्रसन्नचित्रेच (उ) २२८.८४ | नमस्तेलोक्यनाथ (क्रि) ६.१७८ |
| नमः शरण्यायनमो- (सु) ४३.२५५ | नमस्कारेणमंत्रेणकुर्यात् (सु) ६.१६२ | नमस्तेचन्द्रनेत्राय (क्रि) १३.११० | नमस्तेवह्नुखाय (क्रि) ६.१७७ | नमस्त्वोकाराङ्गुदि (सु) ४३.८ |
| नमः शिवाभ्यामित्यु- (पा) १०८.६२ | नमस्कार्यास्त्रयो देवायै (भू) २६.८४ | नमस्तेजानरूपाय (क्रि) १३.१०६ | नमस्तेभक्तुष्टाय (क्रि) २.६८ | नमः स्थितिरूपायसर्वं (उ) २३७.२१ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| नमः स्मृतायसूक्ष्माय (पा) | ७.१२ | नमुच्याद्यामहादेव्या (उ) | २३५.१६ | नमोयकर्मप्रसवेनमः (सु) | ४३.२५६ | नमोनारायणयेति (उ) | ६४.२६ | नमोमूलप्रकृतयेनित्याय (उ) | २४३.२४ |
| नमस्वामिजगत्स्वामिन (उ) | २५०.७७ | नमुनेर्भाषितमिथ्यां (उ) | २०५.३४ | नमोदेवाधिदेवाय (उ) | ६६.१२ | नमोनारायणयेति (उ) | ७१.१८ | नमोमृकण्डपुत्राय (क्रि) | १७.४३ |
| नमस्यैतर्वलोकानां (सु) | २.१ | नमूर्त्तैर्नाविलिप्तैश्च (स्व) | ५५.२५ | नमोदेव्यैचंगेति (उ) | ७०.११ | नमोनारायणयेति (उ) | १२४.१६ | नमोयज्ञवराहाय (उ) | २२८.८६ |
| नमाधवसमोदेवोय (पा) | ६६.१०६ | नमूर्त्यमादाद्विश्यातः (सु) | २१.१५ | नमोदेव्यैनमः शास्त्रेन (सु) | २३.२७ | नमोनिरंतरानंदकंद (उ) | २४३.२५ | नमोयज्ञवराहायनमस्ते (उ) | २३७.२० |
| नमाधवसमोमासो (पा) | ८५.५२ | नमेकृत्स्नं वरेणास्ति (उ) | २४६.६७ | नमोदेव्यैसंतापिता (उ) | ६८.४ | नमोनिर्मासदेहाय (उ) | ३३.२६ | नमोयुवकुमाराय (उ) | २३६.१७ |
| नमाधवसमोमासो (पा) | ८५.६१ | नमेतव्यं स्वयावत्स- (स्व) | १५.६३ | नमोनमः कामसुखप्रदाय (सु) | २६.६ | नमोनोलंतया चैवगुणं (पा) | १०८.७३ | नमोरामायकृष्णाय (उ) | २२८.६० |
| नमाधवसमोमासो (पा) | ८४.५३ | नमेतत्त्वतः प्रियतमा (उ) | ८८.२८ | नमो नमः शाश्वत (भू) | ३२.५२ | नमो नृसिंहदेवाय (भू) | ३२.४७ | नमोरामायेतिविग्रन्त्र (क्रि) | १५.६७ |
| न मा महं निर्वहं नु श्रेय- (भू) | २८.११४ | नमेसेवकयोग्यास्ते (क्रि) | १७.१६४ | नमो नमस्ते गोविंद (उ) | ५७.४० | नमो बुद्धायशुद्धाय (क्रि) | ११.६४ | नमोर्चनारीशहरमसितांगी (सु) | २६.२७ |
| नमामस्त्वावयं यामो (उ) | २०४.११४ | नमेस्वर्मावहुमनस्त्व (सु) | ३८.७४ | नमोनमस्तेगोविंद (उ) | ६६.१० | नमोब्रह्मण्यदेवाय (सु) | ४६.२०४ | नमोवामनरूपाय (भू) | १६.६६ |
| नमामि गोविन्दपदार- (स्व) | १.१ | नमोऽस्तु देवदेवेश (भू) | १०३.१२१ | नमो नमस्तेपरमेश्वराय (क्रि) | २.६१ | नमोब्रह्मण्यदेवाय (उ) | २२६.६ | नमोवाराहदेवाय (उ) | ३०.१३ |
| नमामि गोविन्दमनस्त (क्रि) | ४.५७ | नमोऽस्तुतेकैटभ (क्रि) | ४.५८ | नमो नमस्ते लक्ष्मी (उ) | २३६.१४ | नमोब्रह्मद्रुपयाय (उ) | २४३.२६ | नमोवामुरांर्दूलो (उ) | २२१.३४ |
| नमामिचरणद्वन्द्वं (भू) | ८८.४७ | नमोऽस्तुवेदोद्धरणाय (क्रि) | ४.५६ | नमोनमस्तेतत्त्वार्त्तं (उ) | २४५.१०८ | नमोभगतेतस्मैव्यासा (स्व) | १.२१ | नमोविद्रुमरक्तांग (सु) | ३८.११६ |
| नमामिनारायणप्रभेयं (सु) | १४.१४५ | नमोऽस्तुहुरयेतुभ्यं (क्रि) | ११.६३ | नमोनमो नमोस्त्रस्मै- (पा) | १०५.४० | नमोभगवतेतुभ्यं (क्रि) | ११.१०० | नमोविशालानललोचना (सु) | ४४.१५६ |
| नमामिलाकेकर्तारं (सु) | ३८.१६० | नमोऽस्तुसर्वधावाहं (पा) | ५०.३२ | नमोनमोस्तुदिश्याय (सु) | ३८.१५५ | नमोभद्रायमंत्रेणचत्वार- (पा) | १०७.७२ | नमोविश्वंभार्यवधाय- (भू) | ३२.५१ |
| नमभ्यहं हृषीकेशं (भू) | ८७.१० | नमो गदारिश्छाब्ज (पा) | ७८.२० | नमोनमोहिरण्याय नमो (भू) | ३२.३६ | नमोभवायैकामिन्यै- (सु) | २२.११६ | नमोविहंगमाधाय (ह्र) | २३.२८ |
| नमार्गानोपराहेशा (स्व) | ५२.४६ | नमो गोपीजनेत्युक्त्वा (पा) | ८१.१६ | नमोनारायणयेति (सु) | २०.१४४ | नमोभवायशर्वारुद्राय (सु) | ३८.१३८ | नमोस्तुकालायनमः (सु) | ४३.२५८ |
| नमासोनतिविर्देवी (उ) | १३६.४३ | नमोगोभ्यः श्रीमतिभ्यः (सु) | ३४.४१५ | नमोनारायणयेति (सु) | २३.११६ | नमोभवायशर्वार्य (उ) | ६.७ | नमोस्तुकेयूरधरामृतभ्यं (सु) | ४४.१५७ |
| नमुक्तबन्धनपश्येत् (स्व) | ५५.४८ | नमोगोर्त्यैनमः पुष्टयै- (सु) | २२.७७ | नमोनारायणयेति (क्रि) | ६.१७१ | नमोभूतात्मभूताय (उ) | ४५.२५ | नमोस्तुचंद्रायमुखं (सु) | २६.१० |
| नमुर्चतिसंज्ञायस्तु (उ) | २०७.६७ | नमो गोविंदगोपाय नम (भू) | ३२.४८ | नमोनारायणयेति (क्रि) | १०.६३ | नमोमत्स्यकूर्मादि (उ) | ६८.२ | नमोस्तु तस्मै परसिद्धि (भू) | १०७.१५ |
| नमुर्चिवासवोव्ययं (उ) | ५.६३ | नमोचयाम्यद्युत्रं (पा) | ६३.३८ | नमोनारायणयेति (पा) | ६४.६६ | नमोमंदारनाथायमंदार (सु) | २१.३०१ | नमोस्तुतेऽश्विगणैः (स्व) | १७.१६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

२४४

| | | | | |
|--------------------------------------|--|--------------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------------|
| नमोस्तुतेचाध्वरतिदकाय (क्रि) ४.६१ | नम्रा ता वांधवः कस्य (भू) ७.४ | नयानिनरकं गत्वा सर्व- (स्व) ३१.१४६ | नरकाय प्रदातव्यो दीपः (उ) १२२.१४ | नरयुक्तेरधेदेवोराक्षसे (सु) ४२.६८ |
| नमोस्तुतेवेदमातरष्टाक्षर (सु) १७.३०३ | नयज्जदनेनैतपो (पा) ६२.४ | नयानिनरकं नेत्वा सर्व (उ) ५६.६ | नरके तु चिरं मग्नाः (स्व) ३१.१०८ | तरसिह नासिकाग्रे (उ) ७८.१८ |
| नमोस्तुतेमर्वपवित्र (स्व) १७.२० | नयत्रयभागोराजम् (सु) १२.८७ | नयानिनरकं पुन (उ) ७१.१६ | नरके पि चिरं मग्नाः (पा) ८४.७४ | नरसिहस्यगाहात्म्यं (सु) ४६.१ |
| नमोस्तुपाटनार्थैतु (सु) २६.१६ | नयत्रयोर्गर्भे तपो (पा) ८४.७२ | नयानितत्परश्रेयो (उ) ७१.६७ | नरके पि भवान्त्रय वयं (भू) ८३.१२ | नरस्ततस्तरताशुपोते (उ) २१८.२७ |
| नमोस्तुपाशांकुशपथ (सु) २५.१६ | नयज्ञाः संप्रवर्तते न तस्वयं (सु) ४.२३ | नयानियातनां यामीत (स्व) ३१.१४३ | नरकेषु द्रुतं गच्छेत् (भू) ६७.१०३ | नरस्य पुण्ययुक्तस्य (भू) १२५.१३ |
| नमोस्तुपायामदनाश्रया (सु) ४३.२५४ | नयज्ञानतपोदानं (पा) ८.१२ | नयामस्तत्रवतयर्थम् (त्र) १२.३८ | नरकेषु यमादेशादौ र (क्रि) २३.१२६ | नरस्य फुटैतिगं (पा) ६६.७५ |
| नमोस्तु रावदेवाय (उ) ३०.१४ | नयज्ञानमादिविशेष (स्व) ३५.४१ | नयास्यामोपरंतीर्थ (सु) १८.१०६ | नरकेषु स पच्येत यश्च (भू) ६७.६४ | नराणां कृतपापाणां (क्रि) २३.१६८ |
| नमोस्तु वासुदेवाय (उ) २२६.१२ | नयत्रवैष्णवी प्रीतिः (पा) ६४.६६ | नयेगीतानि गायति (क्रि) २२.१३४ | नरकेषु न हृद्ये (सु) १६.३०० | नराणां दुष्टाः स्वयं (पा) ८२.५ |
| नमोस्तु विष्णवे (उ) ८०.१३७ | नयत्रशोको न जरान (पा) ६७.७४ | नयेत् चतुरो मासान्यवद (उ) ६४.६ | नरदोलांचयोदद्याद् (क्रि) २०.१२१ | नराणां स्तवगतिः श्रेणी- (सु) १८.४६१ |
| नमोस्तु विष्णवे (उ) २२६.८ | नयनानंदं सलिल (उ) १३२.१०६ | नयेत्यजंति विप्रंन्द्र (क्रि) १६.११० | नरदोलांचयोदद्याद् (उ) २६.१२४ | नराणां मथनारीणां (सु) २२.६५ |
| नमोस्तु सर्वाभवनशहेनो (सु) ४६.८५ | नयनैरिव शोभते चंचलैः (सु) १५.३२ | नयोगः सुतभोष्टांगः (उ) १६६.४१ | नरनारायणाद्याश्च (पा) ७४.२०१ | नराजसे कुतश्चक्रमलान (सु) ४३.२१ |
| नमोस्तु हरिकेशाय (भू) १६.६३ | नयनं तत्विष्णुद्रुता (उ) २३.६ | नरकं भवांसंचति (स्व) ३१.१३० | नरनारायणावासे (पा) ६६.१०३ | नराजः प्रतिगृह्णीयात् (स्व) ५५.३ |
| नमोस्तु हुतभोवते च नमो (भू) १६.६० | नयनानंदं सलिलं (उ) १३२.१०६ | नरकं न तुल्यं गच्छेत् (उ) ६४.१०१ | नरनारायणो देवो (उ) २.२ | नराजो जलमाहार्चयति (पा) १०६.६७ |
| नमोस्तु तपस्विशुद्धचेतसे (सु) ३४.६५ | नयतु किराः शीघ्रं (क्रि) ३.५२ | नरकः कालनाभश्च (मृ) ६.६० | नरनारायणौ योगे (सु) १४.२८ | नराणां भोजनं कुपयति (मृ) २२.१८६ |
| नमोस्तु चोकरूपाय (पा) ७६.१६ | नयमं यममित्याहु रात्मा- (सु) १६.३०२ | नरकश्च बहुः प्रोक्तः (पा) १०६.६२ | नरपतिस्त्वाच सैन्याः (भू) ४३.४४ | नराधिकां यमानाग्री (पा) ७७.१२ |
| नमोस्तु हरिहरमयो गणेश (पा) ११३.३० | नयमं यमलोकां च न भूतान् (स्व) ३१.६६ | नरकस्य चतुर्दश्यां (उ) ६४.१० | नरः परेषां प्रतिकूलमा (भू) ६६.५२ | नरान् रथाग्जान् भाग्ना- (पा) २४.७ |
| नमोस्तु विलासाय सर्व (सु) १४.११६ | नयमं यमलोकं च न भूतान् (स्व) ३१.६६ | नरकस्य चतुर्दश्यां (पा) ११४.२६६ | नरभ्योर्वैष्णवं धर्मं (उ) ११७.१८ | नराः प्रभंजनाद्भूता मुक्त- (पा) २४.५० |
| नमोस्तु व्यायकव्याय (भू) ३२.४५ | नयमं यमलोकं च न भूतान् (स्व) ३१.६६ | नरकांतेतः सोऽहं (क्रि) ३.६६ | नरमन्य परिज्जाय तं (भू) ८६.१६ | न राट्टेन पुंरं सोऽहं (उ) ४१.१० |
| नमोस्तु हरिहरमयो गणेश (उ) २२८.८० | नयमं यमलोकं च न भूतान् (स्व) ३१.६६ | नरकान्तिः कृतिर्नास्ति (त्र) ७.३२ | नरमेधमहायज्ञं (त्र) १२.८ | नराः सत्पुत्रमिच्छन्ति (भू) ३.४८ |
| नमोस्तु हरिहरमयो गणेश (भू) १६.५८ | नयमं यमलोकं च न भूतान् (स्व) ३१.६६ | नरकात्त्रयोपजमानान् (क्रि) १०.२१ | नरयानमचारोपसेवकैः (पा) ३७.२७ | नराः संति न ते वा वैभव (पा) ७१.१३ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| नराः मुकृतिनस्तेषु (भू) | ६५.६ | नर्मदातीर्थमाहात्म्यं (स्व) | २२.५ | नलम्प्यास्तत्पुरंदरेवम (सु) | ४.६५ | नवपल्लवमजातन (उ) | १२८.१८३ | नवित्तशाठ्यं कुर्वीत (सु) | २५.३७ |
| नरिष्वन्तः कवचश्चापति (सु) | ८.७७ | नर्मदातु नदी श्रेष्ठगुण्य (स्व) | १४.१ | न लभाम्यहमेवापि (भू) | ५१.३६ | नवमं कुमुदार्ण्यवलं (पा) | ६६.४५ | न विदुर्द्वेताः सर्वा (भू) | १२१.१ |
| नरिष्यंतस्यपुत्रोभूच्छु (सु) | ८.१२६ | नर्मदाक्षिणो कुले (भू) | ८५.५१ | नलम्प्यतेकर्मणापि (स्व) | ६१.८० | नवमचनवधूहंसमं (उ) | १२०.७६ | नविदुः सोमतेमायां (सु) | ४१.१२८ |
| रूपेणैकशीलोऽस्येषु (सु) | ४३.२६६ | नर्मदादक्षिणे कुलेतीर्थ- (स्व) | १८.२० | नलस्तुनिषयाज्जातो- (सु) | ८.१५८ | नवमासांश्चविश्रम्य (ब्र) | १३.२६ | न विदंतिमहात्मानस्तद- (भू) | १.६ |
| नरेण कर्मयुक्तेन गप (भू) | ४.१६ | नर्मदानर्मद'शास्त्रोपेनकेन (स्व) | २२.६ | नलिप्यतेसपापेन (उ) | ५४.२० | नवमीवैवमात्तुणां (उ) | ८६.१८ | न विदंति हि मुदास्ते (भू) | १२३.५ |
| नरैः पुण्यकलं स्वर्गं (भू) | ६६.१८६ | नर्मदांतुसमासाद्यनदी- (स्व) | १२.१३ | नलेभेवसतिस्थातुं (उ) | १८५.३८ | नवमेवप्रभः प्रांसुः (स्व) | ८.१८ | नविद्यतेतेनृपधर्मं (पा) | ८५.४० |
| नरैः स्त्रीभिश्चव्रतार्थं (सु) | १५.१६१ | नर्मदायास्थितराजन्सर्वं (स्व) | २०.६० | नलोचत्रचनात्पित्रोर्न (स्व) | ३३.६५ | नवम्यांसैववाप्राह्णा (ब्र) | १३.६६ | नविदेष्टुंभवलोकं (स्व) | ३१.१५२ |
| नरोचतेतथाभूमी (ब्र) | १.७ | नर्मदायाजलपुण्यंकीर्त्तयि (स्व) | २३.५१ | नलो भगीरथश्चैव (भू) | ६७.६८ | नवयंब्राह्मणादीरप्रति (पा) | १३.२५ | नविप्रास्तापितादानं (पा) | ६६.१० |
| नरोचतेन मसिकाभ्यः (क्रि) | १७.२६६ | नर्मदायाजलसिम्बा (स्व) | २२.२६ | न लोकिक्षयवद्गतो (पा) | ११७.२३८ | नवयोवनसंपन्नकर्म (पा) | ७२.५ | नविमुक्त्येतापेयजन्म- (सु) | १५.१३८ |
| नरोयःकुस्तेवत्स (उ) | ६१.२८ | नर्मदायास्तदे स्मिन् (भू) | १००.१ | नवकल्पांतरेजातागोकुले (पा) | ७२.४३ | नवयोवनसंपन्नांमुनि- (पा) | ७४.२७ | नविमुक्तोभवेद्राजन्सी- (सु) | २२.५३ |
| नरोत्रफलमाप्नोति (उ) | ५०.१७ | नर्मदायास्तुमाहात्म्यं (स्व) | १३.५ | नवकतव्यंत्वयादे (उ) | २३५.१८ | नवएवर्णितवैत्तिस्ववर्णा- (सु) | ३३.११ | नवियोनिप्रजयेते (सु) | १६.३६ |
| नरोनरकगामीस्वाद्यच्च- (सु) | १५.१४७ | नर्मदासंगमंयावद्यावच्च (स्व) | २१.४५ | नवक्तव्यंनवक्तव्यं (पा) | ५७.५४ | नवर्त्तमिर्चितवाम (स्य) | ५५.६१ | नविरज्यति लोकोऽयं (भू) | ६६.७६ |
| नरोभामेषोरुषः (सु) | १४.२७ | नर्मदातत्रित्तापुण्या (स्व) | १३.४३ | नवधातुलसीभक्ति (उ) | ६१.६३ | नवपुर्वार्त्तिवाहाः (ब्र) | ८.१० | नविरुध्यन्तितागाः (सु) | ३४.३२० |
| नरोनिर्द्वयतत्सर्गप्रीतः (पा) | ६६.१०२ | नर्मदासरयूश्चैव (उ) | २२.४ | नवध्याःसोममप्राता (उ) | ५.४६ | नवशीर्षोर्नैत्राभ्यां (उ) | १७.५४ | नविसिप्टयस्तकुप्यात् (स्व) | ५५.५५ |
| नरो नैव प्रसूनी हि (भू) | ८१.२२ | नर्मदासत्ताश्रेष्ठोऽसर्वं (स्व) | १३.४ | नवनीतंजहाराशु (उ) | २४५.८८ | न वशे चेंद्रियाणां च (भू) | ६६.४६ | नविश्वसेस्त्वदेहेपियलि- (सु) | १८.३६६ |
| नरोवायदिवानारी (सु) | २२.१०० | नर्मदासर्वपुण्याचब्रह्म- (स्व) | १३.५२ | नवनीतं यथा चाग्नेस्तेजो (भू) | ५४.१२ | न वहेतयशस्तेषां (सु) | ६६.६१ | नविश्वसेदविश्वस्ते (सु) | १८.३६५ |
| नरोद्वेष्टेशेपिरेन्द्र (क्रि) | १३.८ | नर्मदादीर्घविध्यामिजहि (सु) | ४४.१४ | नवनीतस्यवर्णं (पा) | ६६.६६ | नवह्निमुखातिःस्वासीः (स्व) | ५५.८१ | नविर्निविपित्याहु (स्व) | ५५.६ |
| नरोवयस्तन्नस्तन्वृत्त्यः (पा) | ६८.१५ | नर्मदाश्वरतीर्थैर्नभूतं (स्व) | १८.४३ | नवनीतेनतैलैश्चतथाप्येपि (सु) | ११.७० | नवह्नाद्यापुत्रिभ्यो (उ) | २३८.४२ | नविर्गुरुभोगवान् (सु) | ३४.११० |
| नर्तनकृतेयसु (उ) | ३७.१६ | नलंष्येच्चमितमात्रं (स्व) | ५५.५४ | नवनीलघनश्यामं (उ) | १२५.१३६ | नवारयतियोमोहाद (पा) | ६६.६ | नविहोतत्त्वयादेवितथा (सु) | २२.१८४ |
| नर्मदावशुभसंज्ञातास्तथा (सु) | ४५.१५४ | नलंष्येःसोमसूत्र (क्रि) | ११.१२० | नवनीलघनश्याम (उ) | १३१.२५ | नवाबुदसहस्राणि (सु) | २१.७७ | नवीनयनवर्णायां (उ) | २००.६६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२४६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------------|---------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| नवीननीरदध्रेणी (पा) | ६६.८८ | नशबयमनसास्मत् (उ) | २४५.२८० | नष्टसर्वहुरोयाते वनं (उ) | १५.५६ | नसोदानत्पादुकोवा (स्व) | ५२.४२ | नहिवर्णयितुंशक्यो (उ) | २०४.१४० |
| नवीननीरदश्यामा (क्रि) | ६.१६३ | नशक्याः कथितं (स्व) | ४१.७ | नष्टमत्तद्वनवत्याम् (ब्र) | ८.६ | नस्तुतिनपिचाचारः (उ) | १२०.८२ | नहिशक्नोमिसंययन्तुं (क्रि) | १६.२८ |
| नवीनैर्वाथदेवेशि (उ) | ८७.२७ | नशयालुः सदातिष्ठे (सृ) | ७.४३ | नष्टवीर्योवभूवात्र (उ) | २४१.६६ | नस्नातोमाषमासेहं (उ) | १२६.१११ | नहि शक्नोम्यहं कांते (भू) | ४६.४६ |
| नवक्षमवरोहेत (स्व) | ५५.७६ | नशयोतोत्तरशिराः (सृ) | ७.४५ | नष्टात्त्वचत्रदात्रस्तावाक् (सृ) | १७.१७४ | नस्नानकलदः कश्चित्सर्वं (सृ) | ४६.१६२ | नहिसत्पवतांकिचिद- (सृ) | १८.४२४ |
| न वृद्धिमगमत्लोकस्त (सृ) | ६.४ | नशशाकगृहेस्यातुं- (उ) | १४.४५ | नष्टानलानिलाकाशे (सृ) | ३६.७ | नस्पृशेदंगसंगेनस्पृष्ट्वा (सृ) | १५.१४८ | नहिसर्वमिदंत्वक्नु- (पा) | ११४.४२१ |
| नवैकशान्निलयः (उ) | १६२.३८ | नशशाकचतुर्द्रष्टुं (सृ) | ८.६६ | नष्टार्कपवनकाशे सूक्ष्मे (सृ) | ३६.६७ | नस्पृहातिग्यपुण्य- (सृ) | ३२.७६ | नहिस्वप्रोक्ष्य संसत्ययुक्तं (सृ) | ३६.६३ |
| नवेदवचनात्तात (स्व) | ४३.२३ | नशस्त्रेणनचास्त्रेण (ः) | ४५.१३ | नष्टेवर्मतथायज्ञे विष्णु- (सृ) | १३.१५० | नस्पृष्टव्यानववतव्या (उ) | २३५.१२ | नहीनानुपसेदेतनच (स्व) | ५५.५४ |
| नवेदसदृशंशास्त्रं (उ) | ११८.२४ | नशातयेदिष्टकाभिः (स्व) | ५५.६१ | नष्टेषुतेवुविघ्नेषु (भू) | ३.२२ | नस्वनतिमहाघंटा (उ) | १४.५६ | नहुषं नाम विष्ण्यातं (भू) | ११४.१० |
| नवेदाध्ययनचक्रं (क्रि) | १७.११ | नशिष्याहिगुरोर्वार्यं (सृ) | ३३.१८२ | नसंभारोस्तिवदनेमुदा- (सृ) | १३.३२६ | नस्वर्गनापवर्गेषित (पा) | १०२.२३ | नहुषः प्रियया सार्धं (भू) | ११७.१ |
| नवेदैनंचदानैश्चननपोभि- (स्व) | ३१.२६ | नसूरो राजधर्मं च न (पा) | ११६.२८२ | नसंहताभ्यांपाणिभ्याम् (पव) | ५५.६४ | न स्वर्गो नापवर्गश्च (भू) | ६६.८६ | नहुषस्य सुवीरस्य (भू) | ११३.४७ |
| नवेदैनंचदानैश्चनय- (उ) | २२६.१५२ | नशृणोमि न वै यामि (भू) | ११२.१७ | नसपरयतिमूढात्मा (सृ) | १६.२६३ | नस्वातंत्र्यसमंसीह्यं (पा) | ६४.५२ | नहुषस्त्राणि पुत्रेण (भू) | ७५.११ |
| नवोद्यसेनस्यसुता (सृ) | १३.५८ | नशेकुदानवाः सर्वे (भू) | ११५.४ | नसमंविद्यतेकिंचित्ते (उ) | १२६.६ | नस्वाध्यायस्तयो (वा) | ११५.४२ | नहुषस्यैव हस्तेन (भू) | १०८.२८ |
| नवोद्योयोरयोवीरयूदमेण- (सृ) | १७.२३६ | नशैबोनवतौरोसौ (उ) | ३७.६० | नसमंविद्यतेकिंचित्तेजः (स्व) | २६.१७ | न हतोस्यगुणद्रष्टा (उ) | १२३.७० | नहुषाय ददौ देवो (भू) | ११०.१६ |
| नव्याधिदूषितैर्वपि (स्व) | ५५.६० | न शोको न हर्षश्च (भू) | ८६.६५ | नसमिध्याभिशापेन (सृ) | १३.१०७ | न हंतव्या मदीयेयं- (भू) | ३०.२५ | नहुषेण कृतां विप्रा (भू) | ११४.२६ |
| नव्रतस्थः स्पृशेचिद (उ) | ११६.३५ | नश्यत्किंचिन्निहताः (पा) | ३४.४२ | नसपंशस्त्रैः क्रीडेत (स्व) | ५५.५८ | न हंतव्यामहाभाग (उ) | २४५.१० | नहुषेण महाशस्या (भू) | ११५.४२ |
| व्रतस्थः स्पृशेचिद (उ) | १२३.२३ | नश्यतितूरगैर्दंष्ट्रामनुष्याः (सृ) | ३१.२६ | नसपंशस्त्रैः क्रीडेत (स्व) | ५२.४० | न हित्वे दूर्भरवस्त्रेहति- (पा) | ११२.११ | नहुषेणभित्तानां- (सृ) | १६.१३८ |
| नशक्तिभस्मनोजानेत् (पा) | १०५.२३४ | नश्यतिरोगादोषाश्च (उ) | ७८.८५ | नसमर्थोभवेद्वक्तुम् (ब्र) | २१.३३ | न हित्वांप्रस्थितं कश्चिन (पा) | ६६.२४ | नहुषेणैव ने नाम (भू) | १०५.५८ |
| नशक्तोभून्महादेवि (उ) | १६८.३७ | नश्यतिसकलारोगाः (उ) | ७८.५४ | नसांस्वगोचरेलुब्धान (सृ) | ४२.८७ | नहिवत्तागृहेभ्रात्यामो- (सृ) | ३६.६६ | नहुषो धनुरादाय (भू) | ११७.२१ |
| नशक्तोषियदागं तु (उ) | ३४.३७ | नश्यतिसर्वपापानि (ब्र) | १४.६ | नसुखं दिवसेतस्मिन् (उ) | ५२.१७ | नहिस्यात्सर्वभूतानि (स्व) | ५५.१ | नहुषो नाम धर्मात्मा (भू) | १०३.२३ |
| नशक्यनेमहावक्तुं (पा) | ८१.५८ | नश्यरैस्संप्रयातस्म (सृ) | १५.३०७ | नसूर्यपरिवर्पवानंद (स्व) | ५५.३२ | न हिसको हि कस्यापि- (भू) | ३०.४० | नहुषो नाम मेधावी (भू) | १०८.२५ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|
| नह्येतविषोदेतमानि (सु) | १५.३६६ | नागमिष्योदित्वं-(पा) | ३१.१११ | नाम्नोप्रतापपेदनी (पा) | ६.५६ | नाथकीर्तिर्जान्स्वा (पा) | ५६.१० | नानाकोतुकसंयुक्तोनाना-(भू) | ३२.१० |
| नह्येतोतनपास्य (पा) | ६५.६६ | नागमेनंमुगुणादीनं (उ) | ३४.६ | नाचकोतषयतीर्गानेन्द्र (पा) | ६.५७ | नाथतेविजयोभूयात्सर्वं (पा) | १२.२ | नानागंधरसैरुच्यैः (सु) | १४.१७१ |
| नह्ययोविद्यतेलोकेत्वां (उ) | १५४.७ | नागविस्तारविष्टं (पा) | ६६.२३ | नाज्ञातंतेनचास्माकं (पा) | ६६.५१ | नाथस्वंताडशोमह्यं (पा) | ५५.३१ | नानाकोटिगुणोपेतो-(पा) | ११०.५४ |
| न ह्यस्ति सर्ववित्क-(भू) | ६६.१७६ | नागसिद्धांगनाभिश्च (उ) | ७०.३२ | नाडीद्वयावशिष्टायां (उ) | ६३.१ | नाथपूजयितुं गौरी (उ) | २०१.५३ | नानाजातिविशेषाणां (भू) | ३७.३७ |
| नह्येष चसदाचारो-(सु) | ३६.११० | नागानगनाथवाय (उ) | १२६.६२ | नाडीस्वेदप्रवाहं च (भू) | ६६.५६ | नाथयुद्धं नकर्तव्यं (उ) | ११.२३ | नानातपोभिर्मृनिभिर्ज्वलं (सु) | ४३.१२३ |
| नाकंशुभेसुमहदुलसिता (क्रि) | ७.१०७ | नागाधिपंवासुकिमुग्रवीर्यं (सु) | ७.७४ | नातः परतरकिंचित्- (सु) | १५.२८० | नादत्तं जायतेनातश्चेत्- (सु) | ३६.६८ | नानातुलमिपत्रैश्च (उ) | ८७.२४ |
| नकारणाद्धानिष्ठीवेन्न (स्व) | ५५.६८ | नागानां च इहस्थोपि (भू) | ८४.१८ | नातः परतरकिंचित् (उ) | १२५.८६ | नादानंनचसंधान (पा) | २७.८ | नातात्त्वदर्शनान्स्वस्थस्ततः-(सु) | २.३५ |
| नकालफलितावृक्षा-(सु) | ३४.६४ | नगानांचपुरीरम्पायज (सु) | १६.५६ | नातः परतराकाचित् (उ) | ४७.३६ | नादित्यवैसमीहेत (स्व) | ५३.२१ | नानादीपसमोपेतंमणि (पा) | ११०.६२ |
| नकालेह्वतीकुयमितो-(स्व) | २२.६५ | नागानांचयथाशेषो (उ) | ४०.६ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५३.२८ | नादीक्षितायवक्तव्यं (उ) | २२३.३१ | नानादुःखंसदाभुंजन् (क्रि) | १६.७३ |
| नकालेह्वतीकुयमितो-(उ) | १२८.१०३ | नागानां तु तथा दोग्धा-(भू) | २६.४७ | नावः परतराकाचित् (उ) | ५४.१५ | नाद्यादडमुखो नित्यं (स्व) | ५१.६७ | नानादुःखंसदाभुंजन् (क्रि) | १६.७३ |
| न कृतो न कृतात्मा (स्व) | ३६.१०५ | नागानांपुण्यवीर्याणां च (भू) | २७.१५ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नाक्षीणपातकं कचिन् (उ) | १२६.७८ | नागारूढं प्रयातं तं पुनः (भू) | २०.२० | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नायैः क्रीडेन्न वावेत् (स्व) | ५५.६५ | नागवर्तं तेनापिह्य-(भू) | २६.४८ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागंतव्यं त्वयाभूयस्ति (सु) | ३८.१६२ | नागाह्वयं पुरं प्राप्तः (भू) | ११७.२ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागकन्या सहस्रं (उ) | २४४.५० | नागैर्वक्षेनगिर्यं- (भू) | ६१.७ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागनीर्यततो जातं-(सु) | ३१.५३ | नागैः सर्पैस्ततो दुग्धा-(भू) | २६.४६ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागतास्ते महीपाल (उ) | २२०.३२ | नागोद्धेनरः स्नात्वा-(सु) | २५.२० | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागतीर्थयथाभूतं-(सु) | ३१.३ | नागोपरिस्थितो दिव्यः-(भू) | २०.१८ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागत्वमुत्तरासंगः (सु) | ४३.४७३ | नानोप्रतापयेत्पादो (स्व) | ५५.६६ | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |
| नागवत्र सकपूर् (उ) | ३६.१७ | | | नातः परतराकाचित् (उ) | ५६.४ | नाद्याच्छृङ्खलस्यप्रो (स्व) | ५६.१ | नानाधर्मपरोह च (उ) | ७७.२७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२४८

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------|--------|
| नाना पक्षिसमायुक्तं (सु) | ४३.२६३ | नानाभूयस्यसंयुक्तो (पा) | ११०.४८ | नानारत्नैः सुदीप्तांगो-(भू) | ३२.१ | नानाविधैर्गजविडाल (सु) | ३३.१६१ | नानासत्वस्वरालाप-(पा) | ७०.१५ |
| नानापत्न्याकानिवहै (क्रि) | ५.१४८ | नानाभेदासुसर्वास्तिथिभू (भू) | १६.१८ | नानारत्नोत्पल (उ) | २२६.१६० | नानाविधैः सुपुष्पै (उ) | ८५.२३ | नानासुगीतकुशला (पा) | ११३.४२ |
| नानारागसंयुक्तस्य (पा) | ८०.६ | नानाभोगसनायुक्तं (ब) | २.३३ | नानारूपैर्मूर्तिस्तास्तु-(सु) | ३१.८३ | नानाविधोमहाभागाः (स्व) | ५०.४ | नानुकम्पन्ति ये मूढा (भू) | ६७.६१ |
| नानाभिरवाकीर्णनाना-(सु) | १५.२३ | नानाभेदेविभेदैश्च (भू) | १०५.२० | नानावरणमार्गेषुजा (पा) | ११४.२६ | नानाविहंगवदनानाना-(सु) | ४३.४६३ | नानुकम्पति ये मूढा (पा) | ६६.७५ |
| नानापीडातिमत्ता (भू) | ५२.२० | नानामंगलसंदोहान्यथा (सु) | ४३.४०० | नानावर्णविशेषाणि (भू) | १०१.४४ | नानाविहंगयंकीर्णनाना (पा) | १०७.३ | नानिनकार्यमस्माकं (सु) | १३.३०७ |
| नानापुराणैर्दृष्टैः (उ) | १०१.१६ | नानामगलशब्दैश्च (भू) | ११७.५ | नानावर्णं सुशोभा (उ) | २२६.१७२ | नानावीर्याः पृथग्भूतास्त (सु) | २.१०३ | नानोपकरणोपेतंभार (पा) | ११७.१३ |
| नानापुष्पलताजालं (सु) | ४३.२२१ | नानामगलशब्दैश्च (भू) | ११७.५ | नानावर्णं विवर्णश्च-(स्व) | ३३.२६ | नानावृक्षसमाकीर्णं सर्व-(भू) | ६७.२५ | नानोपहारागुहये (क्रि) | २२.१२५ |
| नानापुष्पविनानाद्यैः (उ) | २२६.६४ | नानामणिप्रवटिताङ्ग (पा) | १०३.३३ | नानावर्णं विश्वमुखै (पा) | १०६.३६ | नानावृक्षसमोपेतैर्वनै (भू) | १०३.६१ | नाद्योव्याधयश्च (उ) | ३०.५२ |
| नानापुष्पशतकीर्ण-(सु) | ४३.२६६ | नानामूर्तिः समाकीर्ण (नू) | १०१.२० | नानावर्णोल्लसत (पा) | ६६.६६ | नानावृक्षैः प्रभात्येव (भू) | ६३.८ | नास्तरे देवि पश्यामि (उ) | १३८.१५ |
| नानापुष्पसंघाद्वयम् (भू) | २.१३ | नानाद्योनिषुजन्मानि (उ) | १२६.२१६ | नानावर्णैः सुपुष्पैश्च (भू) | ४३.१५ | नानावृक्षैः समाकीर्ण (भू) | ८३.६६ | नान्नजलतेनराज्ञा (सु) | ३४.३३८ |
| नानापुष्पसमाकीर्ण (भू) | ६७.२३ | नानारत्नसुतिलसच्छ- (सु) | ४३.५१२ | नानावर्णैर्ह्यनंतस्तु-(उ) | १२०.७० | नानावृक्षैः समाकीर्ण (भू) | १०२.२६ | नान्नदत्ततेन किंचित (सु) | ३४.६५६ |
| नानापुष्पैर्विशेषेण (उ) | ८७.१४ | नानारत्नप्रवालाद्यो-(पा) | ७७.७ | नानावादित्रकुशलैः कल (उ) | २१६.१७ | नानावृक्षोपयुक्तानि (भू) | १०१.१२ | नान्ननकिंचिद्दत्तेन (सु) | ३४.३३६ |
| नानाप्रकाराविज्ञेया (पा) | ८५.३१ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २३२.६४ | नानाविचित्ररत्ना (उ) | २२८.४५ | नानावृक्षैः समाजुष्टं (भू) | १०३.६६ | नाग्यंचपुत्रयेद्देवन (पा) | ८२.३४ |
| नानाप्रभावेर्दिव्यैश्च (भू) | १११.१० | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २२६.१२८ | नानाविधयुति-(पा) | १०३.५६ | नानावृक्षजनसंयुक्तां (क्रि) | १३.२० | नाग्यंजानातिदेवेशा-(उ) | २३८.१२ |
| नानाप्रवाहं सुपुष्पी (भू) | ८८.८ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २३८.१३८ | नानाविधयुति-(उ) | १२६.१२२ | नानावृक्षैः रथास्त्रैश्च-(नू) | ४३.३१ | नान्यं देवत्रयोक्षित (उ) | २५५.६५ |
| नानाफलयुततद्विधु (सु) | ७.११ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २४३.४ | नानाविधपरिहास (पा) | ११३.५ | नानावृक्षैः रथास्त्रैश्च-(नू) | ४३.३१ | नान्यं देवमहादेवाद् (स्व) | ६०.३७ |
| नानाफलैः सुपुष्पैश्च (क्रि) | ६.५६ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २४७.६ | नानाविधमहाभीमाः (भू) | १६.६ | नानावृक्षैः रथास्त्रैश्च-(नू) | ४३.३१ | नान्यं वदामि न भजामि (भू) | २२.२७ |
| नानाभक्ष्यसमापेतं (सु) | ७.१२ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २४७.६ | नानाविधमहाभीमाः (भू) | १६.६ | नानावृक्षैः रथास्त्रैश्च-(नू) | ४३.३१ | नान्यं वदामि न भजामि (भू) | २२.२७ |
| नानाभरणसंपुष्पापीत-(सु) | ४४.८६ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २४७.६ | नानाविधमहाभीमाः (भू) | १६.६ | नानावृक्षैः रथास्त्रैश्च-(नू) | ४३.३१ | नान्यं वदामि न भजामि (भू) | २२.२७ |
| नानाभरणसंयुक्ता (उ) | २२६.७४ | नानारत्नमयैर्दिव्यै (उ) | २४७.६ | नानाविधमहाभीमाः (भू) | १६.६ | नानावृक्षैः रथास्त्रैश्च-(नू) | ४३.३१ | नान्यं वदामि न भजामि (भू) | २२.२७ |

२४६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|
| नाम्यत्रनिवेष्टेपुण्यम् (स्व) | ५५.२४ | नामपृष्टः कथ्यचिद (पा) | १००.१८ | नाम्नांब्रह्माशिवौ (उ) | २४२.८७ | नामप्रांतिभवाद्भिस्व(उ) | ६६.१६ | नाम्नां गतं महापुण्यं (भू) | ८७.२५ |
| नाम्यत्रसर्वमंत्रेषु (उ) | २२६.१५ | नाम्पत्वान्मनसस्तोत्रं (उ) | १६८.६५ | नामकृत्वा ततो देवा जग्मुः(भू)२०.५५ | | नाममुद्राद्वयंनौचै (उ) | २६.६ | नाम्नांसहस्र विष्णोः (उ) | २५४.१२ |
| नाम्यथातस्यपापस्य-(पा) | १०६.७५ | नाम्नालातपमासेवेत (स्व) | ५५.६७ | नामकीर्तनमाहात्म्यं (पा) | ११२.१४६ | नामयद्राजपुत्रोयं (सृ) | १२.४५ | नाम्नाकपीश्वरादित्यं (उ) | १४२.६ |
| नाम्यथाशक्यतेकतुं (उ) | १२६.१६८ | नामाविष्णुत्तदाशोकाः (क्रि) | ६.११० | नामग्रहणमात्रेणैकवर्षपापं (उ) | ६६.६५ | नामरूपचभूतानांकृत्या (सृ) | ३.१२१ | नाम्नाचकेननेत्रधानं (सृ) | ३४.१३० |
| नाम्यदिच्छामिसारंगः (उ) | २०३.५१ | नामानस्यां वरीषोभू-(सृ) | ८.१५१ | नामगोत्रास्तदादेशाभवं (सृ) | १०.४० | नामरूपगुणैः श्रीशचा-(उ) | २५५.८४ | नाम्नाचलोकाविष्णुना (सृ) | २२.१३७ |
| नाम्यद्दानं कदाचक्रे (उ) | २८.४१ | नाभिर्मतुंनचन्द्रष्टं (सृ) | १४.६८ | नाम गोत्रेनुसंगोच्य(सृ) | ३६.११८ | नामरूपकहृदमंजयत्वा (उ) | २३२.१७ | नाम्नातुताडकादेवि (उ) | २४२.१२० |
| नाम्यद्वादादहमन्ये (सृ) | १८.१४३ | नाभिचारंभयंतत्रा-(सृ) | ३४.६२ | नामतः कर्मतश्चैव (सृ) | १०.६० | नामरूपविभेदेनजल्प्य (उ) | १३२.७० | नाम्नातुलंकपकइति (उ) | ४०.२० |
| नाम्यद्वनंगनिष्ठाभि (सृ) | ३३.१३६ | नाभितोगरानंधांश्च (सृ) | ४.१२० | नामचास्मैददो (उ) | २४१.१३ | नामश्रवणमात्रेणनिष्ठा (पा) | ६८.५४ | नाम्नानोजयविजयो (उ) | ३३७.२ |
| नाम्येनशक्यतेनेतुं (सृ) | १८.१६५ | नाभिर्नंदति तद्वाचयमु-(भू) | ६७.४५ | नामभिः कर्मभिष्णुं (भू) | ७४.७ | नामसंकीर्तनंसेवापूजनं (उ) | ५५३.३० | नाम्नात्वाय्यकंधयातं (पा) | ३५.२० |
| नाम्येनास्मिन्प्रायेनः-(सृ) | १५.२६३ | नाभिर्नंदतेमरणनाभिर्नं (सृ) | १५.३७० | नामानिनामचद्रश्यहृदह (उ) | २५४.२६ | नामसंस्मरणदेव (पा) | ८०.१३ | नाम्नादशपुरिंरति (ब्र) | १२.१४ |
| नाम्योच्छिष्टंस्वभूजीत (पा) | ८२.३५ | नाभिर्निदेच्छप्रतिधि (उ) | २६.६ | नाशतः कर्मतः सर्वसुमना (सृ) | १०.६३ | नामानिंनरत्नस्य (उ) | २२३.२४ | नाम्नादशरयस्त्रय (उ) | १०७.२३ |
| नाम्योमर्त्यस्वव्यातुलो (३३.४३) | | नाभिचपदमनाभाय- (सृ) | २१.२६ | नामामृत सत्यमिदं (भू) | ७३.१७ | नामानि शृणु रामस्य (उ) | २५४.२६ | नाम्नादामोदरः (पा) | ६६.५४ |
| नामपतपसोयां (उ) | २७.३७ | नाभिसौख्य समुद्राय-(सृ) | २३.११२ | नामोच्चारं प्रकुर्वीत (भू) | ३६.६३ | नामानुमरणारसर्वं (पा) | १०७.६० | नाम्नादेवब्रतोदांतः (पा) | ७३.३७ |
| नापरं मुखदकिंचिद (उ) | ४६.८ | नाभिमानं च वै पापं (भू) | २६.२८ | नामोच्चारण कृष्णस्य (भू) | ८६.५६ | नामापराधयुक्तानाम् (ब्र) | २५.२३ | नामापराधवती नाम सत्य (भू) | ४८.५ |
| नापराधवामिरामस्य-(सृ) | ३३.१७७ | नाभिमारम्यतीर्थं (उ) | १५.२५ | नाम गत्यांवेदोच्चनं (सृ) | ७.४६ | नामाश्रयकदाचित् (ब्र) | २५.१३ | नाम्नाभद्रवटंनामत्रिषु-(स्व) | १२.११ |
| नापश्यद्दामपाश्वेतुं (सृ) | ४४.७१ | नाभुक्तवतिचाशनीया (सृ) | १५.२८६ | नामत्रयप्रभावाच्च (उ) | २३२.१८ | नाताष्टकशतंस्तु-(सृ) | १७.२१४ | नाम्नाभिवतथालापं-(उ) | १२३.१६ |
| नापस्यवद्रीधयाद (ब्र) | ५४.८ | नाभुक्तस्यान्यथा (भू) | ६७.१११ | नामधेयानिचतथातथा (सृ) | ११.४३ | नामैकैयस्यचिह्नस्मरण (ब्र) | २५.२४ | नाम्नाभेतथालापं (उ) | ११६.३१ |
| नामिन्द्रचक्रंस्तुतसत्यं (उ) | १११.२३ | नाभेरकस्तुषीणायुः (पा) | १११.२६ | नामधेहीतितसोप्रस्तु-(सृ) | ३.१६६ | नामोच्चारणमात्रेण (उ) | ७१.२० | नाम्नाशतनापिपुण्य (भू) | ८०.२४ |
| नामोत्रशिष्ययोगिभ्यो (स्व) | ६०.४२ | नाभेर्विचिंत्यंगन (उ) | २२६.८४ | नामनिकतिवातासांका (पा) | ७७.६ | नामोच्चारणमात्रेण (उ) | २२६.६५ | नाम्नासत्यवतीलोक (सृ) | ६.६६ |
| नापुजिजगतामीशः (पा) | ११४.४१८ | नाभोनारायणं देव(पा) | ७६.१६ | नामप्रभावंविप्रयं (क्रि) | १५.८ | नामोच्चारणमाहात्म्यम् (ब्र) | २५.३ | नाम्नास्ताचंचलापांगीय (ब्र) | ६.११ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

२५०

| | | | | |
|--------------------------------------|-------------------------------------|--|-------------------------------------|-------------------------------------|
| नाम्नाहरेस्वरसयानत्रिषु-(स्व) १५.२ | नारदः पृष्ठवान्मूर्खम् (ब) २५.५ | नाराचेनातिनीष्टेन (क्रि) २५.७७ | नारायणपराणांतुजीव (पा) ७१.१० | नारायणस्यपुजार्य (क्रि) २४.३८ |
| नाम्नोमाहात्म्यमस्त्रिषु (ब) २५.२७ | नारदः पृष्ठवान्महत्तदा (पा) ७५.३ | नाराचैर्भिननेदेहानां देव्या (सृ) ३१.८७ | नारायणः परोदेवः (पा) ६७.८२ | नारायणस्यमाहात्म्यं (क्रि) १५.१ |
| नायजीवयितुं शक्यो (उ) १०३.२३ | नादरंप्रयुक्ताचायसाधुः (सृ) ४३.१४३ | नाराणांमुग्धचित्तत्वा (पा) ११४.३६७ | नारायणपरोधर्म (उ) ८०.६० | नारायणहरेकृष्ण (क्रि) २३.४० |
| नायदेवद्रुमोभूयम् (उ) ८८.१० | नारदः प्रदोमत्रं (उ) २२३.७५ | नाराधितोमयादेव (उ) १२७.८० | नारायणः परोध्याता (उ) २३८.३६ | नारायणाचलेसीम्ये (उ) २५३.२० |
| नायंनृत्येद्यथाभीमतथात्वं (सृ) ८.१३६ | नारदस्तापिपुण्याणि (उ) ८८.३ | नारायणं गुणनिधान-(भू) २१.१६ | नारायणपरोभूत्वा (उ) २०७.२१ | नारायणाच्युतजनाहंन (क्रि) ७.१०२ |
| नायंबालोहरिर्नूनं (पा) ६०.८ | नारतस्यचतत्रैवतीर्थपरम्(स्व) १८.२३ | नारायणं त नरकाधि-(भू) ६८.७४ | नारायणप्रतिहर्तासु (सृ) ३४.१५ | नारायणा जगद्रूप (क्रि) ११.१३६ |
| नायंवर्यशतैर्जयोभवता (पा) ४४.८० | नारदस्यपितातुष्टो (सृ) ४.१३३ | नारायणं न नामाध (भू) ८३.७६ | नारायणप्रयन्नायेनरा (क्रि) १६.१ | नारायणाज्जगन्नाथा (उ) २३५.३ |
| नायमेभिर्ममहातेजाः (उ) १००.६ | नारदासीविदांश्रेष्ठो (उ) २६.६ | नारायणपुरस्कृत्य (सृ) १६.११८ | नारायणः प्राणहरैः (उ) ७.२६ | नारायणाजयातत्र (क्रि) १२.११४ |
| नायातिचेदथाविभो (पा) ११४.२५६ | नारदीयमथान्यं (पा) ११५.६५ | नारायणंभूमिपतीन् (पा) ११७.१६ | नारायणमजंकृष्णं (पा) ६६.७८ | नारायणादननरंरुद्रो (सृ) ३४.११६ |
| नारकनुषयंदेव (उ) ३४.७१ | नारदेतुगतेऽश्वाद् (उ) १६८.११२ | नारायणयेचप्रफुल्ल (क्रि) १३.१६६ | नारायणमनाव्याक्तं (स्व) ६१.४५ | नारायणादिकान्तत्वा (उ) १६७.७७ |
| नारकान्प्राणिनः (उ) १७७.३७ | नारदेनपुराब्रह्मा (ब) ६.६ | नारायणं वीतमलं पुराणं (सृ) १४.१४२ | नारायणमवाप्नोति (उ) ७१.१४ | नारायणावकृष्णाय (क्रि) ११.६५ |
| नारकान्मोचयिष्यंतं (उ) १७७.३३ | नारदेनापिपृष्ठोऽहंन (पा) ७४.२०२ | नारायणंस्तोमिपरंपरेणं (सृ) १४.१४४ | नारायणमहाभाग-(सृ) ४५.३० | नारायणाययोभूषं (क्रि) ११.१०७ |
| नारकीं याति वै योनिं (भू) १६.१४ | नारदेनाम्यनुज्ञातो लोका (स्व) २६.७८ | नारायणंस्तोमिबिबुध (सृ) १४.१४१ | नारायणस्यशोमीतं (क्रि) २२.१३० | नारायणायराघवाय (उ) २४६.६५ |
| नारकैर्पथिवानोतः (पा) १०१.४६ | नारदोगीतमस्वंचवृच्छति (पा) १६.११ | नारायणकथांश्रोतुं (क्रि) १.२७ | नारायणस्यशोमेते (सृ) ३४.१४८ | नारायणायविश्वाय (उ) २२६.११ |
| नारददेवश्चदशजुष्टिलं (पा) १०५.३३ | नारदो दानवश्रेष्ठं (भू) ११६.४१ | नारायणकथायत्रवर्तते (क्रि) १.३७ | नारायणस्यभगवान् (सृ) १८.२५ | नारायणाय श्रीशायपुणं (उ) २२८.८७ |
| नारदपूत्रयामासविधि (उ) १६८.६७ | नारदोपिब्रह्मवचनानि- (पा) ११६.८५ | नारायणकथारम्या (क्रि) १७.३ | नारायणः समस्तात्माय (उ) २००.१८ | नारायणाय श्रीशायपुणं (उ) २५५.७६ |
| नारदं प्रपयामास (भू) ११६.२५ | नारदोप्यनुमेने (पा) ११६.६५ | नारायण कथोपेतं (क्रि) १.३८ | नारायणस्तदादेवो (उ) १५.१ | नारायणायेनिनमो (पा) ६४.६७ |
| नारदंस्वामतेनामो (उ) ८८.२ | नारदोसितनामाच (पा) ६.३२ | नारायणनमस्ते (उ) २५.१८ | नारायणस्तुभगवान्-(सृ) १८.५ | नारायणायेतिवाक्यात् (क्रि) १०.५२ |
| नारदः परिपन्नश्च (उ) ४४.२ | नारदोहमनुप्राप्तस्त्वद (उ) ८०.५२ | नारायणपदद्वंद्वं (उ) २२३.७३ | नारायणस्त्वं श्रीशस्त्व (उ) २४२.१७१ | नारायणास्त्रतांस्वर्नान् (पा) ३४.७३ |
| नारदः पर्वतश्चैव (सृ) १६.२०६ | नारसिंहेनवपुषापारि (सृ) ४५.३६ | नारायणः परं ब्रह्मा (उ) २५५.६२ | नारायणस्यजगदेकपते (क्रि) १५.७६ | नारायणास्त्रमंत्रं च (सृ) ४५.१०४ |

श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

२५१

| | | | | |
|-----------------------------------|-------------------------------------|------------------------------------|---------------------------------------|----------------------------------|
| नारायणीयमेतत्तुपरमं (पा) १०५.२५ | नारीवाहुस्तेयातुकुमारी (सृ) २२.१३४ | नालापेतात्यजं चैव (उ) ३८.२६ | नाशयतोपिबुद्धव्यसहस्रं (स्व) ३०.२४ | नासादिकेशपर्यंत (पा) ७६.२७ |
| नारायणोजगन्नाथे (उ) ८०.५ | नारीवाकुस्तयातुविशोक (सृ) २१.७८ | नालिकांचैवकूष्माण्डं (उ) १६८.३३ | नाशयामो वयं यज्ञान्वर्ध्म- (भू) ५०.८ | नासापुटाभ्यामुत्सृष्टं (सृ) ८.७१ |
| नारायणेदेवदेवेभक्तिः (क्रि) २.३० | नारीवारोहिणीचंद्रशयनं (सृ) २६.२६ | तालिकेरंचधार्त्री (पा) ८०.४३ | नाशितंतम्महाराज- (स्व) २२.२ | नासाभूपणमेतत्ते (पा) ११४.२६५ |
| नारायणो जगद्धाम (उ) ८०.८३ | नारीवाविषवाब्रह्मन् (सृ) २४.१८ | नालिकेरफलवीज (पा) ८०.६३ | नाशितंमदितसर्वं (भू) ६.१८ | नासाम्यांवहणं (उ) २२६.२७ |
| नारायणोजगद्व्यापीय (उ) १२८.२४३ | नारी वृक्षनदीभूमिवर्द्धि (उ) १२२.७६ | नालिकेररसंकांस्ये (पा) ११४.४४७ | नाशुचिर्नाप्यविद्वांसो (सृ) १३.५३ | नासामुक्ताफलज्यो (उ) १८४.६० |
| नारायणेतिमन्नाम (क्रि) १०.६४ | नारीसंगममत्तोसीय- (उ) २५५.३२ | नालिकेरवनैदिव्यैः (भू) ४३.१३ | नाशुचिः सूर्यसोमादीन् (स्व) ५५.४६ | नासामुखविहीनस्तु (भू) ८४.६० |
| नारायणोविदेवोस्या (उ) ४१.५ | नारीसंगपरित्यज्य (स्व) ६१.३८ | नालिकेरैस्तथाशुभ्रं (उ) ८३.२६ | नाशुभविद्यतेतेपांयेषां (सृ) १७.८१ | नासामुखविहीनस्तु (भू) ८६.७६ |
| नारायणोवल्लिखंसी (क्रि) १७.१०६ | नारीसंगपरित्यज्य (स्व) ६१.३८ | नालिकेरोदकेनाथ (पा) ८०.२६ | नाशुदुःखं व्यये दुःखमर्थ- (भू) ६६.१५२ | नासामौक्तिक भावेन (पा) १०५.१८५ |
| नारायणोमहादेवो (पा) ६८.२ | नार्च्ययतिचयेवैमां (उ) २३३.६ | नात्येनतपसालभ्यं (सृ) ३०.११३ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारायणोह्यनतात्मा (सृ) ४०.११६ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नावगाहेदगाथांपु (स्व) ५५.७४ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारिकेरंमहालाडु (उ) ६४.१७ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नावगाहेदपोनम्यो (स्व) ५५.७७ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारीमुत्पादयामास- (सृ) २२.२७ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाविषिताभिः केनाद्यैः (स्व) ५२.१३ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारिकेलफलैर्वच (उ) १८८.२७ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाविमुक्तेभ्यः कश्चि- (स्व) ३३.२१ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारी च संश्रयेत्प्राणी (भू) ६४.८४ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाविर्भवति भूतानां (उ) १६६.३१ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारीणांकलिकनाम् (स्व) ६१.२१ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नावृत्तिभयमस्तीह (भू) २६.३० | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारीनवसदैतेयोवायु- (सृ) ४४.१०१ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाशको हि स पापाणां (भू) १२.७८ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारीभिः पाप भीताभि (उ) २०६.६१ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाशकुन्वज्रजाः स्रष्टुम (स्व) २.२४ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारोमम गृहं देव (भू) ५३.१७ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाशमायाति ते सर्वे (भू) ६४.६४ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारीमहोपधी सा हि (भू) ५१.१६ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाशमेति यदा बाला (भू) ४१.२५ | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |
| नारीमेकार्किनीरम्याम (क्रि) ६.१२४ | नार्च्ययामासधातासो (उ) २५५.४० | नाशयत्येवसर्वाणि (उ) ११३.३० | नाशोचंकीर्तनेतस्य (पा) ८४.४६ | नासालज्जितकीराभ्यां (उ) २०८.१०१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

२५२

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| नास्तिपद्मसमं पुष्पं (क्रि) | १३.६४ | नास्तिभस्मकपालानि (स्व) | ५५.७७ | नाहं महाव्रते दुष्टः सेव्योहं- (सु) | ४२.३१ | निकुंजेषु विधाधरोदमीत (सु) | ४३.५०५ | निजकण्ठगतं मालां (क्रि) | १७.१६७ |
| नास्ति पुत्रसमः स्नेहो (सु) | १८.३७४ | नास्मिन्मुदविज्ञाना (सु) | १६.२३७ | नाहं राज्यस्य कामार्थी (भू) | १२३.५६ | निकुंभं कुंभादूर्ध्वतु (पा) | ३६.५८ | निजकण्ठस्थितां मालां (क्रि) | १२.१०७ |
| नास्तिभार्यासमं तीर्थं (भू) | ५६.२२ | नास्माकंपानकंधोरं (पा) | ६४.४२ | नाहं शन्नो मिदेवेश (उ) | ३४.३६ | निकुम्भनामागुर्वक्षः (सु) | ६.४४ | निजकर्मविपाकोयं (क्रि) | २०.६८ |
| नास्तिभार्यासमं तीर्थं (भू) | ५६.२४ | नास्माकं मदमत्तादिन (पा) | ६०.६४ | नाहं शास्त्राविशेषेण (पा) | ६६.१०६ | निकृत्यस्वक्षिरश्च (भू) | १.५१ | निजगात्रनिष्पाकेचि (क्रि) | २३.७० |
| नास्तिमत्सदृशः (पा) | ३७.६२ | नास्माकं विष्णुदूतैस्तैः (क्रि) | १५.७२ | नाहं सुमुखिनिद्रालुनिज (उ) | १७५.७ | निक्षिप्तोरीरवेधोरे- (स्व) | ३०.४० | निजघानशिरःशिखत्वानि (उ) | १७६.६ |
| नास्तिमातुसमः स्नेहो (सु) | १८.३५४ | नास्त्यमल्यशयनम् (स्व) | ५३.६ | नाहं स्मरामि वै मातुर्न- (सु) | ३३.१०३ | निक्षिप्यजलपात्रे (उ) | ८५.१७ | निजघानशिरोमध्ये (पा) | १०७.४१ |
| नास्तिमातुसमो बंधु- (सु) | १८.३५३ | नास्त्यारंकरिष्यति (उ) | २२२.७२ | नाहं स्वर्गं गमिष्यामि (भू) | ६५.२० | निक्षिप्यतनयोगे (उ) | २४५.६६ | निजधर्मपरित्यज्य ग्रधर्मं (भू) | २८.२३ |
| नास्तिमेजनको नाता (ब्र) | १४.२२ | नास्त्याः पुण्यस्य सख्यानं (उ) | ५३.३० | नाहं मन्यत प्रजाना- (उ) | २०१.७६ | निक्षिप्यनगरेवीरो- (सु) | ३५.६५ | निजधर्मप्रसादात्सकुलं (भू) | १४.४६ |
| नास्तिमेनिष्कृति (उ) | १२७.१४४ | नाहं क्षमिष्ये बहुना (सु) | ४.२१ | नाहं मन्यत प्रपश्यामि ते (उ) | १२७.८६ | निक्षिप्यभार्यापुत्रेषु (स्व) | ५८.२ | निजपाद तुलाकोटि (क्रि) | १७.२२५ |
| नास्ति योगविना सिद्धि (सु) | ४१.८७ | नाहं शुद्रात्किलेच्छामि- (सु) | ४३.३६५ | नाहं मात्मेच्छया शलं- (सु) | १६.१४६ | निगदिता भुवनैरति- (सु) | ४४.११५ | निजपापीघनिष्कृत्यै (पा) | ६४.५७ |
| नास्ति योगोने मे भवित- (भू) | ६६.१६ | नाहं गजमिदेवेशम (उ) | ३.४६ | नाहमेकाकिनीयास्येया- (सु) | १६.१२३ | निगमोद्बोधकजाता (उ) | २०४.८५ | निजभवतं हाविष्णु (क्रि) | १७.५३ |
| नास्ति विष्णुसमो देवो (उ) | ३७.८६ | नाहं चापत्य भावेन (भू) | ८२.३ | नाहमेतं प्रजानामिदेव (स्व) | १३.३०५ | निगमोद्बोधकनार्थत्वं (उ) | २००.६ | निजभवत्याततोज (क्रि) | ११.१०३ |
| नास्ति विष्णोः परधाम (उ) | ७१.३०६ | नाहं जानामितां लीलां (पा) | ८३.१३ | नाहमेतं वधिष्यामि (उ) | ५७.३२ | निगमोद्बोधकनार्थत्वं (उ) | २०४.६ | निजलोलासमुद्भूतं (उ) | २२६.८६ |
| नास्ति विष्णोः परसत्यं (उ) | ७१.३१० | नाहं जानामिदिभागं (उ) | १४.५३ | नाहमेतं वधिष्यामि (उ) | ५७.३३ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजामारं ततः प्राप्य (ब्र) | १३.४४ |
| नास्ति वैवस्वतामिदं चिन् (सु) | ५.५१ | नाहं जानामिहेमन्तो (उ) | १२७.७७ | नाहली सुमरी चान्द्रा (भू) | ६०.२८ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजाचारग्राहणोये (क्रि) | १७.७८ |
| नास्ति श्रद्धासमं तीर्थं (भू) | ३६.१२५ | नाहं त्यक्ष्ये शरीरं वै (भू) | ७२.६ | नाहुषं नाम धर्मजं (भू) | १०८.६ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजाचारग्राहणोये (क्रि) | १७.७८ |
| नास्ति संव्यातपोदानं (भू) | ३७.१६ | नाहं त्याज्यासदादेव (सु) | ४.६६ | निश्चितीरासेन्द्रोऽसौ (सु) | ५.१७ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजाचारग्राहणोये (क्रि) | १७.७८ |
| नास्त्यत्रावसरो देवा- (सु) | ४४.१२१ | नाहं देवो न गंधर्वो (सु) | १२२.१ | निकत्यननकुर्वीतसंग्रामे (प) | ३४.८ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजाचारग्राहणोये (क्रि) | १७.७८ |
| नास्त्यस्यां हि पृथग्धर्मः (भू) | ४१.१८ | नाहं ब्रह्मादयो देवाः (उ) | १२०.३४ | निकामं योजनशिराः (पा) | १०७.१६ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजाचारग्राहणोये (क्रि) | १७.७८ |
| नास्त्येतेषु च वै तीर्थं (भू) | ३७.५७ | नाहं मर्त्यस्य वै राजन् (सु) | १४.६४ | निकुंजगिरिराजस्य (उ) | १२७.६२ | निगमोद्बोधकनाम (उ) | २०१.०५ | निजाचारग्राहणोये (क्रि) | १७.७८ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२५३

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| निजेच्छयाप्रकुर्वती (क्रि) | ४.३५ | नित्यंनिरंजनं शान्तं (स्व) | २.३ | नित्यंश्रीरघुनाथस्य-(पा) | ३२.३ | नित्यदानफलं देवं त्वत्तः (भू) | ४०.१ | नित्योदकंभश्चाद्वच (पा) | १०५.७७ |
| निजोत्तरीयं वत्सं (क्रि) | १७.२२४ | नित्यंनैदिनीपूजाकार्या (सृ) | ३८.१६० | नित्यंश्रीरघुनाथस्य (पा) | ५.२५ | नित्यंनैमित्तिकं कृष्णे (उ) | ६३.६ | नित्योदिनो नित्य (उ) | ७१.१२६ |
| निजोत्तरीयेनिजवस्त्र (क्रि) | १७.२०६ | नित्यंभर्मपरोरामचरण (पा) | ५०.६ | नित्यसत्यव्रतेयुक्तः (सृ) | १५.२०५ | नित्यप्रभिनैर्मर्तायै (सृ) | ३०.८० | नित्यस्नानपूयतेयेनि-(स्व) | ३१.५४ |
| निजोदयस्तुसाधुनां (उ) | २१५.४६ | नित्यंभर्मार्थकामेषु (स्व) | ५४.३७ | नित्यसत्ये रतियस्य-(भू) | १३.२ | नित्यमध्वरधूमन (उ) | १८०.१४ | नित्यस्नानेनगोदद्यानि (उ) | ६५.१४ |
| नित्यं वज्रोतिषा जातं (पा) | ७२.११२ | नित्यंनैमित्तिककाम्यं (सृ) | ६.७६ | नित्यसंस्मरणं विष्णो (उ) | १०८.२८ | नित्यमष्टाक्षरीजायां (उ) | ११०.५ | नित्यस्वस्थाश्रयः (उ) | ७१.२१६ |
| नित्यं वीजस्तुतौ (उ) | ४३.१६ | नित्यंनैमित्तिककाम्यम् (स्व) | ५७.४ | नित्यसमारोधानेपिअधिकं (भू) | ४.४१ | नित्यमात्म रतस्तु (उ) | १७८.५ | नित्यार्चनविधौनित्यं (उ) | २५३.७६ |
| नितांतोप्रविष्टः सप (क्रि) | २३.१५१ | नित्यं नैमित्तिककाम्यम् (पा) | ६७.३१ | नित्यसंपूर्णकाम (उ) | २२७.३५ | नित्यमादेशकारी यः (भू) | ५०.१८ | निदद्यादधपूर्वोवत्-(पा) | १०८.३७ |
| नित्यं कर्मचरित्वातु (उ) | ६४.१६ | नित्यं परगृहेवास (पा) | ६२.६५ | नित्यसंभोगमीश्वर्या (उ) | २२७.१३ | नित्यमाराधितोविप्रः (सृ) | ४३.५०७ | निदाघकालेपानीयं (उ) | २७.४ |
| नित्यं गृह्णानि विप्रद्रव्यो (क्रि) | २४.६४ | नित्यं परगृहे वासो (भू) | ८६.६ | नित्यसिद्ध्यति सर्वेष्ट (ब्र) | ७१.३०४ | नित्यमुत्कीर्यं भक्षयते (भू) | ६३.३४ | निदाघजनिताताप (पा) | ११४.१४ |
| नित्यं जलुवधोद्युक्तः (पा) | २०.४६ | नित्यं परिभ्रमस्तत्र (उ) | ११३.६ | नित्यसेवा रतोविष्णु-(पा) | २६.११ | नित्यमुत्तीर्यं तावेवं (भू) | ६३.३५ | निदाघध्वनिसंतप्ते (उ) | १७५.४६ |
| नित्यं तद्रूपमीशस्य (उ) | २२७.१२ | नित्यं पश्यति युक्तात्मा (भू) | ३२.२४ | नित्यं सौख्यं नते (उ) | १३२.१४३ | नित्यमुद्यतपामिः स्यात् (स्व) | ५३.२ | निदेशस्थाग्निस्तस्य (सृ) | १३.१७५ |
| नित्यं तद्वाक्यकरणे (पा) | १५.५ | नित्यं पुष्पितशालाभिः (भू) | १०२.१५ | नित्यं स्मरामि वैपादी (सृ) | ३८.१११ | नित्यमेव नरः पुण्यं (भू) | ८७.२६ | निदेशस्थाग्निस्तस्य (सृ) | १३.१६७ |
| नित्यं तवपदेरक्तां (पा) | ५६.२६ | नित्यं पूजयसे भूपभुजित (उ) | ३५.२५ | नित्यं स्वेदसमायुक्तं (पा) | ११७.२३० | नित्यमेव प्रपद्यामि (भू) | ६८.३५ | निद्राधरश्चेत्तु (सृ) | ६.५१ |
| नित्यं तवानुपाल्याऽस्मि (क्रि) | १२.१०३ | नित्यं प्रभुदितं दिव्यसर्वं-(सृ) | १८.३०८ | नित्यकालस्य यद्दानं-(भू) | ३६.७० | नित्यमेव महाप्राज्ञ (भू) | ६७.६७ | निद्राभरसमाक्रांता (सृ) | ७.५६ |
| नित्यं तस्माच्च सुयोज्ज्वलं (सृ) | ४६.६८ | नित्यं प्रभुदितस्तत्र-(सृ) | १५.२१५ | नित्यकालस्य यद्दानं (पा) | ६७.४२ | नित्यमेव सुखं वर्यं (भू) | ४२.४० | निद्रावतंसमालोच्य (क्रि) | ५.१५८ |
| नित्यं तिष्ठति देशेति (उ) | १३५.४६ | नित्यं प्रलयहेतुत्वं जगतो (सृ) | ३.१६६ | नित्यक्रियां प्रकुर्वीत (क्रि) | २२.६१ | नित्यश्चाद्वेयशाश्वतिना (पा) | १०५.८० | निद्रावतंसमालोच्य (क्रि) | ५.१५८ |
| नित्यं तुपातकीचैव-(सृ) | १६.३५४ | नित्यं याचनकोनस्यात् (स्व) | ५५.४ | नित्यजानवमैश्वर्यं (उ) | २४५.११० | नित्या नित्यविहारिण्यो (पा) | ७४.१०५ | निधनं रामवाणेन (उ) | १४२.२५८ |
| नित्यं तु भक्त्या विप्रो (क्रि) | १७.१२८ | नित्यं याजनकश्चाय (पा) | ६४.७७ | नित्यञ्च रम्योम (उ) | २२७.८० | नित्याभक्तान्समुदिश्य (उ) | २५३.७४ | निधनं त्रपार्णमास्थाय (ब्र) | २०.२६ |
| नित्यं दानपरः सोऽवक्ष्यते (स्व) | ३१.५२ | नित्यं वसति विश्वात्मा (उ) | २१३.३ | नित्यत्वं लभ्यते ह्येवं-(सृ) | १३.३८१ | नित्यामृतकरो धन्वंतरि (उ) | ७१.२३८ | निधनं न च दैत्यानां वर्यं (सृ) | ४१.२६७ |
| नित्यं दीपप्रदीपस्तु (उ) | ६५.१६ | नित्यं विष्णुसंयुक्तस्तेन (भू) | ६६.८८ | नित्यदाता नित्ययाजी (पा) | ११२.१४५ | नित्यैवैवाजगन्मात (उ) | २४२.३३८ | निधनस्तस्य संतुष्टास्तस्य (भू) | ६२.८२ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|--------|----------------------------|---------|
| निधायतच्छिरः स्वांके (उ) | २०६.२८ | निरीश्वरमिदं प्राहुः (उ) | ८०.६७ | निपपातदित्यक्त्वा- (सु) | ४१.२८६ | निमित्तेषु च सर्वेषु (स्व) | ४२.१७ | नियमैश्चोपवासैश्च- (सु) | १८.१५२ |
| निधायतमहंमूनिनी (उ) | २१६.५ | निधायपिडमेकैकं नन्द (सु) | ६.१०३ | निपातयामास (उ) | २४२.३०५ | निमित्तोपास्तदा दुष्टान् (सु) | ४४.१७२ | नियमैः संयमैश्चान्यै (भू) | ३२.२८ |
| निधायदर्भांश्चिद्विद (सु) | ६.१६६ | निधायंगारनिचर (पा) | ११४.११० | निः पापास्त्रिदिव- (उ) | १३१.२२ | निमित्तमिषाढवायः (उ) | ३७.२४ | नियम्य प्रयतोवाचम् (स्व) | ५१.६२ |
| निराशानिप्रयत्नाश्च- (स्व) | ३१.१८६ | निधीनामाशु मंप्राप्ति- (भू) | ४०.१० | निरतिनामपीयुषा- (पा) | ७७.२३ | निमेषमात्रमेवापि- (भू) | ४.४० | नियम्ययोगनिद्रां (उ) | २२६.१७ |
| निराशाः पितरस्तस्य (क्रि) | ६११४ | निनदंस्फुटदं गेवुगोणा (पा) | ३६.१ | निरीयकं ठपयंत उ | १८२.५ | निमेषाः स्युश्चलोनानां (सु) | २२.३८ | नियुज्यवाणभूतेषु (उ) | २५०.३६ |
| निराश्रयो जिताहारः (भू) | १२२.३३ | निनिदंस्वकृतं कर्म (उ) | १२७.६६ | निपुणस्यविधेः (उ) | १२६.५३ | निमेषोन्मेषेण चैव कुर्वति- (स्व) | १५.१२ | नियुक्ते सर्व कालं (पा) | १११.१६ |
| निराहारतपोधोर- (सु) | ४२.२५ | निदतिपातिनोपेवाशा- (पा) | २०.४१ | निबध्यकृष्णं (उ) | २४५.८६ | निम्वपञ्चवृत्ताकं (क्रि) | २२.८० | निपूज्यमानोभरत (उ) | २४२.१८६ |
| निराहारगतसाभूत् (सु) | ४३.२६६ | निदतिमांसदालोका (क्रि) | १७.८४ | निबध्यतुजटा जूटं (सु) | ४३.२५१ | निवाकृतः परतीर्थन (उ) | १५.१४ | नियोगात्तवभूपाल (पा) | ११५.१० |
| निराहाराश्च तेष्वथ (उ) | १६.८ | निदंतिर्वैष्णवान्येच (क्रि) | १६.१११ | निभूतेपरितुष्टाव- (पा) | ७१.४७ | नियतः सत्यवादी च (स्व) | २७.७३ | नियोधयतिनोवालस्तं (उ) | २१६.५७ |
| निराहारोघोरतपास्तपी (सु) | ४२.२३ | निदंयानभतेदुःखं (उ) | ६४.५६ | निमज्जतांभवानस्मि (पा) | १५.१५ | नियतः सर्वजातीना- (पा) | ११०.७६ | निरकुशा कृतांगहे (भू) | ४७.५७ |
| निराहारो वर्धशतं (उ) | २२२.४० | निदितानि न कुर्वति (भू) | ६६.५० | निमज्ज्यसामाषव (पा) | ६२.११२ | नियतात्मानः पूतो (स्व) | ३६.६२ | निरञ्जनस्यमाहात्म्य (उ) | १.२७ |
| निराहारोक्तोद्वाच (ब्र) | १५.५४ | निदिनाश्रुतिरग्राह्या (पा) | ५८.१० | निमज्ज्यास्मिन्नुद्दे (पा) | १५.३८ | नियमं च प्रकलंभ्यं (उ) | ५१.५७ | निरञ्जनीनिरातंको (उ) | ७१.१२४ |
| निरीक्षणार्थं दुष्टस्य (उ) | १५१.४३ | निदितं निष्ठुरैर्विषै (भू) | ४.३० | निमज्ज्योन्मज्ज तनूणां (पा) | १००.६ | नियमः श्रूयतांतस्य (उ) | १२८.८७ | निरंतरंनयाचैव नृणां (उ) | १८२.५ |
| निरीक्षतेमहात्मानो- (सु) | ३७.१६० | निदित्वापिजगन्नाथ (क्रि) | १७.१३६ | निमंत्रयीतिविप्रेदान् (पा) | १०५.६४ | नियमस्तु महाप्राज्ञो- (भू) | १२.६२ | निरंतरंशिवस्थानेन (पा) | ३६.८ |
| निरीक्षितास्तवादेव्या (उ) | २२६.१७६ | निन्धपुत्रावुभौजाता- (सु) | ८.१५३ | निमंत्रिताश्चपितरन् (सु) | ६.८४ | नियमस्तु समायातस्तव (भू) | १२.७६ | निरंतरं समागमान (उ) | २२८.४ |
| निरीक्ष्यवतदाम्यो (उ) | ६.२७ | निन्युश्चनिलयं (क्रि) | ३.५५ | निमंत्रयदानवान्सर्वान् (सु) | ४६.३० | नियमस्थोव्रती (उ) | २५.६ | निरंतरं नामभिश्च (उ) | २२६.८६ |
| निरीक्ष्यतौमुनिवरः (उ) | २०३.५८ | निपत्यगंगा सनिले (क्रि) | ३.७० | निमन्त्र्य ब्राह्मणान् (भू) | १२५.२ | नियमान्पुण्ड्रानुपे (पा) | १०३.१६ | निरंतरंनिरातंक्रान्ति (उ) | १८६.२१ |
| निरीक्ष्यपरितोषान् (पा) | ६.२१ | निपत्यदंडवद्भू-भौ- (पा) | १०७.८० | निमित्तमस्य धीरस्य (भू) | १०८.१३ | नियमान्पुर्वमादाय (भू) | ६६.१६ | निरंतरंलंघ्य कुर्याद् (पा) | ७६.२६ |
| निरीक्ष्यमाणास्ते (उ) | १४१.२२ | निपत्यपादयोस्तस्य (सु) | ३१.३१ | निमित्तान्यतिधोराणि- (सु) | ३०.४६ | नियमान्शास्त्रदृष्टां (सु) | ४७.३७ | निरंतरंलंघ्य कुर्याद् (उ) | २२५.२६ |
| निरीक्ष्यस्वंशरीरं (उ) | १३५.१२१ | निपपातक पालातश्शम्भु- (सु) | १४.१६ | निमित्तान्येवपश्येव (भू) | ६.२ | नियमान्स्वयमादाय (भू) | ६७.८२ | निरंतरोद्गतैश्छन्म- (सु) | १६.१४६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|--------|----------------------------------|---------|----------------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| भिरन्नाग्रदिति: (उ) | १२५.७० | निराभ्येतद्विजश्रेष्ठो (उ) | २०८.३ | निर्गुणायनमस्तु (उ) | २२८.८६ | निर्दग्धोभस्मतांप्राप-(उ) | २४६.४७ | निर्धूतपातकाः सर्वे-(पा) | १०५.१८० |
| निरपेक्षैः प्रकृतं च (उ) | ७८.८७ | निराधुभोजगजैः (उ) | ७१.२७६ | निर्गुणोपासनेकष्ट (उ) | १६५.६३ | निर्दग्धाक्षणात्सर्वं (उ) | २४१.६७ | निर्धूतपातस्वांष्ट्वा (सु) | ३६.१६ |
| निरयादिमुनुष्यांतं (भू) | ६६.२०६ | निरावासं निराकारं-(भू) | ६८.४१ | निर्गुणोपनिराकारः (उ) | १६५.६२ | निर्दग्धाहं बलं सर्वं (उ) | २४६.४६ | निर्भक्षः परमाप्राप्य-(उ) | १२१.३३ |
| निरयादुः सहाः मति (क्रि) | २३.११० | निरुक्तसूक्तं रहस्यं-(सु) | १४.१२२ | निर्जगाम पुनः स्थातुं (उ) | १८७.३७ | निर्दग्हाहृतशतमानं (सु) | ५.६४ | निर्भस्मिर्नैव चतै (पा) | ८४.६६ |
| निरयेते विपच्यते ये (पा) | १०१.४४ | निरुद्धासेमहाघोरे (क्रि) | २३.१२८ | निर्जगाम वह्निर्गृहात्कथं (उ) | १८३.२५ | निर्दग्हाहं बलं सर्वं (उ) | २४६.४६ | निर्भयामानवाः सर्वे (क्रि) | २२.७३ |
| निरयेदाहुजापोडाजातं (पा) | ३०.३५ | निरुद्धांतमंरुमागर्जिते (उ) | १२५.१०५ | निर्जगाम महासैन्यं (पा) | १०.२६ | निर्दग्हाहं बलं सर्वं (स्व) | ४३.१३ | निर्भस्मिन्गणाः (उ) | २३८.११५ |
| निरयेषु च सर्वेषु (भू) | ३०.४२ | निरुध्य संस्थितो ब्रह्मा-(सु) | ३०.३२ | निर्जगाम महोनाम्ना (उ) | १८०.३० | निर्दग्हाहं बलं सर्वं (उ) | ३४.२३६ | निर्भक्षकालपुरुष (उ) | १८३.४७ |
| निरयं कास्तस्य बाणा (भू) | ५८.३७ | निरुध्य सूर्यं परिवेगवतम-(भू) | ५५.१० | निर्जगाम मुखकोष (भू) | ४४.७६ | निर्दिष्टमासने भजे (उ) | ५.१२ | निर्भक्षकालः सहसा (उ) | २५०.२६ |
| निरवन्धमानादत्युग्रो (उ) | १८१.१६ | निरुपावे विनिर्मुक्त (उ) | १८४.३२ | निर्जगाम स वेगेन (भू) | ६१.६० | निर्दिष्टास्तेक्षणा (पा) | ६१.८ | निर्भक्षकालः सर्वे (उ) | २४७.३४ |
| निरस्तातेन साचित्रा-(पा) | ६२.७० | निरुपितमिवं पुण्यंत्वा (उ) | १८४.२ | निर्जगामार्थसिध्यर्थं (सु) | ८.८३ | निर्दोषं ताडयेत्पश्चान् (भू) | ३३.१२ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १७८.१६ |
| निरहंकारहेसूत (ब्र) | ११.२ | निर्गच्छतीमुनिर्ज्ञा (पा) | ११४.२३६ | निर्जलाभोदसदृशो (सु) | ४१.२२८ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ६५.१४ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १७५.११ |
| निराकाराच्च साकार (उ) | १३२.७६ | निर्गच्छन्मन्त्रि सहितः (सु) | १०.११३ | निर्जितं तु परंत यशः (भू) | ४२.५६ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ३३.१३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निराकाशैतोयमयै-(सु) | ३६.१४१ | निर्गच्छमाने समराय (भू) | १११.१ | निर्जितं तेन देव्ये (उ) | ३८.७६ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | २.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निरातंकाः प्रजास्तस्य (उ) | ५७.६ | निर्गतः स्वगृहादातो (उ) | १६७.६ | निर्जिता रात्रिं संधात (उ) | १६१.१० | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | २.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निराधाराश्च ये जीवा-(सु) | २०.१५८ | निर्गतः स्वजनंस्त्य (उ) | ३१.१५ | निर्जित्य बद्ध्वा तानीय (सु) | १२.१२६ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ३०.६६ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निराधारो निराहारस्त (भू) | १०१.४६ | निर्गता कन्यका तत्र (उ) | ३८.८५ | निर्जीवमभवत्स्थानं (पा) | १११.२३ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ५७.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निरामयं च पप्रच्छ (भू) | ६२.७ | निर्गत्या गन्धनचरत्तपो वै (पा) | ७२.१२४ | निर्भक्षः पत्न्याः प्रोक्ता-(भू) | ३६.६६ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ५७.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निरामयश्चागतोसि (भू) | ६७.३५ | निर्गुणनिष्क्रियशान्तं (पा) | ८२.५६ | निर्भक्षः पत्न्याः प्रोक्ता-(भू) | ४३.४६८ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ५७.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निरामया वीतशोकाः (भू) | ७६.१० | निर्गुणं सुगुणं स्तान् (भू) | १६.७४ | निर्भक्षः पत्न्याः प्रोक्ता-(भू) | ४३.४६८ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ५७.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |
| निरामिषं हविष्यं च (क्रि) | ६.४३ | निर्गुणास्याप्रमेयस्य शुद्ध (सु) | ३.१ | निर्भक्षः पत्न्याः प्रोक्ता-(भू) | ४३.४६८ | निर्दोषाः शाश्वतो (भू) | ५७.२३ | निर्भक्षकालः पुनस्त्वेव (उ) | १८२.२० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: दलोकानुक्रमणी

२५६

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| निर्मलोबहुरूपाद्योऽ- (उ) | १३४.१४ | निलंजनेनिघृणे दुष्टे (भू) | ५०.४७ | निवसंतिमहादेविकास्य (उ) | १६४.४ | निवृत्ताः संगरेदेत्यान (उ) | १०२.४ | निवेशब्रह्मणैर्भक्त्या- (सृ) | १५.५४ |
| निर्मातय श्रीहरेः स्फुटवा (त्र) | २६.६ | निर्वन्ध्याद्वाहिकतं (उ) | २४२.१५३ | निवसंतिहिताः सर्वाः (स्व) | ३१.१३२ | निवृत्तिप्रेतभावस्थपृच्छा- (सृ) | ३२.३८ | निवेशसज्जनेदुःखं (उ) | १२७.१३४ |
| निर्मासगात्रैस्तुरगैरल्प- (सृ) | ३०.८१ | निवर्णयेदिवचितम् (स्व) | ६१.७८ | निवत्यन्मागवेदेशे (पा) | ६४.२६ | निवृत्त नाटके तस्मिन् (भू) | ७७.४ | निवेशावैष्णवैर्भक्तैः (उ) | ८४.३ |
| निर्मापयामासन्पो (पा) | ११०.६५ | निर्वापसद्युतदेयं (उ) | ७७.५४ | निवसामिसवाशंभो (उ) | १२०.५२ | निवृत्तेमयिशैलेंद्रतो- (सृ) | १६.१५४ | निवेशननां धान्यानां (भू) | ६६.३३ |
| निर्मापयिषुषानपि नाम (पा) | ६४.११७ | निर्विकारो निरुद्धोः (भू) | ६१.१४ | निवसिष्यतिदेवेशि (सृ) | ३१.११२ | निवृत्तेमोसलेतद्वत्केश- (सृ) | २३.८५ | निवेश्यासनमुख्येत्तु (उ) | २४६.८४ |
| निर्मापयस्वभवनं (क्रि) | २२.१०५ | निर्विघ्नतर्ककार्ये (उ) | २४३.४६ | निवारणकुतयच्च (क्रि) | १७.१७३ | निवृत्तेराजशार्ङ्गलसर्वे (सृ) | ३७.१६५ | निवेश्योसर्वशैलेषु (सृ) | २१.१६६ |
| निर्मापयस्वमेव (उ) | ४.४६ | निर्विघ्नेनप्रकर्तव्यो (उ) | १६८.२० | निवारणसमर्थोपिन- (उ) | १८५.८६ | निवृत्त्यप्रणिपत्याथ (सृ) | ६.१८३ | निः शकंजहिर्मांविष्णो (उ) | ७.२५ |
| निर्मात्यं रात्रि वस्त्रं (क्रि) | ११.४० | निर्विण्णमानसो (पा) | ६४.३६ | निवारयस्वभ्रमरिमा (स्व) | ५७.५८ | निवेदयामासतदा- (उ) | २४२.२७० | निः शका वतंते विप्र (भू) | ४८.२५ |
| निर्मात्यचंदनेनांगमं (पा) | ७६.६२ | निर्विन्नाबुद्धिहीनामा (त्र) | ११.५६ | निवारलसिभूषा (उ) | ३५.२७ | निवेदयामासपितृयुग्मः (सृ) | ८.४८ | निगका वतंसैचापि (भू) | ५०.४३ |
| निर्मितकनकैः शुद्धैः (त्र) | ३.२३ | निर्निषादिह्यन्नदशना (उ) | २३८.६४ | निवारितसभारंभनि- (सृ) | १५.३७६ | निवेदयित्वा कुशलं (उ) | ५७.२५ | निः शब्दशोभसलिल- (सृ) | ४३.३७८ |
| निर्मितांमालिकाकंठे (पा) | ७६.६० | निवृत्तिपरमायांति (सृ) | ४३.११३ | निवारिताहिचंडेनचंडा (उ) | १५४.२६ | निवेदितंविभोयो- (उ) | २५५.६८ | निगम्य तन्मुखात्तूर्णां (भू) | ११४.१६ |
| निर्मितास्वेनपुत्रेण- (सृ) | ४१.१४६ | निहृतिश्चैवसध्यश्च- (सृ) | ४०.८३ | निवार्यतंदिज्जंताक्ष्यं (उ) | २२२.५२ | निवेदितंमयाभक्त्या (उ) | ६६.६६ | निगम्यतस्यावचन- (सृ) | ४४.११ |
| निर्मितायेनशावस्ती (सृ) | ८.१३६ | निवर्तयामासतदा (उ) | ६६.७० | निवार्यतांदिज्जंताभो- (सृ) | ३५.४१ | निवेदितंमहेशाय (पा) | ११४.५८ | निगम्यपुत्रवचनमातृ- (उ) | २१३.७३ |
| निर्मितेनूतनागरे (क्रि) | १३.३५ | निवर्तस्वनिनदेहं (उ) | २०३.२८ | निवासं चक्रिरेसर्वाः (भू) | २६.३१ | निवेदितमिदं सर्वगुणं (उ) | २१०.६२ | निगम्यवचननाथाः (उ) | १५.४६ |
| निर्मोहोऽजितकामश्च (स्व) | ३१.१८४ | निर्वतिलापुरातत्रव्यास (स्व) | १८.३६ | निविघ्नासिद्धिमाप्नोमित्त्व (क्रि) | ६.२६ | निवेदितान्धोदनाति (उ) | २५३.१०० | निगम्येतिनोत्राणो (उ) | २२१.२८ |
| निर्ययुस्त्वमरावत्या- (उ) | ६७.१७ | निवर्त्यकदनशौरिः (उ) | २४६.२५ | निविष्टस्यैवभ्रत (पा) | १०५.२०८ | निवेदितेनतोवालि (उ) | २०.२५ | निगम्येतिवचनमय (उ) | २०३.४७ |
| निर्ययुग्माह्यरास्तत्र (पा) | १६.४८ | निवसत्येप भूषालो (भू) | ८३.८३ | निवृत्तासुखीवस्याः (उ) | २०१.८६ | निवेदितेस्वयंमैहिम (सृ) | ४३.११७ | निगम्येतिवचोधातु (उ) | ६६.२४ |
| निर्ययीसहस्रं न्ये (उ) | २४१.६४ | निवसन्तिनूतत्रैववह (उ) | १७४.६० | निवृत्तोभवकात्स्थ- (सृ) | ३५.६७ | निवेशकेशवेमालां (त्र) | २२.१७ | निगम्येतिवचोराजः (उ) | २११.८ |
| निर्यापयेत्तत्तान्वा (उ) | ११६.४३ | निवसन्तिपुरेतस्मिन् (उ) | १७४.६७ | निवृत्तविषयस्यापि (उ) | ३४.२३ | निवेशगुह्यंनश्रीवाद् (स्व) | ५१.५६ | निगम्येतिद्वचस्तात (उ) | २०४.३४ |
| निर्यापयेत्तत्तान्वा (उ) | १२३.३२ | निवसंतिमहात्मान (उ) | १३६.७ | निवृत्तशत्रुः शत्रुघ्नः (सृ) | १३.१३० | निवेशतद्वसिष्ठस्य (पा) | ११२.६३ | निशांतचैवदेवाय (उ) | ३४.७७ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| निशामयमागीयमान-(उ) | १८४.८० | निःशेषेयुचलोकेषु (सु) | १४७ | निषिद्धकृतवान् (उ) | १६७.३६ | निष्ठावाससमासाय (स्व) | ३८.५६ | निर्गतोऽधर्मं रतांशुणा (स्व) | २६.२० |
| निशायाप्यंधावंत-(सु) | १६.११० | निश्चक्रामबहिस्त-(उ) | २११.३८ | निषिद्धांगुलिहस्ताश्च (क्रि) | ७.३२ | निष्ठोऽधर्मस्तकेतस्य (पा) | ११५.१८ | निर्गतोऽधर्मं रतं (उ) | १२६.१६ |
| निशार्थनिर्गतंयुषं (उ) | १२५.३६ | निश्चक्रामाद्भुनोवालो (सु) | ४४.१४० | निषिद्धारचरणजाने-(उ) | १२७.८७ | निष्ठुरदुर्घंरुद्धदोय-(स्व) | २६.२३ | निसर्गात्सर्वभूतानामिति (भू) | ६६.१४२ |
| निशावशिष्टानलनी (क्रि) | ५.१६४ | निश्चयेनानुविज्ञाय-(सु) | १५.७८ | निषिद्धयमानोबहुधा (उ) | १६०.१८ | निष्णातः सर्वविद्यासु (उ) | २१६.४ | निसर्गात्सिल्लंमेधय (उ) | १२७.३ |
| निशामुत सां सर्वासां (उ) | २४६.१११ | निश्चितमिदपुरासमाभि(पा) | ११६.२४७ | निषीदतत्रचेत्सुक्ता (पा) | ११३.२७ | निष्पद्यतेनरैस्तेतु (सु) | ३.१३३ | निःससारमुवात्तस्य (उ) | १८.८१ |
| निशिजागरणं कुर्यात् (क्रि) | २२.१३६ | निश्चेष्टः कामरूपेण (भू) | १२१.४६ | निष्कर्षांत्रवलस्यिनं (पा) | १५.४६ | निष्पन्नचंद्रकिरण (पा) | ११५.६० | निस्तोर्णं दुःखोराजसोद (उ) | ५६.२० |
| निशितं शस्त्रमंब्रूहं (भू) | ४३.६५ | निश्चेष्टोऽयिनिहस्ताहः (स्व) | ४०.२१ | निष्कर्षं महाभागां (भू) | ५३.११ | निष्पापिपश्यति (क्रि) | १५.३८ | निस्तोर्णं नरकोभूयः (उ) | १२६.१६८ |
| निशितेन जरेण हुतां हि (भू) | ४४.४ | निःश्रेयसदानलभ्यं (क्रि) | ३.२६ | निष्कामं कुस्त्येयस्तुसपरं (सु) | २१.२४५ | निष्पापस्त्रिदिवयांति (स्व) | २६.४० | निस्त्रपस्वान्तेशांति (सु) | ४४.१७० |
| निशितेनापि बाणेन अर्धं (भू) | ४५.२० | निःश्रेयससंज्ञिज्ञासु (उ) | १७६.५ | निष्कामं वाक्यमाकर्ष्य (उ) | १५१.७१ | निष्पावनीरलवण (सु) | २२.६३ | निस्त्रिशास्त्रसृजुः सख्ये-(सु) | ४१.१०८ |
| निशितं मार्गं लोभिनः (उ) | ६.६ | निःश्वसत्पद्मोमुणं च (भू) | ६६.१३३ | निष्कामः सुखदुःख (उ) | २०४.१७ | निष्पिण्यफल साहस्य (उ) | २४५.१२८ | निस्पृष्टापापिभिः (पा) | ५८.११ |
| निशिवशरवणे तगो गीतां (सु) | १८.२७६ | निःश्वसन्मुहुरेष्टवा (पा) | ५८.२२ | निष्कामोवात्सकामो (उ) | २१२.१७ | निष्पद्यस्तगुरानीकं (सु) | ४१.१५० | निहतं दानं वंदुष्टं वैलोक्य-(भू) | २५.२३ |
| निशोऽयप्रमुतेषु (उ) | २१०.७ | निश्वासेतस्य वेदांश्च (उ) | २४२.८६ | निष्कारणं चेतानां (सु) | ४.१०२ | निष्फलं जायते तस्याः (भू) | ४१.७१ | निहतं पितरं श्रुत्वा (भू) | ११८.६ |
| निशोऽयनगराजान्-(उ) | २१६.५३ | निर्षांगेणश्चरयिनश्च (क्रि) | ६.५४ | निष्कासितं प्रयच्छासु (उ) | २०४.६१ | निष्फलं तस्यतत् (स्व) | ४२.१६ | निहतं वासुदेवेन प्रहाराद्धं (उ) | २४६.२५ |
| निशोऽयं ब्रह्मनिहत्वा (उ) | १८६.३७ | निष्पण्णास्तत्र ते सर्वे (भू) | ८६.१५ | निष्कचिन्तायविप्राय-(उ) | २१८.११ | निष्फलं स्वतस्तीर्यम् (स्व) | ४३.७ | निहत्वा रीरभद्रेण (पा) | ४३.४१ |
| निशोऽयसमुप्राप्ते (उ) | ६२.१८ | निष्पण्णोभूतलेराम (पा) | ११४.४७१ | निष्कचिन्तास्तु मुनय (भू) | ६४.४६ | निष्फलं याति वैजम् (क्रि) | ६.६६ | निहताः पितरस्तेन (उ) | ३७.६५ |
| निशोऽयस्त्वस्तस्य (उ) | २०७.३५ | निष्पण्णोहिचिरं ददयो (पा) | ११७.४५६ | निष्कृत्यकोशादिमलं (सु) | ३५.८६ | निष्फलं सकलतस्य (सु) | ४६.१६३ | निहताराधवेणाय (उ) | २४२.१२१ |
| निशुंभः कार्तिकेयस्य (उ) | १०१.३ | निष्पाद महाज्ञेयः (उ) | १४४.८५ | निष्कृत्यतदनात्तूर्णं (उ) | २४५.१३८ | निष्कालं मिनकाजा (भू) | ३.१७ | निहता बह्मशोभंयुष्मितां (सु) | १६.१७८ |
| निशुंभः भवेनायो (उ) | १००.२७ | निष्पादाश्चक्रिताश्विन-(भू) | २८.५४ | निष्क्रांतं पतहेमां (सु) | ४४.१२८ | निः संगो निस्पृहो (सु) | १२३.१५ | निहता वा सुवेदेन देवतं (भू) | ६.२६ |
| निशुंभोऽयतिरोवा-(उ) | १७.३६ | निष्पक्षमं पदं देव्यांसे-(सु) | ४४.१२५ | निष्कामं गतं चारत्मानं-(सु) | ३६.८६ | निः संशयं त्वयाष्टं (भू) | ८.८८ | निहताश्चाग्निदेवानां-(सु) | ४६.२८ |
| निशुंभश्च राजा देहं पकतिव (सु) | ४४.६० | निषिद्धकर्म कर्तुं (क्रि) | २०.२३ | निष्क्रियोपि ह्युपकोशो (स्व) | ६१.७६ | निः संशयममावास्यां (स्व) | २७.८४ | निहतौ बलवतो च (भू) | २६.४ |



श्रीपद्महापुराणम् १: श्लोकानुक्रमणो

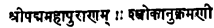
२५८

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|----------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|
| निहतौसहसाविप्र (क्रि) | २.६० | नीतिग्राहीनुषोयस्तु (क्रि) | २१.६१ | नीयमानातुसातेन (सु) | १६.१५६ | नीलकुलशोभादयं (पा) | ३५.६१ | नीलोत्पलदलश्यामोनील (सु) | १५.२४८ |
| निहत्य दानवं पापं तव (भू) | ११६.१७ | नीतिमान्नामइतिमया (पा) | ११६.१७४ | नीयमानोयममणं (पा) | १०१.२ | नीलकुचितसुस्निग्ध (पा) | ७०.५० | नीलोत्पलधंरश्चेतश्चेता (स्व) | ३.५५ |
| निहत्यनमुचिमित्रंतपसा (सु) | ११.५१ | नीतोवाणासुरपुरं (उ) | १५६.२ | नीरखतोहितदादैत्यश्शुक्ल (सु) | ४६.८३ | नीलजीवायधोराय (सु) | ३८.१४० | नीतोत्पलाभं युरघातिनं (भू) | ६६.१० |
| निहत्यराक्षसान्सर्वां (उ) | २४२.२५१ | नीतोहंतेनराक्षस्यः (उ) | २०८.५० | नीरमध्येस्थितकृत्वा (उ) | ८५.१४ | नीलजीमूतसंवाशः (उ) | २२६.१५६ | नीलोत्पलंरुजंश्च (पा) | १०५.३२ |
| निहत्यरुक्मकवचा (सु) | १३.६ | नीतोहरिपुरंभूयः (पा) | १०१.४ | नीरस्यमहियाकोयमेत (उ) | १२७.६८ | नीलदंतं तथा राजन् (भू) | ३६.११७ | नीलोत्पलंरिपेमासि (उ) | २५३.१५८ |
| निहत्यवायुपुत्रेण (उ) | २५२.१२ | नीत्वाकुभंजलोददेशे (उ) | ४४.३३ | नीराजनसमायुक्तम् (उ) | ३७.१८ | नीलनीरदसंकाशं (उ) | २४५.२३१ | नीलोत्सर्गकरिष्यंति (उ) | १३५.१३३ |
| निहीनोह्यमानेननिदिते (सु) | ४४.१५ | नीत्वा कैलासमचलं (उ) | २२२.४७ | नीराजनसमायुक्तम् (उ) | १२४.१३ | नीलंगिरिवरजःमुयंत्र (सु) | ३१.७४ | नीलोद्गारेत्रिरेखश्च-(पा) | ७८.३० |
| नीडंप्रविश्यदण्डात्वं (क्रि) | ८.५६ | नीत्वापुनः समीपं तुला-(पा) | ६६.१०६ | नीराजनसमायुक्तम् (उ) | १२४.१४ | नीलमरकतं चैवभूषायां (सु) | ३४.३६१ | नीलोत्तमलोमनोवेगो (पा) | ११.१७ |
| नीचाश्चघनसम्पन्ना (क्रि) | २६.२२ | नीत्वापूजोपकरणं (उ) | २०१.६१ | नीरात्रयित्वा बहुशः (पा) | १२.२१ | नीललोहितपीताभिः (सु) | ४१.४३ | नीलोयंपर्वतोराज (पा) | १७.२४ |
| नीचासनोवैश्रूण्या (पा) | ११३.२६ | नीत्वामांदशंयसलेन (उ) | २०७.६५ | नीरजस्काभूमिरासीत् (सु) | १६.७५ | नीलश्चबैडूर्यमयः (स्व) | ३.२२ | नूतनं गृहमिच्छामि (भू) | ५६.२४ |
| नीचेष्टिकारादभवतो (उ) | २०१.५४ | नीत्वामृतसरोरम्यं (पा) | ७५.४३ | नीराजितो गिरिजया (उ) | १५१.८५ | नीलांजनचयप्रख्यं वर्णं (सु) | ३२.८० | नूतनो दृश्यते कायः (भू) | ७५.२२ |
| नीचैः शय्यायनंचास्य (स्व) | ५३.४ | नीत्वाविभावरौतत्र (सु) | ३३.१३४ | नीरुजः सुखसम्पन्नः (भू) | ६७.८३ | नीलातपत्रयुगलंघन- (उ) | १८६.२३ | नूनं नारायणं देवं (उ) | २०५.२४ |
| नीतंचतद्वनंभूरियः (उ) | २११.४ | नीपकपितृपलक्षम् (स्व) | ५६.२४ | नीरुजाभवनाददेवीप्रसाद (भू) | ३.४४ | नीलनिर्मलकेशे च (उ) | २४६.८८ | नूनमाराधिनोदेवो-(पा) | ७१.७२ |
| नीत उज्ज्वलनां वत्स (भू) | १२४.४ | नीपैः कदंबैर्वकुलैश्च (पा) | १२.४८ | नीरुपनिपुणं व्यापि (पा) | ८२.६७ | नीलाप्रयच्छतीलक्ष्मीं (य) | १२०.७६ | नूनमेतत्परिणतमथवा (सु) | ७.६२ |
| नीतयोवोविधातव्या-(सु) | १३.२१२ | नीपैर्जपभिः पुन्नामैः (पा) | १०६.८७ | नीरेनीरंश्चाक्षिप्त (उ) | १३२.४१ | नीलाम्बरोवाहणोशो (उ) | ७१.२४६ | नूनमेतांयदानेतुंयुय (क्रि) | १५.४५ |
| नीतस्तुवारिणोद्धस्ता-(उ) | २०५.३ | नीयतां नीयतामेषध-(उ) | २१०.२६ | नीलकण्ठमीतिरुघातं (सु) | ११.१५ | नीलीविक्रयकर्ता (पा) | १७.२७ | नूनमेवप्रभुंघनाति (क्रि) | ६.१४६ |
| नीतानिमर्धरंरानि (उ) | ६७.८ | नीयतेपुण्यभवनं (पा) | १०१.५१ | नीलकण्ठमिति रूपातं (उ) | १३५.६१ | नीलेन पट्टवस्त्रेण पगं (भू) | १०२.६६ | नूनमेवमंयाशास्त्रे (पा) | ६२.१०० |
| नीतानीचैनशोकोयं (क्रि) | ६.१११ | नीयते यमदूतैस्तुतस्य-(भू) | १५.२२ | नीलकण्ठंरिणजेतु (उ) | ११.१७ | नीलोत्पलदलानीवपेतु (उ) | २३८.५६ | नूनं विचित्रोभुविभूत (पा) | १०२.३१ |
| नीतासातुतदाताभ्यांदेवी (सु) | ३४.६४ | नीयतेकर्मबंधेन (उ) | १३२.११७ | नीलकण्ठेनैकित्य (उ) | १३.३६ | नीलोत्पलदलश्यामं (पा) | ६६.१६० | नृणांचमवभीनानामा-(उ) | १८५.१०८ |
| नीतास्तुतेनतेवेदास्नाद् (उ) | ६०.१२ | | | नीलकण्ठेर्बुदेनाषाद्रुद्र (उ) | १२७.१४५ | नीलोत्पलदलश्याम (उ) | २४६.५८ | नृणांजन्मांतराभ्या-(स्व) | २६.४३ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--|---------|--------------------------------------|---------|
| नृणां नीतिपरित्यागा- (उ) | १२७.१०७ | नृपतेः पश्यतस्तस्य (भू) | ७७.२५ | नृसिंहस्य तथा प्रोक्ता (सु) | २०.६ | नेत्रे प्रमुञ्च्य चैतस्यां प्राह- (सु) | ३२.१०६ | नैतयो विद्यते भेद- (पा) | ८१.५५ |
| नृणां भवति सोऽह्यानि (सु) | ३३.३६ | नृपतेव पलावेतो (क्रि) | ३.४२ | नृसिंहान्तर्गतो विद (पा) | ६४.१४१ | नेत्रे मदारवासिन्ये विश्व (सु) | २२.१४६ | नैतस्मिन् भवेद्राज्य (पा) | ११०.५६ |
| नृत्यगीतकजाभिजा (उ) | १२५.१२३ | नृपवरमहिमातेव गितो (उ) | २०८.६८ | नृसिंहेति नृसिंहेति (उ) | १७४.६१ | नेत्राभिभ्रमविक्षेप- (उ) | ७.५१ | नैतस्य फलदानस्य (पा) | ८७.१४ |
| नृत्यं गायंश्च ताञ्छभुः (उ) | १०.६ | नृपश्रेष्ठं दशरथं (उ) | २४२.१०६ | नृन्वहं स्तीर्य यात्रायां (पा) | २०.७७ | नेदं कस्यापि कथित (उ) | ७१.८६ | नैतावतैव माधुर्वकुते गतु (सु) | ३०.२५ |
| नृत्यं तं पुण्ड्रपोत्तमस्य (पा) | २२.३ | नृपाणामपचारेण- (उ) | ५७.१६ | नेष्टति येन रामुडा (उ) | १२८.२६० | नेदानीमानुपलोकेन (उ) | १४.२१ | नैतेषामूर्ध्वगमनम् (स्व) | ४०.२२ |
| नृत्यं तमस्यं नविलास (पा) | १०८.१६ | नृपेण दत्तं तदवाप्य (पा) | १०२.३० | नेष्टति येन रामुडा (उ) | ६२.२३ | नेदुर्दुन्दुभयस्तत्र गंधर्वा (भू) | ६६.४३ | नैते रूपविशेषादम् (स्व) | ५१.३४ |
| नृत्यं तियो वितस्तत्र देवानां (भू) | ३२.६ | नृपेन्द्रः प्रददौ चापि (भू) | १०३.१२७ | नेज्यायां देवतानां (पा) | ११४.३६६ | नेदं पावनं किञ्चित (ऊ) | ५६.११ | नैतुष्यं जायते नित्यं (भू) | ४७.५३ |
| नृत्यं नीचैस्वर्गगताश्च- (सु) | ३०.७० | नृपोगच्छन्दशशि (पा) | २०.७ | नेतिः कदापि दुष्येत (पा) | ५.२३ | नेपथ्यान्तश्चरी राजन् (भू) | ७६.३२ | नैमित्तिकः प्राकृतिकस्यः (सु) | २.२६ |
| नृत्यं तीव्रनराः प्रीतः (सु) | १५.४२ | नृलोकदेवलांकस्य तीर्थं (स्व) | ११.२० | नेति नेति तथा विप्रा (सु) | १७.८७ | नेमिस्तु धर्मं चक्रस्य (सु) | ११.८ | नैमित्तिके विशेषेण (उ) | २५३.१३६ |
| नृत्यं त्वत्सरसस्तत्र बुता (मा) | २८.५२ | नृलोकैर्दराजन्मानिलस्य- (सु) | ४.६८ | नेतु कामाश्च सर्वे (क्रि) | २६.३५ | नेयं भवति ते वृद्धिः (उ) | १७६.३७ | नैमित्तिकेषु धाद्वेषु (पा) | १०५.८३ |
| नृत्यं त्वत्सरसः सर्वांगितं (उ) | २३.११ | नृशंसेनापनीतानि- (सु) | १६.३४३ | नेतुं तमथ भूपालसर्वं (क्रि) | १०.५४ | नेष्टं यज्ञं नैवायज्ञा- (पा) | १०१.४८ | नैमित्तिकाधितो विष्णु (पा) | ३०.६८ |
| नृत्यं त्वत्सरसः तत्र गायते- (सु) | ३४.३४० | नृसहस्रपरीवारो ह्या- (पा) | १११.२० | नेतुं तमपि देवेणः शरणा- (क्रि) | ७.४५ | नेध्यामस्तत्पदं (उ) | २००.१०५ | नैमित्तिकं प्रवक्ष्यामि (भू) | ४०.३ |
| नृत्यं त्वत्सेकेहसन्त्येके (पा) | ६५.४० | नृसिंहं पण्यते विप्रः (भू) | २१.१५ | नेतुं तां क्रोधं संयुक्ता (स्र) | २०.३० | नैकत्रयासोलम्प्यास्तु- (सु) | १७.१६६ | नैमित्तिकं प्रार्थयान् व्यपाप- (स्व) | ३२.२५ |
| नृत्यं त्वत्सेकेहसन्त्येके (उ) | २०.१६८ | नृसिंहं दर्शनादेव नश्यते (उ) | ७८.५६ | नेतुत्वां पालितमाज्ञ (स्र) | १२.४५ | नैकया तु विचित्रैश्च पर्वते- (स्व) | ८.६ | नैमित्तिकं प्रार्थयान् व्यपाप- (उ) | १६८.७७ |
| नृत्यं त्वत्सेकेहसन्त्येके (सु) | १५.४७ | नृसिंहं दर्शनाय तु (पा) | १०५.१५७ | नेत्ररोगाविनश्यति (उ) | ३०.११७ | नैकशकनो म्यहं कर्तुं (उ) | ५१.१८ | नैमित्तिकेषु सूत्रमासीन (उ) | १६३.४ |
| नृत्यं त्वत्सेकेहसन्त्येके (सु) | १५.१७१ | नृसिंहं सूत्येपद्यमदा (पा) | ७८.२६ | नेत्राभ्यां तस्य दुष्टस्य (भू) | १२१.२६ | नैकश्चरेत् सदा विप्रः (स्व) | ५५.८८ | नैमित्तिकेषु सूत्रमासीन (सु) | २३.३४ |
| नृत्यं त्वत्सेकेहसन्त्येके (पा) | ७४.१७५ | नृसिंहं सूतिनायेन (क्रि) | ६.१८३ | नेत्राभ्यां तस्य देवस्य (क्रि) | १७.१४३ | नैकस्तिष्ठेद्भुवोरेधर्म- (सु) | १८.३६८ | नैराश्र्यं भूयस्तेस्तस्य (उ) | ४१.१४ |
| नृपतिः शासकः प्रोक्तः (भू) | ६७.११० | नृसिंहं रामकृष्णे (उ) | २२६.४२ | नेत्राभ्यां विधूतं (उ) | ६६.२८ | नैतच्छिब्रं सुपावीश (उ) | २००.१ | नैमित्तिकं भावमुद्धिञ्च (सु) | २०.१४२ |
| नृपतिश्चिन्तयामास स (उ) | ४१.३३ | नृसिंहं पुरास्थाप्यत- (उ) | २३८.६४ | नेत्राभ्यां विस्फुल्लिगान (उ) | ४६.३४ | नैतदल्पमहमन्ये कारणं (सु) | ४३.२७१ | नैव पुनः कथिष्यामि (सु) | १०.८१ |
| नृपते कुशलं ब्रूहि (क्रि) | १०.६२ | नृसिंहं स्पर्शनादेव (उ) | २३८.११६ | नेत्राभ्याममुज्ज्वलं (उ) | २२६.२६ | नैतद्विशालायनदाभिकाय (सु) | २५.२६ | नैव भीतोस्मि क्षुब्धोस्मि (भू) | ४२.२७ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------------|--------|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|
| नैव कामन्न संत्रासान् (भू) | ५३.२२ | नैवेद्यप्रत्यहंकृत्वा (उ) | ३५.१० | नैवाप्रियातवसमानतया (उ) | १८.४५ | नोभवेद्धस्तदंडेनकिन्नूम-(सु) | ४३.१६६ | न्यासे वाप्यचनेवापि (उ) | २२६.१ |
| नैव क्षमसि विप्रैर्द्रदासी-(भू) | १२.१२१ | नैवेद्यं भक्षयित्वा (पा) | १७.३७ | नैसर्गिकं शुभं सर्वं (उ) | २५५.५६ | नोमोचयस्ययदि-(पा) | ५३.१७ | प | |
| नैव चालयितुं शक्नो (भू) | १०३.६६ | नैवेद्यं विष्णवे दद्यादिमं (पा) | ८०.३८ | नोचेच्छत्रुघ्ननिमुक्तं (पा) | ५०.२८ | नोवाचकिंचिन्महती (पा) | ४.१८ | पवक्कुं कुर्मकिं जलकपुंज (सु) | ५३.२२३ |
| नैव जातस्त्वसौ गर्भं (भू) | १०३.१०० | नैवेद्यं कर्करांचापि (उ) | १७४.६२ | नोचेत्पतिष्ये शिखराद् (सु) | ४४.२६ | नोवा प्रपातयस्व त्व (भू) | १०३.१०२ | पववायिव फलस्ये (पा) | ६०.२० |
| नैव तस्त्वयते चोर्णं (उ) | ४३.६ | नैवेद्यं श्रोत्रिणस्यार्थे (पा) | १८.२१ | नोचेदज्ञानतोवाहोभूतः (पा) | ५०.१५ | नोवायांस्यथ देहाते (उ) | २०६.४० | पववान्नहरणाच्चैव (पा) | ४७.५४ |
| नैव ते ब्राह्मणाः पूजां-(सु) | १७.१४६ | नैवेद्यं भक्षणं त्वं हि शो-(पा) | २२.३६ | नोचेन्मद्वाराणि भिन्नो-(पा) | २६.२६ | नोपधं न तपोदानं न (भू) | ६६.१२७ | पववान्नानि सुहृद्या (उ) | २४५.२७० |
| नैव दत्तं हुतं विप्र (पा) | ८६.५६ | नैवेद्यदानं हरये कान्तिके-(उ) | १२४.२४ | नोच्छिष्टं कुर्वते वक्रं (स्व) | ५२.२८ | न्यग्रोधः गुमहा तत्पेय (सु) | ४.१२१ | पववाग्नैः फलमूला (उ) | २४२.३५६ |
| नैव दत्तं हुतं विप्रभुक्तं (भू) | १७.४८ | नैवेद्यानपलेनैव (उ) | १५१.५० | नोच्छिष्टं वामधुधृतं (स्व) | ५५.५१ | न्यग्रभक्षयदनेयात्मासिह (पा) | १०७.४६ | पववैस्तालफलं (क्रि) | १३.४३ |
| नैव दृष्टः पुमान्वापि (उ) | ८०.५१ | नैवेद्यमात्रेण सुभक्षितेन (भू) | ६८.७३ | नोत्तरेदनुषस्पृश्य (स्व) | ५५.७५ | न्यग्रवेदतथाऽन्तर्म (उ) | २४२.३५२ | पक्षं मासं दिनं या न्न (भू) | ३६.६१ |
| नैव पश्यति मर्त्यं हि (सु) | १५.२४५ | नैवेद्यमिदमन्नाद्यं देव-(उ) | ३०.१७ | नोत्सर्गं भक्षयेद् भक्षयम् (स्व) | ५५.६३ | न्यग्रवेदयत्तथाऽन्तर्म (उ) | २४२.३५२ | पक्षत्रये यथा चंद्रो वद्धंत (उ) | १२५.१६२ |
| नैव पश्यति सा तं तु (भू) | ५३.२७ | नैवेद्यानि सुहृद्यानि (उ) | ३६.१६ | नोदकं चारयेद् भक्ष्यं (स्व) | ५१.२८ | न्यग्रवेदयत्तु गुरवे गव्यां (सु) | २०.२३ | पक्षत्रये यथा चन्द्रः क्षीयते (स्व) | २६.६ |
| नैव प्राणा विना कायो (भू) | ७२.८ | नैवेद्यापि समेदेव (उ) | १०६.२४ | नोदाहरेदस्य नाम (स्व) | ५३.५ | न्यग्रजगत्स्वायं देवा (सु) | १३.२२७ | पक्षमध्यगतीतां (उ) | २४५.१६१ |
| नैव मे जिविते चार्थो-(सु) | ३३.१७५ | नैवेद्यं दिव्यपुष्पैः-(क्रि) | १६.४३ | नोपसर्गं निचाघातः (सु) | ८.३० | न्यासपुर्वविधानेन (पा) | ८.३३ | पक्षवर्द्धनिकापुण्या (उ) | ३६.२६ |
| नैव शुश्रूषितो भर्ता (भू) | ४७.३२ | नैवेद्यं विविधैर्भक्षैः (उ) | ३१.४४ | नोपस्करे पुनिविशेत् (सु) | ७.४१ | न्यासनष्टाक्षरं मंत्र (उ) | २२६.६ | पक्षवर्द्धनीमाहात्म्यं (उ) | ३६.२४ |
| नैव स्थिरा गिताभीह (पा) | ६६.३४ | नैवेद्यं विविधं दद्यात् (उ) | २५३.६६ | नोपस्करे पुनिविशेत् (सु) | ७.४१ | न्यासस्वामी भवेत्पुत्रो-(भू) | ११.३३ | पक्षान्नं रगतं केचित्च्छि (उ) | ६६.१६ |
| नैवास्मि कुटिलाशर्व-(सु) | ४४.६ | नैवाशकरी वारुणी च (सु) | ४१.१४८ | नोपस्करे पुनिविशेत् (सु) | ७.४१ | न्यासस्वामी सुपुत्रो (पा) | ८७.७२ | पक्षाभ्यां चारुत्राभ्यामा (सु) | ४१.१२ |
| नैवेद्यं गृह्यतां नाशः (उ) | २५.२१ | नैव व्ययं गगनेयं द्रुक्चंद्रं (स्व) | २६.१५ | नोपान्नं होक्षजं चाथ (स्व) | ५४.७ | न्यासात्परतरं नास्ति (उ) | २२६.११ | पक्षिणां चैव सर्वानां (भू) | २७.१७ |
| नैवेद्यं धनपक्वं तु (उ) | ७०.१५ | नैव घव्यस्त्वया सुद (भू) | १०५.३३ | नोपास्यं हि भवेत् (उ) | २४१.८० | न्यासात्पहेनमित्रश्रुक (सु) | ३२.५० | पक्षिभिर्न लज्जेच्चान्यै-(भू) | ४६.७ |
| नैवेद्यं पच्यते यस्तु (उ) | २३.१६ | नैवाभ्यासिस्तु पुत्रो वा ते-(सु) | ३.१६५ | नोपास्ये कंचन हरेन (पा) | ११४.२४८ | न्यासात्पहरणाद्दुःखं न (भू) | ११.३४ | पक्षिष्वप्यत्रः कोऽयं (भू) | ६८.२७ |
| नैवेद्यं देवदेवेश (ब्र) | २३.१० | नैवां मोहस्तु कर्तव्यो (भू) | ६.१८ | नोपोष्यान्नत्रिनात्रा (उ) | १२६.११६ | न्यासात्पहारनावेन (पा) | ८७.७१ | पक्षिष्वप्यत्रो भद्रे नाहं (भू) | ८८.१७ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|---------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| पक्षे पक्षे वृषश्रेष्ठ (उ) | ३५.१६ | पंचतातोऽपि परमं (क्रि) | ६.७८ | पंचनीलसद्योवानां (पा) | ६१.१४ | पंचरूपेणतिष्ठामि (भू) | ७.४६ | पंचाग्निमाधनेपुण्यं (उ) | ३६.२५ |
| पंकजे च पुराणस्या (उ) | ४३.८ | पंचत्वमहमासाद्य (उ) | ६६.४६ | पंचमेचिन्नकृतेरु राम (पा) | ३६.२१ | पंचवक्रदशभुजनाग (उ) | १०.२० | पंचाग्निः साध्यते द्वाभ्यां (भू) | १२.५७ |
| पंकस्यलवमात्रं तु तस्य- (सृ) | ४६.२०० | पंचनद्यां नरः स्नात्वा (उ) | १८०.४३ | पंचमैदमहाकायं (पा) | १०७.३२ | पंचवट्यांततोरामो (उ) | २४२.२२४ | पंचात्मकं शरीरं च भूर्मा (भू) | ६४.५१ |
| पंगुना केन विक्रीतः (उ) | १७५.३६ | पंच परं स्वरूपं (उ) | २३६.२० | पंचमेवाश्वमेधेन (उ) | ३८.१८ | पंचवर्षीयवपुंशरच् (पा) | १०५.२२७ | पंचात्मकानां संगेन (भू) | ८.६७ |
| पंगवधवालवृद्धाश्चरोग्य (स्व) | ३१.४६ | पंचपर्वं मुनैर्गुण (उ) | २०२.१२ | पंचमेमोसतत्त्वं च सर्वं (सृ) | १.६३ | पंचवादित्रनिर्घोषैः (उ) | ८३.२८ | पंचात्मका हे ये त्वाः (भू) | ७२.२५ |
| पचयते प्रपन्नमर्मा- (पा) | ६७.७७ | पचप्राणाहुतीर्यस्तु (उ) | ६४.६५ | पंचमेवापिषष्टं वा (क्रि) | २६.३४ | पंचवासपनवाहानि (उ) | १२७.८ | पंचात्मकेन कायेन (भू) | ६४.५६ |
| पच्यते पापिनः पश्य (उ) | ११४.१२ | पंचभिर्मतिलि विद्धा (भू) | ११५.२६ | पंचमोयष्टवृद्धि (उ) | ४६.१५ | पंचविशत्सदृश्राणि (उ) | १७.७३ | पंचाननस्यमहिषीं (उ) | १६.२६ |
| पंचकन्यानुतेहति (उ) | ३२.४० | पंचभूतात्मकः कायो (भू) | ६४.६८ | पंचमोनुग्रहः सर्गः (सृ) | ३.७३ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानां त्रेत्रिंशद्विंशतिः (पा) | १०८.३६ |
| पंचकेतूजायित्वा तु (उ) | १२४.४१ | पंचभूतात्मकानां च (भू) | १२०.१६ | पंचम्यां प्रनिपक्षं च (सृ) | २२.१८७ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपिकन्या (उ) | १२६.२६२ |
| पंचकैत्रं तर्कैरेभिः संपूर्णं (उ) | ११५.४ | पंचभूतानि मे त्रदोगिबन्तु (सृ) | १८.३१५ | पंचम्यां वापि सप्तम्या (क्रि) | १०.२७ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि लिगानां- (स्व) | ३४.६ |
| पंचकोशांतरैरहस्या (उ) | २११.२२ | पंचमंचतः क्वातमुत्तरं (सृ) | १.५६ | पंचम्याः सप्तमीया- (पा) | ३६.५७ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचगव्यं च संप्राश्य स्व (सृ) | २१.३११ | पंचमं वा मुदेवं च पण्डं (उ) | १२०.७८ | पंचयोजनविस्तीर्णं (भू) | ७७.१६ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचगव्यं तः पीत्वा (सृ) | २१.२६६ | पंचमः श्वत्सनश्चैव (भू) | ७.१६ | पंचयोजनविस्तीर्णम् (स्व) | ४५.८ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचगव्यं प्रशस्तं (पा) | ८७.१६ | पंचमः सोमशर्मैति (भू) | १.१५ | पंचयोजनविस्तीर्णम् (स्व) | ४८.१० | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचगव्यं प्रशस्तं (पा) | ६२.१६ | पंचमस्तिलशैलस्थान (सृ) | २१.८५ | पंचयोजनविस्तीर्णं (उ) | ११६.६ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचगव्यसहस्रैस्तु- (स्व) | ३१.१३६ | पंचमस्यावृत्तादेवि- (उ) | १७६.१ | पंचरत्नं विशेषेण दत्त्वा (उ) | १२४.४० | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचगत्याशनो (उ) | ६४.३४ | पंचमात्मकनिष्ठो (उ) | २३६.१६ | पंचरत्नसमायुक्तं (उ) | ३६.६ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचतत्त्व प्रवृद्धाय प्राणिनां (भू) | ३७.२४ | पंचमावरणप्रोक्तस्त (उ) | २२८.६२ | पंचरत्नसमोपेतं (उ) | ४५.४६ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचतत्त्वसमायुक्तः (भू) | ७.७७ | पंचमिमं च मयः प्रोक्तस्त (सृ) | २१.१८५ | पंचरात्रविधानं च (उ) | २५३.५६ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |
| पंचतनाम्यावर्ततविपरीते (सृ) | ४१.२४० | पंचमी चंद्रमसश्चैव (उ) | ८६.१७ | पंचरूपात्मको वायुः (भू) | ७.५६ | पंचविशांगुलोगर्भस्तेन (उ) | ८.१४ | पंचानामपि भूतानां (भू) | ६५.२ |



| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| पतिसंबन्धिनः सर्वान् (उ) | १८७.८ | पत्न्याचानुगतो (उ) | २०.२२ | पथिश्रान्तावयंमातः- (स्व) | २२.६३ | पथकिजल्फसंकाशा (उ) | २२६.१४० | पथप्रबोधनकरस्त्व | १६७.६६ |
| पतिसहितायायोषित् (त्र) | १५.४१ | पत्न्याः जोकेनवैदेवो (सु) | ५.६१ | पथिश्रान्तावयंमातः (उ) | १२८.७२ | पथकुड्मलसंकाशो (उ) | २२५.५७ | पद्मबीजानिनिमोदद्यात् (क्रि) | १३.६२ |
| पतिस्तपोधनोविप्रः (भू) | ५६.५ | पत्न्यास्तु भाजनंदद्याद (सु) | २४.१५ | पथिस्वपंतंतदृष्ट्वा (क्रि) | ७.२२ | पद्मकोशद्वशोभनं- (पा) | ५७.३५ | पद्ममुत्पलमांदोलपादो (पा) | ११०.७२ |
| पतिस्तपामोहित (उ) | २१३.१० | पत्याभिप्रायमालक्ष्य- (पा) | १५.११ | पथ्यमसिचकोष्ठेषु (त्र) | २१.४ | पद्मगर्भप्रतीकाजो (भू) | १०२.६२ | पद्मयोनिर्महानेजाः (भू) | ८३.३३ |
| पतिस्नेहममायुक्तां (सु) | ५.३४ | पत्यानलेनचास्त्यर्थो- (सु) | ४३.३२२ | पदध्यावरिवस्थासा (उ) | १२५.६८ | पद्मगर्भसवर्णानां (सु) | ३०.८२ | पद्मयोनिः परतरस्त्वत्त (उ) | ५५.२१ |
| पत्तेकुर्व्व भोगार्हेणय (पा) | ५५.४२ | पत्यापृष्टफलंभुक्तं (उ) | १६६.५५ | पदव्यासः कृतः पूर्व- (सु) | १६.४ | पद्मगंधारसजासासं (क्रि) | ८.२६ | पद्मरागमणिर्यत्रनेहे (पा) | ३६.५ |
| पत्तनंकोशकाराणांकां (सु) | ४५.१५७ | पत्या त्रिना भवत्येवं (भू) | ४१.७६ | पदभ्रष्टोस्मिमंजातो (भू) | ७६.१३ | पद्मजन्मानमोहेद (सु) | ४.१०१ | पद्मरागैः सर्गांश्चैवंदूयै (सु) | ३६.५२ |
| पत्तयः पत्तिपंचेनगजा- (पा) | २३.३६ | पत्युर्कोकं प्रयांत्येते (भू) | ५०.२७ | पदमेकमतोगतं न- (पा) | १०४.१४८ | पद्मनाभंहृषीकेशं- (सु) | ४०.४१ | पद्मरागैः सर्गावर्णै (सु) | २१.१७६ |
| पत्तयः शतशोमह्यमायां- (पा) | १०.१५ | पत्युः समीपमगत (उ) | ६०.४३ | पदातिनः किंपुरुषाः (उ) | ५.७५ | पद्मनाभनमस्तेस्तु (पा) | ६५.४२ | पद्मवर्णंश्चनयने (सु) | ३४.१२६ |
| पत्तयश्चापरेदैत्या- (सु) | ४०.१८६ | पत्योजीवनियानारी (सु) | ३४.७४ | पदातिनास्वययुद्धं (पा) | ६१.२३ | पद्मनाभसमुत्पत्ति (उ) | १.२६ | पद्मवर्णंनयानेनब्रह्म- (स्व) | २७.८१ |
| पत्तयस्तुपदाज्जपाः (उ) | २११.१५ | पत्रपुष्पकलमूलं (उ) | २३.२ | पदानिकृतवान्ब्रह्मान् (सु) | ३०.८ | पद्मनाभायनाभि (उ) | ३४.६७ | पद्मविल्लांकुत्तूर- (सु) | ६.६५ |
| पत्नीं तुमध्यमपिंड (सु) | ६.११७ | पत्रवाचयतोराजः (उ) | १८६.३५ | पदानियानिजातानि- (सु) | ३०.१७७ | पद्मनाभायवैपादो (उ) | ३६.१० | पद्मखारिगन्दिनेविष्णु (पा) | ७८.१६ |
| पत्नीं विनानहोमोत्र- (सु) | १७.१४२ | पत्रयचयने देवी (क्रि) | २४.४३ | पदामृतंतुनवभिः पाप- (पा) | २०.३० | पद्मनेत्रतथाकार्य- (पा) | १२.५ | पद्मस्वशक्तितोदद्यात्पूर्वं (सु) | २१.२७२ |
| पत्नींचयचमेसीता (उ) | २४२.२३८ | पत्राशीचफलाशीच (उ) | १४१.१४ | पदाथः संस्थिताभूमौ (उ) | १६३.७३ | पद्मपत्रविशालार्धं (उ) | २५३.८७ | पद्महस्तायवैतुष्यम (क्रि) | ११.६८ |
| पत्नींद्रुपयतेयस्तु (पा) | १७.२६ | पत्रिकाष्टदलेध्वेव (पा) | ११४.३८ | पदसैभिडिपालेश्व- (सु) | ४१.१६२ | पद्मपत्रविशालार्ध- (पा) | ७१.२६ | पद्महस्ताःश्चताः सर्वा (उ) | २२८.५२ |
| पत्नींप्रेमरसासक्तो न (उ) | ५२.८ | पत्रिकत्रैद्विषड्वत्रैस्त्रि (पा) | १०६.३३ | पदेपदे महत्स्थानं (भू) | ४३.६८ | पद्मपत्रसुगंधाश्चजायते- (स्व) | ११४.४० | पद्मात्मकः सृष्टिकर्त्ता (सु) | ७.२४ |
| पत्नीममैषासावित्री- (सु) | १६.१०३ | पथा तेनापि दुर्गोण- (भू) | ४५.१५ | पदे पदे येमुमुतो जायते (उ) | २००.७४ | पद्मपत्रसुगंधाश्चजायते- (स्व) | ५.१३ | पद्मादिस्थापनैरेवत (पा) | ११४.३०६ |
| पत्नींशालास्थितागोपी- (सु) | १७.१२७ | पथिदेवालयेकोष्ठे (क्रि) | १७.१६७ | पदं कथयामुद्भवनाभौ (सु) | ३६.२ | पद्मपातंनेत्रयुग्मंवक्षो (पा) | ५५.३२ | पद्मानासर्वंगुणोपपन्ना (भू) | १०२.५३ |
| पत्नीं शौचप्रसक्तै न (उ) | ५२.२५ | पथिप्रगच्छतांतिषां (त्र) | २३.२४ | पद्मं कृष्णतिलैः कृत्वा (सु) | २१.२६४ | पद्मपुष्पस्यमाहात्म्यं (क्रि) | १३.६५ | पद्मानाम्युद्भवचैकं (सु) | ३६.१५३ |
| पत्न्यर्थं प्रतिजग्राह (सु) | ३.८८४ | पथिप्रव्रजतेस्तत्र (पा) | ३६.११ | पद्मं चानेकपत्रान्तम- (सु) | ३४.१२१ | पद्मपुराणदानं च लंडा (उ) | १.६७ | पद्मानामेतिविक्षयाता (उ) | ५७.५ |



श्रीरामपुराणम् :: श्लोकानुक्रमः

१६४

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|---------------------------|---------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| पद्यानिजज्ञिरेतेभ्यो (भू) | १०१.४० | पद्यानोदेवलोकस्य (सु) | १४.८४ | पप्रच्छचगुणशक्तः (उ) | १५१.५ | पयोदधीनितक्राणियो-(स्व) | ३०.४ | परंविचार्यबहुधाम (उ) | ५३.१४ |
| पद्यांकिताभिनासन्ते (भू) | ७४.२१ | पद्यान्समतीत्यदुस्तर (उ) | २२.४५ | पप्रच्छद्वन्द्वचर्चप्रतिः (उ) | २१८.३१ | पयोधरीनातिचित्रं (सु) | १६.१४१ | परंशृणुष्वमद्वाक्यं (पा) | ५०.३१ |
| पद्यान्व्यवसमानिय (उ) | ८७.१८ | पपाठपूर्वमभ्यस्तं (उ) | १०.३३ | पप्रच्छतांपुनर्द्वीपीकिमर्थं (सु) | १८.२६३ | पयोधरोशातकुंभौ (क्रि) | ५.३३ | परंसहस्रनामाख्यं (उ) | ७२.१२ |
| पद्यापतेपद्यापलाश (उ) | २२१.४३ | पपातगर्तेमहतिशशको (उ) | १८८.१६ | पप्रच्छरमप्रीतस्त्यक्त्वा (पा) | ७२.३५ | पयोभिनिर्मलैः (पा) | ६७.४५ | परंहर्ममनुप्राप्यलोकान् (उ) | २४५.३८६ |
| पद्यावतीतिविख्याता (उ) | १८४.७३ | पपातदडवदभूमोभक्त्या (उ) | १५१.६८ | पप्रच्छप्रणतो भूत्वा (भू) | ६०.७ | पयोयोद्धुशत्रुघ्न-(पा) | २८.२४ | परक्षेत्रगांचरंतीम् (स्व) | ५५.३१ |
| पद्यावती सरस्तीरे (भू) | ४६.१२ | पपातपादयोस्तस्या (पा) | ६६.६१ | पप्रच्छराधवः श्रीमान् (उ) | २४२.२६२ | पयोष्णीतीरमासाद्यजगा-(पा) | १४.१२ | परतापच्छिदोयेतु-(पा) | १०१.३५ |
| पद्यावत्यांपद्यगृहो-(सु) | ३४.१५८ | पपातभीमवेगेन (उ) | २४५.१४६ | पप्रच्छविस्मयाहेवी-(सु) | ३१.७६ | परकेनापिवहुनापरिचर्या (उ) | १८०.८६ | परदत्ताक्षितियस्तु (क्रि) | ६.३२ |
| पद्यासनोर्वैजनकः (सु) | ३४.१०७ | पपानभूमौविप्रपेय (क्रि) | २५.७८ | पप्रच्छसीतांगत्वं (उ) | २४२.२७३ | परंक्वाहंमंदभाग्यः (पा) | ५५.३५ | परदारपरद्रव्यजीव (पा) | ६४.१३३ |
| पद्यिनोयत्रलोकानां (पा) | ३६.४ | पपानभूमौसुबलोराज (पा) | ५१.७० | पप्रच्छतेवकांसवन् (पा) | ४०.४ | परंगुह्यतमक्षेत्रमम (स्व) | ३३.६ | परदारपरद्रव्यपद्रोह (पा) | १७.४२ |
| पद्यिनीमृगपुष्पादयं (सु) | १५.८७ | पपातमूर्च्छितः शक्रो (उ) | ७.३ | पप्रच्छागमनं तस्य (भू) | ७८.३ | परंगुह्य प्रवक्ष्यामि सर्वं-(पा) | ३५.४३ | परदारपरद्रव्यविमुखेन (पा) | २०.१६ |
| पद्येक्षणाः पद्महस्ता (उ) | २२६.६० | पपातमूर्च्छितोभूमौ (पा) | ५८.१५ | पप्रच्छाहंजगन्नाथ (उ) | ७७.१ | परंचधर्मपरमंयशश्च-(सु) | ४५.१६१ | परदारपरद्रव्यहार (क्रि) | ४.८३ |
| पद्येनैकेनदेवेशं (उ) | ११८.५३ | पपातमूर्च्छितोभूमौ (उ) | २५०.३७ | पप्रच्छुचमुकुंदेद-(उ) | २०६.२४ | परंचयज्ञपरमंचहोत्रं (सु) | ४५.१६२ | परदारपरस्वरतं परि-(स्व) | २०.४२ |
| पद्यस्तु पुष्पितैः (भू) | १२१.१५ | पपातमूर्च्छितोभूमौ (क्रि) | १५.६५ | पप्रच्छेतिनतोभक्त्या (क्रि) | ६.१८ | परं जानं प्रवक्ष्यामि (भू) | ८६.६२ | परदाररतायन (न्र) | ६.२१ |
| पद्म्याचाश्चास्मात्तंण (सु) | ३.१०६ | पपातवेपमानासाम (उ) | २४५.७५ | पपासरः समासाद्यंशवरी (सु) | ३८.३१ | परं तद्ग्राह्यः स्थानं (पा) | ११४.४२७ | परदारानिरक्तायेतेषां (क्रि) | १६.१०४ |
| पद्म्यापद्मद्वयंच (उ) | १८४.७६ | पपातशरभिन्नांगो (उ) | १७.६५ | पपयः कमंडलु करोदत-(भू) | १२.८० | परंनजानंतियतोव- सु) | ३४.१०५ | परदारान्नग्लूति-(सु) | ४६.१३७ |
| पद्म्यामन्याः प्रजाब्रह्मा-(सु) | ३.१२६ | पपातसहस्राभूमौ (उ) | १७.५० | पपयः पुनीह्यमुवाहमुदकं (पा) | ६७.४३ | परं ब्रह्मपरंधामपवित्रं (पा) | ६४.१४६ | परदारपरद्रव्यपर-(उ) | ११४.१७ |
| पद्म्यामस्पृष्टभूमिस्तं (उ) | १२६.६६ | पप्रच्छइदमेवशं (उ) | १.८ | पपयसच्चयथाभिन्ना (भू) | १२०.१६ | परं ब्रह्मपकाशमना (पा) | ७३.६ | परदारभियागीत्वं-(सु) | ७८.२४ |
| पद्म्यामाक्रम्यवसुधां-(सु) | ४१.२७१ | पप्रच्छकुशलंतस्य (उ) | ३६.२६ | पपयसाकेवलेनैव-(उ) | २५.१३ | परं रहस्यं परमांगति (सु) | ४५.१६३ | परदारमनायस्य (सु) | ४६.१३३ |
| पद्म्याणंयानेनब्रह्मलोकं (स्व) | ८७.८६ | पप्रच्छलोभवानितिस-(पा) | ११६.५५ | पपयस्यपिमतबाले-(भू) | ५३.४८ | परं रहस्यसिद्धानाम (उ) | १६२.४ | परद्रव्यविपंचैव (क्रि) | १३.६८ |
| पनसाना फलैर्दिव्यैः (क्रि) | १३.२५ | पप्रच्छचकिमर्थत्वमिह (पा) | १०६.२०५ | पपयस्विन्यः शीलवत्सः (सु) | २३.५६ | परंरामस्यपादाद्यज (पा) | १३८.४६ | परद्रव्यापहरणं परमार्थ (भू) | १५.१३ |

श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

१६५

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|
| परद्रव्यापहाराश्च (उ) | ४२.४ | परमात्मातयाचात्मा (उ) | १३२.७१ | परमोविष्णुरेव (उ) | ७१.११४ | परस्परं चमाषतः (पा) | ६४.१६ | परस्यनिर्वाणधुन्यं (उ) | ११२.१७ |
| परद्रव्याभिलाषी च (भू) | ६७.७७ | परमात्मात्वमेवैकोनान्यो (सु) | ३.४८ | परयोषातथागामि (पा) | ११४.४१७ | परस्परं चास्वादतो- (स्व) | ३१.३२ | परस्याग्निसेवेतस्य (उ) | १२७.१६ |
| परद्रोहृतायेचतया (उ) | १२६.८८ | परमात्मापरब्रह्म (क्रि) | १७.११६ | परलोकांगतः सोमि (उ) | २७.१५ | परस्परं न पश्यति स्वात्मन (सु) | ३३.१८१ | परस्वंतुल्यमात्रं च मनसा- (स्व) | ३१.६५ |
| परनिदारतश्चास्तु (सु) | १६.३५५ | परमात्मापरब्रह्म (उ) | २५४.४६ | परलोकभयं त्यक्त्वा (क्रि) | १३.१३७ | परस्परं प्रसिंचतो जलयं (पा) | ६८.२१ | परस्वं न हरेद्यस्तु तृणा (सु) | ४६.१३६ |
| परप्राणविनाशेन (क्रि) | ६.१२० | परमात्मायथाविष्णु (उ) | ७८.७५ | परलोकभय विप्र (क्रि) | १५.२१ | परस्परं प्रहृषितं रेमे- (पा) | ६६.१४७ | परस्वं न समादत्ते पष्ठां (पा) | २६.१० |
| परः पराणां परमः (सु) | २.८४ | परमानंदचिन्मूर्ति (उ) | १६६.४ | परलोकभये युक्तो युक्त (सु) | ३२.६ | परस्परं प्रहृषितो (पा) | ६४.३६ | परस्वं नैव हर्तव्यं (भू) | १३.२६ |
| परबाधां कुर्वीत (स्व) | ५५.८३ | परमानंदरूपेण कैवल्येन (भू) | ८३.७४ | परलोकसहायो हि- (पा) | ११७.४३ | परस्परं ब्राह्मणात् विशीर्णं (पा) | ६१.३२ | परस्वं ब्राह्मणद्रव्यम् (ब्र) | १.३० |
| परब्रह्मणि संलीनो (भू) | १२२.३४ | परमानंदसंदोहं (पा) | ७१.५३ | परलोके द्विजग्याघ्र (ब्र) | २४.५३ | परस्परं यो वनतो (क्रि) | ५.१५१ | परस्वेचित्तवृत्तिस्त्वं मा- (पा) | १०.६० |
| परब्रह्मस्वरूपां त्वां (क्रि) | ७.११२ | परमानंदसंदोह (उ) | १८५.२२ | परलोके द्विजग्येष्ठः (क्रि) | २०.२१ | परस्परं वीर्यं नीत्वा (उ) | २५२.६६ | परहिंसाकृतानेन (क्रि) | ७.६१ |
| परब्रह्मस्वरूपेयं (क्रि) | २५.५ | परमापद्रवतेनापि (स्व) | ६०.२६ | परलोके सुखं दुःख- (पा) | ११४.४५५ | परस्परमया लोकाय (उ) | १६.१० | परहिंसा विधाने न (क्रि) | ६.२५ |
| परभक्त्या हुतानारी (स्व) | २६.२६ | परमायोधेनांतस्मर्तव्या (पा) | १२.४ | परवितादिकंदृष्ट्वा (क्रि) | १७.८१ | परस्परममोचं स्तेयना- (पा) | ६७.४८ | परहिंसा विहीनोयस्तस्य- (क्रि) | १६.६१ |
| परमज्ञानमासाद्य (क्रि) | २१.१३१ | परमातिययोशक्रो (सु) | ३०.१४ | परव्योमस्मिन्नो नित्यं (उ) | २२८.७२ | परस्परवससंगकारिणः (पा) | ६४.१६ | पराक्रमं समीक्षस्व ममा (पा) | २७.१५ |
| परमज्ञानमासाद्य (क्रि) | ४.११० | परमार्थैर्मतियेषांते (पा) | ६६.६६ | परशक्तेः परं पीठं सर्वं (उ) | १८६.२ | परस्परवधोद्युक्ती (पा) | ४३.३२ | पराक्रोशं हि संश्रुयतां चित्ते (भू) | १३.१६ |
| परमज्ञानमासाद्य (क्रि) | ६.७७ | परमासाद्यविष्णुं ब्रह्मा (सु) | ३०.७२ | परः शिवः परोध्येयः (उ) | ७१.११२ | परस्परविनिर्मुक्त (उ) | २०२.२२ | परागं नयं दायच्छेत् (ब्र) | १८.१७ |
| परमं मधुरं रम्यं पवित्रं (पा) | ६६.२१ | परमिममितिहासं- (उ) | १२६.२६६ | परस्त्रियं समालिख्य (क्रि) | ५.४४ | परस्परानुरागेण दांपत्य (उ) | ११६.१३ | परादुःखं दंतकाण्डे सर्वं (सु) | ३४.२५८ |
| परमक्रोधमापन्नो (पा) | ४३.२६ | परमेकं महाच्चित्रं यदृष्टं (पा) | ११६.८२ | परस्त्रियवर्गोकार (सु) | ३६.१३५ | परस्परानुरागेण व्या (उ) | ४३.२२ | पराचीनस्य रूपस्य लिगमेव (भू) | ६२.२६ |
| परमं ब्रह्माल्लोभोभ- (पा) | ३६.४१ | परमेश्वरगोविन्दया लो (क्रि) | १७.१६१ | परस्त्रियगतबुबकांश्च (क्रि) | २२.१० | परस्परं रसाद्विगुणाः सर्व- (स्व) | ६.३ | पराजयं वाकोवीर (पा) | ४३.५४ |
| परमदुःखमापन्नः (पा) | ५८.५१ | परमेश्वरगोविन्दया लो (क्रि) | १७.१६१ | परस्त्रियं त्वं करवालवरय (पा) | १०.७४ | परस्मिन्निधोरेषु (पा) | १०१.४२ | पराजये विवर्द्धया (उ) | १२२.५६ |
| परमार्गतिमासाद्य (ब्र) | १५.२३ | परमेश्वरगोविन्दया लो (क्रि) | १७.१६१ | परस्त्रीयस्य मातेव लोष्ट- (पा) | २.६ | परस्य गौरवान्मुक्तः (सु) | ४२.१४ | परात्परतर्थाति- (पा) | ११४.४२४ |
| परमासिद्धिमाप्नोति (सु) | २८.२१ | परमोत्सवयोमो (उ) | २०१.५८ | परस्त्रीहरणे यावा दोषो (क्रि) | ५.२० | परस्य चाऽऽत्मनः (पा) | ११६.२६७ | परात्परमहंसवं (पा) | ७१.६७ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२६६

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| परात्मानं पराधीशं (भू) | ८७.२३ | परिकल्प्य च भूदेवो (क्रि) | १२.६७ | परिधानंततः कार्यं (उ) | ३४.६३ | परिचार्यं महात्मानं (उ) | २४३.१४ | परेषां चेतसः क्लेशा (पा) | ६६.६७ |
| परान्नं च परद्रोहं (उ) | ६४.४ | परिगृह्य च तं रामो (उ) | २४२.२६४ | परिधाय च तस्य वहुतो (पा) | १२.१८ | परिवागीयतं जघ्नुर्दतैः (उ) | २३८.६७ | परेषां प्राणरक्षायं (सु) | १८.३६३ |
| परान्नं च सदाभुक्तमेका- (उ) | १२६.१०१ | परिष्वङ्गं हरिश्चैव विदेहे (सु) | १३.१२ | परिधाय शुभे वस्त्रे (उ) | १७४.५२ | परिव्रजति परिव्रज्य (भू) | ६७.७० | परेषां प्राणरक्षायं- (सु) | १८.३६४ |
| परान्नं च जयेद्यस्तु (उ) | ११८.१८ | परिचर्य चित्तस्यासौ (उ) | १८५.४७ | परिधायो वरं रत्नं (उ) | १२६.५६ | परिविध्योपवीतिस्या (पा) | ११७.१११ | परोक्षं हास्यकृत्वाणः (पा) | ४७.४६ |
| परान्नलोपानित्यं (क्रि) | २६.२० | परिणीता तिया निस्तु- (सु) | २३.१०३ | परिपक्वं च जानक्या सिद्धं (सु) | ३३.८७ | परिवेपं पदार्थानां (पा) | ११२.११७ | परोक्षं हरते यस्तु (स्व) | ४६.२४ |
| परान्नवर्जनाद्रत्नं (उ) | ६१.४० | परितः पुष्कराकारं तं (उ) | २२६.११५ | परिपालय मामीश (उ) | ७०.१६ | परिष्वक्तोपि यद्भाषी (भू) | ६६.८६ | परोक्षं गृह्णति दाकृतं (क्रि) | १६.२१३ |
| परान्नविधनकरणा (पा) | ४७.४३ | परितुष्टः शक्तीभर्ता (उ) | २४१.१० | परिपूज्य च गोविदं (उ) | २४५.१८६ | परिष्वज्याभिनन्द्यं न शुभं (सु) | ३०.१०८ | परोक्षं पितृव्यानि (उ) | २१५.४४ |
| परापकारिणः पाप- (पा) | १०१.४३ | परितुष्टो ब्रवीच्छं (उ) | १८.६६ | परिपूर्णं दुःसंकाशः (उ) | २२८.३० | परिष्वज्याभिनन्द्यं न शुभं (सु) | ३०.१०८ | परोपकरणं चैव सर्वं (क्रि) | २६.४ |
| परापवादं संयुक्तं (उ) | ३७.५२ | परितोद्यो नित मुखं बहू (सु) | १५.१८६ | परिपूर्णं दुःसंकाशः (उ) | २२८.४३ | परिष्वज्य स्तररक्तं (क्रि) | १२.७७ | परोपकरणे युक्तीः स्वधर्मं (पा) | ४.५२ |
| परापशयिनः पापा- (उ) | १२६.८७ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारकरणा वहुस्तस्य (भू) | १२.८५ |
| परापवादोपाशङ्कः (स्व) | ३१.६६ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारः कर्तव्यः (उ) | १२६.२३६ |
| परामृश्य च हृषंतः (ब्र) | १४.२८ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारजं पुण्यं (पा) | ६४.११३ |
| परामृश्य भ्रष्टं सोपि (उ) | १७६.१६ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकाराणां धर्मः (उ) | ५६.११ |
| परामृश्ये तं हृषंतः (ब्र) | ६.१७ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारपापानि परद्रोहं (स्व) | २१.२२ |
| पराङ्मतिर्भूमौ र्स्वी- (पा) | २७.५५ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारः पुण्यानां (पा) | ८५.६५ |
| पराङ्मत्यकालात् (भू) | ६६.२१६ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारिर्भद्रता- (उ) | १२६.२३७ |
| परावश्यं भूतानां मर्त्य- (सु) | ३७.७२ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारिणोऽपार्तं (उ) | १२६.१४ |
| परावहस्य वहस्य उदहस्य (सु) | ४५.१२३ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारिणोऽपार्तं (उ) | १२६.१४ |
| पराशरं सुतः श्रीमान्गुरु- (सु) | ३६.१३ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारिणोऽपार्तं (उ) | १२६.१४ |
| पराशरस्य चोत्पत्ति- (सु) | २.३६ | परितो नन्दनो ज्ञान- (पा) | ७४.१७१ | परिपृष्टं मिदं गतिप्रयंते (सु) | २१.२२ | परिह्वयिदं त्रिश्रेष्ठं (ब्र) | १५.२६ | परोपकारिणोऽपार्तं (उ) | १२६.१४ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२६७

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|----------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------------|-------|
| पर्याग्रामस्थितो ह्यतो न (उ) | १६२.३७ | पर्वतानां वर्णानं च (उ) | १.३४ | पलायध्वंसुराः (उ) | ७.६५ | पवित्रं मत्प्रियस्थानं (उ) | ३४.३१ | पवित्रे भवतो वंशे (क्रि) | ३.७५ |
| पर्येषु चास्ते देवाः (उ) | ४५.२० | पर्वतानां हि सर्वेषां (भू) | २७.१२ | पलायनपरं तेन्य (पा) | ६१.२० | पवित्रनामामुमति (क्रि) | २५.६ | पवित्रेयं महाभागा (भू) | ५४.४ |
| पर्यपालयदस्यैवं (उ) | १७७.१० | पर्वताः सरिदुद्यान- (भू) | ८५.५१ | पलायनपराचासोद्वारम- (पा) | १०५.१३ | पवित्र मुदकं दिव्यशुभं (भू) | ६६.२३ | पवित्रेषु पुत्र्यदेवास्तेषां (उ) | ८६.२४ |
| पर्यङ्गनात्वा न्यत्र (उ) | १८०.३४ | पर्वतास्तीर्थरूपाश्च (पा) | ६७.७३ | पलायने देशभावे (पा) | १०४.१०२ | पवित्रयति सर्वान्नो (पा) | १७.३३ | पवित्रे नूतनैः पत्रैर्वाज्यायः (क्रि) | २४.५१ |
| पर्यंतकवनामोदवाह- (उ) | ३.१६ | पर्वतेष्वेव दुर्गेषु छाया- (भू) | १६.३ | पलायमानं तं दृष्ट्वा- (पा) | १११.३२ | पवित्रयंतमात्मस्थान (उ) | २०२.२० | पवित्रोदकसंयुक्तं (उ) | ३५.४३ |
| पर्यपृच्छत्सुखं हरं- (सु) | ४३.४५४ | पर्वतैः शिखरैश्चैव (पा) | ५३.६ | पलायमानस्तस्मात्- (उ) | २०४.६३ | पवित्रस्तत्र चोत्तस्थी (क्रि) | २५.७४ | पशुजातिमती चेयं (भू) | ४६.६ |
| पर्याग्रास्यमंत्रस्य (पा) | ८१.१४ | पर्वतैः स्तंभितो वायु (पा) | ४५.४४ | पलायमानांस्तान् (पा) | १०७.३६ | पवित्रां कृष्णलॉसिधु- (स्व) | ६.१८ | पशुं ज्ञात्वा पक्षिणश्चैव- (सु) | १६.८६ |
| पर्याग्रेण तु सर्वेषां (सु) | २२.२ | पर्वतोपस्क रान्सर्वान् (सु) | २१.२१० | पलायमानावन्योन्य (पा) | ११५.१६ | पवित्राणां पवित्रया (स्व) | ४३.५७ | पशुं ज्ञात्वा परित्यक्तो- (भू) | ४६.५१ |
| पर्वणि प्राप्य इंद्रास्तु (भू) | ११७.१३ | पर्वतोयमहाराज (उ) | १६.११ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणां ततः पश्चाद् (उ) | ८६.५५ | पशुपायां गृह्णारि (त्र) | १३.५५ |
| पर्वण्यवसदेयस्तु- (उ) | २३.४१ | पर्वतोद्गोचविष्णुना- (सु) | ३३.५४ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वण्यवसदेयस्तु- (पा) | ६६.८७ | पर्वतस्य समंतात् तिष्ठत्य- (स्व) | १३.२१ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वतं वीक्ष्य शत्रुघ्न (पा) | १७.२० | पर्वतस्य समंतात् सुद- (स्व) | १३.१२ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वतस्य मुनेराजन् (उ) | ३६.२४ | पशुं रामस्य चाख्यानं (उ) | १.६४ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वतस्य समंतात् (स्व) | १३.२१ | पलां डुलशुनं शिषु (उ) | ६४.११ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वतस्य समंतात् - (स्व) | १३.१२ | पलां डुलशुनं शिषु (त्र) | १६.१० | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वताख्यं महागुह्यं (स्व) | ३७.८ | पलां डुलशुनं शिषु (स्व) | ५६.२० | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वताये अशोकस्य छाया (भू) | ४६.३३ | पलां डुलशुनं शिषु (क्रि) | २०.६ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वताग्रेण दीतीरे (उ) | २२५.३५ | पलां डुलशुनं शिषु (उ) | २०४.६४ | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वतानां दीनां च (सु) | ४०.१७ | पलां डुलशुनं शिषु (त्र) | १६.१० | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |
| पर्वतानां दीनां च पशुनां (सु) | ३६.४६ | पलां डुलशुनं शिषु (स्व) | ५६.२० | पलायिताः पुरादस्मात् (उ) | १६७.४२ | पवित्राणि न तोदद्यात् (उ) | ८६.३२ | पशुयोनिं गतत्वं वै भापसे (भू) | ४६.६० |



धीपचमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२६६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|----------------------------|---------|-----------------------------------|--------|------------------------------------|--------|
| पश्चात्तचसमाहूय (भू) | ४.४८ | पश्चाद्विनिः स्वःपुरुषो (पा) | ६५.६३ | पश्यतस्ममहद्युदं (उ) | २२२.५१ | मश्यनानाविवैः पाशै (उ) | ११४.१३ | पश्य सूची मुखैर्देहो (उ) | ११४.७ |
| पश्चात्तत्रैवतस्याज (उ) | २२२.४६ | पश्चाद्वेनः स पुण्यात्मा (भू) | ३६.३ | पश्यतां देवतानां च (भू) | ६०.५७ | पश्यति कौतुकं कांते (भू) | ४३.७० | पश्यस्वस्वपतिगत्वा-(सु) | ३४.४८ |
| पश्चात्तद्वस्नसपकाद्या (पा) | ६७.७० | पश्चाद्वैशूलिकाप्रोत-(उ) | १४१.२७ | पश्यतां निजभर्तृणां (उ) | २०६.३२ | पश्यतिनहिदुर्बुतैः शक्योः (स्व) | ३.४५ | पस्याद्यदर्शयिष्यामि (पा) | ७३.१८ |
| पश्चात्तिलाचलमनेक-(सु) | २१.१०२ | पश्चाद्वैशर्चनकार्यं (उ) | ८२.२५ | पश्यतां सर्वदेवानां (सु) | ४.६८ | पश्यति नित्यं विप्रेन्द्र (क्रि) | २१.७५ | पस्यामिकेवलंघोरा-(पा) | ५६.१० |
| पश्चात्तयोविनिः क्रांता (भू) | ८६.१३ | पश्चान्नाशयतेक्षीरमात्म-(भू) | ३४.११ | पश्यतां सर्वभूतानां (सु) | १०.१०२ | पश्यति नैव यमिहाद्यसु (भू) | २१.२४ | पस्यामितंमुनिबंधंजगतोस्प(सु) | ३६.१३ |
| पश्चात्त्वामुपनेष्येऽहं (भू) | ११३.४४ | पश्चात्निर्गमनंतेवै (भू) | ७.८१ | पश्यतां सर्वभूतानां (सु) | १२.५१ | पश्यतीं ब्रजयिवोऽष्टी (पा) | ७२.५८ | पस्यामि ते पौरुष (भू) | ५४.१५ |
| पश्चात्परीक्षीतान (सु) | ३४.२८६ | पश्चान्मग्न सभूपालो (उ) | १२६.१८ | पश्यतां सर्वभूतानां (सु) | ७.५१ | पश्यंतुमुभटास्तस्य (पा) | २३.१८ | पस्यामित्वामहं साक्षाद्वरैः (क्रि) | १६.४२ |
| पश्चात् संजायते निद्रा (भू) | १२०.३२ | पश्चान्मुखो ब्रह्ममुता (सु) | ३२.११३ | पश्यतां सर्वलोकानां (भू) | ८८.५२ | पश्यंतोदिक्षुसर्वा (पा) | ६४.१७ | पश्येदजानतोवापि (क्रि) | २०.१३१ |
| पश्चात् संश्रितं पुण्यम (भू) | ११६.७ | पश्चान्मोहेन पापेन (भू) | ३३.११ | पश्यतां सर्वलोकानां (पा) | ३७.६५ | पश्यंतोविष्णुरूपेण (स्व) | ३१.१८ | पश्येदानीममात्युच्चैः (पा) | ३४.२४ |
| पश्चात्पमागत (उ) | २०४.४४ | पश्चिमसारंनेतुं (सु) | १८.१६५ | पश्यताहिमवत्सानु (उ) | २०३.१२ | पश्यन्तुदिनंयत्र (उ) | १८०.८ | पश्येदिमार्गः शृणूयान् (सु) | २१.२८६ |
| पश्चाद्व्यापयेन्मंत्र (उ) | २२६.७ | पश्चिमद्वारमासाद्य (सु) | २७.२१ | पश्यतोपिभवेदूष (सु) | २४.३६ | पश्यन्नुद्योनिनमुत्वं (पा) | ८५.२८ | पश्येद्यदीमानुपनीय (सु) | २१.१६ |
| पश्चादपिजयं प्राप्तः (पा) | ६३.६ | पश्चिमायां तथा ब्रह्मा-(भू) | २७.२२ | पश्यत्येवं वदत्येवं (भू) | २१.१२ | पश्य पश्य बलंदेवि (भू) | १.४४ | पश्येयमान्निरयान् (उ) | ११४.२ |
| पश्चादेनं सूकराणां (पा) | ३०.५८ | पश्चिमायांदिशायां (उ) | १७४.३० | पश्यतुसर्वदेवेषु (पा) | ११७.१४७ | पश्य पश्य महाभागसपत्न्या (भू) | ६.८ | पात्रात्रेसदास्तीयात (त्र) | १५.४८ |
| पश्चाद्व्यजगादाद्य (उ) | १०.१८ | पश्चिनेचानिरुद्धं च (सु) | ३४.२७४ | पश्यदशयभेलिगपीठं (पा) | ११४.३६४ | पश्य पश्येतिजल्पत्यो (उ) | १२८.३६ | पाकान्दोदककुंभादि (पा) | ६८.२५ |
| पश्चाद्ब्रह्माणमाकृष्य (उ) | १८.२ | पश्चिमेतुरविर्देवकृष्य (सु) | ३४.२७० | पश्यदुर्वारणदानीं (उ) | १६.३१ | पश्य पश्येतिजल्पत्यो-(स्व) | २२.३० | पात्रण्ड जन बाक्येन (क्रि) | ६.२२ |
| पश्चाद्भवतिजातांघाः (स्व) | ३१.३४ | पश्चिमेमद्रदेशे (उ) | २४४.११ | पश्यदभिः सर्वभूतस्थं (उ) | ७८.१५ | पश्य प्रिये महाकोलं (भू) | ४३.२६ | पात्रंडजनसंभाषं न (क्रि) | १४.८ |
| पश्चाद् भिल्ली समायाता (भू) | ८६.१७ | पश्चिमेवेदधाग्नेच (सु) | २१.२६६ | पश्यद्विजमहाकूरा (उ) | १२६.११६ | पश्यमेऽद्यपराक्रान्ति (पा) | ४१.१६ | पात्रंडभक्तिरहिताः (क्रि) | २.१०७ |
| पश्चाद्भूमौदशाहेतु (उ) | २५३.१०४ | पश्चिमेसामवेदच (सु) | ३४.२७२ | पश्यधर्मं महाप्राज्ञ (भू) | ५६.२ | पश्य राजन् पुत्र्यै संस्कृतं (भू) | ४६.८ | पात्रंडभक्तिरहिताः (क्रि) | १०.४० |
| पश्चाद्यः कुष्ठे (उ) | २३.४ | पश्य कौतुकमेवाद्यत्वं (भू) | ६२.१५ | पश्यद्यत्वं विपरीतस्य (सु) | ३७.४६ | पश्यराजन्ममवलं (उ) | ७.३७ | पात्रंडं सगरहिता (त्र) | १.२६ |
| पश्चाद्दाराणसौगत्वा (पा) | ११२.१४१ | पश्यतक्षिप्रमेतस्य (पा) | ५४.१६ | पश्यध्रुवंचन्द्रादं (पा) | ४६.५२ | पश्य सर्वत्र विख्याता (क्रि) | ५.१६६ | पात्रंडानांसमीपेच (क्रि) | १४.३ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|------------------------------|---------|-------------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| पालण्डानांसमीपेतु (क्रि) | १६.४ | पांडुपुत्रो महाप्राज्ञो (भू) | ३४.२६ | पातालकेतुनाहासो (उ) | १२.३६ | पात्रेणघोदकंकृतवायः (उ) | ८५.१८ | पादयोः पतितयावद्ध (उ) | ३७.५० |
| पालंडिनं विकर्मस्थं (उ) | २३४.२६ | पांडुराभिः पताकाभिः (उ) | १८०.१६ | पातालनिलयश्चापि- (सु) | ३०.१६६ | पात्रेदानं न दत्तं तु दृष्ट्वा (भू) | १७.३४ | पादयोः पतितस्तेहं- (सु) | १७.१४४ |
| पालंडिनस्तथाविप्रा (उ) | ७१.५७ | पांडुरोद्धतवसनः प्रवाल- (सु) | ४१.१३ | पातालभवनेदृश्यं (उ) | ६८.२५ | पात्रेदानं न दत्तं हि दृष्ट्वा (पा) | ८६.४५ | पादयोः पतितं वीक्ष्य (पा) | ६५.४३ |
| पालण्डैर्वीथितोयंतु (क्रि) | ६.२७ | पांडुरैः खगमागम्यैः (सु) | ३०.७६ | पातालसहितं नाकं (उ) | ३.५२ | पात्रेभृत्वाऽर्घतोयं (पा) | ११७.६७ | पादयोः पतितादेवी (सु) | ३४.६६ |
| पाञ्चजस्यं महाशखं (उ) | २४६.६१ | पांडुशर्मनिमस्कृत्य (उ) | १६६.६ | पातालादागतोऽमीह- (पा) | ११४.७१ | पात्रेमायामभूद्वत्सः (सु) | ८.२१ | पादयोश्चिच्छितां कृत्वा (पा) | ८०.१४ |
| पांचभौतिकमेतद्धि (उ) | ६४.५७ | पाण्डुर्वधसूतदेवीसादेव- (सु) | १३.११५ | पातालेसहसाधुष्ये (सु) | ४५.१५० | पादचारं रथस्थोऽहम् (पा) | ६०.२३ | पादयोः पट्प्रदातव्या (क्रि) | ११.११ |
| पाटलं वाडवाह्यं (उ) | १३५.५८ | पातकं च महाघोरं वसता (भू) | ६१.२८ | पातालोदररूपार्भं (सु) | ४६.२० | पादत्राणातपत्रांशु (पा) | ६५.५८ | पादलेपं महाबुद्धि (क्रि) | ६.११६ |
| पाटीरचंद्रकस्तूरी (पा) | ११७.४ | पातकंचतवात्युग्रयोनि (उ) | १०७.३ | पातुकामः समुद्रं च (सु) | १६.१६७ | पादनिष्प्रेक्षणमपि नैत (क्रि) | ४.४१ | पादविन्यासरणिर्नैत (उ) | ७.५२ |
| पाटीरतरुसंभूतगंध (पा) | ११४.१३ | पातकंतस्य प्रक्षाल्य (उ) | १२५.८१ | पातुबोहृदयं रामः (उ) | ७३.३ | पादपाश्रेण दृष्टेन (स्व) | १६.१६ | पादसंधिमथादाय- (पा) | ११७.५० |
| पाटीरतरुसुस्निग्ध (पा) | ११४.१५ | पातकंतु कृतं भद्रतेन- (उ) | १२७.८२ | पातुबोहृदयं रामः (उ) | ७३.३ | पादपदमसमुत्थेन (पा) | १६.३४ | पादसंवाहनजातुचक्रेत (उ) | २१६.३८ |
| पाठमात्रावसानस्तु (स्व) | ५३.८६ | पातकंतु मह्यच्चतथाक्षुद्रो- (स्व) | ३१.८३ | पात्रजलं मंतुं कृणाक्षु (उ) | २०८.१३ | पादपादोनिभूतानिराज- (सु) | ३४.३६६ | पादसंवाहनं दधात्येव (भू) | ४.४४ |
| पाठयेदप्यमुं मंत्रं पूजकः (पा) | १०४.६८ | पातकं द्विविधं प्रोक्तं (पा) | ८.२४ | पात्रं ताम्रमयं कार्यं (उ) | ३४.६१ | पादपानां विधिवक्ष्ये (सु) | २८.१ | पादसंवाहनं विष्णो (उ) | २४५.२७८ |
| पाणिष्ठातिनरः स्नात्वा (स्व) | २६.८५ | पातकं वैकृतं तात (उ) | ४६.४३ | पात्रं वनस्पतिमयं तथा (सु) | ६.१४२ | पादप्रक्षालनं कृत्वा (सु) | ३३.१२२ | पादसंवाहनं स्नानता (पा) | ६२.८४ |
| पाणिग्रहणकाले मेय (पा) | ६६.१०४ | पातकंसकलंतस्य (क्रि) | १३.६० | पात्रभूताय विप्राय- (भू) | ३६.४५ | पादप्रक्षालनं चक्रे (पा) | ११७.७३ | पादांगुलीभ्यामथ (पा) | ११४.१८२ |
| पाणिनालम्वयमानेन- (सु) | ४३.४४५ | पातकानां तु सर्वेषां (भू) | १६.२० | पात्रमंत्रान्नसदृश- (भू) | २६.५१ | पादप्रक्षालनं नैव ग्रंथ (भू) | ५२.१२ | पादांगुष्ठे श्रीपति च (उ) | ७८.२७ |
| पाणिपीडनमारभ्य (पा) | १०६.६२ | पातकाणां वमनस्य (उ) | १७४.७२ | पात्रास्थितमशेषं च- (पा) | ११७.१२६ | पादप्रक्षालनं पुण्यं (भू) | ६२.६३ | पादांगुलं रक्तमहोत्पलाम् (भू) | ६८.६८ |
| पाणिः प्रदानं रहितोऽष्टुत- (क्रि) | १६.६१ | पातकैर्मयो न संदेहो (भू) | ६२.६ | पात्रस्याभ्याभिमुखः (पा) | ११७.१४६ | पादप्रक्षालनं यस्तु कुरुते (भू) | ८४.७ | पादावनेजनीतु- (पा) | ३७.४२ |
| पाणोपादोः तथा पाश्वो (भू) | ६६.३२ | पातयामास देवेशोयं (उ) | २३८.११७ | पात्रं हस्तं प्रदातव्यं (भू) | ३६.१२६ | पादप्रक्षालनमुत्पातु- (पा) | ११२.६६ | पादापलवकूद्रामो (पा) | ११७.१६६ |
| पाणोर्मृत्निगले चैव (ब्र) | २२.२० | पातयित्वांशुकं भूमौ (ब्र) | २.१७ | पात्रांश्चक्षुःश्लेषोपि (पा) | ११४.४४६ | पादप्रक्षालनार्थं तु (क्रि) | २५.३६ | पादुकोपातहृच्छत्र (सु) | २५.२३ |
| पांडवेश्वरकंगत्वास्नानम् (स्व) | १८.६१ | पातयेदथ चान्येन (पा) | ११४.३३४ | पात्रीमादायसौवर्णी (सु) | २७.४६ | पादमस्य विदन्सम्यग् (सु) | २.४६ | पादेन ताडयामास (उ) | २४६.५५ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२७०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| पादोद्वादास्तवयूप- (सु) | ३.४६ | पाद्याध्यचिमनीयं (क्रि) | २१.११५ | पापसंकेवलं भुक्ते (उ) | ६४.६४ | पापप्रशमनस्तोत्रयः (पा) | ६४.१५१ | पापाचारास्तुतेसर्वे (भू) | २८.४५ |
| पादोर्कतिष्ठति यत्र (भू) | ६८.७१ | पाद्याध्यचिमनीयाद्यैः (क्रि) | २५.१४ | पापं कर्तुं शक्यत्वाप- (भू) | ३३.१४ | पापबुद्धिपरित्यज्य (क्रि) | ६.१५७ | पापात्पतति कायोयं (भू) | ६६.१ |
| पादोदकस्यमाहात्म्यम् (ब्र) | १७.२८ | पाद्याध्यचिमनीयं (पा) | ७४.१३७ | पापकर्मप्रभावाच्च (भू) | ८६.४४ | पापभागा भवेत्ता च (भू) | ४१.७५ | पापात्मनापिभवता (क्रि) | १७.५१ |
| पादोदकेनाप्यभिषिच्य- (भू) | ६८.७२ | पानं भवति यत्वेरा- (सु) | १०.४३ | पापकर्मनिरोधके (उ) | ६४.११६ | पापभूता भवेन्नारी (भू) | ४१.६२ | पापात्मनोऽपिममचित्त (क्रि) | १६.६४ |
| पादौगृह्यसमुत्क्षिप्य (उ) | २४५.१३७ | पानं विनाशितं दुक्त (पा) | ११४.६० | पापकारो जनस्तात (उ) | २०४.२६ | पापमूलमिदं जन्म (क्रि) | १३.१२६ | पापात्मापि च तद्वत् (क्रि) | १३.६२ |
| पादौतस्योपसंगृह्य (उ) | १७६.८ | पानीयदानं परम (उ) | २७.१ | पापकृद्यदि जनो यमागतो (पा) | २१.२७ | पापमो न किं काराजन् (उ) | ४६.४७ | पापात्मा मुच्यते (उ) | ३५.२ |
| पादौप्रक्षाल्य शुक्रस्य (पा) | ११४.७७ | पानीयघारां शिरसि (सु) | २३.४४ | पापं ग्रहस्तवं भविता- (सु) | १२.४१ | पापयुक्ता य रामाय (उ) | ७४.२२ | पापादुद्धार्यते लोको (उ) | १७७.५८ |
| पादौप्रक्षाल्य सापश्चात् (उ) | १५२.२१ | पानीयं ज्येष्ठमासे (सु) | २२.१२१ | पापघ्नं दुष्टशमनं (सु) | १४.१७३ | पापयुक्तो द्विजश्रेष्ठ (पा) | ११४.४७५ | पापानां भौति दानित्यं- (भू) | ३६.६ |
| पादौयोममराजेंद्र (पा) | ११७.१७३ | पानीयं याचायामास (क्रि) | २१.४४ | पापघ्नं दुष्टशमनं (सु) | १५.१०६ | पापराशितमः स्तोमं (पा) | ६४.१५६ | पापानां मुनिशार्दूल (ब्र) | १४.१७ |
| पादौविन्यस्य मुहूर्त्तं (पा) | ११७.१५६ | पानीयं पातु मिच्छामि- (उ) | १२६.६६ | पापघ्नं पापहारिणी- (स्व) | २३.२० | पापद्वैतामयाः पीडाः (भू) | ७२.२१ | पापानामनुरूपाणि (पा) | ६७.१२ |
| पादौर्वेजा नुपयंतं (उ) | ८६.६ | पानीयमप्यत्र तिलैर्वि- (पा) | ६८.६७ | पापचर्चा समाकर्ण्य (क्रि) | १५.४० | पापलेशाश्च मे क्रूरा (भू) | ५६.२१ | पापानामनुरूपाणि (पा) | १०६.७७ |
| पादौसंस्पृश्य देवस्य (सु) | १३.२२२ | पानीयमप्यत्र तिलैर्वि (उ) | १६०.४ | पापजालैर्विनिमुक्ता (क्रि) | २३.१७८ | पापवृक्षफलं विष्णो (क्रि) | २२.२३ | पापानि कीर्तयस्व त्वं (पा) | ११४.४७२ |
| पादौगृह्णाण देवेश (क्रि) | २२.११४ | पानीयहरिणा सद्भूतघटे (उ) | १३२.३६ | पापत्रस्तः सदा पुण्यो (उ) | ७१.२०३ | पापव्याधिं प्रणशार्थं (भू) | ७२.१६ | पापानि चक्रतुः प्रोत्था (क्रि) | २०.२५ |
| पादमंतस्तपंच चाशस्तु (सु) | १.६० | पांथसंचलितो बाह्या- (उ) | २०४.६५ | पापनिर्दयं निर्लज्ज- (स्व) | १५.३७ | पापव्याधिविनाशार्थं (क्रि) | ११.१४५ | पापानि च वसः कालानि (क्रि) | १६.५७ |
| पादमंतुषोडशात्मन्य- (सु) | ३४.३०० | पांपकृत्वा जनो यस्तु (उ) | २१३.४८ | पापनैगडबद्धस्य छेदनं- (उ) | १२६.६६ | पापस्य पापसंगत्कुलं (भू) | ३४.१० | पापानि तस्य नश्यति (स्व) | ४०.४ |
| पाद्यमर्चयंतः कृत्वा (उ) | ७१.८० | पांपकृत्वा तु यो मर्त्यः (ब्र) | १.१५ | पापपंकतिमग्नां त्वा- (उ) | १२७.८५ | पापस्य प्रतिमाकार्या- (उ) | १२८.७१ | पापानि भगवद्भक्ति (पा) | ८५.३२ |
| पाद्यार्घ्यं च पुनर्दत्त्वा (उ) | २१४.२१ | पांपकृत्वापि यो मर्त्यः (क्रि) | १७.५२ | पापपुण्यफललोके- (उ) | १२६.२१८ | पापस्वास्थ्यद्विजश्रेष्ठ (उ) | १२७.८४ | पापानि रोगनिकराश्च (क्रि) | ७.१०८ |
| पाद्यार्घ्यचिमनीयाद्यै (उ) | ६०.२१ | पापं नश्येत्स मूलं च (ब्र) | १०.२४ | पापप्रवृत्तस्य तथा (पा) | १००.१७ | पापहादुःखहारी च- (उ) | १२८.१३६ | पापानि रोगनिकराश्च (क्रि) | ७.१०८ |
| पाद्यार्घ्यचिमनीया (क्रि) | ११.६१ | पापं यदि कृतं भद्रे- (पा) | १०६.६७ | पापप्रशमनस्तोत्रं (पा) | ६४.१ | पापांकुशामुषोष्यैव (उ) | ५६.२१ | पापानि रोगनिकराश्च (क्रि) | ७.१०८ |
| पाद्याध्यचिमनीयं (क्रि) | २०.७५ | पापयः सेवते मूढो (क्रि) | २२.१६ | पापप्रशमनस्तोत्रं (पा) | ६४.१२३ | पापांकुशोति विख्याता (उ) | ५६.३ | पापानि रोगनिकराश्च (क्रि) | ७.१०८ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| पापानिचान्यामिकृता (पा) | ११५.३६ | पापैश्चापि सुपुण्यैश्च (भू) | १२१.३ | पारत्रयैहिकं वापिकाम-(सृ) | ४.१८३ | पार्वदीवात्स्वयानुत्था-(पा) | ११४.१६२ | पालाशपात्रेयोभृक्ते(उ) | ६५.८ |
| पापावस्थंशरीरं (पा) | १००.२१ | पापैः सर्वैः प्रमुच्यते (उ) | ११७.३२ | पारदामुक्केशाश्च (उ) | २०.३४ | पार्वतीविललापोच्चैः (उ) | १३.३४ | पालाशश्चूतजंघा (पा) | ११४.५१ |
| पापावस्थमधर्मस्थं (पा) | १००.२२ | पापोपिभरतस्तेवैभ्राता (उ) | २१६.४६ | पारमेश्वरेतपस्तपत्वा (स्व) | १८.६० | पार्वतीशिवयोर्देवैः (उ) | ११५.२५ | पालितलोभमेवैकं (भू) | १७.४२ |
| पापिनश्चैत्र ढुङ्गाद्या (भू) | १०६.३४ | पापोयंमुखमूलस्तु पुण्यं (भू) | १२.१०७ | पारमेष्ठ्यतेस्थितः स्थाने (सृ) | ४१.२३६ | पार्वत्यपिमहाविष्णुं (उ) | १०२.२७ | पालितव्यग्रप्रयत्नेन यस्माद्-(भू) | २६.५ |
| पापिनांक्वथ्यमाना-(पा) | १०१.७ | पापेयमिति विहाय(पा) | ११४.४६६ | पाराशर्यपरमपुरुषविश्व (स्व) | १.२० | पार्वत्याभूयितः सोयनि (उ) | १२.५० | पालितानिस्वगोत्राणि (क्रि) | ३.२३ |
| पापिनांरकेवासः (स्व) | ४०.११ | पापोरम्याकृतिश्चित्र (सृ) | ४४.६३ | पाराशर्यमहाभागश्रूयतां (भू) | २१.३ | पार्वत्यासहदेवेनउपितः (पा) | १०४.४ | पालिनानिस्वगोत्राणि (क्रि) | ३.२४ |
| पापिनांपापनाशाय (उ) | ५३.४ | पापौयभूरिभारस्य (उ) | १२७.३० | परिजातकपुष्पे (उ) | १६.५ | पार्वत्यासहितोदेवः (सृ) | ३८.७० | पालिनोऽपिमुहुर्नित्यं (क्रि) | ६.१४७ |
| पापिनांमरणां भद्रे (भू) | १५.१ | पामरैर्नहिमानस्या-(पा) | ६६.३१ | परिजाततत्त्वग्न (सृ) | १५.११० | पार्वत्येहिमयासाहं (उ) | २५४.१७ | पालितलोभमेवैकस्य (पा) | ८६.५३ |
| पापिनांयमरूपोस्मिन्नुणां (पा) | ६६.४४ | पाययन्नल्पमल्पं (उ) | २०४.६६ | परिजाताश्चागरुभिः (सृ) | ४५.५८ | पार्श्वयोर्वरुणीनी (उ) | २२८.४८ | पावकाइवदीप्यते (उ) | २६.३७ |
| पापिनोपिनगमिष्यति (उ) | १६४.१६ | पाययित्वास्तनं वस्त्रम-(सृ) | १८.३०२ | परिजातोहृतोयेन (क्रि) | १६.३७ | पार्श्वेऽथप्रेयसीतत्र (पा) | ७४.१४० | पात्रकाइवदीप्यते (उ) | १३१.१६ |
| पापिनोपिनवोद्धारो (क्रि) | १६.६७ | पायसंदधिसंपिचनैवे (पा) | ६५.६८ | पारिवर्हसमादाय (उ) | २४२.१५४ | पार्श्वं ते तप्य मानस्य (भू) | १६.७ | पावकं साधुसर्वतेयम् (उ) | ११६.१७ |
| पापिनोपिबिमुच्यते (पा) | ८३.१०६ | पायसंमधुसपिच (उ) | १६८.४१ | पारिजाततत्त्वसंभग (उ) | २५२.६३ | पार्श्वं भरतशत्रुघ्नो (उ) | २४३.११ | पावकोहियथाधूमं (उ) | १३२.५६ |
| पापीपापसमाचार (उ) | १५१.२४ | पायसंभोजयेद्विप्राण (सृ) | २२.१८१ | पारिजातदुर्भवः कोपि-(उ) | १२६.२०८ | पार्श्वोर्ध्वारणाद्राम-(पा) | १०५.१४३ | पानतीर्थमासाद्यतपंयो-(स्व) | २७.६५ |
| पापीयोऽनं च संधानम् (स्व) | ५६.१० | पायसन्तानिधुभ्राणि (पा) | ६५.२२ | पार्श्विकुशमूलाद्यं (पा) | ८४.६२ | पार्श्वेशस्यद्वेवपुंउत्केये (स्व) | ३.७४ | पावनं पावनानां च (उ) | १२६.४० |
| पापेन दवज्जाला-(पा) | ६८.६२ | पायसांशिसमांतु (सृ) | २०.११२ | पार्श्विवाभोज्यां (उ) | १८.१४ | पालयस्वचधर्मं (उ) | २४१.४४ | पावनं सर्वभूतानां (सृ) | ३७.१४० |
| पापेन तेन धोरेण सर्वं (भू) | ६१.१० | पारंपर्येणतज्ज्ञात्वा (पा) | १४.५८ | पार्श्विवासर्वराष्ट्रभ्यो (उ) | २४६.७५ | पालयह्वयमायास्यत्य (पा) | १३.३७ | पावनी पुण्यदापुण्या (भू) | २६.७५ |
| पापेन नाशितं तासां (उ) | २०६.६० | पारणं कुर्वते यस्तु (क्रि) | २२.१४३ | पार्वतीकल्पितादभावाद्-(भू) | १०२.६७ | पालयात्मानमाजिस्थं (पा) | ६१.३६ | पावयामिजनान्या (पा) | ३६.८८ |
| पापेन पापतां नीदोह्यपापे (सृ) | १८.२७१ | पारणं चापिकुर्वीत (उ) | २५३.१६५ | पार्वतीपतिर्नानादृ (उ) | २०१.६७ | पालयामावधर्मणपिता (उ) | ३१.४ | पावित्तास्सर्वसुवर्तस्तेक-(सृ) | ३७.१४१ |
| पापेनोपाज्जितं वितं (उ) | २२१.१५ | पारणं चैवभद्रायां (उ) | ६३.१३ | पार्वतीप्रीतिमासापुरं (पा) | १०६.८६ | पालयिष्यसि योयैः (पा) | १३.३८ | पाशद्विस्वारथेदिव्ये (त्र) | १६.२६ |
| पापेषु संगतेष्वेवम्लेच्छ (भू) | ३८.२६ | पारणेतुहविष्यान्नं (उ) | ७०.२२ | पार्वतीवसनेगुणं वा (पा) | ११४.२६३ | | | पाशाद्विस्वा समारोग्य (त्र) | ११.३६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणी

९७२

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| पाशहस्ताः समायाताः (क्रि) | ३.४४ | पिडप्रदानवापीचकेनपूर्वं (सु) | १६.५ | पितरं मातरं त्यक्त्वा (भू) | ४५.११ | पितरोदशवर्षाणि-(स्व) | १३.३६ | पितामहमहाबुद्धे (उ) (उ) | ५१.१६ |
| पाशांकुशधराः सर्वाः (सु) | ३१.८० | पिडान्दन्त्वाद्विज्ञान (उ) | १३६.६ | पितरं मातरं चैव (पा) | ८८.१३ | पितरोनैव भुञ्जति (भू) | ६७.१० | पितामहमुपागम्यशिर (उ) | १६८.३८ |
| पाशाष्टकेनसंयुक्ता (उ) | १२.४६ | पिडान्वाहार्यंकुप्याति (सु) | ६.८७ | पितरं मातरं नत्वा- (पा) | ८३.४३ | पितरोमाप्रणश्यंतुमम (सु) | २४.७ | पितामहश्चभगवान् (स्व) | ३६.४८ |
| पाशेनैकेनबद्धवानाम् (उ) | २४६.४ | पिडान्विनित्तित्त- (पा) | १०८.३८ | पितरं मे उवाचाय (भू) | ४७.१६ | पितरोहिनिरीक्षन्ते- (सु) | ३४.२१७ | पितामहाद्या देवास्तु- (भू) | २८.५७ |
| पाश्चात्यादाक्षिणात्या (उ) | १३५.३४ | पिडपितृभ्योदद्या- (उ) | १३७.१८ | पितरं पाचयस्व धर्मं (सु) | ३७.३४ | पितरो विकलो दीनो (भू) | ६३.५ | पितामहायुगान्यष्टौ (उ) | १२०.२८ |
| पापं डाचरणं धर्मं (उ) | २३५.३४ | पिडारकेतु गोपालः (सु) | ३४.१४७ | पितरं याजयामास (भू) | ११७.२३ | पितर्येवं वनं प्राप्ते (उ) | १६७.१ | पितामहेनयत्रासीद- (सु) | १८.१६६ |
| पापं डानां च संवादं (उ) | २३५.१ | पिडारकेनरः स्नात्वा- (स्व) | २४.१५ | पितरः पातिताः सर्वे (ब्र) | १३.८२ | पितर्युं परतेतेषाम् (सु) | १०.५१ | पितामहो हंते वत्स (उ) | २१४.४५ |
| पावाणदावोरालेशः (उ) | २५३.७ | पिडांस्तुमोजविप्रेभ्यो (सु) | ६.१६ | पितरः पुत्रदातारं वृद्धि (सु) | ३४.२१६ | पिताकृपणवत्स्य (उ) | १६६.७४ | पितामहोसिससर्वे- (सु) | १८.८० |
| पासिसर्वमिमलोक्तं (उ) | २४५.३२६ | पिण्याकंचैव नैलं च (स्व) | ५६.१६ | पितरश्चैव वाच्छति (उ) | १२१.२७ | पिताते धर्मं तत्त्वज्ञ (भू) | ३६.५४ | पितामहं च समायतो- (सु) | ३८.७१ |
| पिगलश्वेतवर्णश्च (उ) | २.५ | पितः कथंते मुक्तिः (उ) | १८१.२५ | पितरः सतिशतशः (उ) | ७१.३१ | पितात्वं सर्वं लोकानां (उ) | २२३.४६ | पितामहो निमुक्तो (उ) | २०४.१३३ |
| पिगलोमृगलीनाम् (पा) | ६६.६७ | पितरं चात्मनश्चैव व (भू) | ३३.४ | पितरस्तपितायेन (क्रि) | ६.१८५ | पतादशरथोमह्यं (सु) | ३६.५ | पिता मे वैष्णवं लोकं- (भू) | ६२.२४ |
| पिगलोनामभद्रेषु (उ) | १७६.२ | पितरं तं नमस्कृत्य (भू) | २.२६ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | २६.२६ | पितामहतोगच्छेद्- (स्व) | २१.४ | पितामेशरभोनाम्ना (उ) | २०१.१६ |
| पिगलोव्याघ्रकर्णं (उ) | १४.६४ | पितरं प्रत्युवाचाय (भू) | ८६.३ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ३२.२५ | पितामहं पुगमर्वे- (उ) | २२३.१३ | पितायेन सुभक्त्या (भू) | ६३.२५ |
| पिगाकारासमुद्भूतावह्नि (सु) | २६.५ | पितरं निहतं दष्ट्वा (उ) | २४१.४६ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ७६.६ | पितामहं समाराध्य (सु) | ८.५४ | पितास्यदुरितघ्नंसी (क्रि) | ५.२३ |
| विष्वाश्रारक्तकेशश्च (उ) | २१०.२५ | पितरं पूजयेन्नित्यं (भू) | ६३.२३ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ३१.१३८ | पितामहं समुद्दिश्य- (सु) | १५.१७२ | पितास्वजन वगश्च (भू) | १४.३२ |
| पिड एव प्रणश्येत् (भू) | १२०.२७ | पितरं प्राहु भरतरामो (पा) | १२.२७ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | १६.२८७ | पितामहकृपुण्ण्दत्वा- (सु) | ३३.१७ | पितुः कर्म विमृश्यैव (भू) | ३०.५१ |
| पिडददाति यस्तत्र पितृ (उ) | १६२.२ | पितरं मातरं चैव क्रोड- (भू) | १२.१३ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ११.५६ | पितामहः पूर्वमथाम्य- (सु) | ७.७६ | पितुः क्षयाहं कृते (उ) | ७७.७ |
| पिडदः स तमस्तेषां स पिडा (सु) | १०.३५ | पितरं मातरं चैव- (भू) | १२.६ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ३३.६६ | पितामहमहाप्राज्ञ (ब्र) | ५.३ | पितुः प्रसादभावाद्देव- (भू) | ६४.१ |
| पिडनाशादयं चात्मा (भू) | ५३.८४ | पितरं मातरं चैव (पा) | ८८.६ | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ३६.७८ | पितामहमहाप्राज्ञ (ब्र) | ७.३ | पितुरग्रे जगादाय पिता (भू) | १०५.५ |
| प्रदानपूर्वतुष्टां (सु) | ३४.२०२ | पितरं मातरं चैव (उ) | ७६.१०० | पितरस्तपिताः सर्वे (स्व) | ५६.१३ | पितामह महाबुद्धे (उ) | ५१.११ | पितुरग्रे समायात- (भू) | १.४० |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| पितुरानुष्णमन्विच्छन् (उ) | १५७.३ | पितुः स्वर्गकृतेराजन् (उ) | ५८.१८ | पितृयज्ञादिकंकर्म (क्रि) | १७.४० | पितृणां वल्लभंतीर्थं (उ) | १३५.५० | पित्रा दत्तास्मि सुभगे (भू) | ४७.३१ |
| पितृरानुष्णमाप्नो (उ) | २०४.१२६ | पितृकर्म विशेषेण (उ) | ६४.६८ | पितृयज्ञे विवाहे चर्वाङ्गः (सृ) | ४६.११५ | पितृणां वल्लभाङ्गोत्ताः (उ) | १३५.५७ | पित्रादीन्नामगोत्रेण (पा) | ६५.३७ |
| पितुराश्रमसंस्थावर्मा- (सृ) | १३.२१८ | पितृकार्यानि युक्तत्वा (सृ) | १०.७२ | पितृयज्ञोभूतयज्ञः (क्रि) | १७.६४ | पितृणाममत्वंस्थानं (सृ) | ६.६१ | पित्रानिवेद्यभूपायमा- (उ) | २०४.८६ |
| पितुरित्यवचः श्रुत्वा (उ) | १६६.८३ | पितृक्षयाहदानं च (उ) | १.३८ | पितृवन्मन्यमानस्यपितर (सृ) | ३.६२ | पितृणामादिसर्गं (सृ) | ६.४८ | पित्रामात्रातयाचान्यैर- (सृ) | ३३.७१ |
| पितुरेवास्तिते सर्व- (सृ) | ४३.३३० | पितृ गेहे स्थिता कन्या (भू) | ५१.२६ | पितृवर्तीचयोनियः (सृ) | १०.६७ | पितृनावहयेत्तत्रपृथक्प्रेतं (सृ) | १०.२४ | पित्रा विलोकिता सातु (भू) | ८५.५५ |
| पितृद्रव्यंतुतेनैव (उ) | ४०.१८ | पितृणांतर्पणं कृत्वा- (स्व) | २०.१६ | पितृवाक्यं प्रकृतं व्यं (भू) | ७७.१०७ | पितृनावाहयिष्यामि (सृ) | ६.१४७ | पित्रासहृष्टं गच्छव्यं- (सृ) | ४३.३६७ |
| पितृभंगिन्यामातुश्च (स्व) | ५३.३७ | पितृतीर्थगयानाम (उ) | १३५.४५ | पितृवाक्यमविज्ञाय (उ) | ११.२२ | पितृनुदिश्यतिकचिद् (उ) | १६७.७ | पित्रासार्द्धं गृह्याति- (पा) | ८३.६१ |
| पितृमरणमाख्यातं (उ) | २०५.४३ | पितृदेवमनुष्याणां (उ) | ४८.१२ | पितृवैरं करिष्यामि (भू) | ४५.१० | पितृनुद्दिश्योदछाद (उ) | १६५.३ | पित्रानिवेद्यभूपायमा (उ) | २०४.८६ |
| पितृयत्समंतं कार्यं (क्रि) | ५.११३ | पितृदेवमनुष्यांश्च (पा) | ६८.१३ | पितृव्यपत्नीगमने (पा) | ४७.५६ | पितृनुदेवांश्च सन्तर्प्य- (सृ) | १६.२३ | पित्रामात्रातयाचान्यैर (सृ) | ३३.७१ |
| पितुर्लब्धावरंज्ञानं (उ) | १६३.२२ | पितृभक्त्या तवभ्राता (भू) | २.६ | पितृव्यपत्नीगमने (पा) | ७.५६ | पितृनुदेवान्प्रीनित्यं (उ) | १२८.१६० | पित्रा विलोकिता सा (भू) तु | ८५.५५ |
| पितुर्वचनमाकर्ण्य (उ) | ७१.४५ | पितृभक्त्या तु पुत्राणां (सृ) | १०.२० | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुदेवांस्तर्पयतः (स्वा) (सृ) | २.६२ | पित्रा सहृष्टं गच्छव्यं- (सृ) | ४३.३६७ |
| पितुर्वचनं हितच्छ्रुत्वा (सृ) | १८.१६८ | पितृभक्तिमत्पूर्वमेत (सृ) | ६.१८० | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुदिश्येत्प्रादं (उ) | ६१.२२ | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुर्वैरं करिष्यामि (भू) | ११८.१२ | पितृभिलाषिताः सत्य (उ) | १२८.२६ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुः शुश्रूषणे तद्रमहत् (भू) | ६२.७१ | पितृभिः सहितोमोक्षं (सृ) | १४.२०० | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुश्चाविष्यकभावेन- (स्व) | ३१.६० | पितृभ्यश्चापितृदद्यात् (उ) | २५३.१०८ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुः श्रेष्ठो महाराज (भू) | ६४.२६ | पितृभ्यस्तुलसीपुष्प (उ) | २०८.३४ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुः सकाशाच्छ्रुत्वा (भू) | ४५.१६ | पितृभ्यामभितोया (पा) | ८३.६६ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुः समीपमागत्य (उ) | २३८.१४ | पितृभ्योनिर्वपामीति (सृ) | ६.८६ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुः सारूप्यमालोक्य (उ) | २०४.१३६ | पितृभ्यामभितोया (पा) | ८३.६६ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |
| पितुः सौख्ययथेनापि (भू) | २२.८ | पितृभ्यामभितोया (पा) | ८३.६६ | पितृव्योममदुग्धा (उ) | ५.१४ | पितृनुसंतर्प्यविधिना- (क्रि) | १६५.१० | पित्रासार्द्धं गृह्याति (पा) | ८३.६१ |



श्रीपद्ममहापुराणम्: श्लोकोक्तमणो

२७४

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|-----------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| पिनाकिनः प्रविष्टायां-(सु) | ४४.४२ | पिशाचामोचयामा-(उ) | १२८.१६७ | पीतपयस्तुसर्पेण (उ) | ७७.१६ | पीतांबर धरानंत (क्रि) | ११.२६ | पुंडरीकस्वदाकुर्वन्गृहे (उ) | २१६.१३ |
| पिनाकिपादयुगलं (सु) | ४३.३६१ | पिशाचाः पल्लगाश्चापि (क्रि) | १३.६६ | पीतपुष्पाकृतामालाहार (भू) | १२.६६ | पीतावशेषं नागास्तु (सु) | ४.५६ | पुंडरीकस्तुधमत्मा (उ) | २१८.१५ |
| पिपाकर्मणां हठवा (उ) | १२६.६१ | पिशाचाः प्रायशोराम (पा) | ११५.४६ | पीतमुद्गमनीवच- (पा) | ११४.३६० | पीतेतुसलिले चैव तस्मिन्ने (सु) | ४४.१३६ | पुंडरीकस्य देहात्तुतेन (उ) | २१६.४८ |
| पिपासया धुनाक्रांतो (स्व) | ३५.२४ | पिशाच्यइव मांलग्ना (स्व) | २२.१०० | पीतमेकांजलिमितये-(सु) | ३२.१०६ | पीतेन वाससा देवी (भू) | १२.६७ | पुंडरीकस्य यज्ञस्य (भू) | ८७.२६ |
| पिपासितो बुभुक्षार्तो (उ) | १७७.८ | पिशाच्यइव मांलग्नास्त (उ) | १२८.१०८ | पीतवस्त्रचतुर्बाहुम् (ब्र) | ८.१५ | पीतेन वाससा युक्तं (भू) | १६.४५ | पुंडरीकस्य यज्ञस्य फलं (स्व) | १५.७७ |
| पिपीलिकाभिर्बह्वीभिः (भू) | ६१.१६ | पिशाच्यइव मांलग्ना-(स्व) | १२८.११३ | पीतवस्त्रचतुर्बाहुं (उ) | २३१.३५ | पीत्वा तत्रैव पानीयं (उ) | १२६.१४८ | पुंडरी के क्षणः श्रीच्छी-(उ) | २५५.१६ |
| पिपीलिकामधोवक्त्रां (सु) | १०.७४ | पिशाच्याः सपिशाच (उ) | १२८.११३ | पीतवस्त्रचतुर्बाहुं (उ) | २३५.४५ | पीनस्जनीचमुश्रोणी (उ) | १७६.२४ | पुंडरीको धनं दातुमाहूतो (उ) | २१८.४२ |
| पिपीलिकामूषिका (क्रि) | २०.३६ | पिशुनः सर्वलोकानां (भू) | ६७.५६ | पीतवस्त्रद्वयविष्णु (पा) | ११४.१७० | पीनोन्नतस्तनाभ्यां (उ) | २२६.११० | पुंडरीकोपिधमत्मा (सु) | १०.११७ |
| पिप्लादात्तस्तीर्थे (उ) | १५८.१ | पीठदाता दीपदाता (ब्र) | २४.३३ | पीतवस्त्राः शंखचक्र (पा) | २०.७२ | पीनोन्नततायतभुजानील (सु) | ८.६० | पुंडरीकोपिधमत्मा (उ) | ८०.११८ |
| पिप्पलीजीरं चैव-(पा) | ७६.५६ | पीठचंते विपश्येय (उ) | २११.७ | पीतवस्त्रेण संवीतं (उ) | २४५.२३२ | पीनोन्नततौ कुक्षीतस्यास्ती (उ) | ४३.१८ | पुंडरीकोपिधमत्मा (ध) | २१८.२० |
| पिप्पलेज्वरंतोगच्छेत् (स्व) | १७.११ | पीडयति नरं पश्चात् (भू) | ८१.५५ | पीतवासंगदाहस्तं रक्त-(भू) | १६.१० | पीयूषमक्षयग्राहः (ब्र) | १०.१६ | पुंडरीकोपिधमत्मा (उ) | २१८.२६ |
| पिबतो निर्मलं तोयं (भू) | ८५.४५ | पीडयति नरं पश्चात् (भू) | ६४.२४ | पीतवासः पराधीनां (उ) | ८२.२२ | पीयूषमिव तोयं गृह्णाति (क्रि) | १३.४८ | पुंडरीकोयथाशक्त्या (उ) | ८०.१६८ |
| पिबंतं गुप्तवत्सच (सु) | १८.२५८ | पीडाभिर्दरिद्राभिस्तु (भू) | १५.१७ | पातवासाघनक्यामः (उ) | १६७.८४ | पीवरस्तनमारार्तो (उ) | १२५.२० | पुंडमूद्वर्तयामोवतं (उ) | २२६.८ |
| पिबन्तिकेचिन्मूत्राणि (क्रि) | २३.१३२ | पीडायुक्तेषु तीव्रेषु-(भू) | ५२.२३ | पीतवासाचतुर्बाहुः (उ) | २०४.१३६ | पुच्छेचामरसाहस्रं (उ) | १२.४८ | पुंडाभागाः किरातादच (स्व) | ६.४६ |
| पिबंतु योगिनीसंघा (पा) | २३.१७ | पीडितं सर्वरोगाच्चैरपि (भू) | ६६.१२६ | पीतवांस्तानि दस्त्राणि (उ) | १५५.८ | पुच्छे मुखे योरसिचभुजे-(पा) | २८.४१ | पुणतकोटिगुणं (उ) | ३७.३२ |
| पिबपुत्रयथेष्टस्वस्त्य (पा) | ५५.२३ | पीडितो हृमन्नेन पृच्छा-(सु) | ३७.२६ | पीतां न रधरांसोभ्यां (उ) | ६४.१२ | पुच्छेवायुमुत्तस्या-(पा) | ६४.४१ | पुण्यं चैव अनेनापि (भू) | १२.११३ |
| पिबपुत्रस्तनमेष्टकारणं (सु) | १८.३४५ | पीड्य कृष्णपक्षे (उ) | ४०.३२ | पीतातिता निभोदेवा (उ) | १५५.१६ | पुंडरीकमहाभाग (उ) | ८०.१४८ | पुण्यं तत्सर्वं नीधानां (सु) | ३१.५४ |
| पिबस्व पानं भुक्ष त्वं (भू) | ४१.५८ | पीड्यमानास्त-(पा) | १०१.२५ | पीतांबरचतुर्बाहुं श्रीवत्सां (उ) | १०६.१५ | पुंडरीकमवाप्नोति (स्व) | ३८.३३ | पुण्यतदपितेसाधो-(उ) | २०४.६७ |
| पिबामृतमामकवत्र-(पा) | १३.६ | पीड्यमानोऽनु शीतेन (उ) | ४३.३१ | पीताम्बरधरं देवं स्मित (क्रि) | ११.८७ | पुंडरीकमहाकुडेलीर्थ (उ) | २१८.३५ | पुण्यं तद्भवनं दाति (उ) | १२१.१८ |
| पिशाचशृणुपुण्यां (उ) | १२६.७२ | पीतयद्ब्रह्मपुत्रेण-(सु) | २६.११ | पीताम्बर धरं श्लक्ष्णं (उ) | २४२.१३६ | पुंडरीकशृणुध्वेदं कथ-(उ) | २१६.३ | पुण्यं यशस्यमायुष्यं (भू) | २७.३० |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: स्त्रोकोक्तानुक्रमणी

२७५

| | | | | | | | | | |
|---|--------|--|--------|---------------------------------------|---------|---|---------|--------------------------------------|--------|
| पुण्यकर्ता सुपुण्येन (भू) | ६६.३३ | पुण्यमाश्चयुगेवासिविधौ (सु) | २१.२३ | पुण्यात्मानो महाभागा (भू) | ६७.१७ | पुण्येन शीततोयेन सा (भू) | ४६.३ | पुत्रजन्मगृहेषां (उ) | ४१.१८ |
| पुण्यकर्ताविहीना- (पा) | ६२.६४ | पुण्यवानपिकालेन (उ) | १८५.८५ | पुण्यात्वासकथं (क्रि) | १७.६ | पुण्यानाह्निविषं कथिते (सु) | २७.५ | पुत्रजते महापुण्ये (भू) | २६.१६ |
| पुण्यकालेषु सर्वेषु (भू) | ६७.१८ | पुण्यशीलसुशीलोत्त (उ) | १०७.१३ | पुण्यानांचयपुण्यो (क्रि) | १७.१५४ | पुण्येस्वाप्यते (उ) | ३४.६३ | पुत्र तस्य महज्जाने (भू) | ६८.८ |
| पुण्यक्षयतेगच्छति (उ) | ४८.१५ | पुण्यशेषस्यभोगार्थम् (त्र) | ११.३१ | पुण्यानिचसुगंधी (उ) | १२६.१२१ | पुण्योदकेन शीतेन तव (भू) | ४७.५ | पुत्रस्वममदेवे (उ) | २३६.२७ |
| पुण्यगंधास्त्रजश्चापि- (सु) | ४५.४६ | पुण्यश्रवास्तुतन्मंत्रग्रहणा(पा)७२.४६ | | पुण्यानितेपुयोदत्ते (उ) | १२१.६१ | पुण्योदयेन बहुजन्म (उ) | १६४.७४ | पुत्रस्वममत्तुष्टस्त- (सु) | १२.८४ |
| पुण्यगर्भपुनः प्राप्तो- (भू) | ३१.८ | पुण्यसंख्यांनजानेवै (उ) | ८४.३१ | पुण्यान्नप्रतिष्ठामा- (उ) | १२६.४७ | पुण्योदयो महासारः (उ) | २५४.४२ | पुत्रस्वयाविनासोदुं कथं (पा) | २८.११ |
| पुण्यतीर्थजलोपेतविधिना- (सु) | ३६.६६ | पुण्यस्थापित्रलेनैवयेपाग (भू)१०६.३१ | | पुण्यान्पुत्रान्प्रसूय (भू) | ३.५० | पुण्यो धन्यः सर्व दाता (भू) | ६६.४१ | पुत्रदाराद्यसंगत्व (उ) | २२४.७६ |
| पुण्यतीर्थसमासाद्य (क्रि) | ५.१८८ | पुण्यस्य पुण्यताकारिपंच- (सु) १८.१२८ | | पुण्यान्येहानिसर्वणि (स्व) | १४.३० | पुण्योपदेशः सदयः (क्रि) | १.१७ | पुत्रदास्तामुयायुग्मा (पा) | ६.४६ |
| पुण्यतीर्थेन्यादेशेवनेवापि (सु) १४.७८ | | पुण्यस्य लक्षणंकांतसर्वमेव (भू) १२.४६ | | पुण्यान्वितं शंकरमेव (भू) | ६८.६७ | पुण्योर्हंपुण्यतांप्राप्तो- (सु) ३०.११५ | | पुत्रनित्यजगत्सर्व (सु) | १८.३७० |
| पुण्यतीर्थेविशेषेण (पा) | ६२.६१ | पुण्यांगति प्रयास्त्येते (भू) | ३०.६ | पुण्यापुण्यजलोपेतानदीयं (सु) १८.४६५ | | पुत्रं चकपिलं चैववसुदेवा- (सु) १३.१२७ | | पुत्रपत्रपुटेदुग्धा (उ) | २०३.४८ |
| पुण्यतीर्थेषुदानार्थं गृहितं (उ) २१६.३६ | | पुण्याकनखलेगंगाकुरुक्षेत्रे (स्व) १३.६ | | पुण्यापुण्यजलोपेतानदीयं (सु) ३२.८५ | | पुत्रदेहीनिदेहीति (त्र) | १२.१८ | पुत्रपदातिरायातिजटा (पा) | २.२४ |
| पुण्यत्रिशिरश्चैवकांतं (सु) | ४०.६ | पुण्याख्यानमृतेविप्र (उ) | २८.३८ | पुण्याराजर्षयश्चैव (सु) | ५.२८ | पुत्रं न विदते राजा (भू) | १०३.१०८ | पुत्रपोल्यासुरान् (उ) | १७.५८ |
| पुण्यदः पुण्यमाप्नोति (पा) | १०२.१६ | पुण्याचेपासुभाग्याचसर्वेषां (सु) १७.१२ | | पुण्यावाविश्रुतानद्यः (स्व) | ५५.२३ | पुत्रं प्रति न कर्तव्यं (भू) | ११६.२४ | पुत्रपोत्रदात्रीचपितृणां (उ) | ७७.४६ |
| पुण्यद्रुमः सुखफलं (क्रि) | १६.५६ | पुण्याचोदङ्मुखीगंगा- (सु) १४.१६० | | पुण्यासती यश्य गेहेवर्तते- (भू) ५६.१४ | | पुत्रमेतारकंदेहितस्माद्- (सु) ४२.४२ | | पुत्रपोत्रपरीवारसनाथो (पा) | ५.२४ |
| पुण्यफलमवाप्नोति (उ) | ५१.२६ | पुण्यात्पापक्षयंयाति (उ) | ५५.३१ | पुण्याः सुधन्यागतकल्मषा (भू) | ६६.६ | पुत्रमेतारकंदेहितुष्टोमैव (सु) ४२.७७ | | पुत्रपोत्रप्रदाह्ये पा (उ) | ६१.२३ |
| पुण्यभार्या प्रयोगेन (भू) | ५६.१६ | पुण्यास्मनांगतिः प्रोक्ता (क्रि) | २३.८३ | पुण्ये तिथौ तथा ऋक्षे (भू) | ५.१०६ | पुत्रमेदेहिदेवेश (सु) | १०.१०० | पुत्रपोत्रप्रतीक्षे च (धि) | २२.६६ |
| पुण्यमाश्चयुजे मासि (सु) | २१.३३ | पुण्यास्मनांगुण्य (क्रि) | १७.५० | पुण्येनगांगेनजलेन (पा) | ८७.३० | पुत्रं विदर्भमुभयं (सु) | १३.१६ | पुत्रपोत्रसमायुक्तो (उ) | ५८.६ |
| पुण्यमाश्चयुजे मासि (सु) | २१.३०६ | पुण्यास्मनाहंबंयु (क्रि) | २३.१०६ | पुण्येनगांगेनजलेन (पा) | ६२.३० | पुत्रं स्वसंभवं चैकं (सु) | ४०.५५ | पुत्रपोत्रसंभोतश्चतशिष्या (सु) ३४.२० | |
| पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं (स्व) | २७.३५ | पुण्यास्माकीदृशंपश्येत (क्रि) | २३.५८ | पुण्येन प्राप्यते पुत्रः (भू) | १२.४१ | पुत्रकामः प्रयोगेहि- (उ) | १२६.२७८ | पुत्रपोत्रादिसपत्ति (पा) | ६६.२६ |
| पुण्यवद्भिर्दर्शनार्हः (पा) | १७.३४ | पुण्यात्मानः पथायेन (क्रि) | २३.५७ | पुण्येन महतायुवतः (स्व) | २७.५३ | पुत्रकालः महावीरशिवा (पा) | ११.५० | पुत्रमासाहमंकार्यभूयं (पा) | ४२.१३ |
| | | | | | | | | पुत्रमित्रकलत्राणामवावे (भू) ६७.७१ | |



श्रीपद्महपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२७६

| | | | | |
|---|---|---|--|---------------------------------------|
| पुत्रमित्राण्यधभ्राताग्रन्थे (भू) १७.१८ | पुत्रहीनस्यतस्य (उ) ५५.४ | पुत्रेणलोकान्जयतिपुत्र-(भू) १२.२६ | पुत्रैः प्रियासमेतोऽसौ (भू) ६६.२१ | पुनः पाकं विधायात्र- (उ) १०६.६ |
| पुत्रयोर्वसुदेवस्य (उ) २४६.३४ | पुत्रहीनाचयानारी (ब्र) १४.११ | पुत्रेणलोकान्जयति (पा) ८६.४ | पुत्रैर्वाभ्रातृभिश्चैव (भू) ८०.१२ | पुनः पापप्रभावेन (क्रि) २३.१६७ |
| पुत्रयोश्चेतनानास्ति (उ) १६४.२५ | पुत्रहीने नराज्ञाच (उ) ४१.८ | पुत्रे जाते महापुण्ये (भू) २६.१६ | पुत्रैः सहमहातेजाव (उ) २४२.११० | पुनः पुत्रो भविष्यति तत्रैव (भू) ५.६४ |
| पुत्ररत्नं तेन दत्तं (भू) ११६.२७ | पुत्रागच्छसिसेवकतः (पा) ११.५२ | पुत्रे जाते तुगुदाना (उ) २०५.५० | पुत्रैस्तु भार्या युक्त (भू) १२५.३८ | पुनः पुनस्तमभ्यर्च्य (स्व) २२.३१ |
| पुत्र लोभं परित्यज्य स्नेहं (भू) १८.३३ | पुत्राणां तु सुखं पुण्यम् (भू) ७५.१५ | पुत्रे तु जीवितप्राये-(उ) २६.२३ | पुत्रौ समादिशत्सीताग- (पा) ६६.१०८ | पुनः पुनस्तमभ्यर्च्य (उ) १२८.४० |
| पुत्रवाक्यं महच्छ्रुत्वा (भू) ८६.४६ | पुत्रानभीक्ष्ण्यक्षेत्रोत्था-(सृ) १४.६३ | पुत्रे राज्यं विमुच्यैव (भू) ६४.४२ | पुत्रोत्सवं मनसा तु स्य कंदराणां (सृ) ४३.१२१ | पुनः पुनस्तान्पप्रच्छ (पा) २४.२ |
| पुत्रशोकाग्निभिर्दुःखं (भू) ८.२६ | पुत्राणां ज्येष्ठपुत्रमे (ब्र) १२.२७ | पुत्रे सति महतीर्य (उ) २०७.२६ | पुनः कलिगुये राज्ञे (पा) ८५.७४ | पुनः पुनरुवाचेदं स्थलनील (पा) २१.६ |
| पुत्रशोकानलेनाहंसतप्ता (भू) २३.१७ | पुत्रानुत्पादयामा-(सृ) १३.१०१ | पुत्रे स मर्येथो मूढः पुरुषः (उ) २१६.२५ | पुनः कल्पशतानि च सप्त (सृ) २१.१४३ | पुनः पुनर्वकवता छिन्ना (ए) १८.१०८ |
| पुत्रशोकाभितापेन देह- (स्व) २६.६२ | पुत्रान्पुत्रास्तु वाराहि (भू) ४२.३० | पुत्रो जातः सृष्टिकाले (उ) ४१.५१ | पुनः कामः सरः प्राप्तो (भू) ७७.१४ | पुनः पुनार मत्तत्र (स्व) ६१.३१ |
| पुत्रशोकैर्न संतप्ता हा हा (भू) २३.१४ | पुत्राः पण्डितसहस्रा (उ) २०४.३० | पुत्रोत्तिष्ठेति वचनं (उ) २०३.४० | पुनः क्षमां पश्येद्देवं (उ) ६२.३० | पुनः पुनरुवाचा भो नाहं (पा) ५६.२८ |
| पुत्रश्चोशनसस्तस्य (सृ) १३.८ | पुत्रापहर्णतेऽथ क्षेमं (भू) १०७.२ | पुत्रोत्पत्तिप्रतीत्यं (उ) २१४.७० | पुनः श्वात्थसिमुत्पन्ना (सृ) ४.८८ | पुनः पुनः रुवाचे दनाहं-(पा) ५५.७३ |
| पुत्रस्तु नारको नाम (सृ) ४२.४८ | पुत्राः पोत्राभिमनेया (सृ) १७.१२१ | पुत्रोत्पादनदक्षाश्च (उ) १६३.७८ | पुनः तिस्रकलं लोक (उ) ८०.१०७ | पुनः पुनर्जगादेव (पा) ५८.१४ |
| पुत्रस्तेष्वर्मतत्त्वो (उ) २०७.५६ | पुत्राभ्यां तत्सु जीवे (पा) ६४.७६ | पुत्रोदशरथस्यैव सर्वं (सृ) ३८.१०८ | पुनः नागैर्नागचर्चश्च (उ) ३.१८ | पुनः पुनर्मन्ये गतमेत (सृ) १३.१७१ |
| पुत्रस्ते संबंधमतिमा (भू) १०४.२३ | पुत्रामित्राः प्रियाभार्या (पा) ८७.७० | पुत्रोत्तरकमानोति दारुणं (भू) ६३.६ | पुनः नागैर्नागचर्चश्च (पा) १२.४६ | पुनः पुनश्च तारामः (पा) ५६.१६ |
| पुत्रस्तेहं शिवो नाम (उ) १८.१२२ | पुत्रामित्रास्त्रयाभ्राता (पा) ८६.२६ | पुत्रोपायं धनस्यापि (पा) ८७.४४ | पुनः नामसंज्ञयत्किंचिद (सृ) ८.८६ | पुनः पुनश्च दग्धेन जाते (उ) १२६.१६६ |
| पुत्रस्य जातमात्रस्य (भू) ३६.८१ | पुत्राग दीयतां राज्ञं (भू) ७७.१०२ | पुत्रो भार्या कथं तीर्थपिता (भू) ४१.१ | पुनः श्च स्फुरते लिग (भू) ५३.१०६ | पुनः प्रणाम्य भक्त्या यः (उ) २५३.१७५ |
| पुत्रस्य मुखपद्मती (ब्र) १२.५७ | पुत्रार्थं लिभते पुत्रम् (ब्र) ४.४६ | पुत्रो भयं गदः श्रीमान् (उ) २१६.२४ | पुनः श्च स्फुरते लिग (भू) ५३.३० | पुनः प्रणामप्रवर्णः-(सृ) ४६.४५ |
| पुत्रस्य नक्षत्रं पुण्यं (पा) ८६.३१ | पुत्राश्च संपदो वापि (उ) ४१.१६ | पुत्रो यो मातृपादाय (पा) २४.१६ | पुनः सांकायं समाश्रित्य (भू) ५७.३० | पुनः प्रजायते कायो (भू) ६६.२ |
| पुत्रस्य लक्षणं पुण्यं तवाग्ने (भू) १७.२० | पुत्रिकस्तेष्ववसितः (सृ) ४३.३०५ | पुत्रो हं ब्राह्मणस्यापि वेद (भू) २५.१८ | पुनः पुनः पतुघोनौ (स्व) ६१.३६ | पुनः प्रत्यागमिष्यामि-(सृ) १८.३०३ |
| पुत्रार्थं दिवदेवेश (सृ) १०.६८ | पुत्री कृत्य त्वयै (उ) १६४.१२ | पुत्रो प्रमंचतं कौशौ-(पा) ६४.५५ | | पुनः प्रपच्छममतिमा सुतां (भू) १८.१० |

धीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२७७

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| पुनः प्रवेशमायाति (उ) | ६६.१८ | पुनरावृत्तिरन्येषां (सु) | १५.१६८ | पुनर्नवप्रदत्तहिलोभा- (भू) | १५.१४ | पुनर्वैरमयामासत (उ) | ४६.२६ | पुनस्तेनैवयास्यं (उ) | २२६.५८ |
| पुनः प्राह प्रियां भायां (भू) | १२.३६ | पुनरावृत्ततत्रैवसर्व- (उ) | २१७.३६ | पुनर्नोपकृतभक्त्या (पा) | १०१.४१ | पुनः शलाकास्वस्थान (उ) | २११.३३ | पुनस्त्वैकादशीबृहि (उ) | ६३.२ |
| पुनः प्रियाविद्योमे (पा) | ६६.८४ | पुनरुचै महात्मानं (भू) | २६.२ | पुनर्भूतिः पुनर्हानि (भू) | १२०.२४ | पुनः शृणुध्वंसप्ताहं (उ) | १६७.६८ | पुनः स्वरूपीदैत्यैर्द्रः (भू) | १०३.६७ |
| पुनः प्रोवाचतांभायां (भू) | १३.३५ | पुनरुत्पाद्यसत्पुत्रं (उ) | २००.३५ | पुनर्भूः सहलक्ष्म्याच- (सु) | ३७.११० | पुनश्चदीपवदित्वं (पा) | १०६.५६ | पुनातिभुवनं विप्रा (स्व) | ५०.१३ |
| पुनः प्रोवाचभगवान् (उ) | ११८.१ | पुनरुवाचसादेवी तमेवं (भू) | १०३.७२ | पुनर्बद्धः पुनस्त्यक्तः (उ) | ४६.२२ | पुनश्चद्रुःखितो राजा (पा) | ११०.४ | पुनात्यसप्तमंचैवकुलं (स्व) | २७.३१ |
| पुनः प्रोवाचभगवान् (उ) | १२१.२६ | पुनरेवगुरोबृहि (क्रि) | १७.१ | पुनर्ब्रह्मदिनातेतुजायं (सु) | ६५ | पुनश्चपरिवभ्रामरयः (पा) | २७.१६ | पुनात्यासप्तमंचैवकुलं (स्व) | २७.४३ |
| पुनः रुच्यंसमास्थापया- (पा) | २७.२२ | पुनरेव प्रवक्ष्यामि (क्रि) | १६.२ | पुनर्मन्वतरशतं (क्रि) | १६.४२ | पुनश्चयज्ञभागा (उ) | २३८.१५१ | पुनात्यासप्तमंचैवकुलं (स्व) | ३२.२८ |
| पुनरप्यत्रनिमज्जय (उ) | २४५.३०३ | पुनरेवावबोत्तुष्टो (उ) | ३३.२३ | पुनर्मवोविशेषेण (स्व) | ५६.१४ | पुनश्चवर्षान्तरेप्राप्ते (पा) | ११६.१६१ | पुनीहिमांमहाबाहप्रस्मिन् (पा) | ६७.४६ |
| पुनरप्यवनीभार (उ) | २५२.६० | पुनर्गच्छविवेकं हि (भू) | ८.६१ | पुनर्मा भोजयामास- (भू) | ५१.४६ | पुनश्चसारिकावाक्यं (पा) | ८३.२४ | पुंस्कोकिलगणावक्ष (सु) | १५.४८ |
| पुनरहं पुनर्ववाः पुनस्ते- (भू) | २२.४३ | पुनर्गृहीत्वादध्याज्यं (उ) | २४५.२६२ | पुनर्माघेचसंप्राप्ते (सु) | २२.१२६ | पुनश्चहयमेधादिकार्यं (पा) | १२.३२ | पुमान्जयतिसंतत्या (उ) | २०१.२३ |
| पुनरहं पुनविदा (भू) | २२.४३ | पुनर्गृहं गता राजन् (भू) | ४१.४१ | पुनर्यस्मात्प्रनीयन्ते (उ) | २२६.५८ | पुनश्चित्तां प्रपन्नोऽसौ (भू) | २०.३६ | पुमान्वास्त्रीजनोवापि (उ) | २१६.२२ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १०.२६ | पुनर्जन्म प्रवक्ष्यामि (भू) | १६.१६ | पुनर्यस्यसितस्थानं (उ) | २८.६ | पुनश्चिन्तां समापेदे (भू) | ७७.३० | पुमान्संचयशोलांषि (क्रि) | ४.३२ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्जलंधरोवेगाद् (उ) | १०४.८ | पुनर्योवनमासाद्य (स्व) | ६१.८८ | पुनश्चोवाचगिरिजादेवतां (सु) | ४४.३६ | पुमांस्तस्मात्प्रपत्ते (उ) | २५३.१७८ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्दिनानिहोतव्यं- (सु) | २७.५० | पुनर्लभ्याश्मेसर्वं (क्रि) | ६.६४ | पुनः संजामवात्यैवं (पा) | ५६.२६ | पुमान्स्थितोयः पुरतो (भू) | ८.७७ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्दुःखांशं पृच्छी- (भू) | २६.६० | पुनर्वक्ष्यामिभिप्रेन्द्र (क्रि) | ८.१ | पुनः संभुज्यतेयेन (उ) | २२६.५५ | पुरंभगवतोयाति (क्रि) | ६.७६ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्दुःखां महावृक्षः (भू) | २६.७० | पुनर्वर्षति पर्जन्यः (भू) | २६.३६ | पुनः सर्वविचार्यैवं (भू) | ३८.६ | पुरंमहोदयं नाम (भू) | १११.४ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्देत्यसमायातं (उ) | ६८.६ | पुनर्वर्षति पर्जन्यः (भू) | २३.१० | पुनः साक्षीऽतोचक्रित (सु) | ४३.४३७ | पुरंवाप्रतिमंतेन निवेन- (सु) | ३७.१७ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्नलभतेजम् (क्रि) | ११.१५६ | पुनर्विचार्यतिमदुद्धमा (उ) | ४१.२२ | पुनस्तस्माद्विनिगंत्य (उ) | २०६.३८ | पुरतः पतितदेवी (उ) | २४२.२०८ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्नीतानिसंस्कार (उ) | ३२.५५ | पुनर्विमानमाकृष्ट (सु) | ३४.३४५ | पुनस्ताएवराक्षस्यो (उ) | २०६.५८ | पुरतः प्राहसगणस्ततः (उ) | १०.३८ |
| पुनरागत्यधरणी (क्रि) | १४.३० | पुनर्नृपत्वमापन्नोबल- (सु) | १८.४५१ | पुनर्विष्णुपुरंगत्वा (क्रि) | १४.३१ | पुनस्तान्दानवान्ब्रह्मावाक्य (सु) | १८.६१ | पुरतोदमनवीक्ष्यहयने (पा) | १२४.८ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

२७८

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|---------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| पुरतो लुब्धकायाति (भू) | ४३.२१ | पुराकृतयुगे राजामनु- (सृ) | ३७.५ | पुराणजैतुकाकुत्स्थ (पा) | ११५.३ | पुराणानिचक्षाश्त्राणि (उ) | २३५.३० | पुरात्रेता युगे विप्र (ब्र) | २०.११ |
| पुरतोवासुदेवस्य (पा) | ७६.३६ | पुराकेनमहाभागलोके (उ) | १२५.३ | पुराणतत्त्ववेत्तारंलक्ष- (पा) | १०६.२२ | पुराणानितयाप्येवं- (पा) | १०४.१६४ | पुरात्रेता युगे शूद्रो (ब्र) | २३.१७ |
| पुरतोवासुदेवस्य (उ) | ३७.६७ | पुराकोलाहलेयुद्धे (उ) | १५८.२ | पुराणपठनं नित्यं (उ) | १७४.६४ | पुराणान्यागमास्तस्य (पा) | १०६.४५ | पुरात्वंब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) | १३.१३६ |
| पुरतोवासुदेवस्य (उ) | ६५.१४ | पुरागंध्रेणकैनापि (उ) | १८५.६५ | पुराणपुरुषः कामी- (उ) | १०.२६ | पुराणेश्रोतवर्मं च (भू) | ४१.६ | पुरात्वंब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) | १६.७१ |
| पुरंदरपुरेतस्यो सुभगा (क्रि) | ८.६३ | पुरागोतमदग्धोयं- (सृ) | ३७.१२१ | पुराणप्रक्रमदिनेयत् (पा) | ११५.२७ | पुराणेषुतुसर्वेषु (उ) | १६३.३ | पुरात्वंभूपतिर्जनः (उ) | १२६.१६६ |
| पुरप्राने वनं दिव्यं (भू) | १११.११ | पुराबंडकनामाहंता (उ) | २११.४२ | पुराणप्रक्रमेदेयं सत्त्वे (पा) | ११३.३४ | पुराणेषुप्रसिद्धानि- (स्व) | ३०.१२ | पुरादग्धेषुलोकेषु- (सृ) | २६.२ |
| पुरस्तत्र सहस्रं तु (गृ) | ३६.७५ | पुरावरितपुष्पा (पा) | १००.१२ | पुराणमथवानित्यं- (पा) | ११४.४३५ | पुराणेषुप्रतानित्यं (उ) | ८२.८ | पुरादग्धवाप्रजानाथः (पा) | २००.१४ |
| पुरस्ताद्दिगुणस्तेषां- (स्व) | ६.२० | पुराचैकार्णवेधोरे- (पा) | १०५.१८३ | पुराणमेवंश्रोतव्यं (पा) | ११५.३५ | पुराणेष्वधिकारोमे (सृ) | १.३६ | पुरादेवासु रेयुद्धेर्देत्यं (उ) | १५५.६ |
| पुरस्तात्प्रकृतंस्तीर्थं (उ) | १२६.२१२ | पुराचैत्रयोद्वेदे (उ) | ४६.६ | पुराणवक्तासर्वमादा (पा) | ११४.४०४ | पुराणेष्विवतिहासोयं (सृ) | २७.४ | पुरादेवैर्महादैत्यैः कृत्वा (भू) | ११६५ |
| पुराकतपेसमुत्पन्ना (स्व) | ५३.५४ | पुराजन्मनिर्वैद्योयं (उ) | ५५.२६ | पुराणवक्त्रे दातव्यं (पा) | ११७.२४१ | पुराणेष्विविधिसचैव (सृ) | ३३.६२ | पुरादेवासु रेयुद्धेहने (सृ) | ७.२ |
| पुराकथां द्विवदतां विप्राणां (पा) | ६२.८८ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणवाचकं ब्रह्मन् (ब्र) | ४.५३ | पुरातनं प्रवक्ष्यामि देवर्षे- (स्व) | १०.४ | पुराद्विजोर्मकणसूनु (पा) | ११७.२५ |
| पुराकमलजातस्य (सृ) | १६.५२ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणवाचकं विप्रम् (ब्र) | २५.३३ | पुरातनव्रतं ह्येतत् (उ) | ४४.२ | पुरातनागपुरे रम्ये (उ) | ४७.६ |
| पुराक रिचद्विजश्रेष्ठो (ब्र) | २२.२८ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणविमुक्तो नैव (पा) | ११५.४७ | पुरातनव्रतं ह्येतत् (उ) | ४४.४ | पुरातनागपुरे रम्ये (उ) | ४७.६ |
| पुराकलियुगे रामवत्तं (पा) | ११४.४०८ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणशास्त्रस्मृतयः (उ) | ७१.३०३ | पुरातनस्नेहयुतो (उ) | ४३.४५ | पुरापरंपरां वकितपुराणं- (सृ) | २.५३ |
| पुराकस्य द्विजस्यापि (उ) | १७४.११ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणश्रवणं चैव (ब्र) | ५.१२ | पुरातने भवेकोयं (उ) | १८४.८३ | पुरापुराणपुरुषः कदा (सृ) | २२.२३ |
| पुराकचित्पुत्रे शूद्रो (ब्र) | २६.१५ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणश्रवणेश्रद्धा (ब्र) | २५.२८ | पुरातीर्थप्रमर्गेन (पा) | ६४.११ | पुरापूर्वं भोवत्स (उ) | २०.३ |
| पुराकोकटमं जैवैवैवै (पा) | २०.४५ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणसप्तकसांढं (उ) | १६८.६४ | पुरात्रमहिषो बृद्धो (उ) | १५२.३४ | पुरावृहस्पतेर्भाषा (उ) | २१५.१६ |
| पुराकृतयुगस्यासीदगो (सृ) | ८.३ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणस्य नाममाली (स्व) | ६१.६४ | पुरात्रेता युगे पापी (ब्र) | १७.१४ | पुराब्रह्मर्षिजः शक्र- (सृ) | ४१.७१ |
| पुराकृतयुगे पार्थमु- (उ) | ३८.५० | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणस्य नाममाली (स्व) | ६१.६४ | पुरात्रेता युगे प्राप्ते (पा) | ३६.८ | पुराभगवता प्रोक्तं (पा) | २०.३६ |
| पुराकृतयुगे राजन्- (सृ) | ४५.२ | पुराजन्ममकमुत्पदा- (पा) | ६३.१३ | पुराणस्य नाममाली (स्व) | ६१.६४ | पुरात्रेता युगे राजा (पा) | १११.४ | पुराभागीरथीतीरे (स्व) | १०.१६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| पुरामहर्षयः सर्वदंड (उ) | २४५.१६४ | पुरासत्ययुगेदेवि (उ) | ७१.६० | पुरानी द्वितीयोद्भूत (भू) | ६४.१३ | पुरघोत्तममाहात्म्य (क्रि) | १८.५३ | पुरोहितमुवाचेंदवसिष्ठं (सु) | ३४.३३४ |
| पुरामहर्षयः सर्वयज्ञ (उ) | २२३.११ | पुरासीत्सर्वगोनाम (क्रि) | ३.५६ | पुरणंकोटीदेवीतच्चाप्य (सु) | ४३.४३४ | पुरघोत्तमसंज्ञचपश्यन् (पा) | २२.४३ | पुरोहितसतंष्टदा (स्व) | १०.२० |
| पुरामुनिगणाः सर्व- (स्व) | १४.४ | पुरासीहंडकोनाम्ना (त्र) | २.६ | पुरणं तु समाश्रित्य (भू) | ५७.३५ | पुरघोयजड्येतत्परमं (सु) | ३६.७७ | पुरोहितमुत्तिप्र (उ) | २४७.२२ |
| पुराममविनोदाय (उ) | १६२.१६ | पुरासीद्वतलभोनाम्ना (त्र) | ११५.४५ | पुरणं पुष्कराक्षं तु (भू) | ८७.१६ | पुरघोवह्निस्त्रिकाशः कपाले (सु) | १४.२५ | पुरोहिनादयः सवः (उ) | ४१.२३ |
| पुरामेब्रह्मणाप्रोक्तं (पा) | ७५.२५ | पुरासीद्वद्वापरेब्रह्मन् (त्र) | ६.१० | पुरणं धीवनोपेतं सर्वजं (भू) | ७७.८४ | पुरघोवायवा नारी यथा (भू) | १२.४५ | पुलकाकुलसर्वांगः (पा) | ७०.५६ |
| पुरायदाभवधुद्वंशत्र (उ) | १५३.६ | पुराहंतत्त्वविस्वायांता- (पा) | ३५.३५ | पुरषः कश्चिदायातस्त्वय- (भू) | ३७.५ | पुरघोहं भविष्यामि (भू) | ५३.२१ | पुलकाकितसर्वांग (उ) | २४५.२३४ |
| पुरारयंतरेकल्पेपरिपृष्टो (सु) | २३.२ | पुराहृदिजगद्गर्भब्राह्मण (उ) | २१४.५८ | पुरषत्वैकृतंसर्वं (सु) | ८.८८ | पुरहूतश्चपुरतो लोकपालः (सु) | ४१.२ | पुलकाकितसर्वांगः (उ) | २४६.६० |
| पुरारयंतरेकल्पेराजासी (सु) | २०.४ | पुराहोमोहिनीनामवेश्या (उ) | २२१.१४ | पुरषसूक्तेनद्योनिर्यं (उ) | १२४.१७ | पुरेवाराजशार्दूलकुरुते (सु) | ३५.५३ | पुलकांकुरमुखांगी (पा) | ७४.१४६ |
| पुराराजादीननाथो (त्र) | १२.३ | पुराहनुमतात्रयतपरस्त (उ) | १६६.८ | पुरषस्यकाह्मियदा (भू) | ८.३५ | पुरैकदामुनिश्रिष्ठ (त्र) | ३.२ | पुलस्त्यपुत्रोदैत्यैः (पा) | ७.३४ |
| पुराराजामोचनथातो (उ) | ४४.५ | पुराहमभवविप्रः (उ) | २०४.८७ | पुरषस्यतनोरस्यसर्वं (उ) | २२६.८१ | पुरैश्चविद्याकारैरम्यं (स्व) | ३.१४ | पुलस्त्यपुलहर्चैव (उ) | २३०.७ |
| पुरारुद्रगदैत्यैः (उ) | ६६.४ | पुराहिमवतः सुनुमं (उ) | ५.१८ | पुषस्यातिपुत्रत (उ) | १३.४६ | पुरोडाशांश्चक्षुश्चै व(स्व) | ५८.११ | पुलस्त्यः पुलहर्चैव (उ) | ७७.५७ |
| पुरारम्यंतरेकस्ते (उ) | २५.३ | पुराहिमुनिकन्याभि (पा) | ११४.११२ | पुष्याणांवल्लभत्वं (भू) | १०३.२६ | पुरोधसंघर्षमर्जं (पा) | ६२.५८ | पुलस्त्यस्यमुतो (उ) | २४२.१४ |
| पुरालीलावतीनाम- (सु) | २१.८ | पुराहिरण्यकशिपु (उ) | १६६.११ | पुष्याः पिशुनाश्चैव (भू) | ६६.५ | पुरोधसावसिष्ठे (उ) | २२२.७५ | पुलिदभिल्लकोलंश्च (भू) | १०१.२३ |
| पुरावसंधराष्ट्रासीत् (त्र) | ३३.१२ | पुरीचंद्रावतीनाम्ना (उ) | ३८.६६ | पुष पायपुराणयब्रह्मवाक्या (सु) | १.४० | पुरोधसोमंत्रिणश्चदैवज्ञो (सु) | ३८.४० | पुलिदः शत्रुघोषाणि (क्रि) | १५.२० |
| पुरावतीपुरेवासीविप्र (उ) | ११३.१ | पुरीत्यवधोष्पारविवंश (पा) | ७.२३ | पुष्याष्टातिष्ठत्वा (सु) | २.१०५ | पुरोधो ऋषिलोकेशः (सु) | १५.३१७ | पुलोमाकलाचाकैव (सु) | ६.५५ |
| पुरावृषभवेधोक्ते प्राप्ते (उ) | १२२.७६ | पुरीद्वारवतीनामसांप्रतं (सु) | २३.१० | पुरवः पुण्यकर्मस्यै (भू) | ११७.३० | पुरोधायः कुलाचार्यो (उ) | २१०.५८ | पुलकसलोहनिगडैर्व- (पा) | २०.६४ |
| पुरावृषेणगोत्रोक्तं (उ) | १४४.१४ | पुरीसंयमनीनिर्यु (उ) | २१०.३२ | पुरवोः पुण्यकर्मस्यै (भू) | ११७.३० | पुरोधस्तस्य चैवास्त्र (भू) | ६४.३७ | पुलकस्यचदासत्वं (उ) | ५६.७ |
| पुरावर्द्धमंकोराजापिता (सु) | ३६.८५ | पुरीसर्वगुणयुक्तां (क्रि) | ५.८८ | पुरवोत्तममासस्य (उ) | ६२.२ | पुरोधस्तृशनाप्राहदा (सु) | ३०.१४६ | पुष्करंतुसमासाद्य (सु) | १४.१६६ |
| पुराव्यासेनमुनिना (पा) | ११५.७२ | पुरषसूक्तेनवाक्युतां (पा) | १०४.६४ | पुरवोत्तममासस्यया (उ) | ६२.२२ | पुरोहितंमतिदान (उ) | १५१.३६ | पुष्करनामविख्यातं (सु) | १६.२५ |
| पुरासीन्वक्रिकोनाम (क्रि) | १६.६ | पुरषवा महावीर्यविप्र (भू) | ६४.४३ | पुरवोत्तमस्य माहात्म्य (क्रि) | १८.२ | पुरोहितंमुख्यतमं कृत्वा (सु) | ३४.४०२ | पुष्करनामवैतीर्यं (सु) | ११.५२ |

श्रवणमहापुराणम् ॥ श्लोकांशुक्रमणी

२०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---|--------|---------------------------------|-------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|
| पुष्करप्रथमतीर्थं (उ) | ३०.६६ | पुष्करेचान्नदानेन प्रीताः (सु) | १७.२७३ | पुष्कलपंचभिर्गणैस्ता (पा) | २७.२५ | पुष्कलोपिमहावीर (पा) | ५२.४८ | पुष्पनद्धसुकेशास्तु (पा) | ११४.२१७ |
| पुष्करयःस्मरेत्प्राज्ञः (उ) | ११८.४६ | पुष्करेचैवगंगायां (उ) | १४४.७ | पुष्कलपालयनिज- (पा) | ११.५१ | पुष्कलोलबाहुना धृत्वा (पा) | ४७.१५ | पुष्पपत्रयंचफालगुन्या- (सु) | २०.५८ |
| पुष्करक्षेत्रमाहात्म्यं (उ) | ११७.१३ | पुष्करेण महात्मासौ (भू) | ६१.६ | पुष्कलपालयित्वाहं (पा) | ११.५४ | पुष्कलोवाक्यमाकर्ण्यं (पा) | ६१.२७ | पुष्पप्रसन्नवणोपेतं (उ) | १४.४७ |
| पुष्करस्थेनवैपूर्वब्रह्मणा (सु) | ३७.१५५ | पुष्करेतुकुरुक्षेत्रेब्रह्मावर्ते (स्व) | २६.२ | पुष्कलंश्चंपकं दृष्ट्वा (पा) | ५१.४४ | पुष्कलोवीरभद्रंतुचंडं (पा) | ४५.३५ | पुष्पमंत्रविधानेनसोपि (सु) | २२.१०३ |
| पुष्करस्तानमात्रेण (उ) | ६४.३० | पुष्करेतुतदारामोऽनर्पयद (सु) | ३३.११६ | पुष्कलश्चंपकंप्राह (पा) | ५१.१६ | पुष्कलोव्रजसंज्ञंतुसमाधत्त (पा) | २४.५३ | पुष्पमालान्वितंकुयद्विब्रह्म (भू) | ४०.२४ |
| पुष्कराणितथाश्रीणि (सु) | ३३.३७ | पुष्करेतुमहाक्षेत्रेयवसति (सु) | १५.२३३ | पुष्कलः स्वगृहंरम्यं (पा) | ११.७६ | पुष्कसोपितदाप्राप्ता (उ) | १५४.५२ | पुष्पमालापुष्पमेकं (क्रि) | १०.५० |
| पुष्करादीनितीर्थानि (उ) | १०५.१४ | पुष्करेतुमुनाभीष्मब्रह्म- (सु) | १५.२५६ | पुष्कलं स्वीयपदयो (पा) | ६५.४५ | पुष्पंशाकोदकंकाष्ठम् (स्व) | ५५.७ | पुष्पमालाप्रशोभांगो (भू) | ६७.६ |
| पुष्करारण्यमासाद्य- (सु) | ३३.८१ | पुष्करेतुविशेषेणपूतास्पृत (सु) | १८.२३३ | पुष्कलः पृष्ठतस्तस्य (पा) | २६.२० | पुष्पंकुतुततः प्राप्तंगांधा (सु) | ३८.२४ | पुष्पमालाभिदिव्याभि (भू) | १०३.११३ |
| पुष्करालोकनादेवनरः (सु) | ३४.२३३ | पुष्करेतुष्करदानंवास- (सु) | १६.४६ | पुष्कलः प्रत्युवाचा (पा) | ६१.३४ | पुष्पकादवरुद्याशुनय्या (पा) | ३.२४ | पुष्पमूलफलैर्वपि (स्व) | ५८.२५ |
| पुष्करिण्योनविहिता (उ) | १६२.४३ | पुष्कदेपिसरस्वत्यां- (सु) | १८.२३० | पुष्कलस्तत्संज्ञात्प्राप्य (पा) | ३४.२३ | पुष्पकेशीवमानेनवायु (स्व) | १८.८७ | पुष्पवत्यामुपसृश्य (स्व) | ३६.१२ |
| पुष्करेचकृतायात्रादृष्ट्वा (सु) | १७.३१४ | पुष्करेपुमहातीर्थे (सु) | ७.३ | पुष्कलस्तद्व्यंशं (पा) | २७.११ | पुष्पकेशचंपकंरद्विः पाटलैः (भू) | ४३.१४ | पुष्पवाहनइत्याहुस्तस्मात्तं (सु) | २०.८ |
| पुष्करस्य च नंशयाः (सु) | १६.१ | पुष्करेपुमहाभागदेवाः (स्व) | ११.२६ | पुष्कलस्तुरंगेपूर्वपातित (पा) | ६४.२ | पुष्पतैलं दिव्यवस्त्रम् (न्र) | ११.६६ | पुष्पावृष्टिततश्चक्रस्तयोह- (भू) | ६०.२४ |
| पुष्कराणिप्रसिद्धानि (सु) | १८.२४१ | पुष्करेपुमहाराजानात् (सु) | ३३.३६ | पुष्कलस्यप्रतिज्ञांतां (पा) | ३३.४० | पुष्पंददातियन्मर्त्यो (क्रि) | १४.१० | पुष्पावृष्टिरभूतस्मिन् (क्रि) | २१.६२ |
| पुष्करारण्यमध्यस्थो- (सु) | १५.२७० | पुष्करेषु यथा हंसंस्तथेयं (भू) | ४६.२० | पुष्कलस्यलवोवीरो (पा) | ६४.३६ | पुष्पदंतमहाभीम (उ) | १२.१६ | पुष्पावृष्टिस्तुमहती (उ) | १६८.३६ |
| पुष्करारण्यमासाद्य- (सु) | १८.२१८ | पुष्करेस्तानमात्रेणतद (सु) | ३४.४१८ | पुष्कलेनक्षणाग्नीतो (पा) | ४३.११ | पुष्पदंतंशैलरोमामात्य (उ) | १२.३ | पुष्पसेनायपुण्या (उ) | ६२.५० |
| पुष्करारण्यमासाद्यब्रह्म (सु) | १५.२११ | पुष्करेस्तानमात्रेणसर्वमेत (सु) | १६.४२ | पुष्कलेनमहत्कर्म (पा) | ४३.१६ | पुष्पदंतस्तदानत्र (उ) | १२.२२ | पुष्पहस्तंययोहस्तं (क्रि) | २१.१२ |
| पुष्करारण्यस्थोसीयत्र (सु) | ११.११ | पुष्करेहंसुरश्रेष्ठोगयायां (सु) | ३४.१३१ | पुष्कलेनयुतोराजा (पा) | ६५.८ | पुष्पदंतस्त्वपुत्रो (उ) | ४३.१४ | पुष्पाक्षताद्भिर्देवंस- (सु) | २१.२१८ |
| पुष्करारण्यसदृशतीर्थं (सु) | १५.२७३ | पुष्करैः पथसंकाशं (स्व) | ६.३७ | पुष्कलेनपतितेराजा (पा) | ५२.४६ | पुष्पदोमनुजोविप्र (क्रि) | २०.१४१ | पुष्पाणांनुसहस्रेण (उ) | १२८.१६८ |
| पुष्करेचकुरुक्षेत्रेब्रह्मा (उ) | १२५.१५४ | पुष्करो अर्धतीर्थस्तु (भू) | ६२.१२ | पुष्कलोजयमाप्यैवरण- (पा) | २४.५८ | पुष्पवृषपादिनैवेद्यैः (उ) | ६६.६ | पुष्पाणिचविचित्राणि- (सु) | ४३.४२० |
| पुष्करेच प्रयागे च (उ) | १६३.२६ | पुष्कलंतुरयेस्याप्य (पा) | ४३.६१ | पुष्कलोपिचकारात्र (पा) | ४२.५७ | पुष्पवृषपादिभिश्चैव (उ) | ६३.१६ | पुष्पाणिचसुगंधी (उ) | २५.२० |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|-----------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| पुष्पादिकंकलंगं (उ) | १५४.५३ | पूजाफलैर्नालिकरैः (उ) | ४४.३० | पूजयामासविधि (उ) | २४०.१० | पूजयित्वा विधानेन (पा) | ६०.५० | पूजयेद्गुलीयैश्चकटकैः (सु) | २३.५३ |
| पुष्पाभावेहरिर्नैत्रफला- (पा) | ११०.३५ | पूजकपृष्ठतोक्षेन्नामि (स्व) | ५०.२८ | पूजयामासविधि (उ) | २४१.१८ | पूजयित्वाविधानेन (उ) | २४३.१४६ | पूजयेदंनिधिनित्यम् (स्व) | ५८.५ |
| पुष्पार्थफलभोगार्थं (भू) | १२३.२८ | पूजनकुस्तेनित्यं (उ) | १५४.७१ | पूजयामाससततं (क्रि) | २०.३६ | पूजयित्वामुख्ये (उ) | १५८.८ | पूजयेद्देवदेवं (उ) | ४०.११ |
| पुष्पिताग्रान्महाशालान् (सु) | ४५.४७ | पूजनकुस्तेभक्त्या (उ) | १३५.८८ | पूजयाराधितोदेव (उ) | ४२.३७ | पूजयित्वाहमन्नैस्त्वा (उ) | ६६.५५ | पूजयेद्देवदेवं (उ) | ६५.१० |
| पुष्पितैः कणिकारैश्च (भू) | ७७.१४ | पूजनकुर्वतेयेवते नरा (उ) | १५१.१७ | पूजयाहस्यतेभक्ति (उ) | १३२.३६ | पूजयित्वाहर्भक्त्या (पा) | ६५.६१ | पूजयेद्ब्राह्मणास्वद्वन्द्व- (सु) | २८.४ |
| पुष्पितोऽवनेफुल्लकटहार (सु) | २३.७६ | पूजनप्रथमतस्य (उ) | ७२.७ | पूजयित्वाचदेवेशं (पा) | ८६.३७ | पूजयित्वाहर्नित्यभूमौ (पा) | ६६.१२६ | पूजयेद्भक्तिनोविप्र (अ) | २१.१५ |
| पुष्पैर्द्रुपैश्चनैवेद्यं (उ) | १४७.६ | पूजनमनुजैः सम्यक् (उ) | १३१.१० | पूजयित्वाजन्मश्रीमन्त्रेण (सु) | १७.२३५ | पूजयित्वाहृषीकेशं (उ) | ५६.३ | पूजयेद्योनरोधौमां (पा) | २०.१८ |
| पुष्पैः सदाद्यमानाचदेवी (पा) | ६६.६७ | पूजनसर्वदेवानां (उ) | २७.२४ | पूजयित्वातनस्तस्या (पा) | ६५.१३६ | पूजयित्वाहृषीकेशं (उ) | ५८.२६ | पूजयेद्भक्तिनासम्यगं (उ) | २२.८३ |
| पुष्पोच्चयोज्ज्वलंगस्तं (सु) | १५.८६ | पूजनाद्विनसदेहो (उ) | १४४.२५ | पूजयित्वा तथा सर्वान् (उ) | ११२.३५ | पूजयिष्यतिनित्यं (उ) | १८.१२० | पूजयेद्द्विधनासम्यगं (उ) | २५.३३ |
| पुष्पोद्ग्रथितवर्मिला- (उ) | २२०.५३ | पूजनीयः प्रयत्नेन (उ) | ८४.१६ | पूजयित्वातथासर्वान् (उ) | ११६.४६ | पूजयिष्यतिमुप्रातारुद्रे- (सु) | १७.२६५ | पूजयेद्युयथायोग (स्व) | ६१.४८ |
| पुष्पांघानानिर्मयाणि (पा) | ६५.११३ | पूजनीयाविशेषेण (स्व) | ५१.३८ | पूजयित्वा तथा सर्वान् (उ) | १२३.३५ | पूजयेच्चयथाशक्त्य (उ) | १४६.७ | पूजाकालमहाविष्णो (क्रि) | १४.३६ |
| पुष्परत्नैर्धुतः कार्योविद् (सु) | २१.१७५ | पूजनीयोहरिनित्यं (उ) | २२४.२८ | पूजयित्वातुदेवेश (उ) | ५७.२० | पूजयेच्चविदुष्टात्मा (भू) | १८.१८ | पूजाकालेद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १४.२८ |
| पुष्पादीयस्त्रयोदश्यां कृत्वा (सु) | २०.५३ | पूजयतिहरिकेशिन्नाना (क्रि) | २३.६ | पूजयित्वातुदेवेश (उ) | ११६.४४ | पूजयेच्छंकरं देवं (भू) | ११६.१६ | पूजाकालीश्वर्यभक्तैः- (पा) | १०४.३६ |
| पुष्पादूर्णातयादा- (पा-उ) | २२.५ | पूजयतिहरिकेशिन्नाना (क्रि) | २३.६ | पूजयित्वातुदेवेश (उ) | १२३.३३ | पूजयेच्छंकरं देवं (भू) | २२.७१ | पूजादानवर्जतेस्तीर्थे (उ) | १३२.१०७ |
| पुष्पेतुच्छं दसायकुयार्द (स्व) | ५३.६१ | पूजयतिहरियेच (अ) | १.२७ | पूजयित्वा दिनातेचकृत्वा (सु) | २८.६ | पूजयेज्जगतामीशं (उ) | २५३.१४७ | पूजादिनाब्रह्मलोक (पा) | ६५.११५ |
| पुस्तकं चापि संपूज्य (उ) | २८.२६ | पूजयामासतंप्राप्त (उ) | २४४.४७ | पूजयित्वाविकां भक्त्या (उ) | १८५.३२ | पूजयेज्जगदीशस्य (क्रि) | १०.८ | पूजाफलं नाप्नुवति (क्रि) | १३.५४ |
| पुस्तकं चापि संपूज्य (उ) | १२४.६४ | पूजयामासदेवेशं (क्रि) | २०.३८ | पूजयित्वा द्विजान्देवा (सु) | ४६.६६ | पूजयेत्तदेवेशं (उ) | ६५.७ | पूजामंत्रप्रसादेन तस्मान्- (सु) | २१.१८० |
| पुस्तको किल रत्नोन्मिश्रं जीवं (सु) | १६.७१ | पूजयामासदेवेशं (पा) | ११७.२२८ | पूजयित्वा द्विजान्श्रेष्ठो (सु) | ४६.१२२ | पूजयेत्स्वनाग्नातुक (सु) | ३४.२८५ | पूजां करोष्वियः सम्यक् (उ) | ८२.१८ |
| पुगलं दानघोषद्वय- (पा) | ११४.६३ | पूजयामासदेवेशं (उ) | ३०.६८ | पूजयित्वा ध्यायाम्यं (उ) | १५१.६४ | पूजयेत्स्वनाग्नातुक (सु) | १७४.८० | पूजां कुर्वति यत्प्रसाते (उ) | १३५.११२ |
| पुगलानि नागपत्राणि (उ) | २५.२२ | पूजयामासमां देवि (उ) | २४२.२२ | पूजयित्वा विधानेन (पा) | ८०.४१ | पूजयेत्सर्वदेवेशं (क्रि) | ११.६२ | पूजां कुर्वति यत्प्रसाते (उ) | ८२.११ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|
| पूजाकुर्वन्तियेविप्रास्ते (उ) | ८२.१२ | पूजितोऽपिनतुष्टः (क्रि) | ११.१६४ | पूरणार्थं समुद्रस्य (सृ) | १६.१८५ | पूर्णेचतुर्दशेवर्षचम्यां (पा) | ३६.७४ | पूर्वरामस्यचरितं (उ) | २४२.१३ |
| पूजातवात्नामपिबोधे- (क्रि) | १२.८३ | पूजितोदेवदेवेशो (पा) | ६०.२४ | पूरयन्मार्गैर्भूमि (उ) | ७.७६ | पूर्णे न विधिना राजन् (उ) | ६६.४२ | पूर्ववर्षसहस्रतुदधारोदर (सृ) | ४२.५१ |
| पूजावैधानिकी (सृ) | ३४.२६८ | पूजितोयैर्नरैः सम्यक् (उ) | ८३.२२ | पूरयस्वमहाविप्रसमुद्र- (सृ) | १६.१८० | पूर्णं धुधवलाकांतिः (उ) | १५१.७ | पूर्वस्थिताकाभवती (क्रि) | २३.२६ |
| पूजासनुष्ठतंकु- (पा) | २०.४२ | पूजोपहारेचकृते अथवर्ग- (सृ) | १३.३३६ | पूरयामासमरे (उ) | १८.८० | पूर्णं दुहित्वाभ्युदयं (पा) | ६६.६६ | पूर्वस्नानं प्रकुर्वीत- (पा) | ६५.७४ |
| पूजासोऽद्रुमोत्पत्ती (क्रि) | ११.१६७ | पूज्यते सततं तत्र (स्व) | ४३.३७ | पूरयामास विशिखैः (उ) | १८.८७ | पूर्णं नितान्तसंतप्ते (क्रि) | २३.१३६ | पूर्वकर्मविपाकेन (उ) | ८८.२४ |
| पूजायं मत्पहंगच्छे- (पा) | ११४.२७७ | पूज्यते ब्राह्मणालाभे (स्व) | ५७.३७ | पूरयित्वा कर्मपात्रं (उ) | २१४.५ | पूर्णं ननोरथस्ते (पा) | ६६.११७ | पूर्वकर्मविपाकेन (उ) | १६६.२१ |
| पूजाविधिवुपुच्छामि (उ) | ३६.३ | पूज्यं वपुस्तवसदा- (सृ) | ४६.५२ | पूरितं च कुलतस्याः (सृ) | ३४.१८६ | पूर्यते पन्नगाश्चैव (क्रि) | २३.१३३ | पूर्वकर्मविपाकेन (उ) | ७७.५६ |
| पूजाविधिप्रवक्ष्यामि (उ) | ३६.४ | पूज्यः स एव भगवान्- (पा) | १७.६७ | पूरं पुत्रं महाराज स्म (भू) | ८३.२७ | कूर्वं कृन् हि यच्छ्रेयो (भू) | ८१.२६ | पूर्व कर्मविपाकेन (ध) | १०६.११ |
| पूजिततुजगत्सर्वं (उ) | १३१.१४ | पूज्यमानो वसेद्द्विद्वान्मा (सृ) | २१.१६३ | पुरोधास्तस्य चैवास्ति (भू) | ६४.३७ | पूर्वं कोचरशोनाम (क्रि) | २३.१ | पूर्व कल्पितमारुह्य (उ) | ७.६१ |
| पूजितं मधुपक्षिर्भक्त्या (भू) | ६४.१८ | पूतनाजृम्भकेभ्यश्च (उ) | १२८.२८६ | पूरोक्षं प्रवक्ष्याम (सृ) | १२.८७ | पूर्वतुन्दनात्कृत्स्नं याव- (सृ) | १५.१५० | पूर्वं कले महाभागाः सुक्षेत्रे (भू) | ११.५ |
| पूजितः सर्वकामैश्च (भू) | ६७.४ | पूतनादिबधस्तत्रय (पा) | ६६.५३ | पूर्णचन्द्रोपमं च (सृ) | १०.८३ | पूर्वं च नगुगेविप्र (क्रि) | १६.५ | पूर्वं जन्म कथाराजन् (क्रि) | २१.६० |
| पूजितानुज्ञावाय (पा) | १०४.१४१ | पूतनारिमुष्टिकारि (क्रि) | १७.११५ | पूर्णब्रह्मसुखैस्वयं (पा) | ६६.६ | पूर्वं च नगुगेविप्रो (व्र) | ३.१६ | पूर्वं जन्म कृतं कर्म (पा) | ८६.३८ |
| पूजितः तेन मामत्रय (उ) | १७८.३८ | पूतनास्मिन् राजेन्द्र (स्व) | २६.६० | पूर्णं कर्म करिष्यामि (सृ) | ३७.१७० | पूर्वं दत्त्वाथ गुरवेऽन्वा- (सृ) | २२.६८ | पूर्वं जन्म कृतपापत्वया (पा) | ६०.१ |
| पूजितागोतमेनाथ (पा) | ११४.१७८ | पूतो भवामियेनाहं मुनीनां (सृ) | १४.१८३ | पूर्णपद्मपलाशाश्रितातः (पा) | ७३.२५ | पूर्वं दत्तं तृतीयं च प्रधानं (पा) | ६६.२८ | पूर्वं जन्म कृत पापं त्वया (भू) | १८.१ |
| पूजिताचक्षुसिष्ठेन (उ) | ६६.७३ | पूषकं शकुलं तस्यां (सृ) | ३४.१८७ | पूर्णं वंशतच्छाद्यभोजनं (सृ) | ३६.११२ | पूर्वं धनजयोनाम (क्रि) | १२.५७ | पूर्वं जन्म कृतपुण्यं (भू) | १७.२७ |
| पूजिताः भद्रहृष्टा (उ) | २४८.१२ | पूषानि चैव पुण्यानि (सृ) | ३४.१६४ | पूर्णलाः पूतिदत्स्याश्च- (स्व) | ६.४७ | पूर्वं नीलांबुदाकारं कुङ्कुमं (सृ) | ३४.१८० | पूर्वं जन्म कृतपुण्यं (उ) | १३६.१६ |
| पूजितान् स्तेमहैरेण (सृ) | ४३.३०१ | पूषते सर्वपापानिनाक (सृ) | १६.२६ | पूर्णमृतनिधेर्मध्ये (पा) | ७२.१३५ | पूर्वं भूवदेव (उ) | ३८.६७ | पूर्वं जन्म कृतपुण्यं (उ) | १३६.२६ |
| पूजिते तु जगन्नाथे (उ) | ८२.२६ | पूषनं रकमेतीह कृमिदुर्गं (भू) | ४२.७३ | पूर्णं हि तिकतः कृत्वा (पा) | ६८.७ | पूर्वं ब्राह्मसहस्रं तु (सृ) | १२.१८८ | पूर्वं जन्म निचन्द्रस्त्वम् (व्र) | ५.२७ |
| पूजिते देवदेवे (उ) | ८७.६ | पूषणोऽपि विष्ठायां- (भू) | ५२.२२ | पूर्णमा पूर्णं चन्द्रे च (सृ) | १७.३२६ | पूर्वं भक्त्यैव गोविन्दं (पा) | ६५.४६ | पूर्वं जन्म निदातस्ते (उ) | ३६.३५ |
| पूजिते देवदेवे (उ) | ८७.२५ | पूरणार्थं समुद्रस्य (सृ) | १६.१८२ | पूर्णमाया मधोव्याच (उ) | २१६.१ | पूर्वं मनोश्चाधुपस्य प्राप्ते (भू) | २६.२५ | पूर्वं जन्म निधे विप्र अर्थ- (भू) | १८.३१ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|
| पूर्वजन्मन्तिविप्रद्रव्य (पा) | ६०.३५ | पूर्व षष्ठाभयानारी (भू) | २१.३२ | पूर्व विद्वानकतंभ (उ) | ३८.११३ | पूर्वेणविन्यसेद्गौरीमय (सू) | २२.७६ | पृच्छामित्वा महं किंचित (उ) | २०४.८६ |
| पूर्वजन्मनियद्वत (भू) | ६४.५७ | पूर्व षष्ठा यदानारी (भू) | ५७.३१ | पूर्ववैरा नुवधेन (पा) | ७.३३ | पूर्वेणहस्तिमित्रमत्र-(सू) | २१.१०५ | पृच्छामिदेवदेवे (उ) | ३६.२ |
| पूर्वजन्मनियान्या (क्रि) | ६.८६ | पूर्व देवगंधर्व (उ) | २५२.६६ | पूर्व संबन्धितां तत्रतीर्थे (उ) | २१४.२३ | पूर्वैर्गैवतुसाधम्याद्वि (सू) | १.३५ | पृथक्कृत्वात्मनस्तानतत्र (पा) | १०८.५ |
| पूर्वजन्मनियानारी (त्र) | ५.१० | पूर्वदेशात्समायाता-(सू) | ३२.१०८ | पूर्वसृष्ट्यामुद्यानि (उ) | ६.१६ | पूर्वैर्गुरभितो रात्रावेवं-(सू) | २७.३६ | पृथक्चकारतेजश्च (सू) | ८.६४ |
| पूर्वजन्मनियानारी (त्र) | ५.१८ | पूर्वदेहकृतं कर्म न (भू) | ६४.१७ | पूर्वस्थां दिशतीर्थानि (उ) | २००.७३ | पूर्वैर्गुरिबतत्रापि (उ) | २०३.५५ | पृथक्पृथक्वन्दे (उ) | ४१.४२ |
| पूर्वजन्मनियामाता (उ) | २१४.१७ | पूर्ववेत्रे समाप्तिः (पा) | १०४.७३ | पूर्वस्थां धनदोज्ज्वलोक (पा) | ६.१६ | पूर्वैपि च महात्मानो (भू) | ६७.६७ | पृथग्भूतासमवेदा (उ) | २३०.३० |
| वंजन्मनियोमर्त्यो (त्र) | ५.७ | पूर्वपाश्वेतुगंगायां (स्व) | ४३.३१ | पूर्वसुगोब्रह्मणनंदाना (सू) | २५.१५ | पूर्ववयसिकर्मणि-(स्व) | १६.२२ | पृथग्भूतैकभूतायसर्वं (सू) | ४.१२५ |
| वंजन्मनियोमर्त्यो (त्र) | ५.१६ | पूर्वमाचरितं घोरं (भू) | १०३.६० | पूर्वचार्यैर्यथाप्रोक्ता-(भू) | १३.२६ | पूर्ववयसिनेदाहयः (उ) | १०६.४ | पृथिवीद्यामिमांसे (उ) | २४५.१६० |
| पूर्वजन्मनियोमूढो (त्र) | ५.३८ | पूर्वमालोचितयष्ट (क्रि) | १७.२४८ | पूर्वचाकादशराजं (उ) | ३६.७ | पूर्वाक्तेन विधानेन पूजये (उ) | १७४.६५ | पृथिवी प्रभूतीनां तु (पा) | ८१.६१ |
| पूर्वजन्म वशेनैवत (उ) | ५.३८ | पूर्वमासीं महाबाहु (उ) | ७७.४ | पूर्वाम्यासेन संध्याय-(भू) | २२.२ | पूर्वाक्तेन पुनर्वाक्यं (सू) | ३१.५७ | पृथिवीमुपतः पूर्णा (पा) | २६.३८ |
| पूर्वजन्मवशेनैवत (उ) | १८७.५८ | पूर्वमुक्तं सुमंत्रं तु (भू) | १०.४४ | पूर्वाजितानि पापानि (क्रि) | १८.१४ | पूर्वाक्तेनियमैर्युक्तः (पा) | ६८.२० | पृथिवीवर्षयामास-(सू) | ३७.११८ |
| पूर्वजन्मन्यहं विप्रो धन (स्व) | ३५.२० | पूर्वमेवमया ह्वातं यदा (सू) | ३४.४ | पूर्वाद्ध्यामत्रेलायां (उ) | १६८.७६ | पूर्वाक्तेनरापाठयुगेचना (सू) | २५.६ | पृथिव्यधोवायुराकाश (पा) | ११४.३७३ |
| पूर्वजन्मसहस्रेषु (उ) | १२४.६ | पूर्वमेव मया प्रोक्तं (पा) | ८६.६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | १००.१६ | पूज्यप्रजदायादावैश्या (सू) | ६.४६ | पृथिव्यापस्तथातेजोवायु (सू) | २.६२ |
| पूर्वजन्मन्ययं देवि (उ) | १३६.२२ | पूर्वमेव स्ववृत्तांतमात्म- (भू) | ३८.११ | पूर्वापरस्यां संख्याः (सू) | ४१.२०४ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ६६.२१४ | पृथिव्यापस्तथातेजोवायु (सू) | २.११८ |
| पूर्वजन्मसहस्रेषु (उ) | ६१.११ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यामस्ति को राजा (भू) | ६४.२३ |
| पूर्वजानां हितार्था (उ) | २१.१० | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यामस्ति भूतोसि-(सू) | ३७.१६१ |
| पूर्वतोभास्करं पूजय (सू) | ३४.२७६ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यां जन्मन्मासश्च (त्र) | २४.४ |
| पूर्वदुर्वसि सादत्तो वरस्त (पा) | ८३.३१ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यां तिलदातारोऽहं (उ) | १२६.१०७ |
| पूर्वद्वीपसमक्षते प्रीत्या (भू) | ५८.२४ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यां तीर्थं मासाश्च गो-(स्व) | २६.११ |
| पूर्वद्वीपसमक्षते प्रीत्या (भू) | ५८.२४ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यां तिलदातारोऽहं (उ) | १२६.१०७ |
| पूर्वद्वीपसमक्षते प्रीत्या (भू) | ५८.२४ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यां तीर्थं मासाश्च गो-(स्व) | २६.११ |
| पूर्वद्वीपसमक्षते प्रीत्या (भू) | ५८.२४ | पूर्वमेवहृतं रूपं मम (भू) | ५७.२६ | पूर्वापरसमाधान (पा) | ५.६३ | पूष्णोदशनैकल्पं (भू) | ८.७६ | पृथिव्यां तिलदातारोऽहं (उ) | १२६.१०७ |

[illegible]

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------------|---------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| प्रकुर्वन्ति नराः सर्वे (भू) | ७५.५ | प्रक्षाल्यविप्रचरणौ (क्रि) | २१.२८ | प्रजागरेततश्चैवोद्ययती (सु) | १३.२५४ | प्रजापीडनतापोत्थ- (उ) | १२६.१६५ | प्रजावृद्धिः समाप्नोति न (भू) | ४०.३२ |
| प्रकुर्वन्तिविशेषेणेतो (उ) | १३५.१११ | प्रक्षाल्यहस्तावाचम्य (पा) | ११४.२६८ | प्रजानांपालनंचक्रे (क्रि) | १०.७१ | प्रजाविवर्द्धनं राजन्- (स्व) | २६.५५ | प्रजासार्धं महासाध्वी (भू) | ६७.६६ |
| प्रकुर्वन्तोमहीपाल (क्रि) | २१.७३ | प्रक्षाल्यहस्ती चरणी (पा) | ११२.१२४ | प्रजानां पालनं पुण्यं (भू) | ८२.१६ | प्रजावृद्धेभू भासते (भू) | ८३.२२ | प्रणतायप्रचरन्नाय (पा) | ७१.६१ |
| प्रकुर्वन्ती महच्छब्द (भू) | ५६.३४ | प्रक्षाल्याथततोहस्तौ (पा) | १०८.६४ | प्रजानांपीडनं चैव (उ) | १३६.३४ | प्रजावृद्धिकरंभोगयदाः (पा) | ६७.५० | प्रणतंतनुःश्रेष्ठवाडदे (पा) | ३७.४० |
| प्रकृतानांहिरूपाणा- (उ) | २२७.४३ | प्रक्षिप्तमसंज्ञातोद्गा (सु) | २२.३४ | प्रजानां वान्छितं सर्वं (भू) | ८२.२३ | प्रजाचैवसदाकालं (उ) | ४१.३५ | प्रणतास्तेरद्युपतितेन (पा) | ५३.२७ |
| प्रकृतिः पुरुषस्तस्मा- (उ) | १३२.७६ | प्रमंडयोरथैकैकव- (पा) | ११५.४४ | प्रजानिमित्तं त्वामेव (भू) | २६.८ | प्रजाः सर्वास्ततो यानं (भू) | ८३.१६ | प्रणनाममहातेजा (उ) | २४२.३६१ |
| प्रकृतिं नैव जानाति (भू) | ११३.८ | प्रमीतकिन्नरवातमधुर- (सु) | १५.८ | प्रजानिमित्तमत्यर्थ- (भू) | २६.१५ | प्रजास्ताद्ग्राणानृष्टा- (सु) | ३.१३५ | प्रणमत्तुविदवायूह (क्रि) | ८.१०५ |
| प्रकृतिर्वातिभूतानि (उ) | १३२.६५ | प्रगृह्य ती महाशस्त्री (भू) | ६३.२२ | प्रजापतिः पुनस्तस्मै (उ) | २४५.१०७ | प्रजेशत्वंशतत्त्वम (सु) | १३.२६७ | प्रणमन्तं महात्मानं (भू) | ८३.७८ |
| प्रकृतेविकृतंसर्वं (पा) | ७७.४६ | प्रगृह्य रुचिरंवाहुं (उ) | ७६.३ | प्रजापतिः मुखादेवा (उ) | २४२.७२ | प्रज्वलन्निवतेजोभिर्भाभिः (सु) | ४०.४६ | प्रणमेच्चहरेः पादी- (सु) | ४३.१६६ |
| प्रकृत्युत्पन्नगुणाभावा (पा) | ८२.८८ | प्रचचारवलंसर्वकंप (पा) | ११.७३ | प्रजापतिमुपासतं स्व (स्व) | ३६.७४ | प्रज्वल्यचमहावह्नि (उ) | २३.८.६६ | प्रणमेज्जाल्लवीदेवीं (क्रि) | ६.३४ |
| प्रकोष्ठेवल्य श्रेणी (उ) | २००.६६ | प्रचंडविकारलंतत् (स्व) | ५०.६ | प्रजापतिश्चात्रमनुर्मेहात्मा- (सु) | ४५.६४ | प्रज्वाल्यवह्निधृततैल (पा) | ८७.३३ | प्रणमेदंडवद्भूमौ (क्रि) | ११.१२५ |
| प्रक्रियादिविशेषेण- (पा) | १०४.११८ | प्रचंडजालवाणौघौ (उ) | १०२.६ | प्रजापतिः समाः सर्वे- (सु) | ४३.३३५ | प्रज्वाल्यवह्निधृततैल (पा) | ६२.३१ | प्रणम्य कश्यपं भक्त्या (भू) | १०.३१ |
| प्रक्षरतिसदाशीरतत्र- (स्व) | ४.५ | प्रचण्डमहिषारूढः (क्रि) | २३.१०२ | प्रजापतिः स जग्राह (सु) | ३.१८० | प्रजया प्रेयमाणेन न (भू) | ६७.१०० | प्रणम्यचरणौमूर्ध्नि- (स्व) | ३१.१६३ |
| प्रक्षालनंचभांडानां (सु) | १६.११६ | प्रचरस्त्रांनदानेन (स्व) | ५२.३१ | प्रथापतीनादक्षनदीनां (सु) | ३४.८३ | प्रजा च वचनंस्तेस्तु (भू) | ६७.१०७ | प्रणम्यचस्तुतिचक्रे (पा) | २२.२७ |
| प्रक्षालनाद्विपंकश्य- (सु) | १६.२४८ | प्रचेतसंवसिष्ठंचभृगु- (सु) | २०.१६२ | प्रजापतीरथश्रेष्ठेजग्रा- (स्व) | १५.७ | प्रज्ञानंचैव विज्ञानं (उ) | २५०.६७ | प्रणम्यदंडवद्भूमौस्तु- (स्व) | २०.३५ |
| प्रक्षालयनिगोविदस्त (उ) | ३८.१० | प्रचेलुर्वध्रमुः पेतु विविशु- (सु) | १५.६६ | प्रजापतेनशक्त्यास्मि (उ) | २४५.१४ | प्रज्ञानेनतुयस्येह (स्व) | ४५.१७ | प्रणम्यदंडवद्यावदुप- (उ) | १०८.१० |
| प्रक्षालितान्निहस्तौ (क्रि) | २१.४० | प्रचेष्टंप्रत्युवाचाक्षौ (क्रि) | ५.१७६ | प्रजायते महातीक्ष्णो (भू) | १२०.४१ | प्रज्ञावल्युजांपुसांसत्य- (सु) | १५.३३० | प्रणम्यद्विजमुल्येभ्यः (सु) | ११.७६ |
| प्रक्षालयतत्पादयुगं (क्रि) | १०.४७ | प्रचेष्टइतिसंचित्य (क्रि) | ५.१६४ | प्रजापतेरिदंक्षेत्रम् (स्व) | ४८.१४ | प्रज्ञामाता समाध्याता (भू) | ८.६१ | प्रणम्यतर्वाह्निमुखौ (पा) | १११.४० |
| प्रक्षालयपादहस्तौ (पा) | ११४.३५२ | प्रचेष्टाख्येनभूत्येन (क्रि) | ६.१२६ | प्रजापालनक्रुद्राजा (क्रि) | २१.६१ | प्रजामुक्तः स निर्लोभो (भू) | ५६.८ | प्रणम्यपरमात्मानं (पा) | २२.२४ |
| प्रक्षाल्यभाजनंस्वर्गं (पा) | ११७.१०६ | प्रजप्तव्यमथोपठ्यं (भू) | ३६.१० | प्रजापीडनकनित्यं- (उ) | १३५.११६ | प्रज्ञालक्ष्मीयंशः (उ) | १२८.२८२ | प्रणम्यराधिकानाथम् (ब्र) | २.१५ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|---|--------|--|--------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| प्रणम्यपादौ धर्मात्मा (भू) | ८८.६ | प्रणिपत्यततोमूर्ध्नि-(सु) | ३८.१८० | प्रतापाप्रयोयोह्यं (पा) | ११.२५ | प्रतिग्रहोर्वैभगवंस्तव-(सृ) | ३६.३० | प्रतिमादेवदेवस्य (सृ) | २४.१६ |
| प्रणम्यपुरतस्तस्य (उ) | २५५.३६ | प्रणिपत्यततो राम-(सु) | ३८.१५३ | प्रतापिनाप्रतापाप्रयो (पा) | ५१.१५ | प्रतिजोर्वंतुहेतूनां (पा) | ११४.४५६ | प्रतिमापंचगव्येनतथा-(सृ) | २६.१८ |
| प्रणम्यप्राहृदेवेशं (उ) | २५४.५६ | प्रणिपत्य प्रसाक्षि (भू) | १०६.१ | रतिगृह्यततः प्रजानारदो (स्व) | १०.६ | प्रतिज्ञातुष्टाहृत्वा (उ) | १२७.१५२ | प्रतिमां वामहाभागे (पा) | ८०.५३ |
| प्रणम्यमातिरसवं (पा) | ११२.७२ | प्रणिपत्यद्विजन (उ) | १८६.४० | प्रतिगृह्णीष्वदेवेश (उ) | ६६.६६ | प्रतिज्ञापालनं कार्य-(सु) | ३०.१५८ | प्रतिमादिकृतापूजा-(पा) | १०५.११७ |
| प्रणम्यराघवाद्या (उ) | २४२.२११ | प्रणिपत्यद्विजमानं (उ) | १८६.४४ | प्रतिगृह्णीष्वदेवेश (उ) | ६६.६७ | प्रतिज्ञायतुतं वाक्य-(सु) | ३८.१०२ | प्रतिमादिपुसेवते (स्व) | ६१.५२ |
| प्रणम्यशिरसाबालं (उ) | ६६.२३ | प्रणिपत्य यथापूर्वं (सु) | ४.७६ | प्रतिगृहाणीष्वराजेन्द्र (सु) | ३६.२७ | प्रतिज्ञायामुक्तावीर्य (पा) | २७.३५ | प्रतिमायांतथादेवि (उ) | ८६.१२ |
| प्रणम्यशिरसाराजा-(उ) | १२५.४६ | प्रणिपत्यग्रजः पितृत्वा (पा) | ७.१६ | प्रतिगृह्यततोगस्त्याद्-(सु) | ३६.५० | प्रतिज्ञाखंडान्मूढो (ब्र) | २६.५ | प्रतिमासंचकलं च (उ) | ६६.२६ |
| प्रणम्यशिरसारुद्रं (उ) | १०४.१५ | प्रणिहंसानिवृत्तश्च (=व) | ५६.१६ | प्रतिगृह्यततोगस्त्याद्-(सु) | १४.७३ | प्रतिग्रहपिबेदुष्यम् (ब्र) | १६.२६ | प्रतिमास्सर्वदेवानां-(सु) | ४५.१३७ |
| प्रणम्यशिरसाब्जानं (क्रि) | १.२४ | प्रणितायास्तटैर्नधामे (उ) | १८५.५ | प्रतिगृह्यपुटेनैव (स्व) | ५८.३५ | प्रतिदास्यामिदेवेन्द्र-(सृ) | ३०.१४८ | रतिमुच्यतं राजन्-(सु) | ३३.१५ |
| प्रणम्यैवं गता स्वर्गं (भू) | ५२.४ | प्रणेतुस्तेमहात्मान (भू) | ५.५० | प्रतिगृह्यशुभेग्रसं (उ) | ६६.७७ | प्रतिदेवगृहं श्यामाती- (पा) | ११७.१५ | प्रतियोगप्रयच्छत्वं | २००.५ |
| प्रणयादरतोविप्रसनरो (पा) | ६६.७० | प्रणस्तेजसा तद्वह्म्यानां(भू)११०.२४ | | प्रतिगृह्यहंतुलोकानां (पा) | ३.६ | प्रतिपक्षतुतीयायां- (सृ) | २२.६८ | प्रतियोगस्ततोऽह्मातेच-(सृ) | ४१.१११ |
| प्रणवः पुष्यः शास्ता-(सु) | ३६.१६ | प्रणप्तविभूयाच्च (उ) | २२.४७ | प्रतिगृह्यकृतैः पार्ष्वैः सर्वैः (स्व) | २७.५२ | प्रतिपक्षं कल्याणमेत (सु) | २१.२५५ | प्रतिवाक्यमलब्ध्वा (उ) | २०१.७५ |
| प्रणवेनत्रिमात्रेण-(सु) | १७.२७८ | प्रतरतिप्रवाहे तु (भू) | १०१.४६ | प्रतिग्रहरतानांचस्थाने (क्रि) | १४.५ | प्रतिपदिमहावाहोसयानि(सु) | १७.२२७ | प्रतिशब्दोभवेत्तत्रिसु (उ) | १७४.८६ |
| प्रणवेनविमृशाय-(पा) | १०८.५७ | प्रस्थेयमरयुद्धायबहुपति (सृ) | ४२.८० | प्रतिग्रहादुपावृतः संतुष्टो-(सु) | ३६.६ | प्रतिपद्वर्णनवमी (उ) | ६२.१४ | प्रतिश्रयस्तुमद्गोहे-(पा) | १०६.११ |
| प्रणः सर्वमहाराज-(सु) | १६.१८४ | प्रतापतेजसा युक्तः सर्वं (भू) | ५.६२ | प्रतिग्रहादुपावृतः संतुष्टो (स्व) | ११.१० | प्रतिपादेश्वमेधस्यकलं (क्रि) | २१.८५ | प्रतिश्रयरासंभाप (स्व) | ५३.३ |
| प्रणामकेवलंक्रुतुं- (पा) | १०५.२०० | प्रतापनरकं राजादुःखाग्नि(उ)१२६.१६ | | प्रतिग्रहादुपावृतः (स्व) | ४६.१० | प्रतिपूज्यविधानेन-(सृ) | ३७.१६७ | प्रतिष्ठापयतिप्रायो (पा) | ६४.७५ |
| प्रणाममकरोन्मुध्नीं (भू) | ८५.४६ | प्रतापान्मनीलरत्नं (पा) | ११.२२ | प्रतिग्रहेणविप्राणां ब्राह्मं-(सु)१६.२६४ | | प्रतिपेदेसुदेशेनगत्वा (पा) | ७४.५५ | प्रतिष्ठतामहावाहो (सु) | ११६.८८ |
| प्रणिघ्नितमित्रासी (क्रि) | ४.२१ | प्रतापाग्र्यः प्रकुपितः (पा) | २३.६४ | प्रतिग्रहेब्राह्मणश्च (क्रि) | २६.१३ | प्रतिविद्यमथोपाश्रे-(पा) | १०५.११२ | प्रतिष्ठितामहावाहो (सु) | ३७.१५६ |
| प्रणिघ्ने सदोर्षैर्वयौ-(क्रि) | ४.५४ | प्रतापाग्र्यः प्रकुपितस्तत्त्व(पा)२३.५६ | | प्रतिग्रहोबाह्मणानां-(पा) | ६६.१३५ | प्रतिबोध्यानययथा-(सु) | ३४.५२ | प्रतिष्ठोपाजितापूर्वं (क्रि) | १६.१० |
| प्रणिप्रत्यचईशानं वलि (स्व) | २०.७४ | प्रतापाग्र्यः शरं शब्दवा-(पा) | २३.८३ | प्रतिग्रहोबाह्मणानां-(सु) | १६.२२८ | प्रतिसांवत्सरंश्चाढं-(प) | १०५.६८ | प्रतिस्वत्वं रचय-(उ) | २२२.८७ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| प्रतिसर्गममीकृत्वा-(सु) | ७.८५ | प्रत्यक्षान्पश्यते दूतान् (भू) | १४.३५ | प्रत्यावृत्त्यदिनीपोपित (उ) | १२४.५२ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (पा) | १०४.४० | प्रथमश्च तुरुनिमि (भू) | १०६.५० |
| प्रतिहारमिमंकृत्वा (सु) | ३.१४४ | प्रत्यक्षावातृपश्वेष्ठ (उ) | ५१.४८ | प्रत्याहसद्विहानस्तं (उ) | २००.७६ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ४१.४३ | प्रथमाश्रमनिष्ठस्य (उ) | १२८.८६ |
| प्रतिहारीप्रतोदंतु (उ) | १४.६६ | प्रत्यक्षावापरोक्षावा (पा) | ६६.१०३ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (पा) | ११६.१०६ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (सु) | ६.२२ | प्रथमाश्रमनिष्ठस्यकिंतु (स्व) | २२.८० |
| प्रतीक्षमाणस्तज्जन्म-(सु) | ४३.६० | प्रत्यक्षशृङ्गमृदुमस्तक (पा) | १०३.३६ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ११३.३७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (सु) | २२.५० | प्रथमाश्रावणमासित (उ) | १२२.७२ |
| प्रतीक्षमाणस्तद्वाक्य-(सु) | ४३.२७७ | प्रत्यक्षरभसाविशाः (पा) | ७०.४ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | २४२.२६८ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ४१.२० | प्रथमे दिवसे वद्वयोजना (सु) | ३८.६४ |
| प्रतीक्षमाणोदेवीनात (पा) | ७१.८६ | प्रत्यक्षगति रसैश्चैव स्वं (भू) | ५३.६७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | २४२.१३८ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ६६.१८१ | प्रथमेवयसि प्राप्ते (पृ) | १८.२६६ |
| प्रतीक्षमाणोदेवीतात (पा) | ७१.८६ | प्रत्यक्षनंचक्रहृत्पाकोटि (त्र) | १५.१६ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ११३.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | २३४.३६ | प्रथमे वयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रतीक्षमाणस्तान्वात्रेण (उ) | २२१.३२ | प्रत्यक्षमुखगतः क्रोशं-(सु) | ३३.११३ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रतीक्षमाणस्तान्वात्रेण (पा) | ५८.१६ | प्रत्यक्षमुखगतः क्रोशं-(सु) | ३३.११३ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रतिविष्णोयज्ञचक्रं (उ) | २२४.५६ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षं तेन वै देवः (भू) | ६७.३८ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षं दयितः कांतस्तव (उ) | ६०.३७ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षं दयते लोके (भू) | ८४.२ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षतांप्रयास्येवतत्रा-(उ) | ३८.१३ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्ष दशनं दत्वादेहि (सु) | १४.१०३ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्ष पुंडरीकाक्ष (उ) | २१६.३५ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षमचित्तस्तेन (उ) | ३४.४ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षदेवोपितरी (क्रि) | ३.८५ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षमेवभोक्तारोभव (सु) | १२.१८ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |
| प्रत्यक्षविष्णुरुपाहि (स्व) | ६१.७२ | प्रत्यक्षचक्रलत्यागमेवं (सु) | २२.५७ | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (भू) | ८६.३० | प्रत्युत्तरेतुस्तुष्टेचिन्ता (उ) | ६६.६३ | प्रथमेवयसि भोक्तव्यं (भू) | ७८.१६ |

श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

२८८

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|--------------------------------------|--------|------------------------------------|---------|
| प्रदक्षिणमकुर्वाणः (उ) | २२२.८२ | प्रदायविप्रमुख्येभ्यो (उ) | ५१.६२ | प्रधानप्रकृतिस्त्वाद्याराधा (पा) | ७०.८ | प्रबलः प्रौढसम्पन्नः (भू) | ७५.२३ | प्रभातायांचशर्वयां (सु) | २१.१५६ |
| प्रदक्षिणमुपावृत्तो जप- (स्व) | १२.१ | प्रदास्याम्यहमेते (सु) | ७.३३ | प्रधानहेतुवक्ष्यामि (स्व) | ४६.१३ | प्रबुद्धः पतनेहेतुमपरय (उ) | १८४.७७ | प्रभातायांचशर्वयांगुरवे- (सु) | २१.१६७ |
| प्रदक्षिणमुपावृत्य- (स्व) | २४.२१ | प्रदीपं कातिकेमासि (क्रि) | १३.८२ | प्रधानास्तेषु विख्याताः (सु) | ६.७० | प्रबुद्धकुंठा दृढकेशवर्ध (भू) | १०२.४७ | प्रभातेऽन्यवृत्तां कृत्वा (क्रि) | ६.४६ |
| प्रदक्षिणाकारतया- (क्रि) | ११.१२१ | प्रदीपं यस्तु संघ्यायां (क्रि) | २४.२० | प्रधानेनानृतो ह्येव त्वचा (स्व) | २.७ | प्रबुद्धश्च पुनः सृष्टि (सु) | २.११६ | प्रभाते तु मुनीनां तत्सर्वमेव (सु) | ३३.७३ |
| प्रदक्षिणाकारतया- (क्रि) | ५.८३ | प्रदीपस्य च माहात्म्यम् (ब्र) | ३.१५ | प्रधानव्यक्तरूपाय काल (सु) | ३.३४ | प्रबुद्धास्तेजनाः सर्वे (उ) | २४६.४४ | प्रभाते तु लसीं पश्येद (क्रि) | २४.२३ |
| प्रदक्षिणाकारतया (क्रि) | २२.१४० | प्रदीपं भवंतो दिक्षु (स्व) | १५.२१ | प्रनृत्तमुभयं वीरतेजजातस्य (स्व) | २७.८ | प्रबुद्धो दाप्रमत्तो वा प्रसंभा (सु) | १६.२८८ | प्रभाते दश्यते स्वप्नो (भू) | १२०.४८ |
| प्रदक्षिणां हि ज श्रेष्ठ (क्रि) | २२.१२७ | प्रदीपं वर्णाणां हर्षः (उ) | २४२.३०६ | प्रपंचजातयदिदं विलोक्य (उ) | १६६.३५ | प्रबोधनासरं विष्णो (उ) | ६१.३० | प्रभाते पुनरुत्थाय सरस्त (सु) | ३६.६६ |
| प्रदक्षिणां यः कुरुते- (स्व) | १०.१४ | प्रदीप्यमानमाकाशे (उ) | २४६.५२ | प्रपन्नः पुष्करे स्नात्वा (सु) | ३२.१३ | प्रबोधसमये लक्ष्मीं बोध (उ) | १२२.२१ | प्रभाते पूजयेद्विष्णु (क्रि) | १२.२६ |
| प्रदक्षिणां यं पृथिवीं- (स्व) | ११.७ | प्रदुद्रुदिशः सर्वा (उ) | २३८.६५ | प्रपत्तिः सा तु विज्ञेया (उ) | २५३.१३५ | प्रबोधिन्याश्च माहात्म्यं (उ) | ६१.३ | प्रभाते मां जयेद्वैतान् (क्रि) | ११.२१ |
| प्रदक्षिणीकृत्य सर्व (क्रि) | ११.११८ | प्रदेशमुषिगणाकीर्णम् (भू) | ८६.५ | प्रपद्यशरं देवे (उ) | २४२.२६७ | प्रबोधिन्याश्च माहात्म्यं (उ) | ६१.४ | प्रभाते यः स्मरेद्भवत्वा (क्रि) | ७.३ |
| प्रदक्षिणेन मस्कारं (उ) | २३४.३५ | प्रद्युम्नचरतीति देवतयो (पा) | ७०.४० | प्रपद्ये गतवानस्मि (पा) | ८१.६३ | प्रबोधिन्याश्च माहात्म्यं (उ) | १२४.१ | प्रभाते वततः स्नानं कृत्वा (सु) | २१.४३ |
| प्रदक्षिणेन मस्कारं (क्रि) | ६.१७० | प्रद्युम्नमूर्तिर्भगवा (उ) | २२६.३४ | प्रपन्नपाहिं मोक्षभोतं (पा) | ६५.१०६ | प्रबुद्धिताश्च मह्यं गार्हप (पा) | ८.२७ | प्रभाते विमले प्राप्ते (उ) | ७७.८ |
| प्रदग्धदृष्टे नैवनेत्र (सु) | १६.१३६ | प्रद्युम्नः षडभिरवाग्वा (पा) | ७८.४१ | प्रपन्नः शासनं ह्येषमदी (सु) | १३३.३७४ | प्रभन्ताः प्राथिवाः (उ) | २४७.३६ | प्रभाते विमले प्राप्ते (उ) | ७७.२८ |
| प्रदक्षिणो जनेन (उ) | ७७.१२ | प्रद्युम्नः सूर्यवक्त्रस्तु न- (उ) | १२०.५४ | प्रपन्नं याति यस्माद्यस्तस्य (क्रि) | १६.६३ | प्रभवति महाभाः विद्वान् (भू) | २२.४४ | प्रभाते विमले रामः (उ) | २४२.२१६ |
| प्रदक्षिणलिलान (उ) | ३७.६१ | प्रद्युम्नस्य च दायादो- (सु) | १३.१६१ | प्रपिता न हास्तया दित्वा (सु) | १०.३८ | प्रभवति सर्वभूतानां धर्माणां (भू) | २८.३७ | प्रभाते विमले रामां (क्रि) | १०.१४ |
| प्रदक्षिणान्यराशीं (उ) | १२८.१५५ | प्रद्युम्नस्यांशभागो (उ) | २२६.३६ | प्रपिता महास्तया दित्वा (सु) | १४.२०४ | प्रभवो निधनं चास्य (उ) | ७६.१२ | प्रभायां पूर्वमुत्थो (भू) | ३०.११६ |
| प्रदक्षिणविप्रमुखेभ्यो (उ) | ६६.४७ | प्रधानकालरूपाय (उ) | २२६.१० | प्रफुल्लकुसुमामां दं (क्रि) | १७.५६ | प्रनाकर नमस्ते स्तुभानो (भू) | १६.७० | प्रभावं नृपवक्ष्यामि (भू) | ३७२ |
| प्रदक्षिणाद्विष्णोः (स्व) | ५७.५० | प्रधानतत्त्वेन समंतथा (सु) | २.६० | प्रफुल्लपद्मां त्रेण (क्रि) | १३.८८ | प्रनातकालेन प्राप्ते (सु) | ४१.१०४ | प्रभावं धनं भस्वरूपतः (सु) | ३६.४ |
| प्रदक्षिणस्त्रयम् (उ) | ३५.४६ | प्रधानपुरुषः कालो (स्व) | ५३.५५ | प्रफुल्लमालतीपुष्पं (क्रि) | १३.२६ | प्रभातमधुना चास्ते (उ) | ४६.२६ | प्रभावं भवतो येति (उ) | १८५.५५ |
| प्रदक्षिणोदसी विपात्त (उ) | १०४.१२ | प्रधानपुरुषातीतम् (स्व) | ६०.१० | प्रफुल्लान् बुजनेन (उ) | २००.६८ | प्रभातमिव संभाति (पा) | ६४.७२ | प्रभावश्चाव्ययस्त्वं (उ) | ७६.७ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| प्रभावस्तीर्थमुल्यानांत (सु) | ४३.६६ | प्रमुखेनस्यसैन्यस्यदीप्त (सु) | ४०.१७८ | प्रयागंतमपिष्ठानम् (स्व) | ४७.८ | प्रयागेनिवसत्येते (स्व) | ४८.६ | प्रयाससाध्यं सुकृतं (क्रि) | १.१३ |
| प्रभावाच्च भवेत्सीरं (भू) | ६६.११ | प्रमृता सामृगी तत्र (भू) | ३०.२७ | प्रयागंस्मरमात्रोपि (स्व) | ४२.६ | प्रयागेवाधमासेतु (स्व) | ४४.६ | प्रयास्यामि महापुण्यं (भू) | ५.२१ |
| प्रभावात्सर्वतीर्थेभ्यः (स्व) | ४७.११ | प्रम्लातवदनादपन्नि (उ) | १००.२५ | प्रयागतीर्थैवेत्येवदशा (उ) | १.१२ | प्रयागेमाधमासेतुपूर्ण (उ) | २१६.३३ | प्रयास्यामि महापुण्यं (उ) | २४५.२८८ |
| प्रभावेचकुलपुत्रा (स्व) | ३६.७ | प्रयच्छतिगुरुः प्रीतो (उ) | १६३.१० | प्रयागतीर्थंमाहात्म्यं (उ) | २४.१ | प्रयागेमाधमासेय स्यहं (उ) | १२७.४६ | प्रयाहिपुत्र संग्रामं (पा) | ६३.४० |
| प्रभावेः कर्मणां केषां (क्रि) | १३.१२८ | प्रयच्छतिपितृभ्योयस्तोयं (सु) | १८.२३८ | प्रयागः पुष्करस्यैव (भू) | ६०.३२ | प्रयागेमुनिवयैश्चयापृष्टः (सु) | १.५ | प्रयाहिमाविलंब (उ) | २०४.११५ |
| प्रभावोयंतयोर्नद्योः (उ) | १११.२ | प्रयच्छतिद्वित्राग्रये (पा) | ६८.४३ | प्रयागः पुष्करस्यैव (भू) | ६०.५१ | प्रयागेमुनिवयैश्चययापृष्टः (सु) | २.४४ | प्रयुजोत सदावाच (स्व) | ५३.१६ |
| प्रभावोहिमहाप्राज्ञ (भू) | ७.४६ | प्रयच्छःस्वमहाभागया (सु) | ३०.४२ | प्रयाचमनुगच्छेद (स्व) | ४६.६ | प्रयागेयत्पलंष्टशंकरेण (स्व) | २०.१६ | प्रयोगमकरोत्तत्रकाले (पा) | ६७.१८ |
| प्रभासाशंकरंप्राप्ता-(उ) | १८.११७ | प्रयत्नेनद्विजश्रेष्ठ (त्र) | २४.५० | प्रयागमपिलोकानाम् (स्व) | ४६.३ | प्रयागयागतिः प्रोक्ता-(पा) | ७६.६४ | प्रयोजनंचनैयोग्यमै (सु) | १५.१८४ |
| प्रभामुतद्विदमलामुतेजा (भू) | १०२.४६ | प्रययावंगदोदीत्य (पा) | ३६.४६ | प्रयागस्तीर्थंराजश्च (उ) | १३५.२० | प्रयागेविलययाति-(उ) | १२७.६२ | प्रयोजनंनतेनास्ति (सु) | ४४.६६ |
| प्रभासेते तदा तौ तु (भू) | ६३.२३ | प्रययोनगरात्तूर्णं (उ) | २४५.४५ | प्रयागस्तीर्थंराजश्च (उ) | १२७.६१ | प्रयागेमाधमासेतु (उ) | ११८.४७ | प्रयोजनं प्रयोग्य (पा) | ८५.२३ |
| प्रभासेमकरादित्ये (उ) | १२८.१४३ | प्रययौब्रह्मभवनं (उ) | २४५.२२० | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयाजानां मलानां च (भू) | ६६.१२ | प्रयोज्यत्वंप्रधानस्यैव-(सु) | १५.१८२ |
| प्रभूतवह्निनाशेहि (पा) | ११५.४ | प्रययौमथुरांशोघ्नं (उ) | २४५.२६१ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयागप्रक्रमे सिधुसूतोः (उ) | ५.२७ | प्रयोज्यत्वंप्रधानस्य (पा) | ८५.२१ |
| प्रभूतशोकसंतप्तो (उ) | २४२.२६० | प्रयागजघनस्यांतम् (स्व) | ३६.७२ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयागोवाच-प्रयागं-(उ) | १२८.२३८ | प्रकृतमभवत्सर्वं (पा) | ११४.१७६ |
| प्रभावतिस्वदेहं (उ) | ६.४० | प्रयागतीर्थमाश्रित्य (उ) | २४.२० | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयागिनिमदिरं विष्णो (क्रि) | १४.२६ | प्ररोहितनयः स्वस्य-(उ) | ४.१३ |
| प्रभोप्राप्तंनवस्थान (क्रि) | २०.८१ | प्रयागंतपुरासीवतं (स्व) | ४०.१३ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयाति मानवो राजन् (भू) | ४०.४६ | प्रत्यर्कतुमुद्युक्तोजलमतः(पा) | २६.२३ |
| प्रभोयमागतः सर्वे (उ) | ३.२७ | प्रयागंतविशेषेण (स्व) | ४१.६ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयात्येवं स दुष्टात्मा (भू) | १२.१६ | प्रत्यर्कलोकसंहारकारकं (पा) | ४३.५१ |
| प्रमत्तोहिमहाभाग (क्रि) | ३.५८ | प्रयागंतर्मदांचैव (उ) | ८०.२६ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयात्येवंसदुष्टात्मा (पा) | ८८.१६ | प्रत्यत्यनि मोहेन जं भते-(भू) | ३६.१६ |
| प्रमथाधिपदैत्यानां(उ) | १००.१६ | प्रयागंपुष्करं चैव (भू) | ६२.८ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयान्ति तेपि घोरेषु (भू) | ६७.६६ | प्रत्यंविनहोत्येन (क्रि) | ६.१८७ |
| प्रमदाप्रियकामविभक्त (स्व) | १५.५७ | प्रयागं राजशार्दूलं (स्व) | ४३.२० | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयातितायानि खुराग्र-(सु) | ३.४३ | प्रवक्ष्यामितलोप्यान (उ) | २७.३३ |
| प्रमाणं वप्रमाणपृथिव्याः (स्व) | ३.२ | प्रयागंसस्मरन्नित्यम् (स्व) | ४६.८ | प्रयागस्नानमात्रेण (उ) | १२७.११७ | प्रयातिपरमामृद्धि (उ) | ७१.६१ | प्रवक्ष्यामि नर श्रेष्ठ (भू) | ३६.७२ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| प्रवक्ष्यामिमहापुण्यपुराणं (स्व) | १.२२ | प्रविवेशमहारण्यं (उ) | २४६.६ | प्रविश्यांतः पुरेदेवादवष्टु (पा) | ७.१४ | प्रवेश्यस्वीयपीठेन (प) | ११४.१०७ | प्रश्नमण्येतयारामं-(पा) | १०५.११० |
| प्रवक्ष्यामिमहापुण्यपुराणं (सु) | १.५४ | प्रविवेश वनं दिव्यं (भू) | ५७.१८ | प्रविष्टे नगरं दैव्ये (उ) | ६७.३२ | प्रवेशणंततः पृच्छे (पा) | ११७.११० | प्रश्नमेकं महाभाग (भू) | २२.१ |
| प्रवक्ष्यामिमहापुण्यव्रतं (उ) | १२४.२६ | प्रविवेशवरंमार्गं (पा) | ३.२६ | प्रविष्टोजलमापीयपूर्वं (उ) | २१६.४५ | प्रवेष्टुकाभोवलि-(उ) | १०.१२ | प्रश्नभारस्त्वयाराजन् (सु) | ३१.७ |
| प्रवक्ष्यामिविशालाक्षि (उ) | १८६.१ | प्रविवेशसशत्रुघ्नो (पा) | ५७.७ | प्रविष्टोब्रह्मणः सद्यदृष्टो-(सु) | १२.५६ | प्रवेष्टुनशशाका (पा) | १०५.२०६ | प्रश्नभारो महानेष्टत्व-(सु) | १६.४० |
| प्रवर्तस्त्रीक्रियाः सर्वायत् (सु) | ३४.६० | प्रविवेशहरेर्मेहम् (ब्र) | २.१२ | प्रविष्टोवैष्णवं तेजः (भू) | १.१० | प्रवेष्टुनममेवतव (उ) | २००.५३ | प्रष्टुकाभोपिसमुनिः (पा) | ७१.८६ |
| प्रवर्तकोऽस्यधर्मस्य (सु) | २३.१५ | प्रविवेशेनदातोयतोया (सु) | ३.३१ | प्रविष्टो वैष्णवंसाम (भू) | ५.६ | प्रव्रजतंतुमामेवतव (उ) | ६६.१० | प्रसंगात्कथयिष्यामि (पा) | ७८.१६ |
| प्रवर्तते मित प्रज्ञास्ते (भू) | २६.५५ | प्रविशंतं गृह द्वारं देवरूपं (भू) | २०.२३ | प्रविष्टोसोसचदेवेन (सु) | ४४.६७ | प्रव्राजितोभवेद्रा-(पा) | ६२.४६ | प्रसंगात्तसमाख्या (उ) | २४०.५५ |
| प्रवर्तयस्यहोरात्रात्कालं (सु) | ४१.१२७ | प्रविशति नरा लोके (भू) | ६४.४४ | प्रवृत्तंचत्रयीधर्माः (उ) | ६६.१५ | प्रशब्दमात्रंत्वधिकं (पा) | १११.४३ | प्रसंगात्तसमाख्या (उ) | २४०.५० |
| प्रवर्धमानःशैलेन्द्रा शत (सु) | १८.३६८ | प्रविशति यथानद्यः समुद्र-(स्व) | ३१.३७ | प्रवृत्तं न पपुः सोमं हुतं (भू) | २८.२६ | प्रशमंयोभिजानाति-(सु) | १६.३३२ | प्रसंगाद्दर्शनात्स्वशर्त्तनाथ (भू) | ३०.१५ |
| प्रवालंमौलिकंचैव (ब्र) | २४.१७ | प्रविशन्वैतुल्येन (क्रि) | १८.६ | प्रवृत्तामुपुराणासु (सु) | २३.१३ | प्रशमंसर्वदुःखानि (उ) | ७८.४७ | प्रसन्नचास्मिः स्मेरः (उ) | १८७.१५ |
| प्रवालनवपल्लव (पा) | १०३.२४ | प्रविशेद्वतागारंशुन (क्रि) | ११.६१ | प्रवृत्तामुपुनाणासु (सु) | २३.१३ | प्रशंसं सत्तांनारां (ब्र) | ११.८४ | प्रसन्नताचतोयस्यमुनि (सु) | ४३.१२२ |
| प्रवासेनत्यजेच्छतु (उ) | ३७.५८ | प्रविशेद्यस्तुमनुजो (क्रि) | १८.३६ | प्रवृत्तिचिन्विच्छति (उ) | २०४.२० | प्रशस्तः कीदृशः (पा) | १०४.३८ | प्रसन्नमभवत्तस्मै (उ) | ८०.१२६ |
| प्रवाहपतितेकुलेमृत्तिका (पा) | ११२.४ | प्रविश्यचंदनांभोभिः (पा) | ८३.५१ | प्रवृत्तिस्थेपुष्पेतेवृष्टु (सु) | ४१.१६१ | प्रशान्तचेतानिर्मलन-(उ) | १८४.७ | प्रसन्नवदनंघ्याये (पा) | ११५.३० |
| प्रवालवल्लवंयुक्तः (पा) | ७४.१६८ | प्रविश्यतत्रक्षीराब्धेः (उ) | ७.४६ | प्रवृत्तोलोककृष्ये- (पा) | १०३.३ | प्रशान्तायामुपार्यस्तु (पा) | १०४.६१ | प्रसन्नवदनंदेवी (पा) | ७४.२६ |
| प्रविध्वस्तांततः (व) | १०१.२० | प्रविश्यतस्मिन्निमले (उ) | २५५.४६ | प्रवृत्तो च निवृत्तो च (भू) | ६६.३६ | प्रशान्तेपुचलोकैपु (सु) | ४१.१६६ | प्रसन्नैवसर्वेविप्र-(पा) | ६६.४२ |
| प्रविमुच्यन्त्युनां (क्रि) | १२५.२४ | प्रविश्यनगरं तत्र (उ) | २४६.८२ | प्रवेष्टुनितिनसन्देहः सभायै (सु) | ३५.४० | प्रशाधिराज्यंयमैरा (सु) | ३७.१४४ | प्रसन्ना साधमायुक्ता-(भू) | १२.८६ |
| प्रविवेशततोबीमानं (पा) | ७१.२१ | प्रविश्यनगरीलंकां (उ) | २४२.२८४ | प्रवेष्टुनितिनसन्देहः सभायै (सु) | ४४.१०० | प्रशास्तिपृथिवी सर्वा-(सु) | ३८.८ | प्रसन्नासांप्रतजाता (उ) | ६२.२१ |
| प्रविवेश पुरं रम्यं सर्वं (भू) | ४३.७१ | प्रविश्यपश्चिर्ध्वंशुलुक (सु) | ४४.१२३ | प्रवेशंलभतेनान्यानारी-(सु) | ३.२८ | प्रशन्नचयदिनेश्वर (पा) | ६४.८८ | प्रसन्नोभगवान्मुनि (पा) | ११६.३४ |
| प्रविवेशपुरीलंकां (उ) | २४२.२५७ | प्रविश्यवसन्तिचक्रे (उ) | १८४.३६ | प्रवेशयामासतदानं (उ) | २४५.४८ | प्रशन्नः पुनाति कृष्ण (पा) | ८४.२३ | प्रसन्नोभगवत्तत्त्व (उ) | २०६.३६ |
| प्रविवेश महापुण्यं तद्वनं (भू) | ६७.२७ | प्रविश्याथक्रियारंभी-(सु) | ४२.२१८ | प्रवेशोदैवयोगेन (उ) | ६६.२७ | प्रश्नभारोमहानेपभवता-(सु) | १६.७ | प्रसन्नोभूचचतद्वद्वत्वा (भू) | ३.३८ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| प्रसन्नोहंसुरश्रेष्ठ (उ) | ३.३२ | प्रसाद मुमुक्षो विप्र (भू) | १२.१२२ | प्रसीदकमलेदेवि (ब्र) | १०.७ | प्रस्तरैर्विस्तरैर्वद्धो (क्रि) | २३.६० | प्रहसन्नं वुजाभासमि (पा) | ११४.१४४ |
| प्रसवेचमनुश्याणां-(पा) | १०५.१४८ | प्रसादस्य कृती वस (पा) | ७४.३६ | प्रसीदकमलेदेवि (उ) | २३२.५६ | प्रस्तुवन्देवदेव (पा) | ७२.१२६ | प्रहसतीतदाताभ्यां (उ) | २४५.३३६ |
| प्रसादं कुरुमेदेव (उ) | ३३.३७ | प्रसादात्तव चार्वंगि लब्धं (भू) | ४७.७ | प्रसीदमोपीजनवल्लभ (क्रि) | ४.६२ | प्रस्त्राणिचमुह्यानि (सृ) | १६.६१ | हसेते तदा ते द्वे स्त्रियो (भू) | ६३.४० |
| प्रसादं कुरुविप्रेन्द्र (स्व) | १४.३३ | प्रसादात्तवदेवेशवदर्या-(उ) | २१६.६१ | प्रसीददेवदेवेश (क्रि) | २१.१०१ | प्रस्थापयेत्सलोद्वारा (पा) | ८३.६३ | प्रहस्यचनतः कृष्णो-(पा) | ८२.६५ |
| प्रसादं कुरुश्रीणिकामोन् (सृ) | ३७.३७ | प्रसादात्तवयेनाशुमोक्षो-(सृ) | १३.३७३ | प्रसीददेवमेनाथ (उ) | २३०.१५ | प्रस्थापयेह्यद्वाराजन् (उ) | २२१.२४ | प्रहस्यभगवान् रुद्रः (उ) | १५१.७८ |
| प्रसादं वासुदेवस्य (उ) | २४२.१४३ | प्रसादात्तस्यतीर्थस्य (उ) | २१८.२ | प्रसीदपरपक्षणचक्र (क्रि) | ४.६३ | प्रस्थितस्तेनमार्गेषु (भू) | ३.१ | प्रहस्यसत्यामामग्न्य (उ) | ८८.२७ |
| प्रसादः क्रियतांमह्य (सृ) | ३३.१४५ | प्रसादात्तस्यदेवस्य (पा) | ८६.३० | प्रसीदपुण्डरीकाक्षप्रसीद (क्रि) | २.६७ | प्रस्थितागमनंजीघ्रं (उ) | १२६.७३ | प्रहस्यैव वचो ब्रूते तामेवं-(भू) | ४१.३० |
| प्रसादयेतं शिरसमां (सृ) | १६.१६२ | प्रसादात्तस्यदेवस्य (पा) | ६०.४४ | प्रसीदममविस्वात्मन (उ) | ८०.११६ | प्रस्थितास्तेनसार्धं (उ) | १२६.२६० | प्रहस्यैव वचो ब्रूते (भू) | १०३.२२ |
| प्रसादतीर्थसेवाचभक्ति (उ) | २५३.१३४ | प्रसादात्तस्य देवस्य (भू) | ७४.१२ | प्रसीदमेनवस्तुभ्यं (उ) | २५०.५४ | प्रस्थिताहरिणातत्र (उ) | २४८.१६ | प्रहस्योवाचविप्रपि (उ) | १५५.२१ |
| प्रसादतुलसीमालां (उ) | १६८.३६ | प्रसादात्तस्य वैग्यस्य (भू) | २६.३६ | प्रसादमुमुक्षोभूत्वा (उ) | ३७.८१ | प्रस्थितो धर्मं मार्गं तु (भू) | ४१.८ | प्रहितः सुरराजेन समानेत्तुं (भू) | ६४.३८ |
| प्रसादनार्थं विष्णोस्तु (सृ) | ४.१०५ | प्रसादाद्देवकीसुतोः (ब्र) | ४.२६ | प्रसीदहरिणीनेत्रेरक्षमां (क्रि) | ५.५५ | प्रस्त्रापनं प्रमथनवारुण (सृ) | ४५.१०८ | प्रहृष्टरक्षाश्च जयाघादेवा-(सृ) | १६.७६ |
| प्रसादभूततस्यैव (उ) | २०८.३२ | प्रसादाद्देवदेवस्य-(सृ) | १५.२५१ | प्रसीदहृदयावासंश्ल (उ) | ८०.१४२ | प्रस्वेदमधुचि तामिरंतेर-(भू) | ६६.६२ | प्रहृष्टेचेतसः सृष्ट्यः स्व-(भू) | ३६.४० |
| प्रसाद यतियः कृष्णं (सृ) | ४०.१०६ | प्रसादाद्देवदेवस्य (उ) | ८०.१२३ | प्रसुप्तप्रायपुरुषेनिद्रा (सृ) | ४३.८७ | प्रहरन्तिस्मोपहासं कुर्वाणा (सृ) | १७.५८ | प्रहृष्टमुपजाकीर्णं (सृ) | ३७.१६ |
| प्रसादयति यदेवान्नहाद्या (क्रि) | १२.६५ | प्रसादाद्भपतां विष्णोः (भू) | १२०.५ | प्रसुप्तवग्ममहाप्राज्ञो (भू) | २.११ | प्रहरस्व महाभाग (भू) | ५७.२५ | प्रहृष्टानिच रोमाणि प्रशांतं-(सृ) | १८.४ |
| प्रसादयन् दैत्यवरं (सृ) | ३०.६८ | प्रसादाद्यस्य राजेद (भू) | ८५.६ | प्रसुप्ते च जगन्नाथे (उ) | ६४.८ | प्रहरैरुचयापूजा (उ) | ३७.४ | प्रहृष्टायानुमारब्धादेवा-(सृ) | ३२.१५२ |
| प्रसादयासिनोभावं (सृ) | ४३.३७० | प्रसादेन चरुदस्य (सृ) | ५.६० | प्रसुप्ते च यमातंगां (उ) | २५१.२६ | प्रहर्नाचानुमात्ता-(उ) | ३२.३० | प्रहृष्टाश्चाभिनन्दितेन (पा) | ६६.८६ |
| प्रसादयामासमुदिदुवसि-(सृ) | ४.२० | प्रसारितकराण्यप्रार्थि-(सृ) | ३८.१८६ | प्रसूतवर्षां पीभिः (पा) | ७२.५३ | प्रहर्षमनुलं प्राप्यसाधु (सृ) | ३८.४४ | प्रहृष्टेषु च देवैः साधु (सृ) | ४१.१५६ |
| प्रसादयामित्वाकांतं-(उ) | १८७.३३ | प्रसार्यचतुरोवाहस्त (क्रि) | १७.१६८ | प्रसूतवर्षां पीभिः (पा) | ७२.५३ | प्रहर्षमनुलं लेभेलक्ष्मण (सृ) | ३५.५७ | प्रहृष्टादचिरकालं (उ) | २३८.१५ |
| प्रसाद मुमुक्षो भूत्वा (भू) | ३६.१०८ | प्रसार्यचरणैरुत्तरोद (उ) | २४५.५१ | प्रसूतवर्षां पीभिः (पा) | ७२.५३ | प्रहर्षमनुलं लेभेसानुज (उ) | २४२.३५३ | प्रहृष्टादचिरकालं (उ) | २४.४१ |
| प्रसाद मुमुक्षो भूत्वा (भू) | ३६.४८ | प्रसादात्तमलानाम्ना (ब्र) | ११.१७ | प्रसूतवर्षां पीभिः (पा) | ७२.५३ | प्रहसच्चन्द्रकिरणैः (पा) | ११६.६ | प्रहृष्टादचिरकालं (उ) | ७०.५५ |



शोपयमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

२६२

| | | | | |
|---|--------------------------------------|--|------------------------------------|---------------------------------------|
| हृत्वादः परमहृत्वादः (उ) ८०.१११ | प्राकारैश्चविमानं (उ) २२८.११ | प्राचीपूर्वावहानाम्ना (सु) १८.१३१ | प्रांजलिः प्रणतो भूत्वा (उ) २४२-५३ | प्राणायामत्रयंकुयन्ति (उ) २५३.८२ |
| प्रहृत्वादपुत्राग्रायुधमान् (सु) ६.४० | प्राकारोद्यानवापीषु (उ) १२२.१६ | प्राचीमेवेहवत्स्यामित्वया (सु) १८.१४६ | प्रजलिः पुरतः (उ) २४६.१०० | प्राणायामत्रयंकुत्वा- (सु) ४६.१६० |
| प्रहृत्वादमुखभवतायेये (उ) १.६२ | प्राकृतैर्ह्यसंयुक्त (उ) २२७.४१ | प्राची सरस्वती तत्र नरैः (सु) ३२.१४० | प्राज्ञोहमधिदेवात्मा- (भू) ३६.२३ | प्राणायामपदेव्यानां (पा) ११४.३२१ |
| प्रहृत्वादवचनास्तंभेभ्यः (उ) ११०.१६ | प्राक्कुलान्पर्युपासीत (स्व) ५३.४४ | प्राचीसेतितुर्व्यंजया (सु) ३२.१२० | प्राणप्रयाणकालेतु- (उ) २२०.४८ | प्राणायामपरानित्यं (सु) १५.१६४ |
| प्रहृत्वादवत्सभद्रतेभ्यः (उ) १७४.२८ | प्राक्तनं वंघनं कर्म (भू) ८१.५४ | प्राच्यार्वंकुठलोक (उ) २२८.५६ | प्राणप्रयाणकालेतु (उ) २२१.२१ | प्राणायामपरो नित्यं (पा) ८५.२६ |
| प्रहृत्वादशक्रयोर्भीमं (सु) १२.८० | प्राक्स्थानं सप्तमासाद्य- (सु) १५.२२ | प्राजापत्यंतथान्नादि (पा) ८४.६१ | प्राणव्ययकरेणत्वंतपसा (सु) १४.१८० | प्राणायामवरो नित्यं (सु) १५.१८७ |
| प्रहृत्वादसर्वदैत्यानां (उ) २३८.१४८ | प्राक्षालयदशेषाङ्गं (पा) ११७.१६१ | प्राजापत्यंतथास्तीर्थम् (स्व) ३७.४ | प्राणसंशयमापन्नं (उ) २४२.२०७ | प्राणायामवरो नित्यं (सु) ४६.१५७ |
| प्रहृत्वादस्तस्यतनयो (उ) १६६.१२ | प्रागहं सोम शर्मणिः (भू) ५.२० | प्राजापत्यंददौमह्यं (उ) २२३.१७ | प्राणादेरविनाभावं (पा) १०५.१२६ | प्राणायामयुतांतस्माद (सु) ४६.१५७ |
| प्रहृत्वादस्तालधारीतरल (उ) १६८.६० | प्रागायतोमहाभागमलयो- (स्व) ८.१४ | प्राजापत्यंपवित्रं (उ) २४.६६ | प्राणानहंजुहोम्यग्नो- (सु) ३५.४२ | प्राणां स्तेनं प्रवत्ता हि (भू) ६४.६० |
| प्रहृत्वादस्य यु या माता (भू) ५.२४ | प्रागेव फल मूलानि (पा) ८३.६१ | प्राजापत्यं ब्राह्मणानां (सु) ३.१५५ | प्राणानायाम्यसकल्प- (पा) ११७.७१ | प्राणिनां क्षयरूपेण (भू) ६४.६३ |
| प्रहृत्वादस्वयवचः श्रुत्वा (सु) ४५.६६ | प्राग्ज्योतिषपुरं चापि- (सु) ४५.१७३ | प्राजापत्यं ददात्कृति- (सु) ३२.७१ | प्राणानायाम्यसकल्प- (पा) ११४.३५४ | प्राणिनां च हितं सोम्यं (सु) ३७.१६८ |
| प्रहृत्वादस्य मुतां (उ) २३६.१ | प्राग्वंशकायोद्युति- (सु) १६.६० | प्राजापत्यं त्रयंकुय्यात् (त्र) १८.१५ | प्राणांतकरणं जातं (सु) ४४.२०३ | प्राणिनां धर्मसंज्ञानां- (सु) ३६.३० |
| प्रहृत्वादेनिहृतसंख्ये (भू) ५.२३ | प्रागवासरादौ संपूज्य- (सु) २२.१८० | प्राजापत्यं द्वयंकुय्यात् (त्र) १६.२ | प्राणांतकालेपुंसस्तु (पा) २०.३७ | प्राणिनां प्राणहिंसायां (भू) ६६.७ |
| प्रहृत्वादोज्ञानिनां श्रेष्ठः (उ) १७४.७ | प्रागणपुष्पमालाभि- (सु) २४.४६ | प्राजापत्यं मूक्षमिदं (उ) ३३.१२ | प्राणांतिकालेपुंसस्तु (उ) ६६.२८ | प्राणिनां मोहनायि (सु) ४३.१५१ |
| प्रहृत्वादोपितथाविष्णु (उ) २३८.५६ | प्राङ्मुखीकल्पयेद्वेनुं (सु) २१.५४ | प्राजापत्यं संपुन्युतां (त्र) ४.२२ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां वल्लभो देहो (उ) १३२.८ |
| प्रहृत्वादोयत्रलिः कुंभः (सु) १८.६८ | प्राङ्मुखो निर्वपेत् (सु) ६.१८६ | प्राजापत्यं ब्रतं कुय्यात् (त्र) १६.१८ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां संशयविद्धि (भू) ५३.१०२ |
| प्रहृत्वादोयत्रलिः कुंभः (सु) ११६.१२५ | प्राचीतटे जाप्यपरो नये (सु) १८.१०१ | प्राजापत्यं निरुच्छेष्टि (स्व) ५६.४ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां हि कपालेषु (भू) ५३.६६ |
| प्रहृत्वादोयत्रलिः कुंभः (सु) ४५.७३ | प्राचीनत्वं सरस्वत्याया- (सु) १८.१५८ | प्राजापत्यं निरुच्छेष्टि (स्व) ५६.४ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां हृदये नित्यं (भू) १२३.१० |
| प्रहृत्वादोयत्रलिः कुंभः (सु) ४५.७३ | प्राचीनत्वं सरस्वत्याया- (सु) १८.१५८ | प्राजापत्यं निरुच्छेष्टि (स्व) ५६.४ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां मंगदेशे (सु) ८.६० |
| प्राकारोपुर्जुष्टा (उ) २४२.४१ | प्राचीनत्वं सरस्वत्याया- (सु) १८.१५८ | प्राजापत्यं निरुच्छेष्टि (स्व) ५६.४ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां मंगदेशे (सु) ८.६० |
| प्राकारैश्च महारत्नं (भू) १११.८ | प्राचीनत्वं सरस्वत्याया- (सु) १८.१५८ | प्राजापत्यं निरुच्छेष्टि (स्व) ५६.४ | प्राणांतिकेन दंडेन राम- (सु) ३७.७७ | प्राणिनां मंगदेशे (सु) ८.६० |

२६३

| | | | | |
|--|--|---|--|---|
| प्राणीवाय दिवाप्राणी (सु) १५.३०३ | प्रातश्चक्रोद्यतोमात्रा (पा) ८३.२५ | प्रादाच्चतस्रं भगवान् (उ) २०.४१ | प्राप्तनिद्रद्वाभाति (पा) ८३.६७ | प्राप्नुवायेनवायच्चतः (सु) १५.३५१ |
| प्राणेषु चविनष्टेषु (क्रि) ५.१६३ | प्रातश्चक्रायप्रथमो (स्व) ५३.५० | प्रादात्कामगमयानं (सु) २०.३६ | प्राप्तमेवमिद्विजैवर (पा) ८८.२६ | प्राप्नुवंतिनराः पापाः (उ) २२४.१० |
| प्राणिः सप्तमहातेजा (उ) २४५.७४ | प्रातस्त्रयमन्यत्कर्मतः (पा) १०५.६८ | प्रादात्तस्मिन्विषंधोर (उ) २३८.७१ | प्राप्तमैन्द्रादंतेनप्रत्तादातः (भू) ५.१०७ | प्राप्नुवंतिमुराः प्रीति (उ) ११.३५ |
| प्राण्यंगममभिचूर्णं (उ) ६४.६ | प्रातस्त्र्यंजुत्पाश्रीया (त्र) १६.२३ | प्रादादांगिरस्तस्नुष्टो (सु) १५.१०४ | प्राप्तवंतोभवंस्तुः (भू) ५.५३ | प्राप्नोतिनात्रसंदह (उ) १६७.४६ |
| प्रातः कालेः रेखुच्चः (पा) १०४.११७ | प्रातः स्नातः सनिधमः (पा) ६८.३७ | प्रादुरास तदा तस्य (भू) ३६.१३ | प्राप्तः समाचरेत्स्नान (क्रि) १२.२८ | प्राप्नोतिपद्मांसिद्धि (उ) २२६.११६ |
| प्रातः प्रयाणामिमुखः (पा) ६२.८६ | प्रातः स्नात्वांगुक्षचः (पा) १०१.४६ | प्रादुरासीत्ततोहारः (सु) ४३.१ | प्राप्तस्ततोत्तररूपमेन (सु) ३८.५७ | प्राप्नोतिमृत्युकाले (क्रि) २५.६ |
| प्रातरागत्यतस्याग्ने (उ) १८५.४८ | प्रातः स्नात्वातिर्लः (सु) २१.२६२ | प्रादुर्भावंन श्रंष्टनतस्य (सु) ४०.११२ | प्राप्तः स्वमातुर्भवनं (पा) ४.१७ | प्राप्नोत्युत्तरमंगं च देहं (भू) ६६.१३८ |
| प्रातस्त्वायद्योधीते (उ) १२८.२६४ | प्रातः स्नात्वाविशेषेणः (उ) १२४.३७ | प्रादुर्भावस्वलोकानां (सु) २.११ | प्राप्ताः कामं श्रियते (उ) २१२.३६ | प्राप्नोत्येवापकर्मफलं (उ) १०६.१६ |
| प्रातस्त्वायद्योविप्रस्तोत्रं (उ) ११७.२७ | प्रातः स्नात्वा हरि (उ) ३७.८० | प्रादुर्भावोप्ययंतस्मान्नाः (सु) ४०.१५ | प्राप्ता प्रसन्नवदनेयुक्त (सु) ४४.६६ | प्राप्नोतिमुमहदुःखं (क्रि) २१.६८ |
| प्रातस्त्वत्सहस्रांशु (उ) २२८.३२ | प्रातः स्नानंचपाद्यं (पा) १००.३३ | प्रादुर्भावोविस्फुटस्यः (सु) २.३८ | प्राप्तायादुर्भूतिस्तस्याम (पा) ११२.५५ | प्राप्यज्ञानंनतस्तत्र (त्र) २४.३६ |
| प्रातस्त्वत्सहस्रांशु (उ) २२६.७८ | प्रातः स्नानं च वैशाखे (पा) ८५.७३ | प्रादुर्भावोवामनस्थतथा (सु) ३१.११ | प्राप्तासीताजिता (उ) ४४.३७ | प्राप्यतंवाजिनंराजाः (पा) ३५.१ |
| प्रातर्गङ्गाचविष्णुं (क्रि) ६.६२ | प्रातः स्नानंनरोयोर्वै (त्र) ३.११ | प्रादुर्भूतस्तदाह्र (उ) १५१.६५ | प्राप्तास्तेतुमाहात्मनो (सु) ३५.१३ | प्राप्यतेतत्सुखेनैव (उ) ६१.१८ |
| प्रातर्गंधेनपयसातिर्लः (सु) २२.१०७ | प्रातः स्नान प्रकुर्वीत (उ) ५८.२१ | प्रादुर्भूतो महाशब्दं (सु) ४३.४५३ | प्राप्तास्मिभगवन् (उ) १६८.४० | प्राप्यतेदर्शनंतत्र (उ) २४६.३८ |
| प्रातर्गृहाणोद्भूतं लैयं (त्र) १८८.६ | प्रातः स्नानेननिष्पापोः (स्व) ३१.५५ | प्रादेशमात्रं हृदिमस्त्रुतय (सु) १५.३८३ | प्राप्तेस्तस्वकालेसासु (उ) ३५.३५ | प्राप्यदेहं विनाभक्ति (उ) १३२.२६ |
| प्रातर्नित्यंविद्यायासोः (पा) ५६.१ | प्रातः स्नानेनवैशाखे (पा) १०१.५३ | प्रातृत्वतजगत्सर्वतैजसाः (सु) १८.१३४ | प्राप्तेस्तस्वकालेसासु (उ) ३५.३५ | प्राप्यतेमरणश्चभवनं (उ) १६८.५० |
| प्रातर्मध्यापराह्णे (पा) ६७.३२ | प्रातः स्नानेनसुधागं (स्व) ३१.५६ | प्रातृविष्णुसामुद्र्यं (क्रि) २५.६६ | प्राप्तेरेवदुर्गंरम्यं (उ) ६०.२२ | प्राप्यदेतानितीर्थानि (स्व) ४७.१७ |
| प्रातर्मध्याह्नापराह्णे (पा) ११४.८ | प्रातः स्नायीनिजाचारः (क्रि) १६.५१ | प्राप्तंजात्वातोतो (उ) १०.२२ | प्राप्तो न पारः शनकैर्मः (उ) १३२.१४६ | प्राप्यतेपाषाणैरेतस्मद्देः (स्व) ११.१५ |
| प्रातर्गंधेनमणिहृष्टवाः (स्व) २२.७३ | प्रातः स्नायीनयानघां (उ) ७०.८ | प्राप्तंनैलोक्यराज्यत्वं (सु) ३०.१५१ | प्राप्तोप्यैश्वर्यसर्वरक्षोः (सु) ४६.८७ | प्राप्यप्राज्ञानमुष्णंति (उ) १२५.१३१ |
| प्रातर्गंधेनमणिहृष्टवाः (उ) १२८.८२ | प्रातः स्नायीभवेन्नित्यंते (क्रि) १०.५ | प्राप्तनिवेदयमुखायुष्ण (पा) २.६ | प्राप्तोयंमाद्यमोमास (पा) ८५.४८ | प्राप्यानुज्ञांगुरोः कुर्वे (स्व) २२.८६ |
| प्रातश्चक्रांतरधरः (क्रि) १०.६ | प्रातः स्नायी स्वयं (क्रि) ६.१६७ | प्राप्तंशच्याः सखीत्वं (उ) २१.४३८ | प्राप्तोयंयक्षराजस्य (उ) २१४.५३ | प्राप्यानुज्ञांगुरोः सर्वं (उ) १२८.६५ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

२६४

| | | | | |
|---|---|---|---|--|
| प्राप्याप्यैद्रं पदं पुत्रास्ततो (भू) १०.२७ | प्रायश्चित्तानि सर्वाणि (उ) ७१.१३ | प्राथम्यस्वमहाभाग (उ) २१४.३६ | प्राश्रियात्प्रोक्षयेद्दहं (पा) ७६.३३ | प्राहृप्रीतो वराहस्तां (भू) ४३.६० |
| प्राप्यतेनात्रसंदेहः (भू) ६४.३४ | धायश्चित्तेन रौद्रेण (भू) ३६.६५ | प्राथयानास्सुखपुत्रलोभो (सु) ४.७५ | प्रासंगिकं त्वया चाद्य (उ) १५४.४३ | प्राहृवाक्यं तदाहास्यं (सु) ३५.१७ |
| प्राप्यते परमं स्थानं सुरा (पा) २०.८५ | प्रायश्चित्तेन रौद्रेण तान् (पा) ६७.३७ | प्राथयामि च देवे (उ) ३८.६६ | प्रासं चिकानां भूमिणां (पा) १०५.६३ | प्राहासौमानुषी वाचमा- (स्व) २०.३० |
| प्राप्यसित्तं सुखं (पा) ८६.४० | पायश्चित्तं स मुत्पन्ने (उ) १२०.४० | प्राथयेद्दण्डं वस्यान्नं (स्व) ३१.११० | प्रासादज्जायते नम्यक् (स्व) ३३.२४ | प्राहास्मान्यमुना भ्राता- (स्व) ३१.१०० |
| प्राप्यसित्तं सुखं (पा) ६०.५४ | प्रायश्चित्तं तर्गुः शास्ता (भू) ६७.१०६ | प्राथितं भग्यमायाति- (सु) ४३.४६० | प्रासादध्वजदेवानां (पा) ६७.४६ | प्राहेति विस्मिता विप्र (क्रि) २०.२७ |
| प्राप्यसे परमं स्थानं (भू) ८.१०५ | प्रायेण प्राथितो ह्यर्थं (सु) ४३.३३१ | प्राथितः समयानीय (उ) २०४.८१ | प्रासादभूम्यां क्रीडन्ती (उ) १४.२० | प्रियं कं राक्षवाला नां- (प) ६६.११२ |
| प्राप्य सेवरदानेन (सु) १७.२६६ | प्रायेण श्रीमदालं पान्ना (भू) ६६.१८४ | प्राथंयं नियोज्यास्तु (सु) ६.७८ | प्रासादशतसंवाधनां (पा) १०६.६२ | प्रियंगवः पाटलाख्याः (सु) ४५.५४ |
| प्राप्यामि मुमुक्षुर्नैव (उ) २३८.५१ | प्रायो न माता सा मास्माक (सु) ४.५० | प्रातपं रामचन्द्रेति (भू) १२३.३२ | प्रासादशतसंवाधं मत्त (पा) ११७.१० | प्रियं गाढं समालिङ्ग्य (उ) १५.४२ |
| प्राप्तादिकं च त्वापं (स्व) २६.३६ | प्रायोपवेशं प्रयतः (सु) १८.४७१ | प्रातपशं लंचपतिगिरीणां (सु) ७.७३ | प्रासादाः शुभ्रवर्णाभाः (उ) २६.२० | प्रियः प्रियायाः पुरूपे (सु) ४३.२६० |
| प्रायः कृताद्यौ लोको यमन्य (सु) १८.३३१ | प्रायोपवेशं प्रयतः (सु) ३२.६२ | प्राप्येमान् वेल्लं केषमासा (सु) १७.६८ | प्रासैः खड्गैश्च पाशैश्च- (सु) ४०.१६२ | प्रियभृत्यगणाराध्यं (पा) ७०.४७ |
| प्रायः प्रसादे कोपेपि सत् (सु) ४३.२०८ | प्रायोपवेशं येन त्रप्रकुर्वति (सु) १२.१२२ | प्रावर्ग्य क्रियमाणे तु ब्राह्मणे (सु) १७.१३२ | प्रासैः पाशैश्च खड्गैश्च- (सु) ४५.११२ | प्रियया च न वायुतो (भू) ५३.८ |
| प्रायशो यत्पुत्रादग्धं (सु) ६.७४ | प्रयोपवेशना द्राव्यं (उ) ३२.६३ | प्रावर्तत तोषो धाराशोणित- (सु) १४.१५ | प्रास्फुरन् पतेस्तस्य (उ) ४१.४० | प्रियया च न वायुतो (भू) ५३.८ |
| प्रायश्चित्तं तपो रूपदान (उ) १२६.६४ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्रावृट्कालं बुदाकारं (भू) ८३.६० | प्रास्याज्यभागा वा (पा) ६५.१०४ | प्रियया च न वायुतो (भू) ५३.८ |
| प्रायश्चित्तं न तस्यापि (उ) २०४.४६ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्रावृट्कालं वियत्पुण्यं धन- (सु) ३२.८१ | प्राहृश्राद्धं नैव मुक्तिश्चे- (उ) १६७.५२ | प्रियवाक् सत्यवादी च (भू) २८.८१ |
| प्रायश्चित्तं न पश्यति (स्व) २३.१७ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्रावृत्तिस्त्वगियं त्वहनि (पा) ११०.४१ | प्राहृचारिणो महारोपात (पा) ३४.२६ | प्रिय वाङ् मयुरो रोगो (भू) ११.३६ |
| प्रायश्चित्तं न पश्यति (उ) १२८.१३३ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्रावृत्त्यच शिरः कुर्यात् (स्व) ५२.३७ | प्राहृजालं परं शुभ (उ) १७.५ | प्रियव्रतो ज्ञाननपाद (सु) ३.१७६ |
| प्रायश्चित्तं परं रजतमाद्य (उ) १२६.३८ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्रावेशय दमेयात्मा (पा) १०५.४१ | प्राहृत्सर्वथा योधान (पा) ६१.१८ | प्रियश्च शिवयोनिर्त्वं- (सु) २१.१३२ |
| प्रायश्चित्तं न क्षोधीरः (सु) १६.५८ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्राशनां दानमंत्रे च (सु) २६.३५ | प्राहृदेवं चतुर्वक्त्रं भवान (सु) ४३.२६ | प्रियस्यागमनं नवी- (उ) १४.३४ |
| प्रायश्चित्तं न क्षोधीरः (पा) ६४.१५३ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्राशिता मिस्तथा वैश्यः (स्व) ५२.१६ | प्राहृप्रयामि पार्वत्यान् (उ) १८.१६ | प्रिया च श्रीमधुमती (पा) ७०.६ |
| प्रायश्चित्तं विषुद्धात्मा (पा) १०४.१५६ | प्रावृत्तं ततो होत्रं ब्राह्मणे (सु) १६.१६१ | प्राशना मिहती ज्वालां (पा) १०७.१४ | प्राहृप्रवचसं वंशेष्टो रामो- (सु) ३८.५० | प्रियानुरागिणी दीना (पा) ८२.२६ |
| | | | | प्रियायाः प्रियमनिच्छं (पा) १५.२७ |

श्रीपद्ममहापुराणम् १: श्लोकानुक्रमणी

२६५

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| प्रियावाक्यंसंश्रुत्य (पा) | ८७.४६ | प्रीतस्तस्य भवेद्दुःखं (स्व) | २१.४६ | प्रीयतां धर्मराजेति पितृ (पा) | ६८.२३ | प्रेतस्कंधसमारूढमेकं (उ) | ६६.२३ | प्रेरितो वासवेनाजावर्ध (पा) | ३६.६६ |
| प्रियासखी महाभागा (सु) | ३८.११५ | प्रीतास्तस्य भवेत्सर्वस्व (स्व) | १३.१३ | प्रीयतां नेत्रललिता- (सु) | २६.३४ | प्रेतस्कन्धानमहीं गत्वा (उ) | ६६.२५ | प्रेययत्वं संपत्नीकं (पा) | १६.२४ |
| प्रियास्यन्यस्त (पा) | ८१.३६ | प्रीतासती महाभागा (भू) | ११६.३४ | प्रीयतां मे श्रियः कांतः (उ) | ६६.७० | प्रेतानां कर्म जातानां- (सु) | ३२.२२ | प्रेययस्व महाभागा- (भू) | ४८.१६ |
| प्रिये करिष्यते घातं (भू) | ४२.१७ | प्रीतिमन्त्रस्ततः सर्वे (भू) | ५.६४ | प्रियतामत्र कुमुदागृह्णी- (सु) | २२.११६ | प्रेतानां तु विमानानि- (सु) | ३२.५४ | प्रेययामासकाकुत्स्थो- (पा) | १०४.१४२ |
| प्रियेरुद्रेण रौद्रेच्छिनं (उ) | १५.३८ | प्रीतिर्मवद्धंते ते ह ब्रूहि- (स्व) | ११.३ | प्रियतामत्र देवशः केशवः (सु) | २३.५६ | प्रेतानां तेन प्रेतत्वं- (सु) | १७.१६३ | प्रेययामासदूनांश्च (ब्र) | १२.११ |
| प्रिये वर्षं शतं भुक्तं- (भू) | ६८.२१ | प्रीतोऽस्मि तपसावत्स (उ) | २४१.४० | प्रियतामत्र भगवान् (सु) | २१.२२६ | प्रेता भवति पापेन (पा) | ६४.६७ | प्रेययामास भर्तारम् (ब्र) | ११.६० |
| प्रियो भवति देवानां (उ) | १२१.४ | प्रीतोऽस्मि तव घर्मज- (सु) | ३७.१६६ | प्रियतामत्र भगवान् (सु) | ७.२० | प्रेतापि षड्दानं तु द्वादश (सु) | १०.५ | प्रेययामास चकिष्किंघां (सु) | ३८.१६१ |
| प्रियो माघवमासोयं (पा) | ६२.२६ | प्रीतोऽस्मि तव पुत्राहं (पा) | १०८.१७ | प्रक्षणीयं मम त्वेन (पा) | ११४.१३८ | प्रेतास्तु पितरः प्रोक्ता (उ) | १२२.८७ | प्रेययामास देवेन (ब्र) | ६.२२ |
| प्रियो माघवमामोयं (पा) | ८७.२६ | प्रीतोऽस्मि तव भक्तस्य (सु) | ४५.१० | प्रेक्षतां चाभवत्प्रीति- (सु) | ४१.१८६ | प्रेतास्ते दर्शनादद्य- (पा) | ६४.८७ | प्रेययामास नैवगच्छेत् (भू) | ३०.५६ |
| प्रीणितास्तस्य च (पा) | ६८.५५ | प्रीतोऽस्ति परमोदारकर्मणा (सु) | ३२.८ | प्रेक्षमाणमिवाभीष्टं (उ) | १८५.११ | प्रेत्य चाश्वं नित्यं च (भू) | ६७.१७ | प्रेययामास चकारणा (भू) | ४३.३८ |
| प्रीणाति संततिः शुद्धा (उ) | २०१.२४ | प्रीतोऽस्ति वाले भक्त्या (उ) | १५२.२४ | प्रेतत्वं समुत्तीर्णां (उ) | ३४.६५ | प्रेत्य दुःखं न चैवास्ति (भू) | ६७.४६ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ६.३० |
| प्रीतः परमया भक्त्या (पा) | ६८.१०८ | प्रीतोऽस्मि वत्स भद्रंते (उ) | ८०.१४६ | प्रेतं विमोक्ष्य पांथोपि (उ) | १२६.२४६ | प्रेत्य सास्त्रित्वमासाद्य (उ) | १८४.७० | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ६.३० |
| प्रीतये कमलाभर्तुः (क्रि) | २०.३७ | प्रीतोऽस्मि नुगृहीतोऽस्मि (सु) | १.२६ | प्रेतः प्रीतो जलपीत्वा (उ) | १२६.२४१ | प्रेत्येहृयेऽहोविप्रो (स्व) | ५५.१२ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | १५४.३७ |
| प्रीतये कमलाभर्तुः (क्रि) | २०.१५७ | प्रीतोऽहं ते द्विजश्रेष्ठाः (उ) | १६३.११ | प्रेतभावं भयात्यक्तं (उ) | ६६.६५ | प्रेमधारोज्ज्वलाकीर्णां (पा) | ७७.२८ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ३३.६३ |
| प्रीतये देवदेवस्य कृष्ण (उ) | १२४.७६ | प्रीत्या कथय मे कांतं (भू) | १२.५१ | प्रेतरक्षो गणैर्दुग्धा (सु) | ८.२३ | प्रेमान्विताश्चरन्तु (उ) | १६५.७१ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ७६.१६ |
| प्रीतये घर्मराजस्य (पा) | ६८.१०४ | प्रीत्या नुदिव संयत्ना (पा) | ८३.१० | प्रेतराक्षसपक्षाच्चित्तियं (उ) | १२६.८६ | प्रेमणा गृहीत्वा करयोः (पा) | ७२.११५ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | १८.२६ |
| प्रीतये बाभ्रवतः (उ) | २५३.१६८ | प्रीत्या गयानि गदितं (उ) | १२७.१६७ | प्रेतबाधामुष्मात्त्वं (उ) | १६७.४६ | प्रेमणा प्रेमकटाक्षेण (पा) | ७७.३१ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ८१.६६ |
| प्रीतये धामुदेवस्य सर्व- (स्व) | २६.१८ | प्रीत्या शकुनघस्तत्र (भू) | ५८.१२ | प्रेतलोके प्रशस्तानि (भू) | ६६.२४ | प्रेमणा भवान्याविज (उ) | ६१५ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | २१.२ |
| प्रीतश्च परितुष्टश्च (सु) | ३७.१३५ | प्रीत्या समेता रतिः (भू) | ५८.१३ | प्रेतवाक्यं तदाकर्ण्य (पा) | ६८.८१ | प्रेरवत्कपोलपर्यंतं (सु) | ४३.२२६ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ७.१०४ |
| प्रीतश्च सर्वमेतन्मे- (पा) | ८४.२० | प्रीत्या हि सज्जनो भद्रे (उ) | १२७.१३२ | प्रेतसंगान्महादेवो (क्रि) | ६१.०३ | प्रेरितो देवकेनापि (उ) | १४.५४ | प्रेययामास तेन मुनिना (पा) | ६५.१०१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् ॥ श्लोकोक्तक्रमणी

२६६

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| प्रोक्षितभक्षयेदेवाम् (स्व) | ५६.४० | प्लक्षद्वीपे महाराज (भू) | ८५.५३ | फलं पक्वं रसालं तु (भू) | ८५.३६ | फलमेतस्यसेवायाः (उ) | १७६.५० | फाल्गुनस्य सितेपक्षे (उ) | ४६.१ |
| प्रोक्षयान्नाणि शीघ्रं वि (पा) | ६५.८५ | प्लवगत्वमयाज्ञप्तिनि (पा) | ११४.१७२ | फलं पत्रं तथा शाकमन्नं (उ) | ६८.१६ | फलं स्थाने नु चषकं (पा) | ११४.३३३ | फाल्गुनादि प्रतिपद- (पा) | ३६.५६ |
| प्रोचतुर्वचनविप्रा (ब्र) | १२.५८ | प्लवतीचप्रवेगेन हृदेचन्द्र (स्व) | ३.४७ | फलं बृहि सुरश्रेष्ठ (उ) | ११७.१२ | फलादिकततोदद्याद् (क्रि) | २५.४० | फाल्गुने कृष्णपक्षे तु (क्रि) | ४.१२ |
| प्रोचुश्चतैर्ध्रुवकृत्वा (उ) | २१०.२६ | प्लवितास्थिर्जलेपुण्ये (उ) | १५२.३६ | फलं माधवमासस्य (पा) | ६८.२६ | फलाधिक्यमभवेद्विप्रा (पा) | ६२.२८ | फाल्गुने चैव संप्राप्ते (उ) | ८७.२६ |
| प्रोच्यतेतत्सहस्रं तु (सृ) | ३.१२ | प्लवाविष्यतिरूपार्थ- (सृ) | १६.१७ | फलं यच्चोदितं शास्त्रे (पा) | ८७.२१ | फलाधिक्यमभवेद्भूपत्वा (पा) | ८७.२८ | फाल्गुने ब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) | १२.१ |
| प्रोच्यतेसोमताराजन् (सृ) | ३७.८० | फ | | फलं यद्यपिचोच्छिष्टं (क्रि) | १६.५६ | फलानां गौरवाच्चानि (स्व) | ५०.२७ | फाल्गुनेमासियोदद्याद् (क्रि) | १२.१३ |
| प्रोत्फुल्लबकुलामोदम- (उ) | १८४.२४ | फणामणिकणाकार (उ) | ७१.२४५ | फलं यथोदितं शास्त्रे (पा) | ६२.१८ | फलानां चरसेनापि- (पा) | ८७.६० | फाल्गुनेमासियोदद्याद् (क्र) | १२.१५ |
| प्रोत्फुल्लहेगकमलनाना (सृ) | ४४.१२६ | फणसहस्रं संयुक्तः (उ) | २४४.४६ | फलं वैष्णवधर्मस्य (उ) | ११७.८ | फलानां तु रसे नापि (भू) | ११.२२ | फाल्गुने शुक्लपक्षे (उ) | ४५.३० |
| प्रोत्साहं वप्रयतेयमोदं (पा) | ६६.१३२ | फणसहस्रं णाच्- (उ) | २४५.४६ | फलं शतगुणतत्त्व (सृ) | ३४.२६७ | फलानां नियमेचैव (उ) | ६५.११ | फाल्गुने स्नापये (क्रि) | १२.२ |
| प्रोवाचकोमवान्कस्माद् (स्व) | ३५.१६ | फणिकवतहतः मध्ये (उ) | १७.३७ | फलं संप्राप्यतेलोके (सृ) | १५.२७६ | फलानि चतदाराजन् (उ) | ४०.३७ | फुल्लपद्मोत्तलोपेतं (उ) | २२६.१२७ |
| रोवाचतनुनविप्रा (उ) | २४०.२७ | फलं कर्म च यत्तत् (उ) | ८०.७४ | फलं दाता नरोगच्छेत् (ब्र) | २४.२८ | फलानि भुक्त्वा वृक्षाणां (उ) | ४०.३१ | फुल्लरक्तानुजनिभः (उ) | २२८.२८ |
| प्रोवाचदूताः किमयमा- (पा) | १०.१८ | फलं किं भवितादेवि- (सृ) | ४३.४४० | फलदोमानवोविप्रा (क्रि) | २०.१३८ | फलेन तस्य धर्मस्य (सृ) | ५.६२ | फुल्लहस्ता रविद- (उ) | २४२.८३ |
| प्रोवाचनदिनदेवानां (पा) | ७.१३ | फलं कोटि सुवर्णस्य (उ) | ५१.४० | फलपुष्पैस्तथाविद्वन् (उ) | ७०.१८ | फलैर्नानाविधैर्द्रव्यैः (उ) | ६१.५२ | फुल्लानुजपलाशाक्षः (उ) | २१४.६५ |
| प्रोवाचपंचबाणोथ- (सृ) | ४३.२०६ | फलं चलमतेवाद्य- (उ) | १३२.१४८ | फलप्रमाणं नैवास्ति- (उ) | १२०.४३ | फलैर्नानाविधैर्भक्ष्यैः (सृ) | २१.३१० | ब | |
| प्रोवाच मंगला कांतं (भू) | ५१.४८ | फलं तत्राक्षयंतस्य (उ) | १६.४० | फलमर्थं तथा श्रद्धा (उ) | ३७.६ | फलैर्नानाविधैस्तत्र (क्रि) | २३.५० | वकवत्पलितो प्रायः (उ) | १६४.२६ |
| प्रोवाचमातः किन्नुवेत् (सृ) | ४४.२८ | फलं चम्पक पुष्पस्य (सृ) | १६.४० | फलमर्घ्यं च श्रद्धा (उ) | १२४.१२ | फलैः सुवर्णं रूपाढ्यैर्घ्राणि (सृ) | १५.२५ | वकारेणभकारेण (उ) | २२६.२७ |
| प्रोवाच सत्य संस्थासा (भू) | १०६.११ | फलं तस्य नरोष्मोति (ब्र) | ३.८ | फलमूल जलाहारी (उ) | १३०.४ | फालकृष्णमहीदत्त्वा (उ) | ३२.६ | वकुलपुष्पैः पुनर्नागं (उ) | ८७.२१ |
| प्रोवाच सर्वं वृत्तान्तं (भू) | ६३.४३ | फलं तस्य प्रवक्ष्यामि (क्रि) | १३.७६ | फलमूलपलानां वु (पा) | ७३.१० | फाल्गुनस्यत्वमावास्या (सृ) | ६.१२६ | वकुलान्स्त्रपणां (उ) | ४१.२५ |
| प्लक्षद्वीपस्य भूपस्य (भू) | ८६.२३ | फलं ददाति सुमहत् (पा) | ८७.१३ | फलमूलानि पूतानि (स्व) | ५८.४ | फाल्गुनस्यविशेषेण (उ) | ४५.३ | वकुलाशोकपुनर्नागं (भू) | ७७.१३ |
| प्लक्षद्वीपस्य राजान- (भू) | ८५.७२ | फलं ददाति सुमहत् (पा) | ६२.१० | फलमेकं च संप्राप्य (सृ) | ७.२२ | फाल्गुनस्यसिते पक्षे (उ) | ४४.१ | वज्रास्त्रेणनृराः (पा) | ६३.६५ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------|--------|---------------------------|--------|
| बटुवेषधरदेवं (उ) | २४०.३ | बढानेतुंमनस्चक्रुः (त्र) | २२.३३ | बंभुभिः स्वजनैश्चैव (सु) | ३१.१३३ | बभूवसजादुर्जयपत्ति-(सु) | ४२.१०४ | बलं वांछतियो लोको (उ) | १४२.१३ |
| बजवामुखेचवसतिः (सु) | ४१.१०६ | बढानेतुं मनस्चक्रे (त्र) | १८.५६ | बंभुग्धोमरणंभ्रातु (उ) | २१६.१२ | बभूव हास्तिनपुरे (क्रि) | २०.२० | बलं स्ववशगंकृत्वा (उ) | ४.४१ |
| बडवारूपमास्थाय (सु) | ८.५६ | बढानेतुं यदाचक्रुः (त्र) | १६.२५ | बंभु वगै च निस्तेहास्-(सु) | १५.१६३ | बभूवात्यन्तसंहृष्टा (क्रि) | ५.१२३ | बल कृच्छापिषष्टांशं (उ) | ११२.२५ |
| बदरीभक्षयतेयत्रत्रिरात्रो (स्व) | २७.७० | बद्धे समीरजे क्रुद्धः (पा) | ५२.३८ | बंभुक पुष्प वण्णेन (भू) | ३६.११ | बभूवुः पुत्र पोत्राश्च (उ) | ३०.८० | बलघ्नंवाहूमूलाध (उ) | ७८.२२ |
| वररेंगुदिशकानि (सु) | ३३.८६ | बद्धेननाविधैः पुष्पैः (उ) | २४५.१६० | बवंचकोह्यमहोरुष्ट-(पा) | ५४.३२ | बभूवरमितप्रज्ञाः (पा) | ६१.१० | बलतेजः क्षमाहीनः (भू) | ७८.३२ |
| बदयस्त्रिंमहापुण्यं (उ) | २१६.४४ | बद्धोरक्षमालंकादग्धवा (पा) | ११६.२१७ | बवंचुश्चर्मपाशेन (त्र) | २.२२ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | १६६.३२ | बलदाकृष्णमाणोहं (उ) | ६६.८ |
| बदयार्थममासाय (पा) | ७३.३ | बद्धवागलेपुपापाणं (क्रि) | २३.१४१ | बभापेकेन पुण्येन (उ) | १८६.५८ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ३३.१७ | बलदेवोपिमुशलं (उ) | २४६.१५ |
| बद्धधुवाग्निधानुकस्तथा (उ) | १२५.१३ | बद्धवास्वतुसमायातो (उ) | ४१.२४ | बभापेमवतुल्येन (सु) | ३६.१०८ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | २१०.८ | बलदेहोद्भवान्यासन् (उ) | ६.३० |
| बद्धवष्टीतथान्योन्यं (उ) | ४३.२३ | बद्धवासमुद्रंसतु-(पा) | १०४.१३४ | बभूवुवद्विभिवद्वि (सु) | ४१.२०८ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ६६.२१ | बलभद्रं सुभद्रां च (क्रि) | १८.२२ |
| बद्धश्चंपकवीरेण-(पा) | ५१.५१ | बद्धांजलित्वयापुष्टः (उ) | १६४.७ | बभूवचततः पश्चात् (सु) | १४.२४ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | १३.४२ | बलभद्रोमहातेजा (उ) | २४८.५ |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा (भू) | १६.४८ | बद्धाततः सहस्रांशं-(सु) | ४२.१० | बभूव दुहितागेहे (उ) | ६०.७ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ८६.२५ | बलभद्रोमहाबाहु (उ) | २४७.३१ |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा (भू) | २८.१०६ | बन्दिनश्चरणाः सर्वे (भू) | २८.७३ | बभूव वृषगादूलशोभन (उ) | ६०.१६ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | १६६.३२ | बलभावेन संप्राप्ता (भू) | १०३.७ |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा (भू) | ७८.८२ | बन्दीगृहान्मयामुखित (उ) | १२२.११५ | बभूव ब्राह्मणो विष्णोः (क्रि) | २१.३५ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ३८.३७ | बलमित्रश्चिरं युद्ध (पा) | ४३.१० |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा | ८८.३७ | बन्दीजस्तथापुण्यैः (भू) | १४.३० | बभूवभूपतिः पूर्व (पा) | ६६.१ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ७२.१४५ | बलमित्रेण सुन्दः (पा) | ४२.२३ |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा (भू) | ६०.६ | बन्धकाश्चापितेविप्रा-(पा) | १०४.१५५ | बभूवजलिप्लासाभूमि (त्र) | २.२६ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ८१.३६ | बलरट्टास्तवाविप्राः (स्व) | ६.५० |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा (भू) | ६८.२८ | बन्धयागामुरुन्मत्ता (त्र) | ६.२१ | बभूव वज्रनिभिर्नैः (उ) | १८.१३ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ११.८८ | बलवारभवद्वायुस्तस्य (स्व) | २.११ |
| बद्धांजलिपुटोभूत्वा (भू) | १०८.१० | बन्धाद्यकारयत्तैस्तु (पा) | १११.१६ | बभूव वाष्पणी देवो (सु) | ४.४७ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ८२.१६ | बलवान्मयवा चैव-(उ) | १६८.१६ |
| बद्धांजलिरिति प्राह-(क्रि) | ६.११८ | बन्धाद्यतिप्रपंचयद्युग-(पा) | १०४.५५ | बभूव व्याकुलं सर्वं (सु) | १५.६८ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | २६.८ | बलवानेपवे वायुस्तस्य (सु) | २.६४ |
| बद्धांजलीनिदिव्यानि(भू) | ६०.१७ | बंभुजीवैः प्रियेपूज्या-(सु) | २२.८६ | बभूव सकुमारश्च (उ) | १२६.२६३ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | २३.४४ | बलवंग मुदुर्द्वंदान (उ) | १७७.४६ |
| बद्धातोचर्मपाशेन (त्र) | ११.२६ | बंभुदोहितपुत्राद्यैः (उ) | ५८.३० | बभूव सप्तमे भिन्ने (उ) | १६७.८३ | बभूवुः सुखिनो देवाः (उ) | ६१.६६ | बलस्य ऋषवचनं (उ) | ६.३८ |





श्रीपद्महापुराणम् ॥ श्लोकानुक्रमणी

२६८

| | | | | |
|-----------------------------------|------------------------------------|------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|
| बलस्य सा प्रियाजाना (भू) १०३.३४ | वलिसंयमनोघोरी (उ) ७१.२४७ | बहिनियोगमलदानगथा (स्व) ६.४५ | बहुनारायणोद्गह्या (सृ) ४०.३६ | बहुवर्षाणि राजेन्द्र (स्व) ४४.६ |
| बलहीनायदीनापि (भू) ८.५६ | वलस्वरार्यदः सर्व (उ) ७१.२०० | बहिनिल्कमनं चैव (स्व) ५५.७१ | बहुनोक्तेनकिवत्स (उ) १७४.२४ | बहुशस्त्राणिदिव्याणि (उ) १५.२६ |
| बलांगस्यैकभाग (उ) ६.२२ | वलीसुदुर्बलवत्तत्त्वा (सृ) १६.२६८ | बहिर्भूयदुर्लभेहाद (ब्र) ११.२१ | बहुपाप समायुक्तः (ब्र) १५.४० | बहुशास्त्रं समम्भस्य (पा) १०६.१३ |
| बलागिध्वेलीना (उ) ६.४१ | वलीवदं समारुद्रः (स्व) ४३.४ | बहिर्मात्समुज्ज्व (उ) २५३.४२ | बहुपुण्य प्रकर्त्ताचक्रत (उ) ५८.१४ | बहुश्रेयः समायुक्तं (भू) १००.१३ |
| बलातेनगृहीतानि (उ) २४६.७३ | वलेन परिचारेण शौर्ये (पा) ६६.१३८ | बहिक्रियां प्रकुर्वतं (क्रि) २१.१४ | बहुपुण्यप्रभावेन (ब्र) ५.२६ | बहुश्रोतं च तं ज्ञात्वा (सृ) ३७.११२ |
| बलादानियुस्तं विप्राः (भू) ३८.३५ | वलेनपरिवारेण (भू) १०.१५ | बहिःस्नानंतुवाप्यादीद (उ) १२७.२४ | बहुपुण्यफलोपेतं वने (भू) ८६.६ | बहुहोपणीतानिसारसानां (सृ) ४५.५२ |
| बलादेनां समाकृष्य (ब्र) १३.४६ | वलेनप्रजयातिस्थं (उ) १२६.१२५ | बहुकोलहलभूपत (उ) १२८.१८१ | बहुपुण्यमयः सिन्धुर्यथा (भू) ८४.१० | बहुनांगवराणांस्व (पा) १०७.७५ |
| बलाबल विचारार्थ (उ) १२६.२३३ | वलेनप्रजयावापिसमर्थाः (भू) ८१.५१ | बहुक्लेशेतयुज्यते (स्व) ४७.२० | बहुप्रभासि मे प्रीता गुण (भू) ५१.११ | बहुनांभोजनं दातु (पा) ११७.१२८ |
| बलाहकस्य च शिरः (उ) १०२.१० | वलेनवलानिक्तातो (पा) ४७.१६ | बहुजन्म विबुद्धात्मा (सृ) ३६.१५० | बहुप्रासादसंयुक्ता (उ) २४१.४१ | बहूनि च पुनस्तानि (पा) ८३.६५ |
| बलाहकाजन मिर्भं (सृ) ४०.१३३ | वलेनापिगृहीतुं क्षमो (उ) २१७.१७ | बहुजन्माजितं पुण्यं (क्रि) १८.१५ | बहुप्रेतैः समायुक्तो (उ) १३६.१४ | बहूनि पद्मनाभस्य (पा) ११७.५ |
| बलि दिनापिभोदहान् (ब्र) १२.४८ | वलेः पुत्रवार्त्तासीद (सृ) ६.४३ | बहुजन्माजितान्येपा (उ) ४६.३५ | बहुबुद्धि समाक्रांता (भू) १२.६० | बहूनिविप्रमोवाणि (सृ) ४१.७६ |
| बलिनाम पूर्वपामी (उ) ५३.१२ | वलेचैव गथारूपं (भू) ७६.२० | बहुधर्मसमोपेतं चारु (भू) ७६.६ | बहुभार्यानारिकेलाद्राधा- (सृ) २८.३१ | बहूनिविधान्येव (ब्र) १५.१३ |
| बलिभिः पुष्पंजा (उ) २७.५३ | वलेराच्छाद्यपृथिवी (उ) २४६.३८ | बहुधाविबिधाच्छब्दा (पा) ५७.१६ | बहुभिर्जन्मभिर्धेन (उ) २१३.४ | बहूनिनिदिनानि (क्रि) २०.६६ |
| बलिमात्स्यदैत्येन्द्र (उ) १२२.४६ | वलेलीनंदनं ध्याये (पा) ६६.८७ | बहुधाजलवेगेन पर्वता (उ) १३७.२ | बहुभिर्दरणीयुक्ताभूपालैः (सृ) ८.१ | बहुपकरणोयज्ञो (स्व) ४६.१३ |
| बलिमुद्दिश्येतत्रकार्य (उ) १२२.५५ | बहिःक्षितिजानानि (सृ) १५.२६ | बहुधान्योबहुधनो (सृ) ३०.६४ | बहुभिर्धनधान्यैश्च (उ) २४६.४५ | बहुपत्याश्रीववत्सा (क्रि) २१.३३ |
| बधियज्ञस्तथाध्वस्तो (क्रि) ६.१८४ | बहिःप्रदक्षिणं कुर्यात् (सृ) ६.१८२ | बहुनामपसाकृत्वा (पा) ४.६ | बहुभिर्वाण साहस्रं (उ) २४६.६३ | बहुनांशसमुत्पन्न (सृ) १५.१२ |
| बलिराजनमस्तुभ्यं (उ) १२२.५२ | बहिरंतश्चाप्रकाशः (सृ) ३.६२ | बहुनात्रकिमुक्तेन (क्रि) २.१०८ | बहुभिः ब्रूकर्तुं (भू) ४३.२२ | बहुभरणभूपाडचरणे (सृ) ४६.२१ |
| बलिराज्याधिकारेण (सृ) १३.१६६ | बहिरालोकयांचक्रेवास (उ) १८५.४० | बहुनात्रकिमुक्तेन (क्रि) ८.१०६ | बहुरूपाविश्वरूपा (सृ) १७.३२० | बहुभयः शुभमः श्रीमान् (सृ) ४४.२१७ |
| बलिराजस्तुभुभदा (सृ) १७.२५३ | बहिरैव पतंत्येते (भू) १२०.१४ | बहुनात्रकिमुक्तेन (क्रि) १७.२८७ | बहुवर्षसहस्रायुस्तस्यै (सृ) ३६.८६ | बहुभयश्चमयः शूनः (उ) १२५.१११ |
| बलिर्बद्धोहृतोर्जभो (सृ) १३.२१० | बहिर्नोहि धर्मात्मा (भू) १०५.४६ | बहुनात्रकिमुक्तेन (क्रि) १८.५४ | बहुवर्षसहस्रं (सृ) ८१.७ | बलाश्चयं समोपेतं (सृ) १५.२४१ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-----------------------------|--------|---------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| वाणंवनुवचलितं (पा) | ११६.२५७ | वाणैर्विदारितादेवां (उ) | ७.६३ | वालमेतच्छृणुष्वान्य-(पा) | ६६.१६८ | वाल्म्यपंचम वर्षान्ते (पा) | ७७.५४ | वाह्यधर्ममयाहृष्येते (पा) | ८२.४८ |
| वाणं मुमोच दुष्टात्मा (भू) | ३०.२६ | वाणैर्विष्याधविहसन्-(पा) | ६०.३१ | वालरूपयध्वात्वा (उ) | १७४.४० | वाल्म्यं भावंगतो विप्राः (भू) | ५.३२ | वाह्यभूमिगत्वायो (क्रि) | ६.४७ |
| बाणश्रयेणभोवीर (पा) | ४२.६८ | वाणैश्चयुधिविद्वांगाद-(मृ) | ४३.३६ | वालरोगैश्च विविधै (भू) | ६६.१०६ | वाल्म्यषोमंङ्कशोरं (पा) | ७७.५६ | वाह्यमानकशाधार्तं (उ) | ११३.१६ |
| बाणभक्त्यातिसंतुष्टा (क्रि) | १३.११२ | वाधन्तेद्रुमखंडेषु (स्व) | १५.२३ | वालः संमानयेन् (स्व) | ५३.२६ | वाल्म्यावधिगुरुस्व (उ) | २१०.५३ | वाह्यान्तरावकाशश्च (भू) | ७.४८ |
| बाणमुद्वृत्त्यतृणीरा (उ) | २०३.१७ | वाधयन्ति च गोवत्सान् (भू) | ६७.८६ | वालसूर्यं प्रकाशेन (मृ) | १५.२०१ | वाल्म्यकृतंमया पापं (भू) | ३८.१२ | वाह्याभ्यन्तरमेवागि रसैः (भू) | ५३.६५ |
| बाणलोचन संकाश (पा) | १०५.१६५ | वाधितेवदनायातु-(मृ) | १६.२७५ | वालस्त्ववृद्धरूपी च (मृ) | ३८.१६२ | वाल्म्येयस्त्वं पापं (उ) | ६१.३२ | वाह्याहिमवनः पृष्ठे (उ) | १३३.१० |
| बाणलोचनसंकाशं (पा) | १०५.२२६ | वाधवानां स मोहेन (भू) | ८.१६ | वालस्य च शरीरत्वं (मृ) | ३५.५८ | वाल्म्ये वयसि संप्राप्ते-(भू) | ५३.४३ | वाह्निकावाटवानाश्व (स्व) | ६.४२ |
| बाणस्सलवाहस्तु (मृ) | ६.४५ | वाधवास्तस्यविप्रस्य (क्रि) | १२.६५ | वालस्यविष्णोश्चरितं (उ) | ७८.५८ | वाक्कलिदानवैदं तं-(मृ) | ३०.५५ | वाह्नीयहिकृतंपापं (पा) | १०५.१४२ |
| बाणानंगेसहद्विष्णोः (घ) | ७.७२ | वालज्ञात्वाभवान्नाऽत्र (पा) | ६०.६६ | वालस्यविष्णोश्चरितं (उ) | ७८.५८ | वाहुभिश्चसनिस्त्रिंशो (मृ) | ४१.२२४ | वाह्नीयहिकृतंपापं (उ) | २२५.५० |
| बाणानपरिख्याता (पा) | ६२.१६ | वालकाश्चिमासूचः (पा) | ६३.३१ | वालातपनिभलक्षण (उ) | २२८.३६ | वाहुभिस्तु लयन्धोम-(मृ) | ४१.१७२ | विदवो मोक्षिकाभास्ते (भू) | १०१.३६ |
| बाणानासतकेनाशु-(पा) | ४२.४१ | वालकाम्याचकोरेकं (मृ) | ४४.१७७ | वालातीर्थनरः स्नात्वा (उ) | १५२.२७ | वाहुभ्यां मंदरं गृह्य (मृ) | ४.४२ | विभीनकतच्छृङ्गायां (उ) | १२६.२६ |
| बाणान्वनुषिन्धाय-(पा) | ४१.१३ | वालकोपिध्रुवोयत्र (पा) | ७३.५३ | वालानं तु यथापित्रो-(पा) | ८४.२६ | वाहुभ्यां सागरं तनु (घ) | १३२.३० | विभीषणं कथमसौ- (पा) | १०४.३४ |
| बाणान्वनुषिन्धाय (पा) | २३.६२ | वालत्वादयतेबुद्धिरेवं (मृ) | ४४.१६२ | वालान्प्रतिजगादासौ (पा) | ६३.१८ | वाहुमूलस्थरोमोच (पा) | १०८.२० | विभीषणो महासूर्या (पा) | ६७.४० |
| बाणान्समभिवर्षं (पा) | ४३.७ | वालत्वेतुश्चकर्मपूर्वं (उ) | १४१.३० | वालापइतिविर्यातं (उ) | १५२.२६ | वाहुमूले च कंठे च (पा) | ११४.२१६ | विभीषणाह्नूमांश्च (क्रि) | ११.१३१ |
| बाणांस्तान्सवर्भजाशु (पा) | ५१.५६ | वालत्वेयौवनत्वे च (उ) | ५६.२० | वालपण्याभिचाराश्च (मृ) | ४७.१८ | वाहुमूलेलिलेचक्रं (उ) | २२४.४८ | विभेदपुरुषत्वं च (मृ) | ३.१७५ |
| बाणाश्चगतसाहस्राः (पा) | ३४.६३ | वालत्वेयौवनेवापि (स्व) | ३१.१६४ | वालपत्या चमे भार्या (भू) | ६६.१६० | वाहुयुद्धेनयुयुये (पा) | ४३.३० | विभेद्याशुनतो वाहु-(उ) | १५१.६१ |
| बाणाश्चतसाहस्राः (पा) | ६३.६२ | वालभावास्थितोदेवि (भू) | ११३.३३ | वालायास्तास्तास्त (पा) | ७१.७० | वाहुतस्याश्चकामेन (उ) | ४३.१६ | विभ्रतंमुरलीवामेपाणी (पा) | ८१.४१ |
| बाणैर्नानेनचेत्वां वैन-(पा) | २७.३१ | वालभावान्मयाकिंचिद् (मृ) | ८.४६ | वालार्ककोटि संकाशा (उ) | २४२.१०१ | वाहुदवानं दीर्घागो (पा) | ३५.६५ | विभ्रान् उपवीतं च (पा) | १०६.४७ |
| बाणैर्षुगुणविश्लेषो (पा) | ५.४३ | वालमादित्यसंकाशनं (मृ) | ३६.१०५ | वालिकादयश्चिह्नलता (पा) | ११६.६४ | वाहु संकुच्य सतिष्ठेव (भू) | १२०.४० | विश्वोष्ठपुटचुविन्या (पा) | ७२.४० |
| बाणैर्जंजंरदेहास्ते (उ) | ७.३६ | वालमायाहिमांक्रुद्धं (पा) | ४२.२६ | वालैर्नवदुराषो (उ) | २४५.२२५ | वाह्यतो लोक शब्देन (मृ) | १७.६१ | विलेशब्दं सयुवाव (मृ) | १३.७६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| विल्वदलं समादाय (उ) | १३७.२३ | बुद्बुदाइवतोयेषु (उ) | १६७.६१ | बृहत्सामतपोधमः (सु) | ३.११२ | बोधामद्राः कलिगाश्च (स्व) | ६.३७ | ब्रह्मचर्यद्विग्राहणस्य (सु) | ४१.८५ |
| विल्वपत्रार्ककुसुमांबुज (सु) | २२.६० | बुद्बुदाइवतोयेषु (स्व) | २६.२६ | बृहत्साम्ना मुमंत्रणे (भू) | १२५.२८ | बोधितोऽप्यवजानाति (पा) | ६६.७ | ब्रह्मचर्यस्थितोधर्मोः (सु) | ४१.८६ |
| विल्वपत्रं स्तथाधूप (उ) | १७२.२ | बुधः प्रोवाचतांतन्वी (सु) | ८.१०२ | बृहदाग्रहणेदेविप्रयण (सु) | ३४.६० | बोध्यमानोतदातेन (उ) | १६४.२८ | ब्रह्मचर्येणसत्येन (पा) | ८६.८ |
| विल्वस्पदलक्षणा (क्रि) | १३.८५ | बुधश्रवण संयुक्ताया (उ) | ६६.४ | बृहदेव्या स्वतंजने (सु) | १३.१२४ | ब्रजध्वंस्वनिक्तानि (सु) | ३१.२३ | ब्रह्मचर्यप्रज्ञावृद्धि (उ) | ६४.१०४ |
| विल्वानिपरिपक्वानि (सु) | १७.११७ | बुधस्यादरमालोक्य (उ) | २१५.६ | बृहद्रथं तरतत्रज्येष्ठः (सु) | ६.१६१ | ब्रथीमिसारसंवाक्यं (उ) | १२६.१४४ | ब्रह्मचारिण्यादीक्षा (सु) | १७.२२४ |
| विसान्येतान्यपश्यत (सु) | १६.३४२ | बुधध्वमेवचः सम्पद्य (सु) | १३.३६२ | बृहद्रातिर्महाजिह्वः शंकु (सु) | १८.७१ | ब्रह्मकर्मणिसंयुक्तः साधर्म्यं (भू) | २०.४० | ब्रह्मचारीगृहस्थश्च (स्व) | ३१.४० |
| बीजपूरं कुसुमं च (पा) | ११४.४४४ | बुधरातं प्रत्यचंदीपी- (सु) | १८.३२५ | बृहन्निर्तवस्तनभार- (सु) | १२.२४ | ब्रह्म कृच्छ्रोपवासैश्च (सु) | १५.१६८ | ब्रह्मचारीगृहस्थेवा (ब्र) | २३.५ |
| बीजपूरैः सनारिगैरं (उ) | १२८.१७५ | बुभुक्षिते न चात्यन्तं (उ) | १०.५१ | बृहस्पतिगृहे सर्वजात (सु) | १२.४७ | ब्रह्मक्रियारतो नित्यं (उ) | ८२.३३ | ब्रह्मचारीगृहस्थो (उ) | ८०.११३ |
| बुद्ध्या च यत्परिछेदं (सु) | ३३६ | बुभुक्षितोभक्षयितुं (उ) | १८३.२२ | बृहस्पतिमतं पुण्यं (उ) | ३२.७० | ब्रह्मक्रियायालोपेन (उ) | ५४.१७१ | ब्रह्मचारीशसंज्ञस्तु (उ) | १३५.११४ |
| बद्धातां दानवी माया (सु) | ४४.७२ | बुभुजे च स्वयं राजन् (उ) | २१४.२२ | बृहस्पतिमुमाचेदंवाक्यं (सु) | ४२.८३ | ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्र (क्रि) | २२.५३ | ब्रह्मचारीजित क्रोधः (स्व) | ४३.३२ |
| बुद्धिं परेषादाप्स्यति (उ) | १३२.३५ | बुभुजे दानवी मासं (भू) | १०६.४ | बृहस्पतिस्वतंत्रवीरं (पा) | ४५.८ | ब्रह्मघोषेणतेविप्राता- (सु) | १६.१०५ | ब्रह्मचारीजिनाहारो (स्व) | ५६.११ |
| बुद्धिपूर्वं कृतं कर्मभोगे (पा) | ८.२५ | बुभुजेदेवबद्धू म्याम् (ब्र) | १२.६२ | बृहस्पतिसमंबुद्ध्या (उ) | ८१.३ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (भू) | ७८.२२ | ब्रह्मज्ञानरतायेच (उ) | ६४.६६ |
| बुद्धिपूर्वमिवन्यस्तैः पुण्यैः (सु) | १५.२४ | बुभुजे बुभुजे दिव्या- (भू) | २२.३३ | बृहस्पति सुरांध्याशं (पा) | ४४.७२ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीभवेन्नित्यम् (स्व) | ५४.१२ |
| बुद्धिः प्रज्ञाददा श्रद्धा (भू) | १२.६४ | बृहस्पतिनिपण मध्यम (उ) | २०२.२४ | बृहस्पतिस्त द्विरहाग्नि (सु) | १२.२७ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |
| बुद्धिं यथाविधादस्य (उ) | १३२.६४ | बृहच्छरीरोग्निस्तमान- (उ) | २२७.७ | बृहस्पतिस्तुतांतां (उ) | २१५.३१ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |
| बुद्धिब्रह्महितोभदे (भू) | १२०.४३ | बृहती कुसुमं शुद्धं (पा) | ११४.३८७ | बृहस्पतेः सुतोयस्तु (उ) | २१५.१२ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |
| बुद्धिस्वास्थ्यमनः (उ) | १२८.२७५ | बृहतीपूगपुनागचंपक (पा) | ११४.२८५ | बृहस्पतिस्तुतोयस्तु (उ) | २१५.१२ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |
| बुद्धिहीनः प्रवदसि वृद्ध- (पा) | ५०.३७ | बृहत्कपालं संगृह्य (सु) | १७.३३ | बृहस्पतिस्तुतोयस्तु (उ) | २१५.१२ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |
| बुद्धेः सदबुद्धिरेव (उ) | २२.२३ | बृहत्तनुदराः कैपिकेकरा (सु) | १८.६६ | बृहस्पतिस्तुतोयस्तु (उ) | २१५.१२ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |
| बुद्बुदाइवतोयेषु प्रतीका (उ) | १२६.१८ | बृहत्प्रतापैर्नोभितै (उ) | ६६.१७ | बृहस्पतिस्तुतोयस्तु (उ) | २१५.१२ | ब्रह्मघ्नस्त्वदेवदुष्टः (पा) | ३१.३१ | ब्रह्मचारीव्रजसंज्ञां (स्व) | ४१.१६ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-----------------------------|---------|----------------------------------|--------|------------------------------------|---------|
| ब्रह्मणः शरणं प्राप्ता (भू) | २८.१०४ | ब्रह्मणोज्योतिषेतुभ्यं (उ) | २२८.८१ | ब्रह्मण्यः पयनामः (उ) | २५५.७७ | ब्रह्मघ्नानाग्निनिर्दग्धा (सु) | १५.११२ | ब्रह्मभक्तः पितृपरः (सु) | ६.८१ |
| ब्रह्मणः सुप्रिया नित्यं (सु) | १७.२४६ | ब्रह्मणो दक्षिणां दत्त्वा (पा) | १०८.४४ | ब्रह्मण्यः पुंडरीकाक्षो (उ) | २५५.६३ | ब्रह्मघ्नायोमहासत्त्वस्व- (सु) | १५.२३५ | ब्रह्मभक्तो विमानेन (सु) | १५.२२५ |
| ब्रह्मणस्तुतदाज्योति (सु) | ३.१७२ | ब्रह्मणो ब्रह्मदेहाय (सु) | ५.८१ | ब्रह्मण्यभावशून्य (३) | ३६.३७ | ब्रह्मनिष्ठः कुलीनो (पा) | ८१.२५ | ब्रह्ममोहनमश्रुवदं (पा) | ६६.३४ |
| ब्रह्मणस्तुतदाशरीराणि (सु) | ३.६७ | ब्रह्मणे ब्रह्मह्नाय (भू) | ३२.४० | ब्रह्मण्यश्रय शरण्यश्च (उ) | २५५.५७ | ब्रह्मनृद्धिरण्यगर्भोय (सु) | १४.८७ | ब्रह्मयोनि समासाद्य (स्व) | २७.३० |
| ब्रह्मणस्तेनवाक्येन (सु) | १७.८४ | ब्रह्मणेरयत वसनं (पा) | ११४.३६१ | ब्रह्मण्यश्च हृषीकेशः (उ) | २५५.७८ | ब्रह्मनैवास्तिवैकिंचित् (स्व) | ४६.१४ | ब्रह्मयोनिस्तथाख्या (उ) | १.५३ |
| ब्रह्मणस्संनयानु (सु) | १६.३६० | ब्रह्मणे विष्णवेतुभ्यं (उ) | २२८.८५ | ब्रह्मण्योनारसिंह (उ) | २५५.७५ | ब्रह्मनृकदाभृगुविप्रो (उ) | १२५.६० | ब्रह्मयोनिप्रसूतस्य (सु) | ४१.८१ |
| ब्रह्मणाऽभिहितः पूर्वम् (स्व) | ५३.८४ | ब्रह्मणो विष्णुना पूर्वमेत (सु) | ३.५७ | ब्रह्मण्यो ब्रह्मन् (पा) | ८४.७३ | ब्रह्मनृककारणं च तो (उ) | १६८.६६ | ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थं (पा) | १०७.६२ |
| ब्रह्मणाकथितं तत्र (उ) | ७१.५३ | ब्रह्मणोदक्षिणे गार्ध्वं (सु) | १७.२४० | ब्रह्मण्यो यज्ञ वाराह (उ) | २५५.७६ | ब्रह्मन्नातिथि पूजाया (क्रि) | २५.२५ | ब्रह्मराक्षसवेतालवक्ष (उ) | २५३.६६ |
| ब्रह्मणाचैव कथित (सु) | ११.६३ | ब्रह्मणोदक्षिणे गार्ध्वं (सु) | १७.२४० | ब्रह्मतीर्थं समासाद्य (स्व) | ३८.७१ | ब्रह्मन्नाग्रं पः कर्तुं (उ) | २०२.३८ | ब्रह्मरुद्रादिभिर्देवै (उ) | १३२.१०० |
| ब्रह्मणानवर्षद्विधो ग (उ) | १३४.२० | ब्रह्मणो वाह्यणानां (सु) | १७.२८५ | ब्रह्मतुंगं समासाद्य (स्व) | २४.३० | ब्रह्मन् मार्तंडतनया (उ) | १६.६३ | ब्रह्मरुद्रोपूरुस्कृत्य (उ) | २३८.१२३ |
| ब्रह्मणानकृताचर्यादक्षिता (सु) | १७.६४ | ब्रह्मशोभूः महानृकोव (सु) | ३.१७१ | ब्रह्मतेजोमय तीव्रं (भू) | २६.३ | ब्रह्मन् मार्तंडतनया (उ) | १६.६३ | ब्रह्मरूपेण येनातोवया (क्रि) | १७.१४० |
| ब्रह्मणानिमित्तं तेनजपत् (भू) | ६६.३६ | ब्रह्मणो मानसं येन (उ) | २०६.१० | ब्रह्मत्यानमेद्यापि (पा) | ६४.२६ | ब्रह्मनवचिमसासेन (ब्र) | ८.२ | ब्रह्मर्धवायचमयाहस्तां (सु) | २२.१३८ |
| ब्रह्मणा पूजिताः सर्वे (सु) | १६.१०२ | ब्रह्मणोवचनं श्रुत्वा (सु) | १४.६ | ब्रह्मत्वंवाशिषत्वं (क्रि) | १६.२५ | ब्रह्मन्सत्यमिदं चोक्तं (उ) | २०२.३६ | ब्रह्मर्धयस्त्वांतत्रस्थाः (सु) | ४१.३०१ |
| ब्रह्मणाप्येवंमेवंतु वाम (सु) | १७.२४ | ब्रह्मणोवचनं श्रुत्वा (क्रि) | २१.१०० | ब्रह्मदत्तवरत्नात् (पा) | ६१.५६ | ब्रह्मन्सर्वस्वराख्यस्य (उ) | ३०.१ | ब्रह्मर्धं प्रतिगृह्णीष्व (सु) | ३६.१२५ |
| ब्रह्मणाप्रेरितो देवः (ब्र) | १३.२६ | ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वाहरि (क्रि) | २१.१ | ब्रह्मदत्तमृगुष्वत्वं (उ) | १३५.६६ | ब्रह्मपुत्रो महातेजा (भू) | १०८.१ | ब्रह्मसंयसहित (सु) | ३८.१५६ |
| ब्रह्मणा ब्रह्मवर्चस्केतु (पा) | १०४.१७ | ब्रह्मणो वरदानं सर्वेषां (सु) | ३०.१५ | ब्रह्मदत्तस्तु विख्यातो (उ) | १३५.१०६ | ब्रह्मपुत्रो महातेजा (भू) | ३४.३३३ | ब्रह्मलोकागमिष्यति (सु) | १८.१५७ |
| ब्रह्मणामिहिताश्रेणी- (सु) | १५.३२६ | ब्रह्मणो वरदानं सर्वेषां (सु) | ३०.१५ | ब्रह्मदत्तस्यवैतस्य (सु) | ३७.१२३ | ब्रह्मप्रसाधनं तत्र (पा) | ६६.४६ | ब्रह्मलोकं तथा हेमवान- (पा) | १०२.१० |
| ब्रह्मणावत्पुत्राप्रोक्तं (सु) | २.४६ | ब्रह्मणोऽस्यस्वयं रूपं (उ) | २३६.१० | ब्रह्मदत्तादयस्तस्मिन् (सु) | १०.१२२ | ब्रह्मप्राणेश्वरः सर्वभूत (उ) | ७१.१३८ | ब्रह्मलोकं महात्मानो (सु) | १५.२५६ |
| ब्रह्मणासतवोक्तस्तो (सु) | ४०.५८ | ब्रह्मण्येवैदविद्वानं (उ) | १२७.८३ | ब्रह्माद्विजसमाकीर्णा (पा) | १२.४१ | ब्रह्मप्रावरणं चन्द्रस्तस्य (पा) | ११४.३१ | ब्रह्मलोकच्युताः सर्वे सर्वे (स्व) | ४.२३ |
| ब्रह्मणोऽपितर्षवादाद्धोत्रे (पा) | ११.४२ | ब्रह्मण्येवैदविद्वानं (उ) | १२७.८३ | ब्रह्माद्विजसमाकीर्णा (पा) | १२.४१ | ब्रह्मभक्तः क्षेत्रवासी (सु) | १५.२२३ | ब्रह्मलोकमवाप्नोति (सु) | १६.२४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३०२

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|
| ब्रह्मलोक महनीतो (सृ) | ३३.२७ | ब्रह्मविष्णुशिवादीनां (पा) | ७७.१६ | ब्रह्महृत्यस्यः पाप (स्व) | ३५.१४ | ब्रह्महृत्यादि पापानि (उ) | २१.२० | ब्रह्महृत्योपमं कर्मदारुणं (भू) | ३४.२२ |
| ब्रह्मलोक रुद्रलोक (पा) | ७१.३६ | ब्रह्मविष्णुशिवादीनां (उ) | १२२.१५ | ब्रह्महृत्या गता तस्य (भू) | ६१.६ | ब्रह्महृत्यादि पापानि (उ) | ३४.१६ | ब्रह्महरीस्थितोतत्र (पा) | ११४.१२८ |
| ब्रह्मलोकस्यपन्थानं (सृ) | ३३.४० | ब्रह्मविष्णुर्करुद्राणां (सृ) | ६.१६० | ब्रह्महृत्या गता देवि (उ) | १४०.१४ | ब्रह्महृत्यादि पापानि (उ) | ६१.२० | ब्रह्महागोघ्नकः स्तेनः (सृ) | ३२.५१ |
| ब्रह्मलोकाच्युतश्चापि (सृ) | १५.२२८ | ब्रह्मवृक्षोभवेद्यत्र (भू) | ३६.१०४ | ब्रह्महृत्या गुरुहृत्या (भू) | ६२.११ | ब्रह्महृत्यादि पापानि (पा) | ६८.१२३ | ब्रह्महाचैवगोघ्नोवा (उ) | ८१.३७ |
| ब्रह्मलोकद्विष्णुलोके (पा) | ११०.२६ | ब्रह्मवैवर्तसंजंतु (स्व) | ६२.५ | ब्रह्महृत्यागृहीतैरे- (सृ) | १६.१७२ | ब्रह्महृत्यादि पापे (उ) | ३८.११८ | ब्रह्महानपितोराजन् (उ) | २०६.७ |
| ब्रह्मलोकाप्तचांडाल (उ) | ७१.२३५ | ब्रह्मशापहतोशेष (उ) | ७१.२२० | ब्रह्महृत्यादिकं पापम् (ब्र) | १.१४ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापेभ्यो(क्रि) | ३८.११८ | ब्रह्महामघपः स्तेनस्त- (पा) | १०६.४३ |
| ब्रह्मलोकेन राधीरारमते (सृ) | १५.२४२ | ब्रह्मशापेन संभीता (भू) | ३५.३८ | ब्रह्महृत्यादिकं पापम् (स्व) | ३५.८ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (क्रि) | ११.१४६ | ब्रह्महामघपानी च (उ) | २६.५ |
| ब्रह्मलोकेवसेद्राजन्य- (सृ) | २२.१६४ | ब्रह्मसंपरिवेद्यते (सृ) | ४०.५३ | ब्रह्महृत्यादिकं पापम् (पा) | २०.७६ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (स्व) | ५०.१४ | ब्रह्मह्रास्वर्णस्तेयो च (भू) | ६७.५० |
| ब्रह्मकाधाम्पुराणम् (उ) | ३४.३३ | ब्रह्मसूर्यैर्द्रुद्रादि (उ) | ७१.२३० | ब्रह्महृत्यादिकं पापं (उ) | २३.४६ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | ३०.५४ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | ३५.२२ |
| ब्रह्मवंशात्समुद्भूतो (भू) | ३८.२२ | ब्रह्मस्थानानिचान्यानि (सृ) | ३४.७७ | ब्रह्महृत्यादिकाः पापाः (भू) | ६०.५० | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | ५४.२८ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | ८४.२१ |
| ब्रह्मवंशेऽतिविस्थातो (पा) | १४.३१ | ब्रह्मस्थानेषुसर्वेषु (सृ) | १७.३२२ | ब्रह्महृत्यादिकैः पापै (भू) | २४.२५ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | ३४.२० | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १२६.२८ |
| ब्रह्मवर्चसकामस्तु (स्व) | ५७.३६ | ब्रह्मस्वविपुलोकेषु (उ) | ३२.४७ | ब्रह्महृत्यादिकैः पापै (भू) | २४.२६ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १.३२ | ब्रह्महानेमहारी वा (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मवल्लीमहतीर्य (उ) | १४४.१ | ब्रह्मस्व च परस्व च (उ) | १२६.८२ | ब्रह्महृत्यादिकैः पापै (भू) | २४.२० | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविद्याप्रदातारं (पा) | ११४.४०६ | ब्रह्मस्वरूपिणः सर्वपापाः (उ) | ६६.५१ | ब्रह्महृत्यादिकैः पापै (भू) | २४.२० | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविद्यामता (पा) | ६४.१०८ | ब्रह्मस्वरूपे हे गणे (क्रि) | ६.४२ | ब्रह्महृत्यादिपापानां (पा) | ११४.८५ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | ५०.४ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविद्योपदेशेन (उ) | १८२.१४ | ब्रह्मस्वहृरणकुर्वन्नरो (उ) | ३२.४५ | ब्रह्महृत्यादिपापानां (भू) | ६२.३१ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविष्णुगिरिज्ञादयः (उ) | १२८.४७ | ब्रह्मस्वहृरणकुर्वन्नरो (क्रि) | १६.६ | ब्रह्महृत्यादिपापानि (सृ) | १७.२७४ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविष्णुमहेशादि (पा) | ७४.२८ | ब्रह्मस्वदेवद्वित्रिणं (उ) | ५५.८ | ब्रह्महृत्यादिपापानि (सृ) | ३४.१६५ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविष्णुमहेशानांकः (उ) | २५५.१२ | ब्रह्मस्वेतचपुष्टानि (उ) | ३२.४४ | ब्रह्महृत्यादिपापानि (क्रि) | ११.११५ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |
| ब्रह्मविष्णुमहेशानां (पा) | १०५.१४४ | ब्रह्मस्वेतोर्नतकुयति (उ) | ३२.४२ | ब्रह्महृत्यादिपापानि (क्रि) | २०.१५५ | ब्रह्महृत्यादिभिः पापै (उ) | १४.१२२ | ब्रह्महाद्रैमहारी च (उ) | १७४.६२ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| ब्रह्माणं तर्पयेत्पूर्वं (सु) | २०.१५६ | ब्रह्माण्डमालाभरणे (पा) | १०८.५० | ब्रह्मादिदुः सहज्योति (उ) | ७१.१६४ | ब्रह्मापिस्मरते नित्यं (स्व) | ४६.१६ | ब्रह्मास्वयं च जगती-(सु) | २.११२ |
| ब्रह्माणं तु पुस्तकृत्य (भू) | २३.७ | ब्रह्माण्डमित्याष्टादश (पा) | ११५.६३ | ब्रह्मादिब्रह्माविष्णु (उ) | १२८.२२६ | ब्रह्माप्येनं स्वयं पृच्छ- (उ) | १७८.२० | ब्रह्माहमिगियार्थि (उ) | १२८.२३६ |
| ब्रह्माणं नारदो पृच्छत् (ब्र) | ७.२ | ब्रह्माण्डेयानि तीर्थानि (त्र) | १४.१० | ब्रह्मादिलोकपालानां (उ) | १०.४६ | ब्रह्माबोदियं शुद्धापिता (पा) | ५६.५५ | ब्रह्माह्वयं च प्रतिमां (सु) | ७.१५ |
| ब्रह्माणं पाद पीठे च (पा) | १०८.१५ | ब्रह्माण्डोदरवर्तीनियानि (सु) | ३४.३८२ | ब्रह्मादिवंशचागम्यं (पा) | १०५.३६ | ब्रह्माब्रह्मास्वरूपेण (सु) | २.१०७ | ब्रह्मच्छाविष्टमयो (सु) | १५.६८ |
| ब्रह्माणं पूजयिष्यति (सु) | १७.२२२ | ब्रह्मा तदामम वचो (पा) | ७५.६ | ब्रह्मादिसंस्तुताकीर्ति (पा) | ५६.५६ | ब्रह्मामहर्षयस्तत्रदेवा-(सु) | ३२.६२ | ब्रह्मन्दरुद्रमरुतांच (सु) | ३३.१५६ |
| ब्रह्माणं ब्राह्मणाश्चैव (सु) | १७.१६४ | ब्रह्मातेयांपरंस्थानं (सु) | ३१.५६ | ब्रह्मादिस्तवपर्यंत (उ) | १२८.२४७ | ब्रह्मार्थवेदहरणः (उ) | ७१.१७७ | ब्रह्मन्दरुद्रमरुद्व्युन (सु) | ४६.५१ |
| ब्रह्माणं ब्राह्मणाच्छसि-(सु) | ३६.८० | ब्रह्मात्मजं नमस्कृत्य (भू) | ११६.२८ | ब्रह्मादिस्तवपर्यंत (उ) | १३२.६६ | ब्रह्मावर्तं कुशावर्तं (सु) | ११.५६ | ब्रह्मं शं कपिलेशं च (भू) | ८५.२७ |
| ब्रह्माणं भक्षितुं प्राप्तः (उ) | १०.४० | ब्रह्मात्मजेनापिमहानुभाव(पा) | ६०.५५ | ब्रह्मादिस्थावरतोय (सु) | ४३.१७७ | ब्रह्मावाप्तवरंतद्धिमया-(पा) | ११५.१३ | ब्रह्मवपूज्यइत्यन्येवर्तति (उ) | २५५.१५ |
| ब्रह्माणं मोहयित्वा (उ) | २३०.१२ | ब्रह्मात्मजेनापिमहानुभाव(भू) | १८.३६ | ब्रह्मादीनां देवतानां (पा) | ७५.१४ | ब्रह्मावायुश्च सोमश्च (सु) | ४०.११७ | ब्रह्माकृतयुगप्रोक्तं (उ) | ११७.२३ |
| ब्रह्माणं शिवमन्याश्च (पा) | ६६.३५ | ब्रह्मात्ममेवत्रिदशैक-(क्रि) | १३.११५ | ब्रह्मादीनां सुधातारं (भू) | १६.४६ | ब्रह्माविष्णुगिरी श्रेष्ठो (सु) | २.४ | ब्रह्मातुकलयमध्ये (सु) | ३४.२७८ |
| ब्रह्माणं सहसाविश्या (सु) | २६.४८ | ब्रह्मात्ममेवहृदिरस्य-(सु) | ४६.६० | ब्रह्मादेवाः पशुपति-(सु) | ४५.६१ | ब्रह्माविष्णुर्महादेवो (उ) | १२७.५२ | ब्रह्मापाशं वैष्णवं (पा) | १०४.५१ |
| ब्रह्माणमग्रहीत्कूर्चं (उ) | ६६.२७ | ब्रह्मायकपिलश्चैव (सु) | १६.५० | ब्रह्माद्यलम्ब्यदेवेश (पा) | ११४.१४३ | ब्रह्मासनसमीपे तु (उ) | २२०.४ | ब्रह्मापाशं वैष्णवं (उ) | १६८.७४ |
| ब्रह्माणमाह दैत्यस्तु-(सु) | ४४.५२ | ब्रह्माथविष्णुर्भगवान् (सु) | २१.६६ | ब्रह्माद्यास्त्रिदशाः (क्रि) | १८.१० | ब्रह्मास्त्रेणेन्द्र (उ) | २४२.३०३ | ब्रह्मापाशं वैष्णवं च (उ) | २३६.१४ |
| ब्रह्माणमिदंरुद्रं च (उ) | २४२.२०१ | ब्रह्मादयः सुरा सर्वे (उ) | ७१.१०५ | ब्रह्माद्यास्त्रिदशाः (क्रि) | १८.३७ | ब्रह्मासंचितयामास (उ) | १६८.३६ | ब्रह्मापुराणं प्रथमं (पा) | ११५.८६ |
| ब्रह्माणं तु परं देवयं (सु) | ३४.२४० | ब्रह्मादयः सुराः सर्वे (उ) | १२६.४४ | ब्रह्माद्यैर्लभः (उ) | १३२.१५० | ब्रह्मा समचितोयेन (भू) | ८८.४३ | ब्रह्माणं कुशलं पृच्छेत (स्व) | ५१.२६ |
| ब्रह्माण्डं च भुवं चैव (सु) | ४१.२०६ | ब्रह्मादयस्तथादेवाः (उ) | ८०.१५५ | ब्रह्माद्यैः सनकाद्यैश्च (पा) | ७१.११ | ब्रह्मासंपूज्यतंविप्रं (पा) | ११५.७० | ब्रह्माणं कृष्णशर्मणम् (त्र) | २६.२६ |
| ब्रह्माण्डं सर्वं तूलं (पा) | ८४.६७ | ब्रह्मादयोप्यात्म (उ) | २२.२८ | ब्रह्मामदेनपूण्याहतेनानं (पा) | ७२.३२ | ब्रह्मासृजतिभूतानि (स्व) | ४८.३ | ब्रह्माणं च प्रतिष्ठाय (सु) | १७.२२४ |
| ब्रह्माण्डं सर्वं तूलं (भू) | ८६.८३ | ब्रह्मादिका भवत्कीर्तिः (पा) | ५६.१५ | ब्रह्मानुस्वरमित्येवं (स्व) | २६.६८ | ब्रह्मास्त्रतत्करभ्रष्टमागतं (पा) | ४५.४६ | ब्रह्माणं चातिथि चैव (त्र) | ५.१७ |
| ब्रह्माण्डं सर्वं सम्पन्नं (सु) | ३४.३७६ | ब्रह्मादिकाम्यलालित्य (उ) | ७१.२५० | ब्रह्मापित्रिदशैः साधसुप (भू) | ६६.१७३ | ब्रह्मास्त्रं दत्तवान्ब्राह्मणः(भू) | ११०.१८ | ब्रह्माणं पूजयित्वा तु (उ) | ४५.५७ |
| ब्रह्माण्डस्तदिच्छातः (सु) | ४३.१७५ | ब्रह्मादित्रिदशांस्त (उ) | २२८.१०५ | ब्रह्मापिनैवशक्नोति-(उ) | १२६.२४३ | ब्रह्मास्त्रंपाशुपत्यास्त्रं (पा) | ११.२८ | ब्रह्माणं पूजयेद्यस्तु (क्रि) | २१.१० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३०४

| | | | | |
|---|--|--|---------------------------------------|--|
| ब्राह्मणं प्रथमं वक्त्राद्- (सु) ३६.७६ | ब्राह्मणः प्रणवं कुर्यात् (स्व) ५३.४५ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः (उ) ७५.१४ | ब्राह्मणान्भोजयित्वा (सु) १७.२३१ | ब्राह्मणाश्चमहात्माना (क्रि) २६.६ |
| ब्राह्मणं भोजयेदेकं कोटि- (स्व) १८.४५ | ब्राह्मणश्च समीपे तु (सु) १६.१०० | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या (उ) ८३.३४ | ब्राह्मणान्भोजयित्वा (ब्र) १६.४ | ब्राह्मणाः सहितास्ते तु (सु) १७.६३ |
| ब्राह्मणं भोजयेद्भक्त्या (सु) ७.१६ | ब्राह्मणः श्रुतिं संलभः (उ) ८०.१६ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या (उ) १४०.१६ | ब्राह्मणान्भोजयेत्क्या (उ) ७०.२६ | ब्राह्मणाः सुरभीसत्यं- (पा) ८५.४२ |
| ब्राह्मणं मां महादेव (उ) ६६.२४ | ब्राह्मणस्तु तेनाश्वामितो (उ) २५२.४७ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या (उ) २२३.२७ | ब्राह्मणान्भोजयेत्त (उ) २५३.१५६ | ब्राह्मणास्तेवभूवस्तुना- (उ) २५५.७३ |
| ब्राह्मणं मावजानाति (उ) २५५.३३ | ब्राह्मणस्तुलसीचैव (स्व) ४०.६ | ब्राह्मणादानसंतुष्टा (पा) ६८.५ | ब्राह्मणान्वाचयित्वा तु (सु) १७.२३६ | ब्राह्मणीगच्छते मोहा- (पा) ३३.५२ |
| ब्राह्मणं यः समाहूय (भू) ६७.५२ | ब्राह्मणस्तु विशुद्धात्मा (स्व) २७.३ | ब्राह्मणानपि गच्छात् (उ) ११०.२६ | ब्राह्मणान् वैष्णवांश्चैव (उ) ५५.४१ | ब्राह्मणी चापि विप्रेन्द्र (क्रि) २०.२६ |
| ब्राह्मणं विष्णु बुद्ध- (पा) ८५.४६ | ब्राह्मणस्तु कुले जातश्च तु (क्रि) १३.६३ | ब्राह्मणानां कुलेतात (उ) २१४.५६ | ब्राह्मणान् हंतुं मायातोय (स्व) ३४.१३ | ब्राह्मणीपंचगव्यम् (ब्र) १८.१६ |
| ब्राह्मणं बृद्धहारीतं (उ) १२५.४३ | ब्राह्मणस्य कुले शुद्धे (क्रि) १३.१६० | ब्राह्मणानां च वदतां श्रुत्वा (सु) ३६.१२ | ब्राह्मणा ब्रह्मलोकं तु (भू) ६६.३८ | ब्राह्मणेन तु यद्दत्तं तन्मेव (सु) ३६.३१ |
| ब्राह्मणांश्च समाहूय (पा) ६२.४३ | ब्राह्मणस्य कुले शुद्धे (क्रि) १७.३७ | ब्राह्मणानां तथा भोज्यं (सु) १७.२५१ | ब्राह्मणाम्याशमागत्य (पा) १०६.८ | ब्राह्मणेन भवेच्चोणम् (स्व) ३८.१२ |
| ब्राह्मणं सुकलापृच्छत् (भू) ५६.३५ | ब्राह्मणस्य च संवादं (पा) ६८.४५ | ब्राह्मणानां प्रत्यगारमणि (पा) ३०.६ | ब्राह्मणाय च दास्यामि (पा) ६५.१३४ | ब्राह्मणेन विना कर्म (स्व) ६१.४६ |
| ब्राह्मणः कश्चिदनघः (भू) १८.४ | ब्राह्मणस्य धनैः प्राणान् (ब्र) १२.२ | ब्राह्मणानां ब्रह्मदं च (उ) ७१.६३ | ब्राह्मणाय त्रिंशंति (क्रि) ११.१५ | ब्राह्मणेन सदा कार्यं (पा) ६.४० |
| ब्राह्मणः कश्यपकुले- (सु) ३०.१२० | ब्राह्मणस्य प्रसंगेन (पा) ६०.२३ | ब्राह्मणानां विशेषेण (सु) १५.३६४ | ब्राह्मणाय पुरातनम् (पा) ६२.११८ | ब्राह्मणेन सदा त्राय्यं (पा) ६.४१ |
| ब्राह्मणः कुलजो विद्वान् (उ) २२५.१६ | ब्राह्मणस्य प्रसंगेन नद्यां (भू) १८.२३ | ब्राह्मणानां विशेषेण (सु) १६.२६० | ब्राह्मणाय विशेषेण (उ) ३२.५६ | ब्राह्मणेभ्य परं नास्ति (स्व) ३६.६३ |
| ब्राह्मणक्षत्रियविशां- (सु) ३४.२४४ | ब्राह्मणस्य मुखं क्षेत्र (सु) ४६.१०३ | ब्राह्मणानां विशेषेण (स्व) ४०.७ | ब्राह्मणाय सुपुण्याय (भू) ४०.८ | ब्राह्मणेभ्यः प्रतिश्रुत्य (भू) ६६.४ |
| ब्राह्मणक्षत्रियाविशाम् (स्व) ५६.३ | ब्राह्मणस्यामृत रसो न- (सु) ४०.६३ | ब्राह्मणानां सुखं वक्ष्यमुनी (पा) ७.३५ | ब्राह्मणायानमेकन्यां (उ) ११८.५ | ब्राह्मणेभ्यः प्रदातव्यं (सु) २७.४३ |
| ब्राह्मणक्षत्रियाश्चैव (स्व) ५१.४६ | ब्राह्मणा अपि चापत्या (उ) २३८.३५ | ब्राह्मणानां हि छिद्राणि (भू) ५०.६ | ब्राह्मणायैपि कुर्वति (उ) ३७.८२ | ब्राह्मणेभ्यो वृद्धेभ्यो (उ) २४८.१४ |
| ब्राह्मणः क्षत्रिया वैश्याः (क्रि) १६.२ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वापि (क्रि) २५.३२ | ब्राह्मणानां वृत्तिवजः सर्वान् (सु) १७.१६० | ब्राह्मणावाक्षत्रियावा (उ) ७२.१ | ब्राह्मणेभ्यो द्विजश्रेष्ठ (भू) २८.६० |
| ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः (पा) २०.२२ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः (सु) ३.१३० | ब्राह्मणान् गणकाश्चैव (क्रि) २१.६६ | ब्राह्मणावेदविदुषो (पा) १३.४७ | ब्राह्मणेभ्यो महर्षे (उ) २४२.१५८ |
| ब्राह्मणत्वाद्देहदंडं (पा) ४६.५४ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः (स्व) ३३.१८ | ब्राह्मणान्भूजयेद्यत्नात् (स्व) ५७.३६ | ब्राह्मणावेदसंपन्ना (पा) ३.१६ | ब्राह्मणेभ्यो विशेषेण (भू) २६.३७ |
| ब्राह्मणः परमं ज्ञानं (उ) ३०.४६ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः (भू) ८३.२० | ब्राह्मणान्भोजया (उ) २४८.१० | ब्राह्मणावैष्णवायेतु (उ) १.४७ | ब्राह्मणेभ्यु च क्षीणेषु (सु) १६.१२६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--|---------|-----------------------------------|---------|
| ब्राह्मणेषु पुराणेषु (स्व) | ६१.७१ | ब्राह्मणोयो दुराचारो (पा) | ३३.४२ | ब्राह्मभ्यतरसाम्यं (उ) | २२४.७७ | भक्तानुकल्पितेत्यर्थवेद (सु) | १५.११७ | भक्तिर्भवतिनैतस्य (क्रि) | ८.१६ |
| ब्राह्मणेष्वमृतमिति (पा) | १०८.४३ | ब्राह्मणोवाय वैश्यो (उ) | २६.२ | ब्रुवंतुकारणं सर्वममात्रे (भू) | ७.७२ | भक्तानुवरणाः मुखदाः (सु) | ६.७० | भक्तिर्वीजयतेदेवं (पा) | १०६.५१ |
| ब्राह्मणेष्वक्षयदानमन्त्रं (उ) | २६.१३ | ब्राह्मणोवीतरागश्च (उ) | २२३.५२ | ब्रुवंतुवांछितं पुत्राः (सु) | १५.१२३ | भक्तायदाताचगुह्यमेव (सु) | २५.३० | भक्तिं श्रद्धाविहीनाय (उ) | ७१.३०६ |
| ब्राह्मणैः कति प्रज्या (उ) | १३१.२ | ब्राह्मणोवेदमाप्नोति (स्व) | १७.२१ | ब्रवन्मस्तमधर्माश्च (पा) | ११७.१८७ | भक्तान्निनाशनसुरेश्वर (क्रि) | १५.७७ | भक्तिः पांडुगघाप्रोक्षणा (उ) | २२४.२७ |
| ब्राह्मणैः सुधर्मिणा (पा) | ६०.६ | ब्राह्मणोवेदमाप्नोति (स्व) | २१.५१ | ब्रूवाणमेवंसुग्रीवं भरतो (सु) | ३८.५३ | भक्तावपिहरेरेतोदंड्यो (क्रि) | १५.३६ | भक्तिस्तत्रापि विप्रेन्द्र (क्रि) | १६.११६ |
| ब्राह्मणैः पंचपूज्यास्यु (उ) | १३१.५ | ब्राह्मणो वेदविद्वान्च (भू) | ६०.३० | ब्रूतेभदर्थं यः शांतं (क्रि) | १६.८६ | भक्तावावांकयदेव- (उ) | ११०.१४ | भक्तिः सुताभ्यांसंहिता (उ) | १६८.६७ |
| ब्राह्मणैर्भोज्यमानैश्च (उ) | ६६.२६ | ब्राह्मणो वेद विद्वान्स्यात् (भू) | ८७.३७ | ब्रूमः किं तमुत्र कल्याणि (सु) | १८.४०६ | भक्तान्प्रवृत्तयितुं प्रायश्चित्तः (उ) | ८२.३७ | भक्तिस्त्वदीयाकिल- (उ) | २१२.३७ |
| ब्राह्मणैर्वैदविद्वद्भिः (सु) | १६.६ | ब्राह्मणोहं कथं हंसि (उ) | १७.८० | ब्रूयात्सायंतनोक्तत्वा (सु) | २३.३२ | भक्तिचदर्शयेत्तस्य (पा) | ८७.७४ | भक्तैर्पुणोविदपरायणेषु (उ) | १६५.७६ |
| ब्राह्मणैर्वैष्टितोराजा (उ) | ३६.२६ | ब्राह्मण्यं दुर्लभं तात (पा) | ६२.३ | ब्रूहितीर्थयात्रायां- (पा) | १६.८ | भक्तिप्रवृत्तयश्च (उ) | १६३.१२ | भक्तैर्केनक्षिपेत्तावद्याव- (सु) | ३४.३०६ |
| ब्राह्मणैश्च तथा सिद्धै- (भू) | २८.४ | ब्राह्मण्यं पुण्यमुत्पुण्य (भू) | ६६.२ | ब्रूहिषं ब्राह्मण श्रेष्ठ (उ) | ७७.२६ | भक्तिप्रसादमालानां (उ) | १८०.७० | भक्तोऽयमुपतिश्रेष्ठ (क्रि) | १०.६५ |
| ब्राह्मणैश्चविशेषेण (उ) | ७५.२४ | ब्राह्मण्यः पात्रहस्ताश्च (पा) | ३.१० | ब्रूहि दानवमुत्पुण्यं (सु) | ३०.१८६ | भक्तिभावात्तथास्त्यान्तैव (भू) | ४.४२ | भक्त्याकृतानियं (पा) | ८४.६० |
| ब्राह्मणोऽहं महाभाग (क्रि) | १७.६४ | ब्राह्मण्यः पुंडरीकाक्षो (उ) | २५५.७४ | ब्रूहि नः कारणं सर्वं (भू) | ६०.३६ | भक्तिभावेन विदामि (भू) | ६२.६५ | भक्त्या च पालनकार्यं (भू) | ८२.१८ |
| ब्राह्मणोनहिहंतव्यो (उ) | १७.७२ | ब्राह्मण्यावारिसंश्रुत्या (उ) | ७७.१६ | ब्रूहि पुण्यं कथां ब्रूहान् (पा) | ११३.२८ | भक्तिभावेन सयुक्ता- (स्व) | २६.४८ | भक्त्याचानन्ययाप्राप्तुं (उ) | २२६.१५३ |
| ब्राह्मणोनिर्दयोयो वै (भू) | ३७.४४ | ब्राह्ममस्त्रंमहारीष्ट्रं (उ) | २४२.३१६ | ब्रूहिरेत्वं कथं वेत्सि- (उ) | १२६.१६१ | भक्तिभिरुत्तमविप्रेन्द्र (क्रि) | १६.६६ | भक्त्याचाराधितादद्या- (सु) | ३४.२१५ |
| ब्राह्मणोभक्तिभावेनयः (उ) | ८५.२८ | ब्राह्मणपाशैर्नपूज्य (सु) | ७.१६ | ब्रूहिशीघ्रमुत्प्रेष्ठ (सु) | ४७.२ | भक्तिमत्तत्रेणस्युत्तम (क्रि) | १७.१४६ | भक्त्या चैव स्वभावेन (भू) | ६१.७ |
| ब्राह्मणोभद्रकोनाम- (उ) | १२८.१५६ | ब्राह्मणपुत्रीत्रिपथगा (उ) | २२.३२ | भ | | भक्तिमेवाभूतप्राप्य (उ) | १२२.२६ | भक्त्यातवापिप्राप्तभुवन (स्व) | २०.३७ |
| ब्राह्मणोगुहश्रीो (उ) | २१०.३६ | ब्राह्मीमाहेश्वरी चैव (उ) | १८.११४ | भक्तकुमुदसंकाश (पा) | ६५.२५ | भक्तियुक्तमनस्कानां (उ) | १६४.१८ | भक्त्या तुष्टयति गोविन्दो- (भू) | ३१.१४ |
| ब्राह्मणोयदशुहं (क्रि) | २१.११ | ब्राह्मीमुहूर्तचोन्ध्याय (सु) | ३४.२५१ | भक्तानां पोषणं नित्यं (उ) | १६४.६ | भक्तियुक्तोविमानश्च (उ) | १६५.४४ | भक्त्यातुल्यमितिपितर (सु) | ३४.२१४ |
| ब्राह्मणोयाति वैकुण्ठं (उ) | ६४.४५ | ब्राह्मीर्नैमित्तिकोनाम (सु) | ३.१६ | भक्तानां मार्तिनाश- (सु) | १४.११७ | भक्तियोगं सलभतेएवं (पा) | ६५.११६ | भक्त्यात्वनन्ययादिवं (उ) | २२६.६६ |
| ब्राह्मणोयाति वैकुण्ठं (उ) | ६४.४५ | ब्राह्मचिह्नमिवं देवि (उ) | २३५.६१ | भक्तानुकल्पितेत्यर्थ (सु) | ५.८४ | भक्तियोगाहरोमस्ति- (उ) | १२८.२६६ | भक्त्याप्यायंपठेद्योवै (उ) | ६.३७ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| भगवन्त्रयेदेशोराक्षसा (उ) | २३०.१ | भगवंस्तवमाहात्म्य (उ) | १८०.६६ | भयंरथस्वकवीक्ष्य (पा) | ६१.३० | भद्रेवेत्तीयवरोदेव (उ) | १२७.१६१ | भयातीविद्वताः सर्वे (उ) | २४१.४६ |
| भगवन्योगिनां श्रेष्ठ (उ) | १२०.२ | भगवंस्त्वं परोदेवः (उ) | ७१.८५ | भग्रास्तान्वीक्ष्यशत्रुघ्नो (पा) | ५१.५३ | भद्रश्रीलोहभांडीर (पा) | ६६.१६ | भयाती विद्वताः सर्वे (उ) | २४१.७२ |
| भगवन्योगिनां श्रेष्ठ (उ) | १२६.३ | भगवंस्त्वत्प्रसादेनदिति (उ) | १६८.१६ | भग्राणास्तु ते सर्वे (भू) | १०.३ | भद्रेश्वरविष्णुपदं (सु) | ११.१८ | भयातीः शरणं जग्मु रीश्वर (उ) | २४२.२७ |
| भगवन् श्रूयतां वाक्यं (भू) | १०८.११ | भगवानतिदुर्घंस्तदा-(सु) | ३६.१०५ | भजत्वं चारु सर्वांगि (भू) | १.३३ | भयक्रांतामहाश्राना (उ) | १६.१२ | भयादितादेवनिकाय-(सु) | १६.१०० |
| भगवन् श्रोतुमिच्छामि (सु) | ६.१ | भगवानपि विश्वात्मा (उ) | २१२.३० | भजंतीमेकभावेन (पा) | ७२.८६ | भयंक्रांतामहाश्राना (उ) | ५.७१ | भरतं वैवशत्रुघ्न (उ) | २४२.३६० |
| भगवन् श्रोतुमिच्छामि (उ) | ४६.३ | भगवानब्रवीत्तं च क्रोध (उ) | ३८.७५ | भजमानस्यपुत्रोभूद्रथि-(सु) | १३.६१ | भयंत्यजद्वभमराश्रभयं (सु) | ४५.३२ | भरतं मुच्छितं दृष्ट्वा (पा) | ५८.१ |
| भगवन् श्रोतुमिच्छामि (उ) | ११६.१४ | भगवानिति शब्दोयं (उ) | २२६.६८ | भजमानस्यसं जय्यां (सु) | १३.३२ | भयं तत्वाजगनसिवा नरात् (पा) | ४५.२ | भरतमुच्छित दृष्ट्वा (पा) | ५८.३ |
| भगवन् संशयछेत्तात्वमेव (उ) | २५५.१११ | भगवान्धुमणिः शीघ्र-(उ) | १२५.५० | भज विश्वेश्वरं देवदेव-(पा) | १०६.१८ | भयं मागच्छ कल्याणि (उ) | १५.३ | भरतश्चततः पद्मात् (सु) | ३८.१८१ |
| भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ (उ) | १८५.१ | भगवांश्चरणैः सर्वैः (उ) | ११.५१ | भज श्रीरघुनाथं वं (पा) | ३१.४६ | भयं मुंचद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | ७.३६ | भरतश्चैव शत्रुघ्न (उ) | २४४.७२ |
| भगवन् सर्वभूतेश (सु) | ४.१३१ | भगवान् श्रोतुमिच्छामि (उ) | ५४.३ | भजस्वेतियतो मिथ्या (सु) | २२.३७ | भयं विज्ञापयामास्तुतं (उ) | २४२.२२६ | भरतस्तवनश्रुत्वा जगाम (पा) | ६६.१६७ |
| भगवन् सर्वभूतेश (पा) | ७१.१ | भगवांस्सर्वभूतानामादि-(सु) | ४५.२० | भजामि नान्यं मनसा (पा) | ६४.७८ | भयदः सर्वभूतानां (उ) | ७६.२१ | भरतस्यातिकेतवः (उ) | २४२.३५० |
| भगवन् सर्वमाख्यातं (पा) | ८३.१ | भगिनीं पुतनामाह (ब्र) | १३.५२ | भजामि नान्यं मनसा (पा) | ६४.७८ | भयमर्थवतां नित्यं (भू) | ६६.१५३ | भरतस्याश्रमंगत्वा (स्व) | ३८.४६ |
| भगवन् सर्वमाख्यातं (उ) | २५३.१ | भगीरथेन भो विद्वन्नानीता-(उ) | २०.५ | भज्यमानावध्यमानाः (उ) | ११४.१६ | भयरूपप्रपन्नोस्मिभयं (भू) | १६.३३ | भरतां कुले जातां धर्मो (भू) | १२.१२६ |
| भगवन् सर्वमाचक्ष्वहुरि (उ) | २२४.१ | भगैः सिप्लं गुरुदृष्ट्वा (उ) | १७.८६ | भजं भजं निनादेन (उ) | ७८.४६ | भयविह्वल सर्वांगां (उ) | ८८.४० | भरताह्यकनीयां वभ्रात (उ) | २१८.३० |
| भगवन् सुदुःखुवातो-(सु) | ३४.३४८ | भग्नः पपात गंगाया (क्रि) | ८.५८ | भद्रभद्रतनोऽद्यापि पाप (क्रि) | १७.२१० | भयगुहीतो वाहोऽस्ती-(पा) | ४६.६३ | भरतेन समं ब्रात्रापुष्प-(पा) | २.३६ |
| भगवन् स्त्वत्प्रसादेन-(सु) | ३४.२४७ | भग्नः पुनश्चित्तवां (उ) | १३.१६ | भद्रामुखीनुभ्रमाया (उ) | १३७.६ | भयात्कंसस्य देवे (उ) | २४५.२४६ | भरतेन मुनिनायास्तनूज (पा) | ३७.३२ |
| भगवन् स्त्वत्प्रसादेन (उ) | १२५.५८ | भग्नपृष्ठशिरोघ्नीयाः (पा) | १०१.२४ | भद्रावापिसुमद्रायाव (उ)- | १६६.३ | भयात्पापात् पाच्छोकाद(भू) | ६६.२६ | भरतोऽसह्य गंधव (उ) | ७१.२३७ |
| भगवन् स्त्वत्प्रसादेन (उ) | १७४.२५ | भग्नस्कंधो निपति (उ) | २४५.६१ | भद्रे प्रबोधिनीपुण्या (उ) | ३०.६२ | भयाद्वैविश्वश्रेष्ठाः (उ) | २४३.४४ | भरतो नाम तेजस्वी (उ) | ८०.११२ |
| भगवन् स्त्वत्प्रसादेन (उ) | २५४.१० | भग्ने त्रिभूले त रसाकपी-(पा) | ४४.१७ | भद्रे वसिष्ठेन विकाशनीतम(भू) | १८.४१ | भयात्तं मुनिकप्यं मां दुःखितं (पा) | ६६.५० | भरतापिस्वकामं वं मुमुक्षु (पा) | ३.२ |
| भगवन् स्तद्वनं चोरय (सु) | ३७.२ | भग्नं तस्यं दनं वीक्ष्य (पा) | ५२.२४ | भद्रे वसिष्ठेन विकाशनीतम(पा) | ६०.५७ | भयातः शरण्यद्वयं (उ) | १३२.५ | भरतो यलक्ष्मणश्च (पा) | ७.३२ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-------------------------------------|---------|----------------------------------|--------|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| भरतो युवनाश्वश्च (भू) | ६४.४५ | भर्तापित्रियतेकाले (पा) | ६२.५२ | भर्ता विना निरीक्षेतमम (भू) | ५८.३६ | भवतापालनं कार्यं संहरे (सृ) | ३०.३७ | भवतो ज्ञेन वाक्येन (क्रि) | १३.१२३ |
| भरतोरामसंदेशं श्रुत्वा (पा) | ५६.३५१ | भर्तुः पार्ष्वः महार्थो (भू) | ४१.६५ | भर्ता हं मानिना देवि जातं (भू) | ५२.६ | भवता भवता पध्नं (उ) | २१६.२२ | भवतो दर्शनादेव भवामः (सृ) | १७.२२ |
| भरद्वाजः शमीकश्च पुरु (सृ) | ३४.१८ | भर्तुः पार्ष्वं समासाय (भू) | ८६.२१ | भर्त्सनांतु यथा कामम् (त्र) | २०.२२ | भवतामग्रतः सर्वं चरित्रं (भू) | २८.१३ | भवतो मैत्रिभिर्छति (भू) | ७.३२ |
| भरद्वाजस्य शिष्यश्च (स्व) | ३६.११७ | भर्तुः प्रसादात्मानं (पा) | १५.४६ | भर्त्सनात्ताने चैव (भू) | ४-४५ | भवतामपि सन्धेयानूनं (पा) | ६८.५१ | भवतो वरदानं प्रवध्यः (सृ) | ३०.३६ |
| भरद्वाजात्मजश्चाहं (उ) | १५.१३ | भर्तुः प्रसादात्सर्वं च (भू) | ४१.७० | भर्त्सयिष्यति तां देवी ततः (सृ) | ४३.६६ | भवतामीप्सितं सर्वं (उ) | १६८.८६ | भवतैव कृतं पूर्णं भूतग्रामं (सृ) | ३७.६१ |
| भर्तः पंचविधाः (पा) | ८७.६८ | भर्तुरप्रतिकूलत्वं नारी (पा) | ११२.४३ | भवच्छरणमायातं (भू) | ८.६६ | भवतारूपलोभेन कृतं लोक (सृ) | १७.१३७ | भवतैव विनिर्मितमादियुगे (सृ) | ४३.३५ |
| भर्ता तीर्थश्च पुण्यश्च (भू) | ४१.७७ | भर्तुरागमनं पुण्यं यावदेन (भू) | ५६.३२ | भवज्जठर निर्मगः (उ) | १८५.५६ | भवता सहितः सवन्ति- (सृ) | १३.३४४ | भवतो येन कार्येण (सृ) | ३८.५२ |
| भर्तानारायणानूनं- (सृ) | २३.६८ | भर्तुर्गोहादहं पित्रा क्वास्ते (भू) | ५०.४६ | भवज्ञानपरान्तिप्यं कुरु (भू) | ८८.३० | भवनीतिन संदेहो व्यासस्य (उ) | १३५.२६ | भवत्कृतं मदीयैर्बुधैः (पा) | ५.१७ |
| भर्ता हि विशालाक्षि- (पा) | १०६.६१ | भर्तुर्मच्चितितं प्राप्स्यमिव- (भू) | ४५.३ | भवच प्रभवचैव कुशाश्वं (सृ) | ४०.८७ | भवतो नाम हं पुत्रो (उ) | २०६.३४ | भवत्कृपातः सकलं (पा) | ११.७ |
| भर्ता भवतु सर्वसामोश्चर (स्व) | २१.१२ | भर्तुर्विकृतिनाम्येवमंगला (भू) | ५२.६ | भवतश्चा नुकूल (उ) | ४४.२० | भवती पुंसवली नाम यया (भू) | ५०.५५ | भवत्प्रसादाद्गततेजसा- (सृ) | १६.१२६ |
| भर्ता मितांचपति (क्रि) | ६.१४२ | भर्तुर्वीर्यं निदम्यैवं (भू) | १०७.१२ | भवतां केन चाक्षिप्यतां तोय- (सृ) | ४३.२७ | भवती पुण्यकृन्माता (भू) | ३.५७ | भवत्यरक्षतो घोरोराज्ञस्त (भू) | ६७.६७ |
| भर्ता मे दुष्टतश्च (भू) | ४७.३६ | भर्तुश्च कीदृशं वीर्यं मिमि (भू) | ११३.४८ | भवतां चापि विक्ष्यामि शृणु (सृ) | १६.१३१ | भमतीभिः प्रतोप्यं (पा) | १०७.८२ | भवत्याकिमुज्ज्वलं (उ) | २१३.१८ |
| भर्ता मे पापदोषेण (उ) | ४७.२७ | भर्तुश्चापि महाराज (भू) | ४६.१३ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्याच नवाचैव स्थाना- (सृ) | ३४.७८ |
| भर्ता यमायुषु त्रयस्ते एत- (भू) | ११३.१० | भर्तुः त्यागो वरं नैव (भू) | ४१.५५ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या नैजसारूपे (भू) | ३.१४ |
| भर्ता रचितं दीपे तम (पा) | ८७.४५ | भर्तुः निदाया कुरुते स्व (सृ) | ३४.७३ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या देवकार्याधिगतं (भू) | ५.६० |
| भर्ता रजगतामीशमन (सृ) | २३.८६ | भर्तुः रूपमास्थापय कला (पा) | ११२.३६ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या भाग्ययोगेन- (सृ) | १८.४४८ |
| भर्ता रिविरे सर्वाः (उ) | २४६.७७ | भर्तुः श्रेष्ठः प्रज्ञेशाग्रयो (उ) | ७१.२८३ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या गणानां (पा) | ११०.६७ |
| भर्ता रं श्रावयामास मुता- (भू) | ५१.७ | भर्ता मिच्छति न वीरवर्ण (सृ) | ३८.१०६ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या न स देहो वरमेनं (भू) | २०.८ |
| भर्ता रो देवताभाश्च- (स्व) | १४.१७ | भर्ता निविशता पत्नी- (सृ) | १७.१४१ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या न स देहो वरमेनं (भू) | २०.८ |
| भर्ता नित्यो मया देवः (सृ) | १७.२७ | भर्त्सनात्तरं तातां- (पा) | १०५.१३६ | भवतांचैव सर्वेषां- (सृ) | ३१.४२ | भवतीभिः प्रगुक्तं यत्तन्म (भू) | ४१.६१ | भवत्या न स देहो वरमेनं (भू) | २०.८ |

| | | | | |
|--|-------------------------------------|---------------------------------------|---|--|
| भवद्भिर्दशनीयतुनाना-(सृ) १५.१३७ | भवतं रूप सौभाग्यं (भू) १.३६ | भवत्सं येन कामेणज्हाया (सृ) ३८.५२ | भवान्कनकस्तपस्या (पा) १०.६ | भवान्महिषशार्दूल (उ) २१६.५० |
| भवद्भिर्धुंयुलीसूतो (घ) १६७.७१ | भवतं वनमध्ये च (भू) १०८.३० | भवत्येताभिः पुत्रस्य पितुः (भू) ६२.७३ | भवान्कर्त्ताविकर्त्ताचि-(सृ) ४५.१६० | भवान्मामनुग्रहागतु (सृ) ३६.१२४ |
| भवद्भिः पित्रदानाद्यंश्राह्य (सृ) ३२.१३३ | भवंतं द्वपप्रच्छ (पा) ८४.१० | भवन्नाप्रातुमागंगाभविष्य (उ) १३५.६ | भवान्कः संवदस्येव (भू) ५६.६ | भवान्धाड्यतिवाक्या (उ) १३.४५ |
| भद्रिश्चैवकृतास्मि (उ) १६५.७४ | भवंतं पतितं वीक्ष्य (भू) १८४.५६ | भवन्मध्यंतुराजस्यो (स्व) ५१.५७ | भवान्को दिव्यदेहस्तु (भू) ८६.२६ | भवांश्चोरो ह्यर्माचोरा (भू) ५६.२७ |
| भवद्भिः प्राथितयद्वैप्र (पा) ३८.५३ | भवंतं मुक्तावान्यो वै (भू) ६२.१२ | भवन्मं श्रीं समिच्छन्ति (भू) ७.३५ | भवान्को हि महाभाग (भू) ८८.१५ | भवांश्चसहितोस्माभि (सृ) ४५.६२ |
| भवद्भिः सत्यमेवोक्तं (क्रि) ७.६६ | भवंतंस्तत्रगच्छन्तु यत्र (भू) २४.१६ | भवपुण्यप्रभावे (उ) १५.६ | भवान्को हि समायात-(भू) ३७.६ | भवान्सज्जोभवस्वग्रह (पा) २६.४५ |
| भवद्भीतेन दिव्येन देवा (भू) ४६.२१ | भवंतंस्तीर्थराजानो (भू) ६१.११ | भवब्रह्मादयोप्यस्मिन् (पा) ७१.११ | भवान्को हि समायात (भू) १२.७१ | भवान्पुत्रो गृहे मुष्मिन् (उ) १८५.५४ |
| भवद्भ्यान्विनातीर्थं (सृ) ३४.८७ | भवति कीर्तनीयस्य (पा) ८४.३८ | भवस्वनिहतोमन्त्रे सदा (भू) ८२.२० | भवान्को हि समायातो (भू) ८.६४ | भवांस्तु प्रेषितो मूढ (भू) १०३.८७ |
| भवद्भ्यामात्मभूताभ्यां (सृ) ३७.१५४ | भवतिकुरुशार्दूलतस्मात्-(सृ) १७.२४६ | भवस्व नियतो नित्यं (भू) १२३.१४ | भवान्को हि समायातो (भू) ५८.२८ | भवामि रिपुवीरघ्नस्य-(सृ) ३३.१०१ |
| भवद्भिधाननियतममोघं (सृ) ४३.१६४ | भवति तस्मिन्नेवास्ति (क्रि) २१.१२७ | भवच्छूद्रो महाप्राज्ञ (पा) ८६.३६ | भवान्को हि समायातो (भू) ६१.२६ | भवयि भवकर्त्तव्यं च भवतानां (भू) ३२.३४ |
| भवद्भिः सहितायुयतेन (सृ) १३.४०१ | भवतं नित्रसदेहो (त्र) १५.३ | भवाश्चैवं महापापदैवै (भू) १०३.७० | भवाकां हि मुहुः खात्मा (भू) ६१.३० | भवितव्यं कारणेन तत्त्व-(सृ) ३३.६५ |
| भवनं चैव गच्छामि-(सृ) ४३.२८६ | भवति परिमाणं चतेपां (सृ) ३.१३ | भवास्त्योनास्तिकृपा (उ) १६६.३७ | भवाच्छूद्रोऽतिनिर्द्वन्द्वो (भू) ८.८७ | भवितव्यं भवद्भिस्तु (सृ) ६.८६ |
| भवनं तस्यैव गत्वा च (त्र) १२.५२ | भवति प्राणिनस्ते वै (त्र) १५.१५ | भवास्त्यो महाभाग-(भू) १०३.११६ | भवान्छूद्रो महाप्राज्ञपूर्वं (भू) १७.२८ | भवितव्यस्या भर्ता (भू) १०३.१३ |
| भवनं नात्र स देहः सत्यं-(सृ) ३४.२०६ | भवति मानरोह्यं तावद्दु (भू) ८.६३ | भवादृशो हि भूलोकि (भू) ६४.२५ | भवाच्छूद्रो महाप्राज्ञ (पा) ८६.३७ | भविता भरतो राजा पांडवे (सृ) ३१.४७ |
| भवनं नारवृत्तैः सर्वजो ब्रूतव-(स्व) ३.३५ | भवति विविधास्तस्यैव-(सृ) ३४.१६६ | भवान्च समायातो (भू) ३.३४ | भवांश्च समनुप्राप्तवयं (पा) ६४.७४ | भविता मत्प्रसादेन कलिके (सृ) ४.१३४ |
| भवतं दुःख संतप्तमिति (भू) १४.७ | भवति लीनानिश्चेष्टाः (सृ) १२.१२३ | भवान्पिमहाशस्त्र- (पा) ३३.२७ | भवान्दाता वरं सत्यं (भू) १३०.१३० | भविता वंशकर्ता (उ) २०३.४६ |
| भवतं परमात्मा (क्रि) १३.१२४ | भवति सर्वकर्माणि (उ) १२६.५४ | भवान्धाव्यनुमाहात्म्यं (सृ) २२.१७५ | भवान्देवमनुष्येषु शास्ता-(सृ) ३७.६२ | भविता युद्धयान्यानुत्तप (सृ) ३५.५१ |
| भवतं पुण्य संबुद्धं जाने (भू) ७७.६० | भवतोऽपि स्वर्गैर्जैर-(पा) ७.२८ | भवानां च सहस्रं तुन दुःखो (सृ) २२.१३३ | भवान्धर्मपरो राजन्प्रजाः (भू) ७८.७ | भविष्यो भूतः संयोगमुख (पा) ६३.८ |
| भवतं मायुरं जावा (भू) ५०.५१ | भवतो यज्ञभोक्ता रोदिव्या (सृ) ४२.६० | भवानीशे हृषीकेशे (पा) ११५.८ | भवान्पि रिजिह्वीर्षुश्चे- (उ) १२५.१४३ | भविष्यं चोपसज्जानि (पा) १०४.५४ |
| भवतं या च यिष्यामि (सृ) ३०.१२३ | भवतो योगिनां श्रेष्ठा (उ) १६४.४४ | भवानेव हृषीकेशव्ययो (घ) १७५.१४ | भवान्प्राप्नोति परमां तथा-(सृ) १६.१२५ | भविष्यं वामनं ब्रह्म (उ) २३६.२१ |





श्रीपद्ममहापुराणम्: श्लोकानुक्रमणी

३१०

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------|---------|----------------------------|---------|
| भविष्यतत्पुद्गलविवर्द्धते (सु) | २२.१६ | भविष्यति स धर्मिणा (भू) | ५.४६ | भवेत्सदामहसौख्यं (भू) | ३०.८५ | भस्ममाह्वात्म्यादौ मे (पा) | १०५.१५० | भागधेयवतांपुंसां (उ) | १८५.४२ |
| भविष्यतिकदाखर्वो- (भू) | १७.४६ | भविष्यति स धर्मिणा (भू) | ५.४७ | भवेत्सहितातत्रांगा (पा) | ६५.२० | भस्मस्नानंततः (पा) | १०५.२०१ | भागवतं श्रुणुतेयस्तु (उ) | ६१.५५ |
| भविष्यतिकदाखर्वो (पा) | ८६.५७ | भविष्यति सुतश्रेष्ठो (भू) | १०५.३ | भवेद्विहागजो भूम्यांकरि- (सु) | २०.१३४ | भस्मस्नानाः सदापार्प- (पा) | १०५.१४७ | भागबुद्धस्त्वयंश्लोकः (पा) | १०४.१०८ |
| भविष्यति चैकस्याकृत्ती (सु) | ६.४० | भविष्यति सुतस्तात (उ) | २०४.७ | भवेद्भवांभद्रिचित्तनाप्त- (सु) | ४६.६० | भस्मस्नानेनसंशुद्धो (पा) | १०५.२१७ | भागवोपकमप्यत्र- (पा) | १०४.१०५ |
| भविष्यति चतेराज्यं (पा) | ११०.६० | भविष्यत्युत्तमज्ञान (क्रि) | १७.७२ | भवेद्यत्समरणदेवमुनेः (पा) | ७४.६० | भस्मस्नायीभस्मशायी (पा) | ११०.६६ | भागार्थयज्ञविधिनाये- (सु) | १६.२७ |
| भविष्यतित्वयं दुष्टा- (भू) | ४७.४६ | भविष्यत्यक्षयंतच्छयतः (क्रि) | ६.८ | भवेद्येषागनिरात्मया- (सु) | १५.३५५ | भस्मांगव्यालशोभादय (उ) | ७१.४६ | भागीरथीनर्मदाचयमुना (पा) | ६७.६६ |
| भविष्यतिनसंदेहोऽग्रहीतो (सु) | ४.५३ | भविष्यत्यमलंतच्च (उ) | २५५.११५ | भवेद्देनात्रसंदेहएतदाहपिता (सु) | १६.५६ | भस्मादिधारणं कृत्वा (उ) | २३५.५६ | भागीरथ्यापंचतनुर्जला (सु) | ३४.१४१ |
| भविष्यदृष्टपतनंशरीरे (सु) | ३७.१५ | भविष्यत्येवगांविदः (भू) | ३८.३८ | भवेन्निरर्थकंसर्वं (क्रि) | १४.१५ | भस्माधिकमभीप्सस्तु (पा) | १०८.४७ | भागीरथ्यापुणंसम्यक् (क्रि) | ३.१२ |
| भविष्यतिनरश्रेष्ठ- (सु) | ३५.५६ | भविष्यत्येवमेवैतदित्यु (पा) | १०७.७८ | भवेत्पुत्रीश्वराः स्वामिन् (सु) | ८.८१ | भस्मनाकृतमष्ट्यादा (स्व) | ५५.२६ | भागीरथ्याः प्रवाहस्तु (भू) | १०१.४२ |
| भविष्यति न गदेहः (भू) | १०७.१४ | भविष्यंतित्तलवर्ज्जा (क्रि) | २६.३० | भवेत्प्रेभवावेवपति (पा) | ५६.३२ | भस्मानिभुञ्जतेकेचित् (क्रि) | २३.१४६ | भागीरथ्याः सगतीर्थं (क्रि) | ३.६६ |
| भविष्यतिनसंदेहो (उ) | १८५.१०४ | भविष्यंतित्तलवर्ज्जा (पा) | ३८.३२ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | १६.१७१ | भस्मानशेषं संजातं (भू) | ६२.२३ | भागवतेपुंसवर्णं (सु) | ४३.२२६ |
| भविष्यतिनसंदेहो (सु) | २२.१७६ | भविष्यंतित्तलवर्ज्जा (स्व) | ३६.८ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मास्थिचक्रपाला (सु) | ५.५८ | भागवतसिंहातात (उ) | २०४.१२८ |
| भविष्यतिनसंदेहो- (सु) | ३७.१७१ | भविष्यति न संदेहो (भू) | ६१.१४ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मास्थिधारणा (उ) | २३५.४७ | भागवतसिंहातात (उ) | २२.३८ |
| भविष्यति न संदेहो (भू) | ७७.६१ | भविष्यति सुखी भद्रं (भू) | ३५.११ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मास्थि धारिणः (उ) | २३५.३३ | भागवतसिंहातात (उ) | २१६.६३ |
| भविष्यति न संदेहो (भू) | ८१.७२ | भविष्यति सपरेलोके (सु) | ६.३० | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मोभयतिनत्सर्वं (क्रि) | १३.५७ | भागवतसिंहातात (उ) | २१६.६३ |
| भविष्यतिनृपश्रेष्ठ (उ) | २४२.५ | भविष्यस्याकसावर्णमनोः (सु) | ७.११० | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मोभूतास्तु संजाता (भू) | ६२.२४ | भाजनस्या यथा आन (भू) | ७८.३ |
| भविष्यतिमयादत्त- (सु) | ३१.१३० | भविष्यत्येवैतं पुण्यं (भू) | २८.७८ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मोभूतास्तु संजाता (भू) | ६२.२४ | भांडवांतरितालास्य (पा) | १११.७ |
| भविष्यतिमहाभागोऽष्टशो (भू) | २३.२३ | भवेच्चभक्ष्योऽष्टाष्टा (क्रि) | ६.६६ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मोभूतास्तु संजाता (भू) | ६२.२४ | भांडवांतरितालास्य (पा) | १११.७ |
| भविष्यति महायोगीयथा (भू) | १०६.४५ | भवेच्छ्रोतुः सुफलदं (उ) | १६८.४७ | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मोभूतास्तु संजाता (भू) | ६२.२४ | भांडवांतरितालास्य (पा) | १११.७ |
| भविष्यतिसदैत्यस्य (सु) | ४३.६१ | | | भवेयमवमानाच्चविग्रह- (सु) | ४५.१४ | भस्मोभूतास्तु संजाता (भू) | ६२.२४ | भांडवांतरितालास्य (पा) | १११.७ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|------------------------------------|---------|----------------------------------|--------|
| भाति सर्वत्र यो भूत्वा (भू) | ६८.४३ | भारताध्ययनकार्यं (सृ) | ६.१६३ | भार्गवेषुप्रदत्तातु (उ) | २४२.३२ | भार्गव्युक्तः स्वकायेन (भू) | ११७.२७ | भाविनोवश्यभाविवाद(सु) | ४३.२७६ |
| भाद्रमासेतु संप्राप्ते (उ) | ८७.१५ | भारद्वाजकाश्यपं (उ) | २३६.२४ | भार्गवो नाम तस्यासीत् (भू) | १२२.६ | भार्गव्यैदेहिपुत्रस्ते (उ) | १६६.४८ | भावेनतपसिस्त्रिद्वानाम-(सु) | ४१.१६३ |
| भाद्रमासे सितेपक्षे (उ) | ५७.३६ | भारद्वाजनमस्कृत्य (पा) | ११७.६० | भार्गव्या सह भद्रं ते वरं (भू) | ६०.१६ | भार्गवरूपं वरं श्रेष्ठं सृष्टं(भू) | ११३.३२ | भावेनैतैनंरोयस्तु (उ) | ३७.६६ |
| भाद्रस्यकुण्डपक्षे (उ) | ५६.१ | भारद्वाजशृङ्गपुण्य (पा) | ११७.१२ | भार्गवाभ्रातरंवापि (पा) | १०५.७६ | भार्गववियोगजङ्घुःखं- (सु) | १७.१५२ | भावेः सुपुण्यैरमृतोपमानैः (भ) | ७३.४ |
| भाद्रेचजन्मदिवस उपवास(पा) | ८०.३१ | भारद्वाजगृहाद्रामो-(पा) | ११७.१६ | भार्गवा इंदुमती तस्य (भू) | १०८.१७ | भार्गववियोगजापीडा (सु) | ४.१०३ | भावेः स्तत्त्वात्माकानां तु(भू) | १२०.३४ |
| भाद्रेमासिद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १३.३४ | भारद्वाजशृङ्गेभुवत्वाराम (पा) | ११७.१ | भाट्यर्थाजितस्यचैवान्मम् (स्व) | ५६.६ | भार्गवशोकः पुत्र शोको (भू) | १२५.३४ | भाट्याणि सर्वशास्त्राणि-(सु) | १८.६२ |
| भाद्रेमासि द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १३.४५ | भारद्वाजस्तथायोगी (सु) | ७.१०६ | भार्गवा विना च यो धर्मः (भू) | ५६.३४ | भार्गवसिद्धान्तः प्रोक्ता (सु) | १६.११ | भाट्यादिसर्वशास्त्राणि-(सु) | १७.३०५ |
| भाद्रेमासिस्ताप्टम्याम् (त्र) | ७.२२ | भारानष्ट सुवर्णानि (उ) | २४६.७ | भार्गवाणांसंख्याराम (पा) | १०५.१५४ | भार्गवाहीनस्य पुंसोपि न (भू) | ५६.२१ | भासेन भक्तिरामास्यं (उ) | १६३.१६ |
| भाद्रेमास्यसिताप्टम्याम् (त्र) | ३ | भारावतरणंकर्तुं (उ) | २४५.२२ | भार्गवतस्यचसंजाता (त्र) | ११.६ | भाले कुचेपु नेत्रेषु -(भू) | ५३.१५ | भास्करस्यप्रभायद्- (उ) | २२६.३० |
| भाद्रेवैचोभयेपक्षे (त्र) | ४.४५ | भारावतारणायाय- (उ) | १२.६८ | भार्गवतस्यशिरः स्वांके (उ) | २०६.३६ | भावततोहृत्कमले पा) | ६२.३३ | भिक्षतेभिःक्षाप्रथमम् (स्व) | ५१.५८ |
| भादेश्वरं बिल्वंकच- (सु) | ११.६० | भारुडानामशकुनास्तीक्ष्ण (स्व) | ४.१२ | भार्गवतीर्थं समाख्यातं (भू) | ६१.१ | भावतः शुचि शुद्धात्मा (भू) | ६६.६१ | भिक्षाग्निर्मात्रभुक्त्वा (क्रि) | ८.१६ |
| भातुः सर्वगतोवह्नद्विः (उ) | १३२.४२ | भारेणात्पधनोदद्याद-(सु) | २१.१५८ | भार्गवतीर्थां वियोगैस्तु (भू) | ८.८४ | भावदुष्टं क्रिया दुष्टं (उ) | १६८.३२ | भिक्षार्थं तस्य भागानि (भू) | ६५.२८ |
| भानोरावरणंचेश (पा) | ११४.३५ | भार्गवंस्वकरंधृत्वा (उ) | १००.२४ | भार्गवपत्नीसमावेव (पा) | ११२.७६ | भावं विदित्वा सुरराट् (भू) | ५५.१ | भिक्षुकानपरात्रलोभान्(उ) | १८७.४४ |
| भाति तारागणैःश्चित्रैः-(सु) | १५.४४ | भार्गवः पूर्वमेवासी (पा) | २६.१६ | भार्गवाः पातकरूपाश्च (भू) | ६२.१६ | भावककल्याणमाविश्य (उ) | २३५.२८ | भिक्षुश्चभिक्षुरूपश्च-(सु) | ३८.१७० |
| भातिमन्मथभूपाल (उ) | ११.३७ | भार्गवस्तस्यशिरश्छेदं (उ) | ६७.३ | भार्गवाः पुत्रैः समं गत्वा (भू) | १८.२१ | भावानुगृहं मालीकैः (उ) | १७७.४२ | भिक्षुत्वेनैवैवसकृत् (स्व) | ६०.४ |
| भाभोवलिभुजां (उ) | २४२.२०३ | भार्गवस्यसुताविद्विद्युक् (सु) | ३७.३० | भाट्यप्राहकथमहं (पा) | ११७.३६ | भावाभावस्वरूपासा (क्रि) | २.८ | भिक्षुतेपिपौलिकामि- (भू) | ६५.५ |
| भाभो मनुष्यशार्दूल (उ) | २०४.७७ | भार्गवस्यसुतो रामः (उ) | २४१.५६ | भार्गवांश्चुज्जनेपेतोगच्छे- (पा) | ११०.५१ | भाविजन्मनितांकन्यां (क्रि) | ६.११६ | भिक्षुतेहृदयप्रणि (उ) | १६७.६२ |
| भाभो विशांपतेसाधो (उ) | २०४.१११ | भार्गवस्याश्रमं (उ) | २४१.२३ | भार्गवमयात्पतपसा- (सु) | २०.१२ | भावितैकराणैः पूर्वं (स्व) | ३६.१०४ | भिक्षुमात्रोमुविद्यती (उ) | २४५.४७ |
| भारतस्याखिलस्यै (पा) | ११५.८२ | भार्गवाणां कुले जातः (भू) | १४.२ | भार्गवाभिद्विषण्विद्विद्भिः (सु) | २३.१२ | भाविनीनिष्कृतिः (उ) | १२७.१३३ | भिनत्तिपात्रं दीवल्या (उ) | ३२.५३ |
| भारतस्यास्यवर्षस्य (स्व) | ७.१ | भार्गवीरूढतीदीनाश्रम (सु) | ३७.४२ | भार्गवाभिद्विषण्विद्विद्भिः (सु) | १३.१७ | भाविनोवा भवत्ये (सु) | ४३.२८५ | भिनस्थातेपितुर्गहं (पा) | ५६.६३ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३१२

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| भिन्नाभिन्नां गृहीत्वा (उ) | १२६.६६ | भीमोद्यभीमरूपिण्यैशिरः (सु) | २६.२६ | भुक्त्वाचयातनायां-(उ) | १२६.२३ | भुक्त्वावैगुण्यताम् (ब्र) | १२.२३ | भुजद्वयधृतोदग्रपथ (उ) | २२८.४६ |
| भिन्नास्थिस्तापुबंधो-(उ) | २४५.३७६ | भीमास्माद्वातिपवनो (उ) | २३८.४० | भुक्त्वाचविपुला (उ) | २५.४३ | भुक्त्वेहनिखिलान् (उ) | ५८.३६ | भुजानेषु च सर्वेषु (पा) | ११४.२०१ |
| भिन्नोवक्षसिबीरेण (पा) | ६१.४५ | भीष्मायोदकदानं च (उ) | १२४.३६ | भुक्त्वाचवेदविदुषि-(सु) | २१.२२५ | भुक्त्वंवसद्योमुक्तो (क्रि) | १६.७७ | भुजाकचास्यभगवर्थन-(सु) | ४१.२७५ |
| भिषग्वृत्त्याचजीवतस्तन (पा) | १६.५३ | भीषिकेयं महाज्जाला (पा) | १०७.१८ | भुक्त्वाचाक्षारलवण-(सु) | २३.५८ | भुक्त्वंवश्वर्यतस्तनु (सु) | १५.२३० | भुजोग्रहनुस्तस्य-(स्व) | २२.६८ |
| भीततमुच्छ्रितरुट्वा (उ) | १०६.१३ | भीष्मोपितद्रुचः श्रुत्वा मन (सु) | २.६८ | भुक्त्वातत्रान्नसिक्थं (पा) | १८.३० | भुक्त्वोकशवनैवेद्ययज्ञ (उ) | १२०.२५ | भुजोजग्रहनुस्तस्य (उ) | १२८.१०६ |
| भीतत्राणात्परं नान्य (उ) | १५.२६ | भुक्तवत्यथविप्रेद्रे-(पा) | १०५.१७३ | भुक्त्वातिष्ठतमुप्रीता-(सु) | ३१.१११ | भुक्त्वोत्तिष्ठतस्तथा-(पा) | १०४.११६ | भुज्यतेचक्रुतपूर्वमेतत् (पा) | १०१.७६ |
| भीतिरस्माकमधुना-(पा) | ११४.३७८ | भुक्तवतीसुखं तत्र (क्रि) | ३.७४ | भुक्तातुक्थयिष्यामि (पा) | ११४.२०८ | भुक्तेषापिखेलोके (ध) | १२६.७६ | भुजते दारुणं दुःखं (भू) | ६६.२६ |
| भीतोविज्ञापयामासधृतं (सु) | ४६.१२ | भुक्ति प्रयानिस्वर्गाति (उ) | ७१.१५ | भुक्त्वा तु विपुलान् (सु) | ३०.१७६ | भुक्तेषविषिघाता (पा) | ८३.४० | भुजतेनात्रसंदेहोवेदोक्तं-(सु) | १७.२६७ |
| भीतोहृदेवकंसस्य त-(सु) | १३.१३८ | भुक्ति मुक्ति च -(उ) | ५५.४३ | भुक्त्वा तु विपुलान्-(भू) | ४०.२० | भुक्तेशिलायांयोनित्यं (उ) | ६४.३८ | भुजते ब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) | २१.१२८ |
| भीमबलचलितं चारुयोधं (सु) | ३१.६८ | भुक्ति मुक्ति धनैश्चर्यं (क्रि) | ६.१६६ | भुक्त्वा तु विपुलान् (स्व) | ४४.१७ | भुक्त्वतस्प्रशरीरस्य (क्रि) | २१.६६ | भुजतेब्राह्मणानां (पा) | ६५.२१ |
| भीमकुंडतुविज्ञातंजातं (उ) | २२२.८४ | भुक्तिमाश्रित्यतिष्ठति (ब्र) | १५.१७ | भुक्त्वातुविपुलान्भोगांस (स्व) | ४४.२० | भुक्त्वभोगानैकांस्व (उ) | १२६.७५ | भुजानेषुचसर्वेषु (पा) | ११४.२०१ |
| भीमः पशुरामश्च (उ) | ७१.२०६ | भुक्तिमुक्तिपदं तस्मा (पा) | १०६.७३ | भुक्त्वाथपावंतीसर्वं (पा) | ११४.२४० | भुक्त्वभोगांसुकर्मणि (भू) | ७८.४६ | भुजत्येवरसामर्थ्यः-(भू) | ५३.१२ |
| भीममुग्रं गहादेव (सु) | ३.२०२ | भुक्तिमुक्तिपदं देवं (उ) | १८०.३८ | भुक्त्वाथगणितविप्रं (पा) | १०६.७ | भुक्त्व राज्यं मया दत्तं (भू) | ७८.४७ | भुजजघ्वमिति तानुक्त्वा (पा) | ११७.१२४ |
| भीमाग्निभीषणेदेविसर्वं (सु) | ३१.१४१ | भुक्तिमुक्तिपदं दशैवं (उ) | ५७.४१ | भुक्त्वानरकुल (उ) | २११.४३ | भुजंभुजप्रमाद्यैकमला (सु) | २२.१११ | भुजंजितचानुरासन्नप्रेता (सु) | ४६.११८ |
| भीमाटविक्रजोर्वश्च (उ) | ६६.१८ | भुक्तिमुक्तिप्रदाचैव (उ) | ६३.१५ | भुक्त्वान्दार्ढ्यं शाप (भू) | ५६.२८ | भुजगावीश्वरेशानधरा (पा) | ४.१ | भुजंजित मर्त्याः स्वर्गं वा (भू) | ६७.७५ |
| भीमादेवीहिमाद्रौ च-(सु) | १७.२०५ | भुक्ति मुक्ति प्रदानं (उ) | ६४.२३ | भुक्त्वापायंखगस्ता- (उ) | १८५.७७ | भुजगाभोगसदृशोभुजोते-(सु) | १७.३१० | भुजंजित मर्त्याः स्वर्गं वा (भू) | ६७.७५ |
| भीमायेतिततः पृष्ठे (पा) | १०८.६३ | भुक्ति मुक्ति प्रधान (पा) | ११३.२१ | भुक्त्वापीत्वाचसुप्त्वा च (स्व) | ५१.१ | भुजंगभोगसदृशोभुजोते-(सु) | ४४.५८ | भुजानेषु च सर्वेषु (पा) | ११४.२०१ |
| भीमेश्वरं कृष्णवेणाक-(सु) | ११.३६ | भुक्ति मुक्ति प्रदाय (पा) | ७७.६३ | भुक्त्वाभोगांश्चिरं (पा) | ६८.१११ | भुजंगवक्त्रैर्लेलिहानै- (सु) | ४१.१६४ | भुजानेषु पुत्रेषु (पा) | ११२.११८ |
| भीमेश्वरं ततो गच्छेत्स्व (स्व) | १८.२८ | भुक्ति मुक्ति स्तथा भक्ति (सु) | २६.२६ | भुक्त्वाभोगांश्चिरं (पा) | ६८.१११ | भुजंगवक्त्रैर्लेलिहानै- (सु) | ४१.१६४ | भुजानेषु पुत्रेषु (पा) | ११२.११८ |
| भीमेश्वरं ततो गच्छेत्स्व (स्व) | १८.२५ | भुक्तेभोक्ता भवेद्वयं (उ) | १२२.६८ | भुक्त्वाभोगांश्चिरं (पा) | ६८.१११ | भुजंगवक्त्रैर्लेलिहानै- (सु) | ४१.१६४ | भुजानेषु पुत्रेषु (पा) | ११२.११८ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३१३

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| भुंजीतप्रयतो नित्यम् (स्व) | ५१.६३ | भूतवेतालकृत्याभिर- (उ) | २४३.५७ | भूतिदायनमः पादा (उ) | ६६.४७ | भूपस्य तस्य राज्ञेन्द्र (भू) | ७६.१६ | भूमियः प्रतिशुल्लति (उ) | २४०.१७ |
| भुक्कात्तिष्ठं स्तथायनं- (पा) | १०४.११६ | भूतवेतालगंधर्वाः (उ) | १२६.१३६ | भूतिभिर्वष्टदृष्टाभिः (पा) | ६६.३० | भूपालत्वंहरिस्तस्मै (क्रि) | १३.१२ | भूमियोपरदत्तां (व) | २४.१२ |
| भुनक्तिविविधाना- (पा) | ८३.६२ | भूतवैरं विमृज्यैवमन- (भू) | १३.२५ | भूतिगतिं त्रैवृषो जीर्णः (उ) | १०.३ | भूपालवशोत्पत्तित्वात् (क्रि) | ५.४६ | भूमिप्रक्रमणपूर्वकृतं (सु) | ३१.५ |
| भुवनं तापितं मंत्रदेवा (पा) | ७.६ | भूतशुद्धिनिर्जाविप्र (क्रि) | २२.१०८ | भूतैर्म्योडं महाप्राज्ञावृद्धं (स्व) | २.२७ | भूपोत्रीरमणिर्ध्याय (पा) | ४६.३७ | भूमिप्रदेशाग्रन्यास्ते- (गु) | १८.४३० |
| भुवनाधीश्वरश्चैव (उ) | ५.५८ | भूतसंतापनश्चैव (गु) | ६.४७ | भूतेशभूतवरदासकृदव्य- (सु) | ४६.६५ | भूप्रदेशेषुण्वराशोयजं- (सु) | १५.७६ | भूमिमपस्तथाचान्न- (भू) | १३.१३ |
| भुवः प्रमाणं सर्वं तु ज्ञात्वो (सु) | ६.६ | भूतांकुराञ्च संस्मार (सु) | ४३.३०१ | भूतेश्वरं तथानीर्यं (स्व) | ३७.१३ | भूभारकविनाशाय (उ) | २४५.२४४ | भूमिरत्नद्विरण्यानि (उ) | १२६.२२२ |
| भुविनातः परंतीर्यं (उ) | २१७.३ | भूतात्मनेन मस्तुभ्य (उ) | २३७.२२ | भूतेश्वरं भस्मगात्रं (उ) | १६८.१३ | भूभारकविनाशाय (उ) | २५०.७६ | भूगिरापस्तथावयुः- (स्व) | ३.४ |
| भुविप्रत्यक्षदेवोऽपि (क्रि) | २०.१४६ | भूतात्मा सर्वं भूता (पा) | ८४.६४ | भूतेश्वरं योननमेन- (पा) | ७३.५० | भूभारस्य विनाशाय (उ) | २४४.६५ | भूगिसंस्पर्शमात्रेण (भू) | ८.१६ |
| भुव्यासीनं तु विजाय (पा) | ११४.४७० | भूतादिस्तु विकुर्वाणः शब्द (स्व) | २.६ | भूतेश्वरः सुराध्यक्षः (सु) | ३८.१६६ | भूभारहंता कृष्णो (उ) | १६७.६५ | भूमिसस्य समेतायो (क्रि) | २०.१०२ |
| भूचक्रतेन दत्तं ग्यात्स- (स्व) | ३१.१४४ | भूतादिस्तु विमनादि- (उ) | २३०.१६ | भूतैश्चतुर्विधैश्चापि (उ) | २२७.४५ | भूभावपतितशुल्ल (उ) | ४२.६ | भूमि पदत्रयाधित्वेद्विजे (सु) | ३०.१६८ |
| भूतं भव्यं भवश्चैव (पा) | ८.४ | भूतानां चैव सर्वेषां गणानां (सु) | ३४.८४ | भूत्वागच्छान्महानारी (सु) | १३.३८ | भूभावसक्तं दिविचाप्रमेयं- (सु) | १५.३८६ | भूमिदिशि च तद्वत्पाणा (पा) | ४२.३६ |
| भूतं भूतं भूतिमद्भूतभाव (सु) | ४३.१७ | भूतानां प्रियकारी स्यात् (स्व) | ५४.३६ | भूत्वा चैव स हस्ताचिर्महीं (सु) | ३६.५१ | भूमिखंडस्य माहात्म्यं (भू) | १२५.८ | भूमो निपतितस्तत्रकर- (पा) | ४१.२८ |
| भूतप्रत जल्पेणते (उ) | ६६.५२ | भूतानामीश्वरी नित्या- (उ) | २२७.२५ | भूत्वा य तादृशो दैव्य (भू) | ४६.३२ | भूमिदानं द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | २०.१०० | भूमो निपतिताः सर्वे (स्व) | ४०.२७ |
| भूतप्रेतपिशाचाश्च सर्वे- (सु) | १६.७६ | भूतानामेव सर्वेषां (भू) | २६.२६ | भूत्वानारायणयोगी- (सु) | ३६.४६ | भूमिदानात्परदानं (स्व) | ५७.१५ | भूमो निपातिते देवे- (सु) | ४६.३४ |
| भूतप्रेता गणास्तस्य (सु) | ५.५६ | भूतानि पुनतीयातु (सु) | ६.५६ | भूत्वा सूर्यश्चक्षुषी (सु) | ३६.४८ | भूमिदानादिकं दानं (भू) | ३६.४२ | भूमो निपात्य सर्वाणि (क्रि) | ११.१२७ |
| भूतभर्त्रेण मस्तु (उ) | २४५.३०६ | भूतानि येन हस्तिजल- (स्व) | ३१.३० | भूतैर्दैवैः परतः (क्रि) | ५.५ | भूमिदानाग्राह्यभाग (भू) | ६७.८१ | भूमो भुंक्ते सदायस्तु (उ) | ६४.३१ |
| भूतभव्यं भवनाथो (उ) | ७१.१७० | भूतानि स्यावरादीनि (भू) | ८१.३६ | भूतं हनुमान् किकरोमि (पा) | ५२.३६ | भूमिधारमहाकूर्मो (क्रि) | १७.१०६ | भूमो वापरिवर्तते (स्व) | २८.२६ |
| भूतभव्याश्च पुष्टवांसा- (सु) | २१.२५८ | भूताद्युपनिविष्टानि- (स्व) | ३.७२ | भूतत्वं हि भूपाल (पा) | ११४.४१३ | भूमिनेता भूमिदाता (व) | २४.७ | भूमो विश्राम्य विश्रात (उ) | १२८.१६१ |
| भूतलस्यापि विष्णोश्च (भू) | ७५.१२ | भूतालं यत्ततो गच्छेत्तीर्थं (उ) | १६५.१ | भूतैर्विद्यान्मोहान (पा) | ६५.६७ | भूमिपुत्रो महवीर्यो (उ) | २४६.४३ | भूमो शयीत होतव्य (उ) | १२७.१२ |
| भूतले तादृशोच्चारं (भू) | ७५.१३ | भूतालयेनरः स्नात्वा- (उ) | १६५.२ | भूपः सुलोचनेषु त्रि (क्रि) | ६.६६ | भूमियः प्रतिशुल्लति (उ) | ३२.३३ | | |

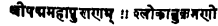


श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३१४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|--------------------------------------|---------|--------------------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| भूमाभुत्वास्तुताया च (पा) | ११७.६५ | भूयोपितं ह्राभवत् (क्रि) | १६.५२ | भूयणकिमुदवहन्- (पा) | १०६.७६ | भृगुर्वह्निकृतं एवं ज्ञात्वा (पा) | १४.४० | भेरीशंखनिनादेनं पूरिता (पा) | ४०.५५ |
| भूयम्भुव्योमभूतात्मा- (सु) | ४१.३५ | भूयोपितस्य विप्रस्य (क्रि) | १२.६४ | भूषणादोमयादत्ते (पा) | १०६.८१ | भृगुर्हतावृत्तस्तत्र पुलस्त्यो- (सु) | १६.६८ | भेयः संमतोजघ्नुः (पा) | ४०.४३ |
| भूयएवंचात्मविधिचारित्रं (सु) | ४०.६८ | भूयोपिदेवदेवेन (सु) | ३१.६ | भूषणान्यभिलिप्त्यं (उ) | १६७.६ | भृगुः सुधामाविरजः (सु) | ७.१०१ | भेषजं परमं तेषामविमुक्तं- (स्व) | ३३.३० |
| भूयएवगमिष्यामः (क्रि) | १७.२५६ | भूयोपिलिखितं विप्र (क्रि) | ५.१२० | भूषणीयास्तथागावो- (उ) | १२२.३० | भृगोः पुत्रो महाभागः (सु) | ३३.४ | भैक्ष्यस्याचरणं प्रोक्तम् (स्व) | ५१.५६ |
| भूयएवगुरोर्बृहिंगा (क्रि) | ६.१ | भूयोपि श्रेतुमिच्छामि- (सु) | ३५.६ | भूवागृहेज्जेतय (पा) | ८३.२८ | भृगोः शापनिमित्तं तु देवा- (सु) | १३.१७७ | भैक्ष्येन वर्तयेन्मिन्त्यम् (स्व) | ५६.१७ |
| भूयएवनिजराज्य (क्रि) | ६.४५ | भूयोप्यागमनं कार्यमाश्रमे (सु) | ३५.२६ | भूषितं चैव चक्राद्यं (उ) | ८०.३१ | भृग्वंगिरास्तथा कण्वो (उ) | १३५.३८ | भैरवस्त्वममयादिं धुधार्था- (सु) | १६.२८१ |
| भूयएवप्रवक्ष्यामि (क्रि) | ७.१ | भूयोप्यागमनं कार्यमाश्रमे (सु) | ३५.३१ | भूस्तृणशण्पकं चैव (स्व) | २८.१३ | भृगवादिमुनिभिः सार्द्धं- (उ) | २३१.३० | भैरवान्धारुणान्धोरा- (भू) | १५.८ |
| भूयएवद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १६.१ | भूयोभूमिसमासाद्य (क्रि) | २०.१०४ | भूस्पृष्टदक्षजानुस्तु (पा) | ११७.८७ | भृगेषकोकिलास्येच- (सु) | ४३.२४५ | भैरवं शोहरातिघ्नः बाल (उ) | १७४.८२ |
| भूयएवमहाभागतुल्याः (क्रि) | २५.१ | भूयोभूयोऽहं बन्धि (क्रि) | २२.५२ | भृगुदृष्टोत्पलानां च (सु) | ४३.४७४ | भृतकामात्पकमणिः (भू) | ६७.६३ | भैरवं शोहरातिघ्नः (उ) | ७१.१८८ |
| भूयएवमहाविष्णुः (क्रि) | १२.६८ | भूयोभूयोऽब्रुवन्तं (क्रि) | ६.५० | भृगुसेवितसत्त्वोपक (पा) | ७४.१७७ | भृत्यवृत्तिः कुसीदं च (भू) | ६६.२०४ | भोकिरातनरश्रेष्ठ (उ) | २००.१०४ |
| भूयः पूर्वस्थितमिव (क्रि) | २.१०६ | भूयोभूयोऽभवेज्जन्म (क्रि) | ६.१५८ | भृगुगुणानुयातां संश्रुष्ट- (सु) | ४३.२५० | भृत्यानां जापयामास (उ) | २१३.५७ | भोक्तव्यं विष्णुर्नैवेद्य (उ) | १२०.८७ |
| भूययोगचैतन्यं (उ) | १२८.२५२ | भूयोभूयोऽभवेज्जन्म (क्रि) | ६.१५८ | भृगुगारेण वरेणैव मुनये- (सु) | ३४.७५५ | भृत्यापराधे सर्वत्र स्वा- (पा) | १०४.१५१ | भोक्तव्यमिह पुष्पाभि- (पा) | ११२.८२ |
| भूयः शृणु महाभाग- (उ) | २१८.१ | भूयोऽवदमहाभारगम (पा) | १०४.१ | भृगुगीशोपिरणादभीत (उ) | १२.३८ | भृत्याश्चान्येसमाख्याता (भू) | १२.२५ | भोक्तृत्वं स्वकर्माणाः शेषः (क्रि) | ६.११० |
| भूयस्तेषामिदं वाक्यं (क्रि) | १३.२ | भूयः स्वस्तथा चैव (क्रि) | २.११ | भृगुक्षेत्रे शृणुप्रेत (उ) | १२६.२३१ | भृत्याश्चापिसमाख्याताः (पा) | ८८.२४ | भोक्षार्थं भतेभ्योऽक्षम् (त्र) | १०.२५ |
| भूयस्तेषामिदं वाक्यं (क्रि) | ७.५६ | भूलोके नैव संलग्नमंतरिक्षे- (स्व) | ३३.१३ | भृगुतीर्थस्य माहात्म्यं यः (स्व) | ३०.५७ | भृत्याश्चालोलावती गेहेतेन- (सु) | २१.१० | भोक्ष्यसे मपि युक्ते (सु) | १०.७७ |
| भूयस्त्वदानीं संप्राप्ते- (सु) | ४१.२६० | भूलोके नैव संलग्नमंतरिक्षे- (स्व) | ८०.१३ | भृगुतीर्थं तु राज्ञे त्रितोयं- (स्व) | २०.८१ | भृत्योर्हं तव लोकेश (भू) | ८.६६ | भोक्ष्य परेऽहं देवेन (उ) | ५१.३६ |
| भूयः स्वर्गं ततोऽदृष्ट्वा (उ) | १८.१०२ | भूलोकोऽभुवर्लोकः (सु) | २२.१ | भृगुपुत्रो महानासिज (उ) | २४.११ | भोजिरेन विनोदोदास्त्रा- (उ) | १२८.६७ | भोक्ष्य हंपुंडरीकाक्ष (उ) | ४५.३६ |
| भूयः स्वर्गलक्षणोऽतस्त्वमुत (भू) | ५.२७ | भूयः प्रमाणं सर्वतु- (सु) | ६.१० | भृगुमूर्तिमिदं श्रेष्ठ (स्व) | २०.२६ | भोजिरेन विनोदोदास्त्रा- (उ) | १२८.६७ | भोगवानधर्मं लोलाश्च- (स्व) | १६.१७ |
| भूयोऽपि पाद्विजश्रेष्ठो (क्रि) | १३.१८ | भूविभागतः कृत्वा सप्त- (सु) | ३.५६ | भृगुर्नवोमरीचिश्च तथा (सु) | ३.८८६ | भेदश्चतुर्भिर्जायते पुत्र- (भू) | ११.३१ | भोगस्य मन्मथं च तेषां (पा) | ८०.१८ |
| भूयोनिर्वेदनापन्नः (स्व) | ६०.२६ | भूश्चकपेतदातश्च संन्य (पा) | २५.१८ | भृगुर्वसिष्ठश्च यवन (उ) | १६५.१६ | भेरीपणवतूयाणां वीणां (पा) | १३.६३ | भोगाद्भोगांतरेच्छा (पा) | ११२.१४ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| भोगांते तु पुनर्जन्म (भू) | ८६.३६ | भोजनावसरेप्राप्तं (पा) | ११२.११३ | भोजश्चभोमकश्चापि (भू) | १०६.५३ | भो भो ब्रह्मन्निवर्त्तस्व-(सृ) | ३०.३४ | भोवंततोहृत्कमले (पा) | ८७.३२ |
| भोगान्भुक्त्वातत्र (उ) | ७४.२१ | भोजनावसरेप्राप्तेकला (पा) | ११२.४८ | भोदेव्यन्यत्प्रवक्ष्यामि (उ) | १४०.१ | भो भो ब्रह्मसुताय्यं (उ) | २००.८ | भोवत्सविप्रशार्दूलवृणी- (उ) | २१४.२५ |
| भोगान्भुक्त्वातत्रविपुला (पा) | २०.६० | भोजनासनमारूढो (भू) | २१.२६ | भोब्रह्मार्थेद्रुपरोगमा- (पा) | ७.२२ | भो भो मरगणायूयम् (ब्र) | ६.५ | भोवीराः पुष्कलाद्याये-(पा) | ३३.३० |
| भोगान्सर्वास्तत्र (उ) | १३१.७ | भोजनीयंयथाशक्ति (सु) | २७.५३ | भोभवत्पूवंकत्वेन (स्व) | ५१.४८ | भो भो राघवभद्रते-(सु) | ३८.१४७ | भोसभ्यामामक्रीवाचं (उ) | २१०.३४ |
| भोगार्थं किंप्रयच्छामि (उ) | ११.१३ | भोजनीयाः सदाकालवर्त्ते(पा) | ११२.८३ | भोभूत्याः प्रथमघोरे (उ) | २१०.४० | भो भो रामास्तुभद्रते-(सृ) | ३८.१३५ | भो साधोत्रक्षणत्रिष्ठ (उ) | १६३.४३ |
| भोगार्थं परमंय्योम (उ) | २२७.६ | भोजनेब्राह्मणार्थे (पा) | १७.३० | भोभोऋषेणगतव्य-(सृ) | १३.३८६ | भो भो वत्समहाभाग-(उ) | २१४.४६ | भो सिद्ध त्वामहं जाने (भू) | १२२.६ |
| भोगिशय्यागतः (सु) | ३.२१ | भोजनोपस्कंदद्यात-(सु) | २०.५० | भोभोःकापालिकशुद्र-(सु) | १७.१५६ | भो भो विप्रमहाप्राज्ञ (भू) | ३.२७ | भोहनुमन्महावीर (पा) | ११.१० |
| भोगेनित्यंस्थितिस्त (उ) | २२७.१० | भोजयित्वाततोविप्रां (उ) | ५१.६३ | भोभोः केशवएहोहि (भू) | २१.६ | भो भो विप्रमहाभाग-(भू) | ३२.६० | भोह्येणवर्त्तितोवृत्ति (स्व) | ५१.६४ |
| भोगोमोक्षश्चतस्यास्ति (उ) | ६१.३४ | भोजयित्वाद्विजांश्चैव (उ) | ११६.४२ | भोभो गणवरश्रेष्ठ (उ) | ३.२५ | भो भो विप्रपर्मत्वहि-(सृ) | १८.१३७ | भोमहिमहिमाद्रोच (उ) | १३३.२७ |
| भोजनं कुरुतेनित्य (उ) | १३६.२३ | भोजयित्वाद्विजांश्चैव (उ) | १२३.३१ | भोभो गंधर्वशार्दूल- (उ) | २२०.६ | भो भो विप्रवरः श्रद्धा(उ) | २१२.१७ | भ्रंशते क्रोशते यस्तु (उ) | ८४.११ |
| भोजनं चतः पश्चाद्(सु) | २०.१७२ | भोजयित्वाप्तपातार्थं (उ) | २५३.१७३ | भोभो ज्ञान महातेजः (भू) | ८.६५ | भो भो विष्णुकलाभूत (उ) | २१६.४७ | भ्रमतीवह्रिमृष्टिर्मतू- (सु) | ३०.६१ |
| भोजनं च यथाशक्त्या-(स्व) | २०.५४ | भोजयित्वायथाशक्ति-(सु) | २०.८१ | भो भो त्रिदशशार्दूलो(उ) | २००.१०७ | भो भो वैश्यपतेसाधो (उ) | २१७.२१ | भ्रमहात्पटीयत्रोल्लभ(उ) | १८४.२० |
| भोजनं च सुहृन्मित्रदीनां(सु) | २०.३३ | भोजयित्वायथाशक्ति (उ) | २५.३७ | भोभो देवगणास्तर्वे (उ) | २४५.१६ | भो भो वैश्य प्रसन्ना (उ) | २०४.४ | भ्रमंजहीहिचार्वणि (क्रि) | ४.६६ |
| भोजनं जलपात्रं (उ) | ३५.४७ | भोजयित्वायथाशक्ति (उ) | २४५.२७३ | भो भो द्विजवरैतन्मे-(उ) | २१४.६७ | भो भोः शक्रत्वयानीता-(सृ) | १७.१४८ | भ्रमता निर्जनेयेनमूर्ति (भू) | ७.१८ |
| भोजनं द्विजमुख्येषु-(सु) | २२.१७२ | भोजयित्वायथाशक्ति (सु) | २२.६२ | भो भो द्विजाभवंतोस्याः (उ) | २१२.४६ | भो भोः सत्ते साधयगच्छ (भू) | ५५.२३ | भ्रमतेजारसंयुक्ता (पा) | ६२.७१ |
| भोजनद्वयमेवाकर्त्तेषां (क्रि) | १६.१०६ | भोजयित्वासमं दद्यात्-(सु) | २०.७३ | भो भोः पंचात्मकाः (भू) | ७.७६ | भो भो सत्यमतवासांसि-(सु) | १३.३७७ | भ्रमत्यन्वेपयतीसा (उ) | १७६.८ |
| भोजनं शक्तितः कुयति(सु) | २१.२०६ | भोजयित्वा सुदैत्यैर्दो (भू) | १०५.४७ | भो भोः पुण्यात्मानो (ब्र) | ७.२० | भो भो स्वर्गिन्महाभाग-(सु) | ३६.७६ | भ्रमंतं वृत्तगीताद्यैर्मनियं (पा) | ७२.६३ |
| भोजनानंतरंतेपा (उ) | ३५.६ | भोजयेच्छक्तितः कुयान्(सु) | २१.२६३ | भो भोः पुरुषशार्दूल (भू) | ६८.१७ | भोभृगासकिमर्थंते (उ) | २१३.१७ | भ्रमति गिरिकुंजेषु-(भू) | ८५.३५ |
| भोजनानंतरंप्राप्ताशुनी (उ) | ७७.३२ | भोजयेच्छक्तितोविप्रां (सु) | २१.२६८ | भो भो प्राणपतेवाक्यं (उ) | २२१.१३ | भोरामावसिहिहिप्रं(पा) | ८.३ | भ्रमनीसंपुटीकृत्यं चाव- (पा) | ७२.५१ |
| भोजनान्मध्यपत्रेषु (उ) | ११८.३८ | भोजयेद्ब्राह्मणान्भक्त्या (ब्र) | २३.१४ | भो भो ब्रह्मन्निवर्त्तस्व-(सृ) | ४६.३२ | भोरूपकन्यायाजिते(पा) | ११७.२१४ | भ्रममाणः स दह्योद्येप-(भू) | ६२.५१ |





श्रीपद्ममहापुराणम् ॥ श्लोकानुक्रमणी

३१८

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| मदीयेनायुषाबालपादे-(सु) | ३५.६५ | मद्भक्त्यात्रगायंति (उ) | ६२.२२ | मधुकाः कोविदारश्च (सु) | ४५.५६ | मधुस्नापयेद्यस्तु (क्रि) | १२.१७ | मध्याह्ने तु ततो राजन् (भू) | ३६.५५ |
| मदीयेनैवमार्गेण द्विजाया-(सु) | १४.१६८ | मद्भ्यात्त्रिदशाः सर्वे (उ) | २४४.२२२ | मधुकैटभयोस्तेन (उ) | १२२.८० | मधुस्नं च तत्रैव तीर्थं (स्व) | २७.४० | मध्वेतुद्वादशी (उ) | ३८.१११ |
| मदीयेऽश्वः कुत्रविप्र-(पा) | ४०.१७ | मद्भ्याग्वादेवमाज्ञातं (भू) | १०३.४२ | मधुदोगुडदश्चैव (ब्र) | २४.३६ | मधुहुतुः प्रसादेन (पा) | ६५.६ | मध्वेतुपश्चकारं (सु) | २३.४३ |
| मदोत्कटतुनवमं दशमं (उ) | १३३.८ | मद्यपोयत्पित्रेन मद्यं (उ) | १२४.६६ | मधुनामधुनाद्यर्थं (पा) | १०४.१०६ | मद्यदेशे भवंताम्ना (पा) | ६८.६६ | मध्वेतुमंडपदिव्यं (उ) | २२८.१६ |
| मदोत्कटाचैत्ररथे (सु) | १७.१८६ | मद्यमांसं परित्यज्य (उ) | १२४.६४ | मधुपर्कन्दोषीत्या-(उ) | २४२.२१६ | मद्यदेशे महाग्रामो (पा) | ६६.३२ | मध्वेतवस्थसुकाननस्य (उ) | १६७.१११ |
| मदोत्कटान्पान् (उ) | २४१.४३ | मद्यमांसं प्रियंशुद्रम् (ब्र) | १६.११ | मधुपर्कं च सोमे च (स्व) | ५२.३० | मद्यप्राप्तेसहस्रां-(पा) | ३६.३५ | मध्वेदशाक्षरी प्रोच्य-(पा) | ७२.१३४ |
| मदोत्कटैस्तुमातं-(उ) | २४५.२२७ | मदावत्यां पुराह्मासीन् (उ) | ४१.७ | मधुगाने सदासक्तं (पा) | ७०.३८ | मद्यमं वज्रयेत्प (उ) | ११८.३६ | मध्वेदेवजयारामं (उ) | २२६.४८ |
| मदोन्मत्तधनदभृंगी (पा) | ७४.१८० | मद्रूपचित्तमो (पा) | ७२.७६ | मधुमक्षयतेयस्तु (उ) | ६४.७३ | मद्यमं वज्रितं पत्रं (उ) | ६४.४६ | मध्वेदृशवने रम्ये (पा) | ६६.८० |
| मदोन्मत्तमहावेगं (पा) | ६०.३० | मद्रूपधारिणं प्राप्तं (सु) | १३.२६४ | मधुमाध्वीकपानं-(पा) | ७४.५८ | मद्यमश्चतर्धनं (सु) | २१.१२७ | मध्वेदृशवने रम्ये (पा) | ८३.१६ |
| मदुत्तर्नवगृह्णीति (उ) | १६६.३५ | मद्रुत्तिकं वमपित्यक्तः (पा) | ३६.६६ | मधुमासमश्नातु (सु) | १६.३४६ | मध्याह्नकालवितते (पा) | ११४.१६६ | मध्वेलवोन्नमिव्याप्त (पा) | ६१.१५ |
| मदुत्तर्नातः संसार (पा) | ७३.१२ | मद्वनं प्राप्योमूढः (पा) | ८२.७७ | मधुमासस्य शुक्ला-(पा) | ६५.६ | मध्याह्नकाले संप्राप्ते (पा) | ११७.२२५ | मध्वेसिंहासनं त्रयुयं-(उ) | २२६.१३२ |
| मद्विनेतुविशेषे-(उ) | ३३.१५ | मदाक्यं पालितं तेन (भू) | ४.३८ | मधुमिश्रातुकरका-(पा) | ११७.६२ | मध्याह्नव्यापिनीतत्र (पा) | १०५.६२ | मध्वेसमं महत्तस्य (पा) | २५.३४ |
| मद्वारणं बलनिर्भिन्न-(पा) | १२.७३ | मदाक्यादन्तमज्जं-(उ) | १२६.८८४ | मधुरंगायतिमुनी-(पा) | ११४.६८ | मध्याह्नसंध्यामारोह- (पा) | १०५.५ | मध्वेस्माकं धीयते (उ) | २१२.४१ |
| मद्भक्तः केशवस्यापि-(उ) | १८.१२२ | मदाक्यादखिलं-(पा) | ११४.२२७ | मधुरत्वं तथा षष्ठं (पा) | ६०.३० | मध्याह्नसमये प्राप्ते(उ) | ६६.३१ | मनः शुद्धिहीनस्त्वेच्छां (क्रि) | १४.१४ |
| मद्भक्तस्त्रीवपापिष्ठा (उ) | १२०.१५ | मदाक्याद्वर्त्मविज्ञानं (पा) | ११४.२२८ | मधुरत्वं भेद्विदान (उ) | ६४.२० | मध्याह्नसमये राजन् (उ) | ५२.६ | मनः सर्वान् द्विजानं गान्(उ) | १८३.१६ |
| मद्भक्तो वंचाऽसत्यं (उ) | ११०.१५ | मद्विद्योगजदुःखाग्नि-(पा) | २.७ | मधुरादित्यनामानं (उ) | १४१.७ | मध्याह्नसमये लग्ने (उ) | २४२.६५ | मनसश्चंद्रमाजात (उ) | २२६.८३ |
| मद्भक्तोऽसि द्विज (क्रि) | १७.२५१ | मद्विद्योगादयमूढो (क्रि) | ५.१८६ | मधुरादिसमोपेत-(पा) | ११४.५६ | मध्याह्नसमये मृगं (सु) | ११.८४ | मनश्च जयाद्रोगान् (उ) | १६५.५१ |
| मद्भक्तो नहरः कुर्याद-(उ) | ३७.५६ | मद्विलंबनमात्रेण (उ) | १८४.७६ | मधुरादभुतलावण्यं सर्वं (पा) | ७४.८३ | मध्याह्नचंचलितेसूर्ये-(सु) | ३३.८८ | मनसाऽजिनयद् रामः (पा) | १०४.३२ |
| मद्भक्तोऽपि चयोभूत्वा (उ) | १२०.१६ | मद्विहीनोयदाकायस्तादा-(भू) | ७.६८ | मधुरालापतस्तस्य (भू) | ७६.२६ | मध्याह्नस्तमयान्तं (सु) | १५.२६८ | मनसा कर्मणा वाचा (पा) | ५६.३१ |
| मद्भक्त्या तान्-समाविश्य (उ) | २३५.२६ | मद्व्रतस्य प्रभावेन (उ) | १७४.१३ | मधुरेणापिपुष्येन (भू) | ६४.५१ | मध्याह्नं च तथा पार्यं-(उ) | ३८.२४ | मनसा कर्मणा वाचा (उ) | ११६.३० |

३१६

| | | | | | | | | | |
|--------------------------|--------|-----------------------------|--------|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| मनसा कर्मणा वाचा (उ) | १२३.१८ | मनसोनिग्रहचैव (उ) | १६५.५२ | मनोमनोतुनवमी (उ) | ८६.२६ | मनोहरे सुरभ्ये च (भू) | ३६.६ | मंत्रस्यप्रथमोवर्गो (पा) | ८१.३१ |
| मनसा कर्मणावाचा (भू) | १२४.१८ | मनस्काम समाभीष्टं (पा) | ७६.११ | मनोबुद्धिश्चचित्तं च (सु) | ३६.५८ | मनोहरोधवश्चाद्यशिवो (सृ) | ६.२५ | मंत्रहीनं क्रियाहीनं (उ) | ११६.५३ |
| मनसान्तिगामासवचः (क्रि) | १६.३५ | मनस्यन्यद्वचस्यन्यत् (क्रि) | ६.१०६ | मनोभद्रानामराजा (क्रि) | ३.१८ | मंत्रंजापपरमंपंचविश (पा) | ७२.३७ | मंत्रहीनं भवितहीनं (उ) | १३३.५२ |
| मनसाचिचित्तान् (स्व) | ४१.१८ | मनांसि चन्येत्पापा (भू) | ८६.१४ | मनोनव धनुर्ध्याद- (सु) | २१.२०५ | मंत्रंअं च हवनं वल्लिभागं(सु) | १६.४७ | मंत्रानिमित्तां देवाश्च - (भू) | ५६.१६ |
| मनसाचिचित्ताह्वया (सु) | १३.३०२ | मनांसिचलयेत्पापा (पा) | ६२.७४ | मनोभवमहासिंह कुलटा (उ) | १८७.२० | मंत्रविनातुपोविप्र (त्र) | १६.७ | मंत्रानिच्छाम्यद्वेव- (सु) | १३.२१६ |
| मनसा चेप्सितं सर्वं (भू) | ५.५६ | मनुं स्वायंभुवं पूर्वं (भू) | २६.२३ | मनोभव समानं तु पुरुषं (भू) | ११३.२३ | मंत्रप्रणामात्रेण सिद्धिः (पा) | ७८.१३४ | मंत्रार्थं च वदेनश्ने (पा) | ८२.१५ |
| मनसातारिताः केचित् (उ) | १३२.८७ | मनुजास्थिमयो मालां (सु) | ४३.४११ | मनोभावविद्विस्वास्य (उ) | ४७.१२ | मंत्रब्रूजःमणिः प्रोक्तः (पा) | ७०.५७ | मंत्रार्थश्चप्रवक्तव्यो- (उ) | २२३.६६ |
| मनसात्त्वान्चान्नि (पा) | २२.३५ | मनुपुत्रस्तथादृष्टवा- (भू) | ४३.५३ | मनोभिरमतेतद्विप्रीति (उ) | १२८.२५६ | मंत्रतस्तु विशेषः स्यात् (सु) | २७.५५ | मंत्रार्थेननुतेकाव्यो (सु) | १३.२२४ |
| मनसाचिचित्तायो (सु) | ४.६२ | मनुचक्षुरातो राजा- (पा) | ८.३५ | मनोरथपयातोह (पा) | ८४.१७ | मंत्रद्वयेनकुर्वीत (उ) | २४३.५६ | मंत्रावाहनसंयुक्ताः (सु) | २२.७१ |
| मनसापिनकुर्वीत (सु) | १४.१५८ | मनुष्यैश्चः सतसितु (उ) | ७१.२११ | मनोरथाख्यापराभीम (पा) | ६६.११० | मंत्रमण्डलाखरप्रोक्तं (उ) | २२६.१४ | मंत्रास्त्रोपध्वश्चैव (म) | १३.२०२ |
| मनसापिनहिंसति (सु) | ४६.१०५ | मनुष्यत्वेनपानगवि- (सु) | १०.४४ | मनोरथानांविषय (उ) | १५.५८ | मंत्रयामासतः साकया- (उ) | २४५.२२१ | मंत्रिणस्तेप्रहृष्टांगा- (पा) | ४.४६ |
| मनसापिपरेषांयः (स्व) | ३१.८५ | मनुष्यपशुकीटेषु (क्रि) | २२.३८ | मनोरथाश्चसफलाः (उ) | ६५.२४ | मंत्रयोगेप्रकुर्वीत (उ) | २५३.८१ | मंत्रिणातम्य चारख्यातः (सु) | ४६.६ |
| मनसापुष्पकंदधवावा- (सु) | ३५.६१ | मनुष्य पशुपक्ष्यादि (सृ) | ३१.२१ | मनोरथैस्तुसंपूर्णां प्रादितिः (भू) | ६.११ | मंत्ररत्नद्वयं स्यात् (उ) | २२३.२३ | मंत्रिणिन्यस्यराज्य (पा) | ६६.३ |
| मनसाप्यभिकामस्य (स्व) | ११.२४ | मनुष्याणां च पापानि (पा) | १६.२१ | मनोरथैस्तुसंपूर्णां प्रादितिः (भू) | ६.११ | मंत्ररत्नमहपूर्वं (पा) | ८२.५५ | मंत्रिणोर्नंगमाश्चै (उ) | २४४.६७ |
| मनसाप्यभिकामस्य (स्व) | २६.५ | मनुष्यास्तप्येद (पा) | ६५.२६ | मनोरथैस्तुसंपूर्णां प्रादितिः (भू) | ६.११ | मंत्रराजमिमंमुखा (पा) | ७७.१६ | मंत्रिणोभृत्यवर्गा- (सु) | २४४.७३ |
| मनसावचसा चैव- (भू) | ४.३३ | मनुष्येषुचदेवेषु (क्रि) | १७.१५२ | मनोहरं च तत्रैव तीर्थं (स्व) | २.१७ | मंत्रवर्णस्थयजननाम (उ) | २५३.२६ | मंत्रित्वेचक्रतुर्वच- (उ) | १०.६८ |
| मनसविचसानान्यं (सु) | ५८.३२ | मनुष्यैरप्यवघ्नानम्य (स्व) | ५६.२६ | मनोहरामुपवेधाः (पा) | ७०.११ | मंत्रवेदनमस्करा (सु) | १५.१६६ | मंत्रिकययकस्यानाश्रमः (पा) | ३५.१६ |
| मनसापुष्पकंदधवावा- (सु) | ३५.६१ | मनोभूतेरगमंघर्वायसाः (सु) | १६.१६२ | मनोहर व्योम्नो (पा) | ६६.२० | मंत्रप्रणविहितमन्त्रवेद- (सु) | ४७.११ | मंत्रिकययकस्यायदुर् (पा) | ३०.८ |
| मनसा सचं सिद्धिः (उ) | २२६.४२ | मनोभूतेरमनोदुर्गं (सु) | ३१.१३८ | मनोहरसिमिकसमात् (क्रि) | ३.३८ | मंत्रसंस्कारादीनाश्च (सु) | ४७.१३ | मंत्रिकययकस्यायदुर् (पा) | ३३.१६ |
| मनसा सचं सिद्धिः (उ) | २२६.४२ | मनोजवावायुपत्नी (सु) | १७.१०८ | मनोहरसिमिकसमात् (क्रि) | ३.३८ | मन्त्रस्यावास्वत्परण- (सु) | ३५.४१६ | मंत्रिकमनबद्धाहेस्तं (पा) | ४७.१७७ |



दीपधमहापुराणम् :: श्लोकांशुसमाप्तिः

११०

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| मंत्रिपौरजनाम्बु (पा) | १६.३६ | मंदमंदप्रयात्येव ते (भू) | ५८.११ | मंदारपरिजातादि (उ) | २२६.१०६ | मन्येहंनत्वयासाधं (सु) | ३३.१३१ | ममकिदूषणं ह्यं (क्रि) | ६.७५ |
| मंत्रिपुत्रीतया चैव (सु) | १०.६६ | मंदं मंदं बहुदायु (क्रि) | १७.६० | मंदारपरिजातादि (उ) | २२६.३६४ | मन्त्रियाञ्जवल्क्याश्च (स्व) | १६.१० | ममगात्रच्छविभ्रांत्यामा (सु) | ४४.१०६ |
| मंत्रिभिः पौरमुह्यं (उ) | २४२.३५८ | मंदबुद्धिद्विजोयस्तु (क्रि) | २०.१०६ | मंदारसप्तगुच्छाचूडं (पा) | ६६.६१ | मन्वंतरंचतुर्थं तु (सु) | ७.६४ | ममगात्रात्तुयदभस्म (उ) | १६८.१२ |
| मन्त्रीधर्मपरोराज्ञः (पा) | २२.४५ | मंदरं धर्मं कृत्वा (त्र) | ८.२१ | मंदारसप्तमीभेतामीप् (सु) | २१.३०४ | मन्वंतरं मनोकालः (सु) | ३.१५ | ममगेहं समाश्रित्यभुवं (सु) | ५०.५८ |
| मन्त्रेणानेनदेवयं (उ) | ३०.२३ | मंदरं धर्मं कृत्वा (उ) | २३१.४४ | मंदारं सप्तमीषष्ठीं (सु) | २१.२६४ | मन्वंतरशतदेहि (त्र) | १७.२१ | ममज्जापुंस्तुमयवि- (उ) | १७.६१ |
| मन्त्रेणानेनयदेवं (सु) | १४.५२ | मंदरंचरमचैव त्रिकूट (क्रि) | २.१५ | मंदारैरथमालत्या (सु) | २२.८६ | मन्वंतरसहस्राणि (क्रि) | १३.१५८ | ममताराधवंशो (पा) | ५१.२३ |
| मन्त्रेणानेनयः कथान् (क्रि) | ११.११४ | मंदरात्रिप्रतीकाशो- (सु) | ४१.१६६ | मंदूतोयेनराजाताये (उ) | १७४.७१ | मन्वंतरसहस्रेऽनु (उ) | ३४.८७ | भमतावद्वनचार्युर्बुधुराम (पा) | २६.३५ |
| मन्त्रेणानेनयः कथान्- (उ) | १२४.४३ | मंदरेकंदरेच'कवापीतटे (सु) | ४३.५०० | मन्नामचैवमन्नामयो (पा) | ८०.५ | मन्वंतरस्यसंख्येयं (सु) | ३.१८ | ममत्वं नृपशार्दूल (उ) | २४२.२४४ |
| मन्त्रेणानेनराजेन्द्र (उ) | १२२.५१ | मदवायुं तथा चक्रं (पा) | १०५.१६५ | मन्नामदोमधोसर्वा (पा) | ५१.२६ | मन्वंतरादथस्त्वेतादत्त (सु) | ६.१३१ | ममत्वं विद्यतेनात्र (उ) | २०२.४४ |
| मन्त्रेणानेनवैदूताधारणं (उ) | ६६.८० | मंदस्मिसनुवावीस्यो (पा) | १०६.४६ | मन्नामरामदास (पा) | ५१.२४ | मन्वंतराणां कोट (पा) | ६६.२० | ममत्वाकाशंभूत (सु) | ४३.३१५ |
| मन्त्रेणानेनशयनं- (सु) | २१.४८ | मंदाकिनि नयाञ्छोदा- (सु) | ११.१६ | मन्नामरुद्राक्षिभूति (पा) | १११.४५ | मन्वंतराणांसंक्षेपास्त- (सु) | २.१२ | ममदातुंवरशक्तो- (पा) | ११२.१२५ |
| मन्त्रेणैवंहरिंयस्तुपुजये (सु) | ४६.२०५ | मंदाकिनी ददशायि- (उ) | १६.७ | मन्नामना च सरिदियं (सु) | १८.४५५ | मन्वंतराणिचत्वारि (उ) | ६४.८७ | ममदुःखेन दग्धेयं (भू) | ५२.४ |
| मन्त्रेण गुरुवोये च वेद (पा) | ११५.४५ | मंदाकिनी महापुण्या (उ) | १३५.६२ | मन्मथहेमकूटेतुकुमुदे (उ) | १३३.३० | मन्वंतराणिसर्वाणि (सु) | ७.८१ | ममदेयविशेषेण (उ) | १३५.११ |
| मन्त्रैः पुरुषैस्तु (उ) | २२३.६१ | मंदाकिनी समागच्छ (स्व) | ३६.५६ | मन्मद्विरेमहाभागे (पा) | ११४.२३८ | मन्वंतरमहाभागदेव (भू) | २७.२७ | ममदोः शस्त्रहीनस्य (उ) | १८.६७ |
| मन्त्रैस्तैस्समभ्य (सु) | २१.२२१ | मंदाकिन्या पयः (उ) | १६.८ | मन्मायाभोहितविषयः (पा) | ७३.५२ | मन्वंतरेण्यतीतेतु (सु) | ३४.२१ | ममद्वारेत्वयापूर्वं (उ) | ८६.२४ |
| मन्त्रोदकेनचाभ्युक्ष्य (उ) | १७.७५ | मंदारकाः कुरवजा- (सु) | ४५.५६ | मन्येधर्मज्ञकल्पोति- (उ) | १२६.२२६ | मन्वाद्ययोमहात्मनः (भू) | २२.४६ | गपधर्मः गुप्ताश्च (भू) | ५०.१३ |
| मथनेपारिजातो (सु) | ४.५० | मंदारकुसुमामोद- (उ) | १२५.१०७ | मन्यन्तेयेस्वमात्मानं (स्व) | ६०.३८ | मंसारिकाभिः चन्द्रावतः (क्रि) | १३.४० | ममनाथो महात्मा वै (भू) | ४६.४१ |
| मयनोजंभकः शुभो (सु) | ४२.७३ | मंदारकेतकीजातीपुष्पा (उ) | २२८.४२ | मन्यमानो गिरिसुतां (सु) | ४४.६४ | ममकांश्चिद्विजश्रेष्ठ (त्र) | १४.२४ | ममनाम्नाहिदेवेश (उ) | १३५.६८ |
| मयानमंदरं कृत्वानेत्रं (सु) | ४.३१ | मंदारकेतकीजाती पुष्पा- (उ) | २२६.६६ | मन्येनात्माकृत (उ) | २२.४३ | ममकांतच्छन्नैवत्वया (भू) | ४६.५२ | ममथुर्दक्षिणं पाणि (भू) | ३८.३६ |
| मयानं मंदरंकृत्वानेत्रं (सु) | ४.३७ | मंदारकेतकीजातीपुष्पा (उ) | २२६.१७१ | मन्येमहात्मानमनंत (क्रि) | १२.८१ | | | | |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३२१

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| ममधुव्राह्मणास्तस्य (सु) | ८.७ | ममयद्विष्टतदयं (पा) | ११६.४१ | ममाग्निशरणाधार्य (सु) | ३०.१२१ | ममापिपूर्वजनुषः (उ) | २००.८५ | ममाहवेति सा देवी (उ) | २०३.२४ |
| ममपूर्वाप्रकुर्वीत् (उ) | ३७.२६ | ममरत्नस्यमंताख्यं (उ) | २४६.२६ | ममाग्रे कथितं पूर्व (भू) | ११३.३८ | ममापिभर्ता प्रबलो (भू) | ५७.३ | ममेष्टाहिसदाराधा- (पा) | ७३.२८ |
| ममपूर्वविपाकोऽयं (भू) | ५७.८ | ममरूपं विपश्यति (भू) | ५१.४० | ममाग्रे कथितं विप्र (भू) | १२१.४० | ममापिभावं परिगृह्य (भू) | ५४.२२ | ममैतद्विदितं कान्ते (पा) | ८६.१४ |
| ममप्रसादादिहपुण्य (पा) | १०३.८ | मम रूपं समायातं (भू) | ५३.७७ | ममाग्रे व्रत संकल्पं (उ) | १७४.४८ | ममापिभावमेकाग्र- (भू) | ७७.५४ | ममैवं पीड्यमानस्य (भू) | ६८.२२ |
| ममप्राणप्रियाचैषा (भू) | ४७.२३ | मम लज्जा समुत्पन्ना (भू) | १२२.२६ | ममाग्रे भूतेन पलेन (भू) | ४२.२५ | ममापिवदसर्वतदय- (पा) | १०५.४८ | ममैव कालं प्रबलं (भू) | ५४.२३ |
| मम प्राणाधिकस्येहं (पा) | ११४.११६ | ममवशात्समुत्पन्नास्तु (भू) | ७८.४१ | ममांजगवंधनुरस्ति (पा) | ११६.२२७ | ममापिस्मरणं जातं (उ) | ३०.१०४ | ममैवतावदुत्पत्ति (सु) | ३०.३६ |
| ममप्राप्तहिमरणं (उ) | १५.५६ | मम वाक्यं तु कर्तव्यं (स्व) | ४६.७ | ममांजयाचकसंख्य (उ) | ३४.५४ | ममापिहृदये कामः (उ) | ३०.६५ | ममैवदूषणं सर्वं (क्रि) | ६.१०१ |
| मम प्रियतमोमित्रं (पा) | ७३.४६ | ममवानरामल्लू- (पा) | ११६.२१३ | ममांजयासतेसर्वं (उ) | १८६.४१ | ममाप्येतन्मतदेवाय (उ) | ६१.१६ | ममैव परिपाकोऽयं (उ) | २०६.२५ |
| ममप्रोक्तमृतं जातं (पा) | ५५.६४ | मम व्याघ्रनतायास्तु (उ) | २०८.१५ | ममांजानकृतायस्मान् (सु) | २२.१६ | ममाप्येतन्मतदेवाय (उ) | ६१.१६ | ममैवपुंसः पितरोतीक्ष (क्रि) | ३.६० |
| ममवाहुवलंश्यवीक्षितं (पा) | १०७.४३ | ममवर्तं द्विजश्रेष्ठ (पा) | ११२.१३० | ममांजजस्यदुर्वृद्धे (उ) | २३८.१६ | ममाप्रियं हृषीकेश (पा) | ११४.२७५ | ममैवहितिनोमृत्युर्नृत्वं (सु) | १८.३५६ |
| ममभवताश्चये (उ) | ३८.१०३ | ममसंतानशुश्रूषां (उ) | २०२.५१ | ममादिमुक्तिः पांथानां (उ) | ८८.७१ | ममभवत्कथं नाकमिति- (स्व) | ३१.४ | ममोद्ध्वं प्रविश्यासो- (पा) | १०७.६३ |
| ममभर्ता स धमतिना (भू) | ५३.३५ | मम संतर्गभिः सर्वे (भू) | १२३.२६ | ममाधारपरोभूत्वा (भू) | ५७.२८ | ममार्थं पितसाक्षाद (उ) | ७१.७४ | ममोपदेशतः सार्वैचक्रे (व) | ११.२३ |
| ममभर्ता हस्तैः हुंतेन (भू) | १०३.५६ | मम सिद्धासने दिव्यं (उ) | १६२.४६ | ममाथैव महाभाग (भू) | २.१३ | ममायुरल्पंकथितं (पा) | १०६.६१ | ममोपरिष्ठापां कृत्वा (पा) | ५८.३३ |
| ममभर्ता न सदैहो (भू) | ११३.४१ | ममसोपिमहाभक्तो (क्रि) | १७.२३८ | ममातिकं वत्सवत्स (उ) | १११.११ | ममार सहसा भूमौ (भू) | ४५.२१ | ममोरसि महादेव जातं (भू) | १०२.३ |
| ममभ्रातावलीमहा- (पा) | ११६.१६६ | ममस्त्रीगणामध्येषु (क्रि) | ५.३७ | ममाग्रे चापि स्त्रीकारं (भू) | ३४.१४ | ममावमानतः सर्वं (पा) | ११७.८० | मम प्रपतनेनाथजातवै- (सु) | १०.६२ |
| मम माता उवाचैनं (भू) | ४७.४१ | मम स्थानेविशेषेण (उ) | १३५.१०६ | ममापराधाद वालोसी (सु) | ३५.६३ | ममात्रिभविंसयुक्तं (उ) | १७४.२६ | ममाकिमपराद्धते (क्रि) | ८.४५ |
| मम माता पिता त्वं वै (भू) | ५२.३८ | ममस्नेहं परित्यज्य (भू) | ४२.३१ | ममापिकाश्यां सपूज्यो (उ) | २५३.११ | ममाश्रमं देय्यं भोक्तु (पा) | १०५.५६ | मया कृतमिदं स्तोत्रयः (क्रि) | १७.१६३ |
| मम माता मम पिता (क्रि) | १७.८२ | ममस्नेहोदयोऽयं च (क्रि) | २३.३८ | ममापित्तत्पाकाख्यं- (पा) | ११०.३७ | ममाश्रमनविष्टाहिदुःख (उ) | १२६.३४ | मया कृतेन स्तोत्रेण (क्रि) | ७.११६ |
| मम मातामृतादुःखाद् (उ) | १६७.३८ | ममागमनं कार्यं हि (व) | ११.१६ | ममापिदत्तं तेनैव ब्रह्म- (पा) | १०५.१७८ | ममासनेकनिष्ठेयं (उ) | १११.१५ | मया कृतोऽयं धर्मस्य (सु) | ३८.१८८ |
| मममोक्षस्यकोहेतु (उ) | १६८.४६ | ममागमनमाख्याय (सु) | ३७.१५० | ममापिनारदस्य (उ) | २२३.७४ | ममासितुं इष्ये सर्वं (पा) | ४६.२० | मया केवलमेवैकं (पा) | ६८.७० |



श्रीपद्ममहापुराणम् ॥ श्लोकानुक्रमणी

३२२

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| मयाख्यातं तवाग्रे वै (भू) | ६३.३७ | मयादत्तचिरस्थापि (सु) | १७.६२ | मयापयंतातत्र गतं (पा) | १८.२ | मयायज्ञाः कृताः सर्वे (क्रि) | ६.२१ | मयासवरदानेनछंदयित्वा (सु) | ४३.४६ |
| मयागंतव्य मे (उ) | ४०.२३ | मयादत्तवरोहोव (उ) | २५०.८१ | मयापितृकृतं कर्म (क्रि) | ३.५५ | मयायोध्यापतिनित्यं यो (पा) | ३२.१५ | मया सहस्रं सुश्रीणि-(सु) | १३.२७४ |
| मयाचप्रेषितायूयमेते (सु) | १८.६० | मयादत्तेनगवेन (क्रि) | २२.११७ | मयापितृगंतव्यं (क्रि) | ७५.२७ | मयायोधियस्तेस्वा-(पा) | ३६.४० | मया सह विशालाक्षि (भू) | १०३.३० |
| मयाचात्रदशश्रीवो हनो (सु) | ३८.६६ | मयादत्तेहितस्मिन्वै-(पा) | १०६.७६ | मयापितुरनुशासना-(पा) | ११६.१६४ | मयाविना महाराज (भू) | २८.११० | मया सहस्रकृत्वास्ते (क्रि) | १७.२२६ |
| मयाचाराधितोविष्णुः (भू) | ३६.३० | मयादुःखानि भुक्तानि (उ) | ४६.४ | मयापि पितृपुण्येन (क्रि) | २१.१२४ | मया विलोकिता (उ) | ३३.२० | मयासादं प्रकुर्वतु (स्व) | २३.१४ |
| मया जरापनोदार्थतदेवं (भू) | ७८.१३ | मयादुरात्मनामोहान्नित (क्रि) | ६.१०६ | मयापिवात्स्यस्वपितुः (उ) | ७१.३२१ | मया विहीनाः कित्वेते (उ) | ६६.५६ | मयासादं प्रकुर्वतु (उ) | १२८.१३० |
| मयाज्ञयाकृताः सर्वेजिता-(क्रि) | २१.४६ | मयादृष्टं च तदपि (पा) | ७१.४३ | मयापुराश्रुतं देवऋषि (पा) | ४४.३ | मयावृत्तस्त्वयाचार्य-(उ) | १२८.४५ | मयासिपूजिताभक्त्या (उ) | ६६.६४ |
| मया ज्ञानेनहीनस्त्वं (भू) | ७.३७ | मयादृष्टममैवेय (उ) | १८४.६२ | मयापूर्वं कृतं कर्म-(पा) | ६४.४७ | मयावृत्तस्त्वयाचार्य-(स्व) | २२.३६ | मयाश्लेषाः प्रजाः सर्वा (क्रि) | २२.२६ |
| मयातत्र प्रगंतव्यं यत्रायं (भू) | ४२.६३ | मयादेवाहतायुद्धो (उ) | ६७.२४ | मयापूर्वं कृतयुगे गंगा (पा) | ३७.५५ | मयावैतोपितादेवा (उ) | ४१.३४ | मयास्थितं सुखेनात्र-(उ) | २२०.३६ |
| मयातत्रैव गंतव्यं (भू) | ४२.६५ | मयाद्यैवं न कर्तव्यं (भू) | ८.३८ | मया पूर्वं हरोहृष्टो (स्व) | २५.२६ | मया वै पूर्वमित्युक्तं (भू) | ४.३७ | मयास्वपितरो हृष्टवाः (उ) | ३६.३१ |
| मयातत्रोपविष्टे (उ) | २८.४ | मयाद्रोणोलांगुलेन (पा) | ४७.१६ | मयापृष्टमिवं सर्वं (पा) | ५७.२६ | मयावैसाधितचान्नं (सु) | ३१.१२४ | मया स्वपितरो हृष्टवा (उ) | ३६.३८ |
| मयातवात्रेकथितं (उ) | ८०.५१ | मयाद्धारवर्त्ता हृष्टवा (पा) | १७.७१ | मया पृष्टः सविब्रं (उ) | १७६.४२ | मयाव्यथाप्रदत्तं (क्रि) | १२.१०१ | मयाहि परयाभक्त्या (भू) | ६७.३६ |
| मयातुराजयार्दल (उ) | ४३.४२ | मया नमस्कृतः पश्चाज-(पा) | ३६.८६ | मयाप्रणीतं विप्राणाम्-(सु) | १५.१४३ | मयाशतोस्य विदिते (सु) | ४४.१०७ | मयाचितं मदायस्य (क्रि) | १६.६४ |
| मयातेनापराधने (क्रि) | ६.२३ | मयानवार्यतेततक्षम-(पा) | १६.१६ | मया प्रमादादुत्तरा-(उ) | २२.३५ | मयाश्रुतान्यनेकानि (उ) | १३५.१७ | मयाजीवनितेनेत्राद-(पा) | ६३.२४ |
| मयाते पतिताः संख्ये (पा) | ५२.५१ | मयानिवात्ययोध्यायां (सु) | ३३.१३७ | मयाग्रलोभितो (पा) | ४६.५७ | मया श्रीनानि कर्माणि (पा) | ६८.८६ | मया नृष्टे मुताभोगान (भू) | १६.६४ |
| मयातेमूर्च्छितः (पा) | ४२.३२ | मयानीतमिमं बाहं (पा) | ३८.४५ | मयाप्रोक्तं देवपुरे (पा) | ४६.१५ | मयासंकल्पितं द्रव्यं (उ) | १२६.११२ | मया नृष्टे महाभागे (भू) | ४३.६१ |
| मयातेवाचिता सर्वे (उ) | १२७.८ | मयानीतोयज्ञ हयः (पा) | २३.२६ | मया बद्धोवादाश्वनीतः (पा) | २३.५१ | मया सलिल्येगात्रं (क्रि) | ६.३६ | मया प्रीत्यासमाकृष्ट-(उ) | २३५.१३ |
| मया त्वं तु समानीता (भू) | १०३.६५ | मयानृतवचोमीत्या-(पा) | १४.४२ | मयावह्नप्रकारायकृतं (पा) | ४६.११ | मयासंसारभीते (उ) | २०५.३६ | मया लोकाः स्थिराराज-(भू) | २८.११३ |
| मयास्त्वंपूजितः (उ) | १२६.२०२ | मयानैकापिवैशाखो (पा) | ६८.७४ | मया मूढेन विप्रं (क्रि) | १७.७७ | मयासमपितं तुभ्यं (उ) | १८४.८२ | मया सर्वफलन्यासो-(उ) | २२३.३६ |
| मया त्वं वारितो ह्यात्मन्(भू) | ८.५ | मयापमानितस्या-(उ) | २०४.१०३ | मयायजन्तः पुत्रो-(सु) | १७.६२ | मया सम्मोहितं (उ) | २२८.६५ | मया सर्वमिदं विशय-(पा) | ७३.२६ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------|---------|---------------------------|--------|
| मयि सामाध्यसूर्यैः (पा) | ६६.५६ | मरणं तद्विनिर्दिष्टं न (भू) | ६६.१३० | महतीदेवगंधर्वा ऋषयः (सु) | ४५.६० | मर्दयित्वा मटान्वाराहो(भू) | ४३.४० | मस्तकोपरितिष्ठतं (क्रि) | २३.१०८ |
| मयिस्थितायामेतेषां (क्रि) | ५.१६० | मरणं सुलभं ज्ञात्वा (भू) | ४२.४८ | महतीवभृयस्त्रातस्ताभ्यां (उ) | ११०.८ | मर्द्यां कुरुदेशः (सु) | ३१.३४ | मस्तको पतितिष्ठति (क्रि) | ५.१५७ |
| मयि स्वर्गं गते शक्र (उ) | ३४६.१०७ | मरणव्यवसायापि (सु) | ४३.२६५ | महतीविश्वकर्मा च (सु) | १८.६० | मर्द्यापर्वतेतस्मिन् (सु) | १८.१६८ | महतां चैव भूतानां (सु) | ३६.१४० |
| मयूरं तित्तिरं चैव (स्व) | ५६.३८ | मरणाच्च प्रयागे (उ) | ३४.२१ | महतेनकदाचित्तावाहृतौ (उ) | ११०.६ | मलपंकनेदिग्धांगी (उ) | २४२.२८५ | महतां उद्यमेनापि- (भू) | ८५.५० |
| मयूरध्वजधारित्वं (सु) | १३.४०६ | मरणादधिकं तं तु- (भू) | १०.३८ | महतेनक्रतुः सृष्टः (पा) | ६७.२२ | मलमूत्र प्रकीर्णानि (क्रि) | २१.१०२ | महताकालयोगेन (सु) | १६.१८७ |
| मयूर नाम बहुलं (गा) | ११७.६ | मरणावसरेतस्या (उ) | २१३.५५ | महस्वती प्रजाव्रजे (सु) | ४०.६६ | मलमूत्र विसर्गाय (गा) | ११२.३४ | महता कृच्छ्रेणनासा- (भू) | २६.३२ |
| मयूरनाद बहुलेबहिर- (पा) | १०५.८ | मरणावसरेप्राप्तेऽपि (पा) | १०६.१०० | महस्वत्यां महस्वतो (सु) | ६.१८ | मलयस्यैकदेशेतु- (सु) | २२.४० | महता ज्वररोगेण (भू) | १.२१ |
| मयूरपिच्छकैः (पा) | ७२.५० | मरणोचितयानस्य (पा) | ११६.२०३ | महस्वमानवेगोपि मृगः (भू) | ८१.३३ | मलयेत्वाग्निमारोहेद (स्व) | ३६.८८ | महतामपसायुक्ता- (सु) | १३.२७० |
| मयूर पुच्छव्यजनैर्निशार्चं (क्रि) | १३.६ | मरणे शृणुकांत इवं (भू) | १६.२० | महदेशे महारण्ये जातो (उ) | २१६.७३ | मलवद्राससावापि (स्व) | ५६.३० | महतापां सुवर्णेषु (सु) | ४५.११७ |
| मयूर हंस संयुक्तं (स्व) | ३६.३१ | मरवातामस्वमेधानामि- (भू) | ६४.५ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मलानहानदीनाम्नांदेशे (उ) | १८७.४१ | महतापां सुवर्णेषु (सु) | ७०.६ |
| मयूरैर्नकुलैः सादृक्कीडं (पा) | १४.१६ | मरालदेशमास्थानादवर (उ) | १८०.१०३ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मलिननापि वस्त्रेण (भू) | ४१.४६ | महतामपि विप्रा (पा) | १००.३७ |
| मयूरैश्चापि संलीनैर्- (सु) | १६.७४ | मरीचात्कश्यपवाज्जजाताः (सु) | ६.३८ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मल्लयुद्धविधानेन (उ) | २४५.३७२ | महती हानिरेतस्या (पा) | ६६.३० |
| मयूरोनकुलश्चापः (उ) | ८८.१४ | मरीचिगर्भनामानोलोके (सु) | ६.४४ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मल्लिकाकुसुमेर्दवं (उ) | ८४.२७ | महतोरजसोमध्ये (सु) | ३६.७४ |
| मयै बज्रिनुडंर्यागेतस्य (पा) | १०६.१८ | मरीचिदक्षमत्रि च (सु) | ३.१६८ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मल्लिकाक्षे तथा विष्णु (सु) | ३४.१३७ | महत्कृतं कर्मतेऽप्य (पा) | ४२.४४ |
| मयोक्तमल्लिं तत्त्व (स्व) | ३६.१२७ | मरीचिमध्यगिरसो (पा) | ६५.३१ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मल्लिकामोऽसंयुक्तं (उ) | ३५.४५ | महत्त्वादि सृष्टीनां (पा) | १.५ |
| मयोक्तमितिदेवेश (उ) | २०७.४१ | मरीचिर्भगवांस्तत्र (उ) | २३०.८ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मल्लिकास्त्रजमाश (पा) | ११४.२६२ | महत्पदं महाद्वामव (पा) | ६६.३८ |
| मयोक्तो सौमित्राग्नेन (सु) | ३६.१३० | मरीचिश्चापिदक्षश्च (सु) | ४३.३४२ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मल्लिगल्पशानं कार्य- (उ) | १२०.१७ | महत्पापं समुत (पा) | ६६.६० |
| मयोर्मरणतोर्जुः (उ) | २०८.३० | मरीचैः कश्यपः पुत्रस्त (सु) | ४०.७५ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मशकान्सरीसृपान्दंशान् (स्व) | ३१.२८ | महत्पुण्यं च तत्रापि (पा) | ८७.१७ |
| मथ्यद्दामपितं यत्ते (क्रि) | १७.२६ | मरुकोदमनकश्चैव (उ) | ८४.२८ | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मस्तकेदश्यतेयस्य (क्रि) | ११.१३३ | महत्पुण्यं च तत्रापि (पा) | ८७.१७ |
| मरणं च स पापात्मा (भू) | १६.१५ | महतां प्रवरांमेनाहिमां (स्व) | ६.२० | महद्योलोकपालेभ्यो (सु) | २७.३३ | मस्तकेधारणं मुख्यं ब्रह्म (पा) | १०५.१३१ | महत्पुण्यं च तत्रापि (पा) | ८७.१७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३२४

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|-----------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| महत्यापीडयान(पा) | २०४.४३ | महाकालादिभिः(उ) | ११.५३ | महादेवगुणालाभिः(उ) | २०१.६५ | महानद्याः प्रसंगाच्च(भू) | ३०.१४ | महापातक संयुतः(त्र) | १३.४ |
| महत्यासेनसाडं(सु) | ४६.२५ | महाकालमहीचैव(सु) | ४५.१५५ | महादेवमस्तैस्तु(उ) | ८५.२२ | महानद्यामुपस्पृश्य(स्व) | ३८.४ | महापातकसंयुक्ताः(पां) | १६.३३ |
| महत्सौर्यं ददाम्येवं(भू) | १२.१०८ | महत्काष्ठस्थिनो-(स्व) | ३१.१२० | महादेवः पद्मपुरापाते-(सु) | ३४.१४६ | महानदेनसंयुक्ता(भू) | ७७.७३ | महापातकिनां चैव स्थानं(भू) | १५.३ |
| महदल्पमपिप्रायो-(पा) | ६४.१४८ | महागिरेः संहननो जंगम(सु) | ४०.२२ | महादेव प्रसादाच्च मीन-(भू) | ७७.६२ | महानविनयोजातो-(पा) | ३८.४७ | महापातकिनां श्रेष्ठो(क्रि) | १५.७० |
| महदादयो महामाता-(उ) | १२८.२३१ | महाचर्वरिको घोरः खड्ग(भू) | २४.८ | महादेव प्रसादेन गच्छेत(स्व) | २८.२५ | महानिरयकर्पाग्नि-(पा) | ६७.१०३ | महापातकिनो देवियेतेभ्यः(स्व) | ३३.३३ |
| महदादयो विशेष्वांता-(स्व) | २.२६ | महाजनपरीवार समुद्रं(पा) | १७.४० | महादेव प्रसादाच्च-(स्व) | १२.१२ | महांतः कृपाणां पातुयां(पा) | १७.६२ | महापातकिनो यत्र(उ) | ११४.२१ |
| महद्भाग्यं रघुपते(पा) | १६.४५ | महाजने प्रसुप्ते च(भू) | १०५.१७ | महादेववपुष्कंध(उ) | ७८.४१ | महांतमध्वं रक्तुं समारे(उ) | १८३.४ | महापापं विराजते-(पा) | ११४.४७४ |
| महद्युद्धं भवेदग्रहृत(पा) | ५०.११ | महाज्येष्ठयां च विप्रये(क्रि) | १८.३८ | महादेवः सोममूर्ति(उ) | १६७.६२ | महापंकमिभवेतिष्ठंती(सु) | १८.३७३ | महापापकराजम्येभवं(पा) | ३०.५१ |
| महद्विकथ्यतां धर्मो-(स्व) | २३.१३ | महातपा महातेजा(त्र) | ८.३ | महादेवाय भीमाय(सु) | ३८.१३६ | महापद्मं सुगंधाढ्यं(भू) | ८६.७८ | महापापं श्रमनं महापुण्य(उ) | ५२.३४ |
| महद्विभिः प्रेषितो हम्(उ) | २५५.८५ | महातलमधस्तस्मात्(क्रि) | २.१३ | महादेवेन तत्पीतं विषं(सु) | ४५.५५ | महापद्मस्तवांशः(सु) | ३१.१४ | महापापानि पापो(पा) | १०१.५० |
| महद्विभिः रजुनाताः(उ) | २३३.१६ | महातेज महाप्राज्ञं(भू) | ११५.५ | महादेवो चलः स्थाणुनं(सु) | ४३.१७८ | महापतिप्रतालोक एका(भू) | ५२.३६ | महापापात्प्रमुच्येत(उ) | ७१.२४ |
| महद्विभिः स्तूयमानस्त(उ) | २३७.२८ | महातेजस्विनं श्वेतं(पा) | ७१.२५ | महादेवो वचः श्रुत्वा(उ) | ६६.२५ | महापराशमे तत्ते(उ) | २४५.१२२ | महापापाद्विनि-(उ) | २४.५ |
| महद्वि वचनात्सोपि(भू) | २८.६६ | महातोयेन पुण्येन(भू) | १०१.२६ | महादोषं प्रिये दृष्टं(भू) | ४५.२६ | महापर्वणि संप्राप्ते(पा) | ६७.४४ | महापापाणि सर्वाणि(भू) | ३०.५ |
| महद्विर्णिगार्धदंगुलम्(स्व) | ४७.१५ | महात्मानो महाभागा(सु) | ६.३६ | महाद्रिंश्च वज्रोणय(उ) | २४१.७० | महापर्वणि संप्राप्ते तीर्थं(भू) | ४०.१४ | महापापोपपाप्यां(उ) | २३४.२८ |
| महर्षेण गृहीतोऽस्मि(उ) | ११८.२१८ | महात्मानो हि निष्कंपा-(सु) | ४३.२१३ | महाधिष्ठाधिनागस्तस्मात्(भू) | ८५.६३ | महापर्वणि संप्राप्ते भूमि(भू) | ४०.७ | महापापार्थं धृत्वा(उ) | १७.४६ |
| महर्षेः कथ्यतां धर्मो(उ) | १२८.१२६ | महात्स्यं च ततो वक्ष्ये(उ) | १.५५ | महानदी च भो विप्रास्त(स्व) | ८.३१ | महापातक तुल्यानि(भू) | ६७.६६ | महापापिडा विनिर्मुक्तो(पा) | २०.६२ |
| महर्षेः सूतसर्वजकलि(क्रि) | १.१० | महादानादिना निव्रतं(पा) | ६६.१०४ | महानदी जलं सर्वं(पा) | १०६.६५ | महापातकनाशार्थं(भू) | ६०.५२ | महापुण्यास्ततस्ते(पा) | ८७.१८ |
| महाकांनं महोत्साहं(भू) | ६८.४२ | महादेवं च सकल-(सु) | २२.१४० | महानदी नदाग्रण्य(उ) | ३.४१ | महापातकयुक्ता ये तेषां(उ) | ३८.१५० | महाप्रभावात्कथितं(उ) | २३५.१५ |
| महाकायो महाबाहू-(भू) | २८.५० | महादेवं तयोपास्य त्रयोदश(स्व) | १८.१४ | महापद्मसंस्त्रंतु(उ) | ४.३४ | महापातकयुक्तो वा युक्तो(उ) | १२८.२८१ | महाप्रलयविश्वेक(उ) | ७१.२४४ |
| महाकालत्वमगमस्सार्धं(सु) | ६.४६ | महादेवः कुले ते वै(भू) | ७८.३४ | महानदी समुच्चारं(उ) | ७०.१० | महापातकयुक्तो वा युक्तो(उ) | २५२.१०३ | महाप्रवाहलक्षिता(पा) | ६०.५५ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकोक्तुक्रमणी

३२५

| | | | | |
|-----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------------|---------------------------------------|
| महाप्रासादं तावन्वा-(सु) ३१.१२८ | महाभागवतानां (उ) २४२.२७६ | महामुने प्रभावोयं (पा) १४.२८ | महार्थाः सिद्धसर्वार्था (सु) ४३.३८ | महाव्रतास्तस्तेषु (पा) ६२.१५ |
| महाप्रसादणोत्रस्त्वामि-(सु) ३०.३५ | महाभागवतैश्चान्यै- (पा) ७१.७३ | महामोहनदिग्गानि (पा) ७१.४८ | महाहर्णिदुकूलानि (उ) २१३.१२ | महाशिवः शिवाहो (उ) ७१.१६७ |
| महाफलं त्वदाप्रोक्तं (घ) ६२.१ | महाभागोत्तिष्ठमजं (स्व) ४५.५ | महामोहः समुत्पन्नो (भू) १२०.६ | महालक्ष्मीं भगवतीं (उ) १८५.३६ | महाशोकाभिभूतस्यश्रुत् (सु) १४.४१५ |
| महाफलानियस्यवत्त्वा (सु) २०.११५ | महाभाग्यवशात्तेनप्राप्तं (पा) १८.२२ | महामोहेन संदिग्धो मोह (भू) ८.२० | महालक्ष्मीं महामायां (उ) १८६.१५ | महाशृंगैश्चमहिषैर्वृष्ट (भू) ७०.५ |
| महाबलं बलं चैव कुमुदं (पः) ६५.६२ | महाभागेन केनापिगता (पा) ७१.४६ | महोहेन संमुखः (पा) ८६.२७ | महालक्ष्मीरियं त्रिद्यासवं (भू) २६.७६ | महामिहरेयेदो (सु) ४२.६६ |
| महाबलपरीवार- (पा) १०.४६ | महाभागेन लभ्यते (भू) १२५.५१ | महामोहेन संमुखः (भू) १७.१६ | महालयं महापद्मे (उ) १३३.२३ | महासन्मिरिद्वैव (सु) ४५.१७२ |
| महाबलः सुतश्चास्य (पा) ५१.५६ | महाभारानिमिता (उ) ७१.२७४ | महामोहेन समुद्रामानवाः (भू) १२.३४ | महालये महापद्मा (सु) १७.२०२ | महासज्जालैरिवनेज (भू) ११५.२ |
| महाबलातिव्रलिनोनाम्ना (उ) १११.३० | मराभूतकरोषोघग्रह- (सु) ४०.१४३ | महामौजितकहारेण इन्द्र (भू) १६.१४ | महावटाग्रसंलग्न (पा) ११४.१८ | महिजिन्नामराजा (उ) ५५.२२ |
| महाबलामहाकाया (सु) ६.४८ | महामणियुतं दीप्तं (भू) १०४.१३ | महायज्ञ वराहाय (उ) ७८.४२ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिताग्नेमुकुदश्च श्री (सु) ३४.१३६ |
| महाबलामहासत्त्वाः (स्व) ७.८ | महाःमत्तैश्चमातंगैर्महियं (भू) ४३.१६ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिमानं तपोमयं (उ) ८०.१४४ |
| महाबलास्तत्रजनाविप्रा (स्व) ५.७ | महाःमत्तैश्चमातंगैर्महियं (भू) ४३.१६ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिमानमपरायाः (उ) ५०.११ |
| महाबलेनरुद्रेण विवृतो- (सु) ४६.८४ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिनानां पयोधमः (पा) ५८.७३ |
| महाबलोमहावीर्यः स (भू) ५.४८ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिलाभैरवहवि (पा) ८.८ |
| महाबलोमहावीर्यो (पा) ५७.४० | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिषाश्वत्थान्कलं प्रचंडं (सु) १३.४०६ |
| महाबाहु महाकायं यथैव (भू) २७.२ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिषासनमाहोदध (उ) १२२.१०० |
| महाभागं व्रतं परं (पा) ८४.६ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिषाः सूकरा दुष्टा (पा) ५६.७ |
| महाभागवतश्रेष्ठो (घ) २४५.२३० | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महीपीणां तथा श्वानां (पा) ८६.४३ |
| महाभागवतश्रेष्ठो (उ) २४३.२२ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिषीणां तथा श्वानां (भू) १७.३२ |
| महाभागवतश्रेष्ठो (उ) २४३.२६ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिषीकालपुरुषं (उ) १८२.१० |
| महाभागवतः श्रेष्ठो (उ) २४५.४ | महामंत्रप्रभावेण (ब्र) ६.७ | महायोगिद्वन्द्वभोजे- (पा) ११४.१८७ | महावनं तत्रगीतं (पा) ६६.५२ | महिषेणकृतापूर्वं (उ) ११३.४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३२६

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| महिष्माकेनदोषे (उ) | २०२.१५ | महेष्मभवनं नित्यं (पा) | ११०.७१ | महोषधिगणवद्वयं (सु) | ४३.३३ | माघद्वितीयादिदिनैः (पा) | ३६.४७ | माघस्नानेनभोविप्र-(उ) | १२८.१४४ |
| महोत्वयाऽऽधारशक्त (पा) | १३.२५ | महेष्मरुद्रकुरुषु (पा) | ११४.२७४ | महोषधीचारणा च (सु) | ११.२५ | माघमासस्यदशमी (सु) | २३.२२ | माघस्नाने न राजेन्द्र (घ) | १२६.७६ |
| महोददातियस्त-(उ) | २७.५१ | महेस्तस्यकस्त्यसिदि-(पा) | १०५.१७१ | मह्यं चैवपुराप्रोक्ता (उ) | ३४.१० | माघमासीयवातोपि-(उ) | १२८.१६४ | माघस्नाने विप्रन्नाश-(उ) | १२५.१५२ |
| महोविजयेतराजा (स्व) | ३६.६६ | महेशादिपुसर्वेषु (पा) | ११४.२२१ | मह्यं दशयत्तरामं यज्ञ-(पा) | २६.३ | माघमासे कुरुस्नानं (उ) | १२५.१४४ | मद्यस्यकृष्णपक्षे (उ) | ४२.२ |
| महोन्नरानागणाति-(सु) | ४५.१४५ | महेशान्मुमन्त्रिलब्ध्वा (पा) | ११४.१३१ | मां कालंतवसंजित्य (पा) | ६०.२१ | माघमासे तिलान्यस्तु-(सु) | ३२.६६ | माघस्यशुक्ल सप्तमी-(उ) | १४१.११ |
| महोपतिमुत्तोनत्वातं (उ) | १८६.४६ | महेशीचरणं द्वंद्वेभक्ति (पा) | १३.३३ | मांचसांत्वयितुं प्राप्तो (पा) | १०६.१४ | माघमासे तु संप्राप्ते (स्व) | १८.७८ | माघस्यामतपक्षे तु (म) | २१.२६१ |
| महोपसांहिमाहात्म्य (उ) | ७१.३२० | महेश्वरकृतांभक्ति (उ) | १.५४ | मां दृष्ट्वा गीतमोदेव (पा) | ७५.२१ | माघमासे धर्मशास्त्रे (उ) | १५४.५५ | माघस्यैकादशीशुक्ला (उ) | १२५.१४७ |
| महालीकातुसंप्राप्तः (भू) | ६४.२१ | महेश्वरेणकथितं (पा) | ११३.२३ | मां दृष्ट्वा चित्रगुप्तेन (क्रि) | ६.२५ | माघमासे प्रयोगे तु (क्रि) | ४.१४ | माघासितचतुर्दश्यां (पा) | ६३.२० |
| महर्तपंचकं जैल-(उ) | १३५.७६ | महेश्वरोऽव भूत्वा (स्व) | ४८.६ | मां दृष्ट्वा ताः सगयातीम-(पा) | ७५.३२ | माघमासे सृत्यापः (उ) | १२६.२६ | माघे कृष्णतिलांस्तद्वत्यं (सु) | २६.३८ |
| महेन्द्रं च तथा पुण्या (सु) | ११.३४ | महोन्नतपसामां (उ) | २४२.२१ | मां परित्यज्यत्कामात् (सु) | १७.१३५ | माघमासे विहायैव प्रातः (उ) | १२५.४८ | माघे चंपक पुष्पे (क्रि) | १०.३२ |
| महेन्द्रदर्पनाशापयो-(पा) | ७३.२२ | महोत्सवंकारयित्वा (उ) | २३.१३ | मां पुत्रकामः प्रथमं-(सु) | ३६.११४ | माघमासे सितेपक्षे (उ) | १५४.१७ | माघे नृपोदानं जप (उ) | १२८.७ |
| महेन्द्र वचनं श्रुत्वा (उ) | ५.२५ | महोत्सवो महातेजा (क्रि) | १७.१११ | मां पूजयिष्यतः (उ) | २०१.६६ | माघमासे शुक्लद्वितीयाया-(पा) | ३६.६८ | माघे निश्चार्द्रावाः (सु) | २०.१२५ |
| महेन्द्र व पुषः सर्वे (सु) | ४५.७६ | महोत्साहामहात्मानो (स्व) | ७.१० | मां वैभुविनिर्नित्यं-(पा) | ३४.३० | माघमासे नदहेत्यापं (उ) | १२६.३४ | माघे न्नदाताऽमुत्रापः (उ) | १२८.८ |
| महेन्द्र शिखरं चान्ये (उ) | ५.३६ | महोदयं समासाद्यगंगा (सु) | ३३.१८७ | मां हत्वा त्वं महाराजन् (भू) | २८.११६ | माघमासे तु यः कुर्याद-(उ) | १२५.४८ | माघे मासि कृतं कर्म (क्रि) | १०.३१ |
| महेन्द्रस्यापचारं सर्वं (उ) | २३१.२३ | महोदये महायज्ञः (सु) | ३४.१५२ | मां कृपाः दारुणं दुःखं (भू) | १०६.४० | माघस्नानं तु यः कुर्याद-(उ) | १२५.८४ | माघे मासिगमिष्यति (स्व) | ४४.८ |
| महेन्द्रायददोप्रीत्या (उ) | २४०.५७ | महोदरं महानाभि (पा) | ३५.६७ | मां दृष्ट्वा त्वं वृथावाले (उ) | १६४.२ | माघस्नानं तु यः कुर्याद-(उ) | १२५.८४ | माघे मासिसमायाते (क्रि) | १०.४ |
| महेन्द्रावायमोवा (उ) | २४१.५१ | महोदरातिकायोचमुग्रीवे (सु) | ३८.६८ | माघमास्यनृपस्या-(उ) | २४२.३७ | माघमासे च शुक्लयां (क्रि) | १०.२२ | माघे मास्य चैत्रे (सु) | २०.१०४ |
| महेन्द्रेणामृतस्पर्शं (सु) | ४१.४० | महोपसंगं रोगार्थं युक्तो (उ) | २५२.१०७ | मां गर्जं दुष्टरामस्तु-(पा) | ३४.११ | माघस्नानमयं राज (उ) | १२५.८६ | माघे न्नात्मा तु योगे तु (उ) | १२५.७६ |
| महेशनाममाहात्म्यं (पा) | १११.१ | महोपायं पुनः कर्तुं (त्र) | १३.४१ | माघं कातिकयोर्नित्यं (उ) | १०८.२६ | माघस्नानस्यमाहात्म्यं (उ) | ११६.१ | माघे न्नात्मा प्रयोगे (क्रि) | ४.६ |
| महेशपादप्रणतदेवा-(पा) | १०६.११० | महोपघायघोराय (भू) | ३२.४२ | | | | | | |

३२७

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|----------------------------|--------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| माधेजर्जितयज्ञेभ्यो (उ) | १२५.१५३ | मातरं पितरं भ्रातृन्-(सु) | ३२.४८ | मातस्त्वं पूर्णं शीता-(उ) | १८६.२३ | मातुः पुण्यं पयः पीत्वा (भू) | ४२.७२ | मातृसेवासमुद्युक्तो (पा) | ६३.५६ |
| माधोज्यो ब्रतं (उ) | १०८.२६ | मातरं पितरं वृद्धो (भू) | ८४.१२ | मातस्त्वत्सलित-(क्रि) | ७.११७ | मातुरथ महाभागा (भू) | ८५.३७ | मातृस्तनयं पुनर्नव-(स्व) | ३१.१४२ |
| मांगल्यं पृथग्भाष्यं-(उ) | ७१.३०२ | मातरं पितरं पुत्र (स्व) | ३१.८६ | मातातद्द्वान्तोक्तं (पा) | ४.३० | मातुराहारवीर्येण (भू) | ६६.३८ | माते बुद्धिर्भवेदेवं (सु) | १८.३३५ |
| माचिता कुरु देवर्षे (उ) | १६४.४६ | मातरं पृच्छत कृत्वा (भू) | ४५.१७ | मातात्व मित्येवमया (पा) | ११२.७७ | मातुर्वचनमाकर्ण्यत-(पा) | ११२.६३ | मात्मानं परिनिदे (मृ) | ५.५७ |
| माजानीहिनरं रामं (पा) | ५५.५५ | मातरं प्रत्युवाचा-(पा) | ५५.७१ | मातापितराव कर्ण्यं (भू) | ११७.२० | मातुर्लक्ष्म्यपत्राणि (पा) | ११७.१०६ | मात्रा च कृपया गजन् (भू) | ८५.४२ |
| माजानीहि मनुष्यं (पा) | ४६.३२ | मातरं भ्रातरं षट्पदा (सु) | ७८.३३८ | मातापितां सुतो जाया-(स्व) | ३१.५ | मातुः समर्थं तस्यास्तु (भू) | ५१.६ | मात्रानुमोदितो-(पा) | ८३.२६ |
| माणिक्य न पुरो वेत-(उ) | २२६.१०४ | मातरं मे महाभागे (भू) | ४७.२१ | माता पित्रो गुरुणां (ब्र) | ४.१५ | मातृघाते महादोषः (भू) | ८०.१० | मात्राभ्यंगशिरोभ्यं (उ) | १२३.२२ |
| माणिक्य मुकुटं दिव्य (उ) | १८५.६८ | मातरं यदि वागच्छन् (ब्र) | १८.६ | मता पित्रोः पदांते (भू) | ६२.३ | मातुचक्रं प्रमथ्यो (उ) | ७१.१८५ | मात्रासहस्रं लैस्तु (भू) | १०८.१२ |
| माणिक्य स्वर्णं पूजा (उ) | १०८.१४ | मातरं वीर्यं हृदिनां (पा) | ४.२६ | माता पित्रोश्च यो (भू) | ६७.७ | मातृतीर्थं हृदोपदेश (भू) | ८५.२ | मात्स्यं कोर्मन्था (उ) | २३६.१८ |
| माणिक्यस्वरनामा-(उ) | १८०.८२ | मातर्जातिक्रियेपुत्रो-(पा) | ६३.४ | मातापित्रोश्च भर्तृश्च (भू) | ४७.३५ | मातृदोषं सर्वदेव (भू) | ६३.१५ | मातुरे विषयेभ्यो-(भू) | ५८.१ |
| मातः कथयसत्यं (उ) | २०६.५० | मातर्जाकिरामेण-(पा) | ५८.५३ | मातापित्रोश्च शुश्रूषां (भू) | ६६.२४ | मातृदोषं प्रकाशेत (भू) | ४३.६६ | मातुरेवैकटाद्रीच (उ) | २५३.१६ |
| मातः कश्चन भूपालो (पा) | ६४.५६ | मातर्जाकिहितं मुक्तं (पा) | ६३.३३ | मातापित्रोश्च शुभु (उ) | ८०.२० | मातुर्नंदासुनंदा च (मृ) | ४६.८१ | माद्रीयुधाजितं पुत्रततो (सु) | १३.७१ |
| मातः क्षमस्वत्सवं (सु) | १८.३८० | मातर्मयात्वच्चरणी-(पा) | ४.३४ | मातापित्रोश्चस्तयो-(भू) | ३६.५५ | मातृपाद प्रसादेन (पा) | ६०.१६ | माधवं दशं यामास (क्रि) | ५.१२७ |
| मातः क्षमस्वयदंभमया (पा) | २.३८ | मातले किल्बिषाच्चैव (भू) | ७२.११ | मातापित्रोर्हिते युक्तो (स्व) | ५४.२२ | मातृभ्रातृ जनैः साद्वै (उ) | १२२.४६ | माधवं माधवेमाति-(पा) | ६८.३ |
| मातयाः पार्वती भूमि-(उ) | १३२.१२ | मातले मम कायेपि (भू) | ७२.१५ | माता पुत्रं परिष्वज्य-(पा) | १२.२६ | मातृभ्रातृपितृस्व-(सु) | ६.५० | माधवः परयाभक्त्या (उ) | २२२.५५ |
| मातरं जगतां धात्री (उ) | २३८.१२४ | मातलेश्च वचः श्रुत्वा (भू) | ७२.१ | मातामहं समासाद्य (उ) | २४५.३६० | मातृवत्स्पर्शदारायन्मयते (स्व) | ३१.८४ | माधवश्चक्रं शंख-(पा) | ७८.१८ |
| मातरं प्रपते पुण्यं (भू) | १४.२६ | मातः शृणुमोत्साहा-(पा) | ६.४० | मातामहस्यको दोषस्तं (भू) | ३०.३६ | मातृवत्स्वसृज्यच्चैव (सु) | १६.२२२ | माधवपुत्रेण विष्णवे (क्रि) | ११.६६ |
| मातरं पितरं चैव (उ) | ८०.२२ | मातः समस्तं सुखदे (क्रि) | ७.१०० | मातामहानामध्येवं (सु) | ११.६६ | मातृवायसादनं प्राणा-(पा) | ६६.१६६ | माधवस्तानमाहात्म्य (पा) | ६२.१२२ |
| मातरं पितरं पुत्रं (उ) | ८०.२२ | मातस्त्वत्कलाविभेदत-(पा) | १३.२४ | माता यदि विषं दद्यात् (ब्र) | १२.३२ | मातृवत्स्वमातुलानि (स्व) | ३५.३५ | माधवस्य पुनः स्तोत्रं (पा) | ६३.१० |
| मातरं पितरं त्यक्त्वायः (भू) | ४२.७१ | मातस्त्वत्तैवपास्या-(उ) | २०३.५० | मातासर्वस्य जगतः (उ) | २४२.३३३ | मातृवत्पुण्यं च (सु) | ३१.२६ | माधवस्य सुतास्ते (क्रि) | ६.१५३ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३२८

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| माधवाख्यस्त-(उ) | २४.१० | मानवा मर्त्यलोके च (सु) | ६७.२ | मानुर्वैः पिडावान्तु (सु) | १४.२०५ | मांसमेदोऽसृक् (उ) | १८.१२७ | मामारयदुष्कृत्यात्वं (पा) | ११२.१११ |
| माधवादिषुमासेषु (उ) | १२६.११४ | मानवाये मदादानं (ब्र) | २४.५२ | मानुषो पिसरीसृष्ट्यां (सु) | ४३.१४७ | मांसशुक्रमलमूत्र (उ) | १२८.५२ | मामारोप्य च (उ) | २०४.८२ |
| माधवायगोविदाय (उ) | ८३.१६ | मानवीं वृषभंशाम् (स्व) | ६.२७ | मानुष्यं दुर्लभंप्राप्य (उ) | १२१.३२ | मांसानिबुभुस्ता-(पा) | ४२.५२ | मामासाद्याद्यभर्ता-(उ) | १४.७१ |
| माधवीपुष्पनियसि-(उ) | १८४.२३ | मानश्च कुतः कांत (उ) | ६०.१४ | ममनुष्ठासत्यव्रतया (उ) | ४२.४६ | मांसास्थिरवतः निकरेस्व-(उ) | १६६.८४ | मामुच्चैस्ताउवाच (उ) | १८३.१६ |
| माध्वीमितलोकोय-(सु) | ३.४० | मानसं नामतर्तीयम् (स्व) | ४४.२ | मांचदेविसुराः प्राहः (सु) | १८.१६७ | मांसाहारी प्राणिहितार(उ) | २००.१०६ | मामुद्दिश्यकृतापूजा-(पा) | १०८.१८ |
| माधवेमासि कुर्वीत-(पा) | ६५.५७ | मानसायेति वैमौलि-(सु) | २३.११४ | मांमयोव्यभिचारेण (उ) | २२३.३३ | मांसं च बहुपापं स्यात् (ब्र) | २१.१८ | मामुद्दिश्यनरो भवन्ता (भू) | ३६.७७ |
| माधवेमासि जाह्नव्याः (उ) | ४६.३० | मानसाश्च महाभागा-(स्व) | ८.३६ | मांचोवाचसधर्मा (उ) | २०४.१४ | मापयाभिपदेनाद्य (उ) | २४०.२६ | मामुद्दिश्य महाप्राज्ञो (भू) | ४३.२४ |
| माधवेमासिमांभक्त्या (पा) | ६६.१२ | मानसेकुमुदानामविश्व-(सु) | १७.१८५ | मांजानोहिपुरः प्राप्तं (पा) | २३.४८ | मा पुत्र साहसं काशी (भू) | १२२.२५ | मामुद्दिश्ययाप्राणान् (क्रि) | ५.१६१ |
| माधवेमासियैः स्नातं (पा) | ८६.१८ | मानसेसरसिस्थित्वा-(पा) | ७१.१०१ | मांडवी श्रुत कीर्ति (उ) | २४२.१५२ | माप्रयाहिरण्यकृत्वे (पा) | ५१.३४ | मामुद्दिश्ययाप्राणान् (क्रि) | ५.१६१ |
| माधवे मासियस्नातं (पा) | १०२.११ | मानसे भूमिपालस्य (उ) | १६०.२१ | मांडव्ये मांडवी देव-(सु) | १७.२०० | माब्रूहिकमंणोवातां(पा) | ४६.५० | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| माधवेमासिर्संभूता (पा) | ६६.१४ | मानसोत्तरमागत्य-(उ) | १६.२३ | मांडव्योहृमृषिषेष्ठः (उ) | १४१.२६ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| माधवे मासिरेवायां (पा) | ६४.१५ | मानापमानेसदृशस्तस्य (क्रि) | १६.६० | मांतस्याजभवान्यद्वै-(पा) | ५६.२८ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| माधवे मासिर्प्राप्ते (पा) | ६५.४८ | मानुषः पौर्विकोऽदेहस्त-(सु) | ३६.१२६ | मांतुव्यापादयामासु (उ) | १६७.४१ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| माधवे मेखेभानो- (पा) | ६५.१० | मानुषस्यतुपूर्वैकशोभा-(स्व) | २६.६४ | मांवाता नाम राजवि (उ) | ५७.७ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| माधवोनिर्दंष्ट्रमासो-(पा) | ६७.१०६ | मानुषान् विलान् (पा) | ११२.११४ | मान्यमानपिताशुद्धः (सु) | ३०.६३ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| मानं वीर्यं धैर्यं (भू) | ५४.७ | मानुषीं मृत्यु संयुक्ता (पा) | ११६.२७३ | मान्यस्थानानिपत्राहः (स्व) | ५१.५३ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| मानभंगो मयादष्टो (भू) | ८२.१० | मानुषेणैव भावे-(उ) | २४५.४३ | मांसत्वं मांस मात्रेण (भू) | ६६.३१ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| मानलाभश्चभविता-(सु) | १८.१७२ | मानुषेदुर्लभलोके (उ) | १२०.४७ | मांसपिबोपमोजातो (भू) | ४७ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| मानवानां महा राज (भू) | ६७.५८ | मानुषेदेव खाते च (उ) | ६३.२ | मांसपिबोपमोजातो (भू) | ४७ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |
| मानवाः मरणं याप्ति (भू) | ७२.१६ | मानुषेषुसद्यश्मत्मा-(सु) | १५.२१६ | मांसमूत्र पुरीषास्थि-(क्रि) | ५.४८ | मार्गैस्तपुनदीनमादद्यात् (सु) | १८.७७४ | मामुद्दिश्यदीनमीवद्या-(उ) | २१७.५ |

मामेवं हि भजन्तेषां (भू) ७७.८२
मामेव कर्मणा विप्रा- (भू) ३८.२०
मामेव मज चावंगि भुङ्क्व (भू) १०६.६
मामेव मुच्चरेद्योवैतीय- (भू) ३६.६४
मामेव हि न जानासि (भू) ५१.२
मायया तास्य देवस्य (सृ) १७.६८
मायया दशिता नारी (भू) १.३०
मायया दिव्यरूपा सा (भू) ३६.६
मायया पाणिना स्पृष्टवा (पा) ७४.१६६
मायया ब्राह्मणं रूपं (सृ) ३०.१५५
मायया मोहं विभ्रंश- (उ) १२८.२३७
मायया मोहितयेन (क्रि) १७.१४८
मायया लोभयित्वा तु विष्णु (सृ) ४.७३
मायया सुन्दरीरूपा (त्र) १३.२४
मायाकारः कारणं त्वं (सृ) ४३.१२
मायाकर्मव्रतं त्वं (पा) ६४.४६
माया कृत्वा जगन्नाथः (त्र) १३.४०
माया कृत्वा महाप्राज्ञो (भू) ४.६
मायागत्वा सुरैः सार्द्धं (सृ) ३६.१०६
मायागुणैर्यतोर्मेशा- (पा) ८२.७१

मायाजनिरमायो- (पा) ८५.३६
मायातु सुमटा योद्धुं गच्छं (पा) २४.३
मायाचराय सूतयित्व (भू) ३२.३६
मायांतु वीराः समरे- (पा) ४४.६७
मायापाशैर्विमुक्तास्तु- (सृ) ४१.६३
माया पुत्रेषु मित्रेषु (भू) ६७.४६
मायापुण्यां विनिताश्चः (सृ) ३४.३५७
मायामयमिदं देवि- (उ) १७५.१६
मायानरो सारप्रणी (क्रि) ६.६१
माया मृडानीस्वर- (उ) १८.२२
मायामोहेन ते देव्याः (सृ) १३.३५२
मायामोहेन संमुख (त्र) ३६.२४
मायामोहेन संसृढा (पा) ८८.३१
मायामोहनिरासश्च (उ) १६.७
मायामोक्षभासाय- (सृ) ४१.६८
मायावामथनष्टायां (सृ) ३१.६३
मायायुद्धं देवेश (उ) १४.१६
मायावती पुरा जाता (भू) १०३.३५
मायावधे प्रवृत्ते तु- (सृ) ४१.१५८
मायावादमसच्छास्त्रं (उ) २३६.७
मायाविनामरीचेन (उ) २४२.२५४

माया विमोहिता सर्वे (उ) ७१.८
मायाविशालवितपंतोय- (सृ) ४०.१३६
मायुद्धं कुस्तक्षिप्रमनय- (वा) २८.५८
मायेति चोपनिषदकथं देव- (सृ) ४६.५५
मायोपायेन योगेन (भू) १०६.१६
मारयावां विनावा रि (क्रि) २.५६
मारयित्वा न तोद्गतां- (पा) १०६.१०५
मारीचमेकवाणेन (पा) ११६.२६६
मारुतं पंचदशकं सोम्यं (सृ) ४६.१६७
मारुतः प्रकृतिस्त्वो- (उ) १३२.६२
मारुतश्च सुखस्पर्शा- (सृ) ३४३.६६
मारुतां दोलिता नेक- (उ) १७६.१२
मारुताश्च सुख स्पर्शा (उ) ८०.१२८
मारुतिब्रह्मिन्स्त्र- (पा) ५२.३३
मारुते न समं लोके तव (सृ) २२.१८
मारुतो ना विशाख- (पा) ६२.१६
मारोद्विचभद्रं तेनैव (भू) ६.२४
मारोदिपिमातरि हवीरा- (पा) ६३.३५
मार्कण्डेयं महात्मानं (क्रि) १७.४१
मार्कण्डेयः कथ्यसुतः (सृ) ३३.२

मार्कण्डेययच्छक्षम् (स्व) ६२.४
मार्कण्डेयमिति प्रोक्तं (पा) ११५.६१
मार्कण्डेयवचः श्रुत्वा (सृ) ३३.३२
मार्कण्डेयेन कथितं- (स्व) ४०.१५
मार्कण्डेयेन वै रामः (सृ) ३३.१
मार्कण्डेयोपदेशेन व्रतं (उ) ५२.३१
मार्कण्डेयो मुनिवरो (उ) ५२.२१
मार्गं पालिन भस्तुभ्यं (उ) १२२.४३
मार्गं गालीप्रवर्ज्नीया (उ) १२२.४०
मार्गमाणाः परं यत्नं- (सृ) १६.११५
मार्गवेशं ततो गच्छेद्- (स्व) १६.१
मार्गशीर्षादिकान्मासा- (पा) ८६.२
मार्गशीर्षादिमासाभ्यां (सृ) २५.३५
मार्गशीर्षादिमासे (उ) ६६.२८
मार्गशीर्षेयवामावे- (पा) १०५.७३
मार्गशीर्षेऽपि श्रेष्ठ (क्रि) १४.१
मार्गशीर्षे प्रयत्नेन (उ) ८७.२२
मार्गशीर्षे विशेषेण (उ) ८७.२३
मार्गशीर्षे सिते पक्षे (उ) ३६.३
मार्गशीर्षे सिते पक्षे (उ) ३६.३६

मार्गं शीर्षे सिते पक्षे (पा) ८०.३६
मार्गशीर्षे पक्षे मासानां (पा) ६६.६
मार्गमितं प्रतिपदः (पा) ३६.३३
मार्गं च गच्छ मानास्तु (उ) ७२.१६
मार्गं च चायमांसेन (सृ) ३३.८०
मार्गं एवाथ सा मायाता (सृ) ३३.१२
मार्गं तीर्थान्यनेकानि- (पा) २०.३
मार्गं निवासान् सप्ता (उ) १७७.१३
मार्गं शिवास्तान् शृण्वन् (उ) ४१.३१
मार्गमिदीयं तादेव तम (पा) १०५.२०७
मार्जनीं शिखिपत्राणां (भू) ३७.६
मार्जयंति हरेः स्थानम् (त्र) १.२६
मार्जारश्च वागस्त- (उ) ३०.७४
मार्जारोपि च तारात्र- (उ) ३०.७८
मार्जं डमडलस्यायदया- (उ) १७४.८४
मालतीपुष्पं माहात्म्यं (उ) ११७.१०
मालतीमोगरंश्चैव (उ) १२८.१७८
मालतीयमियं द्यूथीवासं (पा) ७४.१२६
मालवाश्चोपवास्याश्च- (स्व) ६.४०
मालामुखायुत- (उ) ३५.२४



श्रीपद्ममहापुष्पाण्यः दशकानुक्रमणी

३३०

| | | | | | | | | | |
|--------------------------|---------|-----------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| मालाकार गृहं प्राप्य (उ) | २४५.३३६ | मासमेकपुमान्वीर (सु) | ८.११८ | मासोदनतिलोभि- (उ) | ३३.४४ | मित्रवञ्चयतेयस्तुधन- (वा) | ३०.४७ | मिथ्याज्ञात्वाततः सर्वं (उ) | ७१.११ |
| माला कुंडलकैयूर- (स्व) | १४.२१ | मासमेकं गुब्बं कृत्वा (पा) | ११६.२० | मास्तुविप्रत्वमर्च- (पा) | ११४.४२० | मित्रद्रोहातया (भू) | ६०.४३ | मिथ्याप्रवदते वाचम (भू) | ६७.७६ |
| मालाधरोनाम सुतो (ब्र) | ११.५७ | मासत्रतश्चयस्तुष्यं (उ) | ३०.४३ | माहात्म्यं कथितं (ब्र) | २२.४२ | मित्रभावं विचित्यंत्वं (स्व) | ३१.२१ | मिथ्यायां शपथेविप्र (ब्र) | २६.८ |
| मालायुग्मवहेद्यस्तु (उ) | १२१.८ | मासानाहितया- (उ) | २४.१६ | माहात्म्यं कीदृशं (उ) | ८१.२ | मित्रवञ्चयतेयस्तुधन- (पा) | ३०.४१ | मिलितस्तत्स्यधर्मात्मा (उ) | २१८.१८ |
| मालारविदात्रधरा (उ) | २२५.५६ | मासाः श्रेष्ठाः कथा- (उ) | १६८.४ | माहात्म्यं च जयंत्याये (ब्र) | ४.५२ | मित्रविदानुजाववती (उ) | २४६.४२ | गिलित्वानागराः सर्व- (उ) | २१६.६१ |
| मालिनीति च नाम्ना- (उ) | ४३.१३ | मासाः सप्ताभवंस्तस्य (पा) | ४६.१ | माहात्म्यं ब्रूहि सर्वत्र (ब्र) | २२.१ | मित्रविदानु विदामुने (पा) | ७०.३३ | मिश्रकेशीचरंभाव चित्र- (सु) | ४५.७० |
| माल्यवानथवाणी (उ) | १७.४५ | मासास्तुकिचित्- (उ) | २०४.५४ | माहात्म्यं भूमि देवानां (क्रि) | २१.८ | मित्रावज्ञामनुष्णालां (क्रि) | ३.८० | मिश्रपूजाविफलदाशंकरे (पा) | १०८.७७ |
| माल्यवानपुष्पदंत (उ) | १२.६० | मासिभाद्र पदे राजन् (उ) | ५६.१४ | माहात्म्यं मध्यमस्यापि (सु) | २०.२ | मित्रावरुणयोर्लोकान् (स्व) | ३८.५३ | मिष्टं मिष्टं सगदनाति (भू) | १२.४ |
| माल्यवान्समरंत्य (उ) | १२.२८ | मासिभाद्रपदे विप्रन- (क्रि) | १३.४६ | माहात्म्यं विजयायाश्च (उ) | ४५.१ | मित्राश्चवांधवाः पुत्राः (भू) | ११.२८ | मिष्टं मिष्टं समदनाति (पा) | ८८.४ |
| मावजानीहिता (उ) | २०४.३२ | मासिभाद्रपदे शुक्ले (उ) | ६६.२ | माहात्म्यं सर्वं पापघ्नं (उ) | २१४.१११ | मित्राश्चवांधवाः पुत्राः (पा) | ८७.६६ | मिष्टैः पाय संयुक्तं (ब्र) | ११.३५ |
| मावधिष्ठसुरान् (सु) | ४२.१०६ | मासिभाद्रपदे शुक्ले (उ) | २४६.३७ | माहात्म्यं ऐतिहासं (उ) | १७५.२६ | मित्रेणाहं वृत्तापूर्वं (सु) | २२.३१ | मीढुपाजिज्ञेयैः पूरा- (गु) | १३.१०८ |
| माविपादमहाधीर (पा) | ८.१७ | मासिमेपस्थितेभाना- (पा) | ६४.११४ | माहात्म्यमस्यतीर्थं (उ) | २११.४७ | मिथः पारंगीसमालब्धं (पा) | ८३.५५ | मीननक्रभगोभिना (सु) | १८.२५१ |
| मावेन साहसं कार्षीः (भू) | ३८.१६ | मासेतुत्रैमाधव- (पा) | ६४.५८ | माहात्म्यमेतदंगं (क्रि) | १०.१ | मिथिलायांपुरामदिच- (पा) | १०६.३ | मीननस्वर्गमान (उ) | ४१.३७ |
| मासुचस्त्वं महाभागे (भू) | ५.२६ | मासे भाद्र पदे चैव (उ) | ७७.४३ | माहात्म्यश्रवणादस्य (उ) | २१६.५२ | मिथिलायां महापुर्वा- (पा) | ५७.३ | मीमांसाहेतु थाक्यजः (सु) | १८.४६ |
| मावतंजन्मुने श्रेष्ठ (उ) | ६५.१० | मासेभाद्र पदे शुक्ले (उ) | ७७.४८ | माहेस्वरपदे स्नात्वा (स्व) | ३८.३७ | मिथुनं जायते काले- (स्व) | ४.६ | मीलितश्चलिनोगेहं (उ) | २०७.६२ |
| माषामुद्गमसूरा- (सु) | ३.१४६ | मासे मासे यथा श्राद्धे- (उ) | १०५.८५ | माहेस्वराराण्यमरिणां (पा) | ११०.५३ | मिथुनस्ये सहस्रांशो (उ) | ६४.१० | मुकुटां करवाणी (पा) | ६३.४१ |
| मासप्रतिक्रिमुक्तं च (उ) | ८३.३ | मासेश्वरं ततो गच्छेत् (स्व) | १८.८१ | माहेस्वरी तथा ब्राह्मी (सु) | ४६.७८ | मिथुनानिचजायते- (स्व) | ४.८ | मुकुन्दः स्वगतोमाता (उ) | २०६.४४ |
| मासं रक्तमूलमूत्र- (स्व) | २२.४३ | मासेषु पुण्य कालेषु (पा) | ६७.४५ | माहेस्वरपदे स्नात्वा (स्व) | ३८.३७ | मिथुनानिवृत्तिविशदं (सु) | २२.६७ | मुकुटमणि संयुक्तां (उ) | ८२.२३ |
| मासत्रयं निराहारस्त (उ) | १२५.१३८ | मासे कविधिनाचैव (उ) | ७५.१८ | माहेस्वरपदे स्नात्वा (स्व) | ३८.३७ | मिथ्याक्रोधं नयारोक्ष्यं (उ) | ६४.१०३ | मुकुटोदभूमिपते (पा) | ६४.६३ |
| मासमेकं निराहार- (उ) | १२५.१४६ | मासोपवातनिरता (उ) | ४२.२४ | माहेस्वरपदे स्नात्वा (स्व) | ३८.३७ | मिथ्यागुणैरवाप्तानं (भू) | ६७.५४ | मुकुटदंतं पंक्तौतु (उ) | ७८.२१ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| मुकुन्दं सु वैकुण्ठमेकरूपं (भू) | ८७.१६ | मुक्तिं च प्रतिदद्यते (उ) | १८०.५० | मुखदंतपदानां सः (उ) | २०१.८ | मुखेन चाननप्रसवः (उ) | २३८.६५ | मुच्यते सर्वदुःखेभ्यः (भू) | १२५.४७ |
| मुकुंशरव्याहिमे सत्यं (उ) | २१०.२१ | मुक्तिं चेदिच्छसे विप्रती- (उ) | २१२.६ | मुखदुर्गन्धहरणः (क्रि) | २२.१२३ | मुखे भाले हनस्तेन (भू) | ११५.२० | मुच्यते सर्वपापेभ्यः (स्व) | ४५.१४ |
| मुकुलैर्नर्चयेद्देवं (पा) | १०६.६१ | मुक्तिं चैव जपेत्कर्णं (स्व) | ३६.६५ | मुखपक्षस्थितायोघास्ता- (पा) | २६.१६ | मुखेशिरसिदेहे (उ) | ११८.५७ | मुच्यते सर्व पापेभ्यः (स्व) | ४५.१५ |
| मुक्तंदनुजराजस्य (उ) | २५०.४४ | मुक्तिं प्रयाति मनुजाः (स्व) | २६.४६ | मुखपंकजमालोक्यं (उ) | ३०.१०० | मुखे सुकेतुस्तस्यासी- (पा) | २५.३३ | मुच्यते सर्व पापेभ्यः (स्व) | ४५.३५ |
| मुक्त्वं पुनस्तेन (पा) | ६०.३४ | मुक्तिं प्रयाति मनुजाः (स्व) | ३१.१३६ | मुख प्रक्षालनं कुर्याद् (उ) | ५८.२३ | मुख्यं चैगुदिपिण्याकं (सृ) | ३३.७६ | मुच्यते सर्व पापेभ्यः (उ) | १६८.१४ |
| मुक्त्वं केशाभ्रमगात्रां (उ) | १८७.५६ | मुक्तिं प्रयाति मनुजाः (उ) | १२०.३० | मुख बाहुरूपादाः (उ) | २२६.८२ | मुख्य श्रोताततः पश्चात् (उ) | १६८.१७ | मुच्यते सर्व पापेभ्यो (स्व) | ३५.२ |
| मुक्तकेशीकरालास्या (उ) | १४.३७ | मुक्तिं दंतोर्थमेतत्तु- (उ) | १०५.३६ | मुखमंडलिकान् क्रूरान् (क्रि) | ७८.५७ | मुखभावेदिगायत्या (उ) | १२५.१२५ | मुच्यते सर्व पापेभ्यो (पा) | ८४.१०६ |
| मुक्त दुःखश्च प्रतिः (उ) | १२६.७० | मुक्तिदंतोर्थमेतत्तु- (उ) | २२२.८१ | मुखवाचं च विप्रेन्द्र (क्रि) | १४.३७ | मुखां च सुमुखीं वालां (पा) | १०६.४६ | मुच्यते सर्वपापैश्च (सृ) | ३.२०२ |
| मुक्त वापग्रहादि- (पा) | ६४.१५२ | मुक्तिभूमिः सुरश्रेष्ठ (क्रि) | ११.१५६ | मुखवासंतुसुरभितां (पा) | ६५.१०६ | मुखेनेदं महत्कर्म (पा) | ५५.५३ | मुच्यते पातकैः सर्वे (उ) | ५१.४६ |
| मुक्तस्तनैरथोद्गारा- (पा) | ५२.२१ | मुक्तो निरुक्तः सत्त्वो- (सृ) | ७.१०० | मुखवासं परित्यज्य (सृ) | २०.१२१ | मुचकुन्दइतिस्थानो (उ) | ६०.४ | मुच्यते देवराजत्वं (उ) | १२७.११५ |
| मुक्ताच्छुद्धितं पञ्जीरकंकणा- (पा) | ७२.६३ | मुक्तोपिलेपभागित्वं (सृ) | १०.३४ | मुखवासैर्मक्तिमुक्ता (त्र) | २०.२६ | मुचकुन्दश्च विद्यमान (सृ) | ८.१४१ | मुच्यते शर वर्पाणि (उ) | १००.२८ |
| मुक्ताफल सहस्रेण (सृ) | २१.१७३ | मुक्तो सौ यमपाशाच्च (पा) | २०.८८ | मुखशुद्धिविहीनस्थानो (उ) | ६२.११ | मुचकुन्दस्य दुहिनाचन्द्र (उ) | ६०.३५ | मुच्यते दूतकाः सर्वे कर्ण- (भू) | १५.११ |
| मुक्ताफलस्य वरणेन (भू) | ६०.१६ | मुक्त्वा काश्यादि (उ) | १६६.१० | मुखसंस्पर्शमुकेतुं (पा) | २६.२७ | मुच्यते नाश्रमदेहः (उ) | ६६.२६ | मुच्यते नाश्रमदेहः (उ) | ६६.२६ |
| मुक्ताफलाष्टकयुतां- (सृ) | २६.२१ | मुक्त्वा त्रायुधान्ये (उ) | १५५.७ | मुखादुदगीयतेद- (उ) | १८.६६ | मुच्यते नाश्रमदेहः (उ) | ७१.२६ | मुच्यते नाश्रमदेहः (उ) | ७१.२६ |
| मुक्ताभरणशोभाद्या (भू) | १२.८६ | मुक्त्वा त्रायुधान्ये (उ) | १५५.७ | मुखाद्विदे च नागवल्मी (पा) | ११.७८ | मुच्यते नाश्रमदेहः (उ) | १७४.६३ | मुच्यते नाश्रमदेहः (उ) | १७४.६३ |
| मुक्तामयाभ्यांशुभ्रा (उ) | २२६.१३८ | मुखं ते चन्द्र प्रतिमंस्त- (सृ) | ७.३७ | मुखे चित्पेसत- (उ) | २०४.४४ | मुच्यते नाममात्रेण (उ) | १३३.३३ | मुच्यते नाममात्रेण (उ) | १३३.३३ |
| मुक्तामयैः सुशोभाय्यो (उ) | २२६.१०३ | मुखं नासा च कर्णौ च (भू) | ६६.३४ | मुखेन कुर्वते वाचं (उ) | ३७.६८ | मुच्यते पातकैः सर्वे (पा) | ६५.११२ | मुच्यते पातकैः सर्वे (पा) | ६५.११२ |
| मुक्ताहारस्फुरज्वा- (पा) | ८१.४७ | मुखं प्रसन्नमाल- (उ) | २०३.५६ | मुखेन कुर्वते वाचं (उ) | ६५.१५ | मुच्यते पातकैः सर्वे (उ) | ४२.५२ | मुच्यते पातकैः सर्वे (उ) | ४२.५२ |
| मुक्ताहार स्फुरदक्षः (पा) | ७४.१८१ | मुखं यः सर्वदेवानां (सृ) | ५.१६ | मुखेनाग्निमन्त्रिणो- (स्व) | ५५.८७ | मुच्यते वन्दनाद (क्रि) | २१.३२ | मुच्यते वन्दनाद (क्रि) | २१.३२ |
| मुक्ताहारैर्विराजतीमं (उ) | २२६.१४२ | मुखतो ब्राह्मणः (उ) | २२६.२६ | मुखेनाग्निमन्त्रिणो- (उ) | ८०.१६६ | मुच्यते ब्रह्महत्यादि (स्व) | ६१.५४ | मुच्यते ब्रह्महत्यादि (स्व) | ६१.५४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३३१

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------|--------|----------------------------|---------|
| मुंडीगिखीवाद्यभवेत् (स्व) | ५६.१५ | मुनिः पुण्यश्रवणनाम (पा) | ७२.१२८ | मुनिवर्धमहाभाग-(पा) | ७१.७१ | मुनेत्वया महेशस्य (उ) | २२२.२१ | मुमोचबाणान्निशितान्-(पा) | ६३.६१ |
| मुदागणयति शृण्वति (पा) | ७१.१२ | मुनि पुत्रस्तुतावीक्ष्य-(उ) | २१३.६२ | मुनिवर्धः समित्वाणि-(पा) | १४.२२ | मुनः प्रभावतो दुग्धं (उ) | १५५.३८ | मुमोचमुधिवुधंघो (उ) | १७.८ |
| मुदाधरणिजातस्मै (उ) | २४२.१७७ | मुनिः पुनर्योग्या (पा) | ११५.२० | मुनिवाक्यं नृपः श्रुत्वा (उ) | ५६.१८ | मुनेमयातु माहात्म्यं (उ) | २१५.२ | मुमोचराजन्वीत्रं मे (सृ) | १२.१२७ |
| मुद्गरं पत्तिं हृष्ट्वा (भू) | ११५.३८ | मुनि पुष्पाचितोविष्णुः (उ) | ६१.५६ | मुनिवेद्यायथाप्राप्तावय-(पा) | १०५.४३ | मुनेमहा नयनेन (पा) | ६६.१३४ | मुमोचराजपुत्रोपिप्रेम (उ) | १८८.१७ |
| मुद्गरंसासमादाय (त्र) | १२.३० | मुनि पुष्पेण चैकेन-(पा) | १२१.२४ | मुनिशर्मतोगच्छं (पा) | ६४.६३ | मुनेयथाप्रतिश्रुता (उ) | २०१.८३ | मुमोचहृदयेक्षिप्रकुंठ (पा) | ६०.३६ |
| मुद्गरं स्वनवंतं (भू) | ११५.३७ | मुनिपुष्पैस्तथासूर्यं (उ) | ६२.२७ | मुनिशर्मनिरोधेन (पा) | ६४.१२५ | मुनेर्दुवाससः शापा-(उ) | २०५.४५ | मुरारेः सेवितपदांसुधा-(सृ) | ७२.८८ |
| मुद्गरं प्रहृतीवीरः (पा) | ३४.२१ | मुनि प्रणम्य जाबालि (पा) | १०६.६० | मुनिःशुचिश्रवानाम-(पा) | ७२.५५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुशलं कीस्तुभं मालां (पा) | ६५.६१ |
| मुद्गरः प्रहृतरतेन (पा) | ३४.२० | मुनि प्रभावात्-(उ) | २०३.४२ | मुनिःशुचिश्चवानाम-(पा) | ७२.५५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुषितास्मिन्त्वयानाथ (उ) | ७१.३१८ |
| मुद्गरैः कूटपाशैश्च (सृ) | ४५.११३ | मुनि प्रभावात्-(उ) | २०३.४२ | मुनिःशुचिश्चवानाम-(पा) | ७२.५५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्कस्थानेस्य संकेत (भू) | ४६.४६ |
| मुद्गरैस्ताड्यमानाहं (भू) | ५२.१७ | मुनिभिरितिगिहिते (उ) | १६६.४७ | मुनिःशुचिश्चवानाम-(पा) | ७२.५५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिकं न तथा राम (उ) | २४५.३७५ |
| मुद्गलस्तु तदाक्रोधा (उ) | १०६.३० | मुनिभिर्धर्मतत्त्वज्ञैः-(सृ) | १८.२३२ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाचरणापातैः (पा) | ४३.३५ |
| मुद्रिकाभिस्तुयुक्ता (पा) | ८४.१०७ | मुनिभिर्धर्मतत्त्वज्ञैः-(सृ) | १८.२३२ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनयः सत्य धर्मज्ञा (भू) | ५६.१८ | मुनिभिर्भस्त्रमुसिद्धैश्च (भू) | ११७.२६ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनयोप्येतदीक्षित्वा (पा) | ३७.६७ | मुनिभिः सर्वपापहर्तैः (भू) | ६१.८ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनयोवावदायदर्शिनः-(पा) | १६.२६ | मुनिभिः सेव्यमाना सा (भू) | ३२.२० | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनयोरक्षितादेवा (पा) | १०७.५७ | मुनिरन्यः सत्यतः-(पा) | ७२.७ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनयोर्युशार्दूलः-(उ) | २४२.१३४ | मुनिरन्यः सत्यतः-(पा) | ७२.७ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनिः करगतं चैव (त्र) | १२.६० | मुनिरन्यः सत्यतः-(पा) | ७२.७ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनिदेशात्परश्चैव (स्व) | ६.२३ | मुनिरन्यः सत्यतः-(पा) | ७२.७ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |
| मुनिना पूजितो भूपः (भू) | ६७.३३ | मुनिरन्यः सत्यतः-(पा) | ७२.७ | मुनिस्तद्वाक्यभाकर्ण्यं (उ) | १०३.१५ | मुनेर्वचनसिद्धित्वात्-(त्र) | १२.५६ | मुष्टिनाताडयामास (पा) | ४३.३५ |

३३३

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|---------|------------------------------------|--------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| सुखलंभदुर्गदरः केचित् (क्रि) | २३.१४७ | मूढाः राठायै पशुपक्षिणो (उ) | १६६.६ | सूच्छितं मारुति (पा) | ६२.१ | सूचिन्तताश्यामासग- (पा) | २६.५२ | मृकडमुमुनाकल्पे (उ) | १२६.२६६ |
| मुहुराकारितोमाः (पा) | ८३.३६ | मूढोलोकोहर्षित्यस्त्वा (पा) | ३५.३१ | सूच्छितस्तेनशूलेन (पा) | ३४.३७ | सूचिपाराणोमुखे चैव (उ) | १०५.२० | मृगधूम तनोगच्छेत्रिषु (स्व) | २६.६६ |
| मुहूर्तं तिष्ठतां तेषा- (सु) | १८.६४ | मूढोहंकार संयुक्तो (उ) | १३६.१० | सूच्छितास्त्वजनान् (पा) | ४३.१४ | सूचिपाराणोमुखे चैव (उ) | १२१.२ | मृगनाभिवरागोदवासिता (सु) | १५.७ |
| मुहूर्तं परमात्रमा (उ) | १८.६६ | मूत्रं पुरीषं तुलनी (क्रि) | २४.३७ | मूर्तयः केशवाद्याश्च (उ) | २५३.७६ | सूचिनाभैलथास्त्वके (पा) | २६.५५ | मृगनाभिसमुद्रवृष्टवन (पा) | १०५.१ |
| मुहूर्तद्वितयं तत्रमुनि- (पा) | ७१.३६ | मूरं वायुपुरीषं वा (क्रि) | ८.८ | मूर्तस्यग्रहणं शक्यं (पा) | १०५.२११ | मूर्तिनशूलजनयसिस्वै- (सु) | ४४.८ | मृगममयमग्रेणवं (पा) | १०.२८ |
| मुहूर्तं पंचकं चैवस्व- (सु) | ११.६० | मूत्रयेत्पुरुतः कृत्वा (भू) | ४६.५० | मूर्तदिमूर्तनतुलभ्यते (सु) | ३४.१०४ | मूर्तिनसंज्ञाश्यामासपाणि- (पा) | २८.२ | मृगवायव्यनंधोर (क्रि) | ६.१२३ |
| मुहूर्तमपियोदघात् (त्र) | ३.१३ | मूर्त्तमात्रवचोप्राहीस (क्रि) | ३.३० | मूर्तमूर्ततैतदन्यच्च (सु) | ३६.५२ | मूलं वा कृष्णपक्षस्यै (उ) | ४२.११ | मृगयारसिकेनैवमुढे (उ) | १५४.४० |
| मुहूर्तमेकध्यानस्थो (उ) | ३६.३४ | मूर्त्तस्कुलभतेविद्यां (स्व) | २१.५२ | मूर्तिमूर्ततैतदन्यच्च (सु) | ३६.५२ | मूलच्छेत्तुर्ममोदृत्वा- (पा) | ८.१५ | मृगया शास्त्रोविधितो (पा) | ११६.१६७ |
| मुहूर्तं रोहिणी युक्त (त्र) | ३६.६२ | मूर्त्तौ वामदक्षगोवाधुर्भोगो- (सु) | ३०.६७ | मूर्तिमत्पदवाभाति- (सु) | १५.३४ | मूलममंजयेद्वह्मन्- (पा) | ६५.१०४ | मृगव्याघ्रासिहस्तैस्त- (सु) | ५.७६ |
| मूहूर्तं विषयस्त्वा- (पा) | १०१.२७ | मूर्च्छास्वमनदीराधा- (पा) | ७७.२४ | मूर्तिमत्परमं ब्रह्म- (उ) | १८५.१२ | मूलमंत्रेणकृतस्यं (पा) | ६५.११८ | मृगव्याघ्रासिहस्तैस्त- (सु) | ५.७६ |
| मूहूर्ताच्छेत्तनांलब्धवा (सु) | ४६.३७ | मूर्च्छाश्यामिपरिक्लिप्ता (भू) | ७७.४ | मूर्तिमद्भिन्नचोभिश्च- (उ) | १७७.४४ | मूलमंत्रेणाभिर्मन्त्र्य- (उ) | २५३.४४ | मृगव्याघ्रवदत्येवं (भू) | ३०.२६ |
| मूहूर्ततत्तमोऽष्टमाकाशं (पा) | ३३.८ | मूर्च्छातिपक्त्वागुमोर्बेदो (उ) | ७४ | मूर्तिमद्भिन्नस्तथावेदैः (पा) | १०४.६० | मूलस्थानेनिवेशश्च (सु) | १३.१५८ | मृगशावद्वंशराक्षीनोन्नत (क्रि) | ४.३६ |
| मूहूर्तार्तिकमन्त्राचार्यकार्यो (उ) | १११.६ | मूर्च्छां प्रापतवादीरो (पा) | ६२.४७ | मूर्तिमंतो चत्वारः (सु) | ६.३ | मूलादिचारयामास (क्रि) | ३.४७ | मृगशृंगकटोर्भृत्वादीक्षितं (पा) | ४५.६० |
| मूहूर्तनामि संज्ञां (पा) | ५६.२२ | मूर्च्छां प्राप महातेजा (पा) | ५२.४५ | मूर्तिमंतो महाराज (भू) | ७७.७२ | मूलादिचारयामास (क्रि) | ६.८४ | मृगशृंगकटोरम्य (पा) | ३७.३१ |
| मुहूर्तमूर्ध्वयेत्यु- (उ) | १२१.३५ | मूर्च्छां प्रापत् तमाज्ञाय (पा) | ३४.३८ | मूर्तीनांचैवमष्टांनां (सु) | ३.२०१ | मूलानिचैककद- (पा) | ११७.६६ | मृगशृंगधरः कट्यां (पा) | १०.७ |
| मुहूर्तमूर्ध्वपरिप्लव्य (उ) | २४५.२६८ | मूर्च्छां प्रापत् नुतंदष्टवा (पा) | ६४.२१ | मूर्तीस्तुवाभुदेवा- (उ) | २२५.५५ | मूलेन वदुनाक्रोत्वा- (उ) | १८६.१३ | मृगशृंगधरावालाक्षोम (सु) | १६.१८६ |
| मुहूर्तापिपमनुष्ये (पा) | ६६.४४ | मूर्च्छां प्राप्यक्षणा (उ) | १२.१११ | मूर्तीतत्रस्मेन्निर्व- (उ) | ८२.१४ | मूलेन वदुनाक्रोत्वा- (उ) | १३२.३८ | मूर्गंस्वचिह्नमुरासि- (उ) | ६.७ |
| मुहूर्तनिव महाभौहे (भू) | ३६.२० | मूर्च्छां चेतनाहीनं (पा) | २३.८६ | मूर्तिमदीयोऽखिल लोक (क्रि) | १२.८५ | मूलेन वदुनाक्रोत्वा- (उ) | १५.३३६ | मृगाः श्रागत्पत्स्यां- (पा) | १४.४८ |
| मुहूर्तवतिष्ठतेयोर्व (उ) | ३६.३६ | मूर्च्छितं समालोक्य (पा) | ४३.६ | मूर्तिमदुत्वा जलं (पा) | ६५.२१ | मूलकः शरभिन्नाग (उ) | १०१.१११ | मृगांक मृगधर्मा- (उ) | १५.१२० |
| मुहूर्तमनानुरोधेनहंतु (सु) | १४.८६ | मूर्च्छितं समालोक्य (पा) | ६१.४७ | मूर्ति चैव हृषीकेशं (पा) | ७६.२० | मूलकोग्निभयातत्र (त्र) | ३.१६ | मृगान्धर्वस्वराहांच (भू) | ३०.१६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| मृगान्तः षोडशित्वा तु (भू) | ८६.१६ | मृतस्य दशने श्राद्धं (सु) | ३३.७४ | मृतेचमयिमेपुत्रा-(पा) | ६७.५२ | मृत्युकालेपि संप्राप्ते (भू) | ६७.७६ | मृदाधातु विकारश्च (उ) | १२०.६० |
| मृगारिपदमुद्राभि-(उ) | १२५.१६ | मृतानां कागतिस्तत्र (स्व) | ४१.२ | मृते तस्मिन्लहं भोगं (ब्र) | २०.१५ | मृत्युजयेनमंत्रेण (पा) | १०७.२६ | मृदूपक्रममुत्थानं (उ) | १७८.२६ |
| मृगाः शालंहिजिघ्रं (उ) | १३२.५२ | मृतानां पृष्ठतः कश्चिद (सु) | ३३.१२८ | मृते तु तस्मिन्पितरि मात (भू) | १२.१० | मृत्युनापाशहस्तेन (उ) | १२२.५ | मृदोममतिशालीत्वा (उ) | ६६.३३ |
| मृगाचक्षुःश्रुतमृगिष्ठाः (स्व) | ८.३५ | मृतानो धर्मसाध्वी सा (मू) | १.५५ | मृतेतुतस्मिन्पितरि-(पा) | ८८.१० | मृत्युयुक्ताः भविष्यन्ति (भू) | ८१.२६ | मृधमहसं वाहनां (सु) | १२.१२६ |
| मृगास्तदतिकं प्राप्यं (पा) | ५६.४७ | मृताधातुभयित्त्वभो-(सु) | १८.४२३ | मृतेमपि जगत्पस्मिन् (क्रि) | २२.३४ | मृत्युरोगहरा जाता (भू) | ११६.१२ | मृमयेवायकत्वं (उ) | ८५.६ |
| मृगोमेकांभयति (स्व) | ३५.४ | मृतायामयिकस्येदधनं (उ) | २२०.२४ | मृते प्राणिनि कोष्ठाति (भू) | ४१.६० | मृत्युर्वेप्राणिनांभायः (पा) | २७.३४ | मेकला बालकं गृह्य (भू) | १०५.२५ |
| मृगेन च स तेनापि (भू) | ७७.१० | मृता साराज तनया यतो (क्रि) | ६.४६ | मृतोयं च पिताज्ञात्वा (पा) | ६७.५७ | मृत्युश्चैवामृतश्चैव (सु) | ३८.१६८ | मेक्षणं स्वाग्निनिकषं (पा) | ११७.११५ |
| मृगेन्द्रो गृह्यतामेष-(सु) | ४५.६७ | मृताहनि तुमेकृष्ण (उ) | २४६.६८ | मृतो हस्तत्वमानोति (स्व) | १८.१३ | मृत्युस्थानानि पुण्यानि (भू) | १४.२७ | मेक्षणं नततोऽभीष्टं (पा) | ११७.११४ |
| मृगेर्चनीयारसनापुरा-(सु) | २५.१३ | मृताहेत्रिमुहूर्तां च-(पा) | १०५.६० | मृतो विष्णुपुरंदातित-(पा) | ७६.१० | मृत्योः कथ्यमाहाभाग (भू) | २८.२२ | मेखलायंराशयोश्च (उ) | १८५.१८ |
| मृगैः सहचरेद्वातंस्त्वैः (स्व) | ५८.१३ | मृताहेरावर्णकुर्वन्-(सु) | १०.३१ | मृतोसोचिचित्रनस्तु (पा) | ६२.४२ | मृत्योर्वायं ततोदेवा (भू) | ३४.६ | मेघच्छन्तेतयाकाशे (पा) | ११७.२ |
| मृगोदम्बराचमुखवा (उ) | ८.१० | मृतिकयोदेकनापिसमंतात् (भू) | ५३.५५ | मृतोसोतत्रसंजातः (उ) | १३६.१२ | मृत्योर्वायं धिजराशोच (भू) | ३१.५४ | मेघनाद समागोमे (भू) | ११७.३२ |
| मृतंतथाविज्ञाययम-(पा) | १०६.१०१ | मृतिकागोमयेनैव तथा (उ) | ७४.५.५७ | मृतोसौयातिदिव्येन (सु) | १५.११२ | मृत्योश्चापिमहाभाग (भू) | ३०.५० | मेघरात्रंततोमच्छेद-(स्व) | १७.४ |
| मृतं मायतनादेह (उ) | २०४.६४ | मृत्तिलालमनाद्वापि (स्व) | ७४.१३ | मृतोहं तेन मोहेन (भू) | १२३.३६ | मृत्युवापिदिसत्की- (पा) | ६६.६५ | मेघश्चवर्षत्रंष्टोमेघ (सु) | ४५.१७४ |
| मृतमासोदयबलंतस्य (पा) | ११४.१२४ | मृत्तकालंमनपूर्वं (उ) | ४५.३६ | मृतौगुरुसमाज्ञाय (पा) | ८८.१६ | मृदंगपणुवाद्यादित्रयं (पा) | ६६.१८ | मेघःयद्वीपिभिर्युक्ताः (सु) | ४२.७६ |
| मृतवत्सोहिराजपि (उ) | १४८.७ | मृत्तिकेहेरमेपायं-(सु) | २०.१५३ | मृत्पिडिकाप्रदातेन (उ) | ४२.३४ | मृदंगडिडिमाश्चैव (उ) | १६८.१८ | मेघाकारस्थितं (उ) | ५.६२ |
| मृतः शक्रपुरं प्राप्य (क्रि) | २०.१३६ | मृत्तिके हेरमे पायं (उ) | ३८.२८ | मृत्यं प्रयाति मोहात्मा (भू) | ४०.३७ | मृदंगश्चित्रिणु प्रोच्चै-(पा) | ३६.३२ | मेघादापः प्रवर्तते (भू) | ६४.७० |
| मृतंशरीरमृत्मुज्य (पा) | ६६.१६ | मृत्तिके हेरमे पायं (उ) | ४५.४० | मृत्यु कालस्य विप्रदं (भू) | १२३.४८ | मृदंगनादसंभित्नास्यम् (स्व) | २२.१८ | मेघात्रांततश्चिदं (पा) | ३३.४ |
| मृतश्चेतेपितारामत्यक्त्वा(सु) | ३३.१२६ | मृत्तिके हेरमे पायं (उ) | ६६.३५ | मृत्यु कालेय संप्राप्ते (पा) | १११.२४ | मृदंगादीनिवाद्यानि (क्रि) | २२.१३५ | मेढ्रे घराघरंदेवं (उ) | ७८.२५ |
| मृतश्वाहं पुणर्जातो (भू) | ६६.४० | मृत्तिके हेरमे पायं (उ) | ६६.३५ | मृत्युकाले द्विज श्रेष्ठ (क्रि) | १५.६६ | मृदंगंमंदंगंभीरवेणु (उ) | १७८.२५ | मेदिनीमडलस्पसं (उ) | १८६.२४ |
| मृतमुधासश्शेच नाशनैः (पा) | ५.६ | मृत्तिके हेरमे पायं (उ) | ६६.३५ | मृत्युकालेपि नो दत्तं (भू) | ६७.८७ | मृदमादायकंवेपु-(सु) | २७.४० | मेदिनीमेदसैव-(उ) | १८.१०६ |

श्रीपद्ममहापुराणः ॥ श्लोकानुक्रमणो

३३५

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|---------------------------|---------|
| भेदिन्यायंक्लिस्सूल (उ) | १८.२ | मेरुतुल्यसुवर्णानिदत्वा (क्रि) | १०.३४ | मंत्रभावस्थितायु (सु) | १८.६२ | मोक्षनीयः प्रयत्नेन नर (पा) | ६.४ | मोहनास्त्रेणत-(पा) | ४५.५० |
| भेदोस्त्रिमज्जस्वरैः (सु) | ४१.२८० | मेरुदानसमंतस्यात् (सु) | १८.१५५ | मंत्रमेवं करिष्यामि (भू) | २४.२८ | मोक्षयामा स धमत्ति (उ) | २४.३२ | मोहपाशनिर्वन्धति (उ) | १६६.८२ |
| मेधंकरस्थितः शाङ्गधरो (उ) | १६२.३२ | मेरुप्रमाणहेमानि (क्रि) | ७.५८ | मंत्रो गरीयसी सार्द्धं (उ) | १६१.११ | मोक्षयित्वामहापाप-(पा) | २०.७३ | मोहमायातिथिः स्वल्प-(सु) | ४३.४६४ |
| मेधाजननमश्रुयं (स्व) | ३६.६८ | मेरुप्रमाणहेमानि (क्रि) | ११.१५० | मंत्रेणवर्ततेमर्त्यो (भू) | ७.६ | मोक्षितस्तेनवाहा-(पा) | ५४.१२ | मोहयंतं मुक्तांमोक्षो (उ) | ७४.१८५ |
| मेधावनं समासाद्य (स्व) | ३६.५३ | मेरुमंदर तुल्यानि (उ) | १२४.७ | मैथुनाद्वलहानिः (स्व) | ६१.३२ | मोक्षितोविमलं ज्ञानं (उ) | १३६.११ | मोहयंनिमदयंनि (स्व) | २२.४२ |
| मेधाविनं मुनिदृष्ट्वा (उ) | ४६.१५ | मेरुमंदर तुल्यानि (पा) | ६८.१२० | मैथुनानांनुनियमे (उ) | ६५.१८ | मोक्षितोस्मिन्त्वमादै (उ) | १७७.२० | मोहयंतोस्मितालोकैः (क्रि) | ७.११० |
| मेधाविनामानमृषि (उ) | ४६.६ | मेरुमंदरमात्राणि (उ) | ६१.१० | मोक्षं सुदुर्लभंभत्वासं (स्व) | ३३.२२ | मोक्षकानां नदानेन (सु) | ३४.१६२ | मोहयंतु नदयंतु (उ) | १२८.५१ |
| मेधाश्रुतं क्रियादंडं (सु) | ३.१८६ | मेरुगिरिपनिर्माणं (उ) | ७१.२६० | मोक्षं राक्षसीनांतु (उ) | २०८.६ | मोक्षे धनधान्येन (भू) | ६०.२६ | मोहयित्वात्मजंराजा (उ) | २३८.७३ |
| मेनकां चोर्वशीरंभां नृत्य-(सु) | १२.७१ | मेरुदोर्गधा च संजातः (भू) | २६.६६ | मोक्षं रूपदं राज्यं (उ) | ६३.७ | मोक्षेतेरुद्रलोकस्थोयज्ञ-(स्व) | १६.१६ | मोहाच्चरतिविघ्नयः (उ) | ३२.६१ |
| मेनकां प्रेययामास (भू) | ८१.२ | मेरुमहात्रीहिमयस्तु (सु) | २१.६३ | मोक्षं मुखदं चैव (उ) | ३५.१७ | मोक्षेते सर्वलोकस्थोया-(स्व) | १८.८२ | मोहास्थजितयोमूढः (क्रि) | १६.६० |
| मेनिकायाः वचः श्रुत्वा (भू) | ११६.१६ | मेरुमैथुनेपुरादेवमीशानं (स्व) | ३३.३ | मोक्षदासर्वभूतानां (स्व) | ४३.५४ | मोक्षन्ते तत्रदेवेशभक्त्या (उ) | २२६.५३ | मोहास्त्वृष्टवापि-(पा) | २०.२४ |
| मेनिकाविष्णुशमर्षि (भू) | ३.१० | मेरोरथोत्तरपद्मात् (स्व) | ४.१ | मोक्षपरंपरां द्रव्यममृतं (उ) | २२७.७६ | मोक्षन्ते नैवमैः सार्द्धं (उ) | २४७.१० | मोहादवाप्तवापानां (पा) | ६४.४५ |
| मेनेकृतार्थमात्मानं (सु) | ७.५५ | मेरोरुपरितः स्थाप्यं (सु) | २१.१६७ | मोक्षमार्गं प्रकाशेद्यो (भू) | ५६.११ | मोक्षमानी महात्मानो (भू) | २०.५८ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |
| मेनेकृतार्थमात्मानं (उ) | ३३.४६ | मेरोरुचैव महापुण्यं (भू) | ३६.७ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहानललसज्ज्वाला-(उ) | १२८.२३६ |
| मेने तस्थोपकाराणां (भू) | ११६.१६ | मेरोस्तुपश्चिमेषावर्षं (स्व) | ३.४६ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |
| मेने तारायणो देवो (उ) | १५.४३ | मेवादियः शिखरिणो (सु) | ३१.११६ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |
| मेहं निरिवर श्रेष्ठ (भू) | ४६.१७ | मेघ कर्कटयोर्मध्ये (स्व) | ६२.१७ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |
| मेहं देवेन्द्र सहितं (पा) | ३३.४८ | मेघरूपशिवधाता (उ) | ७१.१६६ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |
| मेरुतुल्यसुवर्णानि (त्र) | १७.६ | मेघसंक्रमणमोना (पा) | ६५.४ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |
| मेरुतुल्यानि पापानि (त्र) | ४.४८ | मेसतिविद्यातपसो (सु) | १६.१०१ | मोक्षशास्त्रे पुनिरतो (स्व) | ५.२२ | मोषीभिर्जर्जर बुद्ध-(उ) | १३२.१७ | मोहाद्यः पूजयेदयं (उ) | २५५.६४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् : १ श्लोकानुक्रमणी

३३६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------------|--------|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| मोहितास्तम्भं रूपे (उ) | २०६.६ | म्लानम्लानम-(पा) | ११४.१६७ | यं प्राप्यातिपवित्रा (पा) | ६६.५४ | य आसीन्नस्य पुत्रो वैवेनो-(भू) | २८.२० | यएवंकुस्तेविद्वान्नाहाण (पा) | ८०.२६ |
| मोहितास्तेन शस्त्रेण (उ) | २५२.११३ | म्लेच्छकूपोदक पीत्वा (पा) | ३३.४३ | ययंकल्पयति सुपुण्यदेवा (भू) | १०२.४१ | यइदं कुस्तेशक्त्या (उ) | ३४.२३१ | यएवददतांलोकास्त-(सु) | १६.२६५ |
| मोहितीनामतत्रासीद्-(उ) | २२०.१८ | म्लेच्छवर्तपिविज्ञे (उ) | १७४.६५ | यं यं कामयते कामतंतं-(सु) | ४०.१११ | यइदं शृणुयात्पुण्य (सु) | १७४.७६ | यएववामनरोजन्विष्णु- (सु) | ३०.१५२ |
| मोहोर्मेदानवैः कांते (उ) | १८.२७ | म्लेच्छदेशे च विप्रदं (क्रि) | १४.२ | यं यं चितयते प्राज्ञस्तं त (भू) | १२.५० | यइदं शृणुयाद्भक्त्या (न) | ४६.२०६ | यः करोतिजनस्तस्य (क्रि) | ११.७७ |
| मोक्तिकानिविचित्राणि (सु) | ३६.५१ | म्लेच्छाश्चविहितायेन (क्रि) | ६.१८६ | तं जानाति महायोगी (भू) | ६२.३६ | यइदं शृणुयाद्भक्त्या (न) | ५.३५ | यः करोतिजडांगेतुप्रति (उ) | १२०.४१ |
| मोक्तिकैश्चापि सोमस्य (सु) | ३४.३६२ | म्लेच्छेणुपार्वतीयेषु-(सु) | १७.१७० | यं यं तीर्थप्रयान्त्येते (भू) | ६२.१५ | यइदं शृणुयाद्भक्त्या (न) | ७.४४ | यः करोतिनतेवाक्यमैलोके (सु) | ३४.३० |
| मोनमेवात्रयुक्तमे (उ) | १७७.५५ | य | | यं यं तु वांछते कामं स (भू) | ६६.२६ | यइदं शृणुयान्नित्यं (पा) | १०५.२३६ | यः करोतिनरः प्राज्ञः (उ) | १३५.१११ |
| मोनीपलाशभोजी (उ) | ११८.४१ | यंकचित्पश्यसेबालभ्रमतं-(सु) | ३३.२० | यं यं वांछते कामं तं तं (भू) | ६१.३१ | यइदं शृणुयाद्भक्त्या (न) | २३.३३ | यः करोतिनरोभक्त्या (तु) | ३४.८६ |
| मानीभूतंतुलं षट्वा (सु) | ३०.१८५ | यकचित्पुण्यं षट्वा (पा) | ११२.१७ | यं यं त्वं वांछसे भद्रे (भू) | १०३.६८ | यइदं शृणुयाद्भक्त्या (उ) | १७४.७७ | यः करोतिनरोभक्त्या (उ) | ६१.२५ |
| मोनीभूतातु शृण्वाना (सु) | १७.१२३ | यंकालतेगता ब्रह्मब्रह्मा-(सु) | ४०.६७ | यं यं प्राययसेनित्यं (उ) | १५३.१३ | यइदं शृणुयान्नित्यं (पा) | १११.५४ | यः करोतिसपापिष्ठांगति (सु) | ८.६७ |
| मनेचापिस्थितोनित्यं (सु) | ३२.२७ | यं दृष्ट्वा देवयोगेन (भू) | १०६.२० | यं यं त्वं वांचयसे ब्रह्मा स्तं (उ) | १७४.३४ | यइदं शृणुयान्नित्यं (उ) | ८०.१६३ | यः करोतिसपुण्यात्मा (उ) | ६१.५० |
| मोनेनभुंजमानास्तु (उ) | ६४.६० | यं दृष्ट्वा मुच्यतेपापाद (उ) | १६७.२ | यं यं हिवांछतेचैषा तं (भू) | ७७.६६ | यइदं शृणुयाद्विप्र (न) | १६.२६ | यः करोतिसर्वं भूतानां (उ) | ४५.२३ |
| मोनेनभोजयित्वातु (उ) | ६४.६३ | यदृष्ट्वा मुनयः सर्वेबीत-(उ) | १५२.४३ | यं यं हि वांछते चैषा तं (भू) | ७८.६२ | यइदं शृणुयान्नित्यम् (स्व) | ३५.४६ | यः कर्ता सर्वं शास्त्राणां (भू) | ६७.७८ |
| मोनेपिडास्तिलादेयाः (उ) | ६५.६ | यदृष्ट्वासंप्रनृतीहृष्टेण (स्व) | २७.१३ | यं यं हि वांछसे भद्रे (भू) | ७७.५० | यएकः शास्वतोदेवो (पा) | १०८.३ | यः कर्तुं प्रार्थनामुविप्रम् (न) | १४.६ |
| मौजीत्रिवृत्समांशिलष्टाम् (स्व) | ५१.१८ | यदेवं वेत्तिवेत्तारंयज्ञभाग-(सु) | १८.३५ | यं यं गिगिरुत्यनत सबीज (स्व) | ३५.४० | यएचच्छृणुयान्नित्यं (उ) | २२१.५३ | यः कश्चिच्छ्रुतकमा (सु) | २३.१०६ |
| मौशलं चतथालोकाः (उ) | २२८.६३ | यदेवंवेत्तिवेत्तारंयज्ञभाग (सु) | १८.३६ | यं यं गिगिरोघ्यानयुक्ता (सु) | ३०.१६० | यएतेदैत्यमांसत्य (उ) | १८.११३ | यः कश्चित्पुण्येन (उ) | १८.१२१ |
| अयते परयतामैवं (भू) | ६६.१३७ | यदेवाः सामुराः सर्वे (पा) | १०.४५ | यदेवगुह्यं सगुणं गुणानाम्(भू) | ६८.५४ | यएतैः पचभिर्विद्वान् (पा) | ८२.१८ | यः कामोदेवदेव (पा) | ६६.४७ |
| अयमाणः सुतस्तेहा (पा) | ८७.७ | यं न पश्यन्ति लेशं (क्रि) | २३.११६ | यंश्चत्वादिन ते ब्रह्मा (वा) | ६४.६० | यएनानैवजानाति (सु) | ४६.१६१ | यः कुर्यात्परयाभक्त्या-(सु) | २१.२७६ |
| अयमाणस्तथाप्राणा-(पा) | ११०.११ | यंनस्पृशतिगुणजाति (उ) | १२८.२६२ | यंश्चत्वादिन ते ब्रह्मा (वा) | ६६.१४ | यएवंकुस्तेभक्त्यावित्त (उ) | ३७.२० | यः कुर्याद्विधनानेन (सु) | ७.२७ |
| अयमाणेषु विप्रेषु (स्व) | ५७.६० | यंप्राप्यशाश्वतंविप्रानियता(सु) | १८.३२ | यं सर्वदेवंपरमेस्वरं हि (भू) | १६.३६ | यएवंकुस्तेभक्त्यावित्त (उ) | १२४.१६ | यः कृत्वापुष्करं संख्यां (सु) | ३४.१७४ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|--------------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| यः कृतामुहुरेतांसि (उ) | २१३.४६ | यक्षेर्नागवरैश्चैव (उ) | ८०.१३५ | यच्छ्रुत्वा मुच्यते लोको (उ) | ६८.२ | यक्षभूमिधीनेनियतं (स्व) | ५३.४८ | यज्ञदानतपश्चर्या (उ) | २२५.१० |
| यः क्रोधाच्चस्वकान् (पा) | ५७.६५ | यक्षैश्च यमुधादुःखः (सु) | ८.२२ | यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो (उ) | १.१० | यज्ञेन वा श्वमेधेन- (उ) | ३२.२२ | यज्ञदानत्रयतपः (उ) | ८६.२६ |
| यक्षराक्षोगणास्तेच (सु) | ६.३५ | यच्चकिञ्चित्प्रजगत्स्व- (उ) | २२६.६० | यजतः पुष्करेतस्य (सु) | १८.६ | यज्ञेन वा श्वमेधेन- (उ) | १३५.४७ | यज्ञदानादिकञ्चैव विष्णु (उ) | १०८.२० |
| यक्षराक्षसगंधर्वा (सु) | ४२.१०५ | यच्चकिञ्चित्प्रकुर्वन्ति (भू) | ८४.१७ | यजतस्तस्य सत्रेण सर्व- (सु) | १८.१२१ | यज्ञेह मश्वमेधेन (भू) | १२४.५ | यज्ञनिष्पत्त्यसर्वमेतं (सु) | ३.१३१ |
| यक्षराक्षसभूतानां (भू) | २७.१० | यच्चकिञ्चिद्वस्तु जातं (पा) | २८.५३ | यजते दानपुण्यैश्च तस्य (भू) | ४१.६६ | यज्ञपञ्चाचपुनर्मनुस्त- (सु) | ४६.१६३ | यज्ञपत्नीगणानां (पा) | ६६.३३ |
| यक्षराक्षसभूतानाम- (उ) | २५३.६४ | यच्चकिञ्चिन्मयि ब्रह्म (सु) | १३.२६५ | यजद्द्वभित्तिताम्बूपाद- (सु) | २७.२८ | यज्ञात्स्वामानवाः सर्वे (क्रि) | १७.६६ | यज्ञावर्तमाहोऽह्ना (सु) | १६.१६७ |
| यक्षराक्षसभूतानाम (उ) | २५३.११८ | यच्चप्रोक्तं मया गदौ (सु) | ४३.१८४ | यजद्द्वभित्तिताम्बूपाद (सु) | २७.३० | यज्ञात्वा संमृतिधोरां (पा) | ३५.४० | यज्ञपर्वनामासाद्यदक्षिणाम (सु) | १६.८१ |
| यक्षराक्षसभूताश्च (उ) | २५३.११७ | यच्चब्रह्मैश्वरादेशा- (सु) | ४३.३४० | यजनं याजनं गत्वा तथैव (स्व) | २५.१३ | यज्वनामुत्तमं चैकं शूरं (भू) | ३२.६७ | यज्ञपर्वतामातायाविष्णु (सु) | ३०.१ |
| यक्षराक्षसैस्त्वेन गृह्यमानां (सु) | ४१.१५ | यच्चयज्ञादिकं कर्म (सु) | १३.३२२ | यजनं याजनं वापि न (भू) | ६२.६१ | यज्वादानपतिं सोपि (भू) | १०३.१८ | यज्ञपर्वनामासाद्यदक्षिणा- (सु) | ३०.१० |
| यक्षराष्ट्रपत्युवाच य (उ) | ५२.१० | यच्चलक्ष्म्यापुत्रावीज (उ) | १०५.५ | यजनाऽप्यपेयोनिः (स्व) | ५५.२६ | यज्वानः पुण्यशीलाश्च (भू) | ३.५५ | यज्ञभागभुजः सर्वमरुत- (सु) | ७.६७ |
| यक्षविद्याधराणां (उ) | २३८.५ | यच्चत्रयदिकसर्वं (उ) | ८६.२६ | यजन्तियान् देवग (सु) | ६.४ | यज्वानो तानशीलाश्च (भू) | ६५.८ | यज्ञभूमिश्च यज्ञश्च (भू) | ३६.१०१ |
| यज्ञाणां चरित्राचानां (उ) | २५३.६५ | यच्चानुभवसेलोकैस्तत्सर्वं (सु) | ३६.१३१ | यजन्तिमानवास्त्र (क्रि) | ४.१६ | यज्ञं कृत्वा पापं हृत्वा कृत्वा (सु) | १३.३२३ | यज्ञवाटततोभ्येत्य- (उ) | १०६.२८ |
| यक्षाणां दशलक्षाणि (सु) | ४४.१५१ | यच्चवापराह्णं साया- (पा) | ६४.१४४ | यजन्तेऽक्रुतुभिर्देवांस (स्व) | ४७.१० | यज्ञं चकार विधिना धिषणो (सु) | १५.१०१ | यज्ञवाटं च चित्यात्मा- (सु) | १८.४२ |
| यक्षान्मिशावाग्धर्वा (सु) | ३.११६ | यच्चवापलत्वंकृत- (उ) | २५२.१७५ | यजंतो जंतयान्भवत्यानं (सु) | ४६.४६ | यज्ञं दशानात्तत्रा- (उ) | २४५.२०१ | यज्ञविद्यावेदविद्यापदकम (सु) | १८.४७ |
| यक्षाः त्रयगृहाः कूरा (उ) | १२६.१३७ | यच्छ्रुत्वा चान्नदानानि (त्र) | २४.४७ | यजमानं गृहे सेवासं (भू) | ६७.१३ | यज्ञं यज्ञविदां श्रेष्ठः (सु) | ३२.१३१ | यज्ञगर्भाणामाहूय (भू) | १.२४ |
| यक्षाश्च नागाः सिद्धाश्च (उ) | २३८.६ | यच्छ्रुत्वा चान्नदानानि (पा) | ६६.२३ | यजमानप्रमाणोवांस्तथा (सु) | २७.१५ | यज्ञं ब्रतं च पितृ पूजनं (क्रि) | २४.३२ | यज्ञगर्भविदग्गर्भा (भू) | १.१४ |
| यक्षिण्यानैत्यकंतव (स्व) | ३८.२३ | यच्छ्रुत्वा चान्नदानानि (त्र) | २१.१२ | यजयज्ञं हृत्वा केशपुण्यात्मा (भू) | ८२.२२ | यज्ञकर्मकलापस्य तथा- (सु) | १३.३६५ | यज्ञशोभिपुद्गैः पुष्पैः (सु) | ४१.१६२ |
| यक्षिणेदेकहमन्तेन (उ) | ६४.७६ | यच्छ्रुत्वा चान्नदानानि (उ) | २२५.१२ | यजन्तमुग्यादूल (उ) | २००.४ | यज्ञकायेपठ्यस्तु (क्रि) | १७.१२३ | यज्ञश्च यज्ञमानश्च (उ) | ७६.२५ |
| यक्षेण त्वमात्रं च कुडं (सु) | १३.२५६ | यच्छ्रुत्वा चान्नदानानि (उ) | १५४.२८ | यजामहे त्वमेवाद्यं सर्वो (सु) | ३६.२२ | यज्ञकोऽति सहस्रानि (त्र) | १७.८ | यज्ञश्राद्धं कृतं मुद्गैरहिक (सु) | २३.३१६ |
| यक्षैश्च राणांसगणौ (सु) | १२.३३ | यच्छ्रुत्वा चान्नदानानि (पा) | ७६.१८ | यजुर्वेदो विषेणैः पूजये (पा) | १०४.४४ | यज्ञश्रातामजपुमान् (उ) | ७१.१४७ | यज्ञश्च रोह्यसमस्त (उ) | २२६.७७ |





श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३३८

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|------------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| यजसंरभणाथर्याय (पा) | ३६.१० | यज्ञेतस्मिन्नुहविः पाके- (सु) | १६.७७ | यज्ञोपवीतस्तेभूमिमाप्य- (सु) | १६.१४ | यतोषमं विचारस्मिन् (उ) | १२८.१०४ | यत्किञ्चित्प्रत्यहंपापि- | १०६.१६ |
| यजसंस्तरविद्भिश्चासिषा (सु) | १८.४८ | यज्ञेनुविहितं तस्य कारितं (सु) | १६.१०४ | यज्ञोपवीतः साक्षाद् (उ) | २२४.१७ | यतोभक्तिस्तु बहुला (उ) | ८२.२० | यत्किञ्चित्प्राणिजातं (उ) | २४०.७३ |
| यज्ञस्य दक्षिणायां तु (सु) | ३.१८१ | यज्ञे त्वया कृते राजन् (ब्र) | १२.४६ | यत आवां परित्यज्य (क्रि) | ५.१८६ | यतोमममुखाया वदा (पा) | ११६.१६६ | यत्किञ्चिददीयते राजन् (क्रि) | ३.८४ |
| यज्ञस्यास्य समाप्तो तु (सु) | ५.४४ | यज्ञे दक्षस्याग्नि कुंडे (उ) | १८.४० | यत एवागतः पृथग्याम् (स्व) | ६१.२६ | यतोमयाडविमुक्ततद- (स्व) | ३३.४४ | यत्किञ्चिददीयते विप्र (क्रि) | २.३७ |
| यज्ञांगरूपं चरथांगपाणि (भू) | ७३.१४ | यज्ञेनाप्यायिता देवा (सु) | ३.१३२ | यतः पत्नी बधोयेतो (उ) | ४७.१५ | यतो भगवतस्तस्य- (पा) | ६८.१२६ | यत्किञ्चिदुत्कृतं कर्म- (स्व) | २७.८८ |
| यज्ञांगरूपं परमार्थरूपं (भू) | ६८.६५ | यज्ञे बलिसमादा तुम् (ब) | १२.४१ | यतः प्रधानं पुरुषः (स्व) | ३५.४३ | यतो मे मनसः स्पर्धय (पा) | ७५.२४ | यत्किञ्चिदेव देवेशम् (स्व) | ५७.२७ |
| यज्ञादितीर्थतदानानि (उ) | ४६.३६ | यज्ञेनारायणजिष्णु- (सु) | ३४.६८ | यतः प्रसादं जगतः (सु) | १५.३८८ | यतो योगसमारूढो- (उ) | १४१.२८ | यत्किञ्चिद्विजतुष्टयर्थं (क्रि) | १०.३० |
| यज्ञादेवाश्च मुनयः (ब्र) | २२.२२ | यज्ञेषु चहविः पाकं शिव- (सु) | ४०.१६३ | यतः सकाशात्संजाता (उ) | ८२.३ | यतोसौ न गता तत्र (उ) | २०१.८४ | यत्किञ्चिद्वरयेवस्तु (ब्र) | १५.४४ |
| यज्ञाद्यतिकामन्वैच्छत्कथं (सु) | १६.३८ | यज्ञेष्वेव प्रवृत्तेषु सर्वेषु (भू) | २३.१३ | यतस्ततोपि देवैर्द्रष्टव्यः (सु) | ४४.५३ | यत्कथाश्रवणादद्भुतः (पा) | ६८.२६ | यत्किञ्चिच्छ्रद्धतिब्रह्मन् (ब्र) | २०.८ |
| यज्ञाद्वताच्च तपसो (उ) | १६५.५५ | यज्ञैराराधितो विष्णु (उ) | २०२.८ | यतः स्वसारो युवती (उ) | २२७.७५ | यत्कथासु प्रवर्तते (उ) | ६२.२५ | यत्किञ्चिद्विद्यते वृं साम् (स्व) | ६१.६७ |
| यज्ञातिदेवदेवेश (उ) | ६१.११ | यज्ञैर्नैस्तपोभिश्च (सु) | १२.११५ | यतस्तस्य तारिता देवस्तेन (सु) | १६.१६० | यत्कथ्यतेऽमृतं राजन (उ) | १२७.५१ | यत्किञ्चिन्माषवेमासि (क्रि) | १२.३३ |
| यज्ञाय यज्ञरूपाय- (भू) | ३२.३५ | यज्ञैर्नैस्तपोभिश्च यत्- (सु) | ३२.६६ | यतिः कुमारभावेऽपि योगी (सु) | १२.६३ | यत्करोति महासेनमुनि (उ) | १२१.२१ | यत्कृते भवता विप्रो जे (उ) | २१८.३६ |
| यज्ञार्थकादेव लोकानां भ्राता- (सु) | ५७.१२ | यज्ञैश्च तपसा विप्र कि (भू) | ६३.२० | यतिर्यथातिशयति रुक्तरः (सु) | १२.६२ | यत्कर्तव्यं नरैः स्त्री (उ) | ५१.४७ | यत्कृत्वा सुमहदुप्यं (पा) | ६६.४७ |
| यज्ञार्थं वरयामास (ब्र) | १२.१२ | यज्ञैश्चान्ये यज्ञस्येव- (भू) | २६.३८ | यतीनां ब्रह्मचर्यं च- (सु) | १३.६ | यत्कर्म कुरुते मर्त्या (क्रि) | १८.२१ | यत्कृत्वा तोविधिः सत्य- (पा) | १३.१३ |
| यज्ञाश्चरक्षतः स्वस्य- (उ) | २१६.७० | यज्ञैः सुदानैः सुतपोभि- (उ) | १२८.६ | यतीनां स्नानं कालो यम् (ब्र) | १५.३२ | यत्कर्म विष्णुर्देवस्य (उ) | १३२.८४ | यत्कृत्वा तोविधिः सत्य- (पा) | १३.१३ |
| यज्ञाः सिद्धिं तदायाति (भू) | ६०.६ | यज्ञैस्तु विधिवद् (उ) | ५३.१३ | यतीनां मुद्रा पत्रायां येषां- (सु) | १६.१२ | यत्कार्यं परमात्मार्थ- (सु) | १५.३५७ | यत्कृत्वा तोविधिः सत्य- (पा) | १३.१३ |
| यज्ञाहुतिसदाहारयज्ञांगेण (सु) | १४.१२६ | यज्ञोपवीतकेशांश्च (उ) | ७.६६ | यतोऽस्यामेव मुतिधौ नागानां (सु) | ३१.५८ | यत्किञ्चिच्चरमचरं- (सु) | ३६.२५ | यत्कर्मार्थं वैमयि येषां (उ) | २३१.१ |
| यज्ञिया निचद्रव्याणि यथा- (सु) | १६.२८ | यज्ञोपवीतमात्राणि- (स्व) | १४.२ | यतो दुर्जनगा विद्या (क्रि) | १७.२१४ | यत्किञ्चिच्छ्रुते पापि (क्रि) | १३.६६ | यत्कर्मार्थं वैमयि येषां (उ) | २३१.१ |
| यज्ञियैर्देवैर्दृष्टांति यै- (सु) | ४०.१६ | यज्ञोपवीतनूर्ध्वं च (उ) | ७७.५१ | यतो धर्मविचारस्मिन् (स्व) | २२.६६ | यत्किञ्चिच्छ्रुते पापि (उ) | ३२.७ | यत्कर्मार्थं वैमयि येषां (सु) | १८.३१० |
| यज्ञेतथा महाराज (भू) | ६७.२५ | यज्ञोपवीतसूत्रेण योग (सु) | ४.१३५ | | | यत्किञ्चिच्छ्रुते पापि (उ) | ३७.४४ | यत्कर्मार्थं वैमयि येषां (पा) | १०४.८० |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| यत्तत्परतत्स्वविमुक्ता (स्व) | ३३.४८ | यत्नात्प्रक्षालयेद्विप्र- (क्रि) | ११.६४ | यत्पुण्येनचसंप्राप्तं (उ) | १६२.५२ | यत्फलंभूमिदानेन- (सृ) | ३०.१२ | यत्स्नात्पावुष्करेतीर्थे (ब्र) | २५.२६ |
| यत्संयाक्रियतेकिंचित (उ) | ३८.१७ | यत्नादपिचनेष्यति (क्रि) | २६.२३ | यत्पुरा क्रियते कर्म (भू) | ६४.३१ | यत्फलंलभतेमर्त्यं (स्व) | ३६.१३ | यत्स्वर्धयामयाञ्जित (उ) | १०६.२२ |
| यत्तीर्थसर्वतीर्थानां (सृ) | १८.३०६ | यत्नादयियतोहिंसां (क्रि) | १५.३७ | यत्पुरानरनारीणां (पा) | ६२.१२१ | यत्फलंलभतेमर्त्यः (स्व) | ५०.३८ | यत्रकूर्पूरकदली (उ) | १८८.२५ |
| यत्तुपापोपशांत्पर्यम् (स्व) | ५७.६ | यत्नादपिपरवलेशां (क्रि) | १७.८७ | यत्पुराब्राह्मणोवक्रात्र (स्व) | ८६.४७ | यत्फलंलभतेवत्सत्फलं (उ) | ११८.३१ | यत्रकाञ्चनहर्म्येषु (उ) | ४.२२ |
| यत्तुपृष्टत्वभाभद्रे (उ) | १६८.११८ | यत्पदंचेतसासेव्यम् (स्व) | ६१.८१ | यत्पृच्छसेभागवता (पा) | ८४.३७ | यत्फलंसंहित्यायां (उ) | ५१.५६ | यत्रकार्योमयायज्ञः (उ) | १६५.३ |
| यत्तेवैश्याष्टमेपुण्यं- (स्व) | ३१.१७६ | यत्पदंनमुलभंदि- (उ) | २०१.३ | यत्पूजितंमयादेव (उ) | ६२.२६ | यत्फलंममवाप्नोति- (स्व) | ३१.१८८ | यत्रकाशेवरोदेवो (ध) | १६२.५६ |
| यत्तेसत्कर्म निदिष्टं (उ) | १६४.५४ | यत्पदंसांरसादेवी- (सृ) | ४०.४ | यत्पूराणिदसंदोहकृष्ण (उ) | १८५.१०७ | यत्फलंसनवाप्नोति (उ) | ५०.१४ | यत्रकाशमीरमाश्रित्य (उ) | १८०.७२ |
| यत्तोपकरणंस्पृष्टो (उ) | १२६.६६ | यत्परंनास्तिक्रणस्य (पा) | ६६.५ | यत्पूयिष्यांवीहियवं- (सृ) | १६.२४० | यत्फलंममवाप्नोति (उ) | ५०.१५ | यत्रकुत्रकदाचित् (पा) | ७५.५४ |
| यत्स्वकथयसिभ्रातस्त (पा) | ५६.६१ | यत्परंपरतश्चैव (उ) | ७६.२३ | यत्प्रकीर्णमपांक्तेयं (उ) | ११४.२४ | यत्फलंममवाप्नोति (उ) | ५६.५ | यत्रकुत्रचहर्म्येषु (उ) | ४.३० |
| यत्स्ववंददसिकल्याणि (उ) | ३८.१०२ | यत्पादपंकजरजः (पा) | ३७.६३ | यत्प्रदानानंतलोकान्- (सृ) | २१.८२ | यत्फलंसर्वनीर्थेषु (उ) | ६१.५३ | यत्र कृत्वातपः पूर्वं (उ) | १५७.२ |
| यत्स्वयाक्रियतंग्रहान् (उ) | ६६.१ | यत्पापंक्रूटसाक्ष्येण (पा) | ३३.५६ | यत्प्रदानान्नरः स्वर्ग- (सृ) | २१.१३५ | यत्फलं सर्वपुण्येषु (उ) | ६१.६६ | यत्रकृष्णोन्तिय (पा) | ६६.४० |
| यत्स्वयाचितितंभद्रे (पा) | ८७.५० | यत्पादरजद्रादिदेवै (पा) | १७.३५ | यत्प्रदानान्नरोयाति- (सृ) | २१.१८४ | यत्फलंसर्ववेदानां- (उ) | २५४.२८ | यत्रकेचित्सपः श्रेष्ठ (पा) | ४७.२८ |
| यत्स्वया चेष्टितं पूर्वं (भू) | १८.३ | यत्पादशोचममलंगं (पा) | ४६.१० | यत्प्रदानान्नरोलोक- (सृ) | २१.१२६ | यत्फलंममवाप्नोति (सृ) | ४०.५६ | यत्रक्रीडतिगोविंदो (पा) | ७४.२ |
| यत्स्वयाचेष्टितंपूर्वं (पा) | ६०.५ | यत्पापंपरनिदायां (क्रि) | १२.५४ | यत्प्रार्थमाध्वेमासि (पा) | ६४.१२८ | यत्फलंस्मृतिः सपदि (उ) | २२.१६ | यत्र गंगा च यमुना (उ) | २४.२ |
| यत्स्वया घृष्टितं विप्र (भू) | १२३.५३ | यत्पापंग्रहवध्याया- (सृ) | १८.३१८ | यत्प्राप्यननिवृत्ते (पा) | ६४.१५० | यत्फलंमिं हि नायाति (भू) | ८.६६ | यत्रगंगामहाभागासाधुनां (सृ) | २.५६ |
| यत्स्वयापृष्टमाश्चर्यं (पा) | ७३.१ | यत्पापं ग्रहहत्यायां (क्रि) | १२.५१ | यत्प्राप्यनपुनर्जन्मलभन्ते (सृ) | १५.१६७ | यत्समीपस्थजीवानां (उ) | १६५.६ | यत्रगंगामहाभागा (स्व) | ४७.१२ |
| यत्स्वयामत्सुतीबारौ (पा) | ४२.२६ | यत्पापंभ्रूहत्यायां (क्रि) | १२.५२ | यत्फलंजायतेपुत्र (पा) | ६८.१०६ | यत्साक्षात्स्वेवर्नतस्य (पा) | ८२.१० | यत्रगंगामहारम्या (उ) | २०.४ |
| यत्स्वया सर्वमाख्यातं (भू) | ७१.१ | यत्पापंलुब्धकानां (सृ) | १८.३१६ | यत्फलं तत्प्रजायेत (भू) | १२५.११ | यत्सर्वयाम्यगमनं (स्व) | ५३.६० | यत्रगंगा महारम्या- (उ) | २१.२५ |
| यत्नास्तिष्ठाच्चवीरायय (पा) | ४३.४७ | यत्पुण्यंश्राद्धकृत्याम् (ब्र) | ४.१८ | यत्फलं दशभिर्वयं (उ) | १२५.१५५ | यत्स्वयादेवन्नुदेव (उ) | २२.२६ | यत्रगंगाशतमुखीजात (उ) | २०८.३३ |
| यत्नात्प्रक्षालययात्राणि (क्रि) | १०.१२ | यत्पुण्यगंगास्नानास्तु (क्रि) | ६.१५८ | यत्फलनास्तितपसान (उ) | १६५.५४ | यत्स्तेकीतिरखिलं (पा) | ७१.२४ | यत्रगत्वानरोयोगिन्- (सृ) | ३३.५० |



| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|------------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| यत्रगायन्तिनृत्यन्ति (उ) | ७.५० | यत्रतेदानवाघोराः सर्वे- | ४०.१२३ | यत्रप्रसंगतः स्नात्वा (उ) | १५४.२ | यत्रयत्रकृता वासाः पूर्व- (पा) | १.२७ | यत्रवातायनोद्धतधूप (उ) | ४.२७ |
| यत्रगावस्तुहरिणापाल्यं (पा) | १४.१८ | यत्रतेनिश्चितामुक्तिः (उ) | १२६.६२ | यत्रप्रसूतिर्जगतोविनाशो (स्व) | ३५.३८ | यत्रयत्रगुह्यमेवने (उ) | २३.२६ | यत्रविश्वेश्वरोदेवस्ति (उ) | २.११ |
| यत्रगोदावरोजन्म- (उ) | १८०.६० | यत्रतेमुनयः शान्तानाना- (सु) | १८.१२६ | यत्रप्रासादशिलरे (उ) | १८०.७१ | यत्रयत्रगतोवाहस्त (पा) | ५३.३६ | यत्रविश्वेश्वरोदेवस्ति (उ) | ७१.४६ |
| यत्रगोदावरीतीर (उ) | १८०.३ | यत्रति जगतीसर्पा (पा) | ४२.६ | यत्रबहिषियुनानि (सु) | ६.३३ | यत्रयत्रतवसेवकार्दंन (पा) | २१.२५ | यत्रविश्वरोनामह्य (उ) | १८०.३१ |
| यत्रग्रामेस्थितो नूनं भरती (पा) | १.४२ | यत्रदाशरथी भूत्वा (उ) | २१२.४८ | यत्रब्रह्मसुताप्राचीतत्राहं (उ) | ३४.३० | यत्रयत्रप्रदातव्यं संपिडी (सु) | ६.१२२ | यत्रवीराधनुर्हस्ताः (पा) | १२.४४ |
| यत्रचायं महाप्राज्ञाः पक्षि (स्व) | ५.६ | यत्रदुर्जनसंसर्गं स्तत्र (पा) | ६४.६५ | यत्र ब्रह्मादयो देवा- (स्व) | २५.३३ | यत्रयत्रमतिभ्रंशः (पा) | ११.१३ | यत्रवृक्षामहाघोरावर्बलाः (पा) | ५६.४ |
| यत्रजांबवतापूर्वदशां (उ) | १५०.२ | यत्रदेवालयारम्या- (पा) | ४६.८ | यत्रब्रह्मादयो देवाद- (स्व) | २७.८१ | यत्रयत्रमुना भूमौ पतिता- (भू) | ४३.५४ | यत्रवृक्षादापरित्यज्य (उ) | १५.७१ |
| यत्र तत्र प्रकर्तव्यं स्तान- (भू) | ३६.६७ | यत्रदेवावसंतीह (उ) | २०.२ | यत्रब्रह्मादयो देवा (स्व) | ३८.४१ | यत्रयत्रयथोहाकः (उ) | २४२.२०० | यत्रवेदध्वनिः सम्यग्य (पा) | ६७.७५ |
| यत्रतत्रभ्रमन्भ्रांतो (उ) | १६६.२६ | यत्रदेवाश्चक्रुष्ययामनु (उ) | २४.११ | यत्रब्रह्मादयो देवा (स्व) | ३६.२३ | यत्रयत्रविमानंतत्तत्र- (पा) | ३४.४६ | यत्र वै ताडनं निरयं (भू) | १२२.२१ |
| यत्रतत्रस्तिगंतव्य (पा) | ११२.४६ | यत्रदेवास्तपस्तप्त्वा- (स्व) | ११.२३ | यत्रब्रह्मादिभिर्देवैश्च- (स्व) | २७.५५ | यत्रयत्रस्तिनोतिन्यम (भू) | १२२.२८ | यत्रवैदेवताः सर्वाः कृपयो (उ) | १६४.६ |
| यत्रतत्रहरेर्लोका- (उ) | १२६.५६ | यत्रदेविस्त्रिंशसि (पा) | ६६.७६ | यत्रब्रह्मापत्नीनां (उ) | १८०.८० | यत्रयत्रहृदिभ्यस्तेधावति (स्व) | ३.११ | यत्रवैभरतोरजापालयन्ध (पा) | १.२६ |
| यत्रताः पापविष्णुष्टा (उ) | २०८.१० | यत्रदेवोमहासेनो (स्व) | ३.५८ | यत्रब्रह्मापत्नीनां (उ) | १८०.८१ | यत्रयासिंहिहायैनां (उ) | २१२.८ | यत्रवैममसान्निध्यं- (सु) | ३४.१५६ |
| यत्रताः सर्वदेवानां (उ) | १३६.३ | यत्रधनंरतिनिरतं (पा) | ६७.७८ | यत्रभागावती वार्ता | १६५.१२ | यत्रयोगस्तथात्रानंमुक्ति (स्व) | ३३.४३ | यत्रवैसकलान्येवप- (उ) | १३६.१६ |
| यत्रतीर्णोमहाप्राज्ञो (स्व) | ३६.६३ | यत्रधर्मव्यक्तिकानिकरो- (पा) | ४६.६ | यत्र भार्या बृहं तत्र (भू) | ५६.२३ | यत्रयोगस्तथात्रानंमुक्ति (स्व) | ३३.४३ | यत्रवैसागरेदेवोतिरयं (उ) | १७०.४ |
| यत्रतीर्थकृततेन (उ) | १४३.२२ | यत्रनारायणः साक्षान् (उ) | २१२.१६ | यत्रमंकणकः सिद्धो ब्रह्मि (स्व) | २७.५ | यत्ररामस्तत्रविश्वं (पा) | ४२.१६ | यत्रवैवर्तं महाभागे (भू) | ७६.३४ |
| यत्रतीर्थनजानंतिलोका (उ) | १७०.५ | यत्रनारायणोदेवोतिरयं (उ) | ७५.५ | यत्रमज्जनमात्रेण (पा) | ६४.१० | यत्ररामेण राजेंद्रनरसा- (स्व) | २६.२५ | यत्रशब्दं न ह्यं च भू | ४६.३३ |
| यत्रतीर्थानि सर्वाणि (उ) | २०८.४० | यत्रनिर्वैरिणः सर्वपक्षवो- (पा) | ४७.२७ | यत्रमात्रापित्रा तिष्ठते (भू) | ६२.७२ | यत्ररामो गतः स्वर्गं न भूय- (स्व) | ३२.३६ | यत्रसत्यं च धर्मश्च- (भू) | १०.२१ |
| यत्रतीर्थान्येकानि- (उ) | १४६.१० | यत्ररादोदकं द्रव्य- (स्व) | ३१.१६८ | यत्र मे तिष्ठते भर्ता (भू) | ५८.१६ | यत्रलेख्यगंतं नृणां (उ) | ४.२६ | यत्रसत्यं च सत्यं च कृपा (सु) | ३६.३२ |
| यत्रतीर्थैर्यनः स्नात्वा (उ) | १४५.४ | यत्रप्रबालमाणिक्य (उ) | ४.२१ | यत्रमोहं स्वहृदयैषु (उ) | ४.२४ | यत्रलोकाः स्थितो वृद्धा (भू) | ८.३२ | यत्रसन्निहितोतिरयं- (स्व) | २४.८ |
| यत्र ते तिष्ठते भर्ता (भू) | ५१.३४ | यत्रप्रविष्टमात्रोवैपापिभ्यो (स्व) | १२.७ | यत्रयत्रकुले चैव (त्र) | १.२० | यत्रवटस्यास्यस्य (उ) | २४.७ | यत्रसर्वस्त्रयोधनो (उ) | १६८.१०३ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|--------|--------------------------------|---------|------------------------------------|---------|-----------------------------|--------|---------------------------|---------|
| यत्र आश्विनमाहादेशोदेति (स्व) | ३३.४७ | यत्रस्वाम्यभुवदेवं (उ) | १८०.६४ | यत्राक्षयवदोनाम (स्व) | ३८.३ | यथाऽशुभः कूटपक्षी (भू) | १०३.७४ | यथागीर्भर्येवत्वं (उ) | ३२.१४ |
| यत्र सा तिष्ठते देशो (भू) | ५३.२६ | यत्रहाट कद्दिल्लपयैकं (उ) | ४.३१ | यत्रासो दानवः (भू) | ११०.२५ | यथाऽद्रेण ते प्रोक्ता (भू) | २६.२४ | यथाचान्नवो (उ) | १०३.१७ |
| यत्रमात्रं मतीतीर्थवटो (उ) | १४४.२ | यत्रादिल्लपयैकं (उ) | ८.७ | यत्रास्ति निखरगौरी (उ) | १३.२४ | यथा उत्पानि वीजानि (भू) | ६६.१ | यथाचमानजानति (पा) | १०५.३७ |
| यत्रसात्रं मतीतीर्थवटो (उ) | १६५.७ | यत्रहिरण्यरूपं (उ) | १४०.६ | यत्रास्तेभगवाने (उ) | १८७.४ | यथाकथंचिद्राम्य (पा) | ६७.७६ | यथाचवद्धेतैव (उ) | ३६.३१ |
| यत्रसाभ्रमतीपुण्या (उ) | १४५.६ | यत्रानपो महानीवो (भू) | १६.२ | यत्रास्तेगोमतीतीरे (उ) | १८०.३६ | यथाकर्णनानात्रेण (उ) | १६२.१५ | यथाचत्वयाजार्थे (उ) | १२५.१६३ |
| यत्राभ्रमतीपुण्या (उ) | १५४.३ | यत्रानितीर्थवर्तक (उ) | १३६.४६ | यत्रास्तेजुभकादेवी (उ) | १८७.५६ | यथाकल्पं त्रया (उ) | ८८.२५ | यथाचदेवान् सावित्री (स्व) | १०.८ |
| यत्रसिद्धं नद्या भुवत् (उ) | १.३० | यत्रानिहोत्रजोषूमः (पा) | ४७.२६ | यत्रास्तेभगवान्निवण (उ) | २४२.४५ | यथाकाश्चित्पार्ते (उ) | २१२.१२ | यथाचान्नं नद्यावारि (त्र) | २४.४३ |
| यत्रसिद्धांगनापीनस्न (उ) | ११.३३ | यत्रांगनानांगकल (उ) | ११.३८ | यत्राहं वृद्धिं संपुष्टस्तत्र (भू) | ५६.६ | यथाकाष्ठेस्थितो (उ) | १३२.५६ | यथाचैतामहाभूता (पा) | ४४.३७ |
| यत्रसिद्धांगनाः सिद्धैः (पा) | १७.१८ | यत्रांगारनिभाण्ते (उ) | ११४.१६ | यत्रैन्द्रनीलपंबद्ध (उ) | ४.२० | यथाकुबेरभवनं (भू) | २०.४८ | यथाचिनामणिगच्छत् (उ) | २१२.१३ |
| यत्रस्थितो मुनिवरः (सु) | ४३.१२८ | यत्रांगेषु नृणां तोयं यमं (पा) | १७.७० | यत्रैन्द्रनीपकादंबपर्व (उ) | ४.२५ | यथाकृष्णातथाशुक्ला (उ) | ३८.३४ | यथा छाया तपो नित्य (भू) | ६४.२३ |
| यत्रस्नात्वा च भुक्त्वा (उ) | १६१.६ | यत्रास्मृतिस्तत्रागात् (सु) | ३४.३४४ | यत्रैश्वर्यं न भवेत्तत्र (पा) | ११४.२७३ | यथाकृष्णातथा (क्रि) | ६०.५२ | यथाजगदवस्थानं (उ) | ८०.८५ |
| यत्रस्नात्वा तु देशे (उ) | १५२.४४ | यत्राधिकारः सर्वेषां (उ) | १६८.१०४ | यत्रैष्ट्या बहुभिर्गर्भैः (स्व) | २१.३६ | यथास्वातंत्र्याष्टजगत् (सु) | ३०.२८ | यथाजलधरा व्योम्नि (भू) | ८१.४० |
| यत्रस्नात्वा तु राजेन्द्रसर्व (स्व) | १८.८५ | यत्रानिश्चिन्तमभ्रान्ता (उ) | ४.२६ | यत्रैकस्तुलसीवृक्ष (क्रि) | २४.५ | यथागंगातथा चैयं जया (उ) | १७३.५ | यथाजलेषु भूतानामपि (भू) | ३७.२५ |
| यत्रस्नात्वा न रोयाति (स्व) | ४०.१३ | यत्रानेकगृहोद्भूत (उ) | ४.२८ | यत्रैवोपाजितं कायं (भू) | ६४.५४ | यथागंगातथा चैयं चस (उ) | १३४.३ | यथा जातः स घण्टिया (भू) | ११७.३१ |
| यत्रस्नानं प्रकुर्वीति (उ) | १३४.१७ | यत्राभ्रलिहृषेहानांपवत् (उ) | १८०.६६ | यत्रोन्मदाहिमातंगां (पा) | ४२.४८ | यथागतस्तथा सर्वे (भू) | ५८.४१ | यथाजानाम्यहं चाय (भू) | १.६८ |
| यत्रस्फाटिककुड्यानां (पा) | ३६.२ | यत्रायोद्भवेत त्रधातुः (पा) | १०४.१६६ | यत्रोमदाहिमातंगां (पा) | ४२.४८ | यथागतस्तथा सर्वे (भू) | ५८.४१ | यथा जीर्णं गृहं याति (भू) | ५३.७८ |
| यत्रस्फटिकगालो (उ) | ४.२२ | यत्रावकडितः सश्वादंड (उ) | २१०.११ | यत्रोमदाहिमातंगां (पा) | ४२.४८ | यथागतस्तथा सर्वे (भू) | ५८.४१ | यथा जीर्णं गृहं याति (भू) | ५३.७६ |
| यत्रस्युः सोत्रमानाहः (स्व) | ५१.५४ | यत्राशोकवृक्षस्निग्ध (उ) | ११.३४ | यत्रोमदाहिमातंगां (पा) | ४२.४८ | यथागिरिवराक्रांतः (भू) | ६६.४४ | यथा जीर्णं गृहं याति (भू) | ५३.७६ |
| यत्रस्वाचारललिताः (पा) | १२.४३ | यत्राशोकवृक्षस्निग्ध (उ) | ११.३४ | यत्रोमदाहिमातंगां (पा) | ४२.४८ | यथागिरिवराक्रांतः (भू) | ६६.४४ | यथा जीर्णं गृहं याति (भू) | ५३.७६ |
| यत्रस्वापोलवः प्रोक्तो (पा) | १७.७२ | यत्राशोकवृक्षस्निग्ध (उ) | ११.३४ | यत्रोमदाहिमातंगां (पा) | ४२.४८ | यथागिरिवराक्रांतः (भू) | ६६.४४ | यथा जीर्णं गृहं याति (भू) | ५३.७६ |

श्रीपद्ममहापुराणम्: श्लोकानुक्रमणो

३४२

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| यथातुमांसिनश्यति (उ) | २००.११४ | यथादेवेषुविश्वनात्मा (पा) | ८५.६३ | यथापराव्यावस्व (उ) | २१०.३६ | यथाब्रह्मोक्तमायाति-(स्व) | २६.१० | यथाश्रोष्यतिस्तोत्रमु (भू) | ६८.६ |
| यथातेनयदुर्भेदो (ब्र) | १३.४३ | यथादेवैर्यज्ञनागैश्च (भू) | २८.३ | यथापापापात्रमुच्येत (स्व) | ६२.१३ | यथाब्रह्माहिंसाविज्यात (उ) | १५५.१३ | यथायम करोद्दीमान्ममदुःख (पा) | ४.२६ |
| यथा तेन समाराध्य (भू) | २०.६० | यथाधर्मागदीवीरः (भू) | २२.४७ | यथापुण्यमपुण्यम् (स्व) | ४६.१८ | यथाभक्तिमतानेन (क्रि) | १६.२३ | यथायथातिर्धमात्मा (स्व) | ३६.१२० |
| यथातेमाधवोमातो (पा) | ६५.११ | यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो (भू) | ६४.१६ | यथापुण्यसममित्रं (क्रि) | २२.६६ | यथाभूतंयथावृत्तंयथात्वं (सृ) | ३४.३ | यथायुद्धं रणेजातं (भू) | ११६.८ |
| यथात्मदानपुण्यस्य (भू) | ७७.१०० | यथाध्वनिस्थितंवारि (ब्र) | १६.११ | यथापुत्रस्यचिता- (पा) | ८६.३ | यथा भू सर्वभूतानां (भू) | ६६.७ | यथायुधस्तथागोरी (पा) | ७८.४४ |
| यथात्मनस्तथासर्वाणि (स्व) | ४३.६ | यथानजायतेप्रेतो (पा) | ६४.६६ | यथापूर्वंवरोदत्तोद्भात्यै (भू) | ६.६ | यथामलेष्वस्वमेधो (उ) | १६२.१२ | यथायेनप्रदत्तस्थान्तयास्य (भू) | ११.३७ |
| यथात्वं च तथासौर्व (भू) | ५३.८० | यथानदेवाः श्रेयांस- (सृ) | २५.२७ | यथापूर्वंस्थितौ ती तु (भू) | ५.३ | यथामर्मवमातृणां- (पा) | १०५.६३ | यथायोगेयसहस्रेण (स्व) | ४६.११ |
| यथात्वंपतिनासार्धं (पा) | ५७.५८ | यथानलायाः संवस्ता (उ) | १३२.१६ | यथाप्रकट लीलायां (पा) | ८३.४ | यथामयाप्रभावेत्यावेक्ष्य (उ) | २१८.३७ | यथायोगेस्वरोविष्णुः (उ) | ७८.७४ |
| यथा त्वया कर्म कृतं (भू) | ५५.५ | यथानलेनसंदग्धास्तृणा (भू) | ३.१८ | यथाप्रयत्नतः कुर्यात् (पा) | ८०.५७ | यथा महोदधेस्तुल्योन- (सृ) | १५.२७२ | यथारजस्वलासंगाद (उ) | ३४.४६ |
| यथात्वयाहमानीता (भू) | १०३.७८ | यथानवारिधिसमोलोके (पा) | ८६.१६ | यथाप्रयागस्यमुने (स्व) | ४३.१ | यथा मृतपिडतः कर्ता (भू) | ८१.७७ | यथारसाधिका पृथ्वी (भू) | ६५.४ |
| यथात्वयिप्रसन्नोऽस्मि (क्रि) | १७.२०४ | यथानवारिधिसमोलोके (पा) | ६०.१६ | यथाप्रवर्ततेयज्ञः (सृ) | १६.१२६ | यथाभेतुष्टिरायाति (उ) | ४०.३ | यथारसानांपीयूष (उ) | १६२.१० |
| यथादानेषुभूदानं (उ) | १६२.१३ | यथानवेविदेवस्त्वांसं (सृ) | २२.६४ | यथा प्राप्तं नदी पुरं (उ) | ७०.७ | यथामेतोपिताः सत्यो (घ) | ५५.१५ | यथारामेण वैतीर्थं (सृ) | ३३.४८ |
| यथादारुमयोहस्ती (ब्र) | १६.१० | यथानशीर्यतेवास्त (सृ) | ३५.५६ | यथा प्राप्तं नदी पुरं (उ) | ३७.१०२ | यथामेमनसः सौख्यं (पा) | ५७.२ | यथारूपेण वैतीर्थं (सृ) | २६.१४ |
| यथादित्योहिधमति (उ) | १७.६२ | यथानायादेन्यानिपदानि- (सृ) | १५.३७३ | यथा प्राप्तं नदी पुरं (उ) | २४.४७ | यथा मेमविमत्युग्रं (पा) | ३८.४६ | यथारूप तु भाययास्तथा (भू) | ६३.२५ |
| यथादेवेषुसर्वेषुशक्रः (उ) | २२०.१५ | यथानारायणः श्रेष्ठो- (स्व) | ३३.५८ | यथाप्रोक्तं मयाशिष्ये (घ) | ७५.५३ | यथामेरघुनाथस्तुपूज्यो (पा) | २६.४४ | यथाऽंकयन्मयश्च (क्रि) | १७.८५ |
| यथादिष्टंयजेनायी (उ) | १६१.२२ | यथानारायणः सर्व (उ) | १२८.२६८ | यथानाभिभवेदेनां (उ) | २०२.५७ | यथायथंप्रकृतंयथातीर्था (पा) | १६.२६ | यथाऽर्थं खडिताशेष (उ) | ७१.२६६ |
| यथादीपोनिवातस्थो (भू) | ८६.६३ | यथानिदानिवाभूमिस्तथा- (सृ) | १८.८५ | यथाबद्धाद्युधोपि- (पा) | ११७.३८ | यथयथा कृता भूमो (भू) | ६४.५२ | यथार्थमर्थगुह्यं (उ) | २५४.६५ |
| यथादीपोनिवातस्थो (भू) | ८४.७७ | यथानिद्राव्यदहने (पा) | ११७.५५ | यथाबाल्यगतं (उ) | २०२.४१ | यथायथा च राजा च (भू) | ६७.८८ | यथार्थवर्णकेस्थाने (सृ) | ३०.७५ |
| यथादुग्धेस्थितं (उ) | १६४.६५ | यथापचालयांप्राप्य (उ) | ८७.११ | यथावीजानिरोहं (उ) | ३२.१२ | यथायथान गृह्णाति (सृ) | १६.२४३ | यथालक्ष्मीर्नरेयत्वांनव- (सृ) | २१.४६ |
| यथादेवेनरहितानलक्ष्मी (सृ) | २१.४७ | यथापपीहिपानीयं (पा) | ११४.१११ | यथाविभेदभगवान् (सृ) | २.४३ | यथायथा पश्यति नृत्य- (भू) | १७.३३ | यथावस्मीप्रधान (सृ) | २२.६४ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| यथालोहगिरिप्रांते (उ) | १८.७७ | यथान्यासोमुनीन्द्रेषु (उ) | १६२.६ | यथासर्वगतोविष्णु (घ) | २२७.१४ | यथाहंसर्वदेवपुत्रादिदेवो (मृ) | १५.१६ | यथेष्टामोघसर्वास्त्रो (उ) | ७१.२१६ |
| यथादत्कपिनेदेवं (मृ) | ४.२६ | यथावाक्वितनरस्त्रनिवेद्य (स्व) | २५.११ | यथासकलान्सजद्गुणां (मृ) | ३.१२६ | यथाहरेर्ध्यानवलेन (पा) | ६३.४ | यथेष्टमर्चनानां भोगाः (भू) | ६६.८ |
| यथाधन्वीर्तयिष्यामि (पा) | ११४.४८८ | यथाशक्त्यनुराजोऽत्र (स्व) | २१.२५ | यथासमर्चयैवासीतयैव (मृ) | ६.३ | यथाहरेर्नामभवेनभूप (पा) | ८७.३५ | यथैव नाथदः माक्षात (पा) | ६१.१३ |
| यथावद्वैचित्र्यं देवांते (उ) | २०६.३३ | यथाशक्त्युपपन्नं (पा) | ११४.३४२ | यथासुचिर्परिभाति (भू) | १०२.५० | यथाहरेर्ऋतिभवेन (पा) | ६३.५ | यथैवमादत्रोद्यतातो (पा) | ६५.५५ |
| यथावयोहिमयोगः (उ) | २०८.५ | यथाशक्तानदादेन गंधर्वं (भू) | ३०.७३ | यथासुमतिः पुरुषो (क्रि) | ५.१३४ | यथाहस्तिपदेष्टव्यमपदं (मृ) | १८.४४१ | यथैव मेघः परिगर्जते (भू) | ४३.८१ |
| यथावह्निं प्रसंगाच्च मलं (भू) | ३३.२१ | यथाशक्तानेपुवं (भू) | ३४.१ | यथासुराणां सर्वपां- (स्व) | ११.३१ | यथाहिकदलीनान्यात्त्व (मृ) | ४.१२३ | यथैवसत्यमुक्तं (उ) | २४४.२६ |
| यथा वह्नेः खरतरास्तथा (भू) | ६१.२४ | यथाशशी विराजते (भू) | १०६.४२ | यथासुजते मेघावी (भू) | ३१.११ | यथा हि कर्षकः कश्चित् (भू) | ६७.५० | यथैवात्मानयाविष्णुः (क्रि) | १०.१७ |
| यथावाह्नेकिना कायस्तथा (भू) | ५३.५४ | यथाशास्त्र कथालापः (उ) | ६१.४२ | यथासूर्यस्य विवाणि (भू) | ७५.६ | यथाहिगार्हपत्योग्निरन्यः (मृ) | ३०.७६ | यथैवादित्ययनमशुन्यं (मृ) | २५.२६ |
| यथाविकलवमापन्नो (स्व) | ४०.२८ | यथाशास्त्रेणविधिना (उ) | १५१.२३ | यथासूर्योदयेज्योतिः (उ) | १३२.६१ | यथाद्विपथिकः कश्चि- (मृ) | १८.३६६ | यथैवान्यन्मयादृष्टम् (स्व) | ४६.६ |
| यथाविधिनरैः कायव्रित (उ) | ११६.१५ | यथाश्रृंगरुहोः कायै- (मृ) | १६.२५२ | यथासौदेवदेवेशाह्ये- (मृ) | १६.६ | यथाहिप्राकृतः कश्चित्- (मृ) | ३०.२२ | यथोक्तं कुंजलेनापि (भू) | ६८.३२ |
| यथाविधिनरैः कायव्रित (उ) | १२३.२ | यथाश्रमात्ताविश्रामं (उ) | १३२.११ | यथासौमित्रिभरतोय (उ) | २२६.५७ | यथाहिविहितोयर्मो (मृ) | ४१.८० | यथोक्तं कुष्ठेयस्तु (उ) | ६१.१३ |
| यथाविधि ललाटे वै (पा) | १०५.१४० | यथा श्राद्धस्य वै चित्तं (भू) | ३७.४८ | यथा स्त्री गायते दिव्या (भू) | ७७.२३ | यथाहि सायन्नेन्निदं (भू) | ४७.५२ | यथोक्तं च कृतं श्राद्धं (उ) | ७७.३१ |
| यथाविधि समम्यच्चं (मृ) | ३४.२५० | यथा श्रुतमुविख्यातं- (मृ) | १.२७ | यथा स्त्री गायते दिव्या (पा) | ७४.१८८ | यथेच्छरूपधारीच- (मृ) | २१.३ | यथोक्तं तु त्वया देव (भू) | १०२.६८ |
| यथाविधितुल्यं चानो (त्र) | १६.२२ | यथासत्यमसत्यं वा (स्व) | ४६.२६ | यथास्थानेषुतुल्यं (पा) | ७६.२१ | यथेच्छं त्रिणजोदीर्णं (उ) | १८६.२८ | यथोक्तं देव ऋषिणा (भू) | १०७.१३ |
| यथा विनाश तेजोभि- (भू) | ४७.६ | यथासमस्तदानानामन् (क्रि) | २२.६८ | यथास्यात्सुरसंतुष्टि (पा) | ६७.८३ | यथेच्छावासनिगताः (मृ) | ३.१३६ | यथोक्तं हि त्वया भद्रे (भू) | ८१.६ |
| यथाविप्रास्तथाक्षत्रा (उ) | ७१.५८ | यथा समस्त देवानां (क्रि) | २२.६३ | यथास्याद्धर्मश्रवणा- (उ) | २८.३५ | यथेत्युक्त्वापुत्रु (पा) | १११.५३ | यथोक्तकारिणं दृष्ट्वा (उ) | ६४.२१ |
| यथाविमानेवकुंठे (उ) | २४२.३४८ | यथासमस्त शास्त्राणां (क्रि) | २२.७१ | यथास्याद्धिमलाकीर्ति (पा) | ५८.६ | यथैदोसौ महाप्राज्ञः (भू) | ८१.१ | यथोक्तचारिणः सर्वे (स्व) | ३१.४१ |
| यथाविष्णुमयंसर्वं (उ) | ७८.७३ | यथा संभवमेतेरुह्या (पा) | ११४.३१३ | यथास्वनिगमेनोक्तं- (पा) | ६५.७२ | यथेश्वरस्यसभयाः (क्रि) | ११.३७ | यथोक्तविधितप्राज्ञः (उ) | १३.७४ |
| यथाविष्णुः समागत्य (भू) | १००.३ | यथासंभवसंयुक्ते (पा) | ११४.६१ | यथाहाराधनादप्यं (उ) | २४४.२५ | यथेष्टकामसुभीच्छन्तचः (मृ) | १८.२८० | यथोक्तविधिताराजा (उ) | ५८.३२ |
| यथाविष्णु स्तथा (उ) | ८२.२८ | यथा संभाविकां तात (भू) | १२५.३२ | यथाह्वान्यनमांकुदस्तथा (मृ) | १४.६ | यथेष्टातवंप्रिद्रे (उ) | २४०.२८ | यथोक्तविधितालोकेते (उ) | ६३.८ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| यथोक्तविधिना विप्र (क्रि) | ५.६२ | यदयद्रोचतेतुभ्यं-(सु) | २१.२११ | यदाचनमृतश्चासौ (उ) | १६७.१५ | यदानूनंत्वयोल्लुष्टामत् (क्रि) | १७.२४२ | यदायदाभुरोस्माकं-(पा) | ५.१५ |
| यथोक्तविधिनास्नान- (उ) | १२५.१६८ | यदंभः स्नानमात्रेण (उ) | १२६.२७२ | यदाचसुखसंनान (पा) | ६८.८५ | यदानेतुंमनश्चक्रुः (ब्र) | ७.२८ | यदायदाद्रिजश्रेष्ठ (क्रि) | ६.१५५ |
| यथोक्तेनविधानेनपंच (उ) | १२४.१८ | यदपाङ्गाभ्रित्सर्व (उ) | २२७.१६ | यदाचाकंगुरोसोमेवारब्धे (सु) | ३२.७२ | यदानेतुंमनश्चक्रुः (ब्र) | १२.२६ | यदायदामहाभाग दिव्या (भू) | ८५.६६ |
| यथोक्तावर्णस्य (उ) | २५३.३४ | यदपाङ्गक्षितालोक (उ) | २३१.२७ | यदाजन्मकृतैः पुण्यै-(पा) | ३०.७३ | यदानोद्धरसे देवि (भू) | ५२.३१ | यदायदामहाभागो (पा) | ६२.५१ |
| यथोद्दिष्टमयाप्रोक्तं-(स्व) | ६.३६ | यदपुष्टमयाप्येवमज्ञातं (पा) | ७४.१२ | यदा जीवति मे (भू) | ४५.५ | यदापकीर्तिः साध्वि (क्रि) | ४.७३ | यदायदास्नानंनुजा (पा) | ५.८ |
| यथोद्दिष्टं सचन्द्रस्य (पा) | ६५.१३८ | यदभ्यासवलाज्ज्ञानं (उ) | ८०.७३ | यदातस्मात्प्रचलितो (उ) | २१६.३६ | यदा पश्यति तां राज्ञीं (भू) | १०५.८ | यदा यदा पश्यसि- (भू) | ४२.१८ |
| यथोन्मादाद्विदुष्टस्य (सु) | ४३.३४५ | यदभ्युदशालानुमोदते (सु) | ६.३४ | यदातिथिगृहे याति (भू) | ३७.३३ | यदापादुर्महाभागः (सु) | १४.६१ | यदायद्रुकुले जातः कृष्ण-(सु) | १७.१५४ |
| यथोपदिष्टं गुरुणातया (उ) | १५३.५५ | यदाकालकल्पस्ते काल-(सु) | ४१.३०० | यदानुकर्मसंयोगान्मर्त्यं-(स्व) | २०.१२ | यदायाम्यंतुभवति (सु) | ३२.७० | यदाराजा हरिश्चंद्रो-(भू) | १२.१२७ |
| यथोमासवर्तनारीणां (पा) | ८५.६४ | यदर्थभगवान्ब्रह्माभूनी (सु) | १६.४६ | यदातुविषमोभावमा-(स्व) | ३.६ | यदाप्नोति तदाप्नोति (उ) | ७१.२५ | यदावरमदोस्तिक्ताश्चोदितः (सु) | ४५.२७ |
| यथोपलेनदेहस्थं (क्रि) | ११.१४७ | यदर्थराज्यवसतिर्भया (क्रि) | ५.६६ | यदा त्वं श्रोष्यसे पुण्यं(भू) | ६७.६५ | यदाप्राप्तास्तटतेतु (उ) | १६५.१४ | यदावांछ्यमसीनारी (पा) | ६६.४८ |
| यदभरंवेदगुणं (उ) | २२७.६७ | यदर्थोभयताश्चैवसमुद्र (क्रि) | ५.११५ | यदा त्वमिच्छसेभोक्तुं (भू) | ७७.१०३ | यदाप्रेरयते बुद्धिस्तदा (भू) | ७.६३ | यदाविशुद्धास्तपस्यादि (पा) | ७३.४५ |
| यदतीतंनच्छेद्यं-(उ) | २०.८० | यदशीति सहस्राणि (भू) | ६४.४६ | यदा त्वां निहतं दुष्टं (भू) | १०३.६१ | यदा भवति संकतिर्वर्षी-(भू) | ३६.७३ | यदायोजमहंनस्मैतत्तप्त- (पा) | ७३.१५ |
| यदत्रशेषतेदानंस्वल्पं (उ) | १२२.५६ | यदश्वस्वतलेविप्र (क्रि) | १२.४२ | यदा ध्यान गतोह्यात्मा (भू) | ८.१० | यदाभवतिस्वल्पातु(उ) | ३७.८५ | यदाशुद्धातदान्येन-(सु) | २२.१०१ |
| यदत्रतेमयाकार्यं-(सु) | १८.२७ | यदाकर्णमेतत्प्रेयोवां- (पा) | ७०.१ | यदानज्ञातंवंतस्तद (उ) | १६७.५७ | यदाभिषिक्तः सकले (सु) | ७.६६ | यदाश्रया जगद्वृत्तिर्व (उ) | १७५.१० |
| यदहष्टोसिजगन्नाथ (उ) | १२८.२११ | यदाकायस्तदाजने (पा) | ११४.४३३ | यदानज्ञायतेनामतस्य (पा) | ६७.६८ | यदाभ्यासपराधीनोपंच (उ) | १७५.२४ | यदासंग्राममह्येत्वं-(सु) | १७.१४६ |
| यदद्यमेत्वयाष्टमिदं (पा) | ८२.६६ | यदाकृष्णोभुवंत्यक्त्वा (उ) | १६५.५६ | यदानंदकरं ब्रह्मभगवन्(सु) | १२.३ | यदामनसि संपन्नं (स्व) | ५६.३ | यदासर्वपरित्यज्य (पा) | ६६.२२ |
| यदधीनायदावेशात (पा) | ११०.८० | यदागच्छेत्तदास्याज्या (ब्र) | १८.२४ | यदानंतुपुरेप्रोक्तं (या) | ८७.४० | यदामयितवस्तेहो (क्रि) | १७.२३१ | यदासंमदादयिन-(पा) | १५.४८ |
| यदध्वर पुरोडाशचर्वण (उ) | १८०.१५ | यदस्माकंमहदीर्घतेज- (सु) | १४.१०४ | यदा न जक्यते मोहावव-(भू) | २८.३६ | यदामायाशिवस्त (उ) | १६.२ | यदासाश्रमीनीर्थाथह्य (उ) | १४४.१७ |
| यदंतरेतद्गमनंशाश्वतम्(स्व) | ६०.२० | यदाचमीतवाद्येननावहाव (सु) | २२.२५ | यदा नाम दातं पुण्य- (भू) | ८६.५८ | यदामाहंनानाकृद्- (पा) | २८.७३ | यदा सा हंसते चैव (भू) | ११८.३२ |
| यदन्यत्सुकृतं कर्म (क्रि) | १२.३४ | यदाचतोर्यकालेन-(स्व) | १८.१२० | यदानीता कामकन्या (भू) | ८०.३ | यदामृतो वलवान्पुं-(भू) | ५४.२४ | यदासूर्य दिनेहस्तः (सु) | २३.१०६ |

श्रीषष्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३४५

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| यदासोमदिनेषुक्ला-(सु) | २६.४ | यदिजीवामितस्कालं-(सु) | ३३.१३८ | यदित्वंमोचयस्येतान् (पा) | ३०.६६ | यदिनारीनमभ्रंनुदविष्णुं (पा) | ११२.७ | यदिमुक्तमिहात्येन (सु) | १३.३२४ |
| यदानोक्तायतेयाम्यैः (स्व) | ६१.६४ | यदिनववसेन् भासं (स्व) | ३२.१४ | यदित्वंवेरितसधर्मं उ | १६३.५७ | यदिनृन्वरांरोहे (क्रि) | २३.२५ | यदि ने सत्यमस्तीति (भू) | ४५४ |
| यदास्थापमहानंदयानं (उ) | १७५.१२ | यदितंनृमिदेश (उ) | ६.२४ | यदित्वहमनुग्राह्यस्त्व-(स्व) | ११.५ | यदिवागोयदिशठोयत्रि-(स्व) | ३३.३६ | यदि मे सुप्रियं कार्यं (भू) | १७.१४ |
| यदाहं कन्यकाजात (उ) | १४.१६७ | यदिनुष्टोसिदेश (क्रि) | २.७२ | यदित्वहमनुग्राह्यो(स्व) | १०.१३ | यदिवास्थपतिभद्रंतेतो-(उ) | १३.२२१ | यदिमेस्तितपन्त्वनं-(सु) | १७.१४५ |
| यदाहं कन्यकाजात (क्रि) | ५.१३२ | यदितुष्टोसिदेवत्वं (उ) | ६६.१७ | यदिदंक्षमयायुक्तम-(सु) | १६.३३१ | यदिपुण्यमिदंविप्र (ब्र) | ११.४ | यदिमिहृतिरेतुंहारः (उ) | १६.३६ |
| यदाहं नास्मिगुणिनी (क्रि) | ८.४३ | यदितुष्टोसिदेवेशयदि-(स्व) | १६.८ | यदिदंभारतंवरं पुण्यं-(स्व) | ६.१ | यदिपुत्रोसिमेतूर्णं-(उ) | १८.१.२४ | यदियुक्तमयुक्तं-(पा) | १०४.७७ |
| यदाहं तेन निहृतं च (उ) | २१०.२४ | यदितुष्टोसिदेवेशयदि-(स्व) | २०.४८ | यदिदंभारतंवरं पुण्यं-(पा) | ७३.२४ | यदि पृच्छसि मां भद्रे (भू) | ४६.१५ | यदिराज्यव्यवसायार्थं (पा) | ११०.५७ |
| यदाहं पुत्रपुत्रेति (पा) | ८७.७८ | यदितुष्टोसिमेदेव (उ) | ३८.६५ | यदिदंलुप्तधर्मार्थं (सु) | ४१.६३ | यदिपृष्टस्त्वया (उ) | १६३.६८ | यदिरामः समागत्य-(पा) | ३६.५३ |
| यदाहं स्तेनसप्तम्या (सु) | २५.४ | यदिनुष्टोचवादैत्यो (क्रि) | २.५७ | यदिदूताः समानेतुं (ब्र) | १२.२३ | यदिप्रवर्तयेत्त्वां (उ) | १६४.१५ | यदिरामांघ्रियुगुलं (पा) | २७.४० |
| यदिकर्मविपाके न (क्रि) | २५.३७ | यदि ते क्षुद्रप्रतीकारो (भू) | ६७.७१ | यदिदूताः महाभागाः (भू) | ४१.३७ | यदिप्रवर्तयेत्त्वां (पा) | ११४.१३६ | यदिराज्यहृतांसीता (पा) | ११६.१८५ |
| यदिकामं प्रयच्छेथा-(पा) | ११७.१६२ | यदि ते पातकचित्तं (क्रि) | १५.१७ | यदिदूताः महाभागाः (भू) | ४१.३७ | यदिप्रसन्नोदेवेश (पा) | ११४.१३६ | यदिराज्यहृतांसीता (भू) | ६६.१२४ |
| यदिकिंचिच्छुभं कर्म-(सु) | १६.१८३ | यदि ते पातकचित्तं (क्रि) | १५.१७ | यदिदेवमयासम्पदं-(पा) | ६६.४८ | यदिप्रसन्नोभगवान् (पा) | ११६.२०६ | यदिवापमुत्पुनंस्याद्विधा-(भू) | ६६.१२४ |
| यदिकृत्स्नोममयाधर्मो-(सु) | १३.२४६ | यदि ते रोचितं वरिदानं (सु) | ३०.१२६ | यदि देव वरो देवो मम (भू) | ६६.१६ | यदिभक्तिर्भवेदेपां (पा) | ८१.२३ | यदि वा मन्यथो वापि (भू) | ५८.३६ |
| यदि कृष्ण प्रसन्नोसि (भू) | २२.२६ | यदि ते रोचितं कांते (पा) | ६२.६५ | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिभवान्दद्यात्यभयं (पा) | ५.७ | यदिवास्तिमयाकार्यं-(सु) | १६.१६० |
| यदिगुह्यं न चैतत्कथयत्व-(सु) | ३६.८० | यदि ते रोचितं राज- (पा) | १०२.२६ | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिभावुक तुष्टो (उ) | ६८.२१ | यदिवाचं भुंजति (पा) | ७६.५३ |
| यदिचंचलतशोजिह्वा (उ) | १७३.६ | यदि ते सत्यमस्तीह (भू) | ८१.२४ | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिभंडैकतेनरः कश्चित- (ब्र) | १६.५ | यदिवोमस्तिप्रकार्यान्ति-(सु) | ४२.६६ |
| यदिचेन्नक्रियतेस्नानं (उ) | १३७.१२ | यदि त्वं देवदेवेश तुष्टो (भू) | ८३.८० | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिभुक्तेनरः कश्चित-(ब्र) | १६.२० | यदिसत्यं तदाप्नोतु (उ) | १६७.७८ |
| यदिचेन्नक्रियतेस्नानं (उ) | १३७.१२ | यदि त्वं देवदेवेश तुष्टो (भू) | ८३.८० | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिभोमोरविसुतोभा-(सु) | ३४.३२१ | यदिस्वमहिलां भुक्त्वा (पा) | २७.४१ |
| यदिचैवमृतिः शीघ्रं (पा) | ११०.८१ | यदि त्वं मम तुष्टोसि-(उ) | ७.८४ | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिमददशं न कार्यं (उ) | ४२.४२ | यदिस्वगं ममोष्टते (उ) | ५१.१५ |
| यदिच्छाते भवेद्विप्र (ब्र) | २६.२२ | यदित्वमिच्छते वैरं पुण्ये-(स्व) | १५.३६ | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिमद्वारुणिभिन्नाः (पा) | ३३.३७ | यदीच्छसि मृगीनेत्रे (क्रि) | ८.६६ |
| यदिजानासितत्त्वेन (क्रि) | ३.४१ | यदित्वं भवेत्प्रसन्नोसि (उ) | १५३.१५ | यदिदेवाः प्रसन्नामे (भू) | १.४६ | यदिमांसं हितं मातर्वने (सु) | १८.३५० | यदीच्छीसादुहितप्रचारान्-(पा) | ६२.७८ |

श्रीपद्ममहाराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३४६

| | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|----------------------------|--------|-------------------------------------|--------|
| यदीयं प्राप्यते तहि (भू) | ७७.४५ | यदेतत्कथितं ब्रह्मस्तीर्यं (सु) | १६.१ | यद्भुजतः केशवो (क्रि) | ११.१६१ | यद्यद्वदाम्यहं भूप तत्र (भू) | ७६.८ |
| यदीपकीतिकर्पूर (उ) | १६०.४ | यदेतत्तपइत्याहुः सर्वा ध्रम (सु) | १८.३३ | यद्भुजानः पिवस्तिष्ठ- (पा) | १४.१४७ | यद्यधीतेषडंगानिवेद- (सु) | १६.३१७ |
| यदीयकुसुमामोद (उ) | १६०.३ | यदेतत्पीठरहितं शिव (पा) | ११४.३५६ | यद्गोर्षः पालितं शूर- (सु) | १८.३१२ | यद्यनेन भवतं वरैषाण्ये (पा) | २३.७६ |
| यदीयमत्तमातंगदान (उ) | १८६.२ | यदेतद्दुःखमाख्यातमेत (सु) | ३२.२० | यद्घ्राणान्नरकगच्छ- (उ) | ३३.५३ | यद्यपि प्रक्रियावद्वैरिद्विषां (भू) | ११३.७ |
| यदीयस्मरणात्सद्योनि (उ) | १६४.७० | यदेतद्भवताप्रोक्त- (सु) | ३५.८३ | यद्दत्तचक्रहीनायत (उ) | २२४.३८ | यद्यपिस्फुर्यंहाः सर्व- (पा) | ६६.२१ |
| यदीयस्मरस्य प्रीत्यर्थ- (स्व) | ५७.८ | यदेताभ्यां कृतं कर्म (क्रि) | ३.६८ | यद्दुःखं मरणे जंतोर्न (भू) | ६६.१३१ | यद्यप्येतत्कठिनी (क्रि) | २.६४ |
| यद्दुःखं महाराज (भू) | ७८.३१ | यदेतेषु परं कृत्य (उ) | ८०.१२ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्यवसरोनास्ति मम- (स्व) | ३१.२४ |
| यद्दुःखं च मया देवी (सु) | ४३.१७६ | यदेतिराजितं पुण्यं तस्यै (सु) | ५.५३ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्यहं दुःखवतां (क्रि) | १२.८२ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (उ) | ३७.८४ | यदेव भापसे भद्रे तदेवं (भू) | ७६.११ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येतद्द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १३.१३५ |
| यद्दुःखं परमं धामता- (उ) | २२६.४७ | यदेव रामदेवादिबुलं (पा) | ६७.७२ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येतो महाबाहो (क्रि) | २३.४६ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (सु) | ३३.१३३ | यदेतेषु लोकोमासिह- (पा) | १०४.३७ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (उ) | २१३.२५ | यदेतत्पिलोनाम ब्रह्म- (सु) | ४०.५७ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (उ) | २०४.१६ | यदेतत्पुत्राणं (पा) | ११५.३६ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (सु) | २२.६२ | यदेवमभवददेशो राजा (पा) | ४६.३४ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (सु) | १४.५० | यदेवायास्यसि प्राची- (सु) | १८.१८० | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (उ) | २४५.४ | यदोः पुत्रा महावीर्या (भू) | १०६.५५ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (उ) | १०६.२ | यदोर्वीर्यं तदा श्रुत्वा (भू) | ८०.१३ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (पा) | ७२.२३ | यदोश्चैत्र सुता वीराः (भू) | १०६.५२ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यद्दुःखं त्वमिनि स्नायान् (सु) | ३८.८२ | यदक्षयं परलोके देवपि- (सु) | २१.८१ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |
| यदेकीकरणं तच्च विष्णु (क्रि) | १७.६३ | यद्गृहेषु दुरीनारी (उ) | २१६.५४ | यद्दुःखं भयं दप्राप्यं (उ) | ६१.८ | यद्यप्येव महादोषाः (भू) | ७२.५ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|----------------------------------|--------|
| यद्यस्य दिष्टमेवास्ति (भू) | १०३.४० | यद्वस्तुहरयेदत्तं (क्रि) | १६.४६ | यन्मयावात्रकत्तव्यं-(सृ) | ३४.४६ | यः परं श्रूयतेज्योतिर्यः (सृ) | १६.३४ | यः पूजयेत्सकृन्माधे (क्रि) | १०.२० |
| यद्यस्यनाभवत्स्थानं (सृ) | ३०.२६ | यद्वागुहादौप्रकृतौ (स्व) | ६०.१३ | यन्मयाचितितदुष्टं (पा) | ६४.१४२ | यः परः पुरुषोविष्णु (उ) | २२७.४ | यः पूजयेद्वारिचक्रं-(स्व) | ३१.११८ |
| यद्यस्यापि भवेद्योग्यं(भू) | २७.३ | यद्वातमपिजानंति (उ) | ८८.२२ | यन्मयापद्यमुक्तंतुतेनेवं-(सृ) | १५.१३३ | यः परार्थेपरिस्थागः (सृ) | १६.२४६ | यः प्रदद्याच्च विप्राणामुपा (मृ) | ६८.७ |
| यद्यहंब्रह्मचर्यंचजन्म (पा) | ४५.३१ | यद्विज्ञातंमयासम्पगृप्ति-(सृ) | ३६.१४ | यन्मयावुद्धिहीनेन (क्रि) | १७.१५७ | यः परित्यज्यवैशाखं (पा) | ६६.२८ | यः प्रबोधयतेलोकान् (उ) | ३७.४२ |
| यद्यहंभुवनंसर्ववशेन (पा) | ६.४१ | यद्विलोकयन्तराः सर्वे (उ) | १८०.४७ | यन्मयासुकृतंकर्मकृतं (उ) | १२६.४६ | यः परीक्षेतमूढात्मास-(पा) | ६६.७४ | यः प्रमातामहदवापिपित-(उ) | २१४.८ |
| यद्यहंमनसावाचाकर्मणा (पा) | ४५.२३ | यद्विश्वकर्मणाकोशं (उ) | ६.३५ | यन्मलावयवस्पर्शः-भू) | ६६.८२ | यः पश्यतिजगन्नाथं (क्रि) | १८.५० | यः प्रयच्छतिमुहयायत् (उ) | २७.५० |
| यद्यहंमनसावाचाकर्मण (पा) | ५०.५३ | यद्वेदवाक्यधर्मं (पा) | ६७.८६ | यन्मापुच्छसिक्तैतियतम्-(स्व) | १५.१ | यः पालतिभूतानिधर्मं (उ) | १२६.४१ | यः प्रयच्छतिवैशाखायां (पा) | ६८.४४ |
| यद्येकमपिवैशाख (पा) | ६६.६० | यद्वेदवादाभिरताविदेहं(स्व) | ३५.४२ | यन्मयायाततंसर्वं (पा) | ८४.४० | यः पीडामाश्रमस्थानामा(भू) | ६७.७३ | यः प्राणिहिसकोमर्त्यः (क्रि) | ६.११७ |
| यद्येनोपकृतंयस्यसहस्र-(सृ) | ३०.२३ | यद्वत्तचोपदेक्ष्यामितत्कुष्ठ(सृ) | २३.१०८ | यन्मुखेरामारमेति (उ) | ७१.३५ | यः पुत्रो गुणवान्जाता (भू) | ५०.१६ | यः प्रातः सायमि (सृ) | ४६.६७ |
| यद्येवणात्रैयुष्माकं (सृ) | १३.३६५ | यद्वत्तपूजनंयच्च (उ) | २०१.६३ | यन्मुखेरामारमेति (भू) | ३६.६ | यः पुनः कुरुतेगीतं (उ) | ३७.४१ | यः समः कारिण्यतिमुह्याया(पा) | ५४.३४ |
| यद्येवतेस्त्रिभुवभाव-(सृ) | १७.१४० | यद्वत्तपश्यतिदेशं (क्रि) | १३.११६ | यन्मेस्तिसुष्ठुतंकिचित्ते (उ) | १२६.३८ | यः पुनः पूजयेद्भवत्या-(स्व) | ३१.१२६ | यमदंडोतरस्थायि (क्रि) | १७.३० |
| यद्येवमांससुरूपत्वादि- | १६.१६६ | यतारंभातलिकृत्वा (उ) | ७.७ | यः पठिष्यतिभूपस्य (उ) | २०३.६७ | यः पुनः श्रद्धयायुक्त (उ) | ३३.४३ | यमद्वनगणश्रेष्ठस्वडो (क्रि) | १५.५५ |
| यद्येवानभवेद्भायः-(सृ) | ४६.६ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेच्छृणुयादापि-(सृ) | २०.१४० | यः पुनः श्रद्धयायुक्त (उ) | ३३.४३ | यमद्वताः पलायंते (त्र) | २१.३० |
| यद्येषाप्रतिहंतव्या-(सृ) | ४१.१२१ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेत्तद्वर्भवत्या (उ) | १२४.६५ | यः पुनः सकलं चेदं (सृ) | ३४.३८४ | यमद्वतावयंसर्वे (क्रि) | ७.३७ |
| यद्रहोनुभवस्तस्यपार्य-(पा) | ७४.५ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेत्कल्पमुत्पाये (स्व) | ३६.११५ | यः पुनस्तत्रभावेन नरः (सृ) | १८.२०४ | यमद्वतास्तदादृष्टवै (पा) | २०.६३ |
| यद्रूपंतेकृपासिधोपरमा (पा) | ८२.५८ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेत्तोतकंदिवं प्रप्रतः(स्व) | १५.६१ | यः पुनस्तुलसीमालाम् (त्र) | २२.१३ | यमद्वतास्तुसंप्राप्ताः (पा) | २०.५० |
| यद्रूपंवीर्यललिता (पा) | ५७.३६ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेत्प्रायश्चित्तं द्वारि (सृ) | ४६.२०७ | यः पुनान्पतिततेपदां (उ) | २१४.१०६ | यमद्वतैस्ततोवद्वापापै-(स्व) | ३०.३६ |
| यद्रूपः स्थलमाश्रित्य (सृ) | २६.६ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेत्प्रयतः शशोतं (भू) | ८७.३३ | यः पुराराधितः शंभु (पा) | ११७.१७८ | यमद्वतैस्ताड्यमानाः (क्रि) | २३.६६ |
| यद्रूपोभवताप्रोक्तं न च (क्रि) | ५.४२ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः पठेत्तत्कंदसंबंधाया-(सृ) | ४४.२१६ | यः पुरासुखं संवादे (उ) | १०३.१६ | यमनियमयज्जनावंवेदाम्या(स्व) | २०.३६ |
| यद्रूपसिद्धादिभिः (सृ) | ७.५ | यतर्लेंदुलचित्रेह्य (पा) | ७७.६० | यः परं परयाप्रोक्तं (उ) | ८०.८२ | यः पूजयेच्चगोविंदं-(स्व) | ३१.१२८ | यमः पश्यतिदुष्टं-(भू) | १६.१२ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|--------|-----------------------------|--------|------------------------------|---------|
| यमदूतैर्महाघोरैर्नीय- (भू) | ६७.१०७ | यमस्यवचनं श्रुत्वा (ब्र) | २.२७ | यमाश्चनियमाश्चैव (पा) | १०६.५३ | यमैश्चनियमैश्चैव (उ) | ८०.३६ | ययौपुरीसचक्रांकांमुवाहु (पा) | २३.३ |
| यमः प्राहायसंपूज्य- (पा) | १०६.६६ | यमस्यसन्निधिजग्मुः (क्रि) | १५.६८ | यमाहुराकाशगमंशोघ्र (सु) | ४१.२६ | यमैः सनियमैर्युक्तः (पा) | ६१.३ | ययौवारणसीनाम (उ) | १८२.२३ |
| यमंप्रोचुः समीताश्च (ब्र) | ६.२७ | यमस्यापि विरोधेन (भू) | ८१.२० | यमुद्दिश्यसदानाथं (उ) | ७१.३१५ | यमोमहिषमास्थायसेना (सु) | ४२.६५ | ययौहृष्टमनास्त (पा) | ७५.१६६ |
| यमब्राह्मणसंवादो (पा) | १०३.१२ | यमस्याराधनं ब्रूहि (उ) | ६६.१ | यमुनागमंगयासाद्धं (स्व) | ३६.७१ | यमोयमइतिप्रोक्तो- (सु) | १६.३०३ | यययितु राजाभूदबलि- (सु) | १३.१६५ |
| यमपीडां प्रवक्ष्यामि (भू) | ७०.१ | यमाक्षरकृत्तांमालां (उ) | १२१.१२ | यमुनांगौपकन्याश्चतथा (पा) | ७३.२७ | यमाकयापिवारामय (पा) | ११५.६३ | ययुपितोलम्बघ्नीबोलं- (सु) | ३२.२६ |
| यमलार्जुनयोर्मध्ये (उ) | २४५.६० | यमाज्ञयाततोदृतः (क्रि) | ३.५३ | यमुनाचथकावेरीकृष्ण (सु) | ४५.१५२ | ययाचेतमणिवरंकदाचिन् (उ) | २४६.६ | यवव्रीहिलिलः सम्यक् (उ) | १२४.३८ |
| यमलोकनपश्यतिकर्मणा (स्व) | ३१.२२ | यमाज्ञयाततोदृता (ब्र) | १५.५५ | यमुनाजलसंपूर्णा (ब्र) | १३.३५ | ययाति नाम धर्मज्ञं (भू) | १०६.४६ | यवाद्याः शालिपर्यताः (भू) | ६६.१२ |
| यमलोकगतानांतुसर्वं (पा) | ११२.६६ | यमाज्ञयाततोविप्र (ब्र) | १७.२२ | यमुनातीरगराजन्निम्न (उ) | २२१.६ | ययातिसत्यसंपन्नं धर्म- (भू) | ६४.७ | यवान्नमपिनोभुङ्क्तेजलं (पा) | १.३१ |
| यमलोकं गतास्तःस्तु (भू) | ८६.४५ | यमाज्ञयाततो विप्ररथ (क्रि) | २३.५५ | यमुनातीरवतिन्याद्धार (उ) | २०८.६२ | ययातिः सत्यसंपन्नः (भू) | ६४.८ | यवैवीहितिलैर्मरिगो (उ) | ५८.२६ |
| यमवाक्यमिति श्रुत्वा (पा) | १०६.५८ | यमाज्ञयातस्यदूताः (ब्र) | २.२१ | यमुनापश्चिमेतीर- (पा) | ८२.६१ | ययातिर्नाम धर्मत्मा (भू) | १०६.४८ | यशैश्वर्यमेवापितथा (उ) | १३५.१०२ |
| यमवगमांतदाद्भुत्वा (उ) | १०६.१८ | यमाज्ञयानेतुमिमं वयं (क्रि) | ७.७६ | यमुनापितथैवसागायात्री (सु) | १८.१८५ | ययातोः पंचदायादास्ता (सु) | १२६.५५ | यशः कीर्तिमवाप्नोति- (सु) | २६.५२ |
| यमश्चयमुनाचैवयम (सु) | ८.३६ | यमादेशात्ततस्तेषां (क्रि) | २०.४६ | यमुनामोक्षदाप्रोक्ता (स्व) | २६.४६ | ययाभगीरथो राजा (स्व) | ३६.१२१ | यः संभुज्जाविच्छिद्यते (पा) | १०६.७४ |
| यमः संपूज्यावनतो- (पा) | १०६.१०३ | यमानुचरनिर्वेजोनाभव- (पा) | ४६.३५ | यमुनायांतुर्किपुण्यम् (स्व) | ४५.२२ | यया वयं महाभाग (भू) | १.२२ | यः सूरः कपिलंगावै- (पा) | ३३.५१ |
| यमः सर्वहृस्तेनमृत्यु- (सु) | ४१.२३० | यमाश्चनियमाश्चैव (उ) | ८०.१० | यमुनायांमुगाक्ष्यं (उ) | १३३.१६ | ययासदेवोभगवान् (स्व) | ५४.३४ | यः शृणोति इमां गृष्टि (भू) | २७.३२ |
| यमस्तुदक्षिणहस्तेयामे- (स्व) | १५.६ | यमायतेनवाल्प्रांतुर्कर्म (उ) | ११३.१७ | यमुनायांविशेषेणस्नान (स्व) | २६.४ | ययासुवर्णकारस्य- (सु) | २१.१६ | यः शृणोति नरो भक्त्या (ब्र) | ४.३६ |
| यमस्तुदंडमुखम्यका (सु) | ४१.१० | यमायधर्मं राजाय (उ) | ६६.५५ | यमुनायाश्चमाहात्म्य (उ) | १.२३ | यथोरवतर्षिष्यानि (उ) | २००.१२ | यः शृणोति नरो भक्त्या (भू) | २७.३१ |
| यमस्याकंकरानिन्युः (उ) | १८७.३३ | यमायधर्मं राजाय- (उ) | १२२.१२ | यमुनास्तिमहापुण्या (उ) | २०८.४२ | यथीतत्रमहादेवो (उ) | ११.४५ | यः शृणोति नरो भक्त्या (भू) | २६.३१ |
| यमस्त्रनगरेतस्मिनयाः (उ) | २१०.४७ | यमायाङ्गिरसेपितु (पा) | ११७.११२ | यमेनपूजितः सम्यक् (उ) | ११३.२५ | यथीकतुंघानां- (पा) | २६.२० | यः शृणोति नरो भक्त्या (भू) | १००.१४ |
| यमस्यपुत्रं (पा) | १०१.११ | यमाहूतः सभगवान्- (सु) | ४१.६ | यमेनवहणनैव कुवेरे (उ) | ६०.५ | यथीकतुंघानां- (उ) | २११.६ | यः शृणोति नरो भक्त्या (भू) | १२५.५० |
| यमस्यवचनं श्रुत्वा (पा) | १०६.२० | यमानोन्नयनपश्यति (उ) | १८०.४६ | यमेनाभ्यर्चितोविष्णुः (क्रि) | २२.१६ | यथीतेन महावीरोग्रामा- (पा) | १२.३५ | यः शृणोति नरो भक्त्या (उ) | १६८.१२० |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| यः शृणोतिसमाख्यात्-(स्व) | ६.४१ | यः श्राद्धसमयेद्वारात् (उ) | २२.४४ | यस्तुमोहाद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | ११.५८ | यस्त्वपुत्रो जगन्नाथं (क्रि) | १८.३६ | यस्मात्तस्मात्प्रयत्नेन (सु) | ११.८३ |
| यः शृणोतिमहाभारते (उ) | १६.२.६३ | यः सर्वविविनिर्मुक्तः (स्व) | ५६.६ | यस्तुयच्छतिकृष्णाय (क्रि) | १२.५ | यस्त्वमाभ्यास्वयं (उ) | २८.१४ | यस्मात्तिर्यक्प्रवृत्तिः (सु) | ३.६४ |
| यः शृणोत्येकचित्ते- (पा) | १०.३.१४ | यः सर्ववीराम्प्रतिमुख्य- (पा) | ११.७३ | यस्तुयच्छतितांबूलं (क्रि) | ११.११० | यस्त्वयाकथितोयज्ञो (सु) | ३४.३२६ | यस्मात्तत्त्वत्क्रोविघ्नं (सु) | ४४.१२६ |
| यश्चगृह्णाति-लोभेन (उ) | ४८.१६ | यः सेवकान्पुत्रोवधित- (पा) | ४६.२६ | यस्तुवर्षशतपूर्णायनि- (स्व) | ११.३३ | यस्त्वयावाञ्छितो (उ) | २०.१.५३ | यस्मात्तेजोमयं ब्रह्मवृत्ते (सु) | २१.१.६६ |
| यश्चनीलोत्पलहैमंशकंरा- (सु) | २०.४८ | यः सव्यपारिणामलाघ- (सु) | ३३.१६४ | यस्तुवारद्वयं विप्र (क्रि) | ११.१२२ | यस्त्वाचार्यपराधोन (उ) | २२.३.५४ | यस्मात्तत्त्वलोकापालानां (सु) | २१.१.०८ |
| यश्चवधितकथामेतां (पा) | ११७.२३६ | यस्तं वलान्निवघ्नातिस्व- (पा) | ६.६ | यस्तुविद्याभिमानीन (भू) | ६७.५३ | यस्त्वांज्वलनमासाद्यन (उ) | १६.५७ | यस्मात्त्वयामलमंश (भू) | ६१.१३ |
| यश्चवधितकथामेतां- (पा) | १०६.१११ | यस्तत्र ब्रह्माभक्तानानरः (सु) | ३२.१३६ | यस्तुवेदविदेधेनुं (क्रि) | २०.११४ | यस्त्वांत्यक्त्वा गतः (भू) | ५३.४१ | यस्मात्तत्त्वत्स्वपोऽयं (भू) | ६४.६२ |
| यश्चंद्रशर्मासोऽक्रूरस्त्वं (उ) | ८६.२३ | यस्तत्र संत्यजेद्देहं मोक्ष (सु) | १८.२४३ | यस्तुश्रोष्यतिभक्त्यैव (पा) | ६८.१२२ | यस्त्वांनवेदलोके (उ) | २५.०.६० | यस्मात्प्रेतपुरंप्रेतोद्गादशा (सु) | १०.६ |
| यश्चद्रशालयेमूढस्तं (क्रि) | ११.६५ | यस्तानोपवसेन्मर्त्यः (उ) | १२०.१८ | यस्तुसंमाजनंकुयाद् (क्रि) | ११.४३ | यस्त्वारोहतिस्मिस्तु- (सु) | ३०.२०१ | यस्मात्संक्रुतवाग्पापमी- (सु) | ३७.४८ |
| यश्चभागवतंशास्त्रं (उ) | १६५.४० | यस्तान्स्पृशतिदेहेन- (उ) | १४.२२ | यस्तुसंवत्सरंपूर्णं (उ) | ६४.४१ | यस्त्विदं कृत्यमुत्पाय (स्व) | ४६.६ | यस्मात्तोभाग्यदाचिन्त्या- (सु) | २१.१२१ |
| यश्चसत्पराएणि (पा) | ११५.८८ | यस्तिर्लैर्यवसम्मिश्रैः (पा) | ६८.१०३ | यस्तुसूयार्थंशुसंतनं (उ) | ८१.२६ | यस्त्विमंनियतोमर्त्यो (स्व) | ५४.४० | यस्मात्संनिशोरोविष्णुः (उ) | ११५.१६ |
| यश्चात्रवसतेभीष्मशृणु- (सु) | १५.२२४ | यस्तुगंगासरिच्छंष्टा (उ) | २१.८ | यस्तुसवेकरूपेण (क्रि) | ११.३६ | यस्त्वेकंभोजद्विप्रंकोटि (सु) | १६.१६६ | यस्मादग्रेहरेनुं त्यमान्तं (सु) | २१.७६ |
| यश्चापिकीर्तयेत्तस्य (पा) | ११६.३०५ | यस्तुदघातत्रयदधि- (सु) | १८.२०५ | यस्तुदयाद्रिशिखरेमकुटाय (सु) | ४६.५० | यः स्नानः पाहरया- (पा) | १००.५ | यस्मादत्यंतफलदं (उ) | ११५.२ |
| यश्चांबुलेपनंकुयति (त्र) | २.४ | यस्तुदघातत्रयदधि- (स्व) | ५७.१२ | यस्तुदयाद्रिशिखरेमकुटाय (सु) | ४६.५० | यः स्नानात्वा प्रयतो (सु) | १८.२३६ | यस्मादत्यंतफलदस्तस्मात् (सु) | ११५.१६ |
| यश्चासोमानुपोमावो- (सु) | ३७.८७ | यस्तुद्रष्टा चद्रष्टव्यं (उ) | २२६.६२ | यस्तुपलेपनंकुयति (क्रि) | ११.४५ | यः स्नानसमयेकुयाजि (क्रि) | ११.१६ | यस्मादत्यंतफलदस्तस्मात् (सु) | ११.१४८ |
| यश्चंद्रशृणुयान्तिस्व (स्व) | ३६.१०० | यस्तुयात्रीफलंभुंक्ते (क्रि) | २४.६० | यस्तुपात्रपात्रेन नित्यं (भू) | ६.११ | यः स्मरेदगीपकन्यानि (उ) | २५२.१०६ | यस्मादनाथमवलं पुत्रवत् (सु) | १८.३८५ |
| यश्चंद्रशृणुयान्तिस्व (स्व) | ४७.१६ | यस्तुयूपद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | ११.१०५ | यस्त्वनिमात्रमासाकृत्वा (स्व) | ५६.८ | यस्माच्छूद्रोसिलोकेश (सु) | ७.४३ | यस्मादनाथमवलं पुत्रवत् (सु) | ३.७१ |
| यश्चेमांशृणुयाद (उ) | ५१.५५ | यस्तुपत्न्यावनगत्वा (स्व) | ५८.१७ | यस्त्विदं आवये नित्यं (उ) | २५५.१२१ | यस्माच्छूकररूपेण (भू) | ४६.५६ | यस्मादल्पतमनास्ति (क्रि) | १७.१४२ |
| यश्चैतन्कीर्तयेन्नित्यं (भू) | २८.१५ | यस्तुपुत्रोनित्यं (पा) | ६८.८३ | यस्त्वनहर्बलिवादान् (सु) | १८.३२२ | यस्माच्छूकररूपेण (भू) | ४६.५६ | यस्मादवाप्यतेसर्वं (पा) | ८४.२५ |
| यश्चोच्चमानः सचिवैः (पा) | १.३८ | यस्तुभ्रत्रद्वयसंमग- (उ) | २२६.४ | यस्त्वपुत्रोजगन्नाथं (क्रि) | १८.४६ | यस्माच्छूकररूपेण (भू) | ४६.५६ | यस्मादविज्ञातमनाम- (सु) | ८.६० |

| | | | | |
|--|--|---------------------------------------|---------------------------------------|---------------------------------------|
| वस्मादशून्यममरैर्नारीभिः (सु) २१.१०६ | यस्मिन्कस्मिन्कुलेजाता (भू) ६६.४१ | यस्मिन्स्तीर्षनरः स्नात्वा (उ) १५५.२ | यस्यान्मनरः स्नानि- (उ) १६५.४ | यस्यराजः प्रजा राज्ये (भू) ६७.६५ |
| यस्मादस्माद्विवा- (सु) २२.१० | यस्मिन्कस्मिन्महाभागा (उ) २२५.३६ | यस्मिन्स्तुष्टेपर्वतोपि (क्रि) १७.१५३ | यस्यपत्न्या कटाक्षार्द्धं (उ) २३८.४८ | यस्यमज्जन्तिगंगायां (क्रि) ८.२६ |
| यस्मादाज्ञाहृत त्वद्य (भू) ८०.१४ | यस्मिन्कुलेवतीयायो (उ) ८४.२५ | यस्मिन्स्तुष्टेपापिनोपि (क्रि) १२.६४ | यस्यपादतलपशानि- (पा) ३६.१३ | यस्यमानापितानास्ति (उ) १३६.३८ |
| यस्मादुद्भूतमैश्वर्यं (उ) २२६.७२ | यस्मिन्क्षेत्रेस्थितोर्जंतु (उ) २२२.८६ | यस्मिन्स्यानेयथादुष्टं (सु) २.५८ | यस्यपुण्यविहीनानि (उ) ५६.२३ | यस्यमायांप्रविष्टास्तु (भू) ६८.५१ |
| यस्मादेतस्यसंजातं (उ) ११३.२६ | यस्मिन्गृहेमुनिश्रेष्ठ (उ) २३.३४ | यस्मैदेयं सुदानं च (भू) ३६.१०६ | यस्यप्रणम्यचरणौ- (सु) ३३.१६५ | यस्यमायाप्रपञ्चस्तु (भू) १२१.२ |
| यस्मादुभयाः प्रवर्तते (भू) १६.१६ | तस्मिन्गृहेवतिष्ठे (उ) २३.२७ | यस्मैनरोचतेनीति (क्रि) २१.६२ | यस्यप्रतापं वैश्वेन्द्रो- (पा) २३.४७ | यस्ययादुर्गभवेत्पुण्यं (भू) ६६.१० |
| यस्मादुभवंतिभूतानि (स्व) ६०.१६ | यस्मिन्द्विनेमुकुंद (उ) २११.२ | यस्यकर्णेतिवैनामलोकः (सु) १४.५६ | यस्यप्रदानाद्विष्णवर्क- (सु) २१.१६४ | यस्ययद्विग्रहेभोग्यं (उ) २५३.६ |
| यस्मादुभूमिद्विजं (क्रि) २०.१०५ | यस्मिन्धर्मविधिः (पा) ६६.१२७ | यस्यकक्षापिदेवस्यलोकः (सु) १५.२२७ | यस्यप्रभोतवमवोज (क्रि) १६.३३ | यस्ययस्ययदाभूमि (उ) ३२.२७ |
| यस्माद्याति सुखेनैव (भू) ६६.२५ | यस्मिन्ध्वरघ्नमेत (उ) १८०.७७ | यस्यक्षेत्रमिमं पुण्य (उ) २०५.४८ | यस्यप्रसादाभावाद्दे (भू) ७२.६ | यस्ययोजनत्रेपिजीव- (सु) २२.१३ |
| यस्माद्व्यतिमिभार्तिः (सु) १७.८८ | यस्मिन्नुद्धरतिक्षोणीं (उ) १८०.१३ | यस्यहेहेनास्ति वित्तं (पा) १२५.३५ | यस्यप्रसादाद्राजेंद्र (भू) ८५.५ | यस्यरक्षांप्रकुल्लेसदाहृदः (पा) ३६.२८ |
| यस्माद्वनप्रदग्ध- (सु) १२.१३० | यस्मिन्गुपलक्षोषोत्त- (उ) १८०.११ | यस्यचाप्रतिमंतेज- (पा) १०६.४३ | यस्यमज्जन्तिगंगायां (क्रि) ८.२६ | यस्यराजइतिश्रेष्ठो (पा) ५४.१४ |
| यस्माद्वंशपतिः सार्द्धं समये (सु) १२.५ | यस्मिन्गुपलक्षोत्त- (उ) १८५.१६१ | यस्यज्ञानेनकुर्वंतिकर्मा- (उ) १२८.२३४ | यस्यमातापितानास्ति (उ) १३६.३८ | यस्यराजः प्रजा राज्ये (भू) ६७.६५ |
| यस्माद्विप्रेषुसावित्र्या- (सु) १७.२८२ | यस्मिन्मासेमहीपाल (उ) ३५.४१ | यस्यतीर्थवरस्या- (उ) २०५.१३ | यस्यमायां प्रविष्टास्तु (भू) ६८.५१ | यस्यरूपसिद्धिराममृत्युस्त- (सु) ३७.८६ |
| यस्मान्मधुबधेविष्णो (सु) २१.१५४ | यस्मिन्मासेसमायति- (उ) ३४.४० | यस्यतेविषयेहोर्वमिद्वि- (सु) ३५.८२ | यस्यमायाप्रपञ्चस्तु (भू) १२१.२ | यस्यवक्षसिसादेवो (उ) २२७.३३ |
| यस्मान्मयादिपुरुषः (उ) ८८ २१ | यस्मिन्मुहूर्तकाकूतस्थ- (सु) ३५.६८ | यस्यदत्ताभवेत्सा च (भू) ४७.६० | यस्ययाद्वर्गभवेत्पुण्यं (भू) ६६.१० | यस्यवित्तंतद्वित्तं (क्रि) १३.१४५ |
| यस्मान्मांतुपरित्यज्य- (सु) १७.१६८ | यस्मिन्मयस्मिन्मयैवास्म्य (उ) १८४.६२ | यस्यदानांनुधाराभिः (उ) १८०.१६ | यस्ययद्विग्रहेभोग्यं (उ) २५३.६ | यस्यविप्राः प्रसीदतितस्य (सु) ४६.१०० |
| यस्मान्मावदइत्युक्ता (सु) ७.६४ | यस्मिन्मयस्मिन्स्थले- (क्रि) १.६ | यस्यदेवस्यनिः श्वासो (उ) १२८.२२६ | यस्ययस्ययदाभूमि (उ) ३२.२७ | यस्यविप्राः प्रसीदति (पा) ११६.३०० |
| यस्मात्सत्यंभवेत्कांतं (पा) ८८.२१ | यस्मिन्मयैवमान्स्वामी- (भू) ४२.३४ | यस्यन श्रयतेनामन च (क्रि) २५.३१ | यस्ययोजनमात्रेपिजीव- (सु) २२.१३ | यस्यविष्णुः सहायश्च (भू) १०.२४ |
| यस्मात्सत्यंभवेत्कांतं (भू) १२.२१ | यस्मिन्मासतिभूचक्रं- (उ) १०८.६ | यस्यनामगुणानुदेवि (उ) १७४.३ | यस्यरक्षांप्रकुल्लेसदाहृदः (पा) ३६.२८ | यस्यवेगेतुपवनः (उ) १७.६३ |
| यस्मिन्मासतिलोकानां (पा) ५.२२ | यस्मिन्मैत्रेयसंयथास्ति- (सु) १५.३२३ | यस्यनाममहापाप- (पा) १०.७२ | यस्यराजइतिश्रेष्ठो (पा) ५४.१४ | यस्यवैद्यमकपला- (ध) २३२.२८ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------|--------|---------------------------------|---------|
| यस्यवैददर्शनकार्यं (उ) | १७१-२ | यस्याभूमौहृषीकेशो (उ) | ७५-१२ | यस्यायुर्विद्यतेराजन् (उ) | ५२-२० | यस्योदरगतचान्नं (पा) | ६६-५७ | याचितुमयासौरेनाय (उ) | ३३-२२ |
| यस्यवैनाममहिमा (उ) | ७१-३४ | यस्यामृताः कीटपतंग- (पा) | १७-७७ | यस्यालावण्यजलघो (उ) | ६६-६ | यस्योदरेत्रयोलोकाः (भू) | १६-१८ | याचितंस्थानमेकं वै (भू) | १८-६ |
| यस्यवैनामात्रेण (उ) | ७१-३३ | यस्यावैसंहिषमरिमा (सु) | ३८-३५ | यस्यावलोकनादेव (उ) | १८०-३५ | यस्योपदेशतः पुण्यं (क्रि) | १-१६ | याचितंस्थानमेकं (पा) | ६०-१० |
| यस्यश्रवणमात्रेण (पा) | ६२-१०५ | यस्यावैसाभ्रमत्यां (उ) | १३५-३३ | यस्यावारिकणस्पर्शा (पा) | ५८-७६ | यस्योपदेशदानेनलभते (पा) | ८४-२६ | याचितश्चमुगन्धित्वाद् (क्रि) | ८-३६ |
| यस्यश्रवणमात्रेण (पा) | ६४-१३२ | यस्यावैस्मरणादेवमुक्तः (उ) | १५६-७ | यस्याः शीलं द्विज (भू) | १२-६८ | यः स्वयं भक्षयेन्न (पा) | ६७-३४ | याचितावमुघाराजन् (उ) | ५३-१७ |
| यस्यश्रवणेनाखिल- (पा) | ११६-१७ | यस्यासर्वमुत्पन्नं (पा) | ७४-१८ | यस्याधुनश्यतिव्याधि (उ) | १३५-८७ | यांगतिमनुजायातित- (सु) | १७-२६४ | याचिनामुमदेनात्राहि- (पा) | १२-५७ |
| यस्यश्रोत्राद्वायवो (क्रि) | १७-१४४ | यस्याउपोषणकृतो (उ) | ३४-१४ | यस्याः श्रवणमात्रेण (उ) | ५३-३ | यांगनामत्संहिता (त्र) | १५-४३ | याचितोब्राह्मणैर्ब्रह्माव- (सु) | १७-३० |
| यस्यसंकीर्तनादेवदेवी (सु) | २२-१७६ | यस्याः कटाक्षायतमोग्र- (उ) | २२७-२३ | यस्याः श्रवणमात्रेण (उ) | ५८-४ | यां यांमुयोवनां नारीं (क्रि) | ४-८६ | याचैवममसांनिध्याद्भू- (उ) | १३५-४८ |
| यस्यसंस्पर्शनादेव (उ) | ६७-८ | यस्यागस्त्येनकथित (सु) | ३५-११ | यस्याः संकल्पमात्रेण (पा) | ६६-३३ | यागित्योगयुक्तस्य (स्व) | ४३-२५ | याजनाध्यापनाद्यौनात् (सु) | ४६-१५३ |
| यस्यस्मरणमात्रेण- (उ) | १२८-२४० | यस्याज्ञयाततोब्रह्मा (क्रि) | २-१० | यस्याः स्मरणमात्रेण (उ) | ८१-३३ | यागभर्जनयामासयाचैर्न (सु) | १३-१४६ | याजयामास धर्मजः (भू) | ६४-६ |
| यस्यास्यात्तुलसीपत्रं (क्रि) | २५-८ | यस्यातीताचवैशाखी (पा) | ६८-३८ | यस्याः श्रवणमात्रेण (उ) | ८१-३३ | यागश्चोद्धरितोविप्र (उ) | १८६-५६ | याज्ञिकोदाननिरतः (पा) | ८१-२४ |
| यस्यस्त्रीयोनगारत्वयो- (पा) | १०-६५ | यस्याद्वैतेपुद्गल्यते (पा) | ७२-२१ | यस्यासिधारारतीर्थेषु (उ) | १६०-५ | यागोपस्तपोदानं (पा) | ६६-१२० | यांचार्थचवयंसर्वत्वत्- (उ) | १५५-१५ |
| यस्यहस्तोचपादोच- (सु) | १६-८ | यस्यातिथीयमुनयाय (उ) | १२२-१०३ | यस्यास्तप्रविशति (उ) | ६६-६२ | याचकान् ब्राह्मणान् (क्रि) | २१-१६ | यातवावतग्ल्लीतयो (सु) | ४४-१६० |
| यस्यहस्तोचपादोच- (स्व) | ११-६ | यस्यापिपादांभित् मञ्ज- (भू) | ६८-७० | यस्यास्तवावुकणिका (क्रि) | ७-१०६ | याचनयोनिसर्वयं (स्व) | ५५-१४ | यातनाश्चानुभूताश्च (उ) | १२६-१८१ |
| यस्यहस्तोचपादोच (पा) | १६-२४ | यस्यापियादशयोग्यं (पा) | १०४-६३ | यस्यैकपरमपुण्यं (उ) | २८-१५ | याचनारीगृहादगच्छेत् (त्र) | १८-२१ | यातमहाद्रोणगिरि- (पा) | ४४-६१ |
| यस्यहस्तोचपादो (उ) | ११७-२५ | यस्याः पुत्री महात्मानो (भू) | ६-६ | यस्यैकपादश्रवणात् (स्व) | ६१-६० | याचनारीयदागच्छेत् (त्र) | १८-२२ | याति च आकाशमागैर्न (भू) | ४६-१५ |
| यस्याः कटाक्षमात्रेण (त्र) | ८-२० | यस्याः पृष्ठतलेविषय- (पा) | ७२-१३ | यस्यैकपादश्रवणात् (स्व) | ६१-६० | याचमानमितस्ततो (पा) | ११६-४८ | यातिपूजार्थयक्तपापात् (त्र) | २०-३४ |
| यस्यांगेषुव्यराजं (उ) | १६०-८ | यस्याः यत्नयत्नस्य (उ) | १०८-७ | यस्यैकाग्र्यायमध्याप्य (स्व) | ६२-६ | याचमानस्य चैवाग्रे (भू) | १०६-१३ | यातियत्रसमुद्भूत (उ) | ६६-३० |
| यस्यांजलस्यकल्लोला (पा) | ५८-७५ | यस्याः प्रहसनात्तात (भू) | ११६-१ | यस्यैश्वर्यमनाघततमहं (सु) | ४३-३६७ | याचयामासमेदेहिजटा- (सु) | ४-६ | यातुतमुद्यतनवापुनि (पा) | ६५-१ |
| यस्याभयप्रमज्जति (उ) | ६६-६० | यस्याभवाद्दशः स्वामी (पा) | ५५-१० | यस्यांगारश्चक्ष्यते (क्रि) | ८-१०७ | याचयामासुहृद्ग्रास्तां- (सु) | ३१-६८ | यातुमिच्छामकुर्वन्ते (पा) | ४६-६७ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३५२

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| याचुवेदोक्तविधिना (उ) | १४.८४ | यादृशस्तादृशोरंगो (पा) | ६६.५१ | यानिचाभयणीगानि-(सु) | ३६.६२ | यामस्यापिपुनश्च-(पा) | ११४.२११ | यावच्चंद्रश्चसूर्यश्च (स्व) | २१.२६ |
| यातुष्टिजयितेचित्तं (क्रि) | १७.८८ | यादृशोच्येयतेभार्था (पा) | ११२.७६ | यानिचैवाविमुक्तस्य (स्व) | ३३.५६ | यामाराण्यसुतं (उ) | २०१.१०२ | यावच्छरीरमात्मानं (उ) | ८०.६४ |
| यात्राकालेच्येक्युष्णं (पा) | ८०.६० | यादृशो दृश्यते च्येयं (भू) | ४६.१८ | यानिपणानिपचस्यभूरि (सु) | ४०.११ | यामियोद्धरणेहृत्वं (उ) | ११.१५ | यावच्छालाप्रशाला (क्रि) | ६१.६४ |
| यात्रातुपुष्करेकृत्वा-(सु) | १६.१६३ | यादृशेनापि भावेन (भू) | १२१.१६ | यानियानिदुरापाणि-(पा) | १००.४ | यामिवेगेनपश्यामि (ब्र) | ११.१४ | यावज्जनोन शृणुते (पा) | ८५.३३ |
| यात्राव्याजेन तीर्थानां (भू) | १८.५ | यादृशेनापि भावेन (भू) | १२३.६० | यानेनगच्छःपुरुषः (पा) | १६.२७ | यामुनः सूर्यलोकायभवेद (ब्र) | २३.२१ | यावज्जन्मसहस्रं तु पुनः (भू) | ६३.८ |
| यात्रामुपपत्तयशुभां (क्रि) | २४.३४ | यादृशोयनरश्रेष्ठपर्वते-(स्व) | १३.३४ | यानुयानुप्राप्यतेकामान् (स्व) | २१.१० | यामुनः सूर्यलोकाय-(उ) | १२८.१३७ | यावज्जलपिवेशासी-(पा) | ३८.२८ |
| यास्वमदाशयंजात्रावाप्राप्ते (सु) | ४४.६५ | यादृशोवायमृतः शब्दोऽन-(सु) | १५.७५ | यानयांश्चिकोवतं (ब्र) | ४.४२ | यामोनेकाम्युपायेन-(सु) | ४३.३७३ | यावज्जलातरगतार्कं (उ) | ८६.१७ |
| यास्वयाजानकीप्रोक्ता (पा) | ५७.४४ | यादृष्टानिखिलाघसंधं (उ) | ५४.२३ | यान्येतानीहपश्यस्वसरा-(सु) | ४०.१० | यामुपोष्यनरः पापं-(सु) | २१.२४७ | यावज्जालंवरं हृमिता-(उ) | १७.८६ |
| यादसांचपतिहोवोरुणो (क्रु) | ५.१४ | यादृष्टानिखिलाघसंधं (पा) | ७६.६८ | यान्येतान्यगसंस्थानि-(सु) | १६.१५३ | यामुपोष्यनरः शोकं-(सु) | २१.२३३ | यावज्जालधरोमुष्णिः(उ) | १७.६७ |
| यादिद्व्याडितिमन्त्रेण (पा) | ११७.६६ | यानरक्षतिरोगातीन् (उ) | ७.३६ | यान्यधोभागपत्राणि-(सु) | ४०.१२ | याम्यायमः पालयता-(सु) | ४१.३०८ | यावज्जीवंतुयताम्भां (उ) | ८८.४२ |
| यादिध्येतं धर्ममुत्सृज्य-(सु) | ६.४८ | यानवसुमुवर्णद्विर-(पा) | ११५.८६ | यान्यावकृत्वा (पा) | ६१.५२ | याम्यारक्षतुदेत्यारिर्न-(क्रि) | ११.८१ | यावज्जीवंतुयतापापम् (स्व) | ५७.२१ |
| यादधकुस्तेकर्म (उ) | १२२.११३ | यानाच्छादनकं दत्वा (भू) | ५१.८ | यान्येतानित्वया ब्रह्मन् (क्र) | १७.७३ | याम्यास्तेकिंकरंनाराज्ञे (पा) | २०.८७ | यावज्जीवव्रतविदं (उ) | ५१.८ |
| योदशक्रियते कर्म तादृशं (भू) | ८६.१७ | यानाद्वतताराशुचिरहा-(पा) | २.२८ | यान्युपगानुत्सवानि-(सु) | १५.२६३ | याम्येदिवाकारयेति (सु) | २१.२१६ | यावज्जीवकृतं पापं (स्व) | ४५.३४ |
| यादृशः चद्रमालोके (पा) | ५६.१४ | यानारीकाद्रिकेभ्यसा (ब्र) | २०.६ | यापुष्पाद्वाहिनीगंगा (उ) | १२७.५० | याम्येनगंधमदनो-(सु) | २१.१०१ | यावज्जीवकृतेपापे-(स्व) | ४०.१३ |
| यादृशं तु कृतं कर्म (भू) | ६७.८८ | यानारीखासीसहिता (ब्र) | ५.१६ | याप्रेमद्विरभूत्सासेभूत (पा) | ७२.४५ | याम्यैर्दूतैरुद्विगिरति (क्रि) | २३.१४२ | यावज्जीवाम्यहं तात (भू) | ७८.५० |
| यादृशमद्वलं दूततादृशं (पा) | ५०.५२ | यानिकानिचतीर्थानि (ब्र) | ४.४४ | याभक्तिः क्रियतेदेवे- (उ) | १३०.८ | याम्यैस्ततोमहादूतैर्धनु (क्रि) | १५.४८ | यावतावर्मं भोगश्च (पा) | १००.२४ |
| यादृशमद्विधोगेन चैतस्य (पा) | २.२५ | यानिकानिचपम्पानि (उ) | ३७.७१ | याभीम द्वादशीप्रोवाता-(सु) | ३४.४१३ | याराक्ष्याकुलस्त्रीणां (पा) | ६६.११६ | यावतीबंधरादेवमादत्ता-(सु) | ३०.१८६ |
| यादृशंवपते वोजं तादृशं (भू) | ६७.६० | यानिकानिचपापानिब्रह्म (उ) | १६३.२ | यामधिष्ठायावादेवी (उ) | १८८.३ | यारूपावर्तपत्नीब्रह्मणः (सु) | ४०.७६ | यात्कीर्तिः स्थिता चात्र (भू) | ६४.४० |
| यादृशं हर्षमापेदेतादृशं (पा) | ४.१५ | यानि च क्रूरभूतानिग्रहं (उ) | ७८.६२ | यामंयापार्धमथवादिवा (पा) | १०६.६५ | यालक्ष्मीदिवसेपुण्ये (उ) | १२२.२४ | यावत्तद्रोमसंख्यातुन-(स्व) | १६.३६ |
| यादृशं हि कृतं कर्म (भू) | ६७.६२ | यानिचहृप्रकुर्वति-(स्व) | ३३.६२ | यामसौध्यायनेमूढो (उ) | २०५.२३ | याचंचंद्रश्च सूर्यश्च (उ) | २४२.३२६ | यावत्तपतिवैचंद्रो (उ) | ८६.३६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| यावत्तिष्ठति कठस्या- (उ) | १२१.५ | यावदब्धनुर्वेद्यायिनुः (सु) | २०.६६ | याद्युगमहृष्टाणि (पा) | ६५.६६ | यावन्नामाधवेमासि (पा) | १०१.५४ | यास्यामः परमांसिद्धि (सु) | १०.६१ |
| यावत्तिष्ठति तारुण्यं (भू) | ५३.४५ | यावदस्पृशतीत्यस्य (उ) | २१६.२३ | याद्युगमहृष्टान्तावत् (भू) | १६.१३ | यावन्नदोलयेद्देवं- (उ) | ८३.८ | यास्यामित्तवसेशास्तवै (पा) | ६६.५५ |
| यावत्त्रयं कुक्षेराराज्यं (उ) | ७.५६ | यावदस्य श्रुतं वाक्यं (भू) | ६८.२३ | याद्युद्धेनारिजयो (उ) | ११.५४ | यावन्नोपवसेज्जंतुः (स्व) | ३१.१५५ | यास्यामिनरक्तकोरं (सु) | १८.४०१ |
| यावत्त्वन्मयादृष्ट (पा) | ४२.२८ | यावदागमनंतस्य (उ) | २४२.१६३ | यावद्रसस्य चाग्रिव्यं (भू) | ६४.७६ | यावन्भूम्यवकाशाय- (स्व) | ३.१६ | यास्याभि वृष्णाबंधाम (उ) | १३५.१०० |
| यावत्प्रचाशद्वप्राणिजावत् (भू) | ५३.७२ | यावदायाति मे भर्ता (भू) | ४१.४२ | यावद्भुजः प्रचिक्षेद (उ) | १०४.६ | याश्चाभ्याः सरितः पुण्याः (सु) | १६.६० | यास्यामोदयिते गभ- (सु) | ४४.१३४ |
| यावत्प्रदानिचलते (उ) | ३७.४६ | यावदुत्तिष्ठते रामो (पा) | ६५.४२ | यावद्भुजं यत्पूर्वस्वमांसं (सु) | ३६.१०४ | याश्वातांसं स्मृता चोक्ता- (पा) | १.८ | यास्याम्यपरिनिदिष्ट- (सु) | ४१.२५५ |
| यावत्प्रदानिचलते (उ) | ६४.५४ | यावदेव महाभाग पूर्व (भू) | ४.५६ | यावद्भव्यं तासां प्रजराशोक (सु) | ७.५ | यासां कार्यं दृश्यते (पा) | ७२.५४ | यास्याम्यहंपरियंकु (सु) | ४४.६ |
| यावत् प्रादनरो भवतां (क्रि) | ११.११६ | यावद्गजघटावनत्कार- (सु) | ४४.१७५ | यावद्रथं शास्त्रांगपरमेण- (सु) | २.६१ | यासां दर्शनं भास्त्रेण वृद्धो (सु) | ३०.१४७ | यास्येह रघुनाथस्य (पा) | ३२.१६ |
| यावत्प्रदाक्षिणीकृत्य- (पा) | ७१.८० | यावद्गतः शिवगृहं (उ) | ६९.६ | यावद्भारं तव वरं (त्र) | ११.३० | यासां पुष्पं महाराज (भू) | १०६.४७ | याहिं हविर्बलं यमासु (उ) | २०७.६० |
| यावत्प्रसंवदे नेत्रं (भू) | ५८.२७ | यावद्दर्शं चार्वागी (उ) | १०२.२४ | यावद्लोकयामास (उ) | १५१.५७ | यासां वायद्यथा निर्व्व- (सु) | ३४.५५ | याहित्वं विदुष्ये (पा) | ५०.१७ |
| यावत्तिष्ठति तारुण्यं (भू) | ५३.४६ | यावद्दर्शनं युक्तं कृतं (क्रि) | २०.१५३ | यावतः कार्तिके मासि (उ) | ६३.२१ | यासां तामधुरस्त्वन् (पा) | १.३६ | याहित्वमपि करुणाणि (सु) | १२७.१२१ |
| यावत्संख्यं युक्तं कृतं (उ) | ११६.१६ | यावद्दिनं माघमासे (क्रि) | ४.१६ | यावतं तस्ते क्रुधा दीर्घा- (सु) | ४३.४६१ | यासीतराविसं नापंकदापि (पा) | १.३४ | याहि देव विमानं स्व- (पा) | ४७.७२ |
| यावत्संख्यं युक्तं कृतं (उ) | १२३.३ | यावददीक्षा विधित्तम्य- (उ) | १११.२ | यावत्तिष्ठत्यस्य रोमाणि (क्रि) | ६.८६ | यासीतरा राजवृद्ध- (पा) | १.३५ | याहि भर्तुं प्रसादेन (भू) | ४.१३ |
| यावत्सनिर्ययी नंदीतावते (उ) | ११.६० | यावद्विधानि बहू- (उ) | १२१.७ | यावत्तिष्ठति भारते क्षेत्रे (उ) | २०७.६४ | यास्य मृष्टा भवता पूर्व (सु) | ३०.१८७ | याहि रात्रिमहाभावं (पा) | ४७.६६ |
| यावत्समाप्सप्तनरः (सु) | २१.३१८ | यावद्भारथारालोका (उ) | ८५.६ | यावत्तिष्ठति मुनीर्थनि (उ) | ७२.६ | यासि वैदूर्यं नृणां ताजयं (पा) | ७२.६५ | युवत्सं संहृष्टेण- (सु) | ४०.१७७ |
| यावत्सीमन्तोलीलो (स्व) | ६१.१८ | यावद्विगतसाध्यं (क्रि) | ३.२७ | यावत्तिष्ठति पुण्याणि (क्रि) | १०.३३ | यासं कल्पे जगदा- (उ) | ४.३३ | युक्तं चतुर्भुजं तां तथा (पा) | ८४.६८ |
| यावत्सुखांबुधौ पूर्णाताव (पा) | ७१.१२१ | यावद्ब्रह्माण्डप्रजीवते (भू) | ४०.१६ | यावतो निलयात्समाद् (क्रि) | ११.४२ | यास्त्रीनिघनमापनं (उ) | २१३.२६ | युक्तः क्षमादयाम्भांच (सु) | ३२.७ |
| यावत्सम्पत्तिनोनाथ (उ) | १२८.२६१ | यावद्भूमण्डलं सर्व (भू) | ७४.८ | यावतो रेणुबोभूमौ (क्रि) | २०.१०६ | यास्त्रीसगभविदेशि- (सु) | ३१.१०६ | युक्तः परिचरेदेनम् (स्व) | ५३.८८ |
| यावत्स्वजीवनोपायं (उ) | २१३.३३ | यावद्भूमरेणुभिर्नृणां (क्रि) | ११.१२८ | यावत्स्थानानि यच्छं (क्रि) | २०.५५ | यास्यति संक्षयं तां (क्रि) | ६.१२ | युक्तः पुनो महातेजाः (भू) | ३५.१४ |
| यावदंभी चकारासी- (उ) | ११६.३ | यावद्भूमरेणुभिर्नृणां (क्रि) | १६.१३० | यान्त्यनानि बोधिप्र (त्र) | २४.४६ | यास्यामः परमंधाम (क्रि) | ६.६ | युक्तं मुखं बहू- (सु) | ४०.१७१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३५४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| युक्तः शमदमाम्यां (पा) | ६४.१२ | युगेद्वादशकेप्राप्तेभूभार (भू) | ५.६१ | युदेवाहुसहस्रं हि (भू) | ६६.१६६ | युवतीव्रतयोवश्यः (उ) | ७१.२६२ | युष्मदागमनंज्ञात्वात- (सु) | १५.१२८ |
| युक्तायुक्तनजानासिदियं (सु) | ३०.१५० | युगेयुगेचरक्षामि (सु) | ३६.१३२ | युद्धमयानेनतेनापि (भू) | ५.१८ | युवतीस्तास्तथोवा (सु) | १७.१६६ | युष्मद्वितीयापसोमया (सु) | १५.१३२ |
| युक्तिमद्वचनं प्राह्मयान्ये (सु) | १३.३७१ | युगैर्यत्रैश्चनिर्मुक्तं (सु) | ४१.१६३ | युधिबीरहंतैर्वै- (सु) | ४६.३१ | युवत्यश्चास्वर्वा (पा) | ११४.२१८ | युष्मद्वितीयाभेतद्वेषा (सु) | १५.१२६ |
| युक्तोमधुरवाक्येषु (पा) | ६४.१३ | युगमंबभूवतुस्त (उ) | २४२.६६ | युधिष्ठिरं दमाकर्ण्यनारद- (उ) | २१५.१ | युवनाश्वोरणाश्वस्य (सु) | ८.१४० | युष्माकर्मां पुरस्कृत्येषां (सु) | ३४.८६ |
| युक्तोहरिहराम्यांचन (उ) | १११.६ | युगमवस्त्रं च द्धत्रं च (भू) | ४०.४३ | युधिष्ठिरोपिधर्मिमा (स्व) | ३६.१२५ | युवयोः प्रतियोगिप्रो (क्रि) | २५.७२ | युष्माकर्प्राणनकृत्वासर्व- (सु) | १७.२६८ |
| युगकोटिसहस्राणि (क्रि) | ३.६५ | युगमयुमाद्विधाचेह- (सु) | १५.३३ | युधिष्ठिरोपिधर्मिमा (स्व) | ४६.५ | युवयोर्नरनास्ति एका (भू) | ८३.४२ | युष्माकवशाभाभूत्वा (सु) | ४.७४ |
| युगकोटिसहस्राणि (क्रि) | ६.१५१ | युग्माद्विजातयः (सु) | ६.१६० | युधिष्ठिरोमहात्मावै (स्व) | ४०.३३ | युवयोर्दर्शनं जातं (उ) | २००.११२ | युष्माकमपिमाहार- (पा) | ६४.८६ |
| युगकोटिसहस्राणि (क्रि) | १२.४ | युतं निष्कसहस्रेणपच- (सु) | ३४.३८८ | युध्यमाप्रो ततस्नो तु (भू) | ३०.३१ | युवयोर्बंदरीस्वेचहेतुं (उ) | १७८.१३ | युष्मामिर्यद्वचोधर्मं (उ) | २१३.२४ |
| युगकोटिसहस्राणि (उ) | १२४.२१ | युताभ्यांयोगिध्वेयाम्यां (पा) | ३६.६६ | युध्यस्वत्वमयासादं (पा) | ६३.५८ | युवयोर्बाढमेतत्स्या (सु) | ४०.४६ | युष्माभिर्वा महाभागा (भू) | ४१.३६ |
| युगलार्थस्तथान्यासः (पा) | ८१.६५ | युयपांश्चतुर्दंतान् (उ) | ४१.२६ | युध्यस्वबाणैः प्रवनेन (पा) | ५१.२८ | युवयोश्च प्रसादेन (भू) | ५.५१ | युष्माकमकुण्ठशान्दीन्ये (भू) | ६६.४७ |
| युगलहस्तापिण्डेन श्राद्धेना (सु) | १६.५४ | युयस्याग्नेचरंती- (सु) | १८.३७८ | युध्यस्वसमवेरीर (पा) | ६२.१२ | युवां पिशाचौ भवतां (उ) | ४३.२६ | युष्माकचंदशा अभिमत्- (पा) | १११.४७ |
| युगलघ्यः सुनिज्जैयः (सु) | ३.११ | युयिकानवजातीभि (उ) | ८७.१७ | युध्यस्वाद्यमया (उ) | १०२.१३ | युवां पुण्यवतां श्रेष्ठौ (क्रि) | २३.५२ | युनां चित्तं यथास्त्रीषु (क्रि) | १७.१५५ |
| युगादयः स्मृताह्येताः (सु) | ६.१२७ | युद्धसमाहिते (उ) | ३८.८७ | युयुधुः कोटिशेरुद्र (उ) | १२.६ | युवां प्रागायतां पुत्रीराम (पा) | ६६.१२५ | युनां मनोहराराज्ये (क्रि) | ५.१५ |
| युगादयो युगांतः (पा) | ६६.१० | युद्धमुत्तरयन्त्यच्च (पा) | ६६.१६३ | युयुधेवाहु युद्धेन- (क्रि) | २.५४ | युवाकुमारवय (उ) | २४२.२३४ | युपसमितकुंशदर्वीचम (सु) | १६.४५ |
| युगानामनुसारेण (पा) | ११४.४०३ | युद्धायते सुसंनद्धाः (पा) | ४१.१ | युयुधेराक्षसेद्रेण (पा) | ३६.२७ | युवानंसुन्दरं श्ण्टवात (क्रि) | २३.३२ | युयं काशिकाः सर्वे मित्र (सु) | १७.६७ |
| युगानितानितावं (उ) | ३७.३७ | युद्धायभोमेनविशेष- (सु) | १२.३२ | युयुधेवयंकेकुनानारूप- (पा) | १०७.२६ | युवानमकरोद्वह्या (सु) | १२.६ | युयं गच्छन्तु वै दूरं दुर्गं (भू) | ४२.६४ |
| युगानुक्राशोऽष्टवा (सु) | ३०.२०० | युद्धायामिमुखस्तस्थो- (सु) | ४०.१८४ | युयुधेयुवायुदेवेन (उ) | २४६.५० | युवानः संगतादुष्टा (पा) | १११.६ | युयं गच्छन्तु भूलोकं (भू) | ७६.२२ |
| युगांतानेः प्रवृत्तस्ययथा (सु) | १२.१२८ | युद्धावहारः संग्रामेद्वास- (पा) | ३६.६६ | युयुधेवीरभद्रेण (पा) | ४३.४५ | युवाभ्यां हि अकस्वाद्भि (भू) | ४२.६८ | युयं च सर्वे ब्रह्मा (उ) | ६१.१८ |
| युगाते कृष्णवर्त्मचिस्वस्य (सु) | ४१.३४ | युद्धेनपृथिवीजित्वा (सु) | १२.१०६ | युयुधेसुरसंग्रामे (उ) | ८.१३ | युवाभ्यां हि प्रगन्तव्यं (भू) | ६७.६२ | युयं च सर्वे मुनयः कृत (पा) | ११२.६२ |
| युगाते तु परावृत्तेकाले- (सु) | १३.१७२ | युद्धेपुनः पुनःश्चैव (उ) | १००.२१ | युवतीनां पृथक्तीर्थं (भू) | ४१.१२ | युवानखिलचित्तजो (उ) | २२१.४५ | युयं तु मम चित्तस्था (पा) | १३.११ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३५५

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|
| यूयं तुराग बहुलं (उ) | १६३.६४ | येकुर्वन्तिजनाभक्ति (उ) | १३०.७ | येचवात्सल्यप्रभावज्ञाः (सु) | १७.३१५ | ये ज्ञानवन्तः पुरुषा (भू) | ५५.६ | येन कायेन सिध्येत (भू) | ६४.५३ |
| यूयं धर्मविहीनास्तु (भू) | १०.२५ | येकुर्वन्तिनर श्रेष्ठा (उ) | २६.२२ | येचवैब्राह्मणश्रेष्ठास्ते- (सु) | १७.२७० | ये न त्रपन्ततां प्राप्ता (सु) | १४.२०३ | येन कृत्वा इदं कर्म- (उ) | १४१.४० |
| यूयं पंचात्मकैर्युक्ताः (भू) | ७.७१ | येकुर्वन्तिनर श्रेष्ठा (उ) | ७७.६२ | येचशूरावयवीरा- (पा) | २३.११ | ये तत्र शुभ कर्माणि (भू) | ६८.६ | येन कृतानरश्रेष्ठ (उ) | ६६.२५ |
| यूयं पंचवैसंप्राप्ता (भू) | ७.४४ | येकुर्वन्तिनराः प्राज्ञ (उ) | ३७.१२ | ये च होमपराध्यान- (भू) | ६६.२२ | ये ताड्यन्त्येदोषां च (भू) | ६७.८५ | येन कृत्वा विशेषे (उ) | ३१.१३ |
| यूयं पानाघियोन्ननं (क्रि) | ७.७७ | येकुर्वन्तिनरास्तेवैसूर्यं (उ) | १५२.३१ | ये चातिथिन मन्यन्ते (भू) | ६७.६० | ये तु दानं प्रयच्छन्ति (स्व) | ३८.५७ | येन केनचिदाछिन्नोयेन- (सु) | १५.३६७ |
| यूयं मुनीश्वराः सर्वे (उ) | ६१.२६ | ये कृष्णपाद कमलार्चन (क्रि) | १५.८२ | ये चान् कथिता धर्मा (स्व) | ६१.४ | ये तुमद्वाक्यमुल्लङ्घ्य- (पा) | १६.३८ | येन केनापिभावेन- (उ) | १३२.२० |
| यूयं लिकष्टास्तत्पुरुषा (पा) | ३८.४८ | येकेचिद्दुस्तरंप्राप्य (पा) | ४२.१० | येचान्येदाननिरताः (क्रि) | १५.८४ | ये तु गृष्टं समश्नन्ति (भू) | ६७.८१ | येन केनाप्युपायेन (उ) | २४५.३४५ |
| यूयं वैदेवदेवस्य (क्रि) | ७.६५ | येकेचिद्विस्तरणोक्तानि- (ब्र) | १५.२६४ | येचान्येघनदार (ब्र) | २५.१० | ये त्यजन्ति शिवाचारं (भू) | ६७.३५ | येन केनाप्युपायेन पुत्र (भू) | १२.३८ |
| यूयं वै ब्राह्मणाः प्रीत- (सु) | ३४.४०५ | ये क्षत्रियाः क्षत्रियकन्या (पा) | ५४.१७ | येचान्येपशवोभूमौसर्वे (सु) | १६.८ | ये त्यजन्ति शिवाचारं (भू) | ६७.३४ | येन केनाप्युपायेन तथा (भू) | २४.३४ |
| यूयं वै सत्यवर्मण (भू) | ५.५२ | येगच्छन्तिनरश्रेष्ठ (उ) | २१.२२ | ये चान्येपार्वतीयाश्च (सु) | ३२.६६ | येन श्राद्ध-प्रकुर्वन्ति (उ) | १५६.१३ | येन केनाप्युपायेन हतव्यो- (भू) | २५.२२ |
| यूयं सर्वमहात्मानः सर्वे (क्रि) | ५.७५ | येगच्छन्तिनरश्रेष्ठास्ते (उ) | १३३.३८ | येचान्येबहुयः सर्वे (स्व) | ४८.१३ | येन द्यूवतास्तएव (पा) | ४६.२२ | येन केनाप्युपायेन हरि (क्रि) | १६.४३ |
| यूयं सर्वमहात्मान (क्रि) | ७.५१ | येगुणास्तस्यदेवस्य (सु) | ५.५७ | येचान्येविघ्नकर्ता (सु) | १६.७२ | येन व्याविजिताः पूर्वदान (सु) | ३०.१३६ | येन जायेतप्रेतत्वं- (सु) | ३२.३ |
| यूयं सर्वमहात्मानो- (क्रि) | २०.७० | येचकुर्वन्तिपुरुषाः (उ) | ३०.११५ | ये चापि क्षयरोगातां (भू) | ६७.८३ | येन स्वयंरघुनाथस्यनाम (पा) | २६.३८ | येन तल्लम्पतेलव्धं लब्धं (सु) | ३२.५६ |
| यूयं सर्वमहात्मानो (क्रि) | २३.८० | येचतत्रमहात्मानः (स्व) | ४०.२६ | ये चापि भयसंश्रुतां (भू) | ६६.४४ | येन त्वामुरोत्तमगुरुपुरुषा (सु) | ३३.१६६ | येन तीर्थमयाप्राप्तमेत (उ) | २१६.७७ |
| यूयं सर्वमहावीर (क्रि) | ७.३६ | येचतैलंचवतिचयथा (उ) | ३०.५८ | ये चापिपापान्वित- (पा) | १११.४६ | येन त्विहगन्तवः प्रोक्तास्ते (भू) | ६६.१२३ | येन तुष्टोमुनिब्राह्मस्तथा (सु) | २.५७ |
| यूयं हि धारणैश्चकृता- (सु) | १७.२७१ | येचत्वां पूजयिष्यन्ति (सु) | २४.३३ | ये चापीशान्यहृदया (भू) | ६६.१५ | येन द्रुक्कण्टपिटिकादिभिः (सु) | ४६.५३ | येन त्ययोद्धृताभीन (क्रि) | ६.१८० |
| ये कठलग्नतुलसी (उ) | २२४.७० | येचविम्यन्तिनरकाद्ये (उ) | १२५.१५८ | ये चैवायेहताचाराः (सु) | ४७.१६ | येन दास्येनमन्ति (उ) | १६६.४५ | येन त्वं हि समाहृता (भू) | ५१.४ |
| ये करिष्यन्तिमनुजा- (सु) | १८.१८३ | येचयज्ञकराविप्राय- (सु) | ३६.७८ | येचोक्तानि यमास्तेषां- (सु) | १५.३२२ | ये देवैर्निजिताः पूर्व (उ) | ६७.१ | येन त्वयार्ति बलिनाम (क्रि) | १६.३५ |
| ये कातिकेयपश्यन्ति (क्रि) | ४.१०६ | येचराजन्कलीभक्त्या (उ) | ६३.१० | ये जीवाभुविजिह्वन्ति (सु) | ३२.३१ | येध्यायन्तिमनोव्याये (उ) | ६१.१५ | येन त्वयाभगवतात्रि (क्रि) | १६.३४ |
| ये कर्त्तिकेवर्तसम्य (उ) | ६०.२६ | येचलोकाः स्मृतायेषांता (सु) | २८.२ | ये ज्ञातिपोषयताः (क्रि) | १५.८५ | येन कायेन कुर्वन्ति तेन (भू) | १२.११५ | येन त्वयोद्धृतापृष्ठी (क्रि) | ६.१८१ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| येन देवापवित्रेण (उ) | २२४.६५ | येन मेविमलाकीर्ति- (पा) | ८.२८ | येन हि संतिभूतानि कमर्णा (सु) | १६.२२० | येनैव नः सूतामंगा (सु) | ४५.२४ | ये पुराणकथां श्रुत्वा (त्र) | १.११ |
| येन देवाः संगं चर्वा (उ) | १०३.२० | येन राक्षसभाव (उ) | २०४.७६ | येन ह्यपहृत्तं न्यासं (पा) | ८७.७२ | येनोपायेन पुष्पाणि (भू) | ११६.३८ | ये पुण्यं तिसरीरं वै (उ) | १५४.२६ |
| येन देवाः सुप्रसन्नाः (स्व) | १४.११ | ये नराणां वचो वक्तुं (भू) | ६६.३७ | येनाद्यकारणे नेह पति (पा) | ५.३६ | येनोपायेन राजेंद्र (उ) | ८०.१५६ | ये पूजयंति मां भक्त्या (उ) | २३३.५ |
| येन धर्ममनासत्रं (उ) | २१५.३ | येन राधारयं त्यस्य (उ) | २१५.५६ | येनाप्यपहृतस्तेऽद्य (भू) | १०७.४ | ये पठंति न श्रेष्ठास्ते (उ) | ७२.४ | ये पुताः परदारांश्च (भू) | ६६.४६ |
| येन नंदमुतः कृष्णो मोहं (पा) | ७१.६० | येन रास्तु सुरश्रेष्ठेन (उ) | ८५.५ | मेनाप्यसौ हृतः पुत्रः (भू) | १०७.१० | ये पठंति पुराणानि (त्रि) | २५.३० | ये वांघवा बाधवा ये ये (पा) | ६५.३८ |
| येन नाचरितं स्नानं (क्रि) | ७.२ | येन मंदाया मिह शर्म- (पा) | ६२.१०८ | ये नाम नाम भागान् कुर्वति (भू) | ६६.३८ | ये पठंति पुरोविष्णोर्मे (क्रि) | २२.१३८ | ये ब्राह्मणास्तु पूजाहा- (पा) | ८.१० |
| येन निशांसमापन्नो- (उ) | २१४.५७ | येन लंकापतिनिशि- (पा) | ५०.२६ | येनायं जनिताः (उ) | २०६.४७ | ये पठंती मम ष्ठायां (श्रि) | २.१११ | ये भक्त्या देवदेवेशि- (स्व) | ३३.४२ |
| येन न शनंति पापिष्ठा (त्र) | १५.१२ | येन लंकासत्रिकूटा- (पा) | ४४.७६ | येनाचर्यंति पापिष्ठा (सु) | २३३.७ | ये पठंति हरेर्भक्त्या (क्रि) | १७.१२५ | ये भक्तिभावेन (क्रि) | ७.१२८ |
| येन पत्र प्रभो न तव्यं (भू) | १०३.८१ | येन लोकोक्षयः स्वर्गो- (सु) | ३६.१२३ | येनाचर्यंति सततं भवतो (गु) | ४६.५६ | ये पठिष्यंति माहात्म्यं- (उ) | २१५.५७ | ये भविष्यंतो मधुसूदन (पा) | ६६.११५ |
| येन पापेन जाताहं (उ) | २१४.४० | येन वापुस्तेषां पितृ (उ) | ६७.१३ | येनाचिता भगवती (क्रि) | २४.३० | ये परस्वापहृत्तरः (भू) | ६६.६ | ये भविष्यंति ये तीताः (उ) | ३५.६० |
| येन पापेन ताः (उ) | २०६.५६ | येन विश्रान्तचित्तानां- (स्व) | ३३.६ | येनाचिता हरिर्भक्त्या (उ) | ८७.५ | ये परेषां श्रियं हृत्वा (भू) | ६६.३५ | ये भुज्जते भगवतो (क्रि) | १५.८१ |
| येन पुण्यं कृतं गार्ग्यं (पा) | ११०.५२ | येन विस्त्रजितं तत्र (उ) | १५१.४१ | येनासकृद्गुणैः (सु) | ३३.१५५ | ये परेषां श्रियं हृत्वा (भू) | ६६.३५ | ये भुज्जते भगवतो (क्रि) | १५.८१ |
| येन पुण्यं प्रभावेण (क्रि) | ८.६१ | येन वैक्रियमात्मेन (उ) | १७४.४४ | येनासी भगवानोऽसौ (स्व) | ५१.२ | ये पश्यंति नरादेवं मुनि (उ) | १३३.३४ | ये भेदं विदधत्यद्वा- (पा) | ४६.२१ |
| येन पुत्रेण सा नीता पितु (क्रि) | १५७.७ | येन वै न पुत्रमर्हं- (उ) | १३.३३६ | येनाहं दुःखिता जाता न (उ) | १६३.५० | ये पितृ तिनरात्रा भक्त्या- (उ) | १२०.३६ | ये मदीये गुणैः लोकांश्च (पा) | १६.३७ |
| येन पूजाविधानेन (उ) | ३६.५ | येन व्रजाम्यहं पुण्यं (भू) | ८८.२७ | येनाहं प्रहृष्टा म्येतां (भू) | ५७.२७ | ये पितृ तिनरात्रा भक्त्या- (उ) | १२०.३६ | ये मानवाः पापकरो (उ) | १२८.४ |
| येन पूजैर्न हविषादे- (उ) | २२६.७६ | येन व्रतानि सर्वाणि (उ) | ३०.२ | येनाहं मुदरे त्वां वै तन्मे (भू) | ५२.३३ | ये पितृ तिनरात्रा भक्त्या- (उ) | १२०.३६ | ये मानवाः प्रतिदिनं (क्रि) | १५.७५ |
| येन प्राप्तं पिशाचं च (उ) | ४३.३३ | येन पतरते जन्तुरिह लोके (पा) | ६६.१४१ | येनाहं मुदरे त्वां वै तन्मे (भू) | ५२.३३ | ये पितृ तिनरात्रा भक्त्या- (उ) | १२०.३६ | ये मागश्चैव यंति (पा) | ६६.७१ |
| येनां भागो रथीगङ्गातपः (सु) | ८.१५० | येन सतरते जन्तुरिह चैव (भू) | १०.१८ | येनाहं मुदरे त्वां वै तन्मे (भू) | ५२.३३ | ये पुत्रा मातामित्रोत्तं (पा) | ४.३५ | ये मृता विधिविधेन- (पा) | ६६.१२७ |
| येन भाग्यं परित्यक्ता (भू) | ४१.३१ | येन संव्रसिता लोकाः (भू) | ५१.२७ | येनाहं मुदरे त्वां वै तन्मे (भू) | ५२.३३ | ये पुनर्भावितात्मानस्तत्र- (सु) | ३२.१४४ | ये मे मम त्रयं चरं (उ) | २३५.४६ |
| येन मां शक्यते न तु समे (क्रि) | ५.११७ | येन स्नानं नैशेखे (पा) | ६८.३५ | येनाहं मुदरे त्वां वै तन्मे (भू) | ५२.३३ | ये पुनर्भावितात्मानस्तत्र- (सु) | ३२.१४४ | ये मे स्नानं निरतस्य (पा) | १५.२२ |
| | | | | येनाहं मुदरे त्वां वै तन्मे (भू) | ५२.३३ | ये पुनर्भावितात्मानस्तत्र- (सु) | ३२.१४४ | ये विष्णुपूजनता (क्रि) | १५.८० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| येयच्छतिमहात्मानस्ते (उ) | ८.५ | येवसंतिकुरुक्षेत्रेतेवसन्ति-(स्व) | २७.६४ | येषांयत्कांसितंकिञ्चित्-(सु) | ४०.३५ | येहित्रयोविशति (उ) | १०४.२० | योऽसौवेषा शृङ्गाम्यां (क्रि) | ७.४० |
| येयच्छतिमुपावा (उ) | २७.५६ | येवसन्तिममात्येते-(पा) | ७५.६ | येषांयशोनृणांभूमौ (पा) | ५६.४४ | यैः कोपितं ब्रह्मकुलं-(पा) | ८.१३ | योकारंतेभुवोर्मध्येयो (सृ) | ४६.११७ |
| येयजतिदृढयाकिल (क्रि) | १६.५८ | येवहृतिभुजैचक्रं (उ) | २२४.७२ | येषांयशोभवेद्भूमौ (पा) | ५६.४५ | यैरचितनैवहरिर्न (पा) | ६५.३७ | योगजामानसीसि- (पा) | ८५.२६ |
| येयजतिहरेर्नित्यम (पा) | ६६.१८ | येविप्रमुखाः कुरुजांगले-(सृ) | १०.११४ | येषांयैरुचिस्तत्रतेभ्यो (सु) | ८.३४ | यैरहंतोयितः पूर्वतएते-(सु) | ४३.४५६ | योगनिद्रानिवर्तं कृष्णं (भू) | २१.३३ |
| येयंस्वशक्त्यादेवेन्द्र (क्रि) | ११.१४० | येविष्णुमंत्र जप्त्वांरं(उ) | २२६.१५१ | येषांवरुणं हरेर्नाम (पा) | १०.६७ | यैरियं पृथिवी सर्वा (भू) | २७.२४ | योगनिद्रामुपास्वत्वं (सु) | ४.१०६ |
| ये याचिताः प्रहृषांति (भू) | ६६.३२ | येवेदसमतकार्यं (क्रि) | १७.७७ | येषां विष्णुः प्रसन्नो (भू) | ६.१० | यैर्दत्तबहुमाघेचमुत्तारि (उ) | १२५.७५ | योगनियोगमाता च (सृ) | ६.३६ |
| येयेत्वयाहसानाथ (उ) | २१६.८६ | येवेदविहितंयत्स्वावर्तं (उ) | २१६.८६ | येषांवेदाः प्रियतमान- (पा) | १०.६८ | यैर्दत्तास्त्रिलालागावो (उ) | १२६.१२६ | योगपट्टानिसूत्राणि (उ) | ११६.४७ |
| येयेपूर्वरणेभग्नाः (उ) | १२.६१ | ये वै जिता देवगणाश्च (भू) | ५५.१७ | येषुतत्रकुतोहोमः (सु) | १८.२०० | यैर्नैकृतं व्रतं पुण्यं (उ) | ७८.६ | योगपट्टानिसूत्राणि-(उ) | १२३.३६ |
| येयेवृत्तिकरालोकाः स्वे-(पा) | ३.२० | येवैदुष्टास्तुराजानस्तां-(सृ) | १३.१४२ | येषुतीर्थेषुयुः कृत्वा-(सु) | १७.२१३ | यैर्नैरग्नजन्मानो-(पा) | ६५.३८ | योगपीठैकेसराग्ने-(पा) | ७०.७ |
| येयोद्धारः प्रतिरणगता-(पा) | १०.५७ | येवैराज्ञः समुल्लंघ्य (पा) | ४०.३० | येषुतीर्थेषुयुच्छादंतं (सु) | ११.८२ | यैर्भक्त्याराधितो (उ) | १०७.१८ | योगयुक्तं प्रवक्ष्यामि (भू) | ७१.३ |
| येरामर्नभजिष्मत्तितेनरा (पा) | ५५.५५ | येसूराः समहेष्वासाः | ११.६७ | येषुतीर्थेषुविश्रेष्ठं (उ) | २०८.२४ | यैर्भगिन्यः सुभासिन्यो (उ) | १२२.१०१ | योगयुक्तामहात्मानः (पा) | ८४.८८ |
| येरामर्नदकादुष्टास्तां (पा) | ४६.५३ | येशृण्वन्तिनराभक्त्या (उ) | १५५.४० | येसत्विवाक्यकथनेषु (क्रि) | १५.८३ | यैः समाराधितोरुद्रः (स्व) | ३३.५६ | योगयुक्तामहात्मानः (भू) | ८६.७४ |
| येर्चयन्तिपुरानन्यास्त्वां (उ) | २५५.५८ | ये शृण्वन्तिपुराणानि (त्र) | २५.३२ | येसत्तिकेचिद्विषसुधरा-(सृ) | १६.१०२ | योऽन्नपूजाजपोहोमः (सु) | ३२.१२५ | योगवंतंसुरपंचभर्तारं (सृ) | ६.३८ |
| यैर्नश्रुतंभागवतं (उ) | १६५.५६ | ये शृण्वन्तिहरेर्गुणानि (उ) | १६६.४४ | ये संसारार्णवेभग्नाः (उ) | ५४.१४ | योऽर्चनं कुरुतेविप्रसा (क्रि) | १७.६१ | योगवृक्षस्यद्याया-(सृ) | १८.४४२ |
| यैर्निमीलितसर्वांगा-(सु) | ४१.१६७ | ये श्रीरामंस्मरिष्यं (पा) | ५५.२६ | येसमानाद्विद्वान्मयाम- (सु) | १०.२६ | योऽभिलापः सदास्त्रीपु (क्रि) | १७.७६ | योगसंचितपुण्यानां (उ) | १७७.४५ |
| येर्नद्वारण्यनिरताः (स्व) | १.४ | येपांचकालमुष्टो-(सु) | ३.१५३ | येसाधुसाध्वचनानि (पा) | ६५.१४७ | योऽन्नातिभक्तिभावेन (क्रि) | २४.२६ | योगसारमिदंनमस्तो- (उ) | १२८.२६६ |
| येलोकाजानशीलानां (उ) | १२५.७७ | येपांतुपुण्यकतृणां (पा) | ४१.१७ | येस्पृशन्तिजनानंतः (सु) | १०.१६ | योऽन्नातिभक्तिभावेन (क्रि) | ११.१५३ | योगसिद्धा महात्मनोयं- | १८.३१ |
| येलोकादानशीलानां-(सु) | १६.२६२ | येपानमातानपितान (सु) | ६.१६६ | येस्मरन्तिमहाविष्णुं सर्वं-(पा) | १०.६४ | योऽन्नातिभक्तिभावेन (क्रि) | २८.६३ | योगसिद्धिगतस्य (भू) | ३.१५ |
| येवदन्तिनरानित्यं (उ) | ७१.१२ | येपांनिकेतने भुङ्क्ते (त्र) | १४.८ | येस्मरन्तिस्वदाकालवदन्ति-(स्व) | ३३.६१ | योऽन्नातिभक्तिभावेन (क्रि) | ११४.६ | योगस्त्वोभूत्पुराराजं (उ) | २२२.६३ |
| येवदन्तिउवनामनिर्मलं (पा) | २१.२८ | येपानमनोरथैस्तस्तुन-(स्व) | २६.५ | येद्वाता बभ्रमाश्रित्य (सु) | ६.६२ | योऽन्नातिभक्तिभावेन (क्रि) | १४.२७ | योगस्थास्तुततोऽप्यायं (स्व) | २०.३१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: स्वोकानुक्रमणी

३५८

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| योगस्यफलभूमितुले (उ) | १२६.२८१ | योगिनीप्रत्युवाचेदं (उ) | १८.१२६ | योगेश्वरीव्यास (उ) | १६५.१७ | योददानिविशिष्टेभ्यः (स्व) | ५७.३ | योद्धमयायभ्योत्तुर्णं (उ) | २४६.२८ |
| योगस्वामीध्यान (उ) | ७१.२४२ | योगिनो योगमाता च (सु) | ६.३७ | योगैरष्टविधैर्विष्णु (उ) | १३२.६० | योददातिहरेर्धूपं (उ) | २३.१५ | योद्धमयाययोक्कृष्णं (उ) | २५०.३८ |
| योगान्नलेपनं कुर्वत् (क्रि) | १३.८ | योगिनेयोगघात्रे च (पा) | ११४.२८० | योगेयं दुर्लभोराजं (उ) | १२७.६ | योदद्याच्चष्टुहेदीपकम् (त्र) | ३.१४ | योधनं शस्त्रसंकीर्णं-(भू) | ४३.६७ |
| योगाद्भ्रष्टस्तुजायेत-(उ) | १३२.१३६ | योगिनो ध्याननिष्ठा (पा) | १६.३७ | योग्योयमितिसंकल्प्य (सु) | १४.१४ | योदद्याच्चैत्रकेमासि (क्रि) | १२.२६ | योघनीपुरविख्यातं-(स्व) | १८.६६ |
| योगाप्रियोयोगगम्यो (उ) | ७१.१३१ | योगिनोयोगयुक्ताये-(सु) | १७.१४ | यो चात्र कथिता धर्मा (स्व) | ६१.४ | योदद्याच्छर्कराशैलं (सु) | २१.२०६ | योधास्तन्निगमंमदृष्ट्वा (पा) | १७.६ |
| योगाभ्यासरतो नित्यं (उ) | ८१.१७ | योगिन्यइवताः कन्या (उ) | १२८.७८ | योजकः पालकश्चैत्ररक्षको (भू) | ६.२७ | योदद्यात्कलतांबूलं (क्रि) | २१.३१ | येधिष्विपानकुप्यतिन (सु) | १६.२२३ |
| योगाभ्यासरतो नित्यं (उ) | १४१.१५ | योगिन्यस्तास्तुएवं (पा) | ७५.१० | योजनवहूलविमलगंगा (भू) | ४३.१० | योदद्याद्भक्तितोविप्र- (पा) | ६८.२६ | योधीतेश्रुतिमेवा दी समं(उ) | २७.४४ |
| योगाभ्यासीनरो (उ) | ६४.२३ | योगिभिर्गीयतेनित्यं (उ) | १३२.१५१ | योजनानांशतंत्वेकमितः (पा) | १०६.६३ | योदद्याद्रजतंविप्र (त्र) | २४.१६ | योनदद्याद्धरेर्भुक्तं (उ) | २५५.६७ |
| योगाभ्यासेनपूर्वणं (भू) | ५.१६ | योगि योगिन्द्रसंसिद्धेः (भू) | ४३.१६ | योजनानांशतंत्वेकस्य-(भू) | ५०.४६ | योदद्याद्विष्णुवेविप्र (क्रि) | १२.२५ | योनन्त्यतिमूढात्मा (उ) | ३७.४० |
| योगाभ्यासेनवृंदाय(उ) | १५.६७ | योगियोगेन्द्रसंघुष्टं (भू) | ६७.२४ | योजनानांशतंत्वेकस्य-(स्व) | ४.२१ | योददिरद्वैरपिविधिः (स्व) | ११.१६ | योनंतरूपोखिलविश्व (उ) | २५.१४ |
| योगासनसमारूढो (भू) | ५.११ | योगिराजहृदंभोजराज (उ) | १८५.३५ | योजनानां सहस्राणि-(स्व) | ४.२२ | योददिरद्वैरपिबुधैः (स्व) | ४६.१४ | योनंतद्दतिनागेपुष्टोप्यते-(सु) | १८.३४ |
| योगिष्येयमविज्ञेयं (उ) | ८०.७७ | योगीद्रमानससरोवर-(भू) | २१.२० | योजनानां सहस्र- (पा) | ८५.५६ | योदिनत्रयेपिप्रयत्नतः (पा) | ६२.८६ | योनंतः सर्वदेवानामी- (उ) | २४५.२५२ |
| योगिनानारदेनापि (उ) | १६४.४१ | योगीद्राणां ध्यानपथं (पा) | ७१.५४ | योजनायुतविस्तीर्णं (उ) | ६६.४ | योदिनत्रयेपिप्रयत्नतः (पा) | ६२.८६ | योनपूजयतेदेवंरघुनायं (पा) | ३२.४ |
| योगिनां विवर्तादात्म्यं (उ) | १८६.२६ | योगीन्द्रा हि सदाभक्त्या (पा) | ६६.५६ | यो जपेच्च शतनाम्ना (भू) | ८७.३६ | योददोमलमंडपे-(भू) | ६८.७६ | योनवीजविनावीज (उ) | १२८.२४४ |
| योगिनां श्रेष्ठमत्यंतं(सु) | ४०.२५ | योगीन्द्रैः सनकाद्यैः (पा) | ६६.१०४ | यो जपेच्छृणुयाद्वापि- (उ) | १३३.३६ | योददोमलममात्रेणसर्वा (पा) | १६.४१ | योनरः पुस्तकं दद्यात् (त्र) | २४.३८ |
| योगिनामपिदुर्गम्य (पा) | ८४.१५ | योगिन्यइवताः कन्यानासा(स्व) | २२.६६ | यो जपेत्प्रयतोभक्त्या (त्र) | ६.८ | योददोमलममात्रेणसर्वा (पा) | १६.४१ | योनरश्चरणीघोतम् (त्र) | १४.१० |
| योगिनाममृतस्थानं (सु) | ३.१५६ | योगीसिद्धोयवाज्ञानी (उ) | १६३.३६ | यो जपेत्पयतासवर्णान्यु- (भू) | ३०.४७ | योददोमलममात्रेणसर्वा (पा) | १६.४१ | योनरश्चाश्विनमेमासि (त्र) | १६.१२ |
| योगिनिद्रामुपास्व त्वं (सु) | ४४.१०६ | योगेनाभवतांनद्योसा (उ) | १११.२६ | यो जाय तेहिं द्वीजा-(सु) | ४३.१५५ | योददोमलममात्रेणसर्वा (पा) | १६.४१ | योनरः श्रीहरिकुर्यात् (त्र) | १६.६ |
| योगिनीचक्रगुह्योऽशः (उ) | ७१.१६५ | योगेश्वरः सदोदीर्णो (उ) | ७१.१५६ | योददातिनिखिलं (उ) | २०३.६१ | योददोमलममात्रेणसर्वा (पा) | १६.४१ | योनरैः स्मृतमात्रोपि-(पा) | ३५.३२ |
| योगिनीद्राममाहामाया (उ) | २२७.५३ | योगेश्वरोसिसदियोसि (क्रि) | २.६३ | योददातिपितृणां (उ) | २३.२४ | योददोमलममात्रेणसर्वा (पा) | १६.४१ | योनरोधोघनं कुर्वत् (त्र) | ५.२१ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-----------------------------|--------|
| योनदोषारयेद्विप्र (ब्र) | २२.६ | यो बलवामरीचिचयकर- (भू) | ४३.६ | यो मे जरापसरणां (भू) | ७८.५ | योवसेतुष्करेनित्यं (सु) | ३४.२३० | योषितांनयनतीक्ष्ण- (स्व) | २२.३६ |
| योनरोमस्तवतेभक्त्या (ब्र) | १.१८ | योविभेतिनकः (उ) | २०५.२२ | योमेभावः पुराह्वासीत् (पा) | १००.७ | योवंदतेबंघुजने (पा) | ६४.१०३ | योषितांनयनतीक्ष्ण (उ) | १२८.४८ |
| योनरोशान्तिमूढात्मा (ब्र) | ४.३१ | योन्नवीदथवाक्यं (पा) | ११२.२० | योमेमनोरोधोदेवसफलः (सु) | ४.१२८ | यो वंघस्तृप्तिस्मिद- (भू) | ६८.७५ | योषिद्भोरूपयुक्ताभि- (भू) | ३०.७६ |
| योनवेत्यभिवादस्य (स्व) | ५१.२५ | योत्राह्वाणायशांताप (ज्व) | ५७.१६ | यो मे मुनैर्द्रुपेणभयं (भू) | १६.२६ | योवल्कलंपरीधत्तेजटां (पा) | २.५ | योषिधाकार्तिकेविप्रे (ब्र) | २०.५ |
| योनावमन्येतहृरितस्य (पा) | ४७.६७ | योभक्त्यारजतंत्यच्छेद् (क्रि) | २०.११७ | योयज्ञइतिविप्रेन्द्र- (सु) | १८.३५ | यो वस्त्रगृहनिर्माणं (क्रि) | २२.१०४ | योसावकारोवैविष्णु (उ) | २२६.७१ |
| योनिकुंडंसासाद्यदि (पा) | ११२.२४ | यो भवेज्ज्येष्ठपुत्रस्तु (भू) | ७८.३६ | योयमिच्छतिकामंनुसर्व- (सु) | १६.२०० | योवहेच्छिरसांगंगा- (उ) | २४०.४६ | योसावात्माभया प्रोक्तः (भू) | ६.१५ |
| योनिगुह्येद्रियधाम- (सु) | ४१.८८ | यो भाति सर्वत्र रवि (भू) | ६८.५७ | योयमग्निरः प्रसेनात्- (सु) | १३.८८ | योवाक्ययतिप्रैष्ठशाल- (पा) | २०.४३ | यो सो सर्वगतः श्रीमान् (उ) | २५५.१६ |
| योनिजास्तुकथेयोनि- (सु) | १३.३२७ | यो भायपुत्रमित्राणि (भू) | ६७.८० | योयविश्वेश्वरः साक्षादयं (उ) | ७१.७ | योवादिवंस्त्यधर्मा (उ) | २४५.२०३ | योसौचक्रगदापाणि (उ) | २३८.८३ |
| योनिर्त्यध्यायतेस्वाते (पा) | ३७.१० | योमनुष्यवपुः (पा) | ६३.६६ | योयवैभगवान्साक्षाद् (उ) | १६६.६ | योविद्याच्चतुरोवेदान्सांगोप (सु) | २.५० | योसौनारायणः श्री (उ) | २३८.८० |
| योनिद्वारंचतत्रैव (स्व) | ३८.१५ | योमयारोपितोवृक्षः (उ) | १६६.३७ | योयसकृद्विमलचार- (सु) | ३३.१५३ | योविष्णुदासः सतुपुण्य (उ) | १०६.३३ | योसौनीलाधिवासी (पा) | २२.५७ |
| योनिभक्षोवृषपर्वलिग- (सु) | १८.६६ | योमर्त्योदक्षिणंदत्वा (ब्र) | २६.११ | योयस्थान्सममनाति (स्व) | ५६.१६ | योवेदादौस्वरः प्रोक्तो (उ) | २२६.७० | योसौप्रकृतिपुरुषः (उ) | २२८.६८ |
| योनिमज्जयान्यतीर्थे (उ) | २०७.४८ | योमहत्कर्मदुः माध्य- (पा) | ५५.५० | योयाज्यः सर्वदेवानांवेदैः (सु) | १६०.५ | योवैकल्यंमिच्छन्निज- (पा) | ३०.४६ | योसौप्रलयकारीस (पा) | ४०.११ |
| योनरस्तत्रयत्वावै (उ) | २४.६ | योमहाभारतनित्यं (पा) | ११५.७४ | योयुक्स्तुलसीपत्रैः (ब्र) | २२.७ | योवैगवांल्लोकदद्यान् (पा) | ३०.२६ | योसौप्राणान्तिको- (सु) | १६.२६७ |
| योनिग्लिगस्वरूपं (उ) | २५५.५ | योमाधवेमासिनरः (पा) | ६८.११४ | योराजसूयाद्वयमेध (उ) | १२८.१५२ | योवैगां प्रतिविद्यतेतचरं (पा) | ३०.२८ | योसौबाहुसहस्रेण (सु) | १२.११८ |
| योनिवक्त्रंतस्तस्मिन् (सु) | २३.४६ | योमांज्वरवितप्तांगमा (उ) | २०४.४५ | योराजाजगतांनेत्रीं (पा) | ६५.६१ | योवैदंशान्वा रयतित्य (पा) | ३०.३० | योसौभगवताप्रोक्तो (ब्र) | २५.७ |
| योनिः स्पंदेत नारीणां (भू) | ५३.२० | योमांघातुरिपुंदैत्यं (पा) | ५०.३८ | योराजः प्रतिगृह्णाति (सु) | १६.३३३ | योवैयष्ट्याताडयति (पा) | ३०.२६ | योसौममपितुः पादो (पा) | ६.२८ |
| योनुवृत्तिप्रहृष्टा (उ) | ३७.६६ | यो मामकं वाक्यमिहैव (भू) | ७३.७ | यो राममनसावाचा- (पा) | ३०.४८ | योवैराजनुतवीरंरण- (पा) | २४.१० | योसौमांसारयोविप्र (भू) | ६२.११ |
| योनुवृत्तिसमात्मान- (सु) | १८.४०० | योमामेवप्रपन्नश्च- (पा) | ८२.८४ | योरावणमहसंख्ये (पा) | ४४.७५ | योवैविस्त रतोदंध्यक्षि- (पा) | ४७.२ | योसौविराट्स्वमापन्नो (उ) | २२६.७८ |
| योपच्छतिहरेरपे (ब्र) | १५.४२ | यो मूर्तिर्बहुधाविधाय (क्रि) | १.२ | यो लोकः प्राप्यतेलोकैर्यं (पा) | २७.३२ | योवैवर्षोपाणिपदामयं (उ) | २३८.१७ | योसौविष्णुर्महादेवो (पा) | ७.३१ |
| योपिदेवंहृरिनिदेत् (पा) | ३१.३५ | यो मे गृहस्थो विप्रो वै (भू) | ४७.२२ | योवतीर्यपुनस्तत्रकश्चि- (सु) | १८.२२१ | योवैज्ज्वलपरंस्थानां- (सु) | १५.३५८ | यो सो विष्णुस्वरूपेण (भू) | ८३.३८ |



श्रीपद्ममहापुराणः १: रत्नोक्तानुक्रमणी

३६०

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|--------|----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| योसौवेनस्त्वयाख्यातः (भू) | ३०.१ | रक्तजंघिभुजंष्टवा. (सु) | १४.४३ | रक्षमासेवकं मातस्त्वदीय (पा) | १३.३० | रक्षिताजीवलोका (उ) | २४२.२०५ | रघुनाथोपितच्छ्रुत्वा (पा) | ११.५७ |
| योसौव्याप्यस्थितो (उ) | २२६.५२ | रक्तपीताक्षणास्तत्र- (सु) | ४५.६५ | रक्षयति महात्मानं (भू) | १०६.३७ | रक्षिताहंत्वयाधोराद् (उ) | १०३.१३ | रघुनाथोपितंष्टवादडंबत् (पा) | २.३० |
| योसौसर्वगतोदेवः (उ) | २३८.७५ | रक्तमांसवसालिप्तं (भू) | ६६.५४ | रक्षयित्वापुरामातरिष्ट (पा) | ११२.७३ | रक्षिताहृरिरेवेति रक्षते (उ) | २३८.५४ | रघुनाथोपिभ्रातृस्तान् (पा) | ५.२१ |
| योसौ हुंडो महावीर्यो (भू) | ११८.८ | रक्तवस्त्रमलंकारं ग्रामां (भू) | ३४.३३७ | रक्षराक्षप्रभोरक्षमां (क्रि) | १७.२५० | रक्षितोसिमयारुद्र (उ) | १८.३० | रघुनाथोपिसर्कलंदैवतैः (पा) | ३.२२ |
| योस्मन्नाथः सपक्षीद्रो- (सु) | ३७.६० | रक्तसिद्धरकलिका (पा) | ७१.६३ | रक्षराक्षसनः सवन् (उ) | १८५.५२ | रक्षिष्यंत्यनपत्यायां (क्रि) | २०.३१ | रघुनाथोमहाबुद्धि (पा) | ५६.२३ |
| योह्यन्याद्विमदंमत्तमुप्तं (पा) | १०.५६ | रक्तास्तमंवरंष्टवा (उ) | १३.२५ | रक्षसर्वाणिमाल्लोकान् (ब्र) | ८.१६ | रक्षोदेवत्वहृद्धर्मा (उ) | ७१.२२८ | रघुवंशनृपस्यायमस्को- (पा) | ३५.२८ |
| योहंमयास्ति याव (पा) | ८२.४३ | रक्ताक्षमूदध्वंरोमाण- (पा) | ६६.३४ | रक्षसांबोडशगुणपाथिवाना- (भू) | ७१.६ | रक्षोभूतेतिमंत्रेण (उ) | २१४.७ | रघुवंशेतिविख्यातो (उ) | ३३.५ |
| योहमादौ हृतो बाल- | ११४.१२ | रक्तादित्यमुखंष्टवा (उ) | १५२.३६ | रक्षसांभुनादत्तोवरः (पा) | १०७.५८ | रक्षोयक्षपिशाचान्नं (उ) | २५५.१९१ | रघुणामन्यवेपूर्वं (उ) | २४२.६ |
| यो हरेच्चमहीतावद्- (क्रि) | ६.३१ | रक्ताम्बराभिव्यति (क्रि) | २६.२१ | रक्षस्वद्विजशार्दूल (भू) | ३.११ | रक्षोहंतुमशक्तस्तु (पा) | ११५.१४ | रघोरभूददिलीपस्तु (सु) | ८.१५४ |
| यो हि विद्वान्भवेत्कांत (भू) | ११.२४ | रक्ताखिवदसश्च (उ) | २४२.२३२ | रक्षांस्तसिबोविप्रोभवतां (सु) | ३१.३७ | रघुनाथइतिख्याति (पा) | ५७.३४ | रचयतिक्षणंशय्यां (उ) | १२८.८० |
| योह्यस्यमनसः कामस्तं- (सु) | २.६५ | रक्ताखिवदनवनं (उ) | २४५.३०० | रक्षांकरोतिभूतेभ्यः (उ) | ७३.६ | रघुनाथकृपायांगादहं- (पा) | ४२.८ | रचयतिक्षणंशय्यदीपिकां (स्व) | २२.७१ |
| योस्त्वयामाययाद् (उ) | १०३.२८ | रक्तैः कुवलर्यश्चेव- (सु) | ४५.५० | रक्षां करोतु विश्वात्मा (उ) | ७८.७२ | रघुनाथः कृपां कृत्वा (पा) | ४४.६ | रचयित्वातदारामो- (सु) | ३३.१२१ |
| योमंत्रैलोकसुभगांजन (उ) | ८८.२० | रक्तोत्पलनिभ (उ) | २२६.१०५ | रक्षां सिधायतु धानाश्च- (भू) | २६.६३ | रघुनाथपदांभोजनित्य (पा) | २४.२४ | रचयित्वातदारामो- (सु) | ३३.१२१ |
| योवनं वतंतेऽद्यैव (भू) | १०३.२८ | रक्तोत्पलैः शोभमानं (भू) | ७७.१७ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथप्रसादेनसर्वं (पा) | ४४.३४ | रचयित्वातदारामो- (सु) | ३३.१२१ |
| योवने कामरागान्यां (भू) | ६६.२०० | रक्षणांयतुभूतानांप्रविशंति (स्व) | ४.२४ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथशृणुष्वैतान् (पा) | ११.२१ | रचयित्वातदारामो- (सु) | ३३.१२१ |
| योवनोद्भिन्नकेशोर- (पा) | ६६.८५ | रक्षणार्थं महादेवो (स्व) | ३४.१४ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथसतीकृति (पा) | १.१५ | रचितेनोर्ध्वंयुं- (पा) | २२६.१३७ |
| योवनोद्भिन्नकेशोरं (पा) | ७७.५५ | रक्षतिपरनित्यम् (स्व) | ४८.७ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथस्तमनुजंपरिष्वज्य (पा) | २.३५ | रजकः क्रोधसंस्पृष्टो- (पा) | ५५.६८ |
| योवैनित्यपूजयतिगाणे (पा) | ३०.२५ | रक्षतिपरनित्यम् (स्व) | ४८.७ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथस्तमनुजंपरिष्वज्य (पा) | २.३५ | रजकाश्चर्मकाः श्रोत्राः (पा) | १६.५० |
| र | | रक्षतिपरनित्यम् (स्व) | ४८.७ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथस्तमनुजंपरिष्वज्य (पा) | २.३५ | रजकेनयथावस्त्रशुक्लं (स्व) | १६.२० |
| रकारादीनिनामानि (उ) | २५४.२१ | रक्षतिपरनित्यम् (स्व) | ४८.७ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथस्तमनुजंपरिष्वज्य (पा) | २.३५ | रजतं कनकं चित्र- (सु) | ४५.८१ |
| रक्तं पल्लवंतं ज्ञेयं विष्णुं (भू) | ६६.६६ | रक्षतिपरनित्यम् (स्व) | ४८.७ | रक्षां सिधैहिमवतीहेमकूटे (स्व) | ३.६६ | रघुनाथस्तमनुजंपरिष्वज्य (पा) | २.३५ | रजनीचरसचार (सु) | ४३.८२ |

श्रीपद्ममहपुराणम्: श्लोकानुक्रमणी

३६१

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|------------------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------|--------|
| रजतंपाहिस्तस्मान्नः (सु) | २१.१६१ | रजोगुणधरोदेवः (स्व) | २.३२ | रणेविजेतुदेवांश्च- (सु) | १३.२२६ | रत्नज्योतिः समाकारा (भू) | १०२.६४ | रथचीत्काराव्यदनगजानां (पा) | ५१.३ |
| रजसिधेचकार्यण्यात् (ब्र) | २४.५१ | रजोगुणमवष्टम्भ- (पा) | १०८.६६ | रणेविनिहतान् देवान् (उ) | ७.४७ | रत्नताटकेकेयूदमुद्रा (पा) | ८१.४८ | रथगजवृषपत्तिसंकुलं (उ) | ५.३० |
| रजःपपात्रवहुलंतमस्तो (उ) | ५.४१ | रजोमात्रोत्कटाजाता- (सु) | ३.६४ | रणेवैश्वर्येणस्तेनपरोतः (सु) | ४१.२२६ | रत्नमाला विभूपाद्यां (पा) | २६.१४ | रथप्रवीरैः पत्तिश्च- (उ) | ५.६८ |
| रजसप्ततसंश्चैवं (सु) | ४०.३७ | रजोयुजः स्त्रियोग्यत्नना- (पा) | ५.३५ | रणेसंवेष्टयामासु (उ) | १२.६३ | रत्नरेखास्त्रियंख्याता (पा) | ७४.११७ | रथवाकपर्वेद्यन्तु- (सु) | १७.२४२ |
| रजसातमसाजुष्टं (पा) | ६७.८४ | रज्ज्वाधृतमहावीरैः (पा) | २६.१५ | रणेनर्वविजित्या (उ) | १६.२८ | रत्नस्तंभसमाकीर्णं (सु) | ८.१०४ | रथमारुह्यवेगेन (उ) | ३३.१४ |
| रजसादूषितः श्राद्धे (उ) | ७७.११ | रजयित्वातुतत्त्वं (उ) | ८६.२२ | रणोत्साहेनसंयुक्ता (पा) | ५१.४ | रत्नहेमप्रदानेनभोगवाद (सु) | ३४.२५१ | रथमार्गमवारोदुग्धेन- (सु) | ३२.८२ |
| रसामं डलंकुर्यत्पंच- (सु) | २७.२२ | रटतीहपुराणाभिभूयो- (उ) | २३४.११ | रति केलिरनावेग- (पा) | ८१.४२ | रत्नाकरसुमेधादि (उ) | २०२.६ | रथवेगेन सन्निवन्तः (भू) | ७७.२० |
| रजसाभ्यवृत्तंभ्योम (पा) | ३३.३ | रणस्कणहस्ताश्च- (उ) | १८६.१० | रतित्ववस्तुविनियोगार्तः (उ) | १८.३६ | रत्नाख्ये तु मिश्रितमिमन- (भू) | १०१.४७ | रथाग्रेशांशिनीपुत्रं- (भू) | १७.२३२ |
| रजस्तपोभ्यांनियतं (उ) | ७४.७ | रणद्वलवसंयुक्ता (उ) | ४६.१८ | रभिमध्येनुविच्छेदे- (पा) | ११०.१६ | रत्नांगुलीयंमुष्यंवाह- (पा) | १०५.१६४ | रथान्तराणिदंडनभौ- (सु) | १८.१५३ |
| रजस्तोभ्यांयुक्ता भूद्रजः (पा) | ६७.८३ | रणप्राप्तिभयान्द्रांपुरप्रति- (पा) | २६.१५ | रतियुक्तोजगामासुप्रस्थं (सु) | ४३.२१२ | रत्नांगुलीयभगवाह- (पा) | १०५.२२८ | रथान्तराण्यनद्वेष्टा- (उ) | ११.६ |
| रजःस्वतन्त्रमश्चति (क्रि) | २.५ | रणभूमिसमासाद्यदैत्याः (पा) | ३१.६० | रतिष्वापारारोहा (भू) | ६३.१६ | रत्नांगुलीयैरयन्तुपुरा- (पा) | ११४.१६५ | रथास्कायः पपातांश्च- (उ) | १०८.१३ |
| रजस्वनाप्युनानारी (उ) | ७७.३ | रणभेयैः शंखनादाः (पा) | २६.२४ | रति मन्मथस्वर्थापि (भू) | ४६.१७ | रत्नानिवमुवाचानि (पा) | १११.१३ | रथास्तोवाचक्ष्णाया (पा) | ६६.६० |
| रजस्वलाप्यजम्लेच्छ (उ) | ६४.१३ | रणमध्येदुराक्रांतकुर्या- (पा) | ६४.२८ | रतिद्वत्तत्रमेनाभूततः (सु) | ४४.६८ | रत्नानिविधिधान्येव (भू) | २६.६८ | रथादुत्तीर्णलतितां (पा) | ६७.६ |
| रजस्वलांनसेवेतना (पा) | ६.५४ | रणमागत्यदैत्येभ्यः (उ) | ७.७५ | रतिश्रमप्रसुप्तानां (पा) | १०६.२६ | रत्नानिमुविचित्राणि- (स्व) | १५.५१ | रथानश्वान्महानागनगाः (उ) | २४७.३२ |
| रजस्वलासुनारीषु- (उ) | १६८.५६ | रणंगणैकेनपुत्र (उ) | १३.३८ | रतिः संचित्यमनसा (क्रि) | ६.१५० | रत्नान्यन्वागजाभूत्वा (सु) | ३१.१५४ | रथानामेववापाणां- (सु) | १३.५२ |
| रजस्वलांस्त्रियांचेव (क्रि) | १६.१०७ | रणोत्पत्ताशिवस्याग्रे (उ) | १८.१६ | रतिः संजायते तस्य (भू) | ६६.६० | रत्नापहरणंचैवदैत्यानां (उ) | ६७.४ | रथान्द्वयान्पदातीरच (उ) | ११.६५ |
| रजासितत्रयावति (क्रि) | ११.४६ | रणे नियतितं पापमुक्त- (भू) | १०३.६२ | रत्नं सिंहासनंतत्र (पा) | ७४.३६ | रत्नापहारिणीजाता (भू) | १०६.१० | रथारथैरियुध्यतेया- (सु) | ४१.२१२ |
| रजासितत्रयावतिदूरी (क्रि) | २४.१६ | रणे निजित्य गोविन्दं (भू) | १०.३४ | रत्नचंचनवदनेन संपूर्णेन (भू) | १०४.१२ | रत्निमात्रपरिवलकणं (सु) | ६.६१ | रथारथियुतास्तेन (पा) | ४२.७७ |
| रजिपुत्रैस्तदाखिलं (सु) | १२.८५ | रणेवद्वेष्टसियेतत्वं (उ) | १५.५२ | रत्नकुंडलसंयुक्ता (उ) | २२८.४१ | रत्नयंतकात्रीजेनपुटितं (पा) | ७२.८ | रथाख्यासुभद्रांच (क्रि) | १८.४१ |
| रजिरारावयामास- (सु) | १२.७८ | रणेरणोलब्धजयाः (सु) | ३१.७२ | रत्नकुंभैः सुखा- (उ) | २३८.१४५ | रत्नयंकामवेवोयमिति- (सु) | २३.१२१ | रथाविप्लावितस्तोये- (पा) | २४.४३ |

श्रीपद्ममहापुराणम् १: श्लोकानुक्रमणी

३६२

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| रथाश्चयंत्रोपरिपीडितां-(सू) | ३१.७१ | रमणारामतीर्थतुयमुना-(सू) | १७.१६८ | रंभा च प्रेरयामास-(भू) | ३६.२६ | रविरस्तंगतोरजं (उ) | ४३.३८ | रसानांप्रतिसंहारे (उ) | ३२.६६ |
| रथाश्चसहस्रैर्युक्तावर्तं-(पा) | १७.५१ | रमणीयमहाभोगं (पा) | ६६.२४ | रंभा च सा नगमाथ (भू) | ११७.६ | रविरस्तंगतोरामगर्वो-(सू) | ३७.६३ | रसायनतपोजाययोग-(भू) | ६६.१२८ |
| रथिभिः पतिभिर्वीरैः (पा) | १२.२६ | रमणीयमुपाक्रामच्चैत्र (सू) | ३७.२१ | रम्भाणि चूनपत्राणि (पा) | ११७.१०८ | रविरस्तंगप्रवात्यैवेपन (उ) | २०४.५० | रसायनमयोशीता-(पा) | ६८.५८ |
| रथेचारोपयोसु (३) | ७.३० | रगते तेन वै सार्द्धेन (भू) | ८.५३ | रंभादस्तांसेवुभुजेतन्नं (पा) | ११७.२६ | रविवारेषगांगल्ये (उ) | ६३.५ | रसेन तेन ता नाडीः (भू) | ६६.२३ |
| रथेनकनकांगेवचतुर्वर्जि-(पा) | २३.३२ | रमते यत्र देवेशः सोमः (सू) | ८.८५ | रंभायाननुतुस्तस्य (उ) | १६२.२८ | रवेवरिस्वमाहात्म्यं (उ) | १.५८ | रसैः सुपुण्यैः सकलैः (भू) | ६८.६० |
| रथेन तेन दिव्येन शुचुभे(भू) | ११०.२३ | रमते राजराजेंद्रस्ता-(भू) | ७६.१५ | रंभाद्यास्तास्तासर्वा (उ) | ३.२६ | रवोमध्वाह्ने हरिदत्ता-(पा) | २१.३६ | रहस्यमपिवक्ष्यामि (पा) | ८३.१८ |
| रथेन सह घर्मात्मा (भू) | १११.१२ | रमते सुख भोगेन विष्णो (भू) | ८०.१६ | रंभा भानुमती पुण्या (भू) | ६०.२५ | रवोस्थितेऽपिपद्मिण्या (क्रि) | ६.६२ | रहस्यानां रहस्यं (पा) | ८१.१२ |
| रथेन साश्चसूतेन (भू) | ११४.५ | रममाणतदायुग्मंनभ (पा) | ५७.८ | रंभेयमुर्वशीचैपासुरेखा-(पा) | ७४.१२८ | रश्मिमततीस्वभावेन-(सू) | ४५.४२ | रहस्यानां रहस्यं (पा) | ८३.११२ |
| रथेन हययुग्मेनमणिकां-(पा) | ४०.३४ | रममाणा च सा तस्मिन्-(भू) | ४६.१३ | रंभोपभोक्तृयुपीननितवं (सू) | ४६.५८ | रसंजानासिमतिमान (पा) | ११०.६६ | रहस्येवतुसाष्टा (पा) | ५५.८ |
| रथेनहंसवर्णनचंद्रविम्बा (भू) | ८३.१६ | रमयतिन सरवस्थास्ते-(पा) | ६६.६२ | रंभ्यजंगत्तत्रयिभवं (क्रि) | २.६५ | रसकंवलचर्मादिविक्रय (उ) | ११३.२ | रहितः सर्वधर्मैः (उ) | २५३.१२१ |
| रथेनियेदद्यामासपुष्पके (क्रि) | ६.१४६ | रमयामासधर्मात्मा (उ) | २४२.१८३ | रंभ्यस्त्राभूणोयेतै-(पा) | ७७.६ | रसकवर्णिनीमेतांपुरा (सू) | २२.१०७ | राकायांपूयुंशीतां-(पा) | ३५.६० |
| रथेमणिमयेतिष्ठन्वभूव-(पा) | ४६.३१ | रमयिष्यतिविश्वामा (सू) | २३.७७ | रंभ्यकैलिमुखैर्नव (उ) | २५२.२७ | रसकलोलिनीचैराङ्ग्यं (पा) | ७४.१०७ | राक्षसंक्रूरकर्माणं-(सू) | १३.४०५ |
| रथैः सदस्यैः शोभाद्यैः (पा) | ३४.१ | रमरवकलिनादेवितेपां (उ) | २३२.३२ | रंभ्येषुभ्रतरेपीठेषुपीठे (उ) | २५३.१२ | रतथेनुस्नय्यादत्तावगत्तिके(सू) | ३४.३७६ | राक्षसः केनपापेन (उ) | १८५.७४ |
| रथोदास्यद्वचरामेण (पा) | ६६.६५ | रमाकांत भवस्थीत्यै (उ) | १६२.४७ | रंभ्योपवनवापीभिः (पा) | १०५.४ | रसवंतः प्रनूनाश्चवासां (सू) | ३८.५ | राक्षसांहनुमार्भे(उ) | २२६.१७६ |
| रथोधनुमंहृत्सयं (पा) | ४२.४२ | रमात्रयेणपुटितंस्मराद्यं (पा) | ७२.६२ | रक्षभगवानेकमिश्रवाको (उ) | २४१.७४ | रसवंतिचक्राक्षिभोजना (सू) | ३७.१३४ | राक्षसावददौभूपते (उ) | १२७.५८ |
| रथोपरिगतांदष्ट्वा (उ) | १०४.२ | रमाभिधानानूपते (उ) | ६०.५० | रराजसमहाश्रुगैरप्स-(सू) | ४५.१६८ | रसातलंगहावाहो (उ) | ७.६० | राक्षसीचिन्तिनापार्श्वेति (उ) | ११८.२१ |
| रथोपस्थस्थितंमूढं (पा) | २५.२५ | रमावल्लभासुराणां (उ) | ६८.३ | रराजसैश्वल्यैर्कं (उ) | ११.८ | रसातलंगुभंलोकं (उ) | २४०.५५ | राक्षसीनांविमोक्षयं (उ) | २०८.६७ |
| रथोपस्थैर्निपतिताः (पा) | ६०.५३ | रमाव्रतप्रभादेन (उ) | ६०.४६ | रराजास्त्रवतीभीमायक्ष (सू) | ४१.२०१ | रसातलप्रविष्टां (उ) | २४४.३२ | राक्षसीनामसांखिलागहितं(सू) | ११.८५ |
| रथ्यामठेयवारम्ये (पा) | ११५.२५ | रमेतयावदादित्यस्त-(सू) | ३४.३६३ | रविचन्द्रमसंचैव (क्रि) | ११.६ | रसातल स्थितादैत्या (उ) | ५.२६ | राक्षसीनामसांखिला-(उ) | १३५.७४ |
| रतिदेवाभ्यनुज्ञातो (स्व) | २४.४ | रमेपोडसभिर्द्युतशाला-(उ) | २०८.१७ | रविप्रभं देवगणैः (भू) | ६६.११ | रसाधिक्यं भवेद्राजन् (भू) | ६४.७६ | राक्षसेनैवहरेण (उ) | २४५.८७ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| राक्षसेनैव रूपेण (उ) | २४५.१४१ | राक्षवाभ्यांविनासीतां- (पा) | ३६.२४ | राजनृजघानसंसित्य (उ) | ६.३ | राजनृशृणुष्वयत्कृष्टम् (त्र) | ५.२६ | राजमानानिखेचर्यः (उ) | २०८.४३ |
| राक्षसेन्द्रकृतादानैव- (उ) | ४३.२४ | राक्षवायससूतहि (उ) | २४२.३१५ | राजन्देहि सुदानानि (भू) | ६४.३८ | राजनृशृणुष्ववहितो (त्र) | १२.६ | राजमानो महादीप्त्या (भू) | ६७.२८ |
| राक्षसं द्विजमुख्यैश्च (उ) | २४३.१७ | राजकार्यमशेषं च (पा) | ११७.२०४ | राजन्देहपुरं ह्येत (पा) | ४०.६ | राजनृसंघुष्यतीशत- (उ) | १२६.६७ | राजमार्गं वरद्वारनारी (उ) | १८५.१० |
| राक्षसं निहताये तु (उ) | २४२.३४३ | राजजन्म पुनः प्राप्य (पा) | ११०.६१ | राजन्नेनविप्रेण मोहिताः (उ) | २०६.२३ | राजन्समागताह्येषा (उ) | २०२.५५ | राजमार्गं व्रजद्वारि- (पा) | ८३.८५ |
| रासस्यः पितृकन्याश्च (सु) | १७.११० | राजञ्जानामिगौरेषा (उ) | २०३.५६ | राजन्नेनस्वं समालोक्य (पा) | २५.५ | राजन्सृष्टिकरोब्रह्मा (पा) | ६.१७ | राजमापादिकनित्यम् (त्र) | २१.१८ |
| राक्षस्युदरजन्मतत्वात्- (पा) | ६.२१ | राजतः स्वामिनश्चापि- (सु) | २३.१०५ | राजन्नसौनीलमिरि (पा) | २२.५४ | राजंस्तवमहत्पुण्यं- (पा) | ३१.५ | राजभूलाः प्रजाः सर्वा- (सु) | ३७.१०६ |
| रागद्वेषविनिर्मुक्तः (भू) | ७५.२४ | राजतानिगृहाण्यग्रदृश्यं (पा) | ३६.३ | राजन्नस्मासुजीवत् (पा) | २८.१५ | राजंस्तवमहाप्रेम्णा कृष्ट (पा) | २१.४४ | राजराजस्यानुचरो (उ) | ५२.२३ |
| रागद्वेषविनिर्मुक्तः (उ) | ८०.४२ | राजतोलोकतोभीतीस्व- (स्व) | ३०.३१ | राजन्नाकर्ण्यविप्रोसी (उ) | २१२.१६ | राजंस्त्वं शृणुयद्भुतं (पा) | १८.१ | राजराजेश्वरः श्रीमान्- (सु) | ४१.१६ |
| रागद्वेषविनिर्मुक्तो (उ) | ८५.२७ | राजतैर्भजनैरेषां (सु) | ६.१४४ | राजन्निर्गत्यागत्वा (पा) | ११०.८५ | राजंस्त्वमपि शुद्धात्मा (भू) | ३६.२७ | राजराजोमुष्यतमा- (सु) | १६.८५ |
| रागद्वेषेणविद्वत्सुगुण (उ) | १७५.४७ | राजतो नवमस्तद्वद्दशमः (सु) | २१.८६ | राजन्नेवैत्स्थलं नीलवर्त- (पा) | २१.८ | राजपुण्येन राज्ञेः सुखं (भू) | ३८.२३ | राजश्रियाविद्यया च (क्रि) | १०.३६ |
| रागद्वेषोपरित्यज्य (भू) | ४.१४ | राजद्वारमुपागम्य- (उ) | २४४.४४ | राजन्प्रतिग्रहोघोरोमध्वा- (सु) | १६.२३० | राजनुव्रप्रसन्नाहृणीष्व- (उ) | १८६.३४ | राजसांनारजस्त्वंचता (पा) | ६७.१६ |
| रागादिदुष्टमत्यर्थ- (सु) | १३.३६३ | राजद्वारिस्थितनार्ग (उ) | २४५.३५१ | राजन्प्रतिग्रहोघोरोमध्वा- (सु) | १६.२३० | राजपुत्रः स्वसदृशं वलेन (पा) | ४१.७ | राजसुलक्षणीदिव्यैः (भू) | १०६.७ |
| रागवत्त्वेभवत्सीता (उ) | २४७.१५ | राजद्वारे तथा दुर्गे (क्रि) | १५.१०२ | राजन्प्रत्यक्षमेवैकं (भू) | ६४.४३ | राजपुत्रीसमीपेसागंधि (क्रि) | ५.१०८ | राजसूयफलं भुंक्ते (भू) | ८७.३० |
| राघवः पायुमेवंताम् (उ) | ७३.७ | राजधर्मग्राहिणश्च (क्रि) | २६.५ | राजन्भवत्पादंभोजान्- (पा) | २६.२ | राजवृद्धादिश्रेष्ठ (त्र) | १५.१६ | राजसूयसहस्रस्यराज- (उ) | १२७.४१ |
| राघवश्चित्रकूटा- (उ) | २४२.१६४ | राजधर्मश्चित्रज्ञाश्च (उ) | २२३.६ | राजन्भुक्तिनजानासि (उ) | १०८.१७ | राजभ्रातावीरसिंह (पा) | ४०.३८ | राजसूयाश्वमेधाभ्यांफलं (स्व) | २५.१७ |
| राघवस्त्वब्रवीत्सीताना- (सु) | ३३.१७६ | राजतंबोद्धंवापाण- (पा) | ११२.५ | राजनृयक्रियतेकर्म- (उ) | १६.३४ | राजमात्राफलंस्वामि- (पा) | २६.४ | राजसूयाश्वमेधाभ्यांफलं (स्व) | २७.६१ |
| राघवस्यतुतदाक्यं (सु) | ३५.६६ | राजतंद्विजमंडले मलमुखे (भू) | ६८.७७ | राजनृयोगफलं सर्व- (सु) | १०.१२३ | राजमानं महात्मानं (भू) | १७.७ | राजसूये महाराज प्राणिनां (भू) | ३७.३५ |
| राघवस्यवचः श्रुत्वा- (सु) | ३८.१२८ | राजतंस्थान्तदन्येषां- (सु) | २१.१८८ | राजन्योसीनीलरत्नो- (पा) | ११.२३ | राजमानं महात्मानं (पा) | ८६.१६ | राजसूयस्ययज्ञस्य (स्व) | ३८.५० |
| राघवागमनंतरम्- (उ) | २४२.३५१ | राजनीतियुतंमंत्रशशो (भू) | १०.४० | राजन्योबालकीमह्यम् (पा) | ६६.७ | राजमानं सहस्राक्षं सर्वा- (सु) | ३०.८० | राजस्त्वमपितत्राधुगच्छ- (पा) | १६.५५ |
| राघवाभ्यां तुतहिता (उ) | २४२.१३७ | राजन्कोयलघुदेव्यो (पा) | ३३.४७ | राजन्विचरं नैवेद्याधिप- (पा) | ११६.६२ | राजमानं हृषीकेशं (पा) | ८५.१०२ | राजहंसमयूरैश्च (उ) | १२५.११० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३६४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|--------|-------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| राजहंस युतदिव्यं (क्रि) | २१.६३ | राजानंदमनाभूत्वा (ब्र) | ७.४२ | राजापितृस्वीयपदे (पा) | १७.१३ | राजासुबाहुः संरोपादा-(पा) | २५.२४ | राज्यं प्राप्स्यसि (उ) | ४०.४३ |
| राजहंस युतेविप्र (ब्र) | २०.३२ | राजानं धर्मं संकेतं (भू) | ८१.६ | राजापिष्टट्वात्पवग (पा) | ५०.२२ | राजास्वावीचपप्रच्छ (ब्र) | ११.८० | राज्यं महेश्वरेभक्ति-(पा) | ११२.८१ |
| राजाकनकसनन्देरथे (पा) | २८.२३ | राजानं निर्गतं षट्वा-(पा) | २५.१६ | राजापिपंयंयुच्छतं (उ) | १८८.३५ | राजाहयवयोः कस्मा (क्रि) | ३.३७ | राज्यं स्वर्गश्चमोक्षश्च-(भू) | १८.३५ |
| राजाग्निजलाघात(भू) | ६६.२०२ | राजानं पतितं षट्वा (क्रि) | ६.७० | राजापिपीत्रनप्त- (उ) | १८६.१४ | राजा हि पृथिवीनाथः (भू) | २८.३२ | राज्यकामीतुतद्वाज्यं (उ) | १६१.११ |
| राजाचतमृतं श्रुत्वा (क्रि) | ६.४० | राजानं पश्य मां चैव (भू) | ७६.२३ | राजापि प्रियया सार्धं क्षुधा(भू) | ६७.६ | राजीवदलनेत्र- (उ) | २५५.८२ | राज्यकालेवनेवासोभार्यया (सृ) | ३६.६ |
| राजाचनारंदगायं (पा) | ११६.८१ | राजानं प्रपुवाचैव (भू) | ११०.१० | राजप्रयागः संजात (भू) | ६२.३० | राजीवलोचनंस्त्रिगध (उ) | १८५.६६ | राज्यभ्रष्टस्ततः (सृ) | १२.८६ |
| राजातं वीक्ष्यशिरसा-(पा) | १७.६० | राजानंमुच्छित षट्वा (पा) | ८.२ | राजाप्राप्यमुदाचाश्वं (पा) | ४६.२६ | राजेन्द्र सध्यासमयेतस्मा (सृ) | ३.६६ | राज्यमेवं प्रकर्तव्यं सुख (भू) | ७.८२ |
| राजातमागतंषट्वा (पा) | २६.५० | राजातंमुच्छितंषट्वा (पा) | २८.४६ | राजाप्रोवाचतदूतं (पा) | ५०.५१ | राजेन्द्रं सीतयासाकंगच्छ (पा) | ६८.१३ | राज्यसारंसमानीतम् (ब्र) | ११.८१ |
| राजातमागतंषट्वा (पा) | ४२.२५ | राजानमब्रुवन्देव (पा) | ११६.३६ | राजाबलेनमेयुत्रं (ब्र) | १२.५३ | राज्यं चकार मेधावी प्रजा (भू) | ४८.३ | राज्येनसहितं सर्वं (पा) | ४६.२६ |
| राजातानागतंषट्वा (पा) | ४२.३६ | राजानः पितरः प्रोक्ता (क्रि) | २१.६८ | राजाभवति धर्मात्मा ज्ञान-(भू) | ४०.६ | राज्यं चकार मेधावी (भू) | ६४.१० | राज्येपि हिकुतः सौख्यं (भू) | ६६.१६३ |
| राजात्मजोपप्राप्य (पा) | २३.८८ | राजानंपूजयित्वा (पा) | १७.१५ | राजाभवत्स्वधर्ममहिदासी (भू) | १२.१२३ | राज्यंचकारयामा (उ) | २४२.४३ | राज्येभिपिच्यसुरथं (सृ) | ३६.६१ |
| राजायविप्रमुख्ये- (उ) | २४२.८० | राजानमथकैकेयी- (पा) | ३६.१८ | राजायत्कुस्तेपापं (उ) | १२६.१८४ | राज्यं चकुर्वतस्तस्य (उ) | १३६.११ | राज्ये संस्थापयामास (भू) | २७.७ |
| राजायस्वयुहगत्वा (पा) | ११०.६३ | राजानः सर्वंराष्ट्रेभ्यो (उ) | २४७.२६ | राजास्त्रीतस्यपादौ (ब्र) | ५.२५ | राज्यं चक्रे स मेधावी (भू) | १०४.३ | राजः कारांकिकः (पा) | ११०.७५ |
| राजादत्त्वात्वजातस्मै (पा) | १४.६५ | राजावृत्तवचनदोष (पा) | ११६.१४३ | राजावीरमणिर्वीरः (पा) | ४५.३७ | राज्यंचमहदाप्नोति (पा) | ११२.६७ | राजः परित्तितोमोक्ष (उ) | १६३.१५ |
| राजादुहितरंप्राहकृत (पा) | १६.८ | राजानोदासतांयाति (उ) | २५४.५० | राजावीरमणिः (पा) | ५०.४८ | राज्यं च सकलामूर्वी (भू) | ७६.१० | राजः प्रतिग्रहोघोरस्ते (उ) | १२६.१८३ |
| राजाष्टट्वासुसन्नद्धं (पा) | २५.३५ | राजानो धर्मं शीलाश्च (भू) | ६५.२४ | राजामीरमणिर्भूरिदेवे (पा) | ५१.१६ | राज्यंनिदेवयामास-(सृ) | ३८.८२ | राजः पञ्चान्नपश्यामो (उ) | ४१.१२ |
| राजाधिदेवस्यसुतो-(सृ) | १३.६२ | राजानोराजपुत्रा (उ) | १२२.४४ | राजावीरमणिस्तत्र- (पा) | ६७.३६ | राज्यंप्रसाशधर्म- (उ) | २४४.६० | राजः श्रीरघुनाथस्य-(पा) | ३३.४६ |
| राजाधिदेवीचतथा (सृ) | १३.११३ | राजानंवर्तकान्च (स्व) | ५६.४ | राजावैतत्रसंजातः (उ) | १३६.२४ | राज्यंप्राप्तमसापत्नंसमुद्धं (पा) | ५.२८ | राजावाङ्मीरदेव- (उ) | १८०.८४ |
| राजानंचांतरिक्षेसगिरं (उ) | ३६.४४ | राजापितृनिर्वर्त्यप्रातः (पा) | १६.५५ | राजावैसूर्यवंशीयो (उ) | १३५.६३ | राज्यंप्राप्तात्वयासाद्धं (पा) | ५५.१३ | राजागृहेचसर्वाणि (ब्र) | ११.५८ |
| राजानंतुबलिचक्रे (उ) | २४०.५६ | राजापितृसमाहूय (उ) | २०६.१६ | राजासर्वस्यलोकय रामो (सृ) | ३७.६८ | राज्यंप्राप्तुहिमुदसर्वत्र-(पा) | १३.३४ | राजानेनयथादुष्टाशयं (भू) | २८.२ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| राजातेनोपदिष्टास्ते (भू) | ७५.२० | रात्रीजागरणं कृत्वा (उ) | ५६.१७ | राधा दामोदराभ्यायां (ब्र) | २०.४ | रामचंद्रो महाभागः सर्व- (पा) | १०.४६ | रामश्यामं गुनयनंमृग (पा) | २८.५१ |
| राज्ञापिकथितैस्तैस्तो (उ) | १८०.८६ | रात्रीजागरणं गति (उ) | ३०.२६ | राधादामोदराभ्यायां (ब्र) | २०.६ | रामत्वर्धनानामेद्यगतं (पा) | ६.१० | रामस्मरंस्त्वन्मतिम् (पा) | ३१.४८ |
| राज्ञाविद्वान्चत्तेक्रोडा- (उ) | १२५.४० | रात्रीजागरणं चैव (उ) | ४०.१२ | राधाजन्माष्टमीपुण्यं (ब्र) | ७.६ | रामद्वितीयः मौमित्रिर् (उ) | ७१.२३६ | रामंमृत्वाधनुःत्वा (पा) | ४२.६० |
| राज्ञाविषयसक्तानां (उ) | २२१.४८ | रात्रीजागरणं नत्र (उ) | ८५.२४ | राधाजन्माष्टमीवत्स (ब्र) | ७.६ | रामनामद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १५.१०४ | रामंस्मृत्वा महाभागं (पा) | ६८.३० |
| राज्ञावीरमणिनारथा- (पा) | ४५.३८ | रात्रीजागरणं मेने विष्णु (उ) | ४०.४० | राधा विष्णोः प्रीतिकरम् (ब्र) | ७.३३ | रामनामपञ्चसर्वं (क्रि) | १५.२८ | राममभ्यर्च्य राजेन्द्रलभेद् (स्व) | २६.३८ |
| राज्ञासहसमीरस्यपुत्रः (पा) | ५१.१० | रात्रीजागरणं प्राप्ते (उ) | ३७.११ | राधिका चित्ररेखाच- (पा) | ७७.२० | रामनामप्रभावसर्वं (क्रि) | १५.८६ | रामराम महाबाहोपुण्य (पा) | १०४.२७ |
| राज्ञासाद्धं च गच्छति (उ) | १३६.१६ | रात्रीजागरणं प्राप्ते (उ) | ७३.१४ | राधिकानुचरीतत्रत- (पा) | ८३.६ | रामनामेतिविप्रपेयं (क्रि) | १५.१०५ | रामराम महाबाहो (उ) | २४.१५७ |
| राज्ञेनिवेदयामाससज्जा- (पा) | २५.१५ | रात्री दिवा गृहस्यांते (भू) | ८५.१३ | रामकृष्णावतारौ (उ) | २४१.८१ | रामः परमधम्ममतिमा (पा) | ११७.१८० | रामराम महाबाहो (उ) | २४२.१६६ |
| राज्ञेनिवेदयामासुरतं (उ) | १४१.२५ | रात्री दुःखं मसज्जातं (उ) | १४५.११ | रामकृष्णावितिख्याति (उ) | २४५.७१ | रामः पप्रच्छतंभूयो (पा) | ६.१२ | रामराम महाबाहो (उ) | २४२.३३१ |
| राज्ञोक्षिगोचरोजातो- (पा) | २२.१३ | रात्री नानाविधैर्भूषं (क्रि) | १३.३६ | रामकृष्णो मयायातो (उ) | २४५.३४४ | रामपट्टं मुनिवराः (पा) | १०४.१५३ | रामराम महाबाहो (उ) | २४४.३७ |
| राज्ञोवीरमणैः संख्येहताः (पा) | ४५.१३ | रात्री प्रसुप्तं गोकर्णं (उ) | १६७.२६ | रामकृष्णो महावीर्यौ (उ) | २४६.८ | रामप्रद्युम्नसहितः (उ) | २५०.६० | रामराम महाभागप्रीतः (स्व) | २६.२७ |
| राज्ञोवीरादशमुता- (पा) | ४६.६५ | रात्री येन करिष्यति (उ) | १२२.५७ | रामगयायामाहात्म्यं (उ) | १.५२ | रामः प्राह ग्रहोवल (पा) | ११६.२५० | रामरामेतिमाराक्षमां (पा) | ३६.२५ |
| रात्रावेव प्रकाशेच्चसोमो (भू) | ८५.६ | रात्री कृताववापि (उ) | १६२.४० | रामचंद्रपदांभोजमध्वा- (पा) | २४.१५ | रामः प्राहावध्योमोच (पा) | ११६.२५२ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्रावेव सुतश्रेष्ठ (भू) | १०५.१४ | रात्री संपूज्यदेवेजं (उ) | २३४.२६ | रामचंद्रमहाबाहोममय (पा) | १०.३ | रामभक्ततायनाय- (पा) | ३५.४५ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्रिरत्रसहभार्यं (उ) | २०३.६४ | रात्री स्वप्नाप्रपश्येत् (भू) | ८.२६ | रामचंद्रमहाबाहोसर्व- (पा) | ११.५६ | रामभद्रस्थजानीहिहयमेध (पा) | ३८.४२ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्रीचतिलसंबंधं (स्व) | ५६.२५ | रात्र्यां नुय्यां कशेषार्या (उ) | ६२.४ | रामचंद्रमहाभाग सुरा- (पा) | ६.२३ | रामदूतदिलक्ष्यामं (उ) | २५४.५४ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्रीजागरणं कुर्याद (उ) | ४२.१३ | राद्धं बतद्विजवृत्तदमो- (पा) | १५.२५ | रामचंद्रस्तस्यपादौ (पा) | ३७.३८ | रामदृष्टवाकृतायं (पा) | २८.७५ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्रीजागरणं कुर्याद (उ) | ६५.११ | राधयामिनकस्यापि क्षणं (पा) | ८८.२६ | रामचंद्रस्त्वयोध्यायां (पा) | २८.३६ | रामदृष्टवामहाराजं (पा) | ३७.६४ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्रीजागरणं कृत्वा (उ) | ३८.३३ | राधया सह गोविंदस्वरं (पा) | ७०.२ | रामचंद्राभिधांश्चुत्वा- (पा) | १७.१४ | रामनत्वा सुश्रीवमेत्यन (पा) | ११६.१५६ | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |
| रात्री जागरणं कृत्वा (उ) | ५४.१७ | राधाकृष्णप्रियेचोर्जं (ब्र) | २०.२ | रामचंद्रे सुखासीने (पा) | १०५.२ | रामंरामस्मरत्याश्च (पा) | ५७.६० | रामरामेति यच्चोक्तं त्व- (पा) | ३०.७१ |



श्रीपद्ममहापुराणम् १: श्लोकानुक्रमणी

३६६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| रामवाक्यमुतच्छ्रुत्वा-(सु) | ३३.१७३ | रामस्यवचनंश्रुत्वायुः (पा) | ६७.२१ | रामेत्यक्षरयुग्मंहिसर्वं (क्रि) | १५.८८ | रामोवभाषेवचनं (पा) | ११७.११८ | रावणेनहूताराम (उ) | २४२.२६३ |
| रामः शत्रुघ्नमायातं (पा) | ६५.४१ | रामस्यसौहृदात् (उ) | २४२.२५६ | रामेत्युक्तामहादेवी-(उ) | २५४.२३ | रामोमहोपतिर्भूमौ (पा) | ५७.६ | रावणेनहूतासीतामयाय (पा) | ४.२७ |
| रामः शोकसमाविष्ट (उ) | २४४.३३ | रामस्याश्रमजपुष्पं (उ) | १.६५ | रामेत्युक्त्वामहादेवि (उ) | २५४.२२ | रामो राज्यमयो (पा) | ५५.५ | रावणेनहूतासीतालंकायां (पा) | ४.३७ |
| रामश्यामतनंविष्णो (क्रि) | ११.२५ | रामहृदुष्टोस्मिभद्रते-(सु) | ३३.१६८ | रामेभूयादिकत्याणं (पा) | ५८.६६ | रामोरामश्चक्रुणश्च (उ) | ७१.२७ | रावणेनापहृतयाकया (पा) | ११६.१६३ |
| रामः श्रीमानयोध्यायाः (पा) | ३३.४६ | रामागमनसंदेशामृत (पा) | २.१७ | रामोच्चारणमात्रेण (क्रि) | १५.२६ | रामोरामश्चक्रुणश्च (उ) | १२६.४१ | रावणैकशिरश्छेतानिः (उ) | ७१.२२७ |
| रामः श्रुत्वा हयं प्राप्तं (पा) | ६५.१२ | रामान्नास्तिपरोदेवो-(पा) | ३५.४६ | रामोदष्टवाहरिप्राप्तं (पा) | १०.३१ | रामोलांगलमादाय (उ) | २४६.२६ | रावणोऽपिनवैदैत्यो (पा) | ८.२१ |
| रामसंज्ञापनेतस्यैः (उ) | ४४.१० | रामायकथितंराजं-(सु) | ३५.१० | रामोपिचक्रैवाणेन (उ) | २५०.२७ | रामोविभाद्यप्रणत-(सु) | ३५.१६ | रावणोदशभिर्वाणै (पा) | ११६.२६२ |
| रामरतयेतिनिश्चित्य-(पा) | ११६.२२८ | रामायणं भागवतं (क्रि) | २२.१३७ | रामोपिचितयामास-(पा) | २.२३ | रामोविरूपयामास (पा) | ३६.२२ | रावणोनिहृतोयेन (क्रि) | ६.१८६ |
| रामस्तदायज्ञमध्ये (पा) | ६७.१७ | रामायणं भागवतं (उ) | २५४.५५ | रामोपिचैतदाकर्ण्य (पा) | ११४.३६२ | रामोविवर्णवदनः कण्ट-(पा) | १०५.१८ | रावणोनिहृतोयेनसमुद्रस्व (पा) | ३४.६ |
| रामस्तमन्त्रवीहोरो (पा) | ११७.१३० | रामेणकुशलं पृष्टाश्रुण्वयः (सु) | ३५.२१ | रामोपिजलधावपात (पा) | ११६.२३१ | रामोस्तिसानुजः सार्द्धं (उ) | १८०.५७ | रावणोपिकिकपिभिः (पा) | ११६.२३५ |
| रामस्तामगतंष्टुवा (पा) | ६७.१० | रामेणतुमुलेयुद्धेरावणो (पा) | ३६.५३ | रामोपिज्यामन्वना (पा) | ११६.१३७ | रावणंयोरिषुंहुत्वा-(पा) | ५५.५१ | राहुकेतुनस्तूर्णम् (ब्र) | १०.२१ |
| रामस्तुदेवदेवे (उ) | २४१.३६ | रामेणनिहृतोयुद्धेबहु (पा) | ३६.५५ | रामोपितद्वजः श्रुत्वा (पा) | ११७.७७ | रावणस्यमयुद्धं (पा) | ११६.२४६ | राहुप्रस्तोयथासोमो (स्व) | ४४.१३ |
| रामस्तुसीतयासार्द्धं (पा) | ६७.३६ | रामेणबलिनानैव (पा) | ११६.२६८ | रामोपिदृष्ट्वाभरतपाद-(पा) | २.२१ | रावणस्यवधाल्लेख-(सु) | ३५.२६ | राहुविमुक्तोयस्तेन (उ) | ६६.३३ |
| रामस्यचप्रसादेनतीर्थं (स्व) | ३६.२ | रामेणभोजिताविप्रा (सु) | ३३.६१ | रामोपिनिरीक्षयि (पा) | ११६.१६४ | रावणस्यमुतेनाथ (उ) | २४२.२८८ | रिपवोविहङ्गत्येन-(पा) | ३६.४६ |
| रामस्यचप्रसादेन-(स्व) | ३२.३७ | रामेणसञ्जितंधनु (पा) | ११६.१३८ | रामोपिभ्रातृभिस्सार्द्धं (उ) | २४४.७ | रावणस्यमुतेनाथ (उ) | २४२.२२६ | रिपुं पुत्रं प्रवक्ष्यामि (भू) | १२.१२ |
| रामस्यदक्षिणोपाश्वं (उ) | २४४.६६ | रामेणसहधर्ममा (उ) | २४५.३८७ | रामोपिपुत्रविवशेषा (पा) | ११६.१७० | रावणस्यानुजं (उ) | २४२.३०२ | रिपुं पुत्रं प्रवक्ष्यामि (पा) | ८८.१२ |
| रामस्यदुष्कृतव्यवर्तयेन (सु) | ३५.३६ | रामेणसीतयादत्तं-(पा) | ११७.१४३ | रामोपिवाडवश्छेज्ज्वलं (पा) | ३७.३७ | रावणस्यानुजो (उ) | २४२.२६२ | रिपुंतापोयमेवाद्यगच्छ (पा) | ११.३१ |
| रामस्यदीप्यलंकायां (पा) | ५०.१६ | रामेणहृदिदापूर्वहृतो (उ) | १५०.३ | रामोपिवालिनंजघान (पा) | ११६.१७६ | रावणांतकरस्तद्व (सु) | ८.१५६ | रिपुंलम्बमुदासीन (पा) | ८७.६६ |
| रामस्यनामश्रुत्वाहय (पा) | ३२.१४ | रामेतिनामयच्छोत्रेवि (पा) | २०.८० | रामोप्यन्तरमनिश्चय (पा) | ११६.१६७ | रावणाभिद्यविप्रैर्ब्रध-(पा) | १०.४८ | रिपुतापेनदमनोनील-(पा) | २८.२२ |
| रामस्यवचनं श्रुत्वादेव (पा) | ६७.५५ | रामेतिनामयात्रायां (क्रि) | १५.१०० | रामोबालीदुष्टंस्वामि (पा) | ६६.१३६ | रावणारिक्थावाढौम-(पा) | १.१२ | रिपुत्ववर्तते मर्त्यः (भू) | ७.८ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------------|--------|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| रुमदभर्तिस्तिलागो (सृ) | ११.८८ | रुदमाना गताः सर्वे (भू) | ७५.३२ | रुद्रलोकेवसेत्कल्पततो (सृ) | २१.१६१ | रुद्रयुः रवंदिशः सर्वा (उ) | १००.२६ | रूपकांसिमामुवता (उ) | ४२.४६ |
| रुममलजः कुंडलिन- (पा) | १५.१७ | रुदपाना तु साकटा- (सृ) | १७.१७७ | रुद्रस्तुमहदाश्चयंकुन (सृ) | १७.५ | रुद्रमिममहातेजात्रहादत्त (सृ) | ३१.६३ | रूपनेजः समायुक्तं (भू) | ७६.५ |
| रुमगांगदचित्र (उ) | १.४४ | रुद्रित्वेति तदावंदातं (उ) | १०३.२१ | रुद्रस्वरुद्रवृषो जगत्सं- (सृ) | ४३.२४१ | रुद्रोद कर्णं वाला (भू) | ८५.७५ | रूपदेगस्वरानां सम्य (पा) | ६२.४० |
| रुमिगाराजपुत्रेण (उ) | २४७.३० | रुद्रेषु त्रभागेषु (उ) | १६०.१६ | रुद्राक्षैः स्फटिकैरननै (पा) | ११४.४४ | रुद्रोद कर्णं वाला (भू) | १२१.१० | रूपनाशो भवेच्चास्याः (भू) | ४१.२१ |
| रुमिग्राजयामास- (सृ) | १३.१५३ | रुद्रकोटचांतु रुद्राणी- (सृ) | १७.१६० | रुद्राणालोकमाप्नोति (सृ) | २२.१६४ | रुद्रोद कर्णं नाथ पुत्र (भू) | ६.२३ | रूपपुष्पैर्माहिष्मयी दुर्गा (पा) | १०६.१२ |
| रुमिग्राः द्वारवत्यांतु- (सृ) | १७.१६६ | रुद्रकोटचा विरुपाक्षे- (सृ) | १७.६७ | रुद्रात्परतरो देवो (उ) | २३८.३२ | रुद्रोद बाल भावा (उ) | २४५.५२ | रूपमोहनिर्वराजं (उ) | ५३.१८ |
| रुमिग्राः रमणोरुमि (क्रि) | १७.११४ | रुद्रकोटितथा कूपे हृदेषु च (स्व) | २६.७३ | रुद्रानागास्तथायज्ञा (उ) | ७५.७ | रुद्रोद सा रतिर्दुःखाद्- (भू) | ७७.५६ | रूपमेश्वर्यमारोग्य (उ) | ३२.६२ |
| रुमिग्राः सत्यभामा च- (सृ) | १३.१५१ | रुद्रः क्रोधाद्ब्रह्मसिरो- (सृ) | १२.३८ | रुद्रांशं स भवत्वाच्च (३) | ६८.१० | रुद्रोद वीरकोदेवीं हेम- (सृ) | ४४.६५ | रूपमोहनं शालिन्यः (उ) | ८.२२ |
| रुमिग्राः कृष्णस्य (उ) | २५०.१ | रुद्रक्षेत्रे मृगानां च (भू) | ६६.३० | रुद्राय प्रतिवज्राय शिवा (सृ) | ५.५२ | रुद्रोद समरे राजन् (उ) | १८.५८ | रूपमोहनं शालिन्यः (उ) | ८.२२ |
| रुमिग्राः सहस्रमतिरा (उ) | २४८.१७ | रुद्रत्रयं तैसासाद्य मोदते (सृ) | १४.१६५ | रुद्राश्च नृपभाकटा (उ) | ५.६१ | रुद्रोद यां त्वयि सु (सृ) | १०.८२ | रूपमोहनं संपन्ना दिव्य- (भू) | ५२.४३ |
| रुचिरं रश्मिजालं च- (सृ) | ४०.१६७ | रुद्रदेहाद्रिनिष्क्रान्ता- (स्व) | १७.१७ | रुद्राश्चिन्मूलनिर्घा (उ) | ६.११ | रुद्रोद त्वयि त्रिदश (क्रि) | १७.१३३ | रूपलक्षणं संयुक्तान् (स्व) | ५४.६ |
| रुचिः प्रजापतेः पुत्रो- (सृ) | ७.१११ | रुद्रबाणविनिर्भेदाद्रुधि (सृ) | ४६.७५ | रुद्रेणोक्तस्तदा विष्णु (सृ) | २२.१७३ | रुद्रोद भिमकर्मणा येन (क्रि) | १६.६५ | रूपलावण्यं वैदग्ध्य (पा) | ७२.१५० |
| रुद्रोदस्ते रोरोरोरि- (पा) | १०४.१०७ | रुद्रभक्ताश्च लोके (उ) | २५५.३६ | रुद्रैश्चादित्यवर्गश्च (भू) | ८३.४६ | रुद्रोद सिद्धं सममात्रा (उ) | २०६.३७ | रूपलावण्यं सयुक्ताः (भू) | १२.६६ |
| रुद्रलोत्कृष्टा पृथ्वी (उ) | ३.४३ | रुद्रमहालयमितिलोके (उ) | १४६.८ | रुद्रोजालेश्वरो नाम विपु (स्व) | १३.३५ | रुद्रोद सिद्धं सममात्रा (उ) | २०६.३७ | रूपलावण्यं संयुक्तास्त (सृ) | १२.१५ |
| रुद्रतः सप्ततेजाला (सृ) | ७.५८ | रुद्रमोकारसंज्ञं च ध्यात्वा (भू) | २१.३६ | रुद्रोद प्यरिरस्थानां (उ) | १८.२४ | रुद्रोद कुर्वन्ति पुरुषा (पा) | २०.३५ | रूपलावण्यं संयुक्ता (पा) | ११२.१०४ |
| रुद्रति त्वरागेण वयस्याः (उ) | २१३.२१ | रुद्रलोकं समासाद्य- (सृ) | १५.११३ | रुद्रि रं सितवगात्रास्ते- (पा) | १७.११ | रुद्रोद कर्णं चित्वा फलस्यै (सृ) | २१.२४६ | रूपलावण्यं संयुक्ता (भू) | ६४.३५ |
| रुद्रतीशोकवचनं च संती (सृ) | ४३.२८२ | रुद्रलोकमवाप्नोति- (सृ) | २०.६० | रुद्रि रं सितवगात्रास्ते- (पा) | १५.२ | रुद्रोद कर्णं चित्वा फलस्यै (सृ) | २१.२४६ | रूपलावण्यं संयुक्ता (सृ) | १३.४४ |
| रुद्रतीसभयं शीघ्रं (उ) | २४२.२४७ | रुद्रलोकमवाप्नोति या- (स्व) | १५.८० | रुद्रि रं सितवगात्रास्ते- (पा) | १६.२१ | रुद्रोद कर्णं चित्वा फलस्यै (सृ) | २१.२४६ | रूपलावण्यं संयुक्ता (भू) | १६१.३ |
| रुद्रन्यपातभूम्यां (पा) | ११४.४७३ | रुद्रलोकमिति प्रोक्तम (भू) | ६६.२६ | रुद्रि रं सितवगात्रास्ते- (पा) | २३.६१ | रुद्रोद कर्णं चित्वा फलस्यै (सृ) | २०६.२० | रूपलावण्यं संयुक्ता (सृ) | ३१.१३४ |
| रुद्रनृवंसुस्वरं सोध (सृ) | ३.१६८ | रुद्रलोकेन रोगच्छे (उ) | १४३.३ | रुद्रि रं सितवगात्रास्ते- (पा) | १३.१३ | रुद्रोद कर्णं चित्वा फलस्यै (सृ) | ५७.१० | रूपसेनायपुण्याय (भू) | ८५.६८ |



श्रीपद्ममहापुराणम् ॥ श्लोकानुक्रमणी

३६८

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| रूपसौभाग्य संपन्नः (सु) | २४.५८ | रूपेणा पीरवेणास्य पित्रा (भू) | ६३.८८ | रेवती च बलभद्रशरीरं (उ) | २५.२.८६ | रोमीदुःखीचयः पश्येद् (क्रि) | १८.५५ | रोषादधावचक्षीशं (उ) | १०२.६ |
| रूपस्यपरिवर्तनमिय- (सु) | ४४.५४ | रेकारगुह्यदेशे तुणि- (सु) | ४६.१७४ | रेवती तस्य साकम्भ्या (सु) | ८.१३० | रोमैर्नानाविधैर्वर्जित- (भू) | ६६.१२१ | रोषाहंकारनास्तिक्यं (पा) | ६८.६६ |
| रूपस्य भागी भवति (स्व) | ३६.३० | रेखांचकादमण्डलिका (उ) | २१४.१६ | रेवती विविनक्षप्रियतामह (स्व) | ८.१७ | रोगो न जायते तस्य न (भू) | १४.२० | रोहिणी चंद्रमिथुनकार (सु) | २६.२० |
| रूपहानिर्भवेत्तस्य गृह- (भू) | ५३.५८ | रेखात्रयं प्रशोभेत् (भू) | १०२.५७ | रेवती रमणाः पूर्वभक्ति (उ) | ७१.२४८ | रोचमानस्मरेवोभूद्रेवो (सु) | ८.१२६ | रोहिणी चंद्रशशगनना (सु) | २६.३ |
| रूपाणि देविगृह्णा (उ) | १८६.२७ | रेखाभवेदेवमेकाग्रका (पा) | १०४.४६ | रेवाच यमुना तापी तथा (भू) | ३६.८८ | रोदमाना दिवारात्री (भू) | ४१.४८ | रोहिणी तारकायुक्ता (ब्र) | १३.३० |
| रूपा रोग्यगुणोपेतः सप्त (सु) | २११.१८२ | रेजूरायोधनगतादान- (सु) | ४१.१८५ | रेवाजलपणस्पशति- (स्व) | २३.३१ | रोदमाना प्रणम्यैवपादपथ (भू) | ६.२ | रोहिणी पृष्ठमास्या (उ) | ३३.१५ |
| रूपा रोग्यागुणोपेत (सु) | २६.२७ | रेजेचहृदैत्यसहस्रगा- (सु) | ४०.१६५ | रेवाती रमयप्राप्ते (पा) | ३५.१२ | रोदितिश्रुतेव्यक्तं (पा) | ११४.१०३ | रोहिणी भेदगित्वा (उ) | ३३.२१ |
| रूपार्थीत्वांप्रपन्नोहृद्गृहाणा (सु) | २४.५३ | रेणुकस्वमुता रम्यां (उ) | २४१.७ | रेवाती रेसुपुण्ये च (पा) | ८७.४२ | रोदित्येवा यदा सा च (भू) | ११६.२० | रोहिणी यद्विनश्येत् (उ) | ३१.३३ |
| रूपी त्रिपवणस्नायीवायुं (उ) | ३२.६४ | रेणुकानेक्षिता जातुं (उ) | १६२.३४ | रेवापुरस्थितो देवो (उ) | १६२.३६ | रोपणालनं सेवाम् (ब्र) | २२.४ | रोहितस्तस्य पुत्रो (उ) | २०.११ |
| रूरेण तेजसा दानैः (भू) | ८०.५ | रेणुकायाश्चतत्रैवतीर्थ- (स्व) | २४.३२ | रेवायावामहाराज (पा) | ८६.३६ | रोमकाले तु संप्राप्ते (उ) | ११८.६ | रोहिताच्चक्रो गानो (सु) | ८.१४४ |
| रूरेण अधिकतां वाता (भू) | ५.८० | रेणुना सर्वलिप्तांगो- (उ) | २१६.६८ | रेवायाश्च प्रसादेन (भू) | ८६.५२ | रोमस्वोपधयः (उ) | २३८.१०६ | रोहितादीनिर्मा- (सु) | १३.१५६ |
| रूरेणानिः सीमसरो (स्व) | २२.२६ | रेतोमूगपुरीषा मुत्सर्गं (स्व) | ५२.२ | रेवायाश्च प्रसादेन (भू) | ८६.५२ | रोमद्रव्यं च तीक्ष्णोच्छ- (उ) | १६८.०३ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूरेणानिः सीमसरो वस- (उ) | १२८.३५ | रेपुत्रश्रुमद्वाक्यं बहु (पा) | ६.३१ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूरेण महता विष्टो (भू) | ७८.५६ | रेमेचसाहेन सममति- (सु) | ८.१०६ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूरेणाप्रतिभं लोके द्वितीय (सु) | ३४.४४ | रेमेचसाहेन सममति- (सु) | ८.१०६ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूरेणाप्रतिभा जाना (भू) | ४७.१४ | रेमातेस्वगृह्ये (उ) | ४७.६ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूरेरूपेयथास्वहिमये (उ) | १३२.७२ | रेमेत्वंगस्तया सार्धं (भू) | ३६.४१ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूपोदायं गुणोपेता (उ) | ३.५ | रेराजपुत्रकशिरोत्व (पा) | २३.४६ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूपोदायं गुणोपेता (भू) | १०८.२२ | रेरे वापादुराचारा (क्रि) | २३.१०७ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| रूप्यं दमस्तिथागवो (उ) | १३५.७७ | रेरेमूर्खंदुराचारा (उ) | १५.५ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |
| | | रेरेविषयसंलुब्धाः (स्व) | ६१.८२ | रेवोपि सुखमालेभे (उ) | १८०.१०२ | रोमांचितं समस्ताङ्ग (क्रि) | ५.१२८ | रोहिताश्चित्रनेजो जंतुत्तरा- (सु) | ३५.७५ |

धीपद्यमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३६६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|---------------------------------------|--------|--------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| रौप्यखुरांहम शृंगसि-(सृ) | २५.२५ | लक्ष्मणस्तामहाघोरे (पा) | ५६.३ | लक्ष्मीपतिदेवदेवमनं (उ) | २३८.४५ | लक्ष्म्यादेव्या द्वितीया (उ) | ८६.१६ | लतावितानशोभादचं-(सृ) | १५५ |
| रौरवंरकमातिथक्ष (उ) | २५३.१२० | लक्ष्मणस्त्रव्रीडाम-(सृ) | ३३.१४६ | लक्ष्मीः पुरंस्वप्रित्रेस्त्वंसह (सृ) | ४.६० | लक्ष्म्यामदनपापिन्या (उ) | २२३.४३ | लताश्च सकलाः सर्वा-(सृ) | ४५.१३५ |
| रौरवंसप्रयात्याशुप्रणी-(सृ) | १५.१४४ | लक्ष्मणस्त्रव्रीडावयं (सृ) | ३३.१२३ | लक्ष्मीभ्राताशीतरश्मि (ब्र) | १०.४ | लक्ष्म्यायुक्तोजगन्नाथ (उ) | २५३.१५० | लतामूत्रैरथोवापिर-(पा) | १०५.१२३ |
| रौरवेस्वाद्यामामुमं (उ) | १८७.५५ | लक्ष्मणस्यगति (उ) | २४४.५१ | लक्ष्मीमुखानुजमधुव्रत (क्रि) | २.६६ | लक्ष्म्यावक्षः स्वयासादं (उ) | २१४.६३ | लव्यंजमकुलेविप्र (पा) | ६०.४२ |
| ल | | लक्ष्मणस्योमि (उ) | २४२.१५१ | लक्ष्मीर्यस्यसाक्रोडे (क्रि) | १७.१५५ | लक्ष्म्याश्चैववरंप्रादा-(सृ) | १७.२८७ | लव्यमात्रेवरेतोव्यप्रजा (सृ) | ४५.२४ |
| लंवेदधः शिशयस्तु (उ) | ८१.३१ | लक्ष्मणात्कर्म संदेशः (पा) | ६६.१७३ | लक्ष्मी विलासवैकुण्ठ (क्रि) | ११.२६ | लक्ष्म्यासहस्रतोविष्णु (उ) | ११६.२३ | लव्यमेतेनमुनिना (उ) | १८४.६६ |
| लक्षतुलस्याः संनिध्ये (उ) | ६२.१० | लक्ष्मणैमीकुमारीमेत (पा) | ६६.१०५ | लक्ष्मीश्चतेकरेलगना (सृ) | ३४.६३ | लघुनर्णकमातेयं (उ) | २०३.३४ | लव्ये न जीवन्कर्म-(पा) | १०६.१० |
| लक्षणं दैविकोह्यकः (सृ) | ४३.१८० | लक्ष्मणैनातपत्रतुधृतं (पा) | ५६.३ | लक्ष्मीश्चवसतेनित्यं (पा) | ७१.८३ | लघ्वाशीनियताहारः (सृ) | १५.३६१ | लव्यवात्यनस्तनुंशु (उ) | १२५.१०० |
| लक्षणं बह्वाचर्यस्यतन्मे (भू) | १३.१ | लक्ष्मणैनानुगेनाथ (पा) | ५३.१६ | लक्ष्मीश्चविपुलाब्रह्मण (सृ) | २२.३ | लंकांगमिष्यामि (पा) | ११६.२२६ | लव्यात्मशुद्धिस्तत्रैव (उ) | २४६.१६ |
| लक्षणं हस्तपादाभ्यां (सृ) | ४३.१६६ | लक्ष्मणो पिनजान (पा) | ११६.१५४ | लक्ष्माः श्रीः कमला (उ) | २२७.२४ | लंकाधिपैः सुरैर्दृष्ट-(सृ) | ३८.७३ | लव्यवातद्वनाज्ज्ञानं (स्व) | ३६.५ |
| लक्षणैर्नदहेद्देष्टान्य (उ) | २२४.५२ | लक्ष्मीकरसरोजाम्भ्यां (उ) | २५५.७७ | लक्ष्मी सहस्ररूपेणजिता (सृ) | २१.४ | लंकायांचाप्रतिष्ठाप्यधर्म (पा) | १.२० | लव्यवालुलायद्वित (पा) | १०६.३ |
| लक्षणैर्विविधैर्भूमि-(सृ) | ३४.२६२ | लक्ष्मीदेवीप्रयत्नेन (ब्र) | ११.४२ | लक्ष्मीसंदर्शनायां (उ) | २३३.३ | लंकायामानुषोयोर्वैज-(सृ) | ३८.१२० | लव्यवारसंप्रसादं (सृ) | १७.८२ |
| लक्ष्मिश्चिभिर्द्वौशभी-(सृ) | १२.३४ | लक्ष्मीनाथपदारविद (क्रि) | १.१ | लक्ष्मी सरस्वती चैव (क्रि) | २४.७ | लंकासपश्यन्बहुबाभन (पा) | १.२२ | लव्यवाधेद्रामज्ञास्तु (उ) | ६१.१० |
| लक्ष्मणंचाब्रवीद्राजापुत्र (सृ) | ३८.७५ | लक्ष्मीनारायण मुखैर्लु-(पा) | १०६.३८ | लक्ष्मी सरस्वती देशो (पा) | १०६.५८ | लंकेस्वरैर्विनिहतेदंबदान (पा) | १.८८ | लभंतामलिलांलक्ष्मी (उ) | १२६.२८५ |
| लक्ष्मणंचाब्रवीद्रामोमे-(भू) | ३३.८३ | लक्ष्मीनारायण (उ) | २०२.३० | लक्ष्मी सहस्रती युक्ता (क्रि) | ६.१६४ | लज्जातस्याः प्रकर्तव्या (सृ) | ८.५६ | लभते चैवमारोग्यं (उ) | ४२.५० |
| लक्ष्मणं धर्माव्ययेन (पा) | ५८.३४ | लक्ष्मीनारायणो (पा) | ७८.४० | लक्ष्मीसहायंवरदेवदेव (सृ) | १४.१३७ | लज्जाभिभुवतः सहसा (भू) | १०२.५४ | लभतेतत्तदेवायु (क्रि) | ११.७४ |
| लक्ष्मणः केशनिचय (पा) | ११७.१७४ | लक्ष्मीनिधिः करेगृह्यतं (पा) | २६.६५ | लक्ष्मी सहायो वरदोप (सृ) | ३४.१८० | लज्जावाक्कुलतव (पा) | ११४.४६८ | लभतेवाञ्छिद्यान्-(उ) | १२८.२७७ |
| लक्ष्मणकोयंकपिरि (पा) | ११६.१५३ | लक्ष्मीनिधिर्भूशंकुदः (पा) | २६.४८ | लक्ष्मीस्ते पुरतोयातु (सृ) | ३४.३२ | लज्जिताः पराङ्मुखो (भू) | ५.८८ | लभतेसर्वकर्मित्वंयोत्र-(सृ) | १५.२७७ |
| लक्ष्मणः प्रणुपत्या (पा) | ६६.११२ | लक्ष्मीनिधिः सुतेनास्य (पा) | ४२.२२ | लक्ष्मीस्तरस्वतीसंध्या-(सृ) | ४०.७७ | लज्जितादुखिता जाता (भू) | ४६.४३ | लभतेतेच्युतस्था (पा) | ६६.७६ |
| लक्ष्मणः सैन्यसहितो (पा) | ६५.१४ | लक्ष्मीनृसिंहतं (उ) | २३८.१४३ | लक्ष्म्यर्षिर्विष्णुनाचापि (सृ) | २२.१६८ | लङ्गुकोस्तेष्वकाश्चैव-(सृ) | २२.१२४ | लभतेपितरस्तच्चयत् (क्रि) | ७१.११३ |



धोपयमहापुराणः :: श्लोकानुक्रमः

३७०

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| लभंतेभिमतं सिद्धिं (उ) | ७१.८६ | ललाटे ब्रह्मरुद्रौ (उ) | २३८.१०३ | लवण्येन निहसो महा- (पा) | ५२.६१ | लावण्यं तदिहैकस्थं- (सु) | १६.१७३ | लीलायो वनिप्राप्तो (पा) | ५५.५४ |
| लभेस्कन्याशतं विष्यं- (स्व) | २७.८० | ललाटे लिखितं यस्य (क्रि) | १७.३२ | लवः प्रकुपितो वाणं (पा) | ६१.४१ | लावण्यपिडसंभूता (उ) | १२८.२४ | लीलायां क्रोडा मनोभाव (भू) | ७७.७६ |
| लवमाना त्वगुरुकं (पा) | ११७.७५ | ललाटे हृदि बाह्वोश्च (उ) | २२५.५३ | लव रूपो पतद्गुणी रस- (भू) | ५८.६ | लावण्यसारमुग्धां (पा) | ८१.४६ | लीलाजितः महादेवो (उ) | ७१.२५६ |
| लवमाना महीचैव- (सु) | ३६.१०८ | ललिता तु तथालोचय (उ) | ४७.१६ | लवः सिंहवोत्तरो (पा) | ६१.१० | लावण्यं रपिसौंदर्यं (पा) | ७४.१८४ | लीलाद्वयः कोट्यपास्त (उ) | ७१.२२२ |
| लवमोक्तिः कदामानं- (सु) | ४३.४४६ | ललिता दुःखितातीव (उ) | ४७.२३ | लवस्यानेन धामुक्ते (पा) | ६२.१७ | लाघटिकां ततो गच्छेत् (स्व) | ३८.७३ | लीलयैव गृहीत्वा (उ) | २४५.३४२ |
| लंबायां घोऽनामानो ना (सु) | ६.१६ | ललिता रंपदं देव्यं वाम (सु) | २२.१०६ | लवो वृत्तो नृपेणा (पा) | ६३.२६ | लिखितः कि ललाटे मे (क्रि) | ५.१७५ | लीलाचको रकरम्यं (पा) | ७४.२४ |
| लंबोदरं व्यदकणं मतिभीतं (भू) | २५.४२ | लवंगा इति तन्नाम (पा) | ७२.१५२ | लशुनं मद्यपानादि- (उ) | २५३.११० | लिखित्वा भूर्जपत्रं तु यो (उ) | ७६.७ | लीलालकशिक्षणायक (सु) | ५.८६ |
| लययुक्तेन भावेन (भू) | ४६.२२ | लवंदयं शिशुतां प्राप्ता (पा) | ६२.३ | लशुनं मूलकं शिष्टं (त्र) | २१.२२ | लिखित्वा भूर्जराजं (पा) | ७४.१५६ | लीलाविभूतिसर्वजय (उ) | २२८.८४ |
| ललनास्तस्य रत्नादयाः (स्व) | १४.२२ | लवंदालं रयेस्था (पा) | ६२.२ | लसच्चतुर्भुजं शांतपल- (पा) | ६५.१०२ | लिखित्वा लेखयित्वा- (क्रि) | २६.५४ | लुब्ध इन्द्रियलोत्थेन गंक- (सु) | १६.२५४ |
| ललाटं वायनायेति हर- (सु) | २१.३१ | लवंदविमूच्छितदृष्ट्वा (पा) | ६३.१ | नागं लतीर्थं ततो गच्छे- (स्व) | १८.५३ | निखेत्सर्वैषण्यश्रेष्ठः (क्रि) | १३.६३ | लुब्धकाश्च ततः (भू) | ४५.१६ |
| ललाटं वामनायेति (उ) | ४५.५२ | लवणं च परित्यक्तं तथा (भू) | ४१.४३ | लांगूलमुष्ण्या विशाल (पा) | ४२.२ | लिगं निधाय यतिरो (पा) | ११७.३२ | लुब्धकाश्च महापापाः (भू) | ३०.११ |
| ललाटव्योममूर्ध्नं (उ) | ३६.१२ | लवणं वर्जयेन्माषे (सु) | २२.१२० | लांगूलेन समविष्ट (पा) | ४७.१७ | लिगपीठविभेदे च वात्रं (पा) | ११०.३६ | लुब्धकाश्च मृताः ((भू) | ४३.५६ |
| ललाटे त्रिसंभूतं नखेना (पा) | ११४.३६७ | लवणस्य समुद्रस्य- (क्रि) | ८.५ | लांगूलेनाहताः केचित्के (पा) | ३४.४१ | लिगचर्यसे दुष्टप्रभाते (भू) | १२१.४२ | लुब्धकेनापि पापेन (भू) | १२३.२२ |
| ललाटे तमोऽरुहवत्प्रभाय (सु) | २५.२४ | लवणां भोनिधेस्तीरं (क्रि) | १८.३ | लाभस्तेषां जयस्तेषां (उ) | ८०.१६२ | लिगमात्रं रगतं- (पा) | ११४.३५८ | लुब्धकैश्च हताः कोनाः (भू) | ४३.५२ |
| ललाटे स्थात्रिकूटस्थानं- (सु) | ४५.१२० | लवणां भोनिधेः स्तोम्यैः (क्रि) | १८.१८ | लामालाभे सुखेदुः (उ) | १२६.१२६ | लिगस्य स्थापनं पूजा- (पा) | १०५.१२१ | लुब्धको भ्रातरो नाम (भू) | ४५.२८ |
| ललाटाक्षरमालां च (उ) | १६६.३६ | लवणेषु सुरासपिर्दधि- (सु) | १६.६२ | लाभे तव प्रतिज्ञायाः (पा) | ६६.८३ | लिगार्चनं कृतं च त्वत्त्व (उ) | १५४.३८ | लुब्धको हि महापापो (उ) | १५४.११ |
| ललाटे कैशवंध्यये (उ) | २२५.४५ | लवणेषु सुरासपिर्दधि (क्रि) | २.२० | लालप्यमाना बहोबोधा (सु) | २३.८८ | लिगार्चनप्रकारं चलि (पा) | १०४.२३ | लुब्धकाश्च पाप (भू) | ६६.२०८ |
| ललाटे च गदामे (उ) | २६.११ | लवणेन समुद्रेण समं तात् (स्व) | ३.१५ | लालयेन कुलं नाग्यः नो (स्व) | २२.६६ | लिप्यते तेन पापेन (उ) | ३५.२८ | लुब्धो विहृष्टः पापात्मा (भू) | ११८.२२ |
| ललाटे दृश्यते यस्य (क्रि) | ७.८ | लवणे सिधुसामुद्रे गव्ये (पा) | ७६.५५ | लासयेन कुलं नाग्या नो (उ) | १२८.७५ | लिप्यतेन च पापो (उ) | ८०.१०६ | लुपको गतसंज्ञ (उ) | ४०.३४ |
| ललाटे चारणं शतयथा (पा) | १०५.१३२ | लवण्येन निहतः (पा) | ३७.१६ | लालास्नुतः श्मश्रुकु (पा) | ११२.१०३ | लीलायां कुले जाता (भू) | ८.५१ | लेपनैश्च दनैश्चान्यैः (भू) | ५३.६४ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३७१

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|----------------------------|---------|----------------------------------|--------|----------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| लेभेचेष्टसुतराम्-(सु) | १३.१२० | लोकानतीत्यलालित्या-(सु) | २६.१२ | लोकालिरयसंमथा (पा) | ३६.६ | लोकोद्धारं समासाद्य-(स्व) | २६.४२ | लोहकुण्डं च काकोलं (उ) | १२६.१३ |
| लेभेमुतांस्तुलङ्गं (उ) | २२२.६२ | लोका नमति तं देवं (भू) | ३४.२४ | लोकालोकस्ततश्चैवतन् (क्रि) | २.१६ | लोकोवदतिवाक्यानि-(सु) | १८.३७६ | लोहशकुंमगीयंत्रं (उ) | १२६.२० |
| लैंगचवामनचैवस्कां (पा) | ११५.६२ | लोकानांतुपरोधमो (उ) | ७६.६ | लोकावदतिमावेवसर्वे (पा) | ६६.७६ | लोचनानांसहस्रेण (उ) | १२७.११६ | लोहस्यपुरुषं कृत्वा (भू) | ५२.१६ |
| लोक इन्द्रसमं राजन्-(भू) | ७७.८६ | लोकानांतुहितायां (उ) | ४७.३८ | लोकाश्रयं नहीच्छन्ति (क्रि) | २१.७ | लोपामुद्रामहाभागया-(पा) | ६.४ | लोहेनकारयच्चैवान् (सु) | ३४.३२४ |
| लोककतुं ब्रह्म लोहं-(सु) | ३३.२६ | लोकानांमक्षमाणा (उ) | २२.३४ | लोकाः श्रुत्वापुरीप्राप्तं-(पा) | ३.१५ | लोभः पापस्य बीजहि (भू) | ११.१६ | लौकिकवैदिकवापि (स्व) | ५१.२७ |
| लोककृत्लोकतत्त्वज्ञोयो-(सु) | २.२ | लोकानांदर्शनार्थवजाता (भू) | ८२.५ | लोकाः सर्वेनमस्कृतुं-(पा) | ५६.२ | लोभः पापस्यबीजोयं (पा) | ८७.५४ | लौकिकवैदिकवापि (स्व) | ५३.२४ |
| लोकत्रयमेपहृतत्त्वया (सु) | ३०.१२२ | लोकानांतीतिदासाय (ब्र) | ११.१० | लोकाः सुमनसोनाम-(सु) | ६.५३ | लोभश्च जायते तस्य (भू) | १२५.२३ | लौकिकीवैदिकीचापि (पा) | ८५.५ |
| लोकद्वयेनविदंति सुखानि-(स्व) | ३१.३६ | लोकानांब्राह्मणानां (उ) | १.१७ | लोकाः सोमपद्यानामपत्र (सु) | ६.११ | लोभात्प्रमादादिद्वयं-(सु) | १८.३६१ | लौकिकेकृतवत्लोकं (पा) | ११७.२३६ |
| लोकपालांस्ततोदैत्यो-(सु) | ४८.११० | लोकानांब्राह्मणानां (उ) | १.१७ | लोकास्तेजोमयास्तस्य-(सु) | १५.३५३ | लोभात्प्रवर्ततेकामः (क्रि) | ५.४६ | व | |
| लोकपालाश्चसिद्धाश्च (स्व) | ३६.६७ | लोकानांभाग्यहीनानां (उ) | ७१.३०८ | लोकाः स्वास्थ्यं गताः (भू) | १२१.५० | लोभान्नदत्तं पुत्रं (सु) | ४.६१ | वक्तव्यं च सदा सत्यं (उ) | २७.२६ |
| लोकयात्रानुगतव्या-(सु) | ४३.३५१ | लोकानांमतमांस्था (पा) | ५१.२५ | लोकाह्यं प्रवर्तते-(सु) | १६.१२७ | लोभेनजायतेयेपां-(स्व) | ३१.८७ | वक्तापुरुषवाक्यानां (स्व) | ३१.६७ |
| लोकशोरुहराकाम्या (उ) | १२२.६० | लोकानांसगुरुः पुज्य-(सु) | ४६.६८ | लोकेतत्त्वहिंसजाय (उ) | २६.२ | लोभेन मोहयुक्तेन (भू) | ६७.१०८ | वक्तारं प्राययेच्चापि (उ) | १६८.२१ |
| लोकसासिन्जगद्धाम (उ) | १६७.५८ | लोकानेतात्परिस्थयः-(सु) | ३०.७ | लोकेनपूजिततस्मात्-(सु) | २०.७ | लोभोहिघनहीनानां-(उ) | २१४.६० | वक्तित्तरामः पृथिवी (पा) | ११६.१८७ |
| लोकस्यचहितायांजा-(सु) | १३.२४७ | लोकान्दृष्ट्वा महाराज (भू) | ८१.३० | लोकेविप्रसमोनास्ति (सु) | ४६.६७ | लोमपादुनुपुत्रं (सु) | १३.२० | वक्तुं नैव लोमावाचा (उ) | १६७.३३ |
| लोकस्यव्यवहारेषु-(सु) | ४३.३४६ | लोकान्समुद्रा (उ) | २३८.१०१ | लोकेश्वर्यः करं कांतं (भू) | ५१.३१ | लोमपादात्मजो (सु) | १३.२१ | वक्तुं श्रमो न चात्पोपि (क्रि) | १५.६२ |
| लोकस्यसुखमुत्पन्न (उ) | १६६.६१ | लोकापवादभीत्या (उ) | २४४.३ | लोकेषुधर्मवृत्तेषुप्रवृत्ते-(सु) | ४१.१६५ | लोमशधर्मतत्त्वज्ञ (उ) | ५५.१४ | वक्तृणां वत्सरं यावत् (उ) | १२२.२० |
| लोकस्याधर्मकृत्वापि (सु) | ८.५ | लोकापवादः समुहान् (उ) | २४४.२१ | लोकेषु यो हि सकलेष्व-(भू) | २१.१८ | लोमशोदीर्घलंगुल (उ) | १२६.१५० | वक्तृश्रोतृजनानां च (पा) | १०८.७६ |
| लोका उपहर्तस्म (उ) | २१३.११ | लोकावृत्तिमांकीदृग्भा (पा) | ५६.८ | लोकेस्मिन्नास्तिकाः (सु) | १८.३२८ | लोममुक्तावली कंठी (उ) | १२६.५७ | वक्त्रनिगम्ययत्नेन (उ) | ६२.६ |
| लो हात्मल्लोकाभिन्दासः-(भू) | २१.२ | लोकामदीयाः सर्वेयेधन (पा) | १३.५३ | लोकेस्मिन्मयेभक्ताः-(सु) | १५.१३० | लोह कुंभे यथान्यस्तः (भू) | ६६.४६ | वक्त्रयातोभगवतो (सु) | ३६.१३६ |
| लोकादस्मादंतरेण (उ) | २१२.४४ | लोकायतिकशास्त्रेण-(सु) | १३.२६३ | लोकैश्चापिपृथयति (उ) | १२२.५४ | लोहैर्लवसास्तंभ (पा) | १०१.२० | वक्त्राणि पंचजानीहि (उ) | १७५.२७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३७२

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|-------------------------------------|--------|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|-------|
| वक्त्राण्यनेकानि विभोत (सु) | ३४.१०० | वज्र कक्षापुटेयुत्वा (उ) | ७.५ | वंचयित्वा ततः सर्वां (पा) | ८३.४५ | वत्सवत्साधुनाक्रोड- (सु) | ४३.४८८ | वदन्ति मुनयः सर्वसाधूनां (पा) | १.१० |
| वक्रदंष्ट्राननाजिह्वा (उ) | १०६.७ | वज्र नगान् रजः शेषान् (पा) | २४.५४ | वंचितास्ते च कलुषाः (स्व) | ५०.३३ | वत्सवत्सेति नित्यं वै (भू) | १२३.३५ | वदन्ति वेद शिरसश्चा- (पा) | ७१.१४ |
| वक्रपादावक्रमुखः (ब्र) | ६.२० | वज्र पावर्त संज्ञं च (पा) | ११.२६ | वंचितोऽसि न संदेहो- (सु) | १३.२६८ | वत्ससत्त्वमिदं प्रोक्तं (क्रि) | १२.८६ | वदन्ति ब्रह्मज्ञानां (ब्र) | १.१७ |
| वक्रलोतोऽतिगभीरं (उ) | १२५.२७ | वज्रपाणिस्ततो गर्भं (भू) | २६.२० | वटकादीस्तथाभक्ष्या (पा) | ११७.६७ | वत्सानां कार्येदगोभिर- (उ) | १२२.३६ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्षसां रजसोद्विक्ता- (सु) | ३.१२८ | वज्रमिन्द्रस्तथाशक्ति (भू) | ११०.१६ | वटच्छायां समाश्रित्य (भू) | ८५.२८ | वत्सानां मुखेपेक्षाश्च (भू) | २६.८८ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्षस्य लंघ्यान्तं (सु) | २५.१० | वज्रमौक्तिकवैद्यं (उ) | ३१.३६ | वटाथ स्थोद्विजश्चेष्टस्त (भू) | १२२.२ | वत्सानां पश्चिच्छूनहृत्वा (उ) | २४५.१०२ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्षोजमुलमाच्छाद्य (पा) | ७२.१८ | वज्रसारस्य सारेण (सु) | ३६.११ | वटाथ स्वत्याज्जकलजं (स्व) | ३०.१० | वत्सानां स्तुतयो (पा) | १०८.२६ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्षोदधानं विपुलं (पा) | ३५.६६ | वज्रस्फटिके सोपादे चित्रपट्टं (स्व) | १६.५ | वटेश्वरपुरं गत्वा (स्व) | ३८.४७ | वत्सेवंदयदेवपि (सु) | ४३.१३५ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्षोमध्येषु केपाणि (क्रि) | २३.१४३ | वज्रांगो नाम पुत्रस्तु (सु) | ४२.६ | वटेश्वरे महापुण्ये गंगा- (स्व) | १३.५४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्ष्यमाणेन मंत्रेण (क्रि) | ६.४१ | वज्रांगो पितया साद्धं (सु) | ४२.२१ | वटेश्वरे महापुण्ये गंगा- (स्व) | १३.५४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्ष्यमाणेन मंत्रेण (क्रि) | ११.८४ | वज्रांशोऽपि तया साद्धं (सु) | ४२.२१ | वटोद तासामीलनीपार्वती (स्व) | ३६.६६ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वक्ष्यामि युगलपुत्र्यं (पा) | ८१.१३ | वज्राधिक नखस्पर्शं (उ) | ७८.४३ | वणिजामवमुतोहं (उ) | २१८.४६ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचनं तस्य विप्रपे. (क्रि) | २१.४७ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वणिजयैव कैस्तेस्तु (उ) | २१८.५२ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचनं लंघयेद्यस्तु (ब्र) | २६.३८ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचनं लंघयेद्यस्तु (ब्र) | २६.४१ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचनात् वदेवैसा दारव्यं (भू) | ४६.६३ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचनामृतवर्षणं (क्रि) | १६.४८ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचः समादण्य हरि (पा) | ६४.६ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचो जगदादवात्मिक (पा) | ६६.१५४ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |
| वचोभिः कोमलैरभिः (क्रि) | ६.२१ | वज्रास्त्रेण विदीर्या (पा) | ४५.४६ | वत्सगुलमचगोर्कणं (सु) | १४.१६४ | वदत केन पुण्येन (उ) | ४३.४७ | वदन्ति सत्यावृतकार्यं (सु) | ३०.६६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| वधायचार्यैवकृतं (उ) | १८.५६ | वन मध्येतस्तत्र (उ) | ४०.३६ | वनेचरतंचतुलते (सु) | १८.४११ | वपुर्दीप्तानरात्मान (सु) | ४१.६४ | वयं दैत्याः समारण्यं (भू) | ५०.५ |
| वधार्थं देवदेवेन समाहूय (भू) | २४.१५ | वनमभ्यद्रवद्भीतानि (उ) | २२२.३२ | वनेविरहिणाभ्रातं (पा) | ६६.१७० | वपुर्विलितयस्य (क्रि) | ८.१०२ | वयं धनुर्धराः शूरा (पा) | १०.५१ |
| वधार्थं श्रूयतां पाप (भू) | ११४.१३ | वनमागम्यकाकु (उ) | २४२.१६० | वनेविधोदकपीत्वा (उ) | १८४.६५ | वपुस्वक्षणाविध्वंसि (उ) | १२७.१२४ | वयं धन्यतमाः सर्वे (पा) | ५६.१६ |
| वधार्थं सुरशत्रूणांदैत्य-(सु) | ४०.११६ | वनमानंदकाख्यहि (पा) | ७३.३४ | वनेषु गिरिमुख्ये (उ) | २४२.२४५ | वपुषाभ्राजमानस्तु (पा) | ८४.१०६ | वयं प्रमाणं ते तत्र (सु) | ४३.२१० |
| वधिध्यानि दुरात्मा (उ) | २४२.८६ | वनमालागरीतांगः (उ) | ८०.१३३ | वनेस्मिन्नित्यवासेन (सु) | १५.१३५ | वपुसहायतांप्राप्तो (सु) | ४३.४५२ | वयं वल्लववालाहिक (पा) | ७४.१०४ |
| वध्यमानादिशोभेजुः (सु) | ४.७८ | वनमाली घनश्यामः (उ) | १६६.२ | वनैश्चोपवनैर्दिभ्यस्त (भू) | १११.७ | वपुकायो भवेत्क्षेत्री (भू) | ६७.५५ | वयं मणितयाशीतं (उ) | १६८.५३ |
| वध्यमापुरासेनो-(उ) | १४२.८ | वनस्थलेतिविरुपातं (उ) | ५१.३८ | वनोपकण्ठेपंथानर-(उ) | १८.२७५ | वमोपुचकेपांचिन (क्रि) | २३.१३८ | वयं नैव भवंतं न (क्रि) | ४.४४ |
| वध्यवेनोनमोवनीयो(पा) | ११६.२५१ | वनस्थत्वागतोयच्छे (उ) | १४०.५ | वन्दानहेतेचरणारविद (उ) | २१२.३८ | वमोष्ठानस्वरूपि (उ) | २४३.३० | वयं वैकिकराराजस् (पा) | ३८.४१ |
| वध्वो दुहितरश्चैव (नु) | १६.१२२ | वनस्पतिगतेसोमेयत् (क्रि) | १७.१६६ | वन्दितोहिमज्जलेन (सु) | ४३.११६ | वयं कर्म करीस्तुभ्यं (पा) | १५.४२ | वयं वैपक्षिणः साध्वि (पा) | ५७.४७ |
| वनं गच्छन्व शीघ्रेण (भू) | १०८.२ | वनंति रनोदिभ्यः (उ) | ३०.१५ | वन्देनिर्भन्नवटनक्र (उ) | १८६.२२ | वयं गणस्त्वमापन्नाः (उ) | २१४.२६ | वयं सर्वस्व कुसलाः (पा) | ३८.४३ |
| वनं जगाम काकुत्स्थो (उ) | २४२.१८८ | वनस्पतीनांनुलसी (उ) | ११२.३ | वन्देमदनगोपालं (पा) | ७७.५७ | वयं गृहीत्वातत्राहं (पा) | ६८.८० | वयं सर्वे विष्णु दूताः (क्रि) | ७.५४ |
| वनं जगामसुमहत्सुपुष्प (पा) | ३६.१२ | वनस्पतेरधिवासएवं (नु) | २८.१० | वन्देयुवांसत्वरजः (उ) | २२१.३५ | वयंचक्रिबहुनाः सर्वे (पा) | ५०.३ | वयं मुनाभवेमिति सर्वे (भू) | ३.४५ |
| वनं नो पदवंतडि (उ) | १२८.१८५ | वनास्काष्ठं समादाद (क्रि) | १२७.७३ | वन्दे विष्णुं विभुं (उ) | ३६.१ | वयं च नीयतां तत्र (स्व) | २२.५७ | वरं दत्त्वापुत्राप्यग्रे (व) | १३.२४ |
| वनं परित्यज्यकुञ्जानु (क्रि) | ५.१५५ | वनानि यानि पुष्पानि (भू) | ११८.२८ | वन्देयानामुतदंचायुः (उ) | ७१.३०१ | वयं चे दधवावयं ना (पा) | ५७.५५ | वरं दत्त्वा प्रजग्मुस्ते (भू) | ६०.२६ |
| वनं पुण्यं महादिव्यं (भू) | २४.३६ | वनान्तरास्तमुद्गीय (उ) | १२६.१४७ | वन्द्यास्त्री वा भवेत्केन (व) | ५.४ | वयं तपश्चरिष्यामः (सु) | १३.२१५ | वरं दत्त्वा महाभाग (भू) | २०.२ |
| वनं प्रविश्यसखिभिः (पा) | ८३.४४ | वनांतेष्वपिदृत्यति (सु) | १५.५० | वयं फलं चयत्किंचित (क्रि) | १६.१० | वयंनपश्चरिष्यामः (सु) | ४२.६२ | वरं दत्त्वायोनस्य (उ) | ३.५१ |
| वनं प्राप्ता पुनः साहि (भू) | ३०.६७ | वनाभ्यांपार्वतीवाभ्यां (सु) | ४१.२०५ | वंस्वतप्रयनारित (उ) | १२०.११ | वयं तु बहुभिः पुण्यैः (पा) | ४४.५६ | वरं दातुंसमर्थांसि-(उ) | १३५.१० |
| वनं विलोक्य सा भीमं (उ) | १४.५२ | वनायबोदशः पाश्व- (स्व) | ६.५१ | वंसल्यकरादेवाः सर्वेवा (सु) | ४२.६१ | वयं त्रयः सुतीर्थस्मिन्न (उ) | २१७.२७ | वरं दास्यामि ते चाहं (सु) | १४.२१० |
| वनं वृदारिकाष्टद्वया (उ) | १४.४८ | वनाश्रिताश्चोपधयः (सु) | ४३.६५ | वंश पात्राणि शक्या च (उ) | २६.३६ | वयंत्विदानींघन्या वै (पा) | ४६.४ | वरं देनतुमेभाभ्यं (पा) | १०७.७० |
| वनं वृदावनं नामनव-(पा) | ७३.२० | वनिताकामुकोपेहे (उ) | ५२.११ | वंशैर्वस्वतेराजा (पा) | ५६.४३ | वयं दीक्षां प्रवेष्ट्यामो (भू) | २८.३३ | वरं यथेष्टं वरपस्व (भू) | ६६.६ |



धीपयमहापुराणम् ॥ श्लोकानुक्रमणी

३७४

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| वरं प्रदक्षिणी कृत्य (क्रि) | ५.१६५ | वरं वरय सुश्रीणि (क्रि) | ८.६५ | वराणायास्तपाचास्या- (स्व) | ३३.५० | वराङ्गेन चारुदेहेसु- (क्रि) | ५.३० | वर्चसापरमेणैव भ्राज- (उ) | १५५.१२ |
| वरं प्रदायायमहासुरा- (सु) | ४०.४७ | वरं विष्णु व्रतं ह्येत- (उ) | ६४.२२ | वरदः प्राहममदिव- (सु) | १३.३०१ | वराटिकायावतीयो (न) | १६.१४ | वर्जनादेवभोविम (उ) | ६४.८४ |
| वरं प्राणपरित्यागो (पा) | १०६.७५ | वरं वृणीष्वं भद्रवः (सु) | १५.५५ | वरदातां तथा षट्त्वा (सु) | १७.३०२ | वरांश्चवहूल्ले भेदे- (स्व) | २८.२० | वर्जयित्वापुमांसां (सु) | २०.७६ |
| वरं प्रावरणयोपि भक्त्या (सु) | १८.२०६ | वरं वृणीष्वं भद्रवो (उ) | २३२.५५ | वरदानं ततो गच्छेत्तीर्थं (स्व) | २४.१३ | वरान् प्रामान् ब्रीहिय- (सु) | १६.२२६ | वर्जयित्वा मधोयस्तु दधि- (सु) | २०.५१ |
| वरं मन्ये महीपाल (क्रि) | ३.८२ | वरं वृणीष्वं भद्रं ते (सु) | २२.४३ | वरदानात्समायाति (सु) | ४६.२०३ | वराभरास्तुललिता (उ) | ४७.८ | वर्षाणि ते पुविप्रद्राः (स्व) | ८.२३ |
| वरं ममैवमरणं (पा) | १०४.१५० | वरं वृणीष्वं चोवाच (सु) | १२.१७ | वरदाने नरः स्नात्वागो (स्व) | २४.१४ | वरासने महाबुद्धि- (क्रि) | १.८ | वर्षाणि त्रीणि शुष्काणां (पा) | १२.६५ |
| वरं मे दातु कामोसि (भू) | ३२.६४ | वरं वृणीष्वं देवेश (सु) | ३१.१४४ | वरदाभयहस्ताभ्यामि (उ) | २२८.३६ | वराहतीर्थनरः स्ना- (स्व) | २०.७२ | वर्षाणि त्रीणि सपदात्वे- (पा) | १२.६४ |
| वरं यथेष्टं वरयस्व भूपते (भू) | ६६.६ | वरं वृणीष्वं भद्रं ते (त्व) | २६.२८ | वरदायवराहयिकूमयि (सु) | १५.११६ | वराहतीर्थनरः स्ना- (स्व) | २०.७२ | वर्षाणि द्वादशैवेह तेन (सु) | १६.४८ |
| वरं वरयतस्मत्त्वयथा (सु) | ४.१३० | वरं वृणीष्वं भो भक्त (उ) | १५.१६७ | वरदायं महावीरः (सु) | ३४.१५६ | वराहवपुर्वो विष्णो (पा) | १०७.७६ | वर्षाणि द्वादशैवेह तेन (सु) | १६.४८ |
| वरं वरयदैत्येन्द्र (उ) | ६८.२० | वरं वृणीष्वं मे वत्स (उ) | २४२.२३ | वरदायं नमः पादो तथा (सु) | २२.७३ | वराहस्तु श्रुतिमुलः (सु) | १६.५४ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरयदैत्ये (उ) | १८.६५ | वरं वृणीष्वं राजर्षे (उ) | २४६.६८ | वरदासंगमं स्नात्वा (स्व) | ३६.३३ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भद्रं ते कृष्णोऽहं (भू) | २२.८ | वरं वृणीष्वं सुप्रीताः (भू) | ३.४२ | वरदंष्ट्रं जगच्छ्रय (उ) | ७१.२२६ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भद्रं ते दुर्लभं (भू) | ३.२६ | वरं वृणीष्वं प्रयच्छामि (पा) | ११७.१६१ | वरदंष्ट्रं सुरगणा (उ) | ६०.१८ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भद्रं ते (भू) | १०३.१२६ | वरं वृणीष्वं महाभाग (पा) | १०५.२३५ | वरदंष्ट्रं तु संप्राप्य (उ) | ३३.२६ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भद्रं तेन- (उ) | २१४.३५ | वरं वृणीष्वं मुञ्चते (उ) | ६.१८ | वरप्रदाता दम्भवन् (सु) | ४५.१६ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भद्रं ते यत्सेम (उ) | १३५.६ | वरं वृणीष्वं चारुस्मत्तो (क्रि) | २.५६ | वरमनिप्रवेशाच्च वरं (भू) | ४१.५४ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भो ब्रह्मन् (सु) | १७.५० | वरं स्वमल मुञ्चितवनि- (पा) | १०६.७६ | वरयामिमहात्मानं (सु) | ७.३२ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भो ब्रह्मन् (उ) | ६६.१६ | वरं कोटिभिर्न्यामिरलं (सु) | १५.५६ | वरस्तस्यापि नाह्वयमुता (सु) | ४३.३५६ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय भो वत्स (क्रि) | ६.१६४ | वरं तत्र भगवान- (सु) | १८.४५ | वराकीयं महाभाग- (भू) | ७७.५६ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |
| वरं वरय राजेन्द्र यसे (भू) | ८३.७६ | वराणां प्रसीचापि द्वे- (सु) | १४.१८६ | वरांसीतु सुतं दृष्ट्वा (सु) | ४२.५७ | वरुणः पश्चिमे पक्ष (सु) | ४१.१८ | वर्षाणि तत्र भुक्त्वा (पा) | २०.८४ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१७५

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------|---------|-------------------------------|---------|----------------------------|---------|
| वल्कलांबरधारी च (पा) | ४६.३६ | ववृषुः सस्र वर्षाणि (उ) | २४६.६६ | वसतिस्मद्विजः कोपि (भू) | ४७.१० | वसासृङ्मांसपंकाद्य (उ) | १००.२० | वसिष्ठाद्याश्चयेविप्रा (उ) | १४०.८ |
| वल्मीकस्थस्तथा विप्रः (भू) | ६१.२५ | वबौद्रव्ययन्दैत्यान् (सु) | ४१.३० | वसते सौम्यभावेन (भू) | ४७.४५ | वसिष्ठं गच्छ धर्मज्ञ (भू) | १७.३ | वसिष्ठे न कृता पूर्वं (उ) | ३६.२७ |
| वल्मीकावस्थितश्चासौ (स्व) | २०.२४ | वब्रैवराथिनीमंग-(सु) | ६.१६ | वसतोत्रमहातीर्थे (उ) | २०५.११ | वसिष्ठं गच्छ धर्मज्ञ (पा) | ८६.१५ | वसिष्ठेनदिलीपाय (स्व) | १३.१ |
| वल्मीकेषुनष्टितन (सु) | ७.४२ | वब्रैसलोकपालत्वं (सु) | ८.५५ | वसत्यप्सुसहेमतेहृदे (उ) | १२८.१८६ | वसिष्ठंगोत्र संभूतं (पा) | ६६.३५ | वसिष्ठे न यथा पूर्वा (उ) | २०१.६६ |
| वल्मीकोदरमध्यस्थो (भू) | ६१.२० | वशगाहं तवैवाद्य भवि-(भू) | २५.१२ | वसनंगांचभूमिचच्छत्र (पा) | ६७.६१ | वसिष्ठं ग्राह्यं सुमति (पा) | ६७.२० | वसिष्ठोपिगृहीत्वाध्वं (पा) | २.१६ |
| वल्मभानिप्रशस्तानि (सु) | ६.६३ | वशिन्धोद्वेष्टावजिक्वयो-(पा) | ११३.४३ | वसनमहमासाद्यपुरुषान् (सु) | १५.४१ | वसिष्ठं मुनिवर्गं (पा) | ११०.२३ | वसिष्ठोपिचनान् कृत्वा (उ) | २०.३१ |
| वल्मीकवृक्षादिगहनशिवा (सु) | १८.२८३ | वशिष्ठस्य प्रसादाच्च (भू) | १०५.६५ | वसन्तमासमासाद्यतृतीया-(सु) | २६.१५ | वसिष्ठं समतिक्रम्य (स्व) | ३२.३ | वसिष्ठोप्याहरामंतं (पा) | १०४.१३० |
| ववन्देगूढवदनापाणि (सु) | ४३.१२६ | वसिष्ठस्याश्वमेपुण्यं (भू) | १०५.४५ | वसन्तस्त्रयसकलान्-(पा) | १२.७६ | वसिष्ठं सर्वं तत्त्वज्ञं (पा) | १०४.१२६ | वसिष्ठो ब्रह्मणः (उ) | २०३.३२ |
| ववन्दे चरणोविष्णोः (उ) | ७.८३ | वशिष्ठादायुपुत्रश्च (भू) | १०५.६३ | वसन्तामलसप्तम्यां (सु) | २१.२७६ | वसिष्ठत्वंत्प्रसादेन (सु) | ३४.३५३ | वसिष्ठोरघुनाथस्य (पा) | १०.३५ |
| मवंदेचरणो हृष्टस्ते (उ) | ३१.१० | वसिष्ठोऽपि समाकर्ष्यं (भू) | ११६.६ | वसतिवत्समापराधायै (सु) | ३२.१०१ | वसिष्ठप्रमुखा विप्रा (उ) | १४.८६ | वसिष्ठोराममाहूय (पा) | १०.३२ |
| मवंदेभार्यया सार्द्धं (उ) | २४२.३५५ | वशीकृताः सर्वनृपाः (पा) | ११७.१८५ | वसतिवेषायेतुल्या (उ) | ३८.४३ | वसिष्ठप्रमुखास्तत्र (पा) | ५६.४ | वसिष्ठोवामदेवश्च (उ) | १३८.१० |
| मवंदेमानरं तत्र (उ) | २४६.८३ | वशीकृतैर्द्विय ग्रामो (उ) | १८५.२० | वसतिपुष्करतेतनराः (सु) | १५.२७१ | वसिष्ठवामदेवा (उ) | २४२.१४६ | वसिष्ठोवामदेवश्च (उ) | १५४.५६ |
| मवर्षः पुष्पवर्षाणि (उ) | २३२.४८ | वश्यत्वं च त्वया (भू) | ६२.६ | वसति बहवोविप्रा (उ) | ३६.१५ | वसिष्ठश्चाबुद्धेचेव-(सु) | ३४.१४३ | वसिष्ठो वामदेवश्च (उ) | २४३.२ |
| मवर्षुः पारिजातैः (क्रि) | ८.८६ | वश्यमाधोवश्यविश्वो (उ) | ७१.१६२ | वसति यत्र भूतानि (भू) | ३६.१७ | वसिष्ठं संभूतश्चाग्निर् (सु) | २४१ | वसिष्ठोविचार्य सहर्षं (पा) | ११६.१४५ |
| मवुः पुण्यास्तथा (उ) | २३२.४६ | वश्यमिच्छतामि (उ) | २०२.३५ | वसति किंशुकाभासान् (उ) | १००.३० | वसिष्ठः सरयूगत्वा (पा) | ६७.४२ | वसुकोशं धनं सर्वं (पा) | १७.१२ |
| मवृषे दारुणोर्मः (भू) | ५१.१३ | वश्यश्रीमिश्रचलः (उ) | ७१.१४१ | वसतेपितृणांघ्ने (उ) | २७.१२ | वसिष्ठस्य च ब्रह्मर्षे (सु) | २.१६ | वसुदत्त उवाचैतां (भू) | ४७.४२ |
| मवृषे दारुणोर्मः (भू) | ५१.१७ | वश्यवायस्यमिदं कर्म (भू) | ६१.६५ | वसतेवसतेत्येवं (पा) | ७२.६१ | वसिष्ठस्याग्रतः स्थित्वा (सु) | ३५.४३ | वसुदत्तेति विश्वासाः (भू) | २२.३५ |
| मवृषेसुनर्लोकान् (सु) | ४१.२७६ | वसतस्तस्यविप्रस्य (भू) | ५.४५ | वसवस्तेसमाख्यातास्ते (सु) | ६.२१ | वसिष्ठस्याश्रमंयात (उ) | १२५.५५ | वसुदेववचः श्रुत्वा (सु) | १३.१३६ |
| मवृषुः पुष्पवर्षाणि (उ) | २४६.२६ | वसताग्रदगुरोर्गृहे (पा) | ६४.३१ | वसवोऽष्टसमायाता-(सु) | ५.२४ | वसिष्ठस्याश्रमेविप्रा-(सु) | १६.१०६ | वसुदेव सुतस्या (उ) | २४५.२ |
| मवृषुः पुष्पवर्षाणि (उ) | २४६.७२ | वसतिर्वतेतत्रहारी (उ) | १७४.८८ | वसामिमानुषेक्षोके (उ) | २४४.४१ | वसिष्ठस्या सुताः सप्तये (सु) | ७.८६ | वसुदेवस्तथा क्रूरो (उ) | २४५.३६६ |



शोपथमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३७६

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| वसुदेवस्त्रियः सर्वा (उ) | २४८.७ | वस्त्रयुगमावृत्कृत्वा (सु) | २१.२८० | वहस्यत्रमहादेवी (पा) | ३०.५ | वाक्येनतेनतस्यासौ (सु) | १७.२६६ | वाजपेयं क्रतुं यष्टु (उ) | २४२.१३३ |
| वसुदेवोपिदुष्टात्मा (उ) | २४५.२२४ | वस्त्रस्यविवरेतत्र (पा) | ११०.८४ | वहंतंजलमालोक्य (क्रि) | ८.४ | वाक्यैः सुपुण्यैः परिपूजिता (भू) | ५७.२ | वाजपेयमवाप्नोति (स्व) | ३८.३१ |
| वसुधाराह्वयं तीर्थं (सु) | ११.६१ | वस्त्रादिभिरथो सर्वा (पा) | ११६.२६६ | वहंतंहीकरंडो च वेणी (उ) | १२६.६४ | वाक्यैस्तु पुण्यैरबला (भू) | ५७.४ | वाजपेयादिनामामिन् (उ) | ७१.२४० |
| वसुपात्रमातुलुंगं स्वर्ण- (उ) | २२६.७३ | वस्त्रादिषु विकल्पः (स्व) | ५२.३४ | वहंतितानि पुण्यानि (उ) | १४३.६ | वागीशापिनशक्रोति (उ) | १३५.७० | वाजिनश्चित्रिताभूयः (पा) | ३.८ |
| वसुपात्रमातुलुंगंस्वर्ण- (उ) | २३२.४४ | वस्त्रायुगं तिलान् (सु) | २०.६१ | वहंत्यतिथिपूजायां (क्रि) | २५.३० | वागीशविष्णवीश (उ) | २२.२५ | वाजिनृगच्छयथालीलं (पा) | ११.७१ |
| वसूनामवताराय (उ) | १२४.४५ | वस्त्रालंकार भूषां मे (भू) | २०.३५ | वहुभिः सहगं धर्मे (सु) | १८.३३ | वागुराः पाशजलाश्च (भू) | ४३.५७ | वाजिमेघवाप्नोति (स्व) | ३८.३० |
| वसूनामवताराय (उ) | १२४.४५ | वस्त्रालंकारभोजयश्च (ब्र) | ११.४३ | वहेस्त्वशिरसाभक्त्या (क्रि) | २.३३ | वाग्भिर्मनोनुकूलाभिः (स्व) | ६.२६ | वाजीगतोयरेवायाहूदे (पा) | ३८.१० |
| वसेत्कल्पायुतंसाग्रं (स्व) | २०.६२ | वस्त्रालंकारवाद्यश्च (उ) | ११६.३६ | वह्निं प्राप्ययथा सर्वे (भू) | ६.२० | वाङ्मनः कायजपापं (उ) | १२७.४५ | वाञ्छितितत्पदाभोजे (पा) | ७०.५६ |
| वसेद्विकृतवासः (स्व) | ५१.१२ | वस्त्रालंकारवाद्यश्च (उ) | १२३.२७ | वह्निना दीप्यमानस्तु (भू) | ६४.६६ | वाचकागप्रदातव्याय (उ) | १२४.७७ | वाञ्छतिबांधवाः सर्वे (उ) | २१३.२१ |
| वसेद्विष्णुपुरेश्रीमान् (सु) | २१.३१६ | वस्त्रालंकाराविधिना (उ) | ८६.३३ | वह्निनापुच्छयुक्तेन (पा) | ३६.३२ | वाचकेपूजितेयस्मा (उ) | १२६.६८ | वाञ्छाचिन्तामणिस्तोत्रं (उ) | १६७.७४ |
| वसेद्विष्णुपुरेश्रीमान् (पा) | ६७.१०७ | वस्त्रालंकार सौभाग्यं (भू) | ४१.६६ | वह्निमध्यासमुत्तस्थौ (पा) | १०७.७३ | वाचकेसतिदेवर्षे (उ) | ३७.३१ | वाञ्छितं लभते नित्यं (उ) | १५१.१८ |
| वस्तुतत्रमुखेनाहृतं (उ) | २०४.६१ | वस्त्रालंकार हरणं (पा) | ६६.३० | वह्निर्गन्धेहृस्वलोपि (उ) | १३२.३३ | वाचमिदं समाकर्ण्य (पा) | ४२.२१ | वाञ्छितं लभते नित्यं (उ) | १७४.८१ |
| वस्तुनिहाह्वाणश्चेष्ट (क्रि) | १६.४७ | वस्त्रासनेकेवलेच (क्रि) | ११.६७ | वह्निश्चशांतिमगमदग्र्य (पा) | २४.४४ | वाचमुचेगजः सम्यग् (उ) | १६१.१६ | वाञ्छितं लभते सोपि (उ) | ६३.१ |
| वस्त्रं तद्योपवीतं (पा) | ११४.३३७ | वस्त्रेणाह्लादितं कृत्वा (उ) | २५.२८ | वह्निर्गन्धेहृस्वलोपि (उ) | १३२.३३ | वाचमुचेहसन्नुच्चै (उ) | १८३.५ | वाञ्छिगांप्रददो (उ) | २४०.२६ |
| वस्त्रं पुरातनं दास्या (उ) | २१३.१३ | वस्त्रैरामरणैर्दिव्यैः (उ) | २४६.३२ | वह्निर्गन्धेहृस्वलोपि (उ) | १३२.३३ | वाचयन्समहीपालो (उ) | १८६.४५ | वाणिज्यं नृपतेः सेवा (पा) | ६.४६ |
| वस्त्रं पुरातनयच्छेदं (क्रि) | २०.१३७ | वस्त्रैरामरणैर्दिव्यैः (उ) | २५०.८७ | वाक्छलेनजित्यादैत्याः (उ) | ५३.१६ | वाचयित्वास्वर्णपत्रं (पा) | ३६.२६ | वातपित्तकफादीनां (भू) | ६६.११६ |
| वस्त्रं पृष्ठादिकं सर्वं (भू) | ४.२६ | वस्त्रैरामरणैर्दिव्यैः (उ) | २५३.६४ | वाक्पाणिदैविगतौ (सु) | ३४.१०३ | वाचांप्रधानभूतत्वात्ते (सु) | ४३.२८ | वातपित्तश्लेष्मदोषं (उ) | ६६.१० |
| वस्त्रयच्छ्रितयोर्दिव्यम् (ब्र) | २४.२५ | वस्त्रैस्तांबूलदीपैः (उ) | १२२.३४ | वाक्यमाकर्ण्यतद्भर्तुं (भू) | १०५.२१ | वाचामधुरयाप्रीणानि- (पा) | १०४.१२ | वातांतं न वृष्ट्या च (भू) | ६६.१५७ |
| वस्त्रयुगं च दातव्यं (सु) | ३४.३१३ | वस्त्रेष्टपर्वतोपेतं (सु) | ४०.१४६ | वाक्यमुवाचललिता (उ) | ४७.३३ | वाचिनामहरेर्यत्रनवै (पा) | ४६.६ | वातांतुदण्डिनदेह (उ) | १२८.१५० |
| वस्त्र युगं च दातव्यं (उ) | ३६.६ | वह्नेर्ब्रह्मतनया (उ) | ३४.२६ | वाक्शमकेतुसोपान (पा) | १०४.२१० | वाक्शतवयमहाभाग (पा) | ६६.१०७ | वातांतुदण्डिनदेह (उ) | १६७.११३ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| वातासुरारिः केङ्गिघ्नो (उ) | ७१.२५१ | वानप्रस्थावनगत आश्रमी(सु) | ३८.१७१ | वापी तडाग सरसी (पा) | ११४.७८ | वामभागेस्थितो बह्म (पा) | ७६.२८ | वायुनावव्रत्तसर्व (पा) | २४.५१ |
| वानाहारानुभवाश्च (सु) | १६.१०६ | वानरं पश्यति हरो (पा) | ११४.२०३ | वाप्यस्फटिक सोपान (उ) | ३.२० | वामयादंष्ट्रयागृह्य (पा) | ६६.५ | वायुभक्षस्तनः कुर्वन्नात् (उ) | १६१.६ |
| वाताहारेणजीवामि (उ) | १२६.१२४ | वानराग्रपिथेवीरारण (पा) | ३३.२५ | वागतास्त्रिदशाः सर्वे (उ) | ५.५३ | वामहस्तेनतात् सवत् (सु) | १७.२६ | स्वायुभक्षस्तपते (पा) | ७२.१५१ |
| वानिकः पैत्रिकश्चैव (भू) | १२०.१० | वानराणामनीकानि (उ) | ४४.६ | वामदेवं महात्मानं तं(भू) | ६७.३० | वामांकमाहोहासु (उ) | १६२.२६ | वायुभक्षजलाहाराः (सु) | १८.१०३ |
| वातोपिमार्गं संस्थानां(पा) | ४.५३ | वानरालक्षमणश्च (पा) | ११६.२६४ | वामदेव ऋषि श्रेष्ठो (भू) | ६७.२६ | वामांकस्थाश्रियासाढं (उ) | २२३.४४ | वायुभक्षोनिराहारो (उ) | १४२.४ |
| वात्ययापत्यमाना (उ) | २२२.७ | वानरैस्सहसुग्रीवो (सु) | ३८.३६ | वामदेवस्ततो हृष्ट्वा (भू) | ६७.३१ | वामांके संस्थिता देवो (उ) | २२६.१३६ | वायुस्ति जगद्धातायः (सु) | ४३.३२७ |
| वात्याकूपधरोनित्यं (उ) | १६७.२२ | वानर्यश्चमहाभागा-(सु) | ३८.५५ | वामदेवोभृणोत्सर्वं (उ) | ६०.४१ | वामांगी मम च स्थानं (भू) | ४१.२४ | वायुर्गर्गिष्ठोनमुचिः(सु) | १८७२ |
| वात्स्यायनमहाबुद्धि (पा) | ४६.२७ | वानस्पत्याश्चौषधयोग्यश्चे (सु) | १६.८० | वामनः पूर्वतोयेन (उ) | ५३.७ | वामांगुष्ठनखारोग (सु) | १४.१११ | वाय्वलवनांश्रेष्ठो (पा) | ११६.१२२ |
| वात्स्यायनमुनिश्रेष्ठ (पा) | ८.१ | वानरीरैः साल्वजवीरैः (उ) | १२८.१७३ | वामनेत्रप्रकर्षं च (सु) | ४४.१७३ | वामे च शोभते वोर (पा) | ८४.१०० | वायुभक्षविकारांश्च (सु) | १६.८८ |
| वादयंतेतिमधुरं (सु) | ४३.४२४ | वापीकुंडतडागंश्च (भू) | ८३.६७ | वामनेन वलिवंदत् (सु) | १३.१८४ | वामेन गदयाहंतृपच-(पा) | ६०.४३ | वायुर्थशामयचयं च (भू) | ११५.३ |
| वादित्र वेणुवंशाद्यं (भू) | ६७.१०१ | वापीकुंडतडागंश्च (भू) | ६७.२१ | वामनोर्मूलोनाम (पा) | ७८.३४ | वामेपि चतुरः खला (उ) | २६.१० | वायुर्वैचक्षुरभिः (सु) | ४३.४२२ |
| वादित्राणि च दिव्यानि (सु) | १८.१२३ | वापीकूप तडागादि (त्र) | ४.१४ | वामनोर्हृन्मिष्यामि (सु) | ३०.४० | वायव्यं गोरजः स्नानं (उ) | ११७.२६ | वायुर्वैह्विः शुचिः (उ) | ७१.२८५ |
| वादित्राणि च सर्वाणि (उ) | ८.६ | वापीकूपतडागादौ (स्व) | ३१.५१ | वामपादं तथा चक्रं (पा) | ११०.४३ | वायव्यां योगपदं च (सु) | ३४.२६६ | वायुवेगहृतायद्रत् (उ) | १००.२६ |
| वादिन्यश्चास्त्ववायं (पा) | ११४.२० | वापी कूपतडागाद्य (पा) | ११४.१६ | वामपादहतः सोपि (पा) | १४.४० | वायुना चलितो गर्भः (भू) | ८.१३ | वायुवेगहन्यते (सु) | ४५.१४० |
| वाद्यकृपुश्चक्षुर्वापि (उ) | ११५.१२ | वापी कूप तडागानां (भू) | ३६.८२ | वामपादार्धं तस्योयं (पा) | ८०.२० | वायुनातोल्यतयोः (सु) | २.१० | वायुश्च वनवानां शूला (सु) | ३६.५४ |
| वानप्रस्थप्रसन्नैश्च (पा) | १०६.८६ | वापी कूपतडागानां (भू) | ६६.३६ | वामपादार्धं स्थितां तस्य (पा) | १२.५६ | वायुनातोल्यतं नित्यं (भू) | ५३.५७ | वायुश्च वनवासश्चैव (उ) | ३.१४ |
| वानप्रस्थसमाचारी (सु) | १५.२१७ | वापी कूप तडागानां (उ) | १८०.१८ | वामपादार्धं स्थितोऽह्रः (सु) | १६.६७ | वायुना नीयमान तं (भू) | ५८.५ | वायुः सुशीतलोवाति (पा) | १२.७७ |
| वानप्रस्थोऽह्रहृत्श्च (सु) | १५.३४१ | वापीकूपतडागंश्च (भू) | ६३.५ | वामपादार्धं स्थितोऽह्रः (सु) | १६.६७ | वायुनासंहतामेषाय (पा) | ४५.४२ | वायोमुख्ययियातोये (पा) | ८४.६६ |
| वानप्रस्थोऽह्रहृत्श्चारी (क्रि) | २५.२७ | वापी कूपसरोयश्चैव (उ) | १८१.३३ | वामपादार्धं स्थितोऽह्रः (सु) | १६.६७ | वायुनास्फालितानागाः (पा) | २४.४६ | वाय्वग्निनाकभूमीनामं (पा) | ७७.४१ |
| वानप्रस्थोऽह्रहृत्श्चारी (क्रि) | २५.२७ | वापीकूपसहस्रेण (उ) | ३२.३७ | वामपादार्धं स्थितोऽह्रः (सु) | १६.६७ | | | वाय्वग्निरूपविप्राय (स्व) | ५५.७० |



वीपयनहापुराणः १: पलोकानुक्रमणो

३७८

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| वाय्वतरात्मामंत्रस्थि-(सु) | १६.५६ | वाराणस्याश्च माहात्म्यं (स्व) | ३३.१ | वारुण्यामततवमरिमा (भू) | १०३.१११ | वाल्मीकिनाचघनुषी-(पा) | ५६.८२ | वासः सक्चंदनैद्विद्ये (पा) | ८३.६० |
| वारणां ततो राज्ये (भू) | २७.१६ | वाराणस्याश्च माहात्म्यं (स्व) | ३८.१ | वाक्चञ्जी च नदीकेन (उ) | १६८.६ | वाल्मीकिना पुराप्रोक्त (पा) | ६४.७२ | वासांसि च महार्हाणि (स्व) | ४२.२० |
| वारनारीमिति प्राहगतः (क्रि) | १७.१६ | वाराहं ब्रह्मवैवर्तं (पा) | १०४.१३ | वाक्त्रैच्यासंगमेपुण्ये (उ) | १६८.११ | वाल्मीकिरास्तेसुभहा-(पा) | ५७.१६ | वासांसिचविविश्रणि (पा) | ६७.३२ |
| वारं वारं च गोविन्दं (पा) | ७२.८६ | वाराह इतिकल्पोयं (सु) | ३.२५ | वाढंकेतस्यपुत्रोभूतप्रसाद(उ) | २०७.६ | वाल्मीकिर्युनिरख्ययुंर (पा) | १०.३६ | वासांसि चित्र रूपाणि (उ) | १२७.७६ |
| वारयामासतुदेवि (उ) | २३७.३ | वाराहइवनिःश्वस्य (पा) | ६०.५० | वाढंकेत्वं मयः प्राप्त (उ) | २०७.११ | वाल्मीकिर्यत्रविरजा-(पा) | ५६.७६ | वासांसि चैव सर्वेषां (सु) | २३.६० |
| वारांगनानपत्यासा-(क्रि) | १५.२५ | वाराहः पुनरेव युद्ध (भू) | ४३.३६ | वाढंकेद्रुःखसंप्राप्तिजंरा (भू) | ५३.४४ | वाल्मीकिलंक्षमणस्तौ (पा) | ६६.१११ | वासांसि बहुरत्नानि (पा) | १४.६ |
| वाराणसी चतुर्थी च (भू) | ६२.२७ | वाराहमूर्तिनायेन (क्रि) | ६.१८२ | वाढंकेनलभेत्पीडाम् (स्व) | ६१.८६ | वाल्मीकिः श्री युतौ (पा) | ६६.१२४ | वासांसि रमणीयानि (पा) | ६६.६४ |
| वाराणसी चार्धतीर्थं (भू) | ६१.१७ | वाराहरूपमास्थाय (उ) | २३७.१६ | वाढंकेभोगलिप्सा (पा) | ११४.४५६ | वाल्मीकेराक्षमे पुण्टी (उ) | २४४.४ | वासिताः सर्वगर्वं (पा) | ११४.२२ |
| वाराणसीमयाष्टदा (पा) | १७.७६ | वाराहरूपीयदाहं (सु) | ३०.१६३ | वाढंकेभोगलिप्सा (पा) | ११४.४५६ | वाल्मीकेरेव पादाब्ज (पा) | ६६.११० | वासुकिप्रभृतीन्भीमा-(उ) | २३८.६२ |
| वाराणसी यदर्थं यत्त (उ) | १७७.२१ | वाराहवपुर्नित्यं (उ) | २५५.८१ | वालस्वित्यामहात्मानो (सु) | १८.१०२ | वासंकुयमिहृतीर्थं (स्व) | ४०.३ | वासुकिप्रसुलानागा-(उ) | ८३.११ |
| वाराणस्यां कृतो (उ) | १२७.१२६ | वाराहः शक्ति लिंगस्तु (उ) | १२०.६१ | वालव्यजनहस्ताचबो-(सु) | ३३.१०७ | वासंतीभिः सुगंधी (क्रि) | १२.२१ | वासुदेवं न जानाति (उ) | २३५.११ |
| वाराणस्यां प्रभासे च (सु) | १७.६६ | वाराहस्यवत्तुमांसेन (सु) | ६.१५४ | वालिनामप्लवंगैर (सु) | १४.६६ | वासः प्रतिसरैः सूत्रैः (पा) | ८५.६ | वासुदेवं समभ्यर्च्यं (उ) | ११६.२७ |
| वाराणस्यां महाराज (स्व) | ३६.१ | वाराहस्यवत्तुमांसेन (सु) | ६.१५४ | वालिन पुत्रस्तुतावुलं (उ) | २४३.१३ | वासरे कमलामूर्तः (त्र) | १७.२० | वासुदेवं समभ्यर्च्यं (उ) | १२३.१५ |
| वाराणस्यां महार्त्तयै (सु) | १४.१६३ | वारित्यक्त्वायथाहंसः (उ) | १३२.२७ | वालिन प्रमथनो वागमी (उ) | २५४.३२ | वासरे कमलामूर्तुर्ध्वं (क्रि) | २२.६७ | वासुदेवं समाश्रित्य (स्व) | ४०.१८ |
| वाराणस्यायेचंयति (स्व) | ३३.४० | वारिरात्रपरिनिप्तं (सु) | ४१.४६ | वालीवभाषेराममजलि(पा) | ११६.२०० | वासरे राघवनामस्य (त्र) | ४.३७ | वासुदेवं विने पुष्पैः (क्रि) | २२.१०३ |
| वाराणस्यां विशालाक्षी (सु) | १७.१८४ | वाक्त्रैच्यासंगमेपुण्यं (पा) | ११५.६६ | वाल्मीकिनिजशिष्या-(पा) | ५६.६६ | वासरे वासुदेवस्य (क्रि) | २२.१०२ | वासुदेवमन्त्रतुल्यं (उ) | ४७.१ |
| वाराणस्यां विशालाक्षी (पा) | ७७.३६ | वाक्त्रैच्यासंगमेपुण्यं (पा) | २४.४२ | वाल्मीकि मां विजानी (पा) | ५६.६२ | वासरे सप्तभिः सिद्धाः (पा) | ३६.३७ | वासुदेव प्रसादेन (उ) | ४३.४८ |
| वाराणस्यां विशेषेण (स्व) | ३३.३६ | वाक्त्रैच्यासंगमेपुण्यं (पा) | ४५.४१ | वाल्मीकिसानमस्कृत्य (पा) | ६७.११ | वासराद्याः मुग्धाः सर्वे (क्रि) | १८.८८ | वासुदेवमनाराधको-(सु) | ३.३८ |
| वाराणस्याः परंस्थानं (स्व) | ३३.५१ | वाक्त्रैच्यासंगमेपुण्यं (पा) | ११६.१० | वाल्मीकिः सात्वयित्वं (पा) | ५६.६५ | वास वाद्याः मुग्धाः सर्वे (क्रि) | २०.८५ | वासुदेवस्य चिन्तयः (उ) | २५२.१०२ |
| वाराणस्यामभूद्राजा-(सु) | १२.१०३ | वाक्त्रैच्यासंगमेपुण्यं (उ) | २२८.१४ | वाल्मीकिनाकृतापुत्र्यं (त्र) | ४.२१ | वास्तस्तन्याश्चोत्कृति (स्व) | ३४.१५ | वासुदेवस्य नरयैव (भू) | ६३.१७ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३७६

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------|---------|------------------------------|--------|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|
| वासुदेवस्य नारीणां (सु) | २३.७५ | वाहनादि विमानानि (सु) | ४२.६२ | विकुण्डलमथासार्द्धमेहि (स्व) | ३०.४१ | विचरत्यविचार्येण (सु) | १५.२०२ | विचार्यार्थं जपेयसु (उ) | १२८.२७६ |
| वासुदेवस्यपूजायः (उ) | १२८.२८७ | वाहनाभ्येवमागेह (सु) | ४३.४६५ | विकृताणिनिचांभांसि- (स्व) | २.१५ | विचरत्यनिचांभ्येवने (पा) | २०.४८ | विचार्याहंकरिष्यामि (उ) | १६७.५३ |
| वासुदेवस्य माहात्म्यं (क्रि) | १६.३ | वाहनेभ्यो वरुह्या (उ) | १६६.२५ | विकृतश्चविकारश्च (सु) | १८.५४ | विचरंतेमिमांभूमिक्रंदन (सु) | १८.४१४ | विचार्यैवंतदातेन (उ) | १५४.६४ |
| वासुदेवस्वरूपं (उ) | २२६.२४ | वाहमारो रथामान (उ) | ८८.११ | विकृतानवावीभ्रमस्त (स्व) | २०.१३ | विचरन्ति यथा कामं (उ) | ८०.१२६ | विचार्यैवं द्विजाः सर्वे (पा) | ११३.११ |
| वासुदेवादयोदेवा- (पा) | ६८.५ | विकटास्मोऽर्धंभूमिमुह- (उ) | १७.३१ | विकोवैरसिभिस्तोक्ष्यैः (सु) | ४१.१६५ | विचरंती यतो देशे- (सु) | ३७.२२ | विचार्यैवं महाराजन (भू) | २८.११६ |
| वासुदेवाभिधानं च मुगति- (भू) | ३६.१४ | विकटो नामये मित्रः (उ) | २०४.१२४ | विक्रयं सर्वभांडानाम् (स्व) | ४५.१२ | विचरन्ति नरेण्ये (उ) | २०४.६६ | विचित्रफलितं दिव्यं (क्रि) | १२.८ |
| वासुदेवाभिधानं चाप्रमेयं (भू) | ६८.५ | विकरालिमहाकालिके (सु) | ३१.१३६ | िक्रीडति च लोभेन (सु) | ६७.४१ | विचरामोमहारण्य (उ) | २४२.२३६ | विचित्रकुट्टिमारत्नेः (सु) | १५.१५५ |
| वासुदेवाभिधानं तत्सर्वं (भू) | ६८.३ | विकसंस्थानांच तथा (उ) | २५३.१२४ | विक्रीणातुरसां देव (स्व) | १६.३५१ | विचरेत्पितृभिः सार्धं (सु) | २१.१७२ | विचित्रतावर्णादिना- (पा) | २६.६ |
| वासुदेवाभिधानं (भू) | ६७.११४ | विकलांगो विवृताक्षः (उ) | १७५.३८ | विक्रंताचानुमंतायः (स्व) | ३१.१४५ | विचरेदिहभूतेषु (स्व) | ६१.६२ | विचित्रतिलकोद्दामभाल (पा) | ७४.१७८ |
| वासुदेवाभिधानं (भू) | ६६.१७ | विकल्पवशमापन्ना- (सु) | ३०.६२ | विख्यातराजोचित- (पा) | ६५.१२२ | विचारं वेदरूप तं (भू) | ६८.४५ | विचित्रनानाविहंग (सु) | ४५.१६६ |
| वासुदेवाभिधानस्य अयुतं (भू) | ६६.३४ | विकल्पः स्वस्यचित्ततु (सु) | ४४.१३ | विगुणय्यस्ववितानि (क्रि) | २०.४३ | विचारमेवं कर्त्तव्यं (भू) | २५.२४ | विचित्रमण्डोतां च (क्रि) | ६.१६५ |
| वासुदेवाभिधानस्य (भू) | १००.२ | विकल्पोऽप्योभयवता (सु) | ३०.११४ | विगृहीतजयक्षेपहिंसा (स्व) | ५४.२८ | विचारयामासतदाकोयं (पा) | ६२.४ | विचित्रवर्यं ध्वजमाचित्रिता (पा) | ३.५ |
| वासुदेवी तथा गौरी (सु) | २६.३६ | विकार वच्यगोक्षीरं (सु) | २६.१० | विगृह्य वादंक्रुत्वावा (स्व) | ५५.८५ | विचार्यतियेशास्त्रं (स्व) | ३१.६४ | विचित्रपश्यैः पश्यदग्निः (सु) | ४३.१८६ |
| वासुदेवोपितत्रैव (स्व) | ४६.२ | विकारायाविकाराय (उ) | २४५.३०७ | विघ्नं प्रकृत्यैवैव (सु) | १८.८३ | विचारितं तदा तेन व (उ) | २१.१४ | विचित्रवाद्यवादिन्यः (पा) | ११४.६६ |
| वासुदेवोमर्दलं च (पा) | ११४.१६५ | विकारायिकुमुमक्रोड (उ) | १८७.१६ | विघ्नमाचरतेयोक्षी- (पा) | ६६.५८ | विचार्यकथयत्वं (पा) | ३५.३६ | विचित्रवाहनाख्ण्डा (सु) | ४३.४६६ |
| वासुदेवो मुरं वारुणं (उ) | ७७.० | विकाशि सुमनोरसा (पा) | १०३.२२ | विघ्नस्यविघातायं (उ) | १६८.४३ | विचार्यनिशितं धोरं (पा) | ६४.७ | विचित्र विष्णुवाताभि (पा) | २०.४ |
| वासोभिः शयनीयैश्च (सु) | २८.११४ | विकासंतस्यकुर्वीत (उ) | २५३.८३ | विघ्नैर्म्योरक्षणं तेषां (उ) | ६०.२७ | विचार्य मनसा विप्रः (भू) | ४.४७ | विचित्र वृक्षसंवीतं (पा) | १०७.४ |
| वासोत्तलंकारमाल्यं (पा) | ७४.१६१ | विकाससंकोचावस्थे (उ) | २२७.५६ | विघ्नेश पूजयेत्तत्र (भू) | १२५.३० | विचार्य रामप्रतिमम (पा) | ६०.१४ | विचित्रश्लक्ष्णपर्यंकेषु (उ) | २२६.६५ |
| वाहं समर्प्य गतासि- (पा) | ५०.५० | विकासि कमलामोद- (पा) | २२.२४ | विघ्ने उद्यमं दुष्टः (भू) | १०५.७ | विचार्य सचतेः सार्द्धं (पा) | १११.६ | विचित्रस्वगति प्राप्ति (पा) | ११३.२० |
| वाहमानि विविधाणि (सु) | ४०.४४ | विक्रीणं पुष्प व (उ) | २३८.१५० | विचचारतदाराजावन (उ) | ४१.२४ | विचार्य सर्वं शास्त्राणि (क्रि) | ६.१६० | विचित्राणि च कर्माणि (पा) | ८७.११ |



भोपचमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३८०

| | | | | |
|--------------------------------------|--|-------------------------------------|-----------------------------------|---|
| विचित्राणि च कर्माणि (पा) ६२.८ | विजितास्त्रिदशदैवैः (सु) ४.२५ | विततंपंचपद्याभि (उ) २२६.५० | विदधद्वायुवेगेन (पा) १६.२५ | विदेह नगरात्पश्चिम-(पा) ११६.७२ |
| विचित्राणि च रत्नानि (पा) ७२.६६ | विज्वलस्य पिता पुण्यः (भू) ६६.२० | विततबहुसमुद्धि (पा) १०.१४ | विदधामि सदायत्र (उ) २००.१३ | विदेहपुत्रिस्वकुलं (पा) ४.४२ |
| विचित्राभरणैर्युक्तं (उ) २५३.८८ | विज्ञप्तस्तत्र वैब्रह्मानायं (सु) १८.१३५ | विततांरक्तनमनांरुक्ष (उ) ११६.२ | विदध्वमित्यं मुनयो (सु) ४३.३४७ | विदेहस्त्वभकस्वेति (सु) २२.३६ |
| विचित्रैर्य कथा पुण्या (भू) २३.१ | विज्ञप्तोर्वैश्वेदेव (स्व) २७.६ | वितते यज्ञ वाटेतु (सु) १८.११६ | विदर्भं नगरे राजन् (उ) २१८.६ | विदेहो विदेवमिभि (पा) ११६.७५ |
| विचिततयंतोहरिमञ्ज-(उ) २०५.४७ | विज्ञप्तोहितदातेनदेव-(सु) ३०.१६१ | वितस्तां च समायाद्य (स्व) २५.१ | विदर्भराजो धमर्त्तिमा (उ) २४७.१३ | विदोषं विगुणं चैकं (उ) १२८.२३३ |
| विचित्यवचनंतस्या (क्रि) ५.७३ | विज्ञानमात्रं क्षणिकं (उ) ८०.६१ | वितस्तायमुना सीतां (पा) ६६.११६ | विदर्भा चाथावेगाच्च-(सु) ११.५४ | विद्वक्चर्कश्चित्रदा (भू) ४३.४७ |
| विचित्य हुंडो मायावी (भू) १०३.४६ | विज्ञानरक्तवसनं (पा) १०५.१६७ | वितस्ति मात्रायोनिः (सु) २७.८ | विदर्भरसनान्द्विः (पा) ८३.६८ | विद्वोदं कुंडल नाम (पा) ५०.८ |
| विचित्योतिस्वमनसि (उ) २१३.२८ | विज्ञानरक्तवसनं (पा) १०५.२३१ | वितानकंचोपरिपच वर्णं (सु) २१.६६ | विदारुणेतिनामा च (उ) १३४.८ | विद्वो दरा त्रिसूलाग्रे (सु) ३१.८६ |
| विचित्राङ्गानि सर्वाणि (भू) १.२५ | विज्ञापयामासुरिदं-(पा) ११२.६६ | वितं केनग्राह्याति (क्रि) २०.८ | विदायस्थोनितास्थानि (उ) २१०.१३ | विद्यतेत्पद्गृहीतं (पा) ६७.१८ |
| विच्छिन्नंतुशिरः पश्चाद् (सु) १४.११२ | विज्ञाप्यं शृणुमेदेव (सु) ३८.६६ | वित शाठ्यं न कर्तव्यं (उ) २५.६ | विदायस्थोनितास्थानि (उ) २१०.१३ | विद्ययायातिविप्रव (सु) ४६.१३० |
| विच्छिन्नपादपक्षं (उ) २४२.२६१ | विज्ञाप्यत्वां नयिष्यामि (त्र) ११.४४ | वित शाठ्यं न कुर्वीत (उ) १७४.६६ | विदिक्षुदिक्षु सर्वासु (उ) १२०.७१ | विद्यां जालंधरीचाग (पा) ६६.१४ |
| विच्छिन्नापिततः पूजा (पा) १०८.७६ | विज्ञायक्षणाक नित्यं (उ) २०८.७ | वित शाठ्यं नरहितः (सु) ६.१७५ | विदिक्वातदभिप्रायं (सु) ३८.१२३ | विद्यांमानाप्मानाभ्याना-(पा) ६६.६७ |
| विजयं देवतानां तु (भू) ५.३६ | विज्ञाय ब्रह्मणोभारं (सु) १४.१२० | वित शाठ्यं न रहितः-(सु) २६.५० | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्यागुरुव्रतदेवम् (स्व) ५३.२७ |
| विजयं नागस्कोपिन (क्रि) २.५५ | विज्ञयाद्विगुणाः सर्वं (क्रि) २.२१ | वित शाठ्यं न रहितो (सु) २४.१७ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्याचारधनोपेतं (पा) ६७.३ |
| विजयस्तस्यतः शाप (उ) ११०.१२ | विटंकासंगमे पुण्या (भू) ६२.३४ | वित शाठ्येनवचोमतापूयं (क्रि) २३.११२ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्यादसारनिःसारकदली(भू) ६६.६३ |
| विजहायं महारूपः (सु) ३४.१४६ | विण्मूत्रभक्षणं च (भू) ६६.१०७ | वित शाठ्येन विनादानं (पा) ६७.४ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्यादानं दानवरं (त्र) २४.३५ |
| विजयायाश्चमाहात्म्यं (उ) ४४.३६ | विण्मूत्ररक्तपूर्णं (उ) १८७.५४ | वित शाठ्येन विनादानं (पा) ६७.४ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्यादानं द्विजश्रेष्ठयः (क्रि) २०.१४५ |
| विजयासामाख्या (उ) ३८.७ | विण्मूत्रहृत्कृतांगं (भू) ६६.५६ | वित शाठ्येन विनादानं (पा) ६७.४ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्यादानात्कोटि गुणं (उ) ११८.१३ |
| विजये सखि जानामि (उ) २०१.६० | विण्मूत्ररेतः सामं व्येते (स्व) ३३.२५ | वित शाठ्येन विनादानं (पा) ६७.४ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्याधराञ्जलधरांस्तनयं-(पा) ६५.२७ |
| विजयातिनरस्तत्रप्राक्तं (उ) १२६.६३ | विण्मूत्रचतुर्गतराणम् (त्र) २२.३२ | वित शाठ्येन विनादानं (पा) ६७.४ | विदिक्वा दुष्करं कर्म (सु) ३२.११४ | विद्याधराभूत संघावेनाल (सु) ५.२५ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| विद्याधरी सहस्रेण (पा) | १५.५१ | विद्युत्प्रभालोचन (पा) | १०७.६१ | विधाय रेखां यत्नेन न (सु) | ७.१०२ | विधिहीना विप्रनैवेद्यं (क्रि) | ११.१६२ | विनष्ट तेज संष्ट्वा (उ) | २४२.१६५ |
| विद्याधरी मुप्रसन्ना (सु) | २०.१४६ | विद्युन्मालिसुतायां तु (पा) | ६.२० | विद्यास्यामिततो गर्भं (सु) | ७.३४ | विधूत पाप्मा भवति (स्व) | ३६.६४ | विनष्टमभवत्पापं (क्रि) | ६.३३ |
| विद्याधरोतिः विख्यातः (भू) | १२२.१२ | विद्युन्मालीतिविद्यातो (पा) | ३४.४ | विधिमाधवमासस्य (पा) | १००.१३ | विधूतानि च सर्वाणि (उ) | १५१.३५ | विष्टाशेषपापस्य (सु) | २०.३५ |
| विद्याधरापितच्छो (क्रि) | ६.११३ | विद्युन्माली हतो दैत्यः (पा) | ६५.७० | विधिसराज पिततश्च (पा) | ६५.१५० | विधूयपापानिमहेशलोकं (पा) | ६६.११८ | विनाश्रुक्षेपिकर्तव्या (ब्र) | १३.६१ |
| विद्याबलंततोदद्यस्तस्यैताः (भू) | ३४.४० | विद्युन्माली हतो येन (पा) | ५०.३६ | विधिजोविधिना विप्र (क्रि) | ११.१६३ | विधूय मोहकलिलं (स्व) | ५४.२७ | विनाकिमन्यच्छरणं (उ) | २२४.३ |
| विद्याभिस्तु महापुणं (भू) | १०६.४३ | विद्रुमच्छविसत्कांति (पा) | ३५.६२ | विधिना गच्छतानुणां (पा) | १६.२३ | विधूतः पुष्पदंत (उ) | १२.१६ | विनागोविदसोम्याम् (स्व) | ६१.८३ |
| विद्यामानमंतरिक्षं (सु) | १८.५३ | विद्रुमाः शतसाहस्राय (पा) | २६.८ | विधिना जातकं कर्म- (उ) | २४५.६८ | विधूय सोदकं त्वम् (सु) | ६.११० | विनागिननाद्विजे ने (सु) | १४.८५ |
| विद्यामेकां प्रदास्यामः (भू) | ३४.३६ | विद्रुमोप्यधरस्यास्य (सु) | १६.१८२ | विधिना जेतनो विन्द (क्रि) | २२.१२४ | विधेत्वमत्ररचय प्रयागं (उ) | २००.६ | विना जागरणं वन (क्रि) | २२.१४६ |
| विद्यायवारि विप्रेन्द्रः (उ) | १८.७३ | विद्रुमवेद्भूतत्वेन (उ) | १७६.४६ | विधिना तेनयोपिप्र (ब्र) | ४.४० | विधेस्य भूपादनुजम् (उ) | १६६.३६ | विना ज्ञाने प्रयागे- (उ) | १२६.२६३ |
| विद्यार्थीलभते विद्यां (क्रि) | १८.४७ | विद्वासस्तत्रभूयिष्ठा (पा) | ६६.३३ | विधिना पावनस्यैते (पा) | १०१.२८ | विध्वस्तकंभमांडं (उ) | २४५.८२ | विना ज्ञाने प्रयोगे- (उ) | १२६.२७४ |
| विद्यार्थीलभते विद्यां (उ) | ३५.३ | विधवा शुक्ल वस्त्रं (सु) | २२.६६ | विधिना प्रददौ तस्मै (उ) | २४१.१७ | विध्वस्तः सचपापिण्डो (सु) | ३८.१२ | विना तथा पुराणं हि (उ) | २२.४६ |
| विद्यार्थीलभते विद्यां (उ) | २५५.१२२ | विधवासंगमगन्नाश्च (क्रि) | २६.१८ | विधिना वेद इष्टेन (भू) | २७.२६ | विनतानंदनं इष्ट्वा (उ) | १४.५ | विनातीर्थे विनादाने (स्व) | ३१.१२६ |
| विद्यावंतयशस्वंतं (उ) | ४१.६ | विधातु मायाशत (क्रि) | ५.१५४ | विधि शृङ्गाण्ड दानस्य (सु) | ३४.३८५ | विनतानंदनं इष्ट्वा (उ) | १४.५ | विनातेन त्विदं सर्वं (सु) | ५.३२ |
| विद्याविशेषान्सावित्रीम् (स्व) | ५८.३६ | विधातं तस्य च फलतं (उ) | १२४.२८ | विधि मेनं द्विजोभूमी (पा) | १०३.११ | विनया वनतं वाक्यमिदं (क्रि) | २३.३५ | विनातोयेनानां (क्रि) | २०.१६ |
| विद्याशक्तिः समस्तानां (पा) | १०८.२५ | विधानं ब्रूहि मे ब्रह्मन् (उ) | ३४.५८ | विधि वत्सूजयामास (उ) | २४२.१७६ | विनया वनतः सर्वं (उ) | ५५.१७ | विनात्वयानयस्यामि (सु) | ३४.४६ |
| विद्याश्चतुर्दशैव ता (भू) | ४६.३० | विधानं सर्वं शैलानां (सु) | २१.१२० | विधिवद्विदेवास्यास्यसौर (उ) | २०७.७ | विनयेनानतो सर्वेषु (उ) | ५३.२४ | विनादानेन तपसा (उ) | ७१.८३ |
| विद्यासु मध्ये च यथा (भू) | १०२.३६ | विधानमस्यावक्ष्यामि (उ) | ३१.३४ | विधिवस्तु श्रूयतां (उ) | ४४.२६ | विनयो रत्न मुकुट (पा) | १६.३७ | विनान्तेन नातिष्ठति (क्रि) | २०.१४ |
| विद्याहीनो द्विजोमोहाद् (ब्र) | १६.६ | विधानमासां वक्ष्यामि (सु) | २१.२१५ | विधिहीनं तुषः कुप्यात् (उ) | ६१.१४ | विनस्वर फलं जन्म (उ) | १८३.६ | विना पुण्यैः कथं नारी (भू) | ३.५१ |
| विद्युतो विलसत्यत्र (पा) | ३४.५५ | विधानमेतद्वेदनां (सु) | २१.६५ | विधिहीनं प्रकुर्वति (भू) | ५०.३७ | | | विनाभृतकपुत्राभ्यां (उ) | ११२.२८ |
| विद्युत्त्वान्नवतः श्री- (सु) | ४५.१६६ | विधायकं पुराणं (पा) | ११४.४८७ | | | | | | |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३८२

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| विनायकः प्रहारार्त्तो (उ) | १२.४२ | विनिविण्णास्तमासाद्य (सृ) | ४३.७ | विपंचीनादयन्वाद्यं (पा) | ११४.१६१ | विपुलाभोग कैयूर (सु) | ४०.२३ | विप्रपादोदकयस्तु (क्रि) | २१.२२ |
| विनायकः स्वदंतेन (उ) | २५०.२८ | विनिवेश्यासनेतो (सु) | ३८.३८ | विपंचीनालयस्थित्वं (पा) | १०६.६५ | विपुलास्त्वं जायते (भू) | ४०.१३ | विप्रपादोदकस्यापि (क्रि) | २२.२ |
| विनायस्तुलसीं कुपति (उ) | २३.३७ | विनिश्चयंतीनागी व (सु) | १८.३७२ | विपंचीपरिवादिन्यात् (उ) | १२४.१२४ | विपुले चंपकेमातर्भेदे (सु) | १८.३८१ | विप्रपादोदकस्याहम् (त्र) | १४.१४ |
| विनाराज्येन कर्तव्यम् (स्व) | ४०.२० | विनिष्क्रम्यपुरातस्मात् (उ) | २४६.६० | विपत्तिः परिभेदोवान् (सु) | ३५.६० | विपुले विपुलं नाम (उ) | १३३.१६ | विप्रपादोदकेतस्मिन् (क्रि) | २१.४२ |
| विना वल्लिं विना यज्ञं (उ) | १२५.६३ | विनीतवेपाः प्रणता (सु) | १५.१०० | विपत्त्यां नियमोनास्ति (क्रि) | ११.५४ | विपुले विपुला नाम (सु) | १७.१६४ | विप्रपादोदकेनित्यं (क्रि) | २१.२४ |
| विना विघ्नं नरः पुत्र (भू) | ८७.३५ | विनेदुःपुष्प वर्षाणि (उ) | २४५.३८५ | विपत्त्यां न हस्तेन (क्रि) | ६.१४८ | विप्रचितिः प्रघातोभूदेपां (सु) | ६.४६ | विप्रप्रदक्षिणीकृत्ये (क्रि) | २१.३० |
| विनाविष्णोः प्रसादेन (भू) | १७.५८ | विनेदुःपुष्प वर्षाणि (उ) | २४८.४ | विपन्नोज्ञानवाग् यस्या (उ) | २१२.४६ | विप्रचितिः सहिकार्यां (सु) | ६.५८ | विप्रभवितरतायेच (त्र) | १.२३ |
| विनाविष्णोः प्रसादेन (पा) | ८६.६६ | विनेदुः सर्वं तेगांसि (सु) | १४.१०५ | विपरीततथ्यलोक पश्य (सु) | १३.३२८ | विप्रचितिस्तुतः श्वेत (सु) | ४१.१८८ | विप्रभोजनमात्रेण (पा) | ८०.४० |
| विनावैभगवत्प्रोत्था (उ) | २३५.७ | विन्दति साधका (उ) | १२६.२८४ | विपर्यस्यति ये दारा (भू) | ६६.६ | विप्रचितेः सुतश्चाहं (भू) | १०३.८ | विप्रप्रवेशं गरां भूत्वा (उ) | १६२.५५ |
| विनाशनाशिमिच्छे (सु) | १६.१३० | विन्दानुविदस्य सुतां (उ) | २४६.३ | विपाकः कर्मणस्तस्य (भू) | १२६.१७० | विप्रचितेः सुतो हुंडो (भू) | १०३.३ | विप्रयोगोन्नापीष्टैर- (सु) | ३४.६१ |
| विनाशहेतुः कपस्थि (भू) | ६४.१० | विध्यपादतस्त्वनम्य- (उ) | १२५.६४ | विपाकज्ञाश्वयेविप्रते- (पा) | ६६.१३१ | विप्रराष्ट्रसुतेजस्ते (सु) | ४७.३५ | विप्रयोगोन्नाहाभागा (पा) | १०५.१७ |
| विनाशाय प्रयास्याभिकं (उ) | २४५.२६५ | विध्य पादे महाक्षेत्रे (उ) | १२६.४३ | विपाको हि महाभाग (भू) | ८८.१४ | विप्रतेजोमहेन्द्रं (भू) | ३.३० | विप्रलापः प्रियायकतेः (पा) | १०५.११ |
| विनाशं दर्शं नेनापिनवर- (क्रि) | ५.१२५ | विध्यश्च पारियात्रश्च (स्व) | ६.८ | विपासुकाराजमार्गा- (पा) | ३.४ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (भू) | १८.२ | विप्रयादीजितक्रोधः (क्रि) | १६.७ |
| विनिदमाना पितर (सु) | ५.५४ | विन्यसेत्पञ्चभैशागे (सु) | २२.८० | विपाध्मावैवैतैजस्वी (सु) | १६.२६१ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रविप्रत्समुत्प्लव्य (पा) | ११४.४१६ |
| विनिदध धर्मं सकलं सवेदं (भू) | ३७.६१ | विन्यस्तस्तंभकोटिस्तु (सु) | १५.११ | विपाशायामविपापच (उ) | १३३.१५ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रसन्नाः प्रिगोती (उ) | २१०.४ |
| विनिदध धर्मं मुदायुक्तो (उ) | ३७.१० | विन्यस्तांकुंकुं (पा) | ७२.८४ | विपाशायामुगोधाक्षी (सु) | १७.१६३ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रसाधारण प्रभ (उ) | १०६.१७७ |
| विनियोगादमी युक्ता- (व) | १७७.५६ | विन्यस्तस्मात्कुंकुं (पा) | ७२.८४ | विपुलं च धनं तद्वलो- (भू) | १७.३३ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रसन्नाः प्रिगोती (उ) | २१०.४ |
| विनिर्दह्यतितत्सर्वभेक- (स्व) | ३१.२०६ | विन्यस्तस्मात्कुंकुं (पा) | ७२.८४ | विपुलं च धनं तद्वलो- (पा) | ८६.४४ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रसन्नाः प्रिगोती (उ) | २१०.४ |
| विनिर्ययतुरात्मशौ (उ) | २४६.४७ | विन्यस्तस्मात्कुंकुं (पा) | ७२.८४ | विपुला जायते लक्ष्मीर्धन (भू) | ४०.१८ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रसन्नाः प्रिगोती (उ) | २१०.४ |
| विनिर्ययुः स्वाकृतिभि- (सु) | ३१.६६ | विन्यस्तस्मात्कुंकुं (पा) | ७२.८४ | विपुला जायते लक्ष्मीर्धन (भू) | ६०.३२ | विप्रत्वं हि मया प्राप्तं (पा) | ६०.२ | विप्रसन्नाः प्रिगोती (उ) | २१०.४ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------|--------|
| विप्रस्य शिवभक्तस्य (उ) | २२२.४३ | विप्रायविष्णुभक्ताय (उ) | १२०.४४ | विभज्यदत्तपित्राय (उ) | १८१.३२ | विभ्रष्टावगद्गतास्ते (भू) | ७५.३१ | विमानवरं सन्धान- (उ) | १०६.२० |
| विप्रस्योपवनात्पूर्वं (उ) | १२६.१६६ | विप्रा विसृजिताः सर्वे (उ) | ७७.१४ | विभज्य सकलं राज्यं (क्रि) | ३.३५ | विभ्राजानामये चान्ये- (सृ) | ६.३२ | विमानवरमाहृष्ट्य (पा) | ६७.५१ |
| विप्रस्योपस्करीयुक्तां (सृ) | २३.१२४ | विप्राः सुद्रसमाचारा (सृ) | ३६.४१ | विभागलीलः सततम् (स्व) | ५४.२४ | विमनि वायुप्रेज्वजना- (सृ) | ४४.११६ | विमानवरमाहृष्टाः (पा) | १०२.२६ |
| विप्राणांनेतरेपूज्यारज (उ) | २५५.२० | विप्राः शृणुन भद्रवः (उ) | १६८.८८ | विभागायांतुल्यव्यमुदिते (उ) | २५.२६ | विमल योग विनिगित (सृ) | ४४.११३ | विमानवरमाहृष्टास्ते (पा) | २.४० |
| विप्राणांनैवकार्यं (उ) | २२५.१८ | विप्राः सुवहवो ह्रीपाः (स्व) | ८.३ | विभातिरुद्रैः सहितो (स्व) | ३५.३१ | विमलस्तद्विजंशार्द्र (उ) | २०८.१ | विमावरमाहृष्टा (उ) | ३०.८३ |
| विप्राणां पादनिमित्तं (क्रि) | २१.२६ | विप्रास्ते वैष्णवी (पा) | ८४.७० | विभाति सर्वतस्तत्र (उ) | ११.३६ | विमलस्य सुत प्राप्ति (उ) | २०८.६६ | विमानवरमारोप्यगीत (पा) | १११.३५ |
| विप्राणां वेद विदुषां (उ) | २५५.५६ | विप्रेन्द्रत्वं शृणुष्वेह (भू) | ३६.३५ | विभाविरमहेत्कार्यं (सृ) | ४३.५५ | विमलस्या सुत प्राप्ति (उ) | २०८.६६ | विमानवरमाहृष्टाः (उ) | ३०.८२ |
| विप्राणामनुकपापाधं (स्व) | २७.४४ | विप्रेभ्योदक्षिणां दत्त्वा (उ) | १३४.१५ | विभिन्नदत्तनेता (उ) | २४५.१५३ | विमलास्या च दुर्दर्पास- (सृ) | ४५.१७१ | विमानसत्संकीर्णदेव (उ) | १०६.१८ |
| विप्राणामुदध्वं पुंड्रस्था (उ) | २२५.१५ | विप्रेभ्योभोजनं दत्त्वा (पा) | ६१.५ | विभीषणस्तुच्छत्वा (सृ) | ३८.७६ | विमली कृतशोभाद्यो (उ) | १२५.७२ | विमानसंस्थोगणवा (उ) | ३.१५ |
| विप्रादिमत्वां भ्रमृतं (भू) | ७३.६ | विप्रेषु दीनेषु गुणान्वितेषु (भू) | ६८.१३ | विभीषणाद्राक्षसैः (उ) | १६६.२ | विमलोत्कपिणी ज्ञाना- (उ) | २२८.४६ | विमानादवतीर्णाश्च (उ) | ३.२४ |
| विप्राभ्युत्थेरेवात्तिवि (सृ) | ६.१३४ | विप्रेष्वनुवेदविदिभर्त्रि- (सृ) | १७.२३७ | विभीषणेन कथिताराधवा (सृ) | ३८.८६ | विमलोपित दासतात्वा (उ) | २०७.५७ | विमानानियकून्त्य (उ) | १५४.३३ |
| विप्राभ्यः पूजयेन्मित्रं (सृ) | ४६.१०२ | विप्रो गेहं विशम्भुष्टः (भू) | १०४.१८ | विभूषणपिण्डां च (सृ) | ४४.१७७ | विमानंतत्पतवद्यमद्- (पा) | ३०.१६ | विमानानि समारुह्य (उ) | १६५.२५ |
| विप्राभ्यः संप्रीणयंस्तान् (उ) | १६८.८७ | विप्रो भ्यधात्सदस्येकः (सृ) | १७.४२ | विभूषितोद्वेभंक्ति (पा) | ७२.१०० | विमानं तत्समानं च भवे (भू) | ७१.१३ | विमानेकामगेरोदुत्तं (पा) | ११३.१३ |
| विप्राभ्यः संपूजयित्वा तु (सृ) | २१.२६२ | विप्रोभ्य पाद ग्रहण (स्व) | ५२.३४ | विभूष्य भूषकैर्देवपुनः (पा) | ११४.३३६ | विमानं देवलोकात् (पा) | २०.८६ | विमानेन च दिव्येन (उ) | २७.५२ |
| विप्रायदद्याच्छंखं च सपदं (सृ) | २०.७८ | विफलास्ताचपुजास्थान (क्रि) | १३.५३ | विभेदवह्मधाचैवस्वरूपं (सृ) | ३.१७६ | विमानं ससमारुह्य (उ) | २६.२१ | विमानेन विचित्रेण (उ) | २१४.८१ |
| विप्रायदद्यात्संपूज्यं (सृ) | २१.२८२ | विफलो दानवो जात (भू) | १०५.१२ | विभेदो नैव कर्तव्यं (उ) | ३८.१०६ | विमानमग्रतोपश्य (उ) | १७७.१७ | विमानेनागतो योसौ (भू) | ६३.३८ |
| विप्रायदद्याच्चगुण (उ) | ३२.१० | विबुधाः सहिता सर्वेयतः (सृ) | ४.३८ | विभेमितस्य पुत्रोद्यम- (सृ) | ४६.१३ | विमानमघितिष्ठध्वं- (सृ) | १६.३६३ | विमानेनागमस्त्वर्गं (सृ) | ८.७३ |
| विप्राययेप्रयच्छति (उ) | ३०.१३६ | विबोधयन्तंस्वरित- (सृ) | १४.३६ | विभोसतादिशद्रष्टुं (सृ) | ४३.३८७ | विमानमघितिष्ठध्वं- (सृ) | १६.३६३ | विमानेनापि दिव्येन (भू) | ६३.१३ |
| विप्रायवस्त्रं संयुक्तं (सृ) | २०.५४ | विभक्त्यावयवस्पष्टं (भू) | ६६.३७ | विभ्यंतः संपुल्लं दैव्य- (उ) | २३८.६२ | विमानमागतं दिव्यं सर्वं (क्रि) | ३.६३ | विमानेनाकर्णं वर्णं (सृ) | ३४.३५६ |
| विप्रायविधिवद्देयैषां (सृ) | २०.१३८ | विभज्यात्मानमित्युक्त्वा (सृ) | ३.१७४ | विभ्रत्कमंडलुं पूर्णममृत- (सृ) | ४.५७ | विमानमागतं सद्यस्त (क्रि) | ४.७४ | विमानैः कोटि संख्याभि (भू) | ६३.६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

३८४

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|------------------------------|---------|----------------------------|--------|---------------------------|---------|
| विमानै रूपसोऽन्तं (भू) | ८३.७२ | विमुक्तः सत्यमती (उ) | १२६.२८७ | वियेति वायुपथेज्वलना (सु) | ४४.११६ | विराग कारणं तस्य (भू) | ६६.८१ | विरोधं चैवसावित्र्या (सु) | २८.२ |
| विमानैर्गुहमुख्यैश्च (उ) | २२८.१८ | विमुक्ताः सर्वपापेभ्यो (उ) | १२६.३३ | वियोगानल संवधा (भू) | ४१.४७ | विरागं जनयेत्पूर्वं (पा) | १६.१६ | विशीर्णकवचदेहं (पा) | ६२.२७ |
| विमानैर्देवतानां च (भू) | ३२.१६ | विमुक्तजाना वराय्ये (उ) | १६४.१० | विरक्ताविष्णुविद्यासु- (पा) | ६६.५१ | विराजं चैव राजं च (सु) | ४०.६७ | विलंविचंचन्मर्णा (पा) | ११४.१६६ |
| विमुक्तं ब्रह्मतीर्थं (पा) | ६८.७७ | विमुक्तोयाति वैकुण्ठं (क्रि) | ११.७३ | विरक्ताः सर्वं भोगेषु (उ) | २२६.१२३ | विराजमानो देवेश (उ) | ८०.१३४ | विलंबोनात्रकर्तव्यं (उ) | १६४.६१ |
| विमुक्तः पातकैः सर्वैः (क्रि) | ८.२१ | विमुक्तो वैष्णवं (उ) | २४४.६४ | विरक्तितरुष्वेज्जाता (पा) | ११६.२७५ | विराजयन् दिशः सर्वाः (उ) | ६१.३१ | विलम्बमानापितृभिः (सु) | ६.२० |
| विमुक्तः पातकैः सर्वैः (क्रि) | १०.११ | विमुक्तो सर्वपापेभ्यः (क्रि) | ३.७२ | विरजाश्रमवन्मार्गाः- (सु) | ४०.१६१ | विराजायां पद्मनाभः (सु) | ३४.१५७ | विलपतंभृशं रामं (पा) | ८.१६ |
| विमुक्तः पातकैः सर्वैः (क्रि) | २१.४३ | विमुखः प्राद्वक्तस्मात् (उ) | २४६.५१ | विरजापरमव्योम्नो- (उ) | २८.७ | विराजितं किरीटेन (उ) | १३१.२७ | विलपति महाशोक (उ) | २०६.४७ |
| विमुक्तपापबंधश्च (पा) | १०६.११० | विमुखः प्राद्वक्तूर्णं (उ) | २४७.५ | विरज्यसंसृतेहृत्नी- (पा) | ८२.४ | विराजितं महावक्षो (उ) | २२८.३५ | विलप्य बहुधातत्र (क्रि) | ६.४७ |
| विमुक्तपापबंधश्च (पा) | ११०.६८ | विमुक्तानाथिनोर्माति (सु) | ३०.११८ | विरज्येत कृपापात्रं (उ) | २१८.२४ | विराड्भवत् पराधीनः (उ) | ७१.१६७ | विलप्य बहुधासाध्वी (क्रि) | ४.१०० |
| विमुक्तयेस्त्विवदनै- (सु) | १३.३५३ | विमुक्त्येवाभवतिस्थिते (सु) | ३४.१११ | विरडिचसंभ्रातृमुखाः (क्रि) | ४.६५ | विरिञ्चिमहिताजापतैः (सु) | १७.८३ | विलप्यमानैरपिबन्धु (पा) | १०३.७ |
| विमुक्तसुधिरं चाथपदं (सु) | ४३.२५ | विमुक्त्यमानेगगने (सु) | ३०.५३ | विरतोविष्णु विद्यासु (पा) | ६६.५३ | विरिञ्चिस्थानसमासाद्य (सु) | १६.३६७ | विलम्बोर्नैवकर्तव्यो (सु) | ३४.२१८ |
| विमुक्तः सनरः पापान् (उ) | ७३.१० | विमुक्त्यराक्षसं विप्रा (पा) | १०४.१५६ | विरथाः खड्गमादाय (उ) | २४७.३६ | विरिचैरचितातत्र (उ) | २०७.४५ | विलयं याति पापानि (उ) | १०७.१ |
| विमुक्तः सर्वं पापेभ्यो (सु) | १५.१४१ | विमुक्त्याग्निशिखा- (सु) | ४३.२७४ | विरथा भयसंश्रुता (पा) | १०.५८ | विरिचोमे कटि पातु (सु) | ३४.१२४ | विलयं विमुक्तं चैव (स्व) | २०.३ |
| विमुक्तः सर्वपापेभ्यो (उ) | २४३.४६ | विमुक्त्यागमग्राह (उ) | ६६.१२ | विररामतमुक्तं (सु) | ३०.४५ | विरुपश्च गुरुपश्च (भू) | ६४.८६ | विलयं विमुक्तं चैव (स्व) | ५६.२१ |
| विमुक्तः सर्वं संगेभ्यो (सु) | १५.३७७ | विमुक्त्यामानः स हि तेन (भू) | ४४.१० | विरराममहाक्रोधाज्जात्वा (भू) | ३०.६० | विरुपाग्रतुकाभास्ते (सु) | ३.६६ | विललापपतिष्टत्वा (उ) | ६.३२ |
| विमुक्तानारकैर्दुःखैर्याति (उ) | ६१.१६ | विमुक्त्येवंमुनिवरोहेहा (पा) | ७१.१८ | विरराममहातेजाः (भू) | ११८.४१ | विरुपायाति रूपाय (उ) | ६६.१३ | विललापभृशं दुःखान् (पा) | ६६.१४६ |
| निमुक्ताः पूर्वजास्तस्ययां (उ) | ७७.३८ | विमुक्त्येवंमुनिवरोहेहा (पा) | ७१.१८ | विरराममहातेजाः (भू) | ११८.४१ | विरोचन इति प्राहुस्त (सु) | २४.३७ | विललापकुलः शोके (क्रि) | ६.१०० |
| विमुक्ताः सकलैः पापै- (क्रि) | १८.३३ | विमोचयामास शिवो (पा) | १११.४१ | विरराममहातेजाः (भू) | ११८.४१ | विरोचनस्तु दैतेयः (सु) | ४१.३०७ | विलसच्चामवीर्यं दैत- (उ) | १२५.१०६ |
| विमुक्ताः सकलैः पापैर्जल- (क्रि) | २०.६६ | विमोहितं वीर्यं वृणस्त्रितं (उ) | १८.५३ | विरराममहातेजाः (भू) | ११८.४१ | विरोचनस्तु दैतेयः (सु) | ४१.३०७ | विलसच्चामवीर्यं दैत- (उ) | १२५.१०६ |
| विमुक्ताः सकलैः पापैर्जल- (क्रि) | २०.६६ | विमोहितामाययैव (उ) | २४५.५० | विरराममहातेजाः (भू) | ११८.४१ | विरोचनस्तु दैतेयः (सु) | ४१.३०७ | विलसच्चामवीर्यं दैत- (उ) | १२५.१०६ |
| विमुक्ताः सकलैः पापैर्जल- (क्रि) | २०.६५ | वियत्स्थितः कोतुकेन (सु) | १७.४० | विरराममहातेजाः (भू) | ११८.४१ | विरोचनस्तु दैतेयः (सु) | ४१.३०७ | विलसच्चामवीर्यं दैत- (उ) | १२५.१०६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३८५

| | | | | |
|-----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|------------------------------------|----------------------------------|
| विलिख्यं भूमि बहुशश्च-(पा) ६.२७ | विलोपयत्तितान्भूयस्तेवै-(पा) ६६.७६ | विवाहं योजनः कुर्यात् (त्र) २६.२० | विविधाः प्राणिनस्तस्य (भू) ८१.५५ | विन्याधमणिभद्रो (उ) १३.७ |
| विलिप्तपंचयधेषु (पा) ११२.१०१ | विलोभनाभक्तस्य (उ) १८८.४२ | विवाह कर्म ससिद्ध (त्र) ११.५६ | विविधाः प्राणिनां रोगाः (भू) ६४.३० | विन्याधस्कषयो (उ) १२.२४ |
| विलीनसूक्ष्मावयवं (पा) १०५.२०४ | विलोहितायब्रूयात् (सू) ३८.१४१ | विवाहं कारयामास (भू) २०.५२ | विविधा वासनावीर-(पा) ६५.१४३ | विशंकतेप्रभावेन (भू) ३६.५१ |
| विले पायंतु कृष्ण (उ) २३.२२ | विवर्जितोप्यहंनित्यं (सू) ४३.४५६ | विवाहः कियतामस्या ८५.६६ | विविधाव्याधयस्तत्र (भू) ६६.१२५ | विशतुर्मनुष्यलोके (उ) २५०.३४ |
| विलोक्य द्विजश्रेष्ठ (पा) ६.१२ | विवर्णयामिरामस्य (पा) ४६.१२ | विवाहः क्रियतामस्या (पा) ६२.४८ | विविधैः कुसुमोद्दामै (पा) ७४.७६ | विशंत्याममपादेन (उ) ३०.१०८ |
| विलोकयंतस्तन्मार्गं (पा) ४०.३ | विवर्मापिवभीसोऽथ (उ) १७.१० | विवाहमंडपं प्रापपुर (उ) १८५.३७ | विविधैर्वेदिकादिभ्यः (सू) ४३.३६० | विशत्ये कासनेनैव (पा) ६४.४१ |
| विलोकयन्नदश्चे (उ) १४.१४ | विवर्गः पतितस्तत्र-(पा) ७४.५२ | विवाहं विविना चाशु (उ) १२६.२६१ | विवृतं वर्तमानं च (सू) ३.७४ | विश्रमन्तुरागत्यमूलं (उ) १८२.१२ |
| विलोकयपुत्रंमह्यं (पा) १३.६१ | विवशश्चतुस्तलजश्च (भू) ६६.१३५ | विवाहव्रत संबंध (उ) ६४.७ | विवृतास्याल्लनजिह्वा (उ) २०८.१८ | विश्रामतयौमूले (उ) १७८.७ |
| विलोकयमहादेव (पा) ७.२० | विवशास्त्र्यजुर्वेलां-(सू) १५.६४ | विवाह समये प्रान्ते (भू) ८६.१६ | विवृतिः प्रणवस्यार्थं (उ) २२६.३६ | विश्राया चतथापूर्वं-(पा) ७०.६ |
| विलोकयितुमागत्य (पा) ४३.५२ | विवस्वतोमहान्वंशः (पा) ५४.७ | विवाहाकाले सा कन्या (क्रि) ६.६६ | विवेकवल्लरीमूलं (उ) १६२.५ | विशालासुयदाभातुः (सू) ३२.७४ |
| विलोक्य जात कुतुको (पा) ५४.३ | विवस्वतोमहान्वंशो (पा) ५६.११ | विवाहार्थं महाराज (भू) ८५.६७ | विवेकवल्लिना सर्वान् (भू) १२३.११ | विशालं च महाराजः (भू) ७८.६० |
| विलोक्य ताश्च भूपं (पा) २.१६ | विवस्थानयतज्ज्ञात्वा (सू) ८.५७ | विवाहार्थं महाराज (पा) ६२.४६ | विवेकस्त्रिपुल्लोकेषु (क्रि) ५.५१ | विशालं विकचाम्भोजं (उ) १२५.३१ |
| विलोक्य वानं दुष्ट-(उ) १२६.१५४ | विवस्वानथावावृत्ति (उ) ८०.४६ | विवाहितातु साकन्या (उ) २१६.१० | विवेकेन भवेत्क्रिमे (उ) १६६.४३ | विशालकर वधेन (उ) १८.६३ |
| विलोक्य तेषां प्राह (पा) २३.५ | विवस्वानपित्रन्मध्ये (उ) ५.६० | विवाहे चौर्यधदाने (पा) १०४.१०० | विवेशर्तुर्महात्मानो (उ) २४५.३४१ | विशालजघनाश्चरुज (उ) १८६.६ |
| विलोक्य हरहुंकार-(सू) ४३.२४८ | विवस्वान्कन्यापात् (सू) ८.३७ | विवाहोत्सवयज्ञेषु (सू) २१.८२ | विवेशरूपिणो काली (सू) ४०.१३१ | विशालफलदाप्रोक्ता (स्व) २३.२२ |
| विलोक्य हविताः सर्वे (क्रि) १३.८१ | विवस्वान्मवितापूरा (सू) ६.३७ | विवाहो दृश्यते राजन् (भू) ८५.६२ | विवेशसाधुनिलयेरात्री (उ) २१७.११ | विशालफलदोमाधो (उ) १२८.१३८ |
| विलोक्य सकलमूलात् (क्रि) ५.११० | विवाहंस्वजनैः सादृशं (स्व) ५५.४० | विवाह्यनयमांपश्चादेव (उ) ११६.५ | विव्यधुनिशितैर्वाणै (उ) ५.८२ | विशालस्मितरश्मिषष्ठ-(पा) १०५.६ |
| विलोक्यान्नहरं विप्र (उ) १०६.११ | विवादेविजयप्रदने (पा) १०४.६० | विविक्तस्वर्णकवच (पा) ४०.३६ | विन्याध दैत्यं (उ) ७.७७ | विशालां स्वसखीं प्राह (भू) ७७.५३ |
| विलोक्यारण्यकारभ्योऽसौ (पा) ३७.३३ | विवाहंतुप्रधानेन (पा) ६२.४७ | विविध्यपाठश्लोकस्य (पा) १०४.७६ | विन्याधनिशितैर्वाणै (पा) १०६.३६ | विशाला नामतस्याश्च (भू) ७८.११ |
| विलोक्यारण्यहंतांरवं (क्रि) १२.४८ | विवाहं तु विधानेन (भू) ८५.६५ | विविधं मुनिशार्ङ्गदीपं (उ) २५.२४ | विन्याधमालेभूपाल (पा) ४२.३८ | विशालाश्रमशाला (उ) १८५.६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|
| विजालेनापि रूपेण (भू) | ८६.६० | विशोकामेस्तु संपत्त्यै (सु) | २१.३८ | विश्वरूपश्च को देही-(सु) | ४६.२०२ | विश्वामित्रस्य यज्ञे (पा) | ३६.१४ | विश्वेशं प्रथमं तावत् (सु) | ४०.७० |
| विशिष्टाकालान्मंडी (सु) | ८.६५ | विशोकायनमः पादौ (उ) | २१.२७ | विश्वरूपः स्वयं चक्रे (पा) | ८५.४४ | विश्वामित्रदयोर्राजन् (पा) | ८७.५ | विश्वेशं विश्वरूपं च (भू) | ७५.३ |
| विशुद्धिः स्यादंतरस्य (पा) | ७८.८ | विशोकायनमः पादौ (उ) | ४४.४६ | विश्वरूपास्त्रमिताभीम (स्व) | ३.४६ | विश्वामित्रो महातेजा (उ) | २४२.१३० | विश्वेश्वरो विश्वनाथः (उ) | ७१.४४ |
| विशेषकान्तशक्र (सु) | ४३.२०६ | विशोकास्त्रपरिस्फार (सु) | ४४.१७८ | विश्ववेदमयीयस्मात्त्वं (सु) | २१.२६५ | विशवावसुर्महोपालेगंधर्वो (उ) | २२०.२ | विपक्षीरंततोदोग्धा (सु) | ८.२० |
| विशेषतः कलियुगे (पा) | ८०.४६ | विश्रामंत्याः सरस्वत्या (उ) | १८०.७३ | विश्वश्लाघ्यास्ता-(उ) | ७१.२०५ | विश्वावितारं ब्रह्मायनं (सु) | ३६.१५ | विपदगधास्तुये पुं (उ) | २४५.१३२ |
| विशेषपत्रैर्निचितं (सु) | ४०.१४० | विश्रामं रात्रौ तत्रैव (क्रि) | २५.६४ | विश्वस्तं सर्वथाध्वनति (उ) | १६७.१६ | विश्वासः कस्य नो कार्यः (भू) | ८२.२१ | विपदश्छदिरोगीस्यान् (पा) | ४८.४४ |
| विशेषस्तत्र कर्तव्यः (उ) | ४५.३१ | विश्रुनात्रिपुल्लोकेषु (उ) | १३७.१६ | विश्वस्ता सामहाभागा (भू) | ५७.१२ | विश्वासं घातकं यज्ज (क्रि) | १७.१६२ | विपमंतद्वनं राजाशून्यं (सु) | ३७.३ |
| विशेषात्पुष्करेस्नात्वा (सु) | १७.२७२ | विश्वविश्वपतिर्यश्च (सु) | ३६.२४ | विश्वस्तैश्चनगंतव्यं (सु) | ४१.३१७ | विश्वासघातजं चैव (क्रि) | ७.२४ | विपमगत्वं गता भूमिः (भू) | २६.२४ |
| विशेषादपि वंशाखे (पा) | ६५.४७ | विश्वकर्मन्महाबाहो (क्रि) | ६.१६१ | विश्वस्य जन्ममरण (उ) | २२६.१६३ | विश्वासाघातिनो ये च (क्रि) | १६.१०२ | विपमदुर्गिराशां (क्रि) | ८.११० |
| विशेषादिहृदातव्या (पा) | ६६.२४ | विश्वकर्मा च तेनास्त्रं (उ) | ६.३३ | विश्वस्वमातरः सर्वाः (स्व) | ६.३२ | विश्वासघाती क्रूरा (उ) | ३०.४ | विपमयं परमं याताः (पा) | १०५.११३ |
| विशेषान्मधुनामत्ताः-(उ) | १२६.६८ | विश्वकर्माणमाहूय (भू) | ५.१०४ | विश्वासोऽहं प्रति जगज्जान (भू) | ३६.२१ | विश्वासाघातीजातीनां (क्रि) | २३.२० | विपमे काकिनंहं (उ) | ३२.४६ |
| विशेषेण प्रबोधिग्यानि (क्रि) | १५.६ | विश्वकर्माप्रभासस्य (सु) | ६.२८ | विश्वाची सहजग्या च (सु) | ४५.६६ | विश्वासं वचनं नीचः (क्रि) | ६.१०७ | विपमोत्कंठितापश्चात् (पा) | ७४.६५ |
| विशेषेण समभ्यर्च्य (पा) | ८६.३२ | विश्वकर्माहं साक्षात् (उ) | १७४.४६ | विश्वातमाविश्वरूपी (उ) | १७४.४ | विश्वातिनिचविश्रंभः (पा) | ११२.१६ | विषयं भुंजतो जन्म (क्रि) | ६.१५६ |
| विशेषेणसमभ्यर्च्य (पा) | ६०.४६ | विश्वकायौ विश्वभुजौ (सु) | २२.१४८ | विश्वाधिवासं विमलं (भू) | ७३.१५ | विश्वामुमुखास्तस्यागं (सु) | ४.६० | विषयं ज्वरं मुत्सुज्य (पा) | ६६.३७ |
| विशेषेणहरेर्भक्तो नरो (पा) | ६८.१० | विश्वतः पाणिपचक्षु (उ) | २३७.१७ | विश्वांतकवमुर्बालोनि (सु) | ४०.६४ | विश्वासोपहृताश्चेपा (उ) | ७४.२५ | विषयान्कज्जलं कृत्वा (पा) | ८४.८४ |
| विशेषेणार्चयेद्विष्णु (उ) | २५३.१६३ | विश्वतः पाणि पाद (उ) | २२७.५ | विश्वान्देवान्देवमाता (सु) | ४०.६५ | विश्वेदेवाश्चलाश्च (सु) | १८.२२ | विषयान् कज्जलीकृत्य (भू) | ८६.७० |
| विशेषोभाविता देवैः (भू) | १०६.२२ | विश्ववेदावयं राजन् (उ) | ४१.४४ | विश्वामित्रं महारमानं तप (भू) | ५६.१६ | विश्वेदेवान्यवैः पुष्पैः-(सु) | ६.१३६ | विषयामज्जनावनंम् (स्व) | ६१.७४ |
| विशोकं द्वादशो चंवा (सु) | २१.७५ | विश्वप्रकाशितं ज्ञानं (उ) | ७१.२४१ | विश्वामित्रं भरद्वाजो (उ) | १३५.४१ | विश्वेदेवाः शृणुते (पा) | ११७.६४ | विषयाराधनं पुण्यं (सु) | ११.६५ |
| विशोकं सप्तमीं कुपति (सु) | २१.२४३ | विश्वमूर्तियुतेषुदे (सु) | ३१.१३७ | विश्वामित्रः स्थूलशिराः (उ) | ८१.५ | विश्वेदेवाचनं कुपति (पा) | ११७.८६ | विषये दुर्गं संस्थाने (भू) | ६६.३२ |
| विशोकं सप्तमीं तद् (सु) | २१.२१३ | विश्वम्भरस्तीर्थपादः (उ) | ७१.१५६ | विश्वामित्रस्य तत्रैव-(स्व) | २७.२६ | विश्वेदेवा सद्यस्याग्या (सु) | ६.१३८ | विषयेवर्तमानस्य (पा) | ६६.४२ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|------------------------------------|---------|----------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| विषये विमुखो घीरो (भू) | ६१.१५ | विष्ठादासूकरीयोग्या (उ) | १०६.२२ | विष्णु चक्र विहीन (उ) | २२४.३७ | विष्णुनातु समाह्वयग्रहे (सु) | १४.४८ | विष्णुनादोदकोद्भूता (पा) | ८५.५३ |
| विषयेषु विरक्तोस्मि (पा) | ७३.५ | विष्णोर्मातात्मिकातद्वत् (सु) | ८.७५ | विष्णु जागरणे प्राप्ते (उ) | ३७.२२ | विष्णुनानकृतं किञ्चित् (सु) | १७.६ | विष्णुपूजा परं दृष्टवांतं (क्रि) | १३.१५३ |
| विषयेषु न संसक्तिः (उ) | २१६.२६ | विष्णवे पुरुषपाय (उ) | २४५.३१० | विष्णु दत्ता पारिजात (पा) | ११४.२६१ | विष्णुनानिहितं सैन्यं (कू) | ७.१२ | विष्णु पूजापराविप्राः (क्रि) | २६.१४ |
| विषयेष्वेव सर्वेषु न यत्स्वा (भू) | ४६.३२ | विष्णवेष्टृष्वी दत्त्वा (सु) | १८.३६७ | विष्णुदासोपि त्रैव (उ) | १०८.२५ | विष्णुनाप्याचितं शक्रं (सु) | १६.६१ | विष्णुपूजाफलं विप्र (क्रि) | २०.१ |
| विषये विप्रयुक्तानां (उ) | ३४.६ | विष्णवे ब्राह्मणायैव (ब्र) | ६.३ | विष्णुदीक्षा विहीना (उ) | १६८.३० | विष्णुनाम परं जप्त्वा (स्व) | ५०.८ | विष्णुप्रदक्षिणयस्तु (क्रि) | ११.१२३ |
| विषयेश्चापि सर्वेष्व (पा) | ८४.८० | विष्णवे योहिदद्यात् (पा) | ११२.६८ | विष्णुद्वतृगृण्युवतं (क्रि) | ६.१७ | विष्णुनाम प्रधानानां (उ) | ११५.११ | विष्णुप्रसाद निर्मात्य (स्व) | ५०.१६ |
| विषयेश्चापि सर्वेष्व (भू) | ८६.६६ | विष्णवे विष्णुनित्यं (पा) | ६४.१३४ | विष्णुद्वतांस्ततस्तत्तास्तु (क्रि) | ४.७७ | विष्णुनाम्नैव नामानि (पा) | ६७.७१ | विष्णु प्रियं सकल (उ) | ६४.२८ |
| विषलिप्तं स्तनं (उ) | २४५.७३ | विष्णवे सोषणे हंयो (ब्र) | ६.५ | विष्णुद्वतामहात्मानः (क्रि) | १५.४७ | विष्णुनाराधिते नादौ (पा) | ६४.४६ | विष्णु प्रियं सकलकल्मष (उ) | ११६.२८ |
| विषादमृतं ग्राह्यम- (स्व) | २२.८६ | विष्णुं कृष्णं हरिं रामं (भू) | ७५.१ | विष्णुद्वतारये कृत्वा (ब्र) | ३.३२ | विष्णुना सह धर्मात्मा (भू) | १२५.४ | विष्णु प्रीतिं करंतेषां (उ) | १०८.३ |
| विषादाच्च निवृत्तो सो (भू) | ६.३३ | विष्णुं च दक्षिणे कुक्षौ (उ) | २२५.४६ | विष्णुद्वता नयं साध्वि (क्रि) | ४.८० | विष्णुना सह युद्धाय (भू) | १.८ | विष्णु प्रीतिं करो चैषा (पा) | ८५.६ |
| विषुवत्यनेनापि (उ) | १५२.२६ | विष्णुं च शंकरं चैव (सु) | ३४.८६ | विष्णुद्वता सद्मागम्य (पा) | १०१.३ | विष्णुना सह युद्धाय (भू) | १५.२७४ | विष्णु प्रीतिं करो सा (भू) | ११६.१४ |
| विषुवत्सारवं क्रूरत्वं (सु) | ३१.३२ | विष्णुं तमपि जानीयात् (पा) | ७६.५८ | विष्णुद्वता देहोद्भवादेवि (उ) | ६६.३७ | विष्णुना सह युद्धाय (भू) | १४.८ | विष्णु वाहु कृतोच्छ्वाय (उ) | १२२.३१ |
| विष्कम्भपर्वताङ्कुयति (सु) | २१.१६६ | विष्णुं निदिदि वेदा (उ) | १२६.५८ | विष्णुद्वता च्चिरं (उ) | १२६.४८ | विष्णुनैवेद्यमाहात्म्यं (क्रि) | १६.४८ | विष्णु भक्त इति ह्यातो (उ) | २.१७ |
| विष्कम्भपर्वतांस्तद्वत् (सु) | ३१.१६४ | विष्णुं निदिदितोऽत्यर्थं (उ) | १२६.५ | विष्णुद्वता च्चिरं (भू) | ८६.३४ | विष्णुपादोदकं पापीयः (ब्र) | १७.४ | विष्णु भक्तः सत्यसंधो (उ) | ६०.६ |
| विष्कम्भपर्वतांस्तद्वत् (सु) | २१.१८६ | विष्णुं भवोदधेः पोतं (ब्र) | ८.१६ | विष्णुद्वता च्चिरं (भू) | ८३.२६ | विष्णु पादोदकं ब्रह्मन् (ब्र) | १७.३ | विष्णु भक्तस्य येदासा (स्व) | ३१.१०६ |
| विष्कम्भ पर्वतांस्तद्वत्- (सु) | २१.१३७ | विष्णुं विजेत् दुद्राव (उ) | ७.७१ | विष्णुद्वता च्चिरं (पा) | १७.२३ | विष्णु पादोदकं विप्रयः (क्रि) | ११.१४६ | विष्णु भक्ताय विप्राय (उ) | ६५.१७ |
| विष्कम्भ शलांस्तद्वच्च (सु) | २१.१४७ | विष्णुं समर्चयामास (ब्र) | ८.१३ | विष्णुद्वता च्चिरं (भू) | १७.२३ | विष्णु पादोदकं शुद्धं (क्रि) | ११.१४८ | विष्णु भक्तास्तथादे- (उ) | १३२.४६ |
| विष्टरं सह पाथेन (सु) | २.७५ | विष्णुं समर्चयामासुः (उ) | २३१.३१ | विष्णुद्वता च्चिरं (भू) | १७.२३ | विष्णु पादोदकं स्पृष्ट्वा (क्रि) | ११.१५३ | विष्णु भक्तिं च रक्षति (उ) | १२१.३१ |
| विष्टर्जयंतो विजयः (सु) | ३७.६३ | विष्णुं समाराध्य चिरं (क्रि) | १३.१६५ | विष्णुद्वता च्चिरं (भू) | २०.३ | विष्णु पादोदकं स्पर्शान् (क्रि) | ११.१५५ | विष्णु भक्तिं न जानासि (उ) | १०८.१५ |
| विष्टात्वं जामते श्रीघ्नं (भू) | ५३.८८ | विष्णुं स्मृत्वा ततः (उ) | ६३.३ | विष्णुद्वता च्चिरं (भू) | २०.३ | विष्णु पादोदकं स्पर्शान् (क्रि) | ११.१५५ | विष्णु भक्तिः कृतायेन (उ) | ११२.४७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३८८

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|----------------------------|--------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| विष्णुभक्तितनुत्राणं (उ) | १२६.१३५ | विष्णुरातः स्थापित- (उ) | १६३.७२ | विष्णुलोकात्स्वकृत्येन (सु) | १५.२१ | विष्णुसुपाहिसागंगा (स्व) | ६१.७० | विष्णोरं शांशभागे (उ) | २४१.१२ |
| विष्णुभक्ति परानित्यम् (ब्र) | ४.४३ | विष्णुराराध्यते (पा) | ८४.४७ | विष्णुलोकायमोक्षाय- (स्व) | २३.२३ | विष्णुसर्वेश्वरः साक्षी (पा) | १०.६३ | विष्णोरयंयतः प्रोवतो (उ) | ८२.२ |
| विष्णुभक्ति विना नृणां (स्व) | ३१.१०५ | विष्णुरावरणतस्या (पा) | ११४.३४ | विष्णुलोकायमोक्षाय (उ) | १२८.१३६ | विष्णुसान्निध्यदं चैव (ब्र) | २५.२ | विष्णोरर्थं विवेचयामि (उ) | ८४.६ |
| विष्णुभक्तिमतावीरयत (पा) | ८७.२४ | विष्णुस्वप्नपर्यंतो (सु) | १५.१५६ | विष्णुलोके च स विप्रः (ब्र) | ६८ | विष्णुस्तस्य प्रसन्नात्मा (भू) | ६३.४ | विष्णो राज्ञामनुप्राप्य (उ) | ६३.१६ |
| विष्णुभक्तिमयं वीरयत् (पा) | ६२.२४ | विष्णुरूपतदाज्ञात्वा (सु) | ३.२६ | विष्णुलोकेवसेन्मर्त्यो (भू) | ४०.१६ | विष्णुस्तस्यजतिनाद्यापि (उ) | १८.१३८ | विष्णोरेकैकनामैव (उ) | २५४.२७ |
| विष्णुभक्ति रतः शांत (उ) | ४६.१५ | विष्णुरूपधराः सर्वे (भू) | ३.६८ | विष्णुलोकैकसोपानं (उ) | ७१.२६५ | विष्णोनुचरत्संहिमो- (उ) | १०२.२८ | विष्णोर्जिष्णोः सहिष्णो (सु) | ४१.४७ |
| विष्णुभक्ति विना तस्या (क्रि) | ६.१५६ | विष्णुरूपस्तरुः सोत्र (सु) | १८.१८८ | विष्णुव्रतकरः शशवद् (उ) | १०६.४ | विष्णोनुचरत्संहिमो- (उ) | २२६.५६ | विष्णोर्यथावतारेषु (उ) | २१२.२६ |
| विष्णुभक्ति विनीत (उ) | २५५.११६ | विष्णुरूपोयतो विप्रो (उ) | २६.२० | विष्णुव्रतकरानित्यं (उ) | ६४.२६ | विष्णोपदानमेषात (सु) | ३०.१६८ | विष्णोर्दिवसमाहात्म्यं (क्रि) | २३.१७५ |
| विष्णुभक्ति विहीनाये (पा) | ६६.५० | विष्णुरेष महाप्राज्ञो (भू) | ५२.३४ | विष्णुव्याप्तमिदं सर्वं (सु) | ३०.७४ | विष्णोपदानुषंगेण (सु) | ३१.८ | विष्णोर्देवस्य माहात्म्यं (क्रि) | २४.२ |
| विष्णुभक्तेन पुण्येन (भू) | ७५.३४ | विष्णुरेवंतदा प्राह (उ) | ६२.२१ | विष्णुशर्मन्ततमिध्या (उ) | २०१.१७ | विष्णोः पदेहिपरमे पदे (उ) | २२७.७१ | विष्णोर्ध्वनि प्रभावं (भू) | ७४.६ |
| विष्णुभक्तोप्यसौ मूढा (ब्र) | ३.२४ | विष्णुर्गदां च खड्गं (उ) | ६८.१७ | विष्णुशर्मन्निदं (उ) | २०१.८२ | विष्णोः पाद प्रसूतासि (सु) | २०.१४६ | विष्णोर्ध्वनिस्तथमस्मि (भू) | १६.१० |
| विष्णुभक्तोविशेषेण (उ) | ७८.३२ | विष्णुर्गदां च खड्गं (उ) | १०३.१ | विष्णुशर्मन्निदं वाक्य (उ) | २०४.११० | विष्णोः पूजाकृतातेन (उ) | ६८.१५ | विष्णोर्नामभयं तीर्थं (उ) | १३३.३२ |
| विष्णुभक्त्या च नारीमि (भू) | ७४.२६ | विष्णुर्जलिधरंगत्वा (उ) | १०३.१ | विष्णुशर्मन्निदं वाक्य (उ) | २०४.१२ | विष्णोः प्रभावादुदुष्टा- (उ) | २३८.५८ | विष्णोर्नाम शतस्यापि (भू) | ८७.७ |
| विष्णुर्वीरानामधिपं (सु) | ७७.७ | विष्णुर्देहंरहस्येव (ब्र) | १५.११ | विष्णुशर्मन् शृणु (उ) | २०५.११ | विष्णोः प्रभावान्नृपते (उ) | ४३.४४ | विष्णोर्नाम शतस्यापि (भू) | ८७.८ |
| विष्णुमाया महाभागा (पू) | ११८.१८ | विष्णुर्देवस्यवाराणो (उ) | ६८.१५ | विष्णुशर्मन् स्ततो (उ) | २०४.१ | विष्णोः प्रसादान्नृपते (भू) | ७५.१६ | विष्णोर्नाम सहस्रं (उ) | १.१६ |
| विष्णुमुखास्तुवैदे (उ) | १२०.४२ | विष्णुर्देवस्यवाराणो (उ) | ६८.१५ | विष्णुशर्मन् स्ततो (उ) | २०४.१ | विष्णोः प्रसादान्नृपते (भू) | ५.११० | विष्णोर्नाम सहस्राणां (क्रि) | १५.६० |
| विष्णुमुद्रिष्यविप्राय न (भू) | ६७.४३ | विष्णुर्देवस्यवाराणो (उ) | ६८.१५ | विष्णुशर्मन् स्ततो (उ) | २०४.१ | विष्णोः प्रसादान्नृपते (भू) | ५.११० | विष्णोर्नाम सहस्राणां (क्रि) | १५.६० |
| विष्णुमुद्रांकितान् (उ) | ११३.८ | विष्णुर्देवस्यवाराणो (उ) | ६८.१५ | विष्णुशर्मन् स्ततो (उ) | २०४.१ | विष्णोः प्रसादान्नृपते (भू) | ५.११० | विष्णोर्नाम सहस्राणां (क्रि) | १५.६० |
| विष्णुमूर्त्तजनोमोहाद् (क्रि) | १२.५५ | विष्णुर्देवस्यवाराणो (उ) | ६८.१५ | विष्णुशर्मन् स्ततो (उ) | २०४.१ | विष्णोः प्रसादान्नृपते (भू) | ५.११० | विष्णोर्नाम सहस्राणां (क्रि) | १५.६० |
| विष्णुरपितच्छ्रुत्वा (उ) | २५१.१० | विष्णुर्देवस्यवाराणो (उ) | ६८.१५ | विष्णुशर्मन् स्ततो (उ) | २०४.१ | विष्णोः प्रसादान्नृपते (भू) | ५.११० | विष्णोर्नाम सहस्राणां (क्रि) | १५.६० |

श्रीपद्ममहापुराणम् : पञ्चोक्तानुक्रमण

१८६

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-----------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| विष्णोर्मायायैश्चाय (व) | २.१८ | विष्णोर्मायायैश्चाय (उ) | १३०.१० | विष्णुज्य सर्वकर्माणि (पा) | ८३.८४ | विस्कारितघनुः शब्दं (सु) | १४.४१ | विश्वं सत्कवरो कलाप(पा) | १०३.४८ |
| विष्णोर्बौद्धमायाय (सु) | २६.५५ | विष्णुमानसो भूत्वा (पा) | ८३.७४ | विष्णुज्य सैनिकान् (उ) | १८६.३२ | विस्फुरंतं तदा वनेवलाद(भू) | २८.४० | विहंगमैर्यथाकाशं (उ) | १७.१६ |
| विष्णोर्वैरेण सर्व-(सु) | ८.११ | विष्णुवंशभूतं सकलं (क्रि) | १५.२ | विष्णुज्य वंतदक्षद्वंष्ट्रा (सु) | १४.२१३ | विस्कोटकादयो च (उ) | ७८.६३ | विहंगैरूपमुक्तस्य (स्व) | १४.१८ |
| विष्णोः शिरसिय च (क्रि) | २२.१०१ | विष्णुवालयेद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १३.३८ | विष्णुष्टास्तेन कृष्णेन (उ) | २४५.३८६ | विस्मयं परमं गत्वा-(उ) | २३८.६१ | विहगम्यनयानित्यं (पा) | ८२.७३ |
| विष्णोः शिबस्य वा (उ) | ११५.६ | विष्णुवींशयोविभेदयः (पा) | ३३.३८ | विस्तरं चापि व्याख्यास्ये (भू) | २७.२८ | विस्मयं परमं जग्मुः (सु) | १८.१२८ | विहाय ते रूपमतीव सत्यं (भू) | ५७.५ |
| विष्णोश्चैव प्रसादाच्च (भू) | ३१.१३ | विष्णुवेद्येयेप्रगायति (उ) | ६४.८२ | विस्तराच्छ्रोतुमिच्छामि (सु) | ३.८४ | विस्मयं परमं जग्मुः-(सु) | १६.१७० | विहाय दुःखमकरोद् (उ) | १५.६१ |
| विष्णोश्चैव प्रसादेन (भू) | ८१.१५ | विष्णुकसेनाभिधानं च (सु) | १०.१२१ | विस्तराच्च प्रवक्ष्यामि (भू) | ५.३८ | विस्मयं परमं जग्मुः-(उ) | २४५.८३ | विहाय दोषान्निज काय-(भू) | ७४.५ |
| विष्णोश्चैव महामायां (भू) | १२१.२५ | विस्तरकाले शुक्रस्य (भू) | ६६.२६ | विस्तराच्च प्रवक्ष्यामि (सु) | २३.३ | विस्मयाच्छादमाहात्म्य (सु) | १०.११६ | विहायपितृमात्रादिकृष्ण (पा) | ७२.६८ |
| विष्णोः सत्यप्रतिज्ञस्य (सु) | १६.७८ | विस्तराच्च शिष्यगत्पुत्र- (सु) | २.१०१ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (उ) | २२६.१ | विस्मयाद्ब्रतमाहात्म्य (सु) | २४.२६ | विहायमूर्च्छां संवित्य (उ) | ६.२ |
| विष्णोः सत्यप्रतिज्ञस्य (सु) | ४०.१६४ | विस्तराच्च दानादानगत्पुत्र- (स्व) | २.२२ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (भू) | २८.१ | विस्मयेनापि राजेन्द्रो (भू) | ७७.२६ | विहाय वर्णमेवैतं सुकृतं (भू) | ६२.२१ |
| विष्णोः समीपभाग (उ) | २३५.२१ | विस्तराच्च शिष्यपूर्वादि (पा) | १०४.६५ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (उ) | २२७.१ | विस्मयोः फलनयनाचितं (सु) | ३३.६० | विहाय सत्त्वां भीति (क्रि) | १२.१०५ |
| विष्णोः समीपेष्टस्य (उ) | ४.१३६ | विस्तराच्च शिष्यमासना (उ) | ६६.६० | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (पा) | ७७.१ | विस्मरति च दानानि (भू) | ४०.३६ | विहाय सर्वं पुष्पाणि (उ) | ६१.६० |
| विष्णोः संप्रोतयेविप्रः (उ) | १२८.१६६ | विस्तराच्च सहायार्थं (सु) | ३७.१३१ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (भू) | १०.२ | विस्मरतं नहि शक्नोमि (क्रि) | ६.११२ | विहाय स्थानतद्विष्णु (उ) | ३७.३५ |
| विष्णोः सहस्रनामै (उ) | ७१.३३० | विस्तराच्च सहायार्थं (सु) | ३६.३७ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | १६.२१ | विस्मरणीयं तन्नाथ (उ) | ११२.६ | विहायैतन्महात्मानं (क्रि) | ७.४८ |
| विष्णोः सादं महावैरं (भू) | १०.४६ | विस्तराच्च सहायार्थं (भू) | ५६.३ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | १३.२० | विस्मनावाङ्मुखास्त (उ) | २३८.६० | विहारः स्थानविश्राम (पा) | १५.३६ |
| विष्णोस्तुचितनैर्मास (भू) | ५.७ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (पा) | १५.६ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | १७.३१२ | विस्मनावाङ्मुखास्त (सु) | १६.१८३ | विहारं विविधरासलास्य (पा) | ८३.१०३ |
| विष्णोः स्नानोदकं (उ) | २२५.३६ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | ३८.११८ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | १६.५५ | विस्मृतं तन्मया ज्ञानं (भू) | १२३.३४ | विहारं विविधैरेवं (पा) | ८३.८१ |
| विष्णोस्तुष्टु (उ) | २४२.८२ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (पा) | १०४.७२ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | ३२.१५ | विस्मृतं तन्मया ज्ञानं (सु) | ५.३३ | विहारं विविधैस्तत्र (पा) | ८३.४८ |
| विष्णोर्भक्तिं विना (स्व) | ६१.७३ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | १०.१२० | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | २७.६ | विस्मृतं तन्मया ज्ञानं (उ) | १८.५२ | विहितं कदनं तेषां (पा) | ४१.४ |
| विष्णोर्भक्तिः समुत्पन्ना (उ) | १३४.१३ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | ६.११२ | विस्तराच्च समाख्याहिजन्म (सु) | २७.६ | विस्मृतं तन्मया ज्ञानं (उ) | ८८.४ | विहितं चमयाप्येवंशुक्रं (क्रि) | १५.४४ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|
| विहितं भुज्यते लोके (सू) | १८.२६२ | वीणापणवभेयादिवादि-(ग) | ३.२६ | वीरभद्रं पदं येपिपठत्य (पा) | १०७.८८ | वीरसेन सुस्तदन्वेषध (सु) | ८.१६२ | वृक्षचराजादहं जातायदा(भू) | १०३.१५ |
| विहिताचारहीनेषु (स्व) | ५५.२० | वीणायारणितंश्रुत्वा (पा) | ६६.१३० | वीरभद्रः कठदेशे राक्षसं (पा) | १०७.४८ | वीरसेनेनसुहृदापूर्वजन्म (पा) | ६३.१४ | वृक्षस्य कौतुकाद्भावान्(भू) | १०२.७१ |
| विहितांजलिरेकांते (पा) | ७४.३० | वीणावेणुनिनादश्च-(सु) | १५.२५० | वीरभद्रयशोभद्र (क्रि) | ३.३३ | वीराकर्णयमेवचः सुमधुरं (पा) | १०.११ | वृक्षाणां च यथास्वत्यो (क्रि) | २२.६५ |
| विहिताममसुश्रूषा (उ) | २१०.५४ | वीणावेणुमुदंगानां (सु) | २०.८५ | वीरभद्रश्चशंभुश्च (उ) | ५.५७ | वीरार्गजंतिप्रबलारथाः (पा) | ३२.२१ | वृक्षान्मातृवैरलंकृतवया (सु) | २८.५ |
| विहितोयंमयादेवे (उ) | १६६.२८ | वीणावेणुमुदंगानि (उ) | १५४.५० | वीरभद्रस्ततः कोपान् (उ) | १७.२३ | वीराणां त्वं न जानासि (भू) | ४२.५२ | वृक्षान् वनस्पतीन् (सु) | ३४.३६७ |
| विहीनः पौरुषेणत्वं (सु) | १७.१५७ | वीणाहस्तोगानपरस्त-(पा) | ७५.५० | वीरभद्रस्ततो हृष्ट्वा (पा) | १०७.४० | वीराणां रणमध्येतु (पा) | ४३.४४ | वृक्षावल्लय सत्प्राणि (सु) | १६.६३ |
| विहीनश्चामुरैर्भवि (भू) | ५.२८ | वीतदोषाभविष्यति (उ) | १७३.२ | वीरभद्रस्तथाकोपाज्-(उ) | १७.१७ | वीरान्सहस्रशोहृष्टवा (पा) | ६१.१२ | वृक्षेणहतवान्मूर्च्छि-(पा) | ६१.४६ |
| विहृष्टं नाशयिष्यामि (भू) | ११८.१६ | वीतरागेण पुण्येन प्रेषित (भू) | ८.६२ | वीरभद्रस्तथेत्युक्त्वा (पा) | १०७.४५ | वीरासनकुतोद्देशं (सु) | ४३.३८५ | वृक्षैरतेऽसंज्ञैर्यदभूषितं (सु) | १५.२८ |
| विहृष्टस्यवधार्थाय (भू) | ११८.१६ | वीतरागोपिहियथा (उ) | ६६.१० | वीरभद्रस्तस्ययां-(उ) | १०१.३० | वीराहिषुविजायते-(स्व) | ७.११ | वृक्षैश्चवसुबाहुधा-(सु) | ८.२७ |
| विहृत्यदूरदेशेभ्यो (उ) | १७८.१० | वीतरागोमहाप्राज्ञस्तमु (भू) | ८.३६ | वीरभद्रस्तुविजयनाशं (पा) | १०७.२४ | वीरिष्ठांजनयामासवक्ष- (सु) | ६.१३ | वृत्तं दशगुणैरं रं दं मृतादि (सु) | २.११० |
| वीक्षमाणस्य तस्यापि (भू) | ७७.११ | वीतरागोस्मिभद्रते (भू) | ८.६७ | वीरभद्रस्त्रिभिर्बाणै (उ) | १०१.२७ | वीरैः कोटि भोराकीर्ण (पा) | २६.२३ | वृत्तं कस्तूरिकावेणी (पा) | ७२.६४ |
| वीक्षमाणो महाराज (भू) | ७७.१५ | वीत शोकाश्च पुण्याश्च (भू) | ७४.१७ | वीरभद्रेण चाप्युक्तो (पा) | ११७.२२६ | वीर्यनिर्वापरुहतातोमाता (भू) | १०.११ | वृत्तद्विगुणपीनामं (सु) | ४०.१३५ |
| वीक्षयित्वा गजानस्वान् (उ) | १२२.४१ | वीतिहोत्रसुतश्चापि (सु) | १२.१३७ | वीरभद्रेण निदिष्टः (पा) | १११.३१ | वृकोदरायचित्राय (पा) | ६६.५६ | वृत्तमतःमयादेव (पा) | ११४.१३७ |
| वीक्ष्यचित्रमिदंस्वांते (पा) | ६५.३ | वीतिहोत्राश्च संजाताः(सु) | १२.१३६ | वीरभद्रो गणेशश्च (भू) | १०२.१ | वृकोदरायचित्राय (पा) | ६५.३६ | वृत्तः शदमाभ्यांचत्रहा-(सु) | ४५.४ |
| वीक्ष्यादसंजलेवापि (पा) | ७६.२६ | वीरकंसं ल पुत्रीनिमेषांतं (सु) | ४३.५०१ | वीरभद्रोपितरसवं (पा) | १११.३६ | वृकोपितामगोवह्नि (उ) | ५१.१७ | वृत्तस्य सहसा देवि तदा(उ) | १६८.२१ |
| वीक्ष्यासावचितप्रदेनं (पा) | ११६.११६ | वीर गृप्ताभिधानस्य (पा) | ७२.१२५ | वीरमासाहसंकार्योः (पा) | १०७.१५ | वृक्षं गुरुद्वन्तत्र सुरभी (पा) | ६६.६१ | वृत्तान्तं तस्य वीरस्य (भू) | १.११ |
| वीजयामासवासोद्रेः (पा) | ४.१२ | वीरकेशवरोऽस्त्युग्रो (उ) | ७१.१६१ | वीरविभुमिसंसेव्याना-(पा) | ५६.६ | वृक्षं हि रणमयः छात् (सु) | २०.६६ | वृत्तान्तं सर्वेषां च (उ) | १६४.३८ |
| वीजयामासवासोद्रेः (पा) | ५६.३६ | वीरधन्वेतिगंधर्वः (उ) | ४७.२६ | वीरलोकमवाप्नोति (भू) | ४२.५७ | वृक्षच्छायां समाश्रित्य (भू) | ६१.२२ | वृत्तास्तदमाविश्य-(उ) | २२६.५४ |
| वीजांकुरसमुद्भूतोऽन्य-(सु) | ४.१२२ | वीरधन्वेतिगंधर्वः (उ) | ४७.२६ | वीरलोकेवसेत्तावदेवा(भू) | ४२.५८ | वृक्षच्छायां समाश्रित्य (भू) | ६८.११ | वृत्तिचष्टृपुराजन्द्र (सु) | १५.१६१ |
| वीजितः स्वर्णपयैके (क्रि) | ८.६६ | वीरबाहुस्सुबाहुश्च (सु) | ३८.४१ | वीरवृक्षलतागहनं (म) | ४०.१४५ | वृत्तच्छाये ततस्तास्मिन् (भू) | ७७.२२ | वृत्तिच्छेदं च विप्राणां (भू) | ६०.४४ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|-------------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| वृत्तिच्छेदः सूर्यपुत्र (क्रि.) | ६.२८ | वृषैवस्ष्टया विविना (क्रि.) | १.२६ | वृद्धोपि सद्भिजो राजन् (सु.) | १०.६७ | वृं दावने मनोरम्ये (उ) | २४५.६६ | वृषमस्य तुरीमाणित्त (स्व) | १८.६७ |
| वृत्तिमाहर्तुकामास्मिन् (उ) | १७६.२५ | वृं दांत वरिषाराजो (उ) | १८.७० | वृं दागसर्जन् वे दंम- (उ) | १५.४६ | वृं दावने महारम्ये (उ) | २४५.१६२ | वृषः सज्जीयतां शोध (उ) | १२.४६ |
| वृत्तिमाहर्तुकामास्मिन् (उ) | १७६.२६ | वृद्धं ज्ञात्वा वमन्येत (भू) | २.२२ | वृं दात घोवत् श्रुत्वे- (उ) | १५.२१ | वृं दावने श्वरं रित्यं (पा) | ६६.१०८ | वृषस्तेन प्रहारेण (उ) | १०४.१० |
| वृत्ते देवा सुरे युद्धे दैत्ये (उ) | १५३.२ | वृद्धपितरमुत्सृज्य (सु) | १०.६३ | वृं दानाय वृहत्कायं (भू) | ८७.२२ | वृं दावने श्वरीनाम्ना (पा) | ७७.१७ | वृषस्थितं तु भूतेशं (पा) | ४४.१४ |
| वृत्ते वज्रवधे भोग्य (सु) | ४०.१२२ | वृद्धत्वं नास्ति चैवास्य (भू) | ५३.५२ | वृं दानाम्नीपुरीचेयं (पा) | ७५.३५ | वृं दावने श्वरी राधा तथा (पा) | ७०.१० | वृषस्येमियुत्स्ये (उ) | ५१.१६ |
| वृत्तो गच्छन् पाविश्रीमान् (उ) | २२२.५३ | वृद्धत्वान्मममाभ्योसि- (पा) | ४२.६७ | वृं दापिनारदं दृष्ट्वा (पा) | ८३.१६ | वृं दावरांगनाराजनिभाश्च (उ) | १०.७ | वृषाघिरूपायुषैस्ताश्च (स्व) | ३५.८ |
| वृत्तो मेखरिवाभाति बहु (उ) | २३८.६७ | वृद्धत्वेन तथा देवि शबल (भू) | ८.२८ | वृं दारकाणां सर्वेषां (भू) | १६.२१ | वृं देवयाजनपदो (उ) | ११.२७ | वृषा मनाय सोमाय (सु) | ५.८० |
| वृत्तो ब्रह्मासदस्यैस्तु (सु) | १७.१२६ | वृद्धिजस्य दायदा- (सु) | १०.८६ | वृं दारण्यस्य माहात्म्यं (पा) | ६६.५६ | वृषिचक्रैर्दंष्ट्रिभिर्भूतैः (उ) | ६६.१५ | वृषोत्समाधिकं कर्मये (उ) | १५६.८ |
| वृत्तो भूतगणेशो शोधार्थ- (सु) | ५६.१७ | वृद्धिजोत्समादायं (सु) | १०.११२ | वृं दारण्य रहस्यं (पा) | ७५.१६ | वृषतिल समायुक्तं (क्रि.) | २०.११५ | वृहत्त्रयायेदेव (सु) | ३०.१४५ |
| वृत्तो भूतगणेशं रीभूषित (सु) | १३.३१८ | वृद्धं बालातुरैर्वैद्यैर्जाति- (सु) | १५.३१२ | वृं दारिक्ता नुरागेण (उ) | १४.२५ | वृषविभूषयामासुहंरयानं (सु) | ५३.४१३ | वृहस्पतिरथोद्गाता (सु) | ५.७ |
| वृत्त्यर्थपितरस्तेषां (सु) | ३२.१३४ | वृद्धं ब्राह्मण रूपेण (उ) | २१२.६ | वृं दारिक्ताश्च पूर्णांसीतस्य (उ) | १५.१७ | वृषपञ्चसोमंध्ये (पा) | ११४.११५ | वृहस्पतिस्तत्रनेष्टा (सु) | ३४.१७ |
| वृत्त्यर्थं पृथिवी पालान् (उ) | २०२.१० | वृद्धभावे च जराया (भू) | ६६.२०१ | वृं दावचनमाकर्ण्यं (उ) | १५.३७ | वृषभं चैव कूटमांढं (ब्र) | ५.१४ | वेगवान्केतुमानुग्रः (सु) | १८.६७ |
| वृत्त्युपायेन जीवेत् (सु) | १५.२१६ | वृद्धानां प्रेरणं पूर्वमा- (पा) | १०.६१ | वृं दावनं तत्र गत्वा (पा) | ८०.६२ | वृष मयः प्रयच्छेत्तसंख (स्व) | २१.२३ | वेगात् कृष्णो गिरिगुहां (उ) | २४६.५२ |
| वृत्रेण चकृतः कूपो (उ) | १३४.२ | वृद्धाभिन् पयोदिभिरिचि- (उ) | २४८.६ | वृं दावनं परित्यज्य (पा) | ८२.७८ | वृषभः वज्रगतो देव (उ) | १३.४० | वेगात् चिचिरविच्छेदात् (क्रि.) | ८.६० |
| वृत्रेण निजिजोह्यं (उ) | १५३.८ | वृद्धाय भारभगाय (स्व) | ५१.५५ | वृं दावनं परित्यागो (पा) | ७७.६१ | वृषभानोर्यं ज्ञानो (ब्र) | ७.४१ | वेगादा मत्स्यत्सर्वं (उ) | ११३.२३ |
| वृथा दानादिकं सर्वं (उ) | ३७.३४ | वृद्धिपञ्चपुकार्यं गृहस्य (सु) | १०.२३ | वृं दावनं प्रतीलित्यं (उ) | १६५.११ | वृषभानोर्युताष्टम्या (ब्र) | ७.११ | वेगुलो नाम वैशोय (भू) | ६१.३५ |
| वृथा दुःखादिनिमांसं (उ) | ६४.१०५ | वृद्धिदृष्ट्यापि नांतुणां (क्रि.) | २६.३६ | वृं दावनजो प्राप्तता (उ) | १६३.५३ | वृषभांश्च महीसांश्च (उ) | १२२.३७ | वेगाया ममृता देवी (सु) | १७.२०८ |
| वृथापत्रे वृथाया से (पा) | १०४.११२ | वृद्धे सा एव शतानां रुष्ट्ये- (सु) | १६.१४७ | वृं दावनरजो वृं देतत्र (पा) | ७७.५५ | वृषभेण हताः केचित् (उ) | १०२.११ | वेणुपत्रनिर्वाहामूले (उ) | २६.८ |
| वृथा भवति तत्सर्वम (उ) | ६१.३७ | वृद्धे मातरं हंपार्यो दिन (क्रि.) | ५.६० | वृं दावनरजो वृं देतत्र (पा) | ७७.५५ | वृषभैर्ब्रं समाकृष्ट (उ) | २५०.८५ | वेणुपत्रं श्रुतं विप्रं (पा) | ७३.३६ |
| वृथा शोषयसेकायं वृथा (भू) | ४१.५७ | वृद्धे व्यये ह्येको केन दत्ता (ब्र) | ११.५३ | वृं दावनं पद्मपाणि (सु) | ३४.१४० | वृषभैर्नादितं दिव्यं (सु) | १८.३०७ | वेणुवाद्यातिनिपुणा (पा) | ७२.८३ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|---------------------------------|---------|--------------------------------|--------|--------------------------------|--------|------------------------------|---------|
| वेतसीवेत्रवत्योस्तु (उ) | २८.२० | वेद प्रणीतैश्चसुसूक्त- (भू) | ७४.४ | वेदवेदांगतत्त्वज्ञः (उ) | १८.२८ | वेदागमपुराणेषुशास्त्र (क्रि) | २२.७२ | वेदान वेदा राजेन्द्र (भू) | ३७.४७ |
| वेताला राक्षसा भूताः (भू) | १६.८ | वेद प्रोक्तो यथा धर्मो (भू) | ३७.२२ | वेदवेदांगतत्त्वज्ञो (सु) | ३०.६२ | वेतागमपुराणोक्तं (क्रि) | ४.११ | वेदानांनिन्दनं श्रुत्वा (पा) | ३३.४१ |
| वेत्तिच्छ्रेयुंग वृक्षां (क्रि) | ५.१७७ | वेदमंत्रप्रभूत्साहस- (सु) | ३०.६१ | वेदवेदान्तघोषेश्व (उ) | १६४.४० | वेदांग स्वैदजनित- (उ) | २२७.५६ | वेदानां पतयेतुभ्यं (पा) | ११४.२८१ |
| वेत्ति सीतां सदा शुद्धां (पा) | ६६.३७ | वेदमंत्राः स श्रीजास्तु (उ) | ६३.१७ | वेदवेदान्तघोषेश्व (उ) | १६४.५६ | वेदाचारं परित्यज्य (भू) | ३८.२६ | वेदानां हि सदा चिता | ८२.२५ |
| वेत्र काष्ठादिनिगडैरं (भू) | ६६.१६६ | वेदमूर्तेरमूर्तेश्चवेद- (पा) | १०५.१०८ | वेदवेदौ तथा वेदान् (सु) | १५.२६६ | वेदाचारमयं धर्मं (भू) | २८.२४ | वेदांतकर्ता ब्रह्मं (उ) | ७१.२७५ |
| वेत्र वत्याः सामंतीर्थं (उ) | १३४.२६ | वेदमेवान्धासेन्नित्यम् (स्व) | ५६.७ | वेद वेदो तथा वेदान् (सु) | १६८.३५ | वेदाचार विहीनं तु कस्मात् (भू) | ६८.१६ | वेदांतपारो वेदात्मा (उ) | २५४.३५ |
| वेत्रवत्यास्तुमाहात्म्यं (उ) | १३४.१ | वेदमेवान्धासेन्नित्यम् (स्व) | ५६.२७ | वेद व्यासं महाभागं (पा) | ७३.४ | वेदाचार समोपेतस्तुष्टि (भू) | ३६.११५ | वेदांतवेद्योऽनुजयं (उ) | ७१.१३२ |
| वेदं वेदो तथा वेदान् (स्व) | ५४.१ | वेदयज्ञमयरूप (सु) | ३.३० | वेदव्यास महाभागं (पा) | ७३.५५ | वेदांश्चवेद्यं च विधि (सु) | १५.३८५ | वेदांता निच वेदाश्च (उ) | १६५.१८ |
| वेदज्ञं वेदरूपं तं विद्या- (भू) | ८७.१८ | वेदयज्ञमयपुराणानि- (पा) | १०४.११० | वेदव्यासान्मयापुत्र- (सु) | १.४ | वेदादिर्वेद माता (उ) | १६५.३७ | वेदांतः प्राप्यते ज्ञानं (उ) | १३२.६१ |
| वेदज्ञानां ब्राह्मणानां (उ) | २०८.६३ | वेदवच्चपुत्राणां (पा) | १०४.११० | वेदव्रतोपयोगी च- (सु) | १५.२६७ | वेदादिशास्त्रमखिलं (क्रि) | ५.१५६ | वेदान पठति यो विप्रा- (सु) | १५.१५८ |
| वेदत्रयी परिभ्रष्टां (सु) | १२.६० | वेदववाद्यप्यहंता नाहं (उ) | ७१.४१ | वेदव्रतोपयोगी च- (सु) | १५.२६७ | वेदाधार मिदं सर्वं (उ) | २३०.२४ | वेदामूलं तु धर्मिणि (पा) | ८.१४ |
| वेदध्वनि समाकीर्णं (भू) | २४.४३ | वेदविक्रयकुच्छास्तु (सु) | १६.३५७ | वेदशमणिमाह्वय (भू) | १.२६ | वेदाध्ययनकर्ता च (उ) | १४३.१२ | वेदायज्ञस्तथा मंत्रा (उ) | २७.३१ |
| वेदध्वनिमंवेद्यास्मिन्- (उ) | ११६.१२ | वेदविद् ब्राह्मणायि (उ) | ३७.२३ | वेदशमणिमृच्छते (भू) | १.४५ | वेदाध्ययनं कृतं तेन (उ) | ८४.२३ | वेदायनगुरोर्भ्यं (उ) | २१०.१६ |
| वेदध्वनि समायुक्त (उ) | ११६.२६ | वेदविद्भिविमुह्यै (उ) | २४८.१३ | वेदशर्मा ततः सर्वं (भू) | ६१.३३ | वेदाध्ययनं शूलोहं (उ) | ७०.४१ | वेदायनगुरोस्वामिन (उ) | २१०.४२ |
| वेदध्वनि सुमधुरः श्रूयते (भू) | ३२.७ | वेदविद्याविनिर्देन (पा) | १३.४८ | वेदशर्मा महाप्राज्ञ सर्व- (भू) | १४.६ | वेदाध्ययनं संपन्नं (भू) | ४७.२५ | वेदार्थबन्महाशास्त्रं (उ) | २३६.१८ |
| वेदं निन्दितयेमसाहेतु- (पा) | २३.८० | वेदविद्यामुविदुः (उ) | ८१.१८ | वेदशास्त्रमधीत्यैव (भू) | ३६.४३ | वेदाध्ययनं संपन्नः (भू) | ६१.५२ | वेदाविनिर्दितायंन (क्रि) | ६.१८८ |
| वेदनिन्दाकारये च (क्रि) | १६.१०५ | वेदवेत्ता ज्ञानवेत्ता (भू) | ४७.११ | वेदशास्त्र रतो नित्यं (उ) | ३७.२५ | वेदाध्ययनं हीनोपि (उ) | ८५.२६ | वेदाः शंख हृताः सर्वे (उ) | ६०.२२ |
| वेदनिन्दां देव निदाम् (स्व) | ५५.३६ | वेदवेदांगतत्त्वज्ञः काले (उ) | १८३.३ | वेदशास्त्रा नुरक्तये (व) | १.३१ | वेदाध्ययनरतः श्रीमान् (उ) | १३०.१२ | वेदाश्चैव तथा सर्वे (सु) | ३६.८४ |
| वेदनिन्दा परः श्रीमान् (उ) | १३४.७ | वेदवेदांग तत्त्वज्ञः सर्व- (पा) | १०४.१६ | वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो (उ) | १६८.१३ | वेदाध्ययनरतानित्यं (उ) | १३०.१४ | वेदाः सांगाः पुराणाः (उ) | २४४.७० |
| वेदनिदां प्रकुर्वति (भू) | ६७.४ | वेदवेदांगतत्त्वज्ञ सर्व- (स्व) | ११.४ | वेदसारोयज्ञसारः (उ) | ७१.१७१ | वेदाध्यायं विना लोके (भू) | २८.२५ | वेदाः तांगास्तथा (उ) | ८०.६१ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|---------|----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| वेदेभ्यश्च यद्वृत्त्यसम्पत् (क्रि.) | १.३ | वेपानसमस्तांगः (पा) | ११४.२७६ | वैकुण्ठमविभिन्नांगं (उ) | १२०.६५ | वैदिशां नाम नगरं (उ) | २८.१७ | वैमानिको भविष्यामि (सु) | २२.४४ |
| वेदेभ्यु सर्वं देवानां (उ) | २३०.२५ | वेलायां पतिता सर्वे (भू) | ३०.३३ | वैकुण्ठ वासिनां रूपं (पा) | १८.५ | वैदिक्षे नगरे पुण्ये (उ) | २२.४ | वैयाघ्रं रोरवं चैव (पा) | ११४.३१२ |
| वेदेः पुराणैः सिद्धांते (उ) | ७१.६३ | वेश्मासनवतीरम्याञ्जलं-(सु) | ४५.३६ | वैकुण्ठ वासिनो ये च (उ) | १६६.५ | वैद्यनाथाचार्यतर्तीयं (उ) | १६६.१ | वैयाघ्रपादगोत्राय (उ) | १२४.४४ |
| वेदैरपि च किं विप्रपिता (भू) | ६३.१६ | वेश्याकठेऽस्मिन् बाहु (उ) | ४६.१८ | वैकुण्ठ सर्वमासाद्यविष्णोः (सु) | २६.३ | वैद्यभ्यं नैव युवती (उ) | ३०.५१ | वैरं तयोः कथं भूतं (सु) | १४.२ |
| वेदोदितं यदा कर्म (उ) | २०४.२१ | वेश्याघर्मणावर्तते-(पा) | ६५.१२६ | वैकुण्ठ साधकः पथा (उ) | १४४.५३ | वैद्यभ्ये द्रविणं सर्वं (पा) | ११२.२३ | वैरं सायय मे वस्तु जहि (भू) | २३.३४ |
| वेदोदितवर्तितयसाक्षान्न-(उ) | १२८.२२८ | वेश्यानां गवतीनामविभ्रती (सु) | २०.२२ | वैकुण्ठायनमः कंठमास्यं (सु) | २१.३० | वैद्यतेयस्तुःकुण्डः (उ) | २४६.६७ | वैराग्यसंरागवर्तजानानां (उ) | २२१.३६ |
| वेदोन्मथयाह्मतीयेन-(पा) | ६६.५५ | वेद्यालंरि शूकरी (ब्र) | १८.१२ | वैकुण्ठायनमः कंठमास्यं (उ) | ४५.५१ | वैन्दतेयवज्जादेगार्दि (क्रि) | ४.२०१ | वैराजनामभवनं ब्रह्मण (सु) | १५.६ |
| वेदोपनिषदां साराज्ज्ञाता (उ) | १६४.६३ | वेश्यायर्मणैरावर्तध्व (सु) | २३.१०४ | वैकुण्ठायेति वैकुण्ठमुरुः (सु) | २३.२४ | वैन्दतेयमयाह्मतीतं-(उ) | २४५.१३० | वैराजस्व तथा पुत्रं (भू) | २७.२० |
| वेदोपनिषदां सारे (उ) | १६५.७० | वेद्यायामुत्रोपविष्यन्तं (सु) | २३.६३ | वैकुण्ठे च प्रयागे च (उ) | ६३.५ | वैन्दतेयः समागत्य (उ) | २४२.३०१ | वैराटीगच्छमो नाथ (भू) | १३.३३ |
| वेदुमेवोद्यतः कोपाच्छरे-(सु) | ८.१२ | वेश्यायामुत्रोपविष्यन्तं च (सु) | ४६.१२८ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः सगारुद्धमात्म रूपं(भू) | ३२.५७ | वैराटीगन्धपत्नी च (ब्र) | १३.३१ |
| वेद्यास्तुपरितोगार्तर-(सु) | २७.७ | वेश्यायं वर्तमानेन कथं (उ) | १७४.१४ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धं धिया (भू) | ८३.७३ | वैरिणोजयलक्ष्मो (पा) | ४१.३० |
| वेद्योयत्रस्तुस्तेषु शूलं (पा) | ४.४० | वेश्यायां वृत्ताद्वृत्तेऽपि-(सु) | १७.७१ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धो लोक-(पा) | ८४.१०८ | वैरुपमतिरात्रं च (सु) | ३.११३ |
| वेन एष महाप्राज्ञः (भू) | १२४.१६ | वेश्यायां वैश्येव नोभाषा (सु) | १०.८२ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धः (उ) | २४६.८१ | वैलक्षण्यं च जगतस्त (उ) | ८०.६१ |
| वेनस्य कल्पमं नष्टं (भू) | ३०.३७ | वेष्टितं पुष्पमाणा (उ) | ३४.६२ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं ददौ राजामोक्ष (भू) | ८३.७० | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठायां सिते सर्वे (उ) | २१.२३ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठसर्वशोभाद्यं देवो (भू) | ८३.६६ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं यातं विष्णु (उ) | १०६.२१ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| वेनस्यपातकाचारं (भू) | ३७.४ | वैकुण्ठं भवनं विष्णोः (उ) | १०७.१७ | वैकुण्ठेन माहात्म्यो (उ) | ७१.१५७ | वैन्दतेयः समारुद्धा सर्वं (उ) | २३१.३४ | वैलक्ष्येवास्थिताः सर्वे (सु) | १७.२२ |
| | | | | | | | | | |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३६४

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| वैवस्वतैतरे चैव (सृ) | ६.३६ | वैशाखांशानिपापानि (पा) | ८५.६६ | वैशाख्या पूर्णमास्याम् (उ) | ८५.१ | वैश्वोघन समृद्धि च (उ) | ७६.४ | वैष्णवः पुत्रोभूत्वा (उ) | ५६.६ |
| वैशाखसकलं मासं (पा) | ६५.८ | वैशाखेऽक्षतधाराभि (क्रि) | २४.१५ | वैशाख्या पूर्णमास्यायो (पा) | ६५.६८ | वैश्वो भविष्यति श्री-(भू) | ६६.२७ | वैष्णवानां चगतिदं (उ) | ७५.२० |
| वैशाखं सकलं मासं (पा) | ६५.५१ | वैशाखे चैव शुक्लाया (क्रि) | १८.३५ | वैशाख्यामपि शक्त्यावा (पा) | ६८.२१ | वैद्योहं राक्षसश्रेष्ठ (उ) | २०४.७६ | वैष्णवानां च देवानां (उ) | ४०.१६ |
| वैशाखपूर्णमास्यां (पा) | ६.४ | वैशाखे तु सदादेवि (उ) | ८७.४ | वैशाख्या विधिनात्वा (पा) | ८६.६६ | वैश्रमकेमुखनेनदने (पा) | १५.५४ | वैष्णवानां च यद्वयं (पा) | ७८.१ |
| वैशाखमासिरेवायां (पा) | ६३.६ | वैशाखे दमनस्त्रग्भि (क्रि) | १२.३१ | वैशमोपलेषनफलंभवतो (क्रि) | १७.१३६ | वैश्रवणो महाप्राज्ञस्त (भू) | २६.५७ | वैष्णवानां तु ये राजन् (उ) | ३५.५ |
| वैशाखमासेमधुसूदनस्य (पा) | २०३.२ | वैशाखे पुष्पलवणं (सृ) | २०.६४ | वैश्यजात्यां समुत्पन्नो (भू) | ८६.३ | वैश्वदेवश्चकर्तव्यो (उ) | १२४.६६ | वैष्णवानां नराणां (उ) | ६०.१८ |
| वैशाखमासे सततं (पा) | १०३.१३ | वैशाखे पूजितो देवो (पा) | ८६.२२ | वैश्यजात्यां समुत्पन्नो (पा) | ६२.६२ | वैश्वदेवांत संप्राप्तं (उ) | २०२.१६ | वैष्णवानां परः श्रेष्ठः (उ) | ७१.५१ |
| वैशाखमुक्लपक्षे (उ) | ४६.१ | वैशाखे मासि पूर्णायां (पा) | १०२.१८ | वैश्यवर्ग्यं त्वयाभू (उ) | २०१.५७ | वैश्वदेव्याऽखिलं कर्मया (पा) | ११७.६१ | वैष्णवानां ब्रह्मणानां (उ) | २६.७ |
| वैशाख शुक्ल सप्तम्या (पा) | ८५.४६ | वैशाखे मासिः कुर्यात् (क्रि) | १२.३५ | वैश्यवर्ग्यं त्वयाभू (उ) | २०१.३६ | वैश्वानरपदं यागोऽखिलं (सृ) | २०१.३१ | वैष्णवानां महाराज (भू) | १००.८ |
| वैशाख स्नानमाहात्म्य (पा) | ६०.१८ | वैशाखे मासियो दद्यात् (क्रि) | १२.३२ | वैश्यवर्ग्यं शृणुष्वे (उ) | २०१.८५ | वैश्वानरं व्रतं नाम सर्वं (सृ) | २०१.१० | वैष्णवानां लक्षणं (उ) | ८२.१ |
| वैशाख स्नाननियमं (पा) | ६५.७ | वैशाखे मासियो नित्यं (क्रि) | १२.३८ | वैश्यवृत्ति समासाद्य (उ) | १८१.३ | वैष्णवं च प्रयाहित्वं (भू) | ७१.२५ | वैष्णवानां लक्षणानि (क्रि) | २.८० |
| वैशाख स्नानमाहात्म्य (पा) | ६०.४१ | वैशाखे मासियोविप्रिन् (पा) | ६६.२२ | वैश्यश्च वह्नीं संपत्तिं (उ) | १८१.५५ | वैष्णवं नारदीयं (उ) | २३६.१६ | वैष्णवानां शरीरेषु (क्रि) | २.७४ |
| वैशाखस्नानमाहात्म्यं (पा) | ६२.१०४ | वैशाखेऽत्राज्य कामार्थीयः (उ) | १४७.५ | वैश्यस्तु शरंभोनाम्ना (उ) | २०१.७१ | वैष्णवं परमं लोकं (भू) | ८८.५० | वैष्णवानि च सामानि (सृ) | २३.५२ |
| वैशाख स्नान माहात्म्यं (पा) | ६३.१५ | वैशाखे विधिनां स्नानं (पा) | ६१.२ | वैश्यस्तुनीय वर्णोवा (सृ) | ३५.७३ | वैष्णवं यानमासाद्य (भू) | ८६.४० | वैष्णवानि सधोवसानि (उ) | ११६.२४ |
| वैशाख स्नान योगे (पा) | ६०.३३ | वैशाखे विधिना स्नानं (पा) | ६५.५३ | वैश्यस्य भार्या मुक्लां (भू) | ५५.२० | वैष्णवं सपदंयति नील (सृ) | २०.४६ | वैष्णवानि सधोवसानि (उ) | १२३.११ |
| वैशाखस्य चतुर्थ्यात् (पा) | ३६.७३ | वैशाखे विमले मासि (स्व) | १६.१७ | वैश्याधनसमृद्धाश्च (पा) | ३.१८ | वैष्णवं सर्वं पापघ्नं (भू) | ३५.६ | वैष्णवानां प्रश्रीयन्तानर- (उ) | ११३.३१ |
| वैशाखस्य तृतीया नवमी (सृ) | ६.१२६ | वैशाखे शुक्ल सप्तम्यां (पा) | ८५.६० | वैश्यानाम्ना क्लृप्तं स्थानं (सृ) | ३.१५६ | वैष्णवं हरिवंशं वा (भू) | ६७.३७ | वैष्णवानां पुण्यं दुःखस्या (उ) | २५३.१४६ |
| वैशाखस्य सिते पक्षे (उ) | ४८.१ | वैशाखे श्रावणे भाद्रे (पा) | ८०.५४ | वैश्यानां समधाच्छौरिः (सृ) | १३.१२६ | वैष्णवः कुलमेकं (उ) | ८५३.१२५ | वैष्णवानां भोजयित्वा (उ) | २५३.१५२ |
| वैशाखस्य सिते पक्षे (उ) | ४६.७ | वैशाखोऽर्जुनो मासः (क्रि) | १२.३६ | वैश्यैवेधेनु माराध्य (उ) | २०३.६५ | वैष्णवत्वस्य सिद्धयर्द्धं (उ) | २२४.५० | वैष्णवाः पुण्यकर्माणि (भू) | ८३.६५ |
| वैशाखादितिथौ राम (पा) | ३६.७० | वैशाख्यापूर्णमास्याम् (स्व) | ५७.१६ | वैश्योघन समृद्धः (भू) | २८.१७ | वैष्णवत्वसिद्धिर्वाहुः (स्व) | ६२.३ | वैष्णवायेतुर्ध धर्माणां (सृ) | २३.१ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|---------|------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| वैष्णवाश्च कृतामर्त्या (भू) | ७६.६ | व्यक्तमव्यक्तयोगं (सु) | ३६.१३४ | व्यपोहयतिपापानि (उ) | ३४.३५ | व्याख्यातरियदिप्रीति-(पा) | ११४.४६३ | व्याधिनापीड्यमानस्य (भू) | ५३.८६ |
| वैष्णवा सुविरक्ताश्च (उ) | १६५.२२१ | व्यक्ताव्यक्तस्वरूपेण (उ) | ८०.७६ | व्यभिचारकृतेपापेत्तत् (पा) | १०६.७३ | व्याख्यानमपिचञ्चुत्वा (पा) | ११४.४२५ | व्याधिभिर्जनितासापि (सु) | १६.२७६ |
| वैष्णवी ता महातेजा (उ) | २४४.८० | व्यक्तीनांत्वामादिभूतं (सु) | ४३.६ | व्यभिचारोयथानस्याद-(पा) | १०६.६३ | व्याख्यायाकापिकाकु-(पा) | ११५.६४ | व्याधिभिश्च महाधोरैः (भू) | ७०.६ |
| वैष्णवीदानवीयेयं (उ) | १२२.६६ | व्यग्रत्वंचनकत्वं (उ) | ७२.८ | व्यराजनानभः पूर्णं(उ) | १००.१८ | व्याघ्रं षष्ठ्वातुसावेनुरिदं(सु) | १८.४२१ | व्याधीनां नासाकावयय (भू) | १६.२३ |
| वैष्णवेनतुयजेन (उ) | २४२.४८ | व्यग्रातुपृथिवीदेवी (सु) | ४३.४७६ | व्यर्थंभवति तत्सर्वं (उ) | २२४.३६ | व्याघ्र चर्म परीधानो (सु) | ५.३८ | व्यापक विश्ववेतारं (भू) | ६८.५० |
| वैष्णवेन न कर्तव्यम् (ब्र) | १५.३१ | व्यजनेचासनंशुभ्रं (सु) | २७.१३ | व्यवसायं ततोज्ञात्वा (भू) | ३.७ | व्याघ्रत्वंतुकुतोहेतो (उ) | १८७.३६ | व्यापकाय सुनंदाय (उ) | १७४.८३ |
| वैष्णवेन प्रभावेन (भू) | ७५.८ | व्यजृंभताथलोकेस्मिन् (सु) | ४३.५१० | व्यवसायं ब्रजजैर्वैक्षेमं (सु) | ३.१६० | व्याघ्ररूपमहंत्यवत्वा (सु) | १८.२६३ | व्यापकत्वाच्चदशेनं (पा) | ८२.७० |
| वैष्णवेषु गुणाः सर्वदोष (क्रि) | २.१०४ | व्यज्ञापयदमेयात्सन् (पा) | ११४.१६३ | व्यवस्थितांस्तेः समवेन-(सु) | ३१.७० | व्याघ्रवृश्चिभल्लूष्ट (पा) | १०६.३१ | व्यापयन्खिलंकोकं (उ) | १७७.५२ |
| वैष्णवेषु सदाश्रेष्ठो (उ) | ८१.२६ | व्यतिक्रमात्पितृणां (सु) | ६.२४ | व्यवस्थितयिदाजाता-(पा) | ११५.३४ | व्याघ्रस्य वचनंश्रुत्वा (सु) | १८.२६४ | व्यापिने व्यापकावय (भू) | १६.६८ |
| वैष्णवैरनुवाकैर्वा (उ) | २५३.१६७ | व्यतिक्रामेनस्तवंतीनं (स्व) | ५५.७६ | व्यवहृतवृत्तिर्न्यासं (पा) | १६.२८ | व्याघ्रादयोनक्वर्ति (उ) | २०१.३२ | व्यापुषे श्रावां तु (भू) | ५५.७ |
| वैष्णवैश्चतथाख्यातः (उ) | ४५.५५ | व्यतीतं यदिचेच्छाद्ध-(पा) | १०५.६२ | व्यवहारं कलेश्चैवत्यज (भू) | ३८.३० | व्याघ्रात् तिहाः सृष्टात्वा-(पा) | ५६.६ | व्याप्तं च हृदयंतासां (स्व) | २५.७६ |
| वैष्णवैश्चमहामंत्रै (भू) | १२५.२६ | व्यतीतस्तुमहान्काल (उ) | २०१.२० | व्यवहारं च लोकानामाचारं(भू) | ८५.७ | व्याघ्रात् भवति दुष्टात्मा (भू) | १६.१७ | व्याप्तं तु हृदयंतासां (उ) | १२८.५८ |
| वैष्णवैश्च (उ) | ८४.२ | व्यतीतान्पुरुषान्सप्त-(स्व) | ४५.६ | व्यस्वर्यविलोभेयाथ (उ) | १७.५७ | व्याजहारमहुतेजावाक्यं(उ) | २५५.४२ | व्याप्यतत्सकलं विश्वं (पा) | ४३.५० |
| वैष्णवैश्चदृष्टहेभुक्तेयेषां (स्व) | ३१.१०२ | व्यतीपातादिकालेषु कृतं(पा) | १०५.६४ | व्यसनस्य च मृत्योश्च (पा) | ६६.३१ | व्याजेनापिकृतार्थस्त्वयं(स्व) | ३१.१५८ | व्यावृद्धिं यास्यामि यदा (भू) | ५५.१६ |
| वैष्णवो ब्राह्मणो यस्तु (उ) | २६.१६ | व्यतीपाते बहुगुणं (सु) | ३४.४०० | व्यसनानि दुरंतानि (पा) | ६६.३२ | व्याजेनापिमयादेवि (उ) | ३०.१०३ | व्यामोहेन प्रमूढोस्तिवज (भू) | ११.१० |
| वैष्णवोसिमहाराज (उ) | ३५.३१ | व्यत्यस्तपाणिनाकार्यम् (स्व) | ५१.२६ | व्यसनीपरदारेषु (उ) | १७७.२ | व्याजेनापिहृतातेन (भू) | १०८.२७ | व्यायामं च प्रवासं च (उ) | ४८.२२ |
| वैष्णवोसिमुनिश्रेष्ठ (उ) | ५७.४ | व्यथामुत्पादयेद्भयः (पा) | ६६.६० | व्यसनेषु समस्तेषु (पा) | १०५.८२ | व्यावव्याजानुचित (उ) | ७१.२३२ | व्यायामं च प्रवासं च (उ) | ६३.२० |
| वैहायसीकामगमां (सु) | ४५.३८ | व्यथितस्तुरगः सकिरिः (भू) | ४४.५ | व्याकरोति च पवेकं (पा) | ११५.७५ | व्यावाः संधानमास्थाय (उ) | १२५.३८ | व्यालोलकेसरजटैर्दंष्ट्रो (सु) | ५.७४ |
| व्यक्तं त्रिविष्टयं (सु) | ३३.१०८ | व्यनक्तिपमाश्चर्यं (पा) | ७१.५१ | व्याकुर्वतिस्मृतियंचये (स्व) | ३१.६५ | व्याधिर्मृत्युर्भयं चैव (सु) | १७.३२६ | व्यासं सकलशास्त्रज्ञम् (ब्र) | ५.२३ |
| व्यक्तं मेहवञ्जारायु (सु) | ४३.१० | व्यपयाततनुश्राणाः (सु) | ४६.२६ | व्यासिष्ठ चेत्सः सर्वं (सु) | ४.४६ | व्याधिर्तु कठिनं ताव (भू) | ६१.१ | व्यासं हत्यवती पुत्रं (पा) | ६७.२८ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

३६६

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|
| व्यास शिष्यः पुराणज्ञो (स्व) | १.१० | व्रजस्वराधवाभाषां (सु) | ३८.६७ | व्रतं पवित्रं परमं श्रीकंद (उ) | १७४.४३ | व्रतस्यास्यप्रभावेन (उ) | ६२.२३ | व्रतेनानेनदेवेश (उ) | ३५.५६ |
| व्यासः श्रेष्ठो मुनीनां (क्रि) | २२.६७ | व्रजामितावदम्यत्र सोभाग्यं (सु) | ४.१० | व्रतं पालयमानस्ययावद् (पा) | ६.४३ | व्रतस्यास्य प्रभावेन (उ) | १७४.१८ | व्रतेष्वेतेषु येऽवतान्ने (पा) | ६६.१११ |
| व्यासः सर्वं पुराणानि (स्व) | १.२७ | व्रजामि नित्यं शरणम् (स्व) | ३५.४४ | व्रतं स्तोत्रं महाज्ञानं (भू) | ८८.१ | व्रतस्यास्य विधिं ब्रूहि (उ) | ४५.३३ | व्रतरारा द्यतेऽस्त्रीभिरच (पा) | ८४.४८ |
| व्यासादयो मुनिवरायत् (पा) | ११५.६२ | व्रजामि शरणं देवं (सु) | ३०.१६ | व्रतं चयनिकूलामि- (सु) | १३.२६२ | व्रतादरमाचक्षयत् (उ) | ६५.२३ | व्रतैर्दानं स्तपोभिरच (स्व) | २६.१६ |
| व्यासायवासवायैव वसु (भू) | ३२.४६ | व्रजामि श्वेगद्दीपं ते (सु) | ३०.१६२ | व्रतचर्यापुराभूत्वा (उ) | २४७.२० | व्रतादिकं संमुद्दिश्य (पा) | ६७.४६ | व्रतैर्दानं स्तपोभिरच (उ) | १२६.८ |
| व्यासेन नृपशार्दूल (स्व) | २६.८७ | व्रजाम्यहं न संदेहो ह्यनया (भू) | ८७.५ | व्रतदानं विसर्गं च (भू) | १०५.६० | व्रतानां च यथा चैषा (उ) | ३४.८४ | व्रतैश्च नियमैश्चापि (उ) | १५२.११ |
| व्याहंरमो जनाः सर्वे (उ) | २११.३६ | व्रजाम्यहं न संदेहो ह्यनया (भू) | ८३.३ | व्रतदानतपोयज्ञाः (स्व) | ३१.७३ | व्रतानां च यथा राज- (उ) | ४०.७ | व्रतैश्च विविधैः पूतो (सु) | ४६.१३५ |
| व्याहृतभवता पूर्वं (स्व) | २२.७ | व्रतं किञ्चित्समाख्या (उ) | ४५.२८ | व्रतद्वयसंस्थमिदं नरैः (उ) | ६०.३१ | व्रतानां मुनिशार्दूल (न) | २३.३ | व्रतोपवासं वमाणि (सु) | १५.२७६ |
| व्याहंरचय संग्रामे (पा) | २५.३१ | व्रतं कृत्वा महाभाग (उ) | ६५.२ | व्रतप्रतिष्ठादानादि (पा) | ११३.२२ | व्रतानामुत्तमं यस्माद् (सु) | २१.७३ | व्रतोपवासनियतैश्चित्ते- (सु) | १५.१६७ |
| व्यूहितदानव्यूहं (सु) | ४०.१७६ | व्रतं गोकुलनाथाख्यं (पा) | ७४.१५१ | व्रतभेदान्प्रवक्ष्यामि (भू) | ८७.१ | व्रतानामुत्तमं राजन् (उ) | ५२.२ | व्रतोपवासनियमं (उ) | ३०.६६ |
| व्योमपादः स्वपादाभः (उ) | ७१.२०१ | व्रतं चकार विधिवत् (उ) | ४६.२६ | व्रतमेतच्चकुलेनोवाचैव (उ) | ३५.१६ | व्रतानामेव सर्वपादेवा- (भू) | ३६.७६ | व्रतोपवास निरतो (उ) | ३०.६५ |
| व्रजत्वं समरे योद्धुमभ्यान् (पा) | ४२.२० | व्रतं च कुरुते गर्त्यः (उ) | ५३.२७ | व्रतवैकल्यमासाद्य (उ) | ६५.३ | व्रतानितत्प्रविष्टानि (उ) | १२५.६० | व्रतोपवासनियमं (उ) | ७८.५ |
| व्रजध्वं चोत्तमं स्थानं (सु) | १३.३६१ | व्रतं चक्रे जितादुरा (भू) | ८३.३३ | व्रतसत्रतपोदानैर्यत्कलं (पा) | ८५.७ | व्रतानियानिभिक्षणम् (स्व) | ६०.२१ | व्रतोपवासैरथवाकला- (पा) | ११२.७५ |
| व्रजं कृत्वानि वाययं (सु) | ११.७३ | व्रतं च चार सावित्रीयाः (उ) | १५२.४ | व्रतसिद्धयर्थमप्यत्र (उ) | १६८.४५ | व्रतांतरकरपूरणं मेते (सु) | २२.१२३ | श्रीह्यश्च वाश्चैव (सु) | ३.१४५ |
| व्रजं तिकेन वैस्वर्गतं (पा) | ६६.४६ | व्रतं चैवमहापुण्यं (उ) | १२४.४३२ | व्रतस्यांचसदाजालं (क्रि) | १६.१०८ | व्रतांते शयनं दद्यात् (सु) | २६.४६ | श्रीह्यः सयवामापागो (सु) | ३.१४८ |
| व्रजपाणिनमायांत मे (सु) | ३०.१३८ | व्रतं च पुण्यकारचयः (न) | ४.४६ | व्रतस्यामाहिप्रस्यति (सु) | १४.१७६ | व्रतांते शयनं दद्यात् (सु) | २१.२८५ | श | |
| व्रजमानो व्रजत्येव (भू) | १२.३२ | व्रतं च त्रिरात्रमुद्दिश्य (उ) | ७०.६ | व्रतस्थेन न कर्तव्यं (उ) | १७४.४६ | व्रतांते शयनं दद्याद्गृह- (सु) | २२.४५ | शकटं हरये दत्तं चतुर्वर्गं (क्रि) | १६.३० |
| व्रजे पेनपायेन (उ) | १२७.१४१ | व्रतदानं जपोहोमो (पा) | ६५.५४ | व्रतस्य चास्य करणात् (उ) | ४६.४६ | व्रतानाकातिक्रमासि (उ) | ६३.१० | शकटारोहणे नास्ति (क्रि) | १६.२६ |
| व्रजविस्फारितोद्भूतं (सु) | ४१.५ | व्रतदानं तथा यज्ञं (उ) | ७७.४७ | व्रतस्य दक्षिणां दद्यान् (क्रि) | २२.१४२ | व्रतनियेन तृप्यति (क्रि) | २२.१३३ | शक्तिं गृहीत्वा ह्यहं (उ) | १७.२५ |
| व्रजसोम्व शिवः पंधा- (सु) | ३३.१३६ | व्रतद्वयं तथा सभ्यगा (उ) | ८६.६ | व्रतस्य विवर्णं वापि (क्रि) | १५.१३ | व्रतोपासत्यवादी (उ) | २२.३.२६ | शक्तिं चित्रकलोद्भवं (सु) | ४०.१३७ |

| | | | | |
|---------------------------------------|---|--------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|
| शक्ति तस्तर्पयेद्भवत्या (सु) २१.२२३ | शक्र प्रोवाच शृण्वतु-(सु) ४३.३०२ | शंकरस्वापिविवचागंध (सु) ४३.४०७ | शंख चक्र गदा पाणि (भू) ३.६२ | शंख नादेन संघट्ट (पा) ५१.७ |
| शक्तिवस्त्रिपलादूर्ध्वं (सु) २०.६७ | शक्र ब्रह्माचितपदं (उ) ७१.१६० | शंकरस्याशुफलदं (पा) १०८.७८ | शंख चक्र गदा पाणि (भू) ३२.५६ | शंखनामाभवत्पूर्वं (उ) ६०.५ |
| शक्तिनिर्भिन्नहृदया (सु) ३१.८८ | शक्र मानकरं प्रोक्तं (भू) १०.४७ | शंकराद्यैर्विरिच्यावैर (पा) ७५.७ | शंख चक्र गदापाणि (भू) ११६.२०१ | शंख पद्म निधीतत्र (पा) ७४.१७० |
| शक्तिप्रहारेणमृतं (उ) १७.४४ | शक्रलोकं सगत्वातु (सु) २२.१६५ | शंकराय मुखे प्रोक्तं (पा) ११४.२६६ | शंख चक्र गदापाणि (उ) ८०.१२४ | शंखपालमन्त्रांशुपाप (सु) ६.७२ |
| शक्तिमतोऽशक्तिमतः (पा) ११४.१५६ | शक्रः क्रतुशतं नांतु (पा) ४६.४६ | शक्तिनापिदोषेण (पा) ६६.८८ | शंख चक्र गदापाणि (उ) ८०.१३१ | शंखमुक्तादि जल जघ (पा) १०६.३२ |
| शक्तोपिदेवराजस्य (सु) ४२.४३ | शक्रश्चैव हि विख्यात (भू) ५.१०२ | शंकुर्गणैः सर्वैर्नेत्रः (उ) २२८.१५ | शंख चक्र गदाब्जाय (पा) ७८.२४ | शंखमृत्पद्मपाणि (क्रि). १७.११० |
| शक्तोपि राघवस्त (उ) २४२.१८७ | शक्रस्यचामराणां च (सु) १४.३३ | शंकुर्गणैस्ततः श्रीमानु-(उ) १८१.३१ | शंखचक्र गदाशाङ्गं (पा) १८.६ | शंखरावविनिर्भिन्न (उ) २४६.२३ |
| शक्त्यः सर्वभावानाम् (सु) ३.२ | शक्रादप गमिष्यामि (उ) १६८.४३ | शंकुर्गणैश्चरंदेव-(स्व) २४.२० | शंख चक्र गदाशाङ्गं-(उ) १८.१८ | शंख शब्दैः सुपापघ्नैः (भू) ८३.४५ |
| शक्त्यागवादिक्दद्यात् (सु) ७.२५ | शक्राद्यास्त्रिदशाः सर्वे (क्रि) १७.२५८ | शंकु कर्णैर्विमुक्तात्मा (स्व) ३५.४७ | शंख चक्र गदा शाङ्गं-(उ) २२६.१६२ | शंखश्च राजेन्द्र नलो (सु) ६.५६ |
| शक्त्यातुविप्रान्संयुक्तं (सु) २१.२५० | शक्राहंतेवरंदास्ये-(सु) १७.२५८ | शंखचक्र गदाखड्गं (उ) २३८.१०६ | शंखचक्रगदा शाङ्गं (उ) २४४.८४ | शंखादिभरभिरिच्याशु (उ) १२५.१४० |
| शक्त्याथ तस्यहृतवान् (उ) १७.३४ | शक्रवर्ति परित्रातुं (सु) १८.३०६ | शंख चक्र गदा पद्म (ब्र) २०.३१ | शंखचक्र गृहीता (उ) २३८.१४० | शंखान्दध्मुर्महादेव. (भू) २०.४३ |
| शक्त्यादानं प्रियोक्तिश्च (पा) १०६.७२ | शक्रैणसहभूपोऽसौ (क्रि) ६.१५० | शंख चक्र गदा पद्म (पा) ७०.६१ | शंखचक्रधरा विप्रा (उ) ६४.७० | शंखान्जचक्रगदिने (पा) ७८.२३ |
| शक्त्यांतरितच्छाक्षः (पा) ११४.४३ | शक्रैणान्याहृताभीरा-(सु) १७.१२४ | शंख चक्र गदा पद्म-(पा) ७८.६१ | शंखचक्रधरोविप्र (उ) २६.१७ | शंखिनश्चक्रिणोभूत्वा (स्व) ३१.११४ |
| शक्त्याविनाहरेस्त (पा) २२६.३१ | शक्रोत्सष्टेन वज्रेण (उ) २४६.६० | शंखचक्र गदा पद्म (उ) ८६.१८ | शंखचक्रादिकचित्रंगो (क्रि) २२.६४ | शंखे कृत्वातुपानीयं (क्र) ११.११२ |
| शक्त्याविमुक्त (उ) २४२.१६४ | शक्रोपि चाम्रयास्तत्र (भू) ५७.२३ | शंखचक्रगदा पद्म (उ) २००.६७ | शंखचक्रसकटकेस्वस्तिकं (सु) २२.१५० | शंखे नैवांकनं कुपयि (उ) २२३.६३ |
| शक्त्योपचाररहितः (उ) ३७.५३ | शङ्कमानोजनत्वात् (उ) १८३.२३ | शंख चक्र गदापद्म (उ) २२६.७७ | शंखचक्रोदध्वं पुंड्रादि (उ) २३५.५ | शंखेन्दुकुण्डधवलं वृषभं (सु) ३३.१६२ |
| शक्रं शप्त्वातदादेवी (सु) १७.१५१ | शङ्करश्च भवानी च (उ) १२२.२५ | शंखचक्र गदापद्म (उ) २२६.६१ | शंखचक्रोदध्वं पुंड्रादि (उ) २५५.१२० | शंखेन्दु कुण्डधवलं (पा) १०३.५५ |
| शक्रः प्रक्षाल्यतत्पदान् (उ) १६६.२७ | शंकरस्तमयाकर्ण्यम् (सु) ४३.२२६ | शंख चक्र गदा पद्म (उ) २२६.१३४ | शंखचक्रवधस्तत्र (पा) ६६.३५ | शंखोदकं हरेर्मूर्ति (उ) ३५.६ |
| शक्र प्रणिहितां पूजां (सु) ४३.११० | शंकरस्य गृहं तत्र (भू) १०१.२५ | शंख चक्र गदा पद्म (उ) २४२.८४ | शंखतीर्थं तु वामे वै (उ) ७५.२३ | शंखोद्धारततश्चैव (उ) १३३.२८ |
| शक्र प्रियततः कृत्वा (सु) ४१.२६४ | शंकरस्यांतिकगतत्वा (उ) १३.१६ | शंख चक्र गदा पद्म (क्रि) २.६० | शंखनादध्वमाहात्म्यं (उ) १.५७ | शंखोद्धारैर्ध्वनिर्नाम (सु) १७.२०६ |



श्रीपद्महापुराणम् :: स्लोकानुक्रमणी

५६८

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------|--------|------------------------------------|--------|------------------------------------|-------|-------------------------------|---------|
| शंखोप्येवंपुरादेवान् (उ) | ६७.११ | शतपत्रैर्महापद्मैः (भू) | ८३.६८ | शतेनतेनकविना (उ) | १६१.१५ | शत्रुघ्नः सहितस्तेन (पा) | १४.११ | शत्रुघ्नोहंरघुपतेर- (पा) | १६.२६ |
| शंखोभद्रासनं छत्रं (उ) | ३२.१५ | शतपत्रैस्तथादिव्यै (उ) | ८७.३ | शतैश्चक्षूयतेभक्तिः (उ) | १३२.३४ | शत्रुघ्नः सुमहामारि (पा) | १३.५६ | शत्रुभिर्वज्रितोयस्तु (क्रि) | १८.४६ |
| शची बुद्धि प्रभावेण पद- (भू) | ६४.३३ | शतमन्वोवर्षशतं (उ) | १६६.४० | शत्रुहंसिपरांतस्य (उ) | ३८.१०७ | शत्रुघ्नस्तु राजानं (पा) | ३२.२३ | शत्रूपघातेभ्राम्यन्त (सु) | १३.२६० |
| शची समन्वितः श्रीमान् (उ) | १६२.२२ | शतमन्वन्तरं राजन् (ब्र) | १६.२० | शत्रुघ्नं पतितं वीक्ष्य (पा) | ६४.१ | शत्रुघ्नस्तं प्रणयिनं (पा) | २६.२५ | शत्रौमित्रे च ते दृष्टिः (सु) | ३७.८५ |
| शचपासहस्रमागम्य (उ) | १२७.१०२ | शतयज्ञ प्रभावेन नहुषो (भू) | ६४.३२ | शत्रुघ्नं मूर्च्छितं दृष्ट्वा (पा) | ६२.३३ | शत्रुघ्नस्तं मुनिप्राह (पा) | १६.४४ | शनिपीडाकथं याति (उ) | ३३.१ |
| शच्यै देव्यै ददुःप्रीत्या (उ) | २४६.८७ | शतयोजनं विस्तीर्णं (स्व) | १४.२० | शत्रुघ्नं सवदशधि (पा) | २६.२१ | शत्रुघ्नस्तद्वलं दृष्ट्वा (पा) | २६.१ | शनिस्तपोबलाच्चापि (सु) | ८.७४ |
| शतं गावो वृषश्चैको (ब्र) | २४.६ | शतयोजनं विस्तीर्णं (उ) | ४.१७ | शत्रुघ्नं समरे गत्वा (पा) | ६१.६० | शत्रुघ्नस्तमपि क्षिप्रं चेतुं (पा) | ६३.७८ | शनैः शनैः करंतस्य (क्रि) | ५.१३६ |
| शतं वर्षं सहस्राणि (स्व) | ४४.१६ | शतयोजनं विस्तीर्णं (उ) | ५.३१ | शत्रुघ्नं समरे वीरशोचं (पा) | ४३.४३ | शत्रुघ्नस्तु क्रुधा विष्टो (पा) | २४.१ | शनैः शनैः पठेत्प्राज्ञो (पा) | १०४.७४ |
| शतं शतसमानांतु (सु) | ४२.६४ | शतवर्षाणि यतीतानि (उ) | २०४.६६ | शत्रुघ्नं सविधेजमुः (पा) | ६०.५६ | शत्रुघ्नस्तु क्षुरप्रेण साय- (पा) | ३४.७६ | शनैः शनैः प्रत्युवाच राम (पा) | ४.२२ |
| शतंहितस्य वर्षाणां (सु) | ३.२३ | शत शीर्षः स्थित (सु) | ४१.१७० | शत्रुघ्नं स्तं मुतं ज्ञात्वा (पा) | ६३.५६ | शत्रुघ्नस्त्यप्रयाणायां (पा) | ११.७५ | शनैः शनैः समागत्य (पा) | १३.६५ |
| शतक्रतुक्रतं स्वर्गं (उ) | २४२.१७८ | शतशो वृद्धिमायातिन (सु) | १२.६३ | शत्रुघ्नगच्छवाहस्य मार्गं (पा) | १०.५६ | शत्रुघ्नः स्वहृत् प्राप्य (पा) | ५३.३४ | शनैः शनैः सारस्तीरे (उ) | १८३.३० |
| शतक्रतुरिति प्रोक्तः (सु) | ३५.७ | शतहस्ततुरंगस्थो मथनो (सु) | ४२.७७ | शत्रुघ्नं च महाभागा (उ) | २४२.६५ | शत्रुघ्नं हनुमदभ्यां च (पा) | ४६.२८ | शनैश्चरन् प्रभुरथ (सु) | ३६.१३८ |
| शतक्रतुर्मुहूर्ते जा (भू) | २६.२२ | शतहस्तांगुलस्य (पा) | ११७.७ | शत्रुघ्नं तु व कल्याणं (पा) | १६.३१ | शत्रुघ्नादीन् प्रवीरांस्तान् (पा) | ५०.३५ | शनैश्चरो लोहितगो (सु) | ४५.१३० |
| शतक्रतुः शतं कृत्वा (पा) | ८.३४ | शतानं त्वाभगानं दापि- (सु) | ४६.८० | शत्रुघ्नः परयाशक्त्या (पा) | ३४.६७ | शत्रुघ्नाश्वगृहाण त्वं (पा) | २८.७ | शनैः स्वयं भूयैः सृजतु (सु) | ४०.१८ |
| शतखंडमये विप्रयः (भू) | ७२.२४ | शतानि श्रीणि पण्डितश्च (सु) | ३४.१२ | शत्रुघ्नपाशवं संचारी (पा) | २८.२६ | शत्रुघ्नेन सुवीर्येण लक्ष्मी (पा) | २३.२ | शान्नादेशीत्यपः कृत्यदि (सु) | ६.१३७ |
| शतजितस्वदायादस्त्रयः (सु) | १२.१०० | शतानो कोपथादानात् (उ) | ७४.१८ | शत्रून् बाण प्रहृतः (पा) | ६२.२६ | शत्रुघ्नो निजवीराणां- (पा) | ६०.१ | शान्तो देव्याजवं- (पा) | ११७.१०३ |
| शतत्रयं शताधिकं पंच (भू) | ६६.६० | शतायुधेन विप्रेन्द्र (उ) | ३४.१७ | शत्रून् मादिदेशाथरामः (पा) | १०.५५ | शत्रुघ्नो निष्यधात्तत्र (पा) | ३३.५६ | शंसतेन वानांतीतं (पा) | ४०.१८ |
| शतद्वयं ब्राह्मणानां (उ) | २१६.१६ | शतावदानदीज्वालाशर (सु) | ११.३१ | शत्रून् शरमादाय (पा) | ४५.४८ | शत्रुघ्नो मात्यवयं (पा) | १७.७ | शंसति च पुराणज्ञाः (सु) | १३.७ |
| शतधादेवसातेषु (उ) | १२७.२५ | शतेन गुणितं निष्कं- (सु) | १६.२३६ | शत्रून् शरसंघातं (पा) | ५२.५४ | शत्रुघ्नो लवणं हत्वा- (उ) | २४४.६ | शपयैः सत्यवाक्येन (सु) | १८.३८६ |
| शतपत्रकृतांमालां (उ) | २३४.३३ | शतेन गुणितं माघे (उ) | १२७.२६ | शत्रून् इक्ष्म्यवनस्याय (पा) | १७.१ | शत्रुघ्नो वाजिनं श्रेष्ठं (पा) | ६५.२ | शपित्वा तान् हरोदाय (उ) | १८.३८ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|---------|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| शप्तः कैलासशिखरे (उ) | २५५.६१ | शब्दादीन्विषयान्सर्वात् (सु) | १५.२६६ | शंभुरपि तथा करोमीत्यु (पा) | ११६.१०७ | शयालुरसिदुग्धा (उ) | १७५.५ | शरणं न प्रपन्नोस्मि भयं (भू) | १६.३२ |
| शप्तस्तेनापि विप्रेण (भू) | ४६.५७ | शब्दार्थः संविदर्थश्च (उ) | १२८.२४२ | शंभुरप्यति पुण्यानि (पा) | १०५.१५ | शय्यां च शक्तिमान् (सु) | २४.५५ | शरणतत्प्रपन्नोस्मि सदा गति (भू) | १६.३६ |
| शप्तागंधर्व पुत्रेण (भू) | ३३.१ | शब्दो हि मे गुणः प्रोक्तो (भू) | ७.५८ | शंभुराह शृणुष्वद्य (पा) | १०५.२४ | शय्यां दद्याद्दृष्टोभीम (सु) | २३.६१ | शरणं तस्य गतास्मि (भू) | १६.३५ |
| शप्ताहं कप्य तातेन दुष्टा (भू) | ३८.१३ | शमनं जग्मुः परमानजग्मु (सु) | १६.११६ | शंभुरेव भवेत्किं वाकि (भू) | ११२.७ | शय्यां दद्याद्विरिचाय (सु) | ७.२३ | शरणं ते ह्यहं प्राप्नोः (भू) | १०३.११ |
| शप्नुकामा समुद्युक्ता (भू) | ४६.५१ | शमनयनुगोविदो (उ) | ७८.४६ | शंभुर्जहास स्नानाय (पा) | १०५.२०३ | शय्यां सुनक्षणां कृत्वा (सु) | २५.२२ | शरणं त्वां प्रपन्नोस्मि (भू) | ३६.२६ |
| शप्नोऽस्म्यशोकसुंदर्या (भू) | १०३.६६ | शमनं यतु तत्सर्वं कीर्ति (उ) | ७८.५६ | शंभुर्वैरिजगोत्थियते (उ) | १८.१३४ | शय्यां सोऽनक्षरां दद्यात् (सु) | २१.२४२ | शरणं देवदेवस्य (भू) | ११८.१४ |
| शप्नो नयानपूज्योती (उ) | २५५.६० | शमनस्य गृहं (उ) | २०४.५६ | शंभुवाक्यादतः सर्वे (पा) | १०५.३१ | शय्यां च पुष्प प्रकरैः | २०.२६ | शरणं पालय मुने कालो मे (पा) | १०६.७१ |
| शप्नोऽकुलसहस्रं तु (सु) | ३१.३० | शमनेनाचितो भक्त्या (उ) | ५८.१३ | शंभुविलोकाय ततो (पा) | ११७.२०६ | शय्यां दानं च गोदानं (उ) | १.६० | शरणं प्रययुर्वेवंता रागण (उ) | २३७.१५ |
| शफराऽसूदयित्वा स (भू) | ३०.२० | शमयस्वा सुरीमायां (सु) | ४१.१३३ | शंभुश्चापि समानीतो (भू) | ४६.२५ | शय्यादानं दानसारं (ब्र) | २४.३२ | शरणं वां प्रपन्नोस्मि (पा) | ८२.४६ |
| शफरीसिंह तुंडंग (स्व) | ५६.३६ | शमयाद्युविनाद्युत्वां (उ) | २०६.३३ | शंभुसमस्ततत्त्वज्ञं (पा) | ११७.६४ | शय्यादानं द्विजश्रेष्ठयः (क्रि) | २०.१४२ | शरणागतश्चो चमानदान (पा) | १०.७१ |
| शबलां देहि मे विप्र (उ) | २४१.३० | शमयामास तं भूपो (पा) | ६३.६४ | शंभुस्त्रि पुरदाहैकस्वर्थश्च (उ) | ७१.२४३ | शय्याद्यवप्रदानेन (सु) | २३.६७ | शरणागत संत्राण (उ) | १८५.२३ |
| शबलां देहि मे विप्र (उ) | २४१.३० | शमस्तु पंचमं पुष्पं (पा) | ८४.५८ | शंभोः पितामहो ब्रह्मा (उ) | ७१.१४५ | शय्यां ते सा शिराः कृत्वा (भू) | २६.१६ | शरणागत संत्राण (उ) | १८५.२४ |
| शबलाश्चानामते च (सु) | ६.६ | शमीकपुत्राश्चत्वारो (सु) | १३.१३२ | शंभोरित्युत्तरं श्रुत्वा (उ) | ६.१८ | शय्याकणिकाणारत्नं (उ) | १७७.४१ | शरणागतं च पात्रं (ब्र) | २३.१६ |
| शब्दमात्रं तथा काशं (स्व) | २.१० | शमीपुत्रः प्रतिसन्नः (सु) | १३.६४ | शंभोर्भयमथोप्राप्य (सु) | ४६.३६ | शय्याममाप्यशून्यास्तु (सु) | २४.६ | शरणागतं ह्यस्यायां (क्रि) | १२.५३ |
| शब्दमात्रमथाकाशं (सु) | २.६३ | शमीदमस्तपः शौचं (उ) | २५३.३६ | शम्यादियदिवेत्काष्ठं (सु) | २३.३६६ | शय्याममाप्यशून्येन (सु) | २३.१३७ | शरणागतं हंता च (क्रि) | १६.७ |
| शब्दः शिक्षा निरुक्तं (सु) | १८.५५ | शम्बुवाणो महाखड्गं (पा) | १०७.५३ | शयनं कुर्वते केचि (क्रि) | २३.१३६ | शय्यासत्तूलिकादेया (उ) | १७४.६८ | शरण्यं शरणं विष्णु- (सु) | ४५.२६ |
| शब्दस्य शब्द रूपं च (स्व) | ३.५ | शंभः शिलादर्जराज (उ) | १७.२६ | शयनं भक्षणं चापि मिथ्या (पा) | ७६.३६ | शय्यासनादिकं सर्वं (सु) | २३.१३१ | शरण्यं शरणं चत्वा (उ) | ७६.८ |
| शब्दस्य शब्द वायोस्तु (स्व) | ३.७ | शम्भुं पुराणतत्त्वज्ञं (पा) | ११४.३६४ | शयनं न स्थानि पुज्यानि (सु) | २१.४२ | शय्यासनातिनातुलं (उ) | १२६.१३० | शरण्यं शरणं देवं (सु) | १४.१४६ |
| शब्दादिज्ञान सिद्धयर्थं (स्व) | २.२१ | शम्भु प्रतिज्ञा विध्वंसी (उ) | ७१.२६१ | शयनी बोधिनी मध्ये (उ) | ५३.३६ | शरं सोऽप्ययमास धोरं (पा) | ६३.७१ | शरत्कालास्थितं (सु) | २७.५७ |
| शब्दादिभिर्गुणैर्वीर- (पा) | २.१०२ | शंभुभुगु कौशिकं (पा) | ११७.७२ | शयने वतयोऽन्येन तस्मिन् (क्रि) | १८.५२ | शरणं च प्रपद्ये च (पा) | १८.५५ | शरत्काले तु संग्रान्ते (उ) | २४५.१७६ |
| शब्दादिभिर्गुणैर्विप्राः (स्व) | २.२३ | | | | | | | | |



श्रीषष्ठमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४००

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| शरत्कोटीदुसंकाशः (उ) | २३८.१३७ | शरासने समावृत्तवाणं (पा) | २४.३३ | शरीराणि च पुण्यं (पा) | १००.२७ | शर्करा सहितं दिवां (सु) | २३४.३४ | शशांक विष्णुशक्तीनाम (पा) | ११४.३६ |
| शरत्कोटीदुसंकाशः (उ) | २४५.२६६ | शराः सर्वत्र दृश्यंते (पा) | २३.७४ | शरीराणि परित्यज्य (क्रि) | ७.५ | शमिष्ठातस्थभायि- (सु) | १२.६४ | शशापचवमंछाया (सु) | ८.७७ |
| शरत्पूणैरुसृष्टं (उ) | २४५.२३७ | शराः सर्वनृपसुत (पा) | २४.४० | शरीरांरोग्यकामंतु (सु) | ३४.२८२ | शमिष्ठा यस्य वै भार्या (भू) | ७६.१ | शशापपरमकुटोवायुकि (सु) | ३१.२५ |
| शरदं गुरुहां सर्वश्री (पा) | ७४.६६ | शरास्तद्बाहुहृदये (पा) | २३.५८ | शरीराधे च ते गोर- (सु) | ३४.५६ | शमिष्ठायाः सुतं पुण्यं (भू) | ७८.४६ | शशापभरतः कोध्नाद (सु) | १२.७३ |
| शरद्वीपे कुशस्तं बोमध्ये (स्म) | ६.६ | शरीरं क्लेशितचैव (उ) | ४२.२५ | शरीरिणः शरी (क्रि) | ६.११६ | शयति कन्याकुतपूजनार्थं (पा) | १५.६ | शशापराघवः क्रोधा (उ) | २४२.२७४ |
| शरपंजरमध्यस्थो (पा) | ४२.६३ | शरीरं तस्य राजेन्द्र (उ) | ४७.१८ | शरीरेममतन्वगिसिते (सु) | ४४.१ | शयं सत्य प्रतिज्ञः (पा) | ४६.३५ | शशापललिततत्र (उ) | ४७.१४ |
| शरपंजरसध्यस्थो (पा) | ६१.३७ | शरीरं दह्यते येषां (उ) | २३.३ | शरीरेमातुरशेन कृष्णां (सु) | ८.८ | शर्वस्याथ जटाजूट (सु) | ४३.४०८ | शशापर्युपस्पृश्य- (पा) | ६६.१५० |
| शरभंगाश्रमंगत्वा (स्व) | ३६.४० | शरीरं नैवत्यक्ष्यामि (भू) | ७२.४ | शरीरे रोमहर्षोभूद्गदगदा (पा) | ४.३१ | शर्वयिपुरहर्त्तरं वासुदेव्यै (सु) | २६.२८ | शशापेतिमहारण्ये (उ) | २१६.७२ |
| शरभवर सुनाप्तये (उ) | २०३.६८ | शरीरं प्राप्यते पुत्रैः (भू) | ७८.१४ | शरीरस्यास्य संयोग- (सु) | ४३.३२० | शर्वोवाविषयाधीशः (क्रि) | ५.१३० | शशिरक्षिमहाकौशेन (सु) | १७.३०८ |
| शरभूभाविलम्बाश्चे- (सु) | ४१.३२ | शरीरं ब्राह्मण श्रेष्ठ (क्रि) | १३.५८ | शरयुक्तेन तस्य हस्ता (उ) | २५१.१२ | शवमांसं भक्षयन्तं (सु) | ३६.७७ | शश्वत्कीर्धनिदानेपुयः (स्व) | ३१.८८ |
| शरभैर्मत्तशार्दूलमृग- (भू) | ३२.१२ | शरीरं मानुषं विप्र (क्रि) | ३.२ | शरैः किरंतं वहनमसिना (उ) | १२.३५ | शशंसिपित्रेतत्सर्वं (पा) | १६.१२ | शस्त्र मादाय तीक्ष्ण तु (भू) | ६८.१६ |
| शरभोच्चरत्पतां (उ) | २०४.५१ | शरीरं रक्षणीयं हि सर्वं (उ) | १२६.२१६ | शरैर्व्यस्तो प्रकरणं (उ) | १७.२२ | शशंसमप्येवेद्यानांत (सु) | ४२.८२ | शस्त्राग्नि विपद्गुण्यो (भू) | ८१.६१ |
| शरं वैनिचक्ष्णानाशुदेव (पा) | ४३.५८ | शरीरं सविजयं समाद्रा- (उ) | ३.५ | शरैश्चिच्छेदलटवांगं (पा) | ४३.२८ | शशंसलमणाक्षिप्रं दुःख (पा) | ५८.२१ | शस्त्राग्निविपद्गुण्यो (भू) | ६४.२७ |
| शर वर्षं मयात्युषं (उ) | ११.६४ | शरीरं स्थूल सूक्ष्माभि- (भू) | ६६.६१ | शरैः तमावृतं चक्रे (सु) | ४६.२६ | शशंसवायुदेवाय (उ) | ५.४५ | शस्त्राणां चैव कर्तारः (भू) | ६६.१७ |
| शर वृष्टिसमायांती (पा) | ५१.४३ | शरीरघातार्थाय पूर्वा (भू) | ६७.१०६ | शर्कराकलशंदद्यादे (सु) | २२.२५६ | शशंसुर्वेदेवेशं (उ) | १००.२२ | शस्त्राणि च प्रवक्ष्यामि (सु) | ६.६४ |
| शरसंधं प्रभुं चंतं कोटि (पा) | ५१.३० | शरीर निवृत्तिं दृष्ट्वा (सु) | ३६.४४ | शर्करापात्रसमुक्त (सु) | २१.२५२ | शशंसुब्राह्मणवलंतेतु (पा) | १६.२१ | शस्त्राण्यस्त्राणि (उ) | १५५.२७ |
| शरसंधाननिर्भूतं (उ) | ७१.२३४ | शरीरपरिमाणं स्वांमन्यं (उ) | १२८.२५३ | शर्कराधारस्तस्मादि- (सु) | २१.२७४ | शशकाञ्छलकान् (स्व) | ३०.३३ | शस्त्राण्यस्त्राणि (भू) | १०५.६२ |
| शरान्निमुंचमानास्ते (पा) | ४१.२ | शरीरलक्षणानां च (सु) | ४३.१३८ | शर्कराराघवस्तत्र (उ) | १५.२५ | शशकुर्मस्तुमासेन (सु) | ६.१५६ | शस्त्राण्यस्त्राणि (भू) | ११०.२० |
| शरासनविनिर्भूतं (पा) | १०.५३ | शरीरलक्षणाश्चान्ये (सु) | ४३.१६६ | शर्कराविषययोगान् (उ) | १३२.६३ | शशच्छायांकिततनुं नै- (सु) | ४१.२४ | शस्त्रास्त्रपातनेभीमे (उ) | २४१.६६ |
| शरासने शरान्धास्यान् (पा) | ४१.५ | शरीरशुद्धि माप्नोति (स्व) | २६.४० | शर्करासप्तमीचैव (सु) | २१.२७५ | शशरूपप्रीतच्छन्नापुष्करा (स्व) | २५.२१ | शस्त्रास्त्रनोसमजरं (उ) | १२५१.२५ |

| | | | | |
|---|--------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|
| शस्त्रास्त्र विद्या अग्न्याश्च (उ) ४.३६ | शाखाः शिवाः समा- (सु) ४४.१४४ | शांतोविमत्सरः कृष्णे (पा) ८२.६ | शरीरभेहूपीकेय (पा) ६४.१४६ | शालग्राम शिलायत्र (पा) २०.३२ |
| शस्त्रेण कुरुसंग्रामं (उ) १८.६४ | शाठ्येननमतिथद्यपि (स्व) २०.४१ | शांत्यतीता तथा गांति (स्व) ३४.५ | शाङ्गधारी हृषीकेयः (उ) ७६.४ | शालग्राम शिलायांतु (उ) १२०.४ |
| शस्त्रैरयान्यन्यम (सु) १२.३७ | शाण्डिव्याखंडपत्रैश्च (क्रि) १२.२४ | शांत्यर्थं सर्वलोकानां (सु) २७.२६ | शाङ्गमादाय वारुणी (उ) २४२.२६६ | शालग्राम शिलायांतु (उ) १२०.३१ |
| शाकंमधुरान्नं (उ) ४८.१६ | शांतं च द्विविधं ज्ञेय (पा) १०४.८५ | शापं कौडिन्यमुनिः (उ) १४५.२ | शादूलेनहृलो ज्येष्ठः (स्व) ३०.३५ | शालग्राम शिलायास्तु (स्व) ३१.१३५ |
| शाकंमधुरान्नं च (उ) ६३.१७ | शांतं तु तपसोपेतं (भू) ३२.६६ | शापंत्वं दत्तवान् (उ) २०५.३० | शालग्रामं च कुब्जाम्नां (स्व) ३३.३४ | शालग्राम शिलायेन (क्रि) २०.१२५ |
| शाकं यच्छतिधोमर्त्यो (त्र) २४.२६ | शांतं दातं तपोयुक्तं (भू) ३६.११० | शापं दत्त्वा ततो यान्ति (भू) ६७.३२ | शालग्रामइतिख्यातो (स्व) ३८.४२ | शालग्राम शिलायेपां (क्रि) २.६४ |
| शाकटभेदमत्युग्रं (उ) ३३.७ | शांतं मुनिं यम नियोग (सु) ३३.१६३ | शापं दास्यामि काकु (उ) २४४.४६ | शालग्राम द्वारकायां (पा) ७८.३६ | शालग्राम शिलावापि (उ) ८५.८ |
| शाकद्वीपपंच वक्ष्यामि (स्व) ८.७ | शांतं चित्तो निरपराधः (उ) १२४.७६ | शापं प्रदत्तं सश्रुत्य (पा) ६७.६८ | शालग्राम नमस्कारो (उ) १२०.१४ | शालग्रामशिला शुद्धा (ऊ) १३१.१ |
| शाकद्वीपस्यसंक्षेपांयथा (स्व) ८.११ | शांतं कष्टयानिरीक्ष्याव (पा) १०५.२२० | शापं मुमोचसोत्रैव (उ) १२६.२७६ | शालग्राममयी मुद्रा (उ) २३.४५ | शालग्राम शिलास्पर्शा (पा) ७६.३ |
| शाकप्रदोयातिविप्र (क्रि) २०.१३६ | शांतः स्याद्यदि च (पा) १०४.१०३ | शापं त्रयं प्रदास्यामि (भू) १२.१२० | शालग्रामशिलाहृदवा (उ) १२०.६ | शालग्रामस्य दानस्य (उ) १.३६ |
| शाकंभरीतिविख्यातात्रिषु (स्व) २८.१४ | शांतादांताद्विजायेतु (सु) १७.७६ | शापः पाप फलं विप्र (उ) १२८.१३१ | शालग्रामशिलांघोर्वै (त्र) २४.२० | शालग्रामाः समाः (पा) २०.३३ |
| शाकम्भरीं समासाद्य (स्व) २८.१७ | शांताः समस्तदोषास्ते (उ) ७८.७८ | शापं प्रदानं श्रुत्वंस (सु) १८.२६१ | शालग्रामशिलाग्रे (उ) २३.४३ | शालग्रामेणोयंत्रे (पा) ७६.१ |
| शाकादिनापिहृषितुन्य (सु) १८.२२२ | शान्तिं कृत्वात्म मनसा (सु) १२.४ | शापयुक्ताविमो चोभी (भू) ८४.४ | शालग्रामशिलाग्रे (उ) ३७.४५ | शालग्रामैकयजनाच्छत (पा) ७६.४ |
| शाकादिसर्पिषांनितं (पा) ११४.१६६ | शान्तिप्रदानात्सर्वेषां (सु) २४.३१ | शापागते व साकन्या (क्रि) ६.८५ | शालग्रामशिलाग्रे (उ) १२०.२४ | शालग्रामोद्भूवं तीर्थं (उ) १३३.१३ |
| शाकान्येतानिवज्यानि (उ) ६४.१८ | शान्तिमेव प्रवक्ष्यामि (भू) १३.२४ | शापापत्तो सनकादीनां (उ) २४२.३३४ | शालग्राम शिलाग्रे (उ) १२०.३८ | शालग्रामोद्भूवोदेवो (पा) ७६.१४ |
| शाकाहारस्ययत्सम्यगवर्चं (स्व) २८.१८ | शांतिरस्तु शिवं चास्तु (उ) ७८.७६ | शोपोयोभवतादत्तो (सु) ३१.३५ | शालग्राम शिलापुण्या (उ) १३१.३ | शालंतेनविनियुक्तं (पा) ५१.६१ |
| शाकैर्बहुविधाकारैर्- (सु) ३६.६५ | शांतिरस्तु शिवं चास्तु (उ) ७८.८० | शोपोहिलोक मातृणां (उ) १४४.१३ | शालग्राम शिलाविव- (उ) १२०.८ | शालमुत्पाद्यतस्मा (पा) ६४.१४ |
| शाकैर्मूलैः फलैर्वीपियेन- (सु) १६.३४ | शान्तिं ब्रजतभद्रवोमा- (सु) ४०.१५७ | शारदाञ्ज निमो पादौ (उ) २४६.३१ | शालग्रामशिलाविवं (उ) १२०.२३ | शालहस्तं समायांतं (पा) ६४.१५ |
| शाखाप्राप्त्यतिष्ठं भूमौ (क्रि) २४.४४ | शांतिषुमृगयूषैषुदशा (उ) १७६.१५ | शारदेनतुषाण्येन (सु) ३४.१६५ | शालग्रामशिलाभूतां (उ) ३५.७ | शालानिहोत्रिणं (सु) ३४.४०१ |
| शाखासृगविमंचाशु (उ) १२६.१५६ | शांतिर्वातदिनपरैरर्चं (उ) ५१.५२ | शरीरं मानसं दुर्लभं संतापं (उ) १५.११ | शालग्राम शिलायत्र (उ) ७५.२ | शालायां ब्रह्मणः कृपाति (सु) १७.२४४ |



श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४०२

| | | | | |
|--------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|--|-------------------------------------|
| शालाह्नस्तदापालः (पा) ६४.१७ | शिक्षितागुरुणातेन (उ) २४४.१५ | शिविलस्यापि चार्तस्य (भू) १.३५ | शिरसातुततोबंशमातरं (सु) ४४.१०६ | शिलासंपुजयेद्यस्तुनित्यं (पा) २०.१७ |
| शालिग्राम शिलां तत्र (क्रि) २२.१०६ | शिलया त्वं विहीनश्च (भू) ७८.२१ | शिवोपापकरोप्रोक्ता (ब्र) २१.२७ | शिरसाबहुशोनत्वामातरं (पा) १३.२१ | शिलाद्वादशभोवैश्य- (स्व) ३१.१२४ |
| शालिग्राम शिलादानं (क्रि) २०.१२२ | शिलराश्रेगतः पूर्वं तत्र (पा) १८.२६ | शिशपांस्तत्र वृक्षांश्च (पा) १.२३ | शिरसाभार्यया सार्धं (भू) ६८.२६ | शिलापदे समासीना (भू) १०१.३७ |
| शालिग्राम शिलायां (पा) ७६.१२ | शिलराज्चहृदे पुण्ये (भू) ३०.२८ | शिश्राचपिच्छलां चैव (स्व) ६.२४ | शिरसायो वहेद्भवत्या (क्रि) ७.७ | शिलाः पर्वत श्रुगाभाः (पा) ३४.५४ |
| शालिग्रामे महाक्षेत्रे (भू) ५.१३ | शिलराणि विशीर्णानि (उ) ५.३५ | शिविका तस्य आयाति (भू) १४.३८ | शिरस्तेपातयाम्या (पा) ६१.३५ | शिलाभिः पर्वतैर्वृक्षैः (पा) ४४.२६ |
| शालिग्रामे महादेवी (सु) १७.१६१ | शिलराण्यप्यशीर्यत (सु) १५.६५ | शिविकायाः प्रदानेन (भू) ६८.६ | शिरस्त्वं कवचं विभ्रदमेद्यं (पा) ६०.४० | शिलामुखाश्लोहाद्यै (उ) २२३.५ |
| शालितंडुलगोघूर्मं (पा) ६८.१२ | शिलरीणां प्रदात्रीणां (सु) ३४.१६१ | शिवि रौशी नरो राजा (उ) १६६.६ | शिरस्त्राणांनिजोत्तंसे (पा) १२.१४ | शिलयाताडितस्तस्य (पा) ४४.११ |
| शालिहोत्रस्य राजेन्द्र (स्व) २६.१०२ | शिलरैरुल्लिखद्भिश्च (भू) ८३.५२ | शिविः सपृच्छयामास (उ) ८१.२२ | शिरः स्थाविपदस्तेषां (क्रि) २१.७० | शिवकन्था वतपतिः (उ) ७१.२६३ |
| शालैः स्तालैस्त (भू) ४६.२ | शिलातेद्वादशांगुल्ये (पा) ११४.३१५ | शिरः कबं धहस्तौती (उ) १०३.१७ | शिरस्यंजलिमावाय (सु) १४.१२१ | शिव कांची शिवे (उ) २००.६५ |
| शालैस्तालैस्तमालैश्च (उ) १२८.१७१ | शिलायां कर्णयोश्चैव (सु) १४.१६० | शिरः कमंडलुगतं (पा) ११४.३५६ | शिरस्यंजलिमावाय (ब्र) ११.४५ | शिव कांच्याश्च माहा (उ) २२२.३६ |
| शालो दुदोह पुष्पांगः (भू) २६.७१ | शिलायां श्रीधरंन्यस्य (उ) ७८.१७ | शिरः कराम्यांपरिपृष्टा (पा) ११४.१८१ | शिरस्यंजलिमावाय (क्रि) ११.१२६ | शिव कुंडे शिवानंदानं- (पा) ७७.३७ |
| शालोपाप्ताचपुष्पात्मा (भू) ५.४२ | शिलायां श्रीधरंन्यस्य (उ) ७८.१७ | शिरः शशांकायनमो (सु) २६.१३ | शिरस्थाध्यायतंपुत्र- (सु) १८.३७१ | शिव शिशूलविध्वंसी (उ) ७१.१७२ |
| शास्त्रं निदाकरो नित्यम् (ब्र) १७.१५ | शिलासहस्रं रथ्युगैः (स्व) १५.१६ | शिरश्चोपत्यतरसा (उ) ७.२० | शिरस्याध्यायदेवं (उ) २८.७ | शिवदीपाज्य हरणात् (पा) १०६.५४ |
| शास्त्राणि चैव गिरिजे (उ) २३६.१३ | शिलामूत्र विहीनस्तु पा ६४.२४ | शिरश्छेता भवत्प्रेष (भू) १२४.१७ | शिरांश्चिभमहाध्यायाणां (पा) ४२.५० | शिवदुर्गं घनीरंघ्र- (पा) १०१.१६ |
| शास्त्रानभ्यसनाच्चैव (उ) १६३.७७ | शिलामूत्र विहीनस्तु (पा) ६४.३० | शिरश्छेदात्कपालोत्सं (सु) १४.१३१ | शिरांसिघ्नयन्तृणाम (उ) १८६.१८ | शिवदूतीव्रीध्येकं (सु) ३१.१०५ |
| शास्त्राव धारणं कार्यं (उ) ६१.४४ | शिला मूत्र विहीनस्तु (भू) ६१.१६ | शिरश्छेदो भवेत्तस्य (भू) १२४.२४ | शिरांसिघ्नयन्तृणाम (उ) १८६.१६ | शिवदूतिमयाप्येवंता (सु) ३१.१३५ |
| शास्त्रैश्चपुजयेद्देवीम् (ब्र) ११.३८ | शिला मूत्र विहीनस्तु (भू) ६१.२५ | शिरः संलग्नमालोक्य (उ) ७.२१ | शिरोभिः प्रपतद्भिश्चाप्य (सु) १६.८६ | शिवदूती तथा देवी (सु) १५.२७५ |
| शास्त्रोक्त विधिना चक्रं (ब्र) ११.५५ | शिखीदीर्घं तमाश्चैव (उ) १३५.४० | शिरः सर्वाङ्ग सम्पन्नं (उ) १५.३२ | शिरोभिर्गङ्गनं व्याप्तं (उ) ११.६६ | शिवद्रव्यापहारस्य (पा) १०६.१०० |
| शिक्षित व्यासदाविद्या (क्रि) ४.३० | शिजानमणिमंजीर (पा) ७४.७१ | शिरसा चार्घ्यमादाय (स्व) १०.२२ | शिरोहीने च कायेस्मिन्किं (उ) १२.१८ | शिवध्यान परोभूत्वा (उ) १५१.२१ |
| शिक्षितस्तेनपूतात्मा (उ) १७६.६१ | शितशस्त्रक्षतांगीमां (उ) २२१.१७ | शिरसांजलिमादाय (क्रि) २.४१ | शिरोहीनोभवांश्चापि (पा) ११०.६८ | शिवनारायणेत्येवं (पा) ११५.६६ |

| | | | | |
|-----------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|---------------------------------------|--------------------------------------|
| शिवनारायणो दृष्ट्वा (पा) १०५.५२ | शिव शर्माथ शुभ्राव (भू) ५१.४५ | शिवेनसहयोद्धव्यं (पा) ४०.५३ | शिष्याणां परमं पुष्टं (भू) ८५.४ | शातलोवातिल भूमि (सु) १५.२७ |
| शिवे निशम्य पुत्र (उ) २०५.१५ | शिवशर्मैति विख्यातो (भू) १.१३ | शिवेनसहसायोद्धु (पा) ४५.५३ | शिष्याद्गुरुःस्त्रियोभर्ता (उ) ११२.२६ | शोतस्य वारणायायि (क्रि) १०.१५ |
| शिवराघव संवादं (पा) ११७.२४२ | शिवस्तस्मिन्नगेमुक्ते (पा) ४४.२१ | शिवेनिशम्यपुत्र (उ) २०५.१५ | शिष्यान्प्रतिजगादाय (पा) ५६.५२ | शोतस्य वारणायायि (क्रि) १४.२४ |
| शिवस्य हृदयं विष्णु (भू) ७१.२१ | शिवस्तस्मैशंखचक्र (उ) २५१.५ | शिवोपवीतकैकर्यप (पा) ११४.३४६ | शिष्यान्मोहयसेमेत्वं (सु) १३.२८८ | शीनातपपरिविलिष्टो-(उ) १२६.७७ |
| शिवपदवचनाद्वय (पा) ११७.२१५ | शिवस्यकन्यया वीर (भू) ११३.३१ | शिवोभक्त्यावशी कृत्य (पा) ४२.१७ | शिष्योविद्याफलंभुङ्क्ते (स्व) ५१.४४ | शीतांशुनिहतास्तेतुदैत्य (सु) ४१.१४१ |
| शिवपूजनवेलायां (उ) ५२.२४ | शिवस्यचरणोपस्थे (पा) ४५.५२ | शिवोविष्णोर्नवाभेदोन-(पा) १०.६६ | शिष्योहृतस्यभूपाल (उ) १८८.३७ | शीतांशुजालनिर्दग्धाः (सु) ४१.१४० |
| शिवपूजां प्रकुर्वाणो (उ) ८२.२६ | शिवस्यतीर्थराजस्य (उ) २२०.१ | शिवोहृरिमथप्राहमा-(पा) ११४.२८६ | शिष्योहिमेकचः पूर्वहो (सु) १३.२६० | शीतांशुरमृताधारश्च (सु) ४१.१३१ |
| शिवपूजापरोभूत्वादि (पा) १०६.६६ | शिवस्यनिःसृतेनासौ (उ) १८.८३ | शिशिरे च वसन्नप्सु (उ) १७८.१७ | शोघ्रं गतोस्मिन्विप्रेण (सु) ३२.२५ | शीततिः कपित्थवपुष्टज (उ) २०४.४८ |
| शिवपूजा प्रभावेन (उ) ५२.१८ | शिवस्यशिवरूपस्य (पा) १०५.१०७ | शिशिरेण च पुण्येन (सु) ३६.६५ | शोघ्रं तथोद्यमः सर्वे-(सु) ४३.११४ | शीते धुरां बुवाराभिः (क्रि) २१.५६ |
| शिव प्रदक्षिणी कृत्य (पा) १०६.७६ | शिवस्य हृदयं विष्णु (भू) ७१.२१ | शिशुत्वंमावमंस्थामि (सु) ४४.१६४ | शोघ्रं संपूरयामास (उ) १७.१५ | शीतोष्णरहितेपाद (पा) १०५.२५ |
| शिव प्राहन्ते ज्ञानं (पा) १०५.२२२ | शिवस्यापि सुपुण्यस्य (भू) १०३.६ | शिशुपालोपितस्मैवतीर्थ (उ) २२२.८२ | शोघ्रं स्वर्धमाकृष्ट (उ) १७.४ | शीतंमन्मदिरं च (क्रि) २.६६ |
| शिव प्राहन्ते चात्र (पा) ११२.१३८ | शिवादेवी च शंभुश्च (पा) ११७.१७६ | शिशुपालोहृतो यत्र (उ) २२२.८३ | शोघ्रं स्नापयतन्वर्षी (पा) १४.१६३ | शीतंपत्रेभ्यः प्रोतः (पा) १०४.१३३ |
| शिवभक्तः शिवे राजन् (उ) २२२.४५ | शिवानुमत्या ब्रह्मापि (पा) ११४.१३२ | शिशुपालो हृतोयेन (क्रि) १६.३६ | शोघ्रं गोरोधकश्चान्यः (पा) ६४.७६ | शीर्णपर्वणकलाहारः (सु) १५.२१८ |
| शिवभक्ति समासीनो (भू) १०१.५१ | शिवापकारिणं चैनं-(पा) ११०.३६ | शिशुपालोदुष्टचरितं-(पा) १०७.८५ | शोघ्रं जगामभगवान् (सु) ४३.११५ | शीर्णपरां शनो वास्या (स्व) ५८.३० |
| शिवराघव संवादं (पा) ११७.२४२ | शिवालये विशेषेण (उ) २३.३६ | शिवनं मे ब्रह्मणोरूपं (सु) १७.६१ | शोघ्रं प्रसादास्त्वेकोधा-(सु) ६.६६ | शीलं रक्ष्यं सदाश्रीभिर्-(स्व) ३१.६२ |
| शिवलिगार्चननाम (पा) १०६.७२ | शिवविरोधीनरोराजा (उ) २२२.६६ | शिवनस्यवायवापापं (पा) ११२.२६ | शोघ्रं मागत्यलिगातेपदा(उ) १५१.२६ | शीलमेवद्वितीयं च (पा) ६०.२६ |
| शिवशर्मैतिविप्रेन्द्रः (उ) २००.८६ | शिवैतवपुरः सर्वे (उ) २११.१ | शिखान्नेविवरं चक्रं (पा) १०६.१०८ | शोघ्रं मागत्यसेनानीर्ज-(उ) १७.५६ | शीलानाहार्यगंधादय (सु) ४०.१४२ |
| शिवशर्मन्नयं बालः (उ) २००.३३ | शिवैतिपदमुच्चार्य (पा) ११४.२६५ | शिष्टाशिशिष्ठगन्या (पा) ११४.२८२ | शोघ्रं मानयतं पापं (उ) २११.६ | शुक एवं महाप्राज्ञश्च्य-(भू) १२३.५४ |
| शिवशर्मा द्विजः (उ) २००.३१ | शिवैतिमंगलनाम-(पा) १०६.७८ | शिष्यः कृत्स्नव्यसमान् (क्रि) १७.२११ | शीतमध्वाकन्दनं च (भू) ७८.२६ | शुकश्च एकस्तत्रास्ते (भू) ८५.३० |
| शिव शर्माथविप्रेन्द्रः (उ) २०१.२ | शिवेननिहताः संख्ये-(पा) ४४.७६ | शिष्यस्य लक्षणं प्रोक्तं (उ) १.३७ | शीतमप्युदकंगागं (क्रि) ७.७१ | शुकः सूतस्तथाव्यासो (क्रि) ११.१३० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

४०४

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|--------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|
| शुकस्य च यथाजन्म (सृ) | २.४० | शुक्रोभूत्वास्थितस्तम (सृ) | १३.२८३ | शुक्लांबरधरः पद्मसूतः (सृ) | २१.२१७ | शुद्ध काञ्चनपूजाभाः (पा) | ७०.१२ | शुद्धिविज्ञान संपन्न (भू) | १७.२१ |
| शुकस्यध्यानभावेन (भू) | १२३.४५ | शुक्लकृष्णानुभोपक्षी (स्व) | ३८.१६ | शुक्लामरेखः शोभादयः (पा) | ७८.२८ | शुद्धगेहेऽप्यवा शुद्ध (पा) | ११५.२४ | शुद्धे चतासामनसिगृहातः (सृ) | ३१.१३७ |
| शुकींश्येनो च भासी- (सृ) | ६.६३ | शुक्लतीर्थ महापुण्यं (स्व) | १६.१४ | शुक्लायं वापि कृष्णायाम् (क्रि) | २२.६२ | शुद्धचीनांशुकच्छत्र (सृ) | ४३.८५ | शुद्धदेशे समासीनो (स्व) | ५१.६८ |
| शुकेनोक्तकदारान्ते (उ) | १६८.६६ | शुक्लतीर्थतुयानारी- (स्व) | १६.३१ | शुक्लेऽसितेचयेविप्र (पा) | ६६.६६ | शुद्धजांबूनदिनभं शंख (उ) | २५३.७२ | शुद्धेन वल्लितप्तेन ब्रह्मा (उ) | २२४.६४ |
| शुकैर्यत्राभिहस्यते पद्य (सृ) | ४३.४५० | शुक्लदंतोभस्मदिग्धोमंत्रे (पा) | १०८.४६ | शुक्लेकुलेवतीर्णो (उ) | ८०.१६५ | शुद्धजांबूनदप्रस्यः (उ) | २४२.४६ | शुद्धोसि तपसा च त्वं (भू) | ३६.११ |
| शुकोयंपजरस्थस्तेना- (उ) | २०६.३८ | शुक्लपक्षस्यपूर्वाह्नि (स्व) | ५८.३ | शुक्लेचकाभवेद्देव (उ) | ४३.३ | शुद्धत्वं सप्तमं बाले (भू) | ३४.३२ | शुद्धयतिनात्रसंदेहस्त (उ) | १२०.२६ |
| शुक्तिकर्णाविश्रुपादोशुचि (सृ) | २१.५७ | शुक्लपक्षेतृतीयायां (सृ) | २२.६६ | शुक्लेवायदवाकृष्णे (उ) | ६३.३ | शुद्ध धर्म करो नित्यं (भू) | १४.२८ | शुद्धयर्थमस्यपापस्य (सृ) | १४.७७ |
| शुक्तिगंधाक्षतान् (सृ) | २०.६३ | शुक्लपक्षेपिबन्धे (सृ) | १५.३३८ | शुच्यश्च शुची देशे (भू) | ६६.२३ | शुद्ध प्रायाणिज्योतीषि (सृ) | ४०.१६० | शूनः सखोमुनीन्सर्वानु (सृ) | १६.२७३ |
| शुक्तिकांशिरसस्थाप्य (स्व) | १८.४६ | शुक्लपुष्पाक्षतैर्भक्त्या (सृ) | २२.१८६ | शुचि रक्षति भूतानि (उ) | १२६.१३६ | शुद्ध सत्वमपिरूप (उ) | २०१.५ | शूनतदाभक्षितं च सर्वं (उ) | १५४.२५ |
| शुक्तिमतीमनंगां च (स्व) | ६.३० | शुक्लप्रतिपदाया (पा) | ५६.८० | शुचिरेक प्रदेशोपि (भू) | ६६.७५ | शुद्ध सत्व मये लोके (उ) | २२८.७३ | शुनीयुगल मादावमृग (उ) | १८८.२३ |
| शुकमज्जातयालाला (भू) | ७.५१ | शुक्ल माल्यांबरधरः (सृ) | २२.१३६ | शुचिरोमामहावक्षाः (सृ) | १८.३० | शुद्ध सत्वं प्रेमपूर्णं (पा) | ६६.६३ | शुभकैतमुखेहर्तुं (उ) | १२.५ |
| शुकविलन्मिन्दवासः (पा) | ११०.६२ | शुक्लरूपान्वितं बालं (सृ) | १८.२८८ | शुचिर्वक्षोगुणोपेतो (सृ) | १५.२८२ | शुद्धसर्विप्रभालाभं (उ) | १७५.१८ | शुभं गर्भमधर्तनमदिति (सृ) | ४१.२५६ |
| शुकः पितामेराजेन्द्रत्वं (सृ) | ३७.३१ | शुक्लवर्णातिविनि (सृ) | ४६.१३६ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धस्फटिकसंकाशं (पा) | ७०.२७ | शुभं तत्सकलं कर्म (क्रि) | २०.१३२ |
| शुकस्य सहरक्तस्य (भू) | ६६.३० | शुक्लवस्त्रैरलंकृत्य (सृ) | २१.२६४ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धस्फटिक संज्ञाशं (पा) | १०५.२२६ | शुभं मुहूर्तमवीक्ष्य (उ) | १६०.२७ |
| शुक्रादि जायते कायः (भू) | ६४.७२ | शुक्लक्षततिर्लंरचकार्या (सृ) | २२.७२ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धात्मा केवलो नित्यः (भू) | १२०.१७ | शुभं वाप्यशुभं कर्म (क्रि) | ६.८५ |
| शुक्रार्धं कुडवं ज्ञेयं (भू) | ६६.६५ | शुक्लाम्नी ब्राह्मणे (उ) | १५१.११ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धात्मा च परं ब्रह्मा (भू) | १२०.३० | शुभं वाप्यशुभं कर्म (क्रि) | १३.६५ |
| शुक्रैरक्षितः सोय (पा) | १०७.६० | शुक्लाङ्गारकसंयुक्ता (सृ) | ३२.४३ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धांतः करणोजातः (उ) | १५४.२४ | शुभं सदास्तोमिमहानु- (सृ) | १४.१४३ |
| शुक्रैणापितपस्तप्तं (उ) | १५६.५ | शुक्लाभिजनसंपन्नाः (स्व) | ५.३ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धाभेकादशिचापि- (उ) | २३४.२१ | शुभं सनातनं ज्योतिः (भू) | ६५.१६ |
| शुक्रोपिभगवन्त (पा) | ११४.८२ | शुक्लांबरधरंशांतं (स्व) | ४२.१६ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धालीलावतीभूत्वा (उ) | १२१.३४ | शुभ कर्मा शुभं वापि (क्रि) | २०.५८ |
| शुक्रोबृहस्पतिश्चैव (सृ) | १८.५६ | शुक्लांबरः कृष्णैः (स्व) | ५७.२५ | शुचिर्भूत्वानरः स्नात्वा (स्व) | १८.४४ | शुद्धिमाञ्जानसम्पन्न (पा) | ८६.३२ | शुभ कर्मा शुभं वापि (क्रि) | २३.४५ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|-----------------------------|---------|--------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| शुभमायतनं विष्णो (उ) | २८.२४ | शुभस्तमागतं वृद्धवा (उ) | १७.२८ | शुश्रूषतीस्वंपतिमिति (पा) | १५.३ | शूद्रस्यपक्वयजेन (स्व) | ३१.६३ | शून्यं दिनं न कर्तव्य- (भू) | ३६.५६ |
| शुभयोगे शुभे लग्ने (उ) | १६८.५ | शुभस्तेनादितः शक्र्या (उ) | १७.३३ | शुश्रूषते सुतो भूत्वा (भू) | ६२.७६ | शूद्राचारपरिभ्रष्टो (भ) | १४.१६ | शून्यं येन समाकीर्णं (सु) | १५.३६६ |
| शुभवेपथेणसंयुक्तो (पा) | १६.५८ | शुभादयस्तदादित्या (उ) | १८.६० | शुश्रूषध्वं महाभागा (भू) | २८.१० | शूद्राणां चैव भवति (पा)- | ८४.५३ | शून्यमार्गं कथं याति (उ) | १३२.१०३ |
| शुभाङ्गदोमुञ्जस्तस्य- (पा) | ४०.३७ | शुभादीनां तु वीराणां (उ) | ८.२ | शुश्रूषतं महात्मानं (भू) | ६२.२ | शूद्राणां तु कृषिर्द्धर्मो (पा) | ११४.४१४ | शून्याएव दिशः सर्वा- (पा) | ६६.७५ |
| शुभानिदत्त्वा वस्त्राणि (पा) | ११५.२८ | शुभासुरोदेवगणा (उ) | ६.१२ | शुश्रूषस्वमुनीनुगत्वा (सु) | १.१५ | शूद्राणां पुण्य जननं (उ) | १.७० | शूरश्चक्रुर्न विद्यश्च (सु) | ३७.१४ |
| शुभाग्रहाभूतपिशाच (उ) | १३०.१६ | शुभं प्राहृततो रामो (पा) | १०४.१३१ | शुश्रूषां कुरुते योहि (भू) | ५०.२२ | शूद्रादिजाति बाह्याश्च (उ) | ७१.५६ | शूराणामुत्तमो धर्मो (पा) | ११६.२८३ |
| शुभार्थं च प्रविदामिकथं (पा) | ८७.६३ | शुभे निक्षिप्यतरसाययो (उ) | ७.४८ | शुश्रूषां वाकरिण्यामि (भू) | ४.१८ | शूद्रादिजेपुत्रेभक्ताः (पा) | ३.१६ | शूरैश्च पुरुषाकारैः (भू) | ५८.२६ |
| शुभाशुभं च भूपालं (भू) | ७७.२८ | शुभोधं कर्तुं कथं वत्वा (उ) | १२.६ | शुश्रूषाभिस्तपोभिश्च (भू) | ६६.२७ | शूद्रान्नं च सदा वनातु (सु) | १६.३५२ | शूलस्कंधगतं कृत्वा (पा) | १११.३४ |
| शुभाशुभं फलं चापि (भू) | ६६.६ | शुभोनिशंभः फेकारो (उ) | १८.४ | शुश्रूषामखिला मेव (उ) | १८५.४६ | शूद्रान्नेन तु भुक्तेन (सु) | ३२.४७ | शूलपाणि महात्मा (स्व) | २६.६७ |
| शुभाशुभं फलतत्र (भू) | ६८.४ | शुभोमेघं समावृद्धो (सु) | ४२.७८ | शुश्रूषितानगुरो व (पा) | ६५.१४८ | शूद्राभवति वेदासा (उ) | ८२.३२ | शूलभेदेति विख्यातं (स्व) | १८.३ |
| शुभाशुभं भात्मकाः प्रतास्त- (सु) | १०.३७ | शुशांताश्चकुलीनाश्च (सु) | ३७.६५ | शुश्रूषपरिधर्मपु (सु) | ३६.१३३ | शूद्रास्तु मल्लकानित्यं (स्व) | ८.३७ | शूलहस्तं समायान्तं (पा) | ३४.७५ |
| शुभे काले समायाते (उ) | ७४.१६ | शुश्रूषेसीतयादेव्या (उ) | २४३.२२ | शुष्काकण्ठचयं (उ) | १५.६६ | शूद्रेणदीक्षितोयस्तु (उ) | ६४.६६ | शूलान्यध्वसिपुः केचित् (क्रि) | १५.४६ |
| शुभे देशे महाराजपुण्ये- (स्व) | १०.१७ | शुश्रूष गीतं मधुरं (भू) | १११.१५ | शुष्काभस्त्रायाश्चासं (भू) | १२०.३७ | शूद्रैपुमासमाशौचं (सु) | १०.३ | शूलसिपट्टीश्वरैः (सु) | ५.७७ |
| शुभेन संप्रतिव्यक्ता (उ) | १८.३४ | शुश्रूष गीतं मधुरं- (पा) | ११४.१६२ | शुष्करस्य च माहात्म्यं (उ) | १६.४ | शूद्रैर्वाथमहाभागं (उ) | ८६.४० | शूलिकाप्रोतनं कर्म (उ) | १४१.३२ |
| शुभे मुहूर्ते सुदिने शुभ (पा) | ४.४७ | शुश्रूषवचततोवाचं देव- (सु) | ३३.११४ | शूद्रमां विद्धि काकुत्स्थ (सु) | ३५.८५ | शूद्रोच्छिद्यदाभुंक्ते (त्र) | १६.७ | शूलिदत्तवरोमस्तः (त्र) | १३.२३ |
| शुभो शुभोवा शब्दोरे (सु) | १५.७६ | शुश्रूषावेदो वचनं (भू) | १०२.४३ | शूद्र राज्ये च न वसेत (स्व) | ५५.२१ | शूद्रोपि परया भक्त्या (सु) | २६.६ | शूली मुण्डी च नग्नश्च (सु) | ५.३७ |
| शुभ्रां दराण्यवरावलिः (सु) | २११.६७ | शुश्रूषावधुं गली पुत्रो (उ) | १६७.८१ | शूद्रः सुखं प्रमुंक्ते च (भू) | ८७.३८ | शूद्रोभीमो द्वापरे च (त्र) | १४.१५ | शूलेन च ततो दैव्यं (सु) | ४६.८२ |
| शुभ्रांशुकोटिसंकाशे (उ) | २२६.१२५ | शुश्रूषावासी महाराजो (पा) | २०.२ | शूद्रस्तपतिदुःखिस्तेन (सु) | ३५.५२ | शूद्रो विप्रस्य तत्रस्य (भू) | ६७.६२ | शृंगतीर्थं ततो गच्छेत् (स्व) | २१.३२ |
| शुभ्रेणालिकेरेण (उ) | ३४.६६ | शुश्रूषे परमं दिव्यं (भू) | ७७.३४ | शूद्रस्तु मूल मंत्रेण (उ) | ५५.४२ | शून्यं तटं खिलं विश्वं (उ) | २२७.१८ | शृंगवांसु महाभागा (स्व) | ३.७१ |
| शुभ्रप्राणं समं ग्रामे (उ) | ८.१२ | शुश्रूषणं महाभाग (भू) | ४.१७ | शूद्रस्तृष्णास्मरन् (सु) | २४.४५ | शून्यं दिनं न कर्तव्य- (पा) | ६७.३३ | शृंगवीणावैणुवेत्र- (पा) | ७०.२३ |

| | | | | |
|------------------------------------|------------------------------------|---|------------------------------------|-------------------------------------|
| शृंगशब्दाभिधानानि (सु) १८.२४२ | शृणुत्वं शुनि वक्ष्यामि (सु) ७७.२१ | शृणुदेवेन्द्रप्रवक्ष्यामि (उ) १५३.६ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) ४४.३ | शृणुमे वाक्यमर्थोक्तं (पा) ५६.५६ |
| शृंगशब्दाभिधानानि (सु) ३३.३८ | शृणुत्वमिहदेवर्षे (उ) ६४.४ | शृणुदेवेन्द्रवक्ष्येहमुपायं (उ) १२७.११४ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) ६८.१ | शृणु याचकैव योराजन् (उ) ५३.३७ |
| शृंगस्य च विविक्ष्ये (पा) ११४.३२६ | शृणुदुत्तमयापूर्वमथितः (उ) ६७.६ | शृणुद्विजमहाबुद्धे (पा) ६७.७८ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) ७१.७३ | शृणुयात्कीर्तयेन्नित्यं (पा) ८०.२१ |
| शृंगारिणश्चनर्कधोरायु- (सु) ४५.१३१ | शृणुदूतसंबन्धेनमम- (उ) ५.२२ | शृणुध्वमिच्छतेवक्ष्मि (उ) १२६.१०० | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) १६५.५ | शृणुयादेक चित्तस्तु (उ) १६८.२५ |
| शृंगारभूषणं वेवं कृत्वा (भू) ५०.४२ | शृणुदेवजगन्नाथ (ब्र) १३.२२ | शृणुध्वं च पुरावृत्तं (पा) ६६.३१ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) १६५.२७ | शृणुयाद्वा तथा भवत्या (उ) २४४.६३ |
| शृंगाराद्या रसाः सर्वे (भू) ४६.२६ | शृणुदेवममज्ञाप्यमेक (सु) ३७.७८ | शृणुध्वं देवता योमां (उ) २४३.४५ | शृणुपञ्चीद वक्ष्यामि (उ) १८४.६७ | शृणुराघव प्रमथानां (पा) ११७.२१६ |
| शृणुकांतवचोमह्यं (उ) ७७.१७ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (भू) १२१.४ | शृणुध्वं पुत्रकाः सर्वेजय (भू) १०.१० | शृणु पराशरमेतः (उ) १६८.१०१ | शृणुराजन्कथां दिव्यां (उ) २०७.३ |
| शृणुकांत समायातः (भू) २०.३० | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) ३४.५६ | शृणुध्वं मुनयः सर्वे (य) ६.५ | शृणु पुत्र कथारंभ्या- (सु) ४७.२५ | शृणु राजन् वहितो (स्व) १०.१५ |
| शृणुकांत हितं वाक्यं (उ) ६०.४५ | शृणुदेविप्रवक्ष्यामि (उ) ७२.१७ | शृणुध्वं मुनयः सर्वे (उ) ७१.३ | शृणु पुत्र वचः सत्यं (पा) ६८.८८ | शृणुराजन् प्रयागस्य (स्व) ४२.१ |
| शृणुकांतैवया प्रोक्तं (पा) ५५.३४ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि ७४.१ | शृणुध्वं मुनयः सर्वे (उ) २३३.२ | शृणुपोष्ये महाराज (ब्र) ११.१६ | शृणु राजन् प्रयागस्य (स्व) ४४.१ |
| शृणुतद्विजशार्दूलो (उ) २०८.२ | शृणु देवि प्रवक्ष्यामि (उ) १३४.४ | शृणुध्वं मुनयः सर्वे (पा) १०३.१६ | शृणु प्रयागमाहात्म्यम् (स्व) ४६.८ | शृणु राजन् प्रयागस्य (स्व) ४७.१ |
| शृणुतस्यतुदै पुण्यं (क्रि) २०.१३५ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) १४३.१० | शृणुध्वं योगिनः सर्वे (उ) २२३.१४ | शृणुष्वनूकदितमन्येवां (उ) १२६.१४ | शृणुराजन् प्रयागेतु (स्व) ४५.२ |
| शृणुतस्याः प्रवक्ष्यामि (उ) ४६.५ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) १४५.५ | शृणुध्वं संहिताः सर्वे (स्व) १६.४ | शृणुब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि (उ) ३७.७६ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (ब्र) १३.१० |
| शृणु तारकशास्त्रायं (सु) ४४.१६३ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) १७४.१ | शृणुध्वमृषयः सर्वे (स्व) ५१.५ | शृणु ब्राह्मणमृतांतं (उ) १८.११ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (ब्र) १३.५० |
| शृणु त्रयोदशाध्याय (उ) १८७.२ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) २२७.३ | शृणुनामादिप्रवक्ष्यामि (उ) २५४.२५ | शृणुभूपकथां दिव्याम (उ) ३.६ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (पा) १६.६ |
| शृणुत्वं नाथयदष्टमा- (सु) ३३.६७ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) २३०.३ | शृणु नारदगोविद (ब्र) २५.८ | शृणुभूपगतिस्तस्य (उ) १२६.१५ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (पा) ८६.१३ |
| शृणुत्वं नृपति श्रेष्ठ (उ) १३६.४० | शृणु देवि प्रवक्ष्यामि (उ) २३४.३ | शृणु नारददेवक्ष्मि- (उ) ५४.५ | शृणु भूपाल वक्ष्यामि (उ) ३५.२६ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (उ) १६.२ |
| शृणुत्वं नृपशार्दूल (उ) ५.२ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) २३६.२ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) १.२६ | शृणुभ्रातर्वचोमह्यं (पा) ५६.४२ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (उ) ३६.१२ |
| शृणुत्वं ममदेवेश (त) ३०.७५ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) २४५.३ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) २३.१ | शृणुमेवचनं धीर (ब्र) २६.१६ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (उ) ४१.३ |
| शृणुत्वं मामक वाक्यं (भू) ४६.२६ | शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि (उ) २५३.४ | शृणु नारद वक्ष्यामि (उ) ३७.१ | शृणुमेवचनं भद्रे (उ) ४६.३६ | शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (स्व) ४८.२ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|-------------------------------|--------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|
| शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (उ) | ५४.२ | शृणु लक्ष्मीपतेर्वत्स (क्रि) | १७.४ | शृणु वैश्य प्रवक्ष्यामि (स्व) | ३१.१२ | शृणुष्वावहितस्तात (उ) | ८०.८१ | शृणु सूनयहाभाग सर्वं-(भू) | १.१ |
| शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (उ) | ६१.२ | शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि (भू) | ११.८.७ | शृणु शौनकयत्पृष्टय (ब्र) | २३.२ | शृणुष्वा वहितः स्वामिन्(पा) | ३०.१० | शृणु स्थानि मिदम्यक् (उ) | १२७.३१ |
| शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (पा) | ६५.६८ | शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि (उ) | २२३.४६ | शृणु शौनक वक्ष्यामि (ब्र) | २.१ | शृणुष्वा वहितो राजन् (उ) | ३१.३२ | शृणोति यदा वाक्यं (पा) | २२.१२ |
| शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि (उ) | २५५.७ | शृणु वत्स महाभाग (भू) | ८६.५० | शृणु शौनक वक्ष्यामि (ब्र) | १६.२ | शृणुष्वा वहितो राजन् (ब्र) | ५५.२ | शृणोति यः पठेद्वापि स (सृ) | २१.२३२ |
| शृणु राजन्ममगुत्थम् (पा) | ६६.८ | शृणु वाक्यं सहस्राक्ष (भू) | ४६.५८ | शृणु शौनक वक्ष्यामि (क्रि) | १.२२ | शृणुष्वा वहितो विप्र (ब्र) | ४.४ | शृणोति यश्चैनमनन्य (सृ) | २४.६१ |
| शृणु राजन् महागुह्यम् (स्व) | ४५.१३ | शृणु वाडवभेषाणं पूर्वं (उ) | १३६.३२ | शृणु शौनक वक्ष्यामि (उ) | २२३.३ | शृणुष्वा वहितो विप्र (ब्र) | १२.३७ | शृणोति यस्तत्प्रथमं (पा) | ११४.४६१ |
| शृणुराजन् महाबाहो (स्व) | ४०.३६ | शृणु वाडववक्ष्यामि (उ) | ७०.२ | शृणुष्वमुखवक्ष्यामि (उ) | १२४.१० | शृणुष्वा वहितो (स्व) | २३.१५ | शृणोति वाप्य भीक्ष्णं (सृ) | ३२.५७ |
| शृणुराजन् महाभाग (स्व) | ४०.३६ | शृणु विप्र परंगुह्यं (क्रि) | १७.६६ | शृणुष्वत्वं द्विजश्रेष्ठ (उ) | १४१.३३ | शृणुष्वा हार मस्माकं (सृ) | ३२.३२ | शृणोति वासपापैस्तु (सृ) | ३४.१७० |
| शृणुराजन् महावीर (स्व) | ४५.७ | शृणु विप्र प्रवक्ष्यामि (ब्र) | ४.२ | शृणुष्व देवि पश्यत्वं (उ) | १४.६१ | शृणुष्वै कामनः कतिय (उ) | ८८.३४ | शृणोति श्यामला (उ) | १६२.१६ |
| शृणु राजन् यथा तथ्यं (उ) | ८.१५ | शृणु विप्र प्रवक्ष्यामि (ब्र) | १७.१२ | शृणुष्व नृप शार्दूलमत्-(पा) | ३३.३४ | शृणुष्वै कमना भूतत्वायेन(उ) | ४६.३३ | शृण्वतः परयाभक्त्या (ब्र) | ३६.६ |
| शृणु राजन् विचित्रतं (उ) | १२७.६० | शृणु विप्र प्रवक्ष्यामि (क्रि) | १७.६८ | शृणुष्वभोः कायकथां (पा) | १३.८ | शृणुष्वै कमना राजन् (उ) | ४७.२ | शृण्वतां सर्वं पापदनं (उ) | १०६.२७५ |
| शृणु राजेन्द्रते वच्मि (उ) | ५८.२० | शृणु विप्र मयातेष्ट (उ) | १६६.४० | शृणुष्वभो महादेव (उ) | २०२.१ | शृणुष्वै कमना राजन् (उ) | ५६.२ | शृण्वतामिति देवानां (उ) | १०४.२६ |
| शृणु राजेन्द्र वक्ष्यामि (उ) | ४६.२ | शृणु विप्र महाबुद्धे (उ) | २५.२ | शृणुष्वमामकं वाक्यं (उ) | २१५.२५ | शृणुष्वै कमना राम (उ) | ४६.१० | शृण्वतोऽस्य सतोषो (उ) | २१८.५ |
| शृणु राजेन्द्र वक्ष्यामि (उ) | ५६.२ | शृणु विप्र महाभाग सर्वं (स्व) | १६.६ | शृणुष्वमुनि शार्दूल (ब्र) | २६.३ | शृणु नृत्तमवाक्यं मे (क्रि) | ५.११२ | शृण्वनक्रुदितमन्येषां (उ) | १२६.१४ |
| शृणु राम पुरा वृत्तं (सृ) | ३६.६० | शृणु विप्र महीपाल (उ) | १८६.५२ | शृणुष्व मुनि शार्दूल (उ) | २१६.५१ | शृणु सुंदरि वक्ष्यामि (उ) | ७४.१५ | शृण्वन्ती गीगमुधा शंसु (पा) | ११४.१७७ |
| शृणु राम महावीर लोका-(पा) | ८.३० | शृणु विप्रेन्द्रवक्ष्यामि (पा) | ३५.६६ | शृणुष्व वचनं तथ्यं (पा) | ३७.३ | शृणु सुंदरि वक्ष्यामि (उ) | ७६.१ | शृण्वति पापचर्चा (क्रि) | १६.१०१ |
| शृणुराम यथा कालं (सृ) | ३५.४४ | शृणु वीरममक्षिप्रप्रतिज्ञां (पा) | २७.३० | शृणुष्व वचनं भ्रातृजितो(उ) | ७०.१ | शृणु सुंदरि वक्ष्यामि (उ) | ८०.२ | शृण्वति ये कथामेतां (पा) | ६८.३७ |
| शृणु राम यथा वृत्तं (उ) | २४४.४० | शृणु वीरहनुमस्त्वमं (पा) | २.३ | शृणुष्वावहिततीर्थानि (स्व) | २४.२ | शृणु सुंदरि वक्ष्यामि (उ) | १३५.११६ | शृण्वति विष्णु चरितम् (ब्र) | १.२८ |
| शृणु लक्ष्मण मदवाक्यं (पा) | १०.६ | शृणु वेनमहाभाग वृत्तांतं (भू) | ३६.३२ | शृणुष्वाप्यथावृत्तं-(सृ) | ३६.८४ | शृणु सुंदरि वक्ष्यामि (उ) | १४१.१२ | शृण्वन्तु पादपाः सर्वे (सृ) | १८.४१२ |
| शृणु लक्ष्मी पतेर्वत्स-(क्रि) | १०.२ | शृणु वैश्य प्रवक्ष्यामि (स्व) | ३१.१८१ | शृणुष्वावहितस्तात (उ) | ८०.७८ | शृणु सुत महाभाग (भू) | १.६ | शृण्वन्तु भ्रातरः सर्वे (भू) | १०१.७ |



शोपचमहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमः

४०८

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| शृण्वन्तु मुनि शार्दूल (उ) | २१५.३६ | शेषाग्नभोजने तेषां (उ) | २१४.१५ | शैवपदमवाप्नोति (स्व) | २०.११ | शोकेनक्षुधी नष्टकंठो (पा) | ११०.७ | शोभमानानर श्रंष्ट (सु) | १८.१०७ |
| शृण्वन्तु मुनि शार्दूल (पा) | ६६.२ | शेषावतारो धमतिमा (भू) | १०३.३२ | शैवः पाशुपतोभूत्वा (उ) | ५६.१० | शोकैः कैश्चित्तुत्या (क्रि) | ६.६३ | शोभमानो महातेजा (भू) | १०४.६ |
| शृण्वन्तु योगिनः शांता (पा) | ११.६६ | शेषाशेषकयास्वतो जग- (पा) | १.४ | शैवया विद्यया स्नानं (पा) | ११४.३२७ | शोकोत्पन्नानि पश्यानि (भू) | १२१.१७ | शोभसंभरक्षिप्रमत- (सु) | २१.१११ |
| शृण्वन्तु वाक्यमूषयो (सु) | १७.२२१ | शेषेत्त्व मेवगोविन्द (सु) | ३.३६ | शैवस्य भस्मनः शक्ति (पा) | १०५.१८१ | शोकोनजायते तस्य (क्रि) | १३.७२ | शोभामावोमहाराज (स्व) | २७.६३ |
| शृण्वंतुबीराः पुनरप्याह (पा) | ४०.३१ | शेषैर्भुजैः प्रदिप्ता (सु) | ४१.३७ | शैवानां धर्म युक्तानां (पा) | ११४.१२० | शोको हि नाशयेत्पुण्यं (भू) | ६.३० | शोभाया दृश्यते वक्त्रे (सु) | १६.१८० |
| शृण्वंत्याममदैवेश (उ) | १८४.३ | शेषैर्मयदभूतपुण्यं (उ) | १२७.१२७ | शैवानां पापिनां (पा) | १०६.१०६ | शोचंत्येतानिनोदत्तं (उ) | १०.३५ | शोभालंकार सौभाग्ये (सु) | ४.६ |
| शृण्वन्निवगतस्तृप्ति (पा) | ६६.२२ | शेषोनंतो महानागोह्य (सु) | ४५.१४८ | शैवाश्चापिसमायाता (पा) | १०६.१०२ | शोचं लब्धवतो मातस्त्व (पा) | ११२.७४ | शोभितं च दुर्मश्चाग्न्यैः (भू) | १०२.२३ |
| शृण्वानस्य नरस्यापि (भू) | १२५.२२ | शेषोनवेत्तिमहितेभारत्य (पा) | २२.३४ | शैवाः सौराश्चगणेशा (उ) | ८८.४३ | शोणस्य ज्योति रध्याश्च (स्व) | ३६.८ | शोभितं सुरसवाहकं (पा) | १२.५१ |
| शृण्वानां तैः मिथास्वा (ता) | ५७.२२ | शेषोप्यन्यत मेनासौ (उ) | १४.२६ | शैवी पंचाक्षरी विद्यां (पा) | १०५.३५ | शोणस्य नर्मदायाश्च (स्व) | ३६.६ | शोभितत्रातनीर्यदेवतो- (सु) | ४०.१७६ |
| शेखराद्वशोभते (सु) | १५.४५ | शैरमंयूर चित्रेश्चकार (सु) | ४४.२०७ | शैवैः पंचनिधनं (सु) | २७.३६ | शोणाश्वस्य सुताः पंचशूर (सु) | १३.६३ | शोभिष्यसेन संदेहः (सु) | १७.२८२ |
| शेते सहशयानेन पुरा (भू) | ८१.५५ | शैल कुबर संकाशं (सु) | ४०.१७३ | शैशवे चयधामातागुडं- (उ) | १३२.४० | शोणितं चरते वल्लिस्तद (भू) | ६४.७८ | शोषयामास देहं स्वं (उ) | १५.६२ |
| शेते सुखं हिंशांतस्तु (सु) | १६.३११ | शैलरोमाच दंत्यारि (सु) | ७.१८ | शोकं नैव प्रपश्यन्ति (सु) | ७५.३७ | शोभते तन्मुखं तस्याः (सु) | १८.१६६ | शोश्त्रोक्तविधिना (क्रि) | ५.६ |
| शेफालिका प्रसूनैश्च (क्रि) | १३.२८ | शैलरोमाततो विष्णुं (उ) | ७.१७ | शोकं माकुर्विषेन्द्र (क्रि) | २१.१०६ | शोभते पुण्डरीकाक्षः (पा) | ८४.१०३ | शोकहृषीविपाद (पा) | ८४.७६ |
| शेफालीस्तवकमधो (पा) | ११४.२१२ | शैलरोमाततो विष्णुं (उ) | ७.२२ | शोकं मोहो न तत्रास्तां (उ) | ६७.३ | शोभनं हितदाजातं (सु) | ३०.४७ | शोचं केचित्परं प्राहुः (उ) | ८०.११ |
| शैप्यान्महेंद्र प्रमुखास्तवा (सु) | २१.६८ | शैलस्य उत्तरे पार्श्वे (सु) | ३५.६८ | शोकं व्याधि विहीना (क्रि) | २५.७१ | शोभनः शोभते यत्र (उ) | ६०.२५ | शोच सत्यक्षाति युक्तो (उ) | ८२.४ |
| शेषशायीस्तदा विष्णुं (उ) | ७१.३६ | शैलाच्चगण मुख्याश्च (उ) | १३.१२ | शोकं संतप्त हृदया (उ) | २४५.२६४ | शोभनोपितदाज्ञात्वा (उ) | ६०.२७ | शोचैन शोध्यमानोपि (भू) | ६६.६६ |
| शेषं चाप्यस्य विभवं (सु) | ४३.५१ | शैलीदारुमयी लौहीले- (पा) | ६५.७६ | शोकः स्थाल्पाथिव- (सु) | ३३.१०६ | शोभनोत्कटिशोभया (पा) | ५७.३७ | शोचैः पुः सर्वदाचामे (स्व) | ५२.६ |
| शेषं वूर्णं सौघभित्तो (क्र) | ६.१३ | शैलोदरस्तथास्कंदं (उ) | १७.४३ | शोकाग्नितप्त सर्वांगी (क्रि) | ५.१७४ | शोभमानं म्हारातैः (भू) | १०३.६२ | शोद्धोदनिदंष्ट्र दष्टिः (उ) | ७१.२७७ |
| शेषं समुपभूजीतलवणं (स्व) | ५८.१२ | शैलोदरो गृहं जम्भो (उ) | १७.३० | शोकाग्निना च सन्दीप्ता (सु) | १८.४१७ | शोभमानं स देवास्ते (पा) | ८४.१०१ | शोनकं सुमहाभागं (भू) | १०४.१७ |
| शेषं सैन्यं जघानाशु (उ) | १८.१२ | शैलोहिमाचलो नैव न (उ) | ३५.३६ | शोकाद्वज्रमेमहाराज (भू) | ७७.७० | शोभमाना स्वरं प्राप्ता (भू) | ४५.३० | शोनकादि ऋषिभ्य (उ) | १६८.११६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|------------------------------------|--------|
| श्रीनकार्दमूर्तिवरं (उ) | १६८.७६ | श्यामावालाततश्चैव (त्र) | ११.६८ | श्रद्धापूर्वमया भद्र (उ) | १२७.१५३ | श्राद्धं कालं तु संग्राप्य (भू) | १७.३६ | श्राद्धस्यमन्त्रतस्तत्त्वमुप (सु) | १०.३६ |
| श्रीनकेनप्रदत्तेषु आसीना (स्व) | १.८ | श्यामावालापिता चाहं (त्र) | ११.६३ | श्रद्धाभावेन दातव्यं (भू) | ४०.२६ | श्राद्धं कुर्वन्मोहेन-भू | ३७.३० | श्राद्धस्यरश्रवणार्था (उ) | १३५.८० |
| श्रीडानं घाटिकानम् (स्व) | ५६.१३ | श्यामामृतरसेमग्नाः (पा) | ७०.१३ | श्रद्धामेधाधृतिः प्रज्ञा (उ) | २२६.१४७ | श्राद्धं तत्र तु कर्तव्यं (सु) | ३४.२१२ | श्राद्धस्वलक्षणं कालं-सु) | ११.६१ |
| श्रीरिणाप्रहितान (उ) | १७७.३६ | श्यामालाहृस्वमिगडान् (पा) | २०.५१ | श्रद्धालक्ष्मीर्धतिः पुष्टि (सु) | ३.१८३ | श्राद्धं तत्र प्रकर्तव्यं (उ) | १४१.६ | श्राद्धादिकर्मरहिता गुरु (त्र) | ४७.१५ |
| रुजशःनेमनाद्विख्यातम-स्व) | ३३.१४ | श्यामोनारायणो देवो (उ) | १२०.५६ | श्रद्धावान्स्तु कुक्षे (उ) | ४८.८ | श्राद्धं तर्त्तयिक प्रोक्तं (सु) | ३४.२१३ | श्राद्धे कृते पितृणां (उ) | १५१.६ |
| रुजशानवासान्निर्भस्त्वं (सु) | ४४.२५ | श्यामो यस्मात्प्रवृत्तो (स्व) | ८.२१ | श्रद्धाहीनानिकर्माणि (उ) | १२५.१६० | श्राद्धं तत्रैव कर्तव्यं (उ) | १४३.२ | श्राद्धे च तर्पणे चैव (क्रि) | १५.६५ |
| रुजशानवासान्नो नित्यं (उ) | ६६.१८ | श्यामो वतः श्यामः (उ) | २२.२७ | श्रद्धितः सूपविष्टस्य (सु) | ३६.१८ | श्राद्धं तत्रैवकैर्युर्मयं (उ) | १४१.३ | श्राद्धचयः पठेदेतन्मन्त्रित (क्रि) | १७.१२२ |
| रुजशानेऽपि यदामृत्यु (क्रि) | २४.६२ | श्यामालास्यतश्चन्द्रार्थं (सु) | १६.२६० | श्रद्धीतेसदातस्माच्छ्रद्धाया (भू) | ६८.१५ | श्राद्धं समारभेद्भक्त्या (सु) | ६.८८ | श्राद्धदाने च राजेन्द्र (भू) | ३६.१२३ |
| रुजशुलोदीर्घनेष्टश्चक्र (उ) | १२७.१३१ | श्यामोऽदोनाश्चभासी च (सु) | ६.६४ | श्रपयित्वा चक्रं तत्र (उ) | २५.१० | श्राद्धं कर्त्तव्यं दानानि न (भू) | १२.११ | श्राद्धेन तत्रैवचैव-सु) | ४१.३११ |
| श्याम पूर्वोऽधिग्राम (पा) | ६६.२१ | श्यामोऽनन्तु वैश्रुत्वा (उ) | १६२.१४ | श्रमैरितिवदेष्टु (क्रि) | ६.२२ | श्राद्धं कार्याणि दानानि (पा) | ८८.११ | श्राद्धेनियोज्यमानायां (सु) | १०.५४ |
| श्यामालागप्रभापुर्णं (पा) | ७२.४२ | श्रद्धधानं परो भूत्वा (स्व) | ४५.३१ | श्रवणाद्वादशयोगे (उ) | ६६.४५ | श्राद्धं कालं च संग्राप्य (पा) | ८६.५० | श्राद्धेऽपु भोजनीयायै (सु) | ६.७३ |
| श्यामः क्षमीरुः सत्ताप्य (सु) | १३.११० | श्रद्धस्त्वभूपतस्मात्वं (पा) | ८७.३४ | श्रवणाद्वादश योगे (उ) | ६६.६७ | श्राद्धकाले च वक्तव्यं (सु) | ११.६४ | श्रान्तायाष्टपूर्वाय (उ) | २६.१० |
| श्यामं क्षातिकरं प्रोक्तं (उ) | २२५.४० | श्रद्धयानिर्गणो यात्रां (भू) | ४१.७ | श्रवणाद्वादश योगे (उ) | ६६.७१ | श्राद्धकाले महादेवि (उ) | ७६.४० | श्रावको नरकं घोरं (भू) | ६६.२८ |
| श्यामाकभोजनतत्रयः (स्व) | २६.६५ | श्रद्धया पुजिताताम्यां (उ) | २०.४३ | श्रवण द्वादश योगे (उ) | ६६.७१ | श्राद्धकृच्छ्रादभुग्योवा (सु) | ६१.२० | श्रावणस्य तु मासस्य (स्व) | ५३.५६ |
| श्यामाकस्त्वधनीवा-सु) | ३.१४६ | श्रद्धया श्रवणे नित्यं (उ) | १६५.५३ | श्रवणाद्वादशयोगेयः (उ) | ६६.७५ | श्राद्धं दानं गृहगत्वा (भू) | ६०.३ | श्रावणस्यद्वितीयायां (सु) | २४.२ |
| श्यामाकारेणगणैः (उ) | ८.६१ | श्रद्धयाश्रवणमाहात्म्यं (उ) | २२२.७५ | श्रवणस्य विधानं च (पा) | ११५.२१ | श्राद्धदानं प्रकर्तव्यं (भू) | ६७.२६ | श्रावणस्यसिते पक्षे (उ) | ५४.१ |
| श्यामाङ्कुरैः सदावत्स (उ) | ३५.१३ | श्रद्धया विपुलपाने (भू) | ६४.४७ | श्रवणात्तत्स्यतीर्थस्य (स्व) | ३६.७६ | श्राद्धदानं प्रकर्तव्यं (भू) | ६७.२८ | श्रावणस्य सिते पक्षे (उ) | ५५.१ |
| श्यामाबालांबतोद्वारात् (त्र) | ११.७८ | श्रद्धया श्रृणुते नारी (भू) | ६०.२८ | श्रवणात्तत्स्यतीर्थस्य (स्व) | ४३.२१ | श्राद्धदाने प्रकर्तव्ये (भू) | ६७.२८ | श्रावणादिपुमासेषु (सु) | २६.१८ |
| श्यामा बाला च कथितम् (त्र) | ११.६५ | श्रद्धा कामं बलं लक्ष्मी (सु) | ३.१८८ | श्रवणाद्विनामनश्च (क्रि) | २५.८३ | श्राद्धदाने प्रकर्तव्ये (भू) | ६७.२८ | श्रावणेचाष्टमीकृष्णा (सु) | ६.१३० |
| श्यामा बाला च विभ्रं (त्र) | ११.७७ | श्रद्धादानेन विज्ञेयमपि (भू) | ६८.१४ | श्राद्धं करोतियस्तत्र-उ) | १६७.६ | श्राद्धभूमिगयांच्यात्वा (पा) | ११७.८५ | श्रावणे चैवयोद्याला (क्रि) | १३.३३ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

४१०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|--------|---------------------------------|---------|--------------------------------------|---------|
| श्रावणेमासिसंप्राप्ते (स्व) | २०.१५ | श्रीकमलालयाभूतिः (सु) | १७.१०३ | श्री कृष्णस्य पुरस्तात्ता (पा) | ७४.१६५ | श्री नारायण सेवायां (क्रि) | २.२६ | श्रीभूनीलापतिर्वीसावी (उ) | २२९.७५ |
| श्रावणेमासि संप्राप्ते (उ) | ८६.१ | श्रीकामवैष्णवेनेह- (सु) | ३४.२७६ | श्री कृष्णस्य महाभाग (पा) | ८४.२ | श्री निजिः श्री निवास (क्रि) | १७.११७ | श्रीभूमिसहितं देवं तप्त (उ) | २३२.१६ |
| श्रावणेनासि संप्राप्ते (उ) | ८७.१३ | श्रीकामस्तनयार्था (उ) | १६८ ३७ | श्री कृष्णोपिताम्बेन (उ) | २५२.५४ | श्री निवास पीतवास (भू) | ७५.४ | श्रीभूनीलाधिपतये (उ) | २२८.७७ |
| श्रावणवर्जयेच्छाकंद- (पा) | ७६.५१ | श्रीकीर्तिकांतिलक्ष्मीभिः (सु) | ४०.१४८ | श्री केशवं कलेशहरं (भू) | ७३.१० | श्री वृसिह दिव्य सिंह (उ) | १७४.४२ | श्री मच्छिवपुरे दिव्ये (भू) | ७१.१० |
| श्रावणे शुक्लपक्षे तु (उ) | ५५.३२ | श्री कुंजं च सरस्वत्यां (स्व) | २६.१०३ | श्री खण्डजसेकेनगोभया (उ) | २१६.१५ | श्री वृसिहायमोदछात्स (उ) | १७४.५६ | श्रीमते श्री निवासाय (भू) | ३२.४१ |
| श्रावणे श्रीधरं देवं (उ) | ५४.१२ | श्री कृष्णगुणलीलादि- (पा) | ८२.३० | श्री खंडा गुरुकूर्पूरं (उ) | २५.१७ | श्री वृसिहो दिव्य सिंहः (उ) | ७१.१८३ | श्रीमत्याराधिकादेव्या (पा) | ७४.१८६ |
| श्रावयित्वानु लोकेषु (सु) | ४६.१५० | श्री कृष्ण चरितं पुण्यं (पा) | ८४.७ | श्री गोकुलकलानाथमंत्रं (पा) | ७४.१५० | श्री पतिस्तं मुनिश्रेष्ठं (उ) | २१४.१०६ | श्रीमदंत्रुं दावनं रम्यं (पा) | ६६.३६ |
| श्रावयित्वाभमेमानि (पा) | ६६.५४ | श्री कृष्ण चरितं विप्रं (त्र) | १.१६ | श्री चन्द्रामृत नागाश्वं (उ) | ५.३ | श्री पते तव जनस्य (उ) | २१४.१०५ | श्री मदं वृं दावनं रम्यं (पा) | ६६.८० |
| श्रावयेद्यः पुराणानि- (पा) | १०६.८२ | श्री कृष्ण चरितं ह्येतद्यः (पा) | ७०.६५ | श्री चन्द्रामृत नागाश्वं (उ) | ५.१५ | श्री पते श्रीधर विभो (क्रि) | ११.३० | श्रीमद्भागवतंतत्र (उ) | १६३.१६ |
| श्रियं च देवदेवस्य (सु) | ३.२०६ | श्री कृष्ण तुलसी मूले (उ) | २२५.३० | श्री जाल्मवी रवि मुला (उ) | २२.२४ | श्री पते श्री मदंभोजसं (उ) | २१४.१०१ | श्री मद्भागवतं नाम (उ) | १६४.६७ |
| श्रियं चाभ्यर्च्यैविविद- (सु) | २१.२५ | श्री कृष्ण दामोदर (क्रि) | १६.३६ | श्री तीर्थं च समासाद्य- (स्व) | २६.४३ | श्री पदं विष्णु चरितम् (त्र) | २५.१ | श्रीमद्भागवतं नामपुराण (उ) | १६८.५० |
| श्रियं परगतां हृष्ट्वा (सु) | ५.४८ | श्री कृष्णनिर्गमात् (उ) | १६८.७० | श्री त्रिविक्रम देवस्य (क्रि) | ६.१२८ | श्री पद्मनाथं कमलेश्वरं (भू) | ७३.१२ | श्रीमद्भागवतं नाम (उ) | १६८.१०६ |
| श्रियं प्रतार्यसञ्छाद्य (उ) | १४.२४ | श्री कृष्ण पुरतोये (त्र) | १.३२ | श्री दामरं कभक्तार्थं (उ) | ७१.२६५ | श्री पर्णा चनदी पुण्या (सु) | ११.३६ | श्रीमद्भागवतं नाम (उ) | १६८.११४ |
| श्रियं प्रतिविरोधश्च (सु) | १८.८१ | श्री कृष्णमदिरैर्योवै (त्र) | २.३ | श्री धरं ब्राह्मे वामे (उ) | २२५.४७ | श्री पर्वतं समासाद्य (स्व) | ३६.१६ | श्रीमद्भागवतं वक्त्रलेखे (उ) | १६८.४६ |
| श्रिय कमला वासिण्या (उ) | २४२.७६ | श्री कृष्णरस तत्त्वज्ञः (पा) | ८२.७ | श्री धरः श्रीकरः (उ) | २४५.७० | श्री पर्वतं महादेवोदेव्या (स्व) | ३६.१७ | श्रीमद्भागवताख्यानं (उ) | १६३.६ |
| श्रियः पतिमध्याम्य (उ) | ८८.१८ | श्री कृष्ण रूप गुण वर्णं (पा) | ८०.६८ | श्री धरस्तु तथा देवश्चि- (उ) | १२०.६६ | श्री पांचज्येन विराज (भू) | ६८.५३ | श्रीमद्भागवताभिधः (उ) | १६८.५१ |
| श्रियाजाज्वल्यमानेन (सु) | ४१.२० | श्री कृष्ण लीलां निखिलां (पा) | ८१.२ | श्री धराय मुक्तं केशान (उ) | ६६.४६ | श्री पुष्करचंचैर्निन्यं (उ) | २५३.१५३ | श्रीमद्भागवतालापो (उ) | १६४.५५ |
| श्रियान्विताह्रसमान (उ) | १५४.३६ | श्री कृष्ण तथा भूतं (उ) | २५२.७५ | श्री धराख्यं हरिं विष्णुं (उ) | ५४.७ | श्री फलेः शिखरं भाति- (सु) | ३२.८३ | श्रीमद्भागवतास्वाद- (उ) | १६५.१५ |
| श्रियापरमया मुक्ताभिममत्- (सु) | १५.६२ | श्री कृष्णस्तुनंदगोपव्रजो- (पा) | ७६.६ | श्री धरेतुप्रकटं विद्या (उ) | १३०.६ | श्री भागवतव्याख्यानाद (उ) | १६८.२२ | श्री मद्विक्रमभूभर्तुं पुत्रो (क्रि) | ५.३६ |
| श्रिया युक्तं च त्रैलोक्यं (सु) | ४.८२ | श्री कृष्णस्य कथां श्रुत्वा (त्र) | १.८ | श्री नारदो भार्गव व्यास- (भू) | ६६.४ | श्री भागवत सप्ताह (उ) | १६७.७२ | श्री मन्नारायणः स्वाभी (उ) | २२७.३६ |

| | | | | |
|--|--|--|--|--|
| श्री मन्मथकन्यावैदेही (पा) ११६.१०५ | श्रीरामस्मरणादीनि- (पा) ४६.३१ | श्रीविष्णोराज्ञयासाध (ब्र) ६.३५ | श्रुतं रामायणोद्गानं (पा) ६६.४१ | श्रुतिरेवं वदेद्राजन्त्रे (भू) ७७.६८ |
| श्री महेक्षजटाजूट (पा) ८५.५५ | श्रीरामोरामचन्द्रश्च (उ) २५४.३० | श्रीवक्ष्णर्णनि च दैव- (उ) १५४.१५ | श्रुतं सर्वं महाभाग स्वर्गं (पा) १२ | श्रुति स्मृति पुराणा (उ) २२८.६ |
| श्री महेक्षप्रसादाच्छतीर्थं (उ) १५२.४२ | श्रीरामखिल सर्वं (उ) २२७.२२ | श्री वृक्ष शंकोदेवः (सु) २८.२८ | श्रुतः पयोदभवो ब्रह्मन् (सु) ४२.१ | श्रुति स्मृति सदाचार (उ) १२६.५५ |
| श्री माण्डिभावमुस्त्वष्टा (सु) २१.२५४ | श्रीद्वैपोपवसस्तत्मा (सु) ४.५६ | श्रीशः सर्वात्मनोऽपि (उ) २२६.३१ | श्रुतं पूर्वं च सुश्रोणिक्षेत्र- (सु) ३३.१८० | श्रुति स्मृति समुत्वं (पा) १७.२६ |
| श्री मांश्च रूपवांस्त्यागो (भू) ६७.८४ | श्रीवत्सकौस्तुभाभ्यां च (उ) २२६.१०२ | श्री शांतिप्रवित्तैवैक (उ) २२८.६ | श्रुतवाक्यस्ततः प्राह (उ) १२८.१०१ | श्रुतिः स्मृतिस्तथा शांति- (सु) १८.६५ |
| श्री मांस्तरतिविप्रेन्द्राः (स्व) ६.४० | श्रीवत्सकौस्तुभो रस्को (उ) २३८.१४१ | श्रीशिवैविरथं ह्युवा (पा) ४४.१३ | श्रुतः सखीभिरस्या (उ) २०१.६७ | श्रुतिस्मृत्युदिताचारं (उ) २३५.६ |
| श्री रंगनामनगरत्व- (पा) १०४.१४० | श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं (उ) २४०.२ | श्री शैलपर्वतोरम्यः (उ) १६१ | श्रुतस्ते दैत्य सैन्यस्य (सु) ४०.१६६ | श्रुतिस्मृत्युदितं सम्यङ् (उ) २५३.३५ |
| श्रीरगन्नायोदेवेशोविधि (उ) २५३.१० | श्रीवत्स कौस्तुभो (उ) २४२.५० | श्री शैलमथवागच्छ (पा) ११४.४३६ | श्रुतस्य हिदमोमूलंदमो (सु) १६.३१५ | श्रुतिस्मृत्युक्तमाचारं (उ) २५३.३६ |
| श्री रंगेवं कटागो च (उ) २२५.३७ | श्री वत्स कौस्तुभो (उ) २४५.३७ | श्रीशैलेनावतीर्थं (उ) १३३.११ | श्रुतानानाविद्या धर्मा (उ) १२५.८ | श्रुतेयस्मिन्नधीते च (पा) १००.३१ |
| श्री राममनसाध्यात्वा (पा) ६४.७७ | श्री वत्स कौस्तुभो (उ) २४५.३७ | श्रीशैलेनावतीर्थं (सु) १७.१-६ | श्रुतानि किलतीर्थानि (स्व) ४०.१२ | श्रुतेयस्मिन्निदानं (पा) ११४.४६० |
| श्री राम माधवं मोक्षं (भू) ८७.१३ | श्री वत्सलक्षणदेवा- (सु) १३.१३७ | श्री सरोपारव पादाब्जो (उ) ७१.१४० | श्रुतानि तत्र देवेशिमाया (उ) १३५.२२ | श्रुतेतास्मिन्महापुण्ये (भू) १८.१६ |
| श्री राम आहवचनं (पा) ११७.१८६ | श्रीवत्सलक्षणमुलक्षित (पा) १०३.३२ | श्री हरेः पंचकविप्र (ब्र) २३.१६ | श्रुतानि बहुवर्माणि (उ) ६३.१ | श्रुत्वा कथां वाचकाय- (पा) ६८.३३ |
| श्रीरामः कपिवर्यत मोच- (पा) ५३.३५ | श्रीवत्सलक्षितोरस्कं (उ) २३८.४६ | श्री हरेः पुरतोविप्र (ब्र) २३.७ | श्रुतापुरभवत्तस्माद्भारतं (सु) ८.१६१ | श्रुत्वा कर्कोटकवचः (उ) ४७.१३ |
| श्री रामः खड्गभुषण्य (उ) २४२.२४६ | श्रीवत्सलोमसंच्छन्नो (सु) १८.२६ | श्रुतं कातिकमाहात्म्यं (उ) १३०.१ | श्रुताभिमानवाधर्मा (उ) ५१.३ | श्रुत्वा कर्कोटकवचः (पा) ७५.१७ |
| श्री रामचन्द्र दुःखार्त- (पा) ५८.१६ | श्रीवत्सलक्षसंभ्राजत् (पा) ६५.१०३ | श्रुतं च गीतामाहात्म्यं (उ) १६३.२ | श्रुताश्च विविधाधर्माः (सु) ३२.४६ | श्रुत्वा च भाषितं तत्र (सु) ३६.८३ |
| श्री रामचन्द्ररघुवंश जातं (पा) ५३.१३ | श्रीवत्सलक्षानिः (उ) ७१.१४२ | श्रुतं च पठितं द्वातं (उ) १६५.४१ | श्रुतास्तु मानवाधर्मा (उ) ५१.४ | श्रुत्वा चाश्रुतं पूर्वं (सु) ३३.१३२ |
| श्री रामचन्द्र कृपयाकुरुव (पा) ५८.१३ | श्रीवत्सलक्षैर्दिव्येन हृदय (भू) १६.१५ | श्रुतं पाताल खंडं च (उ) १.३ | श्रुतिकन्यास्ततोदक्षे (पा) ७०.१४ | श्रुत्वा चैकपदेयस्तु मोक्षं (उ) १२४.८७ |
| श्री रामचन्द्र मायां तं (पा) ५३.२२ | श्री वत्सलक्ष पुण्येन (पा) ८४.१०५ | श्रुतं भागवतं सर्वं (उ) १६७.६५ | श्रुति प्रदानेन जगत्रयं (उ) २३०.३१ | श्रुत्वा चोत्कंठचित्ता- (उ) १२६.२८६ |
| श्री रामस्तं निजैर्दोभिः (पा) ५३.२३ | श्रीवत्सलक्षचिरं (पा) ६६.५० | श्रुतं मे ब्रह्मणा प्रोक्तं (स्व) ४६.१ | श्रुति मध्यमजन्तयं (पा) ६६.८६ | श्रुत्वा जगाद च मुनीन् (सु) १.५० |
| श्री रामस्मरणं योषान् (पा) ४३.६२ | श्री वासुदेवः परं ब्रह्म (उ) ७१.१२० | श्रुतं रमा नामाहात्म्यं त्वत्तः (उ) ६१.१ | श्रुतिरेव दस्येवं तं वस्तुं (भू) ६२.३१ | श्रुत्वा तत्र प्रविष्ट निशी (उ) १८५.५७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकोक्तक्रमणी

४१०

| | | | | |
|--|--|---|--|--|
| श्रुत्वा तत्र हरेर्वरिणी (उ) २०८.५३ | श्रुत्वा घर्मं तो हृष्ट (उ) १२७.१६८ | श्रुत्वा रुद्रस्तुदाती (सु) ५.६६ | श्रुत्वेति ब्रह्मणो वाक्य (उ) १८.४६ | श्रूयतां जायते पश्चात् (भू) ५३.८६ |
| श्रुत्वा तद्वचनं तत्र कृत्वा (उ) १२८.४६ | श्रुत्वाधिवासनं कर्म (क्रि) ५.६५ | श्रुत्वाणवजोऽवतरतः (उ) १२.३४ | श्रुत्वेति राघव वचो (पा) १०४.१५८ | श्रूयतां तत्प्रवक्ष्यामि (उ) ११७.४ |
| श्रुत्वा तद्वचनं तत्र कृत (स्व) २२.३७ | श्रुत्वा नकोपिमेवृथात (पा) ११४.४८४ | श्रुत्वालोकमुखाद् (उ) १६७.४८ | श्रुत्वं तत लोभशो वाक्यं (स्व) २३.११ | श्रूयतां तु तदा विप्रो (सु) ३६.८५ |
| श्रुत्वा द्वचनं ता सां प्राह (स्व) २२.८५ | श्रुत्वा नियोमं विप्रये (सु) ३७.५७ | श्रुत्वा वाक्यं ततः प्राह (स्व) २२.६३ | श्रुत्वं तत्कोतुकं जातं (सु) ३५.२ | श्रूयतां नृपशार्दूल (उ) १२६.४ |
| श्रुत्वा द्वचनं तासां (उ) १२८.६४ | श्रुत्वा नृपति वाक्पानि (उ) ५६.१३ | श्रुत्वा वाक्यं महाराजः (पा) ८.५ | श्रुत्वं तत्तारकः सर्वमुद्-(सु) ४४.१८५ | श्रूयतां नृपशार्दूलमद्भचो (क्रि) ५८.१२ |
| श्रुत्वा द्वचनं देवा (उ) ७६.३० | श्रुत्वा गठित्वा विधिवदनु (पा) १०३.५ | श्रुत्वा वाक्यं रघुपते (पा) १०.१० | श्रुत्वं तत्स्वाधिवः प्रीत्या (उ) १२८.१६ | श्रूयतां ये पिशाचाश्च (उ) १२६.१ |
| श्रुत्वा तत्प्लक्रमेणावताः (पा) ५२.३५ | श्रुत्वा गालायमानस्तु (उ) २१७.२२ | श्रुत्वा विमुच्यते पार्ष्ण- (पा) २०.६३ | श्रुत्वं तत्सोपिचोत्तस्थो (क्रि) ५.१३७ | श्रूयतां योविधिः (उ) ४५.३५ |
| श्रुत्वा तत्लोमसो राज- (उ) १२८ १२७ | श्रुत्वा पापानि नश्यति (त्र) १३.५८ | श्रुत्वा वृंदां हृतां त्रस्तो (उ) १६.२२ | श्रुत्वं तदखिलं भूयः (सु) ६.७२ | श्रूयतां राजशार्दूल कथां (उ) ५३.११ |
| श्रुत्वा तस्य मुनेर्वचि (उ) १२५.११६ | श्रुत्वा त्नाममाहात्म्ययं (व) २५.१८ | श्रुत्वा वेतस्य तद्वाक्यं (भू) ३७.१२ | श्रुत्वं तदाकुलो ब्रह्मा (सु) १४.४५ | श्रूयतां राजशार्दूल (उ) ५६.१६ |
| श्रुत्वा ताक्ष्यस्य वचनं (उ) १४.२३ | श्रुत्वा पुण्यामनां (क्रि) १५.३६ | श्रुत्वा शोभोर्वचो देवा (उ) ६६ | श्रुत्वं तद्भूद्रुद्राक्यं पार्थो (पा) ७४.२० | श्रूयतां राजशार्दूल (उ) ६०.२ |
| श्रुत्वा तुकिंकरान् (उ) २४१.६३ | श्रुत्वा पुराणं पाष्य च (पा) ११३.५४ | श्रुत्वा शास्त्रं वधूनां (उ) १५.६५ | श्रुत्वं तद्वचनं प्रीतः (पा) १२६.३६ | श्रूयतां राजशार्दूल (उ) १२८.१६ |
| श्रुत्वा तु तस्य तद्वाक्यं (सु) १३.२६१ | श्रुत्वा प्रकंपितस्ते वै (त्र) ३.२५ | श्रुत्वा शिवस्वतां वाणीं (सु) १४.२२ | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तुता निमर्वाणि (पा) १०५.४६ | श्रुत्वा प्रभाते संजातेन (सु) २३.३६ | श्रुत्वा स धनुरादाय (भू) ११५.२३ | श्रुत्वं तद्वचनं विप्रः पीरा (पा) १०६.४४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तुनंदा वचनं (सु) १८.३८७ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा स राजा तद्वाक्यं (उ) २४१.५० | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तु नृपतेर्वचि (भू) ४६.११ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा सर्वं करिष्यामि (पा) ११४.४४१ | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तु वचनं तस्या (उ) ७.८२ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा स वचनं तस्य (त्र) २.३० | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तैस्तनृपस्याग्रे (उ) २११.३ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा सीतासुतो देवः (पा) ६६.२७ | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तद्वचनं राजन् (उ) १२७.१७५ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा सीतासुतो देवः (पा) ६६.२७ | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा तद्वचनं सौम्य (स्व) ३१.१७५ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा सीतासुतो देवः (पा) ६६.२७ | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |
| श्रुत्वा देवस्तदाख्यान (सु) ५.६४ | श्रुत्वा प्राप्नं पुरी पाश्वं (पा) १३.४३ | श्रुत्वा सीतासुतो देवः (पा) ६६.२७ | श्रुत्वं तद्वचनं तस्य भीष्म (सु) २.७४ | श्रूयतां राजशार्दूल (स्व) २२.६ |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------------|--------|----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| श्रूयतामभिधास्यामि (भू) | ४७.८ | श्रेयसेस्मानुलोकेश (सृ) | ३६.४२ | श्रोत्रयोर्मस्मकेयेपां (ब्र) | १.२५ | श्लेष्म मूत्रमलानां च (भू) | ४.४३ | श्वपाकोपिहिसस्मृत्य (पा) | ३५.४६ |
| श्रूयतामभिधास्यामि चैव (भू) | ६४.३ | श्रेयः स्व गुणवद्वृत्ति (स्व) | ५३.२८ | श्रोत्रयोनं त्रयोश्चैव (पा) | ७८.६ | श्लेष्मलालामु प्रचुरं (पा) | ११७.१६३ | श्वमिहंष्टचकार्कश्च (उ) | ६४.१४ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (भ) | ६७.३ | श्रेष्ठः पुत्र शनस्यासन् (सृ) | ८.१३२ | श्रोत्रिय श्रोत्रिय सुतो (सृ) | ६.७६ | श्लेष्माचकण्ठकंचैव (क्रि) | १७.१६५ | श्वभिर्वागुरिजालेश्च (भू) | ३०.१७ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (भू) | ६४.१ | श्रेष्ठोऽभितस्तुकाप्रोक्ता (उ) | १३०.२ | श्रोत्रिय स्त्री प्रसंगे (पा) | ४७.६१ | श्लेष्मात्रिपिनिष्ठीवं (क्रि) | ८.६ | श्वभिश्चान्तितासातु (भू) | ३०.२८ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (भू) | १०१.२ | श्रेष्ठोऽस्मि सखं लोकानां (क्रि) | ५.१६ | श्रोत्रियाय कुलीनाय (स्व) | ५७.११ | श्लोकं प्रतिततो देयं (भू) | ६६.३६ | श्वभिः शृगालैः क्रव्यादैः (पा) | १०१.१२ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (भू) | १०१.२६ | श्रोतव्यं देव गुह्यं तु (सृ) | ३५.३३ | श्रोत्रियेभ्योददाम्येत (उ) | २२०.३१ | श्लोकत्रयं निरीक्षयाथ (पा) | १०४.१३८ | श्वमांसभोजनास्तत्र- (स्व) | ३१.३१ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (भू) | १०३.१२ | श्रोतव्यं निशंपुभिः (स्व) | ६१.६३ | श्रोत्र्यामिमुनिवार्तां च (पा) | १४.२४ | श्लोकादिलक्षणं सर्वं- (पा) | १०४.१६७ | श्वशुरंगतवान् सोऽथ (पा) | ११२.६२ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (उ) | १२३.१ | श्रोतव्यं नृपशार्दूल (उ) | ५७.१४ | श्रोत्र्याम्यहं यदा भद्र (भू) | ६८.३७ | श्लोकानां तु सहस्राभ्यां (भू) | १२५.४१ | श्वशुरश्चाद्र काल (पा) | ८६.५१ |
| श्रूयतामभिधास्यामि (उ) | १६७.६६ | श्रोतव्यं मन्गते पापो (पा) | ११४.४६२ | श्रोतस्मात्तदिसिधुं (उ) | २२४.४६ | श्लोकाद्विश्लोकपादं (उ) | ६१.४३ | श्वशुरस्य श्चाद्र कालः (भू) | १७.४० |
| श्रूयतामभिधास्यामो (उ) | ५५.२० | श्रोतव्यं हि प्रयत्नेन (भू) | १२५.४८ | श्लक्ष्णे विचित्र पर्यंके (उ) | २४५.२७६ | श्लोकाद्विश्लोकपादं (उ) | १६५.३६ | श्वश्रुजनं ब्रूहि सर्वं (पा) | ५१.३२ |
| श्रूयतामभिधास्यामो (भू) | ६०.४६ | श्रोतामंतातथायवता- (उ) | २३८.२४ | श्लक्ष्णेऽन्तमुनासां (उ) | २२६.१६५ | श्लोकाद्विश्लोकपादं (उ) | २५५.१२४ | श्वश्रूः पिनामहीज्येष्ठा (स्व) | ५६.३३ |
| श्रूयतामिदमस्यंतं (उ) | ८०.१४ | श्रोतावक्तापृच्छक (उ) | १६५.६७ | श्लक्ष्णद्वयं च परितो वप- (सृ) | २११.३४ | श्लोकाद्विश्लोकमेकं (क्रि) | २६.५३ | श्वश्रूश्चशुरकैश्चान्यैः (भू) | ४२.४२ |
| श्रूयते च पुरा मोक्षं (सृ) | १०.४७ | श्रोतुकामामहामागत्युति (भू) | २८.८ | श्लथन्नीवीमिरागत्य (पा) | ७२.४१ | श्लोकार्थं प्रक्रियां (पा) | १०४.१११ | श्वश्रूश्चशुरयोः सेवा (उ) | २१०.५७ |
| श्रूयतेऽवचचैवाथ्यं (सृ) | ३६.२३ | श्रोतुमिच्छति धर्मात्मा (भू) | १२५.२१ | श्लार्धममपिमरणं (सृ) | १८.३४८ | श्लश्रितगार्ग्यं उवाच (पा) | ११६.८० | श्वश्रुदुग्धभुजगेन्द्र (सृ) | ४३.३२४ |
| श्रूयते सर्ववेदेषु (भू) | ८३.६ | श्रोतुमिच्छाम्यहं ब्रह्म (सृ) | ७.८ | श्लार्धममपिमरणां (सृ) | १८.३४६ | श्लकन्याय मुनायां वै (ब्र) | १३.७६ | श्वसदिभर्मखनासाभ्यां (स्व) | ६.३८ |
| श्रूयते यमलोके तु (उ) | ६६.२ | श्रोतुमिच्छामिते प्राज्ञ (ब्र) | २६.१ | श्लिष्टवक्षाश्च पर्यंके (क्रि) | ८.१०३ | श्लवास्तेन मुनीय (उ) | २११.२४ | श्वसनः स्पर्धनोवायु (उ) | ५.५६ |
| श्रूयन्ते तत्र विप्रैर (भू) | ७४.२५ | श्रोतुमिच्छायिते ब्रह्म (सृ) | ४२.२ | श्लेथनीवेरथो देव्या (पा) | ११४.२६४ | श्लवानुमोदिता हृष्टा (पा) | ८३.३४ | श्वसंतोऽशूकरी हृष्टा (भू) | ४६.१ |
| श्रूयते विविधावाचः (सृ) | १८.१६० | श्रोतुश्चतुष्पांभनं (पा) | ११३.३२ | श्लेष्ममूत्रपुरीषं (भू) | ४.२० | श्वपाकं वामांचयति (स्व) | ५०.२४ | श्वसमानारणेनापि (भू) | ४५.३२ |
| श्रुसंज्ञया पराः काश्चित्तो- (ब्र) | ३६.१६ | श्रोतुस्तुलक्षणं पूर्वं (पा) | ११५.५८ | श्लेष्ममूत्रपुरीषाण्यु (उ) | १६८.६८ | श्वपाकमपि नक्षेत्रलोके (स्व) | ३१.१०६ | श्वघ्नानं च पुनः सिद्धम् (स्व) | ५६.२७ |
| श्रुणी चराचरानासा (ब्र) | ६.२३ | श्रोतुणां संशयच्छेत्ता (उ) | १६८.१५ | श्लेष्ममूत्रपुरीषेण्यो (सृ) | ३२.३३ | श्वपाकमिव नक्षेत्रलोके- (उ) | २२४.५३ | श्वपाचोभित युक्त (उ) | १३२.६६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------------|---------|------------------------------------|---------|
| स्वासण चपलः (पा) | ६६.७६ | श्वेतैर्वाकरोरैश्च (उ) | १६१.१६ | षडभेदस्त्रेणिरयोनान्-(उ) | ११४.६ | षट् वर्षसहस्राद्-(पा) | ११६.१६० | स | |
| स्वासकासामिलाक्षिप्यतः(पा) | ११४.४६० | श्वेनोत्पलैर्विभासतं (भू) | ४६.६ | षडभिरैवदमः प्रोक्त-(सु) | १६.३०६ | षट् साहस्राविज्ञाने (उ) | २१.३ | संक्रांत्यादिषु कालेषु (स्व) | ५७.५४ |
| स्वासानिलनिरोधार्थं (क्रि) | २३.१५५ | श्वोमध्याह्ने तव पुरो (पा) | २१.४५ | षडशीति सहस्राणि (क्रि) | २२.८४ | षट्स्थयष्टम्योविशेत्-(पा) | ६.५३ | संक्षिपन्तीमनोवृत्ति (सु) | १६.१३४ |
| श्वेतएकस्तु पुरुषः (उ) | २.४ | श्वोविवाहेभवान् (पा) | ११६.७६ | षडमंभोजनं दद्याद् (उ) | ६५.६ | षट्स्तु श्रुतसेनश्च (भू) | १०६.५४ | संक्षिप्य कथितं धर्मं (स्व) | ३१.१६७ |
| श्वेतकेतोः सुतः कश्चिद् (पा) | ७२.८७ | श्वोहिनक्षत्रं सूर्यं (पा) | ११६.७८ | षड्विधा हि स्वभेदेन (भू) | ६६.१४ | षट्ठाध्यायस्यमाहात्म्यं (उ) | १८०.१ | सक्षेपतोमयाप्रोक्तं (उ) | २२६.११६ |
| श्वेतः खुरविषाणाम्नां (उ) | ३२.२३ | ष | | षड्विगुणसंयुक्त (उ) | ३७.१६ | षट्ठाध्यायस्यमाहात्म्यं (उ) | १८०.१ | सक्षेपे विस्तरेनैव कर्तव्यं (स्व) | ५.१८ |
| श्वेत गंगा महापुण्या (उ) | १३७.१६ | षट् कर्मवर्तकस्त्रेक-(सु) | १५.३०१ | षण्मासमायुः पुत्रस्य (सु) | ३३.८ | षट्ठांशं तत्र गृह्णाति नान्यं (पा) | १७.४७ | सक्षेपो वर्तते विप्राद्वापरे-(स्व) | ७.१५ |
| श्वेतचामरं वातेन (क्रि) | २३.१३ | षट्कांडानि सुरम्याणि (पा) | ६६.१६२ | षण्मासमुपिता विप्र (पा) | ६६.१२४ | षट्ठवर्तमारतपुण्य-(सु) | २०.१४१ | संख्याख्यायोगजाचान्या (सु) | १५.१७७ |
| श्वेतदीपं स्वरूपं तु (उ) | २२६.४४ | षट्कुक्षिलक्षणां पुत्र (सु) | ४६.१८४ | षण्मासात्सिद्धिमा प्रीति (उ) | २४३.५० | षट्ठीमधुरिकायुक्तं (क्रि) | ११.१११ | संख्यायाचक्ष्व वपाणि (सु) | ३३.७ |
| श्वेतपत्राणिमंशोद्य (पा) | ११४.२२४ | षट् तिलैः कादमीभूतं (उ) | ४२.२३ | षण्मासादिकपर्यंत (उ) | २.७ | षट्ठीमुपोष्य कमलं (सु) | २१.२४८ | संयुक्तसर्वतो रभ्यं (पा) | ६६.१४६ |
| श्वेतपुष्पं कृता माला (भू) | १०४.७ | षट्त्रिंशद्यो जनो (उ) | १२५.११२ | षण्मासान्योद्विजो (स्व) | ५६.२ | षट्ठे काले च साभुक्ते (उ) | १२६.४६ | सज्जानखुराग्रैश्च (भू) | ४५.१८ |
| श्वेतमाल्यांबरधरं (सु) | ३४.२५२ | षट्पदानां निनादेन (भू) | ६३.७ | षट्कोट्यस्तदाजाता-(सु) | ४.५१ | षट्ठे गण्यपरिपूर्णां (उ) | २२६.३३ | सजातदोहृदकांतं (भू) | ७६.२० |
| श्वेतवस्त्रयुग्मं सूक्ष्मं (पा) | ११२.८५ | षट्पदानां निनादैश्च (भू) | १०१.१७ | षट्ठिर्धनुः सहस्राणि (स्व) | ४१.८ | षट्ठंशं गारुडयोक्तं (उ) | २३६.१७ | सजात पातकं तस्य (भू) | ६१.२ |
| श्वेतवस्त्रेण सवीता-(भू) | १२.६४ | षट्पदानां सुनादेन (भू) | ४६.६ | षट्ठि वर्षसहस्रं स्य-(उ) | २५३.१५४ | षट्ठशास्त्रमंत्रेण (सु) | ३४.२६० | सजात सत्यमेवं वै (भू) | ११६.२५ |
| श्वेतां च दद्याद्यदिशक्ति (सु) | २२.५४ | षट्सहस्राणि चोच्छ्रयो (पा) | ६६.४ | षट्ठि वर्षं सहस्राणि (स्व) | १३.१६ | षट्ठशास्त्राय सामर्थ्यं (उ) | १६१.१ | सजातः कृष्णकायस्तु (भू) | ६२.१६ |
| श्वेतातपत्ररचितः सित (पा) | १०.१६ | षडक्षरं महामंत्रं (उ) | २३५.४३ | षट्ठि वर्षं सहस्राणि (स्व) | ३.४६ | षट्ठशास्त्रं वयो रूप (उ) | २२६.१३६ | सजातप्रत्ययोपि-(उ) | २१२.११ |
| श्वेतात्वं श्वेतरूपासि (सु) | १७.३०६ | षडक्षरं महामंत्रं (उ) | २३५.४३ | षट्ठि वर्षं सहस्राणि (स्व) | ४४.१४ | षट्ठशैते महापापा (भू) | ६०.४५ | सजातमात्रेण ततो जना-(सु) | ३०.६६ |
| श्वेतावल्कलिनोपुण्या-(उ) | १३५.५६ | षडक्षरेण जुहुयादाज्यं (उ) | २२३.६२ | षट्ठि वर्षं सहस्राणि (उ) | ३२.२४ | षट्ठशैरश्वमेधैश्च (उ) | १२८.१५४ | सजाताकल्मषैर्हीना (भू) | ८८.४६ |
| श्वेतास्वपुण्याणि तथा (पा) | ६८.१७ | षडक्षरेण मंत्रेण हरि (क्रि) | १५.६८ | षट्ठि वर्षं सहस्राणि (उ) | ११६.८ | षट्ठशैव ततो गावः (भू) | ४०.२६ | सजाता मानवा सर्वे (भू) | ७५.२६ |
| श्वेतीकृतसतीकारपरायं (उ) | १८७.२१ | षडंगवेदयोगेन (सु) | १५.११४ | षट्ठि वर्षं सहस्राणि (उ) | २०४.६५ | षट्ठशैश्चोपचारैश्च (भू) | १२५.३६ | सजातामृगरूपास्ते (सु) | १०.६७ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------------|--------|
| संज्ञाताराजेश्वरं (भू) | ७७.५८ | संन्यस्ताल्लिकर्मा (उ) | १२८.२०६ | संवत्सरातेलवणं गूड (सु) | २२.१५६ | संसार कानन घनं बहु (भू) | २२.२२ | संसारोऽस्मिन्महाधोरे (क्रि) | १३.१३२ |
| संज्ञातास्तत्क्षणात्तात (भू) | ८६.४६ | संप्रवक्ष्याम्यहं तात (भू) | ६०.२ | संवत्सरातेशयनमिषु (सु) | २१.३१३ | संसार कौतूहलमंदिरते (क्रि) | ४.६४ | संसारोऽस्मिन्सविज्ञयः (क्रि) | ६.१२४ |
| संज्ञातोऽर्थमवीयोपि (भू) | ३.५२ | संवभूतुः सुनास्तस्य (भू) | १२२.१३ | संवत्सराश्चमनवस्तया (भू) | २२.४१ | संसारघोरजलबोनुहरे (क्रि) | १६.६२ | संसारे विलयते तेन (भू) | ६६.१०२ |
| संज्ञातोऽब्राह्मण श्रेष्ठ (भू) | ४.१२ | संयतात्मागृहं गत्वा (उ) | २५३.५१ | संवत्सरेतुयाश्चैव (उ) | ५१.२४ | संसारचक्रगण (सु) | ३४.१०१ | संसारे जन्मं प्राप्य (क्रि) | २३.८१ |
| संज्ञातो वस्त्र संयुक्तः (भू) | ८६.३३ | संयुक्तं धृतदुग्धाभ्यां (क्रि) | १३.४४ | संवत्सरोपितेशिष्ये (स्व) | ५३.३६ | संसार चक्र भ्रमणादि (सु) | ३४.११४ | संसारे जन्म संप्राप्य (व) | १२.४२ |
| संज्ञातो पक्षिणां श्रेष्ठ (भू) | ८६.३६ | संयुक्तं च सुपर्णेन (सु) | ४१.२७१ | संवर्तनं मोहनं च तथा (सु) | ४५.१०७ | संसारदारुणहुताशन (भू) | ३२.५४ | संसारे जायमानस्य (सु) | ४३.१७६ |
| संज्ञारः कामजोयत्र-(पा) | ५.४१ | संयुक्तो मधुना तेन गगच्छ (सु) | ४३.२०५ | संवर्द्धयति ते कोशं (उ) | २०२.२८ | संसार पापविच्छेद कथं (क्रि) | १७.६५ | संसारे तस्य संभूतिः पुन (भू) | १३.३२ |
| संज्ञांप्राप्तं तु सवीक्ष्य (पा) | ५६.५१ | संयोगादधृतमुत्पन्नं (सु) | २१.१६८ | संवादमेतं वरं कन्य (उ) | १२७.१७७ | संसारपारगमनालय (क्रि) | १६.६३ | संसारे तुच्छ सारेऽस्मिन् (उ) | २६.२५ |
| संज्ञांप्राप्ताह्यु वाचे (पा) | ५६.२० | संयोज्य कृष्णमेवाथ (सु) | १३.३६ | संविभ्रानं किमत्रास्ति (उ) | ३३.११ | संसारमोचनं तीर्थं तथैव (सु) | ११.५७ | संसारे नास्तिकः कस्य-(पा) | ६७.६० |
| संज्ञापयति सुजीतो (भू) | ४.२५ | संयोज्य गंगा सलिलैः (पा) | १०८.५२ | संविशेन्नादं चरणो-(पा) | ६.६० | संसारवृक्षमतिजीर्णम्-(उ) | २२.२३ | संसारे नास्ति चैवान्धा भू (उ) | ७७.३६ |
| संतप्लोहशूलाग्ने (क्रि) | २३.१३६ | संरब्धागर्जमानास्ते (भू) | ११४.२७ | संशयच्छेदनायात्र (उ) | ५७.२८ | संसारसागरं तत्सु स (क्रि) | ७.१६ | संसारेनास्तितत्पापं (क्रि) | १५.७४ |
| सत्यवत्त्वाभ्यामरी (उ) | १८.१२५ | संलक्ष्यतां हस्तिनः पर्वता-(पा) | १०.१३ | संशयनो विधेहीति (पा) | ६८.१२७ | संसार सागरमतीव-(भू) | २२.२० | संसारे भ्रम माणेन वैराग्य (भू) | ८.३० |
| सदृशनाय योगानां (उ) | २२६.१२१ | संलग्नो हृदिनालीकः (पा) | २३.८५ | संशयाविष्टचित्तेन (पा) | १८.७ | संसारसागरान्नाथ (पा) | ८२.४२ | संसारे यानिदानानि (क्रि) | २०.१५० |
| संदष्टीष्टुष्टः क्रुद्धो (सु) | ४५.१५१ | संलब्ध्वांतरसंक्षोभं (सु) | ३६.१४३ | संशयोस्ति महामंत्रे (उ) | ५३.६ | संसारसागरेषोरे दुःख-(क्रि) | १७.४८ | संसारेयानिपापानि (क्रि) | २२.५८ |
| संदृश्यतां च तनयोभार्या (उ) | ३.४७ | संलापेया दृशंचित्तं (पा) | १०६.२० | संशोचति स्म दुःखार्तो (उ) | १२६.७६ | संसारसागरे प्राप्ता (उ) | ११७.६ | संसारेस्मिञ्जनप्राप्य-(क्रि) | ६.१५७ |
| संदृष्य हृष्टाः शंसन्ति (क्रि) | ६.७ | संवत्सरं गुरोर्भक्तिं (सु) | ३४.२४६ | संशोच्यमानापि तथा (भू) | ६६.७८ | संसारसिधुमति निम्न (क्रि) | १८.५५ | संसारेस्मिन्सारेतु (सु) | १३.३१२ |
| संदृष्ट्वा पार्श्वतो वृत्ति (उ) | १४.६ | संवत्सरं कृतं पुण्यं (क्रि) | ११.६२ | संश्लिष्य जघनुरयो (उ) | ५.८१ | संसारस्थहिनीोत्पत्तिः (सु) | ४३.१५० | संसारो वैष्णवाधीनो (क्रि) | २.८१ |
| संधाय बाणशतकंशं (पा) | २३.५४ | संवत्सरदिनं स्तद्वत् (उ) | ८६.१० | संसर्गाज्जायते पापं (भू) | १२३.२१ | संसाराब्धिसर्वं दुःख (क्रि) | १६.१७७ | संसिद्धिं प्रायश्चर्येन पूर्वं (सु) | ४३.२१४ |
| संनियम्येन्द्रिय ग्रामं (उ) | १२१.६ | संवत्सरजतानांचल (उ) | १२४.४२ | संसारकर्ममालेपप्रक्षालनं (स्व) | २६.४४ | संसाराणं वमनानां (उ) | ५२.४ | संसेवमानं तद्विरक्षायां (उ) | १८०.८५ |
| संनिह्य गमिष्यति राहु (स्व) | १५.७६ | संवत्सरशतं साग्रं (उ) | १२७.३६ | संसार कर्ममाले प्रक्षालनं (उ) | १३१.२३ | संसारेऽस्मिन्कथं जातो (क्रि) | १६.६६ | संसेवितानि मुनिभिः सिद्धै-(सु) | ३२.८६ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४१६

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|
| संसेव्यमानं मुनिभिः (उ) | ८०.३० | संस्मरणात्स्मरणात् (भू) | ५७.३३ | स ग्राहृतः शिलासंघः (पा) | ६१.५३ | स एव पशुपालो भूत्स्वः (सु) | १७.१७ | सकथं ब्राह्मणोऽयस्तु (क्रि) | १६.४ |
| संस्कारस्तेष्वद्देहो (उ) | ७६.१७ | संस्मरन्तं निजकर्म (उ) | २११.१७ | स ग्राहृतो मरुर्विविधैः (पा) | ४४.७० | स एव पुरुषो विष्णुः (उ) | २२६.६६ | सकथं मा महावीरो (पा) | ५६.२४ |
| संस्कारे विहिते राजन् (उ) | २१६.८ | संस्मरन्तस्य भूप (उ) | १२५.१३६ | सङ्ख्यस्सर्वज्ञानां (सु) | ३६.१६ | स एव पूज्यो विप्राणां (उ) | २५५.२३ | सकथं मानुषलोके (सु) | ३०.४ |
| संस्कृतास्ते सुताः (उ) | २४२.६७ | संस्मृत्य च स्ववृत्तांतं (उ) | १५२.३७ | स उवाचा द्विजश्रेष्ठ (ब्र) | २६.३० | म एव भगवान्सर्वकरोति (सु) | ३६.२१ | स कदा कृतवान् विप्र- (भू) | ६१.५१ |
| संस्तभ्य हृदयं तस्याः (सु) | १८.१७१ | संस्मृत्य पुष्कराणां तृत्ता (स्व) | २६.२३ | स उवाच मुदा विप्रा (ब्र) | २३.३० | स एव मुक्तः प्रायेण (उ) | १७६.४८ | स कदा च मशुआवयजे (पा) | ७३.३८ |
| संस्तभ्याश्च विपुला (पा) | ५८.२८ | संस्मृत्यो मनसा ध्यातः (पा) | ३५.४८ | स उवाच विमुक्तो (पा) | ४७.७४ | स एव मुक्तो मुनिनर- (स्व) | ३५.२६ | स कदा चित्तु मं तुष्टः (उ) | १६१.१४ |
| संस्तूयमानस्तत्रेणो (उ) | २२६.१७८ | संस्तूयमानस्तत्रेणो (उ) | १०६.६ | स उवाचात्मनात्मानं (उ) | २१३.६३ | स एव मुक्तो भेभिर्मुनि- (सु) | ४१.७६ | स कदा चित्समायातः (उ) | ६०.८ |
| संस्तूयमानस्ति (उ) | २४२.३६४ | संहृतस्तुदायदो महिष्मान् (सु) | १२.१०२ | स उवाचा युनासर्वमपने- (पा) | १०५.१७७ | स एव युवयो न शिवामुदेवः (सु) | ४०.३८ | स कदा चित्सत्त्वं (उ) | १८६.१० |
| संस्तूयमानस्त्रिदशैः (उ) | २४६.२७ | सहृदिष्यति त्रैलोक्यं (उ) | ३८.६२ | स एकदा महीपालः (क्रि) | ३.२१ | स एव वासुदेवो त्रसवं- (उ) | २२६.११२ | स कदा चिदग्रादाजा ह्यनंत (उ) | १०८.८ |
| संस्तूयमानस्त्रिदशैः (उ) | २४५.४६ | संहारकारिणी देवी (सु) | ३१.७५ | स एकदासमालिङ्ग्य (उ) | २०६.१२ | स एव वाव्यक्तरूपः (उ) | २२६.३२ | स कदा चिदभ्यांस्तस्य (सु) | २४.३५ |
| संस्तूयमानो भगवान् (उ) | २३१.४८ | संहारास्त्रं शनिदंष्ट्रवा (उ) | ३३.१८ | स एकदा महाभागसिंहं (उ) | २१८.८ | स एव सर्वकामाद्यो (उ) | १५१.१३ | स कदा चिन्मया साधं (उ) | ६६.४३ |
| संस्तूयमानो मुनिभिः (उ) | २३३.६ | संहारस्त्रं समालोक्य (पा) | ६४.१६ | स एकदा महीपालः (क्रि) | ३.२१ | स एव सर्वधर्मात्मा (उ) | ६४.१२१ | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | १६०.१ |
| संस्थानं तादृशं गत्वा (भू) | ६१.१६ | संहितास्त्रेव विप्रैश्च (भू) | १२५.४५ | स एकदासमालिङ्ग्य (उ) | २०६.१२ | स एव सहजो राजन् (पा) | ६६.५३ | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | २०.४६ |
| संस्थानं लभतो विष्णो (क्रि) | ११.१६६ | संहृतं परमहृदं (उ) | ७६.२२ | स एव कुरुते वृष्टि (उ) | ५७.१६ | स एव प्रणामं (पा) | ६५.६२ | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | २०.४६ |
| संस्थाप्यतं विपुलशैल- (सु) | २१.१०३ | संहृत्य चक्रं गोविन्दो (उ) | २५०.८४ | स एव रसकः श्रीशो देवा- (उ) | २३८.५० | स एव निजसंन्यानाम- (पा) | ११.३० | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | २३.१२३ |
| संस्थाप्य पात्रे विप्राय (सु) | २५.१६ | संहृदं शक्रपुत्रश्च (उ) | ५.६१ | स एव त्रिस्त्रिंशद्विचित्र- (भू) | २०.२७ | स एव पुरुषो रीद्रो गोमया (सु) | १४.३८ | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | २३.१२३ |
| संस्थिताः प्रकृतौः (उ) | २२८.१०७ | संहृदं माणास्सबला- (सु) | ४१.२१५ | स एव गुरुर्वे प्रीतिमुप- (सु) | १५.२६५ | स एव वीरको देविसदा- (सु) | ४३.४७६ | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | २३.१२३ |
| संस्तप्य सरिदं भोमिः (उ) | १७६.४५ | संहृदं तस्य तद्वैत्यस्य (सु) | ६.६१ | स एव तत्तया भुङ्क्ते (भू) | ८१.४६ | स कदा चिन्मोचयित्वा (सु) | ४३.४७६ | स कदा चिन्मोचयित्वा (उ) | २३.१२३ |
| संस्तुष्टं हृदये चास्य (स्व) | ५२.२७ | स आप्लाव्य ततस्तिष्ठ- (भू) | ३७.५५ | स एव दिवसोऽथ मयोध्या- (उ) | १३१.१६ | स कदा चिन्मोचयित्वा (क्रि) | २१.८४ | स कदा चिन्मोचयित्वा (गु) | १५.६३ |
| संस्तुष्टो वंदितो भूयः (स्व) | ३५.२७ | स ग्राहृतः कपीन्द्रेण च (पा) | ३४.५२ | स एव धन्यः स्वजनः (पा) | ४६.२३ | स कदा चिन्मोचयित्वा (पा) | २८.३१ | स कदा चिन्मोचयित्वा (पा) | ६२.११० |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४१७

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|--------------------------------------|--------|
| सकल भवनमध्ये (उ) | १६५.७८ | सकुत्रवर्ततेवोरोहयः (पा) | ६०.४ | सकृन्मदीसमासाद्य (स्व) | ३८.६८ | सखीभिरितितेभार्या (उ) | २०१.५५ | सगच्छेत्परमं स्थानं (भू) | ४३.७५ |
| सकलं नगरे नास्ति (उ) | ६६.४१ | सकुटुम्बः सुतेन्यस्य (पा) | १७.५६ | सकृन्मात्रप्रपन्नायत- (पा) | ८२.५२ | सखीभिर्मंडितातिष्ठे (पा) | ८३.६७ | सगच्छेद्विष्णु भवनं (क्रि) | ८.२२ |
| सकलैर्यौवनैः कन्यैस्त्वं (क्रि) | ५.१३६ | सकृद्वृहाः कुलटपाश्च- (स्व) | ६.६१ | सकृमिः कुरुते स्फोटं (भू) | ५३.६० | सखीभिर्वाद्यतीभिर्गाय- (पा) | ७२.८५ | सगच्छेद्विष्णु भवनं (क्रि) | २०.१२८ |
| सकल्पितेनृत्यकत्वा (पा) | ७२.७६ | सकृच्छत्वातुयः कन्या- (स्व) | १८.३२१ | सकोनाहलशब्दस्तु (भू) | ११५.२२ | सखीभिः सहविप्रपै (क्रि) | ४.३४ | सगच्छेन्नरकं घोरं (क्रि) | २०.१२६ |
| सकथ्यपस्यात्मभवद्विजं (सृ) | ४१.३८ | सकृत्कृत्वाहरेः पूजां (क्रि) | १६.११५ | सकोशेषुसमादाय (उ) | २०४.७१ | सखीभिः सहिता क्रीडां (सृ) | ४३.४३२ | सगजं सुंदरं शृङ्खा पुष्पं (भू) | २०.२१ |
| सकांचनः प्रदातव्यो (उ) | ५१.३६ | सकृत्प्रपन्नोवक्ष्यामि (पा) | ८२.४१ | सकौडिन्योऽपि श्रद्धाः (उ) | १४५.१४ | सखीभिः सहिता गत्वा (भू) | ४६.३८ | सगणः सगरिवारः (पा) | ४३.१५ |
| सकाननात्युपाक्रम्य- (सृ) | ४३.२६८ | सकृदावांप्रपन्नोवामात् (पा) | ८२.८३ | सकौशिकमखगत्वा (पा) | ६६.१६५ | सखीभिः सहिता सा तु (भू) | ४८.२३ | सगणोऽनन्देविप्र (पा) | ८२.६० |
| सकांस्वपाशक्षतं शुक्लं (सृ) | २२.५३ | सकृदावांप्रपन्नोयस्स्यक्तो (पा) | ८२.८२ | सकौशिकेनमखिलां (पा) | ५७.२४ | सखीभ्यांसंयुतांश्रीलो- (सृ) | ४३.२६७ | सगतः शिवलोकं (उ) | १४६.८ |
| सकामाग्निं समाख्यातो (भू) | ६४.८३ | सकृदुच्चरितयेन (उ) | ८०.१६१ | सकृद्वश्चापमुद्यम्य (पा) | २७.२६ | सखीभ्यामनुयातातु- (सृ) | ४३.२६१ | सगतो वेष्णवतत्रया (उ) | १६२.१८ |
| सकामैर्योगिभवापि (पा) | ३५.३४ | सकृदुच्चारणादेवकृतं (पा) | ८१.३४ | सकृत्तुच्चारणमुद्यम्य (पा) | ५२.६५ | सखीमध्यगता सा तु (भू) | ४६.३६ | सगत्वा देवभवनं महेश्वरं (सृ) | ४३.१६२ |
| सकामो धर्मं बाहुल्यात् (उ) | १२८.६३ | सकृदुच्चारणादेवददाति (पा) | ८१.१० | सखद्विगुणमधुसूदनं (भू) | ७३.११ | सखे कथं दुर्बलस्त्वं (क्रि) | १७.२०२ | सगत्वा प्रतिकूलं तु (पा) | ६६.३८ |
| सकामो धर्मं बाहुल्यात् (स्व) | २२.८४ | सकृदुच्चारणान्तरां (उ) | २२३.२० | सखाचैवततश्चासीद् (उ) | ६६.४२ | सखे न धारये जीवं स्व (भू) | ५७.६ | सगत्वा वन्यमादाय (भू) | १०८.६ |
| सकामोवाप्रजायेवाहुर (उ) | १२५.६६ | सकृदुच्चारितेनैवक्ष्यं (सृ) | ४६.१६१ | सखादतिनरातेत्यनित्यं (उ) | १८५.५१ | सख्यं कतुं प्रयच्छेत्स- (भू) | २४.१८ | सगदाज्जागरित्वायनमः (पा) | ७८.२७ |
| सकारं गुल्फदेशे तु विकारं (सृ) | ४६.१७३ | सकृदेवप्रपन्नोयस्त- (पा) | ८२.८५ | सखानारायणोदेवः (सृ) | १४.१२६ | सख्यं तेन पवित्रो (क्रि) | २५.११ | सगदगदंसाधुनेत्रं (स्व) | ३१.१६२ |
| सकारितस्तेनविशुद्ध- (पा) | १००.३२ | सकृदेवनरः स्नात्वा (उ) | ११६.१३ | सखासौ माधवस्यापि (भू) | ५७.३७ | सख्यमासीत्परमकंदेवा (सृ) | १३.१७४ | सगरस्यात्मजावीरां (उ) | २१.१ |
| सकालियोलब्ध संज्ञस्त (उ) | २४५.१२६ | सकृदेवहियोदनाति (उ) | २५५.६६ | सखीं चैनां प्रियां पृच्छ (सृ) | ३४.३६ | सख्यः दत्तस्याविप्रेक्ष (पा) | ८१.५० | सगरः स्वोपतिजां तु (उ) | २०.३२ |
| सकाले प्राप्तावामपुत्रं (पा) | ३१.५४ | सकृदगं गमसिस्नातः (स्व) | ३१.७२ | सखीं तदासृजद् ब्रह्मा- (सृ) | ३२.१४६ | सख्यस्तास्तदिगरिता (पा) | ५७.१५ | सगरान्वयनिर्वाण (पा) | ८५.५६ |
| सकाशादवासुदेवस्य (उ) | १२४.३० | सकृदशृष्ट्वा तु गोविंदं (उ) | ८३.१८ | सखीं संजनयामास (सृ) | ३२.१५१ | सख्योऽप्येवं निति (पा) | ८३.५२ | सगराण्विलीयेन (त्र) | ४.२० |
| सकाशिराजस्तांमाहे- (उ) | २५१.१७ | सकृद्राघाष्टमीकृत्वा (त्र) | ७.१० | सखीगणैश्चमेयातुभगिन्यो (सृ) | १७.२८ | सगच्छन्ना पिशुथाव (पा) | १०१.६ | सगरो नाम मेधावी (भू) | ६४.४४ |
| सक्रिरातस्तुराजेन्द्र (उ) | २००.६१ | सकृद्विधानकंकुर्यात् (सृ) | २०.१२४ | सखीभावस्वभावेन (भू) | ७७.७६ | सगच्छन्पथिक विप्रपै (क्रि) | ६.१६ | सगर्भस्तत्र विप्रेन्द्र इन्द्र- (भू) | २६.२१ |



श्रीपद्महापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४१८

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|
| सगर्भासांसीसाध्वी (उ) | १५५.३२ | संकल्पयति दानानि (भू) | १४०.३८ | संगतागोबुरावत्रसा भ्रम (उ) | १३६.४५ | मंघाते काल सूत्रेच (क्रि) | २३.१२७ | सचतुर्दशवर्षाते प्रविश्य (पा) | ३६.७८ |
| सगर्भेय्याकुलो जातः (भू) | ८.१ | संकल्पादर्शनात्स्पर्शा- (सु) | ६.२ | संगत्यानुगतश्च (उ) | २८.३६ | सघातो जायते न स्मात्तस्य (सु) | २.६८ | सचन्द्र तु महाभागवीर्यं (सु) | १३.१३१ |
| सगर्वं बुवचस्तेषां (सु) | १८.८२ | संकल्पायास्तु संकल्पा- (सु) | ६.२० | संगत्या ब्राह्मणैस्त्वैव- (भू) | १८.२७ | सभायाद्दुर्दानात्स्पर्शास- (भू) | ३०.७ | सचपश्यति तान् सर्वान् (भू) | ६२.३५ |
| सगायिसुनुविविधं (पा) | ६२.५ | संकल्पिते चर्वस्मि- (पा) | १०५.७८ | संगंतुमिच्छस्त्वांभार्या (सु) | ४०.३७ | संजार्जं द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १७.६६ | सच पापी भवेदुश्याद्यः (भू) | ६३.१२ |
| सागाहंस्पर्धविलोप्यैव (भू) | ६०.५ | संकल्पितोपहारस्य (पा) | ११०.३४ | संगमं देहि मे भद्रे (भू) | ११८.२३ | संमार्जयति ये नित्यं (क्रि) | २.६५ | सचभीमार्जुनावाहय (उ) | २५२.२ |
| सगुणं न वदेत्पुत्रं (भू) | ४७.५१ | संकल्पनाशनंस्तोत्रं (उ) | ६८.५ | संगमे तव दास्यामि (भू) | ७७.५२ | संमूढस्य स्मृतिभ्रंशः (भू) | ६६.६८ | सचभूयैस्तु संगतः (भू) | ४०.५ |
| सगुहः सचविज्ञेयः (उ) | ३५.६५ | संज्ञास्यदोहांसौवर्ण- (सु) | २८.११ | संगमेमध्यतोवृत्त (पा) | ११२.६४ | संज्ञासर्वतमाशान्निदां (सु) | १३.२३५ | सचराजामुदुप्रासं (उ) | २०३.४ |
| सगृहीत्वागतो गंगा (उ) | २१.१७ | संकीर्तितश्चितित- (पा) | ८५.३४ | संगमे सरितः स्नात्वा (उ) | ६६.३ | सखो सार्वं समायाता (भू) | २५.७ | सचराजावर्षं पुत्रा (पा) | ११६.३७ |
| सगृह्णातु मदीयाद्वि (पा) | २६.१७ | संकीर्तितोदमः प्राज्ञः (क्रि) | १७.८६ | संगमे सरितां स्नात्वा (उ) | ६६.६८ | सच एकादशाध्यायं (उ) | १८५.७२ | सचराहुर्ग्रहावाहुर्मेष (उ) | ६६.२३ |
| स गोत्रां रमसे नारीं (भू) | ७८.२५ | संकीर्त्यतेमयाचात्रपापानां (सु) | २३.२२ | संगमो दर्शितस्तेन (गू) | ८६.३६ | सखाहं देवदेवस्य (भू) | २५.६ | सचविप्रोवरंप्राप्य (क्रि) | ७.१२३ |
| सग्रहः सह नक्षत्रं (सु) | ४५.१२६ | संकीर्त्यन्तम माहूस्व (उ) | २४२.७६ | संगम्यस्वसखी (ता) | ८३.८२ | सचएवशपातोसो (क्रि) | ४.५२ | सचविष्णुपुरं गच्छेद (उ) | ६४.८६ |
| सघृतश्रीकलंदत्वा दत्त्वा (स्व) | १८.१२ | संकीर्त्यहंरिक्देशाय (सु) | २६.२१ | संगयस्यसमीपेतेसतीर्थं (उ) | १७.११ | सच कीर्ति मुखोनाम (उ) | १०.३७ | सच व्याधः स्त्रियो (उ) | १५.२० |
| सघृतभोजनं चास्मै (स्व) | ६१.५७ | संकुचतिविनाते कुमुदा (उ) | २०६.३० | सगीत विद्या कुशलः (उ) | २०६.६ | सचक्रमारेण सप्त (पा) | ११६.२७ | सचशुक्रो पदेशेनराक्षस (पा) | ११५.११ |
| सघृत्वातां महाराजः (ब्र) | १३.४७ | संकृतं न कथं हित्वा (ब्र) | ६.१६ | सगेनसिंधुनाकांक्षी (ब्र) | ६.१२ | सचक्रिकोऽग्रिसंतुष्टो (क्रि) | १६.५३ | सच मंसार मारकं सर्वं (उ) | ७१.३२५ |
| सङ्कटेविषमे दुर्गं (सु) | १८.२८२ | संकृतं नागतो वैश्यो (ब्र) | ६.१५ | संगमं चक्रिरेमृदा (पा) | ६२.५६ | सचक्रं चाक्रमध्येऽस्या (पा) | ११३.४ | सचसंपूजयामासराजा (उ) | २४१.२५ |
| सकर्षणं करांगुष्ठे (उ) | ७८.२३ | संकृतं कर्कातयात्र (पा) | ८३.१०२ | संग्रामं पंचमस्त्वेव (सु) | १३.१८१ | सचण्ड कोनिधीय (पा) | २०६.१३ | सचसर्वभयान्मुक्तः (सु) | १८.४४० |
| सकर्षणाय रुद्राय (उ) | २२८.८२ | संक्रांतं सर्वमेवैतत्तन्वं (सु) | ४४.७१ | संग्रामं याचमानस्तु युद्धं (भू) | ४२.५६ | सचतत्त्वं मुनिश्रेष्ठ (उ) | ७१.४२ | सचसाध्वोपिपरायीनो (पा) | ११६.२६ |
| सकर्षणोयप्रद्युम्नः (पा) | ७८.२६ | संक्रांतं त्रिपुरागे च (उ) | १२६.१०८ | संग्रामे प्राप्तमृत्यु (क्रि) | २१.८७ | सचतारयतेवर्गं (उ) | २७.३ | गच सुग्रीवम्य हनुमान (पा) | ११६.१५५ |
| सकर्षणोरोहिणो (उ) | २४५.६६ | संक्रांतो च महाबाहो (सु) | ३४.२४२ | संग्रामे संकटे दुर्गेश्वरिभिः (उ) | २५२.१०५ | सचविष्ठाकृमिभूत्वा (उ) | ३२.२६ | सचानिपचव कुमापान् (पा) | ११७.२३८ |
| सकर्षति प्रजाश्चाते (भू) | ३६.१८ | संज्ञतस्तस्य वचना (उ) | २४२.२८१ | संग्रामे बंधुभिः शिन्धो (सु) | ३०.१३२ | | | | |

| | | | | |
|-------------------------------------|-----------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|
| सचाण्डालडवर्जयः सर्वं (क्रि) २०.१३० | सच्छिन्नधन्वाविरथो- (पा) २६.४५ | सज्जीभूतोरयेतिष्ठन् (पा) २६.४६ | सततस्थीयनेतेनं (उ) १८५.२३ | सतस्यकथयामास (उ) ४.५० |
| सचाण्डालोपिपूनात्मा (उ) ७१.२१ | सच्छिन्नधन्वाविरथो (पा) ४१.१६ | सज्जीयनारथाः सर्वैर- (पा) ३३.१७ | सततनियतचित्रे (ध्व) ६१.१०३ | सतस्यकथयामासपुरे (उ) १७६.१० |
| सचाण्डालोपिपूनात्मा (उ) ६६.८४ | सच्छिन्नधन्वाविरथो (पा) ६२.२४ | सज्जीयतांवायुजवालि (पा) १०.१२ | सतत्र कर्तुमारेभेतपः (उ) १८०.२४ | सतस्यकथयामासयज्जात (पा) ३१.४२ |
| सचातिथिस्तथेत्युक्त्वा (पा) ११६.११५ | सच्छ्रुयांकतितमूत्रं (उ) ८६.५ | सज्जं चापं विधायाशु (पा) २६.३० | स तत्र बद्धारज्ज्वा वै (भू) ८१.५६ | सतस्यहृदयेयुद्धेनाम (सु) ६०.२८ |
| सचापितदन्नं वडुतोपेतं (पा) ११६.११७ | सजगत्स्रष्टुकामस्तु (उ) २२६.४ | सज्योनिः स्यादन्ध्यायः (स्व) ५३.६८ | स तत्र बद्धा रज्ज्वैव (भू) ६४.२५ | सतस्यहृदयेयुद्धेनाम (सु) ४४.२३७ |
| सचापि दैत्यः पुनरागतं (उ) १०२.३२ | सजगामतपः कर्तुरेवा (पा) १४.४६ | मज्योत्सन्नचंद्रप्रतिमन (उ) २२८.३७ | सतत्रविधितान्नात्वा (उ) २१८.१६ | मतस्यांचासक्तमना (उ) ५२.७ |
| सचापिमनसदध्यो (पा) १०५.३४ | सजनोब्रह्मातामतिफलं (सु) ४६.१६२ | सञ्चारितो महाकामः (भू) ७७.४० | सतत्रविधिवत्स्रश्चात्वाद (उ) २१८.२१ | सतस्योद्विग्नसिनाभ्यासे (उ) २०६.११ |
| सचापिमातुलं न त्वाह (पा) ११६.११३ | सजयो कथ्यते योगी (भू) ४६.३६ | सचिनोतिद्विजंयस्तु (क्रि) २१.११ | सतत्रस्थापयामास (उ) १५२.३८ | सतडितस्तुपुच्छाग्रे (पा) २८.३६ |
| सचापिमातुलं न त्वाह (पा) १०६.१०६ | सजलांभोदसद्विद्युत् (सु) ४१.२४३ | संचिनोदुक्तं पूर्वं (उ) १७६.१८ | सतत्रागत्यदग्नेवीर- (सु) ४४.४६ | सताडितो दशशरैः (पा) ३४.३२ |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सजलामत्र हस्तं तं मिथं (उ) २०८.११ | संचित्यैवमुवाचेवं (सु) ४४.१०४ | सतत्रायनमात्रेण (उ) ६६.३३ | सताडितो बह्विधैः (पा) ६४.३० |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सजातमात्रेणामृत (सु) ४२.७ | संचरितमहागात्रो (उ) २३७.१८ | सतथा भुजते देवि यथा (भू) ३५.१२ | सताड्यमानोऽतिवर्तः (सु) ४१.२७० |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सजायते कृपा पात्रं (उ) २३.१६ | सटैर्दंदाहचज्वाला (उ) २३८.११४ | सतथेति प्रतिज्ञायदेवानां (सु) ३५.१०० | सतानुवाचब्रह्माणं (सु) १५.६० |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सजित्वा सकलान्देवान् (उ) २३६.३ | सतं कमंडलोक्षिप्रं (उ) ६१.२ | सतदापतितोभूमोसंज्ञां (पा) २६.६६ | सतां कृतमलस्नानां (पा) १५.५० |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जं विधायतंभूप (पा) ४६.२५ | सतं खादितुमारिभेदुष्टवा (उ) ६६.२२ | एतद्वनत्रानिलपीत्वा (उ) १२.१४ | सतां त्यक्त्वा महाप्राज्ञ (भू) ८६.८ |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जतांमम सर्वं त्वं (भू) ११४.२० | सतं देशं तदा पुनः (उ) २०.३७ | सतद्रन्मर्मादायाश्च (भू) ८५.२१ | स तां हृष्टवा दिवोदासो (भू) ८५.५६ |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जनान्ब्रह्मणायां (उ) ११४.१४ | सतयादेवमस्त्व- (पा) ६५.१३१ | सतद्वाक्यं समाकर्ण्य (पा) ५८.५० | स तां हृष्टवा प्रकम्पेत (भू) १५.१० |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जनेसाधवः सवे (उ) १२७.८६ | सतच्छ्रुत्वा चोभीष्म (सु) ३३.६ | सडुलंप्रमाणेन (पा) ६६.७० | सतां हृष्टवा महात्मा वै (भू) ७.२० |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जंसेनांविधायाशु (पा) २३.२१ | सततंधार्यतेवारितेनाप्तं (पा) ७६.३५ | सतयापीडयमानुस्त (सु) ३४.३४३ | सतां धर्मस्तितः (पा) ८२.२४ |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जिकं परमोत्कृष्ट (पा) १०५.१२२ | सततंभूमिशायोयः (उ) ३२.६७ | सतयामाययाविष्टो- (सु) ४३.२३३ | सतां निदाकृताया च (क्रि) १७.१६४ |
| सचापि साध्यं तत्र (पा) ११६.३५ | सज्जीचकार सेनांतां (पा) ६०.११ | सततंमयुजेजाते (पा) ११२.१८ | सतया सहवर्षाणां (पा) ५७.१० | सतां निदानाम्नः (त्र) २५.१५ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|---------------------------------|---------|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|--------|
| सतां प्रणम्य धर्मात्मा (भू) | २६.१० | सतुगत्वाब्रवीदैत्यमभयो (सु) | ४४.१६६ | सतुममपंचपुत्राः (उ) | २५२.४४ | सतैः परिवृतः श्रीमान् (स्व) | १०.७ | सत्यं नित्यं परानंदं (पा) | ७३.२६ |
| सतां प्राप्य सुदुष्टात्मा (भू) | १५.४ | सतुचूणित सर्वांगो (उ) | २४५.१५४ | सतुराक्षसाहस्रं (उ) | २४२.२४८ | सतैः प्रोक्तो महाप्राज्ञः (भू) | ६२.३ | सत्यं ब्रवीद्विप्रस्यं (क्रि) | १७.२२० |
| सतां संगति मासाद्य (उ) | २१३.३७ | सतुचूणितसर्वांगो (उ) | २४५.३५४ | सतुस्वमिष्यन्तः पुरद्वारि- (उ) | २४२.३२ | सतैर्मुक्तः पाप कर्मा (उ) | ४०.२७ | सत्यं ब्राह्मण रूपेण (भू) | १२.६१ |
| सतां संगं समासाद्य (भू) | ३३.१६ | सतुचूणितसर्वांगो (उ) | २४२.२२ | सतुस्तिगयाजातः (उ) | १४६.५ | सतैरनुगतः सर्वविष्णो (उ) | १७७.३६ | सत्यं ब्रूहि प्रियं ब्रूहि (पा) | १०४.६६ |
| सतां संशत्प्रजायेत (भू) | ३०.६ | सतुतं भस्मसाकृत्वा (सु) | ४३.२४३ | सतुवद्यादृष्यभृगाव् (पा) | ७.२५ | सतोयांबुदनिर्धोषं (सु) | १४.२० | सत्यं महीपालमिथोमुकुद (पा) | ६४.७ |
| सतां संगो महापुण्यो (भू) | ३३.१७ | सतुदृष्ट्वाथकाकुत्स्थं (उ) | २४२.२२२ | सतुवक्ष्ये वधदैत्य (सु) | ४३.४७ | सतो वाहुभ्यां परिवर्ज्य (उ) | २४२.५१ | सत्यं यज्ञस्तथादानं (उ) | २७.२२ |
| सतां संगोहिभवति (उ) | ४६.३८ | सतुदृष्ट्वाचनं भूत्वाजगाम् (पा) | ३१.४१ | सतुवक्ष्ये वधदैत्य (सु) | ४३.४७ | सत्कथांश्चावयञ्छृण्वन् (पा) | ६५.१०७ | सत्यं योषित्स्वरूपो (पा) | ७५.४५ |
| सतां संभाषणादेव (पा) | ६४.१११ | सतुधर्मभूतां श्रेष्ठो (उ) | २०२.३ | सतुवैरक्षितोदेवै (भू) | १०६.२८ | सत्कारोयुद्धरूपेण (भू) | ४२.६० | सत्यं वचिम् हितं वचिम् (क्रि) | २५.४५ |
| सतां संभाषणे चैव (सु) | ३२.४ | सतुधर्मविदां श्रेष्ठो (उ) | २३६.२ | सतुवैश्वस्रतुल्यश्च (पा) | ११४.४२२ | सत्कार्यास्तिथयः (उ) | १२७.६ | सत्यं वदतु वाजस्रश्च (सु) | १६.३५६ |
| सतां समारब्धान् (उ) | २५०.१६ | सतुतन्मयतां यान् (उ) | १५८.६ | सतुसक्रस्यविज्ञाय (सु) | ४३.१०८ | सत्कुले प्राप्यनेजम् (पा) | ८६.२८ | सतं वदंगहावुद्ये (पा) | ५६.१८ |
| सतास्तास्तिलशः कृत्वा (पा) | ६२.२६ | सतुनान्दृष्ट्वा दंडवत् (उ) | २४२.७ | सतुस्योक्तमया विष्टो (उ) | २४७.४२ | सतीर्थसेवनादीशान्ध्या (उ) | २१४.१०३ | सत्यं शीघ्रं दयानीन (उ) | १६८.३६ |
| सताम्बभावतस्चित्तं (उ) | ५२.२७ | सतुनारायणस्तादृग्वयसि (उ) | २४२.५३ | सतुस्योदास्यते सर्व (पा) | ३१.४७ | सत्स्वस्य राशिरत्युत्कर्षं (उ) | १८६.२६ | सत्यं सत्यं पुनरपि (क्रि) | १७.२६४ |
| सतामालिङ्गययुवतीं (क्रि) | ४.६६ | सतुनिर्गम्य वै ब्रह्मयोगी (सु) | ३७.११३ | सतुहंतुं न वै शक्तः (उ) | २४५.२२६ | सत्वाश्रेष्ठ्यः प्रदत्तानि (भू) | ४०.४ | सत्यं सत्यं पुनः सत्यं (क्रि) | २.२६ |
| सतिलंशोचित कुशं- (उ) | २१४.६ | सतुनिर्गम्य सर्वांगो (उ) | २४२.३१० | सतेन कर्मणा पापी (स्व) | ५७.६५ | सत्पुत्रस्य भवेद्विप्र (भू) | ६२.७४ | सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नः (क्रि) | १३.२६७ |
| सतीभावेन संस्थास्मि (भू) | ५०.५६ | सतुपूज्यो विष्णु (पा) | ८४.५२ | सतेन धृतिमान् ध्यातां (सु) | १६.३१६ | सत्पुत्रेणैव वायवत्स (उ) | ११७.१७ | सत्यं सत्यं पुनः सत्यं (क्रि) | २५.४६ |
| सतीप्रतिव्रताहृत्या (भू) | ५६.१७ | स तु प्रसन्नः कृष्ण (उ) | २४१.१६ | सतेन भिन्नहृदयः (उ) | २४६.६५ | सत्पुत्रेण महाभागपिता (भू) | १०.४० | सत्यं सत्यं पुनः सत्यं (क्रि) | ८६.३६ |
| सतीयादक्षतनया (सु) | १७.१०४ | सतुवाणिमनस्कृत्य (उ) | २५०.८६ | सतेपुत्रसहस्रस्य (सु) | २८.२४ | सत्पुत्रेणैव वायवत्स (उ) | १०.४० | सत्यं सत्यं पुनः सत्यं (उ) | २२३.७६ |
| सतीर्थमतिशुक्लस्तु (उ) | ८१.१६ | सतुमसुतयाधोरः (सु) | ४३.३६० | सतेपुरस्सनिकटेषात् (पा) | ४६.१७ | सत्यं तीर्थदयानीर्थ (सु) | ११.८१ | सत्यं सत्यं मया (उ) | ३८.६७ |
| सतीसरस्वती गौरी (उ) | २२७.२७ | सतुमनसातद्विज्ञाय (उ) | २४२.६३ | सतेपामनुपस्थानात्स- (सु) | ४१.२४१ | सत्यं तृणत्वा यदा च (भू) | ८१.२५ | सत्यं साधु फलं श्रुतं (सु) | १८.४०४ |
| सतुकृष्णो न विमृष्टो (उ) | २५२.३६ | सतुमनोजवर्यदन (उ) | २५२.८० | सतेपामभयं दत्वा (उ) | २४५.२२३ | सत्यं धर्मस्तथा पुण्यं (भू) | ५८.३४ | सत्यं स्वधर्मवर्तित्वं (पा) | ८५.६६ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| सत्यकेतुश्च राजेन्द्रः (भू) | ४८.११ | सत्य मुक्तत्वयानाथ (भू) | ६८.२६ | सत्यवादी क्रोधहीनो (क्रि) | ७.१५ | सत्येन तेन चैवाय (सु) | ३३.११० | सत्रिकूटाराक्षस (पा) | ५०.४३ |
| सत्यज्ञानानुभावीशः (भू) | ६७.५२ | सत्यमुक्तत्वयामद्रे (भू) | ३६.१ | सत्यवादीजित क्रोधोजित (क्रि) | २३.२ | सत्येन तेनते वज्रं (सु) | ५.६१ | सत्रैणः कामीसदालुब्धः (सु) | १२६.४ |
| सत्यज्ञेजस्विनः शूरा (सु) | १६.२१५ | सत्यमुक्त त्वया भद्रे (भू) | १०५.३४ | सत्यवादीजितक्रोधोजित (स्व) | ५४.२१ | सत्येन देवाः प्रीयन्ते (उ) | २७.२६ | सत्यं प्रपुष्टमाहारैः (सु) | ३६.१०० |
| सत्यधर्मतपोपेतादान (भू) | २०.५३ | सत्यमुक्त त्वया राजन् (भू) | ६४.६१ | सत्यवादीसयामोनी (स्व) | ३१.६३ | सत्येन धर्मं पुण्यंश्च (भू) | ६४.६४ | सत्यंमद्वचनस्तूर्णं (उ) | ५.१६ |
| सत्यधर्मरताः सिद्धास्त (उ) | २७.२८ | सत्यमुक्तत्वयाराजन् (पा) | ८७.३ | सत्यवानयमश्चयः (पा) | ३७.२४ | सत्येन ब्रह्मचर्येण (उ) | १६५.५० | सत्यं चैव तत्प्राणागता (भू) | ५.१६ |
| सत्यधर्मविहीनास्ते (पा) | ६६.१४० | सत्य मुक्त त्वयाराजन् (पा) | ८६.२ | सत्यवानुदानशीलो (सु) | २.७६ | सत्येन लोकं जयति (स्व) | ५४.३२ | सत्यं रजस्तमस्त्वंस्थित्यु (स्व) | २०.३८ |
| सत्यधर्मविहीनास्ते (भू) | १०.१७ | सत्यमुक्तत्वयाराजन् (पा) | ६२.७ | सत्यशौचक्षमाशांतितीर्थं (भू) | १४.१६ | सत्येन वायुरभ्येति (उ) | २७.२६ | सत्यव्रथोममार्गेण (उ) | १२६.२६१ |
| सत्यधर्मादिकं कर्म (भू) | ६४.५६ | सत्यमुक्तत्वया राजन् (भू) | ६७.१५ | सत्यशौचादिभिश्चैव (सु) | ४७.४ | सत्येन शपथं कुर्यात् (उ) | २६.७ | सत्यवामुमुतोवीरहृतो (भू) | १०८.२६ |
| सत्यधर्माविभवेतो (भू) | ८१.७१ | सत्यमुक्तंभवद्भिश्च (उ) | ५७.१७ | सत्यसंयमसंयुक्तास्ते (स्व) | ५७.६३ | सत्येनहीनाः पितृमातृ (उ) | १६६.१३ | सत्यहीनास्तुनिर्वीर्या (उ) | २३५.५८ |
| सत्यधर्मेण कोराजा (भू) | ६४.२२ | सत्यमुक्तकठिताः सर्वेयेये (सु) | ४३.३५० | सत्याकरैरकृत्वा (उ) | ८८.२६ | सत्येनापिशपुषस्तु (सु) | १८.३३४ | सत्या कुलितचेतस्को-(पा) | २४.५५ |
| सत्यध्यान विहीनोयं (भू) | १२१.२० | सत्यमेवन्नर्ममिथ्या (उ) | ४०.४ | सत्याचारपराः सर्वे (भू) | ७५.२८ | सत्येप्रतिष्ठितालोकाधर्मः(सु) | १८.३६६ | सत्या नामंगदेशेषु (भू) | ८.४५ |
| सत्यतद्वचनश्रुत्वा (उ) | २६.३२ | सत्यमेवन्नसदेहो (पा) | १०७.८७ | सत्याचारं दमोयतां (भू) | १०३.८५ | सत्येयं लोकिकी गाथा (भू) | १०३.८० | सत्यामिथ्यामिनः (सु) | ३.१२७ |
| सत्यपूतां ववेदास्मि (स्व) | ५६.२० | सत्यमेवपरोयजः (उ) | २७.२० | सत्याच्युतानंत दुर्गा (उ) | २२८.६० | सत्येपुर्तोपुचमाधमास (उ) | १२८.६ | सत्येनमुच्यतेवर्तुः (पा) | ६७.८५ |
| सत्यप्रवर्तकोदेव द्विज (उ) | ७१.२८० | सत्ययानिकटेष्टाप्य (उ) | २४६.११० | सत्यादित्रिमुनेर्वाचो (उ) | १६.४५ | सत्येहवचनंतस्मिन् (क्रि) | ५.१४३ | सत्ये रजो न दृश्यते न (सु) | १४.८८ |
| सत्यभामातदा कृष्णं (उ) | ८८.१७ | सत्ययाभाषितं श्रुत्वा (उ) | २४६.६२ | सत्यादिसर्वदोषाणां (पा) | १०४.१२५ | सत्योक्तिभाषिणः सर्वे (क्रि) | २६.३ | सत्योद्विक्ताः समुद्रता (सु) | ३.६० |
| सत्यभारविकान्पुण्यान् (भू) | ३६.५३ | सत्यलोकादिलोकः (उ) | २०५.४४ | सत्याव्रतवतीस्त्वन्नाभंग (सु) | १३.६४ | सत्योत्पन्नास्तुता (सु) | १३.६३ | सत्ययोगमहापारं (सु) | ४०.१४६ |
| सत्यभा वाजगमिषू (क्रि) | ६.१११ | सत्यलोके मुखं स्थाप्य (उ) | ५३.२० | सत्येत्वंमाकृष्याः (उ) | ८८.७ | सत्राजितस्य तनया (उ) | २४६.१ | सत्यसंप्रदायसंयुक्तो (उ) | २२३.५१ |
| सत्यमाश्रित्य चैवाहं (भू) | २४.२२ | सत्यवत महापुणं (भू) | ३६.१११ | सत्येनगोः शीरवारं (सु) | १८.४२६ | सत्राजितेददोरत्नस्य (उ) | २४६.३६ | सत्यवचनोमानवानां (भू) | १२०.१२ |
| सत्यमातुः परं ब्रह्म (उ) | २७.२७ | सत्य वतं सुतंलब्ध्वा (पा) | ३१.५५ | सत्येन तपसा क्षांत्या (भू) | ६६.२१ | सत्राजितो महात्तं (उ) | २४६.५ | सत्यंभश्चहृतो धर्मः (स्व) | २६.२८ |
| सत्यमुक्त त्वयानाथ (भू) | ७.१ | सत्यवह्निः प्रदीपृश्च (भू) | ३३.२२ | सत्येनतुतपोदोषः (स्व) | ५५.४१ | सत्राजित्रातुतद्वात्रायाद (सु) | १३.७६ | सत्यंभश्चहृतो धर्मः (उ) | १२६.२० |



श्रीपद्ममहापुराणम्:: स्वोक्तानुक्रमणी

४२२

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| सददर्शनतस्तस्मिन् (सु) | १८.२५५ | सदाध्यायसिक्किस्वामिन (उ) | ७१.८७ | सदासेवतितत्तीर्थम् (स्व) | ४३.१५ | सदेवाधम आयातिय (उ) | २०६.४६ | सद्यः पुनातिसद्वर्मा-(पा) | ८४.३४ |
| सददर्शनसुपर्णस्य शंख (सु) | ४१.२४२ | सदानन्दः सदाभद्रः (भू) | ७१.१६८ | सदाहृदिस्थो भगवन (सु) | ३४.११३ | सदेवासुरगंधर्वाऋषयश्च (स्व) | १३.६ | सद्यः प्रकल्पितायां (पा) | ११४.८० |
| सददाह च तांशा (सु) | ४१.६७ | सदानन्दो विरक्तात्मा (भू) | ८६.७६ | सदिदोक्षविषु.क्षिप्रमम-(सु) | १५.६६ | सदेव्यासमनुजातो (स्व) | २६.६० | सद्यः प्रक्षालकोवास्यात् (स्व) | ५८.२२ |
| सददीतत्फलयावन्निज (क्रि) | १६.१५ | सदानन्दो विविक्ताक्ष (पा) | ८४.६३ | सदीश्वरेणमनसाप्यनुकं (सु) | ४६.६१ | सदेहस्सर्वपापानि (उ) | ६१.४१ | सद्यः प्रभक्षकाः केचित् (सु) | १५.३३४ |
| सदद्यादीप्सितं सर्वं (पा) | ८४.४१ | सदानरैः सुकृतिभिः (उ) | १६५.२८ | सदुःखितः समागत्य (पा) | ३१.२७ | सदैस्यप्रमुखान्सवन् (सु) | ४१.६१ | सद्यः शुद्धस्वर्गारमि (पा) | ७४.६५ |
| सदयेन तथा तत्र (क्रि) | ७.४३ | सदानिरामयांकृष्णां (स्व) | ६.२८ | सदुर्गं विषमं कृच्छ्रं (उ) | ३२.५६ | सदैव चित्त्यमाना च (भू) | ११६.३ | सद्यःस्कारीमुनिर्वाप्य-(सु) | १५.३४८ |
| सदभंपाणिविधिना (सु) | २०.१६५ | सदापापरतायेतुनरादुष्कृति (स्व) | १६.३ | सदूर्तं विषमं प्रेषयामास (उ) | ६.७५ | सदैव तुलसीं मर्त्यो (क्रि) | २५.४ | सद्यःस्तारयतर्जतुः (स्व) | ३६.८६ |
| सदभंहस्तेनैकेनगृहे (सु) | ११.६२ | सदापूतोपावनाग्र्यो (उ) | ७१.१६६ | सदूर्तं प्रेषयामास (उ) | २४२.१४८ | सदैव यजिनां यजानां-(सु) | १५.३५० | सद्योद्धृतं दधिक्षीर-(भू) | १८.११ |
| सदभंहस्तेनैकेन श्राद्ध (उ) | १३५.८१ | सदाफलं सदापुष्पं (उ) | १२८.१८२ | सदूर्तान् प्रेषयामास (भू) | ४८.१२ | सदैवानुष्ठितानेन (पा) | ६८.६० | सद्योद्धृतं दधिक्षीर (पा) | ६०.१५ |
| सदसञ्चोदनायैव नमो (भू) | १६.६२ | सदामनंतिवेदांता ब्रह्म (स्व) | ३१.११६ | सदूर्तहैन्यमानस्तु (भू) | १६.४ | सदैवाह न पश्यामि (भू) | ३६.३२ | सद्योजातं प्रपद्यामि-(पा) | ११४.२६३ |
| सदसञ्चैवयाकिचिद् (सु) | १७.१८२ | सदामागतं ज्ञात्वा (पा) | ६३.२६ | सदूर्तभगमत्ते न वाणिज्या (उ) | १७७.४ | सदोपवीतो चैव स्योत (स्व) | ५१.११ | सद्योजाननिष्ठात्मा (उ) | १८२.१७ |
| सदसत्कर्मकर्तावाकः (सु) | ४६.१२६ | सदाहृक्केणसहितो (उ) | २५२.८३ | सदूर्तान्नगरीदृष्ट्वा (पा) | ३७.२८ | सद्वर्माशासकोनित्यं (पा) | ८२.८ | सद्योद्धृतगणाः सर्वेनमा-(क्रि) | १६.७६ |
| सदस्यं केचिदिच्छति (सु) | ३४.१३ | सदारोऽजनिपापांते (क्रि) | ६.६७ | सदृशतत्त्वदेवीतु (उ) | २२६.१६६ | सद्वर्माचिन्तनाभास (भू) | १.१६ | सद्व्याप्रभवानाध्वो (क्रि) | २५.१० |
| सदस्थाः सर्वं देवास्तु (सु) | १२.२१ | सदारोनरकं भेजे व्याघ्र (क्रि) | ६.६५ | सदृष्टवा जानकीं तत्र (उ) | २४२.१६६ | सद्व्यावेन महाराजः (सु) | १२.१३८ | सद्व्याप्वनून्यन्यायं (सु) | ३६.११ |
| सदाबारवती नित्यं (उ) | १२६.४४ | सदावीरामधृष्ट्यां च (स्व) | ६.२१ | सदृष्टवानारदं प्राप्तं (उ) | ८०.४६ | सद्व्यावेनैवसतोऽप्य (उ) | १२२.३३ | सद्व्याप्वनून्यन्यायं (सु) | २१.२३६ |
| सदाजलाशयोत्ताला (उ) | १२६.१४५ | सदानैकुंठनिलया (उ) | १६४.४५ | सदृष्टवा मुमुदे चाशु (भू) | ५१.१० | सद्विभ्रावरितो धर्मोयि (सु) | ३६.२६ | सद्व्याप्वनून्यन्यायं (सु) | ४६.१२५ |
| सदातीर्थनिक्षेत्राणि (सु) | १७.१६१ | सदाशिवोयमाराम (पा) | ४२.१८ | सदृष्ट्वा सहसा कृष्ण (उ) | २५०.४१ | सद्विभ्राह्म राधर्मो (क्रि) | २५.१७ | सधनोन्नियतेपापः (पा) | ६६.५४ |
| सदात्वं निकटेतिष्ठ (पा) | ७२.११८ | सदाशूरो गुणग्राही (भू) | २८.८० | सदेवः पुंडरी काक्षः (पा) | ८४.११ | सद्विभः सहस्रसंदिमान् (स्व) | ६२.२३ | सधर्मनावमारुह्य (सु) | १६.३३४ |
| सदात्वं भस्मस्तिप्तांगः (उ) | ७१.७० | सदाशूलादिशस्त्राणां (उ) | १२.४५ | सदेवः पुष्करस्थोर्व (सु) | ३१.५० | सद्यःस्माऽनंतलक्ष्मी (उ) | ७१.१८१ | सधर्मपायसयस्तु (क्रि) | १०.२४ |
| सदादाक्षिण्यसपन्नः (स्व) | ३१.६४ | सदासुखेन संतुष्टा (भू) | ८५.५२ | सदेवाः स्वर्गप्राप्तो-(स्व) | १४.२३ | सद्यः पराङ्मुखोभूत्वा (उ) | १५१.८८ | | |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|--------------------------------|---------|-----------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| सनकचसनंश्चतुतीय-(सु) | २०.१६० | सनाथः सुप्रियायुक्तो (उ) | १२७.१०५ | संतानवसमूले तु (पा) | ७०.३६ | संदर्शनं च भवतां (उ) | १६४.७३ | सध्यायां स्वापयेद्विष्णुं (क्रि) | १३.१० |
| सनकस्यापिप्रस्रय (भू) | ३८.७ | स निज सकलवर्गस्याधि-(भू) | ५८.३० | सतानोत्पत्तयेते (उ) | २०३.३३ | सदिदेश महात्मा मोरे (उ) | १८०.२६ | सध्यायात्रि प्रभाभूतिर-(सु) | ३२.११६ |
| सनकादिमहायोगि (उ) | १६२.६ | सनित्यं नर्मदातीरे (उ) | ११३.६ | सति तेषां गृहे पुण्याः (भू) | ७४.१५ | सदिश्वैवंसंगवन्त (सु) | १४.१६१ | सध्यालक्षणासुष्टि (सु) | २.३१ |
| सनकादिमुनिप्राप्य (उ) | ७१.२१३ | सनिदाघजलापातुं (उ) | १५२.३५ | सतितेषां नचव्या-(वा) | १०४.१०६ | सदेशः प्रेपणीयोमा (उ) | २०८.८ | सध्यावदन कर्म क्रियता (पा) | ११६.१ |
| सनकाद्यैः पुरापोक्तं (उ) | १६३.२१ | सनित्यं गृहहरेः स्थानात्समुद्र(उ) | १११६ | सतिदानानितीर्षाणि (पा) | ३५.४२ | सदेष्टव्यं हितं नश्येन (सु) | ३८.१३ | सध्यां सकलवस्तुन्यो-(सु) | ३.१० |
| सनकाद्यैः भगवतैः (पा) | ७७.५ | सनिः दशन रथं हैम (पा) | ५८.६१ | सतिमांसानिमार्गेषु (उ) | १२६.१२० | सदेहो नचकतं व्यो (पा) | ६२.२५ | सध्यासंयमहानश्च (सु) | ४३.३ |
| सनकाद्यैः सत्यमानं (उ) | २४५.३०४ | सनृपोमाधवेभासिस्तनं (पा) | १००.२६ | सति मे भ्रातरश्चान्ये (भू) | ४७.२६ | सदेहोनात्रकतं व्यो (पा) | ८७.२५ | सध्यासूक्ति विशेषेण (स्व) | ६०.८ |
| सनक्षत्रग्रहोपेतं सर्वं (उ) | २४०.४० | सनेमिचक्राजं रक्ष (उ) | २२४.६७ | संतुष्टमनसोपेयि (सु) | १५.२६ | सदेहोनात्रकतं व्यो (उ) | १२६.३६ | सध्या स्नान जपो होम (उ) | १८.५ |
| सनक्षत्रप्रथमं गवादिभ्यं (सु) | ४१.२३२ | सन्ततेर्मस्तिपुष्टं द्वा (उ) | २०१.४७ | संतुष्टः सर्वदा वत्स स्व-(भू) | ८२.२६ | सध्यां ये च गात्रेषु (भू) | ६६.३६ | सध्यापारस्यादिकर्माणि (पा) | ६५.७५ |
| सनजातो महादेवो (सु) | ४३.१७३ | सन्तपः सुरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतुष्ट्याविनीताय (उ) | ३२.५० | सध्यां वाणं जायवत्य (पा) | ६२.४३ | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमारं प्रपच्छ (ब्र) | २५.६ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतुष्टो ह्यं द्विजश्रेष्ठ (उ) | २३६.२५ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमारं ब्रह्मपि (उ) | ३१.६ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोषं वतमासेव्यतीर्थं (उ) | २२१.४१ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमार जाताश्च (उ) | २२६.१२२ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमार प्रमुखाः (स्व) | ४३.१७ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमारप्रियसहसा-(ब्र) | २५.२१ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमारश्चमहानु-(सु) | १६.५१ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमारश्चमहानुभावो (सु) | ४५.६५ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनत्कुमाराद्योयैः सदस्या (सु) | १६.६६ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनंदनाद्योयैः चपूर्वं (सु) | ३.१६६ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |
| सनागदैः यवार्णक्या (उ) | ७१.२२४ | सन्तपः सूरतोयोगी (पा) | ७२.२२ | संतोष एव परमं (पा) | ८७.५३ | सध्यां काले जायवत्य (पा) | ६४.१०० | समन्तः कवचो लक्ष्मी (पा) | २३.३७ |

शोपधमहापुराणम् : श्लोकानुक्रमणो

४२४

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|------------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| सन्निहित्यामुपसृश्य (स्व) | २७.८२ | सपत्न्याः स्वर्णं (क्रि.) | ८.३० | सपुत्रः प्रबलः सर्वं (पा) | ६५.६० | सप्त जन्म कृतं पापं (स्व) | ५७.२८ | सप्तद्वीपावसुमती (सु) | १२.५५ |
| सन्धसेमंत्रतः सर्वान् (सु) | २७.२४ | सपत्रं वाचयामाससुन्दरा- (पा) | २३.८ | सपुत्रः सकलं धर्मं (स्व) | ५१.४० | सप्तजन्मकृतं पापं (उ) | १२८.१३२ | सप्तद्वीपाः समुद्राश्च (स्व) | ४८.१२ |
| सन्धस्तगुणरागोहं (उ) | २००.४८ | सपदाग्रहोभूमौ (पा) | २८.४३ | सपुत्रं शास्त्रयार्थवर्जितो (भू) | ३.६३ | सप्तजन्मकृतात्पापान् (उ) | ३८.१५ | सप्तद्वीपास्ततोद्भवा (उ) | २२१.७ |
| संस्तुतादेवमंथवैर- (स्व) | १७.१८ | सपद्मिनीकासारायत्र (पा) | ५.३२ | सपुरास्वेदकरणेश्वरा (पा) | ११७.२२३ | सप्तजन्मकृतैः पापै (सु) | १८.५४ | सप्तद्वीपास्तमुद्राश्च (सु) | ३४.३६५ |
| संस्तूप्रमानमुनिभिः (उ) | १७७.१८ | सपपातमहीपृष्ठे गतायु (क्रि) | ६.१४ | सपुजितोभूपवरे (पा) | ४६.२ | सप्तजन्मजितं पापं (उ) | २३४.५ | सप्तद्वीपकनायश्च (क्रि) | २३.२० |
| संस्तूप्रमानोमुनिदेव (पा) | १०२.३२ | सपपातमहीपृष्ठे (उ) | २४५.३७४ | सपूज्यमानस्त्रिदेशे (उ) | २४०.५६ | सप्तजन्मजितं (भू) | २८.१६ | सप्तधान्यस्थितान् (सु) | २८.८ |
| संस्तूप्रमानोयमुनिन्द्र (स्व) | ३५.३३ | सपर्यावकुताचैव (त्र) | २०.२५ | सपूज्यः सर्वलोकेश (सु) | १५.२४६ | सप्तजानूदशलक्षण (उ) | २२६.१०७ | सप्तधान्यान्धस्तस्य (उ) | ४४.२८ |
| संस्थाप्यचात्रणकुम्भं (उ) | ६६.४० | सपर्वतद्रुमान् गुल्मान् (सु) | ३६.६१ | सपूर्वकर्मभाक्ता च (उ) | १३२.१२८ | सप्तजानूदशलक्षण (उ) | २२६.१०७ | सप्तधान्येन संयुक्तं (उ) | २५.२७ |
| संस्थिता कमला तत्र (उ) | ७.८० | सपवित्राणि कृत्वा (सु) | ६.१४१ | सपूर्वकर्मभाक्ता च (उ) | १३२.१२८ | सप्ततालप्रभेता च (उ) | २५४.३४ | सप्तधारकतां प्राप्तं (उ) | १४३.८ |
| संस्मरेदीववरलिंगं (स्व) | ३४.७ | सपापकारीपापात्मा (पा) | ६७.६० | सपूर्वकर्मभाक्ता च (उ) | १३२.१२८ | सप्ततालप्रभेदश्च (पा) | ६६.१७२ | सप्तपंच तथा ब्रह्मा (सु) | ४६.१४३ |
| सपंचवाषिकोभूतो (सु) | ३३.५ | सपापोमार्खदेशे (उ) | २११.२५ | सपृथुः पुरुष व्याघ्रो (भू) | २६.३४ | सप्तद्वीपकोपेन (सु) | ४५.१४६ | सप्तप्राकारपरिख (पा) | १०६.४२ |
| सपताकध्वजोपेतं (सु) | ४०.१७० | सपालयन्शुभ (उ) | ३१.५ | सपृष्ठस्तेनकस्त्वं (उ) | ६६.७ | सप्तद्वीपवतीदानंतत् (उ) | ६१.४७ | सप्तभिर्भूमिभिर्मुक्तो (पा) | ६१.१७ |
| सपतिष्यत्रिशोघ्रं (उ) | १०.४३ | सपिण्डीकरणादूर्ध्वं (सु) | १०.२८ | सप्त कक्षान्वितैर्गैः (भू) | १११.५ | सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं (पा) | ४.४८ | सप्तमंकापिलं वर्णं (स्व) | ६.१४ |
| सपत्नीकं गुह्यं तत्रवस्त्रा (उ) | २५.४० | सपितामहमासीन- (सु) | १४.१०६ | सप्तकल्पसहस्राणि (सु) | २४.५६ | सप्तद्वीपांशितितत्त्वा (त्र) | २४.१६ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |
| सपत्नीकं द्विजं (उ) | ३०.३३ | सपितृ स्तपयामासदे- (सु) | १०.१८ | सप्तकोटिभिर्वैश्वै (भू) | ११८.२५ | सप्तद्वीपांमहीदत्त्वा (क्रि) | २०.१११ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |
| सपत्नीकसमम्यर्घ्यं (उ) | ६५.२२ | सपिशाचः पिशाचस्तः (स्व) | २२.१०५ | सप्तगोदावरी स्नात्वा (स्व) | ३६.४२ | सप्तद्वीपां महीदत्त्वा (क्रि) | २०.१२३ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |
| सपत्नीकायविप्रायगौरी (सु) | २२.१६१ | सपुंडरीकस्तंभद्वत्वा (उ) | २१६.२० | सप्तगोदावरीनाम (सु) | ११.६३ | सप्तद्वीपां महीदत्त्वा (त्र) | २४.१३ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |
| सपत्नीकाश्चैव सुप्ताः (स्व) | १५.३० | सपुण्यकर्मपृष्ठं (सु) | ११२.२१ | सप्तप्रार्थयुतं वंशं (उ) | १६७.८० | सप्तद्वीपां महीदत्त्वा (क्रि) | २०.१२३ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |
| सपत्न्याभार्यं (उ) | २०.२३ | सपुत्रदाराः काकुतन्ध (उ) | २४४.७४ | सप्तच्युतैस्त्रिपदैश्च (उ) | १२८.१७६ | सप्तद्वीपां महीदत्त्वा (त्र) | २४.१३ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |
| सपत्न्याममकुसित्यं (पा) | ६.३२ | सपुत्रपौत्रपशुमान् (सु) | ३१.१४६ | सप्त जन्मकृतं पापं (स्व) | २३.१६ | सप्तद्वीपां महीदत्त्वा (क्रि) | २०.१२३ | सप्तमं त्रिमुनांस्तत्र (उ) | २४२.२८६ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|--------------------------------|--------|------------------------------|--------|------------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| सप्तमीदर्शनवमी (उ) | ६३.१३ | सप्तस्कंध गतो लोकां (सु) | ४१.२७ | सफलं जीवितं तेषां (उ) | २५.५ | स बाह्याम्यंतरं देहवेष्टिनं- (उ) | ३७.६२ | सभायां तस्य वेनस्य (भू) | ३७.८ |
| सप्तमीशंकरावेनु- (सु) | २१.६८ | सप्तस्वरगतावस्य योनि (सु) | ४१.२८ | सफलायां फलं राजन् (उ) | ४०.६ | स बाह्याम्यंतरं विप्र (भू) | १२३.४४ | सभायान्ते च शोभते (सु) | १७.२६० |
| सप्तमे चापि भवेन (भू) | ६६.१८० | सप्तहस्तस्त्रिधाबद्धो (पा) | ६७.२० | सबद्धः पाशकैः स्निग्धैः (पा) | ६४.३२ | स बाह्याम्यंतरे चेष्टां (भू) | ७.६० | सभायां भज्यमानायां (सु) | ४५.१०० |
| सप्तमे दिवसे कुर्यान्- (उ) | १६८.३८ | सप्तांग संयुक्तं रात्र्यं (उ) | २०२.३४ | सबभ्रामवहून् देशान् (पा) | ४६.३ | स बाह्याम्यन्तरेभूत्वा (भू) | ६.१७ | सभायां सेवकान् समवर्तन् (पा) | ४६.६६ |
| सप्तम्यांनक्तमुग्ध (सु) | २०.११३ | सप्ताचारं चरेद्भूष्यम् (स्व) | ६०.३ | सवाण्येदनंष्टवा (पा) | २३.५६ | स वै शांतः सजितात्मा (भू) | ३३.१० | सभाया ममरादेवप्रकृष्योप (सु) | ४३.३७ |
| सप्तम्यां प्रत्यभिज्ञान् (पा) | ३६.३४ | सप्ताद्रि शिखरेरम्ये (उ) | १११.५ | सवाण्यविदस्तरसाकुशेन (पा) | ६४.१६ | म ब्रह्मचारी सशिखो- (उ) | १२८.३६ | सभायामास्थितो योयं (सु) | १३.२८६ |
| सप्तरात्रमुषित्वा (उ) | २०४.१० | सप्ताहयज्ञेन विनायेन (उ) | १६८.६३ | सबाणः सर्ववाणांस्तां- (पा) | २३.८४ | सब्रह्मचारी मुशिखोहि (स्व) | २२.२७ | सभार्यस्तत्रगतवान् (सु) | २०.२१ |
| सप्तरात्रोषितोदद्याद् (सु) | २०.११६ | सप्ताहश्रवणं कार्यं (उ) | १६७.६७ | सबाणस्तस्यहृदये (पा) | ४२.७७ | सब्रह्मचारी विमुञ्जन्महात्मा (स्व) | २.३४ | सभार्याय वरं दातुंभवंतो (भू) | ६०.१७ |
| सप्तर्षोणांचयत्स्वानं (सु) | ३.१५८ | सप्ताहोपितथाद्यान्यो (उ) | १६७.८६ | सबाणानागतांस्तां (पा) | २८.३३ | स ब्रह्मलोकमाप्नोति (सु) | १६.३३५ | सभामाद्भिः कृताचैव (पा) | ११५.५६ |
| सप्तर्षोणां पुराचात्र (सु) | १६.५८ | सप्ताह्निकमहोरात्रं (उ) | २४२.३७ | सबाणोधनुषोमुक्तः (पा) | ५२.६७ | स ब्रह्मलोकमाप्नोति (सु) | २०.१०६ | सभामु च मुनीनां तु देवता (भू) | १४.४ |
| सप्तर्षोणां महापत्न्य (सु) | १७.१०६ | सप्तैव ऋषयः पूर्वं (सु) | ७.८३ | सबाणो वृषवर्षेण रामं (पा) | ६३.७४ | स ब्रह्म लोकमासाद्य (सु) | ३४.१६४ | सभुक्त्वा विपुलान् (स्व) | ४३.४३ |
| सप्तर्षोणामाश्रमांश्च (सु) | १६.२०५ | सप्तैव राजशार्दूल (उ) | २२२.६६ | सबाणोभूमिपतिना- (पा) | ४२.७४ | स भग्नस्यंदनोवीरः (पा) | २७.२१ | सभुक्त्वा विपुलान् (स्व) | ४४.१२ |
| सप्तलोकैकनायत्वं (सु) | १२.२३ | सप्रजालंभतेनित्यं (उ) | १४२.६ | सबाणोहृदयं तस्य (पा) | ६३.७३ | स भवान् देवदेवेश (पा) | ११४.२४६ | सभुक्त्वा सकलान् (कि) | ६.२०३ |
| सप्तवतिप्रमाणेनदीः (पा) | ८०.३५ | स प्रतिज्ञं तु युद्धाय (पा) | २४.२३ | सबाणवोमवतिहिकस्य (सु) | ४३.४३० | स भवान् लुब्धकोजातः (सु) | २०.३४ | सभूतिवारयामासयुगाते (सु) | ३६.६३ |
| सप्तवर्षं सहस्राणि (कि) | १७.२२८ | सप्रयुवाचजननीं (पा) | ६३.२३ | सवालत्वं परित्यज्य (उ) | ४.६ | सभाकान्तिमतीनाम् (सु) | १५.१३ | सभूतिवारयामासयुगाते (पा) | ६४.८६ |
| सप्तवापंचवात्रीणि (उ) | ७०.२१ | सप्रभुः सर्वं लोकेशो (भू) | २७.१ | स वालस्त्री जल क्रीडा (उ) | ७१.२६७ | सभागुहंवेजैश्चजुष्टं (पा) | ८३.६४ | सभूयोश्चमास्थाय (सु) | ४२.११० |
| सप्तवारीभिजप्तेन (सु) | २०.१५१ | सप्रयातिनरः क्षिप्रमग्नि- (सु) | १८.२१६ | स वाली वलिभिर्वर्गे- (सु) | ४४.२०१ | सभागोस्तुववारोहे (सु) | ३१.११० | सभेयंदैत्यसिंहस्य न (सु) | ४३.३६ |
| सप्तविष्टितिके प्राप्ते (भू) | ५.६३ | सप्रयति सर्वकामं स्थानं (भू) | ६८.१६ | स वाल्ये वालरूपश्च (भू) | ५३.६३ | सभाजितः सपीरंस्तु (उ) | १६७.२५ | सभ्राम्यति दिशः सर्वा (उ) | १२६.२४ |
| सप्तविष्टितस्तान्यानि (सु) | ३.१७ | सप्रेत्यचहरेः स्थानम् (भू) | २३.३२ | स वाष्कलिषाभिनेन उक्तः (सु) | ३०.१८४ | सभापिराम सुतयोर्वीक्ष्य (पा) | ६६.१४० | संययोगं बदांद्बद्धंदा- (उ) | १३२.१३३ |
| सप्तासास्वतेस्मात्वा (स्व) | २७.२३ | सप्रैते ऋषयस्तत्र वेन (भू) | ३८.१५ | स बाह्मशतमुच्यते (सु) | ४१.२६८ | सभामंज्रिजनेः सादंमुल (पा) | १७.५८ | समप्रगुण सम्पन्ना (पा) | ६१.११ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-----------------------------|---------|----------------------------|---------|--------------------------------|---------|----------------------------|---------|
| समग्रंते यज्ञफलं (सु) | ५.८६ | समराध्यसदाभक्त्या (क्रि) | २.४० | समस्तभयहृतामा (उ) | ७१.१६५ | समाकर्ण्य द्विजो वाक्यं (भू) | १.५७ | समागता समाहृता (भू) | ६२.१७ |
| समरिण कृष्ण सर्पस्य (भू) | १०३.८६ | समरूपाश्च श्रीविष्णोः (उ) | २२६.५२ | समस्तभूमी वलयेश्वरो (पा) | ७५.१२१ | समाकर्ण्य त्रुष्टस्तु (भू) | ११६.२३ | समागतास्तुतसम्भो (उ) | २०१.६१ |
| समद्वन्द्वतः क्वचित्पूजां (पा) | ७३.३६ | समचित्ताचंदनगंधकुंकुम (स्व) | २२.२३ | समस्तभूव.सुविभूयि-(पा) | ११४.३८६ | समाकर्ण्य महाद्राव्यं (भू) | ६१.३२ | समागतेवादिने चन्द्र (उ) | ६०.६ |
| समन्ताद्दीपमाला (उ) | ८६.३१ | समचित्ताचंदन चंद्र (उ) | १२८.३२ | समस्तरोमकुपेभ्यो (उ) | २२६.२८ | समाकर्ण्य महातेजास्तया (भू) | ३८.१४ | समागतेषुतेष्वेवं (उ) | २४५.७ |
| समन्ताद्योजनशतंनिर्मनुष्य (सु) | ३७.४ | समर्च्यमानस्तैर्देवे (उ) | २३७.२७ | समस्त लक्षणो पेतो (उ) | १८६.१३ | समाकर्ण्य महाराज-(भू) | १०४.१६ | समागतेष्वतिथिषु (क्रि) | २५.३४ |
| समन्ताद्योजनशतं मृगं (मृ) | ३६.६३ | समर्थं सर्वधर्मज्ञं (भू) | २७.८ | समस्तलोक विख्यात (क्रि) | २२.११३ | समाकर्ण्य मे साच्चि (उ) | २१६.१३ | समागतेष्वतिथिषु (क्रि) | २५.३८ |
| समन्ताद्योजनशतं विषयं (सु) | ३७.५० | समर्थस्वामिनातस्मि (उ) | १३२.१२३ | समस्तबस्तु संयुक्तं (उ) | १८६.११ | समाकर्ण्य समायातावितु (भू) | १०५.४ | समागतो वीरमणि (पा) | ४०.४६ |
| समन्त्र वानपनयेद्यथा-(पा) | ११५.६ | समपितस्ततस्तेन (उ) | १८६.४८ | समस्तविश्वातिहराय-(सु) | ३४.६६ | समाकर्ण्य स राजेन्द्रः (भू) | ११०.१२ | समागतो हितो हृष्टा (भू) | ४.८ |
| समन्वितानिभूतानितेषु (स्व) | ३.५८ | समवान् ब्रह्महन्तासि-(सु) | १४.१३५ | समस्त शास्त्र सर्वस्वं (उ) | १६२.३ | समाकर्ण्य सहस्राक्षो वचनं (भू) | ५४.८ | समागत्य च जग्राह (उ) | १२६.१५१ |
| समपश्यन् सुतं ते तु (भू) | १०५.५३ | समवाप्तोतिजापेन (उ) | ७६.३६ | समस्त सुखदेरम्ये (क्रि) | २१.१३० | समाकर्ण्य सहस्राक्षो (भू) | ७२.३२ | समागत्य च भूपालः (उ) | १८३.४६ |
| समभूतत्रयप्रथमं काल-(उ) | २३२.१० | समस्तं लभते कामं (क्रि) | १३.५१ | समस्त सुन्दरी कांतो (उ) | ७१.२५७ | समाकर्ण्य तिमनोनिन्दां (क्रि) | १७.८० | समागत्यात्रवीदब्रह्मा (सु) | ४४.५१ |
| समभ्यर्च्य मुनिश्रेष्ठ (उ) | १२१.१६ | समस्त गंगादिसर्वतोर्था-(उ) | २४५.५१ | समस्तस्य कुटुम्बस्य (भू) | ४७.४४ | समाख्यातं तथापि चभवतां(भू) | २६.८६ | समागम्य महेंद्रस्य (उ) | २४५.२५६ |
| समभ्यर्च्य सविष्टो (क्रि) | १६.५५ | समस्त गुण सम्पन्ना (क्रि) | २०.२२ | समस्तामनवस्तत्र (पा) | ७५.१८ | समाख्यातास्त्वया शूरा (भू) | ५८.२६ | समागम्य ततस्तत्र तं (उ) | १२६.३० |
| समभ्यर्च्य कथः (पा) | ११७.४६ | समस्त जन पूज्याया (उ) | २०३.५२ | समस्तामरवर्षस्त्वम (उ) | २५०.५७ | समागच्छप्रियेकांते (पा) | ७५.४१ | समाच्छ्व महादोषं (भू) | ७७.६२ |
| समभ्यस्य ततो (उ) | १६०.२६ | समस्ततीर्थोद्भवतोव (भू) | ६६.१५ | समस्तद्रादितेजोहृत् (उ) | ७१.२०६ | समागतं गहात्मान (उ) | २५५.८८ | समाचरस्वास्थ्यशोघं (भू) | ३.३ |
| सममन्यैनिरीक्षेत (उ) | २३५.१० | समस्त दुर्गतित्राता (उ) | ७१.१६४ | समहापातकैयुक्तो (उ) | ५०.१० | समागतं रघुवर (उ) | २४२.३१४ | समाचरेतिन्यमेव (उ) | १६८.३१ |
| सममेवं प्रमत्तग्यभावा-(भू) | २१.१० | समस्तदेव कवचं (उ) | ७१.१६४ | समहेंद्रजलाधीज (सु) | ४३.१०० | समागतमिवेतिहि (क्रि) | २०.३० | समाचष्ट म धर्मात्मा (भू) | ६०.१० |
| सममः शुभुदयिताकृतः (सु) | ८.११२ | समस्तनारकित्राता (उ) | ७१.२५६ | समां संपूज्य विधि (उ) | ६६.१ | समागतस्तदाता (उ) | २१५.२१ | समाचष्ट स धर्मात्मा (भू) | ८८.३१ |
| समयाकायितः सर्वस्तपो-(पा) | १६.२३ | समस्तपातकवसि (क्रि) | १७.२ | समाकर्ण्य ततो वाक्यं (भू) | ४३.४५ | समागतांवीक्ष्य पत्नीं (पा) | ६७.१६ | समाजगाम भगवान् (उ) | १६८.६६ |
| समराङ्गनं प्रपश्यत्सर्वे (भू) | ४३.७१ | समस्तपितृभीतिघ्नः (उ) | ७१.१८१ | समाकर्ण्य ततो वाक्यं (भू) | ४८.१७ | सम्पगतानि तत्तव (भू) | ५.६८ | समाजगमुमुदायुक्ताः (सु) | ५.४ |

श्रीपद्मपुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

४२७

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|----------------------------|--------|----------------------------|---------|---------------------------------|---------|
| समाजमुः समस्तानि (भू) | ६०.३७ | समानवयसः सर्वान् (पा) | १११.५ | समायातः स्वयं भूयो (भू) | ७६.२६ | समालोकयार्जुनीया (पा) | ७४.१६० | समासेनैववक्ष्यामि (पा) | ६६.७७ |
| समाज्ञावा समायाति (भू) | ५६.२० | समानवेपथयसः समान (पा) | ७०.१६ | समायातास्तथातेतुम् (ब्र) | १४.३२ | समालोच्य समाहूय (भू) | ८५.७१ | समासेनैव तस्यैव (भू) | ३१.१० |
| समाज्ञायततः कृष्ण (उ) | ८८.५ | समानस्वरं समीतवेणु (पा) | ७०.२० | समायाति महादेवि (उ) | ८३.१३ | समाविश्यगृहे तस्य (सृ) | ३७.१२४ | समास्तस्यसमाक्रांता (उ) | १५२.५ |
| समातय्यनुबुद्धिः स्याद्-(सृ) | १६.३५६ | समानाचिक्वरहित-(उ) | २२७.६३ | समारभते कर्माणि (उ) | १६३.७६ | समावृता धरा कस्मात् (सृ) | १५.७४ | समाहिता महासैलम-(सृ) | ४३.१७२ |
| समातस्येसतेनासी (उ) | १७६.५ | समानीवाप्रीतिमतालोक-(सृ) | ३६.६ | समारंभाः प्रसिद्धयति (भू) | २६.१६ | समाश्चनत्तपचाशद् (उ) | ४६.३३ | समाहृतः समायातो (भू) | ७६.२२ |
| समादायचततैलं (उ) | ३०.६७ | समानीतेययोर्धोने (उ) | २००.६३ | समारयित्वातां प्रव्यं (पा) | ११२.२२ | समाश्रितं हियं विप्रं (भू) | ६७.१४ | समाहूतानुरा भूय (भू) | ४६.४२ |
| समादाय फलं तच्च (क्रि) | २५.५४ | समानीयततः कार्यं पाणी(सृ) | १३.२४८ | समाराधयमां नित्यं (क्रि) | २.१०५ | समाश्रितोमयानाय (उ) | १६८.१६ | समाहूतातुरी भूप (भू) | ४६.४५ |
| समादिशममान्यच्च (भू) | १.२७ | सगानेनृततस्तौत (क्रि) | १५.३१ | समाराधयमहादेवं (क्रि) | १२.११० | समाश्रित्य विशालाक्षी-(भू) | २४.४६ | समाहूतानि चेट्रेण (भू) | ६०.१६ |
| समादिष्टोशंकरेण (उ) | ११.५८ | समान्ते दीपकंदद्याच्चक्रं (सृ) | २०.८६ | समाराधयमहादेवं (उ) | १५.३३ | समाश्रित्यमहात्मा (उ) | २४२.१३१ | समाहूतो यथा पुत्रः प्रयाति (भू) | ८४.६ |
| समादत्तस्त्वया धर्मः (भू) | ३८.२४ | समान्ते शयनं दद्याद्गृहं (सृ) | २०.६० | समाराधयहरिभक्त्या (पा) | ६७.२६ | समाश्वास्य च वैदेही (उ) | २४२.२८७ | समाहूय अमास्यं तं (भू) | १०३.६८ |
| समाध्वो गर्जति यज्ञ (पा) | ६८.११६ | समान्ते श्राद्धकृद्द्याद् (सृ) | २०.८६ | समारुढो महादेवो (भू) | १०२.८ | समाश्वास्यत तस्तूर्णं(उ) | २४५.१५२ | समाहूय उवाचैवं (भू) | १०३.११७ |
| समाधानेतु सर्वत्रप्रभावः(भू) | ६६.१७७ | समान्ते हेमकमलं तिल (सृ) | २०.७१ | समारुह्य क्षणात्तन्वी (उ) | १४.४६ | समाश्वास्यमुनीन् (स्व) | ६१.२ | समाहूय द्विजान् (भू) | ७६.२५ |
| समाधि ज्ञान योगेन (भू) | ५.८ | समान्ते हेम कमलंदद्याद् (सृ) | २०.६४ | समारोप्य विमानेत् (क्रि) | १६.४१ | समासहस्रं सुप्रतीतो (उ) | १२१.१७ | समाहूय प्रजाः सर्वा (भू) | ८३.१ |
| समाधिना प्रहृष्टस्य (स्व) | ६१.११ | समाप्तनियमादेवि च (सृ) | ४३.७० | समालभयशुभंयंवे (उ) | ६४.१४ | समागच्छयोमोक्षं (क्रि) | १०.७३ | समाहूय प्रिये चैनां (भू) | ५१.४७ |
| समाधिना समाधेया (सृ) | ३४.१७६ | समाप्यविधिवद्यज्ञान् (उ) | २००.२८ | समालोक्य जगन्नायश्च-(भू) | ३३.२६ | समागीनः मभार्योत्ता-(सृ) | ३३.७२ | समाहूयस्वकेवामे (उ) | ६०.४४ |
| समाधिवर्षदाघस्तु (स्व) | १८.१०८ | समाप्यस्नान कर्माणि (उ) | ६.५१ | समालोक्य जगन्नायो (भू) | ३१.२६ | समासेन तथा सर्वं (भू) | ११३.४६ | समाहूयद्विजन्मानं (उ) | १८३.३८ |
| समाधृष्यनिपात्यतेहाहेति (भू) | १५.१२ | समाप्यस्नान कर्माणि (क्रि) | ६.५१ | समालोक्य तदा कांतं (भू) | ११.६ | समासेन समस्तं तदा (भू) | ११७.१६ | समाहूयति तं राजा न (भू) | ७८.४५ |
| समानं ये च पश्यन्ति (क्रि) | २.८६ | समाप्य स्नानं कर्माणि (क्रि) | ६.५२ | समालोक्य तमायातं (उ) | १७६.३३ | समासेन समाख्यातं (भू) | २.१२ | समिद्धिः साधुहृत्वेन (उ) | ८०.१८ |
| समानं रूपमास्थाय (उ) | २४६.७० | समाभाष्य प्रियां भार्या (भू) | ५१.१२ | समालोक्य परं सौख्यं (भू) | २०.१० | समासेन समाख्यातं (भू) | ५७.१३ | समीपं तस्ययावद्धि (उ) | १२८.५४ |
| समानभावतायाति (सृ) | १६.१८१ | समायातः पुनः पश्चात् (भू) | १.२६ | समालोक्य वनं पूष्यं (भू) | ४६.११ | समासेन समाख्यातं (पा) | ६६.१४२ | समीपं तस्य यावन् (स्व) | २२.४५ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणे

४१६

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|
| समीपुस्तेतिसंरब्धा रोषा (सु) | ४१.२११ | समुत्पन्नेतुविज्ञानेमंदः (सु) | १५.६४ | समुद्रमपिबत् क्रुद्ध (सु) | १६.१६६ | समुवाच महात्मानं (भू) | ३०.६१ | समीजः पुत्राविरुधाता (सु) | १३.६८ |
| समीपे शोभते सीता (सु) | ३८.११३ | समुत्पाद्यददोतस्य (सु) | १३.३४३ | समुद्रलंघने शक्ति (पा) | ११४.३८८ | समुहर्तुमनिः स्थित्वा (उ) | २०५.१६ | समीनी सर्वमुंडस्तु (भू) | ८६.२८ |
| समीरणोवाति च मंदं (सु) | ३०.५२ | समुद्दिश्यकृतं कर्म (सु) | १५.१७६ | समुद्रस्यलाभश्च (पा) | ३६.४० | समुहर्तुदुपस्पृश्य (सु) | ३२.५३ | सम्पदो बहुशोनीत्वा (पा) | १२.३७ |
| समीर सुनुप्रबलमायां (पा) | ६४.११ | समुद्धरभवायेशकुरु- (सु) | ३.५३ | समुद्रस्य प्रमाणं च (स्व) | ८.२ | स मृतिकाङ्कः शिल्पी (भू) | ६४.५ | सम्पद्वयः सुहृदिहृद्वा- (पा) | ११७.४४ |
| समीरितोनलश्रेष्ठ (स्व) | १५.१५ | समुद्धर महापापाद्राज (भू) | ८८.४ | समुद्रादभुनपूर्वकं बंध (उ) | ७१.२२५ | समृज्यांगुष्ठमूलेन (स्व) | ५२.२१ | सम्पत्किंतुकात्लोभात् (भू) | ७१.१५ |
| समुक्तश्चोत्तरामाशांव- (पा) | ३५.१० | समुद्धरस्व पुण्यस्त्वं (भू) | ५२.४१ | समुद्रांतगतं सर्वं (उ) | ४.४ | समृतः पतितो भूमोहर्म्यं (उ) | २०६.४६ | सम्पातिदशमेमास (पा) | ३६.२८ |
| समुक्तस्तेनतरसा शर- (पा) | २८.३७ | समुद्धरस्वयं राजं (भू) | २६.१८ | समुद्रायत्रचत्वारो (स्व) | ३६.६१ | समृत्योः केन दोषेण (भू) | ३०.४४ | सम्पातिप्रेक्षणंतत्र (पा) | ६६.१७४ |
| समुक्तोनृप वयं (पा) | २३.८२ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रारसनायस्य (उ) | २४५.१६३ | समेत्य कृष्णं रामं (उ) | २४७.२३ | सम्पातिश्च जटायु (सु) | ६.६७ |
| समुच्चरन्तोभवमाधवेति (भू) | ६६.१४ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रास्तत्रचत्वारः (स्व) | ३८.४४ | समेत्य गोप्यः सर्वा (उ) | २४५.१७१ | संपुष्ट मिष्टापूर्तनां (पा) | ५.२६ |
| समुच्यते सर्वं पापं (क्रि) | २.३४ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रेण समंयत्र (उ) | २००.११ | समेत्य जगतामीशं (उ) | २४५.१३ | सम्पूज्यद्विज दाम्पत्यं (सु) | २६.३३ |
| समुत्तरधौमहार्भीष्मः (की) | १५.६१ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रेसेतुकरणं (पा) | ६६.१७८ | समेत्य सतं गुरुदेवि (उ) | २४५.६ | सम्पूज्यपत्न्यासहितं (उ) | ३०.३५ |
| समुत्तिष्ठसमागच्छकामं (पा) | ७४.१४५ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रेसेतुकरणां (पा) | ६६.१७८ | समेत्य दानवः पापो (भू) | १२१.२४ | सम्पूज्यपरमाभक्त्या (उ) | १२४.७३ |
| समुत्तीर्णोविमानात्तावा (भू) | ६३.२१ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रोपितयातावदागम्य (उ) | १६६.२ | समेत्य राम कृष्णो (उ) | २४५.३१६ | सम्पूज्यप्रेषयामास (उ) | १०.५३ |
| समुत्थाप्य करेणाय (उ) | २४२.२०६ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुद्रिनास्तत (उ) | २४५.७७ | समेत्य विविधैर्यज्ञैः (स्व) | ३.३७ | सम्पूज्यमानंभुजगं (उ) | २४२.३२१ |
| समुत्थाप्यशोदातु (उ) | २४५.२८५ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुनिः प्रत्युवाचा (पा) | १००.३० | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानास्त्रिदशैः (सु) | १६.१७१ |
| समुत्थाप्यशोदातु (उ) | २४५.२८५ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुनिर्दूतसंघैश्च (त्र) | १२.४६ | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानो गोपालं (उ) | २४५.७२ |
| समुत्थाप्य त्वरायुक्ता (भू) | ४१.३५ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुनिश्च तेया वृष्ट्या (क्रि) | २५.५६ | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानो गोपालं (उ) | २४५.७२ |
| समुत्पत्यपदाक्रम्य (उ) | ३०.७६ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुनिः सहस्रभुश्च सह- (पा) | १०५.५५ | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानो गोपालं (उ) | २४५.७२ |
| समुत्पन्नेस्तदाहृदो- (सु) | ३.१७३ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुनीराजपुरुषान् (त्र) | १२.२६ | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानो गोपालं (उ) | २४५.७२ |
| समुत्पन्नाजगद्धात्री (उ) | २३२.५२ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुपोष्य प्रमुच्यते (उ) | ६१.२६ | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानो गोपालं (उ) | २४५.७२ |
| समुत्पन्ने जगन्नाथ (उ) | २४२.७१ | समुद्धृत्य ततो वैन्यः (भू) | २६.२१ | समुवाच पुनश्चापित (भू) | ८.१०० | समेत्यान्योन्यसंयोगात् (सु) | २.१०४ | सम्पूज्यमानो गोपालं (उ) | २४५.७२ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|------------------------------|--------|----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| सम्पूर्णं पुण्यतोयेन (भू) | ६३.१० | सम्प्राप्ते आद्व कालेपि (भू) | ६७.८ | सम्बन्धः कीदृशोभद्रो (पा) | ८७.६७ | संभूयकेरलाधीश गृहे (उ) | २२०.४६ | सम्भग्वक्तुकः क्षमास्ति (क्रि) | २३३.१६६ |
| सम्पूर्णं चन्द्रवन्दना (सृ) | १८.१७७ | सम्प्राप्तोनात्रसदेहः (भू) | ८१.६६ | सम्बन्धः कीदृशोभद्रे (भू) | ११.२६ | संभ्रातमानसानीकास्त (सृ) | ४६.४० | सयज्ञफलमाप्नोति (उ) | १५२.३२ |
| सम्पूर्णचन्द्रदर्शनं (उ) | २४२.२३१ | सम्प्राप्तोभोज्यवेला (पा) | ११४.१०४ | सम्बन्धः पुण्यसंसर्ग- (भू) | ४१.६३ | संभ्रवीभवदत्यंतं वीर (पा) | २६.४० | सयज्ञः सर्वभूतानामास्यं (स्व) | ५.१६ |
| सम्पूर्णं भावां परिरूपयु- (भू) | २५.३ | सम्प्राप्तोहं भृगुविपो (उ) | २५५.२८ | संवाचमन्यसंप्राप्तान- (सृ) | ४१.२१४ | संभ्राजंनं गृहेविष्णो (उ) | ८६.१२ | सयज्ञोवेद निदिष्टस्तत्तपः (सृ) | ३६.१८ |
| सम्पूर्णं मन्त्रपानादिस (उ) | २४१.२७ | सम्प्राप्तोत्यखिलान् (उ) | १३८.८ | सम्बुद्धय वचनं सूतोः (उ) | ४.८ | संभ्राजंनं विष्णु गृहेजनः (क्रि) | ११.४७ | स यदा नृपतिहय (भू) | ४४.३ |
| सम्पूर्णमपि वैशाखे (पा) | ६२.६० | सम्प्राप्य को नमृल्लति (क्रि) | ४.४६ | सम्बोधयति लोकं (उ) | २७.४७ | संभ्राजंनं विष्णु गृहेजनः (उ) | २४५.७८ | सयद्विदित्यतिक्षिप्रतत् (पा) | ३१.४० |
| सम्पूर्णं मस्त्येव सदैव (भू) | १०२.५२ | सम्प्राप्य नात्र मर्माणि (भू) | ६१.२२ | सम्बोधयति लोकं (उ) | ७.३० | संभ्रुलं प्राङ्मुखंवापि (सृ) | ३४.२५७ | सययोजनकंद्रष्टु जननीं (पा) | १२.२५ |
| सम्पूर्णं नेवमुत्तस्य (भू) | २१.२३ | सम्प्राप्य तु गिरेः प्रस्थं (सृ) | ४३.३७७ | सम्बन्धिवंधवादिभ्यु (सृ) | १५.३१६ | संभ्रुलं लज्जितादेवी (पा) | ७०.५ | सयगीहिमवत्पृष्ठं (उ) | २३१.३ |
| सम्पूर्णं दीर्घसत्रैस्मि (सृ) | १.२३ | सम्प्राप्य दर्शनं स्वप्ने (क्रि) | १६.५५ | संबोध्य चैवं सुराधिनाथं (भू) | ५५.१६ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | ६६.१३४ | सयागवृषंवर वर्यं (पा) | ६८.२४ |
| सम्पूर्णं दु प्रतीकार्णं (भू) | १०५.५० | सम्प्राप्य नगरीं रम्या (पा) | ३७.२६ | संभक्षयात्मनः शीघ्रं (उ) | ६६.२८ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २३.१३२ | सयाच्यमानोपिददी न (सृ) | १२.२६ |
| सम्पूर्णं ज्ञायते धर्मं (पा) | ८६.१० | सम्प्राप्यपापशुद्धययम् (व) | २३.१३ | संभवरस्व महाभाग (भू) | १२४.६ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | ५३.१५ | सयाचितनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.६८ |
| सम्प्रतिप्रेषयामास कार्यं (क्रि) | ६.१३२ | सम्प्राप्य प्रत्यभिज्ञा (सृ) | ८.१०६ | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५४.६४ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्रस्तुतस्तनविभूषण (पा) | १०३.३८ | सम्प्राप्य रघुशार्दूल (उ) | २४२.३५६ | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | ६६.१ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्तं कार्तिकं (उ) | ६१.६७ | सम्प्राप्य लोके जगताम् (स्व) | ३४.२३ | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्तं यौवनं बाले (भू) | ४७.१८ | सम्प्राप्य हविता साध्वी (क्रि) | २५.६० | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्तपंचतां षष्ठ्या (क्रि) | २३.४३ | सम्प्राप्य हविता साध्वी (क्रि) | २५.६० | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्तयौवना देवी (सृ) | ५.६५ | सम्प्राप्य हविता साध्वी (क्रि) | २५.६० | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्तयौवनी विप्र (क्रि) | १७.१० | सम्प्राप्य हविता साध्वी (क्रि) | २५.६० | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्ते वासरे विष्णो (उ) | ३७.४६ | सम्प्राप्य हविता साध्वी (क्रि) | २५.६० | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |
| सम्प्राप्ते वार्द्धके देवि (भू) | ५३.४७ | सम्प्राप्य हविता साध्वी (क्रि) | २५.६० | संभवेद्वैद्विजश्रेष्ठ (उ) | ४२.५१ | संभ्रुलः क्षिपन्त्यर्थं (भू) | २५.१६ | सयातिनरकंधोरसर्वं (क्रि) | ३६.५० |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४३०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| सयाति वैष्णवं लोकं (भू) | ४३.६६ | सरलार्जुनसंछन्नानाति (स्व) | १३.३७ | सरस्वत्याः प्रसादेन (सु) | २२.१६३ | सराज्यं पुनराप्नोति (उ) | १८.१४६ | सर्गादौयः परो ब्रह्मा (सु) | ३.३५ |
| सयाति वैष्णवंलोक-(सु) | २१.१८१ | सरसं क्रीडमानस्य (भू) | ७७.७ | सरस्वत्या रतते रम्ये (उ) | ३०.६४ | सरांसि च हृदाः सर्वे (उ) | ३७.७६ | सर्पकेशामहादेहाः (उ) | ५.२६ |
| सयाति शुद्ध देहश्च (सु) | १८.१५४ | सरः समुद्रनद्यादी- (पा) | ८२.३८ | सरस्वत्यास्तटे रागे (उ) | ४६.११ | सरांसिमानसारीनिर्भरा (पा) | ६७.७२ | सर्पसगनुप्राप्य (सु) | १७.२६५ |
| सयावत्प्रतीकतुं (पा) | ३४.२६ | सरसिब्रह्मणा तत्र (स्व) | ३८.६ | सरस्वत्यास्तुपयाया-(सु) | १८.२१६ | सरामः कुत्रवर्ततकस्य (पा) | ५७.२८ | सर्पराजेनसंवेष्ट (उ) | २३२.३५ |
| सयावत्तुरोभेत्तुं (पा) | ६३.७६ | सरस्तीरगतोराजन् (भू) | ६१.४३ | सरगचितः श्रुगारी (सु) | १५.१४५ | सरामः सनियसार्थ (पा) | ६८.२२ | सर्पाश्रीशीविषागदत् (पा) | ४२.४० |
| सयावत्पर्वतछिन्नमतिः (पा) | ४४.२६ | सरस्तीरमथोगत्वा-(पा) | ११४.३५१ | सरागोयदिवास्यात् (सु) | १६.१३७ | सरामस्वमहानीर्थ (उ) | २४२.१२६ | सर्पिषाविश्वदहन (सु) | २३.३४ |
| सयावत्सगुणचार्य (पा) | ६१.२६ | सरस्यथ जलं पीत्वा (भू) | ६३.२८ | सराजपुत्रः शितसायक-(पा) | २३.७६ | सरामोक्तं च सस्मार (पा) | ५५.७५ | सर्पिस्तत्स्वादितु (त्र) | ३.१८ |
| सयावत्सगुणाराजा (पा) | ६५.७७ | सरस्यस्मिन् मुलं (सु) | १८.१०४ | सराजराजः शुशुभेयके (सु) | ४१.१७ | सरांमोलक्ष्मणसखः (पा) | ३६.६ | सर्पराजशितश्चाक्षुः (त्र) | ३.२० |
| सयावत्सगुणाराजा (भू) | १२०.३५ | सरस्वती तटे यानि (उ) | २००.१५ | सराजाक्रोधात्प्राज्ञा (उ) | २५०.१४ | सरितः सागरस्त्वं (उ) | २३०.२२ | सर्पज्वलन्निष्ठाविद्धिर्-(सु) | ४६.१८ |
| सयावत्सगुणाराजा (भू) | २१.३५ | सरस्वती तटे यानि (उ) | २००.१५ | सराजातत्रष्ट्वाच (उ) | २४२.५६ | सरितः सागरः शैला (स्व) | ४३.१८ | सर्वकथयमेतथ्यं (पा) | ३८.५ |
| सयेनविजितो लोके (स्व) | ६१.१३ | सरस्वतीनदीं प्राप्यन-(सु) | ३२.१४२ | सराजादशमीकुत्वा (क्रि) | २३.५ | सरितां मंगम स्नात्वा (उ) | १३४.१८ | सर्वकल्पद्रुम वनः (उ) | २२६.८४ |
| सरजोबिभ्रती वासोवेणी (पा) | १५.३६ | सरस्वती पदांभोज (उ) | १८८.४ | सराजाधामिकंपुत्र प्राप्य (पा) | ३१.५६ | सरद्रलोकमाप्नोति (सु) | २०.५७ | सर्वकालकृतविद्धि (सु) | ३८.५१ |
| सरयस्तस्यसंप्राप्तः (उ) | ७.२६ | सरस्वतीपुण्यतमा (सु) | १६.३७ | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सरेमे नृपशार्दूलो नित्यं (भू) | ४२.७ | सर्वकुलसमुद्भूत्य स्वर्ग (उ) | ३२.५४ |
| सरः परमपश्यंतवृत्तं (सु) | १०.२७२ | सरस्वतीपुनस्तस्माद्-(सु) | १८.४५८ | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सरोजवदनानाम (उ) | १८४.६८ | सर्वकुलं मुतेनेद गृहीतो (पा) | ३६.४७ |
| सरयु चवरावेणीपुर्णा (पा) | ६७.६४ | सरस्वतीमहा प्रविष्टापुण्या(सु) | १६.२० | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सरोजिनीगुरुवेति (क्रि) | ५.१०५ | सर्वकर्तव्यतस्य (सु) | १६.३३३ |
| सरयु पुण्य सलिला (पा) | ६५.१७ | सरस्वतीसमस्तानां-(सु) | ३२.१५३ | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सरोपश्यन्सुविस्तीर्णं (सु) | १६.३४० | सर्वं चकार संपूर्णा (भू) | ७६.२६ |
| सरयु पुण्य सलिलां (उ) | २४४.७७ | सरस्वती समानीय-(सु) | १८.१६६ | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सर्गं काले तु संप्राप्ते (स्व) | २.५ | सर्वं च तपसाभ्येति (उ) | २७.४३ |
| सरयु सलिले स्नात्वा (पा) | ११७.७० | सरस्वती समासाद्य (स्व) | ३२.३१ | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सर्गस्थितविसर्गा (उ) | २०३.३० | सर्वं चक्रेनिशुभस्य (उ) | १७.३८ |
| सरराजसमीपस्थो (पा) | ५४.५ | सरस्वत्यां च गंगायां (स्व) | १३.४६ | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सर्गादिकंततोस्वेव (सु) | २.११६ | सर्वं जानामि संस्पर्श (भू) | ७.६१ |
| सरलाः पथ संयुक्ताः (भू) | १०२.६१ | सरस्वत्याः परेपारेनाना (सु) | १६.७० | सराजाधामिकोरामसेवकः (पा) | ४६.६२ | सर्गादिनां महाप्राज्ञ तासु (सु) | ६४.३४ | सर्वं तद्भस्मतांयाति (उ) | ५१.३८ |

श्रीपद्ममहापुराण ॥ श्लोकानुक्रमो

४३१

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|----------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|
| सर्वं तद् व्याकुलीभूतं (स्व) | १५.१६ | सर्वं विदाम्यहं ह्यत्र (भू) | १२३.५० | सर्वकाम प्रदातारं जाननं (भू) | ६८.४ | सर्वकार्यस्य संस्थानं (भू) | ७.४५ | सर्वज्ञं सर्वदंतां तप- (भू) | २०.६ |
| सर्वं तस्य कुलं ब्रह्मन् (ब्र) | २६.३६ | सर्वं विप्रं प्रवक्ष्यामि (भू) | १२२.७ | सर्वकामप्रदादेवी (पा) | ७४.३७ | सर्वकार्यैर्वहं चास्य दक्षिण (सु) | ३४.७६ | सर्वज्ञं सर्वदेवि पृथ (भू) | ५.६७ |
| सर्वताभिः समानीय (पा) | ८३.६६ | सर्वं विष्णुमयं ज्ञेयं (उ) | ८०.६२ | सर्वकामप्रदादेवी (सु) | १७.३३० | सर्वकानां सजानाति (सु) | १५.६७ | सर्वज्ञस्त्वन सदेहो (सु) | ३४.११५ |
| सर्वताम्यान्दर्शयितुं (पा) | ८१.६४ | सर्वं शंसते मेतद्वयं यथा (पा) | ४४.५४ | सर्वकामप्रतिद्वयव्रतं (सु) | १४.१७७ | सर्वकालेऽपि पुण्याद्या (पा) | ७१.७८ | सर्वज्ञस्य पुरस्तेऽद्यमया (पा) | ६५.५४ |
| सर्वतीर्थं कृतं तेन (उ) | ७१.२२ | सर्वशशं न रामाय (उ) | २४२.३५४ | सर्वकामफलः पुण्यः सिद्ध (स्व) | ४.२० | सर्वकेशोरमंत्राणां हेतु (पा) | ७०.५८ | सर्वज्ञात्मवर्लोकेऽप्युपजिता (सु) | १.४५ |
| सर्वतुभूभूतां वंशं (उ) | २४१.७६ | सर्वशुभं जगति धर्मं (पा) | ८४.७१ | सर्वकामफलः वृक्षं (पा) | ११४.३०३ | सर्वकृतुवर्षिष्ठतु (उ) | १२८.२ | सर्वज्ञानप्रदं देवं (पा) | ११३.१६ |
| सर्वं तुभ्यं यथाशक्ति (उ) | १५२.१० | सर्वं म पापं तरति योऽवमेव (पा) | ८.३१ | सर्वकामफला वृक्षा (भू) | २८.६५ | सर्वक्षत्रांतु द्वीर (उ) | ७१.२०८ | सर्वज्ञानायनमस्याय (भू) | १६.७० |
| सर्वं त्रिभुवनं राजन् (सु) | ४५.६३ | सर्वं साध्यमिनिज्ञास्वा (भू) | ८१.११ | सर्वकामफला वृत्ता (स्व) | ४२.१० | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (सु) | १३.१७० | सर्वज्ञानी भवेत्तोऽपि यः (भू) | ६२.८१ |
| सर्वं दहति गंगायत्र (स्व) | ३६.८६ | सर्वं साध्यं सुलोकं मे (भू) | ८१.२७ | सर्वकामफलास्तत्र केचिद् (स्व) | ४.४ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञायनमस्तुभ्यं (पा) | १११.५१ |
| सर्वदास्यति सर्वज्ञं (पा) | १३.४४ | सर्वं स्वामीज्ञास्यति (पा) | ११.८ | सर्वकाम फलवृक्षः (भू) | ६५.३ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं देवि समाख्यातं (पा) | ८६.१२ | सर्वं हि साधितं तेन (भू) | १२५.१६ | सर्वकाम मुतांशुभ्रां (सु) | ४५.३७ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं नश्वरं मालोक्य (पा) | १६.१२ | सर्वं ऋद्धिं समायुक्ता (भू) | १.१२ | सर्वकाम समृद्धं च (उ) | ६०.४७ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं पश्यति वेकमं कृतं (भू) | ६२.३२ | सर्वं कर्म परिभ्रष्टं (उ) | २३६.६ | सर्वकाम समृद्धं च (उ) | १२४.६८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं मद्राक्यमित्युक्तं (पा) | ३३.३६ | सर्वकर्मविहीनं च (भू) | ५०.३१ | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वमेकारणं तद्व्यवृत्ति (पा) | ५६.४० | सर्वकर्मधु सर्वस्वं (भ) | ६२.७० | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं यदुकुलं चैव देव- (सु) | १३.१४४ | सर्वकर्मधु सर्वस्वं (भ) | ६२.७० | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं यत्नं स्वरूपं हि (भू) | ६४.२६ | सर्वकर्मधु सर्वस्वं (भ) | ६२.७० | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं राज्ञः कृतं कर्म- (पा) | ५६.२६ | सर्वकर्मधु सर्वस्वं (भ) | ६२.७० | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वं वत्स प्रवक्ष्यामि (भू) | १०२.१ | सर्वकर्मधु सर्वस्वं (भ) | ६२.७० | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |
| सर्वविज्ञापयामास (उ) | १२४५.२१७ | सर्वकर्मधु सर्वस्वं (भ) | ६२.७० | सर्वकाम समृद्धस्य (स्व) | १२.८ | सर्वक्षेत्रेषु सर्वेषु (उ) | ७१.१६२ | सर्वज्ञेन त्वया प्रोक्तं (भू) | ११.१ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: दलोकानुक्रमणी

४३२

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------------|---------|
| सर्व तीर्थ फलं प्राप्य (उ) | २४५.३१ | सर्वत्र कुशलं पृष्टो (वा) | ६५.१५ | सर्वथावामनोदेवोदेव (सु) | ३०.७७ | सर्वदेवस्तुतः सोम्यो (उ) | २५४.४० | सर्वधर्मान् परित्यज्य (उ) | ६१.२६ |
| सर्वतीर्थमयस्यास्य (उ) | २०४.३८ | सर्वत्र निदचिद्वस्तु (उ) | २३८.२ | सर्वथैव प्रमोक्तव्यं (उ) | १४१.३७ | सर्वदेवस्वरूपाय (उ) | २२८.७८ | सर्वधर्मार्थं तत्त्वज्ञो (भू) | ४८.२ |
| सर्वतीर्थमयतीर्थम् (उ) | २००.६१ | सर्वत्र गृह द्वारेणु (भू) | ४.२२ | सर्वदातुसुरश्रेष्ठे (उ) | १५६.१२ | सर्वदेवाधिदेवश्च (उ) | २५४.३६ | सर्व धर्मः समर्चनित (भू) | ७६.६ |
| सर्वतीर्थं गये यत्र (उ) | २००.१६ | सर्वत्र तुलसी पुण्या (उ) | २३.३१ | सर्वदाने फलं चैव (उ) | ६४.४४ | सर्वदेवाचितपदवीर (पा) | १०७.१६ | सर्व धर्मोक्तिताविष्णो (उ) | ७१.६६ |
| सर्व तीर्थं मयो भर्ता (भू) | ४१.१५ | सर्वत्र दृश्यते हृति भाव (भू) | ५३.१०८ | सर्वदानफलान्येव (क्रि) | २१.१३२ | सर्वदेवाश्रयो विप्रः (क्रि) | २१.४ | सर्वधाधातनीयस्ते (सु) | ४६.१५ |
| सर्वतीर्थं मयो विष्णुः (उ) | ७१.३१२ | सर्वत्र दृश्यते विप्र (भू) | ६२.३४ | सर्वदानानितेनैव (उ) | ४३.५३ | सर्वदेविसमाख्यातं धर्म (भू) | १७.१ | सर्वधानुमयैर्हर्मेना (उ) | १२५.१०३ |
| सर्वतीर्थं वरं चैवयो (स्व) | ३८.६२ | सर्वत्र दृश्यते वीर (पा) | ६६.७७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.१८ | सर्वदेवैकशरणं (उ) | ७१.१४६ | सर्वधारो निराधारः (उ) | ८०.६६ |
| सर्व तीर्थं समं स्नानं (भू) | ६३.२ | सर्वत्र पश्यस्वसुरारिमिकं (भू) | ७३.५ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वदैव्यं प्रहर्ता च (भू) | ११६.२८ | सर्वनाशकरः तस्माकोय (भू) | १२.७० |
| सर्व तीर्थं समं स्नानं (उ) | २२.४६ | सर्वत्र वैष्णवो भावो (भू) | ७४.२४ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप परिशीलायानि (उ) | ७१.२६ |
| सर्व तीर्थसमाप्तावम् (स्व) | ५०.७ | सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि (सु) | २२.१५७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपापप्रशमनं प्राग्विचत्तं (पा) | ६६.८५ |
| सर्व तीर्थविगाहेन कृतं (पा) | १७.६४ | सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि (सु) | २२.१५७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपापप्रशमनं सर्वं (भू) | १२५.५ |
| सर्व तीर्थानि कृष्णानि (उ) | १२७.४३ | सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि (सु) | २२.१५७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप मयो लोकः (भू) | ३८.४ |
| सर्वतीर्थानि नितो यानि (भू) | २८.५६ | सर्वत्र सर्वदेवेश (उ) | २४३.३७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप रता ये च (भू) | ६७.८४ |
| सर्वतीर्थानिभिषेकं चयः (स्व) | २१.४३ | सर्वत्र सुलभा गंगा (क्रि) | ३.१४ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप रता ये च (भू) | ६७.८७ |
| सर्वतीर्थानिभिषेकं च लभते (स्व) | १.२६ | सर्वत्राग्नयत्रराजेन्द्रराम (पा) | ६६.४६ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्व पाप रतो दुष्टे तव (भू) | ३०.७१ |
| सर्वतीर्थपुण्यपुण्यं (उ) | २५.४२ | सर्वत्रासौनीलशिलो (उ) | १२५.६७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप विनाशाय (उ) | ५१.३७ |
| सर्वतीर्थानिदितं पुण्यं (उ) | २०७.४७ | सर्वत्रासौसमश्चापि (सु) | २.८६ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप विनिर्मुक्तः (सु) | १७.२१८ |
| सर्वतोवोधिकं तीर्थं (उ) | १३६.४ | सर्वत्रैव विचित्राणि (भू) | ६५.४ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपाप विनिर्मुक्तः (सु) | ३१.१७७ |
| सर्वतोव्यापकश्चाहं (पा) | ७५.१२ | सर्वथातः प्रयतेन तत्र (स्व) | २६.६ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्व पापविनिर्मुक्तः (सु) | ३१.१५० |
| सर्वत्र कारणं कर्म शुभा (भू) | ६४.२ | सर्वथादर्शनं देहिकारुण्यं (स्व) | २२.५८ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपापविनिर्मुक्तः (सु) | ३१.१५० |
| | | सर्वथादर्शनं देहिकारुण्यं (उ) | १२८.६७ | सर्वदापर्वदिवसे स्नानं (स्व) | २०.२२ | सर्वं दैव्यं विनातार्थे (भू) | ५.६५ | सर्वपापविनिर्मुक्तः (सु) | ३१.१५० |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|----------------------------|--------|------------------------------|--------|----------------------------|--------|-----------------------------------|--------|
| सर्वपापविनिर्मुक्तः (पा) | ६५.६४ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (सु) | २१.२५६ | सर्वपाप हरं पुण्यं (उ) | १०५.१० | सर्वभूतहिताययि (उ) | ७८.६० | सर्वमेतत्समाचक्ष्व (पा) | ३०.१५ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तः (पा) | ११६.३०४ | सर्वपापविमुक्तात्मा (सु) | ३३.४७ | सर्व पाप हरं स्तोत्र (पा) | ६२.१११ | सर्वभूतहितेयुक्ता (पा) | १७.४१ | सर्वमेतत्सुवृत्तातमहं (भू) | ११३.४० |
| सर्वपाप विनिर्मुक्तः (स्व) | ५७.३१ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (पा) | ७६.२२ | सर्वपाप हरः प्रोक्तश्च- (भू) | ८५.१६ | सर्वभूतेष्वविश्ववसनाः (भू) | ६६.१४ | सर्वमेतद्विधानं तु कार्यं (उ) | १२४.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्ता- (सु) | २१.१४ | सर्वपापविमुक्तात्मा (भू) | २६.६१ | सर्वपापहरादेवो (सु) | २२.६६ | सर्वभूतेष्वामिनिच (पा) | ६५.१११ | सर्वमेतन्मयानुभवं (पा) | ८२.६१ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तायां (उ) | १३५.२७ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | १३.४७ | सर्वपापहरात्रेणु (सु) | २१.६४ | सर्वभूतप्राणोभाद्या (भू) | ५२.४४ | सर्वमेतन्मयादत्तं (सु) | ३८.८७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तास्ते (उ) | ४८.२४ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | १७.७ | सर्वपाप हरा नृणां (उ) | ४८.५ | सर्वभोगपतिर्भूत्वा (भू) | ५७.२४ | सर्वमेतत्सर्वभूतपुण्यंतेपातु (सु) | ११५.१३ |
| सर्वपाप विनिर्मुक्तास्ते (उ) | ६३.२२ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | २१.३६ | सर्वपाप हरा प्रोक्ता (उ) | ४५.१८ | सर्वभोगपतिर्भूत्वा (भू) | ६७.८५ | सर्वमेवं करिष्यामि (भू) | ८१.३१ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तास्ते (उ) | २२४.३६ | सर्वपापविमुक्तात्मा (स्व) | २६.७० | सर्वपापहरा प्रोक्ता (उ) | १३७.४ | सर्वभोगपतिर्भूत्वा (भू) | ८३.६३ | सर्वमेवं सुम्पन्नं (पा) | ७२.११३ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तास्ति (उ) | ५६.२३ | सर्वपापविमुक्तात्मा (स्व) | २६.८१ | सर्वपाप हरो विष्णुः (क्रि) | १२.६३ | सर्वभोग समाकीर्णः (भू) | ५८.२२ | सर्वमेवजगन्नाथ (क्रि) | २.७५ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (सु) | ४६.१७१ | सर्वपापविमुक्तात्मा (स्व) | २६.६६ | सर्वपापैर्विनिर्मुक्तो (ब्र) | ११.८६ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवदयार्थिषो (क्रि) | १०.६६ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (क्रि) | २०.१०३ | सर्वपापविमुक्तात्मा (स्व) | २७.५१ | सर्वपापौघनाशार्थं (उ) | ६६.५२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवद्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १५.५ |
| सर्वपाप विनिर्मुक्तो (क्रि) | २२.५८ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | २७.५७ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (उ) | ४५.३२ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (उ) | ५०.२० | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (उ) | ५१.६४ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (उ) | ६४.११६ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपाप विनिर्मुक्तो (उ) | ६७.१२ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (उ) | १३३.३७ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपापविनिर्मुक्तो (उ) | १३८.१४ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |
| सर्वपाप विमुक्तापाप (स्व) | १८.६६ | सर्वपाप विमुक्तात्मा (स्व) | ३२.३८ | सर्वपापौघनाशनं (उ) | ३४.२ | सर्वभोगा विलेनापि (भू) | ६३.१४ | सर्वमेवमयाख्यात- (भू) | ६२.५७ |

श्रीपद्मपुराणम् : क्लोकानुक्रमणी

४३४

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|
| सर्वयज्ञस्य भोक्तारं (उ) | २५३.११६ | सर्वलक्षण सम्पन्ना (उ) | ७४.७२ | सर्वविद्याप्रकाशाय (पा) | ८०.१६ | सर्वसत्त्वदया युक्तः (उ) | १२३.२० | सर्वस्यापिजगद्धाता (उ) | २३८.८१ |
| सर्वयज्ञाः कृतास्तेन (क्रि) | १३.१०० | सर्वलक्ष्मी स्वरूपा (पा) | ८१.५३ | सर्ववेदविदो विप्राः (उ) | २५५.१० | सर्वसत्त्वस्तज्जमेदेहि (सु) | १०.१०१ | सर्वस्वगुरवेद्यात्तददं (पा) | ८२.१७ |
| सर्वयज्ञाधिकं चैव (उ) | ४५.६१ | सर्वलोक हितं वाक्यं (सु) | ४५.२१ | सर्ववेदेतिहृषानां (पा) | ३७.५१ | सर्व सत्त्वस्त ज्ञानी (सु) | १०.८६ | सर्वस्वमपहृत्यनं राजा (स्व) | ५७.५६ |
| सर्वयज्ञाधिकाः पुण्याः (पा) | ६८.३० | सर्वलोकहितात्मायो (सु) | १६.६२ | सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो (स्व) | २६.५४ | सर्वसत्त्व हरो बाले (उ) | १६३.६० | सर्वहिसा निवृत्ताश्च (स्व) | १३.२२ |
| सर्वयज्ञाधिपयज्ञो (उ) | २५४.४५ | सर्वलोकहिताधीय (उ) | २४०.५२ | सर्वव्याधि हरं पथ्यं (उ) | १२८.२८३ | सर्वसत्त्वानियानीह (सु) | ३७.५१ | सर्वहिसा निवृत्ताश्च (भू) | ६६.२५ |
| सर्वयज्ञैश्चविविधे (उ) | ६४.७४ | सर्वलोकानतिक्रम्य (स्व) | ४३.१२ | सर्व व्याधि हरं पुण्यं (सु) | ११.२२ | सर्वसत्त्वानुक्पी च (सु) | १०.१०३ | सर्वाः किशोरवयसो (पा) | १५.४१ |
| सर्वयोषिद्वरा सा हि (भू) | ४६.१६ | सर्वलोकान् परित्यज्य (सु) | १५.२४४ | सर्वव्याधि हरं पुण्यं (स्व) | ५१.७ | सर्वसंदेहहर्त्ताणि (उ) | १६८.१४ | सर्वाक्षरमयं दिव्यं (उ) | २२८.२५ |
| सर्व रत्नमयी दिव्या (उ) | ३१.३ | सर्वलोकेश्वरः श्री मान् (उ) | २२३.४० | सर्वव्रतानि राजेन्द्र (उ) | ४०.१४ | सर्वसिद्धिस्तुसर्वा (भू) | ७.१७ | सर्वांग पुराणजं सदा (पा) | ११३.१६ |
| सर्वरत्नमयैर्दिव्यै (स्व) | ४२.५ | सर्वलोकेश्वरो देवो (उ) | २२३.६६ | सर्वव्रतेषुयत्पुण्यं (उ) | ११६.२० | सर्वसौख्यप्रदं देव (सु) | ३३.३१ | सर्वांगरूपां सगुणां (भू) | १०२.४४ |
| सर्वर्तुकुसुमासिद्धिम (पा) | ७२.१३६ | सर्वलोकैषु वसते एक (भू) | ६८.४७ | सर्वव्रतेषुयत्पुण्यं (उ) | १२३.७ | सर्वसौख्यप्रदं नृणां (भू) | ३६.१५ | सर्वांगव्यापिमतापं (उ) | १२६.३७ |
| सर्वर्तुकुसुमाकीर्णं (सु) | १८.२५० | सर्वलोभनिवृत्ताश्चते (भू) | ६६.२६ | सर्व व्रतैः सर्व तीर्थैः (उ) | ६५.२८ | सर्वसौख्यं महासौख्यं (भू) | ८७.२० | सर्वांगमुन्दरो राजन् (भू) | ७७.८ |
| सर्वर्तुकुसुमोपेतं नाना- (पा) | १०६.२४ | सर्वलोकेशितशयितं (सु) | १२.६६ | सर्वशस्त्रास्त्र कुशलं (पा) | २६.२८ | सर्वसौभाग्यदं चैव (उ) | ६६.७४ | सर्वांगहृंसंयुक्ता (उ) | १६४.२३ |
| सर्वलक्षणलक्षणः (उ) | ७१.१६३ | सर्वलोकैषुचाध्यस्य (सु) | १५.२०० | सर्वशस्त्रविद्वीर- (पा) | २६.१८ | सर्वस्वमसिदेवानां (सु) | १८.१४६ | सर्वाचार पराभग्या (भू) | ५६.११ |
| सर्वलक्षणलक्षणा (उ) | २५३.६० | सर्वलोकोत्तमीरम्यो (सु) | १५.२३६ | सर्वशस्त्रैश्चसंपूर्णं (उ) | ११.५७ | सर्वस्थानेपतिह्यको (भू) | ५०.५६ | सर्वाचार विविजिताः (त्र) | २५.६ |
| सर्वलक्षणसम्पन्नः (भू) | २२.७ | सर्ववर्णगुणविप्र (क्रि) | २१.५ | सर्वशास्तासर्वसाली (उ) | ७१.१२६ | सर्वस्मिन्सर्वभूतस्त्वं (सु) | ४.१२६ | सर्वाणिभूतानि सुखं (सु) | १५.३८० |
| सर्वलक्षणसम्पन्नः (भू) | २८.५१ | सर्ववर्णानांपुरुरेव (त्र) | १४.२ | सर्वशास्त्र प्रवेदीचदेव (पा) | ८६.३३ | सर्वस्य जगतः स्रष्टा (उ) | २४५.५६ | सर्वाणि विष्णुचिह्नानि (क्रि) | ५.१३५ |
| सर्वलक्षण सम्पन्न (भू) | १०५.२२ | सर्ववर्णश्चिज्जायते (स्व) | ७.१२ | सर्वशास्त्रार्थं तत्त्व ज्ञानु (उ) | २४२.६८ | सर्वस्य जगतांस्रष्टायिन (सु) | ३३.३४ | सर्वाणि महस्यानि (पा) | ६६.१३ |
| सर्वलक्षण सम्पन्न (क्रि) | २२.११२ | सर्ववश्यकं प्रोक्त (उ) | २२५.३४ | सर्वशास्त्रेषु दृष्टवै (उ) | २१३.५१ | सर्वस्य जगतो राजा (उ) | २४५.२६ | सर्वाणिस्तुतिशास्त्राणि (सु) | १७.३०४ |
| सर्वलक्षण सम्पन्न (उ) | २४२.१४० | सर्ववाद्यानियः कुर्यात् (पा) | १०६.८१ | सर्वशास्त्रेषु दृष्टवै (उ) | २१३.५१ | सर्वस्य व्यापकः स्वामी (भू) | ८.७८ | सर्वाणिश्चाणिशकस्य (उ) | ६.१५ |
| सर्वलक्षण सम्पन्ना (भू) | १०२.६३ | सर्वविघ्नान्तकः सर्व (उ) | ७१.१८७ | सर्वशोभासमाकीर्णं (भू) | ११७.६ | सर्वस्यायामहालक्ष्मी (उ) | २२७.१७ | सर्वाण्युद्वाहकमणि (उ) | २४८.८ |

| | | | | |
|-------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|--------------------------------------|---------------------------------------|
| सर्वाण्येव च शस्त्राणि (भू) १०५.६१ | सर्वान् विज्ञापयामास (सु) १८.४१० | सर्वाभिऋषि पत्नीभिः (उ) १६.६ | सर्वासामथयोगेन (स्व) २५.२३ | सर्वेतेदस्यवोविप्रगता (ब्र) २३.२६ |
| सर्वाण्येव सुतीर्थानि (भू) ६०.१४ | सर्वं बुद्ध समाचारमादर्शं (सु) ३५.६७ | सर्वाभिः सहिताचाहमा (सु) १६.१२४ | सर्वसामृषिपत्नीनां (पा) ६६.१०० | सर्वेतेनरकयांतियावत् (पा) ७६.१३ |
| सर्वाति शयमेवैकं भावितं (भू) ६६.१२ | सर्वाश्चित्तयसेनित्यं (पा) ८६.६२ | सर्वाभीष्ट फलप्राप्तौ (उ) ५६.४ | सर्वसामेवयात्राणां (क्रि) १८.५१ | सर्वेतेनाशमापन्नाः (पा) ४४.५० |
| सर्वातिशयितः सर्वाः-(उ) ७१.१२८ | सर्वास्तानुगोप वृद्धां (उ) २४५.३८८ | सर्वमणि मयी भूमिः (स्व) ४.६ | सर्वासुभगिनीहस्ताद-(उ) १२२.६६ | सर्वेतेपादपाः शुष्काः (उ) २३१.१७ |
| सर्वात्मकोसि सर्वेश-(सु) ४.१२७ | सर्वाः पतिव्रतानार्यो (पा) ११.८३ | सर्वमरयुतंदेवंरुद्र (सु) १५.२३८ | सर्वसुरमहाराज्ये (सु) ४२.५६ | सर्वेतेरथमारुढा (उ) ७.१५ |
| सर्वात्पतासुचिनामहा-(सु) ११.७८ | सर्वापराधकृदपि (ब्र) २५.१२ | सर्वाभिपाणि मांसानि (उ) ६४.२ | सर्वास्तादेवपन्यश्च (उ) १२७.५४ | सर्वेते विविधावाग्भि (पा) ११.४३ |
| सर्वात्मने नमस्तुभ्यं (उ) २३६.१६ | सर्वापराधजननं परं (उ) ७१.२६४ | सर्वमिकादशीत्यक्त्वा (उ) २३४.२२ | सर्वास्ताः सत्यवादिन्यो (उ) २१०.५० | सर्वेते श्राद्ध कालेषु (सु) ६.८३ |
| सर्वात्मनेतमोरुद्र-(सु) २६.२३ | सर्वाभिरणशोभां पद्मा-(भू) ४६.४० | सर्वयुधैः सुसम्पूर्य (भू) ८६.६४ | सर्वास्त्राणामथश्रेष्ठं-(सु) ४५.१०१ | सर्वेतेसप्तमेतीते जन्म (उ) १८४.५८ |
| सर्वात्मनिजदशने (उ) २२.४६ | सर्वाभिरणशोभां (भू) १६.४४ | सर्वरूप विलासिन्यः (पा) ११३.४५ | सर्वास्तेस्त्रावदन्योन्यं (उ) १८.६० | सर्वेदेत्यश्चराजघ्नुः (सु) ४४.२०० |
| सर्वात्मानंस्मरेन्नित्यं (उ) ८२.१६ | सर्वाभिरणशोभां सर्व-(भू) ५३.२५ | सर्वार्थसिद्धि लभते (सु) १७.३३१ | सर्वकर्मडलुयुतायुक्त-(सु) १५.१०८ | सर्वेदेविकायाश्च (सु) १६.८३ |
| सर्वानि विमोक्षयामि (उ) १७७.२६ | सर्वाभिरणशोभां हारकं (भू) ३२.५८ | सर्वात्लोकानतिक्राम-(पा) ४१.२६ | सर्वकर्मविपाकेनजीवति (भू) ५१.२१ | सर्वेदेवाः सगंधर्वा (भू) ६०.१४ |
| सर्वानुष्ठानरहिताः (उ) २२८.६३ | सर्वाभिरण शोभांगी (भू) १०२.६५ | सर्वा वासः सर्वरूपः (उ) ७१.१२७ | सर्वेकांचनयूपास्ते सर्वे (सु) १२.११२ | सर्वेदेवाः सगंधर्वास्तस्या (भू) ६०.१५ |
| सर्वनिबोधतानुद्वुष्ट्वा (उ) १८.६ | सर्वाभिरणशोभांगोदिव्य (भू) ६३.१६ | सर्वाविकसितारोहि-(पा) ११३.५० | सर्वे फुलिनः सतिभर-(पा) ६६.६८ | सर्वेदेवास्तथादिपारुद्रा (सु) १४.७६ |
| सर्वानुक्रामानवाप्नोति (सु) २८.१६ | सर्वाभिरणशोभाद्वयाः (पा) २०.३३ | सर्वैश्चर्यवयः सर्वे (उ) ७१.१४४ | सर्वैकृतस्वस्त्वपनाः (पा) ४०.४४ | सर्वेद्यन्तमाज्ञेया विष्णु (उ) १३१.१७ |
| सर्वानुक्रामानवाप्नोति (सु) २६.५१ | सर्वाभिरणशोभाद्वयैः (भू) ६०.३३ | सर्वाभिरणप्रवरो-(सु) १६.१६२ | सर्वेप्रहाससदासौम्यायंतं (सु) ३४.३०५ | सर्वेदिकारिणश्चात्र (पा) ८१.१६ |
| सर्वान् देवान्शक्र (सु) ५.११ | सर्वाभिरण संयुक्तं (पा) १०५.१६१ | सर्वाभिरणपुष्पवसतां (उ) २२४.५६ | सर्वे च काशिरेतस्यां (सु) ४५.४५ | सर्वेदिकारिणश्चात्र (स्व) २६.४१ |
| सर्वानुदोषान् परित्यज्य (भू) १२४.१४ | सर्वाभिरण संयुक्तमणि(पा) ११४.३१६ | सर्वाः समुद्रगाः पुण्याः (पा) ६७.६६ | सर्वे च देवा मुदिताः (सु) १६.६७ | सर्वेनित्यानिविकारा-(उ) २२८.२ |
| सर्वान् भोगान् प्रभुंश्च (भू) ८३.३७ | सर्वाभिरण संयुक्ता (क्रि) ३.२६ | सर्वाः सर्वगुणो पेताः (सु) १८.८८३ | सर्वे च प्रतिहृतारो-(सु) १३.१०३ | सर्वे निपतितावीसन (पा) ६०.५७ |
| सर्वानुभोजान् प्रभुंजानः (भू) ६७.८७ | सर्वाभिरण संयुक्ता (सु) ३३.६८ | सर्वासांचनं नारीणां (उ) ३०.८८ | सर्वे च मोहिताः संतु-(सु) १७.७२ | सर्वेन्द्रियाणि संयम्य (भू) ४६.४४ |
| सर्वान्मेतामिवंतत्र (उ) ८३.३३ | सर्वाभिरण सौभाग्या (भू) ३.६६ | सर्वासांचनं निधिगच्छेत् (पा) ८३.५८ | सर्वे ते तृप्तिमायांतु (सु) २०.१६१ | सर्वेन्द्रियाणि संयम्य (भू) ८६.५६ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------|--------|-----------------------------------|--------|--------------------------------|---------|
| सर्वोविष्णोत्वयानेन (क्रि) | १७.१४१ | सवज्जः सुमहातेजा (उ) | १६८.२७ | सविध्यामाननाकार्या (सु) | २२.१६६ | स वैष्णव पदवाति (सु) | २०.१०२ | सखित्वं वदनं कुर्याद् (ब्र) | १६.१७ |
| सर्वोषधिसमादाय (स्व) | ३.१७ | स वदिष्यति धर्मात्मा (भू) | ६१.५६ | सविघ्ननीलयोर्मध्ये (सु) | ३७.१६ | सर्वैर्ममदुःखः सर्वाच्छुभ्रु (पा) | ३१.३८ | सखित्वं वदनं चैव दद्याद् (ब्र) | १८.३ |
| सर्वोषधीभिः सृष्टेन (सु) | ७.४७ | सर्वदेव्यं मुहूर्तं तू (उ) | १६८.३ | सविप्रोवेदवाह्य (उ) | ६४.५३ | सबोदान्वयि धर्मात्मा (सु) | १६.६५ | सखिरः कम्पमानस्तु (पा) | ११७.१३५ |
| सर्वोषधीः समानीय (सु) | ४.३६ | सर्वनारायणस्त्वेवंसं (सु) | २३.२५ | सविवेकः समायातो (भू) | ८.७४ | सर्व्यं पाणि नमश्चुस्ते (भू) | ३८.३६ | सखित्वेनैवमाज्जत् (उ) | ६६.२६ |
| सर्वोपद्रुदकैः सर्वै- | २७.२० | सर्वणत्वाच्चसावर्णे (सु) | ८.४४ | सवीरभद्रंस्वरयामि (उ) | १०१.३१ | सर्व्यं पादं च भर्तुश्च (भू) | ४१.१३ | सखिप्यान्गापयामास (पा) | ५७.२० |
| सर्वपैश्वर्यदक्षिणोर्ध्व- (सु) | २.७३ | सर्वणितांगप्रस्थं (भू) | ६६.५८ | सवृषंगो सहस्रं (उ) | ३२.६ | सर्व्यं पादं प्रचिक्षेप (उ) | २५५.४८ | सद्युष्कोऽथवृक्षस्तुत (उ) | २११.२६ |
| सलज्जपरमं चैनं (ग) | ७२.१०८ | सवर्णेन सवर्णनिम्ब (ज्व) | ५१.५१ | सवेपथुः पपातोर्व्या (पा) | ५८.८ | सर्व्यं वाहुं ममुद्धृत्य (स्व) | ५१.१५ | तशूद्रोहरिदास्तुत (उ) | ८२.३५ |
| सलज्जोपिततो राजा (ब्र) | १३.७४ | सवल्लीकाः प्रनृत्यति (सु) | १५.४३ | सर्वैचतुर्भुजोभूत्वा (उ) | २४.१३ | सर्व्याकस्थ श्रिया सार्द्धं (उ) | २४२.५१ | सशूलीभिर्नृदयो (उ) | १०१.७ |
| सलब्ध संज्ञोत्पत्ति (पा) | ५६.३३ | सवस्त्रं कांचनं दत्त्वा (भू) | ४०.२२ | सेवेचतुर्भुजोभूत्वा (उ) | १३४.२७ | सर्व्याम रूपी यिष्णव (उ) | ६४.३५ | सशैलजालाविततांखङ्ग (सु) | ४१.१४४ |
| सलब्धवा सुरभी (उ) | २४१.६ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेद्विजरोवमंकिः (उ) | १४३.२५ | सर्व्याहति तु गायत्रीं (सु) | ४६.१८७ | सशैलोमानसोराजन् (उ) | ११.४८ |
| सलव्यप्रत्युवाचाय (पा) | ६१.२२ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सर्व्ये चक्रं गदां चैवस (क्रि) | १३.५६ | सश्रुत्वा शेषताम्राक्षो (पा) | ६०.६ |
| सलिलं च न गृह्णाति (स्व) | ४३.५ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सर्व्ये चास्य रथः पार्श्वे (सु) | ४१.३ | सश्रुत्वा वचनं तस्य (उ) | ६०.२६ |
| सलिलार्णवसंगमनं (सु) | ३७.१०६ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सर्व्येन पुनराचम्य (उ) | २१४.१० | सश्रुत्वा सुस्वरं गीतं (भू) | ३६.१४ |
| सलिलेऽधर्मयोगमनं (सु) | ३६.६५ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सर्व्येनालम्ब्यमहतीं (सु) | ४१.३६ | संघातोयतस्तस्मात्तस्य (स्व) | २.१६ |
| सलिले रोषदुग्णेश्व (क्रि) | १०.१० | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सर्व्ये सकांतानययक्ष- (पा) | १०३.५४ | स संजायति भगवानेक (सु) | २.१३ |
| सलिलैः स्नापयेन् (पा) | ६५.६४ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सशकान् गारदांश्चैव (उ) | २०.१८ | स संभ्रममकस्माच्च (सु) | ८.६८ |
| सलोककृतंस्वरूपत्वं (उ) | ६१.२५ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सशक्रवज्राभिहतः (सु) | १६.६५ | स संभ्रमं समुत्थाय (उ) | २८.६ |
| सलोकपालपूजास्याद (पा) | १०४.६६ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सशाल्यस्त्वंकथं (उ) | १३.२७ | स संभ्रममुवाचेदं (सु) | १४.४४ |
| सलोकपालानुत्सामहत्वा- (सु) | ४१.२३१ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सशालेनहतोवीरः (पा) | ६४.१८ | स संभ्रममुवाचेदं (सु) | १४.४४ |
| सलोक पालकवपुश्चन्द्र (सु) | ४१.२३८ | सवस्त्रं चैव कूष्माण्डं (ब्र) | ५.३१ | सर्वेभ्योऽपि प्रीयते (उ) | २२७.३४ | सशालेनहतोवीरः (पा) | ६४.१८ | स संभ्रममुवाचेदं (सु) | १४.४४ |



| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-----------------------------|---------|------------------------------|---------|------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| ससंभूदोन संभाष्यो (स्व) | ५३.८५ | ससागरामिगपृष्ठीम् (ब्र) | ४.१३ | सस्य जातानि सर्वाणि (भू) | २६.४० | सहस्रजितपायवेष्ठः (सु) | १२.६६ | सहस्रमुद्धाविश्वेत्मा (उ) | २२४.१६ |
| ससतस्यतदास्वप्ने (उ) | ६६.६४ | ससुयुक्तरथं वाक्या-(पा) | ५८.६२ | सस्यादिव्यतिथिभू (भू) | ६८.१७ | सहस्र जिह्वं साहस्रं (सु) | १६.४२ | सहस्रमेतद्योनीनां (उ) | १२७.११८ |
| ससत्वाः साधुरूपास्ते (भू) | ५६.१३ | ससेवकादुपश्रुत्यरघुनाथ (पा) | १७.६ | सस्वयंभूरिवाभाति (सु) | ४१.२३७ | सहस्रदल पद्मस्थ (पा) | ६६.७० | सहस्रयुगपर्यंत (सु) | ३६.४३ |
| ससद्योमुच्यते पापादा-(उ) | २६.६ | ससैन्यायनृपेन्द्राय (उ) | २४१.२६ | सहकारादिवृक्षाणां (उ) | २१६.७५ | सहस्र दल पद्मस्थ (पा) | ७४.५६ | सहस्ररश्मये सूर्य (पा) | ६५.४१ |
| ससप्तलोकाधिपतिः (सु) | २२.४५ | ससैन्यायनृपेन्द्राय (उ) | २४१.२८ | सहपुत्रकलापधनः (स्व) | १५.५६ | सहस्रदृग्वदितपाद-(सु) | ४२.१०३ | सहस्र वदनस्यापि (उ) | १८४.३८ |
| ससमाचार संकेतं (पा) | ७५.४७ | सस्त्रीकस्त्वंतथा (उ) | २०१.१०० | सहृरिर्जायतेसाधुसंगमात् (पा) | १६.१४ | सहस्रनरनारीभिः (पा) | ११३.२ | सहस्र वारिणीं पूजां (उ) | २५४.१४८ |
| ससमाप्यायितः शक्रो-(सु) | १६.६२ | सस्त्रीकोपिस्मरं (उ) | २१६.५ | सहवदितयोर्नास्ति संबंधः (भू) | ६.३ | सहस्रनाम पठनं च (उ) | २३२.७ | सहस्रशत संख्याकैः (उ) | १७.६० |
| ससमुद्रात्समानोय (सु) | ४१.२३५ | सस्त्रीन्मन्दरकंदरेषु (उ) | ११.२ | सहवृद्धद्विजः सोऽय (पा) | ११७.१५७ | सहस्रनामभिस्तुल्यं (उ) | २५४.२४ | सहस्रशालाध्यायी (उ) | २२६.३ |
| ससर्जमायागांधर्वी (उ) | १०२.१८ | सस्थित्वांस्यंदनवरे (पा) | ४१.१७ | सहः सहस्य एतेषामुत्तमः (सु) | ७.६२ | सहस्रनाम्नां चैतत्ते (क्रि) | १७.११८ | सहस्र शीर्षज्येन (सु) | ३४.२४८ |
| ससर्जवत्सान् गोपाला (उ) | २४५.१०५ | सस्तनुस्तौशिवेतीर्थे (उ) | २२१.३१ | सहसाचक्रतुयात्रां (क्रि) | ६.१०४ | सहस्र नाम्नां श्री शस्य (उ) | २४२.७७ | सहस्रशीर्ष देवेशं (सु) | १४.१४८ |
| ससर्जसर्वभूतानि (सु) | ३.२६ | सस्नातः सर्वतीर्थेषु (ब्र) | १४.१३ | सहसामथुरां गत्वा (उ) | २४५.२१६ | सहस्र नाम्ने नित्याय (उ) | २४५.३१४ | सहस्रशीर्षापिपुषुः (उ) | २२६.६४ |
| ससर्जप्सरसस्तास्ता-(उ) | ६६.१२ | सस्नातः सर्वतीर्थेषु (स्व) | ३१.३८ | सहसारथभारोप्ययौ (उ) | २४७.२६ | सहस्रेत्रमायातम (उ) | १६२.२३ | सहस्राक्षस्ततोपश्यद्भुता-(भू) | ६४.१७ |
| ससर्पोसि महाराज भूतले (भू) | ७६.३ | सस्नातः सर्वतीर्थेषु (उ) | १२०.४५ | सहसोत्थायदैत्यादिः (उ) | ६८.७ | सहस्र नेत्र रक्तोत्थोन-(सु) | १४.६० | सहस्राक्षो महाप्राज्ञो (भू) | २४.१६ |
| ससर्वबंधः सर्वज्ञोमहा (उ) | २५४.६७ | सस्नातः सर्वतीर्थेषु (उ) | २२५.४ | सहस्रौ बालवद्धेषु (स्व) | १५.२६ | सहस्र नेत्रैरप्येव (सि) | ८.४१ | सहस्रांशुरणेजित्वा (उ) | ६.४ |
| ससर्वंशशास्त्रवेत्ता च देव (भू) | १७.२२ | सस्नोसितासितेतीर्थे (उ) | १२७.११६ | सहस्रैः क्षत्रियश्चैव (ब्र) | १६.१४ | सहस्र पत्र कमलाकारं (पा) | ६६.१४ | सहस्रांशुस्वेदजोयं (सु) | १४.४६ |
| ससव्याधिर्विनश्येत-(उ) | १३५.६१ | सस्मार मन्मथं देवं (भू) | ५३.७ | सहस्रं बाहूणाः पाशाः (सु) | ३७.१०३ | सहस्रपरमादेवीं (स्व) | ५४.५१ | सहस्रांस्य सहस्रांशं (सु) | १६.४१ |
| सससाक्षतस्यतस्य (क्रि) | २३.१२२ | सस्मारराक्षसेद्रतं कथं (सु) | ३८.६ | सहस्रं शतवारं (उ) | २५३.६१ | सहस्रपरिवेष्टारस्तथैव (भू) | ६६.२८ | सहस्रां प्राकृतघ्नं (उ) | २२४.६३ |
| ससागरवनोपेतयो (उ) | ५४.१० | सस्माररामोराजा नं (सु) | ३३.६८ | सहस्र गुणितं ह्येवं (उ) | ३८.११२ | सहस्रपादाक्षिशिरोभि (स्व) | ३५.३७ | सहस्रेण च संयुक्तः (पा) | १७.११ |
| ससागरांच पृथिवीं (उ) | १.४५ | सस्मारवासुदेवस्तु (उ) | २४६.६ | सहस्र गुणितं सर्वं (उ) | १२७.२६ | सहस्र बाह्वेवाहू चक्षुषी (उ) | ३४.६८ | सहस्रेणाथनिष्काराणां (सु) | २१.२७१ |
| ससागरांचसं द्वीपां (उ) | २४०.३१ | सस्मारितीमातलिना (उ) | ६.२१ | सहस्रजिज्ज्व राजपि (पा) | १०२.२२ | सहस्रभोज्यं दातव्यं (सु) | ३४.२६ | सहस्रवर्णमयोदेवो (उ) | १७४.६७ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| सहात्मनासपुरुषा (पा) | ६६.१०७ | सां प्रतं द्रष्टुमिच्छामि (उ) | २२१.२३ | साक्षाताभिः सपुण्याभिः (सु) | ६.६४ | सागरस्य च तीरेषु वने (भू) | ७६.१४ | सांगोपांगेश्च संयुवतास्त (भू) | ५.६७ |
| सहापागेक्षणस्मेरं कोटि (पा) | ६६.१०६ | सां प्रतं पुष्करं यामि (उ) | २०८.२३ | साक्षात्कारमहं विष्णो (उ) | १०८.२२ | सागरस्य च मित्रेणैव (स्व) | २४.१८ | सा च इन्दुमनी राज्ञी (भू) | १०४.४ |
| सहायवानिवलक्ष्यते (पा) | ११६.१७३ | सां प्रतं भक्ष्यामीमि (सु) | १८.४५० | साक्षात्कुशलवच्छेषे (उ) | ७१.२३३ | सागराकारनिर्ह्रादि (सु) | ४०.१४१ | सा च ऊन्या समुद्राय (क्रि) | ६.१३७ |
| सहायहीनं यत्स्थानं (क्रि) | ५.२७ | सां प्रतं भूतं भव्यं च (सु) | ४०.११५ | साक्षात्कुष्माण्डेदत्तम् (स्व) | ६१.५१ | सागरेचयथापानः (उ) | १३२.३७ | सा चक्रं दमशं येन (उ) | २०२.१३ |
| सहायेन वलेनैवपौरुषेण (भू) | १०.२३ | सां प्रतं युद्धयतांवीरः (पा) | ४०.५२ | साक्षाद्दण्डोसिलोके (पा) | ६७.२१ | सागरेवपंतो भद्र कि (उ) | १२७.१५५ | सा चत्वा मुदयेदृष्ट्वा (सु) | १४.५३ |
| सहि गर्जति भूकर जाति (भू) | ४४.६ | सां प्रतं शाश्वते स्थाने (उ) | १३.१७ | साक्षाद्वर्म द्रवीषं सुर- (उ) | २२.१६ | सागृहीत्वा च तां पूजां (उ) | २०३.६ | सा च भू राजते पुत्र (भू) | १०२.२७ |
| सहिजाप्यादिकं सर्वं (सु) | १५.१०५ | सां प्रतं शाधिमां (उ) | ४७.२८ | साक्षाद्ब्रह्ममयोविप्रः (सु) | ४६.१४७ | साग्निकः पितृभक्तश्चैव (व्र) | १२.१७ | सा च युवन्म सर्वस्य (सु) | १८.२७६ |
| सहितं नव तारुण्य (पा) | ७१.६६ | सां प्रतं शुद्धहृदयो (पा) | १००.२० | साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपं (क्रि) | ६३२ | साग्निकोह्यग्निभक्षश्च (पा) | ७२.२ | सा च लोको पथिददा- (पा) | ५६.२ |
| सहितो राम कृष्ण (उ) | २४५.२७१ | सां प्रतं शांतीराजतः पापा (उ) | २१३.१५ | साक्षाद्यावैष्णवीशक्तिः (उ) | १५६.३ | साग्रहोपस्कराम् (उ) | ८६.७ | सा च गङ्गेण वर्तय्या न (क्रि) | २५.७६ |
| सहितो राम कृष्ण (उ) | २४५.२६६ | साकंसरिद्धिः पुत्रस्यो (उ) | ४.३२ | साक्षाद्ब्राह्मवतारो सो (उ) | १५५.३३ | सांख्यकास्ताकििकाः (उ) | १२२.८४ | सा च माध्वी महाभागा (भू) | १६.५ |
| सहितो लोक पालैश्च (सु) | ३८.१५७ | साकथं दुःख माप्नोति (भू) | ४.१५ | साक्षाद्विज्ञेयशतुल्यस्त्व (सु) | ३७.८३ | सांख्यकुदभक्तिरेपा च | १५.८६ | सा चापि कथ्यते नारी (भू) | ५०.२४ |
| सहि पृथ्वी स वै वायुः (भू) | १२०.२० | सा कन्यापि वरारोहा (भू) | १०३.४८ | साक्षादिमलयालक्ष्या (पा) | ६५.५६ | सांख्यं केचित्प्रशंसति (उ) | ८०.८ | सा चापि शुशुभे देवी (भू) | २०.५६ |
| सहिष्णुत्वाज्जगत् स्वामी (सु) | ४१.१५१ | सा का नारी महाभागा (भू) | १०१.५५ | साक्षादिष्ठः परमात्मा (उ) | १४६.६ | सांख्यं चौशनसंचेति (उ) | २३६.२६ | सा चित्रालामित्युक्त्वा (उ) | १५.३३ |
| सहिष्णुर्दशमं प्रोवतं (भू) | ३४.३३ | साकारं निराकारं ब्रह्म (पा) | १०५.३० | साक्षान्नारायणयोगेन (पा) | ६७.६ | सांख्ययोगविधिज्ञाश्च (सु) | १५.१६५ | सा चित्रा नरकं प्राप्ता (भू) | ८६.३८ |
| सद्विष्णुः स्यात्सद्यगर्मा (भू) | १३.२० | साकारं बहवो दृष्ट्वा (उ) | १३२.१०२ | सागंगा काश्यपीदेवि (पा) | १६४.६ | सांख्ययोग्यस्तथा (स्व) | ३३.५ | सा चित्रा मरणं प्राप्ता (भू) | ८६.३७ |
| सहेतु काश्चिदह्यते (उ) | १२८.११० | साकारेण निराकारो (उ) | १३२.१०५ | सागच्छति सुरध्रेष्ठे (उ) | १५१.६६ | सांख्याख्यायोगसंजातां (पा) | ८५.१६ | सा चोकारे भृगुक्षेत्रे (भू) | ६२.३३ |
| सहैवपर्यटन्तीती (उ) | २००.५६ | साकारोहिमुखेनैव (उ) | १३२.१०४ | सागच्छती पृष्ठतो (पा) | ५६.६६ | सांख्याचार्यश्चमतिमान् (सु) | ४०.५१ | सा चोत्सृष्टाभवत् (सु) | ३.६३ |
| सहोवाचमहात्मानं (पा) | ८६.२५ | साकुमारभुजोत्सृष्टा- (सु) | ४४.२११ | सागच्छती मृगान् (पा) | ५८.७१ | सांख्यैः कृताभक्ति (पा) | ८५.१२ | सा जनातिथया भक्ति (उ) | २०१.७७ |
| सहोवाच महात्मानं (भू) | १७.१३ | साससूत्रकराः सिद्धा (उ) | १२५.१०६ | सागरत्वं चलेभेभ्य (उ) | २०.४२ | सांगं समुद्रसंघ्यानं (स्व) | ३१.११२ | सा जपेत्परमं ज्ञानं (भू) | ८६.८० |
| सह्यमर्षानिलोदभूतो (सु) | ४५.१११ | साक्षाताद्भिस्सपुण्याभिः (सु) | २०.१६८ | सागसश्चासिगाभीयं (सु) | ३७.७३ | सांगोपांगेतिहासांश्च (सु) | १४.६५ | सा जरा विप संयुक्तं (उ) | २२२.२६ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|--------|
| साजिह्वारुणायस्य (पा) | १६.३६ | सातुष्टाशास्यतिसिप्र (पा) | ३०.२४ | साधयित्वाविलान् (उ) | ३७.८७ | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ३६.४ | साधुसंगतयः कुयति (त्र) | १.१६ |
| साजोवती द्विज श्रेष्ठ (क्रि) | १५.१२ | सातुसर्वलोकभयावहा (उ) | २५१.१८ | साधयित्वा महातीर्थं (भू) | ४१.४० | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ४७.४ | साधुसंगादभवेद्विप्रः (त्र) | १.६ |
| साज्यधूमेनचाग्नीनां (सु) | ३०.८७ | सातुस्वर्गलोकोत्पल (उ) | २५०.५ | साधयित्वैति पुत्रो (उ) | २००.३६ | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ४६.५ | साधुसाधुत्वयापृष्टं (उ) | ७१.११८ |
| सातंष्टवोप्रतप (उ) | १५.२.८ | सातेषांकृष्णमनुमाग्य (उ) | २५०.१० | साधयेदतं काष्ठादीन् (स्व) | ५३.१० | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ५०.२ | साधुसाधु द्विज श्रेष्ठ (क्रि) | ३.११ |
| सातं पुनरुवाचाय (उ) | ४६.२८ | सात्यकि नरिदशैव (सु) | १३.१६८ | साधर्म्यं प्राप्नोमैश्वर्यं (सु) | १५.१८१ | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ६०.३ | साधु साधु द्विज श्रेष्ठ (उ) | १०७.१४ |
| सातं गृहीत्वायुश्रोणी (सु) | १८.१६७ | सात्रिघाह्यपतद्भूमौ (पा) | ३४.१४ | साधवोपिन मंचतिस्व (उ) | २१५.४३ | साधु पृष्टं त्वया (उ) | १०८.४ | साधु साधु महादेवि (उ) | २२४.१२ |
| सातत्क्षणादगतादेवी (सु) | १८.४५६ | सात्वतान् सत्वसंपन्ना (सु) | १३.३१ | साधारणाहिसर्वेषां (उ) | २५३.३८ | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ११७.३ | साधु साधु महादेवि (उ) | २५४.५ |
| सा तत्र गोकुलं प्राप्ता- (सु) | १८.३४२ | सात्वतांस्थानमूर्द्धन्यं (पा) | ६६.८ | साधारणे न सर्वेषां (उ) | २५३.३१ | साधु पृष्टं त्वया (उ) | ११७.१६ | साधु साधु महाप्राज्ञ (उ) | १२०.३ |
| सातत्रनसुखं लेभे (उ) | १४.४६ | सात्विकंभावमापन्नो (सु) | ३३.१५१ | साधु कृष्ण जगन्नाथ (उ) | ४२.१ | साधुपृष्टं त्वया (उ) | २२३.१० | साधु साधु महाभाग (भू) | ३१.६ |
| सातदाप्रत्युवाचेमराम (पा) | ५६.५८ | सात्विकं राजसं चैव (सु) | ३५.७४ | साधुकृष्ण त्वया (उ) | ४३.१ | साधु पृष्टं द्विज श्रेष्ठा (पा) | ८४.६ | साधु साधु महाभाग (उ) | ४२.६ |
| सा नस्यवचनास्त्रस्ता (उ) | १६७.३ | सात्विकंस्वसमीपस्थं (पा) | १०५.१३० | साधुः खलस्य वदमान् (उ) | १६०.३३ | साधु पृष्टं महाभागत्वा (पा) | ८१.११ | साधु साधु महाभाग (स्व) | १.१६ |
| सातान्पचन्द्रपुषान् (पा) | ३८.३७ | सात्विकानि पुराणानि (उ) | २३६.२० | साधुगच्छामहेतुं (सु) | १३.२०५ | साधु पृष्टं महाभागद्विज (पा) | ४.६ | साधु साधु मुनिश्रेष्ठ (पा) | ८५.१ |
| सातापसवने तस्मिन् (उ) | १५.२३ | सात्विकाराजसाश्चैव (उ) | २३६.२३ | साधुनिन्दारतादुष्टा (भू) | ८६.७ | साधु पृष्टं महाभागाः (स्व) | ४०.१४ | साधु साधु मुनि श्रेष्ठ (त्र) | १.२ |
| सातिथिः परिहर्तव्या (उ) | ३८.११४ | सात्विकाः सत्वसंपन्ना (उ) | १.४६ | साधुनिन्दारतापापा (पा) | ६२.६६ | साधुभिर्बहुभिरीरितं (उ) | २१४.१०४ | साधु साधु मुनिश्रेष्ठ (त्र) | ६.२ |
| सा तु कन्या महाभाग (भू) | ३०.५२ | सात्विकीविष्णुसंभृति (उ) | १३२.८० | साधुनेच्छतिमामेधा (भू) | २.२१ | साधुभिः स्तूयमानस्तु (भू) | १४.४१ | साधु साधु मुनिश्रेष्ठा (उ) | १२५.४ |
| सातुकल्पान्ताकं कोटि (उ) | २५१.२१ | सात्विकैकैव पूजास्य (पा) | १०८.७२ | साधुपावकिसर्तं ते (उ) | १२३.४ | साधुराधवधर्मज्ञ (सु) | ३७.१३० | साधु साधु वरारोहे (भू) | ७६.३३ |
| सातुकल्याणिनीनाम (सु) | २१.२१६ | सा दितिः सर्वधर्मज्ञा (भू) | २३.२५ | साधु पृच्छसि राजेन्द्र (उ) | २२४.४ | साधुराधवभद्रते (सु) | ३३.६५ | साधुसाध्वितिका कुस्थं (सु) | ३५.८७ |
| साधुयचनातनुस्तेन (सु) | ३.८६ | साद्रि द्वीपसमुद्राश्च (स्व) | २.३० | साधु पृच्छसि विप्रयं (पा) | ३८.७ | साधुविप्रत्वयातुभ्यं (पा) | ८३.२ | साधुसाध्वितिमामेव (सु) | २४.२५ |
| सातुदुष्टाततस्ताम्या (सु) | २०.२४ | साद्वितीयास्मृतांगं (उ) | १३४.२१ | साधुपृष्टं त्वया (उ) | ३३.५३ | साधुविप्राग्रयणे साधो (पा) | १६.७ | साधु साध्वितिवक्त्यं (उ) | २३२.१४ |
| सातुश्रीर्ब्रह्मणाप्रोक्ता (सु) | ४.६७ | साधयितुं च तद्वैरमागतो (भू) | ५१.२४ | साधु पृष्टं त्वया (पा) | ७७.६४ | साधुध्वेतेषु सर्वेषु (भू) | ५६.१२ | साधु साध्वितिवैकुण्ठं (सु) | ४१.२६० |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४४१

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|-------------------------------|--------|---------------------------------|--------|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| सा तर्तहित्वयानाय (उ) | २५४.२ | सान्द्रानुरागाः कुलजन्म (स्व) | २२.६० | सापिमूर्च्छितरूपमंद (पा) | १०६.३६ | साभर्तुः परतत्राहि (उ) | २४४.५ | सामगायनकंचेव (सृ) | २०.७२ |
| साधूनां चापि सर्वेषां (भू) | १६.२५ | सान्द्रानुरागाः कुलजन्म (उ) | १२८.६८ | सापिरूपवतीवेष्या (पा) | ६५.१४२ | साभिलापेण भावेन (भू) | ८४.५ | सामगोपचिन्मेष्याप्या (सृ) | २७.२६ |
| साधूनां संगमेर्किं (पा) | २६.३३ | सान्निध्यं पुष्करेतेषां (सृ) | ३४.२३४ | सापिबारांगनातंच (क्रि) | १५.२३ | साभिलापेणमनसा (भू) | ५३.२८ | सामग्री क्रियतां तत्र (पा) | १०.४ |
| साधूनामपि सर्वेषां यः (भू) | ६७.५ | सान्निध्यं पुष्करेयेषां (सृ) | १६.२६ | सापिसकलदेवमानुषादि (उ) | २५०.८ | साभीमद्वादशोह्ये (पा) | २३.६४ | सामपूर्वं च दैतेयास्तं (सृ) | ४३२ |
| साधूनामुत्तमः साधुस्त्वं (उ) | २१६.३१ | सान्निध्येपिस्थितोद्वेरे (उ) | १३२.२३ | सापि साध्वी च सुश्रोणि (पा) | ६१.६ | साभूदिदीवरस्यामा (पा) | ७२.१०४ | सामपूर्वं तथोक्त्वा (उ) | २८.११ |
| साधूना संम तायेश्च (पा) | ६६.६४ | सापदापिबतेतोयं (पा) | ३१.१६ | सापिस्वप्नलव्वं (उ) | २५०.७ | साभ्रमतीं महागंगा (उ) | १४६.६ | सामरस्यास्थिः जगतः (सृ) | ४३.५८ |
| साधोत्रमवनिस्तारं वा (उ) | २२३.२ | सापवादमवाप्नोति (उ) | २०६.३७ | साधुत्रं दीप्ति संयुक्तं (भू) | १५.८६ | साभ्रमत्यां पियान् (उ) | १३६.१ | सामर्थ्यं नास्ति तीर्थानां (भू) | ६१.४० |
| साध्यापथ्यंस्तथा (सृ) | १२.८१ | सापव्यद्वेमपद्याः (उ) | १५.२४ | साधुरवसंहट्वातृत्यं (सृ) | १२.७२ | साभ्रमत्यां कृतस्तान (उ) | १५१.६५ | सामवेदकलंनस्य (उ) | ७६.५ |
| साध्यामरुद्गणारश्चैव (उ) | २२८.६५ | सापिकालेन दुष्टात्मा (उ) | १७६.३१ | साधुरवसः प्रीत्यै (सृ) | १२.७० | साभ्रमत्यां कृतस्तानो (उ) | १३६.१३ | सामवेदस्तथायज्ञे (सृ) | ३४.१४४ |
| साध्यामरुद्गणारश्चैव (उ) | २२६.१४६ | सापिकृष्णवर्नयातं (पा) | ८३.४६ | साधूनां ब्राह्मणश्रेष्ठ (क्रि) | ११.६६ | साभ्रमत्यां कृतस्तानो (उ) | १३६.५ | सामवेदस्तुवंदानां (सृ) | २१.१३६ |
| साध्यानामस्वीयया (पा) | ११६.१६ | सापि जाता महाभाग- (भू) | १०३.३३ | साधूनां ब्राह्मण श्रेष्ठ (क्रि) | १३.५५ | साभ्रमत्यां कृतस्तानो (उ) | १५४.६० | सामस्वरध्वनिः श्रीमान् (सृ) | ३.४१ |
| साध्यापि सकलमोक्ष- (पा) | ११६.३१ | सापितत्क्षेत्रमासाद्य (सृ) | १८.२०२ | साधूनां देवगणैः (सृ) | २३.१४१ | साभ्रमत्यां तदागच्छ (उ) | १५३.१० | सामानवीतं वरमात्मनः (पा) | १५.२ |
| साध्वीं नारीं समाहूय (पा) | ६२.७३ | सापितत्पत्रमादायगता (क्रि) | ५.११६ | साधूनां देवगणैः च (सृ) | २२.१६७ | साभ्रमत्यां पुरानीतं (उ) | १३५.६६ | सामान्द्रक्ष्यति वैदेही (पा) | ६४.४८ |
| साध्वीवादं वदिष्यति (क्रि) | २६.२५ | सापितत्फलमाप्नोति (सृ) | २२.१६३ | साध्वीनां सुकुमारांगी (पा) | ७१.४१ | साभ्रमत्यां मुपकंठे (उ) | १३५.८५ | सामान्यां दक्षिणां (सृ) | ३२.५२ |
| सानतत्रप्रतीकारं (उ) | १६.४ | सापितत्फलमाप्नोति (सृ) | २६.५६ | साध्वीं मंजुषोषा (उ) | ४६.४६ | साभ्रमत्यां स्तटेतीर्थे (उ) | १४८.१ | सामान्यां विभित्ते भूमिन्ने- (उ) | २२७.७४ |
| सानिक्रम्य महादेवि (उ) | १६.३३ | सापितुः कुपितादेवी (सृ) | ४३.५८ | साप्रदीप्ताग्निपवना (सृ) | ४१.२०० | साभ्रमत्यां स्तटेतीर्थे (उ) | १४६.४ | सामिच्छानामहाभागा (सृ) | १८.१३० |
| सानुक्रोशाः सदाचारास्ते (पा) | ६६.६१ | सापितुः कुपितादेवी (सृ) | ४३.५८ | साप्रदीप्ताग्निपवना (पा) | ७८.२२ | साभ्रमत्यां स्तुमाहात्म्यं (उ) | ११५.१ | सामृतं सुप्रियं प्रोक्तं (भू) | ११६.२० |
| सानुजोपथ्यमाहूय (उ) | २४६.३३ | सापिदिव्याप्सरो (उ) | २४४.३० | साप्रदीप्ताग्निपवना (पा) | ७८.२५ | साभ्रमत्यां स्तुमाहात्म्यं (उ) | १३५.१ | सामृतातत्त्वगणान् (उ) | २०४.६२ |
| सानुबोधोतिपयोसोधरा (उ) | १२५.६७ | सापिधन्यामसंदेहः (सृ) | १६.१७२ | सान्नवीद्विस्मृताहं (सृ) | ८.१०१ | साभ्रमत्यां स्तुमाहात्म्यं (उ) | १३६.१ | सामेति सामगणाहिम- (सृ) | ४६.५४ |
| सान्त्वानिकानामतेषां (सृ) | १७.२६१ | सापिभयार्ताक्रोशती (उ) | २५१.२३ | सान्नवीद्विस्मृताहं (उ) | १६६.५७ | साभ्रमत्यां स्तुमाहात्म्यं (उ) | १३५.५१ | सामोच्चारणे पुण्येन (भू) | १०१.३० |

| | | | | |
|---|------------------------------------|--|-------------------------------------|---|
| सामोद्गिरतंबहुशास्त्र (पा) ११७.३३ | सारभूतो रसस्तत्र (भू) ५३.६४ | सालेभेकीवशं पुत्रं (भू) ३३.२ | सावैतद्वदनांभोजच्युतं (पा) ४.७ | साह्यस्थाहरेरस्य-(उ) २२६.४३ |
| साम्नामघीशायकरद्वयं (सु) २५.११ | सारमुद्धृत्यसर्वेषां (पा) ६७.२५ | सावधानत्वमिदोपि (भू) २४.३३ | सावैवत मिदं वक्रैः सर्वं (उ) २५.४ | सिक्तः सारांबुधाराभिः (त्र) २२.३६ |
| साम्रमत्यास्तते गुप्तं (उ) १५७.४ | सारमेयस्तयोर्मध्या (उ) २१०.१२ | सावधानो भवानत्र (पा) ६३.७० | सावक्षितः शिवनिर्मुक्ता (पा) ४४.१८ | सिक्तः संज्ञामहं प्राप्तः (उ) १६७.४३ |
| सायंकाले तु संप्राप्ते (पा) ११४.२८८ | सारवंतो विमुंचति (उ) २०२.२६ | सावरुह्यस्तरायुक्ता (सु) ४३.४८० | साशिनो शिवतनूजले (पा) ६२.१०६ | सिक्थे दत्ते तु यत्पुण्यं (उ) १.३५ |
| सायं ग्रहास्तथानित्त्वं (स्व) ३१.१८७ | सारसोदिरितं वाक्यं (उ) १२६.१४३ | सावारानष्टपंचाशद्यथा (सु) २३.१३५ | साश्चर्यं चैव सोत्साह (उ) ३७.१७ | सितकृष्णनिशायोग्य (पा) ८३.६६ |
| सायं देवालयं गत्वा (क्रि) २२.८५ | सारसोभग्ननिद्रस्तु (उ) १२६.१५३ | सावित्रीकथितोदोषः (सु) १६.४६ | साश्चर्यं चैव सोत्साह (उ) १२४.१२ | सितरक्तगंगयोः शंभु (उ) १६६.२६ |
| सायं प्रातर्गृहद्वारं (स्व) ५५.८४ | सारस्वतस्तु नैऋत्यां (उ) २२८.५७ | सावित्रीगमने सर्वा (सु) १७.१०१ | साश्चर्यं चैव सोत्साह (उ) १२४.१२ | सितरक्तगौरीपीतः (पा) ८०.४८ |
| सायं प्रातर्द्विजः संव्याम् (स्व) ५१.२० | साराज्ञीपतिता भूमौ (उ) १४.६८ | सावित्रीतीर्थमासाद्यः (स्व) २१.६ | साश्चर्यं चैव सोत्साह (उ) १२४.३५ | सितवस्त्रधरं सम्य (उ) २२३.६५ |
| सायं प्रातर्द्विजातीनां (पा) ७६.४७ | सारङ्गः कंरमालाभिः (भू) ११५.१७ | सावित्रीतुवराकीसा-(सु) २२.१६६ | सासक्रीडा वचः प्राह (भू) ४६.५० | सितसटापटलोद्धतकंधरा-(सु) ४४.११४ |
| सायंप्रातः स्मरेद्यस्तु (स्व) ११.२६ | साहस्यं च कुतः पुण्या (उ) २००.१११ | सावित्रीत्वजगन्माता (उ) १८६.२६ | सासदाकलहं कुर्यात् (त्र) १५.४७ | सितातपत्रमस्योच्चैर्भा-(पा) २६.१६ |
| सायमाद्यंतयोरहोः (उ) २३४.२३ | साहरोदततः क्षिप्रं (उ) २४५.२५० | सावित्रीसुमुखीं हृष्ट्वा (सु) ३४.६६ | सासंहिता भागवती (उ) १६८.११५ | सिताम्बरधरा धन्यासित-(सु) १८.१७६ |
| सायातिनरकं घोरं (उ) २२३.१०२ | सारूप्येण च गत्या च (उ) १५७.८७ | सावित्रीनाम्नीयुमस्तेन-(भू) ५५.१२ | सासहस्रगुणातासां (उ) १२७.४६ | सितासितजने मज्जे (उ) १२७.३२ |
| सायाह्नुव्यापिनीया-(पा) १०५.८६ | सारेवृन्दावने कृष्णं (पा) ७७.३ | सावित्रीपतये देवगायत्री (सु) १५.११८ | सासिंहशब्दैश्चिलावर्णैः (सु) ४१.१४७ | सितासितातुवाधारा (उ) १२७.३४ |
| सारंगनाम्नो गोपस्य (पा) ७२.२० | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्रीप्रसवित्री च (भू) ६४.४८ | साहं तपः करिष्यामि (सु) ४४.३२ | सितोपवीतसहितो (उ) ४६.१६ |
| सारथिखड्गरोमाणं (उ) १३.२ | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्रीभागतां हृष्ट्वा (सु) १७.११६ | साहं पंचशताब्दानि (उ) १०६.२६ | सिद्धक्षेत्रं च विज्ञेयं (स्व) ३६.६४ |
| सारथि मातलि नाम (भू) ६४.३७ | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्रीभानयं क्षिप्रं माया (सु) ३४.४७ | साहं हरिपदाम्भोज (पा) ७२.३१ | सिद्धक्षेत्रं द्विजज्ज्ञेयं (स्व) ४३.५१ |
| सारथिः प्रापयामास (पा) २३.४४ | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्रीयं हरिर्ब्रह्मा (पा) ८१.५६ | साहसं तु कृतं तेन पुत्रेण (भू) ४.३६ | सिद्धचारणगंधर्वाः (स्व) २८.६ |
| सारथिर्देवराजस्य शृणु (भू) ६४.४० | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्रीव्याकुला देव (सु) १६.१२६ | साहसोत्साहसंपन्नाः (भू) ४२.७५ | सिद्धचारणगंधर्वाः (स्व) ३६.२४ |
| सारथ्यं च करिष्यामि (सु) १४.७२ | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्र्या चैव गायत्र्या (सु) ३४.३८६ | साहस्यं देहि मे पुण्यं (भू) ३६.२ | सिद्धचारणगंधर्वः (स्व) ४२.१२ |
| सारथ्यमर्जुनस्यायं (सु) १३.१४३ | सार्वभौमः पुराह्वासीद्वरि-(उ) ३१.२ | सावित्रीव्याकुला देव (सु) १६.१२६ | साहिज्जे च तपना तनयं (भू) २०.४२ | सिद्धचारण संपुष्टं (भू) ८८.१० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-----------------------------|--------|-------------------------------|---------|----------------------------|--------|
| सिद्धतीर्थेनरः स्नात्वा (उ) | १५६.६ | सिन्दूरं कुंकुमंस्नान-(सु) | २२.८४ | सिंह व्याघ्र समाकीर्णं (सु) | ३७.६६ | सीतां समागतां दृष्ट्वा (उ) | २४४.२६ | सीतासंज्ञाभवान्मृत्युः (उ) | २४३.३५ |
| सिद्ध पुरं च नगरं (उ) | १६.१७ | सिन्दूरपांसुपटलीराजत् (उ) | १६०.६ | सिंहस्कं धनिभैः पोच्यं (उ) | २२८.३३ | सीतागृहीत्वासर्वाणि (पा) | ५८.५६ | सीतासंदर्शनं तत्र (पा) | ६६.१७६ |
| सिद्धमेवमहाभागभुञ्जते (स्व) | ६.३२ | सिन्दूर सुन्दर (पा) | १०३.३० | सिंहस्य सन्मुखं गत्वा (भू) | १०३.८४ | सीतातद्वाक्यमाकर्ण्य-(पा) | ५८.७८ | सीतासंदर्शनाभये (पा) | ६६.११३ |
| सिद्धांगनाभिः सहिता (उ) | ५.३६ | सिन्दूरैः कुंकुमंस्तस्य (भू) | २०.१७ | सिंहासनं समाकूढ (उ) | ६०.२४ | सीताताः सर्वतोन्तत्वा (पा) | ६७.१५ | सीतासंहारिणीदेवी (उ) | २४३.३३ |
| सिद्धायेमानुषाश्चैव (उ) | २३३.१७ | सिंधुजं मूर्च्छितं दृष्ट्वा (उ) | १७.६६ | सिंहासने सिंहे वले (उ) | १८६.४६ | सीताद्वारतटोर्यं (पा) | ५५.६ | सीतासमागतं दृष्ट्वा (पा) | ६७.२ |
| सिद्धाः सनातनाविप्रा (उ) | १६४.६२ | सिंधुजेन भुजाक्रांतो (उ) | १८.६४ | सिंहास्थितेदेवगुरो (उ) | ५०.१३ | सीतादेवी च रुद्राणी (उ) | २४३.३४ | सीतासा चारु सर्वांगी (पा) | १५०.४७ |
| सिद्धिं च समनुप्राप्ताः (सु) | १६.३१ | सिंधुतममितिरूपातं (स्व) | २४.२६ | सिंहास्यः प्रचलज्जिह्वः (उ) | ६६.२१ | सीतानयनमुद्दिश्य (पा) | ६६.१२२ | सीतास्वयं हिमावित्री (उ) | २४३.३२ |
| सिद्धिं च तथा ब्रह्म-(उ) | १६८.१०८ | सिंधुपारप्रतीपाज्ञः (क्रि) | ५.६८ | सिंहास्यागजकोलास्या (उ) | २१०.४८ | सीतापतिमुखालोक-(पा) | ५.२७ | सीतेमृचकथं भार्या (पा) | ५७.५० |
| सिद्धिं प्रयातियोगेन (सु) | ६.६ | सिंधुराजेनसोप्युक्तः (उ) | ११.१८ | सिंहिकाग्रहमाता च (सु) | ४०.१०४ | सीतापतिव्रताधुर्यारूप (पा) | ६६.२६ | सीतेयं त्वच्चरणयोः (पा) | ४.३८ |
| सिद्धिं प्रापयनिविधनां (क्रि) | ११.८५ | सिंधुसौराष्ट्रकांबोज (पा) | ११४.४५१ | सिंहेनानुगः कश्चि (उ) | २००.८७ | सीताप्रक्षालयेदङ्गं (पा) | ११७.१५६ | सीतेस्वपतिनासादं (पा) | ४.४० |
| सिद्धिं प्राप्तो महाराज (स्व) | १६.५ | सिंहद्वारमतिक्रम्य (त्र) | ११.१३ | सिंहैः कबंधज्यो (उ) | ११.६७ | सीतामनिदितां कोनुत्य-(पा) | ५६.२६ | सीदन्तिचानलस्पृष्टाः (स्व) | १५.२४ |
| सिद्धियोगस्य संयोगे (उ) | १७४.४५ | सिंहनादविमुक्त्याय (सु) | ४५.६६ | सिंहैश्च गर्जमानैश्च (भू) | १०१.१६ | सीतामृत्युः सुवाचेयं-(पा) | ६६.३४ | सीदन्तिनिधिभरणे (स्व) | ५४.३८ |
| सिद्धिर्मतिमतीत्येषा-(सु) | ४३.२८६ | सिंहनादाकुलेगंडशले (सु) | ४३.५०३ | सिसृतातस्यजाताय-(पा) | १०८.४ | सीतायाभविष्यति (पा) | ११६.१०८ | सीतमूलैतिलकं सुदेव्या(भू) | १०२.४८ |
| सिद्धेन तेन मे विप्र (भू) | १२३.१७ | सिंहप्रसनेनवधौत् (उ) | २४६.१६ | सिसृक्षुरंभांस्तेतानि-(सु) | ३.८७ | सीतार्यसंशयन्मार्गं-(पा) | १.२६ | सीतमूलैतिलकस्यतेजः (भू) | १०२.४६ |
| सिद्धेनोक्तं वचः सत्य (उ) | १६६.७५ | सिंहराशिस्थितेसूर्ये (क्रि) | ४.१० | सिसृक्षोर्जघनात्सर्वं (सु) | ३.८८ | सीतार्यं प्रददो प्रोत्था (उ) | २४२.२१७ | सीतायिप्रभावानां (उ) | १८४.६ |
| सिद्धेभेत्तत्प्रपन्नस्य (सु) | १४.१८२ | सिंहं व्याघ्रं चमार्जारम् (स्व) | ५६.३४ | सीतयाममसंयोगे (पा) | ११.११ | सीतालक्ष्मीर्भवान्विष्णु (सु) | ३८.१०६ | सुकन्यायाः समीपस्थं (पा) | १६.२८ |
| सिद्धेश्वरं समाश्रित्य (भू) | २१.३७ | सिंह व्याघ्रगणा कीर्णां (सु) | ४१.१४५ | सीतयासहितं पश्य (पा) | ४.१४ | सीतालक्ष्मीर्भवान्विष्णु (उ) | ७६.२६ | सुकरास्तुहो जज्ञे (भू) | २८.४८ |
| सिद्धेश्वरस्य देवस्य (स्व) | १८.११६ | सिंह व्याघ्र गताश्चान्ये (सु) | ४०.१८८ | सीतयासहितं राम (पा) | २.८ | सीतालक्ष्मीर्ममहाभाग (सु) | ३८.६३ | सुकर्मानाममेषावी (उ) | १७६.४४ |
| सिद्धीपथं ब्रह्मविद्यारस (स्व) | २२.८७ | सिंह व्याघ्र भयं (उ) | १२८.२८५ | सीतया सहितं राम (पा) | ६७.१६ | सीतालोष्टसमायुक्त (उ) | १२२.१० | सुकलप्रदाहो पाजोवत् (स्व) | ३१.१५६ |
| सिधाव्याघ्रास्तथा (उ) | ८०.१२५ | सिंह व्याघ्र भयाकीर्णं (उ) | १४.५१ | सीतयासुकुमारांग्या (पा) | १.३३ | सीतासुद्धिस्तृतीयायां (पा) | ३६.७१ | सुकलानामपुण्यांगी (भू) | ४१.४ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|--------------------------------|--------|-------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| सुकलायाः परं भावं (भू) | ५३.६ | सुखं नानाविधं तत्र (क्रि) | ६७.० | सुखान्मेतानिदत्तानि (क्रि) | २०.८६ | सुगतेस्त्वंगमस्वामी (क्रि) | ५.१४० | सुग्रीवस्तुतकटकं (पा) | ५३.१ |
| सुकलाया वचः श्रुत्वा (भू) | ५३.३८ | सुखं भवतु ते देवि (भू) | ४६.४ | सुखाभिलग्ननिष्ठानां (भू) | ६६.१८८ | सुगन्धैर्नैलश्यागेन (उ) | ६४.२२ | सुग्रीवहनुमत्सीता (पा) | १.२१ |
| सुकेशेनं महाभागापतिः (भू) | ५३.१० | सुखं मे दर्शयस्व हि (भू) | ८.६३ | सुखायैव हि मात्मानं (पा) | ८४.२७ | सुगन्धं पुष्पं निक्षिप्य (पा) | ११४.३२० | सुग्रीवाद्याः कपीद्राये- (पा) | ५०.४६ |
| सुकालिनोद्विपदस्तथा (सृ) | २०.१६४ | सुखं वर्ततु ते सर्वे वैरं (भू) | २४.२१ | सुखार्थीकामरूपेण (सृ) | ७.२६ | सुगन्धमानसं कंलासमृतं (पा) | ६६.२० | सुग्रीवोपितहिवध्यो (पा) | ११६.१८८ |
| सुकुमारारं ध्यायोत् (पा) | ७२.१४७ | सुखं विदामिगे नाहं (भू) | ८.६० | सुखार्थीगुरुपस्तस्मात् (सृ) | १६.२५७ | सुगन्धं मिश्रितैस्तैर्नैर- (पा) | ८०.६१ | सुग्रीवोराघवौतो च (सृ) | ३८.५५ |
| सुकूपानां लडागानां (भू) | ६६.८ | सुखं मुखांतं सुखदं (भू) | ६८.६४ | सुखिनः पूर्वं जास्तेषां (उ) | ६७.४ | सुगन्धानां प्रसूनानां (क्रि) | २०.८३ | सुग्रीवोरामवचनादवतीर्य- (सृ) | ३८.१५५ |
| सुकृतं किं तथा प्राह (ब्र) | २०.१ | सुखदं नोऽक्षदं चैव (क्रि) | ६.२० | सुखी भवतु विप्रेन्द्र (उ) | १४१.३८ | सुगन्धाशतकुंभां च (स्व) | २८.११ | सुघोरामापदं प्राप्तान (सृ) | १२.३०६ |
| सुकृतं दुष्कृतं चैव (पा) | ६५.४३ | सुखदं नोऽक्षदं स्तोत्रं (भू) | ८७.३६ | सुखी भवमहाभागे (भू) | ५.२६ | सुगन्धिधूपमन्धातं मनः (सृ) | ३०.८८ | सुचारुं चारुभद्रं च (सृ) | १३.१५४ |
| सुकृतं वापि (भू) | ६८.३१ | सुखदेमन्दिरेतस्य (क्रि) | २५.३६ | सुखेन जीवते लोकः (भू) | ३६.५६ | सुगन्धिधूपमन्धातं मनः (सृ) | ४३.४४८ | सुखं च महादानं (भू) | ४०.११ |
| सुकृतं न कृतं किञ्चि (उ) | ३५.५८ | सुखभागिजगत्सर्वं (सृ) | ३४.५७ | सुखेन स्वीयतामत्रगृहीयते (भू) | ६०.१२ | सुगन्धैः कैंतरी पुष्पैः (क्रि) | १३.२४ | सुच्छत्रोपानहौ दद्याज्जल (भू) | ६७.७७ |
| सुकृतस्य प्रयोगेण (भू) | १०६.३५ | सुखमोगस्तुगन्धैः (उ) | २२६.६२ | सुखेन स्वीयते देव (भू) | ८.८० | सुगन्धैश्चन्दनैर्दिव्यैः (क्रि) | २३.४६ | सुच्छायास्तामश्चरणौ (सृ) | ४३.१६८ |
| सुकृतस्य फलं प्राप्ता (उ) | १२५.१२० | सुखमप्यु समासाय (क्रि) | २३.१७२ | सुखेन स्वीयते भद्रे (भू) | १२०.४ | सुगन्धैश्चन्दनैस्तस्य (क्रि) | ११.७६ | सुच्छायास्तामश्चरणौ (सृ) | ४३.१४२ |
| सुकृतेपुविनष्टेषु (क्रि) | १.१४ | सुखमेतत्स्ववादत्त (क्रि) | २०.६१ | सुखेनापि सकुटुम्बैः (भू) | ८३.४ | सुगन्धैः प्राप्यते पुष्पैः (पा) | ८६.७ | सुजन्मरणचापि- (पा) | ८६.२६ |
| सुकृते तु समाहूय (पा) | २८.५६ | सुखमेष्यति बहुवो (भू) | २६.७ | सुखेनापि सकुटुम्बैः (भू) | ८३.४ | सुगन्धैः पतिर्न हृदयं (पा) | ६४.३३ | सुजन्ममरणं चैव (पा) | ६०.४३ |
| सुकृतेस्तस्मैवैभ्रता (पा) | २५.२० | सुखरोगो यथा स्वासीच्छक्र- (उ) | ६.१२ | सुखोपविष्टविश्रांतं (पा) | १७.६१ | सुग्रीव गुणकं नाम (उ) | २४६.१० | सुजीर्णोयानहो हन्ते (पा) | ११४.११४ |
| सुकृतिनया सास्या (उ) | २४२.१६ | सुखव्याप्तमनस्कानां (भू) | ६५.१२ | सुखोपविष्टं विश्रांतं (पा) | ४७.३४ | सुग्रीवमेवमद्राज्ये (उ) | २४२.२२२ | सुजीवितं विहीनो (उ) | १३.४८ |
| सुक्रीमलपटास्तीर्णं (पा) | ७१.६ | सुखास्थितं नृपमभि (पा) | ११६.६ | सुखोपविष्टं विश्रांतं (पा) | ४६.३६ | सुग्रीव राज्यं दोषो (उ) | ७१.२२३ | सुतं च मानरं चैव (सृ) | १८.३७६ |
| सुखं च दातुः स्वपिति (सृ) | १६.२६६ | सुखस्पर्शं भुजाभ्यां (उ) | १५.३१ | सुखोपविष्टं तमुनि (उ) | ५८.१० | सुग्रीव सहितो रामो (उ) | २४३.२६१ | सुतं जांबवतो पात्री (उ) | २४६.१८ |
| सुखं तु पितृगृहस्य (भू) | ४८.२६ | सुखस्य दाता परमार्थदाता (भू) | ३१.१७ | सुखोपायमल्पवनमल्प- (उ) | ५१.५ | सुग्रीवस्तत्र च (पा) | ६४.५० | सुतं वंशकरं हिमहा- (उ) | २०७.५८ |
| सुखं वनचयः कान (भू) | १२.४३ | सुखस्य हेतवो ये च (भू) | ८१.४३ | सुखोपायोयथास्मै (उ) | १६३.८३ | सुग्रीवस्तत्र च (पा) | ६४.२७ | सुतं मन्त्रित्यमानानां (स्व) | १५.३३ |

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|--------|
| सुप्रभं सुंदरं दिव्यं (भू) | २०.१६ | सुब्रह्मण्यो बलिध्वंसी (उ) | ७१.१६६ | सुमतिर्नाम तेजस्वी (पा) | १३.२४ | सुमहान् संशयोस्माकं (स्व) | ८.१६ | सुरयेन समवीरो यज्ञ (पा) | ५३.३५ |
| सुप्रभाणि च ज्योतिषि- (सृ) | १६.७४ | सुभगा पुत्रिणीसाध्वी- (सृ) | ३४.१६३ | सुमतिर्नामियाप्रोक्ता (भू) | ८.६२ | सुमहासत्त्वशालिन्या- (उ) | १२६.४८ | सुरये पतिते षट्पा (पा) | ६४.१० |
| सुप्रसन्नमुखायुयं गृहीत्वा (सृ) | ४३.३०७ | सुभगा रोहिणीमाद्यादान- (उ) | १२४.७१ | सुमतिर्नाम संप्रोक्ता (भू) | ८.५८ | सुमान्ये तानि दिव्यानि (भू) | ११८.३३ | सुरथो जयमापेदे संग्रामे (पा) | ५२.६६ |
| सुप्रसन्नाततो देव- (सृ) | ४४.११६ | सुभगे मत्सुतमिमं (उ) | २४५.६४ | सुमतिः श्रीरघुपतिभक्ता- (पा) | ६५.४६ | सुमित्रं चारुमित्रं च मित्र (सृ) | १३.१५६ | सुरथो विमलो वीरो (पा) | ६२.३४ |
| सुप्रसन्ना सुमंत्रा च (भू) | १२.८८ | सुभायां तिष्ठतैयत्रतत्र (भू) | ३६.१०६ | सुमते कस्य नगरं प्राप्तो (पा) | २६.३ | सुमित्रास्वपदेन- (पा) | ६७.१४ | सुरथो वीक्ष्य रामं च (पा) | ५३.२८ |
| सुप्रसन्ने हृषीकेशोः (भू) | ३५.५ | सुभायां मिह विदामिकथं (भू) | ११.२५ | सुमते कस्य संस्थानं (पा) | १४.२३ | सुमूढेन मया तस्य (भू) | २८.११ | सुरपतिरिव सर्वान् यज्ञ (पा) | ६.२४ |
| सुप्रसन्नो हृषीकेशः (भू) | २२.६ | सुभायां विमयादत्तमिति (भू) | १०४.२० | सुमते मंत्रिणां श्रेष्ठ- (पा) | ६५.५१ | सुमूढेन मया तस्य (भू) | १२२.३८ | सुरभिं चाह्वयामास- (उ) | १५५.२४ |
| सुप्रियं कुरु मे वत्स (भू) | ८०.८ | सुभालेपं च भिर्वाणं विद्धः (भू) | ११५.१६ | सुमते वादकं प्राप्तं (उ) | २०४.१५ | सुमुच्छित्तस्य दुःखेन (भू) | ६६.१६ | सुरभिर्जनयामास कश्य (सृ) | ६.७६ |
| सुबलं चारु सर्वाणि (भू) | २३.१८ | सुभिक्षं क्षेममारोग्यं (उ) | १२२.६५ | सुमदं चंडनामानं गणं (पा) | ४३.२३ | सुमोचवाणमुत्पुणं (सृ) | ४६.७४ | सुरभिः सुरक्षाही च (उ) | २०३.६० |
| सुबलेनापि तस्यैव (भू) | ५३.१०५ | सुभीमा च तथा माद्री (सृ) | १३.१५२ | सुमदश्च सुबाहुश्च (पा) | ३३.२६ | सुमोज्ज्वलं तु (भू) | ३८.३ | सुरभीणि सुपुण्याणि (उ) | २५३.६५ |
| सुबार्णनिशितैस्तीक्ष्णैः (भू) | ११५.१५ | सुभीगैः शतकक्षैश्च (भू) | ८३.५६ | सुमदोऽप्येव पार्वत्याय (पा) | ३७.२३ | सुयज्ञैर्वैष्णवं लोकं (भू) | ६५.२६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहु प्रत्वा चेदं (भू) | ६८.३३ | सुभीज्यैर्भोजनैर्मृष्टैः (भू) | ६७.६४ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहु सुमदं वीरं (पा) | ६५.४७ | सुभ्रदां बलभद्रं च (किं) | १८.३० | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहुपुत्रं दमनं (पा) | २४.२६ | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | ७०.४५ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहुरयमत्युग्रो वैरि (पा) | ३७.२२ | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | १५.४७ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहुसुमदोऽनुक्याः (पा) | ४३.६० | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | १५.४७ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहुसत्यवत्या च (पा) | ६७.३८ | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | १५.४७ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुबाहुस्त्वहं नृमंतमागच्छं (पा) | २८.२७ | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | १५.४७ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुब्रह्मण्यममस्ते (उ) | ३५.५७ | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | १५.४७ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |
| सुब्रह्मण्यं नमस्ते (सृ) | ४६.६६ | सुभ्रतलताभंगीशुक- (पा) | १५.४७ | सुमदो हितपस्तेऽपेहृत (पा) | १२.६३ | सुरकार्यैर्मिदं सौम्यकृतं (सृ) | ३५.८६ | सुरभीराष्टपालो चक्रं (सृ) | १३.६० |

| | | | | | | | | | |
|------------------------------|---------|------------------------------------|---------|------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|----------------------------|--------|
| सुराणां च यथा विष्णु (उ) | १११.१० | सुराष्टाश्वसवाहो-(सु) | ४५.१६३ | सुलक्ष्मणानामजितौ (उ) | २४६.३६ | सुवर्णपुष्कचैव सुवर्णा (सु) | ४५.१५६ | सुवासिते शीतले च (क्रि) | १३.३ |
| सुराणां च यथा विष्णु (उ) | १२३.५ | सुराः सर्वे समायाता (उ) | ३०.६० | सुलक्ष्मीनाम सा चैका (भू) | ११६.८ | सुवर्णं पुष्पं विप्रेन्द्र (क्रि) | १०.३५ | सुविनीततमप्राहतमैव (पा) | ७१.६१ |
| सुराणां चैव सर्वेषां (सु) | २४.२११ | सुराः सर्वे सुखंप्रापुर्द्विं (पा) | १.१६ | सुलब्धकाः पाप कराः (भू) | ४२.२१ | सुवर्णं मणिमुक्ताद्वये (स्व) | ४३.४६ | सुवीरनामगोपस्यसुते (पा) | ७२.५६ |
| सुराणामसुराणांचत्वं (सु) | ३७.७१ | सुरासुखवाथयि (उ) | ३६.६ | सुलभं ब्रजनारीणां (पा) | ७७.६२ | सुवर्णमणिमुक्ताद्वये (स्व) | ४४.७ | सुवृत्तं सगरै तस्य (भू) | ११६.१८ |
| सुरानीराजयामासु (उ) | १६२.२७ | सुरासुर गुरुः श्रीमान् (सु) | १८.५१ | सुलभानतवप्राणाः (पा) | ४२.४५ | सुवर्णमालाकुलभूपि-(सु) | ४५.११५ | सुवेद युक्तैः परमार्थ-(भू) | ६६.८ |
| सुराषः पश्यामदंत (पा) | ४७.४० | सुरासुरपितृन् सृष्ट्वा (स्व) | ३.१५ | सुलभेषु पदार्थेषु (उ) | १२६.१२३ | सुवर्णमालिनीशांता (पा) | ७७.२२ | सुव्रतेन समतो द्वौ (भू) | २२.३२ |
| सुरापः सखिबः प्राह (पा) | १११.२५ | सुरासुरस्य जगतो गति-(स्व) | २७.१७ | सुलोचनाख्यातत् (क्रि) | ५.६० | सुवर्णरूप्यरत्नानां (सु) | ३४.३३५ | सुव्रतो नाम तेजस्वी (भू) | ५.७४ |
| सुरापानं कुह्वेहपिबस्व (भू) | २५.१६ | सुरासुरेन्द्रनमितपादय-(भू) | १६.६६ | सुलोचनायाः प्रस्तावं (क्रि) | ६.१२५ | सुवर्णं वर्णपुष्पं सुपर्णं (सु) | ४१.४४ | सुव्रतो नाम मेधावी (भू) | २१.४ |
| सुरापो ब्रह्महत्या (पा) | ८.१६ | सुरासुरैरनिर्णीत (सु) | ४३.३१७ | सुवरक्षनरत्नैर्हस्य (भू) | १०२.५५ | सुवर्णवर्णसंशो (सु) | १०.७६ | सुव्रतो नाम मेधावी (भू) | ३१.७ |
| सुरापो ब्राह्मणो (पा) | ६४.३३ | सुरास्तुमथ पानेन (सु) | १३.३२१ | सुवर्चतिपिप्पलादं (उ) | १५५.३४ | सुवर्णवस्त्रतां वृत्तं (उ) | १२६.८१ | सुशंखस्ताडितो विप्रा (भू) | ३०.६८ |
| सुरापो मित्र हंता च (क्रि) | २३.३० | सुराहिकथयति त्वाशुद्र (सु) | ३६.२४ | सुवर्णं रजतवस्त्रम् (ब्र) | ५.३७ | सुवर्णवस्त्रधान्यादि (पा) | १११.१५ | सुशंखस्थापि यः शापो (भू) | ३५.१० |
| सुराबिंदोस्तुसंप्रकात् (ब्र) | १५.३४ | सुरूपं सगुणं देव मम (भू) | ५३.१६ | सुवर्णं रजतं वस्त्रम् (उ) | ३२.५ | सुवर्णशोभा संमोहा (पा) | ७७.२१ | सुशंखेन सुनीधायै (भू) | ३६.३३ |
| सुराभास प्रबुधोऽस्मि(भू) | १०३.११८ | सुरूपः कथ्यते मर्त्यो (भू) | ३०.७० | सुवर्णं रजतं वापि यथा (भू) | ८१.४५ | सुवर्णं गृह्णाभरणोराज-(सु) | २१.६० | सुशंखेनापितेनैव सा (भू) | ३३.३ |
| सुरायां चैव सदावृत्तो (ब्र) | १३.७० | सुरूपतांपरालब्ध्वा (सु) | १६.१३ | सुवर्णरक्तिकामात्रं (उ) | १२७.१५ | सुवर्णस्य च दातारो (भू) | ६६.३१ | सुशर्मनामकोदेव (उ) | १७५.३० |
| सुरायाविदुनास्पृष्टम् (ब्र) | १३.६८ | सुरूपः सुभगः कांतकीर्ति(सु) | १५.२३१ | सुवर्णकारशैल्य (स्व) | ५६.७ | सुवर्णस्य सुकुंभं च (भू) | ४०.२३ | सुशर्मनामदुर्मोहाः (उ) | १७५.३१ |
| सुरारि लोकपालं तं (भू) | ८७.२१ | सुरूपामिः सुकन्याभि (भू) | १०३.२ | सुवर्णकुण्डलद्वन्द्वं (क्रि) | ५.१३ | सुवर्णाद्रिगुहादुर्गं(उ) | ६०.८ | सुशीघ्रमनुधावन्तम् (भू) | ६४.२१ |
| सुरार्चनरतेरभ्ये सदा (उ) | १२५.७४ | सुरेन्द्रमकुटश्राननिघृष्ट (सु) | ४३.३२५ | सुवर्णकुसुमैर्दिव्यै (क्रि) | १०.३६ | सुवर्णानांचतुर्लक्षं (ब्र) | १२.२० | सुशीतलाततोज्वाला (पा) | ११४.६१ |
| सुरालयेजलेवापि (पा) | ४७.४६ | सुरेश मोहनं माया (उ) | १८.४६ | सुवर्णमुक्तां वा (ब्र) | ४२.१५ | सुवर्णालंकृतानां तु (स्व) | ४३.४१ | सुशीतलेतयातोये (उ) | ८५.११ |
| सुराजीनः क्षुधीपापी (भू) | ७८.२३ | सुभानुवचामरप्रख्यश्च (सु) | ४१.१८६ | सुवर्णपंकजप्रख्यः (उ) | २२६.१३५ | सुवर्णालंक्ष्य संख्या (उ) | १६०.२८ | सुशीलाज्ञान संपन्नाः (भू) | १७.५६ |
| सुरावृणुतमेघ्रं वरं (पा) | ५.१३ | सुलक्षणा सुशीला (उ) | २२६.११४ | सुवर्णपञ्चनिका (क्रि) | ५.१४ | सुवर्णानामभूवालो (क्रि) | १०.३८ | सुशीला ज्ञान संपन्ना (पा) | ८६.६७ |



श्रीपद्ममहापुराणम् १: स्वोक्तानुक्रमेण

४८८

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|----------------------------|---------|---------------------------------|--------|------------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| सुशीला दान शीला (उ) | १२६.४५ | सुस्निग्धं रोमरहितं (पा) | १०६.१७ | सूक्ष्मं सूक्ष्मतरं शुद्धं (भू) | ६८.४८ | सूताश्च मागधाः सर्वे (भू) | १११.१४ | सूर्यतेजः प्रतीकाशा (भू) | ३.७० |
| सुशीलानामतद्भार्या (क्रि) | ५.५६ | सुस्निग्धं लघु कृत्वा (पा) | ११४.३३० | सूक्ष्ममूर्ति महामूर्ति (सु) | १४.१४७ | सूति वेषम्यदुःखैश्च (भू) | ६६.१५८ | सूर्यं तेजः प्रतीकाशा (भू) | ५.७६ |
| सुशीलोभगवद्भक्त (उ) | २४२.२० | सुस्निग्धनिविडच्छायां (पा) | ११४.१७ | सूक्ष्मवस्त्रैः सकटकैर्धूप (सु) | २३.२६ | सूतेनाक्रमेणैव पुराणं (सु) | २.४८ | सूर्यतेजोमयोराजस्ते- (भू) | १०१.१५ |
| सुश्रेयो मे भवेज्जन्मयशः (भू) | ३५.४ | सुस्निग्धनीलकुटिल (पा) | ७४.१७६ | सूचयामासतेनासी (पा) | ६४.८० | सूत्रवाग समानीय (उ) | ८६.४ | सूर्यपावकसंकाशस्त्वंग (भू) | ३२.२६ |
| सुश्रोणिभजनांप्रीत्यात्यज (क्रि) | ५.३५ | सुस्निग्धनील कुटिल (पा) | २२८.३१ | सूचितावह्वोनेनविप्रा (सु) | ३२.२४ | सूत्रधारः स्वयं कामो (भू) | ७६.३१ | सूर्यं पुत्र महाबाहो (क्रि) | १५.६६ |
| सुपमा सुंदरीयत्र (उ) | ८.६ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूचीभिरग्नि वरणाभि- (भू) | ६६.४७ | सूत्रेणवेष्टयेद्यस्तु (स्व) | १८.४१ | सूर्यप्रपूजयेत्तत्र (पा) | ८३.७६ |
| सुषुप्तान्मथुरायां (उ) | २४६.४३ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूच्यासूत्रं यथा वस्त्रे (सु) | १६.२५१ | सूत्रेणावेष्ठितं कृत्वा (उ) | ३५.५६ | सूर्यप्रभविमानस्था (सु) | १५.२६२ |
| सुषुप्ताविशतः कुंजं (पा) | ८३.१०४ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतकान्ततरं कार्यविघ्न- (पा) | १०५.७० | सूत्रेणा सुनिर्ण कृत्वा (सु) | ३४.३६६ | सूर्यविम्बेप्रभानाम (सु) | १७.२१० |
| मुष्वापत्तांनिशांतत्र (सु) | ३२.७० | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतके समनुप्राप्तेविघ्नेषु (पा) | १०५.७७ | सूदिताः शरजालैश्च (सु) | ४१.५८ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| मुष्वापत्तांनिशांतत्र (सु) | ३७.१११ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतजीवचिरं साधो (उ) | ७१.१ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसंथायचक्रुर्दावै (सु) | २.३४ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतजीव चिरं साधो (पा) | ८१.१ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसंस्कृताचपत्नीसा (सु) | १६.११३ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसंस्कृतचषोप्यन्तं (सु) | १६.२८५ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसमी कर पद्मी तु (भू) | १०२.६० | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसम्पूर्णं जगद्वै (भू) | ७१.१२ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसूक्ष्ममंगलं सूत्रं (पा) | १०६.८६ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसूक्ष्मवस्त्रवेधाश्च (पा) | ११३.४६ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुसौवर्णमयोमूर्ति (उ) | १३५.१२४ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुस्तनी कठिनी पीनी (भू) | १०२.५८ | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |
| सुस्त्रीकृतोपचारश्च (पा) | ११३.१० | सुस्निग्धनील कुटिल (उ) | २४४.८६ | सूतमे कांतमासीनं व्यास (सु) | १.२ | सूदेन प्रेषितो दैत्यः ॥ (भू) | १०६.१४ | सूर्यलोकां च भिच्वाऽसौ (उ) | २७.५६ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|--------|-----------------------------------|--------|------------------------------|--------|--------------------------------|---------|-------------------------------|---------|
| सूर्यवंशोद्भवो राजा (उ) | ६१.१७ | सृष्टस्य पुत्रो घर्मात्मा (सृ) | १३.२३ | सृष्ट्वा पशवो घीसम्भ- (सृ) | ३.१०८ | सेनापतिरिदं वाक्यं (पा) | ८५.१४ | मेवितः नवनदेविनयो (उ) | २५३.१६ |
| सूर्यस्तपस्वितीक्ष्णरं (पा) | १३.२६ | सृष्टाधात्रा च देवेन्द्र (भू) | ६०.५३ | सेतिहासं पुरावृत्तं (उ) | ६६.५ | सेनापते कुण्ड्वाराम्भम (पा) | ८५.१२ | सेविनास्तेन राजेन्द्र (स्व) | २१.१७ |
| सूर्यस्योदयनयावत्तावद् (उ) | ४०.४२ | सृष्टानियानि पापानि (ब्र) | २.२४ | सेतिहासमिन्द्रहन्तुं (उ) | १०६.१ | सेनाभटानं काञ्च (उ) | १८.६१ | मेवमानः भगवान्याम (पा) | ११७.२०३ |
| सूर्यस्योदय वेलायां (पा) | १०५.६६ | सृष्टालोकाः परास्रष्टाये (सृ) | १६.३२ | सेतुकुञ्जितवारीशः (उ) | २५४.४४ | सेनाभारोद्भूत वरस्तस्वी (उ) | ५.६५ | सेव्यमानाय देवा (पा) | १११.३७ |
| सूर्याचन्द्रमसीमार्गं (सृ) | १६.१५० | सृष्टिभावशृणुष्वत्वम् (भू) | १.६ | सेतुनानेन राजेन्द्र (सृ) | ३८.१०६ | सेन्द्रियोपियवाम्यं (पा) | ७७.४२ | सेव्यमानो मुग्धग्रामान् (उ) | २०४.१३७ |
| सूर्याचन्द्रमसीदेवो (उ) | २७.४२ | सृष्टिसंबन्धमेतन्मस्तद्- (भू) | २३.२ | सेतुबन्धस्य चारुयानं (सृ) | १.४१ | सेयं कन्या शिवस्यापि (भू) | ११४.११ | सेव्यमानो वरम्भामि- (स्व) | १६.१५ |
| सूर्याय कुसुमैर्दत्त्वा (उ) | २०१.१४ | सृष्टिस्थिति विनाश- (क्रि) | २.६ | सेतुर्योलोकमेतूनामे (सृ) | १६.३५ | सेयं वालायते पुत्री (पा) | ७२.६२ | सेव्यमानो हर्षस्तामि (क्रि) | ८३.६३ |
| सूर्ये चाम्यहर्णे श्रेष्ठं (पा) | ६५.८१ | सृष्टिस्थितिसमाहार (पा) | ७१.५२ | सेनाचरामहाराजो (पा) | ४०.१ | सेयं भागीरथी घन्धोः (उ) | १२६.२७० | मेकदोद्यानमिति मेतं (पा) | ५७.६ |
| सूर्येण सममुत्कृष्टं (पा) | १०६.६५ | सृष्टिस्थित्यंतकृच्चक्री (उ) | ७१.१४६ | सेनाचरास्ततः सर्वे (पा) | ३८.६ | सेयं श्रीकृष्णावनिता (पा) | ७२.८० | सेनिकाः परिमृष्टा (पा) | ६०.४८ |
| सूर्येण वदित्तीयेन (सृ) | १५.२०६ | सृष्टिस्थित्यंतरूपाया- (पा) | ७७.१५ | सेनाध्यक्षेण च विना (भू) | ४२.४६ | सेवकस्तत्र च ध्रुन्वा (पा) | २३.३० | सेन्यं यं प्रपद्यामि (उ) | १८.३१ |
| सूर्येण दुषहणे दानात्सुबर्णं (उ) | २०८.६५ | सृष्टेरादौ महाविष्णुः (क्रि) | २.१ | सेनाध्यक्षैरसत्यैस्तु (भू) | ५६.२२ | सेवकास्तस्मिन् भूपत्य (पा) | ४६.१३ | सेन्यायनपीडातद्वृणा (पा) | ४५.४३ |
| सूर्याय ये यथाध्वान्तं (उ) | ३६.३२ | सृष्टेपुष्पलयादूर्ध्वनासीत् (स्व) | २.२ | सेनाध्यक्षो महाप्राज्ञः (भू) | ११४.२२ | सेवकास्तेन दाप्रोचुर्दंगो (पा) | २४.३ | सेन्यैः सेनाभारोदग्रध्वज (सृ) | ४४.१३६ |
| सूर्योपसस्तु यो वाश्च (पा) | ११३.४६ | सृष्टोऽयं दुर्जनः क्रूरः (क्रि) | २२.१४ | सेनानाकसदादैव्य (सृ) | ४४.१७६ | सेवकैर्मयि युद्धाय (पा) | २४.१३ | सेहिकयांग काठिन्या (उ) | ६.५ |
| सूर्योपरागसमये (उ) | १८३.४० | सृष्टोऽयं विप्रिनापूर्वं (क्रि) | २२.११६ | सेनानीः कालजिन्मामतस्य (पा) | ६०.१५ | सेवकैः कैश्चिदागत्य (पा) | ५०.२६ | सेहिकयां महाप्राज्ञ (उ) | १०.१६ |
| सूर्योपरागसमये (उ) | १८३.३७ | सृष्टोनरोधनुष्पाणि (सृ) | १४.३६ | सेनानीः पटहस्याज्ञां (पा) | ४०.२७ | सेवनात्सततंचास्याः (उ) | १६५.६६ | सेगयकैश्च यो दिष्णु (क्रि) | १३.३२ |
| सुगालवदनश्चैव केभी (सृ) | १८.७५ | सृष्टोभगवता विष्णो (क्रि) | २२.२३ | सेनानीरिषुवारोपि (पा) | ४०.४० | सेयत्तेज्येष्ठभगिनीं (क्रि) | २.१०३ | सेवमुक्तापुनः प्राहृजान (उ) | १७६.३६ |
| सृजतो जगदीशस्य (सृ) | ३.८३ | सृष्टोविधातृरूपेण (पा) | ४६.८ | सेनानीः सकलां सेनां (पा) | ६०.७ | सेवाकर्तृमशयन्तुहम् (प्र) | २.१६ | सेवरोप समायुक्तां (ब्र) | १५.५१ |
| सृष्टं च पात्यनुयुगं (स्व) | २.३३ | सृष्ट्यर्थमस्य जगतः (क्रि) | २.२ | सेनान्यं विरथ्य चक्रे (पा) | ६०.२६ | सेवां चक्रे च चित्रा सा (भू) | ८६.३१ | सेवयुद्धानतः कालेडा- (उ) | १७६.२८ |
| सृष्टं पुनस्तथासर्गं (सृ) | २२६.६१ | सृष्ट्या चावश्यभाविन्या (सृ) | ४३.१४४ | सेनान्यो देवराजस्य (सृ) | ४२.१०० | सेवां वा इत्यवटयोर्त्रैत (उ) | ११४.२० | सेव ध्रुत्वा च तद्वाक्यं (भू) | ६७.१४ |
| सृष्टचर्यतु पुरा ब्रह्मा (उ) | १७४.१५ | सृष्ट्वादौ पुरुषः श्रेष्ठः (क्रि) | २२.७ | सेनापतिमुवाचेदं (पा) | २३.२० | सेवितः प्राणिभिः सर्वे (उ) | १२६.१६४ | सेवोवाचततः काना (क्रि) | ४.८६ |

श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

१०

| | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------------------------------|--------|---------------------------------|--------|----------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| सोऽपितत्फलमाप्नोति (क्रि) | १३.१६ | सोऽन्यानप्यसुरान् गत्वा (सु) | १३.३६० | सोऽपि विद्याधरो भूत्वा (सु) | २६.५७ | सोमतीर्थं ततो गच्छेत् (स्व) | १८.३० | सोमस्य गगनस्थस्य (सु) | ४५-१२६ |
| सोऽपितत्फलमाप्नोति (क्रि) | १४.२२ | सोऽप्यन्वेत दालोमे (उ) | १२५.६३ | सोऽपि विद्याधरो देवः (उ) | ३.६ | सोमतीर्थं ततो गच्छेत् (उ) | १६१.१ | सोमस्य मानसं दिव्यं (भू) | ७१.८ |
| सोऽपि तद्वचनं श्रुत्वा (पा) | ७.१८ | सोऽप्यग्निं दत्तं का (उ) | ६६.४८ | सोऽपि वसुधैव कुटुम्बकम् (सु) | २८.२२ | सोमतीर्थं नरस्नात्वा (उ) | १६१.२ | सोमस्येति चिदादाह- (सु) | १२.४६ |
| सोऽपि दस्युर्वस्युभिश्च (क्रि) | १६.३१ | सोऽप्यग्निं ररजं दीनां (सु) | ३७.४४ | सोऽपि स्वर्गातिजान् सर्वा- (उ) | १७७.६० | सोमतीर्थे मृतो यस्तु नासोम (स्व) | १८.६७ | सोमाग्नये महावीरः (उ) | १२६.२ |
| सोऽपि प्रव्रज्यते न्ये (उ) | २५०.१२ | सोऽपि यानि शिवस्थानं (भू) | ६६.३१ | सोऽपि स्वर्गं वसेद्वाज्या- (सु) | २८.२० | सोमपाथो भवेद्यत्र तः (भू) | ३६.१०३ | सोमाय शान्ताय नमोस्तु (सु) | २६.८ |
| सोऽपि भद्रतनुविप्रो (क्रि) | १७.२५४ | सोऽपि तत्र गतः सार्द्धं (उ) | २१४.८६ | सोऽपि हरेः सायुज्यं (उ) | २५२.२३ | सोमरूपस्य वै तदग्नये (सु) | २६.२५ | सोमेनाश्रतपस्वत् (उ) | १५६.४ |
| सोऽपि सर्वसमाचष्ट (पा) | ११३.२६ | सोऽपि तं धर्ममास्थाय (सु) | ४०.६५ | सोऽपि हरेः समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमलोकावाप्नोति (स्व) | २७.२६ | सोमेनाप्यायिता न कृत्वा (सु) | ३४.२८७ |
| सोऽहं स्मरामि रामस्य (पा) | ३६.८७ | सोऽपि तथेत्यवदत्ततो (उ) | २५२.६ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमवंशः कथं जातः (सु) | १२.१ | सोमेनायजयद्ग्रीरं ग्रहं (पा) | १६.१३ |
| सोऽगच्छद्यत्र तत्रास्य (उ) | ११६.१७ | सोऽपि तान्सहा सा भवत्या (क्रि) | १.७ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमवंशप्रसूतो हं (भू) | ७७.४८ | सोमेनैव भवेद्वाज्यान् (त्र) | १३.६३ |
| सोऽग्निं देवं मुलं जित्वा (सु) | ४१.२३४ | सोऽपि तीर्थं विशुद्धात्मा (उ) | ८०.३६ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमवंशस्य सर्वस्य (भू) | १०६.६ | सोमेश्वरं तथा तीर्थं (उ) | १३३.२२ |
| सोऽहुं क्लेशानुरूपस्य (सु) | ४३.२८४ | सोऽपि त्रययाति पापात्मा (उ) | २१४.८५ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमवंशप्रसूतो हि (भू) | ६४.४ | सोमेश्वरैव रात्रोऽहोऽप्रासे (सु) | १७.२०१ |
| सोऽहुं नशक्वते भूतं स्ते (उ) | १२८.१६५ | सोऽपि द्विज वस्तस्मा (उ) | २१४.८८ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमवंशेषु विख्यातो (भू) | १०२.७३ | सोमो राजा तथा लक्ष्मी (भू) | ११६.११ |
| सोऽति क्रामति संसारं (भू) | ६६.६४ | सोऽपि नरक माप्नोति (उ) | ६४.१०६ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमवारे तथा प्राप्ते (उ) | १६१.१४ | सोमो वस्त स्वरूपो (भू) | २६.४२ |
| सोऽति क्रुद्धो महाप्राज्ञो (भू) | २८.१०१ | सोऽपि पक्षी द्विजश्रेष्ठ (क्रि) | १५.२६ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् महाप्राज्ञ (भू) | ४.२ | सोमकांतिमहातीर्थव (उ) | १८६.५ |
| सोऽतिष्ठत् स्थानुभूतो हि (स्व) | १५.८ | सोऽपि वारणपुत्रीमुपां (उ) | २५०.४ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् महाप्राज्ञ (भू) | १६.४२ | सोम्य रामोऽजतीर्णो (उ) | २४६.२३ |
| सोऽत्तरीयमिदं वस्त्रं (क्रि) | २२.१२१ | सोऽपि भुक्त्वा यथा (उ) | २१०.६६ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् रस्य तनयः (भू) | २२.१३ | सोम्य वृद्धि समायातो (भू) | ११४.१७ |
| सोऽत्र श्रीमान्नील वीले (पा) | १७.३६ | सोऽपि महैव तोनास्ति (पा) | ६३.१६ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् महाप्राज्ञः (भू) | १६.१ | सोमवाच दानवेन्द्रस्य (भू) | १०३.६४ |
| सोऽनि लोद्धुः तव सनस्त- (सु) | ४१.२२२ | सोऽपि महावीर्यान् (उ) | २५२.५ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् महाभाग- (भू) | ४.२७ | सोमविविधोचितस्तेन (पा) | २६.५१ |
| सोऽन्यं रथं समारुह्य (पा) | २३.६७ | सोऽपि युद्धार्थं मस्माभिः (उ) | ५.२३ | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् महाभाग- (भू) | ४.२६ | सोमसृष्टान्नवोमायाम (सु) | ४५.११६ |
| सोऽन्यद्वनुरूपादाय (पा) | ६२.२२ | सोऽपि लब्धवरो यक्षः (स्व) | १६.१० | सोऽपि ह्येव समायुज्यः (त्र) | १४.२६ | सोमशर्मन् महाभाग- (भू) | ४.२६ | सोमसृष्टान्नवोमायाम (सु) | ४१.२२१ |

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|--------|------------------------------|--------|------------------------------|---------|----------------------------------|---------|---------------------------------------|--------|
| सोहृकोरकुले भुवं (उ) | १७५.४८ | सौभाग्यारोग्यफल (सृ) | २२.६१ | सौराष्ट्र नगरे ब्रह्मन् (उ) | १०६.१४ | स्कन्दस्य जन्म वै युक्तात् (भू) | ६६.२२० | स्तवैर्भक्त्यारणामैः (पा) | ७४.१४१ |
| सोहं धर्मं करिष्यामि (भू) | ६७.२ | सौभाग्यारोग्यसम्पन्ना (सृ) | २२.१३५ | सौरिर्दुर्दैस्तयासर्वैः (भू) | ७६.१ | स्कन्दस्व दक्षित घाते (उ) | १७.५७ | स्तवैः स्तुत्वा जगन्नाथं (क्रि) | ११.१३८ |
| सोहं निमित्ते कस्मि (सृ) | ३६.८६ | सौभाग्यष्टकं तद्वच्च (सृ) | २६.४२ | सोरीं सौम्यां शिवदूतीं (सृ) | ४६.७६ | स्कन्दानुजा सा तपसा (भू) | १०३.७१ | स्तवोद्योगमवाप्तानो (पा) | ६४.१५७ |
| सोहं भागवतः श्रुत्वा (सृ) | ३६.१११ | सौभाग्यदश्वं पकश्च (सृ) | २८.३० | सौवर्णकंकतिकांच फल (पा) | १०६.८८ | स्कन्दैतास्त्रियानूतनं (उ) | १२२.७१ | स्तात्रं नन्नास्ति ससारं (क्रि) | १७.२४६ |
| सोहं वन मिद रम्यं (सृ) | ३६.६० | सौभाग्यदायिनी राजन् (उ) | ४.८२ | सौवर्णं कलशं दिव्यं (उ) | २४३.५ | स्कन्दोद्यवदनाद्बलैः (सृ) | ४४.१४३ | स्तुतवत्प्रथमतो (सृ) | ४३.२७५ |
| सौकररूपमास्थाय (सृ) | ३०.४४ | सौभाग्येन विराजतीं (भू) | ३०.८२ | सौवर्णं कारयेद्देवं (उ) | ३६.७ | स्कन्देन च भगवान् रुद्र (उ) | ४५.१६ | स्तुतस्तेनेति विप्रेण (क्रि) | १७.४४ |
| सौकरेणुतुत्प्यन्ते (सृ) | ६.१५७ | सौमित्रिप्युमिलया (पा) | ६७.३७ | सौवर्णं राजतं ताम्रं (सृ) | ६.१४३ | स्कन्देन धारयन् प्राप्ति (उ) | २११.३० | स्तुतस्मिन्नेवक्षणे (उ) | २५१.८ |
| सौकमार्यं विचार्यैककुलः (भू) | ४१.२० | सौमित्रिब्रवीद्राम- (सृ) | ३३.१३५ | सौवर्णं पात्रिकान्यस्त (पा) | ११४.६२ | स्कन्दमन्यर्च्यविधिवत् (पा) | १०४.१३३ | स्तुतिभिर्देवदैत्यानां (सृ) | ४३.४२८ |
| सौख्यभूमिरियं सर्वाधर्मं (पा) | ६६.४३ | सौमित्रिः स्वरथे (पा) | ६५.१६ | सौवर्णं पात्रे रोप्ये (पा) | ८०.५२ | स्कन्दपुराणलोमानि (स्व) | ६२.६ | स्तुति लिङ्बजितः श्लोकः (पा) | १०४.८२ |
| सौख्यात्कस्येन दुःखं (सृ) | ८.५१ | सौमित्रेकैव पुण्येन (पा) | ६७.३ | सौवर्णं पात्रे रोप्ये (पा) | ५.११ | स्खलितलसितपादा (पा) | १०३.४६ | स्तुतो देवगणैः सर्वैः (उ) | १६२.६ |
| सौगंधिकं वनं राजंस्ततो (स्व) | २८.५ | सौमित्रेकैव पुण्येन (उ) | ४४.१२ | सौवर्णं प्रतिमादानं (त्र) | ३४.३६ | स्तनं तावत्प्रयच्छामि (सृ) | १८.२५७ | स्तुतोऽस्मदादिविबुधैः (उ) | २०७.३६ |
| सौगंधिकैर्यकस्तुरी (पा) | ७४.१२७ | सौमित्रेकैव पुण्येन (पा) | ५६.२७ | सौवर्णं पात्रे रोप्ये (पा) | ३४.३२ | स्तनं तुतनस्यस्यास्य (सृ) | १८.२५६ | स्तुतोऽस्मदादिविबुधैः (उ) | २०७.४० |
| सौजन्यं ते युक्नुवन्ति (सृ) | १७.२६१ | समिश्रेष्ठं पुण्यं (पा) | ५६.३५ | सौवर्णं पात्रे रोप्ये (पा) | ८०.३३ | स्तनं तुतनस्येह प्रयच्छन्ती (सृ) | १८.२६२ | स्तुत्वा तं ब्राह्मणं श्रेष्ठं (क्रि) | १७.६२ |
| सौत्रामण्यां पशुं मेघ्यं (भू) | ३७.३६ | सौम्यः सचमिणां देवः (उ) | २१३.५६ | सौवर्णं पात्रे रोप्ये (पा) | ८०.३३ | स्तनयोस्त्वन्निरुद्धं (उ) | ७८.२४ | स्तुत्वान्त्वाचदेवेशं (पा) | २२२.६३ |
| सौदर्यं गह्वने भ्रामन (उ) | ६६.११ | सौम्यस्त्वं सर्वभूतानां (सृ) | ४१.१३२ | सौवर्णं भाजने चानं (पा) | ११४.१०६ | स्तनोचानं दक्षारिण्यं (सृ) | २२.१४३ | स्तुत्वानामसहस्रेण (उ) | २३२.५४ |
| सौदर्यगुणं सम्पन्ना (उ) | १८.१४ | सौम्यार्तानि जभावातां (सृ) | ४१.३१८ | सौवर्णं कूर्ममकरोराज- (सृ) | २७.१६ | स्तवकर्मदनीरंम्यं (सृ) | ४३.२३६ | स्तुत्वानामसहस्रेण (उ) | २३२.५४ |
| सौदर्यातिशयेनादया (पा) | ७०.१७ | सौम्यं विकर्तनयेति देवा (सृ) | २१.२२० | सौहृदं दद्यात्नीव नरा- (सृ) | १५.४६ | स्तभोत्तरेणुवालायां च (पा) | १०७.६८ | स्तुत्वा प्रणम्याविधि (पा) | ७४.१६२ |
| सौभद्रश्चाभवश्चैव (सृ) | १३.१२८ | सौम्यं विकर्तनयेति देवा (सृ) | २१.२२० | सौहृद्यानि सुगंधीनि (भू) | ११६.१८ | स्तवनायै मुतो मृष्टो (भू) | २८.७४ | स्तुत्वा प्रसीद भगवन् (पा) | ६५.१०८ |
| सौभाग्यभवनायेति (सृ) | २६.२५ | सौम्यं विकर्तनयेति देवा (सृ) | २१.२२० | स्कन्द तीर्थतोगच्छेत् (स्व) | १८.५१ | स्तवस्य श्रवणादस्य- (पा) | ६४.१५५ | स्तुत्वैवंशं कृत्वापि (स्व) | ३५.४५ |
| सौभाग्यामृत सारोयं (सृ) | २१.२०३ | सौम्यं विकर्तनयेति देवा (सृ) | २१.२२० | स्कन्दलंबोदराम्यां (उ) | १०.४८ | स्तवैरनुत्तमैः केचिन्- (क्रि) | २३.१२ | स्तुतवते देवदेवेशं (स्व) | १५.५२. |

[illegible]

| | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|--------|----------------------------|--------|-----------------------------|-------|--------------------------|--------|
| स्थानमेतत्समाख्यातं (सु) | ३.१६३ | स्थापितस्तत्रयागो (उ) | १८६.३६ | स्थितो गत्वेदमानाद्य (भू) | ११५.६ | स्थूलं सूक्ष्मं तथा (उ) | ८०.८६ | स्थानुपदानि सनुजो (पा) | ६८.११६ |
| स्थानमेतदपिश्रेष्ठं (उ) | ६१.१४ | स्थापितस्तनुशक्रेण (सु) | १३.११८ | स्थितोस्मि समरे पश्य (भू) | ११५.७ | स्थूलाक्षः सर्वलोकाग्रः (उ) | ८१.७ | स्थानयनीन्मी प्रातः (पा) | १०३.४१ |
| स्थानमेव सदासिग (उ) | १३५.११० | स्थापितापरमाभक्त्या (उ) | १६६.४ | स्थित्यथदधिकम् (स्व) | ५७.७३ | स्थूलवर्मस्तद्वैव (भू) | ६४.४ | स्थानुयामिनं पुण्य (पा) | ६४.१५६ |
| स्थानस्वदर्शनं तस्यै (उ) | ६१.२८ | स्थापितोस्ति मया लोका (भू) | ८३.५ | स्थित्वाकतिदिनं (क्रि) | ८७.७६ | स्थूलोदात्तोदरोनीलो- (पा) | ७८.३५ | स्थानुनायातिवचसा (पा) | ६४.१५५ |
| स्थानानांपरमंस्थान (सु) | १६.२०१ | स्थापितेषु च सर्वेषु (भू) | ८४.८ | स्थित्वाकल्पगतं (क्रि) | ७.६५ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.५६ | स्थानोवैजिदनाग्रः (स्व) | २६.६१ |
| स्थानानंतरपवित्राणि (स्व) | ३३.१२ | स्थितः कश्चनदुर्मथा (उ) | १६१.५ | स्थित्वाजिज्ञासया (उ) | १५२.१७ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६३ | स्तातोमिदक्षमगृहीतो (उ) | ३०.१० |
| स्थानासत्तं च वर्तन्ते (सु) | १५.३३७ | स्थितकिञ्चिन्महाराष्ट्रे (उ) | १६३.५१ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६४ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थानेतिस्मिद्विज (क्रि) | २४.५५ | स्थितः सरित्ते रम्ये (भू) | १००.७ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्तातोहंसर्वनीयेषु (उ) | ४५.८२ |
| स्थानेषु दाप्य रहितेषु (क्रि) | २४.३१ | स्थितस्तदैरावणनाम (सु) | ४२.१०२ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थानि स्थाने पुरे (क्रि) | ६.५५ | स्थितस्तदैरावणनाम (सु) | ४२.१०२ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थानेस्मिन्पृथो (उ) | ६१.१३ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थानेस्मिन्पृथो (उ) | ६१.१३ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थानेस्मिन्पृथो (उ) | ६१.१३ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयतिहृदस्त्रे (पा) | १०५.११६ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयित्वा चक्षयनं (सु) | २६.४७ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयित्वा दहतं (पा) | १०७.४२ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयित्वायथो दत्त्वा (उ) | १४१.८ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयेत्कीर्तनार्थं (उ) | १६८.२४ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयेत्सिन्धु (सु) | २६.३० | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापयेद्वज्रकुम्भं (सु) | २२.५१ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |
| स्थापितस्तत्रलिगं (उ) | १५०.५ | स्थितानामपिपापानां (पा) | १०६.५३ | स्थित्वातस्मिस्तुकमले (भू) | ४०.४८ | स्तातमात्रोनस्तत्र (स्व) | १८.६८ | स्ताताहृन्वर्तनीयेषु (उ) | ३०.८ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|-----------------------------------|--------|----------------------------------|---------|
| स्नात्वातुगुरवेदछान् (सु) | २१.११५ | स्नात्वा सम्यग्विधानेन (पा) | ८६.३६ | स्नानं दानं जपो होम (पा) | ६६.१६ | स्नानाच्चतवर्गोविद (उ) | २०७.५६ | स्नानेनसर्वकामानाम (उ) | १२८.१४६ |
| स्नात्वा तु चमसोद्भेदे (स्व) | २५.१६ | स्नात्वा सम्यग्विधानेन (पा) | ६०.५३ | स्नानं दानं जपोहोम (पा) | १०२.६ | स्नानाच्छादनकर्मेक्ष्यं (भू) | ४७.४६ | स्नानेप्राशनकेशस्ता (उ) | ४२.२० |
| स्नात्वातुसलिले (सु) | १४.२०७ | स्नात्वा सम्यग्विधानेन (उ) | २३४.३१ | स्नानं दानं महापुण्यं (स्व) | १६.२१ | स्नानाच्छादनभोज्यं (भू) | ५२.७ | स्नापनंतस्यकर्त्तव्यं (सु) | २७.४१ |
| स्नात्वातेनविधाने (स्व) | २२.७४ | स्नात्वा सरस्वतीतोये (उ) | ३४.५७ | स्नानं ये कुर्वन्तेमर्त्या (क्रि) | १८.१७ | स्नानाज्जपात्तथाहोमा- (सु) | १४.१०२ | स्नापनंतस्य लिगस्य (उ) | १५१.३० |
| स्नात्वातेनविधाने (उ) | १२८.८३ | स्नात्वासितासिते- (उ) | १२६.२५१ | स्नानं वापि महाभाग (पा) | ८४.५ | स्नानाज्जपात्तथाहोमा- (सु) | ३२.१२८ | स्नापयंचक्रिरेदेवी (सु) | ४.६२ |
| स्नात्वातेनाध्वनानातः (उ) | १६०.१७ | स्नात्वास्वयेच्छयात (उ) | २१६.८० | स्नानं वायसतीर्थेयोगे (ब्र) | १०.२३ | स्नानाज्जपात्तथाहोमा- (उ) | १३४.२५ | स्नापयित्वा जगन्नाथ (क्रि) | १०.६ |
| स्नात्वातीविधिवत् (उ) | २०८.४ | स्नानं कुरुतविप्रैर्द्रा (उ) | १३७.११ | स्नानं विधाय गंगायां (क्रि) | ८.२० | स्नानाद्भवेन्मोक्षभार्गा (सु) | १६.४७ | स्नापयेच्छाच्युतं भक्त्यां (ब्र) | २३.६ |
| स्नात्वा दत्त्वा च यत् (स्व) | ३१.६२ | स्नानं कुरुष्वशीघ्रं (स्व) | ३५.२८ | स्नानं विभातेनियमेन (पा) | ६७.६३ | स्नानानां चैव सर्वेषां (उ) | ११७.३० | स्नापयेच्छीततोयेषु (क्रि) | १२.३० |
| स्नात्वा पीत्वा जलं (भू) | ७७.२१ | स्नानं कुर्यान् मृदातद् (सु) | २०.१५२ | स्नानं सत्रैषधः कुर्यात् (सु) | २१.२६ | स्नानार्थं तु वयं राम (सु) | ३३.८२ | स्नापयेतजलंभक्त्याम- (उ) | १२४.५० |
| स्नात्वा पुण्य प्रदेशेषु (भू) | ६०.६ | स्नानं कुर्वन्ति ये तत्र (उ) | १३४.३१ | स्नान काले पठेद्यत्तु (उ) | २४५.३१६ | स्नानार्थं प्रविशेत्स्रोतः (क्रि) | ६.३८ | स्नापयेतकमलाकांतं (क्रि) | ११.७१ |
| स्नात्वापृष्ट्वामुनीन् (पा) | १०४.१५७ | स्नानं कुर्वन्तिविप्रास्ते- (उ) | १३४.१६ | स्नान काले पुष्करिण्यां (क्रि) | ११.१८ | स्नानार्थं भोजनार्थं च (क्रि) | १७.१६६ | स्नापितुं प्रथमं नीतो (भू) | ६१.५ |
| स्नात्वाफलमवाप्नोति (स्व) | २६.१८ | स्नानं कुर्वित्यु वाचै (पा) | ७४.१६४ | स्नानमात्रेण किं पुण्यं (उ) | १३५.१५ | स्नानार्थं मपितोर्धानां (पा) | ६०.७ | स्नाप्य पंचामृतं (उ) | २२३.५८ |
| स्नात्वा भुक्त्वा (उ) | २०४.६७ | स्नानं कृप जलेपिपयस्तु (क्रि) | ६.१६१ | स्नानमात्रेणतन्मथ्येन (उ) | १२६.३५ | स्नानार्थं प्रत्यहंदेवि (उ) | १५६.६ | स्नायन्तेभरतश्रेष्ठ (स्व) | २५.२२ |
| स्नात्वाभ्यर्च्य पितृन् (भू) | ३६.५३ | स्नानं कृत्वा पितृन् (उ) | २५.८ | स्नानमात्रेणरस्तत्र (स्व) | १७.१४ | स्नानार्थं हृदयवसनं (क्रि) | ५.१२ | स्नायोर्मज्जा तथास्थीनि (भू) | ६६.२६ |
| स्नात्वाभ्यर्च्ययथा- (स्व) | ५७.३० | स्नानं कृत्वायथान्याय- (स्व) | १८.२१ | स्नानवारिफलकिंचित् (पा) | ७३.४० | स्नानार्थं कर्णं श्रेष्ठ (पा) | ६५.८० | स्नायस्वियमज्जा (उ) | १८७.८६ |
| स्नात्वा यत्र नर श्रेष्ठ (उ) | ८१.३४ | स्नानं कृत्वा विधानेन (उ) | ४५.५६ | स्नानव्याजादगतावासं (क्रि) | ५.१२६ | स्नायोर्मज्जा तथास्थीनि (पा) | ६६.२६ | स्निग्ध कोमल दुर्वा (उ) | २४२.२३३ |
| स्नात्वाविधिवदत्रैवा (उ) | २०४.१३१ | स्नानं कृत्वा विशेषेण (उ) | १४०.१५ | स्नानशौचक्रियाहीनो (उ) | १६६.७२ | स्नानावसानेनामेण (सु) | ३३.६१ | स्निग्धमुग्धस्मिता- (पा) | ७४.१४३ |
| स्नात्वा वै भावशुद्धास्ते (भू) | ८६.४३ | स्नानं चतुर्विधं प्रोक्तं (उ) | ११७.२८ | स्नानस्थानादिकसो (भू) | ४.२१ | स्नानेदानार्चनं श्राद्धे (पा) | ६६.१६ | स्निग्धविद्रुमसच्छायां (सु) | ४६.४४ |
| स्नात्वा शौच युतो (स्व) | ५६.२१ | स्नानं जागरणं दीपं (उ) | ८६.१३ | स्नानाचमनकैरेव व्यत्र (भू) | १३.२२ | स्नानेनपरमेशस्य (पा) | ६०.३४ | स्निग्धाघोन्नतचार्व- (पा) | १०५.१६६ |
| स्नात्वा संपूजयेद् (उ) | २५३.१५५ | स्नानं दानं च तत्रैव (स्व) | १८.११८ | स्नानाचारासनरताः (सु) | १५.१०६ | स्नानेनमाघस्य विशुद्ध (उ) | १२८.३ | स्निग्धायतमुलावण्य (उ) | २२६.६८ |

| | | | | | | | | | |
|----------------------------------|---------|---------------------------------|---------|----------------------------------|---------|----------------------------------|---------|--------------------------------|--------|
| स्निग्धैः सानुनयैर्विक्रियै (सु) | ३४.२६ | स्पर्शनेयाश्चिन्तितयो (पा) | १०६.२ | स्पृहांचकार यामास (उ) | २४१.२६ | स्मरणीयाहिसर्वत्र (पा) | १२.३ | स्मृतमात्रस्तुगड (उ) | ८८.६ |
| स्निग्धोन्नतसुचार्यै (पा) | १०५.२३० | स्पर्शः प्राणश्च चेष्टा (सु) | ३६.५७ | स्फालवेष्टक्रमाक्रांत (उ) | १२५.२६ | स्मरतातुर्यमध्यायं (उ) | १७८.३६ | स्मृतमात्राज्वलजाता (उ) | ७१.१८६ |
| स्तुषादिभर्त्सनं (पा) | ११४.४६४ | स्पर्शमात्रस्तुवैवायु (स्व) | २.१३ | स्फीतक्रोधावलंबेनशीता (सु) | ४१.४१ | स्मरतां विष्णु नामानि (क्रि) | १५.४ | स्मृतमात्रापूर्वती (उ) | १८.१२४ |
| स्तुहीक्षीराणि केचिच्च (क्रि) | २३.१५६ | स्पर्श रूपस्तु वैवायु (सु) | २.६६ | स्फुटं जानाम्यहं कर्म (भू) | १०६.८ | स्मरते भ्रातरं तत्र भाषां (भू) | १४.१८ | स्मृतमात्रोमहापावहारी (पा) | २८.६५ |
| स्नेहं दशागतं प्रेक्ष्य (भू) | १०.४२ | स्पष्टी कृत्याशनं चैव (पा) | ७६.४३ | स्फुटमेकं प्रजनामि (भू) | ६२.६२ | स्मरद्वित्वं व वास्यामो (उ) | १४.६० | स्मृतः संवोषितो वापि (उ) | ८०.५३ |
| स्नेहमानरसाख्यश्च (भू) | ४३.७८ | स्पृशंति त्रिदशाः सर्वे (क्रि) | ८.३५ | स्फुरत्करवकसौरम्य (उ) | १८७.१३ | स्मरन्ति ये सकृद्भूताः (स्व) | ३१.१०१ | स्मृताः पुण्यवतातेन (पा) | ६४.१२६ |
| स्नेह शुद्धिरियं भद्रे (पा) | ६६.८६ | स्पृशंति त्वाकथं भावाः (उ) | १०.४५ | स्फुरत्करवकल्लार कमले (पा) | ७४.७८ | स्मरन्तो हरिनामानि (क्रि) | १५.१०६ | स्मृताश्च मुनिनातीर्य (पा) | ६४.१२१ |
| स्नेहाकर्तृसगुडहृद्यं (सु) | ३१.१२२ | स्पृशंति विद्वद्वः पादौ (स्व) | ५२.२६ | स्फुरत्पद्मावली कोश (उ) | १८०.४ | स्मरवाणं पद्मेन (पा) | १०५.५० | स्मृतिश्च जायतां (उ) | २००.१० |
| स्नेहाश्चैव महाभागे (भू) | ४७.१७ | स्पृशंति यत्र वक्त्राणि (उ) | १८०.६ | स्फुरद्गंतोष्ठनयनः (सु) | ४०.१८२ | स्मरस्वरामं योवीरः (पा) | ५२.५२ | स्मृतीतिहासजातानि (पा) | १०६.४० |
| स्नेहात्मज्ञानरहितम् (स्व) | ६१.२२ | स्पृशंति येनराः केचित्ते (सु) | १८.४६४ | स्फुरद्गन्तारविदा (उ) | २२६.१६१ | स्मरामि चरणयुग्मद (पा) | ५६.३४ | स्मृती हरमिपापानि (उ) | ३४.७० |
| स्नेहादाद्रण्यलोभाद् (स्व) | ४५.११ | स्पृशंति दानां बुजंतस्य (उ) | १६०.२० | स्फुरदं प्रति वक्त्रेभ्यो (क्रि) | २२.१२८ | स्मरामि चरणीयुग्मं (सु) | १४.१३६ | स्मृत्या लोकन गंधादि (उ) | ११६.३३ |
| स्नेहेन चैव सुश्रोणिप्रतीतो (सु) | १३.२७१ | स्पृशांतीत्यपराधये (क्रि) | ६.३६ | स्फुलिगावर्षणं सद्यो (क्रि) | १५.६२ | स्मरतिोदेव देवेन (स्व) | २०.२६ | स्मृत्या गुणान् स्मरन्ता- (पा) | ७७.६५ |
| स्नेहेन भगिनी हस्ताद् (उ) | १२२.६७ | स्पृशेच्चयानिलोमानि (ब्र) | २२.१६ | स्फोटयामास भूदेसे (पा) | ४३.६ | स्मरिष्यति निजं कर्म (उ) | २००.२५ | स्मृत्वादाशरथिरामं (पा) | ५२.३४ |
| स्नेहेन मूढनर्यु पाप्राणं (उ) | २४५.३८३ | स्पृशेत्पादोदकं विष्णु (क्रि) | ११.१४३ | स्फोटयैत्स्कल्मषं नित्यं (भू) | ६७.५३ | स्मर्तव्यः सततं विष्णु (उ) | ७१.१०० | स्मृत्या धर्मोषविष्वंसी (सु) | ४४.१८६ |
| स्नेहोष्कारणकः सीते (पा) | ६६.८७ | स्पृष्टमात्रस्य घोरैरेण (भू) | ६६.६७ | स्मरः कृष्णाय कामाति- (पा) | ७२.४८ | स्मर्तव्याभूमिकामै- (सु) | १७.१८३ | स्मृत्या भागीरथीं (उ) | ६३.११ |
| स्पर्दनं योजयस्व त्वं (भू) | ११४.१६ | स्पृष्टवातुसलिलं तत्र (सु) | ३२.१३७ | स्मरचावर वाहिन्यो (पा) | ६६.१२ | स्मर्तव्यो वन्दनीय (पा) | ११७.२०७ | स्मृत्यारामं स्वमनसा (पा) | ५२.३१ |
| स्पर्दनस्तारकस्यीत् (सु) | ४२.७५ | स्पृष्टाष्टाश्च (उ) | २५५.११६ | स्मरणं कीर्तनं विष्णोः (उ) | २५३.१३३ | स्मितं कुस्वाव्रवीत्सर्वान् (सु) | १७.६६ | स्मृत्या लोकन गंधादि (उ) | १२३.२१ |
| स्पर्शंचित्तयसे नित्यं (भू) | १७.५१ | स्पृष्ट्वा पीत्वा पुराकेन (ब्र) | १७.१३ | स्मरणं वासुदेवस्य (स्व) | ३१.१४७ | स्मितदंष्ट्रमुवाचेदं नारदो (सु) | ४३.१७० | स्यन्दनं वाह्यामास (सु) | ४०.१८० |
| स्पर्शानाद् द्विगुणं पुण्यं (उ) | ४५.१७ | स्पृष्ट्वैव सूरयूतोयं (उ) | २४४.६० | स्मरणात्कीर्तनात् पापम् (ब्र) | ४.५ | स्मितबलोकितांपांग (पा) | ७४.१६३ | स्यमन्तकं प्रसेनस्य (सु) | १३.७३ |
| स्पर्शनाद्भाषणाद्- (उ) | ११२.१५ | स्पृष्टुणीयाहि देवानां (उ) | ३७.७७ | स्मरणादपि लोकानां (उ) | १३५.६६ | स्मृतं पूर्व कृतं कर्म (भू) | १२३.१४ | स्यमन्तकं मणिवरम (उ) | १४६.१४ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणो

४५६

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------|--------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| स्यमन्तपंचकंतीर्थ (पा) | १०७.६५ | स्वं विधं महापुण्यं धर्म- (भू) | १४.१ | स्वकीयं गृहमागच्छेत् (क्रि) | ११.६० | स्ववापनिर्मुक्तेन (उ) | २५०.१६ | स्वदेह भुवणान्येव (उ) | ४६.१६ |
| स्यान्महच्चपलंतस्य (सु) | १४.१६६ | स्वं स्वं राजन्नसदेह- (भू) | ६७.६३ | स्वकीयं स्वामिनं हत्वा (त्र) | २०.१६ | स्वच्छं च हृदयं कृत्वा (उ) | १५१.६३ | स्वधर्मनिरताधीरास्ते (पा) | ६६.८३ |
| स्यान्महत्तेवयाराम (पा) | १०४.२८ | स्वं स्वं वाहनं मारुह्य (पा) | ११४.१७१ | स्वकीयं हि महाभागाः (भू) | ७८.२ | स्वच्छं मुखं (उ) | १२५.३२ | स्वधर्मनिरताराजन् (सु) | १५.२३२ |
| स्युर्मोहायचराचर (पा) | ६७.२७ | स्वं स्वं वाहनं मारुह्य (उ) | २००.१०६ | स्वकीयां गुष्ठमात्रं (सु) | २२.१३० | स्वच्छंदलीला संचारी (भू) | ६२.६७ | स्वधर्म निरताः शांताजार्य (सु) | ३६.२७ |
| स्यदाभलवितग्रीवं (उ) | ४५.४७ | स्वं स्वं स्थानं प्रगच्छध्व (भू) | ६२.२० | स्वकीये तपसः स्थानेनि- (सु) | ३१.६७ | स्वच्छोदरायेत्यु (सु) | ७.१७ | स्वधर्मं विक्रयेद्यस्तु (भू) | ६७.७६ |
| स्यदाममालानिचित- (सु) | ४१.२८१ | स्वकं गेहं समायातः (भू) | ३१.३ | स्वकुटुंबं गृहीत्वा (उ) | २०.१४ | स्वजनस्य च सर्वस्य (भू) | १०३.७५ | स्वधर्मान्तरनिरताजित (सु) | १५.२५२ |
| सग्निभविचित्रमाला (पा) | १५.२० | स्वकरश्चांतरेदत्तो (भू) | ८१.७ | स्वकुलस्य सदानारं (भू) | १३.३ | स्वजनं बंधुवर्गं च (भू) | ६१.२४ | स्वधर्मजितवित्तं (उ) | १६६.४२ |
| सजाहतोद्विपद्वचरण (पा) | ६०.४५ | स्वकरस्थं मणित्यक्तं (क्रि) | २२.६० | स्वकुलोचितं धर्मेण (पा) | ८४.५५ | स्वजातिजाया गमने (पा) | ४०.६२ | स्वधर्मविश्रिताः सर्वे (उ) | ५५.४० |
| सवर्षदुदंतधातं (क्रि) | १७.१८ | स्वकर्मकरणांनुज्ञां (पा) | ११७.८३ | स्वकुलं भुज्यते (स्व) | ३१.८ | स्वजातीयद्वयं प्रायः (भू) | ६६.१६४ | स्वधर्मेणागमं द्रव्यं (उ) | १३२.११० |
| सष्टाधर्मस्य कश्चान्यः (भू) | २८.३६ | स्वकर्मजीवनोदात्ताः (सु) | १५.३०६ | स्वकृतान्येव भुंजति (भू) | ६४.१८ | स्वतन्त्रं पूजनं यत्र (उ) | २५३.१०५ | स्वधर्मेणाजितामुर्वी (स्व) | ३६.१२३ |
| सष्टाधाता चसहर्ता (उ) | २४२.१७२ | स्वकर्मणस्तु सर्वस्वमि- (भू) | ६२.७५ | स्वकृतेनजनः सर्वो जा (सु) | ४४.४ | स्वतेजसात्तद्वृद्धं यानि (सु) | १८.१७८ | स्वधर्मेणं धर्मजास्ते (स्व) | ८.३८ |
| सष्टाध्याताविधाता (उ) | २२६.१५ | स्वकर्मणिरतोधीरो- (पा) | ६४.१४ | स्वको वंशः प्रकट्यः (भू) | ८२.२४ | स्वतेज न परित्यजे (सु) | ४५.११६ | स्वधर्मे निधनश्रेः (उ) | १३२.१०८ |
| सष्टोत्सर्वजंतूनां (उ) | २०७.३१ | स्वकर्मणैव जायते (सु) | ४३.१४६ | स्वगदातेनवैनीतां (पा) | २६.५६ | स्वतेजसा विनाशितं (भू) | ४३.३४ | स्वधर्मोपायः शोभाते- (सु) | २३.१३६ |
| सष्टापालयिताहंता (उ) | १२६.५३ | स्वकर्मतेपरित्यक्तं (उ) | ३१.१४ | स्वग्रहं पुण्यं संयुक्तं (भू) | ५८.४३ | स्वतेजसा भाग्येण (भू) | ८१.२१ | स्वधर्मोपायः शोभाते- (सु) | ७१.२६४ |
| सष्टासृजतिचात्मानं (सु) | २.११७ | स्वकर्मभिर्महाराज (भू) | ११७.२६ | स्वग्रहं प्रति धर्मात्मा (भू) | २०.२४ | स्वदत्तां परदत्तां च (य) | २४.१० | स्वधर्मान्नगरी नैव (सु) | ४.८६ |
| सुखसाममवभृच्चैव (सु) | १६.४४ | स्वकर्मैवोपजीवति (पा) | १०१.४० | स्वग्रहं प्राप्य मेधावी (भू) | ६०.८ | स्वदारनिरनर्चव (उ) | ६८.११४ | स्वधर्मान्न गच्छकासि (उ) | ६६.५० |
| सुखानामलाविदेहाश्च (सु) | ४५.१५८ | स्वकात्यातिमिर श्रेणी (पा) | १८.१४ | स्वग्रहं रोपिताचैव (उ) | १८.१५३ | स्वदारनिरनोदातो (सु) | १५.३११ | स्वधर्मं न परित्यजे (उ) | २४२.२६५ |
| सोतोभिः पंचमिस्वत्र (सु) | १८.११८ | स्वकार्यनिरतः सोपि (त्र) | १६.१६ | स्वग्रहं प्रति धर्मात्मा (भू) | २०.२४ | स्वदारनिरनोदित्यं (पा) | २०.६ | स्वधर्मं न परित्यजे (उ) | १६६.१४ |
| स्वंपुच्छेन समाविद्धं (पा) | ६१.५५ | स्वकाले तुफलस्येव (उ) | १२८.११४ | स्वग्रहं प्रति धर्मात्मा (भू) | २०.२४ | स्वदुःखेदेवकाण्यम् (स्व) | ५४.२६ | स्वधर्माद्विजयतो भूमौ (उ) | २००.२४ |
| स्वयंयथैहममयेतिष्ठन् (पा) | ६२.२ | स्वकाले प्रभवत्येव (स्व) | २२.१०६ | स्वग्रहं प्रति धर्मात्मा (भू) | २०.२४ | स्वदेहशोधयित्वा (उ) | ३४.५२ | स्वयंपुच्छेनं वदन्तिष्ठ (क्रि) | १५.६ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|---------|---------------------------------|--------|--------------------------------|--------|-------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| रत्नादप्रणतंशतं (पा) | ८२.१२ | स्वप्ने विकेशवान (उ) | ८०.१२१ | स्वमलं भस्मितं चैव (भू) | ३६.६२ | स्वयंतु मुनि शार्दूल (व) | २६.१३ | स्वयमेव स्थितस्तत्र (भू) | ११८.१७ |
| स्वपादप्रणतंशुद्धा (पा) | ११२.५७ | स्वप्नेपित्रीहृयोवीरन (क्रि) | ५.८० | स्वमात्मानं पुनर्जातं (सु) | ४३.१६० | स्वयन्नेत्रेण व मनेषु (सु) | २१.११६ | स्वयमेव हिस्मानिष्यं (उ) | २५३.२१ |
| स्वपादुकं ददौतस्मै (उ) | २४२.१६१ | स्वप्नेयदुक्तं पित्रातु (क्रि) | २१.१२० | स्वमायुषं भवेदितुः (क्रि) | ५.८६ | स्वयं प्रविश्येदिवास्- (पा) | ११४.१४५ | स्वयम्भूः सर्वविज्ञाना- (सु) | ३६८.३ |
| स्वपामिप्रातरेभूमौ (क्रि) | ६.२३ | स्वप्नेयदुक्तं पित्रातु (क्रि) | २१.१२२ | स्वमांसभोजने चैव (क्रि) | २३.१३१ | स्वयं भुञ्जीत वै पश्वान् (सु) | ३४.२०० | स्वयंशः कारणेऽहं- (पा) | ५८.३६ |
| स्वपितायजमानेन (सु) | १३.३६७ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमायानिश्चयगुप्तात्मा (उ) | ७१.२०४ | स्वयं भुवा तथा षट् (पा) | ७५.५१ | स्वरं ध्रुवं समादाय (पा) | ११४.१६४ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवर निमित्तं ते (भू) | ८८.२१ | स्वरप्राप्तावलीहामुखि- (स्व) | २२.१७ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरस्थाता कुण्डं (उ) | २४६.४० | स्वरं भज्यमानं तु षट्- (पा) | २८.४० |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरार्थं वैतस्याचह (पा) | ६२.५५ | स्वराज्यं कुरु राजेन्द्र (स्व) | ४८.१५ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वरूपप्रतिनयमहा (पा) | २०.४० |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वरूपधारिणं त्रण्डवा (सु) | १३.२८७ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वरोद्गारं चक्रोद्दमिः (सु) | १८.७३ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गगतः पुण्याजितं (सु) | ३४.३३६ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गतेतुगमिष्यंति- (सु) | १७.२८४ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गप्रेषयमाप्नु (उ) | ५८.१७ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गस्वयत्वात् (पा) | १०६.११२ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गकामकृतायमा (उ) | १३२.१४२ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गकामाचसामस्तो (उ) | १२६.२७७ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गं खण्ड तृतीयं (उ) | १.६८ |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गं खंडं समाकर्ण्य (स्व) | ६२.१० |
| स्वपितृवैव वै विष्णुः (स्व) | ४३.१४ | स्वप्ने संदर्शनं दत्त्वा (क्रि) | २१.१०६ | स्वमित्रं चानुष्ठा प्रस्त (पा) | ६३.३ | स्वयंवरं महाबुद्धिं (पा) | ६२.५४ | स्वर्गं खंडं समावीक्ष्य (स्व) | ६२.१६ |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|---------|----------------------------------|--------|----------------------------------|--------|---------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| स्वर्गं गच्छति ते मत्पुत्रि (स्व) | १६.१८ | स्वर्गाग्निराकृतास्तेन (उ) | ३८.५२ | स्वर्गे मंदाकिनी (उ) | २४०.४६ | स्वर्णस्तेष्वीभवेत्कृच्छ्रः (व) | १६.२१ | स्वर्गेनेवतथाम्नेनैव (उ) | ६६.३८ |
| स्वर्गच्युतः प्रजायेत (सु) | १५.२०३ | स्वर्गापवर्गं मानुष्यान् (सु) | ३.१३४ | स्वर्गे यज्वाचवाता (पा) | १०२.७ | स्वर्णागुलीयसहितं (क्रि) | ५.१०७ | स्वर्गोत्थेकाग्निवन् (सु) | ८७.५६ |
| स्वर्गनिश्चेषिकाभूता (सु) | १८.२२१ | स्वर्गापवर्गनरकाः (सु) | १८.३६६ | स्वर्गे लोके सुखं भुक्त्वा (उ) | १८०.५६ | स्वर्गात्सप्तगुणरोष्यं (सु) | ३४.३६३ | स्वर्गः शिष्टभार्मकं (पा) | १०५.२१८ |
| स्वर्गं प्रयाति राजेन्द्र (भू) | ६६.२५ | स्वर्गापवर्गमाप्नोति (सु) | ४६.१६८ | स्वर्गोत्तरमिमं सम्यक् (त्र) | २६.४२ | स्वर्णाङ्गकारवस्त्राणि (उ) | १२२.६८ | स्वर्गक्षतार्कं पुत्रं दिव्य (भू) | २०.५ |
| स्वर्गमिच्छति ये लोकाः (उ) | १३४.२२ | स्वर्गापवर्गयोद्धारं (उ) | १२६.६५ | स्वर्गं पापहरं पुण्यं (उ) | १८.१४४ | स्वर्गे न गजने नाथ (पा) | ११४.३६ | स्वर्गशमुद्धरद्राजन (स्व) | २६.३६ |
| स्वर्गमोक्षप्रदाहो (उ) | ५६.१५ | स्वर्गापवर्गं सुखदो (उ) | २२७.३६ | स्वर्गं नशस्यमापुष्यं (भू) | २८.१४ | स्वर्गेनानाविधैरत्नैः (उ) | १२६.३ | स्वर्गशान्वयमुष्माकं (स्व) | १४.५६ |
| स्वर्गरूपं करिष्यामि (भू) | ७६.१७ | स्वर्गापवर्गोक्तयितो (उ) | २५५.२ | स्वर्गं कुण्डलमञ्जोरं (क्रि) | १६.५३ | स्वर्गश्चसूक्ष्मकलशैः (पा) | ११४.० | स्वर्गवित्तम्यानुसारेण (उ) | ३६.२० |
| स्वर्गमेवे हरिश्चन्द्रः (उ) | ५६.२२ | स्वर्गापवर्गमुनिश्रेष्ठ (उ) | ३७.६४ | स्वर्गं चाद्विचोत्तरे पुण्ये (उ) | १६५.७ | स्वर्गानुवृत्तपवर्गं च (सु) | ६.५३ | स्वर्गवृत्तकथ्यतां (उ) | ६०.२० |
| स्वर्गलोकप्रभावो हि (भू) | ७५.१७ | स्वर्गापवर्गमुनिश्रेणी (पा) | ८५.५४ | स्वर्गं निष्कशतं चात्र (उ) | २८.२६ | स्वर्गानुः शिरसोनीजि (उ) | १८.३२ | स्वर्गवृत्तदक्षिणादत्वा (पा) | ११२.८६ |
| स्वर्गलोके चिरंराजो (उ) | १२५.१५६ | स्वर्गापवर्गसर्वदा वैद्य- (स्व) | ३१.१६६ | स्वर्गपङ्कजमालादुपा (पा) | ७२.८२ | स्वर्गलोकं स्तम्भितोये (उ) | २४५.१६५ | स्वर्गवृत्तानुमिश्राद्वृत्त (उ) | ६१.४८ |
| स्वर्गलोके महीयेत (स्व) | ३६.५५ | स्वर्गापवर्गादेव्यादीनां (पा) | ७४.३५ | स्वर्गाभारसहस्रेण (उ) | १२७.४० | स्वर्गलोके च कटिन्यस्य (उ) | ५३.१६ | स्वर्गशरीरं स्वया पुष्ट- (भू) | ६७.५५ |
| स्वर्गश्च स्वर्गमभिः (पा) | ११७.१८४ | स्वर्गे कल्पशतं स्थित्वा (उ) | १८०.४८ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २०.८८ | स्वर्गलोकोचो नी भुनी (उ) | २४५.३५० | स्वर्गशरीरं स्वयं दातेन (उ) | २०३.१३ |
| स्वर्गश्च सत्यलोक (उ) | ६६.२१ | स्वर्गे कल्पशतं स्थित्वा (उ) | १८०.५२ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २३.७६ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ४६.५०४ | स्वर्गशरीरे परेष्ट्वं (उ) | २४५.१७५ |
| स्वर्गं संग्रामशस्त्रेषु (सु) | ४१.७ | स्वर्गे क्षयं तथा भोग (उ) | ८०.१०२ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २००.१७ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | २४५.१६ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |
| स्वर्गं सिधुसमासाद्य (उ) | ३.३८ | स्वर्गे तिष्ठति राजेन्द्र (स्व) | ४३.११ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २२६.८५ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ११०.७८ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |
| स्वर्गस्थमपिमात्रहन् (सु) | ३६.६३ | स्वर्गे न जायते तस्य (भू) | ६७.७८ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २२६.८५ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ११०.७८ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |
| स्वर्गस्थानविभागश्च (सु) | २.१५ | स्वर्गे पि च कुतः (भू) | ६६.१८५ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २२६.८५ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ११०.७८ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |
| स्वर्गस्थ मे गुणान्ब्रूहि (भू) | ६५.१ | स्वर्गे पि नास्ति सामर्थ्यं (भू) | ४६.३८ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २२६.८५ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ११०.७८ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |
| स्वर्गस्वामिमुधादेवि (उ) | १५१.६८ | स्वर्गे मर्त्यं च पाताले (उ) | १२०.४६ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २२६.८५ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ११०.७८ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |
| स्वर्गादागत्यदेवेन (उ) | ५.६४ | स्वर्गे मर्त्यं च पाताले (क्रि) | २४.४ | स्वर्गयज्ञोपवीतो (क्रि) | २२६.८५ | स्वर्गपङ्कजलेपङ्कजां (सु) | ११०.७८ | स्वर्गशरीरे देवि दास्यामि (भू) | १.५० |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|-------------------------------------|---------|--------------------------------|--------|-----------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| स्वस्तिः क्रोधनोहिः (सु) | १०.५० | स्वस्वरूपयराश्चवेतु (भू) | १२.६५ | स्वात्मानुभवजानं (उ) | २२.८८ | स्वामिगम्यादि गमने (वा) | ४७.५७ | स्वामिन्नतोमहाराजो (वा) | ४०.५१ |
| स्वस्तेयं दुर्गं दृष्ट्वा (भू) | ४४.१ | स्वहस्तं देहि विप्रेन्द्र (भू) | ३६.३७ | स्वात्मावैतारितस्ते (उ) | ७६.१६ | स्वामिच्छुगुप्रतिज्ञां (पा) | २४.१४ | स्वामिन्ब्रह्मण्यदेवस्य (पा) | १६.५४ |
| स्वस्तेयं निहतं दृष्ट्वा (उ) | २४१.३६ | स्वहस्तं मुनैः परिधे- (सु) | ४१.५५ | स्वात्मानंगारकंपुण्य (सु) | ३४.३१५ | स्वामितुल्य कृपा दंडो (उ) | ७१.२३१ | स्वामिन्भगवतः सर्वप्राप्त (पा) | ५.१४ |
| स्वस्तिकृताजगादाय (उ) | १७.७० | स्वहस्तरचितं मुखं (पा) | ११४.३०६ | स्वाध्यायचान्दहं कुर्यात् (भू) | ५६.३० | स्वामिद्रोहाच्च संभूतं (भू) | ६०.४१ | स्वामिन्मनोमयावाजि- (ः) | ३७.४४ |
| स्वस्तिकप्राणुहिभद्रते (सु) | ३५.६६ | स्वहस्तेन कथं राज्ञो (सु) | ३३.१०५ | स्वाध्यायनिरतानि (पा) | ६६.८२ | स्वामिद्रोहान्महाभाग (भू) | ६०.१२ | स्वामिन्मदभगिनोऽप्येष्टा (उ) | ११६.२२ |
| स्वस्तिकोस्तुगमिष्यामि (सु) | ४१.३१६ | स्वहस्तोपाजितं (सु) | ७.७५ | स्वाध्याय युक्तोऽप्येष्टु (सु) | ३२.६ | स्वामिन्नानहियोऽद्यं (पा) | ३६.५४ | स्वामिन्मयाद्यमानुष्यं (पा) | ३५.३८ |
| स्वस्त्यस्तु ते महाभागे (भू) | ५२.४६ | स्वान्तं तु मुनिश्रेष्ठः किम् (स्व) | १४.६ | स्वाध्यायेन च संतत्या (उ) | २००.४७ | स्वामिनिर्देशमाकर्ण्यं (भू) | ११४.४ | स्वामिन्मुच्यतेमवाहं (पा) | ३५.८ |
| स्वस्त्यस्तुदेवस्य (सु) | ४१.४८ | स्वागतं तु मुनि श्रेष्ठ (उ) | २०१.३० | स्वाध्यायोनाम मंत्रार्थतु(पा) | ७८.१३ | स्वामिन्कथयसिस्त्व- (पा) | १६.४८ | स्वामिन् रामोभक्तं (पा) | ५८.१७ |
| स्वस्त्रभाजनायेनं तथा (सु) | २६.२३ | स्वागतं ते नृपश्रेष्ठ (सु) | ३५.७६ | स्वानमात्यांश्चतान् (उ) | १२२.३६ | स्वामिन्कथिचमुनिर् (पा) | ४७.२३ | स्वामिन्वदन्त्यिदूरे (पा) | २१.६ |
| स्वस्थानं गच्छभद्रं (उ) | ३४.५६ | स्वागतं ते महाप्राज्ञ (स्व) | ४०.३१ | स्वां जरां तु समारुह्य (भू) | ८२.२८ | स्वामिन्केनापि चोरे (उ) | २०६.४५ | स्वामिन् वक्ष्यते ब्रूहि (पा) | ३०.१६ |
| स्वस्थानंगतवान् (उ) | ३३.५० | स्वागतं ते महाभाग (पा) | ६.२ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं (पा) | ५५.४६ |
| स्वस्थानंतत्रवैप्रातः (उ) | ३५.४ | स्वागतं ते दृष्येष्ट (सु) | ३६.२१ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्थानमकिं नाम- (पा) | ६६.१३ | स्वागतं ते भूईर्द्रुह्य- (पा) | ११६.११४ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्थानमागतं दृष्ट्वा (भू) | १११.४८ | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्थानमेवेति समस्त (सु) | २३.१४२ | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्थानस्थेषुदेवेभ्यः (सु) | ४१.३०२ | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्थानेऽप्येदेभ्यः (सु) | १७.२४२ | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्थोभवमहाराज (स्व) | ४६.१७ | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्वपुण्य प्रभावेन (भू) | १४.४५ | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |
| स्वस्वधर्मे प्रवर्तते (उ) | ५७.१० | स्वागतेन च संतुष्ट (पा) | ४०.१६ | स्वांतुनाक्रामयेच्छायां (स्व) | ५५.६३ | स्वामिन्केनपि पुत्रे (उ) | २०.१० | स्वामिन्वर्धयं जानीमो (पा) | ३८.१८ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------|----------------------------------|--------|------------------------------|---------|------------------------------------|--------|-----------------------------|---------|
| हनुमान् द्रोणमासाद्य (पा) | ४४.४४ | हंसकारंश्वाकीर्णं (श्रु) | ७७.१६ | हम्भारक्षुभितविश्ववर्णं (पा) | १०३.४० | हयोविनिर्गतस्त (उ) | १२.२६ | हरि बीक्ष्यमदीयोमंस्त (पा) | १८.२० |
| हनुमान् धृष्टकर्मत्रि (पा) | ३३.२४ | हंसकारंश्वाकीर्णं (पा) | ६५.१८ | हयं च ताडयेद्दीरो गजं (श्रु) | ४७.५५ | हरणार्थं हरेर्द्वयं (न) | २.२८ | हरिसंपूरयामासमार्गं (उ) | ७.२७ |
| हनुमान् पुष्कलो वीरः (पा) | ३५.२२ | हंसकारंश्वाकीर्णः सर्वध (श्रु) | ३२.१३ | हय कायेव गोविंदं (उ) | २४५.१४८ | हरदक्षानं संजातसमुत्कठा(सृ) | ४३.३६६ | हरि चन्दन मंदार (उ) | १२५.११३ |
| हनुमान् बाण विच्छिन्नः (पा) | २८.३८ | हंस कुंदेष्टुषवर्जविमानं (श्रु) | ८३.५१ | हयग्रीवाय शुभ्राय (उ) | ७८.३८ | हरंतं सर्वं संतापं (उ) | १२५.३५ | हरि जागरणं प्रातः (उ) | ११५.३ |
| हनुमान् भेषजं तत्तु (पा) | ४५.१८ | हंसकोकिल वटपादः (उ) | १६.४ | हयग्रीवो कुसाकारः (पा) | ७८.३७ | हरं निष्पन्नयोलीनां (उ) | १८०.७ | हरिज्ञानं यथाक्षेमं (श्रु) | ६७.४२ |
| हनुमान् समाश्रित्य (पा) | ३७.११ | हंस चंद्र प्रतीकाशामुक्ता (श्रु) | १२.६३ | हयग्रीवो हयाकारो (उ) | १२०.६४ | हरयेगुर वेदछात्सर्व- (उ) | १७४.६० | हरिगं चाभयं बोद्धव्यं (पा) | १०४.५८ |
| हनुमान् बीक्ष्य विभ्रांतो (पा) | ४६.२ | हंसपारावतत्रानंस्त (पा) | १५.३५ | हयनागोष्टवदनाविडाल (उ) | ५.२८ | हरयेदेव देवायन (क्रि) | १३.१६ | हरिणातत्र सानंदं (न) | १३.३८ |
| हनुमान् बीरसिंहं तु (पा) | ४३.१ | हंसयुक्तविमानेन (उ) | ६४.३३ | हयंतं पुरतः कृत्वा रत्न (पा) | ६५.६ | हरये ब्राह्मण श्रेष्ठं देयं (क्रि) | १३.१७ | हरिणासहते मये निरा (श्रु) | ५.७० |
| हनुमान् स्तत्ररामांश्चि- (पा) | ३२.१६ | हंसयुक्तं ययानेन सर्वेषां (सृ) | ३२.१३० | हयमेव क्रतुयोग्या- (पा) | ६.२२ | हरये ललितं खंडं (क्रि) | १२.७ | हरिणांगण विप्रस्तां (उ) | १२५.१७ |
| हनुमान् स्तत्रपृच्छ- (पा) | ५५.२२ | हंसयुक्तं स्ततो गति (सृ) | १५.३३६ | हयमेवं चरित्वासलोका- (पा) | २२.५८ | हरविरिचिनुततवपादयो (पा) | ५.६ | हरितादवम्य दिग्याम्या- (सृ) | ८.१२४ |
| हंतोक्तययिष्यामि (सृ) | ६.२ | हंस वर्णहर्षयुक्तं (उ) | ३३.१६ | हयमेवस्य यज्ञस्य (स्व) | १२.६ | हरश्च बहुरूपश्च (उ) | ६.३० | हरितोपलवर्णं ययं (उ) | १२५.१०२ |
| हंतोक्तं वर्णयिष्यामि (श्रु) | ६४.६७ | हंस संघातसदिष्ट (सृ) | ४३.४४६ | हयमेवादि यज्ञेभ्यः (उ) | १२६.२३४ | हरसिधुजयोर्युद्धं (उ) | १७.५६ | हरिद्राघतगंधाद्यै- (पा) | १.४१ |
| हंति जातानजातांश्च (उ) | १२.४१ | हंस सारस कारंड (सृ) | ६.६५ | हयस्तेन संयुक्त (पा) | १३.६६ | हरस्तेन शरेणायु (उ) | १७.६४ | हरिद्राघो ययाता- (पा) | १०६.७८ |
| हनुकामः स दुष्टात्मा (श्रु) | १२१.४७ | हंस सारस युक्तेन (सृ) | २१.१७१ | हयवर्णस्य संपूर्णं (पा) | १०.४० | हरस्त्वयानमोत्कथ्यां (उ) | १२.५१ | हरिद्राघाः समायोगे (पा) | ११४.८६६ |
| हंतुर्दगतो हस्तं (उ) | २०६.१६ | हंसमानस मिच्छति (उ) | १३२.७ | हयस्तस्याः पयोध्या (पा) | १७.५ | हृतादम्यो न हंताऽस्ति (उ) | १८.७६ | हरिद्राघं महापुण्यं (उ) | २०.१ |
| हमितं ताप संशोयं जिहता- (उ) | १३.३ | हंसायन वृणांगहे (पा) | ३६.७ | हयस्तादवगतोद्वर्जोः (पा) | ३२.२६ | हरि क्रुद्धः स योगिन्द्रः (श्रु) | १२१.७ | हरिद्राघस्य सशं (उ) | २१७.४६ |
| हमि त्वामिह खञ्जं न (श्रु) | १२१.४६ | हंसा हसित्वा सावज (उ) | १८०.२६ | हयादग्वाः पलायते (पा) | २४.३७ | हरि चैवं प्रपश्यन्वम (स्व) | ५०.२२ | हरिद्राघो दाया ता (उ) | २१.१८ |
| हृत्पतां न्यतमेव (उ) | १२५.१५ | हंसेन सशः कायो वयः (उ) | १८४.४० | हयास्तत्र निजारोहक- (पा) | २४.६ | हरि मुरारि गोविंदं (श्रु) | ८७.१४ | हरिनाम त्वया कामवश- (पा) | ६६.११ |
| हंसं वैपश्चिमायां तु (सृ) | ३४.२६८ | हंसैः कीरेषु पांडित्यं (उ) | १८४.२२ | हयो गतस्तद्रनमध्य- (पा) | १२.४६ | हरि मुरारि प्रवदन्ति (श्रु) | ७४.२८ | हरिनाम महामंत्रं (स्व) | ५०.६ |
| हंसकारंश्वाकीर्णं वक्र- (सृ) | ३६.६६ | हंहो मानस कंपसे किमु (उ) | २२.२१ | हयो गते हैमकूटं (पा) | ४७.१ | हरि वाक्त्रहावाशं (उ) | २०५.२५ | हरिन्मणि निवद्धा (उ) | ३.२२ |



श्रीपद्ममहापुराणम् :: श्लोकानुक्रमणी

४६२

| | | | | |
|---------------------------------------|-------------------------------------|--|--------------------------------------|---|
| हरिपादरजो बुद्धेः कानं (उ) २०.१.३४ | हरि मित्र सुतोविप्रः (स्व) ३१.१.३ | हरेणोक्तेतिसाकृत्या (उ) १७.८७ | हरेदिनेयस्य राज्ये (उ) १५.८ | हर्षः दुःखादि भावेन तस्य (उ) १२२.६७ |
| हरिपादसमुद्भूते (पा) ६४.५६ | हरिराचक्रमेलोकान् (सु) ३०.१.७२ | हरेन व पदाम्भोज (उ) २०५.६ | हरेर्देनंदिनीलीलायतो (पा) ८३.१.०६ | हर्षप्रदोन्मुखांशप (पा) १००.३ |
| हरिपाशाचनरतोवेद (उ) २०७.५ | हरिराहपुरादृष्टः (पा) १०५.२.३३ | हरेदिनेयस्वरज्ये (श्र) १५.८ | हरेनमिकिसंजल्पन् (उ) २२२.८६ | हर्षविवल्लितांग्य श्रुमुच (पा) ४.१.६ |
| हरिपादेननोयेपांते (स्व) ५०.१.० | हरिरूपं समास्थाय (भू) २८.१.०० | हरेर्देनंदिनीलीलां (पा) ८३.१.२ | हरेनगिसहस्रां च गज (उ) १२४.२० | हर्षस्मित्यगो (उ) २४५.२.३५ |
| हरिपादोद्भववांगं (उ) २५३.४५ | हरिनिवसतेतत्रसन्मुख (उ) २१६.२५ | हरेर्द्वारयते यस्तु मदे (उ) ३२.३५ | हरेर्नैवमशेषेण (उ) २५३.६६ | हर्षस्मिन्वाचपास्यामि- (सु) ४४.१.३३ |
| हरि पूजाकृतांपुसांन (क्रि) १६.१.१४ | हरिहिंसाव्यतेभक्त्या (उ) १६४.१६ | हरेनारायणानन्त इत्युच्चैः (क्रि) २५.८२ | हरेमया बलवती (उ) २०४.१६ | हर्षादिश्रुणिमुचतो (पा) ६६.१.३१ |
| हरि पूजा परायेचते (उ) ६२.३१ | हरिवासरकर्तारो (उ) ४३.५० | हरे पद वर्णयितुं- (उ) २२७.६६ | हरे विष्णो दैत्य (क्रि) ६.१.६० | हर्षाश्रुजलसिक्तांगः (उ) २३८.१.१० |
| हरिपूजोपकरणान् (उ) १०६.६ | हरिवासरसंलीना (उ) ४०.८ | हरेः पादाकृति कुमाद (उ) २२५.२२ | हरेः सपयवस्तुनित्तपथा (क्रि) ११.५० | हर्षाश्रुपूर्णः पुलकाचितांगः (पा) ७२.७३ |
| हरि प्रदक्षिणीकृत्य (क्रि) १७.१.३७ | हरिविविचरसाद्यैर्युक्त (पा) ७२.१.५४ | हरेः पूज च वै शाखे तपः (उ) १२५.६६ | हरेः सामान्य रूपा (उ) २४२.२६६ | हर्षानो निलयादगच्छेद- (क्रि) ६.२७ |
| हरि प्रदक्षिणेयावत् (क्रि) ११.१.१७ | हरिव्रतस्य विप्रस्य (उ) २४२.१.२ | हरेः पूजापरवचं (क्रि) १६.५० | हरो प्रसन्ने दुरितीन (क्रि) १०.७७ | हर्षेण निर्भया सर्वे (भू) ५.६६ |
| हरिः प्रनन भूतोपि- (उ) १८२.२६ | हरिशर्मालमालोक्य (क्रि) २०.७४ | हरेः पूजाविधातव्या (उ) ६१.५१ | हरो भक्ति विधायैव (स्व) ५०.१.२ | हर्षेण महता विष्टदं (भू) ४.६० |
| हरिः प्रियस्तथासंभो (पा) ११४.१.६१ | हरिश्चन्द्र इतिख्यातो (उ) ५६.५ | हरेः पूजोपचारेण व्यानेन (भू) ७२.२.३ | हरो भक्ति विनानुणाम् (स्व) ६१.४४ | हर्षेण महता विष्टचित्त (भू) १२४.२ |
| हरिभक्ति कथा मुक्त्वा (स्व) ५०.१.६ | हरिश्चक्रभगवानास्ते (स्व) ३६.६६ | हरेः प्रसादाल्लब्धं (उ) २३८.१.५३ | हरो वापि महाराज (भू) ६६.३४ | हर्षेण महता विष्टः न (भू) १०५.५८ |
| हरिभक्तिः कुतः पुं साम् (स्व) ६१.१.१४ | हरिश्चक्रभगवानास्ते (स्व) ४३.१.६ | हरेः प्रियां हिरण्याभां (पा) ७१.६६ | हर्तुतय समाविष्टः (उ) २१.८.७ | हर्षेण महता विष्टस्त (भू) ३२.६३ |
| हरिभक्तिश्चलोकैत्र (स्व) ६१.४२ | हरिश्चक्रभगवानास्ते (स्व) ४३.१.६ | हरे मुरारेजगदेकनाथ (क्रि) १२.७८ | हर्षपुत्रीः स्वयदेवी (नृ) ४३.४०२ | हर्षेण महता विष्टस्त (भू) ७८.५१ |
| हरिभक्तिमुधां पीत्वा (स्व) ६१.८ | हरिश्चक्रभगवानास्ते (स्व) ४३.१.६ | हरेरन्याकथा सूतस्मृतां (स्व) १.१.५ | हर्षसः सहदेव्य (पा) ४६.६६ | हर्षेण महता विष्टस्ते (भू) ६०.५४ |
| हरिभक्त्यै व पाषी (पा) १०१.५५ | हरिश्चक्रभगवानास्ते (स्व) ४३.१.६ | हरेरभक्तोविप्रोऽपि (क्रि) १६.३ | हर्षस्वयस्ययुक्तमुक्ता- (नृ) ४०.१.५३ | हर्षेण महता विष्टो (भू) ३.५६ |
| हरिभुक्ताशिष्टयत् (क्रि) १८.६ | हरिश्चक्रभगवानास्ते (स्व) ४३.१.६ | हरेराज्ञानुष्णं कर्म (उ) २५३.१.२७ | हर्षस्वयस्यनिकुंभो (नृ) ८.१३६ | हर्षेण महता विष्टो (भू) ११६.३० |
| हरिमानुष लोभेन व (पा) ७१.५६ | हरे कृष्ण हरे कृष्ण (पा) १६.२५ | हरे राम हरे कृष्ण (पा) ८०.३ | हर्षस्वयस्यपुण्यपु (नृ) ६.८ | हर्षेण महता विष्टो (उ) ४१.४१ |
| हरिमित्रमुनेस्तत्रदर्श (उ) ६२.१.४ | हरेकेशव गोविंद (क्रि) १६.६ | हरेराधनं भक्त्याश्रेयः (उ) २१६.२८ | हर्षप्रपन्नपुत्रा- (पा) २४.६० | हर्षेण महता विष्टो (भू) १६.४७ |

| | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|------------------------------|--------|-------------------------------|--------|--------------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| हर्षेण महता विष्टो (भू) | २२.१६ | हव्य कथ्येपुयस्माच्चनि-(सु) | २१.१५५ | हस्तिनं वरमारोप्य (पा) | १६.४३ | हाटकसितिगोरीणां (मृ) | १८.४६६ | हारो तोयाजवत्क्य (पा) | ६.३३ |
| हर्षेण महता विष्टो (भू) | ४२.१६ | हसतेकीर्त्यमानं तत्र (पा) | ४७.६८ | हस्तिनापुर संप्राप्तो (स्व) | ४०.२६ | हाटकसितिगोरीणां (मृ) | ३२.६० | हावभावः पदार्थस्त (उ) | ४६.२० |
| हर्षेण महता विष्टो (भू) | ४३.५ | हसंतं मुनिं प्राह (पा) | ४६.४२ | हस्तिनो ममशैलाभाना-(पा) | ३७ | हानुमिच्छामिदं (पा) | ५८.७ | हाव्य कर्म विघ्नष्टाः (सृ) | १०.११८ |
| हर्षेण महता विष्टो (भू) | ४२.१६ | हसंतं तं समालोक्य (भू) | १०५.३२ | हस्तिभिः सादिसंयुक्तः (पा) | १३.५७ | हानाथ किं कृतं कर्म (त्र) | २०.२१ | हायोगीतिस्तथा पानं (पा) | ११२.१०७ |
| हर्षेण महता विष्टो (भू) | ४३.७ | हसंश भिन्नफेनीभिः (सृ) | १६.१५४ | हस्तीचादायतांमालां (त्र) | ८.६ | हानाथ दीनं वंधो (पा) | ५६.४६ | हास्कंदहा गणेशेति-(उ) | १३.२६ |
| हर्षेण महता विष्टो (भू) | ६१.३३ | हसंतमुच्चैरान यतरं (पा) | ७२.१० | हस्तेगृहीतदर्भोहम-(उ) | १८७.४७ | हानाथप्रियरुद्रेति-(उ) | १८.२५ | हायवात्तथा महाभाग (भू) | ११६.४ |
| हर्षेण विस्मयेनाति कृत्वा (भू) | ४६.७ | हसंतं हासयतंतामध्ये (पा) | ८२.६४ | हस्ते धृत्वाविशेषेण (उ) | २६.२३ | हानाथ वलविक्रांत (उ) | ६.३३ | हास्वर्गीतैश्चतुर्थेऽथ (उ) | ७०.२० |
| हर्षेणोत्थाप्यतीवरी (उ) | २४५.२३८ | हसंरोषाद्दशदंतान् (पा) | ६०.६१ | हस्तेन मूययिनगोरस्तु (सृ) | २५.७ | हानाथ भ्रातरस्तुभ्यः (पा) | ४५.५७ | हाहाकानरसास्वाद (पा) | १००.६ |
| हवनं सवनं चैव (सृ) | १६.४३ | हसंस्तिष्ठतिदैत्यानाम्न-(सृ) | ४०.१८७ | हस्तेविधृत्यातं कन्यां (क्रि) | ५.१६६ | हानाथ हा नर वरो (पा) | ५३.१४ | हाहाकारंताः कृत्वा (क्रि) | २५.७६ |
| हविर्जुह्वातिनामतीयेगो (उ) | १२६.८० | हसमानां सुपायंतीं (भू) | ३६.१७ | हस्तं हस्तांस्पृशतीव-(सृ) | १५.३८ | हानाथ हा पितृस्त्यक्त्वा (उ) | ८६.२ | हाहाकारंरुक्मवंतो (क्रि) | १५.६६ |
| हविर्वाग्व्यसवत्पूर्वं (मृ) | ४.४५ | हसिन् सकल कृत्वा (पा) | ७२.६० | हस्त्यश्वजानसहिता-(सृ) | १८.५६ | हा पुत्र वत्स मे तात (भू) | १०६.५ | हाहाकारं मष्टकृत्वा (भू) | १०६.२ |
| हविषा कृष्णवर्णं (मृ) | १६.२५६ | हसितैर्वहुवाताभि-(पा) | ८३.५० | हस्त्यश्वरथपत्नीनां (उ) | १००.१३ | हा पुत्र वीर कथमुत्सुक-(पा) | २८.५ | हाहाकारो महानासी-(पा) | २३.८७ |
| हविषाग्नौ जले पुष्पे (पा) | ८४.५६ | हसित्वा ब्रह्मणो हस्ताद् (उ) | ६.३७ | हस्त्यश्वरथपादातसेना (पा) | १०.५० | हा पुत्रीति तवामाता (मृ) | १७.८ | हाहाकारो महानासी (पा) | ५१.५२ |
| हविर्गन्तं तनूजं च (सृ) | ४०.८८ | हस्तपादतली उडत् (भू) | ५३.६८ | हस्त्यश्वरथवृद्धं (उ) | ३०.६७ | हा प्रिये वंचलायाङ्गि (क्रि) | ६.७४ | हाहाकारो महानासी (पा) | ६३.७६ |
| हवीष्यनलदग्धानि (सृ) | १३.३६६ | हस्तपादमुल्लैर्युक्तः (भू) | ८३.८ | हस्त्यश्वरथसंस्कारः (उ) | १०१.२१ | हा प्रियेति रुद्रन् रुद्रः (उ) | १८.३६ | हा हा कृत्वा समुत्थाय (मृ) | ४७.३२ |
| हविष्यं ब्रह्मचर्यं च (क्रि) | १३.७६ | हस्तपादविहीन-(पा) | ८४.८६ | हस्त्यश्वरथपादशठ-(सृ) | ३४.२६१ | हारं चमुक्तापरिकल्पि(पा) | ११४.१८४ | हा हाभूतमभूत्सर्वं (पा) | ४३.५६ |
| हविष्यभुःभूमिशायी-(पा) | ८६.४२ | हस्तपाद विहीनं च (भू) | ८६.७५ | हहामुमुखायोवतं (सृ) | ४३.१६० | हार के दूर कटकं (उ) | २३८.१४२ | हा हा हहृच्चगंधर्वो (सृ) | १८.१६ |
| हविष्यमन्नमादायभुङ्क्ष्य(पा) | १०६.५० | हस्ताभ्यां चरणं तस्य (उ) | २५५.४६ | हा कण्टगदशितः कस्मात्(द्व) | २२.५१ | हार को मस्तकं तस्य (त्र) | १४.३१ | हा हे ति कृत्वा प्रोचस्ते (पा) | ४४.४६ |
| हविष्यन्तं च भुञ्जीत (उ) | ७०.२४ | हस्तिनः पक्षयश्चैव (पा) | २३.३५ | हा कण्टदशितः कस्मात् (उ) | १२८.६० | हारादि ग्रहणेतस्याः (पा) | ८३.७३ | हितममानुशाधिक्वं (उ) | १७७.२२ |
| हव्य कथ्यं पवित्रं (उ) | ७६.२४ | हस्तिनः पत्तयश्चैव(पा) | २८.१० | हाकांतस्वसोहित्य (उ) | १८७.३२ | हारीतेननाचोक्तं (उ) | १७४.३७ | हितार्थमपिदेवा (उ) | २४०.३३ |

| | | | | |
|-----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------------|--|
| हितापदेश विरता भवतः (उ) २०१.४२ | हिमवद्दहिता सा च (सु) ५.६३ | हिरण्यकशिपुस्त्वाच (उ) २३८.५३ | हिरण्यवर्णा हरिणी (उ) २२८.४० | हृतयज्ञादिकं कर्म न कृतं (भू) ६१.५० |
| हितालैर्नगिपुन्नागैः (पा) ४७.४ | हिमवतं च नीलं च (सु) ४०.५ | हिरण्य कशिपुष्टवा (सु) १४.११२ | हिरण्यवर्णेन जनान् (उ) ८.३ | हृताग्निनैवं सत्तप्य (उ) २२४.३० |
| हिसंतिराक्षसास्तेषु (स्व) ५३.८० | हिमवानिवशैलेषु (उ) २१२.२४ | हिरण्यकशिपुर्दैन्य- (सु) १३.१७३ | हिरण्यसहस्रं तत्र (उ) १४०.१३ | हुताय हुतभोक्ते च हवी- (भू) ३२.५४ |
| हिसयाकर्मणा कर्मः (उ) १३२.१४१ | हिमशैलसुतादेवीत्वहं (सु) ४३.१०५ | हिरण्यकशिपुश्चैव (सु) ४१.७३ | हिरण्याक्षप्रहृतां वाराहं (भू) १६.२६ | हुताशनज्वलितं (सु) ३६.१५४ |
| हिसा चैवा परातृणा (स्व) ६०.२७ | हिमशैलोभवत्लोकै (सु) ४३.१०३ | हिरण्यकशिपुश्चौघो- (सु) ४४.१६२ | हिरण्याक्षस्तदोवाच (भू) १०.३३ | हुताशनमुताः सर्वाभवत्यो (सु) २३.६५ |
| हिसात्मको वर्त्म घाती (उ) २००.८८ | हिनाचलस्य दुहितस्या (सु) ४३.४६ | हिरण्यकशिपुहृत्वा (उ) १७४.६ | हिरण्याक्षस्यष्ट पुत्रा (उ) २४५.२५ | हुताशनाद्धममिच्छेद् (सु) ३४.३२८ |
| हिसादंभ काम क्रोधं (न) १.२१ | हिमाचलस्य शृगस्य (सु) ४४.१६ | हिरण्यकशिपुराजा (भू) १०.३२ | हिरण्यासंगमे रम्या (उ) १४०.७ | हुतेऽग्नौतथाप्यत्र (न) १८.८ |
| हिसादिकंचयत्पाप (उ) १३१.२१ | हिमाचलाभेसितचारु- (सु) ४२.१०१ | हिरण्यकशिपुर्जं भोम (उ) २३०.११ | हीनांगायाधिकांगा (क्रि) २३.१६५ | हुं हुं कुर्वन्तिवीराग्रया- (पा) २६.२५ |
| हिसादिदोष निर्मुक्ताः (भू) ६६.२ | हिमाचलोपत्यकायां (उ) २१३.८ | हिरण्यकशिपोः पुत्रः (सु) ४५.८४ | हीनांगमधिकांगं च (ः) ३६.११८ | हृषते सर्वयज्ञेषु (पा) ११४.२४५ |
| हिवा धर्माद्विनिर्मुक्ता (उ) ६८.६ | हिमाचलोस्मि विख्यात (सु) ४३.१६२ | हिरण्यकशिपोभ्रता- (सु) ३०.१३७ | हीनाश्चक्षिरसोभूयः (सु) ३.१०१ | हृयतामग्नीविप्र- (न) ४१.३१० |
| हिसाप्रायां बहुक्लेशां (भू) ६४.४५ | हिमादयो नगास्तत्र (उ) १६५.२० | हिरण्यकशिपोस्त- (सु) ६.४१ | हीरकं क्षितिकन्यानां (क्रि) २०.१३४ | हृद्यान्ममनपानानियं (पा) ६६.५६ |
| हिसामति यदादत्ते (उ) ६४.६७ | हिमेना कूलितं विश्वं (उ) १३२.३ | हिरण्यकश्यपेनापि (भू) २३.४ | हीरकं भीतिकं नापि (क्रि) २०.११८ | हृतं नैव च कस्यापि (पा) ८८.२८ |
| हिसायामस्थितो विष्णुः (सु) १३.३१८ | हिरण्यं विमानं च (न) ७.२६ | हिरण्यक हिरण्याक्षो (उ) २३७.१ | हुंकारभंस्मसाज्जातो (पा) १६.१६ | हृतं मघवताराजं (सु) १३.२०० |
| हिवा हिष्णे मृद् कुरे (सु) ३.११६ | हिरण्ययवपुनित्यः (उ) २३८.३८ | हिरण्यक हिरण्याक्षो (उ) २४२.१४ | हुंकारं करोद्धीमान्स्तं (उ) ३८.८८ | हृतं राज्यं वाक्कलि- (सु) ३०.३८ |
| हिम क्षीरं सुवर्णसु (भू) १०१.२७ | हिरण्ययाजमशोभा (सु) २१.११३ | हिरण्यक हिरण्याक्षो (उ) २४७.१६ | हुंङं निहत्य दैत्यैश्च (भू) १०६.४४ | हृतराज्याः पांडुपुत्रावने (स्व) १०.५ |
| हिमतोयप्रपूर्णाभि- (सु) ४१.२३ | हिरण्योय्य योग्यः (उ) २४५.११६ | हिरण्यगर्भं पद्मगर्भं (सु) ३८.१६६ | हुंङं हत्वा महाधोरं (भू) ११३.१७ | हृतशीर्षाग्विश्रया पा) ६५.८६ |
| हिमपर्वतं शृगे च (उ) २.३ | हिरण्यकशिपुर्देवाः (उ) ७१.१८६ | हिरण्यतिल वस्त्राद्यं (सु) १८.१४८ | हुंङश्च दानचेंद्रो यो (भू) १०८.२१ | हृतातर्षप्रियादेव (उ) १८.१७ |
| हिमवच्छिन्नरेरम्ये (स्व) १६.३ | हिरण्यकशिपुर्देव्या- (सु) ४५.१२१ | हिरण्यदानं गोदानं (उ) ३२.४ | हुंङेन पात्राचरेण वधार्थं (भू) १०६.२७ | हृतातस्मात्मुपापेन (भू) ११३.४२ |
| हिमवच्छिन्नरेरम्ये (सु) १२.५३ | हिरण्यकशिपुः प्राहदान- (सु) ४४.१८२ | हिरण्यरोमाणमुदधि- (सु) ७.७८ | हुंङेन सपि भावेन (भू) १०३.५८ | हृताधिष्णारास्त्रिदशा (उ) ६०.६ |
| हिमवत्कोटिनिर्कायः (उ) ७१.१५४ | हिरण्यकशिपुस्त्वाच (सु) ४५.११ | हिरण्यवर्णा हरिणी (उ) २२७.२६ | हुंङोपि दुःखितो नूतः (भू) १०३.६७ | हृतासृक्कृष्णपत्नी (सु) २३.८६ |

हृनोऽश्वोयविशेषेण (उ) १४१.२०
हृतोदैत्येन वीरेन्द्रो (भू) ११३.१८
हृतो न लक्ष्यतेतस्मा (पा) ४०.६
हृत्कालुष्यशशांकोत्थं (सृ) ४४.२४
हृत्खणः खसमः खादिः (उ) १२८.२४६
हृतपयो प्रतिबद्धाश्च (भू) ६६.२२
हृदं प्रवेजिनोविश्व्यां (पा) १५.१६
हृदयं कलुषं कुर्यात् (पा) ६६.६३
हृदयंभुराराय प्रियः (उ) १६७.२०
हृदयतत्र वै पाद्यं (सृ) ६२.८
हृदयमन्मथाह्वयं (सृ) २१.११८
हृदयस्थितमादाय-उ) १८०.६०
हृदयस्थोऽजरस्वोयो (क्रि) १७.११३
हृदयान्निर्गतः सोध- (सृ) ४३.२३४
हृदयारूढतद्व्यानैर्ना-पा) ७०.५२
हृदयानुरयविप्रः (पा) ६२.१०३
हृदयकुण्डपण्याघ्र-उ) १२७.१२५
हृदयेज्ञानगम्याय (उ) ३५.५३
हृदयेतस्यललिता (उ) ४७.१०
हृदयेताऽयामास (पा) ६०.३८
हृदयेनसमाधायदेवः (सृ) ४४.६६

हृदाविचित्येतिवरांगना (क्रि) ५.१६५
हृदिकत्वापरंशातम् (स्व) ६१.७
हृदिकृत्वासुबहुशोर्मणि (सृ) १३.७४
हृदिदामोदरं ध्यात्वा (त्र) २१.८
हृदिपाश्वर्यस्तनादूर्ध्वं (उ) २६.१२
हृदिमूर्त्यं जलेवायप्रति-स्व) ३१.११५
हृदध्वेतेपुयः स्नात्वा (स्व) २६.३५
हृद्यान्तमन्तपानानियं (पा) ६६.५६
हृपीकेतुः सुकेतु (उ) २०.४०
हृपीकेशस्य संध्यानं (भू) ७२.१७
हृपीकेशायशांताय (क्रि) ११.६६
हृपीकेशोपिदैत्ये (उ) ७.६८
हृष्टतुष्टाः सुखापन्नास्ते-उ) १२२.६२
हृष्टपुष्ट जनाकीर्णं (पा) ६७.३३
हृष्टात्रैपाकेशयनि-सृ) २३.१२६
हृष्टातुष्टा च पुष्टा (सृ) १८.२७७
हृक् लिगयतेनैजदेहं (उ) २१६.८१
हेतातमातरंस्वीयो (उ) २१३.७४
हेतुमिः पूर्वं संसृष्टः (उ) ६.१७
हेतुं प्राप्य नरो नित्यं (भू) ८१.५२
हेतुनाकेन कथह्यसितं (उ) १८८.४०

हेतुनाकेन विप्रये (उ) १२७.१
हेतुमागमने पृच्छते (उ) १७७.३५
हेतोरस्माद्देहिनः (उ) २१२.४३
हेतुतवरपृच्छामि सशयं-स्व) ३१.२
हेमकूटस्तुसुमहान् (स्व) ३.५६
हेमकूटोगिरिः पूतः (पा) १२.६२
हेमगर्भोमहासेनस्त-सृ) ४५.१७६
हेमगौरततः सांगं (उ) २२०.५०
हेमगौराश्चहेगाभाद्रिया-स्व) २२.१६
हेमतोराण संयुक्तं (भू) ११७.३
हेमनोहरसीभाग्यभाग्य (उ) १८७.३१
हेमदंष्ट्रश्च घंटाभिः (भू) ८३.५६
हेमन्ते चैव संप्राप्ये (उ) ३८.२०
हेमन्ते प्रथमे मासि (उ) ३०.६
हेमन्ते विशिरे चैव (उ) २७.११
हेम पंचकमालिन्यो-उ) १२८.२६
हेमपत्रंरूपेणतस्मात् (सृ) २१.१४६
हेमपानीं च शय्यां (सृ) २७.५२
हेमपुष्करसञ्छन्नं (सृ) ४५.१७७
हेमप्रासादसंवाधं (भू) २४.४२
हेमप्रासादसंवाधैर्ना (भू) ८३.६२

हेमभारशतैर्दनिस्त्रि-उ) २४.८६
हेमभारसहस्रं तु (त्र) ४.१०
हेमवर्णि दिव्यानि (भू) ११८.५
हेमवर्णोत्प्रियया-पा) ७२.७२
हेमवाप्यः शुभाः सर्वा (उ) २६.१८
हेमवृक्षामरैः सार्द्धं (सृ) २१.६
हेमस्तंभमयैः सोधं (उ) ६०.२३
हेमहादेव महाभूतः (पा) ११६.२२१
हेमांबुजसभासीना-उ) २३२.४१
हेरंवाहन्स्मारवोः (उ) १०.२८
हेरंबोध्यते दैत्यैः (उ) १२.४४
हेशंभोव्रगतोसित्वं-उ) १५.५८
हेशंभोहे जगन्नाथ (उ) १५.५६
हेपारवो मद्राणासी (पा) १०.२४
हेगितैः सपति वृन्दानां (क्रि) ५.१४७
हेतुकोनास्तिको यस्तु-पा) ६६.६२
हैमं चक्रं त्रिगुलं च (सृ) २०.४५
हैमं च वरुणं कूर्गनं (उ) ७०.२७
हैमीस्थाप्यतत्रमन्मूत्रिच (उ) १७४.५४
हैमी भवेत्सुपाश्वनु-सृ) २१.२०१
हैहयस्यतुदायादो धर्मं (सृ) १२.१०१

हैहयान्वजघानाशु (उ) २०.२६
हैहयैस्नालजघाघैः (उ) २०.२०
हैमं वा राजतं वापि (उ) ४४.२७
होतव्याः क्रमशस्तस्मिन् (उ) २५३.७८
होतव्यमाज्यसंमिश्रं (उ) २५३.७०
होतात्रिभृगुरध्वर्यु-सृ) १२.२०
होतारं ब्राह्मणं नाम (सृ) ३४.३६०
होमं चैव प्रकुर्वीत (उ) २५३.१०७
होमं तुमुष्मयेपात्रे (पा) ११४.४४८
होमघेद्यायदेवेन (स्व) ५२.२०
होमशाला तथा प्राञ्चना (भू) ३६.१०२
होमश्चसर्पिपाकार्योर्वैः (सृ) २८.१६
होमस्तथोत्वास (उ) ३८.८
होमस्तानजपघ्यान (उ) ५६.२५
होमाग्निसंतप्त पवित्र (उ) २२४.७३
होमेन तु जपेनैव (भू) ६७.३
होमेपुत्रं मध्येच (भू) ६६.३१
ह्रदंगत्वायकालि घनस्त (उ) २४५.१२७
ह्रस्वान्तमितिप्रमाणानि (सृ) १६.४६
ह्रस्वास्तुवामनाः कुञ्जाः (भू) १६.३०
ह्रौं बीजं श्री शक्तिः (उ) ७१.११
ह्लादिनीत्वापिशक्ति-सृ) ४.१२५





